ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 65 अप्रैल 2020 अंक : 1

सम्पादकीय कार्यालय: हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tell: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in.himprastha.asp

ज्ञान सागर

बुद्धि की स्थिरता के बिना कोई भी आदर्श पूरा नहीं होता - **विनोबा भावे**

जो गलतियां नहीं करता, वह प्रायः कुछ नहीं कर पाता। - **अज्ञात**

इस अंक में

लेख

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
समावेशी विकास का उभरता मॉडल हिमाचल प्रदेश	मुख्यमंत्री का आलेख	3
शांतिप्रिय लोगों की असाधारण संघर्ष गाथा	वेद प्रकाश	7
कोरोना की वैश्विक जंग में भारत की प्रतिबद्धता	गिरधारी लाल महाजन	10
जनजातीय महिलाओं के थिरकते कदम	डॉ. सूरत ठाकुर	12
अप्रैल का काला और क्रूरतम दिन	डॉ. कुंवर दिनेश सिंह	17
भारतीय अस्मिता हिंदी और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन	प्रकाश शर्मा	20

कविता/ग़ज़ल

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
बंद कमरे में	राम रत्न शर्मा	11
सीख	मोहित शर्मा	16
डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत के दोहे		24
डॉ. प्रत्यूष गुलेरी की कविताएं		26
के. आर. भारती की कविताएं		27
डॉ. राकेश चक्र की कविताएं		28
डॉ. मंजु पुरी की कविताएं		30
आखिर क्यों	डॉ. प्यार चंद	31

ग़ज़ल

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
प्रताप जरयाल की ग़ज़लें		32
अनुराग शर्मा 'अज़ल' की ग़ज़लें		34

कहानी

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
नए पुराने चक्र	राजीव शर्मन्	35
बोझा	रमेश शर्मा	38
अल्बेयर कामू की फ्रांसीसी कहानी मौन	**अनुवाद :** सुशांत सुप्रिय	41

व्यंग्य

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
बिना वसंत के जीवन	रामस्वरूप दीक्षित	48

लघुकथा

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
नरेश कुमार उदास की लघुकथाएं		37
पश्चाताप	गोपाल शर्मा	40

पुस्तक समीक्षा

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
साहित्य व पत्रकारिता के विविध पक्षों को समाहित करती : शिमला डायरी	रत्न चंद निर्झर	50
गांव का वर्तमान चेहरा दिखाता 'ढोल की थाप' कहानी संग्रह	पवन चौहान	52
कुछ भी नहीं रचा जाता 'बेवजह यूं ही'	देवेंद्र सिंह सिसौदिया	55
ग्रामीण परिवेश की अनुभूति जगाती 'महासुवी लोक संस्कृति'	कल्पना गांगटा	56

अपनी बात

आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस के संक्रमण से त्रस्त है। विश्व के लगभग 200 देशों ने इस महामारी से लड़ने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। कोरोना से संक्रमित लोगों के इलाज में लगे डॉक्टरों, नर्सों व अन्य स्वास्थ्य कर्मियों सहित हजारों कोरोना वारियर्स को इस लड़ाई में अपने बहुमूल्य जीवन से हाथ धोना पड़ा है। आज हर देश के वैज्ञानिक इसके उपचार की दवाई तैयार करने में दिन रात जुटे हुए हैं। कोरोना की इस वैश्विक जंग में वैज्ञानिकों की शुरुआती सफलता के बाद अब कुछ अच्छे संकेत भी देखने को मिल रहे हैं। हमारे देश भारत सहित विश्व के अनेक राष्ट्रों द्वारा कोरोना की दवाई और टीका बनाने की दिशा में किए गए प्रयोग अब लगभग अंतिम चरण में हैं, जो कि इसके संक्रमण से ग्रस्त लाखों लोगों के लिए राहत की बात है। भारत में हैदराबाद स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी (आई.आई.सी.टी.) ने रेमेडिसविर के लिए स्टार्टिंग मैटेरियल यानी प्रमुख प्रारंभिक सामग्री (केएसएम) को सिन्थेसाइज्ड (संश्लेषित) किया है, जो कि सक्रिय दवा घटक विकसित करने की दिशा में पहला कदम है। कोरोना संकट के बीच इस बार प्रदेशवासी भले ही 15 अप्रैल को हिमाचल दिवस का पावन पर्व उतने बड़े स्तर पर न मना सके, फिर भी इस बार 73वें हिमाचल दिवस को लोगों ने घरों में रहकर ही मनाया। शायद भलाई भी इसी में थी, कि खुशियों के इन लम्हों को परिजनों के साथ ही मनाया जाता। प्रदेश के असंख्य लोगों ने अपने जन-नेताओं के नेतृत्व में हिमाचल को अलग राज्य बनाने के लिए लंबा संघर्ष किया। प्रदेशवासियों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान धामी गोलीकांड, पझौता आंदोलन, सुकेत सत्याग्रह तथा प्रजामंडल जैसे आंदोलनों के माध्यम से दोहरी लड़ाई लड़ते हुए अतुलनीय योगदान देकर अपनी देशभक्ति का परिचय दिया। देश की आजादी के ठीक आठ माह बाद 15 अप्रैल 1948 को छोटी-बड़ी 30 रियासतों के विलय के उपरांत हिमाचल प्रदेश एक प्रशासनिक इकाई के रूप में अस्तित्व में आया। प्रदेशवासी हिमाचल निर्माता डॉ वाई.एस. परमार के कृतज्ञ हैं जिन्होंने प्रदेश के गठन से लेकर पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने तक न केवल लंबी राजनीतिक लड़ाई का कुशल नेतृत्व किया बल्कि इस पहाड़ी राज्य में भावी विकास की ठोस नींव भी रखी। अस्तित्व में आने के पश्चात हिमाचल प्रदेश विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर है। वर्तमान सरकार के गत सवा दो वर्षों की अवधि में सुशासन, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि-बागबानी सहित सतत विकास लक्ष्यों में बेहतर प्रदर्शन करते हुए अनेक राष्ट्र-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त किए। प्रदेश के लोगों और सरकार के बीच सीधा संवाद स्थापित कर उनके घर-द्वार के निकट समस्याओं का समाधान करने के लिए शिकायत निवारण तंत्र को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाया गया है। इसके लिए आम जन को जनमंच तथा मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाईन-1100 जैसे शिकायत निवारण के प्रभावी मंचों से शिकायतों के त्वरित निवारण में सहायता मिली है। महिला सशक्तीकरण की दिशा में अहम कदम के तहत महिलाओं को धुएं से छुटकारा दिलाने में, हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना कारगर सिद्ध हुई है। प्रदेश के सभी परिवारों को निःशुल्क गैस कुनेक्शन सुविधा देने वाला हिमाचल प्रदेश देश का प्रथम राज्य बन गया है। लोगों को बेहतर एवं निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए आयुष्मान भारत योजना की तर्ज पर आरम्भ की गई, 'हिमकेयर' योजना के तहत पांच सदस्यों तक परिवार को 5 लाख रुपये तक प्रतिवर्ष निःशुल्क चिकित्सा सुविधा दी गई। प्रदेश सरकार द्वारा विकास के क्षेत्र में किए जा रहे सार्थक प्रयासों के परिणामस्वरूप हिमाचल प्रदेश आज पहाड़ी पर्वतीय विकास का आदर्श बनकर उभरा है।

वरिष्ठ संपादक

73वें हिमाचल दिवस पर विशेष

समावेशी विकास का उभरता मॉडल राज्य हिमाचल प्रदेश

हिमाचल दिवस पर मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर का आलेख

पंद्रह अप्रैल समस्त हिमाचलवासियों के लिए ऐतिहासिक एवं गौरवमय दिवस है। देश की आज़ादी के उपरांत वर्ष 1948 को इसी दिन 30 छोटी-बड़ी पहाड़ी रियासतों के विलय से यह केन्द्र शासित चीफ कमीश्नर्ज़ प्रोविन्स के रूप में अस्तित्व में आया था। मैं 73वें हिमाचल दिवस के इस पावन अवसर पर समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं तथा प्रदेश के समग्र विकास की इस यात्रा में दिए गए योगदान के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

इस वर्ष कोरोना वायरस के कारण हमने अलग परिस्थितियों में इस पावन दिवस को सादगी से मनाने का निर्णय लिया है, जिसमें कोई विशेष आयोजन नहीं किया जाएगा, ताकि लोग घरों में सुरक्षित रहें।

भारतीय संविधान लागू होने के बाद वर्ष 1952 में हिमाचल प्रदेश को 'पार्ट सी स्टेट' बना कर इसके लिए विधान मंडल की व्यवस्था की गई। 24 मार्च, 1952 को प्रदेश में प्रथम लोकप्रिय सरकार बनी और डॉ. यशवंत सिंह परमार प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री बने। एक नवंबर, 1956 को हिमाचल को केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया। 25 जनवरी, 1971 को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा प्राप्त कर हिमाचल प्रदेश, देश का 18वां राज्य बना। यह अवसर उन सभी महानुभावों को स्मरण करने का भी है, जिन्होंने प्रदेश के गठन से पूर्व तथा बाद में इस प्रदेश की पहचान बनाए रखने में अपना भरपूर योगदान दिया।

हिमाचल प्रदेश ने लगभग शून्य से अपनी विकास यात्रा आरम्भ की थी। वर्ष 1950-51 के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार यहां कुल साक्षरता दर मात्र 4.8 प्रतिशत थी, महिलाओं की साक्षरता दर केवल 2.9 प्रतिशत थी। 301 शैक्षणिक संस्थान केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित थे। उस समय मात्र 88 स्वास्थ्य संस्थान थे। 288 कि.मी. लम्बी सड़कें थीं, वह भी अधिकतर कच्ची। प्रदेश के किसी भी गांव में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं था। गांवों के लोगों को मीलों दूर चश्मों व बावड़ियों से पानी ढोना पड़ता था। बिजली की सुविधा भी छः गांवों तक सीमित थी।

प्रदेश की इस विकास यात्रा में, वर्तमान सरकार के सेवाकाल के गत सवा दो वर्ष विशेष महत्त्व रखते हैं। इस अल्प अवधि में प्रदेश ने विकास की नई बुलंदियां छुई हैं और प्रदेश का समग्र विकास सुनिश्चित किया है। प्रदेश को इस अवधि में सुशासन, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि-बागबानी सहित सतत विकास लक्ष्यों में बेहतर प्रदर्शन के लिए अनेक राष्ट्र-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

प्रति व्यक्ति आय केवल 240 रुपये थी।

आज हिमाचल की गिनती देश में एक खुशहाल, प्रगतिशील तथा सम्पन्न राज्यों की श्रेणी में होती है। प्रदेश में सड़कों की लम्बाई 38 हजार किलोमीटर हो गई है। 97 प्रतिशत से भी अधिक पंचायतें सड़कों से जुड़ चुकीं हैं। शेष पंचायतों को शीघ्र ही सड़क से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। शिक्षण संस्थानों की संख्या 15,553 हो गई है तथा साक्षरता दर 82.80 प्रतिशत तक पहुंच गई है। प्रदेश में 4,320 स्वास्थ्य संस्थानों का बड़ा नेटवर्क लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं प्रदान कर रहा है। आज प्रदेश के सभी गांवों में बिजली उपलब्ध है। यहां तक कि हिमाचल प्रदेश आज 'सरप्लस बिजली राज्य' बन चुका है। प्रति व्यक्ति आय भी बढ़कर 1,95,255 रुपये हो गई है।

प्रदेश की इस विकास यात्रा में, वर्तमान सरकार के सेवाकाल के गत सवा दो वर्ष विशेष महत्त्व रखते हैं। इस अल्प अवधि में प्रदेश ने विकास की नई बुलंदियां छुई हैं और प्रदेश का समग्र विकास सुनिश्चित किया है। प्रदेश को इस अवधि में सुशासन, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि-बागबानी सहित सतत विकास लक्ष्यों में बेहतर प्रदर्शन के लिए अनेक राष्ट्र-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

जन संवाद को प्राथमिकता : प्रदेश की जनता के साथ सीधा संवाद स्थापित करने और जन समस्याओं का शीघ्र निपटारा करने तथा शिकायत निवारण तंत्र को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने के लिए जनमंच व मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाईन-1100 जैसे महत्त्वाकांक्षी प्लेटफॉर्म आरंभ किए गए हैं। अब तक आयोजित 189 जनमंच में कुल 45,708 शिकायतें व मांगें प्राप्त हुई हैं जिनमें से 91 प्रतिशत शिकायतों का समाधान किया जा चुका है।

मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाईन के माध्यम से प्रदेश का कोई भी नागरिक टोल फ्री नम्बर-1100 पर डायल कर अपनी शिकायत दर्ज करवा सकता है। यह सुविधा थोड़े समय में ही काफी लोकप्रिय हुई है तथा 31 मार्च, 2020 तक 74,616 शिकायतें प्राप्त की गईं, जिनमें से 68,291 का समाधान किया जा चुका है।

सामाजिक सुरक्षा : प्रदेश सरकार ने वृद्धजनों के लिए सामाजिक सुरक्षा पेंशन पाने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष करने का निर्णय लिया जिसमें आय सीमा की शर्त को भी हटा दिया गया। इस समय 2,90,194 वृद्धजन इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं जिन्हें 1500 रुपये प्रतिमाह की सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्राप्त हो रही है। विधवाओं व दिव्यांगजनों की सामाजिक सुरक्षा पेंशन को, प्रथम अप्रैल, 2020 से 850 रुपये प्रतिमाह से बढ़ाकर 1000 रुपये प्रतिमाह किया गया है।

महिला सशक्तिकरण : महिला सुरक्षा के लिए गुड़िया हेल्पलाईन और शक्ति बटन ऐप सुविधाएं आरम्भ की गई हैं। हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना के अंतर्गत 2.76 लाख से भी अधिक गैस कुनेक्शन महिलाओं को निःशुल्क वितरित किए गए हैं। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत भी 1.36 लाख गैस कुनेक्शन बांटे गए हैं। हिमाचल प्रदेश देश में सभी को घरेलू गैस कुनेक्शन सुविधा प्रदान करने वाला प्रथम राज्य बन गया है।

निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएं : प्रदेश में 'हिमकेयर' योजना आरम्भ की गई है, जिसके अंतर्गत एक परिवार के पांच सदस्य तक 5 लाख रुपये तक की प्रतिवर्ष निःशुल्क चिकित्सा सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। योजना के अंतर्गत अब तक 5.50 लाख परिवार अपना कार्ड बना

चुके हैं।

हिमकेयर योजना के तहत लगभग 76 हजार रोगियों का उपचार किया गया, जिस पर लगभग 70 करोड़ रुपये व्यय हुए। आयुष्मान भारत योजना का भी 56 हजार रोगियों ने लाभ उठाया है, जिस पर लगभग 56 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं।

गंभीर बीमारियों से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए सहारा योजना भी आरम्भ की गई है। योजना के अंतर्गत गरीब परिवारों के पात्र रोगियों को अब 2000 रुपये के बजाय 3000 रुपये प्रतिमाह सहायता प्रदान करने की घोषणा की गई है।

संसाधन एवं रोजगार सृजन : प्रदेश को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने तथा युवाओं को रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास आरंभ किए गए हैं। निवेशकों को आकर्षित करने के लिए प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की गई है तथा निवेशकों की सुविधा के लिए नई नीतियां बनाई गई हैं। परियोजनाओं की स्वीकृतियों को समयबद्ध आधार पर प्रदान करने तथा ऑनलाइन मॉनिटरिंग करने के लिए हिम प्रगति पोर्टल विकसित किया गया है। धर्मशाला में ग्लोबल इन्वेस्टर्ज मीट आयोजित की गई, और प्रदेश में 97,700 करोड़ रुपये के प्रस्तावित निवेश के 736 समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किए जा चुके हैं, जिनमें लगभग 2 लाख युवाओं के लिए रोजगार प्रस्तावित है।

वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने प्रदेश के समग्र विकास के लिए उदार वित्तीय सहायता प्रदान की है, जिसमें 15वें वित्तायोग द्वारा वर्ष 2020-21 में हिमाचल के लिए 19,309 करोड़ रुपये वार्षिक अनुदान की सिफारिश भी शामिल है। मैं, इस उदार वित्तीय सहायता के लिए प्रधानमंत्री का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

आज समूचा विश्व कोरोना वायरस महामारी का सामना कर रहा है। देश के दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस संक्रमण को रोकने के लिए समय पर उचित तथा दृढ़ निर्णय लिए। प्रधानमंत्री ने अब 3 मई, 2020 तक लॉकडाउन की घोषणा की है और इस ठोस निर्णय को लेने के लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं।

प्रदेश सरकार ने इस महामारी पर नियंत्रण के लिए प्रभावी कदम उठाए हैं। मैं स्वयं प्रतिदिन स्थिति का जायजा ले रहा हूं। सरकार ने लोगों की सुविधा के लिए राज्य नियंत्रण कक्ष, ज़िला नियंत्रण कक्ष तथा हेल्पलाईन नम्बर स्थापित किए हैं।

प्रदेश में आवश्यक वस्तुओं की कोई कमी नहीं है और इनकी आपूर्ति घर-द्वार तक पहुंचाने के लिए होम डिलीवरी की व्यवस्था की गई है। वस्तुओं की जमाखोरी तथा मुनाफाखोरी करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं।

राज्य सरकार ने प्रदेश में 6 अस्पताल कोविड-19 अस्पताल के रूप में अधिसूचित किए हैं। आवश्यक दवाइयों को घर-द्वार तक पहुंचाने की व्यवस्था बनाई गई है। राज्य में एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान के अंतर्गत स्वास्थ्य कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों की स्वास्थ्य जानकारी एकत्र कर रहे हैं। राज्य में लगभग 50 स्वास्थ्य उप-केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में टेली-मेडिसिन सुविधाएं शुरू की गई हैं।

क्वारंटीन किए गए लोगों के रहने व भोजन की उचित व्यवस्था की गई है। इन क्वारंटीन केन्द्रों में लगभग 6600 बिस्तरों की सुविधा हैं। इसके अलावा 510 बिस्तर आइसोलेशन के लिए उपलब्ध है।

किसानों व बागबानों का विशेष ध्यान रखते हुए कृषि से जुड़ी वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है तथा कृषि से संबंधित कार्यों के लिए अनुमति प्रदान की गई है। केंद्र सरकार ने हाल ही में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत 174.76 करोड़ रुपये जारी किए हैं, जिससे प्रदेश के 8,73,838 किसान लाभान्वित हुए हैं। इस योजना के तहत केन्द्र सरकार द्वारा इस प्रदेश के किसानों को जनवरी, 2020 तक 597 करोड़ की राशि पहले ही जारी की जा चुकी है।

प्रदेश सरकार ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, आशा कार्यकर्ताओं, मिड-डे-मील कार्यकर्ताओं, सिलाई अध्यापकों, पंचायत चौकीदारों, पैरा पम्प ऑपरेटर, पैराफिटर, जलरक्षक तथा नम्बरदारों के मानदेय को बढ़ाते हुए अप्रैल माह के मानदेय की अदायगी अप्रैल के प्रथम सप्ताह में अग्रिम रुप से देने के निर्देश दिए हैं। इसी प्रकार दैनिकभोगी तथा अंशकालिक कर्मियों के वेतन को भी बढ़ाते हुए अप्रैल माह के वेतन की अदायगी अप्रैल के प्रथम सप्ताह में अग्रिम रुप से देने के निर्देश दिए हैं।

सरकार ने कोविड-19 के संकट को देखते हुए, आगामी

तीन माह की सामाजिक सुरक्षा पेंशन भी जारी कर दी है। उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को तीन सिलेंडर निःशुल्क प्रदान किए जा रहे हैं।

प्रदेश के मुख्यमंत्री, मंत्रियों, विधानसभा अध्यक्ष व उपाध्यक्ष, मुख्य सचेतक, विधायकों, अध्यक्ष व उपाध्यक्ष तथा अन्य राजनीतिक तौर पर नियुक्त किए गए व्यक्तियों के वेतन और भत्तों को एक वर्ष के लिए 30 प्रतिशत तक कम किया जाएगा। विधायक क्षेत्र विकास निधि को भी दो वर्ष के लिए स्थगित कर दिया गया है ताकि इस धनराशि को कोरोना वायरस पर नियंत्रण पाने पर खर्च किया जा सके।

सरकार ने 'हिमाचल प्रदेश कोविड-19 सॉलिडेरिटी रिस्पांस फंड' गठित किया है जिसमें लोग स्वेच्छा से अंशदान कर सकते हैं। इस राशि का प्रयोग कोरोना वायरस से निपटने के लिए किया जाएगा।

प्रदेश सरकार द्वारा समय पर लिए गए उचित निर्णयों तथा प्रभावी कदमों के परिणामस्वरूप प्रदेश में कोरोना वायरस महामारी को फैलने से रोकने में हम काफी हद तक सफल हुए हैं। प्रदेश में कोविड-19 पॉजिटिव लोगों की संख्या जो 32 तक चली गई थी वह घट रही है। इसके लिए सभी प्रदेशवासी बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने सरकार द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों की अनुपालना करते हुए घरों में रहकर इस लड़ाई को लड़ने में भरपूर सहयोग दिया है।

इस अवसर पर मैं कोविड-19 के विरुद्ध लड़ाई में अग्रिम पंक्ति में सक्रिय रूप से कार्य करने वाले लोगों विशेषकर डॉक्टरों, नर्सों व पैरामेडिकल स्टाफ, सफाई कर्मचारी, प्रशासन, पुलिस व होमगार्ड, आपदा प्रबन्धन, बैंक, मीडिया कर्मियों का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूं।

मैं उन सभी दानी सज्जनों का भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने 'हि.प्र. कोविड-19 सॉलिडेरिटी रिस्पांस फंड' में उदारता से योगदान दिया है और लोगों का आह्वान करता हूं कि इस फंड में उदारता से अंशदान करें।

मैं प्रदेशवासियों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि संकट की इस घड़ी में घबराए नहीं और संयम से सरकार के आदेशों की अनुपालना करते हुए सामाजिक दूरी बनाए रखें। सरकार हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार है तथा प्रदेशवासियों के जीवन तथा स्वास्थ्य की सुरक्षा लिए प्रतिबद्ध है।

मुझे पूरा विश्वास है कि 3 मई, 2020 तक आप सभी कर्फ्यू में पूरा सहयोग करेंगे और अपने घरों पर रहेंगे। हम सबके संयुक्त प्रयास से कोरोना हारेगा और हम जीतेंगे। स्थिति सामान्य होने पर हम प्रदेश में विकास और अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए उचित कदम उठाएंगे तथा प्रदेश के हर वर्ग व क्षेत्र की विकासात्मक गतिविधियां पुनः आरम्भ करेंगे।

मैं हिमाचल दिवस की एक बार पुनः आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और आपके स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं।

पूर्ण राज्य के रूप में यह प्रदेश अपने पांच दशक का सफर पूरा कर रहा है। प्रदेश के विकास की गाथा को स्मरणीय बनाने के लिए, इस वर्ष को 'स्वर्ण जयंती वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। वर्षभर आयोजित होने वाले समारोहों में अनेक गतिविधियां आयोजित की जाएंगी, ताकि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्रदेश के विकास में दिए गए योगदान को रेखांकित किया जा सके तथा साथ ही भविष्य की विकास यात्रा में प्रदेशवासियों को सक्रिय भागीदार बनने के प्रति प्रेरित किया जा सके।

हिमाचल गठन

शांतिप्रिय लोगों की असाधारण संघर्ष गाथा

◆ वेद प्रकाश

हिमाचल प्रदेश इस वर्ष अपने पूर्ण राज्यत्व की 50वीं जयंती मना रहा है। यह पहाड़ी प्रदेश भले ही 15 अप्रैल 1948 को अस्तित्व में आया हो लेकिन हिमाचल प्रदेश के वर्तमान भू-भाग को प्रागैतिहासिक काल के एक ऐसे क्षेत्र के रूप में जाना जाता है जिसने मानव जाति को पल्लवित कर इसकी समृद्ध परम्पराओं को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सृष्टि के आदिपुरुष मनु का मनवालय हो या ऋषिगण वशिष्ठ, व्यास, भृगु के आश्रम, इन सभी ऋषि-मुनियों का यहां की पावन धरा से गहरा संबंध रहा है, शायद इसीलिए इस पर्वतीय प्रदेश में आज भी देवसंस्कृति की झलक देखी जा सकती है। अंग्रेजी शासन के दौरान पंजाब हिल स्ट्रेटस तथा शिमला हिल स्ट्रेटस के रूप में छोटी-छोटी रियासतों में बंटा होने के कारण यह समूचा पहाड़ी क्षेत्र विकास की दृष्टि से बहुत ही पिछड़ा हुआ था जहां अशिक्षा और पिछड़ेपन को ही लोगों की नियति माना जाता था। प्रदेश के संक्षिप्त इतिहास पर नजर दौड़ाने से पता चलता है कि प्रदेश के कर्मठ एवं ईमानदार लोगों ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के साथ-साथ पृथक राज्य के गठन के लिए अंग्रजों और रियासतों के खिलाफ लड़ाई के रूप में दोहरे संघर्ष का सामना किया।

वर्ष 1857 के भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश आजाद होने तक यहां जितने भी आंदोलन या क्रांतियां हुईं उन सभी में इस पहाड़ी प्रदेश के लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान धामी गोलीकांड, पझौता आंदोलन, सुकेत सत्याग्रह तथा प्रजामंडल जैसे जन आंदोलनों के माध्यम से प्रदेश की देशभक्त जनता ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम की लहर में प्रजामंडल आंदोलनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इस दौरान शिमला और पंजाब हिल स्टेटस में प्रजामंडलों का विकास एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। शिमला देश की ग्रीष्मकालीन राजधानी होने के कारण इन मंडलों के संचालन एवं कार्य-कलापों के साथ-साथ अन्य आंदोलनों का भी केंद्र बना हुआ था। लोगों को लामबंद कर पहाड़ी रियासतों के हिमाचल प्रदेश के रूप में एकीकरण में प्रजामंडल के नेताओं को अंतर्राज्यीय गतिविधियों, रियासती प्रजामंडल तथा बाद में हिमालयन स्टेट्स रीजनल कौंसिल की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

प्रदेश के इस क्रमिक घटनाक्रम के दौरान छोटी-छोटी रियासतों में बने प्रजामंडलों को इकट्ठा कर हिमालय रियासती प्रजामंडल की स्थापना की गई। प्रदेश के कुनिहार, चंबा, मंडी, सुकेत, सिरमौर, बुशहर, बिलासपुर तथा अन्य छोटी-छोटी रियासतों में भी प्रजामंडल संगठित होकर संघर्ष के मार्ग पर चल पड़े। वर्ष 1945 में बुशहर प्रजामंडल का गठन हुआ। इसी वर्ष के अंत में उदयपुर में 'ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल कांफ्रेंस' का अधिवेशन आयोजित किया गया। अधिवेशन के उपरांत वहीं पर पहाड़ी रियासत के प्रतिनिधियों ने क्षेत्र में प्रजामंडल को सुचारू रूप से चलाने के लिए जनवरी 1946 में 'हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काउंसिल' नाम से एक संस्था की स्थापना की। इसके प्रधान स्वामी पूर्णानंद बने व इसका कार्यालय मंडी रखा गया। पं. पदमदेव को इसका मुख्य सचिव, श्याम चंद नेगी को उपप्रधान तथा शिवानंद रमौल को संयुक्त सचिव बनाया गया। काउंसिल का प्रथम सम्मेलन 8 से 10 मार्च, 1946 को मंडी में हुआ। इस सम्मेलन में पहाड़ी लोगों के हित में तथा राजाओं को अत्याचारों को रोकने के लिए 14 प्रस्ताव पारित किए गए। तदोपरांत 31 अगस्त और पहली सितंबर, 1946 को नाहन में सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके उपरांत प्रजामंडल के नेताओं ने अपनी-अपनी रियासतों में आंदोलन को तेज किया।

फरवरी 1947 में भज्जी के लीला दास वर्मा, बिलासपुर के कांशी राम उपाध्याय तथा प्रजामंडल के कुछ अन्य कार्यकर्ता डॉ. यशवंत सिंह परमार के पास दिल्ली गए और उन्हें शिमला लेकर आए। शिमला में पं. पदमदेव, शिवानंद रमौल, दौलत राम सांख्यान, पं. सीता राम, दुर्गा सिंह राठौड़ और अन्य पहाड़ी नेताओं के आग्रह पर डॉ. परमार स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए। उन्होंने शिमला के उपनगर संजौली में कृष्ण विला लॉज में रहना आरंभ किया और वहीं पर लीला दास वर्मा ने प्रजामंडल का कार्यालय खोला। यह वही दौर था डॉ. यशवंत सिंह परमार ने क्षेत्र में राजनीतिक पटल पर पूर्णकालिक रूप में पदार्पण कर पहाड़ी रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन का कुशल नेतृत्व किया और पहाड़ी क्षेत्रों के एकीकरण के आंदोलन को नई दिशा प्रदान की।

मार्च, 1947 में हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काउंसिल की बैठक शिमला के रॉयल होटल में आयोजित की गई। डॉ. यशवंत सिंह परमार को नई काउंसिल का प्रधान चुना गया। इसका पहला

सम्मेलन 31 जुलाई 1947 को शिमला की पहाड़ी रियासत सांगरी में आयोजित किया गया। लोगों की भावनाओं तथा सम्मेलन की सफलता को देखते हुए सांगरी का राजा परिवार सहित रियासत छोड़कर कुल्लू के आनी को पलायन कर गया।

अगस्त 1947 में सिरमौर प्रजामंडल ने नाहन में सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में सिरमौर के राजा राजेंद्र प्रकाश ने भी भाग लिया। 18 फरवरी, 1948 को पं. पदमदेव के नेतृत्व में सत्याग्रहियों ने तत्तापानी के रास्ते सुकेत रियासत में प्रवेश किया। 25 फरवरी को सुकेत की राजधानी सुंदरनगर पहुंचे और वहां प्रजामंडल के सम्मुख रियासत की फौजी टुकड़ी ने हथियार डाल दिए। प्रजामंडल के नेता क्षेत्र की सभी पहाड़ी रियासतों को मिलाकर एक पहाड़ी राज्य बनाने के पक्ष में थे। इसी के दृष्टिगत 4 जनवरी 1948 को शिमला में एक कांफ्रेंस का आयोजन किया गया जिसमें पहाड़ी रियासतों के प्रजामंडल नेताओं ने हिस्सा लिया। सुकेत में आयोजित अन्य कांफ्रेंस में 'हिमालय प्रांत' बनाने के पक्ष में प्रस्ताव पारित हुआ। इसके पश्चात 13 जनवरी 1948 को दूसरी कांफ्रेंस कोटगढ़ में तथा तीसरी कांफ्रेंस रामपुर में हुई जिसमें 'हिमायल प्रांत' के गठन की पुरजोर वकालत की गई। इसी क्रम में 25 जनवरी, 1948 को शिमला के गंज मैदान में एक विशाल जनसभा हुई। इसमें प्रजामंडल के कई नेताओं ने भाग लिया। डॉ. यशवंत सिंह परमार की अध्यक्षता में आयोजित सभा में पहाड़ी रियासतों के भारतीय संघ में विलय पर सहमति व्यक्त की गई और 'हिमालय प्रांत' के गठन का प्रस्ताव पारित किया गया। पं. पदम देव व अन्य प्रजामंडलियों ने डॉ. परमार के प्रस्तावों का समर्थन किया। परंतु पहाड़ी रियासतों के भीतर और बाहर आंदोलनकारी नेताओं में रियासतों के भविष्य के बारे में काफी मतभेद बना रहा। पंजाब के नेता सब पहाड़ी रियासतों को पंजाब में मिलकर 'महापंजाब' प्रांत बनाने के हक में थे। उधर उत्तर प्रदेश के नेतागण टिहरी-गढ़वाल, सिरमौर के साथ शिमला की पहाड़ी रियासतों को भी उत्तर प्रदेश में मिलाने के हक में थे जबकि महाराजा पटियाला के समर्थक नालागढ़, क्योंथल, सिरमौर, चंबा और शिमला हिल्ज की रियासतों को मिलाकर कोहीस्तान बनाना चाहते थे। दूसरी ओर केंद्रीय सरकार भी छोटे प्रांत बनाने के हक में न थी। इस वैचारिक मतभेद के चलते पहाड़ी रियासतों के नेता भी दो अलग गुटों में बंट गए।

उधर स्वाधीनता दिवस के अवसर पर ठियोग रियासत के प्रजा मंडल के नेताओं ने राणा कर्मचंद को सत्ता छोड़ने पर मजबूर किया। ठियोग पहली रियासत थी जो हिमाचल प्रदेश के बनने से पूर्व ही भारतीय संघ में मिल गई। इसी तरह शेष रियासतें भी प्रजामंडल के सदस्यों ने शेष रियासतों के खिलाफ आंदोलन को तेज किया। इस दौरान पहाड़ी रियासतों को पूर्वी पंजाब में मिला देने की मांग भी उठी। पूर्वी पंजाब के गवर्नर चंदू लाल त्रिवेदी तथा मुख्य मंत्री गोपी चंद भार्गव ने शिमला के बार्नेस कोर्ट व पंजाब सचिवालय एलर्जली से पं. जवाहर लाल नेहरू तथा सरदार पटेल को पत्र लिखकर पहाड़ी रियासतों को पूर्वी पंजाब में मिलाने का आग्रह किया। इन प्रस्तावों का रियासतों के शासकों व लोगों ने डटकर विरोध किया। प्रजामंडल के नेताओं का तर्क था कि इन रियासतों के लोग भाषा, संस्कृति और सामाजिक व्यवहार के लिहाज से पंजाब के लोगों से एकदम भिन्न हैं। यह बात नेहरू तथा पटेल ने पंजाब के गवर्नर व मुख्यमंत्री के पत्रों के उत्तर में लिखी। शिमला की पहाड़ी रियासतों के राजाओं ने जनवरी, 1948 के प्रथम सप्ताह में दिल्ली में बैठक आयोजित कर एक प्रस्ताव पारित किया - "पूर्ण रूप से विचार करने के उपरांत यह निर्णय लिया गया है कि जनभावनाओं को ध्यान में रखते हुए शिमला की सभी पहाड़ी रियासतों को एक संघ के रूप में संगठित किया जाए।" सभी रियासतों को संदेश भेजा गया कि वे 26 जनवरी, 1948 को आयोजित होने वाले सम्मेलन में भाग लें। बघाट के राजा दुर्गा सिंह तथा मंडी के राजा जोगिंद्र सेन ने दिल्ली में महात्मा गांधी से भेंट की। गांधी जी ने दोनों राजाओं को सलाह दी कि प्रजामंडल तथा राजाओं के प्रतिनिधियों की बैठक बुलाकर अपने भविष्य के बारे में कोई फैसला लें। राजाओं तथा प्रजामंडल के प्रतिनिधियों का सम्मेलन बघाट के राजा दुर्गा सिंह की अध्यक्षता में 26 से 28 जनवरी 1948 को सोलन के दरबार हाल में हुआ। इस सम्मेलन में शिमला की पहाड़ी रियासतों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में सभी ने पहाड़ी रियासतों को मिलाकर एक ही भौगोलिक एवं प्रशासनिक इकाई बनाने की पुरजोर मांग रखी। राजाओं तथा साथ ही चंबा, मंडी, बिलासपुर, सुकेत, सिरमौर आदि के शासकों व प्रजामंडल के नेताओं से बातचीत करने का प्रस्ताव भी रखा। इसी सभा में प्रस्तावित संघ का नाम 'हिमाचल प्रदेश' रखा गया।

इस दौरान 2 मार्च 1948 को भारत सरकार के राज्य मंत्रालय (मिनिस्ट्री ऑफ स्टेट्स) ने दिल्ली में शिमला एवं पंजाब की पहाड़ी

रियासतों के शासकों की बैठक बुलाई जिसमें मंत्रालय के सचिव सी.सी. देसाई ने पहाड़ी रियासतों के शासकों से बिना शर्त 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर करने को कहा। परंतु बघाट के राजा दुर्गा सिंह ने सोलन सम्मेलन के प्रस्ताव के अनुसार पहाड़ी रियासतों के एक अलग प्रांत 'हिमाचल प्रदेश' में सामूहिक विलय का आग्रह किया। सचिव देसाई ने इसका विरोध किया। पहाड़ी रियासतों के नेता व प्रजामंडल के प्रतिनिधि भागमल सौहटा, बुशहरी के नेतृत्व में नेताओं ने गृह मंत्री सरदार पटेल से मुलाकात कर सरदार पटेल को सोलन सम्मेलन का प्रस्ताव पेश किया और उनसे पहाड़ी रियासतों को मिलाकर एक अलग पहाड़ी प्रांत 'हिमाचल प्रदेश' के गठन की स्वीकृति देने की अपील की। तदोपरांत 8 मार्च, 1948 को शिमला की पहाड़ी रियासतों के राजाओं ने विलय पर हस्ताक्षर कर दिए। राज्य मंत्रालय (मिनिस्ट्री ऑफ स्टेट्स) के सचिव ने केंद्रीय सरकार की ओर से पहाड़ी रियासतों के विलय पत्र से एक अलग प्रांत 'हिमाचल प्रदेश' के गठन की घोषणा की। सचिव वी.पी. मेनन ने इस अवसर पर स्पष्ट किया कि 'हमने शिमला हिल स्टेट्स को मिलाकर केंद्र शासित प्रांत 'हिमाचल प्रदेश' बना दिया है और पंजाब हिल स्टेट्स के इसमें विलय की बात अभी विचाराधीन है। इस प्रकार 8 मार्च, 1948 को शिमला हिल्स की पहाड़ी रियासतों के विलय से 'हिमाचल प्रदेश' के गठन की प्रक्रिया आरंभ हुई। कुछ प्रतिनिधि इसका नाम हिमाचल प्रांत चाहते थे। लेकिन सरदार ने 'हिमाचल प्रदेश' नाम का ही अनुमोदन किया। इस प्रकार सोलन सम्मेलन के प्रस्ताव के अनुसार 'हिमाचल प्रदेश' का जन्म हुआ।

मंडी के राजा जोगेंद्र सेन ने 14 मार्च को विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। चंबा के राजा लक्ष्मण सेन भी जनता के दबाव से विवश होकर विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। सिरमौर व बिलासपुर की रियासतों ने अपनी रियासतों का विलय करने के पत्र पर हस्ताक्षर किए। 23 मार्च, 1948 को केंद्रीय वित्त सचिव ई.पी. कृपलानी के समक्ष विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। अंततः 15 अप्रैल, 1948 को पहाड़ी क्षेत्र की 30 छोटी-बड़ी रियासतों के विलय से हिमाचल प्रदेश अस्तित्व में आया और इसे केंद्र शासित चीफ कमीश्नर्ज प्रोविंस का दर्जा दिया गया। एन.सी. मेहता को हिमाचल का पहला चीफ कमीश्नर नियुक्त किया गया व पैन्ड्रल मून ने डिप्टी चीफ कमीश्नर के रूप में कार्यभार संभाला। शिमला हिल स्टेट्स की 26 छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर 'महासू' जिला बना दिया गया जबकि मंडी और सुकेत की रियासतों को एक करके मंडी जिला का नाम दिया गया। चंबा तथा सिरमौर के दो अलग-अलग जिले बना दिए गए। 1948 में इन चार जिलों में 23 तहसीलें बनाई गईं। उस समय हिमाचल का क्षेत्रफल 10,451 वर्गमील तथा जनसंख्या 9,83,367 थी।

हालांकि वर्ष 1952 तक हिमाचल प्रदेश चीफ कमीश्नर्ज प्रोविंस के रूप में केंद्र सरकार के अंतर्गत विकास पथ पर अग्रसर रहा परंतु लोकप्रिय सरकार न होने के कारण इस प्रदेश के नेता और प्रजा का 'स्वराज का सपना' अभी पूरा नहीं हुआ था। प्रदेशभर में चीफ कमीश्नर के विरोध में आंदोलन और जुलूस होते रहे। इस दौरान डॉ. यशवंत सिंह परमार कांग्रेस के शीर्ष नेता के रूप में उभर कर सामने आए। उनके नेतृत्व में प्रदेश कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश में लोकप्रिय सरकार की व्यवस्था के लिए केंद्रीय सरकार से संवैधानिक संघर्ष किया। अंततः केंद्र से हिमाचल प्रदेश को 'पार्ट सी स्टेट' का दर्जा प्राप्त हुई और यहां विधान मंडल की व्यवस्था की गई। वर्ष 1952 के आरंभ में भारत के प्रथम आम चुनावों के साथ हिमाचल में भी चुनाव हुए। 24 मार्च 1952 को प्रदेश में प्रथम लोकप्रिय सरकार बनी और डॉ. यशवंत सिंह परमार प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री बने। डॉ. परमार 1952 से 1956 तक मुख्यमंत्री रहे परंतु उन्होंने विशाल हिमाचल के लिए संघर्ष जारी रखा। हिमाचल के अस्तित्व पर अभी भी खतरा समाप्त नहीं हुआ था, क्योंकि 'राज्य पुनर्गठन आयोग' ने हिमाचल को पंजाब में विलय करने की सिफारिश की थी। सभी राजनैतिक दलों ने मिलकर केंद्र सरकार के समक्ष अपना पक्ष मजबूती के साथ प्रस्तुत किया। अंततः हिमाचल को एक अलग भौगोलिक इकाई रखने का केंद्र सरकार से आश्वासन मिला जिसे पूरा करने के लिए हिमाचल प्रदेश की लोकप्रिय सरकार को बलिदान देना पड़ा। परिणामस्वरूप हिमाचल का पार्ट-सी-स्टेट का दर्जा घटाकर 'यूनियन टेरीटरी' कर दिया गया। प्रदेश विधान सभा भंग करने के बाद 31 अक्तूबर 1956 को डॉ. परमार की मंत्रिपरिषद् ने त्याग-पत्र दे दिया और हिमाचल के अस्तित्व को बचाने के लिए 'यूनियन टेरीटरी' का दर्जा स्वीकार कर लिया। एक नवंबर, 1956 को उप-राज्यपाल ने हिमाचल प्रदेश का शासन संभाल लिया। 15 अगस्त 1957 को हिमाचल प्रदेश में टेरीटोरियल कौंसिल बनी जिसमें प्रजा के प्रतिनिधि लिए गए। लेकिन इस काउंसिल का दर्जा महज एक जिला बोर्ड के समान था और जनता की लोकप्रिय सरकार की मांग पूरी न हो सकी। दिसंबर 1959 में हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने डॉ. परमार के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल दिल्ली भेजा। डॉ. परमार ने हिमाचल में लोकतंत्रीय सरकार की मांग केन्द्र के समक्ष प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की और विशाल हिमाचल के उद्देश्य व प्रस्ताव को केंद्रीय सरकार के सामने रखा। 24 जनवरी 1968 को प्रदेश विधान सभा में सर्वसम्मति से पूर्ण राज्य प्रदान करने का प्रस्ताव पारित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. परमार ने स्वयं केंद्र में प्रधानमंत्री और गृह मंत्री से बात की। परिणामस्वरूप 31 जुलाई, 1970 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने संसद में हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की घोषणा कर की और दिसंबर 1970 को संसद में स्टेट ऑफ हिमाचल प्रदेश एक्ट पास होने के साथ ही हिमाचल प्रदेश भारतीय गणतंत्र का 18वां राज्य बना।

(लेखक हिमप्रस्थ के वरिष्ठ संपादक हैं)

आलेख

कोरोना की वैश्विक जंग में भारत की प्रतिबद्धता

◆ डॉ. गिरधारी लाल महाजन

कोविड-19 नाम का यह वायरस दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान प्रान्त में पहली बार पकड़ में आया। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ, जुकाम, गले में खराश इसके शुरुआती लक्षण माने जाते हैं। यह वायरस खांसी और छींकने से गिरने वाली बूंदों के जरिए एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में संक्रमण पैदा करता है। कोविड-19 में पहले बुखार इसके बाद सूखी खांसी तथा एक सप्ताह बाद सांस लेने में तकलीफ पैदा होती है। यह वायरस मधुमेह, हृदय रोगियों तथा जीवन शैली से जुड़े रोगों से ग्रसित लोगों के लिए जानलेवा साबित हो सकता है। यह माना जाता है मजबूत प्रतिरोधक क्षमता के युवा लोगों को यह वायरस अपेक्षाकृत कम नुकसान करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक कोरोना वायरस संक्रमित होने से 88 प्रतिशत को बुखार, 68 प्रतिशत को खांसी, 38 प्रतिशत को थकान, 18 प्रतिशत को सांस लेने में तकलीफ, 14 प्रतिशत को शरीर और सिर में दर्द, 11 प्रतिशत को ठंड लगना और 4 प्रतिशत में डायरिया के लक्षण दिखाई देते हैं। कोरोना महामारी की शुरुआत चीन से हुई लेकिन बाद में दक्षिण यूरोप से होते हुए यह बीमारी अमेरिका में पहुंच गई। अकेले अमेरिका में कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या 60,000 पार कर गई है जोकि वियतनाम युद्ध में शहीद होने वालों से भी ज्यादा है।

इस बीमारी के इलाज की दवाई, वैक्सीन ढूंढने के लिए विश्व भर की प्रतिष्ठित मेडिकल संस्थाएं काम कर रही हैं। भारत का प्रतिष्ठित सरकारी संस्थान अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली सहित देश के लगभग 50 चोटी के संस्थानों के वरिष्ठ वैज्ञानिक इस बीमारी की दवा खोजने में कड़ी मशक्कत कर रहे हैं। दुनिया की सबसे ज्यादा वैक्सीन बनाने वाली महाराष्ट्र के पुणे की प्रतिष्ठित सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया ने इस महामारी के खातमे के लिए जल्द ही वैक्सीन का उत्पादन शुरू करने का फैसला किया है। इस कम्पनी द्वारा तैयार वैक्सीन का हालांकि अभी तक क्लीनिकल परीक्षण चल रहा है लेकिन इसके प्रारम्भिक परिणाम बहुत उत्साह जनक मिले हैं तथा कम्पनी में क्लीनिकल ट्रायल के चलते ही नियमित उत्पादन भी शुरू कर दिया है। कंपनी अपनी वैक्सीन का मई 2020 में मानव परीक्षण शुरु कर देगी। उधर प्रतिष्ठित ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने इस साल सितंबर तक कोरोना वायरस की वैक्सीन बाजार में उतारने की आशा जताई है तथा इस वैक्सीन का क्लीनिकल परीक्षण अप्रैल में शुरू कर दिया है। भारत विश्व में जैनरिक दवाइयों तथा वैक्सीन के उत्पदान में विश्व के अग्रणी देशों की कतार में आता है अकेले भारत की 6 बड़ी दवा निर्माता कंपनियां कोरोना वैक्सीन के निर्माण पर तेजी से कार्य कर रही हैं। इस समय पोलियो, निमोनिया, सैप्टिसीमिया (मस्तिष्क ज्वर), रोटावायरस, बी.सी.जी चेचक, खसरा, गल गण्ड रोग (मम्पस), रुबेला (हल्का खसरा) आदि बीमारियों के इलाज की प्रतिरोधक दवाएं/ वैक्सीन बनाने में भारत दुनिया के चोटी के देशों में गिना जाता है। भारत मलेरिया के इलाज की दवाई हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन का दुनिया में सबसे बड़ा उत्पादक देश है तथा इस माह में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के अनुरोध पर भारत ने कोरोना वायरस की सम्भावित दवाई के तौर पर अमेरिका सहित 20 देशों को हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन दवाई की खेप भेज कर इस लड़ाई में भारत की प्रतिबद्धता को जगजाहिर किया था जिसकी विश्व भर में सराहना हुई है भारत ने यह दवाई अमेरिका, ब्राजील, स्पेन, जर्मनी, बहरीन, नेपाल, भूटान, अफगानिस्तान, मालद्वीप, बांग्लादेश, मॉरिशस, इजराईल, कनाडा, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड सहित अनेक अफ्रीकी देशों को उपलब्ध करवाई है। अमेरिका के रोग नियन्त्रण केन्द्र ने हालांकि ठंड लगना, मांसपेशियों मे दर्द,

भारत मलेरिया के इलाज की दवाई हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन का दुनिया में सबसे बड़ा उत्पादक देश है तथा इस माह में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के अनुरोध पर भारत ने कोरोना वायरस की सम्भावित दवाई के तौर पर अमेरिका सहित 20 देशों को हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन दवाई की खेप भेज कर इस लड़ाई में भारत की प्रतिबद्धता को जगजाहिर किया था जिसकी विश्व भर में सराहना हुई है भारत ने यह दवाई अमेरिका, ब्राजील, स्पेन, जर्मनी, बहरीन, नेपाल, भूटान, अफगानिस्तान, मालद्वीप, बांग्लादेश, मॉरिशस, इजराईल, कनाडा, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड सहित अनेक अफ्रीकी देशों को उपलब्ध करवाई है।

सिरदर्द, सूंघने की शक्ति खत्म होना जैसे कोरोना के नए लक्षण बताए हैं लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इनकी पुष्टि या खंडन नहीं किया है। हालांकि बहुसंख्यक रोगी स्वतः ही कुछ दिनों बाद बिना किसी नियमित उपचार के ठीक हो जाते हैं लेकिन अगर किसी रोगी को सांस लेने में तकलीफ महसूस हो तो उन्हें अस्पताल में भर्ती करना आवश्यक हो जाता है, इस वायरस से मुख्यतः फेफड़ों पर प्रभाव पड़ता है तथा प्रभावित रोगियों को ऑक्सीजन या वैंटीलेटर की मदद से सहायता प्रदान की जाती है। अगर किसी भी व्यक्ति को हल्के लक्षण महसूस हों तो उसे तुरंत 'एकांतवास' (क्वारंटाइन) में चले जाना चाहिए।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोरोना वायरस की सूचना 31 दिसम्बर 2019 को मिली तो 2 जनवरी 2020 को इस बीमारी के खतरों के प्रति 70 देशों के 260 संस्थानों को आगाह किया गया तथा 4 जनवरी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी के बारे में सोशल मीडिया ट्विटर पर जानकारी प्रदान कर दी तथा तब तक इस बीमारी से अभी तक कोई भी मृत्यु नहीं हुई थी। कोरोना वायरस से पहली मौत 11 जनवरी को दर्ज की गई तथा 13 जनवरी को चीन के बाहर पहली बार थाइलैंड में कोरोना का मरीज पाया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 13 जनवरी 2020 को कोरोना मरीज की पहचान के लिए 'डायगनोस्टिक किट' संबधित दिशा-निर्देश जारी किए। विश्व स्वास्थ्य संगठन की टीम ने 20-21 जनवरी को वुहान का दौरा करने के बाद बताया कि कोरोना वायरस का संक्रमण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हो सकता है तथा इस समय तक चीन में कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्तियों की संख्या 581 हो चुकी थी तथा इससे चीन के बाहर दस व्यक्ति संक्रमित हो चुके थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 30 जनवरी को कोरोना वायरस को वैश्विक महामारी घोषित कर दिया था तथा उस समय तक चीन के बाहर कोरोना से किसी भी व्यक्ति की मौत नहीं हुई थी। कोरोना महामारी से लड़ने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अभी तक 20 लाख हैल्थ वर्करों को प्रशिक्षित किया है।

भारत में कोरोना का पहला मरीज केरल में 30 जनवरी को पाया गया। इस समय महाराष्ट्र में कोरोना के सर्वाधिक रोगी है तथा उसके बाद गुजरात तथा दिल्ली का नम्बर आता है, भारत में कोरोना मरीजों की मृत्यु दर मात्र 3 फीसदी दर्ज की गई है जबकि वैश्विक स्तर पर मृत्यु दर 7 प्रतिशत दर्ज की गई है। भारत में मात्र 0.33 प्रतिशत मरीजों को ही ऑक्सीजन प्रदान करनी पड़ीं। देश के पांच राज्य सिक्किम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणीपुर और त्रिपुरा कोरोना से पूरी तरह मुक्त हो गए हैं।

PhD Room No. 151, Indian Rotary Cancer Hospital,
All India Institute of Medical Sciences, New Delhi-22
मो. 0 98685 20019

कविता

बंद कमरे में

राम रत्न शर्मा

बंद कमरे में
सहमी सी
दुबकी पड़ी जिंदगी
अपने से लड़ती हुई जिदंगी
बचने को हाथ पांव मारती जिंदगी
यह सब कोरोना की सौगात
या कि -
बेलगाम लालसा का उपहार?
जब देखो
बस-
इसी सोच में फंसी है जिदंगी।

बाहर जो झांको तो बंद बाजार है
न कोई ग्राहक न कोई दुकानदार है
कहीं सजा तो बस मौत का दरबार है
यह देख कर सहमी है जिंदगी।

दूरदर्शन पर
जब भी कुछ आए तो केवल
मौत के आंकड़ों की आए खबर
तब ताबूत और कब्र ही आएं नजर

हे मानव!
तेरा ही निर्माण क्या तुझे खाएगा
यही सोच कर विमूढ़ हो रही जिंदगी।

हाउस कम शॉप, 64 ए, वार्ड 5 मेन मार्किट,
बिलासपुर, जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश

यात्रा संस्मरण

जनजातीय महिलाओं के थिरकते कदम

◆ डॉ. सूरत ठाकुर

व्यास नदी के दाएं तट के साथ राष्ट्रीय राजमार्ग पर हमारी आल्टो गाड़ी ने मनाली से 2 किलोमीटर नेहरू कुंड के आगे वाला मोड़ लांघा ही था कि देखा सामने विशालकाय पत्थर आने वाली सभी गाड़ियों को रोके खड़ा है। बस, ट्रक, मैक्सी कैब, कार, टेम्पो वाले जो सुबह अपने गंतव्य तक जल्दी पहुंचने के चक्र में अपने घरों से बिना कुछ खाये पिये निकले हुए थे। सभी पत्थर के इर्दगिर्द उसको घेरे हुए थे। सभी को चिंता सताए हुए थी कि वे अपने गंतव्य तक समय पर कैसे पहुंच पाएंगे।

हमारी गाड़ी सहित कई गाड़ियां आगे जाने से महरूम हो गई। देखते ही देखते दोनों ओर गाड़ियों की लंबी-लंबी लाइनें कतारबद्ध हुई। सभी सवारियां अपनी-अपनी गाड़ियों से बाहर निकलकर उपाय सोचने लगे कि कैसे इस चट्टान को हटाया जाय। परंतु विशालकाय चट्टान कह रही थी, मुझे कैसे खिसकाओगे? मैं कोई मामूली पत्थर नहीं, जिसे तुम हिला सको।

अभी 8:00 ही बजे थे। लोकनिर्माण विभाग के कर्मचारी तो 9:00 बजे के बाद आने थे। कुछ लोगों ने चट्टान को हिलाने का प्रयत्न भी किया, परंतु वह टस से मस नहीं हुई। थोड़ी देर में बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन के लोग अपने टैम्पू में आ गए। हालांकि वे रोहतांग की तरफ जा रहे थे। चट्टान को देख कर वे सभी टैम्पू से उतर गए और पत्थर तोड़ने में लग गए। लगभग डेढ़ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद चट्टान के कुछ हिस्से ने उसका साथ छोड़ दिया। चट्टान के हल्की होने पर उन्होंने उसे अपने स्थान से हिला दिया और रास्ता साफ हो गया। सब ने राहत की सांस ली और अपनी-अपनी गाड़ियां स्टार्ट करके आगे की ओर सरकना आरम्भ किया।

बरसात के मौसम में पहाड़ों में कभी भी सड़क पर मलबा तथा पत्थर गिरने का खतरा रहता है। बहुत सी गाड़ियां इसकी चपेट में आ जाती हैं और जानमाल का भी काफी नुकसान हो जाता है। तभी तो बरसात के मौसम से पहले ही गर्मी में कुल्लू-मनाली घूमने आए पर्यटक वापिस लौट जाते हैं।

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिला लाहुल-स्पीति में हर वर्ष 14 अगस्त से 16 अगस्त के बीच राज्य स्तरीय जनजातीय उत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव में लाहुल-स्पीति, किन्नौर और लेह-लद्दाख की संस्कृति के विविध पहलुओं का मंचन किया जाता है। इस वर्ष इस उत्सव में वॉइस ऑफ हिल्स के नाम से जनजातीय युवा गायक कलाकारों को मंच देने हेतु गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में उत्सव कमेटी ने मुझे भी आमंत्रित किया। इससे पहले मैं सन् 1983 में इस उत्सव में भाग लेने के लिये गया था। जिसमें हमने चंबा के गद्दियों द्वारा किये जाने वाला डंडारस नृत्य प्रस्तुत किया था।

उसके बाद कई बार लाहुल जाने का अवसर मिला, परंतु इस उत्सव में शिरकत करने का अवसर नहीं मिला। जब मुझे इसमें अपनी भूमिका निभाने का अवसर मिल रहा था, तो तुरंत आयोजकों को अपनी सहमति दे दी। इस बहाने लाहुल की लोक संस्कृति को करीब से देखने का मौका मिलना मेरे लिये सौभाग्य की बात थी।

मेरे साथ कुल्लू महाविद्यालय में संगीत विभाग की सहायक आचार्य मोहिनी शर्मा भी शामिल थी। कुल्लू से लाहुल जाने के लिये मनाली, कोठी, गुलाबा, मढ़ी होकर रोहतांग दर्रे को लांघना पड़ता है। रोहतांग के बाद लाहुल घाटी में प्रवेश होता है। लाहुल जाने के लिये कुल्लू से समय-समय पर बसें चलती हैं। सोचा बस में लाहुल का सफर करें। मेरा बेटा सुधाकर भारतीय पोस्टल पेमेंट बैंक कुल्लू में मैनेजर है। लाहुल का प्रभार भी इसके पास है। उसने कहा कि वह भी बैंक के काम से लाहुल जा रहा है, अतः अपनी गाड़ी लेकर चलते हैं। इसलिए बस में न जाकर 13 अगस्त 2019 को हम अपनी गाड़ी में लाहुल की ओर रुखसत हुए। सुबह से ही वर्षा की फुहारें बरस रही थी।

सड़क पर गिरे बड़े पत्थर के हटते ही हमने भी अपनी गाड़ी का एक्सीलेटर दबाया और कोठी की सर्पीली सड़क से होते हुए गुलाबा बैरियर पर पहुंच गए। गत् दो-तीन सालों से नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने रोहतांग को प्रदूषण मुक्त करने के लिये सीमित संख्या

में वाहन चलाने की अनुमति दी है। जिसमें हर रोज केवल 400 डीजल और 800 पेट्रोल वाली गाड़ियां ही रोहतांग जा सकती हैं। इसके लिये ऑनलाइन परमिट लेने की व्यवस्था है। इसके अलावा लाहुल-स्पीति और लेह-लद्दाख जाने वाली गाड़ियों को भी सबूत पेश करते हुए जाने के लिये परमिट लेना पड़ता है। बरसात में रोहतांग जाने वाली गाड़ियों की संख्या कम ही रहती है, जबकि लाहुल जाने वाले वाहनों की संख्या काफी रहती है। मंगलवार सड़क मरम्मत का दिन होता है, अतः केवल लाहुल जाने वाली गाड़ियां ही इस सड़क पर गतिमान रहती हैं।

गुलाबा में अपनी गाड़ी की एंट्री करके हम आगे बढ़े। गुलाबा की चरागाह रंग-बिरंगे फूलों से सुशोभित थीं। ऐसा लग रहा था कि इनके सान्निध्य में कुछ पल गुजार लें। परन्तु बादलों को हमारी इच्छा स्वीकार नहीं थी। उन्होंने पूरे क्षेत्र को अपने आगोश में ले लिया। धुन्ध इतनी घनी हो गई कि सामने 4-6 फुट तक देखना भी मुनासिब नहीं हो रहा था। अतः धीरे-धीरे 10-20 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ी चलानी पड़ी।

जब लाहुल के लिये वाहन योग्य मार्ग नहीं था, तब मनाली से गुलाबा होकर पैदल पगडंडी थी। कुल्लू के किसी कर्मचारी का तबादला लाहुल हो जाता था, तो वे एक कहावत जरूर कहा करते थे- पलचान कोठी गुलाबा, लाहुल नीं बौसणा बाबा। अर्थात् पलचान, कोठी, गुलाबा होकर लाहुल नहीं जाना। धीमी गति से सरकते हुए लगभग 11:30 बजे हम मढ़ी पहुंचे। मढ़ी, कुल्लू से लाहुल और वहां से वापिस आने वालों का पड़ाव है। इसलिये सभी गाड़ियां यहां रुकती हैं। पेट की आंतें भोजन ग्रहण करने के लिए कुलबुला रही थी। इसलिये एक ढाबे में गरमा-गर्म परांठे का स्वाद लिया।

मढ़ी से आगे रोहतांग तक भी चारों ओर धुन्ध छाई हुई थी। वर्षा जारी थी। नाश्ता करने के बाद लगभग एक घंटा रोहतांग पहुंचने में लगा। जैसे ही डेढ़ किलोमीटर लंबा रोहतांग दर्रा पार करके लाहुल की ओर उतरना आरम्भ किया तो न जाने धुन्ध किस तरफ जाकर गुम हो गई। घाटी सूर्य रश्मियों से जगमगा रही थी। रोहतांग से 16 किलोमीटर की उतराई उतरकर कोकसर में गाड़ी की एंट्री की। वहां बारालाचा के पूर्व से निकलती चंद्रताल झील का जल अपने में समाहित करती हुई चंद्रा नदी पर बने पुल से निकलकर उसके दाएं तरफ से केलांग को जाती हुई चौड़ी सड़क से गाड़ी सरपट दौड़ने लगी। मार्ग में सिस्सू, जहां पर रोहतांग सुरंग का पश्चिमी छोर मिलता है। पर्यटकों के लिये विशेष आकर्षण लिए हुए था। सिस्सू से आगे शाशिन में लाहुल के अधिपति देवता राजा घेपंग के मंदिर में माथा टेकने के बाद गोंधला होकर तांदी पहुंचे। सड़क किनारे खेतों में आलू, मटर, गोभी की फसल लहलहा रही थी।

तांदी लाहुल वासियों के लिये पवित्र संगम है। तांदी में चंद्रा का भागा के साथ विलय हो जाता है। इसीलिये इसे लाहुल का हरिद्वार कहा जाता है। लोकश्रुति है कि जब महाभारत युद्ध के बाद कई वर्षों तक इंद्रप्रस्थ पर राज्य करने के बाद पांडवों ने निर्वाण प्राप्त करने के लिये हिमालय आरोहण किया था, तो इस स्थान पर आकर द्रौपदी ने तन त्यागा था। जिस कारण इस स्थान का नाम तांदी पड़ा। लाहुल के लोग इसी संगम पर मृतक की अस्थियों को प्रवाहित करते हैं।

तांदी संगम में चंद्रा-भागा के मिलन के नजारे को देखना अपने आप में अनूठा अनुभव था। यहां से केलांग की दूरी 7 किलोमीटर थी। बीच में बिलिंग गांव से केलांग के सामने की बर्फ से लकदक पहाड़ियां रोमांचित कर रही थी। केलांग पहुंचकर जिला परियोजना अधिकारी श्रीमती स्मृतिका नेगी के दफ्तर गए। उन्होंने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया और तुरंत हमारे रहने की व्यवस्था डे किड होटल में करवा दी। उत्सव 14 अगस्त को शाम 5 बजे से आरम्भ होना था। अतः 14 अगस्त की सुबह नाश्ता करने के तुरंत बाद पट्टन घाटी में प्रसिद्ध त्रिलोकनाथ तथा मृकुला भगवती मंदिर देखने निकल पड़े। यद्यपि मैं कई बार इन्हें देख चुका हूं, फिर भी लाहुल आने पर इन्हें देखने की इच्छा बनी रहती है।

पट्टन घाटी लाहुल की सबसे समृद्ध घाटी है। सड़क के दाएं-बाएं बड़े-बड़े मकानों से युक्त गांव ठोलंग, जाहलमा, कीर्तिंग, मोरिंग, घोशाल, शानशा, त्रिलोकनाथ तथा उदयपुर लाहुल की समृद्धि के जीते जागते उदाहरण हैं। आज से दस वर्ष पहले तक केलांग से उदयपुर तक सड़क तंग थी और ऊबड़खाबड़ भी थी। जब से यह सड़क बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन के अधीन हुई है, तब से यह पूरी तरह पक्की और चौड़ी हो चुकी है। अतः त्रिलोकनाथ और उदयपुर जाने में अधिक समय नहीं लगता। त्रिलोकनाथ और मृकुला देवी के दर्शन करने के बाद हम दोपहर तक केलांग लौट आये।

दोपहर बाद केलांग में

पट्टन घाटी लाहुल की सबसे समृद्ध घाटी है। सड़क के दाएं-बाएं बड़े-बड़े मकानों से युक्त गांव ठोलंग, जाहलमा, कीर्तिंग, मोरिंग, घोशाल, शानशा, त्रिलोकनाथ तथा उदयपुर लाहुल की समृद्धि के जीते जागते उदाहरण हैं। आज से दस वर्ष पहले तक केलांग से उदयपुर तक सड़क तंग थी और ऊबड़-खाबड़ भी थी। जब से यह सड़क बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन के अधीन हुई है, तब से यह पूरी तरह पक्की और चौड़ी हो चुकी है। अतः त्रिलोकनाथ और उदयपुर जाने में अधिक समय नहीं लगता। त्रिलोकनाथ और मृकुला देवी के दर्शन करने के बाद हम दोपहर तक केलांग लौट आये।

जनजातीय उत्सव का विधिवत शुभारंभ लाहुली परंपरानुसार हिमाचल प्रदेश सरकार में कृषि, जनजातीय विकास एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जो लाहुल-स्पीति के विधायक भी हैं, ने किया। पारंपरिक वाद्ययंत्रों बांसुरी और नगाड़ा की धुन पर देवीदयार की पत्तियों के साथ माखन की सौंधी महक के साथ उत्सव का आगाज मन को मोहित कर गया। लाहुल में केलांग का मेला पूरी घाटी के लोगों का मुख्य मेला है। यद्यपि इस दौरान खेत- खलियान के व्यस्त काम से कुछ समय निकालकर लोग तरोताजा होने के लिये इसमें बढ़-चढ़ कर शिरकत करते हैं। केलांग के प्रवेश द्वार से लेकर पुलिस मैदान तक पारंपरिक वेशभूषा में नगाड़ा की लय पर और बांसुरी की सुरीली धुन पर थिरकते स्त्री-पुरुषों के पांव और लचकती कमर से दृश्य अनुपम दिखता है। इस अद्‌भुत नजारे को देखना अनूठा अनुभव था। लाहुली महिला एवं पुरुषों द्वारा लाहुली नृत्य की अनोखी पद्‌गति ने रोम-रोम में तरंगें पैदा कर दी।

चूंकि हर वर्ष यह मेला 14 से 16 अगस्त के बीच मनाया जाता है। स्वतंत्रता दिवस समारोह भी इसी दौरान पड़ता है और परंतु जिस उत्साह और परंपरा से जनजातीय जिला लाहुल-स्पीति के केलांग में मनाए जाने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह की एक अलग ही पहचान है। यहां पर पारंपरिक वेशभूषा में सैंकड़ों की संख्या में स्त्री-पुरुष लाहुली मेले में शामिल होकर नाचते हैं। ऐसा लगता है जैसे ये पहाड़ के कठिन जीवन की सारी थकान एक ही दिन में उतार लेना चाहते हों। प्रदेश के जनजातीय विकास, कृषि एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. रामलाल मारकंडा द्वारा ध्वजारोहण के बाद जब 1500 स्त्री-पुरुषों ने एक ताल पर नाचना आरम्भ किया तो रामलाल मारकंडा सहित उपायुक्त लाहुल-स्पीति के. के. सरोच, उपमंडलाधिकारी अमर नेगी, स्मृतिका नेगी सहित सभी जिला के अधिकारी भी पारंपरिक वेशभूषा पहनकर नृत्य करने लगे। मध्यलय में लगभग दो घंटे तक चले इस लोकनृत्य की छवि वर्षों तक हमारे मन के एक कोने में अंकित रहेगी।

इसी तरह रात्रि में भी जनजातीय संस्कृति से रूबरू हुए। युवा गायकों के मधुर स्वरों से युक्त गीतों को आंकते रहे। स्वतंत्रता दिवस के अगले दिन हमने पतसेऊ जाने का कार्यक्रम बनाया। केलांग की उत्तर की ओर मनाली-लेह राष्ट्रीय उच्चमार्ग के दायीं ओर बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन वालों ने सड़क को चौड़ा करके आवागमन के लिये बेहतर बनाया हुआ है। केलांग से दारचा तक दोनों ओर जिस्पा, गेमूर, क्वारिंग, दारचा आदि गांव आबाद हैं। इस घाटी को तोद घाटी कहा जाता है। तांदी संगम से लाहुल तीन घाटियों में विभक्त होता है। तांदी से कोकसर तक गाहर, तांदी से उदयपुर तक पट्टन तथा तांदी से दारचा-योचे तक तोद घाटी के नाम से जानी जाती है। साहसिक पर्यटन के लिये तोद घाटी सबसे अधिक उपयुक्त है। केलांग से आगे हमें देशी तथा विदेशी पर्यटकों के साइकिल और मोटरसाइकिल पर सवार कई समूह मिले।

केलांग से 12 किलोमीटर की दूरी पर जिस्पा पर्यटकों का सबसे पसंदीदा स्थान है। यहां पर हमने टेंटों में आराम फरमाते पर्यटकों को देखा। यहां पर कई होटल रहने की सुविधा प्रदान करते हैं। जिस्पा एक खुला स्थान है। यहां का बौद्ध मठ क्षेत्र के लोगों की आस्था का केंद्र है। यह मठ सन् 1994 में परम् पावन गुरु दलाई लामा के कालचक्र समारोह का गवाह भी बना है। विश्व भर के बौद्ध मतावलंबी यहां आते रहते हैं। जिस्पा से आगे दारचा में जांस्कर नाले के पास दारचा में लेह जाने वाले सभी यात्री चाय नाश्ता करते हैं। हमने भी यहां अपने पेट में ऊर्जामय तेल भरा। यहां से वाहन योग्य मार्ग जांस्कर होकर भी लेह से जुड़ता है।

लाहुल में अनेक चरागाहें नीरू जैसे पौष्टिक घास के लिये प्रसिद्ध हैं। गर्मियों के मौसम में कुल्लू, मंडी, कांगड़ा, बिलासपुर, चंबा के पुहाल एवं गद्दी अपनी भेड़ों को लेकर इन चरागाहों में आते हैं और सर्दी की आहट पाते ही वापिस लौटते हैं। चंबा के गद्दियों और लाहुली बालाओं के अनेक प्रेम प्रसंग अभी भी लोकगीतों में प्रचलित हैं।

दारचा में कुछ समय तक विश्राम करने के बाद हमने पतसेऊ की ओर प्रस्थान किया। दारचा से 15 किलोमीटर की दूरी पर पतसेऊ पुरातन समय से ही व्यापार का महत्त्वपूर्ण केंद्र रहा है। उस समय व्यापारी घोड़े-खच्चरों पर लाद कर अपना माल यहां पहुंचाते थे। यह रास्ता एक ओर लद्दाख से होकर काशगर और यारकंद से मध्य एशिया तक पहुंचता था और दूसरी ओर कुल्लू, मंडी, कांगड़ा, अमृतसर, लाहौर से होकर अफगानिस्तान में काबुल और कंधार तक पहुंचता था। देश-विदेश के यायावरों ने इस घाटी में आकर अपने संस्मरणों को उल्लेखित किया है। उन यात्रियों में अजेबेड़ो, तगछंग रेपा, मूरक्राफ्ट, राहुल सांकृत्यायन, हारकोर्ट, सी जी ब्रूस, फ्रांके आदि प्रमुख हैं। ह्यूनसांग जो सातवीं शताब्दी में कुल्लू आया था, ने कुल्लू के उत्तर में लो-यू-लो नामक देश का वर्णन किया है। हालांकि वह लाहुल नहीं गया था। इसलिये उसने कुल्लू के लोगों को पूछकर ही इसके नाम का वर्णन किया है।

लेखक तोबदन ने शरदोत्सव मनाली की 2013 की स्मारिका में उल्लेख किया है कि मूरक्राफ्ट सन् 1920 में लाहुल से गुजरा था। वह अपने यात्रा विवरण में लिखता है कि कुल्लू के ऊपर की ओर पहाड़ की धार में खाली जगह बनी हुई है। इसे रीटांक जोत या घाट कहते हैं। यह लगभग पौना मील समतल है। दूसरी ओर घाट के नीचे दो तालाब हैं, जो घेपंग देवता को समर्पित हैं और पवित्र माने जाते हैं। यहां से 5 मील नीचे चंद्रा नदी बहती है, जिस पर झूलता हुआ पुल है। यह पुल भोजपत्र की टहनियों को बुनकर बनाया गया है। पुल का फर्श भी इसी से बनाया हुआ है। कोकसर में दो गांव हैं, एक पुल से उत्तर की ओर तथा दूसरा पुल से पूर्व की ओर। दोनों गांवों में नंगा जौ और भरेस की फसल युक्त खेत हैं। मूरक्राफ्ट ने कोकसर से दारचा तक का वर्णन किया है। उसने

दारचा को लबरंग कहा है। जबकि वर्तमान में इस नाम का कोई गांव यहां मौजूद नहीं है। ईसाई पादरी अजेबेड़ो ने लद्दाख से कुल्लू और पंजाब की ओर जाते हुए सन् 1631 के सितंबर महीने में एक रात दारचा में एक घर में बिताई थी। उस समय गरजा अर्थात् लाहुल कुल्लू के राजा के अधीन था। वह लिखता है कि उसे वहां खमीर से बनाई हुई रोटी दूध के साथ दी गई, जो उनका उत्तम भोजन था।

विश्वप्रसिद्ध घुमक्कड़ महापंडित राहुल सांकृत्यायन सन् 1933 में लद्दाख से लाहुल आये थे। उनके साथ 50-60 खच्चरों का काफिला भी था, घोड़ों की पीठ पर संस्कृत की मूल पोथियां तथा अनुवादित पुस्तकें थी। लद्दाख से आते हुए 24 और 25 सितंबर को उन्हें फालोंग-डंडा अर्थात् लिंगति में, जहां लद्दाख और लाहुल की सीमा थी, बर्फ पड़ने के कारण दो दिन रुकना पड़ा था। लाहुल में वे तीन दिन तक रहे थे। वे अपनी यात्रा के बारे में लिखते हैं कि रात को पतसेऊ अर्थात् दो-जम में रहे। पतसेऊ एक जनशून्य स्थान है। सावन के महीने में यहां एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें कुल्लू, लाहुल-स्पीति, लद्दाख, जांस्कर और तिब्बत के बहुत से लोग जमा होते हैं। यहां ये अनाज, भेड़, बकरी, ऊन, घोड़े, गधे आदि का क्रय-विक्रय करते हैं। भागा के दायीं ओर एक डाक बंगला और सराय है। भागा के दाहिनी ओर भी एक सराय है। नदी पर लकड़ी का पुल है। पुल पार कर मैं दाहिनी ओर की सराय में गया। देखा, वहां दो लाहुली नौजवान पड़े हैं। एक चाय बना रहा है और दूसरा भेड़ों के बोझ वाले ऊन की छल्ली लगा रहा है। मेरा वहां आना उन्हें अरुचिकर जरूर लगा। लेकिन मैंने उनसे कह दिया कि साथियों के आते ही मैं वहां से चला जाऊंगा। मैंने घोड़े को एक कोने में बांध दिया। सराय के आंगन में भेड़ों की मेमनियों की एक मोटी तह जमी हुई थी, जो वर्षा में भीग गई थी। इसलिये वहां बैठ तो नहीं हो सकता था। खड़े-खड़े लाहुली को ऊन की गोनों की तह लगाते देखने लगा। थोड़ी देर बाद उनका साथी भी मदद देने के लिये आ गया। पांच-पांच गोने एक के ऊपर एक रखी गई। इस तरह उन्होंने गोनों के ढेर लगा लिए। पूछने पर मालूम हुआ कि वे चाड़ थाङ से इस ऊन को ला रहे हैं। वर्षों पहले चांद थाडिय खानाबदोशों से ये प्रत्येक भेड़ की ऊन का ठेका किये रहते हैं। मालिक भेड़ें गिनाकर चाय, चीनी तथा दूसरी चीजें एवं नगद के रूप में दाम ले लेता है। ऊन का काटना-कूटना खरीददार का काम रहता है। यह ऊन कुल्लू को जा रहा है, जहां इसे धारीवाल और कानपुर के ऊनी मिलों वाले ले लेंगे। थोड़ी देर बाद चर कर भेड़ें आ गईं। भीतर करते वक्त एक-एक भेड़ गिनी जाने लगी। मालूम हुआ एक भेड़ कम है। दो आदमी ऊपर की ओर गए। सीटियां बजा-बजा कर भेड़ों को बुलाने लगे। उनके ऊपर बढ़ते जाने के साथ-साथ सीटी की आवाज भी दूर होती जाती थी। यद्यपि नीचे नदी की घरघराहट के कारण मुझे खच्चरों के घंटे की आवाज नहीं सुनाई दी। किंतु भेड़ वाले ने बतलाया कि तुम्हारे खच्चर उस पार की सराय की ओर गए हैं। आदमी ने कुत्तों को रोका और मैं घोड़ा लेकर सराय से बाहर हो गया।

वे आगे लिखते हैं, पूरे एक सप्ताह बाद आज दोपहर को 12 बजे पहला घर देखने को मिला। यह दारचा गांव था। आजकल यहां काफी घर हैं। अब आसपास पहाड़ों पर काफी देवदार के वृक्ष थे। इससे पहले घर से दूर तीन धारों का संगम दिखाई दिया। हमारी बिचली धार की बायीं ओर से एक और धार आ रही थी और दाहिनी धार को पुल से पार करने के लिये अब आधा मील दाहिनी ओर मुड़ना पड़ा। पुल पार कर फिर भागा की सम्मिलित धार की ओर लौटा। मोड़ का रास्ता चढ़ाई का था। ठीक मोड़ के कोने पर बहुत दूर तक बिखरी छोटी-बड़ी चट्टानों का ढेर था, जिस पर कहीं-कहीं एक आध देवदार के वृक्ष भी खड़े थे। मैं तो समझ बैठा की लाखों वर्षों तक टूट-टूट कर जमा होती पहाड़ी चट्टानों के यह ढेर हैं। पर उस दिन रात को केलांग के 15 वर्षीय ठाकुर कलसंग दावा से बातचीत के समय इस ढेर का सच्चा इतिहास मालूम हुआ। कहते हैं बहुत पहले इसी स्थान पर एक गांव था, जिसमें एक सौ घर थे। एक दिन गांव के सारे लोग एकत्र हो भोज कर रहे थे। उसी समय बारालाचा की ओर से एक वृद्ध आया। उसे साधारण भोटिया समझ सभी लोगों ने उसका तिरस्कार कर पंक्ति के नीचे की ओर कर दिया। सबसे अंत में एक लड़का बैठा हुआ था। उसने बूढ़े को अपना आसन दे अपने से पहले स्थान पर बिठाया। भोज और छङ के बाद बूढ़ा अंतर्ध्यान हो गया। लोगों ने नाच रंग शुरू किया। उसी समय एक भारी तूफान आया, जिसके साथ लाखों भारी-भारी चट्टानें पहाड़ से गिरने लगीं। सारा गांव उनके नीचे दब गया। तूफान ने उस लड़के को उड़ाकर दरिया के पार कर दिया। उसकी संतान अभी भी मौजूद है। इस स्थान को जेमुग कहते हैं और ये चट्टानें

विश्वप्रसिद्ध घुमक्कड़ महापंडित राहुल सांकृत्यायन सन् 1933 में लद्दाख से लाहुल आये थे। उनके साथ 50-60 खच्चरों का काफिला भी था, घोड़ों की पीठ पर संस्कृत की मूल पोथियां तथा अनुवादित पुस्तकें थीं। लद्दाख से आते हुए 24 और 25 सितंबर को उन्हें फालोंग-डंडा अर्थात् लिंगति में, जहां लद्दाख और लाहुल की सीमा थी, बर्फ पड़ने के कारण दो दिन रुकना पड़ा था। लाहुल में वे तीन दिन तक रहे थे। वे अपनी यात्रा के बारे में लिखते हैं कि रात को पतसेऊ अर्थात् दो-जम में रहे। पतसेऊ एक जनशून्य स्थान है। सावन के महीने में यहां एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें कुल्लू, लाहुल-स्पीति, लद्दाख, जांस्कर और तिब्बत के बहुत से लोग जमा होते हैं।

अभी भी वैसी ही हैं। आगे राहुल जी बताते हैं कि ये से मालूम हुई जो उस समय कुल्लू हाई स्कूल में नवें दर्जे में पढ़ रहे थे।

आजकल पतसेऊ में ऊन का व्यापारिक मेला नहीं लगता है। गर्मियों में यहां पर्यटक और सेना के जवान टेंट अवश्य लगाते हैं। हमने पतसेऊ में साइकिल पर यात्रा कर रहे विदेशी दोस्तों के साथ छाया चित्र खींचे और वापिस केलांग की ओर लौटे।

केलांग पहुंचते बादलों ने पहाड़ों को घेर लिया और अंधेरा होने से पूर्व बारिश होने लगी। वैसे तो बरसात के दिनों में लाहुल में वर्षा नहीं होती। परंतु प्रकृति से छेड़छाड़ के कारण इन दिनों लाहुल में भी वर्षा होने लगी है। वर्षा सारी रात होती रही। सुबह जब हम नींद से जागे तब भी बारिश हो रही थी। आज हमारी वापसी थी। इसलिये सुबह 8ः00 बजे तक तैयार होकर चल पड़े। मेरे साथ डॉ. हीरामणि कश्यप और उपमंडलाधिकारी अमर नेगी की नानी सास भी साथ थी।

बारिश जोरों पर थी, फिर भी हम चलते रहे। हमने सुना था कि जब बरसात में लाहुल में वर्षा होती है तो सभी नाले बाढ़ का रूप धारण कर लेते हैं। इसलिये जितनी जल्दी हो सके वहां से निकलने में ही भलाई है। हम अभी सिस्सू से कुछ दूरी पर पहुंचे ही थे कि सामने पागल नाला अपने रौद्र रूप में रास्ता रोके बह रहा था। वहां पर सेना के ट्रक लाइन में खड़े थे। बारिश को हम पर तरस आया और थोड़ी देर के लिये वर्षा का वेग कम हुआ और ट्रकों ने चलना आरम्भ किया। उनके पीछे हमने भी गाड़ी को जैसे-तैसे आगे निकाल लिया। कोकसर पहुंचते ही बारिश ने फिर जोर पकड़ा।

कोकसर में पुलिस नाका लगा हुआ था। उन्होंने बताया कि आगे एक और नाला सड़क पर बह रहा है। सारा मलबा सड़क पर बिखरा पड़ा है, इसलिये आगे नहीं जा सकते। वहां पर दो घंटे प्रतीक्षा करने के बाद रास्ता खुला। दोनों ओर गाड़ियों की लम्बी कतारें लगी हुई थी। पुलिस ने बारी-बारी से वाहनों को छोड़ा। इस प्रक्रिया में हमें कोकसर से रोहतांग पहुंचने में 6 घंटे लगे। रोहतांग से इस तरफ भी बारिश हो रही थी, परन्तु गाड़ियों का चलना सुचारू था। लगभग शाम 8ः00 बजे हम मनाली पहुंचे। वहां हमें मालूम हुआ कि हमारी गाड़ी निकल जाने के बाद पागल नाले ने रास्ता अवरुद्ध कर लिया है, घाटी में बर्फबारी हो रही है। रोहतांग में भी सड़क ध्वस्त हो गई है। अगले दो दिनों तक गाड़ियों की आवाजाही रोक दी गई है। हमने भगवान का शुक्र माना कि हम सही सलामत घर पहुंच गए।

गांव परगानू डाकघर भुंतर
जिला कुल्लू , हिमाचल प्रदेश-175125

कविता/नई कलम

सीख

मोहित शर्मा

कल कहते तो मैं कहता
किसे पता कि कल कैसा होगा
और अगर सोचता, तो क्या यही सोचता
कि जैसा जी रहा हूं कुछ वैसा होगा।

कल को मैंने बुन कर देखा
कोशिश की जीने की उसको
पर जो बना वो था कुछ और
और जो बीता वो किसने था सोचा।

घेरा सीख की आवाज ने
बोली वक्त हुआ कब किसका
क्यों करता रहता क्या क्या न जाने
जब नसीब ही है एक तेरा अपना...।

हंस कर मुझपर ताना मारा
बोली मुश्किल है तुझ जैसे को समझाना
एक ही है जो थामे बैठा है सबकी डोर
मन तो भटकाएगा, लगा अभी दौड़
पर लौटकर आएगा तू इसी ओर।

मुड़कर मैं उससे बोला
तू है वहीं तू थी जहां
लगा लेने दे मुझे मेरे हिस्से की परवाज़
अगर उड़ पाया तो जी लूंगा।

रहना जिंदा नहीं जीना है मुझको
देख जरा तू अभी भी है वहीं तू थी जहां
हो सकता है मैं हार कर यहीं से ही गुजरूं
वादा है मिलूंगा तुझसे
तू होगी यहीं तू थी जहां।

डोर उसके हाथ में है
कोई जब तक कमजोर है
मैं जैसा कल था
और तू जैसी आज है।

उप संपादक, गिरिराज कार्यालय, शिमला-171 005

आलेख

अप्रैल का काला और क्रूरतम दिन

◆ डॉ. कुंवर दिनेश सिंह

अमेरिकी कवि एलियट की बहुचर्चित उक्ति : 'अप्रैल एक क्रूरतम माह है' के बहुत-से मायने निकाले जाते रहे हैं, परन्तु इसका सर्वाधिक मान्य भावार्थ है। दिसंबर माह में शीत ऋतु में हुई हानि व ह्रास का विषाद, जिसकी स्मृति-मात्र अप्रैल में वसन्त के चरम पर भी मानव-मन को खिन्न कर देता है। इसी आशय से एलियट ने अप्रैल को क्रूरतम माह कह दिया। भारतीय इतिहास में यह उक्ति एक अन्य सन्दर्भ में भी चरितार्थ होती है : वह है पराधीन भारत में 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में अंग्रेजों द्वारा किया गया नरसंहार। आज सौ साल बीत जाने के बाद भी जैसे ही जलियांवाला बाग गोलीकांड का जिक्र आ जाता है, मन में उदासी के साथ-साथ रोष भर आता है, आक्रोश आ जाता है।

उस दिन बैसाखी थी। पूरे भारत में बैसाखी का त्योहार मनाया जाता है, परन्तु पंजाब और हरियाणा में इसका विशेष महत्त्व है। किसान रबी की फसल काट लेने के बाद नए साल की खुशियां मनाते हैं। बैसाखी के दिन, यानि 13 अप्रैल 1699 को सिक्खों के दसवें गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इस कारण से भी बैसाखी पंजाब और आस-पास के प्रान्तों में एक बड़े पर्व के रूप में मनाई जाती है। अपने पंथ की स्थापना के कारण सिक्ख इस दिन को सामूहिक जन्मदिवस के रूप में मनाते हैं। अमृतसर में बैसाखी मेला सैंकड़ों सालों से लगता चला आ रहा था। उस दिन भी बैसाखी के मेले के लिए दूर-दूर से आए हजारों लोग स्वर्ण-मन्दिर के निकट जलियांवाला बाग में एकत्र हुए थे। इसी बाग में रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए भी एक सभा हो रही थी। 1918 में एक ब्रिटिश जज सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में नियुक्त एक सेडीशन समिति के सुझावों के अनुसार भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) का विस्तार कर के भारत में रॉलट एक्ट लागू किया गया था, जो भारतीयों द्वारा स्वतन्त्रता के लिए किए जा रहे आंदोलन पर रोक लगाने के लिए था। इसके अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार को ऐसे अधिकार दिए गए थे, जिनसे वह प्रेस पर सेंसरशिप लगा सकती थी, लोगों को बिना वॉरण्ट के गिरफ्तार कर सकती थी और बिना मुकद्दमे के जेल में रख सकती थी, उन पर बंद कमरों में अपना पक्ष रखे बिना मुकद्दमा चला सकती थी, इत्यादि। इस कारण इस एक्ट के विरोध में लोग पूरे भारत में लोग आंदोलन कर रहे थे और गिरफ्तारियां दे रहे थे।

उस दिन अमृतसर पहुंचे बहुत-से लोग ऐसे थे, जो परिवार के साथ मेला देखने और अमृतसर शहर घूमने आए थे, लेकिन सभा की खबर सुन कर वहां जा पहुंचे थे। जब नेता बाग में पड़ी रोड़ी के ढेरों पर खड़े हो कर भाषण दे रहे थे, तभी ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर 90 ब्रिटिश सैनिकों को लेकर वहां पहुंच गया। उन सब के हाथों में भरी हुई राइफलें थीं। आंदोलनकारी नेताओं ने ब्रिटिश सैनिकों को देखकर वहां मौजूद लोगों से शांत बैठे रहने के लिए कहा। लेकिन सैनिकों ने बाग को घेर कर बिना कोई चेतावनी दिए निहत्थे लोगों पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। वहां मौजूद लोगों ने बाहर निकलने की कोशिश भी की, लेकिन अन्दर आने और बाहर जाने के लिए रास्ता एक ही था और वह बहुत संकरा था, और डायर के फौजी उसे रोककर खड़े थे। इसी वजह से कोई बाहर नहीं निकल पाया। कुछ लोग जान बचाने के लिए मैदान में मौजूद एकमात्र कुएं में कूद गए, पर देखते ही देखते वह कुआं भी लाशों से भर गया। डायर के आदेश पर ब्रिटिश सैनिकों ने बिना रुके लगभग 10 मिनट तक गोलियां बरसाईं। करीब 1650 राउंड फायरिंग की गई। बुलेट खत्म हो जाने तक फिरंगी फौज लगातार फायरिंग करती रही।

अमृतसर के डिप्टी कमीश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियांवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है। बाग में लगी पट्टिका पर लिखा है कि 120 शव तो सिर्फ कुएं से ही मिले। ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में 200 लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है, जिनमें से 337 पुरुष, 41 नाबालिग लड़के और एक 6-सप्ताह का बच्चा था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुताबिक 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए। पंडित मदन मोहन मालवीय के अनुसार कम से कम 1300 लोग मारे गए। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार मरने वालों की संख्या 1500 से अधिक थी, जबकि अमृतसर के तत्कालीन सिविल सर्जन डॉक्टर स्मिथ के अनुसार मरने वालों की संख्या 1800 से अधिक थी। घायलों को
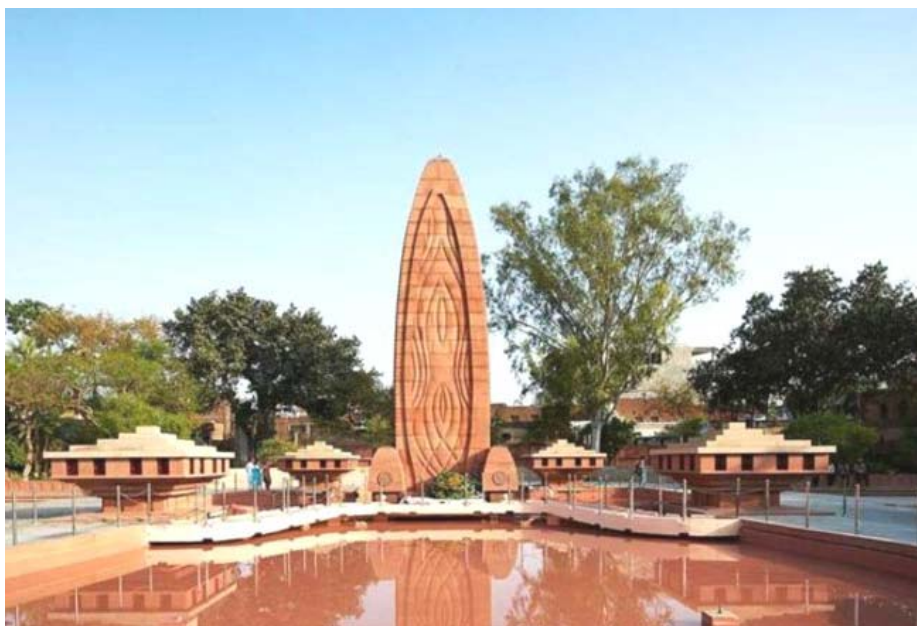
इलाज के लिए भी कहीं ले जाया नहीं जा सका, जिससे लोगों ने तड़प-तड़प कर वहीं दम तोड़ दिया।

जनरल डायर रॉलेट एक्ट का बहुत बड़ा समर्थक था, और उसे इसका विरोध मंजूर नहीं था। उसकी मंशा थी कि इस हत्याडकांड के बाद भारतीय डर जाएंगे, लेकिन इसके ठीक उलट ब्रिटिश सरकार के खिलाफ पूरा देश आंदोलित हो उठा। हत्याडकांड की पूरी दुनिया में आलोचना हुई। आखिरकार दबाव में भारत के लिए सेक्रेटरी ऑफ स्टेट एडविन मॉन्टेग्यू ने 1919 के अंत में इसकी जांच के लिए हंटर कमीशन बनाया। कमीशन की रिपोर्ट आने के बाद डायर का डिमोशन कर उसे कर्नल बना दिया गया, और साथ ही उसे ब्रिटेन वापस भेज दिया गया। मुख्यालय वापस पहुंच कर ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को टेलीग्राम किया कि उस पर भारतीयों की एक फौज ने हमला किया था, जिससे बचने के लिए उसको गोलियां चलानी पड़ीं। ब्रिटिश लेफ्टिनेंट गवर्नर मायकल ओ' ड्वायर ने इसके उत्तर में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को टेलीग्राम किया कि 'तुमने सही कदम उठाया। मैं तुम्हारे निर्णय को अनुमोदित करता हूं।' फिर ब्रिटिश लेफ्टिनेंट गवर्नर मायकल ओ' ड्वायर ने अमृतसर और अन्य क्षेत्रों में मार्शल लॉ लगाने की मांग की, जो अंग्रेज सरकार लगा नहीं पाई। हंटर कमीशन की पूछताछ के दौरान डायर ने गोली चलाने का यह कारण दिया : 'मैं समझता हूं मैं बिना फायरिंग के भी भीड़ को तित्तर-बितर कर सकता था, लेकिन वे फिर इकट्ठा होकर वापिस आ जाते और हंसते, और मैं बेवकूफ बन जाता. . .' और उसने बड़ी निर्लज्जता के साथ यह भी स्वीकार किया कि फायरिंग के बाद उसने घायलों का इलाज नहीं करवाया : 'बिलकुल नहीं। यह मेरा काम नहीं था। अस्पताल खुले थे। वे लोग वहां जा सकते थे।' किन्तु विश्वव्यापी निंदा के दबाव में ब्रिटिश सरकार ने उसका निंदा प्रस्ताव पारित किया और 1920 में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को इस्तीफा देना पड़ा। 23 जुलाई 1927 को पक्षाघात से उसकी मृत्यु हो गई।

जब जलियांवाला बाग में यह हत्याकांड हो रहा था, उस समय खालसा यतीमखाने में पले एक सिक्ख युवक, ऊधमसिंह, वहीं मौजूद थे और उन्हें भी गोली लगी थी। इस घटना ने ऊधमसिंह को झकझोर कर रख दिया और उन्होंने अंग्रेजों से इसका बदला लेने की ठानी। हिंदू, मुस्लिम और सिक्ख एकता की नींव रखने वाले ऊधमसिंह उर्फ राम मोहम्मद आजादसिंह ने इस बर्बर घटना के लिए मायकल ओ' ड्वायर को जिम्मेदार माना जो उस समय पंजाब प्रांत का गवर्नर था, जिसके आदेश पर ही ब्रिगेडियर जनरल डायर ने जलियांवाला बाग को चारों तरफ से घेर कर गोलियां चलवाईं। 13 मार्च 1940 को ऊधमसिंह ने लंदन के कैक्सटन हॉल में लेफ्टिनेण्ट गवर्नर मायकल ओ' ड्वायर को गोली चला के मार डाला। 31 जुलाई 1940 को ऊधमसिंह को फांसी पर चढ़ा दिया गया। गांधी और जवाहरलाल नेहरू ने ऊधमसिंह द्वारा की गई इस हत्या की निंदा करी थी। लेकिन ऊधमसिंह ने फाँसी से पहले लेफ्टीनेंट गवर्नर को मारने के अपने उद्देश्य के बारे में अदालत में ये शब्द कहे थे : 'यही असली मुजरिम था। यह इसी के योग्य थे। यह मेरे देश के लोगों की आत्मा को कुचलना चाहता था, इसलिए मुझे इसे कुचलना ही था।'

इस हत्याकांड ने तब 12 वर्ष की उम्र के भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जालियांवाला बाग पहुंच गए थे। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ उग्र आन्दोलन करते हुए वे भी

भारत की आजादी के लिए शहीद हो गए। इस कांड के बाद भारतीयों का हौसला पस्त नहीं हुआ, बल्कि इसके कारण देश में आजादी का आन्दोलन और अधिक उग्र और तेज हो गया था। उन दिनों संचार और परस्पर संवाद के साधनों के अभाव में भी इस गोलीकांड की खबर पूरे देश में आग की तरह फैल गई। अब केवल पंजाब नहीं, बल्कि पूरे देश में आजादी की जंग शुरू हो गई थी। पंजाब तब तक मुख्य भारत से कुछ अलग चला करता था, लेकिन इस कांड के बाद पंजाब पूरी तरह से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गया। 1920 में महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन की नींव भी जलियांवाला बाग का गोलीकांड ही था।

1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा एक प्रस्ताव पारित होने के बाद साइट पर एक स्मारक बनाने के लिए एक ट्रस्ट की स्थापना की गई थी, जिसके तहत 1923 में स्मारक परियोजना के लिए भूमि खरीदी गई थी। अमेरिकी वास्तुकार बेंजामिन पोल्क द्वारा स्मारक का डिजाइन तैयार किया गया था। 13 अप्रैल 1961 को जवाहरलाल नेहरू और अन्य नेताओं की उपस्थिति में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने इस स्मारक का उद्घाटन किया था। बंदूक की गोलियां दीवारों और आस-पास की इमारतों में आज भी देखी जा सकती हैं। गोलियों से खुद को बचाने की कोशिश कर रहे लोग जिस कुएं में कूद गए थे, वह 'शहीदी कुआं' आज भी पार्क के अंदर एक संरक्षित स्मारक के रूप में है। 1997 में महारानी एलिजाबेथ ने इस स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की थी। 2013 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरॉन भी इस स्मारक पर आए और उन्होंने विजिटर्ज बुक में ये शब्द दर्ज किए : 'ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी।'

जब जलियांवाला बाग में यह हत्याकांड हो रहा था, उस समय खालसा यतीमखाने में पला एक सिक्ख युवक, उधमसिंह, वहीं मौजूद थे और उन्हें भी गोली लगी थी। इस घटना ने ऊधमसिंह को झकझोर कर रख दिया और उन्होंने अंग्रेजों से इसका बदला लेने की ठानी। हिंदू, मुस्लिम और सिक्ख एकता की नींव रखने वाले ऊधमसिंह उर्फ राम मोहम्मद आजादसिंह ने इस बर्बर घटना के लिए मायकल ओ' ड्वायर को जिम्मेदार माना जो उस समय पंजाब प्रांत का गवर्नर था, जिसके आदेश पर ही ब्रिगेडियर जनरल डायर ने जलियांवाला बाग को चारों तरफ से घेर कर गोलियां चलवाई। 13 मार्च 1940 को उधमसिंह ने लंदन के कैक्सटन हॉल में लेफ्टिनेंट गवर्नर मायकल ओ' ड्वायर को गोली चला के मार डाला।

यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था, तो वह घटना यह जघन्य हत्याकांड ही था। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियांवाला बाग में बसंत' इस नरसंहार की नृशंसता एवं कुरूपता को बड़े ही करुण और मार्मिक शब्दों में कुछ इस तरह बयान करती है :

'परिमल-हीन पराग दाग सा बना पड़ा है, / हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।

ओ, प्रिय ऋतुराज! किन्तु धीरे से आना, / यह है शोक-स्थान यहां मत शोर मचाना।

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना, / दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।

कोकिल गावें, किन्तु राग रोने का गावें, / भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें।

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले, / तो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ कुछ गीले।

किन्तु न तुम उपहार भाव आ कर दिखलाना, / स्मृति में पूजा हेतु यहां थोड़े बिखराना।

कोमल बालक मरे यहां गोली खा कर, / कलियां उनके लिये गिराना थोड़ी ला कर।

आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं, / अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

कुछ कलियां अधखिली यहां इसलिए चढ़ाना, / कर के उनकी याद अश्रु के ओस बहाना।

तड़प तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खा कर, /शुष्क पुष्प कुछ वहां गिरा देना तुम जा कर।

यह सब करना, किन्तु यहां मत शोर मचाना, / यह है शोक-स्थान बहुत धीरे से आना।'

इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विन्स्टन चर्चिल ने इस गोलीकांड को इन शब्दों में बयान किया है : 'भारतीयों की ऐसी भीड़ जमा थी कि एक ही बुलेट तीन-चार शरीरों के पार हो रहा था. . . लोग पागलों की तरह यहां-वहां भागने लगे। जब मध्य में गोलियां चलाई गईं, तो वे किनारों की ओर भाग रहे थे। फिर किनारों पर गोलियां चलाई गईं। बहुत से लोग जमीन पर लेट गए। फिर जमीन की ओर गोलियां चलाईं गईं। ऐसा आठ से दस मिनट तक किया गया, तब तक जब तक कि अस्लाह खत्म नहीं हो गया. . . 'उनके विवरण में कहीं न कहीं खेद तो है, मगर न उस समय, और न ही उसके बाद आज तक अंग्रेजी सरकार द्वारा इस हत्याकांड की पुरजोर भर्त्सना की गई और न ही आज तक इस अमानवीय कृत्य के लिए क्षमा ही मांगी गई है। वे क्षमा मांगे या न मांगे, इतिहास उन्हें इस बर्बरता के लिए कभी क्षमा नहीं कर सकता और भारतीयों के लिए 13 अप्रैल 1919 का दिन काला दिन रहेगा। भारत शहीदों की कुर्बानी को हमेशा याद रखेगा, सदा उनका ऋणी रहेगा।'

#3, सिसिल क्वार्टर्ज, चौड़ा मैदान, शिमला-171004
हिमाचल प्रदेश। मो. 91-94186-26090

आलेख

भारतीय अस्मिता हिंदी और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

◆ प्रकाश शर्मा

'पूज्य तुम राजर्षि क्या ब्रह्मर्षि बहुगुण धाम,
व्यर्थ आज वशिष्ठ, विश्वामित्र के संग्राम।
बहुत मेरे अर्थ पुरुषोत्तम तुम्हारा नाम,
सतत श्रद्धायुक्त तुमको शतसहस्र प्रणाम।।"

-मैथिली शरण गुप्त

सांस्कृतिक सरोकारों से सम्बद्ध प्रयाग की धरती पर जन्में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन (1882-1962 ई.) का नाम उन कतिपय अमर हिंदी सेवियों में अग्रणी है, जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रभाषा के प्रश्न को राष्ट्रीयता से जोड़ा व हिंदी को भारतीय अस्मिता की द्योतक मान कर उसे भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा के रुप में प्रतिष्ठित करवाने हेतु सतत संघर्ष किया। संविधान-सभा में चले लम्बे विचार-विमर्श व वाद-विवाद के पश्चात् यद्यपि किसी भी भाषा को संविधान में राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया, तथापि टंडन जी के प्रयास पावस की अन्तिम बूंदों के समान फलदायी हुए, और संविधान के भाग 17 में प्रावधान किया गया कि "संघ की राजभाषा हिंदी व लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रुप होगा।" संघीय सरकार को निर्देशित करते हुए संघ का यह भी कर्त्तव्य बताया गया कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके, और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किये बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे। यह निश्चित रुप से टंडन जी की अप्रतिम सफलता थी। संविधान लागू होने के बाद भी टंडन जी हिंदी व अन्य देशी भाषाओं की मानसिकता निर्मित करने व उन्हें जनप्रिय बनाने के कार्यों से आजीवन जुड़े रहे। राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भूमिका व हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु उन्हें वर्ष 1961 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

श्री लक्ष्मीकांत वर्मा ने उनके व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए लिखा है, "देखने में एक अस्थिपंजर, किन्तु आंखों में अनन्त ज्योति राशि, मन में अजस्र आत्मशक्ति, माथे की चिंतित रेखाओं में युग का संघर्ष, वाणी में निसंग निष्ठा, संकेतों में विश्वास और अस्त-व्यस्त केशों तथा रूखे-सूखे कलेवर में अनन्त जीवन रस। छेड़िए तो तपस्वी की विभूति मिले, मौन रूप देखिये तो निर्विकल्प समाधि की परिधि तक चले जाइए। विरोध करिये तो फौलाद के स्पर्श का भान मिले, स्वीकृति दीजिए तो एक दिव्य आलोक की अनुभूति।"

भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रणेता लॉर्ड मैकॉले ने ब्रिटिश संसद में दिये गए अपने भाषण में भारत में अंग्रेजी भाषा व शिक्षा प्रारम्भ करने के उद्देश्यों की व्याख्या ब्रिटेन की सांस्कृतिक विजय के साधन के रूप में की थी। उसका विचार था कि अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से एक ऐसे वर्ग और सन्तति को जन्म दिया जा सकेगा, जो अपने रक्त और वर्ण में तो भारतीय होगा, किन्तु आचार-व्यवहार और चिन्तन में अंग्रेज। यही वर्ग भारत में औपनिवेशिक शासन को सांस्कृतिक आधार प्रदान करेगा। निश्चित रूप से मैकॉले अपने लक्ष्य में एक बड़ी सीमा तक सफल रहा, क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व और उसके बाद भी भारतीय बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग ऐसा था, और है, जिसके लिए अंग्रेजी बोलना और लिखना कुलीनता का प्रतीक है, और जो अंग्रेजी के अभाव में राष्ट्रीय विकास की कल्पना नहीं कर सकता। हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकार आचार्य रामधारी सिंह दिनकर ने इसी अवस्था को सांस्कृतिक गुलामी का सबसे भयावह रूप माना है। हिंदी पत्रकारिता को नए आयाम देने वाले गणेश शंकर विद्यार्थी ने भी ऐसे ही उद्‌गार व्यकत किये थे, "भाषा जातीय जीवन और उसकी संस्कृति की सर्वप्रधान रक्षिका है, वह उसके शील का दर्पण है, उसके विकास का वैभव है। भाषा जीती, और सब जीत लिया। फिर कुछ भी जीतने के लिए शेष नहीं रह जाता। विजितों का अस्तित्व मिट चलता है। विजितों के मुंह से निकली हुई विजयी जनों की भाषा उनकी दासता की सबसे बड़ी

चिह्नानी है। पराई भाषा चरित्र की दृढ़ता का अपहरण कर लेती है, मौलिकता का विनाश कर देती है, और नकल करने का स्वभाव बना करके उत्कृष्ट गुणों और प्रतिभा से नमस्कार करा देती है।"

राजर्षि टंडन भी इन्हीं विचारों से साम्य रखते थे। अतः उन्होंने अंग्रेजी को मानसिक व सांस्कृतिक दासता का प्रतीक मान कर इसका प्रतिकार किया। उनका विचार था कि कोई विदेशी भाषा हमारे देश की रक्षा नहीं कर सकती। राष्ट्र के विकास के लिए स्वभाषा अनिवार्य है। जिस प्रकार विदेशी शासन विदेशी भाषा के माध्यम से चलता है, उसी प्रकार स्वतंत्र शासन का सम्यक संचालन स्वदेशी भाषा के माध्यम से ही होना चाहिए। उन्होंने मातृभूमि एवं माता के समान ही मातृभाषा को महत्त्व दिया। उनका कहना था कि राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीयता का स्रोत होती है। अतः राष्ट्र की प्रतिभा और मौलिकता का विकास राष्ट्रभाषा में ही होना सम्भव है। इस प्रकार राष्ट्रभाषा को उन्होंने औपनिवेशिक शासन से सांस्कृतिक मुक्ति और राष्ट्रीय स्वाभिमान की जागृति का साधन माना। अतः हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने व देश भर में हिंदी की मानसिकता निर्मित करने हेतु उन्होंने 1 मई, 1910 को काशी की नागरी प्रचारिणी सभा के प्रांगण में हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की स्थापना की, जिसका प्रथम अधिवेशन महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में 10 अक्तूबर, 1910 को हुआ। इसी अधिवेशन में टंडन जी को सम्मेलन का मंत्री नियुक्त किया गया। सम्मेलन के संस्थापक सदस्यों में टंडन जी व पंडित मदन मोहन मालवीय के अतिरिकत पं. गोविंद नारायण मिश्र, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, पं. राम नारायण मिश्र, पं. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, आचार्य राम चंद्र शुक्ल, शिव प्रसाद गुप्त व पं. सुधाकर द्विवेदी प्रमुख थे। हिंदी साहित्य सम्मेलन के मुख्य लक्ष्य इस प्रकार थे :

1 हिंदी का सर्वांगीण उन्नति का प्रयास करना।

2 देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार-प्रसार करना।

3 हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में प्रतिष्ठित करना।

4 हिंदी को सुगम, सरल व लोकप्रिय बनाना।

5 हिंदी साहित्य के विद्वानों को समर्थ व योग्य बनाना।

6 हिंदी की उच्च स्तरीय परीक्षाओं का आयोजन करना।

उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सम्मेलन द्वारा कई रचनात्मक कार्य किये गए। वर्ष 1936 में सम्मेलन के अंतर्गत एक संग्रहालय की स्थापना की गई, जिसका उद्घाटन महात्मा गांधी ने किया। वर्तमान में इस संग्रहालय में हजारों बहुमूल्य व दुर्लभ पांडुलिपियां सुरक्षित हैं। सम्मेलन द्वारा हिंदी भाषा व साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु एक त्रैमासिक शोध-पत्रिका 'सम्मेलन पत्रिका' का प्रकाशन भी वर्ष 1913 से प्रारंभ किया गया, जिसके आदि सम्पादक गिरिजा कुमार घोष थे। हिंदी मानसिकता के व्यापक प्रसार हेतु अन्य राज्यों में भी हिंदी साहित्य सम्मेलनों की स्थापना की गई, जिनका मार्गदर्शन कर उन्हें प्राणान्वित करने का कार्य भी टंडन जी ने किया। हिंदी आन्दोलन को नई ऊर्जा देने व उसे तीव्रतर करने हेतु उन्होंने वर्ष 1918 में इलाहाबाद स्थित अपने गांव अहियापुर में हिंदी विद्यापीठ की स्थापना की, जिसका प्रधान लक्ष्य हिंदी शिक्षा का प्रसार व अंग्रेजी के वर्चस्व को समाप्त करना था। इसके माध्यम से प्रथमा, मध्यमा (विशारद) व उत्तमा (साहित्य रत्न) की उपाधियां प्रदान की जाती थीं। इसके प्रथम प्रधानाचार्य टंडन जी स्वयं बने। इसी क्रम में वर्ष 1947 में उन्होंने हिंदी रक्षक दल नाम से एक अन्य संस्था की स्थापना भी की।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने हेतु आंदोलन चलाने के बाद राजर्षि टंडन ने संविधान सभा में भी हिंदी के पक्ष को मजबूती से रखा। दक्षिण भारत के नेता गोपाल स्वामी आयंगर ने राजभाषा के विकास संबंधी कुछ सुझाव संविधान सभा के समक्ष रखे थे। आयंगर का विचार था कि अंग्रेजी ने देश के राजनीतिक एकीकरण में व स्वतंत्रता प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, हिंदी व अन्य प्रांतीय भाषाएं इतनी विकसित नहीं हैं कि उनके माध्यम से प्रशासनिक कार्य सुचारू रूप से चलाया जा सके।

हिंदी साहित्य सम्मेलन ने हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु कई प्रकार की गतिविधियां कीं, जिनमें से एक थी-देश में हिंदी की परीक्षाओं का आयोजन। इसके सकारात्मक परिणाम हिंदी के भौगोलिक और अकादमिक विस्तार के रूप में सामने आए। प्रथम, इनके माध्यम से उत्तर भारत के साथ-साथ दक्षिण भारत में भी हिंदी का प्रसार हुआ और वहां हिंदी के प्रचार हेतु कई संस्थाएं बनाई गईं। और द्वितीय, देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम निर्मित किये गए व शिक्षण प्रारंभ किया गया, जिसने हिंदी को अकादमिक आधार देकर लोकप्रिय बनाया। उल्लेखनीय है कि लखनऊ विश्वविद्यालय में एम. ए., हिंदी का प्राध्यापन प्रारम्भ करवाने का श्रेय स्वयं टंडन जी को ही है। किंतु, सम्मेलन की गतिविधियों ने कुछ सामाजिक व राजनीतिक विवादों को भी जन्म दिया, जिनका उल्लेख करना यहां प्रासंगिक भी होगा और समीचीन भी। हिंदी साहित्य सम्मेलन का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य हिंदी को विदेशी प्रभावों से मुक्त करवाना व देवनागरी लिपि में लिखे जाने वाले उसके संस्कृतनिष्ठ स्वरूप को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करवाना था। उल्लेखनीय है कि 1940 के दशक में जब भाषाई प्रश्न ने जोर पकड़ा, तो इसी मुद्दे पर टंडन जी का, जो उस समय अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष थे, महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू व डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से मतभेद हुआ। महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू व डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

हिंदी के हिंदुस्तानी स्वरूप यानी संस्कृतनिष्ठ हिंदी व उर्दू के मिश्रित रूप को राष्ट्रभाषा बनाने के समर्थक थे। साथ ही, उन्होंने हिंदुस्तानी को देवनागरी व फारसी, दोनों ही लिपियों में लिखे जाने की छूट दी। उनकी मान्यता थी कि दोनों ही लिपियों में लिखी जाने वाली हिंदुस्तानी ही उत्तर और दक्षिण भारत तथा हिंदुओं और मुसलमानों को एकता के सूत्र में बांधने का समाजशास्त्रीय आधार हो सकती है। जबकि राजर्षि टंडन सिर्फ देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली संस्कृतनिष्ठ हिंदी को ही राष्ट्रभाषा बनाए जाने के पक्ष में थे। दोनों पक्षों के मतभेदों का परिणाम यह हुआ कि 1945 में महात्मा गांधी, जो स्वयं लम्बे समय तक हिंदी साहित्य सम्मेलन के सदस्य रहे थे, सम्मेलन से अलग हो गए। यही नहीं, टंडन जी और हिंदी साहित्य सम्मेलन का यह दृष्टिकोण सांप्रदायिक मनोवृत्ति के विकास का भी एक कारण बना। 1947 में स्वतन्त्रता और देश के विभाजन ने हिंदुस्तानी के पक्ष को कमजोर कर दिया, और हिंदी को अधिक से अधिक संस्कृतनिष्ठ बनाने के आन्दोलन ने गति प्राप्त की, जिसका परिणाम संविधान सभा में गरमा-गरम बहस के रूप में सामने आया।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने हेतु आन्दोलन चलाने के बाद राजर्षि टंडन ने संविधान सभा में भी हिंदी के पक्ष को मजबूती से रखा। दक्षिण भारत के नेता गोपाल स्वामी आयंगर ने राजभाषा के विकास संबंधी कुछ सुझाव संविधान सभा के समक्ष रखे थे। आयंगर का विचार था कि अंग्रेजी ने देश के राजनीतिक एकीकरण में व स्वतंत्रता प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, हिंदी व अन्य प्रांतीय भाषाएं इतनी विकसित नहीं हैं कि उनके माध्यम से प्रशासनिक कार्य सुचारू रूप से चलाया जा सके। अतः ऐसी परिस्थितियों में आगामी कम से कम पंद्रह वर्षों तक अंग्रेजी को भारतीय संघ की राजभाषा बनाए रखा जाना चाहिए। उनका यह भी सुझाव था कि अंकों के अंग्रेजी स्वरूप को देवनागरी लिपि में संस्कृत अंकों का स्थान ले लेना चाहिए। टंडन जी, आयंगर महोदय के उपरोक्त तीनों ही सुझावों से असहमत थे। उनका मानना था कि यद्यपि प्रशासनिक उद्देश्यों हेतु थोड़े समय के लिए अंग्रेजी को संघीय भाषा बनाया जा सकता है, तथापि पंद्रह वर्षों का समय बहुत अधिक है। उनके अनुसार, दक्षिण भारतीय लोगों के लिए हिंदी अपरिचित भाषा नहीं है। वर्ष 1918 से ही महात्मा गांधी के नेतृत्व में वहां हिंदी का प्रसार तेजी से हुआ है। इसके अलावा, दक्षिण भारत में हिंदुस्तानी प्रचार सभा द्वारा आयोजित की जाने वाली हिंदी परीक्षाओं में प्रतिवर्ष 55-60 हजार लोग भाग लेते हैं, जिससे वहां हिंदी समझने वालों की संख्या बढ़ने के साथ ही हिंदी मानस का विकास तेजी से हो रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि बहुत थोड़े समय में दक्षिण भारतीय लोग हिंदी के साथ सहज हो जाएंगे। अतः इस विषय में बगैर कोई समय सीमा निर्धारित किये, यह बात दक्षिण भारतीय लोगों पर छोड़ देनी चाहिए कि वे कितने वर्षों में हिंदी को पूर्णरूपेण राजभाषा के रूप में अपना पाएंगे।

श्री आयंगर के प्रारूप के एक अन्य प्रावधान के अनुसार, संविधान लागू होने के बाद पांच वर्षों की अवधि पूर्ण होने पर एक आयोग का गठन किया जाना था, जिसे प्रशासनिक व कार्यालयीय भाषा के रूप में हिंदी की स्थिति व क्षमता के सम्बन्ध में सुझाव देना था। तत्पश्चात्, आयोग द्वारा प्रस्तुत सुझावों की समीक्षा एक संसदीय समिति द्वारा की जानी थी, जिसके बाद सुझावों के अन्तिम प्रारूप द्वारा राष्ट्रपति की स्वीकृति के बाद प्रशासन में हिंदी की स्थिति का निर्धारण किया जाना था। टंडन जी ने इसमें संशोधन सुझाया कि आयोग का गठन पांच वर्ष की अवधि पूर्ण होने से पहले कर लिया जाना चाहिए, ताकि सम्पूर्ण प्रक्रिया में लगने वाले समय को बचाया जा सके, और हिंदी को शीघ्रातिशीघ्र उसका स्थान दिलाया जा सके।

टंडन जी का यह भी मानना था कि श्री आयंगर के प्रारूप में हिंदी के विकास संबंधी प्रावधान, हिंदी के विकास के बजाय अंग्रेजी के आधिपत्य को बनाए रखने वाले हैं, क्योंकि उनके अन्तर्गत राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वतन्त्र अस्तित्व प्रदान नहीं किया गया, बल्कि हिंदी में कार्य सम्पादित करने की स्थिति में उसे अंग्रेजी में भी सम्पादित किये जाने की शर्त रखी गई। उदाहरण के लिए, यदि कोई संघीय मंत्री प्रशासनिक उद्देश्यों से कोई पत्र हिंदी में लिखना चाहे, तो उसे हिंदी पत्र के साथ उसकी अंग्रेजी में अनूदित प्रति भी संलग्न करनी होगी। भाव यह है कि संविधान लागू होने के बाद पांच वर्षों की अवधि पूर्ण होने तक और तत्पश्चात्, आयोग द्वारा हिंदी की स्थिति की समीक्षा की प्रक्रिया के पूर्ण होने तक हिंदी को अंग्रेजी अनुवाद के सहारे ही प्रयोग किया जा सकता था। उनका मत था कि संघीय कार्यों के सम्पादन में हिंदी की मनाही नहीं होनी चाहिए, बल्कि दक्षिण भारतीय लोगों द्वारा जिन कार्यों को बिना किसी असुविधा के हिंदी में सम्पादित किया जा सकता है, उन कार्यों को सिर्फ हिंदी में ही सम्पादित किये जाने की छूट होनी चाहिए। सारांश यह है कि श्री आयंगर के प्रारूप में अंग्रेजी की सर्वोच्चता स्थापित थी, जबकि टंडन जी ने दोनों भाषाओं के सह-अस्तित्व के साथ-साथ हिंदी के स्वतंत्र अस्तित्व की बात की।

संविधान सभा में एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न सर्वोच्च न्यायालयों व उच्च न्यायालयों की भाषा के संबंध में भी था। श्री आयंगर के प्रारूप में सर्वोच्च न्यायालय व उच्च न्यायालयों की भाषा पन्द्रह वर्षों तक अंग्रेजी रखे जाने का प्रावधान किया गया था। श्री आयंगर की धारणा थी कि हिंदी व अन्य प्रांतीय भाषाओं में न्यायालयीय शब्दावली का अभाव है। किंतु, टंडन जी ने इस बात से असहमति जताई। टंडन जी का विचार था कि सर्वोच्च न्यायालय में तो पंद्रह वर्षों की अवधि तक अंग्रेजी मुख्य भाषा रह सकती है, किंतु उच्च न्यायालयों हेतु अंग्रेजी की अनिवार्यता की

कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने बताया कि ग्वालियर और राजस्थान समेत देश के कई उच्च न्यायालयों में कार्यों का एक बड़ा भाग हिंदी भाषा के माध्यम से ही सम्पादित किया जा रहा है। अतः उन न्यायालयों में यथास्थिति को बनाए रखा जाना चाहिए। उन्होंने विश्वास जताया कि संविधान लागू होने के पांच वर्षो के भीतर ही विभिन्न हिंदी भाषी राज्य अपना सम्पूर्ण न्यायालयीय कार्य हिंदी में सम्पादित करने में सक्षम होंगे। राजर्षि का यह भी विश्वास था कि संस्कृत भाषा की सहायता से हिंदी हर प्रकार के तकनीकी और न्यायालयीय शब्दों को गढ़ने में व अपनी शब्द-सम्पदा बढ़ाने में सक्षम है। यही नहीं, संविधान लागू होने के पन्द्रह वर्षो के भीतर हिंदी भाषी राज्यों द्वारा न्यायालय संबंधी शब्दावली का पूर्ण विकास कर लिया जाएगा व न्यायालयों में हिंदी के प्रयोग हेतु सकारात्मक वातावरण भी तैयार कर लिया जाएगा, जो सर्वोच्च न्यायालय व उच्च न्यायालयों में हिंदी में कार्य सम्पादित किये जाने में सहायक होगा।

एक बहुत बड़ा विवाद व मतभेद अंकों के अंग्रेजी स्वरूप को हिंदी में शामिल करने को लेकर था। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि गोपाल स्वामी आयंगर के प्रारूप में दी गई संस्तुति में अंकों के अंग्रेजी स्वरूप को देवनागरी लिपि में संस्कृत अंकों का स्थान लेने की बात कही गई थी। दक्षिण भारत के कई नेताओं के साथ-साथ बंगाल के प्रतिनिधि श्यामा प्रसाद मुखर्जी का भी यही मत था, जबकि टंडन जी का मानना था कि संस्कृत अंक देवनागरी लिपि के अभिन्न अंग हैं। उन अंकों का वर्तमान स्वरूप शताब्दियों के ऐतिहासिक विकास का परिणाम है। उनमें और भारतवर्ष की अन्य कई भाषाओं के अंकों के स्वरूप में समानता है। इसके अलावा वे विश्व में भारत व देवनागरी लिपि की पहचान हैं। टंडन जी ने देवनागरी अंकों के सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध विद्वान मोनियर विलियम्स तथा इसाक पिटमैन के विचारों की सहायता से सिद्ध करने का प्रयास किया कि अंकों का भारतीय स्वरूप विश्व में अंकों के श्रेष्ठतम रूपों में से एक है। दूसरे, उनका विचार था कि जब हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी को स्वीकार किया जा रहा है, तो हिंदी भाषा और लिपि के अभिन्न अंग इन अंकों को भी स्वीकार किया जाना चाहिए।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि टंडन जी ने संविधान सभा में हिंदी के पक्ष को मजबूती से रखा, उसके सभी पहलुओं के संबंध में विस्तार से चर्चा की, जिसका परिणाम भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा घोषित करने व उसके विकास के संबंध में सरकार को निर्देशित करने जैसे प्रावधानों के रूप में सामने आया। यद्यपि हिंदी के साथ- साथ अंग्रेजी को प्रशासन में बनाए रखा गया, तथापि यह मानना होगा कि हिंदी को उसके आज तक के प्रशासनिक स्तर तक पहुंचाने में व प्रारम्भिक भेदभावों से छुटकारा दिलाने में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन का योगदान अविस्मरणीय है। शिवपूजन सहाय ने उनके विषय में लिखा है, "हिंदी उनकी जिन्दगी की सांस थी, हिंदी उनकी आंखों की ज्योति थी, हिंदी उनके हृदय की शाश्वत गति थी उनके मस्तिष्क की चिन्तनधारा थी, उनकी जिह्वा हिंदी के रस से ही तृप्त होती थी।" राष्ट्रवादी कवि माखन लाल चतुर्वेदी की बात से सहमत हुआ जा सकता है," हिंदी की सेवा और उसकी रक्षा के लिए किये गए प्रण, प्रयास, पुरुषार्थ और प्राणाहुति का सम्मिलित नाम है पुरुषोत्तम दास टंडन।"

सहायक आचार्य, इतिहास, राजकीय महाविद्यालय, पझौता,
जिला-सिरमौर, हिमाचल प्रदेश। मो. 94181-14204

टंडन जी ने संविधान सभा में हिंदी के पक्ष को मजबूती से रखा, उसके सभी पहलुओं के संबंध में विस्तार से चर्चा की, जिसका परिणाम भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा घोषित करने व उसके विकास के संबंध में सरकार को निर्देशित करने जैसे प्रावधानों के रूप में सामने आया। यद्यपि हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी को प्रशासन में बनाए रखा गया, तथापि यह मानना होगा कि हिंदी को उसके आज तक के प्रशासनिक स्तर तक पहुंचाने में व प्रारंभिक भेदभावों से छुटकारा दिलाने में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन का योगदान अविस्मरणीय है।

दोहे

डेरों की साख

◆ डॉ. ओम्प्रकाश सारस्वत

पूरे भारत में, 'डेरों' का विशेष महत्त्व है। पंजाब में तो आज भी 'डेरों' की खास साख है। इन्हीं डेरों में बड़े-बड़े, साधक, यती, तपस्वी तथा चिंतक महंत हुए हैं। ये साधना से लेकर, दुनियावी समस्याओं तक पर विमर्श करते हैं। बड़े-बड़े महात्माओं के साधना-स्थल ये 'डेरे' बड़े सम्मान के साथ देखे जाते हैं। किंतु कहीं-कहीं आज, इनमें भी कुछ प्रदूषण दिखाई देने लग गया है। प्रस्तुत हैं - इनकी महत्ता और सत्ता पर - कुछ दोहे....

यहां ज्ञान के लोक में, डेरों का निज स्वत्व।
इनकी भी महिमा विकट, इनका अकथ महत्त्व॥

त्यागी, ज्ञानी, संयमी, करते यहां निवास।
इनमें रहते ब्रह्मविद्, ब्रह्मदास के दास॥

डेरों के संसार में भांत-भांत के रंग।
डेरों की निःसंगता, डेरों के व्यासंग॥

डेरों की गुरुता बड़ी, डेरों का सम्मान।
ऊंची-ऊंची साधुता, ऊंचा चरितोत्थान॥

बाबा तो कौपीन में, भी रहते तपलीन।
ज्ञान-ध्यान के जलधि में, त्यों मतवारी मीन॥

दोयम भी गुरुज्ञान से हो जाते भवपार।
लोहा नौ के संग से, करता नदिया पार॥

'डेरा' थोड़े दिनन का, कहते बाबा लोग।
चलो-चली की रीत में, क्या प्रीति क्या भोग?।

बाबाओं के दंड से, डरते लुंठक चोर।
काम, क्रोध, मद, लोभ, सब, आधि-व्याधि के ढोर॥

डेरों में भी विहरते, भीति-नीति-उपदेश।
नियम-नियम में विविधता, गुरु-गुरुतर आदेश॥

चुटकी एक भभूत की, दर्शाती जग-सार।
तन की भस्म प्रतीकती, दुनिया आखिर क्षार॥

संप्रदाय रहते तभी, जीवित और स्वच्छंद।
बहता उनमें सोच का, जब तक नीर अमंद॥

खेतों का संस्कार ही, उपजों का आधार।
असंस्कारित खेत की, फसलें पल्लर-खार॥

गठन और संगठन अब, स्वार्थों के गठजोड़।
जब-जब छत्ता हाथ लगा, तब-तब लिया निचोड़॥

फिर भी डेरे बांटते, ज्ञान-ध्यान की रीति।
शम, संयम की मूंदरी, समरसता की नीति॥

डेरे सारे देश में, देते इक संदेश।
यह जग मुट्ठी छार की, यह पल-भर का देस॥

दंड-कमंडल, गूदड़ी, कुंडल, भस्म-ललार।
कंबल, चिमटा, मूंदरी, बाबा के शृंगार॥

नंग-धड़ंग फिरें सब, अक्खड़-फक्कड़ रूप।
अक्कड़-बक्कड़, बोलते, अक्खड़-धक्खड़ भूप॥

वश में रखते राग को, तन को रखते साध।
इक मुक्ति की चाह में, तप में बढ़ें अबाध॥

तपचर्या के यज्ञ में, सब कुछ देते होम।
सारे जग की रीत से, रहते सतत् विलोम॥

कुछ तो मन के शहंशाह, औ' कुछ आलमगीर।
कुछ तन के वरवीर दृढ़, कुछ पीरों के पीर॥

बड़े अखाड़ों के बड़े, बाबों की बड़रीत।
सारे जग से, कुटुंब-सी, अपनों-जैसी प्रीत॥

कुंभों में गज-आसनों पर हिलते झुक-झूम।
भू की करते वंदना, नभ को लेते चूम॥

मंडलेश्वरों के सदा, होते शाही स्नान।
कर्मयज्ञ से ज्ञान तक, का करते संधान॥

जब-जब देश समाज में, बढ़ता स्वैराचार।
तब-तब में बंधुता, कातुरता आधार॥

साधू, बाबा, संयमी, संन्यासी, कृतिकार।
ज्ञानी, दाता, देश हित, करते सदा विचार॥

पर, आश्रम के नाम पर, भी है लूट, अथाह।
मानव-मूल्यों की कई, लड़ियां हुईं तबाह॥

गुरुओं के संसार में, सामर्थ्यों का राज्य।
आशीषों के कल्पतरु, चाहों के साम्राज्य॥

सद्‌गुरु निज के आत्म में, रहते सदा प्रसन्न।
सरसी निर्मल ज्ञान की, निज लहरों से धन्य॥

आत्मोन्नत हो विश्व के, देखें स्वप्न अनंत।
सबकी समता, निरुजता, सबका सौख्य दिगंत॥

सब समरस हों, सब सभी, के बन रहें सुमित्र।
सभी स्ववश, सब संयमी, मन से शुचि पवित्र॥

सारा जगत् कुटुंब-सा, करे सुखद व्यवहार।
सबके हित की कामना बरसे, बन जलधार॥

लोकों का आदर्श बने, गांव-गांव मिल देस।
संस्कृतियों का अजिर बने, पल प्रतिपल परिवेश॥

ऊंच-नीच का भेद मिटे, समता-ममता गाएं।
करुणा-वरुणा की सरित्, घर-आंगन लहराएं॥

कोई भूखा ना रहे, कोई, दुखी न होय।
कोई अपनों-बिन कहीं, एकाकी ना रोए॥

जग में सुख की प्रात हो, मंगलमयी हो रात।
कल्याणों की सुखद-शुभ, मुख से निकले बात॥

सभी मित्र हों, सब विरुज, सब हों, भ्रातृ स्वरूप।
प्राण-प्राण में नेह बहे, विश्व बने गृहरूप॥

औघड़, अक्खड़, बाबले, साधु-संत, महंत।
धूर्जटी, मुंडित शिर, वैरागी, भस्मांग॥

डेरों में नित घूमते, सभी स्वयं में मस्त।
काम, क्रोध, अहंमन्यता, भागें खुद हो त्रस्त॥

माता-पिता का मोह नहिं, नहिं नारी का प्रेम।
बंधन से स्वच्छंदता, संन्यासी के नेम॥

संन्यासी के भाग में, घाट-घाट का संग।
थान-थान की ठोकरें, सूटा, चिलम, मृदंग॥

करपात्री बन घूमते, सीमित रखते साध।
जो दे उसका भी भला, न दे वह भी नाथ॥

जी-6, नॉल्सवुड कॉलोनी
शिमला, हिमाचल प्रदेश-171 002, मो. 0 94180 54054

डॉ. प्रत्यूष गुलेरी की कविताएं

भज ले जप ले सीता-राम

भज ले जप ले सीता-राम
आएंगे आखिर में काम

कच्चे अस्थिर जग के स्थान
सच्चा पक्का विष्णु धाम

रिश्ते-नाते सुख के सारे
कठिन समय हो जावें वाम

अंत समय न बोला जाता
जपा न पहले होवे नाम

अक्ल गई हो चरने जब जो
क्या करना तब गोरा चाम

एक पदार्थ मीठा जग में
ब्रह्मानंद का पियो जाम

सूरज चढ़ा न रहता दिन भर
डूबे तब जब आए शाम

द्वेष जलाए सोचो किसको
खुद का करता काम तमाम ।

केक्टस

केक्टस का पौधा
हमेशा ठूंठ / खुरदुरा कांटों का
सरताज नहीं होता / सिर्फ कांटे ही नहीं देता
फूल पत्तियां भी फूटती हैं उसमें
औरों को देता है नजारा/ खुद तपते गलते मिटते
खुरदुरा, खूसट, गुस्सैल कोई
इन्सां ही क्यों न हो/ बेकार रद्दी कभी नहीं होता
रद्दी से भी बनते हैं लिफाफे
और बहुत कुछ / कला का हुनर तो जगाइए जरा
मन लगा कर खो जाओ
कभी तो देते लौटाते भी
खुशियों के फूल/ केक्टस हों या
केक्टस से आदमी
वे भी प्यार के भूखे होते हैं
उनकी भाषा पढ़िए
पुचकारिए दो मीठे बोल बोलकर
प्यार दुःख-दर्द बांटिए
ताकि केक्टस हरे रहें
खिलते रहें जीवन में ।

लट से खेलती लड़की

चलती बस में
अपनी मुलायम लट से
और अपने दोनों गालों से
खेल रही थी वह
ड्राइवर की ठीक सीट के पीछे
अपने ही ख्यालों में चबाती उसे
और मैं उस अल्हड़ मुटियार के
हाव-भाव टाइप कर रहा था
मोबाइल के हृदय-पटल पर
उसने इतने लंबे सफर में
वह कुछ नहीं किया था
जो बड़े शहरों से लौटती लड़कियां
करती हैं / शीशा पर्स से बार-बार
निकाल देखती हैं
नहीं तो ठूंस रखती हैं ईयर फोन
सुध-बुद्ध भुलाई
कहां पड़ी हैं क्या क्या बतियाती
मैं अभी उसके ख्यालों में था मग्न
कि उसने सहसा बस रुकवाई
उतर गई
जरूर उसका घर आ गया होगा
और वह लट से खेलती-खेलती
घर से मिली होगी
घर आने से पहले
उसके ख्यालों में खोई
बस में थोड़ी देर बे-खबर
मां देखेगी पिता और दादा
पढ़ने से लौट कर आई
महीनों बाद लड़की ।

कीर्ति कुसुम, सरस्वती नगर, पोस्ट दाड़ी, धर्मशाला
जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश -176057, मो. 0 94181 21253

के. आर. भारती की कविताएं

करोना, कौआ और लॉकडाउन

आज सुबह-सुबह
घर के साथ सटे
एक पेड़ पर कौए ने
कांव- कांव की
तो मैंने कहा
उड़ जाओ मित्र
तुम्हारी कांव-कांव से
कोई भी अतिथि
नहीं आएगा आजकल ।

कोए ने अपनी
कानी आंख से
मुझे देखा और कहा
मैं आज अतिथि की
सूचना देने नहीं
बल्कि पूछने आया हूं
कि तुम आजकल
बाहिर क्यों नहीं निकलते
सड़कें निर्जन हैं
पाठशालाओं में
बच्चों की रौनक नहीं
होटल- दुकानों पर भी
नहीं कोइ चहल-पहल ॥

मालूम नहीं तुम्हें क्या?
मैंने कौए से कहा
कि करोना वायरस के
कहर के चलते/ देश-विदेश में
लॉकडाउन है!
लोग अपने-अपने
घरों में कैद हैं/ घर में ही पूजा
घर में ही सैर/ घर में ही लग रहीं
बच्चों की कक्षाएं
घर में ही सब
खेल-मनोरंजन
एक मुददत से
खुली हवा को
बहते नहीं देखा
घर की दहलीज
बनी है लक्ष्मण रेखा
पर तुम क्या जानो?
तुम पर तो नहीं
करोना की रंजिशें
न तुम पर कोई
लॉकडाउन की बंदिशें
उड़ रहे हो पंख पसार
एक डार से दूसरी डार ।।।

कौआ तुनका
और कुछ यूं बोला
अपने लॉकडाउन की
न दो मित्र दुहाई
यूं हम पक्षियों से
होड़ न बांधो तुम
अपने जीवन में हमने
झेले हैं जाने
कितने ही लॉकडाउन
बात-बात पर
कर लेते कैद हमें
घर के पिंजरों या
चिड़िया घरों में तुम
और मनाते पिकनिक
करते क्रूर क्रीड़ा
हमने कभी कुछ नहीं कहा
सब चुपचाप सहा
और एक तुम हो
कि घबरा गए/ चन्द दिनों के ही
लॉकडाउन से
चलो अच्छा हुआ है
करोना के बहाने ही सही
तुम्हें हमझ तो आई
एक जगह
बंधे रहने की पीड़ा

जीवन का यह कैसा उपहास

सिर पर ताज
यानि करोन पहने
चीन के वुहान में जन्में
करोना नाम के
राजा वायरस ने
जग जीतने को मानो
रचाया हो अश्वमेध यज्ञ
और खुला छोड़ा हो
एक अदृश्य अश्व
विद्युत वेग से
दौड़ रहा यह अश्व
दिग-दिगान्तर/ किसी के रोके
रुकता नहीं
शूरवीर इसके आगे
कोई टिकता नहीं
पड़ते ही कानों में
इसकी पदचाप/ दुबक जाते हैं
घरों में सब लोग/ मांगते खुदा से
अपने जीवन की दुआ
जहां-जहां भी/ अश्व यह जाता है
बस मृत्यु का/ राग सुनाता है
लील रहा नित/ करोना वायरस
कितनों की जान
कि कम पड़ गए
देशों के कबरीस्तान
खुले में पड़ी
लाश पर लाश
आता नहीं कोई
परिजन भी उनके पास
जीवन और मौत का
यह कैसा उपहास!

आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)
श्रावग नजदीक केल्टी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

डॉ. राकेश चक्र की कविताएं

खोज

शक के घेरे में
घिरा मैं
जिंदगी से
युद्ध करता हुआ
बचाता रहता हूं
अपने ममत्व
और अस्तित्व को

कभी तपते सूरज
की ओर भागता हूं
तो कभी शीतल शशि की
छांव पाने की जद्दोजहद में
बढ़ा जाता हूं

कभी पेड़ों का दुलार
तो कभी बेला
और गुलाब की महकार
पाकर मुस्कराता हूं

सूरज मुझे तपा-तपा कर
बनाता रहता है कुंदन
और शशि
मेरे आवेग, संवेग
को चंदन-चंदन

अनगिन अहसान और ऋण हैं
मेरे ऊपर
मां-पिता और देवी-देवताओं रूपी
परमपिता के

शक के घेरों के
चक्रव्यूह को तोड़ता हुआ
मैं बढ़ रहा हूं
अपनी जीवात्मा
मन, प्राण
और इन्द्रियों
की
निरंतर खोज करने

ओक

ओक तुम
मिटा रहे हो शोक
ठीक उसी तरह
जैसे नीम, पीपल
और बरगद कर रहे हैं
शाश्वत उपकार
लुटा रहे हैं प्यार हम पर

सहते हैं
अंधड़-तूफानों के थपेड़े
गरमी का ताप
और शीत का कहर
बेशक ये आदमी
मिटाना चाहता है
तुम्हारा अस्तित्व

फिर भी
तुम खड़े -अड़े-बड़े हो
शीतल छांव दे
मुस्करा रहे हो
हिमालय का ताज बनकर

जीवन

शीतल हवा
गुदगुदाती रही
बहलाती रही तन को
मन को
रुनझुन संवादों से
पौधों के पातों से
कराती रही नृत्य
अद्‌भुत लगा सुखद
ये कृत्य

पात-पात जीवन
सचमुच संजीवन
मेरी सबकी श्वांस का
आज के मधुमास का

देख रहा हूं नित्य ही
सिलसिला चलता
जो कल मीत था
संगीत था
जीवन की प्रीत था
आज गिर रहा है
पीताभ होकर
कमजोर होकर
इनकी भी एक उम्र है
मेरी तरह

आज मत आना

परिंदों
आज मत आना
मेरे घर
आज रक्षाबन्धन का है त्योहार
भाई -बहन का है प्यार
आज ही ये पतंगबाज
करते हैं पतंगबाजी
लगाते हैं बाजी
जीत की हार की
खुशियों के इजहार की
खुले आसमान में
भोर से
शाम के झुरपुटे तक
सूरज पर गुस्सा करते हैं
आज रात मत लाना

ये पतंगबाज/कनकईएबाज
तेरे बने हैं दुश्मन
इन्हें जुनून है
अपनी जवानी पर
अपनी ही रची कहानी पर
रोज की तरह
आज कुछ ज्यादा ही

आज तो
बच्चे से लेकर बूढ़े
मस्ता रहे हैं
पटा रहे हैं
आसमान को कनकईयों से
दूर-दूर तलक

आज ही ये देशभकत
तेरे परवाजों को
फंसा लेंगे तेज धारधार मांझे में
क्योंकि ये सब अंधे हैं
तुझे छोड़ देंगे
तड़फने के लिए
मरने के लिए

आज ही
ये होनहार कलाकार
कर देंगे धरती और पानी को
कूड़ा घर
लाखों टन मांझा/कागज/बांस
फैल जाएगा हर तरफ
यही विकास की
असली पहचान है

आज तुमसब भूखा ही रहना
कर लेना व्रत
या ऐसे जंगल की ओर
चले जाना
जहां इन देशभक्तों की
पहुंच न हो
तुम तक

मैं चाहता हूं

मैं चाहता हूं
धरती को शृंगारपूरित
पौधों-विटपों
वल्लरी लताओं को
पुष्पों से आच्छादित देखना
ठीक उसी तरह
जैसे वधू सोलह शृंगार कर
चांदनी बिखेरती हुई
मंद-मंद मुस्काती है

मैं चाहता हूं
पंछियों का गीत-संगीत
यत्र -सर्वत्र सुनना
ठीक उसी तरह
जिस तरह मेरे घर में
आजकल बजता है
मेरे प्रिय साथियों का

मुझे नहीं सुहाते
वे मानुस
जो हरियाली को
खण्ड-विखण्ड कर
झूठ-मूठ
हंसते-मुस्काते हैं
खूबसूरती और विकास का
ढिंढोरा पीटकर

मैं आज इसलिए खुश हूं
कि मेरे घर में
चम्पा, सदाबहार, तुलसी
और गुलाब
जीवन्त और ऊर्जावान बने
कह रहे हैं मुस्कुराओ
गुनगुनाओ
हमारी तरह

एमडी, एक्यूप्रेशर एवं योग विशेषज्ञ, 90-बी, शिवपुरी
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश-244001,
मो. 0 94562 01857

डॉ. मंजु पुरी की कविताएं

कोरोना

संयम, संकल्प और जिम्मेदारी
कोरोना पर पड़ेगी भारी।
उठो, जागो हे मानव
करो शंखनाद की तैयारी॥
जागरूकता ही बचाव है इसका
अब, ये मत सोचो
दोष है किसका
लक्षण दिखें, तो विचलित न होना
अस्पताल में टेस्ट करवाना॥
डॉक्टर की सलाह में -
जिंदगी तुम्हारी।
यदि
फैली ये महामारी
जन-जन पर पड़ेगी भारी ।
उठो, जागो हे मानव
करो शंखनाद की तैयारी॥
सरकारी आदेश को मानो
हर तंत्र को अपना जानो
एक मीटर की दूरी को मानो
समय-समय पर हाथ धोना
धैर्य ना खोना
प्राचीन अभिवादन
नमस्ते बोलना
भी है, इसका बचाव।
उठो, जागो हे मानव
दिखाओ अपना शिष्टाचार॥
करो कर्फ्यू का पालन
बेवजह घूमकर
ना दिखाओ, अशिष्टाचार।
डॉक्टर, नर्स ही है
ईश का नया अवतार
उठो, जागो हे मानव
अपनाओ सभ्याचार॥
भारतीय संस्कृति सर्वोपरि हमारी
कोरोना से लड़ने की करो तैयारी
उठो, जागो हे मानव
साफ-सफाई, नियत दूरी अपनाकर
शंखनाद की करो तैयारी

संयम, संकल्प और जिम्मेदारी
कोरोना पर पड़ेगी भारी॥

आत्म चिंतन

आजादी (कोरोना लॉकडाउन)

छत पर बैठी
छोटी सी चिड़िया
कभी फुदकती
कभी चहकती।
पंख पसारे
आसमान में विचरती
अपनी आजादी का जश्न मनाती।
मुझे घर में कैद देखकर !
अपनी उड़ान को धीमा करती
मेरे पास आकर बोली -
क्या हुआ ?
हे कम्प्यूटर मानव !
आज ये कैद कैसी
कैसी ये मजबूरी
उसकी बातों को सुनकर
आंखें भर आयी मेरी
क्या बताएं -
क्या सुनाएं -
अपने स्वार्थों की कहानी ।
मुझे असमंजस में
जानकर
वो खुद ही समझ गयी
ये कैद है तुम्हारी ही कारस्तानी।
मुझे चिढ़ाती
फुर्र से आसमान में भरती उडारी
उसकी उडारी मानों
ये जताना है चाहती
अभी भी समय है
जाग जाओ -
प्रकृति से ऊंचा उठने
वाले मानव
प्रकृति संग चलकर तो देखो
स्वच्छ हवा -
सुन्दर वातावरण -
नदियों का शोर -
पक्षियों का कलरव-
हवा का सरसराना -
क्या तुमको नहीं भाता ?
आज की
ये कैद भी है जरुरी
तुम्हारी ही है अब मजबूरी
सोचो, समझो
क्या तुमने खोया
अपने स्वार्थ में
अपनी ही बर्बादी को बोया।
उसको
स्वछंद आसमान में
खुद को कैद में देखकर
मैं जी भरकर रोया॥
सच में
छोटी सी चिड़िया
ने जो पाठ पढ़ाया
प्रकृति संग
अटूट रिश्ते को समझाया॥
उसकी आजादी को देखकर
आज समझ, ये आया।
आजादी है कितनी प्यारी
चाहे हो पक्षी, चाहे नर-नारी॥

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला-171 005

कविता

आखिर क्यों

डॉ. प्यार चंद

आखिर क्यों हो जाता तैयार वह
बिकने के लिए
कोमल भावनाओं की मंडी में!
अकसर ठगा जाता है
जहां अपनेपन के अहसास को
हर बार असहाय-सी दिखती है
उसकी विकलांग श्रद्धा।
बहुत कम आंका जाता है उसका मूल्य
खरीदने से पहले।
न जाने कितनी बार और बिखरेगा
उसका 'एक चिथड़ा सुख, जिसे
अब टांकने की गुंजाईश नहीं।
शायद कि उसका वजूद ही है -
'ताप के ताये हुए दिनों' का कहर भोगने के लिए
जहां मयस्सर नहीं; झुलसाती हुई लू में
पत्ता भर छाया, घूंट भर पानी, तिनका भर समीर
कड़ाके की सर्दी से ठिठुरते हुए तन को
क्षण भर 'सीढ़ियों पर धूप में' बैठने का सुख
जहां नहीं सताएगी 'खुरों की तकलीफ'
नहीं आएगा याद 'जंगल का दर्द'।
और भी सुलझाए जा सकते हैं
कई अनबूझे सत्य
हो सकती है साकार
कंटीली पगडंडियों पर भटकती हुई
लहूलुहान अभिव्यक्ति
वह टूट पड़ता है कोरे कागज पर
कलम उठाए
बिना जाने कि -
कविता के लिए अहसास जरूरी है
या जरूरी है कविता अहसास के लिए
नासमझ! उसे तनिक भी
ज्ञात नहीं --
गंभीर, स्निग्ध, शांत, सौम्य, सुकुमार, सुहृदय
मानता उन्हें
जो कुछ नहीं
महज धोखा है आंखों का
या मन का वहम, या कि --
निरा पागलपन
भीख मांगता हुआ दिखता है
निश्छल विश्वास उसका
निर्ममता से रौंदा जाता हुआ
आभासित होता है
ऊर्जस्वित स्वाभिमान
मगर वह है कि
मानने को तैयार नहीं
आखिर क्यों!

प्राध्यापक हिंदी, राजकीय महाविद्यालय बल्द्वाड़ा
तहसील बल्द्वाड़ा, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश-175 033

प्रताप जरयाल की ग़ज़लें

एक

इस तरह से मत गिला हर बार कर
हो सके तो जिन्दगी से प्यार कर

आ खुले माहौल में जी ले जरा
यों न आँगन में खड़ी दीवार कर

बाँटने पर क्यों तुला भगवान को
मजहबों पर यों नहीं तकरार कर

तालियाँ बजती रहें बस देर तक
इस तरह का तू अदा किरदार कर

भूलना फितरत सही इंसान की
गलतियों को तो मगर स्वीकार कर

ऑक्सीजन से ही संभव जिन्दगी
पेड़ जितने हो सके तैयार कर

बेसहारों का सहारा बन सदा
नेक ऐसा कोई कारोबार कर

दो

गजब का हुस्न है पर सादगी है
मेरा हमराज लेकिन अजनबी है

बुझे कैसे भला दरिया के जल से
वफाए जाम की जो तिश्नगी है

किए वादे मगर हर बार झूठे
तेरी फितरत भी कितनी मतलबी है

कोई दिल का हुआ मेहमान, दिल में
सितारों के जहां सी रोशनी है

कभी गंभीर बातें भी किया कर
न हर पल की भली यों मसखरी है

किसी पर हम यकीं करते नहीं हैं
तुम्हारी बात लेकिन दूसरी है

किसी दिन आजमा कर देख लेना
हमारी सीख कितने काम की है

तीन

हर दिन इक हंगामेदार खबर तो है
अफवाहों का उल्टा देख असर तो है

भीड़ भले ही दिखती चारों ओर मगर
हर दिल में इक अंजाना सा डर तो है

बेकारी से जूझ रहा है आज युवा
काम नहीं है लेकिन पास हुनर तो है

नारी का उत्पीड़न कब रुक पाएगा
बेशक मंचों पर आवाज मुखर तो है

मंजिल तो अम्बर को छूती सी लगती
चाहे मुश्किल हो पर देख, डगर तो है

सीमाएं मजबूत बना लें हम चाहे
इक नापाक मगर उस पार नजर तो है

रूठ गया मुझसे वो बात नहीं करता
उसको फिर भी मेरी यार फ़िकर तो है

चार

जीवन का हर साज बजाकर देख लिया
खतरों का हर बोझ उठाकर देख लिया

पत्ते ढाक उगा पाया कब चार भला
सब कुछ आखिर जोड़ घटाकर देख लिया

जूँ तक रेंग नहीं पाई उन कानों पर
जनता ने हर शोर मचाकर देख लिया

रुकता कब कानून किसी के रोके से
नेताओं को ढाल बनाकर देख लिया

नामुमकिन उन आँखों से नफरत हरना
चाहत का हर जाम लुटाकर देख लिया

हो पाया कब उसका आ पाना मुमकिन
हमने उसको लाख बुलाकर देख लिया

दिल की मैल नहीं धुल पाई जीवन भर
गंगा तीरथ खूब नहाकर देख लिया

पांच

जिन्दा रहने की जब चाहत होती है
सब कुछ सह लेने की हिम्मत होती है

सबको रिश्तों में बाँधे रखते हैं यह
इन धागों में कितनी ताकत होती है

हेराफेरी की थाली में छेद बहुत
मेहनत की रोटी में बरकत होती है

ऐसे ही तहजीब नहीं पैदा होती
जैसी संगत वैसी रंगत होती है

ऊँचे पद की बँटती है खैरात कहाँ
यह तो जीवन भर की मेहनत होती है

वो परिवेश तरक्की से महरूम रहे
जिन लोगों के दिल में दहशत होती है

पर्वत का सीना जब-जब छलनी होता
तब-तब ही बेकाबू कुदरत होती है

छः

हर कदम पर है कटौती क्या करेगा आमजन
जिन्दगी दो चार होती क्या करेगा आमजन

आँसुओं का बोझ ढोना तो नहीं अच्छा मगर
हर दिवस हक में कटौती क्या करेगा आमजन

आस्माँ को छू रही जो कीमतें हर चीज़ की
छिन रही जब दाल रोटी क्या करेगा आमजन

मुफलिसों के घाव से जब टीस उठती हर तरफ
काट ले कोई चिकोटी क्या करेगा आमजन

मजहबों की आड़ में ऐसी हवा भी है चली
नफ़रतों के बीज बोती क्या करेगा आमजन

जब सियासत में भी अपनों को उतारा जा रहा
मानकर अपनी बपौती क्या करेगा आमजन

अपने घर का टूटता सपना जो दिल में ही रहा
जिन्दगी फुटपाथ होती क्या करेगा आमजन

गांव व डाकघर बोह, तहसील शाहपुर, जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश-176206, मो. 0 98056 04301

अनुराग शर्मा 'अज़ल' की ग़ज़लें

(1)

कुछ जिंदगी से शिकवा और हैं शिकायतें,
पर जिंदगी ने दी हैं बहुत सी भी राहतें।

दिल है कि ढूंढता है हर जा शबाहतें,
पर मांगे से मिलीं हैं भला कब ये राहतें।

इक साथ जो गुजारे वो चंद हसीं मकाम,
उन्हीं से गुजार कर जी करता है शरारतें।

माज़ी से फिर गुज़रने के वही सिलसिले,
शब भर जागने की फिर वही रिवायतें।

जिन्दगी यकसां हुई भी कभी 'अज़ल'।
गुजरे जमानों की नहीं होती शबाहतें ।

जो जिए बगैर ही गुजर गई 'अज़ल' ।
अपने नसीब में थी कुछ ऐसी भी सा'अतें ।

(2)

सामने हो ये बात तो बेमानी है ,
ख्याल में होना तो बस कहानी है ।

मुझे गुनगुनाने हैं वही अल्फाज़ ,
तुम बना लो जो धुन बनानी है ।

दूर रहना भी होता है इक शौक ,
तुमको ये शौक है, हैरानी है ।

तुम इम्तिहान लो सब्र का मेरे ,
मुझको हर हाल में निभानी है।

ज़िन्दगी थमती नहीं किसी जा भी,
मौत के बाद भी रवानी है ।

(3)

ज़िंदा कब थे जीस्त को मौत समझने वाले ।
दुनिया फ़रेब है जीस्त धोखा ये कहने वाले ।

उनने हक को और फ़र्ज़ को बंदिश जाना ।
खुद कैद हैं इंसान को आज़ाद करने वाले ।

वो दिल में धड़के ज़हन में सुलगे लोगों के,
कब मिटे भला, ये मकतल में कटने वाले।

लम्बे कद वालों को काट के छोटा कर दें,
गाफिल हैं ये समाज को यक्सां करने वाले ।

सोच पर निर्भर है ये तमाम पुण्य और पाप,
काफिर हैं ख्याल ए कुफ्र से सवाब करने वाले।

मुस्तहक है ये रूह 'अज़ल' आप ही अपनी,
गाफ़िल हैं रूह को अज्वे खुदा कहने वाले।

(4)

जिन्दगी क्यों हो सहमी-सहमी सी,
लगती हो कोई गलतफहमी सी।

हर जा खोज लिए शक और शुबहे,
क्यों हो गयी तुम इतनी वहमी सी।

क्यूं हर इक से यूं उलझे रहते हो,
लहजे में ले आओ कुछ नरमी सी

क्यूं रहते हो अपने ही में उलझे हुए,
क्या हुईं 'अज़ल' वो गहमा गहमी सी।

(5)

तुम से रिश्ता बहुत गहरा था,
ये न कहना कि मैं बहरा था ।

आंख से गिरा दिया वही मंज़र,
मैं भी था, उसी पे ठहरा था।

तसव्वुर ए चमन था जहन में रवां,
पांव के नीचे तपता सहरा था।

मेरी कोशिश थी उड़ान की रिफअत,
किस्सा ए गम तो और गहरा था।

हम 'अज़ल' उसे द्वंद में खोजा किए,
फलसफा ए जिन्दगी इकहरा था।

वशिष्ठ निवास, गांव चौक, डाकघर महादेव तहसील सुंदरनगर
जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश-175018

कहानी

नए पुराने चक्र

◆ राजीव शर्मन्

चंदन ने अपने पड़ोसी समीर को सिगरेट खरीद कर सुलगा कर पीते देखा तो वह पल भर के लिए चौंक सा गया था। समीर उसका पड़ोस में सबसे मनपसंद अग्रज था। समीर एक यथार्थवादी व समयानुसार हर कार्य को सम्पादित करने में दक्ष होने के साथ-साथ हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत भी था। आज चंदन को समीर इस तरह से लापरवाह और बेरुखी का अंदाज हज्म नहीं हो रहा था। चंदन ने पड़ोसी दुकानदारों राकेश, राम सिंह, हेमराज, हेमन्त कुमार व दुर्गा दास समेत हम सभी से समीर का तन्हां होकर सिगरेट पीने का गम्भीर चिन्तन किया तो हम सभी समीर की बगल वाली गली में जनरल स्टोर की दुकान पर दस्तक दे गए। उस समय तक समीर ने दो सिगरेट पीने के बाद दुकान की फर्श पर मसल दिए थे। सारी दुकान धुयें से आच्छादित सी धूमिल हो चुकी थी। हमारे मित्र राकेश को सिगरेट से सख्त नफरत थी। उसने जब समीर को तीसरी सिगरेट सुलगाते देखा तो जबरन सिगरेट छीन कर बुझा दी थी। हम सभी समीर को काउंटर पर घेरकर बैठ गए थे। इतने में एक लड़की दुकान पर गिफ्ट पैक करवाने आई तो सिगरेट के धुएं ने खलबली मचा रखी थी। हमने कुछ अखबार के कागजों से धुआं उड़ाया। लड़की मुंह और नाक में अपना रूमाल लपेटकर दुकान से बाहर खड़ी होकर गिफ्ट पैक का इंतजार करने लगी थी। हमने समय की नजाकत भांपकर जल्दी-जल्दी गिफ्ट पैक करवाने में समीर की मदद की और येन-केन-प्रकारेण लड़की ग्राहक को दुकान से फारिग कर दिया था।

अब लड़की के जाने के बाद हमने समीर की घेराबंदी कर उससे सवाल-जवाब करने शुरू कर दिए थे। समीर हम सबसे टालमटोल करता रहा किंतु हम कब हार मानने वाले थे? हम पूरे तरीके से उसका एकाएक सिगरेट पीने के का असली कारण जानना चाहते थे। तभी राम सिंह की नजर समीर के दुकान पर रखे हुए शक्ति ब्रांड लोहे के गोलख-गल्ले पर पड़ी। यह गल्ला टूट कर भींच चुका था। यह गोलख-गल्ला दुकानदार राकेश कुमार के पास आई एक बिल्टी के माध्यम से हजार रुपये में खरीदा गया था। राकेश कुमार भी इस एक तरफ से कब्जे -कुंडे के टूटे गल्ले को देखकर हतप्रभ व ठगा सा रह गया। अरे इस नये गल्ले को क्या हुआ? क्या दुकान में चोर आये ? क्या किसी ने लड़ाई-झगड़े में गोलख-गल्ला तोड़ दिया? अब समीर की यथार्थ के धरातल पर टिकी यथार्थवादी जमीन सरकने लगी थी। हम सबको समझने में देर नहीं लगी कि गल्ला-गोलख समीर के उत्पाती लोहारू राम ने ही तोड़ा है। लोहारू राम सचमुच ही उत्पाती था। वह लगी-लगाई चीजों पर अधिकार जमाने में शरीक व माहिर था। समीर और लोहारु राम दोनों भाइयों में कोई समानता नहीं थी। दोनों की शक्ल देखकर पारस्परिक भाइयों की प्रतीति तो बिलकुल ही नहीं होती थी। समीर के पिताजी परस राम पर लोहारू राम के जन्म लेते ही मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था। उस पर गांव की दाई लोहारू राम की माता जी का अक्ष माना जाता था। वह बहुत चुस्त चालाक महिला मानी जाती थी। उन दिनों नर्सिंग होम व अस्पतालों की सुव्यवस्था तो थी ही नहीं, मजबूरन ना चाहते हुए भीतर परसराम की मां को बहु की डिलीवरी हेतु लोहारू राम की माता को बुलाना पड़ा था।

लोहारू राम की माता ही गांव की प्रमुख दाई मानी जाती थी। सबने कहना शुरू कर दिया था कि परस राम का लड़का निश्चित तौर पर लोहारू राम की माता व उसके लड़ाकू पुत्र लोहारू राम की तरह ही होगा। लोहारू राम की ही तरह पूरे चिन्ह चक्र होंगे किसी को भी उनका हक नहीं मिलने देगा।

हालांकि दादी अम्मा व परसराम की माताजी ने कई टोणे-टोटके उपाय कर डाले थे। सबसे पहले तो परस राम को एक महीने में घोड़े ने बुरी तरह गिराकर घायल कर दिया था। वह कई दिनों तक अपने जख्मों के लिए इलाज उपाय के लिए जूझता रहा था। गांव वालों ने परस राम की धर्मपत्नी सौभाग्यवती को भी इस बारे सचेत कर दिया था। गांव में कोई बोलता, इस लड़के को हरिजनों को दान देकर इसकी कीमत देकर वापिस लो। कोई सलाह दे डालता कि यह बालक गोस्वामी तुलसीदास जी की तरह दांत समेत पैदा हुआ है। यह समस्त खानदान के लिए यहां अरिष्टकारी है। माता सौभाग्य वती भी बीमार रहने लगी थी। कई लोगों ने सलाह दी कि इस लड़के की वास्तविक जन्म भूमि को छोड़कर ही सारे अरिष्टकारी लक्षणों से बचा जा सकता है। परस राम ने गांव छोड़कर शहर की ओर पलायन कर लिया था।

जब आदमी पर बहुविधि मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है तो उस समय किसी के जन्म-मृत्यु का सिद्धांत लागू नहीं होता है।

शायद यही परिस्थिति परसराम की रही होगी। परसराम के शहर के पुश्तैनी मकान में उसके पिता जी का देहावसान हो गया। परसराम पर सारा पारिवारिक बोझ आन पड़ा था। भाइयों से पारस्परिक गांव व शहर की सम्पति के विवादास्पद मुकदमेबाजी जगजाहिर होकर सामाजिक उपहास का कारण बन गई थी। समीर अपने पिता जी की हर सम्भव मदद कर सभी विवादों से उभारना चाहता था। समीर इस दिशा में भरपूर प्रयत्न कर रहा था किन्तु उसका नामी भाई लोहारू राम ही मुख्य रुकावट बनता जा रहा था। लोहारू राम ने समीर संग दोस्तों समेत चलती दुकान को लूटने का धावा बोल दिया था। यह गोलख-गल्ला तोड़ तो इसका एक मात्र उदाहरण था। जब आदमी गलत रास्ते को अख्तियार करता है तो वह सगे रिश्तों की परवाह नहीं करता है। फौजदारी अदालत मुकदमे में जज साहब ने समीर और लोहारू राम को आपस में समझौता कर लेने की सलाह दी थी। जज साहब की सलाह को लोहारू राम ने निरस्त कर दिया था। उसका एकमात्र लक्ष्य समीर को दुकान-मकान से बेदखल करने की एकमात्र मन्शा पर ही आमादा था। सभी हितैषी मित्रों ने समीर को सलाह दी थी कि सिगरेट पीने से समस्या का समाधान नहीं होगा। राकेश कुमार इस मामले में भुक्तभोगी था। उसने अपने भाइयों को स्थापित करने में सरधड़ की बाजी लगा दी थी। कभी आलू प्याज का थोक व्यापारी बनवाया तो कभी कपड़ों की फैब्रिक्स एजेंसी खुलवाई। परिणाम चौपट और शून्य था। समीर को दोस्तों ने सलाह दे डाली कि वह पढ़ा-लिखा है। सारे झंझट छोड़कर सरकारी नौकरी की तलाश करे। कहते हैं कभी-कभी यथोचित सलाह असली भावी जीवन का खाका तैयार कर देती है। मन चंगा तो कठौती में गंगा। समीर की सद्‌भावना और सुनीति काम कर गई थी। उसकी सरकारी नौकरी लग गई और उसने दुकान लोहारू राम को छोड़कर किनाराकसी कर ली थी।

वक्त का चक्र बड़ी ही तीव्र गति से घूमता रहता है। समीर को सरकारी नौकरी के मुकाम में तरक्की के कई सोपान हासिल होते रहे। इस तरक्की के सफर में कई सज्जन साथी साथ-साथ चलते रहे। समीर को इस दौरान जीवन संगिनी संगीता से विवाह उपरांत तो एक नया मुकाम हासिल हुआ। समीर की श्रद्धा भावना के चलते धर्मपत्नी ने तो नये आशियाने को सचमुच धरती पर स्वर्ग बना दिया था। कभी-कभार ससुर परसराम समीर के पास उनके नये कार्य स्थल और नये मकान में जाते तो बहुत आनंदित हो कर ढेर सारे आशीर्वाद देकर लौटते थे। परसराम की घेराबंदी भाइयों ने अदालती तौर पर इसलिए की थी कि लोहारू राम गांव और शहर के चाचाओं को भी गांव व शहर की सम्पत्ति से महरूम करनें की जंग लड़ने पर आमादा था। वह समीर को दुकान-मकान से निकलवा कर अपने को शहनशाह बन बैठा था। इस घटनाक्रम में लोहारू राम की पत्नी त्रिशला खास भूमिका निभा रही थी। हां अब दोनों दम्पति की नजर परसराम पर रहती थी कि कहीं चोरी छिपे वह समीर की कोई मदद तो नहीं कर रहा था। परसराम का स्वास्थ्य मुकदमेबाजी की घेराबंदी से लगातार ही बिगड़ता गया। जब तक समीर परसराम के लिए कुछ कर पाता वह चल बसे थे। परसराम की मृत्यु के उपरांत लोहारू राम ने पुश्तैनी सम्पत्ति पर जमकर लूट-खसूट से सबको बेदखल करने की महाभारत रचा डाली थी। लोहारू राम ने चाचाओं के लड़कों के भी पैर नहीं लगने दिए। वह शहर के पुश्तैनी मकान को मनमाने ढंग से निर्मित करता जा रहा था। समीर के दोस्तों व पड़ोसियों ने उसे खबर दी थी कि लोहारू राम मनमाने ढंग से जबरन सांझा सम्पत्ति पर एकाएक हावी हो गया है। गांव के चाचाओं के लड़कों को तो वह नजदीक फटकने नहीं देता था। वह इस अधिकार के सिलसिले में उच्च न्यायालय तक गए किंतु नाजायज जबरन कब्जे के बलबूते वह उनके पांव नहीं लगने दे रहा था। हालांकि कुछ हमदर्दों ने लोहारू राम को चौकन्ना भी कर दिया था कि वह अपने हिस्से का ही मकान बनवाये। कानूनन अदालत बने बनाए मकानों का भी बंटवारा करा देती है। दुर्बुद्धि लोहारू राम के सिर पर ना जाने क्या भूत सवार था?

एक कहावत चरितार्थ हो जाती है कि मनुष्य बनाये! ईश्वर ढाये!! समीर के कुलपुरोहित श्री नीलकंठ जी का ज्ञानवर्धक कथन ही सत्य सिद्ध होता दिखाई देता था। उन्होंने परसराम को कई साल पहले बताया था कि आपके गांव और शहर के पुश्तैनी मकानों में स्त्री का अनादर होता आया है। सम्पत्ति विवादों में महिला को अपनी जान देना पड़ी थी। इसका प्रायश्चित अथवा पुण्य नहीं किया गया। यही प्रकोप व विडम्बना के चलते गांव और शहर के पुश्तैनी अदालती विवाद पिछले 75 सालों से समाप्त होने का नाम नहीं लेते हैं। पिछली सात पुश्तों में आगामी सात पुश्तों का खाना खराब होकर परलोक गमन हो चुका है।

यहां एक कहावत चरितार्थ हो जाती है कि मनुष्य बनाये! ईश्वर ढाये!! समीर के कुलपुरोहित श्री नीलकंठ जी का ज्ञानवर्धक कथन ही सत्य सिद्ध होता दिखाई देता था। उन्होंने परसराम को कई साल पहले बताया था कि आपके गांव और शहर के पुश्तैनी मकानों में स्त्री का अनादर होता आया है। सम्पत्ति विवादों में महिला को अपनी जान देनी पड़ी थी। इसका प्रायश्चित अथवा पुण्य नहीं किया गया।

यही प्रकोप व विडम्बना के चलते गांव और शहर के पुश्तैनी अदालती विवाद पिछले 75 सालों से समाप्त होने का नाम नहीं लेते हैं। पिछली सात पुश्तों में आगामी सात पुश्तों का खाना खराब होकर परलोक गमन हो चुका है। भावी आने वाली चौथी पीढ़ी भी संकट का सामना करने को तैयार रहेगी। समीर ने पं. नीलकंठ जी की शरण में जाकर इसका जीर्णोद्धार उपाय प्राप्त कर लिया था। घर की बेहतरी के लिए मंदिर में सकाम श्रीमद्‌भागवत व श्री शिव

लघुकथाएं

◆ नरेश कुमार उदास

सरकारी नल का पानी

दो औरतें सरकारी नल से पानी भर रही थीं। एक ने नल के नीचे अपनी बाल्टी भरने को रखी थी। तभी एक तीसरी औरत दो खाली घड़े उठाकर वहां चली आई थी।

"अरीऽऽ कल तो सारा पानी आया ही नहीं।" उसने आते ही उलाहने भरे स्वर में कहा था।

"मेरे तो रात के जूठे-बर्तन अभी पड़े हैं। अब आकर धोऊंगी।" उनमें से एक ने बताया।

"पानी कितना कीमती है। बोतलों में शहरों में बिकने वाला पानी कितना महंगा है।" उनमें से एक ने हैरानी जताई थी।

"पानी के बिना तो मानोऽऽऽ सारे काम अधूरे रह जाते हैं हमारे?" समवेत स्वर में तीनों ने राग अलापा था।

सरकारी नल का बेशकीमती पानी बाल्टी भर जाने के बाद व्यर्थ में बहा चला जा रहा था। लेकिन तीनों औरतें बातों में ऐसी खोई थीं, कि उन्हें तनिक भी इस बात की चिंता नहीं थी।

पानी बह-बहकर सड़क को गीला करने लगा था। भला उन्हें चिंता भी क्यों होती? सरकारी नल का पानी था जो उन्हें मुफ्त में मिल रहा था।

वह कइओं को राह दिखा गई

उसे कई बीमारियों ने एक साथ घेर लिया था। वह पढ़ी-लिखी तो थी ही। अपना बहुधा समय पढ़ने में बिताती। शनैः शनैः उसके कई अंगों ने काम करना ही बंद कर डाला। वह मात्र बिस्तर पर लेटी रहती। बड़ी मुश्किल से हिल-डुल पाती। उसके हाथ बराबर कार्यशील रहे। दिमाग बिलकुल ठीक-ठाक सोचता-समझता। उसके सारे ज्वाईंटस में स्टिफनेस आई तो करवट भी उसकी मां बदलवाती रही। डॉक्टरों ने तो इतना तक कह डाला था। ज्यादा जी न पाएगी। लेकिन उसकी जिजीविषा ने उसे जिलाए रखा था। वह लेटे-लेटे गांव के गरीब छात्र-छात्राओं को निःशुल्क पढ़ाने लगी थी। वह मृदु-भाषी -विदुषी महिला थी। देश के ज्वलंत मुद्दों पर बहस करती, तथा फोन पर मित्रों-रिश्तेदारों से भी खूब बतियाती रहती।

वह यही कहती, "जानती हूं। ज्यादा जी न सकूंगी। फिर भी चाहती हूं जब तक जीऊं समय का सदुपयोग करूं तथा हंसकर जीऊं। सकारात्मक भाव मन में बने रहें।" अंतिम क्षणों तक उसने हार नहीं मानी थी। वह कइयों को रास्ता दिखा गई थी।

जाते-जाते वह एक कविता की पुस्तक भी लिख गई थी। जिसे आज भी लोग पढ़ते हैं तथा उस महिला को याद करते हैं।

सौतेली मां

सावित्री की पढ़ाई सौतेली मां ने बीच में ही छुड़ा डाली। अब तो वह घर के कामों में गई रात तक उलझी रहती है। अभी-अभी ढेर सारे कपड़े धोकर उठी थी। सोचा था दो कौर गले के नीचे उतार लेगी। लेकिन तभी सौतेली मां का कर्कश स्वर गूंजा था।

"रसोई में गंदे बर्तनों का ढेर पड़ा है। वह कब धोएगी। क्या तेरी मरी मां नर्क से आकर उनको धोएगी। कितना खाएगी। उठ जाकर धो उनको। भुक्कड़ कहीं की। पेट ही नहीं भरता इसका?"

सावित्री जानती थी। अगर कुछ बोलेगी तो उसकी सौतेली मां ताबड़-तोड़ उसपर हमला कर डालेगी। घर से बाहर ही निकाल डालेगी। वह मायूस-बेबस सी रसोई की ओर चल पड़ी। तभी उसने सुना, कि उसकी सौतेली मां अपनी लाडली बेटी को कह रही थी, "लक्ष्मीऽऽ बेटीऽऽ तू सोई रह अभी। रात को गई रात तक तू पढ़ती रही थी। आराम कर बेटी।"

और सावित्री गंदे बर्तनों पर मानो पिल पड़ी थी। अभी उसे दोपहर का लंच भी बनाना था।

आकाश-कविता निवास, मकान नं. 54, गली नं. 3, लक्ष्मीपुरम, सैक्टर बी-1 (चनौर) पोस्ट बनतलाब, जिला जम्मू-151123, मो. 0 96825 66419

महापुराण के कथावार्ता यज्ञ सम्पन्न करवाये गए। ब्राह्मणों को यथा शक्ति गऊदान, अन्नदान व स्वर्णदान किया गया। ब्रह्म भोज का आयोजन किया गया। पितरों के निमित्त कुरुक्षेत्र पिहोवा में भी प्रार्थना अर्चना से यथाशक्ति दान किया गया। एकाएक कुछ महीनों के अंतराल के बाद ही लोहारू राम का हृदय परिवर्तन हो गया। वह सभी हिस्सेदारान भाइयों, चाचों- भतीजों के यहां जाकर विनम्र निवेदन करने लगा कि उसने नासमझी अथवा अज्ञानतावश पूर्वजों की सम्पत्ति पर अनाधिकृत अतिक्रमण किया है। महापाप कर गुस्ताखी की है। इसके लिए उसे क्षमादान दिया जाये। उसके उदात्त भावों पर सभी वंशज प्रसन्न हो गए। उसको अनधिकृत मकान निर्माण का धन लौटा कर अपना-अपना अधिकार प्राप्त कर लिया। वर्तमान में सभी वंशज सुख-समृद्धि का जीवन यापन कर रहे हैं। समीर इस अलौकिक परिवर्तन से हर्षित है। सभी वंशजों के पारस्परिक मैल सहज में धुल गए हैं। लोहारू राम की संजीदगी सज्जनता का सभी लोहा लेते हैं। वह साधारण संत की तरह परमार्थ कार्यों में संलग्न रहता है।

सोमभद्रा-स्वां नदी बाजार रेलवे स्टेशन रोड, अम्ब, जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश-177203 मो. 0 82198 99345

कहानी

बोझा

◆ रमेश शर्मा

इस कस्बेनुमा गांव में हर तरह के लोग बसे हुए हैं। थोड़ी खेती-बाड़ी और व्यवसाय से खाते-पीते लोग भी तो रोज की दिहाड़ी पर काम करने वाले परिवार भी। इन दिहाड़ी पर मजदूरी करने वाले परिवारों के लिए आज भी स्थिति यह है कि एक टाइम कमाकर लाओ तो घर का चूल्हा जले। विज्ञान के युग में भी ईंधन के वही परम्परागत साधन आज भी इन परिवारों में यहां मौजूद हैं। शुक्र है कि पास के जंगल पर किसी की नजर अब तक नहीं पड़ी इसलिए अब भी यह गरीबों के काम आ रहा है।

आज रविवार का दिन। मार्च का महीना। धूप खिल उठी है। बेटी रेवती से मां कह रही -- 'अरे लकड़ियां खत्म हो गईं घर में। तुम्हरे बापू से कितनी बार कह चुकी ले आओ दो चार गट्ठे पर सुनते ही नहीं । बस मुंह फाड़ के कहते हैं ...अरे अभी इलेक्शन का टेम है, बाबू लोग गांव में आ-जा रहे हैं, कब बुलावा आ जाए। उमर बीत गई हमरी, पता नहीं इस आदमी को कब घर की चिंता होगी। जब देखो सरपंच, मेम्बर और नेता लोगन के पीछे लगा रहता है जैसे कि वही लोग इस घर का बंदोबस्त करेंगे।'

''आज मेरी तबियत तनिक ठीक नहीं, जा बेटा पास के जंगल से एक गट्ठा लकड़ी तू ही बीनकर ले आ।

यूं तो वह अकेले जंगल जाने के मूड में कभी नहीं रहती पर मां के मन के भीतर की चिंता देख-सुनकर रेवती की भीतरी दुनिया भी चिंता में डूबने लगी है।

आज स्कूल की छुट्टी का दिन है। 15 की उम्र की रेवती का पहनावा आमतौर पर स्कर्ट और ब्लाउज ही है पर आज वह फ्रॉक पहनी है। लकड़ियां न होंगी तो घर का चूल्हा कैसे जले ? फ्रॉक पहनने से लकड़ियां बीनने और उठाने में सुविधा होगी ....यह सोचकर ही वह इस पहनावे में घर से जंगल को निकल जाने को होती है।

जंगल पास होते हुए भी थोड़ा दूर ही है। गांव में तीन किलोमीटर को भी लोग पास है ऐसा कहा करते हैं। सड़क के रास्ते में चौराहा पड़ता है। पांच छह पान ठेले पार करके जाना कितना कठिन है। इन जगहों में पास के गांव से आते-जाते लड़कों का जमावड़ा रहता है, और आज तो फिर छुट्टी का दिन भी है... रेवती सोचकर थोड़ी घबरा जाती है। पर घर में लकड़ियां भी तो जरूरी हैं। उसके बिना भात-साग बनेगा कैसे? यह सोचकर न चाहते हुए भी उसके कदम बढ़ जाते हैं ।

चलते-चलते बीच में एक पुल पड़ता है। पुल के नीचे एक खूबसूरत नदी बही जा रही है। रेवती का किशोरवय मन कहता है इस नदी के संग-संग दूर तक बही जाऊं कहीं । पर कहां जाऊंगी? यह सवाल उसे मथने लगता है। वह पुल के नीचे आकर नदी के जल को छूती है। तेज धूप में नदी के स्वच्छ जल का स्पर्श उसे नई ऊर्जा से भर देता है। वह मन ही मन भीतर से मछली बनकर जल में तैरना चाहती है। इस नदी में कई बार वह मां के साथ आ चुकी है। वह पुल के नीचे छांव में थोड़ी देर सुस्ताने को होती है कि दूर से कुछ लड़कों को पुल की तरफ आते देखकर अचानक सहम उठती है। पिछली बार इसी पुल पर एक लड़की नहाने आयी थी और एकांत देख कुछ शोहदों ने उसे पकड़ कर कितना परेशान किया था। वो तो भला हो उस गाड़ीवान ड्राइवर का जो देख लिया और उसके कारण शोहदे भाग गए। इस घटना की उड़ती खबर गांव के स्कूल तक भी पहुंची थी। रेवती उसे याद करती है और डर जाती है। वह सोचती है ...यह गांव भी अब कितना असुरक्षित हो गया है। एक भय के साथ उसके कदम तेज़ी से जंगल की तरफ बढ़ते हैं।

देख ताक कर जइहौ, जमाना ठीक नहीं .. मां की नसीहत उसे याद आने लगती है।

उसके मन में सवाल उठते हैं। हर जगह यह डर क्यों आ धमकता है? इतनी सुंदर नद, इतने सुंदर पहाड़ हैं यहां, फिर भी मन का यह विरूप भय...? इस सोच के बाद भी सबकुछ कितना लुभा रहे हैं उसे !

'मन करता है थोड़ी देर इनकी गोद में सुस्ता लूं !' -वह पेड़ों को एकटक देखकर सोचती है

'यह डर दौड़ कर आ जाता है हर जगह ! मेरी दुनिया का हर खेल बिगाड़ दिया है इसने ! सबकुछ गड्डमड्ड!' -- इन विचारों का आक्रमण भी होता है साथ-साथ उसके भीतर जंगल के भीतर मत जाना। जानवर रहते हैं वहां। मां की बात फिर याद आने लगती है उसे। पता नहीं किस जानवर की बात मां ने की होगी। अब तो आदमी भी जंगली जानवर का रूप अख्तियार कर लेते हैं। लड़की

देखी कि शिकार शुरू। लड़की न हुई कोई हिरनी हो गई, तीर निकाला और बेध दिया।

हिरनी की बात पर कुछ देर के लिए वह अपने को भूल जाती है। वह जंगल में उछलना कूदना चाहती है। उसकी उम्र उछलने कूदने की ही तो है। उसकी सहेलियां कहती हैं कि वह बहुत सुंदर है, कोई देखेगा तो जल्दी नजर लगेगी। यहां तो कोई नहीं है बस सुंदर-सुंदर पेड़ हैं ....चिड़ियां हैं। वह उनके साथ खेलना चाहती है। चिड़ियां और पेड़ थोड़े ही किसी का नुकसान करते हैं। वे तो सबके दोस्त होते हैं ।

ऊंचे-ऊंचे पेड़ कितने शांत लग रहे हैं। मन करता है थोड़ी देर बैठ कर इन से बातें की जाए पर मां की बातें फिर से उसे याद आ जाती हैं। वह नजरें दौड़ाती है। सचमुच जंगल की झोली में कितना कुछ देने को बचा है सबके लिए ! जंगल की तलहटी में ही कितनी सारी सूखी लकड़ियां पड़ी हैं। वह उन्हें बटोरती हुई गट्ठा बांधती है। अब सिर पर इस गट्ठे को धरने के लिए कौन सहायता करे? जंगल सुनसान है। वह गट्ठे को एक पेड़ में टेककर उसे मेहनत से सिर में धर लेती है। वह यहां से जाना नहीं चाहती। वह चिड़ियों के संग कुछ देर फुदकना चाहती है। उसका मन कुछ देर रुकने को होता है। फिर सोचती है अगर रुक गई तो देर हो जाएगी। देर होगी तो चूल्हे में आग कहां से आएगी ? छोटे भाई को भूख भी जल्दी लगती है... नहीं उसे जल्दी जाना होगा घर !

धूप तेज हो उठी है । ऊपर से सिर पर गट्ठे का बोझ। आते समय वह खाली थी अब बोझ लादे-लादे घर को जाना है ।

'देर हो जाएगी जंगल राजा ! जा रही हूं मैं !' - सुनसान जंगल में वह एक बार आवाज देती है और घर को चल पड़ती है। भले गांव की भाषा में घर की यह दूरी पास है पर तीन किलोमीटर की दूरी कम नहीं होती ।

चलते-चलते उसके मन में कई बातें आ जा रही हैं .... 'कोई शोहदा मिल गया , कुछ कर दिया उसने तो क्या होगा ?'

आजकल इस उम्र की भोली-भाली लड़कियों के भीतर का यह डर उसके भीतर भी रह रहकर जन्मता है। डर का यह जंगल कितना डरावना है। इन पेड़ों, चिड़ियों वाले जंगल से कितना परे ? न वहां कोई पेड़ है न चिड़ियां। बस आदमी ही आदमी। जो नुकसान पहुंचाने को आतुर लगते हैं। इस डर के जंगल में जाने से वह हमेशा डरती है पर परिस्थितियों का क्या? कभी कभार तो उनका सामना करना ही पड़ता है जीवन में।

अचानक हवा का एक ठंडा झोंका उसके बदन के पसीने को छूता हुआ चला जाता है। उसे सुकून मिलता है। धूप तेज है। बोझ से शरीर में पसीना बह रहा है। पसीने से तरबतर उसकी फ्रॉक पारदर्शी हो उठी है। वापसी में भी उसी पुल के ऊपर से वह गुजरती है। नदी उतनी ही सुंदर लगती है उसे जैसे जाते वक्त लगी थी। सड़क पर थोड़ी चहल-पहल है। कुछ शोहदों की अभद्र आवाजें पुल के नीचे से अब भी आती हुई सुनाई पड़ती हैं उसे, जिसे अनसुना कर वह लंबे-लंबे डग भरती हुई आगे बढ़ जाती है। अभी तो रास्ते में चौक-चौराहे भी पड़ेंगे। पान ठेलों पर लोगों की भीड़ का सामना भी करना होगा उसे।

इस छोटी उम्र में भी उसे लगता है जैसे हर आता-जाता हुआ आदमी उसे घूर रहा है। वह लोगों के घूरने का अर्थ खूब जानती है। मां कहती है ...किसी पर नजर मत फेरियो। बस सीधे-सीधे घर चली आइहो।

यह सब तो ठीक है ...पर यह जो लोगों की खा जाने वाली नजरें हैं वे तो पीछा नहीं छोड़तीं कभी।

''किसकी छोरी है भाऊ? अभी से जानदार लग रही !''

''अरे वही निठल्ला मल्लू मजदूर की !''

'कुछ ही सालों में यह तो गजब ढाएगी गुरु !' -- बोलते हुए उस लडके के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान तैरने लगती है

'अरे कुछ दिन इन्तजार कर ले भाऊ!' सामने वाले के चेहरे पर भी एक भदेस-सी हंसी फूट पड़ती है

क्या क्या सुने और क्या क्या सहन करे वह ? रास्ते भर लोगों के अनचाहे और भदेस टिप्पणियां सुनते-सुनते वह तो थक गई है।

उसका मन बहुत खिन्न है। चेहरे से यह खिन्नता इस तरह झर रही कि कोई भी देखकर समझ जाए। घर आते ही लकड़ी के गट्ठे को वह इस तरह जोर से पटकती है कि मां का कलेजा मुंह पर आ जाता है ।

'तू भी कुछ समझती नहीं, इतना बड़ा गट्ठा काहे सर पे लाद लिया तूने ! थोड़ा छोटा बनाती तो बोझा कम लगता न !'

'का अम्मा आप भी ! दो बार का बोझा एक ही बार आ गया तो ठीक हुआ न ! तू समझ रही कि लकड़ी के गट्ठे का बोझा उठाने में तकलीफ हुई मुझे !'

''फिर?'' - उसकी बातें सुन अम्मा थोड़ा चौंक गई

''यह जो रास्ते भर लोगों की भूखी नजरें घूरती रही हैं न माई! बस उसका बोझा भारी पड़ गया मन पर! उनकी बातें सुनो तो लगे कि यह धरती फट पड़े और समा जाएं।

वह सब समझ गयी। आखिर वह भी तो एक औरत है ... वह जानती है कि घर से निकलो तो लफंगों की अनर्गल बातें कितनी चुभती हैं जैसे कलेजा चीर देंगी ! उसने भी यह सब झेला है, ''का करें ! आलसी मरद, घर की गरीबी हमसे सब करवाती है लाडो ! पर अगली बार तोके और न पठाऊंगी रानी ! जानती हूं इन भेड़ियों की भूखी नजरों का बोझा तू न उठा पाएगी !'' -कहते कहते मां की आंखों का पानी और उदास चेहरा, चूल्हे से उठते धुओं के पीछे छुपने लगते हैं !

92 श्रीकुंज, बोईरदादर, रायगढ़, छत्तीसगढ़-496001
मो. 0 97526 85148

लघुकथा

पश्चाताप

◆ गोपाल शर्मा

अमावस्या की काली रात आधी के करीब गुजर चुकी थी, मगर अंजलि की आंखों में नींद का नाम नहीं था। जैसे नींद उससे डर कर भाग गई हो। भूखे पेट बच्चों को तो थपक-थुपक कर सुला दिया और स्वयं अमावस्या के अंधकार से अपने परिवार के भविष्य की तुलना कर रही थी। इतने में दरवाजे पर हुई आहट ने उसकी विचार तंद्रा को तोड़ा। यह उसके लिए कोई नई बात नहीं थी, अपितु रोजाना का कार्यक्रम था। अंजलि उठी और दरवाजा खोल दिया। शराब की दुर्गंध ने अंजलि के पति जीत की उपस्थिति को स्पष्ट कर दिया था। नाम तो 'जीत' था, मगर वह शराब के आगे हार चुका था। अंजलि सहारा देकर उसे अंदर ले आई, और चारपाई पर बैठा दिया। जीत लड़खड़ाती आवाज में बोला, "अंजलि खाना तैयार है न?"

"घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं है। बच्चे भी भूखे पेट ही सो गए हैं।" अंजलि ने कहा।

"झूठ सब झूठ, खुद और बच्चों को ठूंस-ठूंस कर खिला देती है, मुझे कहती है खाने को कुछ नहीं है।" यह कहते हुए जीत की आंखें गुस्से से लाल हो जाती हैं और वह अंजलि को पीटना शुरू कर देता है। अंजलि बिना कोई विरोध किये मार खाती रहती है। शायद उसमें विरोध करने की क्षमता भी नहीं थी। जीत खुद ही पीट कर जब थक जाता है तो बिस्तर पर लेट जाता है। तब अंजलि उसे कहती है-- "आप शराब पीना छोड़ क्यों नहीं देते? बच्चे भूखे मर जायेंगे, घर उजड़ जायेगा।"

"मरते हैं तो मर जाएं, मुझे तुम सभी का कोई मतलब नहीं, शराब मुझे गम भुलाने में तो मदद करती है, क्यों छोड़ू में शराब?"

इन्हीं बातों को करते-करते उसे नींद आ गई, परंतु अंजलि की आंखें अभी भी खुली थीं। रात उसकी खुली आंखों के सामने से गुजर गई। सुबह की सफेद रोशनी बिखरने लगी थी, परंतु अपने परिवार के भविष्य का काला अंधकार अंजलि के दिमाग पर छाया हुआ था। उसे दूर-दूर तक प्रकाश की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही थी। वह इस चिंता में डूबी जा रही थी कि रात के भूखे बच्चों को खाने का क्या प्रबंध किया जाए। आखिर यह सब कब तक सहन होगा? बच्चों की मां......न तो उन्हें भूखा देख सकती है और न ही उन्हें कुछ खाने को दे सकती है।

प्रतिदिन का यही क्रम उससे सहा नहीं गया। अंततः एक दिन मोम के दिल वाली मां ने मोम को पत्थर में बदल लिया। उसने स्वयं को परिस्थितियों के हवाले कर दिया। जीत के बाहर चले जाने के बाद स्वयं को और बच्चों को भी जहर दे दिया। वह रात भी जब आधी के करीब गुजरी, तो अंजलि के घर का दरवाजा खटका, परंतु इस बार वह खुल न सका। शराब के नशे में धुत्त जीत दरवाजे पर ही पड़ा रहा। जब उसका नशा उतरा तो सुबह होने को थी। उसने जैसे-तैसे घर के अंदर प्रवेश किया। उस समय धरती पर थोड़ा-थोड़ा प्रकाश फैलने लगा था। परंतु अंदर का दृश्य देखकर जीत की आंखों के आगे अंधकार छा गया। वह अंजलि और बच्चों के शव देखकर बेहोश हो गया। उसके मुंह से जोर की चीख निकल गई। पास- पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गए। हर कोई उसे ही कोस रहा था। मगर उसकी स्थिति तो विक्षिप्त-सी हो गई थी।

आज अंजलि को उससे बिछुड़े हुए मात्र एक दिन भी नहीं हुआ था। परंतु उसके न होने का अहसास जीत को हो गया। जिस शराब को वह अपना साथी मानता था, उसकी असलियत जीत के सामने आ चुकी थी। परंतु तब तक उसकी सच्ची साथी अंजलि उससे हमेशा के लिए दूर हो चुकी थी। बहुत बड़ी कीमत चुका कर उसको शराब की असलियत का पता चला। उसने शराब को छोड़ने का फैसला कर लिया। अब वह उस सुनसान घर में अकेला रहता था। उसके घिनौने अतीत के कारण कोई उसे मुंह नहीं लगाता था। यह सब उसके लिए असहनीय हो गया।

अंततः एक दिन उसने शहर छोड़ने का मन बना लिया। जब वह बाजार से गुजर रहा था, तो एक स्थान पर आकर उसके पांव खुद-ब-खुद रुक गए। यह कोई और स्थान नहीं, अपितु 'मैखाना' था। वह उस ओर बढ़ गया। अंदर एक व्यक्ति शराब पी रहा था। वह उसकी मेज की ओर चला गया, और उसके गिलास को हाथ में लेकर बोला-- "आप शराब मत पियो।"

"तू कौन होता है मुझे रोकने वाला? मैं अपने पैसों से पीता हूं।" व्यक्ति गुस्से से बोला।

"मैं कहता हूं, शराब पीना छोड़ दो।" जीत ने भी गुस्से से कहा।

"मैं नहीं छोडूंगा, तू क्या कर लेगा?" व्यक्ति गुस्से में था।

"तुम शराब पीना छोड़ दोगे, जरूर छोड़ोगे। मगर मेरी ही तरह देरी से, जब मेरी तरह तुम्हारा भी सब कुछ इस शराब में घुल जाएगा। यह एक ऐसा तरल है जिसमें सब कुछ घुल जाता है, दौलत, इज्जत, बीवी, बच्चे सब कुछ। परंतु यह गाढ़ा नहीं होता। यह पानी की तरह पतला ही रहता है", जीत ने शराब को उड़ेलते हुए कहा, "मगर उस समय मात्र पश्चाताप होगा। उस समय शराब छोड़ना न छोड़ना बराबर होगा।" यह कहता हुआ जीत आगे निकल गया।

शॉप नं. 21, जय मार्किट, कांगड़ा, जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश-176 001, मो. 0 98163 40603

फ्रांसीसी कहानी

मौन लोग

◆ मूल कहानीकार : अल्बेयर कामू अनुवाद : सुशांत सुप्रिय

वह कड़कड़ाती ठंड का समय था, लेकिन पहले ही सक्रिय हो चुके शहर पर कांतिमय धूप फैली हुई थी। घाट के अंत में समुद्र और आकाश चौंधिया देने वाले प्रकाश में मिल गए थे। किंतु यवेर्स यह सब नहीं देख रहा था। वह बंदरगाह के ऊपरी मार्ग पर धीमी गति से साइकिल चला रहा था। उसके साइकिल के स्थिर पैडल पर उसकी तनी हुई अशक्त टाँग आराम कर रही थी, जबकि दूसरी टांग उस फिसलन भरे खड़ंजे पर पकड़ बनाने के लिए संघर्ष कर रही थी, जो रात की बारिश की वजह से गीला था। वह साइकिल की गद्दी पर सवार एक पतली-दुबली आकृति-सा लग रहा था। अपने सिर को ऊपर उठाए बिना उसने बहुत पहले ट्राम के लिए बिछाई गई पुरानी पटरियों से खुद को बचाया, साइकिल के हैंडल को थोड़ा-सा मोड़ कर गाड़ियों को बगल से गुजरने दिया और समय-समय पर अपनी कोहनी से अपने उस थैले को साइकिल पर सही ढंग से टिकाता रहा जिसमें उसकी पत्नी फरनांदे ने उसका दोपहर का भोजन रख दिया था। ऐसे पलों में वह थैले में मौजूद सामान के बारे में कटुता से सोचता था। उसे स्पेन में बनाया जाने वाला ऑमलेट या तला हुआ गोमांस-टिक्का पसंद था जबकि यहाँ उसे रूखे ब्रेड के दो टुकड़ों के साथ केवल पनीर दिया गया था।

दुकान तक की दूरी उसे इतनी लम्बी कभी नहीं लगी थी। निश्चित ही, उसकी उम्र ढल रही थी। हालाँकि चालीस की उम्र में भी उसकी देह किसी लता की तरह दुबली-पतली थी, पर आदमी की माँसपेशियों में इतनी जल्दी गर्माहट नहीं आती। कभी-कभी जब वह खेलों से सम्बन्धित वर्णन पढ़ रहा होता, तो किसी तीस वर्षीय खिलाड़ी के लिए 'सेवानिवृत्त' शब्द पढ़ने पर वह उपेक्षा से अपने कंधे उचका देता।" यदि वह 'सेवानिवृत्त' है," वह फरनांदे से कहता, "तो मैं तो व्यावहारिक रूप से अति वृद्ध लोगों की पहियादार कुर्सी पर बैठा हुआ हूं।" किंतु वह जानता था कि सम्वाददाता पूरी तरह से गलत नहीं था। तीस वर्ष का होते-होते आदमी अपनी ऊर्जा खोने लगता है, हालाँकि उसे यह बात पता नहीं चलती। चालीस की उम्र में वह अभी बुजुर्गों की पहियादार कुर्सी पर तो नहीं होता लेकिन वह निश्चित रूप से उसी दिशा में जा रहा होता है। क्या यही कारण नहीं था जिसकी वजह से वह शहर के दूसरे कोने में स्थित कूपर की दुकान की ओर जाते हुए समुद्र की ओर देखने से कतराता रहा।

जब वह बीस वर्ष का था, तब वह कभी भी समुद्र को देखते हुए थकता नहीं था क्योंकि इससे समुद्र-तट पर एक खुशनुमा सप्ताहांत की उसकी उम्मीद बनी रहती थी। अपने लंगड़ेपन के बावजूद उसे हमेशा ही तैरना पसंद था। उसके बाद वर्ष बीतते चले गए। उसके लड़के का जन्म हुआ था और उसे अपना खर्च पूरा करने के लिए शनिवार के दिन दुकान में ज्यादा देर तक काम करना पड़ता था। रविवार के दिन भी वह कई प्रकार के फुटकर काम करके पैसे कमाता था। धीरे-धीरे उसने अपने हिंसक दिनों की आदतें छोड़ दी थीं जो कभी उसे परितृप्त कर देती थीं। गहरा, निर्मल जल, गरम सूरज, लड़कियाँ और भौतिक जीवन, इस देश में प्रसन्नता का कोई और रूप नहीं था। और वह प्रसन्नता यौवन के जाने के साथ ही जाती रही। यवेर्स समुद्र से प्रेम करता रहा, किंतु केवल दिन के ढल जाने के समय, जब समुद्र का जल थोड़ा अंधकारपूर्ण हो जाता था। उसके घर की खुली छत पर वे पल खुशनुमा होते थे जहाँ वह दिन भर के काम के बाद आराम करने के लिए बैठता था।

फरनांदे उसकी साफ-सुथरी कमीज को बहुत अच्छे ढंग से इस्त्री कर देती थी और उसके हाथ में शराब की ठंडी बोतल होती थी। वह इन दोनों चीजों के लिए फरनांदे का अहसानमंद था। शाम हो जाया करती और आकाश बेहद मुलायम और स्निग्ध लगने लगता। ऐसे में यवेर्स से बातें करने वाले पड़ोसी अपनी आवाजें धीमी कर लेते। ऐसे समय में उसे यह पता नहीं चलता कि वह खुशी महसूस कर रहा होता या उसका रोने को मन कर रहा होता। कम-से-कम ऐसे पलों में वह एक सामंजस्य महसूस करने लगता। शांतिपूर्वक प्रतीक्षा करने के अलावा उसके पास और कोई काम नहीं होता, लेकिन उसे यह नहीं पता होता कि उसे किस चीज की प्रतीक्षा करनी है।

सुबह जब वह वापस काम पर जा रहा था तो उसे समुद्र को देखना अच्छा नहीं लगा। हालाँकि उसका स्वागत करने के लिए समुद्र हमेशा वहीं मौजूद था, वह शाम होने से पहले उसे नहीं देखना

चाहता था। आज सुबह जब वह अपना सिर झुकाए साइकिल चला रहा था, उसे और दिनों की अपेक्षा अधिक भारीपन महसूस हो रहा था। उसके हृदय पर भी जैसे कोई भार पड़ा हुआ था। पिछली रात बैठक के बाद जब उसने वापस आकर यह घोषणा की थी कि वे काम पर लौट रहे हैं तो फरनांदे ने प्रसन्नचित्त होकर कहा था, "क्या मालिक आप सबका वेतन बढ़ा रहे हैं?" लेकिन मालिक किसी का वेतन नहीं बढ़ा रहे थे। हड़ताल विफल रही थी। वे सही ढंग से चीजों का प्रबंधन नहीं कर पाए थे, यह माना जा सकता था। हड़ताल का फैसला जल्दबाजी में लिया गया था। इसलिए संघ ने इसका साथ अधूरे मन से देकर ठीक ही किया था। कुछ भी हो, केवल पंद्रह कामगारों के हड़ताल करने से कुछ नहीं होना था। संघ को कूपर की अन्य दुकानों के बारे में भी सोचना था जिनके कामगार हड़ताल पर नहीं गए थे। हाँ, मैं संघ पर दोष नहीं लगा सकता था। टैंकरों और टैंकर-ट्रकों को बनाने वालों की धमकियों की वजह से पीपा बनाने वालों का काम फल-फूल नहीं रहा था। अब बेहद कम बड़े पीपे बनाए जा रहे थे। अब केवल पहले से मौजूद पीपों की मरम्मत का काम ही बचा हुआ था। मालिकों का व्यापार भी संकट में था, पर इसके बावजूद वे चाहते थे कि उनका व्यापार फायदे में रहे। इसलिए सबसे आसान यह था कि वे महँगाई के बावजूद मजदूरों का वेतन रोक लें। पीपा बनाने वाले तब क्या कर सकते थे जब उन्हें वेतन ही नहीं मिलता? जब आपने मेहनत से कोई काम करना सीखा हो तो आप बीच में ही अपना पेशा नहीं बदल सकते।

यह एक मुश्किल से सीखा हुआ काम था और इसके लिए लम्बी अवधि तक प्रशिक्षु बने रहने की आवश्यकता होती थी। एक अच्छा पीपा बनाने वाला कारीगर विरला था- एक ऐसा कारीगर जो अपने मुड़े हुए तख्तों को लोहे के छल्लों से आग में लगभग वायुरुद्ध तरीके से कसता था। वह ताड़पत्र के रेशे और पुराने सन के साथ नाल का इस्तेमाल किए बिना अपना काम करता था। यवेर्स यह बात जानता था और उसे इस पर गर्व था। हालाँकि पेशा बदलना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन जो करना आप जानते हैं, उसे छोड़ देना, कारीगरी में अपनी प्रवीणता को त्याग देना आसान नहीं था। यदि आपको पूरा वेतन ही नहीं मिले तो बढ़िया कारीगरी के बावजूद आप फँस जाएँगे। आप बेहाल हो जाएँगे। आपकी मुसीबत बढ़ जाएगी। और यह सब आसान नहीं होगा। तब अपना मुँह बंद रख पाना भी मुश्किल होगा। क्या आप इसके बारे में किसी से चर्चा भी नहीं करेंगे? तब उसी सड़क पर हर सुबह चल कर नौकरी पर जाना बेहद थकाऊ होगा, जब आपको यह पता हो कि हर हफ्ते के अंत में आपको अपने निश्चित वेतन का केवल उतना ही अंश मिलेगा जितना वे देना चाहेंगे, और वह भी उत्तरोत्तर इतना कम हो जाएगा कि पर्याप्त नहीं होगा।

इसलिए वे सब गुस्से में थे। शुरू में उनमें से दो-तीन कारीगर हिचक रहे थे पर मालिक से पहली बार बातचीत करने के बाद वे भी आक्रोश में आ गए। दरअसल, मालिक ने उन्हें साफ कह दिया कि या तो उनके वेतन का जितना अंश वे दे रहे हैं, कारीगर चुपचाप ले लें या फिर वे नौकरी छोड़ कर चले जाएँ। यह तो बात करने का कोई तरीका नहीं है। "वह हमसे क्या उम्मीद करता है?" एस्पोजीतो ने कहा था। "क्या यह कि हम उकड़ूँ हो कर बैठ जाएँगे और अपने पिछवाड़े में लात खाने की प्रतीक्षा करेंगे?" मालिक वैसे तो बुरा आदमी नहीं था। यह दुकान उसे अपने पिता से विरासत में मिली थी। वह इसी दुकान में बड़ा हुआ था, और वह लगभग सभी कारीगरों को बरसों से जानता था। कभी-कभार वह उन सबको अपने साथ नाश्ता करने के लिए आमंत्रित भी करता था। तब वे छीलनों और चौली को ईंधन के रूप में इस्तेमाल करके आग पर मछली या मांस पकाते थे और शराब पीते हुए मालिक का कारीगरों के प्रति व्यवहार वाकई अच्छा होता। नव-वर्ष के अवसर पर वह हर कारीगर को बढ़िया शराब की पाँच बोतलें तोहफे में देता था। अकसर जब कोई कारीगर बीमार होता, या उसके विवाह या प्रभु-भोज जैसा कोई अवसर होता तो मालिक उसे रुपयों का तोहफा भी देता। उसकी बेटी के जन्म के अवसर पर उसने सभी कारीगरों में मीठे बादाम वितरित किए थे। दो या तीन बार तो उसने यवेर्स को अपनी तटीय जायदाद वाले इलाके में अपने साथ शिकार पर जाने के लिए आमंत्रित भी किया था।

बेशक, मालिक को अपने कारीगर अच्छे लगते थे और वह अकसर इस बात को याद किया करता था कि उसके पिता ने भी एक प्रशिक्षु के रूप में अपने काम की शुरुआत की थी। लेकिन मालिक कभी अपने कारीगरों के घर नहीं गया था, इसलिए उसे

यह एक मुश्किल से सीखा हुआ काम था और इसके लिए लम्बी अवधि तक प्रशिक्षु बने रहने की आवश्यकता होती थी। एक अच्छा पीपा बनाने वाला कारीगर विरला था- एक ऐसा कारीगर जो अपने मुड़े हुए तख्तों को लोहे के छल्लों से आग में लगभग वायुरुद्ध तरीके से कसता था। वह ताड़पत्र के रेशे और पुराने सन के साथ नाल का इस्तेमाल किए बिना अपना काम करता था। यवेर्स यह बात जानता था और उसे इस पर गर्व था। हालाँकि पेशा बदलना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन जो करना आप जानते हैं, उसे छोड़ देना, कारीगरी में अपनी प्रवीणता को त्याग देना आसान नहीं था।

उनके बारे में और जानकारी नहीं थी। वह केवल अपने बारे में ही सोचता था क्योंकि वह अपने अलावा किसी और को नहीं जानता था। और अब उसने अपना फैसला सुना दिया था- वे सब वेतन का जो थोड़ा-बहुत अंश मिल रहा था, उसे चुपचाप ले सकते थे या फिर अपनी नौकरी छोड़ कर जा सकते थे। दूसरे शब्दों में कहें तो वह बेहद जिद्दी हो गया था। लेकिन मालिक होने की वजह से वह ऐसा कर सकने में समर्थ था।

मालिक ने मजदूर संघ को विवश कर दिया था और दुकान के दरवाजे बंद हो गए थे। "यहाँ धरना देने की कोशिश बेकार होगी। दुकान के बंद रहने से मेरे ही पैसे बचेंगे।" मालिक ने कहा था। यह बात सच तो नहीं थी, पर इससे कोई बात नहीं बनी क्योंकि मालिक ने कारीगरों को उनके सामने कह दिया कि दरअसल उसने कारीगरों को नौकरी देकर उनपर अहसान किया था। एस्पोजीतो गुस्से से आग-बबूला हो गया और उसने मालिक से कहा कि उसमें इनसानियत नहीं बची थी। मालिक को भी जल्दी गुस्सा आ जाता था और विस्फोटक स्थिति की वजह से उन दोनों को अलग करना पड़ा। किंतु इस घटना ने कारीगरों पर प्रभाव डाला था। हड़ताल करते हुए उन्हें बीस दिन हो गए थे। उनकी पत्नियाँ घरों में उदास बैठी थीं। दो-तीन कारीगर तो हतोत्साहित हो चुके थे। अंत में मजदूर संघ ने कारीगरों को सलाह दी थी कि यदि वे हड़ताल खत्म कर दें तो संघ मध्यस्थता करके मजदूरों को नष्ट हो गए समय के पैसे अधिसमय के रूप में दिलवा देगा। इसलिए कारीगरों ने हड़ताल खत्म करके वापस काम पर जाने का फैसला किया था। हालाँकि वे सब शेखी बघारते रहे और आपस में यह कहते रहे कि मामला अभी खत्म नहीं हुआ था, और मालिक को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करना होगा। पर इस सुबह जब वे हार से मिलती-जुलती थकान लिए हुए काम पर लौटे तो भ्रम को बनाए रखना संभव नहीं था। यह ऐसा था जैसे उन्हें मांस देने का आश्वासन देने के बाद अंत में पनीर दे दिया गया हो।

सूर्य चाहे किसी भी तरह चमक रहा हो, समुद्र अब उतना आश्वस्त करने वाला नहीं लग रहा था। यवेर्स अपनी साइकिल चलाते हुए सोच रहा था कि अब उसकी उम्र पहले से कुछ ज्यादा ढल गई थी। दुकान, अपने सहकर्मियों और मालिक के बारे में सोचने पर उसे ऐसा लगा जैसे उसकी छाती भारी हो गई हो। फरनांदे चिंतित हो गयी थी, "अब तुम लोग मालिक से क्या कहोगे?" "कुछ नहीं।" यवेर्स ने अपना सिर हिलाया था और अपनी टाँगें फैला कर वह साइकिल पर बैठ गया था। उसने अपने दाँत भींच लिए थे और उसका छोटा-सा, काला, कोमल-सुकुमार नाक-नक्श वाला चेहरा कठोर हो गया था। "हम सब वापस काम पर जा रहे हैं। यह काफी है।" अब वह साइकिल चला रहा था, किंतु उसके दाँत अभी भी भिंचे हुए थे और उसके चेहरे पर एक ऐसा उदास, सूखा गुस्सा था जो मानो आकाश को भी काला बना रहा था।

उसने मुख्य पथ और समुद्र-तट वाले मार्ग को छोड़ दिया ताकि वह स्पेनी मूल के बसे लोगों वाली बस्ती की गीली गलियों में से होकर गुजर सके। वह रास्ता उसे ऐसी जगह ले गया, जहां केवल छप्पर, कूड़े-करकट के ढेर और गराज थे। वहीं नीचे की ओर झुके छप्पर जैसी दुकान थी जिसमें आधी दूरी तक पत्थर लगे हुए थे और उसके ऊपर काँच लगा था। उसकी छत धातु की लहरदार चादर से बनी थी। इस दुकान का अगला हिस्सा पीपे बनाने वाली जगह की ओर था। यहाँ एक आँगन था जो चारों ओर से ढँके हुए छप्पर से घिरा हुआ था। व्यवसाय के बढ़ जाने पर इस इलाके को त्याग दिया गया था और अब यह घिसी-पिटी मशीनों और पुराने पीपों को रखने की जगह मात्र बन कर रह गया था। आँगन के आगे मालिक का बगीचा शुरू होता था, लेकिन खपरैल से बना एक रास्ता दोनों को अलग करता था। बगीचे के आगे मालिक का मकान था। वह एक बड़ा और भद्दा मकान था, किंतु फिर भी वह प्रभावित करने वाला लगता था क्योंकि उसकी बाहरी सीढ़ियाँ छितराई हुई बेलों और फूलों की लताओं से घिरी हुई थीं।

तभी यवेर्स ने देखा कि सामने दुकान के दरवाजे बंद थे। दुकान के बाहर कारीगरों का एक झुंड चुपचाप खड़ा था। जब से वह यहाँ काम कर रहा था, तब से यह पहली बार था कि उसने दुकान के दरवाजों को बंद पाया। मालिक यह बात बल देकर बताना चाहता था कि इस खींचा-तानी में उसका पलड़ा भारी था। यवेर्स बाईं ओर मुड़ा और उसने अपनी साइकिल छज्जे के अंतिम किनारे के नीचे खड़ी कर दी, और वह दरवाजे की ओर चल पड़ा। कुछ दूरी से उसने एस्पोजीतो को पहचान लिया, जो उसके साथ काम करता था। वह एक लम्बा, सांवला कारीगर था जिसकी त्वचा पर बहुत सारे बाल थे। दुकान के कारीगरों में एकमात्र अरब सैयद चलता हुआ वहाँ आ रहा था। बाकी लोग चुपचाप उसे अपनी ओर आते हुए देखते रहे। लेकिन इससे पहले कि वह उनके पास पहुँचता, अचानक वे सभी दुकान के दरवाजों की ओर देखने लगे, जोकि ठीक उसी समय खुल रहे थे। वहाँ फोरमैन बैलेस्टर नजर आया। उसने दुकान के एक भारी दरवाजे को खोला और वहाँ मौजूद कारीगरों की ओर अपनी पीठ करते हुए उसने उस दरवाजे को उसके लोहे की पटरी पर धकेला।

बैलेस्टर उन सबमें सबसे पुराना कारीगर था और वह कामगारों के हड़ताल पर जाने का विरोधी था। एस्पोजीतो ने उससे कहा था कि वह मालिक के हितों का संरक्षण कर रहा था। अब वह गहरे नीले रंग की जर्सी पहन कर नंगे पाँव दरवाजे के पास खड़ा था (सैयद के अलावा केवल वही एकमात्र कारीगर था, जो नंगे पाँव काम करता था)। उसने उन सभी कारीगरों को एक-एक करके दुकान के अंदर जाते हुए देखा। उसकी आँखें इतनी फीकी थीं कि वे अत्यधिक धूप-सेवन की वजह से भूरे हो गए उसके बूढ़े चेहरे पर निस्तेज लग रही थीं। मोटी और नीचे झुकी मूँछों वाला उसका पूरा

चेहरा बेहद उदास लग रहा था। वे सभी चुप थे। वे हार कर लौटने की वजह से अपमानित महसूस कर रहे थे। अपनी चुप्पी की वजह से वे प्रकुपित थे, किंतु उनकी चुप्पी जितनी ज्यादा देर तक बरकरार थी, वे उसे तोड़ पाने में उतना ही अधिक असमर्थ थे। वे सभी बैलेस्टर की ओर देखे बिना दुकान के अंदर चले गए क्योंकि वे जानते थे कि उन्हें इस तरह भीतर लाने के पीछे मालिक का आदेश था जिसका वह पालन कर रहा था। उसका दुखद और उदास चेहरा उन्हें यह बता रहा था कि वह इस समय क्या सोच रहा था। लेकिन यवेर्स ने बैलेस्टर की ओर देखा। बैलेस्टर उसे चाहता था और उसने उसे देखकर बिना कुछ कहे केवल अपना सिर हिलाया।

अब वे सब प्रवेश-द्वार के दाईं ओर मौजूद संदूकों वाले कमरे में थे। बिना रंगे हुए लकड़ी के तख्ते खुले आसनों को अलग कर रहे थे। उन तख्तों के दोनों ओर अलमारियाँ थीं जिनमें ताले लगे हुए थे। जो आसन प्रवेश-द्वार से सबसे दूर था, उससे जरा हट कर छज्जे की दीवार पर ऊपर एक फुहारा लगा हुआ था। वहीं नीचे मिट्टी के फर्श पर एक नाली बना दी गई थी। दुकान के बीचोबीच कई चरणों में पड़ा अधूरा काम दिख रहा था। वहाँ लगभग पूरे बन चुके पीपे पड़े हुए थे जिनके बड़े छल्लों को आग में पकाया जाना बाकी था। वहाँ एक ओर बैठकर काम करने वाले कुछ तख्ते भी पड़े हुए थे, और दूसरी ओर बुझी हुई राख के अवशेष और राख पड़ी हुई थी। प्रवेश-द्वार की बाईं ओर की दीवार के साथ भी बैठ कर काम करने वाले ऐसे कई तख्ते कतार में पड़े हुए थे। उनके सामने लकड़ी के पटरों के ढेर पड़े थे, जिन्हें रन्दा फेरकर चिकना बनाया जाना था। दाईं ओर की दीवार के पास बिजली से चलने वाली दो दमदार आरा मशीनें पड़ी थीं जो तेल से सनी होने की वजह से खामोश चमक रही थीं।

कुछ समय पहले यह कारखाने जैसी दुकान वहाँ काम कर रहे थोड़े-से कारीगरों के लिए बहुत बड़ी लगने लगी थी। गर्मी के मौसम में इससे फायदा था, लेकिन सर्दियों में इससे नुकसान था। लेकिन आज इस बहुत बड़ी जगह में हर ओर अधूरा काम पड़ा हुआ दिख रहा था। पीपों को कोनों में छोड़ दिया गया था और एकमात्र चक्करदार पट्टी तख्तों के बुनियाद को पकड़े हुई थी। ऊपर से वे लकड़ी के खुरदरे फूलों जैसे लग रहे थे। बैठने वाली जगहों पर बुरादा पड़ा हुआ था। औजारों के बक्से और मशीनें सभी दुकान में उपेक्षित-सी पड़ी थीं। कारीगरों ने उन सब चीजों की ओर देखा। उन्होंने काम करते समय पहनने वाले अपने घिसे-पुराने वस्त्र पहन रखे थे, और वे हिचक रहे थे। बैलेस्टर उन सबको देख रहा था। "तो, अब हम काम शुरू करें?" उसने पूछा। एक-एक करके सभी कारीगर बिना एक भी शब्द बोले अपनी-अपनी काम करने वाली जगहों पर चले गए। बैलेस्टर एक-एक करके सबके पास जाकर उन्हें काम शुरू करने या खत्म करने के बारे में बताता रहा। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

जल्दी ही पहले हथौड़े की आवाज सुनाई दी। लोहे की फानी पर पड़ा हथौड़ा पीपे के उत्तल भाग पर छल्ले को घुसा रहा था। रन्दा एक गाँठ से टकरा कर कराहने लगा और एस्पोजीतो द्वारा चलाए गए आरे का धारदार फलक जोरदार खरखराहट के साथ शुरू हो गया। सैयद अनुरोध करने पर तख्ते ला-ला कर कारीगरों को दे रहा था या जहाँ जरूरत थी, वहाँ छीलन की आग जला दे रहा था। आग पर लोहे के छल्लों से जकड़े पीपे रखे गए थे ताकि वे फूल जाएँ और छल्ले उन्हें अच्छी तरह से जकड़ लें। जब सैयद को मदद के लिए कोई कारीगर आवाज नहीं दे रहा होता, तो वह काम करने वाले तख्ते पर खड़ा होकर जंग लगे बड़े-बड़े छल्लों को हथौड़े के भारी प्रहार से जकड़ने का काम करने लगता। जलते हुए छीलन की गंध दुकान में भरने लगी थी। यवेर्स रंदा चला रहा था और एस्पोजीतो द्वारा काटे गए तख्तों को सही जगह पर लगा रहा था। उसने वह परिचित, पुरानी गंध पहचान ली और उसका हृदय थोड़ा नरम पड़ गया। सभी कारीगर चुपचाप अपना-अपना काम कर रहे थे, लेकिन दुकान में सरगर्मी और स्फूर्ति का माहौल लौटने लगा था। चौड़ी खिड़कियों में से होकर साफ-सुथरी, ताजा रोशनी दुकान में भरने लगी थी। सुनहली धूप में नीले रंग का धुआँ उठ रहा था। यवेर्स ने अपने आस-पास किसी कीड़े के भिनभिनाने की आवाज भी सुनी।

उसी समय दीवार के अंत में स्थित दुकान का दरवाजा खुला और मालिक श्री लस्साले दहलीज पर रुके हुए नजर आए। वे पतले-दुबले और साँवले रंग के थे। उनकी उम्र तीस वर्ष से अधिक नहीं थी। मालिक ने बढ़िया भूरा सूट पहन रखा था और उनके चेहरे का भाव बेहद सहज था। हालाँकि देखने पर ऐसा लगता था जैसे उनके चेहरे की हड्डी कुल्हाड़ी से तराशी गई हो, लेकिन उन्हें देख कर अक्सर लोगों में सकारात्मक भाव उत्पन्न होता था। जिनके चेहरे से ओजस्विता झरती है, उनके साथ अक्सर ऐसा ही होता है। किंतु दरवाजे से भीतर आते हुए श्री लस्साले थोड़ा लज्जित लग रहे थे। उनके अभिवादन का स्वर पहले की अपेक्षा कम प्रभावशाली लगा। कुछ भी हो, सब मौन रहे। किसी कारीगर ने उस अभिवादन का जवाब नहीं दिया। हथौड़ों की आवाजें थोड़ा रुकीं, फिर और जोर से दोबारा शुरू हो गईं। श्री लस्साले ने कुछ अनिश्चित कदम आगे बढ़ाए, फिर वे वैलेरी की ओर मुड़ गए जो बाकी कारीगरों के साथ यहाँ पिछले केवल एक वर्ष से ही काम कर रहा था। वैलेरी यवेर्स से कुछ फुट दूर बिजली से चलने वाले आरे के पास अपने काम में व्यस्त था। वह बिना कुछ कहे अपना काम करता रहा। "और भाई, क्या हाल हैं?" युवक अचानक अपनी गतिविधि में बेढंगा हो गया। उसने अपने पास खड़े एस्पोजीतो की ओर देखा। एस्पोजीतो यवेर्स के पास ले जाने के लिए अपने लम्बे हाथों में तख्तों का ढेर उठाए हुए था। एस्पोजीतो ने भी अपना काम करते हुए वैलेरी की ओर देखा। वैलेरी मालिक के प्रश्न का जवाब दिए बिना पीपे में झाँकता

रहा।

उलझन में पड़े श्री लस्साले एक पल के लिए युवक के सामने ही रुके रहे। फिर उन्होंने अपने कंधे उचकाए और मार्को की ओर मुड़े। मार्को अपने तख्ते पर टाँगें फैला कर बैठा था। वह एक पेंदे को धीरे-धीरे, ध्यान से अंतिम रूप दे रहा था। "हलो, मार्को," श्री लस्साले ने लगभग खुशामद करने वाले स्वर में कहा। मार्को अपनी लकड़ी की बेहद पतली खुरचन निकालने के काम में व्यस्त था, और उसने मालिक के अभिवादन का कोई उत्तर नहीं दिया। "तुम सब लोगों को क्या हो गया है ?" श्री लस्साले ने सभी कारीगरों की ओर मुड़कर ऊँची आवाज में पूछा। "ठीक है, हम सहमत नहीं हुए थे। लेकिन यह हमें साथ काम करने से रोक तो नहीं रहा। फिर तुम लोगों के ऐसे व्यवहार का क्या फायदा?" मार्को ने उठकर पेंदे वाले टुकड़े को खड़ा किया। अपनी हथेली से उसने उस गोल टुकड़े के तीखे किनारे को जाँचा। फिर अपनी झपकती, थकी हुई आँखों में संतोष की झलक दिखलाते हुए वह चुपचाप एक और कारीगर की ओर बढ़ गया, जो टुकड़ों को जोड़ कर पीपा बना रहा था। पूरी दुकान में केवल हथौड़ों और बिजली से चलने वाले आरे के काम करने की आवाज गूँज रही थी। "ठीक है," श्री लस्साले ने कहा। "जब तुम सब इस मिजाज से बाहर आ जाओ तब बैलेस्टर के माध्यम से मुझे बता देना।" यह कहकर वे शांतिपूर्वक दुकान से बाहर निकल गए।

इसके लगभग ठीक बाद दुकान के शोर को बेधती हुई एक घंटी दो बार बजी। बैलेस्टर अपनी सिगरेट सुलगाने के लिए अभी बैठा ही था। घंटी की आवाज सुनकर वह धीरे से उठा और दुकान के अंत में स्थित दरवाजे की ओर गया। उसके जाने के बाद हथौड़ों के मार की गूँजने की आवाज धीमी हो गई। एक कारीगर ने तो काम करना बंद ही कर दिया था। तभी बैलेस्टर लौट आया। दरवाजे के पास खड़े हो कर उसने केवल इतना कहा, "मार्को और यवेर्स, मालिक तुम दोनों को बुला रहे हैं।" यवेर्स की पहली इच्छा तो इससे पीछा छुड़ाने की हुई, लेकिन मार्को ने जाते-जाते उसे बाजू से पकड़ लिया और यवेर्स लंगड़ाते हुए उसके पीछे चल पड़ा।

बाहर आँगन में रोशनी इतनी साफ थी, इतनी स्वच्छ थी कि यवेर्स ने उसे अपनी अनावृत बाँह और चेहरे पर महसूस किया। फूलों के बड़े पौधे के नीचे से होते हुए वे बाहरी सीढ़ियों तक गए। फिर उन्होंने एक गलियारे में प्रवेश किया जिसकी दीवारों पर उपाधि-पत्र टँगे हुए थे। एक बच्चे के रोने की आवाज आई। साथ ही श्री लस्साले की आवाज सुनाई दी, "दोपहर के भोजन के बाद इसे सुला दो। यदि इसकी तबीयत फिर भी ठीक नहीं हुई तो हम डॉक्टर को बुला लेंगे।" फिर मालिक अचानक गलियारे में नजर आए और वे उन दोनों कारीगरों को मेज-कुर्सियों वाले उस कमरे में ले गए जिससे वे पूर्व-परिचित थे। उस कमरे की दीवारें खेल-कूद की ट्रॉफियों से सजी हुई थीं। उन्हें 'बैठो' कहते हुए श्री लस्साले अपनी कुर्सी पर बैठ गए। पर दोनों कारीगर खड़े रहे।

'मैंने तुम दोनों को यहाँ इसलिए बुलाया है क्योंकि तुम प्रतिनिधि हो, मार्को। और यवेर्स, तुम बैलेस्टर के बाद मेरे सबसे पुराने कर्मचारी हो। मैं पहले हो चुकी चर्चा और वाद-विवाद की बात दोबारा नहीं करना चाहता हूं। वह बात अब खत्म हो चुकी है। जो तुम लोग चाहते हो, वह मैं तुम्हें कतई नहीं दे सकता।

वह मामला अब निपटाया जा चुका है, और हम सब इस नतीजे पर पहुँच गए हैं कि काम दोबारा शुरू किया जाना है। मैं देख सकता हूं कि तुम सब मुझसे नाराज हो, और मुझे इस बात का दुख है। मैं जैसा महसूस करता हूं, वैसा ही तुम्हें बता रहा हूं। लेकिन मैं केवल एक बात और कहना चाहता हूं : "जो मैं तुम सब के लिए आज नहीं कर सकता, वह मैं शायद तब कर पाऊँ जब यह व्यवसाय मुझे मुनाफा देने लगेगा। यदि मैं कुछ कर सका तो तुम्हारे माँगने से पहले कर दूँगा। तब तक हम सबको मिल-जुल कर काम करने की कोशिश करनी चाहिए।" श्री लस्साले ने बोलना बंद किया और वह अपनी ही कही बात पर विचार करते प्रतीत हुए। फिर उन्होंने उन दोनों कारीगरों की ओर देखते हुए पूछा, "क्या कहते हो ?" मार्को खिड़की से बाहर देख रहा था। अपने दाँत भींचते हुए यवेर्स कुछ बोलना चाहता था, पर वह कुछ भी नहीं बोल पाया।

वह मामला अब निपटाया जा चुका है, और हम सब इस नतीजे पर पहुँच गए हैं कि काम दोबारा शुरू किया जाना है। मैं देख सकता हूं कि तुम सब मुझसे नाराज हो, और मुझे इस बात का दुख है। मैं जैसा महसूस करता हूं, वैसा ही तुम्हें बता रहा हूं। लेकिन मैं केवल एक बात और कहना चाहता हूं : जो मैं तुम सबके लिए आज नहीं कर सकता, वह मैं शायद तब कर पाऊँ जब यह व्यवसाय मुझे मुनाफा देने लगेगा। यदि मैं कुछ कर सका तो तुम्हारे माँगने से पहले कर दूँगा। तब तक हम सबको मिल-जुल कर काम करने की कोशिश करनी चाहिए।

"सुनो," श्री लस्साले ने कहा, "मुझे लग रहा है, तुम लोगों ने अपने दिमाग के दरवाजे बंद कर लिए हैं। तुम सब इससे उबर जाओगे। लेकिन जब तुम लोग दोबारा मेरी बात सुनने को तैयार हो जाओ तो मेरी वह बात याद रखना जो मैंने अभी कुछ देर पहले तुम दोनों से कही थी।" वे उठे और मार्को की ओर बढ़ते हुए उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया। अचानक मार्को का रंग पीला पड़ गया और एक पल के लिए उसके चेहरे पर कमीनेपन का भाव आ गया। फिर अचानक वह मुड़ा और कमरे से बाहर चला गया। यवेर्स का चेहरा भी पीला पड़ चुका था। उसने मालिक का आगे बढ़ा हुआ हाथ देखा, पर अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाया।

"भाड़ में जाओ !" वह चिल्लाया।

जब वे दोनों वापस दुकान में लौटे तो बाकी के कारीगर दोपहर का भोजन कर रहे थे। बैलेस्टर बाहर जा चुका था। मार्को

ने केवल यह कहा, "लगे रहो, " और वह अपनी बैठने की जगह पर चला गया। एस्पोजीतो ने खाना खाना बंद कर दिया और उनसे पूछा कि उन्होंने मालिक से क्या बातचीत की थी। यवेर्स ने उत्तर दिया कि उन्होंने मालिक की किसी भी बात का कोई जवाब नहीं दिया था। फिर वह अपना थैला लेने के लिए गया और वापस अपने काम करने वाली जगह पर लौट आया। वह अपना खाना खाना शुरू कर ही रहा था जब उसने अपने से कुछ ही दूरी पर सैयद को छीलन की ढेर के बीच पीठ के बल लेटा हुआ पाया। उसकी आँखें अनिश्चितता से खिड़कियों की ओर देख रही थीं, जिनकी काँच में आकाश का फीका नीलापन प्रतिबिम्बित हो रहा था। यवेर्स ने उससे पूछा कि क्या उसने अपना भोजन कर लिया है। सैयद ने कहा कि उसने अपने अंजीर खा लिए हैं। यवेर्स खाते-खाते रुक गया। श्री लस्साले से होने वाली मुलाकात के समय से ही जो बेचैनी उसमें व्याप्त थी, वह अचानक ही जाती रही और उसने उसके बदले एक सुखद उत्साह महसूस किया। उसने अपनी सैंडविच के दो टुकड़े किए और अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। पर सैयद ने सैंडविच लेने से इनकार कर दिया। इस पर यवेर्स ने उससे कहा कि अगले हफ्ते तक सब बेहतर हो जाएगा। "तब हम सब को खिलाने-पिलाने की बारी तुम्हारी होगी," उसने कहा। सैयद मुस्कुराया। अब उसने यवेर्स से सैंडविच का टुकड़ा ले कर खाया, किंतु संकोच से, जैसे उसे अभी भूख नहीं लगी हो।

एस्पोजीतो ने एक पुराना बर्तन लिया और छीलन और लकड़ी के टुकड़ों की मदद से आग जला ली। उसने बोतल में लाई हुई कॉफी आग पर गरम की। उसने बताया कि उसके पंसारी ने उनकी दुकान के लिए खुद बना कर यह तोहफा भेजा, जब उसे हड़ताल के विफल होने का पता चला। वह बोतल एक हाथ से दूसरे हाथ में दी जाती रही। हर बार उसमें से चीनी मिली कॉफी उड़ेली जाती। सैयद को खाना खाते समय उतना आनंद नहीं आया था, जितना कॉफी पीते समय आ रहा था। एस्पोजीतो ने बाकी बची कॉफी सीधे उस गरम बर्तन में से ही पी ली। वह कॉफी सुड़कने की आवाज निकालता रहा और गालियाँ बकता रहा। तभी बैलेस्टर वहाँ आ पहुँचा ताकि वह सभी कारीगरों को वापस काम पर जाने का इशारा कर सके।

जब वे उठ कर अपने बर्तन आदि इकट्ठा करके अपने थैलों में डाल रहे थे, बैलेस्टर आ कर उनके बीच में खड़ा हो गया। उसने अचानक कहा कि यह सबके लिए मुश्किल की घड़ी थी, और उसका भी यही हाल था। किंतु केवल इसीलिए वे सब बच्चों जैसा व्यवहार नहीं कर सकते थे, और नाराज होकर खीझने से कोई फायदा नहीं होने वाला था। हाथ में बर्तन पकड़े हुए एस्पोजीतो उसकी ओर मुड़ा। उसका लम्बा, खुरदरा चेहरा अचानक उत्तेजना से लाल हो गया था। यवेर्स समझ गया कि वह क्या कहने वाला था और सभी कारीगर एक ही समय में क्या सोच रहे थे। वे सब नाराज होकर खीझ नहीं रहे थे। उनके मुँह बंद थे। उनके पास और कोई विकल्प नहीं था। कई बार गुस्से और असहायता का भाव इतनी पीड़ा देता है कि आप रो भी नहीं पाते हैं। आखिरकार वे सभी मर्द थे और ऐसी हालत में वे सभी मुस्कुराने और खीसें निपोरने वाले नहीं थे। लेकिन एस्पोजीतो ने इनमें से कुछ भी नहीं कहा। अंततः उसका चेहरा नरम पड़ गया और उसने बैलेस्टर के कंधे पर धीरे से थपकी दी, जबकि बाकी कारीगर अपना काम करने के लिए अपनी-अपनी जगहों पर चले गए। हथौड़ों के चलने की आवाज दोबारा आने लगी। दुकान का बड़ा अहाता चिर-परिचित शोर से भर गया। वहाँ छीलन और पसीने से गीले हो गए कपड़ों की मिली-जुली गंध मौजूद थी। जब एस्पोजीतो ने बिजली से चलने वाले आरे के चीखने की आवाज सुनाई दी, जब एस्पोजीतो ने लकड़ी के तख्ते को धीरे-धीरे आरे के मुँह में धकेला। जहाँ आरे ने उस तख्ते को काटा, वहाँ से गीला बुरादा बाहर आया। ऐसा लगा जैसे एस्पोजीतो के बालों भरे बड़े हाथ ब्रेड के बारीक टुकड़ों से भर गए हों। उन हाथों ने लकड़ी को कराहते आरे की धारदार फलक के दोनों ओर मजबूती से पकड़ रखा था। जब तख्ता कट गया तो केवल आरे के मोटर के चलने की आवाज आती रही।

जब यवेर्स रंदा फेरने के लिए झुका तो उसने अपनी पीठ में तनाव महसूस किया। आम तौर पर थकान बहुत बाद में होती थी। यह स्पष्ट था कि निष्क्रियता वाले इन हफ्तों की वजह से उससे काम करने का अभ्यास छूट गया था। लेकिन उसे अपनी उम्र का भी खयाल आया, जो शारीरिक श्रम को तब मुश्किल बना देती है जब वह कोई सूक्ष्म काम नहीं होता। यह खिंचाव वृद्धावस्था का पूर्वाभास होता है। जहाँ कहीं भी मांसपेशियाँ काम में आती हैं, अंततः कार्य घृणित हो जाता है। यह मृत्यु से पूर्व की स्थिति होती है, और जिस शाम अत्यधिक शारीरिक श्रम करना पड़ता है, नींद भी मृत्यु की तरह लगती है। लड़का तो विद्यालय में पढ़ाने वाला शिक्षक बनना चाहता था। वह सही था। जो शारीरिक श्रम के बारे में गैर-जरूरी घिसे-पिटे विचार व्यक्त करते हैं, उन्हें खुद पता नहीं होता कि वे क्या कह रहे हैं।

जब यवेर्स राहत पाने और इन विचारों से मुक्ति पाने के लिए सीधा हुआ, तो घंटी फिर से बज उठी। वह अजीब ढंग से लगातार बजती रही। कभी वह रुक जाती, कभी उद्धत ढंग से फिर बज उठती। घंटी के इस तरह बजने की आवाज सुन कर कारीगरों ने अपना काम रोक दिया। बैलेस्टर पहले हैरान हो कर घंटी के बजने की आवाज सुनता रहा। फिर उसने अपना मन बनाया और दरवाजे की ओर बढ़ा। उसे गए हुए कई पल हो गए थे, तब जा कर अंततः घंटी के बजने की आवाज बंद हुई। कारीगरों ने अपना काम दोबारा शुरू कर दिया। किंतु दरवाजा एक बार फिर फटाक-से खुला और बैलेस्टर सामान रखने वाले कमरे की ओर भागा। वह बाहर पहने जाने वाले जूते पहन कर कमरे से निकला और अपना जैकेट

पहनते हुए उसने यवेर्स से कहा, “बच्ची को दौरा पड़ा है। मैं डॉ. जर्मेन को लेने जा रहा हूं।” यह कह कर वह दौड़ कर मुख्य दरवाजे की ओर चला गया।

डॉ. जर्मेन दुकान के कारीगरों की सेहत का ध्यान रखते थे। वे बाहर की ओर स्थित मकान में रहते थे। यवेर्स ने यह खबर बिना किसी टीका-टिप्पणी के सबको सुनाई। वे सब उलझन में एक-दूसरे की ओर देखते हुए उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए। बिजली से चलने वाले आरे के मोटर के चलने की आवाज के अलावा और कुछ भी नहीं सुनाई दे रहा था। “शायद यह कोई बड़ी बात नहीं,” कारीगरों में से एक ने कहा। वे सब वापस अपनी-अपनी जगह पर चले गए। दुकान में दोबारा उनके आपस में बातचीत करने की आवाज आने लगी। लेकिन अब वे धीमी गति से काम कर रहे थे, जैसे वे किसी चीज की प्रतीक्षा कर रहे हों।

पंद्रह मिनट के बाद बैलेस्टर दोबारा दुकान में आया। उसने अपना जैकेट दीवार पर लगी खूँटी पर टाँग दिया और बिना एक भी शब्द कहे वह छोटे दरवाजे से हो कर बाहर चला गया। खिड़कियों से आने वाली रोशनी कम होती जा रही थी। कुछ देर बाद जब बीच के समय में बिजली से चलने वाला आरा लकड़ी को नहीं काट रहा था, किसी एम्बुलेंस के सायरन की आवाज सुनाई देने लगी। यह आवाज पहले दूर से आ रही थी, फिर पास आती गई और अंत में दुकान के ठीक बाहर से सुनाई देने लगी। फिर चारों ओर चुप्पी छा गई। एक पल के बाद बैलेस्टर वापस आ गया और सभी कारीगर उसके पास चले आए। एस्पोजीतो ने बिजली से चलने वाले आरे की मोटर बंद कर दी थी। बैलेस्टर ने कहा कि अपने कमरे में कपड़े बदलते समय बच्ची अचानक पलट कर गिर गई थी जैसे उसे रौंद दिया गया हो। “क्या तुमने कभी ऐसी कोई बात सुनी है?” मार्को ने कहा। बैलेस्टर ने ‘ना’ में अपना सिर हिलाया और अनिश्चित रूप से दुकान की ओर इशारा किया। पर उसे देखकर ऐसा लगा जैसे इस सारे घटनाक्रम की वजह से वह ‘हिल’ गया था। एम्बुलेंस के सायरन की आवाज दोबारा सुनाई दी। वे सब वहीं थे। दुकान में सन्नाटा था। खिड़कियों के शीशों में से होकर पीली रोशनी दुकान के भीतर आ रही थी। कारीगरों के खुरदरे, बेकार हाथ बुरादे लगी उनकी पुरानी पतलूनों के बगल में लटके हुए थे।

पंद्रह मिनट के बाद बैलेस्टर दोबारा दुकान में आया। उसने अपना जैकेट दीवार पर लगी खूँटी पर टाँग दिया और बिना एक भी शब्द कहे वह छोटे दरवाजे से हो कर बाहर चला गया। खिड़कियों से आने वाली रोशनी कम होती जा रही थी। कुछ देर बाद जब बीच के समय में बिजली से चलने वाला आरा लकड़ी को नहीं काट रहा था, किसी एम्बुलेंस के सायरन की आवाज सुनाई देने लगी। यह आवाज पहले दूर से आ रही थी, फिर पास आती गई और अंत में दुकान के ठीक बाहर से सुनाई देने लगी। फिर चारों ओर चुप्पी छा गई।

ढलती दुपहरी में बाकी बचा समय भी घिसटता रहा। यवेर्स अब केवल थकान और अपनी छाती पर एक भारीपन को महसूस कर रहा था। वह बातचीत करना चाहता था। लेकिन उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं था। दूसरे कारीगरों का भी यही हाल था। उनके असंचारी चेहरों पर केवल वेदना और हठ जैसा भाव मौजूद था। कभी-कभी ‘आपदा’ शब्द यवेर्स में आकार लेता प्रतीत होता था। लेकिन यह भाव क्षणिक ही था क्योंकि यह तत्काल गायब हो जाता था। यह ऐसा था जैसे कोई बुलबुला आकार लेते ही फूट जाता है। वह घर जाना चाहता था। फिर से फरनांदे के पास रहना चाहता था। वह अपनी पत्नी के साथ खुली छत पर समय बिताना चाहता था।

जैसा कि होना ही था, बैलेस्टर ने दुकान बंद करने का समय हो जाने की घोषणा कर दी। सारी मशीनों का चलना रोक दिया गया। बिना किसी जल्दबाजी के सारे कारीगर जगह-जगह जल रही आग को बुझाने लगे, और अपने काम करने की जगह पर चीजों को व्यवस्थित करने लगे। फिर सभी कारीगर एक-एक करके सामान रखने वाले बंद कमरे में गए, जिसके दूसरे कोने में खुला स्नान-कक्ष था। सैयद सबसे पीछे रह गया। दुकान को साफ करने और धूल-मिट्टी वाली जमीन पर पानी छिड़कने की जिम्मेदारी उसकी थी।

जब यवेर्स सामान रखने वाले बंद कमरे में पहुँचा तो उसने पाया कि बालों से भरी देह वाला विशालकाय एस्पोजीतो स्नान-कक्ष में नहा रहा था। उसके तौलिये से अपनी देह को रगड़ने की आवाज दूर तक आ रही थी। आम तौर पर बाकी कारीगर उसे उसके शर्माने की वजह से छेड़ते थे। भालू जैसा विशालकाय और जिद्दी एस्पोजीतो वाकई अपने गुप्तांगों को नहाते समय भी छिपाए रखता था। लेकिन आज इस अवसर पर किसी ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया। स्नान करने के बाद अपनी कमर में तौलिया लपेटे एस्पोजीतो सबके बीच बाहर आ गया। फिर एक-एक करके सभी कारीगर नहाने लगे। मार्को नहाते समय शोर मचा रहा था। तभी सभी कारीगरों ने पहिये वाले मुख्य द्वार के घर्षण के साथ धीरे-धीरे खुलने की आवाज सुनी। श्री लस्साले भीतर आ गए।

उन्होंने वही कपड़े पहने हुए थे जो उन्होंने यहाँ पिछली बार आते समय पहन रखे थे। लेकिन उनके बाल बेहद छितराए हुए थे। वे चौखट पर रुके और उन्होंने उस बड़ी खाली दुकान की ओर देखा। उन्होंने कुछ कदम बढ़ाए। फिर वे रुके और उन्होंने सामान रखने वाले कमरे और स्नान-कक्ष की ओर देखा। कमर में तौलिया लपेटे एस्पोजीतो उनकी ओर मुड़ा। अर्द्ध-नग्न अवस्था में और उलझन में वह कभी एक पैर पर, कभी दूसरे पैर पर अपनी देह का

(शेष पृष्ठ 49 पर)

व्यंग्य

बिना वसंत के जीवन

◆ रामस्वरूप दीक्षित

छोटे लोग अपने जीवन में छोटी-छोटी चीजों को वसंत में खोज लेते हैं और खुश हो लेते हैं। जिस दिन उनके नलों में पानी आ जाता है या राशन की दुकान पर बिना लाइन में लगे शक्कर मिल जाती है, उस दिन उनके जीवन में वसंत आ जाता है। जिस दिन पूरा किराया देकर आधी सीट मिल जाती है, जिस दिन उन्हें आलू के साथ धनिया मुफ्त मिल जाती है, जिस दिन उनके टूटे हुए छप्पर की मरम्मत हो जाती है, और जिस दिन उन्हें चाय के साथ पकौड़े नसीब हो जाते हैं, उस दिन उनके जीवन में वसंत उतर आता है। जिस लेखक की रचनाएं वर्षों से संपादकों द्वारा बिना पढ़े लौटाई जा रहीं हों, उसकी कोई रचना जिस दिन कहीं छप जाती है, उसके जीवन में उसी दिन वसंत आता है। लेखकों का वसंत संपादकों और प्रकाशकों की टेबल पर बैठा रहता है।

कल मेरा जन्मदिन था। मैंने अपने एक मित्र को फोन किया-बंधुवर आज मेरा जन्मदिन है, मैं इस अवसर पर आपका स्नेह और शुभकामनायें चाहता हूं। मित्र बोले-आप अब तक अपने जीवन के कितने वसंत देख चुके हैं? मेरा मतलब कि आपका यह कौन सा जन्मदिन है?

मैंने कहा-यूं तो अट्ठावन वर्ष का हो चुका हूं , मगर अपने जीवन मे वसंत मैंने कभी नहीं देखा। छोटे लोगों के जीवन मे शायद कभी वसंत नहीं आता। वे बिना वसंत के ही जीते रहते हैं। ऐसा नहीं है कि मैंने वसंत को देखा न हा। देखा है। कई बार तो बिलकुल नजदीक से देखा है, मगर वह मुझे वह अनदेखा कर किसी और के पास चला गया और मैं उसे जाते हुए देखता रहा। छोटे लोग वसंत को जाते हुए ही देखते हैं, आते हुए नहीं। एक दो बार ऐसा भी हुआ कि वसंत मेरे घर पर आया, मगर मैं उससे मिल न सका। एक बार जब वह आया, उस समय मैं राशन की दुकान पर थैला लिए लाइन मे खड़ा था। घर पर आया तो पत्नी ने बताया कि कोई वसंत साहब आये थे आपसे मिलने को काफी देर खड़े रहे। आपके आने के कोई दस मिनट पहले ही गए हैं। बोल रहे थे कि आयें तो बता देना कि घर पर ही रहा करें मैं फिर किसी दिन आऊंगा। मैंने कहा क्या करूं, आज लाइन बहुत लंबी थी। सेल्समैन ने दुकान देर से खोली थी। मैंने सोचा, अगर मेरे घर पर भरपूर राशन होता, तो आज वसंत मेरे घर बैठा होता। जिनके घर राशन नहीं है, उन्हें वसंत की उम्मीद नहीं करना चाहिए।

जब दूसरी बार फिर वसंत मेरे घर आया, तब मैं अपने बेटे की फीस माफी की दया याचिका लिए स्कूल प्रबंधन के सामने हाथ बांधे खड़ा था। मेरे जैसे लोगों के साथ यही होता है, राशन और फीस के चक्कर में वसंत चला जाता है।

मित्र अब तो मैंने वसंत के बिना जीना सीख लिया है। अट्ठावन साल से पतझड़ के साथ रह रहा हूं। वही अब अपना लगने लगा है। सुना है कि वसंत को कुछ लोगों ने अपने घर पर कैद कर रखा है। उसे वहां से निकलने ही नहीं देते। मुझे वसंत से कोई शिकायत नहीं है, मगर किसी का बंधुआ होकर रह जाना ठीक नहीं है, वसंत के लिए भी नहीं। उसे अपनी आजादी के लिए प्रयास करना चाहिये। जंजीर चाहे सोने की ही क्यूं न हो, आती बांधने के ही काम है। सोने की जंजीर में बंधे लोग सुखी भले ही हों, मगर आजाद नहीं हैं। शायद सुख समृद्धि हमारी आजादी को खत्म कर देती है।

छोटे लोग अपने जीवन में छोटी-छोटी चीजों में वसंत को खोज लेते हैं और खुश हो लेते हैं। जिस दिन उनके नलों में पानी आ जाता है या राशन की दुकान पर बिना लाइन में लगे शक्कर मिल जाती है, उस दिन उनके जीवन में वसंत आ जाता है। जिस दिन पूरा किराया देकर आधी सीट मिल जाती है, जिस दिन उन्हें आलू के साथ धनिया मुफ्त मिल जाती है, जिस दिन उनके टूटे हुये छप्पर की मरम्मत हो जाती है, और जिस दिन उन्हें चाय के साथ पकौड़े नसीब हो जाते हैं, उस दिन उनके जीवन में वसंत उतर आता है। जिस लेखक की रचनाएं वर्षों से संपादकों द्वारा बिना पढ़े लौटाई जा रहीं हों, उसकी कोई रचना जिस दिन कहीं छप जाती है, उसके जीवन में उसी दिन वसंत आता है। लेखकों का वसंत संपादकों और प्रकाशकों की टेबल पर बैठा रहता है।

मित्र आपके सामान्य ज्ञान पर मुझे तरस आ रहा है। आप मुझ से पूछ रहे हैं कि मैं जीवन में कितने वसंत देख चुका हूं?

आपने यह नहीं सोचा कि अगर मेरे जीवन में वसंत होता तो क्या मुझे आपको यह बताना पड़ता कि आज मेरा जन्मदिन है और यह कहना पड़ता कि मुझे आपकी शुभकामनाओं की जरूरत है? मित्रवर अगर मेरे जीवन में वसंत होता तो मैं अपने घर सो रहा होता और आप मेरे दरवाजे पर फूलों का गुलदस्ता लिए मुझे जन्मदिन की शुभकामनाएं देने और मेरा आशीर्वाद लेने खड़े होते। मेरा नौकर उस स्थान की ओर संकेत करते हुये - जहां ढेर सारे गुलदस्ते रखे होते, कहता वहाँ रख दीजिए। साहब रात को देर से सोये थे, थोड़ा देर से उठेंगे और आप निराश मन से चले गए होते। वसंत वालों के जन्मदिन वे खुद नहीं, दूसरे याद रखते और मनाते हैं, वे केवल केक काटते हैं। उनके जन्मदिन पर अखबारों में विज्ञापन छपते हैं और अगले दिन जन्मदिन मनाये जाने के समाचार। जिन लोगों को अपनी खुद की जिंदगी का कोई ठिकाना नहीं दिखता, वे भी उनके शतायु होने की कामना करते हैं। जिनकी जिंदगी उनके कारण नरक बन चुकी होती है, वे भी अपनी बची-खुची उम्र उन्हें देने को उतावले दिखते हैं। आपको फोन करने के पहले मैं शहर के वरिष्ठ साहित्यकार विपुल जी का आशीर्वाद लेने गया था। जिन सज्जन ने दरवाजा खोला उन्होंने पूछा - क्या काम है? मैंने कहा- विपुल जी घर पर हैं क्या? आज मेरा जन्मदिन है मैं उनका आशीर्वाद लेने आया हूं। उन सज्जन ने मुझे घूर कर देखा फिर बोले - आपको पता नहीं आज भैया जी का जन्मदिन है, वे उन्हें बधाई देने व उनका आशीर्वाद लेने गए हैं। मुझे लगा जैसे विपुल जी का वसंत भैयाजी के यहां अटक गया हो और वे उसे लेने गए हों। हममें से बहुतों का वसंत बड़ों के यहां अटक जाया करता है। कुछ लोगों के जीवन में जो वसंत दिखाई देता है, वह उनका खुद का नहीं बल्कि उधार का होता है। मैं सिद्धांततः उधारी के वसंत के खिलाफ हूं क्योंकि व्यवहारतः मुझे उधार में भी वसंत नहीं मिला। व्यावहारिक जीवन में असफल होने पर आदमी सिद्धांतों में जीवन की सार्थकता तलाशने लगता है। मित्र मेरे जीवन के वसंत को बहुत सारे लोगों ने मिलकर छेंक रखा रखा है। वे नहीं चाहते कि मेरे जीवन में वसंत आये, क्योंकि वे जानते हैं कि अगर इसके जीवन में वसंत आ गया तो यह बौरा जायेगा और एक बौराया हुआ लेखक उन सबके लिए खतरनाक साबित हो सकता है जिन्होंने वसंत को ठेके पर ले रखा है। इसलिए मित्र मुझे लगता है कि मुझे बिना वसंत के ही जीवन बिताना पड़ेगा। मित्र कल रात मैंने एक सपना देखा था। एक बड़ा सा बंगला है, जिसे चारों तरफ से पुलिस ने घेर रखा है। बंगले के बाहर गरीब फटेहाल लोग भीड़ के रूप में जमा हैं। उनके हाथों में तख्तियां हैं जिन पर लिखा है- हमें हमारा वसंत चाहिए। भीड़ धीरे-धीरे बंगले की तरफ बढ़ रही है। पुलिस ने लाठियां बरसाना शुरू कर दिया है मगर भीड़ टस से मस नहीं हो रही है। लगता है, वह अपना वसंत लेकर ही मानेगी। आपको क्या लगता है? क्या ये सपना सच होगा? मुझे तो लगता है।

सिद्ध बाबा कॉलोनी, टीकमगढ़-472001
मो. 0 91 99814 11097

मौन लोग

(पृष्ठ 47 से आगे)

भार डाल रहा था। यवेर्स ने सोचा कि मार्को को कुछ कहना चाहिए। लेकिन मार्को तो नहाने में व्यस्त था। जब एस्पोजीतो ने एक कमीज उठाई और उसे फुर्ती से पहनने लगा तभी श्री लस्साले ने सपाट आवाज में सबसे 'शुभ-रात्रि' कहा और फिर वे छोटे दरवाजे की ओर चल दिए। जब तक यवेर्स यह सोच पाता कि किसी को उन्हें वापस बुलाना चाहिए, तब तक दरवाजा बंद हो चुका था। यवेर्स ने नहाए बिना अपने कपड़े बदले और सबसे हृदय से 'शुभ-रात्रि' कहा। सबने उसी गर्मजोशी से जवाब दिया। वह तेजी से बाहर निकला और उसने अपनी साइकिल उठाई। जब उसने साइकिल चलानी शुरू की तो उसे अपनी पीठ में फिर से खिंचाव महसूस हुआ। ढलती दुपहरी में अब वह व्यस्त सड़क पर साइकिल चला रहा था। वह तेजी से साइकिल चला रहा था क्योंकि वह जल्दी से अपनी खुली छत वाले घर पर पहुंचना चाहता था। वहां वह स्नान करके खुली छत से समुद्र का दृश्य देखना चाहता था, हालांकि इस यात्रा में समुद्र उसके बगल में ही मौजूद था। सायादार चौड़े मार्ग की मुंडेर के उस पार समुद्र अब सुबह जैसा रोशन नहीं था बल्कि काला लग रहा था। लेकिन वह बीमार हो गई। उस छोटी बच्ची का खयाल अपने जहन से नहीं निकाल सका, और रास्ते में वह उसी के बारे में सोचता रहा।

घर पहुंचने पर उसने पाया कि उसका लड़का स्कूल से लौट आया था और वह कोई किताब पढ़ रहा था। उसकी पत्नी फरनांदे ने उससे पूछा कि क्या सब कुछ ठीक-ठाक रहा। उसने कोई जवाब नहीं दिया और स्नान करने चला गया। फिर वह खुली छत की छोटी-सी दीवार के किनारे कुर्सी डाल कर बैठ गया। उसके सिर के ऊपर अलगनी पर धुले हुए कपड़े सूख रहे थे और आकाश इस समय पारदर्शी हुआ जा रहा था। दीवार के उस पार कोमल समुद्र पसरा हुआ था। फरनांदे पीने का सामान, दो गिलास और जग में ठंडा पानी ले आई। वह अपने पति के बगल में बैठ गई। यवेर्स ने उसे पूरी बात बताई। उसने अपनी पत्नी का हाथ अपने हाथों में इस तरह ले रखा था जैसे वे अपनी शादी के शुरुआती दिनों में किया करते थे। अपनी बात खत्म करने के बाद भी वह अपनी जगह से नहीं हिला बल्कि वह समुद्र की ओर देखता रहा, जहां एक ओर से दूसरी ओर तक गहरी होती शाम का धुंधलका फैलता जा रहा था। रात वहां दस्तक दे रही थी। "ओह, यह उसकी अपनी गलती है," उसने कहा। काश, वह फिर से युवा होता और फरनांदे भी युवा होती तो वे समुद्र के उस पार दूर कहीं चले जाते।

I-5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड, इंदिरापुरम्,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201014, मो. 0 85120 70086

समीक्षा

साहित्य व पत्रकारिता के विविध पक्षों को समाहित करती
शिमला डायरी

◆ रत्न चंद निर्झर

हिंदी साहित्य की एक लोकप्रिय विधा रही है डायरी लेखन। वर्तमान समय में इस विधा पर इक्का-दुक्का काम हो रहा है। पहले एक कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी नियमित रूप से डायरी लिखा करता था। इस डायरी में निजता तो रहती ही थी। साथ-साथ सामयिक घटनाएं भी डायरी में दर्ज हुआ करती थी जो कि बाद में एक दस्तावेज का कार्य करती थी। हाल ही में युवा शोधकर्ता साहित्यकार एवं पेशे से पत्रकार प्रमोद रंजन की पुस्तक शिमला डायरी प्रकाशित होकर समाने आई है इसमें उनकी डायरी के पन्ने तो है ही साथ-साथ आलोचना कहानी-कविताएं व मौखिक इतिहास इंटरव्यू विधा के रूप में समाहित है।

पुस्तक की भूमिका लेखक प्रमोद रंजन ने विस्तृत रूप से पटना से लेकर हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्थलों में संघर्षमय जीवन का पूरा चिट्ठा खोलकर पाठकों के सामने रख दिया है। लेखक का वर्ष 2002 से 2006 तक का कार्यकाल गोहर मंडी, धर्मशाला, शिमला में संघर्ष के दौर से गुजरा और इस मध्य के कार्यकाल को जो उन्होंने देखा, परखा व भोगा उसका पूरी ईमानदारी से सटीक चित्रण डायरी के पन्नों में दर्ज किया है। कई दैनिक व साप्ताहिक पत्रा-पत्रिकाओं में पत्रकार की भूमिका निभाते हुए वहां के वातावरण, कार्य प्रणाली को जो जिया व सहा उसे कलमबद्ध करके प्रस्तुत किया। डायरी के पन्नों में कहीं-कहीं उनका कवि स्वरूप भी उभर कर सामने आया है। मित्र देवरानी के पिता की मृत्यु पर आहत प्रमोद का कवि हृदय कह उठता है :

कमरे से थैला ले पौड़ी गढ़वाल जाएंगे देवरानी के भाई
निर्जन में राह की रेख बनाते
बर्फ के सीने पर थाप देते वह मौन आगे पीछे मैं स्तब्ध
एक शव की दूरी पर कांधा झुकाए

29 मार्च 2004 को दैनिक अखबार के रिसेप्शन पर संपादक को दिए गए त्याग पत्र में प्रमोद रंजन बेबाकी से स्पष्ट करते हैं कि "वे आपके द्वारा सौंपे गए नए कार्यभार (एक अश्लील परिशिष्ट के संयोजन) को न संभाल पाने की क्षमता स्वीकारते हुए मैं क्षण भर के लिए भी धर्मसंकट में नहीं हूं। कृपया मेरे इस त्याग पत्र को तत्काल प्रभाव से स्वीकृत माने। कहने की आवश्यकता नहीं कि पिछले छः-सात माह में आपसे मिला स्नेह व सहयोग आजीवन स्मरण रहेगा।"

25 जनवरी 2005 की डायरी के अंश एक पत्रकार की स्वतंत्रता पर भी प्रश्नचिन्ह उठाते हैं।

विवाद फैलाना चाहते हो तो खरा-खरा सच लिख दो, बस, सच से ज्यादा विवादास्पद कुछ नहीं होता या फिर पत्रकारिता में सफल होने का एक नुस्खा : चुप्पा बनो पक्ष- विपक्ष में कुछ भी बोलने से परहेज रखो।

डायरी के पहले खंड में इस तरह के उनके कई बयान डायरी के पन्नों में तिथिवार दर्ज है जिन्हें लेखक ने 'हम स्वप्नों की तलाश में गए थे पहाड़ों की ओर' जोकि वर्तमान समय में पत्रकारिता के नंगे सच का पर्दाफाश करते हुए पत्रकारिता में अपना जीवन होम कर रहे युवा पत्रकारों के दर्द, वेदना को अभिव्यक्त करती है।

खंड दो में प्रमोद रंजन की कविताएं शिमला में हिमपात, मुबारक हिमपात, अबके भी, कच्ची बर्फ, शिमला, कस्तूरी तुम्हारी हंसी, टिकुली-दो कविताएं, सगलगी, किताब, साऊथ ब्लॉक के गांधी पर, मुझमें पिता व आशीष छोटी-छोटी कविताएं शामिल है जो उनके काव्य पक्ष को उजागर करती हैं। इन कविताओं में शिमला के प्रकृति चित्रण, के साथ-साथ भाव बोध के दर्शन निहित हैं। रामकीरत जैसे युवा उत्साही पत्रकार के जज्बों को कुचलते संपादक का सजीव चित्रण है।

खंड-3 आलोचना के अंतर्गत युवा पत्रकार प्रमोद रंजन ने समसामयिक विषयों पर सारगर्भित समीक्षाओं के अंतर्गत एक आलोचक की भूमिका प्रदर्शित की। इनमें विपाशा के कविता अंक,

भूमंडलीकरण के मेले में पहाड़ में अनूप सेठी के कविता संग्रह जगत में मेला, भाई वाह अच्छा तमाशा है में अरुण आदित्य द्वारा दैनिक भास्कर के चंडीगढ़ संस्करण के पहाड़ पर लालटेन आलेख पर विस्तृत समीक्षात्मक आलेख लिखे हैं जो समय-समय पर विपाशा, दैनिक भास्कर में प्रकाशित हुए थे।

'अस्किनी' के प्रवेशांक पर सूत न कपास, जुलाहों में लट्ठम-लठ, यशपाल के हिमाचली होने का गर्व (दिव्य हिमाचल), ग्राम परिवेश के चमन के विकल्पों पर ताला आलेख भी रंजन ने अपनी बौद्धिकता का परिचय दिया है। खंड-4 में समय-समय पर विभिन्न समाचार पत्रों के लिए लिखी गई टिप्पणियां समाहित हैं जो कि भारतेंदु शिखर, ग्राम परिवेश, दैनिक भास्कर, प्रभात खबर में उनके सेवारत रहने पर लिखी गई हैं। ये टिप्पणी विभिन्न साहित्यिक सामयिक आयोजनों व व्यक्ति विशेष को लेकर लिखी गई थी।

पुस्तक के अंतिम खंड मौखिक इतिहास में इस पुस्तक के लेखन ने वर्ष 2017-18 में अपने जनजातीय सपरिवार प्रवास के दौरान किन्नौर लाहुल स्पीति व पांगी का भ्रमण किया था, उस दौरान किन्नौर में बौद्ध धर्म, जाति प्रथा व राजनीति के अंतर्गत किन्नौर के करला गांव के अमीर लामा, एक जोमो का जीवन शीर्षक के अंतर्गत कानम की जोमो (बौद्ध भिक्षुणी) सुमार, लाहौल घाटी में अवलोकितेश्वर गुरु घंटापा, शिव और काली शीर्षक के अंतर्गत तांदी गांव के युवा पर्यटन व्यवसायी विक्रम कटोच व पांगी घाटी में नाग भूत और गोंपा शीर्षक के तहत परमार गांव के स्थानीय निवासियों रमेश, शेरजंग व प्रेमा से लिए गए साक्षात्कारों में महत्त्वपूर्ण सामग्री पाठकों को उपलब्ध करवाई है जोकि बौद्ध धर्म के कई विविध पक्षों को उजागर करती हुई ज्ञानवर्धक जानकारी लिए हुए है। 216 पन्नों की यह पुस्तक युवा लेखक पत्रकार जहां एक ओर उनके पत्रकार स्वरूप का परिचय देते हुए उनके जीवन संघर्ष का खुला दर्पण है, वहीं पुस्तक के अंतिम अध्याय में उनके जिज्ञासापूर्ण साक्षात्कार में अमूल्य सामग्री खोजकर्ता के रूप में स्थापित करते हैं।

लेखक का यह रोजनामचा या डायरी उनकी निजता के साथ-साथ समय के इतिहास को भी दर्ज करने में सफल हुई है। लेखकीय जीवन के उतार-चढ़ाव सुख-दुःख के दौर से गुजरती यह कृति हिमाचल के ग्राम्य व शहरी समाज के विविध पक्षों का सजीव चित्र प्रस्तुत पुस्तक में उनकी कला कहानी व कविता के अलावा देश-विदेश के विभिन्न चर्चित/अचर्चित कवियों की श्रेष्ठ कविताओं को भी काव्यांश के रूप में पुस्तक के लेखक ने पाठकों के समक्ष उद्धृत किया है।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली से फणीश्वर नाथ रेणु की पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार विषय पर एम.फिल तथा अद्विज हिंदी कथाकारों के उपन्यासों में जाति मुक्ति का सवाल पर पी-एच.डी. करने के उपरांत डॉ. प्रमोद रंजन कुछ अरसा तक फारवर्ड प्रैस नई दिल्ली के प्रबंध संपादक रहने के बाद इन दिनों केंद्रीय विश्वविद्यालय दिफू असम में सेवारत हैं।

मकान नं. 211, रौड़ा सैक्टर-2, बिलासपुर,
हिमाचल प्रदेश, मो. 0 94597 73121
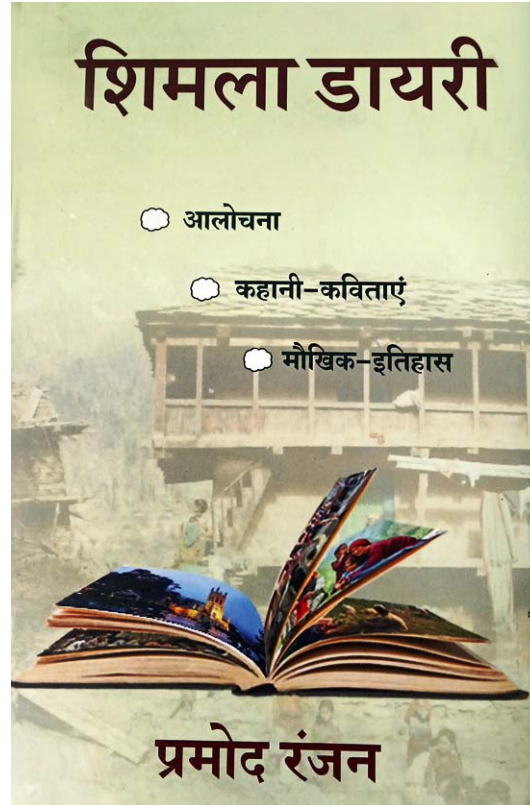
पुस्तक का नाम : शिमला डायरी, लेखक : डॉ. प्रमोद रंजन
प्रकाशक : द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन इग्नू रोड, दिल्ली-110 068
मूल्य : 350 रुपये (सजिल्द)

समीक्षा

गांव का वर्तमान चेहरा दिखाता 'ढोल की थाप' कहानी संग्रह

◆ पवन चौहान

आज हम इक्कीसवीं सदी में खड़े हैं। यह वह समय है जिसमें हर गांव बाजारवाद और आधुनिकता के मकड़जाल में उलझकर जीवन मूल्यों को पीछे छोड़ता जा रहा है। रिश्तों की कद्र रुपयों को देखकर की जा रही है। संवेदनशून्य बनता हमारा समाज हमसे सारे संस्कार, नैतिकता को छीनता और आगे बढ़ता हुआ जैसे जश्न मनाता हुआ प्रतीत हो रहा है। इन्ही सारे मुद्दों पर बात और वर्तमान में गांव का ताजा चेहरा पाठक के सामने पेश करता है मुरारी शर्मा का कहानी संग्रह 'ढोल की थाप'। संग्रह का नाम ही हमें ग्रामीण परिवेश से मुखातिब करवा देता है। इस संग्रह को पढ़ते हुए पाठक पहाड़ के किसी गांव में खड़ा स्वयं को बहुत सारे प्रश्नों से घिरा हुआ पाता है। संग्रह में कुल नौ कहानियां संकलित हैं जो पहाड़ के गांव की व्यथा-कथा सुनाती हैं। यहां का जनमानस, उनके सपने, संघर्ष, आकांक्षा, उम्मीदें, उनकी मुश्किलें, खुशियां आदि की बात करती हैं। लेकिन ये कहानियां सिर्फ हिमाचल के पहाड़ों या मैदानों में ही कैद होकर नहीं रह जाती बल्कि एक व्यापक अवधारणा को अपने में समेटे दुनिया के हर गांव की तस्वीर दिखाती हैं। कहानीकार ने हर कहानी जिस भी इलाके को लेकर बुनी है, वहां की बोली के शब्दों, कहावतों, घटनाओं, लोककथाओं, परंपराओं को जिस खूबसूरती से इन कहानियों में सजाया है, वह काबिलेतारीफ है। यह प्रयोग पाठक को कहानी की पृष्ठभूमि के और करीब ले जाता है। कहानियां बेशक सरल व सहज भाषा में रची गई है लेकिन वे अपनी बात को बहुत ही गंभीरता और गहराई के साथ रखती है। हर कहानी रोचकता लिए पाठक को अपने साथ अंत तक बांधे रखती है। यह कहानीकार की सफलता है। हर कहानी की कथावस्तु बेहतरीन है। इनके संवाद, चरित्र-चित्रण और शैली सुंदर है जो कहानी को अंत तक पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

संग्रह की पहली कहानी है 'अंधेरे की आत्मकथा'। कहानी धनीराम की उस अंधेरी सुरंग की दास्तां सुनाती है जिसमें फंसकर वह एक सप्ताह से ज्यादा समय तक जिंदगी और मौत से लड़ता रहता है। हकीकत बयान करती यह कहानी कंपनी और प्रशासन के कई दावों की पोल खोलती है। धूल-मिट्टी और एक अनंत अंधेरे में भूख, प्यास, हवा, रोशनी के लिए तड़पता धनीराम सुरंग के दमघोटु माहौल के अकेलेपन में अपने परिवार और प्रेमिका से मिलने की उम्मीद के सहारे अपने में जीने की हिम्मत जुटाता रहता है। यह टूटते-मरते इंसान की मार्मिक कहानी है। खास बात यह कि धनीराम सिर्फ अपने लिए ही नहीं सोचता बल्कि दो जून की रोटी कमाने आए दूसरे राज्यों के प्रवासी मजदूरों, जिनका कंपनी ने अपने पास कहीं कोई रिकार्ड नहीं रखा है, के प्रति भी गहरी संवेदना लिए है। एक बानगी देखिए- '... इंजेक्शन लगाने के बाद धनीराम की आंखें बोझिल होने लगी थीं.... वह अपने आप में ही बड़बड़ाने लगा था- वे बहुत लोग थे साहब जी....परदेसी बंदे थे, उनका यहां कोई नहीं है... उनकी लाशें मलबे से निकालकर उनके घरों को भेज दो साहब जी... उनका दाह संस्कार होगा... तो उनको भी गति मिल जाएगी... साहब जी। धनीराम की आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा था... काला स्याह अंधेरा...।'

अगली कहानी 'वापसी' विस्थापन के दर्द को समेटे है। घर से बाहर रहने वाले रुलिया के दिल में अपना गांव हमेशा बसा है जिसकी याद उसके जहन से कभी भी नहीं जाती। पूरे गांव का कोल डैम में समा जाने का मार्मिक चित्रण कहानी के पात्र रुलिया ताऊ के जरिए कहानीकार ने बखूबी किया है। कहानी का व्यापक फलक इसे दुनिया के हर विस्थापन की पीड़ा के साथ जोड़ता है। संग्रह के शीर्षक वाली कहानी 'ढोल की थाप' हमें उस दौर की याद को ताजा कर देती है जब चौबीस-अड़तालीस कानून (मुजारा) पारित हुआ था। अनपढ़ लेकिन मेहनती, गरीब आलमू को भी इस कानून के तहत कुछ जमीन मिलती है। वह बड़ी तसल्ली, लगाव और मेहनत के साथ जीवन पर्यन्त इस जमीन को संभालता है। कहानी समझाती है कि स्वार्थ की हदों के आगे अपने सगे रिश्तों का भी कोई मोल नहीं है। बेटे धोखे से अनपढ़ आलमू से उंगूठा लगवाकर बैंक से निकाले गए रुपये जान-बूझकर वापिस नहीं करते। आलमू की सारी जमीन और घर की कुर्की हो जाती है। आलमू अकेला रह जाता है। इस गम को वह झेल नहीं पाता और अपने साथ हुए इस धोखे का सारा गुस्सा व पीड़ा, आंखों में

अश्रुधाराएं लिए रातभर ढोल बजाकर निकालता है। अंत में उसी रात स्वयं को मौत के आगोश में सुला देता है। आलमू के ढोल की थाप कई दिनों तक इस इलाके में सुनाई देती रहती है। यह थाप उसकी पीड़ा, दुःख और तकलीफ की गवाह थी।

कहानी 'उम्मीद' मंडी शहर के बीचोंबीच घंटाघर और उसके आस-पास के इलाके का इतिहास से लेकर वर्तमान तक का सारा ताना-बाना बुनती हुई कलाकारों के हक की बात करती है। कहानी में शामिल स्थानीय बोली के शब्द और लोककथा के अंश इस इलाके को बेहतर ढंग से समझाते हैं। हिमाचल का केंद्र मंडी और मंडी शहर का दिल संकन गार्डन में जहां पंडित जी की नींबू वाली चाय के लाजवाब स्वाद व बुजुर्गों की बैठकों की बात होती है वहीं गुजरात के बंजारा गायक बंशीबणा की एंट्री को कहानीकार ने बहुत ही रोचक ढंग से पेश किया है। वकत और हालात की मार से जन्मे देश-दुनिया में न जाने ऐसे कितने ही गरीब व हुनरमंद कलाकार हैं जो अपनी कला के जादू से सबका दिल मोह लेते हैं। इसी बात को कहानीकार ने बड़े ही सुंदर शब्दों में पिरोया है- 'बंशीबणा की आंखों में अब जैसे उम्मीद की चमक थी। वह बोला- बाबू चिड़ियों को चहचहाना और भंवरों को गुनगुनाना किसने सिखाया है और कोयल को कूहकना सिखाने भला कौन आता है। वे स्वयं ही चहचहाना, गुनगुनाना और कूहकना सीख लेते हैं। बस मैंने भी बचपन से यह सब सीखा है। वक्त और हालात से बड़ी पाठशाला कोई नहीं होती है साहब।' यह कहानी स्थानीय प्रतिभाओं, कलाकारों को दरकिनार कर मुंबईया या बाहरी कलाकारों की पैरवी की पोल खोलती है।

विदेशी अवांछित घास 'नीला फूलणु' जिसने किसानों को परेशान कर रखा है से कहानी 'समय की गठरी' की शुरुआत होती है। नीला फूलणु ने खेतों को बंजर तक कर दिया है। यह कहानी एक गरीब किसान की दास्तां के साथ देश की हालात पर करारा व्यंग्य है। स्थानीय बोली के शब्दों के साथ नोटबंदी के उस दौर की परेशानियों का जिक्र है जिसका सबसे ज्यादा खामियाजा आम जनता को ही भुगतना पड़ा था। एक झलक- '-क्या दिन आ गए हैं अपने ही पैसों के लिए भिखारियों की तरह लाइन में खड़ा होना पड़ रहा है। मेरे साथ खड़े एक अधेड़ व्यक्ति ने रुमाल से पसीना पोंछते हुए कहा-तीन दिन से लगातार कतार में लगा हूं। दो हजार से ज्यादा एटीएम से नहीं निकलते.. अगले महीने बेटी की शादी है और ये कहते हैं कि एक हफ्ते में चौबीस हजार से ज्यादा नहीं निकाल सकते, अब तो नाते रिश्तेदारों से भी पैसा नहीं मांग सकते! सबके सब को भिखारी बना कर रख दिए हैं, वादा तो अच्छे दिन का लाने का था...मगर लोगों को सड़क पर लाकर खड़ा कर दिया।' किसान बीमार है जिसका इलाज चल रहा है। जब वह थोड़ा स्वस्थ होता है तो उसे अपने खेतों की चिंता सताने लगती है। उसे वर्तमान पीढ़ी पर विश्वास नहीं कि इन परिस्थितियों में, उसके बगैर खेतों को देखा भी होगा या नहीं। लेकिन जब किसान देखता है कि घरवालों ने उसकी अनुपस्थिति में भी खेतों को सही ढंग से बीज दिया है तो उसकी सारी परेशानियां छूमंतर हो जाती हैं। किसान बेटे को एक गूढ़ रहस्य समझाता हुआ कहता है कि खेतों में फसल समय की वह गठरी है जो थोड़े इंतजार के बाद ही नसीब होती है।

'आदमी और बैल' हरनु और उसके बैल कालिया की मित्रता और जिम्मेदारी की कहानी कहती है। इसके अलावा यह कहानी अपने साथ लोककथा, पर्यावरण की चिंता और भोले-भाले हरनु की ईमानदारी, विश्वास और मासूमियत को समेटे हैं। हरनु का बैल हर बार अखाड़े से जीतकर ही लौटता है। दादी को हरनु ने कालिया को पालने, उसे अपने साथ रखने का वचन दिया था जिसे उसने पूरी इमानदारी से अंत तक निभाया। सूखे के दौरान जब सभी गांववासी अपने पशु गांव में ही अकेले छोड़कर चले जाते हैं तो हरनु उस विकट घड़ी में भी कालिया को छोड़कर नहीं जाता। इस कठिन वक्त में हरनु कालिया के साथ रहकर कोसों दूर से उसके पानी और चारे का इंतजाम करता है। हरनु जब बचपन की नदी के पास पानी लेने के लिए पहुंचता है और देखता है कि नदी का रुख एक कंपनी ने बोतलों में पानी को बेचने के लिए मोड़ दिया है तो उसे बहुत गुस्सा आता है। उसने कभी यह कल्पना तक नहीं की थी कि पानी भी कोई बेचने वाली चीज है। उसे तो वह प्रकृति का सबको दिया वरदान समझता है। यह उसका भोलापन है जो कहानी की इन पंक्तियों से भी महसूस किया जा सकता है- '...हरनु को दुनियादारी के झमेलों से कोई वास्ता नहीं है। बाजारवाद और सूचना-तकनीकी के इस घोर क्रांतिकारी युग में भी वह हल-बैल के चक्कर में उलझा हुआ है। उसे नहीं मालूम सरकार की कृषि नीति क्या है? और किसान किन नीतियों की वजह से कर्ज में डूबकर आत्महत्या करते हैं...। क्यों सीमेंट फैक्ट्रियों, डैम बनाने के लिए फोरलेन और बड़े उद्योगों के लिए सरकार ने किसानों को जमीन जबरदस्ती लेने का कानून बना
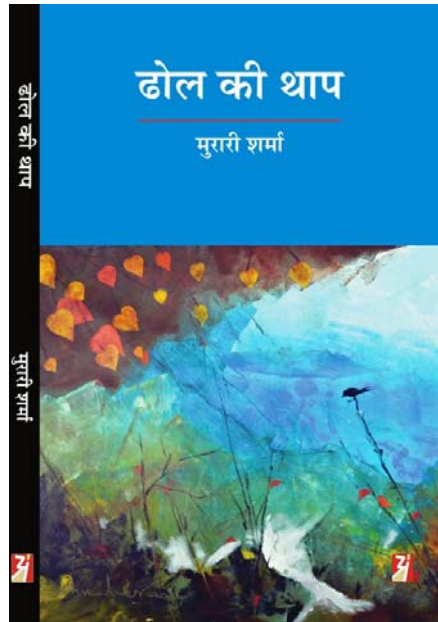
रखा है? बाजार आम आदमी की जिंदगी में घुसपैठ कर उसके जीवन को संचालित कर रहा है... उसे कौन-सी चीज खरीदनी चाहिए... कैसे जूते और कपड़े पहनने चाहिए, क्या खाना चाहिए और कैसे रहना चाहिए, यह सब बाजार तय करने लगा है, मगर इससे वह बेखबर है। आखिर... इन सब बातों से हरनु जैसे भोले-भाले किसान का क्या वास्ता... वह तो अपने बैलों और खेतों में मस्त है, यही उसकी दुनिया है उसका अपना रचना संसार है।' अंत में बारिश होती है। सूखे से सबको राहत मिलती है। गांव वाले सब गांव की ओर लौट आते हैं लेकिन हरनु नहीं लौटता। कालिया गांव में सुरक्षित है। हरनु के वापिस न आने का अनुत्तरित प्रश्न कहानीकार ने पाठकों के हवाले कर दिया है।

एक अखबार में गलती से छपी झूठी खबर क्या-क्या रंग दिखा सकती है, की बात करती है संग्रह की अगली कहानी 'दहशत'। किसी और के विश्वास के भरोसे पत्रकार से गलत खबर छपने में एक गांव में जो माहौल हो जाता है उसकी कहानी है दहशत। झूठी खबर छपने से पत्रकार जहां डरा हुआ है वहीं गांव के सभी लोग चेतराम की मौत की खबर अखबार में पढ़ कर बहुत दुखी हैं। ढांक से गिरे चेतराम वाली यह खबर सच्ची न हो, के लिए फिर टुंडीवीर देवता के प्रति आस्था, शर्तें, वादों, चढ़ावों का दौर गांव में चल पड़ता है। इस युग में गांव अभी भी रुढ़ियों को ही ढो रहा है, का चित्रण कहानी में विशेष है। 'सुबह के रंग' कहानी शहनाई वादक मस्तु को केंद्र में रखकर बुनी गई सुंदर कहानी है। कहानी सदियों से चली आ रही देव समाज की बेमतलब परंपराओं को तोड़ती है। बजंतरी जिनके साज-बाज के बगैर देवता एक कदम भी आगे नहीं चलता, वे कई-कई दिन बिना किसी मेहनताने के देवता के साथ रहते हैं। जिस कारण उनके परिवार को कई परेशानियों से गुजरना पड़ता है। उन्हे ढंग से भोजन तक भी नसीब नहीं हो पाता। इन्ही बजंतरियों के हक और सम्मान की बात करती यह कहानी बेहतर कथानक और शिल्प से बुनी हुई है।

अंतिम कहानी 'खंडाधार का खेड़ा' की शुरुआत ही पर्यावरण सरंक्षण से होती हुई दुनिया की हर परेशानी और दुःख को मिटाने का सार लिए है। एक बानगी देखिए- '... जगतू के कानों में एक और भयावह शोर गूंज रहा है....। धरती के फटने, पहाड़ के टूटने... बड़ी-बड़ी चट्टानों के खिसकने का शोर...। पीले रंग की विशालकाय मशीनें उथल-पुथल मचा रही हैं... उनके भीमकाय पंजे एक ही वार से धरती के नीचे से बालू रेत निकाल कर ढेर लगा रहे हैं... छोटी-मोटी पहाड़ियों को रौंदता मशीनों का यह काफिला लगातार बढ़ता जा रहा है... उनके खूंखार पंजे पेड़-पौधों को जड़ से उखाड़ कर फेंक रहे हैं... रास्ते में आने वाले मकान, घराट, रास्ते, नौण, नाले सब समतल होते जा रहे हैं... वे जिस तभी मुंह करते हैं... उस तरफ सब साफ होता जा रहा है...। कोई बाधा, कोई रुकावट इनके रास्ते को नहीं रोक पा रही है...।' यह कहानी, कहानी के नए स्वरूप में लिखी गई है। कहानी में हिमाचल की एक रहस्यमय घाटी खंडाधार की बात हुई है जो एक लोककथा की तरह पाठक के साथ चलती हुई कहानी के मुख्य पात्र जगतु के बहाने हमें जीवन के कई खट्टे-मीठे अनुभवों से रुबरु करवाती है। खंडाधार की बातें, उसकी शक्तियों के बारे में दादी जगतु को बचपन में लोककथा के रुप में सुनाती रही। जगतु बचपन से ही इस घाटी के रोमांच और रहस्य से भरा है। उसे उस अदृश्य गुफा से मिलने वाली मिट्टी की तलाश है जो दुनिया के हर गम को मिटाने की ताकत रखती है। जगतु को दुनिया की हर परेशानी, किसान की पीड़ा, परिवार के झगड़े, खूनी हमले, आदमी के हर स्वार्थ, पहाड़ों में फैक्ट्रियों पर रोक से लेकर पर्यावरण को बचाने का इलाज इसी खंडाधार की मिट्टी में दिखता है। जगतु दुनिया को खुश ही देखना चाहता है। आस्था और विश्वास का पक्का स्वर कहानी की जान है।

संग्रह को पढ़ने के बाद पाठक गांव के ताजा हालातों से गुजरते हुए समझ पाता है कि बाजारवाद और आधुनिकता के शिकंजे में गांव किस तरह से कस लिए गए हैं। इन सब कहानियों में लोगों के रहन-सहन, संस्कृति, सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वास, समस्याओं, संघर्षों, उनकी जरुरतों और आंचलिकता के प्रभाव आदि से गुजरता हुआ पाठक अपने आप को गांव के बदलते स्वरुप, उनकी समस्याओं के साथ उनके सपनों, उम्मीदों को जीता जाता है। संग्रह की पहली कहानी जैसे ही पढ़ना शुरु करें तो इन कहानियों का स्वाद हमें अंत की कहानी तक एक सम्मोहन के साथ बांधे रखता है। इस बेहतरीन कहानी संग्रह के लिए मुरारी जी बधाई के पात्र हैं। निश्चय ही यह संग्रह पाठकों में एक अलग ही सुख की अनुभूति करवाएगा।

गांव व डा. महादेव, तहसील सुन्दरनगर, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश-175018, मो : 098054 02242

संग्रह का नाम : ढोल की थाप   कहानीकार : मुरारी शर्मा
पृष्ठ संख्या : 112   मूल्य : 280 रुपये
प्रकाशक : अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.,
शालीमार गार्डन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201005

समीक्षा

कुछ भी नहीं रचा जाता 'बेवजह यूं ही'

◆ देवेंद्र सिंह सिसौदिया

आठवीं कक्षा तक पढ़ाई के पश्चात मात्र 15 वर्ष की उम्र में विवाह के बंधन में बंध जाने एवं लगातार विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए विसंगतियों से उद्वेलित होते हुए लिखा ये व्यंग्य संग्रह ' बेवजह यूं ही' नहीं कह सकते। विवाह पश्चात पढ़ाई जारी रखते हुए एक शिक्षिका, व्यंग्यकार एवं लेखिका वीना जी का यह पहला संग्रह एक आम नागरिक के दर्द को उकेरता है। हितैषियों के निरुत्साहित करने के बावजूद कलम को विराम नहीं दिया और एक संग्रह की रचना कर डाली और सिद्ध कर दिया कि बेवजह कुछ भी नहीं होता।

प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री सुधाकर अदीब ने अपनी भूमिका में लिखा है कि "सक्षम तैराक वह है जो बिना हो-हल्ले के गम्भीरतापूर्वक तैरकर, सरोवर में इस पार से उस पार तक बिना डूबे निकल जाए। वह क्षमता वीना सिंह के अधिकांश व्यंग्य लेख प्रदर्शित करते और पाठकों को आश्वस्त करते हैं। संग्रह के पहले व्यंग्य 'हम दोनों सड़क पर' हिंदी में किसान एवं राजभाषा की दुर्दशा की व्यथा को बखूबी दर्शाया है तो 'मेरी अपनी हिन्दी' में लेखिका ने स्वयं एवं हिन्दी की विवशता को वर्णित किया है। 'मेरी गरीबी उसकी अमीरी' में ईमानदारी और बेईमानी के मध्य बहस को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है। 'जोड़-तोड़ ही है जिन्दगी' में भ्रष्टाचार रूपी कैंसर रोग पर चिंता व्यक्त की है। 'इस जुबान का क्या भरोसा' नेताओं के यू-टर्न लेने पर तंज कसा है। जैसा कि अदीब जी लिखते है कि "व्यंग्य लेखों के शीर्षक भी प्रायः अर्थपूर्ण होते हैं - 'जोड़-तोड़ ही है जिन्दगी' 'दमदार बूढ़े' 'बेशर्मी की हद', 'कुत्ते की सीधी दुम' 'आदत से मजबूर' इसके उदाहरण है। शीर्षक व्यंग्य 'बस यूं ही' में वीना जी यह बताने में सफल रही कि दुनिया का कोई काम बेवजह नहीं होता है चाहे वो ईश्वर का दर हो, गरीब का घर हो या नेता का अवतार ही क्यों न हो। 'अभी भी अनमैरिड' व्यंग्य कहानी के रुप में है तो 'कुत्ते की सीधी दुम' में हास्य का भरपुर पुट है। 'रंगविहीन चेहरे' में साली की अनुपस्थिति की टीस को दर्शाया है तो 'कुछ तो खास है इस कैटरिंग व्यवस्था में', में साम्प्रदायिक एकता को स्थापित किया है। 'मुंगेरीलाल जैसा सपना' में देश की व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है तो 'बड़े आये अच्छे दिन' में नेताओं की प्रवृतियों पर खूब चकोटिया काटी है। 'मास्टर जी सो गए' में लिखा है 'मास्टरजी सोते हैं तो बच्चे मौज-मस्ती करते हैं पर नेता और अधिकारी सोता है आम जनता रोती है' कथन करारा व्यंग्य कर रहा है। 'श्राद्ध कैंसिल' एक भावनात्मक व्यंग्य है, 'अगले जन्म मोहे बाबा ही कीजो' में आधुनिक बाबाओं की कारस्तानियों को उजागर किया है तो 'नमस्ते जी' में अंग्रेजी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव पर कटाक्ष किया है। 'साहब की साहबगीरी' में अफसरों की जीवन शैली एवं सामाजिक रौब पर करारा व्यंग्य किया गया है वहीं 'बुद्धिमानों की बेवकूफियां' में लेखिका ने बुद्धिमानों से व्यवस्था एवं व्यवहार को लेकर कई प्रश्न किए है तो 'ये मत कहियेगा' में बहुत सारी बातों का बेवजह ही पूछ लेना अच्छा लगा। 'असामंजस्य का खेल' में लोगों की विरोधाभासी मांगों को पूर्ण करने में हो रही परेशानी का वर्णन कल्पनालोक से वास्तविकता में पहुंचाते हुए बखूबी किया है। एक बार पुनः 'बेवजह यूं ही' में दैनिक कार्यक्रम में हो रही बेवजह बातों को उजागर किया है।

वीना जी के अधिकांश व्यंग्य कहानीनुमा होते है एवं कल्पनालोक से यथार्थ की यात्रा करवाते हुए संवेदनशील हो जाते हैं। लेखिका ने अपनों व्यंग्य में कई बार पात्रों का सहारा लिया है विशेषकर शर्मा जी का । कुछ विषयों की पुनरावृत्ति जरुर हुई है किंतु शैली भिन्न होने से वे भी रोचक लगे है । अंत के व्यंग्य 'असमंजस में प्रभु', 'मूर्ख हम या तुम?', 'बेवजह यूं ही' लम्बे है किंतु आपकी वैचारिक कुशलता, विसंगतियों के प्रति चिंतन, मानवीय संवेदनशीलता एवं तीव्र कटाक्ष के भाव से ओतप्रोत है। आपकी भाषा शैली आम जन के बहुत करीब है। आपकी कुछ रचनाएं मानस पटल पर स्थायी स्थान बनाने की ताकत रखती है। 69 व्यंग्यों का यह संग्रह, कोर प्रकाशन इण्डिया प्रा. लि., नई दिल्ली ने आकर्षक कवर के साथ सुन्दर ले-आउट में प्रकाशित किया है। पुस्तक का मूल्य मात्र 150 रुपये है जो हर पाठक की पहुंच में है।

प्रशासनिक अधिकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम
जिला शाखा कार्यालय, 12/12-ए, अनूप नगर
इन्दौर, मध्य प्रदेश 452008, मो. 0 94254 78044

समीक्षा
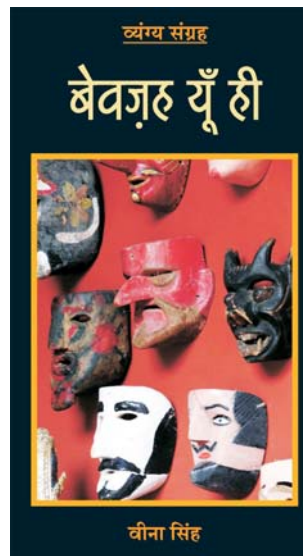
ग्रामीण परिवेश की अनुभूति जगाती 'महासुवी लोक संस्कृति'

◆ कल्पना गांगटा

महासुवी लोक संस्कृति, उमा ठाकुर द्वारा लिखित पुस्तक है। जैसा कि नाम से ही विदित है, पुस्तक में पहाड़ी लोक संस्कृति का वर्णन किया गया है। उमा ठाकुर ने अपने अथक प्रयासों से लोक संस्कृति से जुड़े अनछुए पहलुओं को इस पुस्तक में समेटा है। उन्होंने महासुवी क्षेत्र के रहन-सहन, लोक परंपराओं, रीति रिवाजों, मेले, तीज, त्योहारों, लोरियों यहां तक कि खेत खलिहानों का भी वर्णन करते हुए उनके धीरे-धीरे विलुप्त होने पर चिंतन किया है। पुस्तक में विवाह के समय निभाई जाने वाली हर रस्म के महत्त्व को बताया गया है। यह पुस्तक समाज के लिए ऐसे समय में, जब वर्तमान पीढ़ी अपनी लोक संस्कृति, मंत्र रूपी बोली व विभिन्न संस्कारों के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों, सामाजिक परंपराओं को डी जे की धुन और पाश्चात्य संस्कृति की ओर अनावश्यक रूप से आकर्षित होकर तेजी से भुलाती जा रही है, इनका यह प्रयास निश्चित तौर पर अपनी संस्कृति को सुदृढ़ करने के लिए कारगर सिद्ध होगा। लेखिका के लिए यह चिंता का विषय है कि चाईनीज व्यंजनों की दुकानें दिन प्रतिदिन छोटे-छोटे शहरों की हर गली में भी धड़ाधड़ खुल रही है। स्पष्ट है कि मां के हाथ से बने पारंपरिक पौष्टिक आहार से नई पीढ़ी दूर होती जा रही है। ऐसे में वर्तमान समाज के सुस्वास्थ्य की कल्पना करना व्यर्थ है। इसी चिंता को लेकर पुस्तक के दसवें अध्याय में विभिन्न पारंपरिक पकवानों को तैयार करने की विधि को विस्तारपूर्वक समझाने का प्रयास किया गया है। उम्मीद है उनका यह प्रयास हमारी लोक संस्कृति और समाज के स्वास्थ्य का संरक्षण करने में मददगार सिद्ध होगा।

लेखिका ने महासवी ठकुराइयों के इतिहास का वर्णन किया है। महासुवी भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन करते हुए लेखिका लिखती है कि 'पहाड़ों से पहाड़ मिले, धारों से धार, नदियों से नाले मिले, वादियों से दर्रे, राहे बनती गईं, फासले कम होते गए, लोग चलते गए और कारवां बनता गया।' उमा ठाकुर ने लोगों की वेशभूषा के साथ-साथ ही खान-पान, पकवान काभी उल्लेख किया है। लेखिका ने ग्रामीण जीवन को जीया है। इसलिए उनकी चाह है कि गांव की मिट्टी की खुशबू, मां की मीठी लोरी और बोली की मिठास का आनंद आने वाली पीढ़ी भी ले क्यों कि यह उनका अधिकार है। धार्मिक और सामाजिक परंपराओं और त्योहारों के अंतर्गत भूंडा महायज्ञ, बिशू, शांत के साथ ही आंचड़ी, गंगी, झूरी का भी जिक्र किया है। लेखिका ने लोक गाथाओं और विवाह वाद्य यंत्रों ढोल, नगाड़ों, करनाल, नरसिंह, शहनाई का और विविध लोकनृत्यों का उल्लेख किया है। एक जगह पर वह महासुवी क्षेत्र के खास नृत्य मुंगेर के बारे में बताती हैं, जिसमें एक ढोलक, खांजरी और चिमटा बजाया जाता है और वहीं पर दूसरी तरफ माला लोकनृत्य और घुघूती लोकनृत्य से भी पाठकों को परिचित करवाती है। विवाह के अलग-अलग प्रकारों के बारे में भी पुस्तक में बताया गया है। पुस्तक के सभी चौदह अध्याय सारगर्भित है। अपनी संस्कृति को समझने के लिए तथा ग्रामीण परिवेश की अनुभूति के लिए सभी को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

गांगटा निवास, लंबीधार, ढली, शिमला-171012

पुस्तक : महासुवी लोक संस्कृति, लेखिका : उमा ठाकुर
प्रकाशक : अर्थविज़न पब्लिकेशन्स, गुरुग्राम, वर्ष : 2020 मूल्य : 310 पृष्ठ : 144

ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 64 मई-जून 2020 अंक : 2-3

प्रधान सम्पादक
हरबंस सिंह ब्रसकोन

वरिष्ठ सम्पादक
वेद प्रकाश

सम्पादक
नर्बदा कंवर

सहायक सम्पादक
सत पाल

उप सम्पादक
विवेक शर्मा

कम्पोजिंग एवं पृष्ठ सज्जा : **अश्वनी**

सम्पादकीय कार्यालय : हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

रचनाओं में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tel: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in/himprastha.asp

ज्ञान सागर

हम अपनी समस्याओं को उसी सोच के साथ नहीं सुलझा सकते, जिस सोच के साथ हमने उनका निर्माण किया था।

– अल्बर्ट आइंस्टीन

इस अंक में

विकासात्मक लेख

☞ मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अनुकरणीय पहल 3 ☞ देश के 'बैस्ट परफार्मिंग चीफ मिनिस्टर' 4 ☞ प्रतिभा का दस्तावेज बनेगा : स्किल रजिस्टर 5
☞ कृषि से संपन्नता : हींग व केसर से महकेगी हिमाचल की माटी 6
☞ 'पंचवटी' में खिलेंगी बुजुर्गों की खुशियां 7
☞ पुन: पटरी पर लौटी अर्थव्यवस्था 8
☞ 'वंदे भारत मिशन' 713 हिमाचलियों की हुई सकुशल घर वापिसी — पी.एच.एस. मालिनी 9

आलेख

☞ रेलवे ट्रैक के साथ-साथ प्रकृति का शृंगार — कुल राजीव पंत 11
☞ मातृत्व की कसौटी : विवेकानंद का नारी-विमर्श — बी.एल. आच्छा 14
☞ समकालीन हिंदी कविता : एक विमर्श — मुकेश कुमार 17
☞ यात्रा वृत्तांत : असंख्य द्वीपों का एकमात्र राज्य अंडेमान निकोबार — डॉ. कमल के. 'प्यासा' 23
☞ पर्यावरण सुरक्षा में मानवीय पहल — कपिल देव मेहरा 28
☞ बदलाव की वाहक पत्रकारिता को नमन — अनुम कुमार आचार्य 32
☞ दूसरों की प्रसन्नता में ही आनंद — सीताराम गुप्ता 35
☞ स्कूली पाठ्यक्रम में बाल साहित्य — अनंत आलोक 37

कहानी

☞ ग्राहक देवता/ राम नगीना मौर्य 44 ☞ रेहड़ीवाला प्रोफेसर एल. आर. शर्मा 48
☞ धूप ढलने के बाद/ शैली किरण 53 ☞ हल्फिया बयान जसविंदर शर्मा 58
☞ पहाड़ पिघलता रहा — डॉ. जयनारायण कश्यप 65
☞ बाल कहानी : जादू टोना — हरदेव सिंह धीमान 71

कविताएं

☞ हमें कुछ करना होगा/ कमला ठाकुर 31 ☞ माह के कवि : मनोज चौहान 38
☞ कहां नहीं है मां — प्रो. (डॉ.) दिनेश चमोला 'शैलेश' 41
☞ अशोक दर्द की कविताएं/ 42 ☞ अंजनी श्रीवास्तव की कविताएं 43
☞ बेटी/ प्रकाश कुमार खोवाल 52 ☞ मेरा जीवन/ शबनम शर्मा 57
☞ रोशन जसवाल के हाइकू/ 72 ☞ परिभाषाओं में जीवन/ कुलभूषण कालड़ा 74
☞ जीत-हार — भीम सिंह नेगी 76

ग़ज़ल :

☞ मोनिका शर्मा सारथी की ग़ज़लें 67

लघुकथा

☞ त्योहार का दिन/ कुणाल शर्मा 47 ☞ अनिल कटोच की लघु कथाएं 69
☞ सबक — रोशन लाल पराशर 70

व्यंग्य

☞ इंद्रलोक में बैंगन — अशोक गौतम 73

समीक्षा

☞ संघर्षों का सुखांत महाकाव्य/ एक उपनिवेश की जीवंत दास्तान — सुदर्शन वशिष्ठ 75/77
☞ जन सरोकारों से बावस्ता — डा. आशु फुल्ल 79
☞ विभिन्न भाषाओं की सूक्तियों का सुंदर गुलदस्ता — डॉ. मस्तराम शर्मा 80

अपनी बात

आज दुनिया का शायद ही ऐसा कोई देश होगा जो वैश्विक कोरोना महामारी से प्रभावित न हुआ हो। चिकित्सा विज्ञानियों एवं महामारी विशेषज्ञों के प्रारंभिक अनुमानों के विपरीत कोरोना संक्रमण का प्रभाव काफी लंबे समय तक बने रहने की आशंका है और इस दौरान हमें कोरोना वायरस के साथ ही जीवन यापन सीखना होगा। इस वायरस का अभी तक कोई ऐसा सटीक उपचार अथवा टीकाकरण इजाद नहीं हुआ है, जो लोगों को इस वायरस से निजात दिला सके। भारत में समय पर लगाए गए लॉकडाउन के दौरान शुरुआती सफलता के बाद कोरोना वायरस संक्रमण मामलों में अब हो रही लगातार वृद्धि हम सभी के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। महामारी के कारण ऐहतीयात के तौर पर बहुत लंबे समय तक आर्थिक गतिविधियों को बंद रखना शायद देश की तरक्की के लिए हितकर नहीं होगा, इसलिए केन्द्र सरकार की तर्ज पर हिमाचल में भी अनलॉक के तहत आर्थिकी को पुनः पटरी पर लाने के लिए प्रदेश सरकार ने अनेक कारगर कदम उठाए हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था के पुनरूत्थान के लिए गठित मंत्रिमंडल उप समिति और टास्क फोर्स की अनुशंसा के अनुसार प्रदेश में आर्थिक गतिविधियों को योजनाबद्ध एवं व्यवस्थित तरीके से खोला गया है। प्रदेश भर में कर्फ्यू अवधि में छूट देकर व्यापारिक गतिविधियों को सुचारू बनाया गया है, जिससे आम लोगों के जीवन को सामान्य बनाने की दिशा में सहायता मिली है। औद्योगिक इकाइयों में उत्पादन दोबारा से आरंभ करने के लिए व्यापक स्तर पर प्रबंध किए गए हैं। कोरोना महामारी के कारण जन जीवन में आए ठहराव से समाज का हर वर्ग प्रभावित हुआ है। प्रदेश सरकार ने लोगों को आर्थिक बदहाली के इस बुरे दौर से निकालने के लिए जनधन योजना के अंतर्गत प्रदेश की 5.90 लाख पात्र महिलाओं के खाते में धनराशि हस्तांतरित कर उन्हें लाभान्वित किया है। इसी प्रकार किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसानों के बैंक खातों में दो-दो हजार रुपये, भवन एवं अन्य सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के तहत पंजीकृत 1.37 लाख कामगारों को राहत प्रदान करने के लिए अब तक 2000-2000 रुपये की दो बार किस्तें उपलब्ध करवाई हैं। 'एक राष्ट्र एक राशन कार्ड' योजना आरम्भ करने वाला हिमाचल प्रदेश ऐसा देश का प्रथम राज्य है, जहां कोई भी व्यक्ति देश में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सब्सिडी पर राशन ले सकता है। सुनहरे भविष्य की तलाश में देश के विभिन्न भागों में कार्य कर रहे लाखों हिमाचलवासियों के लिए कोरोना महामारी मुसीबत बन कर आई है। लॉकडाउन में रोजगार छिन जाने के कारण ऐसे असंख्य हिमाचली आए दिन अपने घर वापिस आ रहे हैं। प्रदेश सरकार की कड़ी मेहनत व अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप आज वे सकुशल अपने परिवारों के साथ हैं। प्रदेश सरकार ने संकट की इस घड़ी में जरूरतमंदों को राहत देने की दिशा में तत्परता के साथ कार्य करते हुए देश के किसी भी कोने में बैठे हर हिमाचलवासी को सकुशल वापिस लाने के पुख्ता प्रबंध किए। देश के विभिन्न हिस्सों में फंसे ऐसे लगभग दो लाख लोगों को विशेष रेलगाड़ियों और बसों द्वारा वापिस लाया गया जबकि विदेशों से भारत वापिसी के इच्छुक लोगों को मिशन 'वंदे भारत' के तहत घर तक पहुंचाया गया। इतना ही नहीं प्रदेश सरकार ने बेरोजगार हुए लोगों के कौशल का खाखा तैयार करने के लिए एक प्रतिभा रजिस्टर तैयार किया है, जिसके आधार पर इन्हें राज्य में ही रोजगार और स्वरोजगार के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाएंगे। इस रजिस्टर में कोई भी पात्र व्यक्ति skillregister.hp.gov.in के माध्यम से अपना पंजीकरण करवा सकता है। इससे राज्य में उपलब्ध कौशल क्षमता की पहचान कर उसके उन्नयन एवं आवश्यकताओं के विश्लेषण में भी सहायता मिलेगी। हिमाचल प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के कुशल नेतृत्व में कोरोना जंग के हर मोर्चे पर मुस्तैदी से लड़ रही है। कोरोना संकट के दौरान मुख्यमंत्री द्वारा किए जा सार्थक प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा मुख्यमंत्रियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस में हिमाचल प्रदेश में 'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' को प्रभावी रूप से चलाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर श्री जय राम ठाकुर के प्रयासों की प्रशंसा करना, हिमाचल जैसे छोटे पहाड़ी प्रदेश के लिए गौरव की बात है। देश की स्वतंत्र एजेंसी द्वारा हाल ही में करवाये गए एक सर्वेक्षण के आधार पर श्री जय राम ठाकुर को देश का बैस्ट परफॉर्मिंग मुख्यमंत्री और भाजपा शासित राज्यों में सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्री घोषित किया जाना, कोरोना संकट के दौरान किये जा रहे सराहनीय कार्यों के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। प्रस्तुत अंक में नियमित सामग्री के साथ-साथ पर्यावरण दिवस तथा कोरोना के खिलाफ जंग में सरकार के प्रयासों पर भी सामग्री जुटाई गई है। आशा है पाठकों के लिए यह अंक भी रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक साबित होगा।

वरिष्ठ संपादक

प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों पर विशेष

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अनुकरणीय पहल

'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान'

प्रधानमंत्री ने की हिमाचल सरकार की भूरि-भूरि प्रशंसा

मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश सरकार कोरोना महामारी से निपटने की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है। कोरोना महामारी से लड़ने में प्रदेश सरकार के कारगर प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस में हिमाचल प्रदेश में 'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' को प्रभावी रूप से चलाने के लिए सरकार के प्रयासों की न केवल प्रशंसा की बल्कि अन्य राज्यों को भी कोरोना महामारी से लड़ने में हिमाचल से प्रेरणा लेने का परामर्श दिया है। हिमाचल जैसे छोटे से पहाड़ी प्रदेश के लिए यह गौरव की बात है कि राष्ट्रीय स्तर पर इसके कार्यों को पहचान मिली है। इस अभियान के तहत राज्य में 70 लाख से भी अधिक लोगों की स्वास्थ्य जानकारी जुटाई गई है, जिससे प्रदेश के लोगों में इन्फ्लुएंजा जैसी बीमारी के लक्षणों की स्क्रीनिंग करने में सहायता मिली है। एक्टिव केस फाइंडिंग कार्य को एक विशेष अभियान के रूप में चलाने के लिए 16 हजार कर्मचारियों के दल द्वारा प्रदेश भर में लोगों की स्वास्थ्य संबंधी व्यापक जानकारी हासिल की गई। इस कार्य में आशा कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, पैरा मेडिकल स्टाफ तथा पुलिस कर्मचारी शामिल किए गए। सरकार के इन प्रयासों के परिणामस्वरूप प्रदेश में कोरोना वायरस की जांच का अनुपात 700 प्रति मिलियन व्यक्ति है, जो देश में सबसे अधिक है। केन्द्र सरकार ने कोरोना महामारी से कारगरता के साथ निपटने के लिए कर्मचारियों की स्वास्थ्य जानकारी जुटाने एवं इसकी निगरानी के लिए सरकारी एवं निजी क्षेत्र के समस्त कर्मचारियों को आरोग्य सेतु एप डाउनलोड करना अनिवार्य कर दिया है। हिमाचल प्रदेश औषधि निर्माण में देश का अग्रणी राज्य है, इसलिए कोरोना महामारी के दौरान दवाइयों की कमी को पूरा करने के लिए प्रदेश की फार्मास्यूटिकल इकाइयों में दवाई निर्माण कार्य शुरू कर इन्हें देश-विदेश में भेजा जा रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस में हिमाचल प्रदेश में 'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' को प्रभावी रूप से चलाने के लिए सरकार के प्रयासों की न केवल प्रशंसा की बल्कि अन्य राज्यों को भी कोरोना महामारी से लड़ने में हिमाचल से प्रेरणा लेने का परामर्श दिया है।

प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों पर विशेष

देश के 'बैस्ट परफॉर्मिंग चीफ मिनिस्टर' मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर

हिमाचल के लिए भी यह गौरव की बात है कि श्री जय राम ठाकुर को भाजपा शासित राज्यों में देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में स्थान दिया गया है और देश के 7वें सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में उभरे हैं। हिमाचल प्रदेश न केवल मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के गतिशील नेतृत्व में प्रगति और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है, बल्कि कोरोना महामारी से भी प्रभावी तरीके से निपट रहा है।

किसी भी देश व प्रदेश के सर्वांगीण विकास में नेतृत्व का दूरदर्शी होना आवश्यक होता है। राज्य की संतुलित तरक्की तभी संभव हो पाती है जब शासन तंत्र में आसीन लोग पारदर्शी एवं भेदभाव रहित नीतियां अपनाकर विकास को नई राह दिखा सकें। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर ने इसी भावना से कार्य करते हुए कोरोना संकट के दौरान दूरदर्शी नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्रदेश की प्रगति में कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए हिमाचल को नई बुलंदियों की ओर बढ़ाया है। अपनी नवीन सोच व उमंग के साथ विकास की गति को इस तरह अग्रसर किया है जिसकी चौतरफा सराहना हुई है। इसका जीता जागता प्रमाण आईएएनएस-सी वोटर द्वारा हाल ही में करवाए गए सर्वेक्षण में उस समय देखने को मिला जब मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर को देश का बैस्ट परफॉर्मिंग मुख्यमंत्री और भाजपा शासित राज्यों में सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्री घोषित किया गया।

यह सर्वेक्षण राज्यों में मुख्यमंत्रियों की संतोषजनक (सेटिस्फेक्शन) रेटिंग के आधार पर किया गया है। हिमाचल प्रदेश में सेटिस्फेक्शन का प्रतिशत 73.96 है, जो कि अधिकांश बड़े राज्यों की तुलना में बहुत अधिक है। सेटिस्फेक्शन का शुद्ध प्रतिशत कर्नाटक में 67.21 प्रतिशत, असम में 67.17 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 58.73 प्रतिशत, गुजरात में 58.53 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 57.81 प्रतिशत है, जबकि अखिल भारतीय सेटिस्फेक्शन का औसत 57.36 प्रतिशत है।हिमाचल के लिए भी यह गौरव की बात है कि श्री जय राम ठाकुर को भाजपा शासित राज्यों में देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में स्थान दिया गया है और देश के 7वें सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में उभरे हैं। हिमाचल प्रदेश न केवल मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के गतिशील नेतृत्व में प्रगति और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है, बल्कि कोरोना महामारी से भी प्रभावी तरीके से निपट रहा है। सरकार ने प्रदेश में कोविड-19 के दौरान अपनी जान जोखिम में डालकर विभिन्न स्तर पर कार्य कर रहे फ्रंटलाइन कर्मियों की मृत्यु हो जाने की स्थिति में उनके परिवार के नजदीकी सम्बन्धी को 50 लाख रुपये का अनुग्रह अनुदान देने की घोषणा की है।

प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों पर विशेष

प्रतिभा का दस्तावेज बनेगा स्किल रजिस्टर

इस पोर्टल के माध्यम से राज्य में लौटे लोग अपनी शैक्षिक योग्यता, कौशल और नौकरी की आवश्यकताओं के संबंध में जानकारी अपलोड कर सकते हैं। इससे राज्य में उपलब्ध कौशल की पहचान कर कौशल उन्नयन एवं आवश्यकताओं के विश्लेषण में भी सहायता मिलेगी।

सुनहरे भविष्य की तालाश में देश के विभिन्न भागों में कार्य कर रहे लाखों हिमाचलवासियों के लिए कोरोना महामारी किसी अभिशाप से कम नहीं है। रोजगार छिन जाने के कारण ऐसे असंख्य हिमाचली आए दिन अपने घर वापिस आ रहे हैं, जो प्रदेश सरकार के अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप आज सुकुशल अपने परिवारों के साथ रह रहे हैं। प्रदेश सरकार ने संकट की घड़ी में जरूरतमंदों को राहत देने की दिशा में तत्परता के साथ कार्य करते हुए आजीविका के लिए देश के किसी भी कोने में काम कर रहे हिमाचली को सकुशल वापिस लाने के पुख्ता प्रबंध किए। प्रदेश सरकार ने देश के विभिन्न हिस्सों में फंसे ऐसे लगभग दो लाख लोगों को वापस लाने पर 15 करोड़ रुपये व्यय कर अपने कर्त्तव्यों का भलीभांति निर्वहन किया है। राज्य के हजारों लोगों को विशेष रेलगाड़ियों और बसों द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों से वापिस लाया गया। अपने गृह राज्य में वापिस आए इन लोगों को अब बेरोजगारी की चिंता सताने लगी है। ऐसे हालात में हिमाचल प्रदेश सरकार इन लोगों के लिए रोजगार का एक वैकल्पिक समाधान लेकर आई है। प्रदेश सरकार ने कोरोना संकट के चलते बेरोजगार हुए इन लोगों के कौशल का खाखा तैयार करने के लिए एक प्रतिभा रजिस्टर तैयार किया है। इस रजिस्टर के आधार पर इन्हें राज्य में ही रोजगार और स्वरोजगार के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाएंगे। हिमाचल सरकार ने ऐसे लोगों का डेटाबेस बनाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा विकसित स्किल रजिस्टर का शुभारम्भ किया है। इस रजिस्टर में कोई भी पात्र व्यक्ति skillregister.hp.gov.in के माध्यम से अपना पंजीकरण करवा सकता है। विभिन्न कंपनियां और औद्योगिक घराने भी इस पोर्टल पर श्रमशक्ति आवश्यकताओं को दर्ज कर सकते हैं। इस पोर्टल के माध्यम से राज्य में लौटे लोग अपनी शैक्षिक योग्यता, कौशल और नौकरी की आवश्यकताओं के संबंध में जानकारी अपलोड कर सकते हैं। इससे राज्य में उपलब्ध कौशल की पहचान कर कौशल उन्नयन एवं आवश्यकताओं के विश्लेषण में भी सहायता मिलेगी। पोर्टल पर उद्योगों को एक क्लिक पर कुशल श्रमशक्ति की उपलब्धता की जानकारी मिल जाएगी। पंजीकरण के लिए मोबाइल नंबर और आधार नंबर आधारित प्रक्रिया अमल में लाई जाएगी और पात्र व्यक्तियों को एसएमएस के माध्यम से सूचित किया जाएगा। कौशल के बारे में जिला, शैक्षिक योग्यता और कार्य अनुभव के अनुसार रिपोर्ट तैयार की जाएगी। कौशल रजिस्टर को औद्योगिक घरानों के साथ जोड़ा जाएगा ताकि उद्योगों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार जानकारी मिल सके। इस रजिस्टर में आवश्यकता के अनुसार कौशल उन्नयन का भी प्रावधान है।

प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी
योजनाओं एवं उपलब्धियों पर विशेष

कृषि से संपन्नता

हींग व केसर से महकेगी हिमाचल की माटी

गुणों से भरपूर हींग व केसर न केवल हमारे स्वास्थ्य को चुस्त-दुरुस्त रखते हैं बल्कि स्वाद व सुगंध में भी ये दोनों बेमिसाल हैं। अपनी लाजवाब खुशबू से सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाले इन मसालों से हमारा भोजन स्वादिष्ट व जायकेदार भी बनता है। इन सभी गुणों के साथ-साथ ये प्रदेश के किसानों की आय में बढ़ोतरी का भी जरिया बन सकते हैं क्योंकि इन दोनों तरह के मसालों की बाजार में मांग भी काफी अधिक हैं और प्रति किलो के दाम भी अन्य मसालों की तुलना में अधिक मिलते हैं। इन्हीं खूबियों के मद्देनजर प्रदेश की जयराम सरकार राज्य में हींग व केसर की खेती को लोकप्रिय बनाने लिए ठोस कदम उठा रही है। 'कृषि सम्पन्नता योजना' के तहत प्रदेश सरकार राज्य में हींग व केसर की फसल को प्रोत्साहित कर रही है। इसकी फसल प्रदेश के ऊंचाई वाले क्षेत्रों चम्बा, लाहौल-स्पीति और किन्नौर जिलों में उगाई जा सकती है। सरकार की यह योजना किसानों को न केवल आत्मनिर्भर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, बल्कि हींग और केसर की देश में खपत को भी पूरा करेगी। मुख्यमंत्री ने वित्त वर्ष 2020-21 के अपने बजट भाषण में केसर और हींग की पफसलों से कृषि से संपन्नता योजना की शुरुआत करने की घोषणा की थी। प्रदेश में हींग की खेती करने के लिए बीज लाने का कार्य हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर ने किया है। हींग के बीज को ईरान से लाने के बाद संस्थान में इसकी पौध तैयार की गई। प्रदेश के जनजातीय जिलों में इसकी खेती की संभावनाओं को देख इसका प्रयोग किया गया। संस्थान की मेहनत रंग लाई और जनजातीय क्षेत्रों में हींग की खेती तैयार कर ली। अब हींग की नर्सरी तैयार की जा रही है। जब इसके पौधे बन जाएंगे तो किसानों को उपलब्ध करवाते हुए प्रदेश में हींग का उत्पादन शुरू हो जाएगा। देश में हींग की खपत 1100 टन है और ज्यादातर विदेश से आयात किया जाता है। अब इसका उत्पादन हिमाचल में ही होगा तो उसका पूरा लाभ किसानों को मिलेगा। प्रदेश में केसर और हींग की फसल उगाकर किसान खुशहाली की नई कहानी लिखेगा। दूसरी तरफ जम्मू-कश्मीर में प्रमुखता से की जाने वाली केसर की खेती के लिए भी प्रदेश के ऊंचाई वाले क्षेत्रों की जलवायु उपयुक्त पाई गई है। देश में केसर की खपत सौ टन है, लेकिन यहां सिर्फ छह टन का ही उत्पादन होता है। बाकी का केसर विदेश से आता है। आइएचबीटी पालमपुर ने हिमाचल में ही केसर की खेती की संभावनाएं तलाशते हुए कुछ क्षेत्रों को इसकी खेती के लिए उपयुक्त पाया है। सिरमौर, रामपुर, चंबा का कुछ भाग और पालमपुर के साथ लगते क्षेत्रों में केसर का उत्पादन हो सकता है। इसके लिए संस्थान किसानों के छोटे समूह बनाकर उन्हें जोड़ेगा। किसानों को केसर उत्पादन की तकनीकी जानकारी संस्थान ही देगा। बाजार में हींग का मूल्य 35 से 40 हजार रुपये प्रति किलो है। दूसरी तरफ केसर का मूल्य दो लाख रुपये प्रति किलो है। ईरान में हींग और केसर की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। वहीं से उसे भारत भी इनका आयात करता है।

योजना का मुख्य उद्देश्य
किसानों की आय में वृद्धि करना

संस्थान ने कड़ी मेहनत कर योजना बनाकर सरकार को भेजी थी। किसानों के लिए केसर के बल्ब तैयार करने का कार्य आइएचबीटी प्रमुखता से कर रहा है। साथ ही हींग के पौधें को नर्सरी में तैयार किया जाना है। प्रदेश के किसान यदि हींग व केसर की खेती करते हैं तो इससे हिमाचल को बहुत लाभ होगा और प्रदेश के युवाओ के लिए नए रोजगार के संसाधनों को जुटाने में मदद मिल सकेगी। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश में संचालित की जा रही कृषि सम्पन्नता योजना का मुख्य उद्देश्य भी किसानों की आय में वृद्धि करना है।

'पंचवटी' में खिलेंगी बुजुर्गों की खुशियां

समाज शास्त्री प्रोफेसर आर.के. सिंह के अनुसार एक उम्र के बाद हमारे बुजुर्गों को, चाहे वे हमारे माता-पिता हों या दादा-दादी सभी को एक खास तरह की देखभाल की जरूरत रहती है। ऐसा न होने पर वे खुद को घर में उपेक्षित महसूस करने लगते हैं। तनहाई उनका सबसे बड़ा दुश्मन बन जाता है। मन में कई तरह की आशंकाएं घर करने लगती हैं और धीरे-धीरे ये अवस्था मानसिक बीमारी का रूप ले लेती हैं। ऐसी स्थिति में नितांत आवश्यक हो जाता है कि हम अपने बुजुर्गों को एहसास कराएं कि वह हमारे लिए कितने महत्त्वपूर्ण हैं। उनके अनुभवों की हमें कितनी जरूरत है। इसलिए शारीरिक व मानसिक तौर पर स्वस्थ रखने के लिए जरूरी है कि उन्हें किसी न किसी तरह से क्रियाशील बनाये रखा जाए। ऐसे में उनके लिए सुबह शाम की सैर एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। शहरों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए खाली समय व्यतीत करने के लिए कई तरह के विकल्प हैं जैसे क्लब इत्यादि जहां वे तरह-तरह की गतिविधियों में शामिल होकर अपने आपको व्यस्त रखते हैं। परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठ नागरिकों के मनोरंजन के लिए क्लब जैसी कोई सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती। हमारी सरकार बुजुर्गों के प्रति काफी संवेदनशील है। सरकार की संवेदनशीलता का अंदाजा हाल ही में ग्रामीण क्षेत्रों के वरिष्ठ नागरिकों की जरूरतों के मद्देनजर 'पंचवटी योजना' शुरू करने से लगाया जा सकता है। योजना का मुख्य उद्देश्य बुजुर्गों को सेहतमंद रखने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना भी है। चूंकि हिमाचल एक पहाड़ी इलाका है। रास्ते उबड़-खाबड़ होने की वजह से सबसे ज्यादा परेशानी का सामना बुजुर्गों को ही करना पड़ता है, जिस कारण उन्हें घर के अन्दर ही रहने को मजबूर होना पड़ता है। पंचवटी योजना के अंतर्गत प्रदेश भर में आवश्यक सुविधाओं से युक्त सभी विकास खण्डों व हर पंचायत में चरणबद्ध तरीके से 100 पार्क और बगीचे विकसित किए जाएंगे, जहां वरिष्ठ नागरिकों के मनोरंजन से जुड़ी सभी सुविधाएं मुहैया करवाई जायेंगी।

प्रदेश में बनाए जाने वाले इन पार्कों के निर्माण के पीछे सरकार का एक ही मकसद है, बुजुर्गों को एक ऐसी जगह देना, जहां वह मनोरंजन के साथ खाली समय में अपनी सेहत का भी ध्यान रख सकें। साथ ही साथ इन पार्कों में बुजुर्ग सैर करने के अलावा एक दूसरे के साथ अपने दुःख-सुख व अच्छे-बुरे अनुभव भी साझा कर सकेंगे। प्रदेश में बनाए जाने वाले इन पार्कों के जरिए बुजुर्गों को एक ऐसी जगह देना है जहां वह अपने खाली समय में अपनी सेहत का ध्यान रख सकें। बुजुर्गों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए पार्कों का निर्माण स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के अन्तर्गत किया जायेगा। इन बगीचों में औषधीय पौधों को भी लगाया जाएगा, साथ ही यहां पैदल पथ, मनोरंजन के उपकरण और अन्य बुनियादी सुविधाओं को प्रदान करने के लिए भी सरकार प्रयास कर रही है। न्यूनतम एक बीघा समतल भूमि पर इन बगीचों का निर्माण किया जायेगा। पार्कों और बगीचों का विकास मनरेगा के तहत किया जाएगा, जिसका सारा खर्च सरकार वहन करेगी। योजना के जरिए जहां ग्रामीण मजदूरों को रोजगार मिलेगा, उनका भरण-पोषण होगा, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे लोगों की आजीविका भी बेहतर होगी। सरकार द्वारा शुरू की गई यह योजना निःसंदेह सराहनीय है जो ग्रामीण बुजुर्गों में एक नई उमंग के साथ सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगी और उन्हें शारीरिक व मानसिक तौर पर स्वस्थ रखने में मददगार साबित होगी।

पुनः पटरी पर लौटी अर्थव्यवस्था

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के कुशल नेतृत्व में वर्तमान प्रदेश सरकार राज्य की अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर लाकर इसे गति देने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। अर्थव्यवस्था के पुनरूत्थान के लिए गठित मंत्रिमंडल उप समिति और टास्क फोर्स की अनुशंसा के अनुसार आर्थिक गतिविधियों को खोला जा रहा है। प्रदेश सरकार ने आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करने के लिए अनेक प्रभावी कदम उठाए हैं, जिनसे आर्थिकी को पुनः पटरी पर लाने में सहायता मिली है। प्रदेश भर मे कर्फ्यू अवधि में पर्याप्त छूट देकर व्यापारिक गतिविधियों को सुचारू बनाया गया है। औद्योगिक इकाइयों में उत्पादन दोबारा से आरंभ करने के लिए पर्याप्त प्रबंध किए गए है। प्रदेश सरकार ने लॉकडाऊन के दौरान हिमाचल वापिस लौटे लोगों को रोजगार देने व उनके पुनर्वास के लिए 'मुख्यमंत्री शहरी आजीविका गारंटी योजना' आरंभ की है। ग्रामीण महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए 'मुख्यमंत्री एक बीघा योजना' आरंभ की गई है। इस योजना को मनरेगा से जोड़कर 5,000 स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लगभग 1.50 लाख महिलाओं को स्वरोजगार के साथ जोड़ा जाएगा। योजना के तहत एक बीघा भूमि पर बैकयार्ड किचन गार्डन तैयार कर सब्जियां एवं फल उगाने का कार्य आरंभ किया जा सकता है। आम लोगों के जीवन को सामान्य बनाने की दिशा में कारगर कदम उठाए गए हैं। जनधन योजना के अंतर्गत प्रदेश की 5.90 लाख पात्र महिलाओं के खाते में धनराशि हस्तांतरित कर उन्हें लाभान्वित किया गया है। किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसानों के बैंक खातों में प्रति किसान 2,000 रुपये हस्तांतरित किए गए हैं।

कोरोना महामारी के दृष्टिगत राज्य सरकार ने भवन एवं अन्य सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के तहत पंजीकृत 1.37 लाख कामगारों को राहत प्रदान करने के लिए जून माह में 2,000 रुपये की अतिरिक्त किस्त उपलब्ध करवाई है।

सरकार ने अप्रैल और मई 2020 महीनों के लिए 2,000 रुपये की राशि प्रत्येक लाभार्थी को पहले ही प्रदान कर दी है। इस राशि के मिलने से लाभार्थियों को 27.42 करोड़ रुपये की अतिरिक्त धनराशि मिलेगी। 18 से 60 साल की आयु का कोई भी व्यक्ति जिसे पिछले 12 महीनों में बीओसीडब्ल्यू या मनरेगा के तहत कम से कम 90 दिनों का अनुभव हो, बोर्ड के तहत अपने को पंजीकृत करवाकर बोर्ड द्वारा कामगारों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा सकता है।

'एक राष्ट्र एक राशन कार्ड' योजना आरम्भ करने वाला हिमाचल प्रदेश देश का प्रथम राज्य है, जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति देश में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सब्सिडी पर राशन ले सकता है।

'एक राष्ट्र एक राशन कार्ड' योजना आरम्भ करने वाला हिमाचल प्रदेश देश का प्रथम राज्य है, जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति देश में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सब्सिडी पर राशन ले सकता है।

केंद्र सरकार द्वारा घोषित 20 लाख करोड़ रुपये के आर्थिक पैकेज से देश व प्रदेश की आर्थिकी में अप्रत्याशित सुधार होगा और लोगों को इस आर्थिक पैकेज से बहुत सहायता मिलेगी।

विकासात्मक आलेख प्रस्तुति : हिमप्रस्थ डेस्क

प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों पर विशेष

'वंदे भारत मिशन'

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने विदेशों में घर वापिसी की आस लगाए लोगों की सहायता में विशेष रुचि लेकर राज्य प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त किया जबकि मुख्य सचिव अनिल खाची ने इस कार्य की प्रभावी तरीके से निगरानी की। राज्य नोडल अधिकारी ओंकार शर्मा, पूर्व आवासीय आयुक्त संजय कुण्डू, नई दिल्ली में तैनात वर्तमान आवासीय आयुक्त रजनीश ने इस कार्य में शामिल होकर विशेष सहयोग दिया। आवासीय आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली ने अपने अथक प्रयासों से राज्य सरकार द्वारा सौंपे गए इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाने में योगदान दिया। इस कार्य के नोडल अधिकारी, उप-आवासीय आयुक्त विवेक महाजन ने विदेश मंत्रालय से तत्काल समन्वय स्थापित कर विभिन्न दूतावासों के साथ बातचीत की।

जय राम सरकार के सराहनीय प्रयास

713 हिमाचलियों की हुई सकुशल घर वापिसी

पी. एच. एस. मालिनी

कोविड-19 महामारी के कारण विदेशों में विभिन्न जगहों पर फंसे हजारों लोगों के लिए केन्द्र सरकार द्वारा आरंभ 'वंदे भारत मिशन' बेहद कारगर एवं प्रभावी उपाय साबित हुआ है जिसके तहत विशेष उड़ानों के सफल संचालन से हजारों लोगों की सकुशल घर वापिसी सुनिश्चित हो पाई है। इस मिशन के तहत हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा किए गए सार्थक प्रयासों का ही परिणाम है कि विश्व के 69 देशों में फंसे 713 हिमाचलियों को वापिस लाया जा सका, जिनमें संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, रूस, किर्गिस्तान, यूक्रेन आदि देश मुख्य रूप में शामिल हैं। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने विदेशों में घर वापसी की आस लगाए इन लोगों की सहायता में विशेष रुचि लेकर राज्य प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त किया जबकि मुख्य सचिव अनिल खाची ने इस कार्य की प्रभावी तरीके से निगरानी की। राज्य नोडल अधिकारी ओंकार शर्मा, पूर्व आवासीय आयुक्त संजय कुण्डू, नई दिल्ली में तैनात वर्तमान आवासीय आयुक्त रजनीश ने इस कार्य में शामिल होकर विशेष सहयोग दिया। आवासीय आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली ने अपने अथक प्रयासों से राज्य सरकार द्वारा सौंपे गए इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाने में योगदान दिया। इस कार्य के नोडल अधिकारी, उप-आवासीय आयुक्त विवेक महाजन ने विदेश मंत्रालय से तत्काल समन्वय स्थापित कर विभिन्न दूतावासों के साथ बातचीत की। विभिन्न देशों में यात्रियों के साथ व्हाट्सऐप ग्रुपों के माध्यम से संवाद किया। उड़ान की समय-सारिणी, सहायता डैस्क, जरूरी दस्तावेज जैसे अहम पहलुओं में मार्गदर्शन व समस्त जरूरी जानकारी उपलब्ध करवाई, जो उनके भारत वापिसी के लिए आवश्यक थी। हिमाचलवासियों को वापिस लाने के लिए यह उड़ानें दिल्ली, चण्डीगढ़ और अमृतसर हवाई अड्डों पर उतरीं जहां राज्य सरकार के अधिकारियों की एक टीम पहले से ही तैनात की गई थी। इस अभियान का नेतृत्व उप-आवासीय आयुक्त ने किया जिन्होंने दिल्ली में जिला मेजिस्ट्रेट और दिल्ली, चण्डीगढ़ और अमृतसर के नोडल अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित किया।

मानक संचालन प्रक्रिया के अनुसार दिल्ली और पंजाब के हवाई अड्डों पर वहां की सम्बन्धित सरकारों द्वारा यात्रियों की चिकित्सकीय जांच की गई। इसके बाद उन्हें हिमाचल के

सहायता डैस्क को सौंपा गया तथा उन्हें एक प्रमाण पत्र दिया गया, जिसमें स्पष्ट रूप से उल्लेखित था कि उनकी चिकित्सकीय जांच की गई है तथा वह आगे की यात्रा के लिए स्वस्थ पाए गए हैं। सहायता डैस्क का काम दिल्ली या पंजाब आदि सरकारों से घर वापिसी के इच्छुक लोगों को लेना और जरूरत पड़ने पर उन्हें टैक्सी किराए पर लेकर आगे की यात्रा की सुविधा प्रदान करना था। आवासीय आयुक्त कार्यालय द्वारा सम्बन्धित जिलों में क्वारंटीन की व्यवस्था करके सम्बन्धित जिला प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित किया गया। जिला प्रशासन को आवासीय आयुक्त कार्यालय द्वारा वाहनों की आवाजाही और विवरण आदि के बारे विधिवत जानकारी दी गई। प्रारम्भ में विदेश मंत्रालय/ दूतावास हिमाचल के लोगों को राज्य सरकार को सौंपने का अनिच्छुक था, क्योंकि वह हिमाचल सरकार से लिखित में आश्वासन चाहते थे कि हिमाचल के लोगों को क्वारंटीन के लिए हिमाचल वापिस ले जाया जाएगा। इसके तुरन्त बाद मानक संचालन प्रक्रिया जारी की गई ताकि हिमाचल के लोगों को कोई परेशानी पेश न आए।

हिमाचल भवन, नई दिल्ली में स्थापित हेल्प डेस्क

मानक संचालन प्रक्रिया जारी होने के उपरान्त अधिक से अधिक हिमाचली लोगों की वापसी सुनिश्चित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था क्योंकि पूरे देश से एयर इण्डिया की उड़ानों में सीटों की भारी मांग थी। हालांकि विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव और नोडल अधिकारी के ठोस प्रयासों और मदद के पश्चात लगभग सभी हिमाचलियों को वापिस लाने में कामयाबी हासिल हो सकी। दुबई में फंसे 40 लोगों की सूची आवासीय आयुक्त कार्यालय को प्राप्त हुई थी। नोडल अधिकारी व उप-आवासीय आयुक्त दिल्ली ने दुबई के लोगों से बातचीत करते हुए व्हाट्सऐप ग्रुप बनाए गए तथा दुबई में फंसे लगभग 250 लोगों की सूची तैयार की गई। इस मामले को विदेश मंत्रालय/ दूतावास कार्यालय से लगातार उठाया गया परिणामस्वरूप संयुक्त अरब अमीरात/मध्य पूर्व में फंसे 213 लोग दिल्ली, अमृतसर, चण्डीगढ़ के हवाई अड्डे पर पहले ही पहुंच चुके थे। इसी प्रकार नेपाल में फंसे आठ लोगों को लाने के लिए उत्तराखण्ड राज्य के चम्पावत जिला के जिला मेजिस्ट्रेट से बात की गई जिन्हें नेपाल सीमा से एक बस में बैठाकर पांवटा साहिब भेजा गया, जहां पर आवासीय आयुक्त कार्यालय द्वारा उपायुक्त सिरमौर से पहले ही बातचीत करके उन सभी को क्वारंटीन किया गया। इसी प्रकार अटारी सीमा पर पाकिस्तान में फंसे हिमाचलियों को वापिस लाने का मामला पुलिस से उठाया गया। आधिकारिक पत्र के साथ अधिकारियों की एक टीम अटारी सीमा पर भेजी गई तथा सभी औपचारिकताएं पूरी करने के उपरान्त उन्हें संस्थागत क्वारंटीन के लिए हिमाचल भेजने के लिए टैक्सी सुविधा शुरू की। मालदीव में फंसे लोग केरल और तमिलनाडु पहुंचे थे। यह मामला केरल और तमिलनाडु की सरकार के समक्ष उठाया गया तथा उन्हें केरल और तमिलनाडु में संस्थागत क्वारंटीन रखा गया था। यूक्रेन और किर्गीस्तान में फंसे लोगों, चिकित्सा के विद्यार्थियों को वापिस लाने के लिए विदेश मंत्रलय और दूतावास के साथ मामला उठाया गया तथा काफी प्रयासों के बाद 54 विद्यार्थियों का पहला जत्था यूक्रेन से विद्यार्थियों को लेकर एयर इण्डिया के चार्टिड विमान से चण्डीगढ़ एयरपोर्ट पहुंचा।

नोडल अधिकारियों की एक टीम विद्यार्थियों को लेने के लिए पहले से तैनात थी तथा हिमाचल पथ परिवहन निगम के प्रबन्ध निदेशक से समन्वय स्थापित करके उन्हें क्वारंटीन के लिए सम्बन्धित अंचलों के क्वारंटीन होटलों में भेजा गया। ऐसे ही प्रयासों के बाद किर्गीस्तान से आए विद्यार्थियों कों चण्डीगढ़ और नई दिल्ली के हवाई अड्डों पर पहुंचाया गया।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की प्रतिबद्धता के कारण ही इस अत्यन्त कठिन कार्य को पूरा किया जा रहा है तथा अधिकतम हिमाचलियों को लाने की प्रक्रिया अभी भी जारी है।

संयुक्त निदेशक, हि. प्र. प्रेस संपर्क कार्यालय,
हिमाचल भवन, नई दिल्ली-110 001

विश्व धरोहर

रेलवे ट्रैक के साथ-साथ प्रकृति का शृंगार

बड़ोग स्टेशन पर स्नोई एंजेल ट्रंपेट

फूलों की खुशबू से महका ऐतिहासिक रेलवे स्टेशन बड़ोग

◆ कुल राजीव पंत

कालका-शिमला रेल सोसायटी (के.एस. आर.) के व्हॉट्सएप ग्रुप में पिछले कुछ महीनों से बड़ोग स्टेशन की मनोहारी तस्वीरें देखने को मिल रही हैं। ये तस्वीरें स्टेशन अधीक्षक, धर्म दत्त उपाध्याय डालते रहते हैं। इन तस्वीरों में राष्ट्रीय पर्वों पर स्टेशन गुब्बारों और तिरंगे झंडों से खूब सजा हुआ दिखाई देता है। दीपावली पर रंग-बिरंगी रोशनियों से सजे स्टेशन परिसर की तस्वीरें मंत्रमुग्ध करने वाली होतीं। इनके अतिरिक्त वह स्टेशन में लगे डहलिया, गुल दाऊदी, गैंदा, वाइट एंजेल-स्नोई एंजल ट्रंपेट, कई रंगों के गुलाब आदि फूलों के लुभावने चित्र भी बीच- बीच में डालते रहते। इन तस्वीरों को देख ऐसा लगता जैसे यह बड़ोग आने का

डहलिया

डेंटस

निमंत्रण दे रहे हों। वैसे भी बड़ोग जाने की इच्छा बहुत दिनों से मन में कुलबुला रही थी। उसका एक कारण बचपन की उन यादों को ताजा करना भी था, जब हम पिताजी के साथ या दोस्तों के साथ सोलन से बड़ोग स्टेशन तक घूम आते थे। उपाध्याय जी द्वारा भेजी जा रही तस्वीरों ने उस इच्छा को और बलवती बना दिया।

बड़ोग कालका- शिमला रेल मार्ग का एक महत्त्वपूर्ण स्टेशन है। स्टेशन की सुरंग नं. 33 बड़ोग सुरंग के नाम से मशहूर है। इस रेलमार्ग की यह सबसे लंबी सीधी सुरंग है। एक छोर से सुरंग का दूसरा छोर दिख जाता है। बहुत समय तक भारत में इस टनल को दूसरी सबसे लंबी सीधी सुरंग होने का गौरव प्राप्त था। स्कॉटिश शैली में बने स्टेशन के चारों ओर चीड़, देवदार, बान आदि के घने जंगल हैं। इस रमणीक स्थल का सौंदर्य सैलानियों को अभिभूत
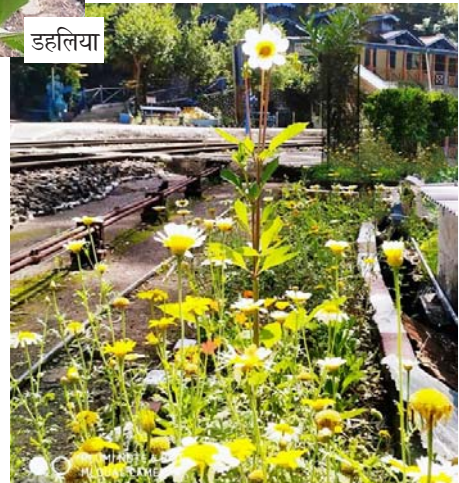
कर देता है। यहां ट्रेन लगभग 10 मिनट रुकती है। यहां एक भोजनालय तथा ठहरने के लिए विश्रामालय भी है।

इस स्टेशन का नाम रेलवे इंजीनियर कर्नल एस. बड़ोग के नाम पर रखा गया। इस सुरंग का निर्माण कार्य इंजीनियर बड़ोग की देखरेख में शुरू हुआ था। परंतु दुर्भाग्यवश सुरंग के दोनों छोर न मिलने के कारण खुदाई का काम असफल रहा। जिस कारण अंग्रेज सरकार ने कर्नल बड़ोग को अपमानित कर उस पर एक रुपये का दंड लगाया।

अपनी इस असफलता तथा अपमान से वह इतना आहत हुए कि उन्होंने सुरंग के पास ही अपने को गोली मार आत्महत्या कर ली। उस अधूरी सुरंग का उत्तरी छोर स्टेशन से लगभग एक किलोमीटर ऊपर सुनसान जंगल के बीच स्थित है। जुलाई 1900 में सुरंग का निर्माण कार्य मुख्य अभियंता एच.एस. हैरिंगटन की देखरेख में पुनः शुरू हुआ। पर इस बार निर्माण कार्य में बाबा भलकू का चमत्कारी कौशल काम आया। वह अपनी छड़ी से निशान लगा बताते रहे कि खुदाई कहां-कहां से करनी है। इस तरह बाबा भलकू के मार्गदर्शन से सितंबर 1903 में सुरंग निर्माण का कार्य संपन्न हुआ जिस पर दो लाख 40 हजार रुपये की लागत आई। इसके बाद शिमला तक रेलमार्ग निर्माण में भी बाबा भलकू का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। बाबा भलकू चायल के पास झाझा गांव के रहने वाले थे। इनकी स्मृति में चायल में एक पार्क का निर्माण किया गया और वहां इनकी प्रतिमा भी स्थापित की गई। शिमला रेलवे स्टेशन पर स्थापित रेल संग्रहालय का नाम भी बाबा भलकू रेल संग्रहालय रखा गया।

बिना किसी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम व सूचना के बड़ोग रेलवे स्टेशन पहुंचे केंद्रीय रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल के साथ स्टेशन अधीक्षक श्री धर्म दत्त उपाध्याय

बात बड़ोग स्टेशन के अधीक्षक धर्म दत्त उपाध्याय जी द्वारा एक ग्रुप में डाली जा रहीं आकर्षक तस्वीरों से शुरू हुई थी, पर बड़ोग टनल के निर्माण से जुड़ी कथा का संक्षिप्त वर्णन करने से अपने को रोक नहीं पाया। खैर, मई महीने के एक दिन हम सोलन से पैदल धूप-छांव व बारिश का आनंद लेते हुए बड़ोग स्टेशन पहुंच गए। उपाध्याय जी बड़ी गर्मजोशी से मिले। वे जब से इस स्टेशन पर नियुक्त हैं, तब से स्टेशन के सौंदर्यीकरण के लिए कुछ-न-कुछ करते रहते हैं। लॉकडाऊन शुरू होने पर उनके लगाए फूलों की आकर्षक तस्वीरें हम देख चुके थे।

अब वह गर्मियों में मिलने वाले फूल लगा उनकी देखभाल में जुटे हैं। उन्होंने बताया कि ये फूल हर वर्ष ऐसे ही खिलते हैं, परंतु गाड़ियों से आने-जाने वाले यात्री इन्हें तोड़ देते थे। इन दिनों लॉकडाऊन की वजह से गाड़ियों का आना-जाना बंद है,

तो ये फूल बच गए और स्टेशन इनके रंगों से कुछ अधिक खिल उठा है। एंजट ट्रंपेट के फूल अभी भी अपने पूरे शबाब पर थे। उपाध्याय जी ने बताया कि यह फूल रात ढलने के साथ-साथ खिलता हुआ आधी रात तक बहुत बड़ा हो जाता है और इसकी मदहोश करने वाली खुशबू से स्टेशन महक उठता है। इस दौरान उन्होंने कई तरह के फूल, कुछ पेड़, सजावटी पौधे, बौने पेड़ तथा गैंदे के फूलों के लगभग दो हजार पौधे स्टेशन के दोनों ओर लगा दिए हैं। जुलाई से ये फूल अपनी इत्र बिखेरनी शुरू कर देंगे। सितंबर- अक्तूबर तक

कलांचू

डहलिया

हाइड्रेंजिया

स्टेशन गेंदे के फूलों से लहलहा उठेगा। इस दौरान उन्होंने क्यारियों के किनारों में लगी ईंटों और प्लेटफार्म पर यात्रियों की सुरक्षा के लिए लगी सफेद रंग की लकीरों को खुद ही रंग दिया। हंसमुख व्यक्तित्व के धर्म दत्त उपाध्याय जी यहां ठहरने वाले यात्रियों की छोटी-छोटी जरूरतों का पूरा ध्यान रखते हैं। इसीलिए एक दफा जो यात्री यहां ठहर जाता है, वह उनको भुला नहीं पाता और उनसे बराबर संपर्क बनाए रखता है। पिछले वर्ष केंद्रीय रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल बिना किसी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम व सूचना के बड़ोग रेलवे स्टेशन पहुंच गए। वहां अचानक पहुंचने पर अपने स्वागत और जलपान की लाजवाब व्यवस्था देख वह उपाध्याय जी की कार्यकुशलता से अत्यंत प्रभावित हुए। अपनी आगामी यात्रा के लिए मंत्री महोदय जैसे ही रेलकार में सवार हुए वैसे ही, केवल उपाध्याय जी के साथ एक फोटो खिंचवाने के लिए उतर गए। यह उपाध्याय जी की दीवानगी ही है कि फूलों और पौधों की खरीद पर आने वाले खर्च को वो स्वयं ही खुशी-खुशी वहन करते हैं। वह सुबह से ही क्यारियों को संवारने-सजाने के काम में जुट जाते हैं। किसी सरकारी कर्मचारी का अपने कार्यस्थल के प्रति ऐसा जुनून मुश्किल से ही देखने को मिलता है। उपाध्याय जी की कार्यशैली देख उनका यही उद्देश्य लगता है - 'किसी से कोई अपेक्षा नहीं और स्टेशन की कतई उपेक्षा नहीं।' रेलवे में कार्यरत इसी तरह के ऊर्जावान, निष्ठावान कर्मचारियों व अधिकारियों की कर्त्तव्यपरायणता से ही रेलवे की छवि निखर रही है और फूल खिल रहे हैं।

'सतकुल', विद्या भवन, नजदीक दयानंद स्कूल, सन्नी साइड, सोलन, जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश-173 212

मो. 0 85804 49989

सभी चित्र : धर्म दत्त उपाध्याय के सौजन्य से

ट्रम्पेट वाईन

डहलिया

फ्यूशिया

आलेख

मातृत्व की कसौटी : विवेकानंद का नारी-विमर्श

◆ बी. एल. आच्छा

भारतीय चिन्तन परम्परा और समाज व्यवस्था में नारी को केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। नारी के भीतर का देवी-तत्त्व, उसका समर्पण उसे पूजा की अधिकारिणी बनाता है। विवेकानन्द कहते हैं - "स्त्रियों की अवस्था को सुधारे बिना जगत् के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है। पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है।" इस कथन में नारी की सामाजिक वास्तविकता और पुरुष के साथ नारी की विकासगत उड़ान की युगल अनिवार्यता का सन्देश छिपा हुआ है। इतिहास के विभिन्न चक्रों में भारत की स्वतन्त्र और विदुषी नारी अपने 'वैदुष्य' और केन्द्रीयता को खोकर किस तरह पर्दाप्रथा, बालविवाह, वैधव्य का अभिशाप, पुरुष प्रधानता, स्वत्व का स्खलन और भोग के साधन के रूप में अधिकारविहीन होती चली गयी, यह ऐतिहासिक यथार्थ का हिस्सा है। परन्तु पुनर्जागरणकाल में नारी ने अपने स्वत्व को फिर से पहचाना है और अब वह नये स्वरूप में पुरुष की तरह ही अनिवार्य एवं नियामक बन रही है।

फिर भी प्रत्येक संस्कृति की अपनी विशिष्टता होती है, उसका अपना सांस्कृतिक विमर्श होता है, उसमें परिवर्तनीयता का लचीलापन और जीवन्तता होती है। परिवर्तनीयता के इस सूत्र को विवेकानन्द इस तरह व्याख्यायित करते हैं - "कर्म का निर्णय व्यक्तिगत, देशगत और कालगत परिस्थितियों के अनुसार होना चाहिए।" भारतीय संस्कृति में नारी का अपना सांस्कारिक रूप है। वह उन विशिष्टताओं से मंडित है, जो अन्य संस्कृतियों की नारी से उसे अलगाते हैं, सोच में, रीति-रिवाजों में, आस्थाओं में, परिवार और समाज के साथ सहचार में भी। विवेकानन्द के सामने नारी के सीमित रूप हैं, क्योंकि एक संन्यासी के रूप में वे नारी को माता, स्त्री, कन्या और बहिन के रूप में उतना नहीं जानते, जितना उसके पूज्य मातृत्व के रूप में। परन्तु उनके सामने संस्कृतियों की भिन्नता के स्वीकार के साथ उनके विमर्श का लचीला रूप है, वे एकान्ततः यह स्वीकार नहीं करते कि भारतीय रूप ही सर्वश्रेष्ठ है, बल्कि प्रत्येक संस्कृति और उसके रीति-रिवाजों में 'श्रेष्ठता' को रेखांकित करते हैं। वे मानते हैं कि 'विचारों' की इतनी महान् विभिन्नता में रहने वाले हम लोगों को एक के आदर्श से दूसरे को जाँचना न तो उचित है, और न सम्भव ही। विवेकानन्द की दृष्टि से भारत में स्त्री जीवन के आदर्श का प्रारम्भ और अन्त मातृत्व में ही होता है। 'स्त्री' शब्द से ही मातृत्व का भाव जाग्रत हो जाता है। उनकी मान्यता है कि माता के प्रेम बिना कोई भी सृष्टि स्थायी नहीं हो सकती। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था और संयुक्त परिवार की विशेषता में मातृ-तत्त्व नियामक है, क्योंकि मातृत्व में महानता, स्वार्थशून्यता, कष्ट-सहिष्णुता और क्षमाशीलता का भाव निहित है। मातृत्व के इस रस से पूरा परिवार इस तरह चिपका रहता है कि दो सौ बरस के प्रयत्नों के बावजूद अँग्रेजी हुकूमत के प्रशासक और विद्वान् कहा करते थे कि इस पारिवारिक व्यवस्था को तोड़ना बेहद मुश्किल है और इसे तोड़े बिना वे सफल नहीं हो सकेंगे। और इससे भी श्रेष्ठतर देवीय भाव यह है कि माता ही जगज्जननी का रूप है। इस नश्वर संसार में ईश्वर के प्रेम के समीपतम माता का ही प्रेम है। रामकृष्ण अवतार में इसी कारण 'स्त्री-गुरु' को ग्रहण किया गया है। उन्होंने स्त्री के इसी रूप और भाव में साधना की और इस कारण ही उन्होंने जगज्जननी के रूप का दर्शन नारियों के मातृभाव में करने का उपदेश दिया। नारी की पूर्णता का आख्यान तभी हो सकता है जो उस वस्तु से परिपूर्ण हो, जो नारीत्व को पूर्ण करने के लिए तथा नारी को नारी बनाने के लिए अपेक्षित है, मातृत्व है।

नारी की पश्चिमी अवधारणा और भारतीय अवधारणा में मूलभूत अन्तर है। इसीलिए पँसाडेना, कैलिफोर्निया के शेक्सपियर क्लब हाउस में 18 जनवरी 1900 को जो व्याख्यान दिया, उसमें स्पष्ट कहा था कि सभी विचार अच्छे और महान् हैं, इसलिए सम्भव है, आपके कतिपय विचार भारतीयों के लिए उपयुक्त हों और हमारे कुछ विचार यहाँ के कुछ लोगों के लिए। विवेकानन्द व्यक्ति, काल और देश को महत्वपूर्ण कारक मानकर कट्टरता के स्थान पर वैचारिक खुलेपन को ही प्रीतिकर मानते हैं। विवेकानन्द मानते हैं कि भारत में स्त्रीजीवन का आदर्श मातृत्व में ही निहित है, पर पश्चिम में स्त्री पत्नी है। भारत में स्त्रीत्व भाव मातृत्व के रूप में और पश्चिम में स्त्रीत्व भाव पत्नीत्व के रूप में केन्द्रीभूत है। पश्चिमी स्त्री का परिवार में स्वामित्व और शासन होता है, क्योंकि वह पत्नी का घर है, भारत में वह माता का घर है। पश्चिम में माँ स्त्री के अधीन होती है, भारत में पत्नी माता के अधीन होती है। इसीलिए भारत में माता सिर्फ पुत्र की ही नहीं, पत्नी की भी माता बन कर पारिवारिक संघटना और समरसता को मजबूत करती है। यह आदर उसे इसलिए मिला है क्योंकि स्त्री केवल शरीर संज्ञा नहीं है, वह त्याग, ओज, प्रेम और जीवन के सृजन की अधिष्ठात्री है। यद्यपि भारतीय समाज में भी तलाक और न्यायालय पारिवारिक जीवन को खटखटाते जा रहे हैं, फिर भी 'स्त्री' में मातृत्व का भाव आज भी सामाजिक रूप से पुष्ट, काम्य और पूज्य है। माँसलता आज भी उसका सर्वांग पर्याय नहीं है, बल्कि

भावसाध्य पावनता उसके भीतर का पूज्य पक्ष है। ऐसी नारी मूर्तियाँ ही, देवी के रूप में प्रख्यात और आराध्य रूप में रची बसी हैं। स्त्रीत्व पीछे छूट जाता है और मातृत्व आरती के रूप में जीवन से लय पाता है। सन्तान की कामना और उसकी प्राप्ति मातृत्व का यदि काम्य पक्ष है, तो शरीर और काम की उपेक्षा कैसे हो सकती है? पुरुषार्थ चतुष्टय में 'काम' की अवधारणा अनिवार्य है, पर उसके पीछे शरीर का माँसल पक्ष ही सर्वभूत नहीं है। इसीलिए तपस्या की अग्नि से उसे जलाकर भी कामदेव की प्रतिष्ठा हुई है, अनंग को शिव से आशीर्वाद मिला है। पर काम की यात्रा को विवाह, उद्वाह की संस्कृति से सामाजिक स्वीकृति दी गयी है और सन्तान की कामना के लिए भी प्रार्थना की गयी है। विवेकानन्द सन्तान के लिए प्रार्थना को पवित्र आकाँक्षा के रूप में देखते हैं। शरीर का जैविक पक्ष और संस्कृति के आत्मिक पक्ष का समन्वय भारतीय चिन्तन में है। 'स्त्री' को केन्द्र में रखने के कारण पश्चिम में 'दाम्पत्य अधिकारों के पुनःस्थापन' जैसे कानून बने। स्त्री की सामाजिक स्थिति, सम्मान और उसकी स्वतन्त्रता के लिए नारी आन्दोलन और नारी-विमर्श शुरू हुए। निश्चय ही यह पश्चिमी पारिवारिक- सामाजिक जीवन में नारी की स्थिति को लेकर परिवर्तन की अवधारणा है, जिससे आज का भारतीय नारी-विमर्श भी प्रभावित हुआ है और सृजनात्मक लेखन में उसकी हलचल है, फिर भी सौ वर्ष पूर्व के भारतीय समाज में और आज भी 'कानून' की अपेक्षा मातृत्व की पवित्रता से जुड़ा परिवार ही आदर्श है। शारीरिक प्रेम की अनिवार्यता के साथ उसका सांस्कारिक रूप आज भी परिवार का योजक है, क्योंकि माँ का आत्मत्याग उसे परिवार में केन्द्रीय बनाता है और पत्नीत्व भी मातृत्व का अनुगामी है। एक और बिन्दु को विवेकानन्द रेखांकित करते हैं कि पश्चिमी समाज व्यक्तिकेन्द्रित है और व्यक्ति की आकाँक्षा ही उसका प्रेय है। भारतीय जीवन की धुरी परिवार और समाज है। व्यक्तिपरक और समाजपरक आस्थाओं के कारण व्यक्ति स्वैराचारी भी हो जाता है और बन्धनयुक्त भी। दोनों के अपने गुण-दोष हैं, विकास और अस्मिता की दृष्टि से सहकार और उत्तरदायित्व के भाव से। इसीलिए प्रत्येक समाज को किसी एक कानून, एक मर्यादा, एक आदर्श से मूल्यांकित नहीं किया जा सकता। इसीलिए विवेकानन्द जातीय आदर्शों की चर्चा करते हैं। भारत में अपने ही वंश या जाति में विवाह अवैध है, चाहे वे सौ पीढ़ी दूर के ही क्यों न हों, पर अन्य मुल्कों में 'चचेरी-ममेरी' की सीमाएँ भी कमतर होती हैं। विधवा विवाह विवेकानन्द के काल की समस्या थी, वे उसके विरोध में न थे, बल्कि स्त्री-पुरुषों के अनुपात के रूप में इस समस्या का विश्लेषण उस काल में किया है। नारी की पूजा और मातृत्व के सारे भारतीय आदर्शों के बावजूद विवेकानन्द वास्तविक सामाजिक स्थितियों को अनदेखा नहीं करते। नारी और पुरुष की समानता के ऐतिहासिक अस्तित्व के उदाहरण वे वैदिक-पौराणिक समाज से देते हैं। भारतीय वैदिक परम्परा में याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछने वाली वाचक्नवी, वाग्मी कन्या, ब्रह्मवादिनी कहती है - "मेरे प्रश्न एक कुशल धनुर्धर के हाथ में दो चमकदार तीरों के समान हैं।" इसीलिए वे पश्चिमी साहित्य और समाज से सवाल करते हैं - क्या वनों में स्थित हमारे पुरातन विश्वविद्यालयों में लड़के-लड़कियों की समानता से अधिक पूर्ण कुछ और हो सकता है? हमारे संस्कृत नाटकों को पढ़िए, शकुन्तला की कहानी पढ़िये और देखिये कि क्या टेनीसन की प्रिसेन्ज हमें कुछ सिखा सकती है? विवेकानन्द की दृष्टि में पश्चिमी नारी के कन्धों पर कानूनी दृढ़ता से बँधे हुए बहुत से बोझ हैं, जिनका हमारी नारियों को पता नहीं है। निश्चय ही हमारे अपने दोष हैं और अपने अपवाद हैं, पर इसी प्रकार उनके भी हैं। नारियों की वर्तमान स्थिति से विवेकानन्द असन्तुष्ट थे। ऐतिहासिक कारणों से नारी की सहकारिता और केन्द्रीयता प्रभावित हुई है और वह समानता से तिरोहित होकर पुरुष प्रधानता की शिकार हुई है, तो इसका उपाय केवल शिक्षा का प्रचार भर नहीं है। वे मानते हैं कि हमें नारियों को ऐसी स्थिति तक पहुँचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्या को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। वे नारी-शिक्षा में 'रटन्त भाव' को मानसिक विकास के लिए ठीक नहीं मानते बल्कि दक्षतापूर्वक प्रशिक्षण से भारतीय सामाजिक जीवन की आवश्यकता के लिए महान् नारियों - संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीराबाई की परम्पराओं को चालू रख सकें - नारियाँ जो वीरों की माताएँ होने योग्य हों, पवित्र त्यागी और शक्तिशाली। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि सारे आदर्श सिर्फ नारी के लिए हों, पुरुषों के लिए भी वे समान रूप से इन्हें व्यवहार्य मानते हैं। पर विवेकानन्द स्त्री-शिक्षा पर बहुत जोर देते हैं और स्त्री शिक्षा के लिए संघटित प्रयास की कल्पना भी करते हैं - मेरा पहला प्रयत्न स्त्रियों के मठ को स्थापित करने का है। इस मठ से गार्गी और मैत्रेयी और उनसे भी अधिक योग्यता रखने वाली स्त्रियों की उत्पत्ति होगी। वे यह भी मानते हैं कि अपने आदर्श के लिए अपने जीवन की बलि देना - यह क्या कम वीरता है? कुछ महिलाएँ संन्यस्त जीवन के आदर्शों का पालन करने के लिए शिक्षित की जाएँ जिससे कि वे आदर्श कौमार्यव्रत धारण करें। लेकिन इन संन्यासिनियों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के बारे में विवेकानन्द की सोच सौ साल आगे की है। वे लिखते हैं - महिलाओं को विज्ञान एवं अन्य विषय, जिनसे कि केवल उनका ही नहीं, अन्य लोगों का भी हित हो, सिखाये जाएँ। निश्चय ही अध्यात्म के देश में भौतिक-ऐहिक शिक्षा का सोच विवेकानन्द की नयी दृष्टि और भारत को भौतिक रूप से भी समृद्धिशाली बनाने के संकल्प का परिचायक है। सौ साल बाद जब अन्तरिक्ष में उड़ती हुई भारतीय विज्ञान-परियों और सूचना क्रान्ति में अमेरिका की 'सिलिकोन वेली' में परचम लहराते युवाओं को देखते हैं, तो लगता है कि विवेकानन्द का समृद्ध भारत - फौलादी भारत का स्वप्न आकार

ले रहा है। विवेकानन्द मानते हैं कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं के साथ होने वाला व्यवहार। इस दृष्टि से महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक स्थिति, नारी-पुरुष सहचार, न्याय और अभिरक्षा, सांस्कारिक परम्परा और आदर्श, विवाह और तलाक, वैधव्य जीवन और नारी का भरण पोषण, आर्थिक निर्भरता और स्वाधीनता, सामाजिक- राष्ट्रीय जीवन में कर्म की स्वतन्त्रता और पुरुष वर्चस्व के क्षेत्रों में नारी का प्रवेश, यौन और सामाजिक वर्जनाएँ जैसे अनेक विषयों पर विचार करना आवश्यक हो गया है। और सोच का यह विस्तार इसलिए भी प्रासंगिक है क्योंकि विवेकानन्द गतिशील समाज के लिए मानते हैं कि कर्म और अकर्म का निर्णय व्यक्तिगत, देशगत और कालगत परिस्थितियों के अनुसार होना चाहिए। और इसी वैश्विक सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति में नारी की संस्थिति का विमर्श प्रस्तुत करते हैं। इसीलिये सन्यासी होकर भी वे यह मानते हैं कि एकाकी मनुष्य आधा और अपूर्ण होता है। आदर्श स्त्रीत्व का अर्थ पूर्ण स्वाधीनता है। सतीत्व आधुनिक हिन्दू नारी के जीवन की केन्द्रीय भावना है। पत्नी एक वृत्त केन्द्र है, जिसका स्थायित्व उसके सतीत्व पर निर्भर है। यहाँ सतीत्व का आशय केवल यौन-पवित्रता और पति के साथ अनन्यभाव मात्र नहीं है, बल्कि वे सारे लक्षण हैं जो परिवार में जीवन-रस की सृष्टि करते हैं। यह एक तरह का आत्मदान है, जिसे नारी का तैंतीसवा गुण 'सौभाग्य' कहा जाता है। कुमारसम्भव में शिव ब्रह्मचारी बनकर पार्वती की तपस्या की परीक्षा लेने आते हैं, तपस्या की अग्नि में 'काम' के जलकर राख हो जाने और पार्वती के पवित्र नारीभाव को देखकर वे कहते हैं - "क्रीतोस्मि दासः।" मैं तुम्हारा खरीदा हुआ गुलाम हूँ। यह यौनभाव, यह कामभाव जला नहीं है, संस्कारित हुआ है, वासनाएँ संस्कारित होकर कार्तिकेय और गणपति जैसी सन्ततियों से परिवार को पुष्ट करती हैं। काम के जैविक रूप का निषेध नहीं, बल्कि काम के सहभाव के साथ मनुष्यता की उज्ज्वल परम्परा का विकास। यह नारी का सतीत्व है। इसे आध्यात्मिक और धार्मिक भी कहा जा सकता है, पर विवेकानन्द इन संस्कारों की विशिष्टता के साथ नारी के बौद्धिक विकास के हिमायती हैं और नारी के आदर्श रूप के भी। नारी के इस आदर्श रूप के साथ विवेकानन्द ने नारी की वास्तविक स्थितियों का संज्ञान लिया है। वे पतिताओं के साथ होने वाले अत्याचारों और जातीय बहिष्कारों को समझाते हैं, पर पश्चिमी समाज की तरह व्यभिचार को जातीय स्वीकृति नहीं दे पाते, जो विलासिता की परिणति है। वे इस व्यभिचार की शिकार हुई स्त्रियों के लिए पुनरुद्धार की वकालत करते हैं - सभी धर्म प्रचारकों के लिए एक बहुत बड़ा क्षेत्र है, यदि वे भारत की वेश्याओं को परिवर्तित कर सकें। निश्चय ही नारी विमर्श की पश्चिमी और भारतीय परिस्थितियां और अवधारणाएँ भिन्न हैं। आज भारतीय समाज में भी व्यापक परिवर्तन हुए हैं। जे.एस. मिल और सिमोन द बोडवा जैसे पश्चिमी नारी-विमर्शकों की अवधारणाओं का प्रभाव भारतीय लेखन पर भी हुआ है। परन्तु सौ वर्ष पूर्व विवेकानन्द ने नारियों के आदर्श, भारतीय समाज मातृसत्ता, पुरुष और नारी की समानता, देशीय परिस्थितियों के अनुरूप आदर्शों का विकास, पतित और विधवा स्त्रियों की चिन्ता और उनके पुनरुद्धार, नारी-शिक्षा और आधुनिकता जैसे विषयों पर व्यापक विचार ही नहीं किया है, सामाजिक स्थितियों में बदलाव और नारी की समतामूलक पूज्य सत्ता के लिए भी क्रियापरक सन्देश दिया है। आधुनिक विश्व की उनकी परिकल्पना जब आज के वैश्वीकरण में घटित हो रही है तब उनका यह कथन अत्यन्त प्रासंगिक है - सम्भवतः भविष्य में पूर्व और पश्चिम का समन्वय होने को है, एक ऐसा समन्वय जिसके परिणाम अद्‌भुत होंगे। पश्चिमी राष्ट्रों की प्रकृति को प्रशंसा का पात्र बनाने वाला उनका एक गुण है और वह है स्त्रियों के प्रति अत्यन्त आदर भाव और उनके साथ सहृदयतापूर्ण व्यवहार।

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय माधव विज्ञान महाविद्यालय, उज्जैन
निवास : 25, स्टेट बैंक कॉलोनी
देवास रोड, उज्जैन, मध्य प्रदेश-456010 , मो. 0 94250-83335

संदर्भ

1 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 4), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 317
2 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 1), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 317
3 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 1), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 308
4 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 7), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 53
5 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 1), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 311
6 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 1), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 317
7 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 1), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 311
8 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 4), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 267
9 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 4), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 267
10 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 4), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 268
11 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 4), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 267
12 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 4), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 268-69
13 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 4), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 317
14 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 8), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 278
15 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 1), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 324
16 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 4), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 317
17 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 1), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 324
18 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 1), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 325
19 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 8), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 299
20 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 8), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 300
21 विवेकानन्द साहित्य (खण्ड 8), अद्वैत आश्रम कलकत्ता, पृ. 296

शोध लेख

समकालीन हिंदी कविता : एक विमर्श

◆ मुकेश कुमार

साहित्य समय और समाज की कसौटी होता है। समाज में समय के साथ-साथ हो रहे बदलाव व परिवर्तन को देखना व परखना साहित्य का लक्ष्य रहता है। क्योंकि साहित्य वस्तुतः मानव हित का सम्पूर्ण वेज है। मानव मूल्यों व कल्याण का पक्षधर साहित्य ही होता है जिसका सीधा सम्बन्ध मनुष्य जीवन से रहता है। लोकगीतों से शुरू होकर आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल के विभिन्न परिवेशों से गुजरकर आधुनिक काल तक पहुँच गयी हिन्दी कविता अपनी विकास यात्रा की विविध मंजिलों को तय करके इक्कीसवीं शताब्दी तक आ गई। इस लम्बी विकास यात्रा के दौरान हिन्दी कविता स्थल और काल के परिवेश के अनुकूल नूतन प्रवृत्तियों को आत्मसात कर कई आन्दोलनों से होकर गुजरी है। प्रचलित प्रवृत्तियों से भिन्न प्रवृत्तियाँ जब काव्यक्षेत्र में घर कर लेती हैं तथा कविता उनके अनुकूल परिभाषित होती है तभी तो नये काव्यान्दोलनों का प्रादुर्भाव होता है। इन काव्यान्दोलनों ने समय-समय पर कविता की संवेदना और संरचना में परिवर्तन और परिवर्द्धन उपस्थित कर दिये हैं। जब साहित्य में नवीन उपलब्धियों व प्रवृत्तियों का जन्म होता है तो साहित्य में जब भिन्न प्रवृत्तियाँ प्रवेश पाती है तो नये साहित्य व नये काल का उद्ध व विकास होता है। अतः कोई भी साहित्य अपने पूर्ववर्ती साहित्य से सामाजिक बदलाव, राजनीतिक उलटफेर, धार्मिक प्रतिक्रिया और सांस्कृतिक परिवेश व परम्परा के कारण भिन्न, परिवर्तित और नवीन होता है। बदलता हुआ परिवेश समाज की विभिन्न समस्याओं, स्थितियों, विषमताओं, चुनौतियों और प्रतिकूलताओं को अपने समय का जीवंत बिम्ब बनाने में सक्षम रहता है, जोकि 'साहित्य समाज और समय का दर्पण है', की अधारणा को सार्थक, उपयोगी और प्रासंगिक बनाता है। यद्यपि बदलाव प्रकृति और जीवन का रूढ़ नियम है। बदलाव व परिवर्तन है तो सृष्टि-सृजन का उत्थान व विकास संभव है। यथा बदलाव ही साहित्य में नये-नये आयाम विकसित करता है और उसे समकालीन जीवन शैली के साथ जोड़ने का भरसक प्रयास करता है। साहित्य की खास प्रवृत्तियाँ व उपलब्धियाँ जब चरमोत्कर्ष स्थान पर आसीन हो जाती हैं तो उसका ह्रास होना शुरू हो जाता है। ह्रास और काल परिवर्तन के साथ-साथ जो प्रतिक्रिया साहित्य के आन्तरिक संरचना व बाह्य परिवेश के साथ होती है वह नवीन साहित्योपलब्धी व नवीनता का प्रयोग व प्रतीक होती है। जब एक काल-विशेष की प्रवृत्ति दूसरे काल-विशेष की प्रवृत्तियों से सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से अलग व पृथक होती है तो निश्चित रुप से साहित्य के विचार, भाव, भाषा और कला आदि के क्षेत्र व पक्ष में परिवर्तन और बदलाव आता है। अतः कोई भी साहित्य समय व समाज-निरपेक्ष नहीं हो सकता है क्योंकि साहित्य अपने समय व समाज दोनों से जुड़ा हुआ होता है जिसके कारण वह समकालीन का दिग्दर्शन करवाता है अर्थात् अपने समय व समाज के साथ आज के परिवेश और कालखण्ड की तुलना करता है।

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य अनेक युगों व कालखण्डों में विभाजित है जैसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता। आधुनिक काल का आविर्भाव समय और समाज की परिस्थितियों और राजनीतिक कारणों से हुआ। देश की अस्मिता और राजनीति दो बड़े कारण बने जिससे सामाजिक ढांचा बिलकुल परिवर्तित हो गया। भारतेंदु युग एक तरफ तो पूर्ववर्ती साहित्य का अनुगमन कर रहा था और दूसरी ओर से नवीनता का आग्रह कर रहा था। प्राचीनता और नवीनता, राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति इस युग की चुनिंदा प्रवृत्ति थी। इसके बाद द्विवेदी युग का सूत्रपात हुआ। द्विवेदी युग समाज सुधार, विषयनिष्ठता, इतिवृत्तात्मकता और भाषा एवं व्याकरण को अपना सर्वस्व मानता था। इसी युग की इतिवृत्तात्मक प्रवृत्ति ने आगे चलकर छायावादी कविता को विकसित व पल्लवित किया। अब जीवन कल्पना-लोक में विचरित होने लगा। प्रकृति, नारी, मानवतावाद और करुणा कविता का विषय बनने लगे। अतः छायावादी कविता मानव अनुभूतियों से अवश्य जुड़ी लेकिन जीवन के विविध पक्षों से नहीं जुड़ पाई। समाज का जो निम्न और उपेक्षित वर्ग था वह इससे अछूता रह गया। समाज के इसी वर्ग को प्रतिष्ठित करने के लिए प्रगतिवादी कविता ने जन्म लिया और कार्ल मार्क्स के समाजवाद का समर्थन करके समाज के हर तबके को उसकी मूलभूत सुविधाओं व आवश्यकताओं के प्रति सचेत व जागरुक किया। जोकि समय की मांग थी। स्वाधीनता का प्रश्न

उस समय सबसे बड़ा प्रश्न था। भारतीय राजनीति और सरकार की योजनाएँ फीकी पड़ने लगीं। प्रगतिवादियों ने समाज को प्रमुखता दी और कार्ल मार्क्स के समाजवाद द्वारा समाज को संचालित संबोधित करना शुरू कर दिया। इसके बाद साहित्य में प्रयोगवाद आया। सामाजिकता को छोड़ कर अब व्यक्ति को प्रधानता दी गई। अब नये-नये प्रयोग कविता में होने लगे जिसका मुख्य श्रेय अज्ञेय को जाता है। क्योंकि उन्होंने तारसप्तक द्वारा ही प्रयोगवाद की स्थापना की। प्रयोगवाद अधिक समय तक नहीं चल सका। जिसका एक कारण है- कविता का अधिक प्रयोगधर्मी होना। इसके बाद नयी कविता ने जन्म लिया जोकि अपने पूर्ववर्ती साहित्य से कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से अलग थी। अब कविता में समाज सापेक्षता और सरकार की नीतियों के प्रति मोहभंग की स्थिति पैदा हुई और कविता अधिक सपाटबयानी पर उतर आई। नयी कविता के साथ-साथ कविता में अनेक वादों और आन्दोलनों ने जन्म लिया जिससे कविता में थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद कविता का अस्तित्व और स्वरुप बदलता रहा। क्योंकि नयी कविता में व्याप्त संशय, नग्न यथार्थ, राजनीतिक व सांस्कृतिक व्यंग्य, संत्रास, घुटन, दुख, अनास्था, अजनबीपन और निराशा का स्थान अब समकालीन कविता में समाजिकता के विस्तृत व व्यापक संदर्भों में होने लगा। उसका स्वरूप और ढांचा दोनों ही बदल गए। क्योंकि 'नयी कविता जहाँ संशय, कुण्ठा, अनास्था, भटकन और आत्मसाक्षात्कार को केंद्र में रखकर चल रही थी, वहाँ समकालीन कविता सबल जनहितैषी तत्वों का विश्लेषण और जनवादी चेतना का प्रतिपादन करती हुई सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जन-सामान्य के प्रति पक्षधरता लेकर चली है।' सांस्कृतिक मूल्य-विघटन पर अज्ञेय की सांप कविता द्रष्टव्य है-

"सांप तुम सभ्य तो हुए नहीं
शहर में बसना भी तुम्हें नहीं आया
एक बात पूछूँ?/ सच-सच बतलाना
कहाँ सीखा डंसना विष कहाँ पाया?"

'समकालीन कविता की आन्तरिकता और स्वरूप जानने के लिए सबसे पहले 'समकालीन' शब्द का अर्थ और आवधारणा जानना आवश्यक है। अतः 'समकालीन' शब्द के लिए अंग्रेजी में (Contemporary) कंटेम्परारी शब्द का प्रयोग होता है। जिसका अर्थ है- 'इसी समय का', 'आधुनिक', 'वर्तमानकालिक।' साहित्य में समकालीन शब्द का आशय मुख्य रूप से अपने समय और समाज के उस परिवेश और युग से है जिसमें वह रहता है, जीवन यापन करता है और समाज के साथ उठता-बैठता है। अतः अपने समय और समाज के जीवित परिदृश्य की पहचान और परख ही समकालीन कविता की कसौटी है। जिस समय या काल-विशेष में वह रहा है उस समय और काल-विशेष की परिस्थितियों, चुनौतियों, विषमताओं और उपयोगिताओं आदि को खोजना-खंगालना अथवा समझना ही साहित्य में समकालीनता के प्रश्न को दृढ़ और सार्थक बनाना है। निश्चित सीमाओं के भीतर हर एक वह साहित्य समकालीन है जो अपने समाज के साथ जुड़ा हुआ है और समाज के विभिन्न पहलुओं व पक्षों की हर संभव वकालता करता है। अतः जिसमें मानव जीवन-मूल्यों को भी प्रश्रय मिले और सामाजिक क्षेत्र को भी प्रधानता मिले। चाहे वह धर्म हो, नारी हो, परिवार हो, सांस्कृतिक मूल्य हो, व्यक्ति हो, परंपरा या नवीनता हो, परिवेश-विशेष हो, समानता व अधिकार हो, मूलभूत सुविधाएं व आवश्यकताएं हों या समाज की कोई भी ऐसी समस्या हो जो प्रत्यक्ष या अपरोक्ष रुप से मानव जीवन और उसकी कार्यशैली को प्रभावित करती है। समय के साथ-साथ समाज की परिस्थितियों, समस्याओं और बदलाव की भिन्न-भिन्न स्थितियों को समझने व परखने की कला ही समकालीनता है। समकालीन कविता मोहभंग और रसभंग के आगे मौजूदा हालातों में आदमी की भयावह ट्रेजेडी की कविता है और जड़ व्यवस्था का ध्वंस तथा सही मूल्यों की तलाश उसका साध्य है। आदमी और समाज के ईर्दगिर्द होने वाली तमाम घटनाओं, हलचलों और कार्यों के प्रति निगरानी और व्यवस्था में खामियों को दूर करके मानव मूल्यों व अस्मिता की सही तलाश करना समकालीन हिन्दी कविता का दायित्व व ध्येय है। ताकि मानव भी सुरक्षित रहे और समाज के साथ उसका सम्बन्ध भी बरकरार रह सके। सामाजिक ढांचा और राजनीतिक स्वरूप दोनों ही समाज को आगे बढ़ाने का काम करते हैं, लेकिन अगर मनुष्य अपने आप को समाज के ढांचे में खुद को व्यवस्थित नहीं पाता है तो वह समाज में फैले भ्रष्ट नुमाइंदों के खिलाफ हो जाता है। उसके विरुद्ध आक्रोश और विद्रोह की भावना पैदा होने लगती है। अतः राजनीति के भ्रष्ट रुप को वह बेनकाब करता है। उसकी तमाम खोखली नीतियों, आश्वासनों, चापलूसी हरकतों के प्रति समाज को सचेत करता है। समकालीन कविता अपने समाज और राजनीति के प्रति बहुत आश्वस्त कविता है।

समकालीनता को स्पष्ट करने के लिए 'आधुनिक' शब्द का प्रयोग होता है। क्योंकि जो आज के समय का है वह निश्चित रुप से आधुनिक होगा और जो आधुनिक है उसमें समकालीनता या अपने समय की टकराहट और बुनावट अवश्य होगी। आधुनिक शब्द अपने विस्तृत अर्थ में 'बिलकुल अभी का' के संदर्भ को संकेतित और संबोधित करता है। कोई भी साहित्य आधुनिक नहीं होता है। क्योंकि जो अभी नया या आधुनिक है वह कुछ समय व अंतराल के बाद अतीत का एक हिस्सा बन जाता है। इसलिए साहित्य अथवा कविता आधुनिक की अपेक्षा समकालीन अधिक होता है। अपने काल-विशेष और सामान्य जनता की अभिरुचि व वातावरण को पहचानने की कला ही समकालीन कविता की परिचायक है। उक्त कथन भी इसी आशय का स्पष्टीकरण है- "अपने समय की प्रवृत्तियों को पहचानने, व्यक्ति और समाज की

विषम स्थितियों को समझने और गहरी संवेदनशीलता के साथ युग चेतना से सम्पृक्त होने का पर्याय समकालीनता है।"

सुदामा पांडे धूमिल ने समकालीन कविता में राजनीतिक एवं सामाजिक संदर्भों को चिन्हित किया है। 'कल सुनना मुझे' की भूमिका के साथ जोड़ दी गई भाषा की रात में धूमिल की भूमिका से, उन्हीं के शब्दों में "समकालीनता क्या है? -रूप-रंग और अर्थ के स्तर पर आजाद रहने की, सामने बैठे आदमी की गिरफ्त में न आने की तड़प, एक आवश्यक और समझदार इच्छा, जो आदमी को आदमी से जोड़ती है, मगर आदमी को आदमी की जेब में या जूते में नहीं डालती है। स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा और उसके लिए पहल तथा उस पहल के समर्थन में लिखा गया साहित्य ही समकालीन साहित्य है।" अतः जो साहित्य मानव जीवन का समर्थन व समर्थक हैं वह निश्चित रूप से आदरणीय एवं विवेच्य है। मानव जीवन विविध संदर्भों व चुनौतियों का जीवन है लेकिन इन समस्याओं और चुनौतियों के बावजूद उसमें मानव जीवन की पहल करना और मानव जीवन को श्रेष्ठ मानना समकालीन कविता की एक खास विशेषता है। समकालीन कविता राजनीति विरोधी नहीं है बल्कि ऐसी राजनीति को लताड़ती और फटकारती है जो मानव जीवन के खिलाफ कार्य व्यवहार करती है। तभी तो धूमिल लिखते हैं -

"अपने यहाँ संसद/ तेली की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है/ आधा पानी है।"

समकालीन कविता की जब बात होती है तो उसके साथ समय की और परिवेश की बात अक्सर होती है। इस समय और परिवेश को समझने-परखने व खोजने की वकालत समकालीन कविता करती है। चाहे वह राजनीतिक हो या सामाजिक हो या साम्प्रदायिक-धार्मिक हो। "समकालीन कविता में जो काल-सापेक्ष पक्ष है वह सामान्य तद् युगीनता को द्योतित करने हेतु नहीं है। जिस ऐतिहासिक विवेक के साथ समय और परिवेश को समझने का कार्य समकालीन कवि करता है उसमें उसका नियामक पक्ष सही काल का संस्थापन है।" अतः अपने परिवेश को जानना व समझना और युगीन वातावरण की समस्त कार्यप्रणाली को जांचना, जिससे मानव जीवन प्रभावित हो रहा है, समकालीन हिन्दी कविता का साध्य है। अर्थात् अपने समय की सभी समस्याओं व उपलब्धियों को मानव हित का साधन बनाना ही समकालीन कविता का लक्ष्य है। ज्वलंत और प्रासंगिक समस्याओं से जुड़ी हुई समकालीन कविता आम आदमी की रोजमर्रा की जरूरतों और सत्ता या शोषकों के छद्म को उजागर करने वाली कविता है। समकालीन कविता में अपने समाज के प्रति जितना लगाव है उतना आक्रोश भी है। लगाव इसलिए है कि वह समाज का एक अंग है और आक्रोश इसलिए है कि वह समाज के अंदर होने वाली हरकतों से तंग है, परेशान है, बेचैन है। राजनीति जहाँ समाज का आधार और विकास का आयाम थी वह अब भ्रष्ट होने लगी। उसमें अब ऐसे लोगों ने प्रवेश कर लिया जो अपनी जेबों को भरने के सिवाय और कुछ नहीं करते हैं। शायद यही कारण है कि विश्वम्भरनाथ उपाध्याय ने समकालीन कविता को 'अघात और विस्फोट' एवं 'आक्रमण और अनावरण' की कविता कहा है। क्योंकि इसमें राजनीति के प्रति भी आक्रोश एवं विद्रोह है और समाज के प्रति तटस्थता एवं निष्पक्षता भी है। समकालीन कविता में भूमंडलीकरण, बाजारीकरण और उपयोगितावाद के साथ-साथ औद्योगीकरण की जो आक्रामकता समाज पर पड़ी है उससे मानव जीवन आंतरिक व बाह्य दोनों स्तरों में बड़े पैमाने पर प्रभावित हुआ है। विज्ञान और विज्ञापनों की दुनिया ने हमारे जीवन को एकाकी और अजनबी बना दिया है। पाश्चात्य फैशनपरस्ती ने जिस तरह से आज की युवा पीढ़ी को जकड़ा है उससे निकलना बहुत खतरनाक हो गया है। अब जीवन में असुरक्षा ज्यादा और विश्वास व सुरक्षा कम देखने को मिलता है। इसका बड़ा कारण है विज्ञान की नयी-नयी खोज व तरक्की। यद्यपि विकास उस सीमा तक ही होना चाहिए जहाँ तक मानव जीवन सुरक्षित रहे, उसकी सभ्यता व संस्कृति जीवित रहे। लेकिन ऐसा वास्तव में नहीं है। विकास की अपनी अलग दौड़ है और मानवीय मूल्यों, संस्कृति-सभ्यता, आदर्श, परंपरा और आधुनिकता की अपनी जमीन है। दोनों अलग-अलग दिशाओं में अलग-अलग दशा और उपलब्धियों का संकेत और तरक्की का सबूत है। विकास समाजोत्थान व उन्नति का आधारभूत स्तम्भ है लेकिन उसके परिणाम उपलब्धियों में गिनाने लायक नहीं है बल्कि उसके सामने चुनौतियाँ अधिक है। "भूमंडलीकरण, मुक्त बाजार और संचार तंत्र में फैली सनसनी और आक्रामकता के सारे ताने-बाने को समझने-बूझने और बेधने की कोशिश में ही आज की कविता की समकालीनता को तलाशा जाना चाहिए।" साहित्य के विकसित होने के लिए उसके परिवेश और युग में परिवर्तन होना अति आवश्यक होता है। इस परिवर्तन के पीछे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारण मुख्य होते हैं। जिसके ढांचे में बदलाव होने के कारण साहित्य अपनी नयी दिशा और गति प्राप्त करता है। इसी दिशा और गति से गुजरकर समकालीन अपने यथार्थ से जुड़कर समकालीनता की प्रासंगिकता को ठोस और मजबूत करता है। यथा रोहिताश्व लिखते हैं - "समकालीन हिन्दी कविता यथार्थ के धरातल पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में आत्मचेतस व्यक्ति की भाषागत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है, जो जीवन संघर्ष में विभिन्न रागात्मक बोधों व मानव मूल्यों, मानवाधिकारों के सृजनात्मक पक्ष की पहल ही नहीं करती, बल्कि प्रतिबद्ध रूप से सामाजिक विकास के वर्ग विहीन सौन्दर्यात्मक संसार की रचनात्मक पक्षधर भी है।" उक्त कथन का सीधा-साधा मतलब है कि कविता में अथवा समाज में कोई

भी ऐसा पक्ष या समुदाय न हो जो वर्गों के आधार पर आशंकित और उपेक्षणीय रहता हो। मानव मूल्य और उसकी सृजनधर्मिता कायम रखना समकालीन कविता का आधार है। ऐसा नहीं होना चाहिए कि समाज का कोई पक्ष राजनीति का शिकार होकर संघर्ष करता दिखे। बल्कि सभी को समान अधिकार होने चाहिए ताकि वह अपने जीवन को बड़ी सहजता के साथ बिता सके। लेकिन स्थिति ठीक इसके विपरीत है। आज भी संघर्ष करते आदमी को इंसाफ नहीं मिल पाता है और इसका सबसे बड़ा कारण है हमारी सरकारी व्यवस्था का भ्रष्ट होना, न्याय का सत्ताधीशों के अधीन होना।

साहित्य में आधुनिकता-बोध नयी दिशाओं व प्रवृत्तियों को लेकर विकसित और आविर्भूत होता है। कविता में आधुनिकता बोध नयी सोच और नयी खोज का परिणाम व उपलब्धि है। भूमंडलीकरण, बाजारीकरण और उपयोगितावादी समाज ने समय और लोगों की समझ को नया आयाम, नया परिवेश और नया परिप्रेक्ष्य दिया जिससे आधुनिकता बोध के सूत्र कविता के स्वरुप को परिवर्तित करने के लिए कारगर साबित हुए। कविता में अब तनाव, घुटन, संत्रास और मानसिक अंतर्द्वंद्व नहीं रह गया था बल्कि कविता ने अब अपना रास्ता थोड़ा सा अलग कर दिया था। समकालीन कविता मानवीय मूल्यों की पक्षधर रही है। मानव जीवन की संस्कृति, संस्कार, संयुक्त परिवार आदि को जीवित और उजागर करना कविता का मुख्य ध्येय बन गया। सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों से जुड़कर कवि ने अपने समय की तमाम परिस्थितियों और समस्याओं को कविता के माध्यम से पेश किया। नवीन उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया चाहे वह व्यक्ति से सम्बन्धित हों या सीधे समाज से। आक्रोश और विद्रोह समकालीन कविता की अन्य मुख्य प्रवृत्ति रही है। सरकार की नीतियों और भाषणबाजी के झूठे व बेबुनियादी आश्वासनों से अभिशप्त लोगों का सरकार से मोहभंग हो गया और उसने उसके खिलाफ आक्रोश व विद्रोह के द्वारा अपने हक और मर्यादा की लड़ाई लड़ी। यह विद्रोह गलत व्यवस्था, भ्रष्ट प्रशासन के मूल रुप को उखाड़ फेंकने के लिए एक पहल थी जोकि अपनी उम्मीदों पर खरी भी उतरी। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर यह विरोध व आक्रोश दिखाई देता है। वस्तुतः यह आक्रोश व विद्रोह साठ के दशक के बाद की कविताओं का मुख्य केन्द्रबिंदु रहा है, क्योंकि 'साठोत्तरी कविता साहस, क्षोभ, उत्तेजना, आक्रोश और बेपर्दगी अभिव्यक्ति की कविता है। इसी बेपदर्गी के कारण उसमें आया आक्रोश गहरे तनाव और संकट-क्षण को निरूपित करता है।" यह आक्रोश और विद्रोह यूँ ही नहीं हुआ बल्कि इसके पीछे खासकर राजनीति की झूठी और बेबुनियादी शक्लें छिपी हुई थीं। इन नकाबपोशों की असलियत को लोगों के सामने लाने के लिए समकालीन कवि ने विरोध ही नहीं किया बल्कि आक्रोश और तेज तर्रार क्षोभ भी व्यक्त किया जिससे वस्तुतः दूध का दूध और पानी का पानी हो गया।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज से अलगाव करके नहीं रह सकता है। समाज ही व्यक्ति की सभी आवश्यकताओं और जरूरतों को पूरा करता है। समाज और व्यक्ति का सम्बन्ध सबसे घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। एक दूसरे बिना और दूसरा पहले के बिना नहीं रह सकता। दोनों ही अपनी जरूरतों और आपसी अंतर्संबंधों के कारण एक दूसरे से घुले-मिले हैं। कवि समाज में हो रही घटनाओं के प्रति सचेत और आश्वस्त है। उसकी नजर बहुत तेज है क्योंकि समाज में हो रही हर घटना पर वह सम्वाद और टीका-टिप्पणी करता है। समाज मानव जीवन को प्रभावित और विकसित करता है। समकालीन कविता भी समाज के अस्तित्व को जीवित रखना चाहती है। व्यक्ति और समाज के अंतर्संबंधों को व्यवस्थित ढंग से सहेजना समकालीन कविता की अपनी पहचान है। समाज में व्यक्ति की क्या पहचान और अस्तित्व है? समकालीन कविता इसकी छानबीन करती है। समकालीन कवि अपनी जिजीविषामूलक आस्था को वर्तमान जीवन की घुटन, पीड़ा, संत्रम और बेचैनी के संदर्भ में व्यक्त करता है। जैसे डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय कहते हैं कि- "समकालीन कविता अपने समय के मुख्य अंतर्विरोधों और द्वंदो की कविता है इसे पढ़कर वर्तमान काल का बोध हो सकता है क्योंकि उसमें जीते, संघर्ष करते, लड़ते, बौखलाते, तड़पते, गरजते तथा ठोकर खाकर वास्तविक आदमी का परिदृश्य है।"

आज का दौर वैज्ञानिकता का दौर है जिसमें जीकर आदमी खुद को बैचेन, पीड़ित, अकेला और तनावपूर्ण पाता है। क्योंकि वह मशीनीकरण के इस जाल में ऐसा फंस चुका है कि वह खुद यांत्रिक हो गया है लेकिन उसमें अभी भी विश्वास और उम्मीद है कि वह एक खुली जिन्दगी जी सकता है। उसमें आत्मविश्वास है। बेशक वह राजनीति के पैंतरों से संघर्ष करता है लेकिन उसकी आस्था उसके विश्वास का सुदृढ़ आधार है। वह वैज्ञानिक युग के बाहर कदम रख सकता है और अपना जीवन देहातों की ठंडी हवाओं में जी सकता है। उसका दृष्टिकोण निराशावादी और स्वरूप खामोश है। वह बेहाली का जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं है बल्कि उसके पास जीवन जीने के साधन उतने नहीं है जिससे कि वह अपने आप में सक्षम बन सके। समकालीन कविता में महानगरीय बोध का विस्तृत विवेचन-विश्लेषण हुआ है। शहर अपने विकसित ढांचे के लिए जाना जाता है। बड़े-बड़े पांच सितारा रेस्टारेंट, बड़ी-बड़ी सड़के, देह-व्यापार, अकेलापन, अजनबियन, कुण्ठा, भुखमरी और बेकारी आदि सभी संकेत नगरों के रहन-सहन और प्रकृति के नियम है। अपराधिक समस्या, भाई-भतीजावाद, एकल परिवार से लिविंग रिलेशनशिप तक हम बढ़ रहें हैं जोकि कहीं न कहीं जुर्म और नयी-नयी समस्याओं को पैदा करता है।

खासकर सड़कों पर भीख मांगते बच्चे अपने आने वाले कल को किस तरह से संवारते और नष्ट करते हैं, इसका बड़ा कारण है हमारी व्यवस्था में खामियां होना। यथा :

"कभी कभी वे एक स्वप्न भी देखते हैं
जिसे हमारे समय की रंगीन आपराधिक फिल्मों ने
रचा है उनके दिमाग में
जिस पर उनका भरोसा है कि उस तरह एक दिन
बदल जाएगा उनका भी जीवन।"

संयुक्त परिवार- विघटन आज के समय की एक त्रासदपूर्ण समस्या है। पहले व्यक्ति को अधिक से अधिक समाज और लोग जानते-पहचानते थे लेकिन आज के इस पारिवारिक-विघटन की स्थिति में हमें हमारा पड़ोसी भी नाम से नहीं जानता है। इसका कारण है समाज से व्यक्ति का अलगाव व बिखराव। आज जिस तरह से हमारी युवा पीढ़ी लिविंग रिलेशनशिप में आ रही है वह निश्चित रुप से चिंतनीय व भयानक विषय है। हमारी संस्कृति और संस्कार तो ऐसे नहीं थे लेकिन फिर भी यह सब समाज में खुलेआम होता रहता है। कहाँ कभी एक साथ परिवार के सारे सदस्य रहते थे, जिनका खाना एक छत के नीचे बनता था और कहाँ आज हम एकल परिवार के ढर्रे पर आ गये हैं। एकल परिवार को पीछे छोड़ अब सिर्फ दो आदमी बिना सामाजिक स्वीकृति के एक साथ रहते हैं जिसे हम आज के संदर्भ में 'लिविंग रिलेशनशिप' कहते हैं। इसमें सेक्स, अकेलापन, तनाव, कुण्ठा, पीड़ा और अपराध जैसी भावना को पनपने में छूट मिलती है जिससे समाज का बहुत बड़ा तबका आज अजनवी जिंदगी जीने के लिए मजबूर हो रहा है। इसका मुख्य कारण है महानगरीय बोध और विदेशी संस्कृति को ग्रहण करना। कविता की पंक्तियों से स्पष्ट है कि आज का कवि और कविता, जिसे हम समकालीन कविता कहते हैं, इस विषय में सचेत है और वह संयुक्त परिवार की ही वकालत करता है। क्योंकि -

"टूटने के क्रम में टूट चुका है बहुत कुछ, बहुत कुछ
अब इस घर में रहते हैं ईन मीन तीन जन
निकलना हो कहीं तो सब निकलते हैं एक साथ
घर सूना छोड़कर
यह छोटा सा एकल परिवार
कोई एक बाहर चला जाये तो दूसरों को
काटने को दौड़ता है घर।"

समकालीन कविता की अन्तर्वस्तु आज के रोजमर्रा जीवन की विसंगतियों को विचार और तर्क की पद्धति से जांचने में विश्वास रखती है। मानवीय मूल्यों का शोषण, अत्याचार और नारी वर्ग की हिंसा समकालीन कविता में सामाजिक और राजनीतिक जागरुकता की परिचायक है। वीरेंद्र सिंह ने 'समकालीन कविता : सम्प्रेषण विचार : आत्मकथा' में भी कहा है कि- 'समकालीन कविता एक तरफ उस मनुष्य के जीवन संघर्ष को कविता के विषय बनाती है, तो दूसरी तरफ उस विषमता को तथा उस पर कठोर यातना भरी परिस्थितियों में ढकेलने वाली क्रूर व्यवस्था को बेनकाब करती है। यथार्थ की अंदरूनी परतें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों से जुड़ी होती है।'

समकालीन कविता की एक अन्य प्रवृत्ति मोहभंग भी है। समकालीन कविता समाज की मृत मान्यताओं, जीर्ण-शीर्ण परंपराओं को स्वीकार नहीं करती है। मोहभंग की स्थिति के पीछे चीन के आक्रमण, ताशकंद समझौता, तत्कालीन सरकार की निष्क्रियता, जड़ता, राजनीतिक अव्यवस्था, भ्रष्टाचार, फरेबी आश्वासन, मंहगाई, बेरोजगारी, भुखमरी साम्प्रदायिकता, जातिवाद और प्रशासन की उदासीनता आदि कारण थे। अतः "सन साठ के बाद के वर्षों में त्रासद स्थितियां उभरती गईं। देश के नेता व प्रशासन लापरवाही से नींद में ऊंघते रहे। कुर्सी की लड़ाई-उखाड़-पछाड़ चलती रही। शोषक अपने पेट के आयतन बढ़ाते रहे, बड़े-बड़े पूंजीपतियों के कुर्ते के घेर बोरी बन गए और मदांध और सत्ता लोलुप अपनी गति से चलते रहे। संवेदनशील कवि और बुद्धिजीवी ने उक्त स्थितियों को बखूबी देखा।" राजनीति ने जो व्यक्ति को आत्मकेंद्रित बना दिया है उससे बाहर भी एक जीवन है जिसमें रहकर व्यक्ति अपने मुताबिक जीवन यापन कर सकता है। भागदौड़ भरी इस बैचेन परिवेश से वह ऊब चुका है और खुद को वह समय के प्रतिकूल पाता है। अतः जीवन के विभिन्न आयामों और क्षेत्रों का स्पर्श करके उसे पूर्णतः रागात्मक बनाना समकालीन कविता का एक अन्य महत्वपूर्ण अंग है।

समकालीन कविता की दशा और दिशा की अगर बात की जाए तो वह अपने समाज और समय की समस्त चुनौतियों, परिस्थितियों, समस्याओं व विसंगतियों से आंख मिलाये बिना नहीं रह सकती है। समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य में समय के साथ की गई मुठभेड़ समकालीनता की परिचायक है। ए. अरविंदाक्षन की पुस्तक 'समकालीन हिन्दी कविता' के फ्लैप पर डॉ. प्रेमशंकर ने टिप्पणी की है कि- "जो कुछ लिखा जा रहा है, वह सब समकालीन नहीं है। समकालीनता एक जीवन-दृष्टि है जहाँ कविता अपने समय का आकलन करती है- तर्क और संवेदना की सम्मिलित भूमि पर। यह एक प्रकार से मुठभेड़ है, सर्जनात्मक धरातल पर, जहाँ वस्तुओं के प्रचलित नाम, अर्थ बदल जाते हैं। जीवन को एक नया विन्यास मिलता है कविता में। और यह सब होता है, एक नए मुहावरे में, जिसकी पहचान का कार्य सरल नहीं होता।" समकालीनता अपने विविध आयामों को खोजती-खंगालती है। कविता की समकालीनता का एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह कविता में सदैव प्रति संस्कृति की ऊर्जा सृजनशीलता को प्रेरित करती रहती है। समकालीन कविता अपने समय के प्रति उदासीन या निराशावादी नहीं है बल्कि वह सचेत समय व समाज की सचेत

और जागरुक अभिव्यक्ति है। समय की पकड़ और समाज की हलचलों को वह यथारूप सूचित एवं प्रेषित करती रहती है। यथा : "कविता का समकालीन होना उसके बाह्य एवं आंतरिक विकास को सूचित करता है। जब कविता अधिकारग्रस्त स्थान-काल-भाषा सम्बंधी संकल्पों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखती है तब उसका समकालीन होना सहज हो जाता है।" आश्चर्य की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व विकास की इस नयी सहस्राब्दी में वैश्वीकरण, उदारीकरण आदि के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति जैसे विषय भी चर्चा के केंद्र में हैं। उत्तर आधुनिकता वर्तमान कविता में हर जगह व्याप्त है। वह कविता का प्राण बन गया है। सपाटबयानी और बेझिझक भाषा ने कविता की समकालीनता को और अधिक बढ़ावा दिया है। केदारनाथ सिंह के 'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' काव्य संकलन की पंक्तियाँ इस बात का स्पष्ट उदाहरण हैं :-

"उत्तर आधुनिक/ या आधुनिक के उत्तर
या पता नहीं क्या/ मेरे कान इन शब्दों से पक गये हैं।"

राजनीति, नारी, वैश्वीकरण, बाजारीकरण, भूमंडलीकरण, प्रकृति, संस्कृति, वैश्विक आंतक, असुरक्षा और सामाजिक यथार्थ को स्पर्श करती समकालीन कविता अपने ध्येय और साध्य तक पहुँचती है। समकालीन कविता में नयी कविता की तरह नग्न यथार्थ नहीं है बल्कि वह समाज के प्रत्येक दायरे से जुड़कर व्यक्ति से लेकर राष्ट्र व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना अस्तित्व कायम बनाये हुए है। अब प्रश्न उठता है कि क्या समकालीन कविता की अपनी एक निश्चित पहचान व अस्मिता है? आज के विश्व बाजारवाद में वह प्रासंगिक भी है या नहीं? विज्ञापनों की रंगीन व दिखावटी चकाचौंध में पनप रहे अपराध को क्या समकालीन कविता पूरी शिद्दत से वर्णित कर पाती है? व्यक्ति व समाज को अथवा उसकी मूलभूत सुविधाओं एवं आवश्यकताओं को क्या समकालीन कविता समय के साथ दिखाने में सक्षम है या नहीं? मानव जीवन-मूल्यों का विघटन व सांस्कृतिक ह्रास को किस परिप्रेक्ष्य में समकालीन कविता देखती व समझती है? प्रतिस्पर्धा के युग में क्या हम आज भी पारस्परिक संबंध स्थापित कर पा रहे हैं या नहीं? यांत्रिक जीवनशैली से जकड़ा आज का उपयोगितावादी समाज कहाँ तक रागात्मक बोध की कदर करता है? विज्ञान एवं तकनीकी के युग में समकालीन कविता का क्या महत्व है? 'लिविंग रिलेशनशिप' के दौर में समकालीन कविता का क्या औचित्य व क्या योगदान है? भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में समकालीन कविता की क्या प्रासंगिकता है? यह समकालीन कविता के लिए सबसे बड़े प्रश्न और चुनौतियां हैं।

यद्यपि साहित्य की सबसे बड़ी पहचान होती है कि वह अपने समाज और समय को एक व्यवस्थित और नियंत्रित परिप्रेक्ष्य में देखकर व्यक्ति व समाज के अंतर्संबंधों को ठीक तरीके से अभिव्यक्ति दे। समय के साथ-साथ हो रही समस्त घटनाओं व विघटनाओं को उजागर करना साहित्य का परम लक्ष्य रहता है। परिवर्तन व बदलाव आवश्यक है। तभी तो साहित्य अनेक नये-नये आयामों, संदर्भों, क्षेत्रों और विविध पक्षों से जुड़ेगा। जितनी भी चुनौतियां समकालीन कविता के सामने हैं, उससे उसका आगामी साहित्य व रचनाकार है। जब साहित्य में बदलाव आता है तो किसी नवीन मान्यता व स्थापना का उद्घाटन होता है। बाजारवाद, भूमंडलीकरण, विज्ञान एवं तकनीकी और उपयोगितावाद के इस युग में आज भी समकालीन हिन्दी कविता सार्थक, महत्वपूर्ण, उपयोगी और प्रासंगिक है। अतः संक्षिप्त शब्दों में कहा जाए तो समकालीन कविता अपने समय को और समाज को नये आयामों की तरफ मोड़ रही है जोकि युवा पीढ़ी के कविगणों के लिए शुभ संकेत है।

शोधार्थी, एम. फिल, हिंदी विभाग
अम्बेडकर भवन, हि. प्र. विश्वविद्यालय
समरहिल, शिमला-17100, मो. 0 85807 15221

संदर्भ संकेत

1 डॉ. संतोष कुमार तिवारी, नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, पृ. 284, जवाहर पुस्तकालय, पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता, मथुरा, उत्तर प्रदेश
2 ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी - अंग्रेजी - हिन्दी शब्दकोश, पृ. 269, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली
3 डॉ. संतोष कुमार तिवारी, नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, पृ. 282, जवाहर पुस्तकालय, पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता, मथुरा, उत्तर प्रदेश
4 ए. अरविंदाक्षन, समकालीन हिन्दी कविता, पृ. 57, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
5 सं. विजय कुमार, सदी के अंत में कविता, राजेश जोशी की टिप्पणी, पृ. 366
6 डॉ. हरिचरण शर्मा, आधुनिक कविता प्रकृति और परिवेश, पृ. 226
7 राजेश जोशी, दो पंक्तियों के बीच, पृ. 28, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
8 राजेश जोशी, दो पंक्तियों के बीच, पृ. 54, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
9 डॉ. हरिचरण शर्मा, आधुनिक कविता प्रकृति और परिवेश, पृ. 222
10 ए. अरविंदाक्षन, समकालीन हिन्दी कविता, पृ. 15, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

यात्रा वृत्तांत

असंख्य द्वीपों का एकमात्र राज्य
अंडेमान निकोबार

◆ डॉ. कमल के. 'प्यासा'

यात्रा पैदल हो, हवाई हो, जल या स्थल की हो, लेकिन इसकी उत्सुकता तो रहती ही है। यही उत्सुकता हर व्यक्ति की अपनी-अपनी रुचि पर निर्भर करती है। क्योंकि हर व्यक्ति की अपनी-अपनी मानसिकता होती है। इसलिए पसन्द का अलग होना स्वाभाविक ही है। पसन्द धार्मिक (आध्यात्मिक), ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक, साहसिक, प्राकृतिक या फिर कला के विषय से जुड़ी भी हो सकती है। मन की इच्छा कैसी भी क्यों न हो, लेकिन इन सभी बातों के साथ ही साथ यात्रा के लिए बाहर जाने की उत्सुकता तो सभी में रहती है। यही उत्सुकता ओर भी बढ़ जाती है यदि यात्रा पहली बार या थोड़ी हटकर या रोमांचक हो तो ....! ऐसी ही यात्रा के लिए हमारा आठ साथियों का दल (जिसमें दो महिलायें तथा छह पुरुष थे) अंडेमान निकोबार के लिए मण्डी से 4 फरवरी 2020 को दोपहर एक बजे टैक्सी द्वारा रवाना हुआ। इस यात्रा का आयोजन 'मण्डी साक्षरता एवं जन विकास समिति' द्वारा (संस्थापक सदस्यों के अंडेमान निकोबार के अध्ययन के लिए) किया गया था।

फरवरी मास की ठंड के कारण सभी ने गर्म कपड़े पहन रखे थे। हम सभी खुशी-खुशी बातों में मस्त सांय चार बजे के करीब स्वारघाट पंहुच गए और हमारी टैक्सी हिलटाप रेस्टोरेंट के आगे लग गई। हिलटाप पर हलका फुलका चाय पान करने के पश्चात हमारा आगे का सफर शुरू हो गया और टैक्सी चंडीगढ़ होते हुए जिरकपुर के माल डिकथालोन के आगे जा रुकी। वहां से सबने अपनी आवश्यकतानुसार चप्पल, टोपी, हैट, हाफ पेंट व चश्में आदि की खरीद की फिर वहीं सामने वाले ढ़ाबे पर अपने साथ लाई कचौरियों का डिनर व चायपान किया गया। ठीक 8.30 बजे रात्रि को हमारी टैक्सी दिल्ली की ओर दौड़ने लगी।

अगली सुबह अर्थात 05-02-2020 को 3.30 पर हम अन्तर्राष्ट्रीय इंदिरागांधी हवाई अड्डा, नई दिल्ली पहुँच गए थे। हवाई यात्रा के सफर का यह अवसर हम सभी के लिए लगभग प्रथम ही था। हमारे एक मित्र तो ऐसा भी कह रहे थे कि वह समुद्र भी पहली बार देखेंगे ...!! हवाई अड्डे में कहाँ .... कैसे ... और किधर किधर सामान आदि का निरीक्षण होना है ..., किसी को कोई जानकारी नहीं थी। खैर मण्डी के ही एक जान पहचान के (हवाई अड्डे के कर्मचारी) श्री मुंशी राम की मदद से सब कुछ आसानी से हो गया। सभी को चायपान करवाने के पश्चात व हमारे जाने की सारी व्यवस्था को करवा कर मुंशी राम ने हमें विश्राम स्थल पर बैठाकर विदा ली, क्योंकि विमान को तो ठीक सुबह 5.30 पर उड़ान भरनी थी। विश्राम स्थल पर बैठे अन्य सहयात्रियों से आपसी बातचीत से पता चला कि हमारे सामने बैठे दोनों पति-पत्नी भी हिमाचल चंबा के हैं। वह भी पोर्ट ब्लेयर ही जा रहे थे। इस तरह अपने हिमाचल वासियों से मिलकर सभी को खुशी हुई और काफी देर तक उनसे बातें होती रहीं। समय का कुछ पता ही नहीं चला। सुबह के 5.25 बज चुके थे और पोर्ट ब्लेयर जाने वाला विमान लग गया था। हम सभी अपना-अपना परिचय पत्र और टिकट दिखाकर विमान में प्रवेश कर अपनी-अपनी सीट पर बैठ गए। फिर सभी विमान में बैठे - बैठे अपने-अपने मोबाईल फोन से फोटो लेने में व्यस्त हो गए। ठीक 5.30 बजे विमान हवाई पट्टी पर दौड़ते हुए, हलके से झटके के साथ उड़ान भरकर आसमान से बातें करने लगा। हमारा विमान बादलों के ऊपर उड़े जा रहा था। अन्दर से बादल बर्फ से ढके पहाड़ों की तरह दिख रहे थे। हमारे लिए यह सब एक नया और सुखद अनुभव था। विमान बड़े ही आराम से उड़े जा रहा था, बस थोड़ी सी आवाज वाटर कूलर की मोटर की आवाज जैसी ही अनुभव को रही थी। इसके अतिरिक्त शेष सभी कुछ सामान्य ही था।

नाश्ते का समय हो चला था और तभी परिचारिकाओं ने अपनी छोटी सी ट्राली से यात्रियों को नाश्ता पकड़ाना शुरू कर दिया। सीट के आगे लगे टेबल को खोलकर अन्दर बैठे-बैठे नाश्ता करने का मजा ही अपना था, साथ ही फिर चाय भी आ गई और समय का पता ही नहीं चला।

ठीक 9 बजे भारत के पूर्वोत्तर से 1200 किलोमीटर दूर हमारा विमान वीर सावरकर हवाई अड्डे अर्थात अंडेमान की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में उतर चुका था जिसकी जानकारी हमें उतरने से पूर्व ही

दे दी गई थी।

विमान से बाहर निकल हम सभी अपने-अपने सामान की प्रतीक्षा कन्वेयर बैल्ट के समीप खड़े होकर करने लगे। गर्म कपड़े अर्थात स्वेटर जैकट आदि सभी ने उतार कर कन्धों पर डाल लिए थे। क्योंकि उधर तो गर्मी के कारण ए. सी. व पंखे चल रहे थे। 9.30 बजे हम सभी हवाई अड्डे से बाहर निकल आए। बाहर सूर्य होटल वाले (जहां हमारे ठहराने की व्यस्था थी) प्रतीक्षा कर रहे थे और थोड़ी ही देरी में हम सभी टैक्सी द्वारा फुंगी रोड़ स्थित सूर्य होटल पहुँच गए। फिर कुछ देर सुस्ताने के बाद बारी-बारी से नहा धोकर तैयार हो गए। भोजन करने का समय हो गया था, तभी भोजन कक्ष में पहुँचने का सन्देश भी आ गया। खाना भोजन कक्ष में लग चुका था। "वाह-वाह क्या बात है .... " सभी हैरानी से एक दूसरे की ओर देख कर कह रहे थे। क्योंकि खाने में तो बिलकुल जैसा हम खाते आये हैं वैसा ही दाल, चावल, सब्जी व चपाती आदि ही रखी हुई थी जिन्हें देखकर सबको संतुष्टि हो गई थी।

भोजन करने के पश्चात बिना समय गंवाए हम सभी ठीक 2.30 बजे टैक्सी द्वारा अटलांटा प्वाईंट स्थित ऐतिहासिक सैल्यूलर जेल देखने पहुँच गए। उधर प्रवेश द्वार के आगे ही काफी लम्बी पंक्ति में लोग खड़े थे। हम भी पंक्ति में लगकर देखते ही देखते अन्दर प्रवेश हो गए। सैल्यूलर जेल वही ऐतिहासिक जेल है जहां क्रांतिकारियों को रखा जाता था। मण्डी के क्रांतिकारी भाई हिरदा राम को भी इसी जेल में अन्य क्रांतिकारियों के साथ रखा गया था। जेल में लगी संगमरमर की पट्टिका में क्रांतिकारियों के साथ उनका नाम देखकर हमने अपने आपको गौरवान्वित अनुभव किया। इस ऐतिहासिक इमारत के प्रवेश द्वार के दोनों ओर संग्रहालय बना है जिसमें पुराने दस्तावेज, क्रांतिकारियों को दिए गए आदेशों व संदेशों के पत्र, उनके चित्र, जेल के निर्माण का इतिहास, आदि सभी जानकारियाँ संग्रहालय में देखी और पढ़ी गई। संग्रहालय के आगे अन्दर की ओर खुला परिसर देखने को मिलता है। परिसर के दायीं ओर दर्शक मंच है, जहां पर कुर्सियां लगी देखी जा सकती हैं। मंच पर लगी इन्हीं कुर्सियों पर बैठकर दर्शक शाम को ध्वनि व प्रकाश कार्यक्रम देखते हैं। परिसर के बायीं ओर शहीदों और क्रांतिकारियों की याद में बना स्मृति स्थल है जहां पर ज्योति प्रज्वलित रहती है। ज्योति प्रज्वलन की शुरुआत शहीदों के सम्मान में 9 अगस्त 2004 से भारत सरकार के आदेशों पर की गई है।

खुले परिसर में थोड़ा आगे चलने पर दाईं ओर (क्षितिज रेखा में बनी सैल्यूलर जेल की एक इमारत के आगे) एक चबूतरा बना है, जिस पर उस समय कैदियों को फांसी पर चढ़ाया जाता था। कहते हैं कि इसी चबूतरे पर तीन-तीन कैदियों को इकठ्ठे ही फांसी पर लटका दिया जाता था। चबूतरे के आगे क्षितिज रेखा में सैल्यूलर जेल की एक इमारत बनी है तथा दूसरी बाईं ओर सीधी रेखा पर खड़ी है। दोनों इमारतें आपस में जुड़ी हुई हैं तथा दोनों में तीन-तीन तल हैं। हर इमारत के एक तल पर लगभग 48 से 50 कमरे गिने गए, लेकिन तीनों तलों के 148 कमरे हो जाते हैं। यदि दोनों इमारतों के कुल कमरों की संख्या को जोड़ा जाए तो ये कुल मिलाकर 294 बनते हैं। एल आकार में खड़ी दोनों इमारतों के प्रत्येक कमरे का आकार 10 गुना 9 फुट का देखा गया। हर कमरे के बाहर मजबूत लोहे की सलाखों का द्वार तथा इसी द्वार के बाँई ओर छोटा सा डेढ़ फुट गुना आठ इंच का खुला स्थान (शायद भोजन व पानी आदि देने के लिए) भी बना देखा गया। हर कमरे की पीछे वाली दीवार में ऊपर की ओर एक छोटा सा रोशनदान भी बना हुआ देखा गया। सभी कमरों के आगे लम्बा सा 5 फुट चौड़ा बरामदा बना है। न जाने इन कमरों में हमारे क्रांतिकारी कैसे रहे होंगे .....!! ?? इन्हीं कमरों के अन्तिम छोर पर देश के महान क्रांतिकारी वीर सावरकर का भी कमरा था, जिसमें उनकी तस्वीर रखी हुई थी। हमारे मण्डी के क्रांतिकारी भाई हिरदा राम जी का कक्ष भी वहीं पास में देखा गया।

सैल्यूलर नामक इस जेल का निर्माण कार्य 25 सितम्बर, 1893 को अंटलांटा प्वाईंट नामक इसी स्थान पर हुआ था। ऐसा बताया जाता है कि पहले इस जेल के 698 कमरे थे। दूसरे विश्व युद्ध से जेल का कुछ हिस्सा ढह गया था और अब यही 294 के करीब ही कमरे रह गए हैं।

जेल के समस्त परिसर को देखने के पश्चात हम सभी बाहर

पार्क के समीप आकर नारियल पानी का आनन्द लेकर वापिस टैक्सी में बैठ गए। हमारा अगला दर्शनीय स्थल था कार्बाईन कोल बीच। पोर्टब्लेयर के नजदीक होने के कारण ही हम शीघ्र ही उधर पहुँच गए। यह बीच साहसिक खेलों के आयोजन, सूर्योदय व सूर्य अस्त के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। यहीं पर पैरा सेलिंग व जेट स्की आदि साहसिक खेलों को देख कर हम सभी चकित रह गए। हम भी वहीं समुद्र के बीच की लहरों के साथ कुछ देर आनन्द लेने के बाद, साथ वाली छोटी सी मार्किट में चाट व चायपान करके वापिस होटल पहुँच गए। रात्रि 8.30 बजे पर सैल्यूलर जेल में होने वाले ध्वनि व प्रकाश कार्यक्रम को देखने के लिए फिर चल पड़े। ध्वनी व प्रकाश कार्यक्रम के माध्यम से हमें क्रांतिकारियों के बलिदान की एतिहासिक जानकारी के साथ ही साथ पोर्ट ब्लेयर की समस्त पृष्ठ भूमि का पता चल गया। यह सारा कार्यक्रम बड़ा ही रुचिकर व हैरानी पैदा करने वाला था। रात्रि 9.30 पर कार्यक्रम की समाप्ति के बाद वापिस आकर अगले दिन का कार्यक्रम बनाने लग गए।

दूसरा दिन - 06-02-2020 को नाश्ता लेने के पश्चात भ्रमण के लिए तैयार होकर टैक्सी द्वारा अबरडीन जैटी से नजदीक द्वीप रौस आई लैण्ड (नेता जी सुभाष चंद्र बोस द्वीप), पहुंचने के लिए बैठ गए। आप कहेंगे ये जैटी क्या होता है .....? हाँ यह शब्द जैटी हमारे लिए भी नया था और बार-बार सुनने में आ रहा था। इस सम्बन्ध में जानने पर पता चला कि ऐसा पक्का स्थल जहां से मोटर बोट, फैरी व जहाज आदि चले या ठहरे उस स्थान को जैटी कहा जाता है। टैक्सी अबरडीन जैटी पहुंचकर रुक गई। टिकट लेकर हम सभी मोटर बोट पर बैठ गए और बैठते ही हमें जीवन रक्षक जैकट पहना दी गई और मोटर बोट चल पड़ी। लगभग आधे घंटे में ही हम समीप वाले रौस आई लैण्ड पर उतर गए। कभी इसी छोटे से द्वीप से अंग्रेजों की हुकूमत चलती थी। अंग्रेजों के पश्चात 1942 से 1945 तक यहाँ जापानियों का अधिकार भी रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध के बंकर इस द्वीप पर आज भी देखे जा सकते हैं। प्राचीन इमारतें, इमारतों के खंडहर, चर्च, स्कूल व मुख्यायुक्त का निवास आदि आज भी सभी अपनी मजबूती की गवाही देते देखे जा सकते हैं। दो अढ़ाई किलोमीटर में फैले इस द्वीप को ऊपर तक देखने के लिए हमने थ्री व्हीलर कर लिया था। सड़क मार्ग से ऊपर तक घूम कर व रास्ते में कई इमारतों की मजबूती और उनकी बनावट को देखकर हम चकित रह गए थे, क्योंकि कई खाली पड़ी सुन्दर इमारतें रहने योग्य होते हुए भी खाली की खाली पड़ी थीं।

रौस लैण्ड नामक इस द्वीप पर मोर व बारह सिंघें हिरण भी देखे गए। जब घूमने के पश्चात वापसी पर हम वहां नारियल पानी पीने लगे तो हिरण हमारे आगे पीछे घूमने लगे थे। इस तरह समुद्र के मध्य में प्राकृतिक हरे-भरे जंगल में मोरों व हिरणों को देखकर बड़ा ही मनोरम व रोमांचक आभास हो रहा था। सैल्यूलर जेल की तरह ही इस द्वीप पर भी ध्वनी व प्रकाश कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। अबरडीन जैटी से नेता जी सुभाष चंद्र बोस द्वीप की दूरी लगभग डेढ़ से दो किलोमीटर ही है।

अबरडीन जैटी से हमारी टैक्सी मनारघाट जाने के लिए दूसरी जैटी की ओर चल दी। टैक्सी से उतर कर जल्दी ही हम मनारघाट को जाने वाली फैरी में बैठ गए। फैरी में हमारे साथ ही साथ कई एक स्कूटर व हमारी टैक्सी को भी चढ़ा दिया गया। कुछ ही देर की समुद्री यात्रा के पश्चात हम मनारघाट जैटी पर उतर गए। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार ही उधर हमें श्रीमती रुबीना सिद्धीकी (पूर्व अध्यक्ष राईट फार आल संस्था, पोर्टब्लेयर) बताये गए स्थान पर मिल गईं। उन्होंने हमें मनारघाट के क्षेत्र का परिचय करवाते-करवाते बताया कि मानरघाट ही पोर्ट ब्लेयर की प्रसिद्ध व विकासशील पंचायत है। इसके बाद रुबीना जी ने हम सभी का परिचय मनारघाट पंचायत प्रधान ओद्र बशीर से करवा दिया। पंचायत प्रधान बशीर ने अपनी पंचायत द्वारा चलाए जा रहे सभी कार्यक्रमों की जानकारी विस्तार से दी तथा हमें उन स्थलों पर ले जा कर कार्यों का निरीक्षण भी करवाया। इस तरह हम सभी को मनारघाट के बालवाड़ी केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, पंचायत युवा केंद्र, पंचायत द्वारा संचालित सब्जी मण्डी, मनारघाट सांस्कृतिक और कला मंच व पंचायत भण्डार गृह आदि का भ्रमण करवाने के पश्चात प्रधान हमें अपने कार्यालय ले गए। वहां उन्होंने विस्तार से पंचायत की जानकारी देते हुए बताया कि पंचायत की आय लाखों में है। आय का सारा पैसा पंचायत के विकास पर ही खर्च किया जाता है। वहीं पर हम सभी को चायपान करवाने के पश्चात मोटर बोट से वन क्षेत्र की यात्रा करवाते हुए, जंगली जानवरों तथा मगरमच्छों से सावधान रहने की भी सलाह उनके द्वारा दी गई, इस प्रकार हमारी दूसरे दिन की यात्रा मनारघाट के विकास के साथ ही साथ वहां की कला और संस्कृति के विविध पक्षों को जानने के लिए भी अहम् कही जा सकती है।

तीसरा दिन : 07-02-2020 का कार्यक्रम हैवलाक द्वीप (स्वराज द्वीप) की यात्रा का था। नाश्ते को पैक करवा लेने के पश्चात सुबह 6 बजे ही हम टैक्सी द्वारा जैटी पहुँच गए। जैटी से छोटे जहाज का सफर हैवलॉक के लिए शुरू हो गया, सफर लम्बा था क्योंकि हैवलॉक के लिए दो से अढ़ाई घंटे का समय लग ही जाता है। सुबह 9 बजे के करीब जहाज में बैठे-बैठे ही नाश्ता कर लिया। एक स्थान पर बैठे जब थक गए तो कुछ पल जहाज के डैक पर इधर-उधर ऊपर तक घूम लिए, फिर दूर तक फैले समुद्र के नजारों को देखने व फोटो लेने के पश्चात वापिस नीचे आ गए। ठीक 10 बजे के करीब हम हैवलाक पहुँच गए। यहाँ से फिर अपने थोड़े बहुत सामान को राधानगर स्वीट ड्रीम होटल में रखने के पश्चात उसी टैक्सी द्वारा ही सीधे राधानगर बीच पहुँच गए।

हैवलाक का राधानगर बीच अति सुन्दर बीचों में से एक है। बीच पर लोगों की भारी भीड़ थी। वहीं बीच से पहले सुन्दर छोटी सी मार्किट भी देखी गई। मार्किट में चायपान व नारियल की दुकानों के साथ ही साथ रेडीमेड वस्त्रों, समुद्री शंख सीपियों व श्रृंगार की दुकानें भी खूब सजी हुई थीं। लगभग दो घंटों तक बीच की लहरों से खेलने व नहाने के पश्चात 5 बजे के करीब लौटती बार मार्किट में चायपान करके वापिस अपने होटल स्वीट ड्रीम पहुँच गये। थोड़ा विश्राम करने के बाद रात्रि को बाहर वाले ढाबे पर भोजन लेने के उपरांत टहलते हुए वापिस अपने-अपने कमरों में पहुँच गए। इस तरह रात्रि ठहराव राधानगर के होटल स्वीट ड्रीम में ही किया गया।

चौथा दिन : 08-02-2020 को स्वीट ड्रीम में नाश्ता करने के बाद 10 बजे के करीब राधानगर से काला पत्थर बीच की ओर हमारी टैक्सी बढ़ रही थी। बातों ही बातों में पता ही नहीं चला और हम 10.45 पर काला पत्थर नामक छोटे से बीच पर जा पहुंचे। सड़क के एक तरफ छोटी सी मार्किट और दूसरी ओर उसके सामने ही छोटे से बीच के समुद्र की लहरें उठ रही थीं, उन लहरों के साथ मस्ती करने के पश्चात हम दूसरे बीच की ओर चल पड़े, टैक्सी ने हमें एलीफैंटा बीच के लिए हैवलॉक जैटी के समीप उतार दिया। जैटी से मोटर बोट द्वारा 11.30 बजे चल कर हम 12 बजे के करीब एलीफैंटा पहुँच गए। अति सुन्दर व प्रसिद्ध बीच होने के फलस्वरूप ही एलीफैंटा बीच के एक ओर भारी संख्या में मोटर बोट खड़ी देखी गईं। लोगों का भारी हजूम भी समुद्र की लहरों व जल साहसिक खेलों का आनन्द लेते हुए वहीं देखा गया। वहीं बीच में पैरा सेलिंग, स्नारलिंग, जेट स्की व सी वाक जैसी गतिविधियों को करते हुए लोगों को देखा गया। हममें से मीरा शर्मा द्वारा जेट स्की, मेरे व आर ठाकुर द्वारा स्नारलिंग गतिविधि का खूब आनंद लिया गया। इस तरह एलीफैंटा बीच पर समुद्र की लहरों की अठखेलियों के साथ ही साथ जल साहसिक खेलों का आनन्द लेने के पश्चात (बीच के पास वाली मार्किट से फ्रूट चाट का स्वाद लेकर) अपनी उसी बोट द्वारा वापिस ठीक 4 बजे हम हैवलॉक जैटी पहुँच गए। वहीं फिर पोर्ट ब्लेयर की ओर चलने वाले जहाज से समुद्र की लहरों का आनन्द लेते हुए ठीक 7.45 बजे शाम को पोर्ट ब्लेयर आ गए।

5 वां दिन : 09-02-2020 को हमारी यात्रा बाराटुंग की चूना पत्थर की गुफाओं को देखने की थी। यह सफर लम्बा था, इसलिए हमें सुबह 3 बजे उठना पड़ा और ठीक 3.30 बजे हम टैक्सी द्वारा निकल पड़े। क्योंकि बाराटुंग के लिए आदिवासी (प्रतिबंधित) क्षेत्र से होकर जाना पड़ता है, आगे जिरका टांग की चैक पोस्ट से गाड़ियों के निकालने का समय सुबह छह, नौ बजे व दोपहर बारह बजे तक का ही है। बारह बजे के पश्चात किसी भी गाड़ी को आने जाने नहीं दिया जाता। हमारी गाड़ी जो सुबह 3.30 बजे चली थी 4.45 बजे जिरका टांग चैक पोस्ट पर पहुँच गई थी। यहीं पर हमारी और बाकी सभी पहुंचे पर्यटकों के पहचान पत्रों आदि की जांच पड़ताल की गई। अभी समय था क्योंकि बैरियर के खुलने का समय सुबह छह बजे का था। समय को देखते हुए हम सभी ने यहाँ का विशेष पकवान इडली, बड़े आदि का नाश्ता व चाय अपनी पसन्द के अनुसार कर लिया। आदिवासी क्षेत्र होने के कारण ही आगे जाने के लिए सभी गाड़ियों को यहाँ से एक साथ ही छोड़ा जाता है। कोई भी गाड़ी रास्ते में हॉर्न नहीं बजा सकती, कोई पर्यटक रास्ते में आदिवासी दिख जाने पर उनसे बात नहीं कर सकता न ही गाड़ी को रोक कर उसे कोई खाने पीने की वस्तु दे सकता है। इतना ही नहीं उनका कोई फोटो भी नहीं लिया जा सकता, क्योंकि यह सारा प्रतिबन्ध सरकार द्वारा लगाया गया है। इन सभी बातों का अनुसरण करवाने के लिए, हमने रास्ते में जगह-जगह गार्डों को कार्यरत देखा। नियुक्त गार्ड जहाँ आदिवासियों पर नजर रखते हैं वहीं वह इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि किसी पर्यटक पर हिंसक होकर प्रहार न कर दें। क्योंकि बैरियर के आगे का सारा क्षेत्र घने जंगलों से घिरा आदिवासियों का ही क्षेत्र है। ये

आदिवासी नंगे रहते हैं और हिंसक प्रवृति के होते हैं। जंगली जानवरों व मछली आदि का मांस कच्चा ही खा जाते हैं। शिकार करने के लिए ये धनुष बाण का प्रयोग करते हैं। आदिवासी भी अलग-अलग जनजातियों से सम्बन्ध रखते हैं, इस क्षेत्र के आदिवासी जारवा जनजाति के हैं। क्षेत्र की इस आदिम संस्कृति को बचाने व पर्यटकों को इनके आक्रमण से सुरक्षित रखने के लिए ही (प्रशासन ने पुलिस द्वारा) इन्हें सरंक्षण दे रखा है, व इस समस्त क्षेत्र को जारवा संरक्षण वन क्षेत्र घोषित किया गया है। यह सारा क्षेत्र लगभग 50 किलोमीटर के करीब बनता है और इधर किसी भी प्रकार की आबादी नहीं है, इन्हीं आदिवासियों को यहाँ का मूल निवासी बताया जाता है।

जिरका टांग चैक पोस्ट से सुबह 6 बजे चल कर मिडल ईस्ट जैटी पर हम ठीक 7.40 बजे पहुँच गए। मिडल ईस्ट से छोटे जहाज द्वारा हम लाईम रॉक गुफाओं को देखने के लिए चल पड़े और आगे बारा टुंग उतर गए। बारा टुंग से आगे मोटर बोट द्वारा 9-10 किलोमीटर की दूरी तय कर हमारी बोट एक किनारे पर मैनग्रूव पेड़ों के नीचे जा रुकी। किनारे की भूमि दलदली होने के कारण लकड़ी व बांस से बने पुल को लांघ कर आगे 2 से अढ़ाई किलोमीटर गुफाओं तक का रास्ता पैदल ही तय करने को था। कुछ आगे चलने पर एक छोटे से गाँव के समीप नींबू पानी पीने का आनन्द लेने के बाद फिर चल पड़े। लगभग एक से डेढ़ किलोमीटर की दूरी चलने के बाद गन्तव्य स्थल (चूना पत्थर की गुफाओं) तक हम पहुँच ही गए। गुफाओं में जाने आने वालों की भीड़ के मध्य कुछ मीटर चलने के पश्चात आगे अन्धेरा दिखने लगा। मोबाईल की टार्च से चूना पत्थर (पानी के टपकने से बनी) की गुफा की कलाकृतियां देखते ही बनती थीं ... !! अपनी-अपनी सोच व विचारों के अनुसार बनीं वह कृतियाँ नजर आ रही थीं, कहीं भगवान शिव, गणेश जी, देवी माता, त्रिशूल, शंख तो कहीं कमल फूल की सुन्दर आकृति दिखाई दे रही थी। चूने पत्थर का रंग भी लाल, भूरा, सफेद और केसरिया अलग-अलग रंगों में दिखाई दे रहा था। क्या हम इन सभी कलाकृतियों व भिन्न-भिन्न चूने के रंगों को प्रकृति की ही अद्भुत कृति नहीं कह सकते ... ?? कुछ भी क्यों न कहा जाए लेकिन चूना पत्थर की अद्भुत कलाकृतियों और उनके रंगों को देखने व सारे सफर को करने के बाद रात्रि 8 बजे सभी ठीक-ठाक पोर्टब्लेयर वापिस पहुँच गए।

अंतिम दिन : 05-02-2020 से 09-02-2020 तक लगातार अंडेमान के विभिन्न द्वीपों, क्षेत्रों व सुन्दर बीचों की सुनहरी यादों को अपनी डायरी के पन्नों में पिरोते हुए भी, ऐसा आभास हो रहा था कि अभी तो बहुत कुछ ऐतिहासिक तथ्य देखने, सुनने को रह गए हैं जिनके बिना यह यात्रा वृतान्त कुछ अधूरा ही प्रतीत हो रहा था। अतः अगले दिन इस कार्य को भी पूरा कर लिया गया।

अंडेमान व निकोबार दो अलग-अलग द्वीपों के समूह हैं। दोनों द्वीपों के समूहों (अंडेमान व निकोबार) को मिलाकर एक केंद्र शासित राज्य अंडेमान निकोबार बना है। यदि इन सभी छोटे बड़े द्वीपों की संख्या देखी जाए तो वह 572 बनती है, लेकिन आबादी केवल 37 द्वीपों में ही है और आने जाने की सुविधा भी इसी लिए इन्हीं द्वीपों में है। सुविधा होने के बावजूद भी केवल 10-12 द्वीप ही देखने योग्य हैं। आम लोगों व पर्यटकों का आना जाना केवल अंडेमान के द्वीपों तक ही सीमित है। निकोबार के लिए हर कोई व्यक्ति नहीं जा सकता। उधर जाने के लिए प्रशासन से विशेष अनुमति लेनी पड़ती है। निकोबार की अंडेमान से दूरी लगभग 560 किलोमीटर बताई जाती है। इस तरह दोनों द्वीपों के समूह को ही (अंडेमान निकोबार) एक केंद्र शासित राज्य बनाया गया है और राज्य की राजधानी पोर्ट ब्लेयर ही है। यहाँ की मुख्य भाषा हिन्दी ही है, लेकिन इसके साथ-साथ बंगाली, तमिल, तेलगू व अन्य भाषाएँ भी कुछ लोग बोलते हैं। यहाँ के लोग परिश्रमी व ईमानदार हैं। पैदावार में यहाँ अधिकतर नारियल, सुपारी, जयफल व अन्य मसालों के साथ ही साथ आम, पपीता, कटहल, गेहूं, चावल व अन्य सब्जियां भी उगाई जाती हैं। यहाँ के समस्त द्वीपों के नाम अंग्रेजों के नामों से ही जाने जाते हैं, क्योंकि अंग्रेजों ने ही यहाँ के मूल आदिवासियों को खत्म करके अपनी बस्तियां स्थापित की थी। लेकिन अब द्वीपों व स्थानों के नाम बदले जा रहे हैं।

पोर्ट ब्लेयर जो कि अंडेमान निकोबार का एक मात्र शहर है, शेष सभी द्वीपों का परिवेश गाँवों जैसा ही है। यहाँ देखने योग्य स्थलों में सैल्यूलर जेल, मत्स्य संग्रहालय, राम कृष्ण मठ, राम कृष्ण आश्रम, महात्मा गांधी पार्क, वनस्पति व जीव जन्तु संग्रहालय, आदिवासी संग्रहालय व अनेकों सुन्दर-सुन्दर बीच हैं, जिनमें प्रमुख हैं : - कार्बाइन कोल बीच, चाथम बीच, वंडूर बीच, व चिड़िया बीच आदि-आदि। समुद्र व द्वीपों के इस केंद्र शासित प्रदेश की हरियाली, भांत- भांत के समुद्री जीवों, आदिवासियों की नई-नई जानकारियाँ व प्राकृतिक सुन्दरता बाहर से आने वाले पर्यटकों को मोह लेते हैं और बार-बार यहाँ आने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

प्रूथी 108/6, समखेतर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश
मो. 098821 76248

प्रकृति

पर्यावरण सुरक्षा में मानवीय पहल

◆ कपिल देव मेहरा

हर साल हम 5 जून को पर्यावरण दिवस के रूप में मनाते हैं। इसकी शुरूआत 1972 में 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासंघ द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन से हुई थी। 5 जून 1973 को पहला पर्यावरण दिवस मनाया गया। इसके बाद हर वर्ष पर्यावरण सुरक्षा को लेकर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास जारी हैं। लेकिन, अगर पर्यावरण सुरक्षा को लेकर मानवीय भागीदारी सुनिश्चित की जाए तो यह एक कारगर कदम साबित होगा। क्योंकि, देश-दुनिया में पर्यावरण सुरक्षा को लेकर विभिन्न विभाग व संस्थाएं तो अपना योगदान दे ही रही हैं और देती भी रहेंगी। अगर हर व्यक्ति पर्यावरण सुरक्षा अपनी निजी जिम्मेदारी समझे तो काफी हद तक इसके संरक्षण को लेकर एक नया स्वरूप देखने को मिल सकता है।

इस संदर्भ में मैंने अपने कई साथियों से बातचीत भी की और सुनने को मिला कि आप अनपढ़ लोगों को पर्यावरण सुरक्षा के बारे में कैसे समझा पाओगे। बात उनकी बिल्कुल सही थी। लेकिन, जब मैंने उनके साथ जिला चंबा के जनजातीय क्षेत्र भरमौर का अनुभव साझा किया तो वे सोचने को मजबूर हुए। बात थी मेरी भरमौर यात्रा की। मैं अपने एक अध्यापक दोस्त के साथ माता भरमाणी के मंदिर में दर्शन के लिए पैदल जा रहा था कि मलकौता गांव से खड़ी चढ़ाई चढ़ते समय रास्ते में हमने कुछ लोगों को पौधरोपण करते देखा। न तो यह जून का महीना था कि ये लोग पर्यावरण पखबाड़ा मना रहे हों और न ही कोई पौधरोपण दिवस। एक व्यक्ति को न चाहते हुए भी हमने आखिर पूछ ही लिया कि बाबा आजकल इतनी सर्दी में आप यहां पौधे क्यों लगा रहे हो। फरवरी मास की ठंड में हाथ मलते हुए बुजुर्ग का जवाब था, बेटा हम सेब के पौधे लगा रहे हैं। इस बंजर पड़ी जमीन को बचाने के लिए यहां सेब के पौधे ही सर्वोत्तम विकल्प है। इससे जमीन ज्यादा बर्फबारी या बारिश होने पर भूस्खलन से भी बच जाएगी और देर सबेर ही सही सेब भी खाने को मिल जाएंगे। बाबा की यह बात सुनकर मैं हैरान रह गया कि आखिर करीब 70 की उम्र में भी बुजुर्ग के जहन में पर्यावरण सुरक्षा का ख्याल है।

जैसा कि हमने किताबों में पढ़ा है- पर्यावरण शब्द दो शब्दों परि और आवरण से मिलकर बना है, जिसमें परि का मतलब है हमारे आसपास अर्थात हमारे चारों ओर का 'आवरण' जो हमें घेरे हुए है। सामान्य तौर पर हम यह भी कह देते हैं कि पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक और जैविक कारकों की कुल इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रीय जनसंख्या को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन और जीविन को सुनिश्चित करते हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित यह दिवस पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर जनमानस में राजनैतिक और सामाजिक जागृति लाने के लिए मनाया जाता है। 5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। यह बात अकसर हमारे अध्यापक भी हमें बताया करते थे। हमें आज भी याद है जब हम छठी-सातवीं में पढ़ा करते थे तो अध्यापकगण सुबह प्रार्थना के समय में ही यह बता दिया करते थे कि आज हमने फलां जगह पर पौधरोपण करने के लिए जाना है, इसलिए सभी विद्यार्थी इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। अगले दिन जब हम पौधरोपण करने जाते थे तो उस समय तो खुशी का ठिकाना न होता था, क्योंकि एक साथ सहपाठियों के साथ जाना एक सुखद एहसास करवाता था। अब जब पौधे लगाने की बारी आती थी संबंधित अध्यापक द्वारा बांटे गए पौधे को लेकर तो कई बार झगड़ा तक हो जाता था। अपने लगाए पौधे पर हम खूब पानी डाला करते थे कि यह गर्मी में सूख न जाए। बस, फिर क्या पौधरोपण होने के बाद सीधे स्कूल लौट आया करते थे। बहुत कम ऐसे छात्र होंगे जिन्होंने शायद पौधा लगाने के बाद फिर से उसकी खबर ली होगी। हालांकि, अध्यापकों द्वारा यह बात जोर देकर कही जाती थी कि एक पौधा कई लाख सांसे हमें प्रदान करता है और इसकी तब तक देखरेख करनी चाहिए जब तक कि यह इतना बड़ा न हो जाए कि पशु इसकी शाखाओं तक न पहुंच सकें। मैं आज भी उस स्थान पर जाकर देखता हूं तो उस समय के लगाए करीब इक्का-दुक्का पौधे ही बड़े हुए नजर आते हैं। वो भी वही हैं, जिन्हें पशु नहीं खाते। पर दिल को इस बात की तसल्ली अवश्य ही मिलती है कि शुक्र है हमारे द्वारा लगाए कुछ पौधे आज पेड़ बन चुके हैं। फिर मन में यह भी ख्याल आता है कि अगर हमें पूरी समझ होती और पौधरोषण के बाद हम सभी पौधों का पूरा ध्यान रखते तो शायद इस स्थान पर इक्का-दुक्का नहीं बल्कि जंगल के रूप में पेड़ों से घिरा होता।

पर्यावरण के जैविक संघटकों में छोटे-छोटे जीवाणुओं से लेकर कीड़े-मकोड़े, सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधों के अलावा उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएं और प्रक्रियाएं शामिल हैं। मेरे एक मित्र खेती-बाड़ी करते हैं, इत्तेफाक से इस बार लॉकडाउन के दौरान छुट्टी के चलते मैं उनके साथ उनके खेतों में गेहूं की कटाई करने चला गया। हालांकि, कटाई का सारा काम तो मजदूरों ने किया, लेकिन पास बैठकर मैं वो सब बातें सुनता रहा जो एक किसान द्वारा फसल की बिजाई से लेकर कटाई तक होती हैं। फसल कटवाते समय मेरे मित्र का पहला हवाला था पैदावार को लेकर। उसका कहना था कि इस बार मानसून सही रहा है, तभी इस रकबे से 10 क्विंटल के करीब गेहूं की फसल निकल आएगी। पिछली बार तो बुआई के पैसे भी पूरे नहीं हुए थे। इसकी खुशी उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। मैंने भी उसे दो टूक पूछ लिया- भाई, अगर फायदा न हो तो किसान फसल क्यों बोएगा। बस, यह सुनते ही वह मेरे पास आकर बोला, देखो भाई अगर सभी किसान ऐसा सोचेंगे तो हजारों-लाखों एकड़ जमीन ऐसे ही बेकार पड़ी रहेगी। बात पैदावार की ही नहीं है, फसल बीजने से लेकर इसकी कटाई तक इसी जमीन पर हजारों-लाखों कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी और अन्य जीवों का जीवन निर्भर है। उसका कहना था कि जब किसान फसल बीजता है तो उससे अंकुर निकलता है और धीरे-धीरे यही अंकुर पौधा बनता है। इस पौधे से कई जीव अपना जीवन निर्वाह करते हैं। अंत में जब हम फसल काट लेते हैं तो इसका एक भाग इन्सान तो दूसरा पशुओं के लिए चारे के रूप में काम आता है। वही पशु हमें दूध देते हैं और यह क्रम निरंतर चलता रहता है। उनकी यह बात सुनकर मेरे मन में अपने गुरूजी की पढ़ाई हुई वो बात याद आई कि छोटे-छोटे जीवाणुओं से लेकर कीड़े-मकोड़े, सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधों के अलावा उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएं पर्यावरण का ही हिस्सा हैं।

अब बात आती है पर्यावरण के अजैविक संघटकों की, जिनमें निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएं आती हैं, जैसेः पहाड़, चट्टानें, नदी, हवा और जलवायु से संबंधित तत्व इत्यादि। यह बात भी हमारे सामने ही है कि पहाड़ों को चीरकर सड़कें बनाई जा रही हैं, प्रोजेक्ट लगाए जा रहे हैं। नदियों का पानी रोककर बांध बनाए जा रहे हैं। हालांकि, आर्थिक तौर पर हम इसे विकास का हिस्सा मानते हैं, लेकिन, पर्यावरण के नजरिए से तो यह अजैविक संघटकों से छेड़छाड़ ही है। लेकिन, फिर भी हमें किसी भी सूरत में पर्यावरण कानून की अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

मानव द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित करती हैं। इस प्रकार किसी जीव और पर्यावरण के बीच का संबंध भी होता है। मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है, जिसमें पहला है प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण। कई बार हमने अपने बुजुर्गों को यह कहते सुना है कि जब वे छोटे हुआ करते थे तो न तो पर्याप्त यातायात के साधन थे और न ही सड़क सुविधा। रिश्तेदारों के पास जाने के लिए या तो घोड़ागाड़ी या फिर पैदल ही सफर तय करना पड़ता था। लेकिन, समय के साथ बदलाव भी जरूरी है और जो पहले हुआ करता था आज नहीं है और आधुनिकता के इस दौर में पर्यावरण पर किसका ध्यान है। पर्यावरण का यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता के अनुसार है। ऐसा नहीं कि नेचर को संवारने में मानव जाति का योगदान नहीं है, बल्कि विकास के पथ पर बढ़ती जनसंख्या के प्रभाव के चलते पर्यावरण सुरक्षा को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवीय भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है और इसके सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिले हैं।

पर्यावरण से संबंधित समस्याएं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन इत्यादि इन्सान को अपनी जीवनशैली के बारे में पुनर्विचार के लिए प्रेरित कर रही हैं और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता महत्वपूर्ण होती जा रही है। आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है पर्यावरण संकट के मुद्दे पर आम

जनमानस को जागरूक करने की। हालांकि, इस संदर्भ में हर साल सभी विभागों में एक मुहिम चलाई जाती है और हम सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सबका सहयोग भी लिया जाता है। कुछ संस्थाएं तो ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर लोगों को जागरूक करने और उनकी सहभागिता के लिए पुरजोर प्रयास करती हैं।

संस्थाएं एवं संबंधित विभाग इस बाबत लोगों को जागरूक करते हैं कि धरती पर जीवन के पालन-पोषण के लिए पर्यावरण प्रकृति का उपहार है। वह प्रत्येक तत्व जिसका उपयोग हम जीवित रहने के लिए करते हैं, वे सभी पर्यावरण के अन्तर्गत ही आते हैं जैसे- हवा, पानी, प्रकाश, भूमि, पेड़, जंगल और अन्य प्राकृतिक साधन। ऐसे में हमें इनके संरक्षण के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़नी चाहिए। हमारा पर्यावरण धरती पर स्वस्थ जीवन को अस्तित्व में रखने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। फिर भी हमारा पर्यावरण दिन- प्रतिदिन मानव निर्मित तकनीक तथा आधुनिकीकरण के कारण नष्ट होता जा रहा है। इसलिए आज हम पर्यावरण प्रदूषण जैसी सबसे भयानक समस्या का सामना कर रहे हैं।

सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक तथा बौद्धिक रूप से पर्यावरण प्रदूषण हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। एक बार मैंने अपने मामा को यह कहते सुना कि वे अपने बेटे से मिलने अमृतसर गए थे। करीब एक सप्ताह बाद जब वे वापस हिमाचल अपने गांव लौटे तो उन्हें एक सुखद राहत महसूस हुई। पूछने पर उनका कहना था कि वहां की आवोहवा इतनी अच्छी नहीं जितनी कि हिमाचल की है। उनका कहना था कि शहरी जीवन में वाहनों की पां-पां, फैक्ट्रियों का धुआं और बंद कमरे की जिंदगी उनको रास नहीं आई और वे एक हफ्ता काटकर वापिस अपने गांव लौट आए। जब मैंने उनसे पूछा कि अगर आपका मन वहां नहीं लगा तो वहां के लोग कैसे रहते होंगे। इस सवाल पर उनका कहना था कि वे तो इसके आदी हो चुके हैं। हम ठहरे गांव वाले, हमारा वहां मन क्या लगेगा। तब मेरे मन में खयाल आया कि अमृतसर में हो सकता है ज्यादा प्रदूषण की वजह से मामा का मन ऊब गया हो। अगर उन्हें वहां पर भी गांव जैसा वातावरण मिल जाता तो हो सकता वे वहां ज्यादा दिन काट आते। फिर मैंने यह भी सोचा कि अधिक आबादी वाले शहरों में ऐसा होना स्वाभाविक है।

मानव द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित करती हैं। इस प्रकार किसी जीव और पर्यावरण के बीच का संबंध भी होता है। मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है, जिसमें पहला है प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण। कई बार हमने अपने बुजुर्गों को यह कहते सुना है कि जब वे छोटे हुआ करते थे तो न तो पर्याप्त यातायात के साधन थे और न ही सड़क सुविधा। रिश्तेदारों के पास जाने के लिए या तो घोड़ागाड़ी या फिर पैदल ही सफर तय करना पड़ता था। लेकिन, समय के साथ बदलाव भी जरूरी है और जो पहले हुआ करता था आज नहीं है और आधुनिकता के इस दौर में पर्यावरण पर किसका ध्यान है। पर्यावरण का यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता के अनुसार है। ऐसा नहीं कि नेचर को संवारने में मानव जाति का योगदान नहीं है, बल्कि विकास के पथ पर बढ़ती जनसंख्या के प्रभाव के चलते पर्यावरण सुरक्षा को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवीय भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है और इसके सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिले हैं।

यह तो हम जानते ही हैं कि पर्यावरण प्रदूषण वातावरण में विभिन्न प्रकार की बीमारीयों को जन्म देता है और इसे व्यक्ति जीवन भर झेलता रहता है। यह किसी समुदाय या शहर की समस्या नहीं है बल्कि दुनिया भर की समस्या है तथा इस समस्या का समाधान भी किसी एक व्यक्ति के प्रयास करने से संभव नहीं होगा। अगर इसका निवारण पूर्ण तरीके से नहीं किया गया तो एक दिन जीवन का अस्तित्व नहीं रहेगा। हर व्यक्ति को सरकार द्वारा आयोजित पर्यावरण आन्दोलन में शामिल होना ही होगा। ऐसा नहीं कि इसके लिए हम कहीं जाकर किसी सम्मेलन या आंदोलन में भाग लेकर ही पर्यावरण सुरक्षा में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं। बल्कि व्यक्तिगत तौर पर भी हम खुद को इस मुहिम में शामिल कर सकते है। एक बार मैं बस में कांगड़ा से शिमला जा रहा था, बस में मेरी साथ वाली सीट पर एक युवती बैठ गई। करीब दो-तीन किलोमीटर सफर के बाद मैं क्या देखता हूं कि हमारी सीट के आगे कार्नर पर एक नमकीन का खाली लिफाफा पड़ा था। जैसे ही उस लिफाफे पर उस युवती की नजर पड़ी तो उसने एकदम से उस लिफाफे को उठाकर अपने बैग की जेब में डाल लिया। पहले तो मैं चुप रहा, थोड़ी देर बाद मैंने उसे पूछ ही लिया कि बेटा तुम कहां जा रहे हो। उसका जवाब था, अंकल ज्वालाजी जा रही हूं। मैंने फिर पूछा बेटा क्या करते हो, जवाब मिला-पढ़ती हूं। थोड़ी देर बाद बातें करते हुए मैंने उससे पूछा कि तुमने यह खाली नमकीन का पैकेट क्यों उठाया। उसने बहुत ही सरल शब्दों में कहा कि अंकल मैं कोशिश करती हूं कि पर्यावरण सुरक्षा में अपना योगदान दूं। बस, जब भी मौका मिलता है, मैं ऐसा कुछ कर देती हूं। मैंने पूछा कि तुम इस पैकेट का करोगी क्या। उसने अपने बैग की एक जेब खोलकर इसमें टॉफियों और बिस्कुट के कुछ खाली रैपर दिखाए। उसका कहना था, वह इन्हें खुले में नहीं फेंकेगी बल्कि घर में जाकर जला देगी। युवती की पर्यावरण पर ऐसी सोच का मैं कायल हो गया। मन में सोचा कि वास्तव में सभी लोग ऐसा करने लगें तो प्लास्टिक कचरा कभी फैलेगा ही नहीं। अतः हम सभी को अपनी गलती में सुधार करना होगा तथा स्वार्थपरता त्याग कर पर्यावरण को प्रदूषण से सुरक्षित तथा स्वस्थ करना होगा। यह मानना कठिन है, परन्तु सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उठाया गया छोटा सकारात्मक कदम बड़ा बदलाव

कविता

हमें कुछ करना होगा

कमला ठाकुर

मानवता की भूल है क्या? वैश्विक महामारी कोराना,
या फिर विज्ञान और प्रकृति का कोई वैर...?
भयंकर महामारी दौर से यूं संपूर्ण मानवता का गुजरना,
कारण क्या रहा होगा जानना होगा
हमें कुछ करना होगा, हमें कुछ करना होगा।

घर में बेबस, मजबूरन खाली बैठे-बैठे
बहुरूपिये कोरोना के मार्ग-निस्तारण का सुनना-समझना काफी हुआ
इतिहास में दर्ज चक्रव्यूह भेदने की कला की तर्ज पर अब
जानलेवा वायरस की श्रृंखला को तोड़ना होगा
हमें कुछ करना होगा, हमें कुछ करना होगा

सारी कायनात का यूं स्तंभित हो जाना
प्रकृति का रूठना है या क्रोधित होना...?
सप्तर्षियों द्वारा स्थापित संस्कृति की मूलभावना की अवहेलना
या फिर कालचक्र का कोई नया अवतरण सब पहचानना होगा
हमें कुछ करना होगा, हमें कुछ करना होगा।

आगे निकलने की होड़ में विकास-पथ पर अग्रसर
न जानें कैसे विनाश-पथ पर खड़े आमूक हो गए
इक्कीसवीं सदी को अपना बनाने की चाह में
आकस्मिक नई आजादी जैसी राह क्यों चल दिए? सब
जानना होगा
हमें कुछ करना होगा, हमें कुछ करना होगा।

चहुं ओर फैले भयावह/असमंजस माहौल से निकलकर
कोरोना के रौद्ररूप व बढ़ते मौत के अहंकार को तोड़ना;
बिगड़ती सारी अर्थव्यवस्थाओं से ऊपर उठना, संभलना
और मिलकर आगे बढ़ना व जीना होगा
हमें कुछ करना होगा, हमें कुछ करना होगा।

स्वच्छता विशेष के साथ रहना, मास्क प्रयोग करना
निर्धारित सामाजिक दूरी को जीवन-चर्या में अपनाना होगा
कैसे अर्थव्यवस्था देश की पटरी पर लाएं
सब विचारणा और स्वयं को नए माहौल में अब ढालना होगा
हमें कुछ करना होगा, हमें कुछ करना होगा।

औक्टा निकेतन, नजदीक एजीएमए स्कूल, प्रथम महिला पुलिस थाना के नीचे, फेज-III, कंगनाधार, शिमला, हिमाचल प्रदेश-171 009, मो. 0 94592 76866

कर सकता है तथा पर्यावरण गिरावट को रोक सकता है। वायु तथा जल प्रदूषण द्वारा विभिन्न प्रकार के रोगों तथा विकारों का जन्म होता है जो हमारे जीवन को खतरे में डालते हैं।

आज के समय में किसी भी चीज को सेहत के नजरिए से सही नहीं कहा जा सकता, जो हम खाना-खाते हैं वह पहले से कृत्रिम उर्वरक के बुरे प्रभाव से प्रभावित होता है, जिसके फलस्वरूप हमारे शरीर की रोग प्रतिरक्षा क्षमता कमजोर होती है। इसलिए, हममें से कोई भी स्वस्थ और खुश होने के बाद भी कभी भी रोगग्रस्त हो सकता है। अनाज, फल और सब्जियां हर पदार्थ रासायनिक खादों से तैयार किया जा रहा है, जहां तक कि अधिक व जल्दी उगाने के चक्कर में तरह-तरह के हथकंडे अपनाए जाते हैं। जो बाद में मानव शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव छोड़ते हैं और रोगग्रस्त बनाते हैं। यही कारण है कि अब लोग ऑरगेनिक अनाज, फल व सब्जियों को ज्यादा तवज्जो दे रहे हैं। लोगों द्वारा अपने घरों, खेत खलियानों आदि में फल-सब्जियां उगाना भी एक अच्छी पहल है। शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा प्रकृति के प्रति हमारा व्यवहार इन सब कारणों की वजह से पर्यावरण प्रदूषण समूचे विश्व की प्रमुख समस्या है और इसका समाधान प्रत्येक व्यक्ति के निरंतर प्रयास और सहभागिता से ही संभव है। हमें पर्यावरण संरक्षण की हर मुहिम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। अपने बच्चों को भी पौधरोपण और पर्यावरण सुरक्षा में योगदान देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। खासकर अपनी प्राचीन बाबड़ियों, पेड़ों व वन्य जीवों के संरक्षण के लिए बढ़-चढ़कर आगे आना होगा। क्योंकि, प्रदूषण में वृद्धि प्राकृतिक स्रोतों में तेजी से कमी का मुख्य कारण है, इससे न केवल वन्यजीवों और पेड़ों को नुकसान हुआ है बल्कि उन्होंने ईको सिस्टम को भी बाधित हुआ है। यह सत्य है कि हमारे द्वारा किया गया छोटा प्रयास बड़ा सकारात्मक बदलाव कर सकता है। अब समय आ चुका है कि प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय हर तरह से बंद हो और उनका विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए। अगर पर्यावरण सुरक्षा में हर व्यक्ति की पहल होगी तो निश्चय ही इसका एक अच्छा सकारात्मक प्रभाव मानव जीवन पर देखने को मिलेगा और प्रकृति का श्रृंगार होगा।

गांव, डाकखाना व तहसील ज्वाली, जिला कांगड़ा हिमाचल प्रदेश, मो. 0 98164 12261

हिंदी पत्रकारिता दिवस

बदलाव की वाहक पत्रकारिता को नमन

◆ अनुज कुमार आचार्य

हिमाचल प्रदेश पर्वतीय प्रदेश है यहां की आबादी दूरदराज के गांवों से लेकर ऊंचे पहाड़ों में कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन करती है। जब प्रदेश में सड़कों का विस्तार नहीं हुआ था और वर्तमान की तरह इंटरनेट आधारित संचार सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं तो आप सहज कल्पना कर सकते हैं कि किस प्रकार से यहां के लोगों की बौद्धिक एवं साहित्यिक अभिरुचियों का परिमार्जन हुआ होगा और कैसे उन्हें समाचार पत्र और साहित्य की सामग्री मिलती रही होगी ? यह अध्ययन करना भी अपने आप में अत्यंत रोचक रहेगा कि हिमाचल प्रदेश का हिंदी मीडिया किस प्रकार से अपने उद्‌भव, उत्थान से आगे बढ़कर पर्वतीय प्रदेश की पत्रकारिता और साहित्यिक सरोकारों के बरक्स खरा उतरा होगा। शायद इसलिए कहा जाता है कि पर्वतीय प्रदेश में पत्र पत्रिका का प्रकाशन पत्थर से पानी निकालने के समतुल्य है। हिमाचल प्रदेश यूं तो पर्वतीय प्रदेश है और पहाड़ी यहां की मुख्य बोली है तथापि कई जिलों और उप मंडलों की अपनी-अपनी बोलियां भी हैं जो पूरे प्रदेश में भिन्नता लिए हैं। सरकारी कामकाज की प्रथम भाषा के रूप में हिंदी को मान्यता प्राप्त है और बीते दो-तीन दशकों से पठन-पाठन, घरों-स्कूलों में सामान्य बोलचाल में हिंदी ने अपनी जड़ें मजबूत की हैं। ऐसे दौर में स्वाभाविक है कि हिमाचल प्रदेश में मीडिया की भूमिका बढ़ी है।

हिमाचल प्रदेश में पत्रकारिता अथवा हिंदी मीडिया का उदय, उद्‌भव उन्नीसवीं सदी के पांचवें दशक में शिमला से 'मॉर्निंग मॉनिटर' के प्रकाशन से हुआ था। सन 1848 में शिमला से द शिमला इंटेलिजेंसर, शिमला एडवरटाइजर, शिमला गार्जियन, द शिमला वीकली, टाइम्स लिटिल वीकली आदि का प्रकाशन होता था और इनके संपादक भी अंग्रेज ही होते थे। इसी वर्ष पहला भाषाई समाचार पत्र 'शिमला अखबार' का प्रकाशन शुरू हुआ। हिमाचल में हिंदी मीडिया भाषाई पत्रकारिता का श्रीगणेश इसी से माना जाता है। तब से लेकर वर्तमान समय तक हिमाचल प्रदेश में पत्रकारिता में अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं। भारत में पत्रकारिता के प्रारंभिक चरणों में शिमला में अंग्रेजी पत्रकारिता का ही वर्चस्व था। हिंदी के पहले पत्र 'शिमला अखबार' को शेख अब्दुल्ला ने निकाल कर भाषाई पत्रकारिता का श्रीगणेश किया था। शायद बहुत कम लोगों को जानकारी होगी कि 1881 में लाहौर से प्रकाशित होने वाला 'द ट्रिब्यून' स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिमला से ही छपना शुरू हुआ था। यह खुशी की बात है कि वर्तमान समय में भी क्षेत्रीय, प्रादेशिक और हिमाचल संस्करण सहित राष्ट्रीय समाचार पत्रों का प्रकाशन हिमाचल की पुण्य धरा से हो रहा है। जैसे कि मैं पहले ही वर्णन कर चुका हूं कि हिमाचल प्रदेश एक दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों वाला पर्वतीय प्रदेश है लिहाजा यह माना जाता रहा है कि यहां मीडिया विशेषकर समाचार पत्रों का प्रकाशन और विस्तार बेहद मुश्किल है। लेकिन जैसे-जैसे सड़कों का विस्तार होता गया प्रदेश तथा लोगों की आर्थिकी सुदृढ़ होती गई और साथ ही शिक्षा क्षेत्र में हिमाचली लोगों की रुचि एवं योग्यता बढ़ती गई वैसे-वैसे हिंदी साहित्य एवं पत्रकारिता की सभी विधाओं के लेखन में वृद्धि हुई तथा लोगों की पठन-पाठन में रुचि बढ़ती गई। यह तथ्य भी ज्ञातव्य है कि किसी जमाने में हिमाचल आने वाले हिंदी के अखबार पंजाब अथवा चंडीगढ़ से छप कर आते थे। जिनमें दैनिक पंजाब केसरी,दैनिक वीर प्रताप, दैनिक द ट्रिब्यून (हिंदी/अंग्रेजी) दैनिक जनसत्ता आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा 1986 में शिमला से दैनिक हिमाचल सेवा का प्रकाशन भी शुरू हुआ जिसमें मैंने बतौर पत्रकार अपनी सेवाएं दीं।

राष्ट्रीय समाचार पत्रों में दैनिक भास्कर, दैनिक अमर उजाला, दैनिक जागरण, दैनिक दिव्य हिमाचल के स्थानीय संस्करणों का हिमाचल में पदार्पण हुआ। इसके अलावा दैनिक हिमाचल दस्तक, दैनिक आपका फैसला, दैनिक हिमाचल सवेरा आदि का नियमित प्रकाशन आजकल जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश से हो रहा है। इसी तरह 80 के दशक में धर्मशाला के एक युवक द्वारा बिना किन्हीं संसाधनों और मजबूत आर्थिक आधार के अपने स्तर पर पहले पाक्षिक और बाद में साप्ताहिक समाचार पत्र हिमाचल केसरी को भी पत्रकारों की नर्सरी के रूप में तैयार करने का श्रेय जाता है। हिमाचल केसरी के युवा संपादक श्री प्रवीण राय वर्षों तक इस समाचार पत्र को सीमित संसाधनों के बावजूद प्रकाशित करते रहे और इतना ही नहीं उन्होंने अपने

बलबूते हिमाचल केसरी बैनर तले प्रदेश की हस्तियों को लगातार 35 वर्षों तक वर्ष दर वर्ष अपने वार्षिक कार्यक्रम में सम्मानित करते रहने की अनूठी मिसाल कायम की जो अपने आप में अद्भुत है। इस प्रकार आप देख सकते हैं कि आज उपरोक्त वर्णित सभी समाचार पत्रों में खबरों संबंधी सभी सूचनाएं तो होती ही हैं साथ ही पाठकों को उनकी सांस्कृतिक, राजनीतिक और साहित्यिक अभिरुचियों के अनुरूप पठनीय सामग्री भी प्रभूत मात्रा में मिल रही है।

समाचार पत्र और पत्रिकाएं मानव समाज की दिशा निर्देशिका मानी जाती हैं। समाज के भीतर घटित घटनाओं से लेकर परिवेश की समझ उत्पन्न करने का कार्य पत्रकारिता का प्रथम,महत्वपूर्ण कर्तव्य एवं दायित्व है। राजनीतिक,सामाजिक चिंतन की समझ पैदा करने के साथ विचार की सामर्थ्य ऐसे ही उत्पन्न होती है। पत्रकारिता और साहित्य लेखन ने युगों युगों से अपने इस दायित्व का बखूबी निर्वहन किया है। हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का आपस में अन्योन्याश्रित संबंध है। बीते 5 दशकों से साक्षरता बढ़ने और लोगों की साहित्यिक अभिरुचियों के परिष्कृत होने के साथ-साथ जहां हिंदी साहित्य की कई पत्रिकाएं प्रकाशित हुई हैं तो वहीं वर्तमान में इंटरनेट के बढ़ते उपयोग से सोशल मीडिया के दौर में लोगों के क्रियाकलापों में व्यापक परिवर्तन आया है। ऐसे समय में जबकि पत्रिकाओं के प्रकाशन और उनकी प्रसार संख्या में कमी आई है तो अखबारों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। हालांकि ईपेपर और सोशल मीडिया में क्षण प्रतिक्षण गांव कस्बे शहरों में घटित होने वाली खबरों के तत्काल सचित्र घर में प्रसारित होते रहने से अखबारों के सामने भी अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। अब तो सोशल मीडिया में बिना कोई बड़ा राष्ट्रीय न्यूज चौनल खोले ही मोबाइल पत्रकारिता का दौर शुरु हो गया है तथापि संतोष की बात है कि अभी भी समाचार पत्रों ने पाठकों के एक बड़े वर्ग को अपने साथ जोड़े रखा हुआ है।

जहां तक हिमाचल प्रदेश में पत्रकारिता विषय की पढ़ाई का सवाल है संभवतः रोजगार के कम विकल्पों एवं संभावनाओं के चलते इस क्षेत्र में युवाओं तथा नई पीढ़ी का रुझान कम हुआ है। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अंतर्गत पत्रकारिता विषय संचालित किया जा रहा है लेकिन सीटें पूरी नहीं भर रही हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में पत्रकारिता विषय में हिमाचल के बजाय बाहरी राज्यों के युवा ज्यादा है। युवाओं के पत्रकारिता के क्षेत्र में घटते हुए रुझान से आने वाले समय में प्रशिक्षित पत्रकारों की कमी हो सकती है? धर्मशाला के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रूसा के तहत पहली बार मेजर विषय के रूप में पत्रकारिता विषय की कुल 80 सीटों के लिए 11 आवेदन महाविद्यालय को मिले हैं।वहीं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र,धर्मशाला में 2009 से चल रहे पत्रकारिता विभाग को बंद कर दिया गया है क्योंकि पत्रकारिता विषय में छात्रों का प्रवेश न के बराबर हो गया था। जिन संस्थानों में पत्रकारिता का विषय पढ़ाया भी जा रहा है तो वहां आधारभूत ढांचा और सुविधाएं अभी विकसित नहीं हुई हैं।

भारत के संचार माध्यम जिसे हम आम बोलचाल की भाषा में मीडिया कहते हैं, के अंतर्गत टेलीविजन, न्यूज चैनल, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र, पत्रिकाएं और इंटरनेट के माध्यम से प्रचारित-प्रसारित होने वाली नई जानकारियां सारी सामग्री मीडिया के अंतर्गत आती हैं। भारत के सरकारी मीडिया को छोड़ दें तो अधिकांश मीडिया निजी क्षेत्र का है। भारतीय समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार कार्यालय के 31मार्च 2018 के आंकड़ों के अनुसार उनके पास पंजीकृत भारतीय समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं की कुल संख्या 01 लाख 18 हजार 239 थी जिसमें से अखबारों की संख्या 17573 थी। वर्तमान समय में देश में टीवी चेनल्स की कुल संख्या लगभग 900 के आसपास है जिनमें से 490 के करीब न्यूज चेनल्स हैं और शेष मनोरंजन टीवी चेनल्स हैं। भारत आज के दौर में विश्व की सबसे बड़ी मीडिया मंडी है। आज से 30-40 वर्ष पूर्व जैसा कि प्रचलन है अंग्रेजी दां लोगों को महत्त्व दिया जाता था और हिंदी भाषी हीनता की भावना से ग्रसित रहते थे और यही हाल लगभग हिंदी मीडिया का भी था। लेकिन प्रसन्नता का विषय है कि

भारत के संचार माध्यम जिसे हम आम बोलचाल की भाषा में मीडिया कहते हैं, के अंतर्गत टेलीविजन, न्यूज चैनल, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र, पत्रिकाएं और इंटरनेट के माध्यम से प्रचारित प्रसारित होने वाली नई जानकारियां सारी सामग्री मीडिया के अंतर्गत आती हैं। भारत के सरकारी मीडिया को छोड़ दें तो अधिकांश मीडिया निजी क्षेत्र का है। भारतीय समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार कार्यालय के 31मार्च 2018 के आंकड़ों के अनुसार उनके पास पंजीकृत भारतीय समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं की कुल संख्या 01 लाख 18 हजार 239 थी। जिसमें से अखबारों की संख्या 17573 थी। वर्तमान समय में देश में टीवी चेनल्स की कुल संख्या लगभग 900 के आसपास है जिनमें से 490 के करीब न्यूज चेनल्स हैं और शेष मनोरंजन टीवी चेनल्स हैं। भारत आज के दौर में विश्व की सबसे बड़ी मीडिया मंडी है।

हालिया वर्षों में जनसंचार मीडिया के सभी माध्यमों में हिंदी ने अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। आज हिंदी अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम बन गई है तथा बाजार की स्पर्धा के चलते ही सही अंग्रेजी चैनलों का भी हिंदी में रूपांतरण हो रहा है। आज लाखों ब्लॉग, सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएं इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। यहां तक कि मीडिया की एक नई विधा मोबाइल पत्रकारिता का प्रचलन भी सोशल मीडिया में बढ़ता जा रहा है। सोशल मीडिया में आम जनमानस भी भरपूर अपनी भावनाओं को लिखकर एवं बोलकर अभिव्यक्त कर रहा है। इसी तरह यूट्यूब पर लोग बखूबी वीडियो ब्लॉग चला कर वाहवाही लूट रहे हैं। डिजिटल दुनिया में हिंदी की मांग अंग्रेजी से 5 गुना ज्यादा है। भारत में आज हर पांचवा इंटरनेट उपयोगकर्ता हिंदी का उपयोग करता है। देश में जहां हिंदी सामग्री की डिजिटल मीडिया में खपत 94 फीसदी की दर से बढ़ी है तो वही अंग्रेजी सामग्री की खपत केवल 19 फीसदी की दर से ही बढ़ी है। भारत में 50 करोड से ज्यादा लोग हिंदी बोलते हैं। 21 फीसदी भारतीय इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग करते हैं। इंटरनेट के कारण मोबाइल में हिंदी के प्रयोग को बेहतरीन गति मिली है।

जिस प्रकार से परिवर्तन सृष्टि का आधारभूत एवं अनिवार्य नियम है और पृथ्वी में जो कुछ भी उत्पन्न होता है वह नाश को प्राप्त करता है।उसी प्रकार निरंतर नवनिर्माण भी एक अनिवार्य सच्चाई है। चूंकि मनुष्य रचनाधर्मी प्राणी है वह निरंतर प्रयोगों, शोधों और खोजबीन में संलग्न रहता है। लिहाजा आज हमारे पास संस्कृति जन्य जो कुछ भी उपलब्धियां हैं वह लाखों लोगों की खोजों तथा उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति का ही सुपरिणाम है। हमारे अड़ोस-पड़ोस और देश काल में क्या घटित हो रहा है की खोज खबर रखना जानना ही समाचार है और सूचनाओं को संगृहीत करने की यह मानवीय प्रवृत्ति शताब्दियों से चली आ रही है। आदि काल से लेकर पौराणिक काल,महाभारत काल और मुगलकाल सभी कालों में मीडिया की भूमिका बराबर रही है केवल उसके नाम और स्वरूप अलग रहे होंगे। बीते 200 सालों में मुद्रण संस्कृति में परिवर्तन के साथ-साथ तकनीक में आने वाले बदलावों से मीडिया की भूमिका, कार्यशैली में व्यापक बदलाव आए हैं। वर्तमान समय में जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के स्वरूप, प्रयोग, प्रसार, अभिवृद्धि और संवर्धन में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

मोबाइल एवं इंटरनेट के जमाने में जब लोगों का रुझान पारंपरिक रूप से पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति से घटा है तथापि मीडिया जिसमें समाचार पत्र भी मुख्यतः शामिल हैं। इस गैप को भरने का बखूबी कार्य कर रहे हैं। आज के दौर में अखबारों ने अपने आप में कविता, कहानी, गजल, गीत, निबंध, नाटक, एकांकी, संस्मरण, यात्रा वृतांत, शब्द चित्र,सामान्य ज्ञान,रिपोर्ताज,पुस्तक समीक्षाएं, आलोचना, पाठकनामा, बच्चों का कोना, उपन्यास और आलेखों को समावेशित करके गागर में सागर भरने जैसा कार्य किया है। हिमाचल प्रदेश में हिंदी मीडिया ने लोगों को साहित्य पढ़ने की ओर प्रवृत्त करने के लिए साप्ताहिक विशेषांक शुरू किए हैं। हिमाचल के अन्य प्रमुख अखबारों द्वारा भी पाठकों को साहित्यिक सामग्री परोसने का क्रम जारी है। हिमाचली मीडिया में ऐसे बहुत से श्रेष्ठ संपादक हैं जिनकी साहित्यिक सोच, ज्ञान, योग्यता और अभिरुचि से उनके द्वारा संपादित दैनिक समाचार पत्रों की भाषा, क्लेवर, साहित्यिक सामग्री से उस पत्र की ख्याति बढ़ी है और पाठकों का एक बड़ा वर्ग उनकी ओर आकर्षित हुआ है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि साहित्यिक पत्रकारिता लोकमत निर्माण और लोक शिक्षण का कार्य परोक्ष ढंग से करती है। इस प्रकार वह समाज की विचार चेतना के विकास में व्यापक सांस्कृतिक एवं सामाजिक जनरुचि के परिष्कार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यूं तो सरकारी पत्र पत्रिकाओं को निकृष्ट श्रेणी का ही समझा जाता है लेकिन हिमाचली हिंदी मीडिया के संदर्भ में हिमाचल सरकार के जनसंपर्क विभाग की साप्ताहिक अखबार गिरिराज और मासिक पत्रिका हिमप्रस्थ ऐसे दो अनूठे प्रकाशन हैं जिनका अपना एक अलग प्रबुद्ध पाठक वर्ग है और इन प्रकाशनों में प्रायः सभी लेखक/ साहित्यकार छपने के लिए लालायित रहते हैं और पाठकों को भी इनके अंकों का बेसब्री से इंतजार रहता है। हिमाचल की अन्य पत्रिकाओं में बिपाशा, इरावती आदि प्रमुख हैं। यह सत्य है कि भारतीय पत्रकारिता की उद्भव भूमि कोलकाता रही है लेकिन हिंदी मीडिया को उसके शिखर तक ले जाने और संवर्धन का श्रेय काशी/इलाहाबाद को जाता है। काशी (वाराणसी) और प्रयागराज को साहित्यकारों/ पत्रकारों की उद्गम स्थली भी कहा जाता है। हिंदी के पहले समाचार उदन्त मार्तंड (1826) से पत्रकारिता की शुरुआत मानी जाती है जिसके संपादक पंडित जुगल किशोर थे। चूंकि साप्ताहिक समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड की शुरुआत 30 मई 1826 के दिन हुई थी इसलिए 30 मई को प्रतिवर्ष 'हिंदी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। कोरोना काल में मीडिया ने जनता तक खबरों की पहुंच बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। लेकिन इसके साथ ही कोरोना संक्रमण के समय में प्रिंट मीडिया पर भी संकट के आसार दिख रहें हैं। लिहाजा सरकारों को भी लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ की मजबूती के लिए राहत पैकेज जारी करने के साथ साथ सरकारी विज्ञापनों के माध्यम से इनकी आर्थिक मदद करने बारे सोचना चाहिए। परिस्थितियां पुनः सुधरेंगी इसी विश्वास के साथ हिंदी पत्रकारिता दिवस पर सभी प्रबुद्ध पाठकों, पत्रकारों, लेखकों एवं साहित्यकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ !

गांव नागन, डाकघर खड़ानाल, तहसील बैजनाथ, जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश - 176115, मो. 0 70187 76262

आलेख

दूसरों की प्रसन्नता में ही आनंद

◆ सीताराम गुप्ता

किसी का पोस्ट किया हुआ एक संदेश पढ़ रहा था। संदेश अंग्रेजी में था - इफ समवन मेक्स यू हैप्पी, मेक देम हैप्पीअर। यदि कोई आपको प्रसन्नता प्रदान करता है तो उसे और अधिक प्रसन्नता प्रदान कीजिए। बहुत अच्छी बात है। आजकल बच्चों के जन्मदिन पर जो बच्चे उपहार लेकर आते हैं उन्हें भी रिटर्न गिफ्ट्स दिए जाते हैं। यदि कोई हमें कुछ देता है तो हमें भी उसे अवश्य ही कुछ न कुछ देना चाहिए। कुछ अधिक दे सकें तो और भी अच्छी बात है। जो हमें प्रसन्नता प्रदान करे उसे प्रसन्नता प्रदान करें। जो हमें मिठाई खिलाए उसे हम भी मिठाई खिलाएं। जितनी उसने खिलाई है उससे भी अधिक खिलाएं। यदि हमें मिठाई खिलाने वाला मधुमेह से पीड़ित है तो क्या फिर भी उसे मिठाई खिलाएं और खूब मिठाई खिलाएं? और यदि कोई हमें कष्ट पहुंचाए तो क्या हम भी उसे और ज्यादा कष्ट पहुंचाएं? जो हमें प्रसन्नता न पहुंचा सकें अथवा हमारी मदद न कर सकें उनके साथ हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? क्या ऐसे व्यक्तियों की मदद करने या उन्हें प्रसन्नता प्रदान करने के विषय में हमें संकुचित मानसिकता का परिचय देना चाहिए?

एक पैंतालीस साल पुरानी घटना याद आ रही है। एक शादी में एक युवक भी सम्मिलित हुआ था। उसने शगुन के तौर पर एक सौ पैंतीस रुपए दिए। उस समय शगुन के लिफाफे प्रचलन में नहीं आए थे। शगुन के पैसे इकट्ठे करने के लिए किसी समझदार व्यक्ति को बिठा दिया जाता था। जिन्हें जो भी देना होता सीधे उस व्यक्ति के हाथ में दे देते और वो एक कापी में अथवा किसी कागज पर लिखता जाता। लोग प्रायः ग्यारह, इक्कीस, इक्यावन, एक सौ ग्यारह, एक सौ इक्यावन अथवा दो सौ एक रुपए देते थे। शगुन के एक सौ पैंतीस रुपए देखकर आसपास बैठे सभी लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक सज्जन ने पूछ लिया , ''अरे भई ये एक सौ पैंतीस रुपए किस हिसाब से दिए?'' लड़के ने झट से जवाब दिया, ''पांच साल पहले मेरी बहन की शादी में इन्होंने एक सौ एक रुपए दिए थे। ग्यारह-ग्यारह रुपए अलग से दो बार और दिए थे। इस हिसाब से हुए कुल एक सौ तेईस रुपए। मेरी मां ने कहा था कि इनके जितने रुपए आए हुए हैं उनसे दस-बारह रुपए फालतू दे आना इसलिए एक सौ तेईस में बारह रुपए और जोड़कर एक सौ पैंतीस रुपए दे दिए।

इस प्रकार का लेन-देन हमें घोर व्यावसायिक बना देता है जिससे व्यक्तित्व में उदात्त जीवन मूल्यों का समावेश नहीं हो पाता व संबंधों में आत्मीयता नहीं आ पाती। किसी अवसर पर हमें ग्यारह सौ रुपए देने हों तो ग्यारह सौ रुपए न होने पर पांच सौ या कम भी दिए जा सकते हैं। बिल्कुल न होने पर किसी को शुभकामनाएं तो दी ही जा सकती हैं। किसी ने हमें मात्र सौ रुपए दिए हैं तो उसे सौ ही लौटाना जरूरी नहीं। हम आवश्यकतानुसार हजार, दो हजार अथवा ज्यादा भी लौटा सकते हैं। लेकिन नहीं ऐसा नहीं कर सकते। एक सिस्टम होता है उसी के अनुसार चलना पड़ता है। हम बहुत व्यवहारकुशल होते हैं। यही अति व्यवहार कुशलता हमारी वास्तविक प्रसन्नता में सबसे बड़ी बाधक होती है। कोई हमें प्रसन्नता का अवसर प्रदान करता है तो ये बड़ी अच्छी बात है लेकिन उसे उसी अनुपात में थोड़ी सी अधिक प्रसन्नता कैसे लौटाई जा सकती है? प्रसन्नता कोई ऐसी चीज तो है नहीं जिसे किसी कैप्सूल में बंद करके किसी को दे दिया जाए। कोई हमें प्रसन्नता कैसे दे सकता है? प्रसन्नता तो एक आंतरिक भाव है, एक आदत है, एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। फिर भी भौतिक जगत में हम एक दूसरे को प्रसन्न करने का प्रयास करते रहते हैं।

यदि कोई हमें हमारी पसंद की कोई वस्तु देकर अथवा हमारी किसी अवसर पर आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता करके हमारी प्रसन्नता में वृद्धि करता है तो हम केवल उसे वही चीजें लौटाते हैं तो ये आपसी लेन-देन अथवा उधार चुकाने जैसा ही है। यदि कोई ऐसा भी नहीं करता तो वो तो संसार का निकृष्टतम व्यक्ति है इसमें संदेह नहीं। यदि कोई हमारे साथ अच्छा व्यवहार करता है जिससे हमारी प्रसन्नता में वृद्धि होती है तो हमें भी उसके साथ उससे भी अच्छा व्यवहार करना चाहिए लेकिन क्या अन्य लोगों के साथ हमें अच्छा व्यवहार नहीं करना चाहिए? क्या हम स्वयं अच्छा व्यवहार करने का शुभारंभ नहीं कर सकते? कई लोग प्रायः कहते सुने जाते हैं कि हमारे साथ जो जैसा व्यवहार करेगा हम भी उसके साथ बिलकुल वैसा ही व्यवहार करेंगे। दूसरे लोग भी तो यह बात कह या कर सकते हैं। ऐसे में यदि हम ऐसे लोगों से अच्छा व्यवहार करेंगे तो वे भी निश्चित रूप से हमारे साथ

अच्छा व्यवहार ही करेंगे। यदि हम दूसरों को प्रसन्नता प्रदान करेंगे तो उसके लौटकर आने की संभावना भी कम नहीं है।

प्रायः ऐसा होता है कि यदि कोई हमें रोटी खिला देता है तो हम भी उसे रोटी खिलाने का कोई न कोई अवसर तलाशते रहते हैं और न इच्छा होने पर भी उसे जबरदस्ती खिलाकर ही मानते हैं। हम रोटी खिलाकर जिसका कर्ज उतारने की कोशिश करते हैं उसे उसकी जरूरत ही नहीं होती जबकि पास ही किसी अन्य व्यक्ति को उसकी सख्त जरूरत होती है। किसी दुर्घटना में घायल होने पर यदि कोई व्यक्ति हमारी मदद करता है तो क्या हमें उसका बदला उतारने की कोशिश में रहना चाहिए या ये संकल्प लेना चाहिए कि मैं जहां कहीं भी किसी घायल व्यक्ति को देखूंगा हर हाल में उसकी मदद करूंगा? कोई हमारी मदद करता है अथवा हमें प्रसन्नता का अवसर प्रदान करता है तो हम उसकी बजाय किसी अन्य को भी प्रसन्नता प्रदान करने अथवा उसकी मदद करने का प्रयास कर सकते हैं। यदि कोई भी हमारी मदद नहीं करता अथवा हमारे जीवन में प्रसन्नता के क्षण लाने का प्रयास नहीं करता तो भी हमें दूसरों की मदद करने अथवा दूसरों के जीवन में प्रसन्नता के क्षण लाने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि इसी में वास्तविक प्रसन्नता निहित होती है।

जिसने हमारी मदद की, लोग प्रायः करते ही रहते हैं, यदि उसको हमारी मदद की जरूरत नहीं है तो उसकी मदद करने की बजाय किसी अन्य जरूरतमंद की मदद करना ज्यादा बेहतर होगा। अन्य की कोई परिभाषा अथवा सीमा नहीं होती। हम जहां भी जाएं लोगों में खुशी बांटने का प्रयास करें। यदि प्रसन्नता का ये चक्र एक बार प्रारंभ हो जाता है तो एक दिन सारा समाज प्रसन्नता से सराबोर हो जाएगा। जब सारा समाज प्रसन्नता से सराबोर हो जाएगा तो कोई ताकत नहीं जो हमें प्रसन्न होने से रोक दे। कोई हमें प्रसन्नता प्रदान करता है तो हम उसे भी प्रसन्नता लौटाएं इसका विरोध नहीं किया जा रहा है लेकिन हम स्वयं भी क्यों नहीं प्रसन्नता बांटने की पहल करें? यदि संसार में सबसे प्रसन्न व्यक्ति हैं तो वे ही हैं जो दूसरों के चेहरों पर मुस्कान लाने का कार्य करते हैं। अमरीका के कर्नल ऑल्कार्ट के साथ मिलकर थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना करने वाली रूसी महिला हेलन पेत्रोव्ना ब्लावात्स्की की याद आ रही है।

हेलन पेत्रोव्ना ब्लावात्स्की ने पूरी दुनिया की सैर की और इस घुमक्कड़ी में एक थैला हमेशा उनके साथ होता था। उनके इस थैले में रंग-बिरंगे, खुशबूदार फूलों के बीज भरे होते थे । मेडम ब्लावात्स्की जहां कहीं से भी गुजरतीं और खाली जमीन पातीं वहीं वे फूलों के कुछ बीज मिट्टी में दबा देतीं। लोग उनसे पूछते कि जब ये बीज उगेंगे तथा पौधे बड़े होकर फूलों से लद जाएंगे तब उन फूलों की खुशबू और रंगों का आनंद लेने के लिए तो आप यहां नहीं होंगी। फिर आप क्यों जगह-जगह फूलों के ये बीज बोती फिरती हैं? मेडम ब्लावात्स्की जवाब देतीं, ''यदि मैं इन फूलों को देखकर आनन्दित नहीं हो पाऊंगी तो क्या? आप सब तो इन फूलों को देखकर अवश्य प्रसन्न होंगे। अन्य जो लोग उस समय यहां आएंगे वे तो आनन्दित होंगे। फूल तो सब लोगों के लिए खिलेंगे और अपनी सुगंध बिखेरेंगे।'' दूसरों के जीवन में आनंद भर देने का निरंतर प्रयास करने वाले व्यक्ति न केवल महान होते हैं अपितु स्वयं भी प्रसन्नता से सराबोर रहते हैं। लोग उन्हें कभी नहीं भुला सकते। हमें भी यदि वास्तविक प्रसन्नता चाहिए तो हमें अपनी संकुचित मनोवृत्ति से ऊपर उठकर अपने अस्तित्व को विराट बनाना होगा व अपने पोषित अहंकार को भी नष्ट करना होगा। मैं किसी का अहसान नहीं लेता अथवा किसी का अहसान उधार नहीं रखता ये भी एक संकीर्ण मनोभाव ही है। समाज के सहयोग के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। कोई किसी भी रूप में हमारी सहायता करता है तो उसके प्रति कृतज्ञता का भाव तो होना चाहिए लेकिन उसको उतारने व कुछ ज्यादा देने के अहंकार से हमें पूर्णतः मुक्त होना चाहिए और जिनको हमारी सहायता की जरूरत है उनके लिए हमें बिना भेदभाव के आगे आना चाहिए। जहां तक किसी से प्राप्त सहायता अथवा व्यवहार द्वारा प्रसन्नता की बात है ये प्रसन्नता स्थायी नहीं हो सकती। परिस्थितियों के बदलते ही प्रसन्नता का लोप होना भी स्वाभाविक है। जब हम स्वयं में दूसरों को प्रसन्नता प्रदान करने की भावना विकसित कर लेते हैं तो हमारे अंदर प्रसन्नता का अजस्र स्रोत प्रवाहित होने लगता है। इसलिए कोई हमें सहयोग करे या न करे, किसी से हमें प्रसन्नता मिले या न मिले, हमें दूसरों को प्रसन्नता प्रदान करने के अवसरों को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इसी में निहित है वास्तविक प्रसन्नता का सूत्र।

हमें भी यदि वास्तविक प्रसन्नता चाहिए तो हमें अपनी संकुचित मनोवृत्ति से ऊपर उठकर अपने अस्तित्व को विराट बनाना होगा व अपने पोषित अहंकार को भी नष्ट करना होगा। मैं किसी का अहसान नहीं लेता अथवा किसी का अहसान उधार नहीं रखता यह भी एक संकीर्ण मनोभाव ही है। समाज के सहयोग के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। कोई किसी भी रूप में हमारी सहायता करता है तो उसके प्रति कृतज्ञता का भाव तो होना चाहिए लेकिन उसको उतारने व कुछ ज्यादा देने के अहंकार से हमें पूर्णतः मुक्त होना चाहिए और जिनको हमारी सहायता की जरूरत है उनके लिए हमें बिना भेदभाव के आगे आना चाहिए।

ए. डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034
मो. 0 95556 22323

आलेख

स्कूली पाठ्यक्रम में बाल साहित्य

◆ अनंत आलोक

बाल साहित्य का पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय हमें बाल साहित्य में विशेष योग्यता रखने वाले अध्यापक या लेखक का परामर्श एवं सहयोग लेना चाहिए ताकि कोई भ्रम या भ्रान्ति न रहे। पाठ्यक्रम निर्धारण से पूर्व विषय वस्तु के साथ उसकी भाषा, शिल्प सही है या नहीं यह विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है।

किसी देश का भविष्य उसकी पाठशालाओं में लिखा जाता है और यह एक कटु सत्य है कि इस भविष्य को लिखने वाले लेखक यानि अध्यापक मजबूर हैं कि वे केवल वही लिखें जो उनसे लिखवाया जाये। जरुरी है कि पाठ्यक्रम निर्धारित होना चाहिए लेकिन प्रत्येक अध्यापक की पाठशाला में पढ़ने वाला प्रत्येक विद्यार्थी मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से भिन्न है। प्रत्येक बालक-बालिका की आवश्यकताएं भिन्न हैं। उनके सीखने के ढंग भिन्न हो सकते हैं, उनकी परिस्थितियां भिन्न हो सकती हैं। फिर भला कैसे हम एक ही पाठ्यक्रम निर्धारित कर यह अपेक्षा रख सकते हैं कि प्रत्येक बालक-बालिका का अधिगम एक जैसा हो। जब हम हिमाचल की बात करते हैं तो यह और भी जटिल जान पड़ता है। एन सी एफ 2005 के अनुसार प्रत्येक बालक या बालिका का पाठ्यक्रम उसके स्थानीय आधार पर उसकी आवश्यकता के अनुसार निर्धारित होना था लेकिन हम कहाँ तक यह कर पाए हैं यह हम सब जानते हैं। पाठ्यक्रम बाल मनोविज्ञान के आधार पर तैयार किया जाता है लेकिन यह भी उतना ही आवश्यक है कि जिस कक्षा के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित किया जा रहा है उस कक्षा के अध्यापक को उसके निर्माण में शामिल किया जाए क्योंकि वह उन बालक-बालिकाओं के बारे में, उनके स्तर के बारे में अधिक जानता है और वास्तविकता भी वही जानता है जो उन्हें पढ़ा रहा है। लेकिन ऐसा होता नहीं है। कुछ ही लोगों के द्वारा तैयार करवाया गया पाठ्यक्रम पूरे देश के लिए निर्धारित कर दिया जाता है। हद तो तब हो जाती है जब पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया बाल साहित्य ही संदेह के घेरे में आ जाता है। बाल साहित्य का पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय हमें बाल साहित्य में विशेष योग्यता रखने वाले अध्यापक या लेखक का परामर्श, सहयोग लेना चाहिए ताकि कोई भ्रम या भ्रान्ति न रहे। पाठ्यक्रम निर्धारण से पूर्व विषय वस्तु के साथ उसकी भाषा, शिल्प सही है या नहीं यह विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। आज एन. सी. इ. आर. टी. ने समस्त भारत में एक जैसा पाठ्यक्रम निर्धारित किया है। वह भले ही राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित है लेकिन बाल साहित्य की बात करें तो दोनों ही भाषाओं यथा हिंदी और अंग्रेजी में न तो बाल कहानियों का कोई स्तर है और न ही बाल कविताओं का। विशेष रूप से जब हम छोटी कक्षाओं की बात करें जिनमें एक से पांच कक्षा आती है वहां आवश्यक है कि कविताएं छंदबद्ध हों। छंद में यति गति लय और तुकांत हों जिन्हें अध्यापक-अध्यापिका गाकर बालक-बालिका को सिखा सकें। छंद की विशेषता है कि वह नन्हें बालक ही नहीं बड़ों को भी आनंद प्रदान करता है। छंद सहजता से ग्राह्य है। छंद सहजता से स्मरण होता है जो बालक-बालिका में साहित्य के प्रति आकर्षण और रुचि उत्पन्न करता है।

लेकिन वर्तमान में ऐसी कविताएं पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं जो किसी छंद विशेष का पालन नहीं करतीं और यह केवल हिंदी में ही नहीं, अंग्रेजी में भी ऐसा ही है। कुछ भारी भरकम बोझिल कविताएं निर्धारित कर हम बालक-बालिका के मन में साहित्य के प्रति अरुचि उत्पन्न कर रहे हैं ऐसा कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बालक या बालिका का कोमल मन अभी इतना विकसित नहीं हुआ होता कि हम उससे आशा करें कि वह उपमान, बिम्ब, अभिधा लक्षणा व्यंजना को समझे। यह सब समझने के लिए महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को भी नाकों चने चबाने पड़ते हैं फिर हम इस स्तर पर ऐसी आशा कैसे कर सकते हैं। यहाँ कविता में सिर्फ और सिर्फ छंद ही प्रभावशाली हो सकता है। कहानियां वैज्ञानिक आधार पर मानव मूल्यों की सीख देने वाली सामाजिक हों, कोरी कल्पना से बाहर निकलें तो हमारा भविष्य शायद सुखद हो सके और हम एक सुखी समृद्ध समाज की कहानी गढ़ सकें।

साहित्यालोक, बायरी, डाकघर व तहसील ददाहू, जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश-173022, मो. 0 94187 40772

माह के कवि

मनोज चौहान की कविताएं

हिंसक भेड़िये

जंगली हिंसक भेड़ियों के
साम्राज्य की / सीमाएं लांघती वह
महफूज रही हमेशा ही
उदर अग्नि बुझाने को आतुर
नरभक्षी जानवरों के डर
और आशंकाओं के बीच भी।

पिता के झुकते कन्धों की
जिम्मेदारियों को /वह चाहती थी बाँटना
बनकर अफसर बिटिया
माँ की थी मानो परछाई
उसकी नजरों में
एक सफल भावी गृहणी।

डरावने जंगलों का खौफ पाले
वह हो गई थी निर्भीक
अनजान थी वह
इंसानी हिंसक भेड़ियों के
उस झुण्ड से / जो टूट पड़ा था उसे
नोचने/ हैवानियत, पशुवृत्ति
और दरिंदगी की
चरम सीमाओं को लांघ कर।

उसकी चीख पुकार से
सहम गए होंगे देवदार
वह चाहती थी जीना
गिड़गिड़ाती रही वह
दरिंदों के समक्ष / मगर वे हो गए थे
अंधे और बहरे /वहशीपन की तृष्णा में।

न्याय की इबारतों में
अपराधियों के लिए
सुनाई जाएगी कड़ी सजा
मगर क्या / गुड़िया के कातिलों को
दी जाने वाली सजा
दिला पायेगी उसे न्याय/ यथार्थ में ही।

या फिर / जरूरत है आज
समाज के उस रुग्ण अंग की
गहन और गंभीर
शल्य चिकित्सा करने की
जो फैला रहा है जहर
जहरीले सांप के/ दंश की तरह ?

(04 जुलाई, 2017 को हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला के कोटखाई में हुए गुड़िया गैंगरेप और हत्याकांड से आहत होकर लिखी गई रचना)

ढिंढोरची

साहब/ ढिंढोरची हैं वे
बगुले के माफिक
मार आते हैं चोंच इधर-उधर
ताकि कुछ केंचुओं को बना सकें
अपना शिकार ।

उनकी तथाकथित गैंग
भरती है दंभ/ बेहतर मनुष्य होने का
इसीलिए आये दिन
सोशल मीडिया पर दिखते हैं उनके फोटू
व्हाट्स एप्प पर शेयर होती है
उनकी मनुष्यता
पीड़ा और अवसाद को वे महसूसते नहीं
महज प्रचारित करने के हुनर में माहिर हैं।

क्या कहा/ समाजसेवक !
अरे नहीं/ अपनी ही जमात के
दूसरे ढिंढोरचियों के मध्य
उन्हें कायम रखना है
अपना बनावटी रसूख
इसलिए एक-आध महीने में
यह उपक्रम करना
उन्हें लगता है जरूरी ।

एक मूल प्रश्न जो खड़ा है
दशकों से सामने
अनुत्तरित है आज भी
अस्तित्व के मूल प्रश्न से सामना होने पर
उनके कानों में मानो
पिघल जाता है शीशा
तालु में चिपक जाती है उनकी जीभ
साथ न चलना पड़े
इसलिए उन्हें लकवा मार जाता है
सच्चाई को देखने मात्र से
उनकी आंखों में छा जाता है मोतिया ।

मुट्ठी भर चंद लोग
जो लड़ रहे हैं उनके भी हिस्से की लड़ाई
उन्हें वे अपना विरोधी मानते हैं
भागते हैं कोसों दूर
उनकी घबराहट उनके कृत्यों से
साफ नजर आती है ।

वे ढिंढोरची हैं साहब
आप उन्हें मान सकते हैं
मौकापरस्त/ सुविधाजीवी
और तुच्छ दर्जे के स्वार्थी भी
समय आने पर
वे केंचुली बदलकर डस लेंगे
उन्हें शय देना/ संकट को पोषित करना है
वे असल में/ किसी के भी सगे नहीं हैं !

विदा हुए चेहरे

कुछ चेहरे जो अब नहीं हैं
हमारे आसपास/ असमय आ जाते हैं
आंखों के सामने
जहां तक स्मृतियां ले जाती हैं

सबसे हो जाता है/ आभासी मिलन
बारी-बारी से/ चाहे क्षणभर ही सही।

विदा तो होना ही है/ हमें भी एक दिन
इसी सार्वभौमिक सत्य के साथ
मिली थीं सांसें/ हम भी आएंगे एक दिन
स्मृतियों में किसी की।

हम काबिल बने/ हमने मेहनत की
अपने खून को पसीने में तब्दील कर
हमने हासिल किए मुकाम
लेकिन नहीं रोक पाए/ अपने ही भीतर
दंभ के बीजों का अंकुरण।

हमारे दुःख / हमारी तकलीफें
हमारी चिंताएं/ हमारे सुख
हमेशा एक जैसे ही रहे
हमारे बीच भले ही नहीं हुई बात
लेकिन हम होते रहे आश्वस्त
जानकर/ एक-दूसरे का हाल।

हमारी शिक्षा/ हमारे मकान
हमारी जमीन/ हमारा वैभव
हमारी पूंजी/ हमारा रसूख
हमारी प्रसिद्धि/ बनते रहे उर्वरक
और पोषित करते रहे
अहंकार की फसल।

यकीनन उसी रोज/ चूर होगी
हमारी कटुता / हम होंगे शामिल
उस दिन/ विदा हुए चेहरों में !

बताना रह गया

माँ तुम्हें बताना रह गया
कि मैंने आज कक्षा में
टीचर को दिए थे / सभी प्रश्नों के
सही उत्तर / और उस शरारती चिंटू से
फिर कर ली थी दोस्ती
तुम्हारे समझाने पर ।

मैंने आज खा लिया था
पूरा टिफिन / कपड़ों पर बिना लगाए
सब्जी का / एक भी दाग।

मैं तुम्हें बताना चाहता था
कि मोनू ने कैसे/ बिताई थी छुट्टियां
उसके मम्मी-पापा संग
मैंने भी सोचा था
कि हम दोनों योजना बनाकर
मना लेंगे पापा को/ और जायेंगे घूमने
किसी खुबसूरत टापू पर।

पापा मैं खुश थी / ये सोचकर
कि आप ले चलेंगे शाम को मुझे
आइसक्रीम खिलाने
और लौटती बार/ पार्क में
मैं बैठूंगी बड़े झूले पर।

यह सब अचानक ही हुआ
पलटे खाती स्कूल बस
गिर पड़ी नीचे की ओर
हम बच्चे चीख रहे थे
मम्मी......मम्मी, पापा......पापा
कहते हुए।

कर लेना कलेजा पत्थर का
याद आएं हम / जब भी
हमारे गुल्लक में जमा किये पैसे
दे आना चौराहे पर बैठे
बूढ़े भिखारी बाबा को
जिसकी हथेली में
एक-दो रुपये के सिक्के रखने पर
देता था जो हमें दुआएं
दीर्घायु होने की।

हम नहीं लौट पाएंगे अब
लेकिन अंधों को दिखाना
बहरों को सुनाना / वह सच
जो कि देखा और सुना जाता
वक्त रहते / तो यह सब न होता !

(09 अप्रैल, 2018 को हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला के नूरपुर में हुए बस हादसे से आहत होकर लिखी गई रचना)

चकोतरे का स्वाद

घर से दूर
अस्थायी आवास के आंगन में
सर्दियों की धूप में
चकोतरे को खाना
नमक और तीखी पीसी हुई
हरी मिर्च के साथ
गाँव की एक दोपहर को
जी लेने जैसा है।

मन के कैनवास पर
स्वतः बनते चित्रों को रोकना
हो जाता है जैसे नामुमकिन
मैं भी नहीं कर पाता
अधिक प्रयास / स्मृतियों के इस प्रवाह
को / रोकने का।

लड़कपन के उन दिनों में
चकोतरे के पेड़ों के साये में खेलना
गिनती करना मन ही मन
किसी एक पेड़ पर लगे फलों की
और कभी गुलेल से
निशाना बनाना
जो कि फूल से बाहर झांकते
अभी शैशव काल में ही होते थे।

स्कूल से आते-जाते रास्तों पर
निहारना उन्हें
और कभी दोस्तों संग दूर कहीं
घासनियों में करना उनका पोस्टमार्टम
जेब में रखी / तेजधार ब्लेड से
और फिर खाना चटखारे लगाकर
संग लाए पीसे हुए तीखे नमक के साथ

मानो जैसे कल की ही बात हो।

मन में हल्का अपराधबोध लिए
फिर बनाना रणनीति
अगली बार के लिए
चकोतरे का खट्टा और मीठा स्वाद
सच में जीवन के स्वाद जैसा है।

कविता का व्याकरण

सुनो साथी/ कवि हो क्या तुम ?
तब सृजन नहीं
महज सीखो उत्पादन करना
हर शब्द ऐसा हो
करा दे जो दिमागी कसरत
बौद्धिक खुराक साबित हो जाए
तुम्हारी कविता ।

इसकी फिक्र मत करना
कि आम आदमी समझेगा तुम्हारा लिखा
तुम्हारा धेय महज
आलोचकों और संपादकों का
ध्यानाकर्षण होना चाहिए
तभी कहलाओगे तुम
नामचीन कवि
पा सकोगे सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार ।

संवेदी हो उठो कभी किसी घटना पर
या जाग उठे विद्रोही भाव
कर देना मर्दन इनका
लिखना मत यथार्थ को
दौड़ाना उस वक्त दिमागी घोड़े
कविता के तमाम व्याकरण
खंगालना तुम/ बढ़ना केवल तभी आगे।

सुनो साथी/ मत पालना यह भ्रम भी
कि कविता लिखने के लिए
जरूरी है उसे जिया जाना
इस मुगालते में भी मत रहना
कि अंतिम जन के लिए ही
होती है कविता ।

प्रगतिशीलता/ साम्यवाद
या इसी तरह की
किसी अन्य विचारधारा की चासनी में
डुबोना अपने शब्दों को
तुम सीख लेना छलना
दूसरों के साथ/ स्वयं को भी ।

बहुत जरूरी भी नहीं
अपने लिखे हुए शब्दों पर
अमल करना
कालजयी कविता के मापदंडों पर
मात्र शोध करना/ तभी कहलाओगे तुम
समर्थ कवि / सुनो मित्र
पीड़ा को महसूसना नहीं
किसी हुंडी के माफिक
उसे भुनाना सीखो !

इस काल खंड में

सदी के/ इस काल खण्ड में
पूछा जाना चाहिए
कि क्यों लौट रहे हैं वे
जो आये थे दो जून की रोटी के लिए
और साथ ही यह भी
सताये जा रहे हैं
वो अभागे किसलिए ?
जिनकी दुनिया महज पेट तक है !

जब पल-पल बदल रहा है
मौत का आंकड़ा
और हम हो रहे हैं आश्वत
यह जानकर कि/ शेष विश्व के मुकाबले
हुई हैं अभी चंद ही मौतें
हम उड़ा सकते हैं खिल्ली
और कोस सकते हैं
रामायण और महाभारत के प्रसारण को
भले ही उन्हें देखना
बाध्यता न हो/क्योंकि हमें होना है मुखर
हर हाल में।

जब घरों में दुबके पड़े हैं
गाँव, शहर और कस्बे
तो किसी मंदिर या मरकज में इकठ्ठी
हुई भीड़
जिनकी धार्मिक मान्यताएं हैं सर्वोपरि
उनके बारे में प्रश्न पूछना
कहलायेगा मजहबी उन्माद
क्योंकि धर्म हो गया है
कुछ और ही इन दिनों
इंसानियत को हाशिये पर धकेलकर ।

यह काल खण्ड है
विपरीत विचारधाराओं को
साथ लेकर चलने का
बावजूद
तमाम असहमतियों के ।

जब हमारी प्राथमिकताएं होनी चाहिएं
इस त्रासदी को परास्त करने की
उस समय में भी जरूरी है शायद
पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो
राजा और बजीरों को कोसना
क्योंकि इसी से संतुष्ट होगा
हमारा अहम
कि हम विरोध में खड़े हुए सत्ता के
और हमने अपना सर्वश्रेष्ठ किया
और जो नहीं करेगा ये सब
इस दौर में वह/ यकीनन ही 'चारण'
कहा जाएगा !

(कोरोना संक्रमण के दौरान 01 अप्रैल, 2020 को लिखी गई रचना)

सेट नंबर -20, ब्लॉक नंबर-4, एसजेवीएन कॉलोनी दत्तनगर, पोस्ट ऑफिस दत्तनगर,
तहसील- रामपुर बुशहर, जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश-172001, दूरध्वनि : 0 94180 36526

कविता

कहाँ नहीं है माँ

प्रो. (डॉ.) दिनेश चमोला 'शैलेश'

अब...
कहने को तो
माँ नहीं है लेकिन......
फिर भी, यहाँ, वहाँ और
कहाँ-कहाँ नहीं है माँ ?

जहाँ-जहाँ भी जाता हूँ
श्वास-निश्वास से लेकर
भाव-विचार से लेकर
अनुभूति-अभिव्यक्ति से लेकर
स्मृतियों की हर गली में
आस्था का टिमटिमाता दिया लेकर
विहंसती, नव मूल्य का उपहार लिए
एक दिव्य व भव्य प्रतिमूर्ति की तरह
प्रतीक्षारत मिलती है माँ

कभी सीख बनकर
कभी प्रेरणा बनकर
कभी साहस, संघर्ष व
उत्कंठा का बीज बनकर......
कभी, कभी न समाप्त होने वाली
प्रेरक लोककथा बनकर
जो अक्सर सुनाया करती थी माँ......
बरसों-बरस......दिन, पल, सप्ताह, माह क्या
वर्ष के वर्ष बीत जाते थे......
लेकिन नहीं रीतता था .....
मां की लोक की स्मृतियों का वह अक्षय कोष

जीवन के
जिन-जिन मार्गों पर
बढ़ाता हूँ जिज्ञासा के पग.....
वहां भी.....पहले-पहल
मेरी मासूम अंगुली पकड़
मां ने ही सिखाया था .....
गिर-गिरकर कांपते शक्तिहीन पांवों पर
विश्वास के साथ खड़ा होना,

मेरे होने का
अर्थ ही कहाँ है माँ के बिना ?
मैंने कब किया है कुछ भी.....
कर भी कैसे सकता हूँ कुछ भला ?
क्योंकि अनुभव, अनुभूति व
अभिव्यक्ति से लेकर अक्षर-ब्रह्म की
दीक्षा की समूची जमीन तक तो......
सब कुछ..... मां ने ही दी है
करुणावृष्टि व वसीयत के रूप में

जिन सीढ़ीनुमा
खेतों की ओर निहारता हूं
तो माँ का धूल सना चेहरा
घूम जाता है आंखों के सामने
जिनमें हमारी दो जून की रोटी के लिए
कितनी पंचवर्षीय योजनावधि तक
नीने पेट खटती रही थी माँ
बंजर धरती को कुदाल व ओडगे से छिलते-छिलते
पैरे-पगारों में बिना पगार.....मजदूरिन की तरह
लेकिन लक्ष्यपूर्ति तक
कब जाना था माँ ने हार खाना !

फल-फूलों के बागवान के
बौराये फूलों व लदे फलों को देखता हूँ
तो मीलों दूर से पीठ व सिर पर
भारी तांबे की चमचमाती पानीभरी गागरों में
पसीने से लथपथ मां का चेहरा याद आता है
जो दिन के कितने घंटे रोज
मवेशियों को पानी पिलाने-नहलाने,
गोबर सूरने तथा इन फलदार पेड़ों को
खाद-पानी देने में बिता देती थी भूखे पेट

कहाँ-कहाँ
नहीं है माँ ?
खेत-खलिहान से पोखर-पनघट तक
ऋतु-पर्वों से ग्राम देवताओं के पूजन
अरसे पाथने से लेकर,
ऊमी पकाने....बुखने-च्यूड़े कूटनेय
आटा मांडने से धियाणियों के पैणे पाथने तक

सीढ़ीनुमा खेतों में
कतारबद्ध से झुरमुट में
खड़े हैं जो भैंवल, खड़ीक, क्वीर्याल
तिमले व बांज के गाढ़े छैल वाले पेड़
वे सब माँ ने एक-एक कर
रोप थे जतन से भीड़े के बीच
मिट्टी और गारे व उर्वरता की
निश्चित मात्रा को देखकर

लगता है
गांव की सौंधी मिट्टी के
कण-कण में है माँ
हवा, धरती, जल, अग्नि व आकाश की
साक्षी मां कहां-कहां नहीं है

लोक के व्यापक कैनवस पर
असीम आकाश की नीलिमा की तरह
'सर्वव्यापी-सर्व भूतान्तरात्मा' है माँ
जीवन की स्मृतियों के
जिस किसी कोण से भी खोलता हूँ
धरती व जगती के आशा-त्रिषणामय द्वार
वहीं मां उपस्थित होती है

ज्ञान की
अखंड, ऊर्ध्वमुखी दीपशिखा है माँ
अपनी असीम शक्ति-सामर्थ्य के साथ
इस जगती के संबंधों की
शाश्वत व अनश्वर भक्ति-चेतना है माँ !!!

डीन, आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय एवं अध्यक्ष भाषा एवं ज्ञान विज्ञान विभाग,
उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, '157, गढ़ विहार, फेज -1,
मोहकमपुर, देहरादून -248005, दूरभाष : 0135 2660414/ 0 94111 73339 मो.

अशोक दर्द की कविताएं

हाशिए पर खड़ा आदमी

हाशिए पर खड़ा आदमी
धूप में झुलस जाता है मूक होकर
क्योंकि यह सूरज के खिलाफ विद्रोह करना नहीं जानता

यह हवा के खिलाफ
बगावत नहीं करना चाहता
क्योंकि इसे हवा का न तो रुख भांपना आता है
और न ही हवा के साथ-साथ चलना

हाशिए पर खड़ा आदमी
इतना भोला है कि
आज भी बरसने और गरजने वाले बादलों में
फर्क नहीं कर पाता और हर बार ठगा जाता है

यह इतना निहत्था है कि इससे
सभी हथियार छीन लिए गए हैं
ताकि यह कभी सत्ता के खिलाफ
विद्रोह न कर सके

प्रलोभनों की प्रवंचना और यथार्थ की इबारत के बीच
खिंची महीन रेखा इसे
न तो पढ़नी आती है और न ही बांचनी

इसलिए हर बार इसके हिस्से
भूख लिख दी जाती है
हर चक्रव्यूह इसके आसपास ही रचा जाता है
और हर बार बड़े-बड़े बैनरों नारों के बीच
इसका ही बध हो जाता है

यह न आंकड़ों का गणित जानता है
न ही भाषणों की प्रवंचना
और हर बार इसी वजह से
नारों की बयार में बह जाता है
सदियों से यही सब नियति रही है
हाशिये पर खड़े आदमी की .....॥

शहर की छाया में मिटता गांव

शहरों की आपाधापी और स्वार्थीपने को
गांव से शहर गए युवा
जैसे-जैसे पीठ पर ढोकर गांव ला रहे हैं
मासूम गांव की सौम्यता और नैसर्गिकता
खुद-ब-खुद गांव से जैसे विदा हो रही है

शहर की तरह गाड़ियों और कंक्रीट के ढेर
लगने के बाद की स्थिति यह है कि
सौहार्द और भाईचारा अपने हाथों से मुंह ढक कर
गांव छोड़ने पर मजबूर हो गए हैं

गांव की लम्बी पगडंडियां यह
बदलाव देखकर चकित सी निहार रही हैं
पुराने दिनों की याद में उदास होकर
अपने बदन से फूलों के जेवर उतार रही हैं
छलछलाते पनघट
सूखने के कगार पर आ पहुंचे हैं
अब पनिहारिनें वहां बतियाने नहीं जातीं
अपना सुख दुख एक दूसरे को नहीं सुनातीं

अब तो यहां भी लोग
आभासी दुनिया में प्यार खोजने लगे हैं
और प्यार के रिश्ते जैसे बोझ बनने लगे हैं
पहले कच्ची दीवारों की दरारें भी नजर नहीं आती थीं
अब तो पक्की दीवारों के भीतर
भी दरकती दरारें दूर से नजर आने लगी हैं

बदलाव का यह डंका कैसा
बजाने लगा है
गांव भी शहरी दुकानों की तरह
सजने लगा है
शहर की छाया तले
कहीं यह खिलखिलाता गांव ओझल ही न हो जाए
ऐसा लगने लगा है ...॥

गांव घट, डाकघर शेरपुर, तहसील डलहौजी, जिला चंबा,
हिमाचल प्रदेश-176306

अंजनी श्रीवास्तव की कविताएं

अलगाव

दीवारों से चिपके रहना
छिपकली का स्वभाव है
मां के सूखे स्तनों से शिशु का
चिपके रहना भी अस्वाभाविक नहीं है
पतीली जब तक चूल्हे से न चिपके
लोगों की भूख मिटाने की क्षमता
अर्जित नहीं कर पाती
कोलतार यदि जमीन से न चिपके
तो सड़क चिकनी नहीं बन पाती
लिफाफा जब तक गोंद से न चिपके
मजमून अनावृत होने का डर बना रहता है
सियासत के सर्प भी सत्ता से
बुरी तरह चिपके रहते हैं
जैसे मोबाइल से आज का हर आदमी
चिपकने की आखिरी हद तक
पहुंचने के बाद आदमी को
खींचकर अलग करना पड़ता है
कभी-कभी यह अलगाव
बहुत महंगा भी पड़ जाता है
चिपकना मनोवैज्ञानिक कमजोरी भी है
कई निर्जीव वस्तुओं का आपस में
चिपकना मनुष्य जीवन की
मुश्किलें आसान करता है
जरूरत के बगैर चिपके रहना
सही नहीं माना जाता
गलत वो आदमी ही होता है
जो आदमी से गलत के सिवाय
कुछ और की उम्मीद रखता है

निवेश

जिंदगी चलती नहीं सिर्फ सांसों से
दिल की धड़कनों और फेफड़ों की
फड़फड़ाहट से
जिंदगी चलती है हमारी सोच, हरकतों,
आदतों और फितरतों से
जिनका हम जिंदगी के व्यापार में
निवेश करते हैं और उसी का
लाभ नुकसान उम्र भर पाते हैं
हमारे पास अच्छा बुरा जो भी
होता है उसे छोड़ नहीं पाते
दुख के पुराने घावों से हमें
मोहब्बत सी हो जाती है
अपने बीमार विचारों से बिछड़ने की
हम सोच भी नहीं सकते
हम सारे लोग जन्म जन्मांतर से
इसी तरह खुद की दुरावस्था को
हरित बनाए रखते हैं

ए-223, मोर्या हाउस, वीरा इंडस्ट्रियल इस्टेट,
ओशिवरा लिंक रोड, अंधेरी (वेस्ट),
मुम्बई-400 053, मो. 0 98193 43822

कहानी

ग्राहक देवता

◆ राम नगीना मौर्य

पता नहीं मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है, जब भी किसी दुकान पर कोई सौदा-सुलुफ आदि खरीदने जाता हूं, उस समय तो कोई ग्राहक नहीं दिखेगा। अमूमन...दुकानदार मक्खी मारता ही नजर आयेगा, लेकिन मेरे वहां पहुंचते ही अगले चार-पांच मिनट में पता नहीं कहां से ग्राहकों का ऐसा रेला सा उमड़ पड़ता है कि मुझे अपना सामान आदि खरीदने में दिक्कत तो होती ही है, दुकानदार भी मुझे छोड़कर अन्य ग्राहकों से निबटने में लग जाता है, जिससे कभी-कभी तो मिनटों के काम में घण्टों लग जाते हैं।

भले ही मुझे आधा-आधा किलो ही फल खरीदना था, पर त्यौहारी पूजा-पाठ की वजह से पत्नी की तरफ से पांच प्रकार के फल खरीदने की हिदायत दी गयी थी। झोला मैं घर से ही लेकर चला था। खरीदारी की लिस्ट निकालकर याद करते हुए 'शकूर भाई फल वाले' की दुकान पर जब मैं पहुंचा तो वहां कोई ग्राहक नहीं था। बताता चलूं...शकूर भाई पूर्व में फलों के थोक व्यापारी थे, पर इधर कुछ वर्षों से स्वास्थ्य कारणों से, हमारी कालोनी से आगे चौराहे पर, फलों की ये छोटी सी दुकान ही चलाते हैं। हां, मिजाज से थोड़ा अक्खड़ भी हैं। शायद उम्र का असर हो। शकूर भाई अपनी दुकान में फलों के अलावा टाफियां, बिस्किट, ब्रेड, मक्खन और दूध आदि भी रखते हैं, जिससे उनकी दुकान पर लगभग हरवक्त खरीदारों की खासी भीड़ रहती है। परन्तु आज दुकान में कोई ग्राहक न देखकर इत्मिनान हुआ कि चलो...आराम से एक-एक फल छांट-छांट कर निकाल लूंगा, ताकि हड़बड़ी में वो कोई सड़ा-गला फल आदि न तौल दें, या मुझसे ही कोई सड़ा-गला फल आदि देखने में चूक न हो जाये।

शकूर भाई, जिनकी उम्र लगभग सत्तर साल के आसपास होगी, के साथ आज उनकी बेगम भी दुकान में बैठी दिखीं। मैंने अन्दाजा लगाया, शायद त्यौहारी सीजन होने के कारण वो उनकी मदद के लिए आयी होंगी। दुकान में उनकी बेगम का काम अमूमन ये होता है कि खाली समय में वो अलग-अलग टोकरियों में अलग-अलग फलों, जैसे...किन्नू, बेर, शरीफा, सन्तरे, मौसम्मी, नाशपाती, सेव, अनार और कुछ अन्य विदेशी फलों आदि को करीने से सजाकर लगाती रहतीं हैं। जिस कारण दुकान में फलों की सजावट देखते ही बनती है। शकूर भाई का मानना है कि टोकरे में रखे सजे-धजे फलों को देखकर ग्राहक आकर्षित होते हैं। शायद...इसी कारण वो बाजदफे फलों से सजे-धजे टोकरों को हाथ लगाने पर ग्राहकों को रोकते-टोकते भी रहते हैं। कहते हैं... 'ज्यादातर ग्राहकों के छांटने-बीनने से फलों की ढेरी तो खराब होती ही है, उन्हें दुबारा से लगाने में वक्त भी जाया होता है।'

बहरहाल...मेरी उपरोक्त मान्यता कि किसी भी दुकान पर जाते ही ग्राहकों का तांता सा लग जाता है, यहां भी भंग नहीं हुई। शकूर भाई से मैं अभी आधा किलो सन्तरों के बाद, आधा किलो सेव तौलवा ही रहा था कि दो मोटर-साइकिलें उनकी दुकान के सामने आकर रुकीं।

"हां, भई! अनार कैसे दिये?" बिलकुल दुकान से सटकर अपनी मोटर-साइकिल लगाते, सीट पर बैठे-बैठे ही उस मोटर-साइकिल सवार युवक ने शकूर भाई से अनार के भाव पूछे।

"अरे, चाचा! ये सन्तरे कैसे दिये?" शकूर भाई पहले वाले ग्राहक को कुछ बताते, कि उसी मध्य दूसरा मोटर-साइकिल सवार, जिसने अपनी मोटर-साइकिल, दुकान से थोड़ा हटकर खड़ी की थी, ने उनसे सन्तरों के भाव पूछे।

"मुझे आधा-आधा किलो नाशपाती और अनार भी दे दीजिएगा। क्या भाव दिये हैं?" उन ग्राहकों द्वारा अनार और सन्तरों की मांग करते सुन, जैसे मुझे भी बाकी फलों की याद आयी।

"क्यों, मियां! ये पपीते कैसे दिये?" शकूर भाई मेरे लिए अनार तौल ही रहे थे कि तभी दुकान के सामने एक सफेद रंग की कार आकर रुकी। उसमें से दो औरतें और एक अधेड़ सज्जन बाहर निकले। अधेड़ सज्जन ने दुकान के सामने आकर, शकूर भाई से पपीतों के भाव पूछे।

"चालीस रुपये किलो।" शकूर भाई ने उन्हें पपीतों के भाव बताये।

"ठीक है, दो किलो दे दीजिए।" कहते वो अधेड़ सज्जन सामने की टोकरी से पपीते छांटने लगे। कार से उतरी दोनों महिलाओं में से एक, कार से पीठ टिकाए अपने मोबॉयल पर बतियाने में मशगूल हो गयी, और दूसरी महिला शकूर भाई की दुकान के बगल स्थित स्टेशनरी की दुकान पर चली गयी।

"अरे चाचा! हम तो इनसे पहले आये हैं। पहले हमें अनार दे दो, देर हो रही है।" सामने खड़े मोटर-साइकिल पर आये युवक ने कुछ-कुछ शिकायती लहजे में कहा।

"हां-हां, आप ही को पहले दूंगा भाई साहब। लेकिन ये भी तो बताइये, कितना तौलना है? आपने तो पिछले पांच मिनट में लगभग तीन किलो अनार छांट लिये हैं। चाहिए कितना, ये तो

बताइये? और हां, मिले-जुले साइज के अनार लेने होंगे। हम इस तरह छांट-छांट कर अनार नहीं बेच पायेंगे।'' शकूर भाई ने उस ग्राहक से तनिक तल्ख स्वर में कहा।

''मुझे बस्स...एक किलो ही तो लेना है।'' उस ग्राहक ने इत्मिनान से कहा।

''वाह! भाई साहब। लेना एक किलो है, और आपने छांट लिये लगभग तीन किलो। आप जैसे दो-चार ग्राहक और आ जायें, तब तो हो गयी हमारी दुकानदारी। ऊपर से टोकरी में रखी अनार की मेरी सारी ढ़ेरी भी खराब कर दी आपने।''

''तो क्या हुआ? इसमें से एक किलो दे दीजिए। ढेरियां फिर से बना लीजियेगा।'' इस बार उस ग्राहक ने अपने दोनों कंधे उचकाते हुए अत्यन्त लापरवाही से जवाब दिया।

''अच्छा, आप अपना झोला लेकर इधर आइये। मैं आपके लिए एक किलो अनार तौल रहा हूं।'' शकूर भाई ने उस युवक से तनिक नाराजगी भरे स्वर में, अनार की टोकरी के सामने से हटकर अपने बगल में आने के लिए कहा।

''अरे मियां, हमें ट्रेन पकड़ना है, प्लीज जरा हमारे लिये ये दो किलो पपीते तौल दीजिए। हमें बस्स...ये पपीते ही खरीदने हैं।'' कार से उतरे उस अधेड़ सज्जन ने अनुनयपूर्वक कहा।

''अरे चाचा! तो हम्मैं कउन सी दुकान खरीदनी है?'' युवा ग्राहक, उन अधेड़ सज्जन से लगभग उलझने की मुद्रा में मुखातिब हुआ।

''ठीक है भाई, आप ही पहले ले लीजिए। अरे मियां! पहले इन्हीं सज्जन को दे दीजिए।'' अधेड़ सज्जन ने मानो असमय का बवाल टालने की गरजवश, समस्या का समाधान किया हो।

''अरे, चाचा! आपने हमें अभी सिर्फ दो फल ही दिये हैं। हमें तीन फल और चाहिए।'' मैंने उसी बीच हस्तक्षेप किया।

''बाउ जी, आप तो रोज वाले हैं, इसी कालोनी में रहते हैं। थोड़ा इत्मिनान रखिये। अभी सबको सौदा मिला जाता है। पहले इन सज्जन को पपीते तौल दूं। इन्हें ट्रेन पकड़नी है।'' शकूर भाई ने मुझसे निवेदन किया।

''और हां, मुझे इस केले की घौद में से एक-एक दर्जन केले भी दो जगह दे दीजिएगा।'' अब उस मोटर-साइकिल सवार युवक ने अपनी नई मांग बतायी।

''देता हूं भाई जरा इत्मिनान रखिये। केला देने में कुछ समस्या है। मेरा चाकू नहीं मिल रहा। अब इन बूढ़ी हड्डियों में इतनी जान नहीं है, जो केले को घौद हाथों से तोड़ सकूं। इन्हें काटना पड़ेगा।'' शकूर भाई ने उससे यूं अनुरोध किया।

''चाचा, हमें भी इसी घौद से एक दर्जन केला दे दीजिए।'' इस बार मोटर-साइकिल सवार दूसरे युवक ने फरमाइश की।

''अरे भाई, तुम तो घर के आदमी हो। तुम्हें काहे की जल्दी पड़ी है? देता हूं। थोड़ा सबर करो। यहीं तो...मेरा चाकू रखा था। बेगम जरा देखो तो...चाकू कहां रख दिया? केले की घौद से एक-एक दर्जन केले काटने हैं।'' शकूर भाई ने उस युवक को धैर्य रखने का आश्वासन देते, दुकान में अन्दर टोकरियों में फलों की ढेरी सजाती हुई, अपनी बेगम से कहा।

''चाकू आपने हमें दिये थे, जो हमसे पूछ रहे हैं? हां, नहीं तो. ..?'' फलों की ढेरी सजाना छोड़ते, उनकी बेगम ने लगभग झल्लाते हुए उत्तर दिया।

''अरी बेगम, तुम भी गजब बतियाती हो। तुम्हें नहीं दिये थे। यहीं रखा था। मिल नहीं रहा। जरा चाकू ढूंढ़ने में मेरी मदद कर दो। तब-तक मैं इन भाई साहब लोगों को अनार, सेव और पपीते आदि तौल देता हूं।'' शकूर भाई ने अपनी बेगम को लगभग समझाते हुए अनुनयपूर्वक कहा।

''चाचा, मुझे सेव, संतरा, अनार और नाशपाती के अलावा केले भी चाहिए।'' मैंने फिर हस्तक्षेप करना चाहा।

''अरे बाउ जी, आप तो आधा-आधा किलो वाले हैं न? हें-हें-हें...फिर काहे माठा किये हैं? ये एक-एक, दो-दो किलो वालों को निबट तो जाने दीजिए।'' शकूर भाई ने मुझसे ये जुमले ऐसे मुस्कुराते हुए कहे, मानो प्यार से डॉटा हो।

''वहाँ अन्दर कहां ढूंढ रही हो? यहीं रखा था। अभी कुछ देर पहले एक साहब को इसी घौद से आधा-दर्जन केले काटकर दिया है, फिर यहीं रख दिया था। वहाँ बैठी खींसे मत निपोरो। जरा ठीक से देखो।'' मैंने ध्यान दिया इस बीच शकूर भाई, उस चाकू को लेकर कुछ परेशान से भी दिखे। दो-तीन बार अपनी बेगम को डांटा भी। उनकी बेगम भी गजब थीं। इधर शकूर भाई परेशान से दिख रहे थे, और उधर उनकी बेगम के चेहरे पर शिकन तक न था। बल्कि वो तो मन्द-मन्द मुस्कुराते चाकू खोजने में मगन थीं।

''चाचा, ये सेव कैसे दिये?'' तभी एक यू. वी. गाड़ी उनकी दुकान के सामने आकर खड़ी हुई। उसमें से ड्राइविंग-सीट पर बैठा, दाढ़ी-मूंछों वाला एक युवक उतरा और गाड़ी को स्टॉर्ट अवस्था में ही छोड़कर, दुकान पर आकर सेव के भाव पूछे।

''एक सौ चालीस रुपये किलो।'' शकूर भाई ने उसे अनमने से जवाब दिया।

''अच्छा, आधा किलो दे दीजिए। लेकिन जल्दी। मैंने गाड़ी स्टॉर्ट ही रखी है। बन्द कर दूंगा तो दोबारा बिना धक्के के स्टॉर्ट नहीं होगी।'' उस युवक ने अपनी मजबूरी बतायी।

''भई, यहां सब जल्दी वाले ही हैं। आपको थोड़ा सबर करना होगा। बस्स...ये जो लोग पहले से खड़े हैं, इन्हें निबटा दूं, फिर आपके सेव भी तौल देता हूं।'' शकूर भाई ने जीप वाले युवक से अपनी समस्या बतानी चाही।

''फिर तो आपको देर लगेगी, मैं चलता हूं।'' कहते, बिना शकूर भाई के अगले उत्तर की प्रतीक्षा किये वो युवक ड्राइविंग-सीट पर जा बैठा, और गाड़ी आगे बढ़ा दी।

''किसी को भी एक मिनट का सबर नहीं। जिसको देखो, वही जल्दी में है। अरे! क्या हुआ चाकू मिला...? जरा ठीक से देखो। उधर पीछे खलवतखाने में बैठी क्या कर रही हो? उस अदने से चाकू की वजह से ग्राहक निकले जा रहे हैं।'' इस बार तनिक जोर से चिल्लाते हुए शकूर भाई ने अपनी बेगम से पूछा, जो चाकू खोजते हुए दुकान के पिछले हिस्से में चली गयीं थीं।

''खोज तो रही हूं। आगे-पीछे, कहीं भी तो नहीं मिल रहा, आपका चाकू।'' बेगम ने लगभग नाराजगी भरे स्वर में कहा।

''खोज क्या खाक रही हो? वहाँ बैठे-बैठे इल्हाम हो जायेगा कि चाकू कहां है? तुम्हीं ने कहीं इधर-उधर कर दिया होगा। तुमसे जब कुछ सधता नहीं, तो दुकान पर आती ही क्यों हो? तुम्हारे, दुकान में आने से कहां तो मदद मिलनी चाहिए, मेरी मुसीबत और भी बढ़ जाती है।'' शकूर भाई ने लगभग खींझते हुए गुस्से में अपनी बेगम से कहा।

''मेरी दवाइयां खत्म हो गयी थीं, इसीलिए दुकान पर चली आयी कि आपका हाथ बंटा दूँगी, और शाम को लौटते वक्त अपनी दवाइयां भी लेती आऊँगी। पर आप तो मुझे ही कोसने लगे। अगर ज्यादा गुस्सा दिखायेंगे, तो जाइये मैं नहीं खोजती।'' उनकी बेगम ने भी लगभग तुनकते हुए कहा।

''ओफ्फो...खुदा के लिए मुझ पर रहम करो। मैं तुम्हें कोस नहीं रहा। अभी तो तुम उस चाकू को जल्दी से ढूंढ़ो, नही ंतो ये केले की घौद बिना बिके ही रह जायेंगी। दो ग्राहक पहले ही लौट चुके हैं।'' मैंने ध्यान दिया...अपनी देह-भाषा से तो इस बार शकूर भाई लगभग बैक-फुट पर ही आ गये थे।

''ठीक है, मैं कोशिश करती हूँ।'' मैंने कनखियों देखा कि ये कहते, उनकी बेगम के चेहरे पर हल्की मुस्कान बिखर गयी थी।

''अच्छा, अब तुम चाकू खोजने के लिए रहने दो। देखो एक किलो का बाट किधर चला गया है? उसे खोजो। पता नहीं आज क्या हो रहा है? यहीं सामने रखा सामान, गुम हुआ जा रहा है।'' शकूर भाई अजीब पशोपेश में थे।

''ये लीजिए। आप किसी ग्राहक के लिए फल निकालने आये होंगे, तभी इस टोकरी के पीछे रख दिया होगा।'' उनकी बेगम ने फलों की टोकरी के पीछे से एक किलो का बाट ढूंढ़कर निकालते, शकूर भाई को पकड़ाते हुए कहा।

''अच्छा थोड़ी और मेहनत कर लो। वो चाकू ढूंढ़ दो। केले की घौद मुझसे टूटेगी नहीं। चाकू न होने से बिना केला खरीदे, ग्राहक लोग लौटे जा रहे हैं।'' शकूर भाई ने अपना रुख तनिक नरम रखते हुए बेगम से इल्तिजा की।

''चाचा, तब तक मेरे अनार ही तौल दीजिए। केले बाद में दे दीजियेगा'' मैंने कहना चाहा।

''मियां, मेरे पपीते का हिसाब कर दीजिए। मेरी ट्रेन छूट जायेगी।'' उस अधेड़ सज्जन ने पांच सौ का एक नोट, शकूर भाई की तरफ बढ़ाते हुए कहा।

''अजीब मुसीबत है। किसी को भी दो मिनट धैर्य नहीं है। भाई जी, आप के पास अगर छुट्टे पैसे हों तो दे दीजिए। मेरे गल्ले में सौ-सौ के सिर्फ दो नोट ही हैं।''

''चाचा, अभी कितनी देर लगेगी...केले में?'' तभी उस युवा ग्राहक ने तनिक तल्ख लहजे में शकूर भाई से पूछा।

''भाई, बिना चाकू मिले तो नहीं दे पाऊंगा। अगर आपसे ये केले की घौद टूट सके तो छः केले तोड़ लीजिए। मुझसे तो टूटने से रहा।'' शकूर भाई ने उन्हें सीधा-सपाट सा जवाब दे दिया।

''अरे चाचा, आप भी अजीब बात कह रहे हैं। छोड़िये रहने दीजिए। आप मेरे सेव का ही हिसाब कर दीजिए।'' उस युवा ग्राहक ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए कहा।

''अंकल जी, वो ऊपर से दो चाकलेट दे दीजिए। एक छोटा वाला और एक बड़ा वाला।'' उसी बीच वहां लगभग दस से बारह वर्ष की उम्र के दो बच्चे आये, और दुकान में फ्रिज के ऊपरी खाने में रखे चाकलेट के पैकेट्स की ओर इशारा करते चाकलेट की माँग की।

''बच्चों, अभी चलो। अभी टाइम नहीं है। एक घण्टे बाद आना।'' शकूर भाई ने बिना एक पल भी गंवाये, उन बच्चों को वहाँ से चलता करना चाहा।

''अंकल जी, हमारे पास छुट्टे पैसे हैं। चाकलेट दे दीजिए न...।'' उन बच्चों ने मानो शकूर भाई की समस्या को समझते, दस और बीस के दो नोट उनकी ओर बढ़ाये।

''अच्छा, ले आओ। ये लो तुम्हारे चाकलेट।'' शकूर भाई ने उन बच्चों से पैसे लेकर उन्हें चाकलेट देकर चलता किया। उसी बीच एक और ग्राहक ने संतरे खरीदने के उपरान्त उन्हें पैसे दिये। जिससे शकूर भाई के गल्ले में पर्याप्त फुटकर रुपये हो गये।

खैर...अन्ततः मैं भी बिना केला लिए ही, खरीदे गये चारों फलों के पैसे चुकाते, अपना झोला उठाये जैसे ही वहां से चलने को हुआ, पीछे से शकूर भाई की आवाज कानों में पड़ी।

''ये लो देखो। केले काटने वाला चाकू, इन बाउ जी के झोले के नीचे ही दबा था। मैंने जब उन्हें सेव और सन्तरे दिये थे, तभी उन्होंने अपना झोला यहां रख दिया था। अब चाकू इसी के नीचे दबा रह गया, और हमने पूरी दुकान छान मारी। इस चाकू की वजह से तीन ग्राहक बिना केले खरीदे ही चले गये। न मुझे ध्यान रहा, न ये बाउ जी ही देख पाये, और मैं तुम पर खामखाह ही नाराज हो रहा था।'' शकूर भाई अपनी बेगम से कह रहे थे।

''ओ...हो...माफी चाहूँगा शकूर भाई, मैंने भी ध्यान नहीं दिया।'' मेरे कानों में जैसे ही उनकी ये बातें पड़ीं, मैंने पलट कर अफसोस जताना चाहा।

''छोड़िये जाने दीजिए बाउ जी, लेकिन आपकी वजह से मेरे तीन ग्राहक बिना केले खरीदे ही चले गये।'' शकूर भाई के चेहरे

पर ग्राहकों के लौटने की टीस साफ-साफ महसूस की जा सकती थी।

''लेकिन मैंने ऐसा जानबूझ कर नहीं किया। ऐसा अनजाने में ही हो गया।'' मैंने अपना पक्ष रखना चाहा।

''अरे! आप इन जनाब पर खामखाह ही बिगड़ रहे हैं। तीन ग्राहक चले गये तो क्या हुआ? ये जनाब तो इसी कालोनी में रहते हैं। रोज वाले ग्राहक हैं। आप ऐसी बातें करके इनकी ग्राहकी से भी हाथ धो बैठेंगे। आखिर, ग्राहक देवता होता है, क्यों नहीं समझते?'' शकूर भाई की बेगम ने उन्हें समझाते, तत्काल हस्तक्षेप किया।

''बाउ जी, अब आप तो केले लेते जाइये।'' मैं शकूर भाई की बेगम की बातों को सुनी-अनसुनी करते, अफसुर्दगी भरा चेहरा लिये वहॉं से लौटने को हुआ कि शकूर भाई ने मुझे ये कहते रोका।

''जी बिलकुल, दे दीजिए।'' मानो मेरी जान में जान आयी।

''कितने दे दूँ?'' शकूर भाई ने मुझसे जानना चाहा।

''दो दर्जन दे दीजिए। अभी ये काफी सख्त हैं। हफ्ते-भर तो रखे ही जा सकते हैं।'' मैं, शायद शकूर भाई के बिना केले खरीदे लौट चुके ग्राहकों से हुए नुकसान की भरपाई करना चाह रहा था।

''लेकिन...आपको तो आधा दर्जन ही चाहिए थे न? फिर इतना क्या करेंगे?'' शकूर भाई ने तनिक आश्चर्य से पूछा।

''तो क्या हुआ? घर में रखे रहेंगे। कल की पूजा-पाठ के अलावा, खाने के भी काम आ जायेंगे...हें-हें-हें।'' मैंने चेहरे पर बनावटी हंसी लाते हुए कहा था।

''अरे बाउ जी! न आप कहीं गये हैं, न मैं। जितनी जरूरत हो उतनी ही ले जाइये। खामखाह ही ये केले रखे-रखे गलकर खराब हो जायेंगे।'' शकूर भाई ने मानो मेरे चेहरे पर छाये अफसुर्दगी के भाव को पढ़ लिया हो। ग्लानिबोध से उबरने की मेरी कोशिश को वो साफ-साफ समझ रहे थे।

''ठीक है फिर...एक दर्जन ही दे दीजिए। पर अब और जिद मत करियेगा।'' मैंने भी अपना पक्ष रखते फैसला सुनाया।

''जैसी आपकी मर्जी...हें-हें-हें।'' जाहिर है...हमने अपने-अपने हिसाब से माहौल को भरसक खुशगवार बनाने की कोशिश की थी।

5/348, विराज खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ, उत्तर प्रदेश -226010
मो. 0 94506 48701

लघुकथा

त्योहार का दिन

कुणाल शर्मा

"पापा, आज हम ढेर सारे पटाखे और मिठाइयां लेने चलेंगे। बराबर वाला रितिक तो कल ही ले आया था। चलो ना......" मुन्नी ने सुबह से यही रट लगा रखी थी परंतु हरिया बार-बार उसे टाल रहा था क्योंकि उसकी जेब खुश्क थी। ठेकेदार ने उसे कई दिनों से दिहाड़ी नहीं दी थी।

बाहर उसकी पत्नी मिट्टी-गोबर से लिपे फर्श पर पड़ी लकड़ियाँ चूल्हे में झोंक रही थी। उसने जब मुन्नी का रिरियाना सुना तो पुकार उठी, "सुनो जीऽ।"

हरिया उसके निकट आ खड़ा हुआ। धोती के पल्लू में लगी गाँठ खोलकर पत्नी कुछ सिकुड़े हुए नोट उसे थमाते हुए बोली, "जाओ जी, थोड़ी मिठाई और खील-बताशे ले आओ। त्योहार का दिन है, सगुन भी तो करना है।"

मुन्नी को साइकिल पर आगे बैठाकर वह बाजार को निकल पड़ा।

कुछ ही देर में उसने साइकिल हलवाई की दुकान के सामने जा रोकी। दुकान पर सजी तरह-तरह की मिठाइयां देखकर मुन्नी खिल उठी।

"पापा, ये पीले वाली..... ये हरे वाली..... रसगुल्ले भी..... सारी मिठाइयां ले लो।"

उसने चुपचाप अपनी औकात भर मिठाई ले ली। फिर, पास वाली दुकान से खील-बताशे भी ले लिए। उसकी जेब इतने में ही ढीली हो चुकी थी तो पटाखों की दुकान तक जाने की वह हिम्मत नहीं जुटा पाया। मिठाई और खील-बताशे की थैलियां हैंडल पर लटकाकर घर की ओर चलने को उद्यत हो पड़ा। साइकिल को बाईं तरफ मोड़ा ही था कि सामने से एक कार उससे आ टकराई। मुन्नी और साइकिल समेत वह सड़क पर जा पड़ा।

"अबे, देखकर नहीं चला सकता! एक थप्पड़ दूंगा तो सारा नशा हिरन हो जाएगा।" कार वाला व्यक्ति स्टेयरिंग छोड़, कार से उतरकर उस पर आ दहाड़ा। वह उस पर हाथ उठाने ही वाला था कि पीछे की सीट पर बैठी महिला वहीं से बोल उठी, "अरे, छोड़ो ना आप। त्योहार का दिन है। क्यों अपना मूड खराब करते हो...छोड़ो इसे और चलो यहां से..."

उसकी बात मानकर वह कार की ओर मुड़ा ही था कि सड़क से उठकर हरिया ने उसे थाम लिया।

"त्योहार का दिन सिर्फ आपके लिए नहीं है जनाब।" वह कड़े अन्दाज में बोला, "हमारे लिए भी है। पहिए के नीचे कुचल गयी मिठाई और खील-बताशे का हिसाब करेंगे, तभी सरकने दूंगा गाड़ी को आगे।"

कार वाला अपनी कलाई पर पकड़ की मजबूती से उसके अन्दाज को भांप गया। अब अपनी जेब ढीली करने के अलावा उसे कोई चारा नजर नहीं आ रहा था।

137, पटेल नगर (जण्डली), अम्बाला शहर, हरियाणा-134003
मो. 0 97280 77749

कहानी

रेहड़ीवाला प्रोफेसर

◆ एल. आर. शर्मा

सदानंद सुबोध ने कक्षा में प्रवेश किया। लड़के इतिहास के इस नये प्रोफेसर को देख कर बिलकुल भी प्रभावित नहीं हुए। कुछ खड़े हुए, कुछ बैठे ही रहे। एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्र इस नये नमूने का प्रभाव देखना चहते थे। उसके कपड़ों में तो कोई दम लग नहीं रहा था, हां, चेहरा जरूर आकर्षक था। गोल, पैनी आंखों वाला, कोई दाढ़ी-मूंछ नहीं, बिलकुल सफाचट। स्टील की गोल फ्रेम वाला चश्मा उसके चेहरे की गोलाई को और भी स्पष्ट कर रहा था। सफेद कमीज और ढीली-सी नीली पेंट उसके इकहरे बदन पर सादगी का संदेश दे रहे थे।

"जो खड़े हैं, वो भी कृपया बैठ जायें। आज मैं अपना परिचय दूंगा और आप सब का परिचय लूंगा, पढ़ाई की बात कल होगी। मेरा नाम दयानंद सुबोध है.........

"वाह, वाह क्या नाम है!" - पीछे बैठे हुओं में से किसी ने बीच में ही टोक दिया। फिर दबी हुई हंसी की हिन-हिनाहट सुनाई दी।

सुबोध ने कहना जारी रखा- "आज आपको पूरी छूट है। आप लोग मेरे बारे में कुछ भी पूछ सकते हैं, मेरे ऊपर हंस सकते हैं, ताने कस सकते हैं। मैं बुरा नहीं मानूंगा। मैं आपका मित्र हूं।"

"सर, आपने पढ़ाई कहां तक की है?" - एक ने पूछा।

"दसवीं तो पास की ही होगी" -पीछे से आवाज आई। इस चुटीले तीर पर तो हंसी का फव्वारा फूट पड़ा। जब हंसी कुछ थमी तो सुबोध ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया,- "हां, दसवीं तो पास की ही है। उसके बाद की भी सारी परीक्षाएं एम.ए. तक पास की हैं। फिर एम.फिल....."

"फिर एम.फिल में फेल हो गये होंगे"- पीछे से फिर किसी मनचले ने फिकरा कस दिया।

इस पर कुछ सीटियां बजीं, कुछ ठहाके लगे। सुबोध मुस्कुराता रहा। शोर कम हुआ, तो उसने बात को जारी रखते हुए कहा- "नहीं, फेल नहीं हुआ, बल्कि मैं प्रथम श्रेणी में पास हुआ।"

"लगता तो नहीं। यूनिवर्सिटी बिहार की कोई प्राईवेट तो नहीं थी?"- एक कोने से तीर निकला।

पर इस बार कोई नहीं हंसा।

"नहीं, मैनें किसी प्राईवेट यूनिवर्सिटी से पास नहीं किया है। फिर भी मैं आपको बता दूं, कि बहुत से निजी विश्वविद्यालय भी बड़े उच्च स्तर के होते हैं। अमेरिका जैसे देश में तो अधिकतर विश्वविद्यालय प्राईवेट ही हैं।"

एक सीधे से लड़के ने सवाल किया- "तो सर, आपने क्या एम.फिल अमेरिका से की है?"

प्रो. सुबोध- "नहीं। अमेरिका जाने के लिये पैसे चाहिये होते हैं। मेरे पिता तो एक निर्धन किसान रहे हैं। मैनें तो एम.फिल पंजाब विश्वविद्यालय से की है।"

एक फैशनेबल लड़के ने मुस्कुराते हुये पूछा,- "सर, आपका नाम सुबोध किसने रखा?"

लड़के प्रो. सुबोध की दी हुई आजादी का पूरा फायदा उठा रहे थे।

इस पर एक आवाज आयी, -"यह तो शायरों जैसा तखल्लुस है जनाब। तो हो जाये आज की शुरुआत मुशायरे से।"

इतने में एक लम्बे जैसे बालों वाला लड़का झूमता हुआ खड़ा हुआ और सुनाने लगा,-

"आपने दस्तक दी, लो हम खड़े हो गये,
पहले तो बच्चे थे, अब बड़े हो गये।"

"अरे यार मार डाला गालिब को आज तूने बटोही, क्या शेर कहा है, वाह वाह....."- उसके किसी साथी ने दाद दी।

यह लड़का बसंत कुमार था जो अपने आप को बटोही लिखता था।

प्रोफेसर सुबोध थोड़ा ऊंचे स्वर में बोले- "सुनो, शायरी फिर किसी दिन। मैं अपने नाम के बारे में बता दूं। मुझे बचपन में सद्दू कहते थे घर में। स्कूल में दाखले के समय अध्यापक ने अपनी मर्जी से मेरा नाम सदानंद लिख दिया। कालेज के दिनों में एक बार मुझे एक अंग्रेजी कविता का हिंदी में अर्थ बताने को कहा गया। मैंने विस्तार से उस कविता की व्याख्या कर दी। मेरे प्रोफेसर ने मेरी व्याख्या पर प्रसन्न हो कर मुझे 'सुबोध' का उपनाम दे दिया। तबसे मैंने यह पुछल्ला अपने नाम के साथ चिपका के रखा है।"

इसके बाद बारी-बारी से लड़कों का परिचय हुआ और उसके साथ ही घंटी समाप्त हो गयी। प्रो. सुबोध चुपचाप कक्षा से बाहर निकल गये। बाहर प्रो. कुन्द्रा कक्षा में आने को तैयार खड़े थे।

छः महीनें में ही प्रोफेसर सदानंद सुबोध ने पढ़ाने का अपना ढंग स्थापित कर दिया। अधिकतर छात्रों को सुबोध का पढ़ाना

बहुत अच्छा लगा। आठ-दस छात्र ऐसे भी थे, जो कक्षा में हल्ला-गुल्ला फैलाने का काम करते रहते थे, उन्हें सुबोध ने खुली छूट दे दी -"आपको मेरी ओर से पूरी आजादी है। आप अपनी हाजरी लगवा कर बाहर जा सकते हैं। चाहो तो कक्षा में भी बैठ सकते हैं। फैसला आपके ऊपर है। पर कक्षा में रहना हो तो शोर, शरारत या इधर-उधर की बातों में समय बरबाद करना मैं सहन नहीं करूंगा। हां, बाहर जाने पर भी आपकी हाजरी लगती रहेगी। बाकी लड़कों ने मन ही मन इस फैसले का स्वागत किया। ये हुड़दंगी लड़के बाकी पिरियडों में भी प्रोफेसरों को बेमतलब की बातों में उलझाते रहते थे, जिससे पढ़ाई का नुकसान होता था। वैसे ये लड़के अच्छे खाते-पीते घरों के थे और इनमें से कईयों के मां-बाप कालेज की प्रबंधक कमेटी के सदस्य भी थे।

कुछ ही दिनों के बाद कालेज के प्रिंसिपल खुराना ने इन लड़कों को बेकार टहलते हुए देख लिया, तो तुरंत अपने दफ्तर बुला लिया। वे सब आपस में सलाह करके प्रिंसिपल के कार्यालय में गये।

"आप लोग किस क्लास के हैं और बेकार क्यों घूम रहे हैं?"- खुराना साहब ने पूछा।

उनमें जो एक उनका मुखिया जैसा लगता था, बोला- "सर, हम एम.ए. प्रथम वर्ष के हैं। हमें इतिहास के प्रोफेसर सदानंद सुबोध साहब ने सदा के लिये कक्षा से बाहर रहने का हुक्म दिया है।"

उसके बाद वही हुआ, जो होना था। उन लड़कों ने बढ़-चढ़ कर प्रो. सुबोध के विरुद्ध प्रिंसिपल खुराना के कान भरे और अपने आपको निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास किया। प्रिंसिपल खुराना इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि चालीस छात्रों की कक्षा में से दस को बाहर कर देना एक गम्भीर मामला है। इससे संस्था में रोष फैल सकता है। प्रो. सुबोध अभी नये हैं, उन्हें न तो पढ़ाने का लम्बा अनुभव है, और न ही प्राईवेट कालेज की नौकरी के महत्व का पता है। आजकल कितनी बेरोजगारी है? एक खाली जगह के लिये दर्जनों की भीड़ उमड़ पड़ती है। उसको तो इस कालेज की प्रबंधक कमेटी का कृतज्ञ होना चाहिये जिसने उसे यहां नियुक्त कर लिया। वर्ना इस नौकरी के लिये पचास-साठ लाईन में थे। पर इस व्यक्ति के मन में इस बात का कोई एहसान प्रतीत नहीं होता। इसको बुला कर इस का एहसास कराना जरूरी है। यह सोच कर खुराना ने सुबोध को तुरंत अपने दफ्तर में बुला लिया। थोड़ी देर में प्रो. सुबोध ने कार्यालय में प्रवेश किया।

खुराना साहब सुबोध से अपनी नाराजगी प्रकट करने लगे। प्रो. सुबोध शांत भाव से उन्हें सुन रहे थे। खुराना साहब कह रहे थे, "प्रो. सुबोध, यह एक गम्भीर मामला है। चालीस की कक्षा से दस छात्रों को बाहर निकाल देना पढ़ाने का कोई सही ढंग नहीं है। आपको ऐसा करने का अधिकार नहीं है। प्रबंधक कमेटी को अब तक पता लग चुका होगा और कभी भी मुझे वहां से बुलावा आ सकता है। मैं वहां आपकी इस कार्यवाही का क्या उत्तर दूंगा? आखिरकार यह एक प्राईवेट कालेज है। हमारी नौकरी प्रबंधक कमेटी के निर्णय पर होती है। ऐसे मनमाने फैसले के लिये किसी को भी निकाला जा सकता है। अगर आपको कुछ लड़कों का व्यवहार गलत लग रहा था, तो आप मुझे बता सकते थे। मैं यहां किस लिये बैठा हूं?"

प्रो. सुबोध ने बड़ी शांति से उत्तर दिया, "खुराना साहब, मुझे आश्चर्य है कि आपने उन लड़कों की बात का सच मान लिया। असल बात यह है कि मैंने उनको निकाला नहीं है। मैंने उनको कक्षा में बैठने या बाहर जाने की छूट दे रखी है। वास्तव में उन लड़कों को पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं है। वे अपने उद्दंड व्यवहार से कक्षा का समय नष्ट करते हैं। तो भी मैं उनकी बराबर हाजरी लगाता रहता हूं। वे अपनी मर्जी से उठ कर बाहर चले जाते हैं। हां, मैं उनको बाहर जाने से रोकता नहीं। मैं उनकी वजह से अन्य तीस पढ़ने वाले छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ नहीं कर सकता। अगर मैं उनसे कक्षा में बैठने की बहस में पड़ता रहूं, तो पूर पिरियड ही खत्म हो जाता है। कई बार ऐसा हो चुका है। ऐसा ही वे चाहते भी हैं। खुराना साहब, मैं पढ़ने वालों का अध्यापक हूं, जिनकी पढ़ने की इच्छा ही नहीं हो, उनके लिये पुलिस थानेदार का काम मैं नहीं कर सकता।"

"पर प्रोफेसर सुबोध, उन लड़कों में से बहुतों के मां-बाप प्रबंधक कमेटी के सदस्य हैं और वे अपने लड़कों को यहां पढ़ने के लिये भेजते हैं, घूमने के लिये नहीं।"

"प्रिंसिपल साहब, यही उन लड़कों की दबंगई का कारण है। वे जानते हैं कि उनको कालेज से कोई निकाल नहीं सकता। इसलिये वे शेर बन के घूमते हैं। मैं उनकी आपसे शिकायत करता हूं, क्या आप उनके विरुद्ध कोई कठोर कार्यवाही करेंगे?"

प्रिंसिपल खुराना चिढ़ कर बोले-"वाह, गलती आप करें, और उसको सुधारने की मेहनत मैं करूं? मेरे पास क्या यहां अपना काम नहीं है? प्रोफेसर साहब, आजकल नौकरियां आसानी से नहीं मिलतीं। मैं आपको आदेश देता हूं कि आप उन लड़कों को क्लास में रोक कर रखें।"

"और पढ़ाने की बजाय महज चुटकुलों से उनको खुश करता रहूं सिर्फ इस लिये कि मुझे तनखाह मिलती रहे? क्षमा करना साहब, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं एक अध्यापक हूं, व्यापारी नहीं।"

"तो अपनी नौकरी तो गंवाओगे ही, मुझे भी परेशानी में डालोगे। प्रोफेसर, पता है, आजकल बेरोजगारी कितनी है?"

प्रो. सुबोध, "बेरोजगारी है कहां खुराना साहब। मुझे तो नजर नहीं आती। काम करने वालों के लिये बहुत काम हैं। हां, जिनको मनपसंद का काम चाहिये, उनके लिये तो बेरोजगारी होगी ही।"

"मनपसंद की बात नहीं है प्रो. सुबोध। व्यक्ति की शिक्षा के मुताबिक काम तो मिलना ही चाहिये। क्या आप एक पी-एच.डी. होकर सड़क पर रेहड़ी लगा सकते हैं?"

"खुराना साहब, हम श्रम के महत्व पर बड़े-बड़े भाषण सुनते हैं और देते भी हैं, पर जब अपने सिर पर बात आती है तो श्रम का वर्गीकरण करने लग जाते हैं कि फलां काम मेरा नहीं है, यह तो फलां का है। आपको पता है कि राजीव गांधी ने अपना जेबखर्च चलाने के लिये विदेश में आईसक्रीम भी बेची थी? क्या अपने देश में उन जैसा कोई वैसा करने की सोच सकता है? रेहड़ी तो क्या, मैं समय आने पर कोई भी काम करने के लिये तैय्यार रहता हूं।"

प्रिंसिपल खुराना के चेहरे पर कुढ़न थी, बोले- "मैंने आपको यहां बहस के लिये नहीं बुलाया है। मुझे स्पष्ट बताईये, कि उन दस छात्रों को कक्षा में रोकने के लिये आप क्या कर रहे हैं?"

प्रो. सुबोध उठे, सामने एक कागज लिया और कहा, "खुराना साहब, मैं अपनी वजह से आपकी नौकरी को खतरे में नहीं डालना चाहता। मैं अभी अपना त्यागपत्र लिख कर दे रहा हूं।"

यह कहकर प्रो. सुबोध ने अपना त्यागपत्र लिखा और खुराना साहब के सामने रख कर कमरे से बाहर निकल गये। खुराना आश्चर्य से जाते हुए सुबोध को देखते रहे। यह सब इतना अप्रत्याशित हुआ कि उनके मुहं से एक शब्द भी नहीं निकला।

बहुत कम ऐसे लोग दुनियां में मिलते हैं, जिनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं होता। वे जो बोलते हैं, वैसा करने में भी उनको कोई झिझक नहीं होती। प्रो. सुबोध ने जैसा प्रिंसिपल के दफ्तर में कहा, वैसा करने के लिये वे तैयार भी थे। उनके लिये रोजगार कभी समस्या नहीं रही। वे कोई न कोई काम ढूंढ ही लेते थे। अपनी कालेज की पढ़ाई के दौरान उन्होंने कभी घर से पैसे नहीं मांगे। मांगते भी किससे? बाप की मेहनत से तो घर की रोटी भी मुश्किल से निकलती थी। सुबोध अपना खर्च छोटा-मोटा काम करके चलाते थे। अखबार बांटना उनका प्रिय काम रहा है। प्रिंसिपल ने रेहड़ी लगाने की चुनौती दी, तो प्रो.सुबोध रेहड़ी लगाने पर विचार करने लगे। फिर यह विचार पक्के निश्चय में बदल गया और केवल दो दिन के बाद ही कालेज के बाहर वे रेहड़ी लगा कर खड़े थे। रेहड़ी के एक हिस्से में बिस्कुट, टाफियां, च्युंगम इत्यादि खाने का सामान सजा था तो दूसरे हिस्से में स्टेशनरी का सामान था। रेहड़ी के आगे कपड़े का एक बैनर लटक रहा था, जिस पर लिखा था, "बढ़िया सामान, उचित दाम।" उधर प्रो. सुबोध को रेहड़ी लगाये देख कर कालेज में मानो भूकंप आ गया। रेहड़ी के चारों ओर भीड़ लग गयी। कालेज के लड़के हैरान थे कि इस प्रोफेसर को रेहड़ी लगाने की ऐसी क्या जरूरत पड़ गयी। जितने मुंह, उतनी बातें। इस पर अफवाह ये फैल गयी कि कुछ प्रभावशाली घरों के लड़कों ने प्रो. सुबोध को कालेज से निकलवा दिया। अभी प्रो. सुबोध की नौकरी भी सिर्फ छः महीनें की ही तो हुई थी। प्राईवेट कालेज में ऐसा हो भी सकता था। कुछ लड़कों ने रेहड़ी को चारों ओर से घेर लिया और प्रश्नों की बौछार लगा दी :-

"सर, आपने यह क्यों किया?"

"क्या आपको किसी ने मजबूर किया?"

"आप हमें बताइये, हम उनको देख लेंगे।"

"यह तो सरा-सर अन्याय है।"

"चलो, हम प्रिंसिपल से बात करते हैं।"

"सर, आपको रेहड़ी पर खड़े होने की जरूरत नहीं है, हममें से कोई यहां खड़ा हो जायेगा।"

इस प्रकार न जाने कितने सवाल और बातें प्रो.सुबोध खड़े-खड़े सुनते रहे। उनको कुछ तसल्ली हुई कि बहुत छात्र उन्हें पसंद करने लगे हैं। उनको शांत करने के लिये प्रो. सुबोध बोले, "देखिये, आप सबका बहुत धन्यवाद कि आप लोग मुझसे मिलने यहां आये। पर मैं आपको बताना चाहता हूं कि मुझे न तो किसी ने निकाला है और न ही रेहड़ी लगाने के लिये मजबूर किया है। मैंने स्वयं अपनी मर्जी से त्याग पत्र दिया है। वास्तव में मैं यह दिखाना चाहता हूं कि कोई भी काम छोटा नहीं होता। यही संदेश मैं आप लोगों को भी देता हूं। अब कृपया आप सब अपनी-अपनी कक्षाओं में जाइये। यहां तमाशा खड़ा न करिये।"

"सर ठीक कहते हैं"- कुछ ने कहा।

"कितने महान हैं सुबोध सर। क्या कोई और ऐसा कर सकता है?"

"बातें करना आसान होता है, कर के दिखाना बहुत कठिन।"

"चलो चलते हैं।"

लड़के तितर-बितर होने लगे। इतने में हंसी का एक ठहाका सुनाई दिया। ये वही लड़के हंस रहे थे, जिनको प्रो. सुबोध ने खुली छूट दे रखी थी। उनमें एक सुबोध के निकट आकर धीरे से फुस-फुसाया- "क्यों प्रोफेसर, इतनी जल्दी रेहड़ी की बारी आ गयी? बस, यही औकात थी आपकी?"

प्रो. सुबोध इस कटाक्ष पर जरा भी विचलित नहीं हुये। बोले, "मुझे आपको पढ़ाने में और रेहड़ी लगाने में कोई फरक महसूस नहीं होता। मैं तो कोई भी काम कर सकता हूं, पर तुम लोग तो रेहड़ी के काबिल भी नहीं हो।"

एक लड़का बोला, "प्रोफेसर, हमसे पंगा बड़ा महंगा पड़ता है। हम रेहड़ी लगाते नहीं, लगवा देते हैं। क्यों बटोही, क्या कहता है इस सीन पर?"

बटोही जैसे तैय्यार ही खड़ा था, बोला, "अर्ज किया है :-

"ये तो दुखी थे हमें पढ़ाने के झमेले से,
अरे, ये तो दुखी थे पढ़ाने के झमेले से,
अब गुजारा करेंगे अपने इस ठेले से।"

वाह-वाह करते हुए वे आगे बढ़ गये।

इतने में अंग्रेजी के प्रोफेसर रतन और रसायन शास्त्र की प्रोफेसर सरोज अग्रवाल भीड़ को देख कर बोले, "ये क्या तमाशा है, ये जमघट क्यों लगा रखा है आप लोगों ने?"

"सर, यहां सुबोध सर ने रेहड़ी लगाई हुई है।"

"हैं, क्या प्रो.सुबोध और रेहड़ी? वो कोई नुक्कड़ नाटक कर रहे हैं क्या?" और वे दोनों भीड़ को चीरते हुये सुबोध की रेहड़ी तक आ गये।

"अरे, यह क्या प्रो. सुबोध, आप?"

इसके बाद उन दोनों ने कई सवाल किये। फिर प्रो. कुन्द्रा और प्रो. ठुकराल भी आ पहुंचे। बड़ी चर्चा हुई। कई मतलब निकाले गये। पर प्रो. सुबोध अपनी बात पर अटल रहे कि यह उनका अपना फैसला है, इस पर किसी का दबाव नहीं है। फिर ये लोग नाक-भौं सिकोड़ कर चले गये और स्टाफ रूम में, जहां और भी बैठे थे, बैठ कर इस चटपटी घटना पर बहस करने लगे। एक ने चर्चा छेड़ते हुए कहा- "इस सुबोध ने तो प्रोफेशन को बदनाम कर दिया। एक प्रोफेसर और रेहड़ी?.. हुंह.."

प्रो. कुन्द्रा, "ये रेहड़ी तो यहां से उठवानी पड़ेगी।"

प्रो. रतन- "इसको भी रेहड़ी लगाने को यही जगह रह गयी थी? बस-अड्डे पर लगा लेता?"

प्रो. ठुकराल - "अरे भई, सुना है खुराना साहब ने इसको ताना मारा था कि नौकरी छूट जायेगी तो क्या रेहड़ी लगाओगे? तो इसने रेहड़ी लगाकर दिखा दी। कुछ भी कहो, इस आदमी में दम है। हममें से क्या कोई इतना कर सकता है?"

सरोज अग्रवाल - "मान लिया, मान लिया। पर इतना नीचे गिरना क्या आवश्यक था? यह तो नाटक जैसा नहीं लगता क्या? आखिरकार जिसका काम उसी को साजे। एक प्रोफेसर रेहड़ी लगा रहा है, तो क्या कोई रेहड़ीवाला प्रोफेसर हो सकता है?"

कुन्द्रा (हंस कर) - "हां, क्यों नहीं। कल को सुबोध ही फिर पढ़ाने लग जायेगा।"

रतन - "अब चलो सब प्रिंसिपल के पास। कम से कम इस रेहड़ी को तो हटवा देते हैं। नहीं तो कल को लड़के हमको ही कहने लग जायेंगे कि सर आपकी रेहड़ी कब लग रही है?"

प्रिंसिपल खुराना के पास जब वे पहुंचे, उससे पहले ही सुबोध की रेहड़ी की बात वहां पहुंच चुकी थी। बात को पहुंचाने वाले वही छात्र थे जिनको प्रो. सुबोध ने 'खुली छूट' दे रखी थी। सारे प्रोफेसर जब बैठ गये तो इस विचित्र परिस्थिति पर खुल कर चर्चा हुई। खुराना साहब के एक क्लर्क ने गुप्त रुप से उनको बता दिया था कि कालेज के अधिकांश छात्र प्रो.सुबोध के पक्ष में हैं। अगर जबरदस्ती उनकी रेहड़ी को हटाया गया, तो कालेज में हड़ताल भी हो सकती है। अब मन ही मन खुराना को पश्चाताप हो रहा था कि उसने प्रो. सुबोध की बजाय उन उद्दंड छात्रों का साथ दिया और प्रो.सुबोध को झाड़ दिया। अपने सिद्धान्तों का कितना पक्का है ये सुबोध! इस समस्या को दूसरे ढंग से भी सुलझाया जा सकता था। उन ढीठ छात्रों के अभिभावकों को बुला कर बताया जा सकता था। पर प्रिंसिपल खुराना को नौकरी बड़ी प्यारी थी और उनको कालेज की प्रबंधक कमेटी से सदैव डर लगा रहता था। अब प्रोफेसरों से बात करके यही तय हुआ कि तुरंत प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष विश्वनाथ गोयल से मिला जाये। वास्तव में प्रबंधक कमेटी तो नाम-मात्र की थी, यह सारा कालेज तो गोयल साहब का ही था। वे दो-दो अखबारों के भी मालिक थे और प्रकाशक भी थे। यह कालेज तो उन्होंने बाद में खोला था। खुराना दो प्रोफेसरों को लेकर जब उनके पास पहुंचे, तो गोयल साहब अपनी अखबार के सह-सम्पादक से बात कर रहे थे। सम्पादक का कार्यभार वे स्वयं देखते थे। इसीलिये वे बहुत ही व्यस्त रहते थे। उन्होंने पूरी बात ध्यान से सुनी और प्रिंसिपल खुराना से इतना ही कहा - "खुराना साहब, रेहड़ी तो कल ही उठ जायेगी, पर लगता है आप समस्या की गहराई तक नहीं गये। आपने बहुत जल्दबादी कर दी।"

अगले दिन लगभग ग्यारह बजे एक खाकी वर्दी वाले व्यक्ति ने सुबोध की रेहड़ी पर आकर पूछा - "सुबोध जी कौन हैं?"

सुबोध - "मैं हूं, कहिये क्या चाहिये?"

खाकी वर्दीवाला (मुस्कुराते हुए) - "मुझे कुछ नहीं चाहिये। यह कहने आया हूं कि आपको गोयल साहब ने बुलाया है।"

"ओह, वही जो कालेज प्रबंधक कमेटी के प्रधान हैं?"

"जी हां, वही। अभी बुलाया है, क्योंकि वे यहां कभी-कभी ही बैठते हैं।"

"मुझे मालूम है। आधे घंटे में आता हूं।"

अपनी पत्नी को रेहड़ी पर बैठा कर प्रो. सुबोध आधे घंटे के बाद गोयल साहब के सामने बैठे थे। प्रिंसिपल खुराना भी एक तरफ मुंह लटकाये हुए बैठे हुए थे।

विश्वनाथ गोयल बहुत व्यस्त रहते थे। उन्हें प्रतिदिन कई व्यक्तियों से मिलना होता था। अतः वे मितभाषी थे और कम शब्दों में काम निपटाते थे। प्रो.सुबोध से बोले,- "आपका त्यागपत्र मेरे पास पहुंचा है, कुछ कहना है आपको?"

सुबोध - "कुछ नहीं।"

गोयल - "तो क्या रेहड़ी लगा कर निर्वाह करोगे?"

सुबोध - "जी नहीं, यह तो (प्रिंसिपल खुराना की ओर देखते हुए) इनकी चुनौती का जवाब था। इन्होंने कहा था कि नौकरी से निकाले गए तो क्या रेहड़ी लगाओगे?"

गोयल - "रेहड़ी तो कालेज परिसर में हम लगाने नहीं देंगे। हां, आपका त्यागपत्र अस्वीकार किया जा सकता है। इस पर खुराना साहब को भी कोई आपत्ति नहीं है।"

सुबोध खुराना साहब की ओर देखते हुए बोले - "पर मुझे आपत्ति है। मैं अब कालेज में नहीं पढ़ा पाऊंगा। खुराना साहब को मेरा पढ़ाने का ढंग पसंद नहीं है। इनको अपने ढंग से कालेज

कविता

बेटी

प्रकाश कुमार खोवाल

इस दुनिया में आने का, हक उसे भी था
मां की गोद में सोने का, हक उसे भी था
घर में हंसने -हंसाने का, हक उसे भी था
अपनी मर्जी से जीने का, हक उसे भी था

अपनों के बीच प्यार महसूस करने का, हक उसे भी था
दोस्तों के साथ घुल-मिल जाने का, हक उसे भी था
सपनों के राजकुमार के साथ, जीवन बिताने का हक उसे भी था

हंसते खेलते परिवार में जन्म लेने का, हक उसे भी था
एक सपना आंखों में, शोहरत कमाने का हक उसे भी था
दो वक्त रोटी अपनी मेहनत की, खाने का हक उसे भी था
देखा सपना मकान बनाने का, उसकी नींव डालने का हक उसे भी था
जुल्म एक बार फिर ढाया गया, नाबालिग ही उसको ब्याहा था
'बेटी' को इस दुनिया में लाने का, हक उसे भी था
ममता की छांव में लोरी सुनाकर, सुलाने का हक उसे भी था
मगर समाज ने आज फिर, उसकी गोद को सूना रखा था
मां का दिल रोया होगा, जब उसने अपनी बेटी को खोया था

पुरोहित का बास,
जिला सीकर (राजस्थान)
मो. 0 80038 32015

चलाने का अधिकार है। मेरे पास रोजगार के कई विकल्प हैं। इनके पास यही नौकरी है। अतः मैं इनको नाराज नहीं करना चाहता।"

इसमें छुपे हुए व्यंग को सुन कर खुराना साहब कुछ बोलना चाहते थे, पर फिर कुछ सोच कर चुप रहे। इस पर गोयल साहब ने फिर पूछ लिया,- "कालेज में पढ़ाना नहीं चाहते, रेहड़ी हम लगाने नहीं देंगे, तो अब क्या करोगे?"

सुबोध ने कहा - "गोयल साहब, मैं श्रम का सिपाही हूं। मेरे पास काम की कमी नहीं है। कुछ भी कर लूंगा। अखबार बेचने से लेकर ट्यूशन पढ़ाने तक दर्जनों काम मेरे पास हैं।"

गोयल साहब उंगलियों से मेज बजाते हुए बोले- "ऐसे काम करने पर आत्मसम्मान आड़े नहीं आता?"

सुबोध ने बड़े जोश से कहा - "कैसा आत्मसम्मान? किसका आत्मसम्मान? क्या अखबार बेचने वाले का कोई आत्मसम्मान नहीं होता? देखिये गोयल साहब, कई बार आदमी भाग्य से विवश हो कर ऐसे काम करने पर भी विवश हो जाता है, जो उसने कभी सपने में भी सोचे नहीं होते। उदाहरण देता हूं,- फिल्म जगत में कई अपने जमाने के मशहूर सितारे हुए हैं जिनको बुरा वक्त आने पर छोटे-मोटे एक्स्ट्रा के रोल करने पड़े। उन्होंने मजबूरी में किये, मैं वही प्रसन्न रह कर करता हूं। सिर्फ दृष्टिकोण का अंतर है।"

प्रो. सुबोध के इस जीवनदर्शन पर गोयल साहब बड़े प्रभावित हुए। बहुत बड़े विषय को इतने साधारण शब्दों में कहने के लिये अनुभव की आवश्यकता होती है। गोयल साहब की पैनी नजर ने हीरे को पहचान लिया। उन्होंने अनुमान लगा लिया कि यह आदमी जीवन में कभी हार नहीं सकता। यह एक दिन बहुत ऊंचे जायेगा। उन्होंने खुराना की ओर इस तरह देखा मानों कह रहे हों कि उन्होंने कालेज में सुबोध से कितना अन्याय किया है। खुराना ने सिर झुका लिया।

गोयल साहब ने सुबोध से कहा,- "प्रो.सुबोध, मुझे एक श्रम के सिपाही की जरूरत है। मेरी दो अखबारें हैं- हिंदी की 'दैनिक इतिहास' और अंग्रेजी की 'मार्निंग क्रॉनिकल'। मैं आपको इनका प्रधान संपादक नियुक्त करता हूं। वास्तव में, यह निर्णय कमेटी ने पहले ही ले लिया था, मैंने तो अब आपकी इंटरव्यू लेकर केवल घोषणा ही की है। अब आप इनकार न करना।"

सुबोध स्तब्ध रह गया। कहां वो रेहड़ी, अखबारों का बेचना और ट्यूशन, कहां इतनी बड़ी जिम्मेवारी। बोले,- "मेरे पास इस समय धन्यवाद के लिये सही शब्द नहीं मिल रहे हैं। बस इतना कह सकता हूं कि मैं आपके विश्वास पर खरा उतरने का प्रयास करूंगा।"

गोयल को एक मजाक सूझा, बोले "पर मैं आपको वो खुली छूट नहीं दे सकता, जो आपने कालेज में अपने कुछ छात्रों को दे रखी थी।"

सुबोध को इस मीठे मजाक से मन ही मन गुदगुदी सी हुई। वह भी मुस्कुराये बिन न रह सका। बोला, "एक रेहड़ी वाले प्रोफेसर के लिये वैसी छूट की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

42/5, हरिपुर, सुंदरनगर, जिला मंडी,
हिमाचल प्रदेश-175018, मो. 0 94181 00983

कहानी

धूप ढलने के बाद

◆ शैली किरण

राजीव और प्रज्ञा दोनों कॉलेज के सहपाठी थे। उन दोनों को साथ देखकर उनके सहपाठी गाते थे, 'हम बने तुम बने एक दूजे के लिए'। दोनों की जाति अलग-अलग होने के कारण घर वालों ने विवाह का विरोध किया। लेकिन क्रांतिकारी कदम उठाते हुए दोनों ने प्रेम विवाह कर लिया।

घरवालों से कट गए तो कमाने की जिम्मेवारी उन दोनों के कंधे पर आ गई। प्रज्ञा ने प्राइवेट स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया।

वे दोनों शाम को साथ कोचिंग कक्षा संभालते, फिर प्रज्ञा ने राजीव को सलाह दी कि वह बैंक की नौकरी की तैयारी साथ-साथ करता रहे। बच्चों को कोचिंग देते देते यह उसके लिए आसान काम भी रहेगा। राजीव को भी बच्चों को पढ़ाने में रुचि थी। वह हिसाब और अंग्रेजी पढ़ाता और अपनी परीक्षा की तैयारी भी साथ-साथ करता रहता।

वह खाना बनाना नहीं जानता था,ना ही घर का कोई काम काज। इसलिए प्रज्ञा का स्कूल से आने के बाद और सुबह का सारा समय खाना बनाने, झाड़ू पोछा, बर्तन करने में निकल जाता, रात को राजीव उससे लिपट जाता और उसे अपनी परीक्षा की तैयारी का वक्त नहीं मिलता।

लेकिन फिर भी वह राजीव के साथ बहुत खुश थी, जिंदगी अच्छी ही बीत रही थी, फिर प्रज्ञा को प्राइवेट कंपनी में नौकरी मिल गई, पैकेज ठीक-ठाक था।

राजीव ने पहली बार प्रज्ञा पर तंज कसा था, "अगर मैं भी लड़की होता तो मुझे भी रिसेप्शनिस्ट की जॉब मिल जाती, सुंदर लड़कियों को वैसे भी नौकरी मिलने में कोई परेशानी नहीं होती।"

प्रज्ञा ठगी-सी रह गई वह कहना चाहती थी, कि उसने एम. एस.सी. की है यह नौकरी उसकी योग्यता से बहुत नीचे है, मजबूरी में कर रही। राजीव अच्छे पैसे कमा पाता तो उसे यह नौकरी करने की और लोगों की घूरती नजरों में रहने की जरूरत ही क्या थी।

किंतु वह ऐसा नहीं कह सकी उसने प्रेम विवाह किया था सोचकर अनसुना करने लगी।उसे लगने लगा कि ऐसा तो सभी पुरुष ही कहते हैं।

घर का खर्च ठीक-ठाक चल रहा था, खाने-पीने की तंगी नहीं थी, उसे याद आया कि कोई दिन वह भी था जब वह सस्ते ढाबे में खाना खाने के बाद बची हुई चपाती और सब्जी भी पर्स में छुपा कर ले आती थी ताकि घर जाकर खा सकें।

वह राजीव के प्रति दुर्भावनाओं को भुला देती और उसे अधिक प्यार करने की कोशिश करती ,उसे लगता कि राजीव के मन से वहम मिट जाए ,उसकी नौकरी लग जाए तो हीन भावना कम हो जाएगी।और वह उससे अच्छा व्यवहार करने लगेगा।

उसने राजीव की परीक्षा के फॉर्म अपने ऑफिस में भर दिए और उसकी फीस भी उतार दी।

राजीव ने खूब मेहनत की और उसे बैंक पी ओ की जॉब मिल गई।प्रज्ञा ने उसके इंटरव्यू के लिए अपनी तरफ से अपने मैंनेजिंग डायरेक्टर की सिफारिश भी लगवाई। राजीव के घर वालों ने भी उन दोनों को अपना लिया और अपने घर बुला लिया।

शादी को पांच साल बीत चुके थे, राजीव को लगा कि अब बच्चा प्लान करने का यह सही समय है ससुराल वालों के दबाव में प्रज्ञा भी इस इच्छा को बोल नहीं पाई कि वह भी पढ़कर राजीव की तरह अच्छा करियर बनाना चाहती है। आखिर बच्चे को जन्म देने की भी कोई उम्र थी और वह दोनों तीस की उम्र पर पहुंच चुके थे। एक तरह से ठीक ही तो था।

उसने बच्ची को जन्म दिया सब लोग बहुत खुश हो गए बच्ची के जन्म के बाद प्रज्ञा को कंपनी ज्वाइन करना था। लेकिन बच्चा संभालने के लिए कोई उपलब्ध नहीं हो सका था। ससुराल के नए परिवेश में प्रज्ञा किसी को नहीं जानती थी तो छोटे-छोटे कामों के लिए वह दूसरों पर निर्भर थी।

राजीव ने भी कहा कि जितनी तनख्वाह उसे कंपनी देती है उतना खर्चा तो वह भी घर चलाने के लिए आराम से दे सकता है। प्रज्ञा को घर पर ही रह कर बच्चे को संभालना चाहिए आखिर आया के भरोसे कब तक बच्चे को छोड़ा जा सकता है और माता पिता वैसे भी बूढ़े और बीमार हैं। उसका बच्चा संभालना उनके बस की बात नहीं है।

इस तरह शाम्भवी स्कूल जाने लगी और प्रज्ञा की उम्र भी तैंतीस साल हो गई।

फिर प्रज्ञा परीक्षा की तैयारी करने लगी इतने में उसके ससुर बीमार हो गए उन्हें कैंसर था राजीव की इच्छा अनुसार और

परिवार में अच्छी बहू के रूप में ढलने के लिए प्रज्ञा सास ससुर की सेवा करने लगी अपने सपनों के बारे में वह लगभग भूल ही गई।

राजीव का काम धीरे-धीरे आगे बढ़ता जा रहा था, उसे प्रमोशन मिल रही थी। उसके साथी घर आते तो कहते कि प्रज्ञा तो साक्षात लक्ष्मी है। प्रज्ञा भी बहुत खुश हो जाती। उसे बस एक ही दुख सालता कि उसकी शिक्षा का कोई उपयोग वह नहीं कर पा रही थी। वह पूरा दिन घर में रहती छोटे से कमरे में सिमटी रहती और बच्चे से खेलती रहती। धीरे-धीरे उस पर दूसरे बच्चे के लिए दबाव बनना शुरू हुआ सास ने कहा कि एक बच्चे के साथ भी कोई जीना होता है। अकेली जान किसके साथ खेले ना खेले, कितना मुश्किल काम है।

प्रज्ञा ने एक और कन्या को जन्म दिया जिसका नाम श्रुति रखा गया अब प्रज्ञा की उस बच्चे को संभालने में उम्र छत्तीस हो गई। दिन भर घर का काम करते करते और दोनों बच्चों को संभालते, बिमार ससुर की देखभाल करते, बच्चों को स्कूल का काम करवाते प्रज्ञा का पूरा दिन बीत जाता।

वह परीक्षा की तैयारी करने की कोशिश करती लेकिन रात को इतनी थक चुकी होती कि उसे एकदम नींद आ जाती या फिर राजीव उसे बाहों में थाम लेता और कहता कि, "तुम्हारे पास तो मेरे लिए बिलकुल भी वक्त नहीं है! तुमने मुझसे प्रेम विवाह किया लेकिन प्रेम की बजाय, तुम अपनी किताबों में ही उलझी रहती हो।"

प्रज्ञा उसकी बातों से आहत महसूस करती, वह कहना चाहती कि थक गई है लेकिन उसे अपराध बोध होता कि किताबों में उलझना शायद पति के प्रति कोई अपराध है। वह राजीव को खुश करने का यतन करने लगती और अगले दिन नए ढंग के व्यंजन बनाने में जुट जाती।

बयालीस साल की उम्र में आखिर घर गृहस्थी के काम से थककर डॉक्टरों के चक्कर लगाते हुए शारीरिक रूप से कमजोर प्रज्ञा ने लिखना शुरू किया। राजीव ने कहा कि उसके लिखने पढ़ने, कविता करने पर उसे कोई आपत्ति नहीं है लेकिन इन सब कामों से बेहतर है कि वह जीवन की तलख हकीकत को स्वीकार करना सीखे, घर गृहस्थी संभाले, जैसे राजीव ने सीख लिया है। प्रज्ञा कविता कहानियां लिखकर मैगजीन को भेज देती। वह एक दिन अखबार उठाकर उत्साह से राजीव को कहानी दिखाने लगी, राजीव ने अखबार को एक नजर भी देखा नहीं और उसे कहा, "प्रज्ञा यार सर बहुत दुख रहा है, चाय तो बना दो।"

उसे राजीव की ओर से कोई तंगी नहीं थी। वह उसे हफ्ते पंद्रह दिन बाद कहीं घुमाने भी ले जाता किंतु जब वे अपनी सहेलियों को नौकरी करते हुए देखती या अपने शहर की एसडीएम की खबर पढ़ती तो उसे लगता, कि वह भी तो इस जगह हो सकती थी।

उसे भी तो कक्षा में पहली से लेकर दसवीं तक प्रथम स्थान मिलता रहा था, उसके परिवार को उससे कितनी उम्मीद थी। उसे भी तो कॉलेज के डिबेट में और कंपनी में सबसे अच्छा एंप्लाय समझा जाता था। किंतु वह अपनी यह बातें किससे कहे। सास तो पूरी उम्र घर में रही थी, उसे तो इन बातों की समझ ही नहीं थी। उसकी दो ननद भी नौकरी करती थीं, राजीव उनकी शादी-ब्याह जैसे कामों में उलझा हुआ था।

वह राजीव से अकसर कहती कि उसका भी दिल नौकरी करने को करता है। राजीव कहता कि प्राइवेट सेक्टर में औरतों का बहुत शोषण है, अगर वह चाहे तो उसे जब सरकारी नौकरी मिले तो वह कर सकती है।

फिर उन्होंने नया घर बनाने का काम शुरू किया उधर प्रज्ञा पर दबाव पड़ने लगा कि बेटियां ही परिवार को नहीं चला सकती इसलिए एक बेटा होना जरूरी है। अठतीस की उम्र में उनका घर भी बन गया और प्रज्ञा की गोद में एक बेटा भी हो गया।

प्रज्ञा को समझ नहीं आता था कि उसकी विरोध करने की सारी क्षमता कहां चली गई जब सारे परिवार वाले एक बात बोलते तो वह उन बातों को मानने के लिए मजबूर हो जाती उसे कोई राह नहीं दिखती कि वह क्या करे। उसे लगता उसका दिमाग शून्य हो चुका था।

बयालीस साल की उम्र में आखिर घर गृहस्थी के काम से थककर डॉक्टरों के चक्कर लगाते हुए शारीरिक रूप से कमजोर प्रज्ञा ने लिखना शुरू किया। राजीव ने कहा कि उसके लिखने पढ़ने, कविता करने पर उसे कोई आपत्ति नहीं है लेकिन इन सब कामों से बेहतर है कि वह जीवन की तलख हकीकत को स्वीकार करना सीखे, घर गृहस्थी संभाले, जैसे राजीव ने सीख लिया है।

प्रज्ञा कविता कहानियां लिखकर मैगजीन को भेज देती। वह एक दिन अखबार उठाकर उत्साह से राजीव को कहानी दिखाने लगी, राजीव ने अखबार को एक नजर भी देखा नहीं और उसे कहा, "प्रज्ञा यार सर बहुत दुख रहा है, चाय तो बना दो।"

प्रज्ञा को उसका वह व्यवहार बहुत बुरा लगा, हर बार की तरह उसकी आंखें भर आईं उसे याद आया कि किस प्रकार वह राजीव की हर छोटी बड़ी तरक्की पर मिठाई बनाने में जुट जाती है। लेकिन वह कुछ भी कर नहीं सकती थी, चुपचाप चाय बनाने चली गई।

उसे एक संस्था से साहित्य पुरस्कार की घोषणा हुई तो उसने राजीव से कहा कि वह उसके साथ चले। राजीव ने कहा कि उसे ऐसी जगह नहीं जाना, जहां सब चरित्रहीन लोग जमा हो जाते हैं। सुंदर स्त्रियों का तो चेहरा देखते ही यह लोग पुरस्कार वितरित कर देते हैं।

प्रज्ञा ने प्रतिवाद किया कि, "संपादकों को क्या मालूम कि मैं

सुंदर हूं।"

राजीव ने फिर ताना दिया, "अब तो तुम्हें सब जानते हैं कवि सम्मेलनों, कहानी सुनाने, कहीं ना कहीं तो चली रहती हो, इससे बच्चों की पढ़ाई का कितना नुकसान होता है तुम्हें क्या खबर।"

प्रज्ञा ने कहा, "आप भी तो ऑफिस जाते हैं।"

राजीव ने जवाब दिया, "ऑफिस जाता हूं, मटरगश्ती करने तो नहीं जाता, घर के लिए ही पैसा कमाने जाता हूं।"

प्रज्ञा चुप रह गई वह सम्मेलन में विरोध स्वरूप नहीं गई गुमसुम हो गई।

राजीव ने उसे गले की चेन गिफ्ट की और मनाते हुए बोला, "देखो जीवन में पैसों का ही महत्व है इन फालतू बातों में समय देने से बच्चों की पढ़ाई का समय खराब होता है, माता पिता की सेवा ठीक से नहीं हो पाती।"

प्रज्ञा बोलना चाहती थी कि जब राजीव क्लब में बिलियर्ड खेलने जाता है, दोस्तों के साथ पत्ते खेलता है, फुटबॉल खेलता है, शाम की पार्टियां करता है, तब भी वह समय बर्बाद होता है , लेकिन वह संकोच से कुछ भी बोल ना सकी।

पहले राजीव से सब कुछ कह देती थी लेकिन अब राजीव उसका पति था ,वह उससे डरी डरी रहती थी, उसकी सास भी कहती कि पत्नी को हमेशा पति का दामन थाम कर रखना चाहिए, क्या पता पुरुष की जात है ,सुंदर है पढ़ा लिखा है, पैसा कमाता है, कौन कब उस पर अधिकार जता ले।

प्रज्ञा असुरक्षा की भावना से घिरी रहती, ब्यूटी पार्लर में वक्त बिताती, महंगे से महंगे प्रोडक्ट्स इस्तेमाल करती थी अपने आप को फिट बनाने के लिए खूब एक्सरसाइज करती। लेकिन कभी भी राजीव के मुंह से वह अपनी प्रशंसा नहीं सुन पाती, उलटा उसकी इन कोशिशों का वह मजाक बना देता।

उसने सोशल साइट पर अपना फोटो डाला तो राजीव ने उसे डांटा देखो मेरे सभी दोस्त तुम्हारे फोटो पर दिल फेंक रहे थे, ऐसा अच्छा नहीं लगता, तुम जितना मर्जी सज-धज कर रहो, पर रहो घर पर। इस फ्लर्ट करने की तुम्हें क्या जरूरत है?

प्रज्ञा ने कहा, "मैं फ्लर्ट नहीं कर रही।"

राजीव ने कहा, "मैं तुम्हें बेहतर ढंग से जानता हूं तुम क्या कर सकती हो और क्या नहीं जब तुम शादी से पहले मेरे साथ संबंध बना सकती हो तो तुम्हें औरों से क्या एतराज होगा। तुममें आत्मसम्मान और स्वाभिमान की कमी है, तभी औरतें फोटो बदल बदल कर अपना स्वाभिमान बढ़ाना चाहती हैं, लेकिन आत्म-विश्वास बढ़ाने के लिए काबिलियत की जरूरत होती है!"

भीतर तक चोट खाई प्रज्ञा ने पूछा, "यह काबिलियत कैसी होती है?"

राजीव ने उत्तर दिया, "मेहनत कर कर रात रात भर जाग कर काबिलियत होती है! मुफ्त का खाना और दो कविताएं लिख लेना काबिलियत नहीं है।"

प्रज्ञा ने पूछा, "क्या प्रसव पीड़ा सहने से ज्यादा, बच्चे को पालने से ज्यादा, उसे रात रात भर देखने से ज्यादा कोई मेहनत और काबिलियत होती है?"

राजीव ने कहा, "तुमने ऐसा क्या अनोखा काम कर दिया दुनिया की सभी औरतें बच्चा जनती हैं, उसकी मां बहिन के भी बच्चे हैं लेकिन कोई भी इस बात का रौब नहीं दिखाता है।''

प्रज्ञा अपने आप में सिमट गई, उसे कहीं कुठिंत तो नहीं हो गई है।

राजीव अपने दोस्तों से खूब हंसता खेलता लेकिन घर में आते ही गंभीर हो जाता, प्रज्ञा को उससे बात करते भी डर लगने लगा, वह उससे पैसा मांगने में झिझकने लगी उन दोनों का संवाद धीरे-धीरे सीमित होता जा रहा था।

एक दिन प्रज्ञा ने राजीव को लाड़ लड़ाते हुए कहा, "राजीव शुरू में तुम मुझे कितना प्यार करते थे, अब क्या हो गया?"

राजीव ने रूखे स्वर में उत्तर दिया कि, "अब तुम वह औरत नहीं रही, तुमने कभी खुद को आईने में देखा है?"

प्रज्ञा ने उस दिन सचमुच खुद को आईने में देखा वह बूढ़ी लगना शुरू हो गई थी, सिर के पूरे बाल सफेद हो गए थे, मोटापा उतर आया था। उसने दूसरी नजर राजीव को देखा, पेट छरहरा, बाल काले और चेहरे पर लाली थी।

वह कहना चाहती थी कि दिन-रात बच्चों की देखभाल करने में सास ससुर की देखभाल करने में और घर की देखभाल करने में ही उसका सारा समय चला जाता है अपनी देखभाल करने के लिए उसे समय कहां मिलता है।

उनके घर में तो कोई मदद भी नहीं मिलती। सास कहती हैं, "बहू जब घर में खाली ही रहती है तो काम वाली बाई की क्या जरूरत है, आखिर घर का काम होता ही कितना है !''

फिर भी प्रज्ञा ने मॉर्निंग वॉक शुरू कर दी राजीव ने फिर उसे टोका, "आखिर क्या बात है कि उसका और पड़ोसी रैगर जी का गेट एक साथ ही खुलता है, जात रंग दिखा ही देती है ? क्या दोनों साथ में जॉगिंग करते हैं?"

प्रज्ञा ने कहा कि, "आप मेरे साथ चला करें।"

राजीव ने उत्तर दिया, "तुम्हारी तरह नहीं दिन भर निठ्ठला बैठा रहता, कि तुम्हारे साथ घूमने में लगा रहूं , मैं दफ्तर में काम करते-करते कितना थक जाता हूं , तुम्हें क्या पता, तुम्हें तो बैठकर मुफ्त की रोटियां तोड़नी होती हैं!"

प्रज्ञा हतोत्साहित हुई लेकिन फिर भी अब पैंतालीस की उम्र में और कितना दबती। उसे रास्ते में सैर करते हुए रैगर जी मिल जाते। वह मुस्कुरा कर पूछते, "ओहो आप भी घर से बाहर निकली हैं , मुझे तो लगा था कि आप कभी घर से बाहर निकलती ही नहीं, दिन रात काम में जुटी रहती हैं।

प्रज्ञा ने जवाब दिया, "हां मैं घर में रहते रहते बहुत थक गई हूं।"

रैगर जी ने कहा कि वह चाहे तो उनके प्राइवेट स्कूल में पढ़ा सकती हैं।

प्रज्ञा कहना चाहती थी कि वह पूछ कर बताएगी। लेकिन यह बात बोल ना सकी क्योंकि रैगर जी ने उसकी कहानी और कविता की तारीफ कर दी थी जो उसने नारी शक्ति पर लिखी थी, उनके समाज की औरतें दस भी मुश्किल से पढ़ पाती थीं, प्रज्ञा की शिक्षा के प्रति उनका बड़ा सकारात्मक दृष्टिकोण था।

उसने राजीव से बात की, राजीव, सास-ससुर कमरे से बाहर आ गए बच्चे सहमकर एक और खड़े हो गए, "तुम चरित्रहीन औरत हो, तुम्हें घर से बाहर घूमने के बहाने चाहिए।"

"राजीव मैंने सिर्फ नौकरी की बात की है, मुझे जीवन में बदलाव चाहिए।"

राजीव का हाथ उस पर उठ गया, "तुम्हें जीवन में बदलाव नहीं चाहिए तुम्हें ऊब हो गई है, तुम्हें मुझसे बदलाव चाहिए।"

राजीव उसके कॉलेज के जमाने के सभी दोस्तों के नाम गिनाने लगा वह बताने लगा कि उसे शुरू से ही पुरुषों से बातचीत करने में बहुत रुचि है।

प्रज्ञा रोने लगी इस उमर में घर के बुजुर्गों और बच्चों के सामने शर्मिंदा होना उसे बहुत तोड़ रहा था।

लेकिन उसे जवाब ही नहीं सूझ रहा था कि राजीव के इन हमलों का क्या जवाब दे।

उसने हलके स्वर में प्रतिवाद किया कि, "हां आप भी तो अपनी कुलीग के साथ शॉपिंग करने जाते हैं।"

"ओह तो यह नीच रैगर यही सब सिखा कर मेरे खिलाफ भड़काता रहता है।"

प्रज्ञा ने प्रतिवाद किया, "रैगर जी ने मुझे नहीं बताया।"

"तो तुम्हारे संपर्क में और भी लोग हैं! तुम्हारे पास और भी लोग आ जा रहे हैं ! चली जाओ निकल जाओ, दफा हो जाओ, मेरे घर से! तुम्हारे जैसी चरित्रहीन औरत को मैं घर में नहीं रखना चाहता! "

प्रज्ञा ने बच्चों की ओर देखा, "मुझे माफ कर दो राजीव" उसके मुंह से निकल गया।

राजीव बिना कुछ खाए पिए दफ्तर चला गया।

प्रज्ञा दिन भर सोचती रही फिर भी उसने अगले दिन अपना रिज्यूमे रैगर के ऑफिस में दे दिया।

और वह अगले महीने से उस प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने जाने लगी, घर का पूरा काम वह सुबह जल्दी उठकर निपटा लेती, शाम को आकर घर का फिर काम संभाल लेती बच्चों को पढ़ाने में भी ध्यान लगाती, उसे लगता जैसे उसके दस हाथ हो गए हैं।

राजीव उससे असंतुष्ट रहता उसके हर काम में गलतियां निकालता, उसे हर बात पर रैगर के ताने देता और बात-बात पर उस पर हाथ उठा देता। प्रज्ञा आत्मसंतुष्टि और आत्मग्लानि के बीच झूलती रहती, लेकिन उसे बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता, उनमें उसका मन रम जाता उसे लगता कि वह भी कोई है, उसकी भी कोई पहचान है

उसे स्कूल की वाइस प्रिंसिपल बना दिया गया, उसके ज्वाइन करने के बाद से स्कूल की प्रतिष्ठा काफी बढ़ गई, स्कूल में स्मार्ट क्लास शुरू हो गईं। पढ़ी-लिखी और लेखिका समझकर उससे कम शिक्षित रैगर उसके सुझाव आंख मूंद मान लेता, स्कूल का नाम हो गया, शहर में प्रज्ञा की भी पहचान बन गई।

उसने यह बात राजीव और सास-ससुर किसी को नहीं बताई कि उसे कितना योग्य समझकर सम्मान मिलता है वह समझ गई थी, कि उसके इन गुणों का परिवार के लिए कोई महत्त्व नहीं था।

उसने सास को कई बार कहते हुए सुन लिया था, "पढ़ी-लिखी सुंदर बहू है, इसे दबाकर नहीं रखोगे तो बेटा तुम्हारे हाथ से निकल जाएगी।"

वह राजीव को प्यार जताती लेकिन राजीव दुर्व्यवहार करता ही जाता, बच्चे भी उसे ऐसी नजर से देखते जैसे सचमुच वह रैगर की रखैल हो।

वे उसे बताते कि सब स्कूल में भी उसके बारे में गंदी गंदी बातें करते हैं, तंग आकर प्रज्ञा ने स्कूल छोड़ना चाहा, लेकिन वह जानती थी कि घर में कुंठित होने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं है, उसने बच्चों को समझाया कि समाज का कहना और व्यक्ति का होना दो अलग बातें हैं। वह उन्हें अच्छे ढंग से परवरिश देने लगी।

लिखने के क्रम में स्कूल की लाइब्रेरी में पढ़ने का भी उसका अभ्यास बन गया, वह रैगर जी की सामाजिक समझ और समाज के प्रति समर्पण भावना देखकर हैरान रह गई। प्रिंसिपल होने के कारण उसके पास लिखने पढ़ने के लिए बहुत समय बच जाता

वे उसे बताते कि सब स्कूल में भी उसके बारे में गंदी-गंदी बातें करते हैं, तंग आकर प्रज्ञा ने स्कूल छोड़ना चाहा, लेकिन वह जानती थी कि घर में कुंठित होने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं है, उसने बच्चों को समझाया कि समाज का कहना और व्यक्ति का होना दो अलग बातें हैं। वह उन्हें अच्छे ढंग से परवरिश देने लगी। लिखने के क्रम में स्कूल की लाइब्रेरी में पढ़ने का भी उसका अभ्यास बन गया, वह रैगर जी की सामाजिक समझ और समाज के प्रति समर्पण भावना देखकर हैरान रह गई। प्रिंसिपल होने के कारण उसके पास लिखने पढ़ने के लिए बहुत समय बच जाता दूसरी स्त्रियों की जीवनी पढ़ते-पढ़ते वह खुद को उनके संघर्ष के निकट पाती और उसके अंदर आत्मविश्वास बढ़ने लगा।

दूसरी स्त्रियों की जीवनी पढ़ते-पढ़ते वह खुद को उनके संघर्ष के निकट पाती और उसके अंदर आत्मविश्वास बढ़ने लगा।

राजीव का व्यवहार उसके प्रति उग्र होता गया। वह उससे मारपीट कर देता लेकिन प्रज्ञा अब डीठ हो गई थी। उसे राजीव के तानों और मारपीट का कोई असर ना होता, वह सज धज कर अपने स्कूल चली जाती और हंसते-खेलते वहां पर अपना कुछ वक्त बिता आती।

राजीव ने एक दिन ताना कसा, "तुम बहुत बदल गई हो।"

प्रज्ञा ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया, "वजह तुम ही हो।"

राजीव ने कहा कि तुम फ्लर्ट करके लोगों के साथ अपना मन बहलाती रहती हो।

प्रज्ञा मुस्कुराई और बोली, "राजीव आजकल मैंने यह सोचना बंद कर दिया है कि तुम मेरे चरित्र को क्या प्रमाण पत्र देते हो जितना खुश रहने का तुम्हें अधिकार है, उतना ही मुझे भी अधिकार है, हां तुम्हारे पास मेरी बदचलनी का कोई सबूत है तो तुम मुझे धिक्कार सकते हो।"

"अपना पैसा आते ही तुम्हारे तेवर बदल गए हैं।" राजीव ने ताना दिया

"राजीव अच्छा अपना पैसा आते ही तुम्हारे तेवर भी बदल गए थे। सब कुछ पैसे से निर्धारित होगा तो हमें एक दूसरे से शिकायत नहीं करनी चाहिए।"

इस बार प्रज्ञा को कहानी पुरस्कार मिला तो राजीव जिद्द करके उसके साथ गया उसने सोचा कि प्रज्ञा अपनी सफलता का श्रेय उसे देगी, जैसे उसने अपनी रिटायरमेंट पर अपनी सफलता का श्रेय प्रज्ञा और उसके त्याग को दिया था।

लेकिन मंच पर प्रज्ञा के नारीवाद पर विचार और कहानी सुनकर वह हैरान रह गया उसे लगा जैसे भरी महफिल में किसी ने उसके मुंह पर थप्पड़ मार दिया हो। उसे लगा सब उसी को घूर रहे हैं, क्रूर पति का जिक्र प्रज्ञा ने कहानी में किया है और दोस्त के रूप में रैगर की तारीफ की है, "नायक रूप में नीच की प्रंशसा करके अपनी असल जात दिखा दी है!"

वह सोचने लगा कि घर जाकर किस प्रकार के तानें सुनाकर प्रज्ञा को प्रताड़ित करेगा।

प्रज्ञा ने भी मंच से एक उड़ती हुई निगाह राजीव की ओर डाली और सोचा कि आज उसे एक नई कहानी के संवाद इस रिटायर्ड पति से निपटने के लिए सोचने होंगे। दूर कोने में अकेले बैठे रैगर जी को देखकर उसे लगा कि वह ऐसा कर सकती है।

गांव चौकी, डाकघर सेरा, तह. नादौन,
जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश-177 038

कविता

मेरा जीवन

शबनम शर्मा

मेरा जीवन सरिता के वेग सा
बहता चला गया,
पत्थरों पर सैंकड़ों प्रहार जैसे
सहता चला गया,
मूक बन गया वह पहाड़
उस वन के तरु भी
मुँह मोड़ गये, जब यह
जमाना हम पर बेबाक
जुल्म करता चला गया
मेरा जीवन......
पानी की तरह निर्मल मन,
कुछ कहने को आतुर होता,
अंगारों के आगोश् में, यह
तपन, गरमाहट व दर्द
सहता चला गया
मेरा जीवन......
पता मुझे न चला,
कब सर्द हवा हमसे
मुख मोड़ गई
वर्षा की बूंदों में मेरा
हर दर्द आँसू धोता चला गया
मेरा जीवन......
इन्तजार रहा उन लम्हों का
जो सुला दें, रुलायें नहीं,
मन ही मन हृदय मेरा
कुछ ऐसी अकुलाहट सहता
चला गया.....
मेरा जीवन......

अनमोल कुंज, पुलिस चौकी के पीछे, मेन बाजार,
माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र.
मो. 0 98168 38909

कहानी

हल्फिया बयान

◆ जसविंदर शर्मा

मेरा यकीन कीजिए साहब।

मैं एक घर हूं।

महज एक घर हूं - ईंट, गारे, मिट्टी, सीमेंट और सरिये से बना हुआ एक मकान। एक आशियाना। एक आरामदेह छत। सिर छुपाने के लिए एक सुरक्षित और आरामदेह जगह। इन्सान तो क्या परिंदे तक खुद अपने लिए और परिवार के लिए एक नीड़ का निर्माण करते हैं।

घर होना कोई ताज्जुब की बात नहीं है। लाखों करोड़ों घर हैं हमारे आसपास।

हैरानी की बात तो यह है जनाब कि मैं सभी घरों से बहुत हटकर हूं। पिछले कुछ अरसे से मुझमें हैरान कर देने वाले परिवर्तन आए हैं।

वैसे तो मैं बेजान चीजों से बना हुआ हूं मगर मैं आम इन्सानों की तरह हर अहसास और जज्बात को महसूस कर सकता हूं।

क्या कहा ये नामुमकिन है। आप अपनी जगह सही हैं। कोई भी आदमी विश्वास नहीं करेगा।

ऐसी ही बहुत-सी बातें हैं जिन पर हम सारी उम्र विश्वास नहीं करते। जैसे बचपन में हम लोग भूत-प्रेत पर सहज में विश्वास कर लेते थे मगर बड़े होकर हम कई ऐसे इन्सानों से मिलते हैं जो भूतों से भी ज्यादा डरावने और खतरनाक होते हैं और हम असली वाले भूतों के अस्तित्व में विश्वास करना बन्द कर देते हैं।

खैर, मैं बता रहा था कि मैं बेजान होकर भी बहुत कुछ महसूस करने लगा हूं।

सच बता रहा हूं। मुझे सब खबर रहती है कि मेरे दरवाजे के अन्दर क्या हो रहा है। मैं बाहर आंगन में होने वाली हरेक घटना को देखता हूं।

मैं न केवल इन घटनाओं का साक्षी मात्र हूं बल्कि यहां रहने वाले या आने जाने वाले लोगों को देख-सुन सकता हूं, उनके अहसासों को अच्छी तरह समझ सकता हूं, उनके दुखदर्द व सारे जज्बातों को महसूस कर सकता हूं। उनके साथ भूतकाल में क्या हुआ, यह जानना भी मेरे लिए कोई मुश्किल काम नहीं है।

आप सोच रहे होंगे कि बेजान चीजों से बने एक मकान में इतनी संवेदनशीलता कहां से आ गई कि वह मानवीय भावनाओं को समझ सके या इस तरह व्यक्त कर सके जैसा कि मैं आपको बता रहा हूं।

आज के इस भयावह दौर में जहां आदमी का दिल इस कदर पत्थर का हो चुका है कि वह दूसरे के दुख-दर्द से पीठ फेर कर गुजर जाता है। आज का आदमी दूसरे का गला काटकर आगे बढ़ जाना चाहता है वहां मैं इस प्रकार का दावा पेश कर रहा हूं।

सच में आज का आदमी बहुत यांत्रिक हो गया है। वह सिर्फ अपने बारे में ही हर वक्त सोचता है। वह दूसरों के प्रति संवेदनहीन हो गया है। वह अपने पड़ोसी के किसी मामले में दखल नहीं देता। वह अपने परिवार से उदासीन रहता है। वह अपने साथ जन्मे भाई-बहन के बारे में ज्यादा सोचकर अपना सिर नहीं खपाता। वह सच में बहुत निर्मम हो गया है।

ऐसे में मुझ निर्जीव वस्तु का यह दावा आप कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि मुझे इन्सानों जैसी अनुभूति होती होगी। है न बेसिर-पैर की बात।

मगर मेरा यकीन कीजिए साहब।

मैं सारी बात सिलसिलेवार सुनाता हूं।

यह पहली दफा की बात है।

उससे पहले मैं भी निरा पत्थर ही था। एकदम संज्ञाविहीन। था मगर कुछ भी नहीं था। मेरे जन्म की कथा यहां से शुरू होती हैं। घर मिस्त्री मजदूर ही बनाते हैं। मुझे भी बनाने के लिए सैंकड़ों मजदूरों-कारीगरों को दूर-दूर से लाया गया था।

शहर की बाहरी सीमा पर कितने एकड़ हरियाले खेतों को उजाड़कर एक कालोनी में मेरे जैसे चार सौ के लगभग फ्लैट बनाए जाने थे। सबसे पहले एक बड़े प्लॉट की चारदीवारी के साथ-साथ मजदूरों की झोंपड़ियां बनाई गईं। इन लोगों की खून-पसीने की मेहनत का नतीजा था कि दो साल में ही इतना बड़ा कम्पलेक्स बन कर तैयार हो गया। जैसे-जैसे मेरे जैसे मकान तैयार होते जा रहे थे वे मजदूर धीरे-धीरे अपनी झोंपड़ियां छोड़कर इन आधे-अधूरे फ्लैट्स में परिवार सहित अस्थायी रूप से रहने आ गए थे क्योंकि बरसात का मौसम शुरू हो चुका था।

ये मजदूर कारीगर लोग सच में मिट्टी से जुड़े होते हैं जनाब। शहर में रहते हैं मगर उनके मन के अन्दर का देहात हमेशा जिन्दा रहता है। शहर की हवा का उन पर जरा असर नहीं पड़ता। अजी साहब, पड़े भी कैसे, उनका खाना-पीना बेहद सादा होता है जनाब। ज्यादा कुछ कमाते नहीं हैं वे। बस उतना ही जितना कि गुजर बसर हो सके।

मगर एक बात है जनाब।

ये लोग बहुत जिंदादिल होते हैं। उनके लिए जीने का अर्थ

है आज में जीना। अमीर आदमी दिनभर में कितना सोचता है, परेशान रहता है, ज्यादा कमाने के चक्कर में और जो कमाया है उसकी संभाल करने में ही रात को सो नहीं पाता मगर ये मजदूर लोग शाम को काम खत्म करके रूखी सूखी खाकर चैन की नींद सोते हैं।

ये सादा दिल इन्सान कड़ी धूप में मेहनत कर रहे होते हैं तब भी कुछ न कुछ गुनगुनाते रहते हैं। होली फाग पर ये लोग खुले दिल से नाचते हैं। गर्मी, सर्दी या बरसात में छोटी सी झोंपड़ी में परिवार सहित मस्त रहते हैं। बड़ी-बड़ी बिल्डिंग बनाते हैं ये छोटे कहे जाने वाले लोग।

कुछ दिन इन भवनों के अन्दर रहने का मौका भी मिलता है उन्हे। कितना खुश होते हैं वे जब इन अधूरे पक्के घरों में वे डेरा डालते हैं।

यहां रहकर वे कितने बड़े - बड़े सपने देखते होंगे मगर उन्हे पता होता है कि ये सारा काम खत्म होते ही उन्हे फिर अपनी अस्थाई झोपड़ी में ही लौट जाना है क्योंकि जल्दी ही यहां बाबू लोग आकर बस जाएंगे। इन कारीगरों का काम है केवल घर बनाना। किसी घर में रहना नहीं। कितनी बड़ी विडंबना है यह।

खैर, बहुत जल्द ही सारे घर तैयार हो गए। कोई देखने परखने वाला तो था नहीं। ठेकदार ने खूब गड़बड़ की और धड़ाधड़ भवन के ढांचे खड़े कर दिए। अभी उनके अन्दर रंग रोगन और फर्निशिंग चल रही थी।

एक मजदूर परिवार उस कमरे में रह रहा था जिसमें मेरा वजूद अस्तित्व में आने वाला था।

बहुत ही जिंदादिल दम्पत्ति था वह। बहुत प्यार था उन दोनों में। अपने बच्चों से बहुत लगाव था उन्हे। पत्नी का ध्यान हर वक्त अपने एक साल से कम उम्र के बच्चे में ही रहता।

यह जगह शहर की बाहरी सीमा पर थी। बरसात के मौसम में इस सुनसान एरिया में सांप बहुत निकल आते थे।

एक दिन हर तरफ शोर मच गया। एक बड़े से सांप ने मेरे अन्दर रहने वाले आदमी को डस लिया।

उसकी मौत पर उसकी पत्नी ने वे दहला देने वाली चीखें मारीं कि उस पल मुझ में मानवीय वेदना का वह स्पंदन पैदा होना शुरू हुआ। मुझे इन्सानों की तरह दुख-दर्द महसूस होने लगा।

पहली बार मेरे आंगन में वह लोमहर्षक घटना घटी।

उस घटना को देखकर मेरा दिल इतना पसीज गया कि मैं कांप उठा। मैने अपने साथ लगते मकान से अपना दुख बांटना चाहा।

मैं यह बात और किस से कहता जनाब।

मैं मिट्टी ही तो था अब तक। मेरे लिए इस किस्म का यह पहला अनुभव था। मैने चिंतित आवाज में अपने बगल के घर से पूछा - क्यूं भाई, क्या तुमने भी वही देखा और महसूस किया जो कुछ मेरे सामने मेरे बाशिन्दों के साथ हुआ।

उधर से कोई जवाब नहीं आया। जवाब आता भी कैसे - आसपास सब जड़-पत्थर था।

मैं समझ गया कि लोग बाग जो कहते हैं कि दीवारों के भी कान होते हैं सब बकवास है। आज के युग में पड़ोसियों को अपने दुख तकलीफों से ही निजात नहीं मिलती। वह दूसरे के फटे में क्या सोचकर टांग अड़ायेंगे। आंगन में झांकने की बातें बहुत पुराने दिनों की बात हो गई है। किसी और के आह पुकार में अब किसी की कोई रुचि नहीं रह गई है और फिर इन अहमकाना बातों के लिए फुर्सत किस के पास है।

यह इतिहास की पहली कोई घटना हुई थी कि जब कोई बेजान वस्तु सजीव चीजों से इस कदर जुड़ाव महसूस करे और उनके अहसास या विचारों से द्रवित हो जाए। अब एक बार यह सिलसिला चल निकला है तो न जाने कब तक मैं इस तरह के अजीब अनुभवों को महसूस करता रहूंगा।

एक खतरा मेरे सिर पर हमेशा मंडराता रहता है। आज का जमाना बहुत बदल गया है साहब। जिस तेजी से घटनाएं हो रही हैं मुझे तो डर है कि पत्थर-दिल इन्सानों की सोहबत में मैं कहीं पत्थर न हो जाऊं।

कभी-कभी तो मुझे यह जानकर बहुत खुशी होती है कि मेरे आश्रय में रहने वाले लोग कितने प्यार से रह रहे हैं। मगर यह खुशी ज्यादा दिनों तक नहीं रहती। जल्दी ही वहां कोई त्रासदपूर्ण बात हो जाती है तो कई दिनों तक मैं उखड़ा-उखड़ा महसूस करता हूं। फिर धीरे-धीरे सारे घर का माहौल पटरी पर आ जाता है और यह खुशनुमा सिलसिला ज्यादा देर तक नहीं चलता।

मेरा जन्म सावित्री ग्रुप हाउसिंग सोसायटी के प्रांगण में हुआ। तीसरी मंजिल के ट्यूलिप ब्लाक के कैटेगरी वन के फ्लैट नम्बर ए- 330 के नाम से जाना जाता हूं मैं।

घर बनकर तैयार हो गए। आसपास खूब चहलकदमी होने लगी।

घर बनाने वाले मिस्त्री मजदूर कहीं दूसरी जगह शिफ्ट हाते जा रहे थे। अब हमारी सड़कों पर हर समय चमचमाती कारें आती जातीं। कुछ लोगों के अपने मकान थे जिन्हे पाकर वे फूले नहीं समा रहे थे।

कुछ प्रापर्टी डीलर दिन में चक्कर लगाते और अपने ग्राहकों को ये नए बने फ्लैट्स दिखाते। मालभाव करते। मेरे अन्दर ही सोसायटी का मेन आफिस बना था सो सोसायटी के करिंदे मुझे खोलकर दिन में बीसियों लोगों को दिखाते। मेरे हरेक कोने तथा अंग-प्रत्यंग की बारीकी से छानबीन की जाती। मैं खामोश बना रहता।

एक दिन अचानक मेरे आसपास हलचल तेज हो गई।

मैने सुना कि यहां कोई शुभ कार्य किया जाना है जिसे गृह

प्रवेश कहते हैं। गृह प्रवेश के दिन मुझे खूब सजाया गया था।

हजार से ज्यादा लोग उस दिन मेरी देहरी पर मिठाई, तोहफे, फूल व शगुन लेकर आए थे। मेरे लिए वह पल कितना उल्लासपूर्ण था। नाश्ता हुआ फिर दिन का खाना-पीना हुआ, हंसी मजाक व नाच गाना होता रहा। हर तरफ खूब चहल-पहल थी। हजारों फोटो खींचे गए।

कुछ लोगों ने मुझे हसरत से देखा। ये लोग थे जिन के पास मुझसे छोटे घर थे। कुछ लोगों ने हिकारत से मुझ पर निगाह डाली। ये लोग बड़ी कोठियों में रहते थे। बहुत सारे लोगों ने मुझमें कमियां ढूंढने की कोशिश की।

गृह प्रवेश के समय की रौनक देखते ही बनती थी। मेरे मुख्य द्वार पर रंग-बिरंगे फूल लटकाए गए थे। हर तरफ बच्चों की धमा-चौकड़ी और सुन्दर स्मार्ट लेडीज की चुहल और फुसफुसाहट थी।

मगर शाम होते ही एक-एक करके सब चले गए।

शाम तक सब कुछ समेट दिया गया। सब कचरा-कट्टा बाहर निकालकर मेरे दरवाजे पर ताला लगा दिया गया।

मेरा दिल डूब गया। ये भी कोई बात हुई भला।

सारी रात अंधेरे में मेरे मन में अजीब ख्याल आते रहे कि अब मेरे पास कौन रहने आएगा। कहीं मेरे मालिक विदेश चले गए और मुझे सदा के लिए बन्द कर दिया गया तो मेरे यहां तो भूत ही डेरा जमाएंगे। कई तरह के अटपटे ख्याल तीन-चार दिन मेरे मन में चक्कर लगाते रहे।

उस दिन की बात है।

आधी रात मैं गहरी नींद में था तो मेरे कमरों में धड़ाधड़ सामान रखा जा रहा था।

मैं समझ गया कि घर के मालिक आ गए हैं। मैं उनका स्वागत करने के लिए अपनी नींद त्यागकर खड़ा हो गया। अपने स्वामी के प्रति मेरा पहला कर्तव्य था कि मैं उनकी देखभाल करूं तथा मेरे होते उन्हे कोई तकलीफ न हो।

यह तो कोई दूसरा परिवार था। मेरा मालिक तो बहुत ही शरीफ नेक आदमी था।

कुछ दिन साथ रहने के बाद ही किसी व्यक्ति के असली स्वभाव का पता चलता है।

यह परिवार काफी बड़ा था। दादा, उसके बच्चे यानि छोटे बच्चों के मम्मी-पापा, इन बच्चों की एक चिड़चिड़ी कुंवारी बुआ, एक जिंदा मगर लाश सरीखा विक्षिप्त चाचू। छोटे बच्चे दो ही थे - एक लड़का व एक लड़की।

मैं खुश हो गया कि अच्छा है अब मेरा दिल खूब लगा रहेगा। घर में हर वक्त रौनक रहेगी।

कुछ दिनों के बाद यह बात खुली कि ये लोग इतने अच्छे लोग नहीं थे। इन्होंने यह घर किराए पर लिया था। ये लोग इसी शहर के थे।

यहां आने से पहले वे इसी शहर की तंग गलियों वाले खस्ताहाल छोटे-से मकान में किराएदार की हैसियत से रहते थे। वहां मकान मालिक की खिचखिच बहुत थी। वहां से तंग आकर वे ऐसे मकान की तलाश में थे कि जो थोड़ा किफायती भी हो और जहां किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप न हो।

शहर के बाहरी एरिया में बनने वाले इंडीपेडेंट फ्लैट में सबसे बड़ा फायदा यह था कि यहां मकान मालिक बहुत कम दखलअंदाजी करता था। खास बात तो यह थी कि घर का असली मालिक तो कभी सामने आता ही नहीं था। सारी डील प्रापर्टी डीलर ही तय करते थे।

इन लोगों को यह फ्लैट तीन साल की शुरूआती लीज पर मिलना तय हुआ था। हर महीने किराया एक बैंक में जमा कराना तय हुआ था। फ्लैट दिलवाने वाले डीलर को एक महीने का किराया बतौर कमीशन दे दिया गया था।

इन लोगों ने मेरे भीतर का सारा निजाम उलट-पलटकर रख दिया था। ये लोग इतने दरिद्र तो नहीं थे मगर बहुत सारा कचरा साथ लेकर चले थे ये मलेच्छ लोग। आमूमन सभ्य लोग नए घर में तो हर चीज नई ला कर रखते हैं मगर इन लोगों का सामान जर्जर और खस्ता हालत में था। ।

अपना सामान उतारने में इन बेशर्म लोगों ने बहुत ही शोर मचाया। आधी रात ही चुनी थी इन पागलों ने मेरे यहां आने के लिए। सारी रात उनका बेतरतीब सामान उतरता रहा।

पड़ोस के एक चंट आदमी ने आकर कहा भी कि भले लोगो, आधी रात का वक्त है, शोर-शराबा न करो। आसपास भी लोग रहते हैं मगर किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। ये आने वाले लोग कुछ ज्यादा ही खंट तबीयत के थे। बात-बात पर लड़ने को तैयार। पड़ोसी भी इनका रवैया देख कर पीछे हट गए।

ये आने वाले लोग पूरे घर में ऐसे फैल गए जैसे दुश्मन की फौज अपने जीते हुए प्रदेशों पर बेरहमी से कब्जा करती है।

वैसे तो घर काफी बड़ा था मगर उनका इतना भारी भरकम सामान जब बेतरतीब ढंग से आनन फानन में सब तरफ पटका गया तो घर में बहुत कम जगह बची थी। आधी रात के बाद थक-हारकर ये लोग बेसुध पड़े थे। जिसको जहां जगह मिली वह वहीं सो गया।

सुबह होते ही वे सारे सिरफिरे लोग फिर हरकत में आ गए। बाजार से बिजली वाला और पलम्बर आ गया। हर कमरे में टी वी तथा ए सी फिट किया गया। फोन लगाए गए। मेरे सीने पर जगह-जगह कीलें ठोक कर उन लोगों ने पोस्टर, चित्र व पेंटिंग टांगी। सारी जगह भर गई। मेरा तो सांस लेना ही दूभर हो गया।

ये लोग पता नहीं किस ग्रह के जीव थे।

बस अपनी ही चिन्ता थी इन्हे। परिवार वाला माहौल तो

लगता ही नहीं था। सबसे जुदा बात यह थी कि घर के इन लोगों को मैंने एक साथ बोलते - बतियाते, उठते-बैठते या खाते-पीते बहुत कम देखा था। कोई पार्टी हो तो बात अलग है।

शुरू-शुरू में मुझे लगा कि यह मेरा वहम है मगर धीरे-धीरे मुझे पुख्ता यकीन होता गया कि मेरे अन्दर रहने वाले ये अनोखे व स्वार्थी प्राणी अपनी-अपनी दुनिया में मस्त रहने वाले जीव हैं। वे अपने-अपने कमरे में ही नौकर को बुलाकर खाने-पीने का सामान मंगवा लेते। ये लोग निहायत फूहड़ और अनैतिक जीव थे। पूजा-पाठ से कोसों दूर रहने वाले। भुक्खड़ और झगड़ालू।

घर के पांच व्यस्क लोग अलग अलग नमूने थे। अपनी तरह के खास और सबसे अलग।

सबसे सीनियर भुल्लर ने तो लगता था अपनी जवानी में अभी कदम रखा है जबकि वह सबसे उम्रदराज था। वह शोख चटक रंगों के कपड़े पहनता था।

उसकी लड़की सुधा हमेशा बहुत कम कपड़ों में नजर आती थी। जब कोई दूसरा घर में न हो फिर तो यह छोकरी बिल्कुल बिंदास हो जाती।

उन सात प्राणियों में से केवल वह उपेक्षित, लाचार और अर्धविक्षिप्त व्यक्ति ही था जो कुछ संजीदा किस्म का था। बचपन से ही उसे यह बीमारी थी। इस बेबस बेचारे इन्सान का धड़ से नीचे का सारा शरीर बेजान था।

शरीर की उम्र तो पच्चीस के आसपास होगी मगर उसका दिमाग पांच साल के बच्चे जैसा था। घर के दोनों बच्चे उसे चाचू कहकर बुलाते थे। वह हर वक्त बिस्तर पर लेटा छत की तरफ देखता रहता था - बिना कुछ सोचे या बिना किसी किस्म के अहसास के।

हर समय ऐसे विचारशून्य रहना कितनी बड़ी कठिन तपस्या का काम होता होगा।

भगवान भी तो हर समय चुपचाप रहते हैं। इन्सानों को अच्छा या बुरा करते देखते रहते हैं। कितनी महान साधना का काम है यह। सब कुछ देखो मगर जुबान बन्द रखो। बहुत कठिन काम है यह।

मिस्टर भुल्लर नाम का बूढ़ा इस घर में सबसे बड़ा उम्रदराज आदमी था।

सीनियर मोस्ट सीनियर सिटीजन। अपनी उम्र छिपाने के लिए यह बूढ़ा अनेक यत्न करता था। एकदम आधुनिक कपड़े पहनता। सप्ताह में दो बार अपने सूखे घास सरीखे सफेद बालों को रंगता।

शहर के तीनों प्रीमियम क्लबों की मेम्बरशिप इस के पास थी। अपनी सेहत को लेकर वह कुछ ज्यादा ही सनकी था। हो भी क्यूं न। दिल से वह अभी जवान और आशिक मिजाज था।

वह सुबह-सवेरे उठकर बिला नागा जिम जाता। शाम को लेक पर तफरीह करता। कभी चुस्त सूट पहनकर साथ लगते हर्बल गार्डन में सैर के लिए जाता। तीन-चार बूढ़ी होती जा रही सेक्सी लेडीज के साथ अच्छे अंतरंग सम्बंध थे। मौका मिलते ही उन्हे बारी-बारी अपने घर में ले आता।

बूढ़ा बहुत ही रंगीन-तबीयत और ठरकी मिजाज का आदमी था। अपने बच्चों की नजर में उसकी कोई खास इज्जत नहीं थी। मिस्टर भुल्लर ने दो नम्बर का अच्छा पैसा कमाया था।

अपनी रिटायरमेंट के सारे पैसे भी अभी तक उसकी गांठ में थे। उसके बेटे ने उस पर बहुत दबाव डाला कि अब प्रापर्टी की कीमतें कम हैं चलो कहीं घर बना लेते हैं मगर सीनियर भुल्लर बहुत ही चालाक आदमी था, कोई-न-कोई बहाना लगाकर उसने दस साल निकाल दिए थे। उसकी इस टालमटोल का कारण साफ था - अगर वह कहीं मकान बनाता तो पास के सारे पैसे खर्च हो जाते। उसे अपने उजूल-फिजूल खर्च पर कटौती करनी पड़ती। उसकी ऐय्याशी कम हो जाती।

मिस्टर भुल्लर किसी सरकारी ऑफिस से अफसर रिटायर हुआ था। अच्छी-खासी मासिक पेंशन पाता था। उसकी कुंवारी लड़की और दिमागी रूप से पिछड़ा लड़का उस पर निर्भर था। मिस्टर भुल्लर अभी जॉब में ही था जब कैंसर के कारण उसकी पत्नी की मौत हो गई थी। पत्नी से उसे कभी लगाव नहीं रहा था। शुरू से कई प्रेमिकाओं के साथ उसके सम्बंध थे। जग-दिखावे के लिए उसने दोबारा शादी करने की बहुत कोशिश की मगर उसके बेटे और बेटी ने हर बार कोई न कोई रोड़ा अटका दिया था।

इस बुजुर्ग का एक ही लड़का था जो शादीशुदा था। इस आदमी की बीवी बेहद नकचढ़ी और बिंदास थी। दोनों के एक लड़का व एक लड़की थी। कितनी हैरानी की बात थी कि अलग-अलग सनक और तेवर वाली तीन पीढ़ियां एक ही छत के नीचे रह रही थीं।

शुरू के दिनों में सब कुछ सामान्य चला। हो सकता है कि तब तक उनके असली चरित्र मुझ पर न खुले हों।

मिस्टर भुल्लर घर का मुखिया तो था मगर नाममात्र का ही मुखिया था।

किसी को उसकी न चाह थी और न ही परवाह थी। उसे भी अपने ही परिवार के किसी सदस्य के पास बैठना या बात करना अच्छा नहीं लगता था। कोई उसका सुझाव या सीख लेने को तैयार नहीं था। उसका अपना नौकर तक उसे मुंह पर पलटकर जवाब दे देता था बच्चों या बड़ों की तो बात ही छोड़ दीजिए।

घर में एक उम्र दराज कुंवारी लड़की बैठी हो और एक नासमझ अपाहिज बच्चे का बोझ जिस बूढ़े पर हो तो आप समझ सकते हैं कि मिस्टर भुल्लर ने अपने जीवन में कितना संर्घष किया है और अभी न जाने कैसा वक्त देखना बाकी है। कोई आशा की किरण उसके जीवन में नहीं बची थी। लगता नहीं था कि उसके

अच्छे दिन कभी आएंगे। न कहीं उसकी बेटी सैटल हो रही थी और न ही उसके छोटे बेटे की सेहत में किसी सुधार की संभावना थी।

मिस्टर भुल्लर की कुंवारी लड़की सुधा को घर का सबसे छोटा कमरा यानि सर्वेंट रूम मिला था। इस रूम का एक दरवाजा बाहर की तरफ खुलता था।

सुधा उतनी सीधी नहीं थी जितनी वह बाहर से दिखाई देती थी। वह ज्यादा समय टी. वी. में हॉट अंग्रेजी फिल्में या सीरियल देखती थी। फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे सरीखे कामोत्तेजित नावेल की शौकीन थी। उसने अपने लिए सपनों के किसी राजकुमार की इन्तजार करनी छोड़ दी थी। घर में खाना बनाने वाले नौकर से कभी कभार मौका पाकर अंतरंग सम्बध बना लेती तो कभी उसका एक अधेड़ प्रेमी उसके पास आ जाता जब घर में कोई नहीं होता था।

सुधा काफी पढ़ी लिखी थी। उसने एक अच्छे संस्थान से आर्किटेक्चर की डिग्री ली थी। चित्रकला में उसकी बहुत रुचि थी तभी उसने भवन निर्माण कला में विशेषता हासिल की थी।

सुधा पहले ऐसी नहीं थी। अपनी डिग्री के अन्तिम साल तक वह बहुत होनहार और समझदार लड़की मानी जाती थी। उसमें कल्पनाशीलता बहुत अधिक थी। भवनों का ऐसा-ऐसा अकल्पनीय खाका बनाती कि आसपास के बच्चे दांतों तले उंगलियां दबाए खड़े रह जाते। और तो और उन भवनों के आसपास की अद्‌भुत लैंडस्केपिंग को देखकर उसके टीचर दंग रह जाते थे।

उसने कुछ महीने नौकरी की मगर वहां से गुस्से के मारे लड़कर नौकरी छोड़ दी। जब किसी दूसरे शहर से ऑफर आई तो जाने में टालमटोल करती रही। पापा ने उसका खर्च बांधा हुआ था। बस इसी सुस्ती भरी जिन्दगी की आदी होने के कारण पिछले कई सालों से घर में बैठी थी। बाप से कम ही बनती थी उसकी। भाई-भाभी से भी बोलचाल बिलकुल बन्द थी।

घर तीन ग्रुपों में बंटा था।

मिस्टर भुल्लर और उसका हैंडीकैप्ड बेटा, उसकी झक्की कुंवारी लड़की और छोटा भुल्लर व उसके बीवी-बच्चे। इन तीनों कैटेगरी के लोगों की जिन्दगी बिलकुल कटी-कटी, नीरस, वीरान और उपेक्षित थी। सबसे बड़े कमरे में थे यंग भुल्लर अपने एकल परिवार के साथ। घर के लिविंग रूम पर इनका ही कब्जा था।

यंग भुल्लर के रहने का अन्दाज निराला था। उसकी आमदनी अच्छी खासी थी मगर इतनी नहीं थी कि वह अलग रह सके। अपने बाप के साथ रहने में उसका एक और लालच भी था। बड़े भुल्लर के पास काफी अच्छे शेयर थे और मेन बाजार में तीन दुकानें उसके नाम हैं।

यंग भुल्लर बहुत तेज मिजाज आदमी था। मियां बीवी दोनों नौकरी में थे और अच्छी तनख्वाह पाते थे। इन दोनों की बहुत ही मस्त जिन्दगी थी।

बड़ा भुल्लर तो पेंशन पाता था। शेयर से कुछ आमदनी हो जाती थी। दुकाने बहुत समय पहले किराये पर उठाई गई थीं। उनका किराया कुछ ज्यादा नहीं था।

घर का आधा किराया बूढ़ा देता था। बिजली पानी या अन्य किसी खर्च का भी आधा-आधा हिसाब किया जाता था। अपने पसन्द की सब्जी या अन्य खास चीज वह अपने पैसे से खरीदते मगर सांझी वस्तु खरीदने के लिए वे आधे पैसे एक दूसरे से मांग लेते।

मुझे तो शक होता था कि इन लोगों का आपस में कोई खूनी रिश्ता भी है या कि नहीं। इतना काइंयापन तो कोई गैरों के साथ भी नहीं करता।

जान-पहचान वाले, पड़ोसी या कोई रिश्तेदार इन लोगों के पास कम ही आते थे। साल में बस एक या दो। वैसे तो पूरी सोसायटी का कल्चर ही यही था कि अपने आप में मस्त रहो।

भुल्लर परिवार के लोगों के रिश्तेदार बंटे हुए थे।

बूढ़े के पास आने वाले लोगों को यंग भुल्लर पसन्द नहीं करता था।

मुझे तो हर वक्त यही लगता था कि मेरे पास इस घर में आने से पहले ही इन लोगों ने आपस में कितनी तरह के झगड़े व क्लेश करके अपने आप को जज्बाती तौर पर मजबूत किया हुआ था कि इन के रिश्ते इतने ठंडे पड़ चुके थे। अब इन के दिलों में एक दूसरे के प्रति कोई सम्मान या लिहाज नहीं बचा था।

ये लोग एक पी जी की तरह रह रहे थे। क्या सच में साथ के घरों में भी परिवार के लोगों के बीच ऐसे ही औपचारिक सम्बंध होते हैं। मैने कई बार साथ के घरों की दीवारों से कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश की मगर कुछ पता न चल सका।

मैं जानना चाहता था कि साथ लगते घरों के बाशिन्दे भी कहीं मेरे मालिक की तरह पत्थरदिल तो नहीं। मगर आसपास कहीं से कोई आवाज नहीं आई। मेरे साथ के घरों ने तो जैसे मौन साध रखा था।

ऐसे में मेरी समझ में यह नहीं आता था कि मेरी संवेदनशीलता कैसे बढ़ती जा रही थी कि मैं दिन रात अपने बाशिन्दों के दिलों में चल रही उहापोह की टोह ले लेकर दुखी होता रहता हूं।

भुल्लर परिवार के अन्दर ही अन्दर बहुत बड़ी दरार आ रही थी। बाप-बेटे दिन में कई बार पैसों को लेकर लड़ते, एक दूसरे को गालियां देते।

एक साल के अन्दर ही भुल्लर परिवार में खींच-तान इतनी बढ़ गई कि मामला पुलिस कचहरी तक चला गया।

आसपास रहनेवाले लोगों ने शिकायत की। हर समय गाली

गलौच को कौन सहन करता। किराएदार की वैसे भी कोई खास हैसियत नहीं होती समाज में।

सोसायटी के अहम लोगों की कई मीटिंग हुईं। मेरे असली मकान मालिक को फोन किए गए, वकील द्वारा नोटिस भिजवाया गया।

अन्ततः एक रात भुल्लर परिवार चुपके से सामान पैक करके पता नहीं कहां चला गया। मैं भी चुपचाप देखता रहा। मैं भी पक गया था उनकी कुत्तापाड़ी से।

मेरे मालिक ने जल्दी ही फ्लैट बेचने की ठान ली। जल्दी ही इस का सौदा हो गया।

आने वाले ये लोग बुजुर्ग दंपति थे। एकदम शालीन और सभ्य। लक्ष्मी और उसका पति मदन गोपाल वर्मा।

घर का माहौल एकदम शांत रहता। वे ऐसे रहते थे मानो यहां कोई रहता नहीं है। मैं भी इस सुस्त रफ्तार जिन्दगी का आदी होता गया और मेरी इन्द्रियां भी सुप्त होने लगी।

मैं भी लम्बी तानकर सो गया था।

इस अपूर्व शांति के बीच हर बरस जून के महीने में इस घर में वसंत लौटती थी। लक्ष्मी तो मानो खिल उठती।

उन दिनों लक्ष्मी की दोनों बेटियां अपने बच्चों समेत लक्ष्मी के पास महीना भर रहने के लिए आती थीं।

घर में खूब चहलपहल रहती थी। लक्ष्मी अपने नाते-नातिनों से खेलते-बतियाते थकती नहीं थी। पूरा दिन घर में उन के लिए कभी डोसा, कभी रस मलाई, चना पूरी या दही भल्ले बनाने में ही मस्त और व्यस्त रहती। गजब की फुर्ती आ जाती थी उसमें।

पिछले दस बरसों से वह यहां अकेली ही रहती थी। साल के एकाध महीने में उसके घर खूब रौनक रहती थी। बीच में कभी सप्ताह भर के लिए लक्ष्मी अपनी बेटियों के पास चली जाती। बाकी दिनों में फोन पर बात करके या आसपास थोड़ी देर बतियाकर वह अपने फ्लैट में चुपचाप-सी बन्द पड़ी रहती। गांव से कोई रिश्तेदार या जान-पहचान का आ जाता तो लक्ष्मी का कुछ समय कुछ दिन हंस खेल कर गुजरता।

लक्ष्मी के पति मदन गोपाल वर्मा काफी रौब वाले आदमी थे। हिमाचल में उनका पुश्तैनी घर था। पचास के दशक में बैंक में बाबू भर्ती होकर वह इस महानगर में आए थे।

शुरू में उन्होने अपने इलाके की तरफ अपनी बदली करवाने की पूरी कोशिश की थी मगर उस तरफ उनके बैंक की कोई शाखा नहीं थी। बाद में यहीं ही रच-बस गए। यहां के जीवन के इतने आदी हो गए कि मुड़कर हिमाचल का रुख नहीं किया उन्होने।

लक्ष्मी पंजाब के एक गांव की थी। मदन गोपाल से उसकी शादी हुई तो कुछ महीने ससुराल में ही रहना पड़ा उसे। संयुक्त परिवार था। घर में खेती थी, जिम्मेवारियां थीं, ढोर-डंगरों का खासा काम था। ननद देवर छोटे थे। लक्ष्मी के सास ससुर को डर भी था कि बहू अगर लड़के के साथ शहर चली गई तो फिर पक्का बिछोड़ा ही समझो। वहां साफ सुथरे माहौल में रहने लगेगी तो गांव का रुख नहीं करेगी।

मदन गोपाल बाबू भी जिद्द पर अड़े रहे। पहले तो होटल का खाना खा लेते थे। कभी-कभार खुद भी बना लेते। मगर जब से शादी हुई थी यह सब अखरने लगा था। साथ वाले भी ताना देते कि पत्नी को गांव में ही छोड़ आए हो, यहां एक शादी और कर लो वर्ना जवानी में ही विधुर सरीखे खूसट हो जाओगे तुम। मदन गोपाल बाबू को ये बातें बहुत अखरतीं। गांव आकर सत्याग्रह पर बैठ गए। नौकरी छोड़ देने की धमकी दे डाली। मां-बाप को मजबूरन लक्ष्मी को उनके साथ रवाना करना पड़ा।

लक्ष्मी को दिल्ली ला कर ही दम लिया उन्होने। लक्ष्मी से उन्हे अगाध प्रेम था। लक्ष्मी थी भी सुन्दर और सुघढ़। खाना बनाने में माहिर, बोलती तो रस टपकता था उसकी जुबान से।

धीरे-धीरे लक्ष्मी शहर के माहौल में रच बस गई। गांव के सारे सम्बंध सिमटते चले गए। कभी-कभार शादी-ब्याह या गमीं में जाना होता। वहां भी दौड़ लगी रहती कि कब वापिस लौटें। दो लड़कियां हुईं। खूब मन लगाकर अच्छे स्कूलों में पढ़ाया उन्होने। अच्छे घरों में उनके रिश्ते किए और अच्छी शादी की।

मदन गोपाल बाबू ने शादी के बाद अच्छी तरक्की की। अच्छे ग्रेड में पहुंचकर अच्छा पैसा जमा किया। यहां घर बनाने की योजना उनके मन में पहले नहीं थी। उन्होने सोचा था कि अपने पुश्तैनी गांव में ही जाकर बस जाएंगे। मगर जब से उन्होने बच्चियों की शादियां यहां बड़े शहरों में कर दी थीं तब से इस महानगर से उनका मोह बढ़ता ही जा रहा था।

मदन गोपाल बाबू अच्छी पेंशन लेकर रिटायर हुए। काफी पैसा मिला उन्हें। पहले तो बैंक की कालोनी में ही रहते थे।

अब यह फ्लैट लेकर खूब अच्छी तरह से अपनी रुचि के अनुसार फर्निश करवाकर रहने लगे।

दो साल पहले एक बस दुर्घटना में मदन गोपाल बाबू चल बसे।

लक्ष्मी नितांत अकेली पड़ गई। उस पर तो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। पहला साल लड़कियों व गांव के नजदीकी रिश्तेदारों ने मिलझुल कर निकलवाया। बाद में तो लक्ष्मी को अकेले ही रहना था। इस एकांकी जीवन में बस सफाई वाली ही लक्ष्मी के सुख-दुख की साथी थी। वह लक्ष्मी को आसपास बसने वाले लोगों की खबरें सुनाती तथा उसके साथ कुछ पल हंसी खुशी गुजारती।

अपनी बेटियां की खैर-खबर फोन पर वह लेती रहती। खाना लक्ष्मी खुद बना लेती थी। कभी बीमार हो जाती तो सफाई वाली बना देती। मंदिर कम ही जाती। घर पर ही धार्मिक पुस्तकें पढ़ लेती या टी वी पर प्रोग्राम देख लेती। सुबह-शाम अपने पार्क में सैर कर लेती। आसपास बूढ़ी औरतें कम ही थीं। जिन तीन चार घरों

में उसकी हमउम्र स्त्रियां रहती थीं। वह भी धीरे-धीरे अपने बच्चों से झगड़ा होने के कारण गांवों में अन्य बच्चों के पास लौट गई थीं।

लक्ष्मी के नाती नातिन थोड़े बड़े हुए तो लक्ष्मी की लड़कियों का उसके पास आना-जाना कम हो गया। बच्चे बड़ी क्लासों में थे। वही मारकाट प्रतियोगिता। स्कूल से आते तो कोचिंग में चले जाते। लक्ष्मी का सारा ध्यान उन में ही लगा रहता। और था भी कौन उसका। पीछे गांव में मां-बाप, सास-सुसर सब गुजर चुके थे। भाई- बहन, देवर-देवरानी सब अपनी गृहस्थियों में रच-बस गए थे।

लक्ष्मी अपने नाती की शादी में खूब नाचती और इतराती रही। बाद में चाहे दस दिन बिस्तर से नहीं उठी वह। उसने बहुत कोशिश की कि उसका नाती व उसकी बहू उसके पास रहे। अपने लिए सहारा ढूंढ रही थी वह। इतना बड़ा फ्लैट है उसका। सुख सुविधा की हर चीज है उसमें। लक्ष्मी के दोहते का कारोबार उसके अपने शहर में ही था। हर रोज लक्ष्मी के फ्लैट से जाता तो चार-पांच घंटे सफर में ही लग जाते। उसके नाती व बहू कुछ दिन लक्ष्मी के पास ठहर कर अपने शहर लौट गए।

धीरे-धीरे लक्ष्मी के हाथ पैर रुकने लगे थे। आंखों की रोशनी कम हो गई। बाल पूरी तरह सफेद हो गए। उम्र अस्सी के आसपास थी। चेहरा झुर्रियों से भर गया। अकेलेपन ने सारी शक्ति हर ली थी। उसकी लड़कियां तो अपने बहुओं व दामादों के लाड़ चाव में ही मस्त थीं।

बूढ़ी कमजोर मां के पास आ कर कौन रहता भला। आस पड़ोस का माहौल अब उतना सौहार्दपूर्ण नहीं रह गया था। चूहा दौड़ में सब को एक दूसरे से आगे निकलने की जल्दी थी। ऐसे में कौन लक्ष्मी के पास आकर दो घड़ी बतियाता। उसका सुख-दुख सांझा करता।

टी. वी. के सहारे ही लक्ष्मी के दिन कटते जा रहे थे। अब तो लक्ष्मी सैर करने के काबिल भी न रह गई थी। घुटनों में दर्द रहने लगा था उसे।

साफ सफाई वाली सुबह आठ बजे तक आ जाती थी।

एक दिन काफी देर दरवाजे की घंटी बजाने के बाद भी लक्ष्मी ने दरवाजा नहीं खोला तो सफाई करने वाली लड़की वापिस लौट गई। उसने सोचा कि शायद लक्ष्मी बीबी अपनी लड़की के पास चली गई है।

दूसरे दिन भी यही हुआ। बहुत देर घंटी के बाद भी दरवाजा नहीं खुला। दरवाजे का ताला आधुनिक विधि का था। पता नहीं चलता था कि बाहर से बन्द है या अन्दर से लॉक किया गया है।

तीसरे दिन भी उस लड़की को जब कोई जवाब नहीं मिला तो उसका माथा ठनका। कहीं जाना होता तो लक्ष्मी बीबी उसे बता देती।

सफाई वाली लड़की ने पड़ोस के कपूर साहब को बुलाया।

कपूर साहब ने पड़ोस के तीन-चार मौजिज लोगों को साथ लिया।

पुलिस बुला ली गई। लक्ष्मी के दरवाजे का ताला तोड़ा गया।

घर के अन्दर के भयानक हादसे को देखकर सब का दिल दहल गया। घर का सारा सामान इधर-उधर बिखरा हुआ था। जगह जगह खून का ढेर। चोरी के लालच में किसी ने लक्ष्मी का खून कर दिया था। लाश से बू आ रही थी। लक्ष्मी की लड़कियां व दामाद आए।

पुलिस कई दिन तक तहकीकात करती रही मगर कातिलों का कोई सुराग नहीं मिला।

लक्ष्मी की लड़कियां अपनी बूढ़ी मां को कब तक रोती रहतीं। उनके व्यापार के कई टंटे थे। पुलिस का पीछा करना भी उन्होने छोड़ दिया। उन्हें भरोसा था कि अगर चोर पकड़े भी गए तो अब उनकी मां तो वापिस आने से रही। पुलिस ने चोरी का माल इतनी आसानी से कहां दे देना है।

लक्ष्मी की दोनो बेटियों ने मिल कर तय किया कि लक्ष्मी का बचा-खुचा सामान वहीं नीलाम कर दिया जाए और फ्लैट को बेच दिया जाए।

दो दिन बाद रायल एस्टेट की तरफ से तीन-चार पार्टियां फ्लैट को देखने आईं और एक सप्ताह के अन्दर ही फ्लैट दो करोड़ रुपयों का बिक गया।

लक्ष्मी का कत्ल क्या हुआ कि मेरा नसीब भी पूरी तरह बदल गया।

मेरी सोचने समझने की सारी शक्ति अब क्षीण हो चुकी थी।

कुछ दिनों में ही एक खाती-पीती और भरी-पूरी फैमिली रहने के लिए आ गई।

लक्ष्मी निवास से मिलने वाले सारे पैसे का हिसाब हुआ। खर्च घटाकर बाकी रकम आधी-आधी बांट लेने के बाद लक्ष्मी की दोनों बेटियों ने एक अच्छे बैंक में पैसा जमा किया।

फ्लैट की चाबी नए मालिक को सौंप कर दोनों बहनों ने एक बढ़िया होटल में लंच किया और शाम अपने-अपने शहर के लिए फ्लाईट पकड़ी।

मैं फिर से आबाद हो गया। पहले यहां कभी-कभी कहकहे सुनाई देते थे जब लक्ष्मी की बेटियां कुछ दिनों के लिए उसके पास रहने के लिए आती थीं।

कुछ दिनों तक लक्ष्मी के वहशी कत्ल की चर्चा आस-पड़ोस के घरों में होती रही। अखबारों में बूढ़े लोगों के असुरक्षित जीवन पर बड़े-बड़े लेख भी छपे। लक्ष्मी की बेरहम मौत के साथ ही अकेले उदास फ्लैट की मौत भी हो गई। मेरे अन्दर भी अब सुनने-समझने की ताकत खत्म हो गई थी।

205, जी एच - 3, सेक्टर - 24, पंचकूला,
हरियाणा - 134116, मो. 0 98724 30707

कहानी

पहाड़ पिघलता रहा

◆ डॉ. जयनारायण कश्यप

लौ की तरह लरजती, काँपती देह, लाठी लिए खिंचे चली जा रही थी, घिसटते घिसटते, अपनी मंजिल, झोंपड़ीनुमा घर की तरफ। गाँव का आखिरी घर, चोटी पे टंगा, जैसे चील ने पाँव से उठा, पटक दिया हो मांस का टुकड़ा, नापसंद किया हुआ।

देह को पंजकू बुलाते हैं सभी। अब अकेली जान है घर में। मैदान से आया यात्री चाहेगा, उसे यहीं ठिकाना मिल जाए, तो यहीं बस जाए। पर पहाड़ जानता है, इसके बस में यहां बसना नामुमकिन है।

पंजकू सदा से अकेली नहीं थी। इक समय था परिवार उसके साथ था, एक बेटा, उसकी पत्नी, दो छोटी छोटी लड़कियां जो उसकी पोतियां थीं। गुजर बसर के लिए, दो तीन बकरियाँ, जंगल से संजोया घास, और लकड़ियां।

भण्डार इतना सा ही। कपड़ा, गाँव वालों की चाकरी के अधीन था। भोजन भी कभी सेब के बागीचे में मजूरी से, या किसी बागवान की मेहरबानी से आ जाता। गाँव में बिजली थी, पर उस घर में नहीं थी।

बिना मिट्टी गारे या सीमेंट के, केवल पत्थरों से बना घर था।

मैं उस गाँव में अध्यापक बन सरकारी सेवा में नियुक्त, मात्र दर्शक था। गाँव के कानून के बाहर कोई जाए तो मार कर ऐसी घाटी में फेंक दिया जाता, जहाँ चील कौवे भी पर मारने से डरते। सुख सुविधा कम से कम पचास कोस दूर, नदी किनारे बसे कस्बे में। रास्ते पैदल, सामान खच्चर पे आता था।

मनोरंजन के नाम पर, लोक नाच व घर की भट्ठी में निकली शराब।

गाँव मनोरम था, बर्फ से ढकी चोटियाँ, कमाल का सौंदर्य लिए। जंगल शाम से ही कठफोड़वों की बोली से गूँज उठता। जंगली मुर्गे, खेतों में ऐसे घूमते जैसे किसी ने बुलाये हों। रीछ और बर्फानी तेंदुए, बाघ आमतौर पर घर तक चहल कदमी कर जाते।

गाँव के राशन विक्रेता को कैप्टन के नाम से जाना जाता था। पक्का दारूबाज। जेब में ताजी वत्स्नाभ (मीठा विष, तीव्र विष) की जड़ भी रखता था और उसका नशा करता था। देशी शराब भी छिप छिप कर बेचता था। हमारी कहानी की नायिका को यहीं तक राशन के लिए आना पड़ता था। किसी जमानें में स्वप्न सुंदरी से कम नहीं थी पंजकू। उसे मलाल था जवानी में किसी बांके जवान के साथ क्यों भाग नहीं गई। भागना विवाह की मान्य रीति थी। अपने जमानें में वहां सेवा रत कर्मचारियों की सैरगाह थी वो। वही उसका भरण पोषण का साधन भी था। पहाड़ की सारी सुंदरता जैसे उसमें समा गई थी। परित्यक्ता थी, पति उसे छोड़ किसी दूसरी को घर ले आया था, अतः कहानी का पात्र नहीं। अकेली जिंदगी से जूझती भी रही और जिन्दगी का आनंद ले नाचती भी रही। गाँव के तीन लोकगीतों की नायिका है वो। उसकी सुंदरता का बखान अब भी वहां से घर लौटे कर्मचारी अपने गाँव की चौपाल में किया करते हैं। अपनी बातों से सबका दिल बहलाती थी, मगर मजाल किसी की, कोई उसे छुवे, पहाड़ थी वो। अपने घर से दूर बैठे कर्मचारियों को , हवा का ताजा झोंका दे उन्हें उस गाँव से बाँध रखती थी। हसरत संजोए बहुत से कर्मचारी खाली हाथ लिए वापिस लौट गए थे अपने घर।

वो चाहती तो कोई भी तैयार हो जाता उसे पत्नी बना घर ले जाने के लिए। मगर एक बेटा था छोड़ कहाँ जाती।

एक बार मैनें उससे पूछा, पंजकू , दूध चाहिए था, मिलेगा कहीं? जवाब सुन धक् रह गया मैं, बोली, गुरुजी, अब कहां, और जोर से हंसी। इसी हंसी ठट्ठे के लिए कर्मचारी उसके घर गलियों के चक्कर काटते थे। वो भी कर्मचारियों से बतियाने के लिए, घर के बाहर, सरकारी नल पर आ जाती थी। कई बार तो बतियाने के लिए, वह भरी बाल्टी जमीं पर उल्टाते हुए देखी गई थी। और इस दिलबहलाव के बदले वह कर्मचारियों से भरपूर मदद लिया करती थी।

मैंने पूछा , पंजकू वो जो सामने ऊंची पहाड़ी पे, दूसरा गाँव है , वहां मिडिल स्कूल है, और अध्यापक भी वहीं का है, लेकिन कोई बच्चा, छठी कक्षा में नहीं जाता, क्या बात है? हँसते हुए बोली गुरुजी, इसीलिए तो वहां छठी कक्षा में बच्चा नहीं है कि अध्यापक वहीं का है, वो पांचवीं ही पास नहीं करने देता, किसी को। मैंने

पूछा क्यों? बोली गुरु जी अगर कोई पांचवीं पास कर गया, तो छठी कक्षा में आ जाएगा, फिर आठवीं का बोर्ड है , जो इसके हाथ में नहीं। अगर बच्चा आठवीं पास कर गया तो, कहीं से दसवीं भी कर लेगा और, जे. बी. टी. कर लेगा, फिर वो इसी का स्थानांतरण करवा देगा। अतः ये पांचवीं ही पास नहीं करने देता। और मैं उस अध्यापक की समझदारी से सन्न रह गया। मैंने पूछा पंजकू गाँव से कोई अफसर नहीं बना अब तक क्या ? पंजकू बोली गुरूजी कम से कम दस अफसर हैं बड़े बड़े। मैंने पूछा, गाँव में आते हैं कभी? जोर से हंसी, पंजकू, आँखें बाहर निकल आईं, दर्द भरी आवाज में बोली, गाँव में कौन वापिस आता है गुरु जी ? गाँव की लुगाई को यहीं छोड़ वहीँ नई शादी रचा बस जाते हैं।

पंजकू के बेटे ने उसका साथ नहीं दिया। वो स्कूल से भाग जाता, झाड़ियों में छिपा रहता। पंजकू ने सब अध्यापकों से उसे अपनी पूरी सहायता दिलाने का प्रयत्न किया, पर सफल न हुई। बच्चे का ध्यान पढ़ाई में था ही नहीं। वो आवारा हो गया। पहाड़ से जैसे ग्लेशियर छूट गया, पहाड़ की ऊंचाई जैसे एकदम सौ फीट कम हो गई। पंजकू खूब रोती। हंसी ठट्ठा कम हो गया, लेकिन आत्मा अभी मरी नहीं थी।सोलह साल के होते ही डिक्रू (पंजकू का बेटा) की शादी हो गई। पास के गाँव से उसकी घरवाली लिवाई गई। दो बकरियों और पांच हजार रुपयों के बदले। जानें पंजकू ने इतने रुपयों का इंतजाम कहाँ से कर लिया था। डिक्रू , बांस की खपच्चियों से सेब ढोने के लिए टोकरियाँ (स्थानिक नाम किल्टू) बनाता, और बेचता, लेकिन गुजारा ही था। साथ में बच्चा होने की औषध देता। खूब चर्चा होने लगी ,

जिसके , उसके बताये अनुसार बच्चा होता वो, पांच बोतल शराब और मुर्गा देता। अब बच्चे का स्थान, लड़के ने ले लिया। वो लड़का होने की औषध देता और, पांच बोतल शराब, एक मुर्गा और दो सौ रुपये मांगता। लोग खुशी से देते। शादी के दूसरे साल, डिक्रू के घर एक बेटी आई। देवता और बिरादरी को बकरी और शराब से प्रसन्न किया गया। डिक्रू शराब में डूब गया। दो ही वर्ष बाद एक और लड़की घर में आ गई।

गाँव में देवता का महत्व अधिक था। गाँव का कोई काम देवता से पूछे बिना नहीं होता था। अगर गाँव में कोई बीमार हो जाता तो पहले देवता की आज्ञा ली जाती कि इसे चिकित्सक को दिखाया जाए अथवा नहीं। एक दिन गाँव के चिकित्सक ने अजीब कहानी सुनाई। रात को दो बजे औषधालय का दरवाजा खटखटाया गया। चिकित्सक महोदय ने पूछा, क्या बात है? आगंतुक बोला, डॉक्टर साहब दर्द की दवा है कोई? डाक्टर ने पूछा, 'क्या हुआ?' आगंतुक बोला कि एक उन्नीस वर्ष की लड़की गिर गई है, और दर्द से बहुत छटपटा रही है। कब गिरी? डाक्टर ने पूछा। आगंतुक बोला कि दिन में बारह बजे के करीब गिरी है? डाक्टर ने पूछा, दिन में क्यों नहीं आये? उत्तर से चिकित्सक का सर घूम गया, आगंतुक बोला, देवता ने इनकार किया था। ऐसे गाँव में अध्यापक भी कुछ नहीं कर सकते, जहां राजनीतिज्ञों को भी कानून लागू करने के लिए गाँव प्रधान का मुख देखना पड़ता है।

सर्दियों की छुट्टियों के पश्चात, एक दिन अचानक पंजकू मिली, मैंने पंजकू को पूछा, डिक्रू सब को लड़के बांटता है, खुद इसके यहां दो लड़कियां कैसे आ गईं ? पंजकू हंसी, गुरुजी, अगर इसके कहने से संतान आती तो यह संतान नहीं, अपने लिए लॉटरी निकालता। आप तो जानते हैं, ढकोसला बाजी है, और कुछ नहीं। मैंने छेड़ते हुए पूछा, पंजकू पहाड़ पिघल रहा है, अब वो रौनक क्यों नहीं है? पंजकू बोली, लड़कियां बड़ी हो रही हैं, इस मुए को इनकी कोई चिंता नहीं है, बस शराब ही का हो कर रह गया है। मेरा बस चले तो दस साल की होते ही आपके गाँव में इनका ब्याह कर दूँगी। चाहो तो गाँव से दो लड़के ले आना , उनके साथ भगा दूँगी। निश्छल हंसी।

कुछ वर्ष बाद गाँव में किसी दूर दराज, मैदानी इलाके से, फेरी वाले ऊनी कपड़ा बेचने आने लगे। वहां से, सुल्फे की खेप ले जाते। और कुछ भेड़ों की ऊन, ओगल, बथुवा, अखरोट इत्यादि ले जाते। किसी को कोई शंका नहीं थी।

वो डिक्रू की झौंपड़ी में किराएदार हो गए। डिक्रू की कुछ आमदन इस से होने लगी। लड़कियों का शरीर कुछ भर आया था। किसे पता था , व्यापारी क्या व्यापार कर बैठेंगे। पंजकू को कुछ पता न चला।

व्यापारियों ने डिक्रू को शराब पिला, अपने भाइयों के लिए लड़कियां मांग लीं। शादी में खूब शराब और मांस का दौर चला। व्यापारी दोनों लड़कियों को ब्याह ले गए।

दस वर्ष बीत गए, लड़कियों का कुछ पता न चला, कोई कहता है, उन लोगों ने ब्याह नहीं रचाया था, बल्कि, उन बच्चियों को ले जाकर, कहीं शरीर व्यापारियों को बेच दिया था।

पहाड़ से बर्फ के तोंदे धीरे-धीरे खिसकने लगे, पहाड़ मैदान की गर्मी से नंगे हो गए थे।

शादी को आज तीस वर्ष हो गए, मुड़ के एक बार भी उन लड़कियों का मुंह उस गाँव ने नहीं देखा।

न वो व्यापारी वापिस उस गाँव में आये। पंजकू अब झुर्रियों में कहानी समेटे हुए घूमने लगी।

कुछ वर्ष बाद पास के गाँव से भी ऐसी ही सूचना अखबार में पढ़ने को मिली , कोई सौदागर, पहाड़ से शादी के नाम फुसला कर गाँव की लड़कियों को ले जा कर देह व्यापार के लिए बेच रहे हैं।

पंजकू कभी-कभी किसी मोड़ से आती दिख जाती है, घिसटती हुई, जताती हुई कि पहाड़ पिघल रहा है, निरंतर।

मकान नंबर 120, रौड़ा सेक्टर 2, बिलासपुर, जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश-174001, मो. 0 94182 58589

मोनिका शर्मा सारथी की गज़लें

एक

जहां में अपनी तहजीबों की इक पहचान है भारत
है अपनी आन अपनी शान है जीशान है भारत

मैं हूँ इक रूह जो ओढ़े खड़ी हूँ जिस्म मिट्‌टी का
मिरी चाहत मिरा जज्बा मिरा ईमान है भारत

दिखाओगे अगर आँखें तो आँखें नोच डालेगा
दिखाओ प्यार तो कुर्बान था कुर्बान है भारत

बिखरती है जमाने भर में जिनसे प्यार की खुशबू
कई ऐसे ही फूलों का बड़ा गुलदान है भारत

इसे आजाद करने को शहीदों की गयीं जानें
सभी उन पाक रूहों पे सदा कुर्बान है भारत

हजारों ख़्वाहिशें निकलीं हजारों ख़्वाब भी टूटे
कभी दिल से न जो निकला वो बस अरमान है भारत

गजल कैसे न भारत पे कहे यह सारथी अपनी
रदीफ़ो काफ़िया है गीत का उन्वान है भारत

गुलदान –गुलदस्ता
जीशान– सौभाग्यशाली

दो

निगाहें उन से उलझी हैं जरा दिल को संभलने दो
दिलों के मेल से जलती हुयी दुनिया को जलने दो

सभी सोये हुये अरमान कहते हैं ये धड़कन से
जरा फिर से, जरा फिर से, जरा फिर से मचलने दो

वफ़ा के शौक में कितने ही परवाने जले लौ में
कि अब है शमअ की बारी उसे भी तो पिघलने दो

चुनी है राह उसूलों की तो यह मुमकिन ही है फिर तो
उबलते ही रहेंगे पाँव में छाले उबलने दो

गिला क्यों कर करे कोई जो है बदली अदा हमने
जफ़ा का ही सही इल्जाम कोई हम पे पलने दो

कहाँ तक बोझ गम का सारथी तन्हा उठायेगी
मिला अब हमसफर कोई तो उसको साथ चलने दो

तीन

लाई है कैसे मोड़ पे यह आशिकी मुझे
बेबस बना रही है मेरी जिंदगी मुझे

प्यासे ही ख़्वाब रह गए प्यासी ही आरजू
बंजर बना रही है ये अब तिश्नगी मुझे

क्यूँ ? रोशनी के काफिले मेरे लिये न थे?
अपनाती ही रही है सदा तीरगी मुझे

पूरा हुजूम घर मेरा फिर भी उदास हूँ
ले जायेगी कहाँ भला यह बेखुदी मुझे

ये कैसे रास्ते हैं ये कैसी हैं मंजिलें?
परछायी मेरी भी है जहाँ अजनबी मुझे

हर शख्स को ही शख्स से मसले हैं सारथी
पागल बना न दे कहीं यह बेकली मुझे।

चार

रखते हैं अपने कदम उनके निशां पर
नाम जिनका रहता है हरदम जुबां पर

ख़्बावों की तामीर अब मिट्टी हुयी है
टूटी थी बिजली मेरे दिल के मकां पर

गर ये आँसूँ मेरे सब गम धो सकेंगे
खूब रो लो फिर तो मेरी दास्तां पर

दिल की सारी बातें आँखों से कहें वो
मैं फिदा अंदाज और हाले बयां पर

सादगी से मार देता है वो मुझको
रहता है कातिल वो मेरा बेजुबां पर

जुर्म की सब इंतिहा भी हो चुकी है
कर खुदा रहमो करम कुछ अब जहां पर

नींद से तो सारथी बनती नहीं है
गिनते रहते हैं तारे ही आसमां पर

पांच

दूर मुझसे तू होना नहीं
दिल में नश्तर चुभोना नहीं

रात काली घनी है तो क्या
हौसला आप खोना नहीं

प्यार की वादियों में सनम
ख़ार ग़म के तो होना नहीं

खेलते जिस्से हो शौक से
मेरा दिल है खिलौना नहीं

साथ अश्कों का है उम्र भर
चन्द लम्हों का रोना नहीं

गम बहुत हो चुका महरबाँ
अब उदासी में खोना नहीं

नींन्दें कोई चुरा ले गया
अब मुक़द्दर में सोना नहीं

हौसला रखना तुम सारथी
भूले से गम में रोना नहीं

छः

दर्द से दोस्ती पुरानी है
टूटे दिल की यही कहानी है

मेरे बचपन का वो हसीं मन्जर
देखकर मुझको पानी पानी है

मेरे होठों पे जो हँसी है अभी
गुजरे कल की मेरे निशानी है

सुनके हर कोई खून रोए गा
इतनी ग़म गीन ये कहानी है

जिसको हमने लगाया सीने से
वो तो बस दर्द का ही दानी है

उसके नक्शे कदम पे चलना था
ख़ाक सेहरा की हमने छानी है

ख़्बाव खुशियों के किस लिए देखें
गम से जब दोस्ती निभानी है

सारथी का यूँ झुक के मिलना भी
उसके इखलास की निशानी है

सात

मुहब्बत सी कोई भी जन्नत नहीं है
अलग बात है इसमें बरकत नहीं है

सियासत का जादू नजर बांधाता है
इज़ाफत है इसमें हकीकत नहीं है

बहुत तलखियाँ अब हैं उनकी अदा में
कि पहले सी कोई नज़ाकत नहीं है

बड़ी ही अजब है ये दुनिया की महफ़िल
यहाँ हमने देखी मुहब्बत नहीं है

दिखाऊँ भला कैसे मैं दर्द ए दिल को
ये दिल चीरने की इज़ाजत नहीं है

नहीं सारथी अब बहुत हो चुका है
झुकूं इससे ज्यादा जरूरत नहीं हैं

आठ

करके दो झूठी बातें यूँ मुझसे वो प्यार से
खेले बड़े ही दिल से मेरे ऐतबार से

वो रूह में बसे मेरी आंखों के रास्ते
करती भी क्या गिला मैं दिले बेकरार से

जल जल के मैं धुँआ हुयी रंजों की आग में
अब खाक ही उड़ेगी हाँ अपनी मजार से

ये रौनकें ये महफिलें सब राख सी लगें
होती नहीं हैं खाली निगाहें गुबार से

क्यों सारथी के हिस्से में थीं गम की शोखियाँ
पूछेगी रूह मर के परवरदिगार से

**सुपुत्री श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, गाँव व डाकघर रक्कड़, तहसील रक्कड़,
जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-177043**

अनिल कटोच की लघु कथाएं

मेरी नजर के सामने

अमर सिंह और एकता अमेरिका में एक अच्छे भविष्य के लिए गए थे। वह दोनों एक साथ ऐसी कम्पनी में थे, जहां एक्स रेटेड बनाए जाते थे। वह दोनों अच्छे दोस्त थे। दोनों ने शादी करने की विचारधारा तैयार कर ली। यह विचारधारा देश में बैठे उनके परिजनों में पहुंच गई थी। मन की विचारधारा पूर्ण हो, वहां शहर में कोरोना वायरस फैल गया। वे कंपनी में जाते रहे, पूर्ण एहतियात के साथ। आगे आने वाली अनहोनी को कोई रोक नहीं सकता है। सच में दोनों कोरोना वायरस की चपेट में आ गए। उन्हें किसी तरह अस्पताल में भर्ती करवाया गया। दोनों की हालत गंभीर बनी हुई थी। एक दिन की बात है, अमर सिंह ने एकता से कहा - कोई बात हो मेरे मित्र उसे आज कह दो। एकता ने कहा - ऐसे नहीं कहते। हमने अभी जिंदगी की शुरुआत करनी है।

- मेरा वक्त नजदीक आ गया है। अपनी जिंदगी अपने ढंग से जीना।

सच में अमर सिंह यह कहकर हमेशा के लिए मौन हो गया। यहां एक भारतीय डॉक्टर शंकर एकता को ढांढस बंधाने की कोशिश कर रहा था। वह बार-बार कह रहा था - हिम्मत रखो, शेष भगवान पर छोड़ दो।

प्रतिदिन एकता से उसका सामना होता। शंकर को एकता से लगाव हो गया। शंकर दिन में बहुत से मरीज देखता। एकता यह सब देखती रहती। वह शंकर की तारीफ करती। उसे शंकर सिंह से लगाव हो गया। बहुत दिनों से बीमार पड़ी एकता स्वस्थ हो गई । वह तनाव मुक्त हो गई थी।

दुआ

कोरोना वायरस से शहर में सबसे ज्यादा गरीब लोग प्रभावित हुए। अमीर लोग विदेशों से यह संक्रमण देश में लाए और गरीब इस महामारी के जाल में फंस गया। देखते-देखते हजारों लोग इस बीमारी की चपेट में आ गए। शहर की एक बस्ती में इस महामारी का प्रभाव ज्यादा होने के कारण कर्फ्यू में कोई ढील नहीं दी गई।

बस्ती के चारों ओर पुलिस बल तैनात थे। बस्ती में चंद लोग बार-बार पुलिस को तंग कर रहे थे। इन्हीं पुलिस वालों में अजय नाम का युवक था। उसकी ड्यूटी बस्ती में चलती फिरती दुकान में लगी थी। यहां लोग अपनी जरूरत का सामान लेकर अपने घरों में चले जाते। थोड़े दिनों बाद इस महामारी का प्रकोप बस्ती में कम हो गया। मगर अजय इस महामारी की चपेट में आ गया। धीरे-धीरे अजय भी ठीक हो गया। इसी बस्ती में अजय की दोबारा तैनाती हो गई। बस्ती के लोग उसे देखकर खुश हो गए। मुझे यही कहना है - चाहने वालों की दुआओं से मैं बच गया वरना मौत के मुंह से निकलना आसान नहीं था मेरे लिए। इन्हीं चाहने वालों में तुम ही हो मेरे भाई। बचके रहो और अपने परिवार की रक्षा करो।

तनाव

देश में कोरोना वायरस महामारी का प्रकोप आ चुका था। कई शहरों में कर्फ्यू लग चुका थी। तरुण शहर में फंस गया। उसने अपने गांव में जाने की बहुत कोशिश की। उसकी शादी का दिन नजदीक आ रहा था। इधर गांव में सुनीता तनाव में थी। वह घर के साथ लगते गांव के स्कूल अध्यापक राजेश को पसंद करती थी। राजेश उसकी जात विरादरी से था। वह मिलनसार और अच्छा था। सुनीता ने अपने मां-बाप को समझाया - पिता जी माना आपके दोस्त का लड़का है तरुण। मेरी राय के बिना आपने रिश्ता तय कर दिया। यह मन में पनपे वहम के लिए आत्म संतुष्टि है। इस बहम से निकलना होगा आपको। मेरी मानो यह रिश्ता तोड़ दो। ना जाने क्या समझ कर आपने मेरा रिश्ता कर दिया तरुण के साथ। दिन व्यतीत होते गए और तरुण शहर में फंसा रह गया। वह कोरोना वायरस की चपेट में आ गया। सुनीता के मां-बाप और सुनीता को चिंता होने लगी। उन्होंने यह रिश्ता तोड़ दिया। सुनीता अब खुश थी। सुनीता के मन की बात सच्ची हो गई। सुनीता का विवाह साधारण ढंग से संपन्न हो गया।

आजादी

जंगल अब भरा-भरा सा दिखने लगा था। वातावरण साफ हो गया। पक्षियों की चहचहाने से यह वातावरण गूंज रहा था। देश में लगे कर्फ्यू से दो हफ्तों में ऐसा सुंदर वातावरण बन गया जंगल का। जंगल से कुछ पक्षी गांव में आने लगे। मैंने यहां ऐसे ऐसे पक्षी देखें , जो पहले कभी यहां देखे नहीं थे। रंग-बिरंगे पक्षी, किसी का रंग काला किसी का रंग पीला किसी का रंग नीला किसी का रंग हरा, कोई आकार में बड़ा कोई आकार में छोटा कोई आकार में लंबा, देखने में ही बहुत आनंद आ रहा था। जब भी मैं सुबह उठता, इन पक्षियों की चहचहाहट सुनकर मैं आंगन में आ जाता। सच में यह मेरी रोज की दिनचर्या में शामिल है। सोचता हूं ऐसा कर्फ्यू लगा रहे, कुदरत के बनाए हुए पक्षियों को देखता रहूं। दूसरे पल मन में आता ऐसा कर्फ्यू चलता रहा, देश में विकास कैसे होगा। विकास की खातिर हम कुदरत के इस वातावरण से खिलवाड़ कर देते हैं। पक्षी भी ना जाने क्या सोचते होंगे। काश! ये हमारी तरह बोल लेते।

टी-2, 47 जुगयाल कॉलोनी, शाहपुर कंडी,
पठानकोट, पंजाब -145029, मो. 0 94178 45393

लघु कथा

सबक

◆ रोशन लाल पराशर

बात उन दिनों की है जब एक प्रतियोगी परीक्षा के साक्षात्कार का परिणाम मेरी उम्मीदों के विपरीत रहा। लिखित परीक्षा में अच्छी मेरिट होने व साक्षात्कार के दौरान पूछे प्रश्नों का बेझिझक सही व सटीक उत्तर दिए जाने के बावजूद अंतिम चयन सूची में नाम न होने का मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था। खुद को ठगा व हारा-सा महसूस तो हुआ, पर निराशा को हावी न होने देने के लिए मैंने अपना ध्यान इधर-उधर बांटने की कोशिश की। घोषित परिणाम पर अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था। बार-बार चयनित उम्मीदवारों की सूची दिमाग में कौंध रही थी। घर के किसी सदस्य से बात करने का मन तो बिलकुल ही नहीं कर रहा था। मुखमंडल पर उदासी की चादर ओढ़े घर के बरामदे में खड़ा ही हुआ था कि पत्नी ने पूछ ही लिया, "अजी, क्यों गंभीर मुखमुद्रा बनाए हो।" उसे कैसे समझाता कि मैं अब हार गया हूं क्योंकि उच्च स्तर की प्रतियोगी परीक्षा जिसमें प्रशासनिक सेवा में जाने का अवसर मिलना था, वह नौकरी पाने से चूक गया हूं।

श्रीमती जी को बस यही बता पाया कि मेरा चयन नहीं हुआ है। "बस इत्ती-सी बात है।" वह बोली, "फिर से डट जाओ। इसमें हताश होने की क्या बात है। मनुष्य को सदैव आशावान रहना होता है।" अनमने से मैंने इतना ही कहा, "नहीं अब और नहीं। क्योंकि इस बार तो मुझे बहुत उम्मीद थी।" मैंने उसके चेहरे की तरफ हल्की-सी नजर डाली और धीमे कदमों से रसोई कक्ष की तरफ चला गया। रसोई के अंदर भी घुटन सी महसूस हो रही थी। किसी से बात या फोन काल करने का भी मन नहीं हो रहा था। गहरी उदासी में ही रसोई कक्ष में सब्जी से भरे अखबारी लिफाफों को खाली करने का विचार मन में आया। एक लिफाफे पर किसी शख्स का एक छोटा-सा ब्लॉग छपा था। उसे पढ़ने का मन हुआ। शीर्षक था - मैंने हार नहीं मानी। मुझे लिफाफा हाथ में लिए पढ़ते देख श्रीमती जी भी रसोई में पहुंच गई औरा बोल पड़ी, "बस यही बात तो मुझे आपकी अच्छी नहीं लगती। ये लिफाफे पता नहीं कैसे-कैसे गंदे हाथों से लोगों ने छुए होते हैं। पता नहीं, इन रद्दी लिफाफों से आपको पढ़ने के लिए क्या मिल जाता है।"

मैंने उसकी बात अनसुनी सी करने का नाटक करते ही, वहीं खड़े-खड़े उस शख्स के ब्लॉग को पढ़ डाला। वह शख्स चार बार प्रशासनिक सेवा प्रतियोगी परीक्षा के साक्षात्कार में असफल रहा था लेकिन अपने पांचवें प्रयास में उसे सफलता नसीब हुई। उसके ये शब्द, "मंजिल हर बार नहीं दिखती। उसे पाने की छवि यदि मन में रहे तो एक दिन नसीबों को भी झुकना पड़ता है। और मंजिल स्वयं चलकर दरवाजे पर दस्तक देती हुई स्वागत के लिए खड़ी होती है।" उसने यह भी लिखा था कि सोते-जागते, चलते- फिरते उसे सिर्फ और सिर्फ चयनित होने की चाह रही जिसका परिणाम पांचवें प्रयास से फलीभूत हुआ तो खुशी से झूमते हुए वह चार दफा की असफलता को तत्क्षण ऐसे भूल गया कि जैसे वह कभी असफल ही नहीं हुआ हो। उस वक्त यही लगा कि भले ही कितनी ही मुश्किलें आईं, कई बार दिल बैठने लगता। उदासी की छाया मार्ग भटकाने की कोशिश करती लेकिन उसने हर बार की असफलता से एक सबक लिया और कमी कहां रही, उसे खोजा। पुनः प्रण लिया, सोचा कि लक्ष्य को छोड़ना और हार मान लेना बुझदिली है। भाग्य के लेख को वह सफलता के फल से फलीभूत करके ही दम लेगा। वैसे भी मेहनत सीढ़ियों की तरह होती है और भाग्य लिफ्ट की तरह, जो कारणवश किसी भी समय बंद हो सकती है। लेकिन सीढ़ियां हमेशा ऊंचाई की तरफ ले जाती हैं। आज परिणाम मेरे सामने है। क्योंकि मेरा चयन हो चुका है।

ब्लॉग में उस शख्स के लिखे शब्दों से चमत्कार सा अनुभव हुआ। मेरी सोच सकारात्मक हुई, एक आशा व विश्वास जगा। मैंने पुनः निश्चय किया कि दूर जाती सफलता रूपी मंजिल को मुझसे कोई नहीं छीन सकता। क्योंकि माहौल और परिस्थिति बदलना भी इनसान के ही हाथ में है। आप जो पाना चाहते हैं उसके लिए कड़ी मेहनत की दरकार है। आपका निश्चय और सोच आपकी जमानत हैं। जो ठान लिया है, उसे पूरा करो। हमारी सबसे बड़ी कमजोरी हार मानने में निहित है। आपके प्रयास की जरा सी चूक से सफलता दूर छिटक जाती है। सफल होने का तरीका एक बार फिर से प्रयास करना है। अच्छी तरह यह जान लेना आवश्यक है कि आपको आपके सिवा कोई और सफलता नहीं दिला सकता। अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार कोशिश और 'सबक' जो मैंने सीखा, उससे एक दिन सफलता का सुखद फल चखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उस शख्स को अब सेवानिवृत्ति उपरांत भी धन्यवाद कहने की चाह मन में पाले हूं।

पूजा निवास, तृतीय मंजिल, लोअर फागली, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171 004, मो. 0 98160 54093

बाल कहानी

जादू टोना

◆ **हरदेव सिंह धीमान**

इस बार भी राकेश आठवीं की परीक्षा में असफल हो गया। इस असफलता से वह इतना टूट गया कि अब उसका मन किसी भी काम में नहीं लगता था। कभी सोचता था कि कहीं बहुत दूर चला जाए कभी सोचता था कि जहर खाकर या नदी में कूद कर आत्म हत्या की जाए परंतु फिर भी सोचता था कि मनुष्य होकर ऐसा करना न केवल मनुष्यता का अपमान ही है बल्कि अपनी जीवन लीला को समाप्त करना पाप भी है। इस उधेड़-बुन में उसे न तो रात को नींद व न तो दिन में चैन मिलता। उसका मन अशांत व अधीर हो चला था, जिससे भी वह अपनी असफलता की बात करता वही उसे घिनौनी दृष्टि से देखता था। क्या माता पिता क्या यार दोस्त। राकेश सभी की नजरों में गिर गया था। उसने अब यही धारणा पक्की कर ली कि उस पर या तो किसी बुरी आत्मा का साया है या किसी ने कोई जादू टोना या मन्त्र-तन्त्र कर रखा है जिससे वह अपनी पढ़ाई कभी भी पूरी न कर सके। परन्तु भ्रांति वह किसे सुनाए? कोई सुनने को तैयार ही नहीं था। बस अकेले में बैठकर ही कई प्रकार के सोच-विचार में डूब जाता।

सभी प्रकार के उपायों पर सोच-विचार करते करते उसके मन में विचार आया काश उसे कोई तांत्रिक या सिद्ध पुरुष मिल पाता जो उसे मान आशीर्वाद या वरदान द्वारा आठवीं की परीक्षा से उत्तीर्ण करवा लेता या कोई ऐसा गण्डा या ताबीज बना कर देता जिसके पहनने से वह जो भी पढ़े उसे झट से याद हो जाए व उसे लगी बुरी नजर या किया गया जादू टोना उतर जाए।

ऐसा सोचकर वह अपने एक घनिष्ठ मित्र रमन के पास चला गया जो पढ़ाई में था तो सामान्य सा परन्तु अक्ल व सूझबूझ में वह अपनी मित्र मण्डली में प्रसिद्ध था। अपने मन की व्यथा उससे कहकर अपनी समस्या का समाधान ढूँढने की बात की। रमन ने उसकी सभी बातें बड़े ध्यान से सुनीं तथा आत्म विश्वास लाने के साथ साथ कड़ी मेहनत करने की नसीहत भी दे डाली।

यार रमन मेहनत तो मैं पहले भी बहुत करता था। परन्तु क्या करूँ मुझे कुछ याद ही नहीं रहता। शायद किसी ने कुछ जादू टोना कर रखा हो ताकि में पढ़ाई पूरी न कर सकूं। रमन की नसीहत सुन कर राकेश ने अपने मन की भ्रांति उसे सुना दी।

राकेश की बात सुनकर रमन को पहले तो हंसी आई परन्तु यह सोचकर चुप हो गया कि कहीं वह बुरा न मान जाए। इसलिए अपनी हंसी रोकते हुए बोला - देखो राकेश एक दिन हमारे विज्ञान के अध्यापक कह रहे थे कि आज के वैज्ञानिक युग में जादू टोना जैसी बातों मैं विश्वास करना सिवा मूर्खता के कुछ नही नहीं है। कुछ चालाक लोग भोले भले लोगो को जादू टोना के नाम पर ठगते रहते हैं। मैं भी ऐसी बातों पर विश्वास तो कम करता हूँ परन्तु यदि तू ऐसा कहता है तो तब भी कोई बात नहीं। यदि मौका मिलेगा तो माँ के मंदिर में रहने वाले बाबा जी से चल कर पूछ लेंगे शायद वे ही कोई तरीका बतला दें

रमन की बातों का राकेश पर कुछ प्रभाव पड़ गया। बाबा जी के नाम से उसे लगा कि शायद उसकी समस्या का हल मिल जाए। कुछ आश्वस्त हो कर दोनो थोड़ी देर इधर उधर घूमते रहे व बाद में दोनों अपने अपने घर आ गए।

घर आ कर रमन सोच में पड़ गया कि उसने राकेश से मंदिर वाले बाबा जी की बात तो कर ली परन्तु क्या पता बाबा जी के पास ऐसी कोई शक्ति या मन्त्र तंत्र है भी जो राकेश का भ्रम दूर कर उसे मेहनत करने के लिए प्रेरित करे। ऐसा सोच कर उसने अगले दिन बाबा जी से बात कर ही ली। बाबा जी उसका आशय समझ गए कि बेचारा राकेश केवल गलत फहमी का शिकार हुआ है जबकि दृढ़ निश्चयी मनुष्यों पर ऐसी वैसी बातों का कोई विशेष असर नहीं होता। यह तो केवल मन का भ्रम ही है जिसका निराकरण केवल मनोवैज्ञानिक तरीके से ही हो सकता है। इसलिए उन्होंने उसे राकेश को अपने पास लाने को कह दिया।

चूँकि राकेश का घर मंदिर से अधिक दूर नहीं था इसलिए अगले दिन रमन और राकेश प्रातः ही मन्दिर में बाबा जी के पास पहुंच गए। उस समय बाबा जी अपनी नित्य की पूजा-अर्चना से निवृत्त होकर कुछ स्वाध्याय कर रहे थे। दोनों ने बाबा जी को प्रणाम कर उनसे अपने आने का कारण बता दिया। इस पर बाबा जी ने कहा वैसे तो मैं इन झमेलों में पड़ता नहीं हूँ यदि तुम में मेरे प्रति श्रद्धा व विश्वास है तो तुम्हारी समस्या का समाधान कर तो दूँगा परन्तु उसके लिए सेवा व साधना की आवश्यकता है। यदि तुम इसके लिए तैयार हो तो कल प्रातः इसी समय पुनः आ जाना।

मरता क्या नहीं करता। बाबा जी की बात सुन कर राकेश ने हामी भर ली और अगले दिन वह बाबा जी के पास निर्धारित समय पर पहुँच गया।

हाइकू

◆ रोशन जसवाल 'विक्षिप्त'

(1)

बड़े सपने
छोटे छोटे अपने
बड़े बेगाने

(2)

माता ताकती
एकटक देखती
आएगी पाती

(3)

विरोध करे
जीवन अवरुद्ध
वायु अशुद्ध

(4)

प्रेम अतुल
अपरिभाषित है
स्वच्छंद प्रेम

(5)

समझे कौन
अंतर्वेदना मेरी
हैं सब मौन

प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय हि. प्र., लालपानी, शिमला 171001
मोबाइल : 0 94180 47192

बाबा जी ने कुछ हलके-फुल्के आसन व प्राणायाम करवा कर कुछ मन्त्र भी राकेश को सुना दिए। उसके बाद उसे उन पर ध्यान देने की बात कह कर वापिस भेज दिया और अगले दिन से प्रातः उसी समय नियमित रूप से आने के लिए कह दिया। इस प्रकार राकेश का बाबा जी के पास आने का नित्य का नियम बन गया।

बाबा जी ने देखा कि राकेश अब नियमित रूप से उनके पास आने लगा है तथा उनकी हर बात ठीक से मानने भी लग गया है तब उन्होंने सोचा कि राकेश की समस्या के समाधान का यही उचित समय है। इसलिए उन्होंने उसकी पाठ्य पुस्तकों के अंश भी बातचीत में से सुनाने प्रारंभ कर दिए। राकेश बाब जी की हर एक बात को बड़े ध्यान से सुनता और याद भी रखता। इतना ही नहीं कभी कभी बाबा जी उसे पूरा का पूरा पाठ जोर जोर से सुनाने को कहते या स्वयं ही पढ़कर उसे सुना देते। इस प्रकार प्रतिदिन बाबा जी के पास नियमित अभ्यास करते हुए राकेश को पाठ्यक्रम का अधिकतम भाग ऐसे ही याद हो गया। अब तक कई महीने बीत गए। परीक्षा हेतु प्रवेश पत्र तो बाबा जी की सहायता से पहले भिजवा दिया था। चूँकि परीक्षाएं निकट थीं इसलिए बाबा जी उसे और अधिक ध्यान से काम करने को कहते।

परीक्षाओं का समय आ गया। राकेश वैसे तो परीक्षाओं से डरता था परन्तु इस बार अपने ऊपर बाबा जी की विशेष कृपा और आशीर्वाद समझ कर पूरे विश्वास के साथ परीक्षाओं में बैठा। परीक्षा देते समय उसे सारे प्रश्न बहुत ही आसान लगे।

पिछली परीक्षाओं में जबकि वह अपना सारा समय सोचने व इधर-उधर झाँकने में लगाता था तो इस बार उसे इसकी फुर्सत ही नहीं थी। इस प्रकार परीक्षा समाप्त हो गई। कुछ समय बाद जब परीक्षा परिणाम आया तो राकेश अपना परिणाम देखकर हैरान हो गया। वह न केवल अपनी कक्षा में ही प्रथम रहा बल्कि पूरे जिले में भी प्रथम रहा। वह अपनी इस अप्रत्याशित सफलता को केवल बाबा जी का चमत्कार समझ रहा था। इसलिए वह रमन को साथ लेकर बाबा जी का आभार व्यक्त करने उनके पास पहुंच गया। परीक्षा में मिली सफलता के लिए बाबा जी ने राकेश को अपना आशीर्वाद तो दिया ही साथ में कहा, "देखो बेटा यदि नियमित और लगन से कोई कार्य करो तो अवश्य ही सफलता मिलती है। परिश्रम न करके केवल भाग्य के भरोसे रहना सिवा बर्बादी के कुछ नहीं है। यदि हम परिश्रम नहीं करेंगे तो जैसे मैंने पहले बताया भाग्य कुछ नहीं करेगा। जादू टोना या मन्त्र-तंत्र इनका आज के समय में कोई विशेष महत्व नहीं रह गया हैं। ये केवल मनुष्य में अनावश्यक भ्रम पैदा करते हैं जिसके कारण वह इसे सच्चाई मान लेता है। मेरा आशीर्वाद तो तुम्हारे साथ रहा ही हैं और हमेशा रहेगा भी। परन्तु रमन जैसा समझदार वह सच्चा मित्र भी तुम्हारे साथ है जिसकी योजना से तुम्हारा यह मिथ्या भ्रम टूटा व तुम परिश्रम करने भी लगे।" अब राकेश को लगा कि यदि रमन उसे सही सलाह न देकर उसका मार्गदर्शन नहीं करता तो पता नहीं वह अब तक क्या कर चुका होता।

पत्रालय दनावली, तहसील ननखड़ी, जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश-172 021, मो. 0 98172 16355

व्यंग्य

इंद्रलोक में बैंगन

◆ अशोक गौतम

ऐसा नहीं कि नायिकाजी द्वारा बनाए बैंगनों की खुशबू सोशल मीडिया तक ही पहुंची हो। नायिकाजी द्वारा बनाए बैंगनों की हल्की-हल्की खुशबू वैसे तो देवलोक तक भी पहुंची थी, पर देवलोक के देवाधिपति इंद्र ,गुरु बृहस्पति और परम ईष्ट विष्णु, देव, दैत्य, दानव, राक्षस, यक्ष, गंधर्व, भल्ल, वसु, अप्सराएं, पिशाच, सिद्ध, मरुदगण, किन्नर, चारण, भाट, किरात, रीछ, नाग, विद्याधर, मानव सब कुछ खाते थे, पर बैंगन बिलकुल नहीं खाते थे। इसलिए किसी को पता ही न चल सका कि ये खुशबू है तो आखिर काहे की है।

पर ज्यों ही मृत्युलोक से लौटे नारद ने उंगलियां चाटते चाटते स्वर्गलोक में स्वर्गाधिपति को यह खबर दी कि वाह देवाधिपति! जबसे मृत्युलोक के मायापुरी नामक महानगर में नायिकाजी ने लॉकडाउन में अपने घर में उगे हुए बैंगन बनाए हैं और पूरे मृत्युलोक का सोशल मीडिया नायिकाजी द्वारा बनाए बैंगनों की इतनी तारीफ कर रहा है... इतनी तारीफ कर रहा है कि.... उन बैंगनों के सामने हलुआ भी जीरो होकर रह गया है। नायिकाजी के बैंगनों के आगे मथुरा के पेड़े तक गौण हो गए हैं। नायिकाजी द्वारा बनाए बैंगनों के आगे रस मलाई फेल हो गई है। वह अपना मुंह अपने आप खरोंचते-खरोंचते अपने को कोस रही है कि वह बैंगन क्यों न हुई, बंगाल की रसमलाई क्यों हुई? भगवान नायिकाजी ने बैंगन क्या बनाए कि जो बचे खुचे लॉकडाउन में फंसे अपने देवता वहीं रह गए थे न! वे भी चोरी छिपे अपने भक्तों से भोग में हलुआ पूरी के बदले बैंगनों की मांग कर रहे हैं। कल तक जिन बैंगनों को रोगों की खान समझा जाता था प्रभु! एक नायिकाजी के कोमल-कोमल हाथों का स्पर्श कर वे हर श्राप से मुक्त हो गए हैं। अब न उन्हें कोई काना बैंगन कह रहा है, न थाली का बैंगन।

नायिकाजी ने अपने घर में बैंगन क्या बनाए, देश में बैंगनों की मार्किट में सोने सा उछाल आ गया है। जिसने कभी काले बैंगन को घूरा भी नहीं था, वह भी बदहवास हो बैंगन-बैंगन चिल्ला रहा है। हर वर्ग की गृहिणी के हाथ पूरी कचौरी छोड़ बैंगन बनाने को बेताब हैं। बैंगनों की खपत देश में इतनी बढ़ गई है कि पूछो ही मत! कुछ चालू किस्म के व्यापारी तो आम तक पर बैंगन का रंग चढ़ा उन्हें जनता की आंखों में आम झोंक रहे हैं। और जनता है कि बस बैंगन का रंग देख भर ही बैंगन के नाम पर कुछ भी खरीदे जा रही है। कर्फ्यू के बीच लोग बैंगन के कर्फ्यू तोड़ने पर अपने को साहसी मान रहे हैं। बैंगन के लिए कोरोना का डर भी जनता में गौण हो गया है। इतना होने के बाद भी कइयों को तो सड़े बैंगन तक नहीं मिल पा रहे हैं। ठेकों के बाद जो सबसे अधिक सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियां कहीं उड़ रही हैं तो बस, बैंगन वालों की दुकानों के आगे।

वाह! नायिकाजी का मात्र स्पर्श कर बैंगनों ने क्या किस्मत पा ली है प्रभु! जिस तरह राम के चरणों के स्पर्श मात्र से अहिल्या श्राप मुक्त हुई थीं, आज कलियुग में उसी तरह नायिकाजी का स्पर्श पाकर बैंगन अमरत्व को प्राप्त हो गया है।

'हे प्रभु! बैंगनों का यह रुतबा देख मैं भी बैंगन होना चाहता हूं बस! ये लो अपनी वीणा और मैं चला... बैंगन हो नायिकाजी के हाथों का स्पर्श करने। मुझे तो आप अब कुछ और बनाओ या न, पर कल तक जरूर बैंगन बना दो ताकि मैं भी किसी नायिकाजी के हाथ कच्चा अधकच्चा होकर भी अखबारों के कवरपेज पर छप शोभा पाऊं,' नारद ने नायिकाजी का अखबार में छपे फोटो का ध्यान करते कहा तो इंद्र बोले,' तो इस बैंगन में नई बात क्या है नारद! मेरे लोक में तो मायानगरी की नायिकाजिओं से भी सहस्र गुणा सुंदर अप्सराएं मेरे लिए एक से एक व्यंजन बनाती हैं। ऐसे ऐसे व्यंजन कि उन व्यंजनों का स्वाद तो छोड़ो उन व्यंजनों की रेसिपी तक उनको पता नहीं।'

'नहीं प्रभु! आप खरा मानों या बुरा! आपके लोक की अप्सराएं जो बना बनाकर आपको खिलाती रही हों ,खिलाती रही हों। पर जो बात नायिकाजी द्वारा बनाए उस बैंगन की है, वह बात आपके अमृत में भी नहीं। बैंगन की महिमा मैं और कहां तक करूं हे देवराज इंद्र? आपकी महिमा का वर्णन करते करते महिमा खत्म हो सकती है ,पर नायिकाजी द्वारा बनाए बैंगनों का वर्णन असंभव है। वह तो हजम होने के बाद भी सोशल मीडिया में ऐसा छाया है जैसे अभी भी पक रहा हो। उसे तो बस जो फील करने वाला दिमाग हो तो फील ही किया जा सकता है। बस, बंदे में फील करने वाली बैंगनी सेंस होनी चाहिए। या कि यों समझ लो कि जिसने आज की तारीख में बैंगन नहीं खाए, उसने कुछ खाया ही नहीं

देवराज इंद्र! जिसने इस जन्म में बैंगन नहीं खाए , सोच लो, उसका जन्म लेना ही अकारथ गया ,' नारद ने हद से अधिक बैंगन की तारीफ के बाद एकबार फिर चाट-चाट कर घिस चुकीं अपनी उंगलियां चार्टी तो बैंगन की अति प्रशंसा सुन इंद्र के मुंह में बैंगन के स्वाद के प्रति और भी उग्र रूप धारण कर उत्सुकता जागी। देखते ही देखते बैंगन के स्वाद के लिए उनका मन अधीर हो उठा। उन्होंने तत्काल अपने प्रधान सचिव को आदेश दिए, ' हे मेरे प्रधान सचिव! जाओ! इसी वक्त चार्टर विमान से मृत्युलोक से बैंगन लेकर आओ। और बैंगन बनाने वाली नायिकाजी को भी स्वर्गलोक की विशेष अतिथि बनने हेतु हमारी ओर से खास आग्रह कर साथ ले आना। जब तक उनकी फिल्म इंडस्ट्री बंद है, उनसे यहीं कोई फिल्म-शिल्म करवा लेंगे। वैसे भी वहां कोरोना के चलते उनके पास बैंगन बनाने के सिवाय दूसरा कोई काम तो होगा नहीं,' तभी नारद ने बीच में प्रश्न खड़ा करते कहा, 'पर प्रभु! नायिकाजी को यहां कैसे लाया जा सकता है?'

'क्यों? हमारे स्वर्गलोक से भी अधिक बड़ी इंडस्ट्री कोई और है क्या?'

'है तो नहीं पर प्रभु! पर जो वह पॉजिटिव हुई तो??'कह नारद इंद्र के अगले एक्शन के लिए इंद्र का मुंह ताकने लगे।

' तो क्या? नायक पॉजिटिव हो या न पर नायिकाजी को तो पॉजिटिव होना ही चाहिए। पॉजिटिव नायिका जिओं के चलते ही निगेटिव होते समाज में पॉजिटिविटी संभव है।'

'पर प्रभु! ये वो वाली पॉजिटिविटी नहीं है। मिशन बैंगन के तहत उन्हें यहां लाकर हमें इक्कीस दिन होम क्वारंटीन करना ही पड़ेगा। यही ऐसे पॉजिटिवों से बचने का एकमात्र घरेलू तरीका है। पर होम हमारे यहां हैं कहां इंद्र ?'

' तो क्या हो गया! हमारे महल में रह लेगीं वे। वैसे भी वे हमारी देवलोक की खास से खास अतिथि होंगी। .... सचिव जी! वे अपनी मर्जी से आने को न ही मानीं तो उनसे बैंगनों के साथ बैंगन बनाने की वह रेसिपी लेते आना जिसकी वजह से बैंगन दसों लोकों के सोशल मीडिया में हमसे भी अधिक प्रशंसा बटोर रहा है। हम भी बैंगन का रसास्वादन कर अमर होना चाहते हैं बस!'

'जैसी जनाब की आज्ञा!' स्वर्गलोक के प्रधान सचिव ने सिर झुकाए कहा और बैंगन लाने की सरकारी तैयारी में युद्ध स्तर पर जुट गए।

गौतम निवास, अप्पर सेरी रोड
नजदीक मेन वाटर टैंक, सोलन, हिमाचल प्रदेश-173212,
मो. 0 94180 70089

कविता

परिभाषाओं में जीवन

कुलभूषण कालड़ा

हर जीवन की
परिभाषा
अपनी अपनी
जीवन/ मूल्यों का जीवन
कभी समझौतों
कभी बिना समझौतों के
अपने मूल्यों पर
जीते हुए

जीवन
कर्मक्षेत्र का जीवन
फल की इच्छा
अनिच्छा सहित
अपने अपने कर्म
करते हुए

जीवन
एक फटी चादर
सदा
दुख की सूई और
सुख के धागे से
सीते हुए

जीवन
कठिन पहेली
जिसे अनुभव
विवेक व संतोष से
सुलझाते हुए

जीवन
सच्चे घोड़े का जीवन
अपनी राहों पर
सरपट भागते हुए

जीवन
गीत का जीवन
हर परिस्थिति में
सुरताल की लय में
गाते हुए

जीवन/ एक मालगाड़ी
कभी लंबी, कभी छोटी
सुख और दुख का
माल ढोते हुए

जीवन
एक रंगमंच
लेखक दिग्दर्शक ईश्वर
की इच्छानुसार
अपने अपने पात्रों का
निर्वाह करते हुए

जीवन
अनिश्चितता का जीवन
कहीं भी, किसी भी समय
अपने अंत की
घोषणा सुनते हुए

इसी प्रकार बनती
बदलती हैं परिभाषाएं
जीवन की
इसके उदय तथा
अस्त होने तक।

27, मजीठिया एनक्लेव, फेज-दो, पटियाला,
पंजाब-147 005, मो. 0 98142 45174

'सुन मुटियारे' और 'उपनिवेश के छींटे' पुस्तकों की समीक्षा

समीक्षक ◆ सुदर्शन वशिष्ठ

संघर्षों का सुखांत महाकाव्य

संतोष शैलजा के ''सुन मुटियारे'' उपन्यास से गुजरने से पहले उनकी अन्य कृतियों की ओर जाना होगा। उनके पहले उपन्यास 'अंगारों के फूल' को छोड़ दें तो अगले तीनों उपन्यासों की भावभूमि नारी संघर्ष और चेतना, नारी प्रताड़ना और उत्थान पर केन्द्रित है। 'कनक छड़ी', 'निन्नी' की भावभूमि ही आगे आ कर 'सुन मुटियारे' में खुल कर प्रकट हुई है। 'कनक छड़ी' में तारो का विवाह नपुंसक पति से होता है। 'निन्नी' की नायिका शरारती, चंचल और लड़कों की तरह 'माही मुण्डा' होते हुए भी विवाह के बाद पागल सौतन के साथ दुर्दिनों का शिकार होती है और अंत में उसके पति की डिप्रेशन में मृत्यु हो जाती है। नारी का यही संघर्ष आगे चल कर 'सुन मुटियारे' में मुखर होकर आता है। लेखिका ने स्वयं इस उपन्यास को 'कनक छड़ी' की अगली कड़ी कहा है।

बहुत बार रचनाकार के मन में जो विचार, भाव या कथ्य चला होता है, वह एक रचना में पूरा नहीं हो पाता। रचनाकार अपने अन्तर्मन में उसे बार बार दोहराता है और ये एक रचना के बाद लगातार अगली रचनाओं में भी दिखलाई पड़ता है। अश्क जी ने 'गिरती दीवारें' में या मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में बार बार उन्हीं पात्रों को उन्हीं स्थितियों में विवेचित किया है। ये सायास नहीं कहा जा सकता बल्कि जाने अनजाने बार बार अभिव्यक्त होता है।

महिला कथाकारों में जो एक संवेदना होती है वह शैलजा के लेखन में एक संयम, एक मर्यादा के रूप में प्रकट हुई है। कहीं भी लेखिका ने अपनी सीमारेखा नहीं लांघी है। इसे आदर्शवादिता भी कहा जा सकता है।

तृप्ति, मिस सेठी और रश्मि तीन नामों वाली एक ही लड़की के संघर्ष और सपनों की गाथा है 'सुन मुटियारे'। नायिका का लालन पालन पंजाब के एक गांव में होता है और शिक्षा-दीक्षा राजधानी दिल्ली में। उपन्यास की कथा नायिका द्वारा स्कूल में नौकरी, बी.एड. करना और सरकारी नौकरी पाने की विघ्न बाधाओं के बाद सहयोगी के साथ विवाह के साथ आगे बढ़ती है। अलिंद से आकर्षण और विवाह उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ है। पुराने समय में लड़कियों द्वारा शिक्षा ग्रहण करने के लिए कॉलेज जा पाने पर रत्न, भूषण, प्रभाकर और फिर ओनली इंगलिश करने के साथ अपनी शिक्षा बढ़ाने का एक विकल्प था। इससे गणित जैसे कठिन विषय से भी बचा जा सकता था।

अमृतसर की पृष्ठभूमि पर लिखा यह उपन्यास पंजाबियत की पहचान भी कराता है। मोहन राकेश, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी से ले कर भीष्म साहनी तक पंजाब और विशेषकर अमृतसर की भूमि पर लिखने वाले कथाकार रहे हैं जिन्होंने पंजाबियत को पहचान दी। गुलेरी की हिचकाले खाते तांगे वालों की मीठी बोली से ले कर भीष्म साहनी के 'अमृतसर आ गया' तक अमृतसर के विभिन्न रूपों को पहचान देने वाले कथाकार है। भीष्म साहनी को तो पंजाबियत का कथाकार कहा जाता है। इसी तरह संतोष शैलजा ने भी यहां की संस्कृति और संस्कारों को सामने लाया है। ब्याह की रस्में और गीत संगीत, लोहड़ी का त्योहार, शिवगौरी और राधाकृष्ण की कथाएं उपन्यास को सांस्कृतिक परिवेश से जोड़ती हैं। सुबह भूरि के रम्भाने, सीधे धार से
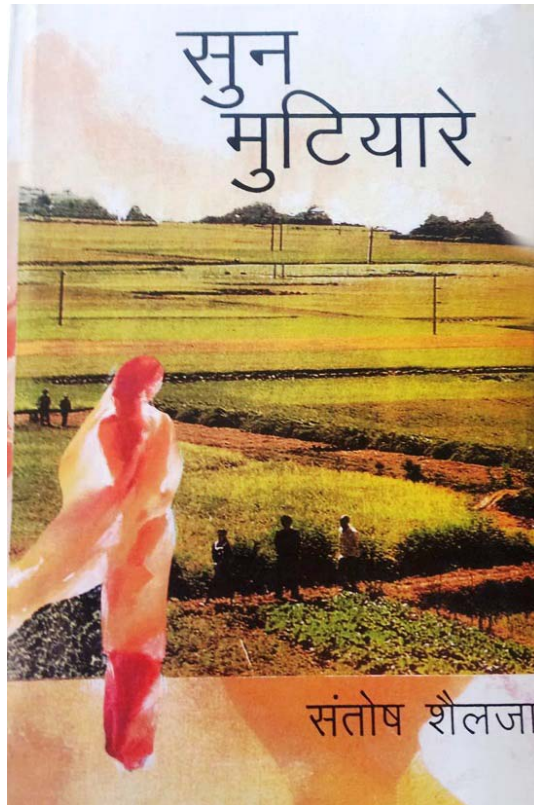
दूध पीने के दृश्य वहां के वातावरण को उभारने के साथ एक विशिष्ट परिवेश की संरचना करते हैं।

गांव के एक परिवार और उसके पात्रों के चित्रण के साथ साथ इसमें लोक परंपराओं का अद्‌भुत प्रयोग किया गया है। लोकगीतों की मधुर धुन वातारण को संवारती है। विवाह गीत "मत्थे दे चमकण बाल़', ''डोली विचों निकल़ी इस मुटियार'', ''मुटियारे जाणा दूर पिया'', ''आंगण तेरे दी बाबुल सोने चिड़िया'', ''अज दी दिहाड़ी रख डोल़ी नी मां'' जैसे हृदयाग्राही गीत एक गम्भीर व कारुणिक वातावरण तैयार करते हैं। एक डोगरी गीत ''दिक्खी लै डोगर देस ओ मितरा दिक्खी लै डोगर देस'' पंजाब और पहाड़ का मिलन कराता है। उपन्यास में ऐसे लोकगीतों और कथाओं का प्रयोग उपन्यास के कथ्य को आगे बढ़ाने में सहायक तो होता ही है, संस्कृति के दर्शन भी करवाता है।

उपन्यास की मुख्य कथा के साथ गांधी जिन्हा के किस्से, हिन्दू मुस्लिम दंगे फसाद, ठीकरी पहरा, गान्धी की हत्या का उल्लेख भी मिलता है। विभाजन के समय हुई मारकाट में स्वयं सेवक संघ की भूमिका की ओर भी इशारा किया गया है।

चार सौ पृष्ठीय इस उपन्यास में कई प्रेरणादायक प्रसंग भी यदा कदा देखने में मिलते हैं। अध्यापकों का आदर्शवादी बन समय पर आना, जरूरतमंद मेधावी छात्रों की सहायता, रश्मि और अलिंद का मर्यादित प्रेम आदि मर्यादा और प्रेरणा के स्रोत हैं। नायिका की कहानी स्वयं में एक प्रेरणा दे जाती है। नायिका की संघर्षगाथा नारी की आदर्शवादी छवि को प्रकट करती है। नायिका स्वयं एक आदर्श छात्र, आदर्श सखी और अध्यापिका है। स्कूल के हैडमास्टर उस पर गर्व करते हैं।

संतोष शैलजा उस समय की कथाकार है जब शिवानी के बाद सूर्यबाला, उषाकिरण खान, मृदुला गर्ग और उषा प्रियंवदा जैसी कथाकार बराबर लिख रही थीं। शैलजा ने अपनी राह पकड़ कर एक आदर्शवादिता, समाज के प्रति निष्ठा, विश्वास की राह चुनी। और सबसे बड़ी बात साहित्य में मर्यादा और संयम को प्रधानता दी। सयंम, सीमा और मर्यादा इस पूरे उपन्यास में देखने को मिलती है।

चर्चित पुस्तक : **सुन मुटियारे**, लेखक : **संतोष शैलजा**,
प्रकाशक : **परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली-110092**, मूल्य : **250 रुपये**

कविता

जीत-हार

भीम सिंह नेगी

जीत हार का इस जीवन से
बहुत है गहरा नाता
जीतने वाला हमेशा सिकंदर बना
शर्मसार हुआ हारने वाला।

जीतने के लिए यहां पर सब
अपना-अपना जोर लगाते
फिर भी यदि जीत ना पाए
तो फिर अपना शीश झुका लेते।

ईश्वर जाने इस जीवन से इंसान
अपने साथ क्या ले कर जाता

हमेशा जीतने की तमन्ना रखता
हार को क्यों पचा नहीं पाता।

जीव का अहंकार है शायद
जो उसे झुकने नहीं देता है
हमेशा जीतने के लिए छटपटाता है और
हारने से घबराता है।

ये हार जीत का खेल यूं ही
जीवन भर चलता रहता है
कभी जीव जीत जाता है
कभी हारना पड़ता है।

सहज भाव से उसे स्वीकार
जो भी तेरे हिस्से में आएगा
यदि आज हारा है
तो कल जीत भी जाएगा।

गांव देहरा, डाकखाना हटवाड़, तहसील घुमारवीं,
जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश-174 028

एक उपनिवेश की जीवंत दास्तान

जितेन्द्र शर्मा का उपन्यास 'उपनिवेश के छींटे' मोहन राकेश की कहानी 'छोटी सी चीज' और उपन्यास 'न आने वाला कल' की याद दिलाता है जो शिमला के बिशॅप कॉटन स्कूल पर लिखा गया है। उसी तरह यह उपन्यास मसूरी के एक बोर्डिंग स्कूल की कथा कहता है, यद्यपि इस उपन्यास में कथ्य केवल स्कूल पर ही आधारित न हो कर मसूरी के उस समय के आसपास के वातावरण पर भी प्रकाश डालता हुआ आगे बढ़ता है। देश में पहाड़ी स्थान पर्यटन के लिए प्रसिद्ध होने से पहले ब्रिटिश उपनिवेशों के कारण प्रसिद्ध रहे। मसूरी, शिमला, डलहौजी जैसे स्थानों में ब्रिटिश शासकों ने अपने उपयुक्त जलवायु पाकर अपने आवास के लिए कालोनियां बनाईं जिन्हें बाद में स्थायी निवास के रूप में बदल दिया गया। शिमला तो ब्रिटिश साम्राज्य की समर केपिटल ही बन गया किंतु मसूरी, डलहौजी जैसे स्थान उनके आवास के प्रिय स्थान बने। वास्तव में अंग्रेजों द्वारा बसाए ये हिल स्टेशन बाद में पर्यटक स्थल बने। इन पर्वतीय स्थानों को अंग्रेजों ने अपनी संस्कृति और सभ्यता के मुताबिक बसाया। साथ ही ईसाई मिशनरी के रूप में भी स्थापित किया। गोथिक शैली के भवनों के कारण ये स्थान इंगलैंड के किसी शहर का भ्रम पैदा करते हैं। ऐसी पहाड़ियों पर चर्च के साथ मिशनरी बोर्डिंग स्कूल और अस्पतालों की स्थापना के साथ ब्रिटिश परंपरा के अनुरूप क्लब, स्केटिंग रिंक, थियेटर, मॉल रोड़ आदि की स्थापना की गई जहां अपने देश की तरह ये लोग अपनी गतिविधियां चला सकें। पहले गोरी चमड़ी वाले, फिर एंग्लो- इंडियन और अंत में भारतीय ईसाईयों ने अपना जीवन एक सोफिस्टिक तरीके से और कायदे से जिया। कब और कैसे मेज पर करीने से चाय पीनी है, डिनर करना है, इसका उन्होंने अंत तक निर्वाह किया।

ऐसे ही मसूरी में स्थापित एक उपनिवेश का सफल चित्रण जितेन्द्र शर्मा ने अपने उपन्यास 'उपनिवेश के छींटे' में किया है। यहां बोर्डिंग स्कूलों के पुराने भव्य भवन हैं, पुरानी कोठियां हैं। और हैं पुरानी बाबड़ियों या चश्मों से जुड़े भुतहा किस्से जहां कोई अकस्मात आपके कन्धों पर हाथ रखे और गायब हो जाए। स्कूल के अध्यापकों को रहने लिए पैंतीस कमरों वाली भुतहा कोठी दी जाती है। पुरानी भव्य कोठियों में उसी शान से रह रहे अकेले, बूढ़े और बीमार अंग्रेज, उनके राजसी ठाठबाट और धीरे धीरे हाथों से फिसलती सत्ता। कहते हैं, समय बड़ा बलवान है, इस उक्ति का अंग्रेज सत्ता के साथ बड़ा सामंजस्य बैठता है। कभी अंग्रेज एक राजा की तरह रहते थे। अपने तौर तरीकों पर जीने के लिए उनकी कोठियों में नौकर चाकर, खानसामे आउट हाउसिज में रहते थे। धीरे धीरे सत्ता हाथ से फिसलने पर उन्हें देश छोड़ना पड़ा। अपनी विशाल कोठियां आउट हाउसिज सहित वे अपने सेवकों को दे गए। उनके यहां नौकरी करने वाले भारतीय मालिक बन गए।

उपन्यासकार ने मुख्य कथा को बोर्डिंग स्कूल के अध्यापकों के इर्दगिर्द बुना है जिसमें हिन्दी, ज्योग्रेफी और मेथ्स जैसे विषयों के भारतीय अध्यापकों के अलावा हेडमास्टर समेत सभी विदेशी या भारतीय ईसाई अध्यापक हैं। साथ ही स्कूल के आपसास के वातावरण को भी अन्य रोचक किस्सों के माध्यम से कथा को आगे बढ़ाया है जिसमें स्कूल की मुख्य कथा के साथ आसपास के माहौल से भी पाठक बन्धा रहता है जो उस काल को भी सम्पूर्णता में वहन करता है। पीटर-गुड़िया प्रसंग, रूपासिंह का किस्सा, कप्तानसिंह की दास्तान, ठाकुरपुत्री सरस्वती का प्रसंग, शर्ली-माइकल प्रसंग जैसे कई रोचक किस्सों को इसमें शामिल किया गया है जिससे किस्सागोई के माध्यम से मसूरी में विद्यमान उपनिवेशिक संस्कृति से साक्षात्कार स्वयं ही होता चला जाता है। इस सब के साथ इन जगहों की खूबियां जैसे मॉल रोड़, आदमी द्वारा खींचे जाने वाले रिक्शे, स्केटिंग रिंग, एंटीक सामान व फर्नीचर की दुकानें, बेकरी, पुरानी बावड़ियां, जल प्रपात जैसे स्थानों को जोड़ कर कथा को सुरुचिपूर्ण व ज्ञानवर्धक बनाया गया है। पीटर-गुड़िया प्रसंग में बेकरी के मालिक खन्ना की अट्ठारह वर्षीय बेटी गुड़िया एक टटपूंजिए एंग्लोइंडियन लड़के पीटर के प्रेमजाल में फंस कर पागल हो जाती है। पिता की सीख को दरकिनार कर वह जवानी की पींघे झूलती रही। पिता लखनऊ के होटेल में उसका ब्याह रचा देता है। किंतु ब्याह के तीसरे ही दिन वह कीमती सामान बटोर देहरादून से टैक्सी पकड़ पीटर के बड़े मोड़ के पास टीन के छत वाले दो कमरों के मकान में पहुंच जाती है। दो वर्ष में ही दो बच्चों की मां बनने के बाद शराबी पति के घर का बोझ उठाते हुए होश आई। तभी पीटर नवेली गर्लफ्रेंड के साथ शहर से भाग गया। दुखियारी गुड़िया की भेंट श्रीमती रूपासिंह से हुई जो उसे सहारा देती है।

रूपासिंह का रोचक किस्सा अलग है। बासठ की रूपासिंह के किस्से मसूरी में एक छोर से दूसरे तक प्रचलित थे। रूपा का बाप रामपुर के नबाब के बंगले का चौकीदार था जो लोगों के घरों में भांडे मांजती अपनी पत्नी को बेटी की मां बना कर चल बसा। रूपा की मां कप्तान साहब की विशाल कोठी में काम करने लगी और अपनी बेटी रूपा को वहां काम पर लगा दिया। गोरीचिट्टी रूपा अपनी तीन वर्षीय बच्ची के साथ कप्तान साहब के घरबार को संवारने के साथ साथ उन्हें भी सम्भालने लगी और गर्भवती हो गई। उसे एक बेटा भी हुआ। बहत्तर साल की उम्र में कप्तानसिंह बीमार पड़ा तो उठ नहीं पाया। कप्तानसिंह के मरने पर रूपासिंह

उसकी सम्पत्ति की मालिक बन गई। रूपासिंह की कोठी क्रिश्चियन स्कूल से सटी थी जहां लेखक, कलाकार आने जाने लगे। वह उनका मछली, मटनचिप्स व विह्सकी से सत्कार करती। अपने आवास के नीचे उसने एक नर्सरी स्कूल खोला और गुड़िया जैसी दुखियारी को एक हजार रूपए महीने पर के.जी.पढ़ाने के लिए रख कर सहारा दिया। उपन्यास में नारी उत्पीड़न के कई प्रसंग है। मगर पुरुष समाज के इस दुर्व्यहार से मुकाबला कर उबर आने का मादा भी उनमें दिखलाई पड़ता है। ऐसा ही एक और प्रसंग है ठाकुर और उसकी पुत्री सरस्वती का। ठाकुर एक विशाल कोठी के पिछले हिस्से में दो कमरों में बेटी के साथ रहता था। ठाकुर की पत्नी की मृत्यु के बाद सारा भार सरस्वती पर आन पड़ा क्योंकि ठाकुर साफ सुथरे कपड़े पहन बाहर निकल जाने के अलावा कुछ नहीं करता था। उसके घर गेस एजेंसी का शराबी ड्राईवर क्लार्क घर आने जाने लगा। ठाकुर द्वारा छूट देने पर वह सरस्वती से सम्बन्ध बनाने में कामयाब हो गया। सरस्वती गर्भवती हो गई तो उसका पति भाग या और बाप भी चुपचाप गांव खिसक गया। इसे भी रूपासिंह ने सहारा दिया।

अंग्रेजों को इतने समय से भारत में रहते रहते यहां से मोह भी हो गया था। स्कूल के पूर्व प्रधानाचार्य मिस्टर स्मिथ अपनी पत्नी मैरी के साथ वहीं अपने बंगले में रहते थे। उनका कार्यकाल स्कूल के लिए गोल्डन पीरियड माना जाता था। पत्नी की मृत्यु होने पर वे अकेले हो गए और खोए खोए से रहते। शाम को बाहर अंग्रेजी अदब में चाय पीते और पत्नी के लिए भी चाय का प्याला रखवाते। बहुत बार अपनी पत्नी को संबोधित करते। कभी कहते 'मैरी डार्लिंग, वी ऑल आर वेटिंग फार यूं।' इनकी एक सेक्रटरी रोजी थी। बाद में वे रोजी को संबोधित करने लगे। जीवन के अंतिम काल में, जब वे 89 वर्ष के हो गए, उनका भतीजा उन्हें इग्लैंड ले गया। मगर वे प्लेन में बैठते ही सो गए और वहां पहुंचने पर हफ्ते बाद ही चल बसे। ऐसे स्कूलों में पहले सीनियर कैंब्रिज होता था, फिर आईसीएससी का कोर्स होने लगा। इसी तरह पहले अंग्रेज हैडमास्टर होते थे, फिर काले भारतीय ईसाइयों को अवसर दिया जाने लगा। ऐसे ही पहले दो-तीन ही भारतीय टीचर होते थे, बाकी अंग्रेज या एंग्लोइंडियन, फिर सभी भारतीय ईसाई होने लगे। हां, हिन्दी, भूगोल, मैथ्स जैसे विषयों के लिए भारतीय ही रखने पड़ते। मिशनरी स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई व खाने पीने की निःशुल्क व्यवस्था रहती, विशेषकर उनके लिए जिन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया हो। एक और प्रसंग, जो स्कूल की गतिविधियों के साथ उपन्यास में अंत तक चलता है, वाइनवर्ग एलन स्कूल में आए नये भूगोल अध्यापक माइकल का है। माइकल 'पण्डिया' के पिता भारतीय पादरी थे मगर नित्यप्रति बाईबल का पाठ करने वालों से वह दूरी बनाए रखता। चर्च जाने के बजाए वह मालरोड़ में घूमना पसंद करता। पहले उसका परिवार भारतीय था जिसके कारण अभी भी वे भारतीय संस्कारों से जुड़े हुए थे। एक ही बिल्डिंग में रहते हुए वह नायक के परिवार के भी करीब आ जाता है। किचन में खुद जा कर आम का अचार चट कर जाना उसकी आदत थी। उसकी मंगनी निवेदिता नाम की सांवली लड़की से हो चुकी थी जिसकी निशानी गले में मोटी चेन और दाएं हाथ की बड़ी उंगली में भारी सोने की अंगूठी थी। निवेदिता का भाई अमेरिका में रहता था और माइकल के पिता की इच्छा थी कि वह भी अमेरिका चला जाए। रोज उसे निवेदिता के लम्बे लम्बे पत्र आते थे। उसी दौरान के.जी. टीचर के रूप में शर्ली ने स्कूल ज्वाइन किया। वह एंग्लोइंडियन थी और पूरी अंग्रेज लगती थी। जिम क्लब में शाम को बैडमिंटन के खेल के साथ उन दोनों का मिलाप हुआ तो बढ़ता ही गया। वे अकेले मसूरी की सड़कों पर घूमते दिखाई देने लगे और अंततः माइकल ने निवेदिता से सम्बन्ध तोड़ दिया। उपन्यास के अंत में स्कूल के वार्षिक उत्सव के दिन जब पूरे स्कूल में उत्सव मनाया जा रहा था। इस कार्यक्रम में एक दम्पति, जो पेईंग गेस्ट अपने यहां रखता था, एक नवविवाहित जोड़े को अपने साथ लाए थे। सांवले रंग की, सुंदर आंखों और लम्बे बालों वाली यह नवविवाहिता और कोई नहीं निवेदिता थी। शर्ली के पीछे भागता माइकल जब डायनिंग हॉल में उस युवती का चेहरा देखता है तो जैसे आसमान से नीचे गिर जाता है। निवेदिता का चेहरा खिल उठता है तो माइकल का उतर जाता है। उसका मन रोने को हो जाता है। उस समय मसुरी के मैपल कॉटेज में रहने वाले लेखक रस्किन बांड, जो अपनी पहली पुस्तक 'रूम ऑन दि रूफ' के कारण प्रसिद्ध हो चुके थे का उल्लेख भी उपन्यास में मिलता है। अभिनेता टॉम ऑलटर, मार्क्सवादी विचारक विजय रावत के साथ साहित्यिक गतिविधियों का जिक्र भी किया है।

चर्चित पुस्तक : उपनिवेश के छींटे (उपन्यास),
लेखक : जितेन्द्र शर्मा,
प्रकाशक : समय साक्ष्य 15, फालतू लाइन, देहरादून-248001,
संस्करण : 2019
मूल्य : 160.00

मसूरी के नैसर्गिक सौंदर्य के साथ उस समय की भव्य कोठियों का रहस्यमय वातावरण और उस सब के बीच अंग्रेजी बोर्डिंग स्कूलों के वातावरण का उपन्यासकार ने सफल विवेचन किया है। उपन्यास सरल वर्णनात्मक शैली में कहा गया है जिससे रोचकता बराबर बनी रहता है। ''भारत से अंग्रेज लौट गया था, पीछे छोड़ गया अपनी छाप, जिसे आज भी भारतीय ओढ़ बिछा रहे हैं'' और ''मालरोड़, हिल स्टेशन का दिल होता है और स्थानीय लोगों के लिए ड्राइंगरूम के समान है'' जैसे वाक्य उपन्यास के भाषा विन्यास को सशक्त करते हैं।

'अभिनंदन', कृष्ण निवास, लोअर पंथा घाटी, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171009, मो. 0 94180 85595

समीक्षा

जन सरोकारों से बावस्ता

◆ डॉ. आशु फुल्ल

बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न सरोज परमार हिन्दी की वरिष्ठ विभूतियों में गणनीय ऐसी कवयित्री है जिनका काव्य लेखन उत्कृष्टता के स्तर को स्पर्श करता है। इनकी कविताएं जितनी सरल, सहज हैं, अपने प्रभाव में उतनी ही व्यंजक हैं। 'घर, सुख और आदमी', 'समय से भिड़ने के लिए' तथा 'मैं नदी होना चाहती हूं', इनके बहुचर्चित काव्य संग्रह हैं। 'मैं नदी होना चाहती हूं' काव्य संग्रह के माध्यम से कवयित्री जनसरोकारों से मुखातिब है। तीखे तेवरों से लैस कविता में कहीं स्वीकार है, कहीं विषाद, कहीं गहरा प्रतिरोध, नाराजगी और विक्षोभ कवि मन में उतरकर मुकम्मल शक्ल में पहुंचे हैं ---'तुम्हारी पेशानी पर खुदी हैं चिन्ताएं/तुम्हारी आँखों में उबलता हुआ लावा/तुम्हारे भिंचे हुए जबड़े / तुम्हारे आक्रोश को जाहिर करने के लिए काफी हैं।'

सरोज परमार के कविता संसार और उसमें विन्यस्त समाज की व्याप्ति को किसी भौगोलिक सीमा में आंकना सम्भव नहीं। सरोज के कवि समय में कवि स्वर, स्वप्नों में घर, आंगन, परिवार, नदी, मछली, आंधी, बारिश, बर्फ, पुलवामा, घड़ियाल, सैलानी, जूते, इबारतें, चाय बागान, पोस्टर, लद्दूघोड़ा, यीशू, परिन्दें, पहाड़, सभ्यता, प्रकृति -विकृति, स्त्री-पुल, मूल्य ध्वंस-निर्माण बाजार, पयार्वरण ---विशाल फैला हुआ परिदृश्य जो कविताओं में बिखरा पड़ा है ...इन सब के मध्य गुजरता प्रश्नाकुल लेखन कहीं सहज, कहीं वक्र, कहीं व्यंग्य, कहीं शिकवे, कहीं उलाहना, कहीं संदेश, कहीं संवाद, कहीं विवाद करता समकालीन जीवन के मूल्य लोपी मरुस्थलों के मध्य ऐसे सपनों को टांकने का उद्यम भी करता है जिसके फलीभूत होने पर बराबर टकटकी सभ्यता लगाये हुए है। 'भले ही हमने नये रास्ते नहीं बनाए/पर खोजा है उन गुम हुए रास्तों को /जिनके मील पत्थर तक गुम हो गये हैं /हमारे पुरखों के कदमों से रौंदी हुई/ ये राहें मंजिल का पता जानती हैं।'' कविता का रचाव उस डूबते जहाज को बचाने के उपक्रम जैसा है जिसमें हमारा समय, मूल्य, संकल्प, संबंध, संघर्ष, इतिहास जिस शक्ल में है, जैसं भी है, सब लदे फदे हैं-- ''मजमों में निरंतर तालियाँ पीटते/हमसे अगली पीढ़ियों को /धकेल रहे हैं /अभावों की भट्टी में।'' परिवेशगत यह तल्खी यह सख्ती सूचित कर रही कि कविता अंततः मूल्य संरक्षण और मूल्य रचाव का व्यापार है। कवयित्री का मनपसंद विषय स्त्री विमर्श जाने पहचाने मध्यवर्गीय इतर बितर बिखरे अवशेषों के मध्य आवाजाही करता हुआ आत्मविमुग्ध है। नैरेटर सरोज की निपुणता उनकी साधारणता को तराशते हुए बेहद लगाव से असाधारण चरित्रों में मूर्तिमान करना है। देह के चोंचलो से ऊपर उठाकर स्त्री को आत्मबल से गरिष्ठ बनाना है। उसकी सुविधा और दुविधा दोनों को अभिव्यक्त करना है - ''उनकी सांसों में कुछ कर गुजरने की जिद्द है /वे सब लिखना चाहती है नयी इबारतें सातवें आसमान में।'' जब चाहा, तलाकशुदा औरत, लौटना, पीठ पर चिपका पोस्टर, औरत : पांच स्थितियां प्रभृति नारी विमर्श की सशक्त रचनाएं हैं। प्रेम की तरलता को कवयित्री ने नाजुक अनुभूति से मापा है - ''प्रेम सौदा नहीं /न ही उथली वासना से प्रेरित बनावटी दिखावटी। लिखावट देखे ... प्रेम हवा नहीं /प्रेम खुशबू भी नहीं /प्रेम हरारत है /प्रेम चिड़िया नहीं /प्रेम कुंआ नहीं /प्रेम झरना है /झर झर कर भी खत्म नहीं होता।'' छोटी-छोटी कविताओं में कवयित्री ने अंतरंग क्षणों को अनछुए बिम्बों में ढालकर जिन शब्द वीथियों में सम्भव बनाया है उनमें अधूरे प्रेम की कसक, बिछलन सी अधिक भास्वर हुई है। जीवन की ऊपरी झिलमिल सतह के नीचे जो अन्तः सलिल अकेलापन, अवसाद है, वह कविताओं के भाषिक ढांचे में प्रभावी ढंग से प्रतिबिम्बित हुआ है --तुम्हारे दिए सब रंग हो गये बदरंग/ घिस घिस कर दरकती जा रही हूं/नहीं रह गयी उजाले की कोई लकीर / वायदे तो सात जन्म के थे /एक तिहाई जन्म में ही चुक गयी /तुम्हारी हीर!'' जब चाहा, नहीं रह गयी उजाले की लकीर, बूंदे आज भी बरसती हैं, दूरियां, करुणा का महारास, अन्तिम बसन्त मेरे भीतर, सहस्राक्षी देह प्रभृति लघु से शब्द चित्र करुणामयी संवेदना के रचाव से पगे है। नदी कवयित्री का सर्वप्रिय रुपक रहा है। स्त्री के रुप में अनूठा प्रयोग है जो काव्य की अतिरिक्त ताकत बना है। यह नदी राग शुरु की कविताओं में गुंजित हुआ है। उसमें ऐन्द्रियता भी है तो स्त्री देह के सम्मोहिनी पाश की मधुरता भी मानो देह प्रकृति के विस्तार की सम्पूर्ण इकाई

विभिन्न भाषाओं की सूक्तियों का सुंदर गुलदस्ता

विश्व सूक्ति दिग्दर्शन ग्रंथ डॉ. महेंद्र शर्मा द्वारा संकलित किया गया है। आप वैदिक एवं पौराणिक ग्रंथों पर साधिकार रखते हैं। कर्मकांड एवं ज्योतिष के क्षेत्र में जन-जन के हृदय में छाए रहते हैं। आपकी सत्यनिष्ठा, अगाध परिश्रम और प्रतिभा का प्रतिफल विश्व सूक्ति दिग्दर्शन नामक ग्रंथ 1175 पृष्ठों में लिखा गया है। पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से आपने पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है। साहित्य, दर्शन, व्याकरण, योग और ज्योतिष विषयों में आप पारंगत हैं। विषयानुक्रमणिका के अनुसार क्रम संख्या एक से पैंतालीस तक अकारादि क्रम से विभक्त किया गया है। जिस प्रकार बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है, उसी प्रकार से डॉ. महेंद्र शर्मा ने एक वृहद्समुद्र संस्कृत, हिंदी, उर्दू, फारसी, बांगला, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं की सूक्तियों को एकत्रित कर एक सुंदर गुलदस्ता तैयार किया है। परिशिष्ट को एक से 33 तक विभक्त किया गया है। हृदय को स्पर्श करने वाली बात यह है कि जहां सूक्ति संग्रहकार सूक्ति से परिचित करवा रहा है, वहां ये बात किस विद्वान ने बोली है, हम इससे भी अवगत हो जाते हैं, जैसे सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमत्तः करण प्रवृतमः अर्थात् संदेह की स्थिति में सज्जनों के अंतःकरण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है। यह सूक्ति अवगत करवाती है कि अभिज्ञानशाकुंतलम् से ली गई है, जिसके रचयिता महाकवि कालिदास हुए हैं। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, रामकृष्णपरम हंस, शंकराचार्य, शेक्सपियर, गोल्डस्मिथ, महावीर स्वामी, गोपथ ब्राह्मण, कबीर, रहीम, विनोबा भावे, सूरदास, रवींद्रनाथ टैगोर, प्रेमचंद, कालिदास आदि विद्वानों को संकलित किया गया है। परिशिष्ट में 'अकेला' के संदर्भ में कहा है कि आदमी अकेला भी बहुत कुछ कर सकता है। अकेले आदमी ने ही आदि से विचारों में क्रांति पैदा की है। अकेले आदमियों के कृत्यों से सारा इतिहास भरा पड़ा है। प्रेमचंद द्वारा कहे गए ये वाक्य सचमुच सभी को प्रेरणादायक हैं। आपने भी इतना बड़ा ग्रंथ अकेले में ही संकलित कर दिया, जिसमें आप पूर्णतयः बधाई के पात्र हैं। बड़ी प्रसन्नता है कि आपने संस्कृत, हिंदी, उर्दू, पंजाबी आदि सभी ग्रंथों, लेखकों, कवियों के विचारों को संकलित कर 'विश्वसूक्ति दिग्दर्शन' प्रकाशित किया है। इस ग्रंथ में अकारादिक्रम से वैज्ञानिक विवेचन करते हुए भी जिज्ञासुओं, छात्रों, अनुसंधानकर्ताओं एवं पाठकों को इसका लाभ मिलेगा।

मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि डॉ. महेंद्र शर्मा साधुवाद के पात्र हैं, वे भविष्य में भी अपने कर्मठ जीवन में इसी प्रकार से कार्य आगे भी करते रहेंगे। शुभमस्तु।

डॉ. मस्त राम शर्मा

आचार्य निवास, मज्याठ, टुटू, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171 009, मो. 0 94180 37599

बन गयी हो जिसे पुरुष सदियों से कल्पना कर कर के थक कर निढाल हो गया पर पार नहीं पा सका! स्त्री और नदी का बहना कितना सौहार्दपूर्ण है। शब्द ध्यान मांगते हैं ---तुम्हारे संग रहते रहते /बहते बहते / मैं नदी होना चाहती हूं /खोना चाहती हूं वजूद /अपनापन /होना चाहती हूं सागर / महासागर! /क्या तुम भी औरत होना चाहोगी??" पूरी कविता स्त्री और नदी को सम्वेदना के समकोण पर खड़ा कर सवालिया दर सवालिया ही होना चाहती है...पुरुष की जिद्द और हठ से चिरपरिचित छेड़छाड़ किए बिना ...बस मूक जिहाद छेड़ते हुए। वस्तुतः भावों, विचारों, घटनाओं, सजीव दृश्यों की रेलपेल त्वरित गति से आती है। शब्दों का इस्पाती आकार प्रकार लेती है। जहां कम शब्दों में रूपक बांधे हैं वहां प्रभावोत्पादकता और अर्थगर्भिता अधिक है यथा--आक्रोश, यीशू, मैं बावरी, खाली वक्त की रुई, हुनर, बटन, आंगन की चिड़ियाँ, जब चाहा कविताएं समय के विरोधाभासों और जटिलताओं की चीथन समक्ष बिछा देती हैं। वैसे तो सम्पूर्ण काव्य संग्रह पठनीय है। सब रचनाएं बेहतरीन दृश्यबंध की सजीव प्रस्तुति है लेकिन व्यक्तिगत रुप से मुझे 'पीठ पर चिपका पोस्टर' कविता हाण्ट करती है जो लड़की के जीवन का सत खंगाल जाती हैं ...सरोज परमार की करुणा का विस्तार आप भी अवलोकित करें..... लड़की की पीठ /खाली दीवार /कोई भी पोस्टर लगा जाता है /एक फटता है/बरसते पानी से/दूसरे की इबारत शुरू/ न हुआ तो एक जोंक सी अफवाह सी चिपक गयी/ उतारते रहो बरसों / धोते रहो / पोंछते रहो/धोते रहो । प्रस्तुत काव्य संग्रह पर हिमाचल अकादमी का पुरस्कार मात्र एक प्रेरकपरक है। जो आपको शिखरों का स्पर्श करने मे महती भूमिका निभाएगा। शत शत नमन।

प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, शहीद विक्रम
बतरा राजकीय महाविद्यालय पालमपुर, कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश-176061 मो. 0 94595 45088

पुस्तक : **मैं नदी होना चाहती हूं (काव्य संग्रह)**, लेखक : **सरोज परमार**,
प्रकाशक : **बोधि प्रकाशन, जयपुर-302006**, मूल्य : 80.00

ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 64 जुलाई-अगस्त 2020 अंक : 4-5

सम्पादकीय कार्यालय: हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tell: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in/himprastha.asp

इस अंक में

लेख

☞ मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर का 74वें स्वतंत्रता दिवस पर आलेख — 3
☞ सुखद ऐतिहासिक पल — वेद प्रकाश — 8
☞ पहाड़ी चित्रकला और मध्यकालीन काव्य — डॉ. तुलसी रमण — 13
☞ समृद्ध हिमाचल का शिल्पकार डॉ. यशवंत सिंह परमार — योगेश शर्मा — 18
☞ हिमाचल की पहाड़ी भाषा-बोलियों के पैरोकार पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम — उमा ठाकुर — 21
☞ पंडित चंद्रधर शर्मा और उनका रचना संसार — गोपाल जी गुप्त — 24
☞ कलम के साथ कदमताल करता कलम का सिपाही शक्तिप्रसाद सकलानी — डॉ. प्रभा पंत — 26
☞ नई नवेली दुल्हनों का सावन भादों — बलबीर ठाकुर — 30
☞ 'हर घर बने पाठशाला' प्रदेश सरकार की बेहतरीन पहल — संजय कुमार — 31
☞ घन घमंड गर्जत घन घोरा — श्याम नारायण श्रीवास्तव — 33
☞ समस्याओं में उलझी महिला कामगार — अंकुश्री — 39

कहानी

☞ छलीट — डॉ. देव कन्या ठाकुर — 48
☞ रामजी का फोटो — महेश शर्मा — 54
☞ उर्दू कहानी/ तमाशा अनु. : हरिंदर सिंह गोगना — 59
☞ फसल कटनी बाकी है — चंद्रेश कुमार — 63
☞ सीताराम सीतापुर — एच. आनंद शर्मा — 66

बाल कहानी

☞ जब दोस्त बना पौधा — प्रभात कुमार — 65

लघु कथा

☞ मुखौटा — चितरंजन भारती — 72

कविता ग़ज़ल

☞ बहुत प्यारा देश मेरा — डॉ. प्रेम लाल गौतम 'शिक्षार्थी' — 11
☞ ये मेरा हिंदुस्तान — शिवेन कुमार 'गैर' — 12
☞ निकलो ना घर से बाहर — नीरल सैनी — 23
☞ बीत गया दिन — हेमंत गुप्ता — 29
☞ माह के कवि/ राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविताएं — 36
☞ दादी — सुरभि — 41
☞ डॉ. अनीता शर्मा की कविताएं — 42
☞ रोहित ठाकुर की कविताएं — 43
☞ प्रतिभा प्रभा की कविताएं — 45
☞ खत आएगा — हंसराज भारती — 62

ग़ज़ल

☞ सुरेश भारद्वाज 'निराश' की ग़ज़लें — 46

पुस्तक समीक्षा

☞ भावों की सशक्त अभिव्यक्ति, भाषा का सरल प्रवाह — डॉ. सीमा शर्मा — 68
☞ कवि की दृष्टि में आलोचना, आलोचक की दृष्टि में कविता — दिनेश शर्मा — 71

अपनी बात

आज हम स्वतंत्रता के सुनहरे क्षितिज पर विराजमान हैं और स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रगामी हैं। सब भारतवासी स्वतंत्रता के अहसास से अभिभूत हैं, उनकी हर सांस स्व-तंत्र की सुगंध-महक ग्रहण कर रही है। वे पराधीनता जो हमने 15 अगस्त, 1947 से पूर्व सही-झेली, उसके बिंब-प्रतिबिंबों को सुन-समझ कर दर्द तो महसूस करते हैं, पर अब हम अपने भविष्य के स्वयं ही भाग्यविधाता हैं और पराधीनता का अहसास 'अतीत' भर है। और हम वर्तमान से उज्ज्वल भविष्य की तरफ प्रगल्भ एवं गतिशील हैं। हमने 15 अगस्त, 1947 को क्रूर ब्रिटिश शासन तंत्र से आजादी प्राप्त कर उन्मुक्त एवं स्वच्छंद वातावरण में विचरना आरंभ किया और आज सामाजिक-आर्थिक विकास, उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी, तकनीक, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में नित नई उड़ानें भरते हुए विश्व परिदृश्य में अहम भूमिका में आन खड़े हैं। इसके लिए हमें लंबे संघर्ष से गुजरना पड़ा। जिसकी शुरुआत 10 मई 1857 को हुई जिसकी परिणति 15 अगस्त 1947 को आजाद भारत के रूप में हुई। इसके लिए राष्ट्रभक्तों, स्वतंत्रता सेनानियों ने अनेक कष्ट एवं यातनाएं झेलीं और अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इस धरा के वीर-सपूतों ने सहर्ष फांसी के फंदे चूम लिए थे, परंतु स्वतंत्र भारत के अपने लक्ष्य से रत्ती भर भी टस-से-मस नहीं हुए। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु इसके जीवंत उदाहरण हैं। हजारों-लाखों आजादी के दिवानों के लिए अंग्रेजों की काल कोठरियां भी कम पड़ीं। यह जंग धर्म-जाति या क्षेत्र के विभेद से परे एक ऐसी जंग थी जिसे हर भारतीय किसी भी कीमत पर जीतने के लिए अडिग था। देश को पराधीनता से मुक्त कराने के लिए अनेक आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस जैसे अनेक देशभक्त व दूरदर्शी नेताओं के मजबूत हाथों में रहा जिनको हर भारतवासी का नमन। इस संघर्ष में हिमाचल के वीर देशभक्तों ने भी अपना अविस्मरणीय योगदान दिल खोल कर दिया। वास्तव में यह पहाड़ी राज्य उस समय अंग्रेजी सत्ता की त्रासद गुलामी तो झेल ही रहा था, साथ ही पहाड़ी रियासतों, सामंतों की बेड़ियों में भी जकड़ा हुआ था। पहाड़ की जनता बेगार प्रथा व अन्य कई प्रकार की कुरीतियों से बेजार थी। उस समय यहां धामी गोलीकांड, प्रजामंडल आंदोलन, सुकेत सत्याग्रह और पझौता आंदोलन ने देश का ध्यान आकर्षित किया। इन आंदोलनों के दौरान प्रदेश के लोग जहां रियासती राजाओं की यातनाओं-प्रताड़नाओं के विरुद्ध खड़े हुए, वहीं उनमें देशप्रेम की लौ भी जगी और वे राष्ट्र की आजादी में कूद पड़े और अपना भरपूर सहयोग दिया। 15 अगस्त 1947 को देश तो आजाद हुआ परंतु हिमाचली जनता अभी भी देसी रियासतों से मुक्त न हो पाई थी। आजादी के आठ माह बाद 15 अप्रैल, 1948 में छोटी-बड़ी रियासतों के विलय के बाद से हिमाचल प्रदेश अस्तित्व में आया। आरंभ में सामाजिक- आर्थिक पिछड़ेपन की निराशाजनक तस्वीर थी। लोग गरीबी व निरक्षरता की चपेट में थे। छिन-भिन्न सामाजिक आर्थिक ढांचे को पटरी पर लाना एक बड़ी चुनौती थी। परंतु प्रदेश के परिश्रमी एवं कर्मठ लोगों ने इसे स्वीकार किया और समय-समय पर प्रदेश को मिले दूरदर्शी एवं जुझारू नेतृत्व की बदौलत आज प्रदेश पहाड़ी राज्यों में ही नहीं, अपितु अन्यत्र भी विकसित राज्य बनने की दहलीज पर खड़ा है। जहां कृषि-बागबानी, उद्योग, विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए अध्याय लिखे जा रहे हैं, वहीं लोगों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए अनेक योजनाएं-परियोजनाएं कार्यान्वित हैं। फलतः यहां का जनजीवन खुशहाल है। शिक्षा-स्वास्थ्य में हम अन्य राज्यों के लिए आदर्श बने हैं। यहां की साक्षरता दर 82.80 प्रतिशत तक पहुंच गई है। संपन्नता का अंदाज इसी से लग जाता है कि प्रति व्यक्ति आय 1,95,253 रुपये हो गई है। 38 हजार किलोमीटर लंबी सड़कों का विस्तार है जो निरंतर बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के सुयोग्य एवं परिपक्व नेतृत्व में आत्मनिर्भर हिमाचल का सपना साकार रूप ले रहा है। 15 अगस्त का पावन दिवस हर देश व प्रदेशवासी के लिए 'उत्सव' का गौरवपूर्ण अवसर है। त्याग और बलिदान के परिणामस्वरूप आजादी का जो उपहार हमें मिला है, उसे अक्षुण्ण बनाए रखना है।

संपादक

74वें स्वतंत्रता दिवस
(15 अगस्त, 2020) पर लेख

अतुल्य विकास व सम्पन्नता की ओर वीरभूमि हिमाचल

जय राम ठाकुर
मुख्यमंत्री
हिमाचल प्रदेश

पंद्रह अगस्त, हम सब भारतवासियों के लिए एक गौरवमयी ऐतिहासिक दिन है। वर्ष 1947 में, इसी दिन हमारे देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। आज हम सब देशवासी मिलकर अपने महान लोकतांत्रिक देश का 74वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। इस शुभ अवसर पर मैं समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा सबके सुखद भविष्य की कामना करता हूँ।

स्वतंत्रता दिवस का यह पावन दिन, आजादी के उन महानायकों को स्मरण करने का भी है, जिन्होंने माँ भारती को गुलामी की जंजीरों से आजाद करने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। कुर्बानियां देकर हमें स्वतंत्रता दिलवाने वाले भारत माता के वीर सपूतों को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा सभी वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को शत-शत नमन करता हूँ। यह दिन प्रत्येक भारतीय के लिए विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए इस कठोर तपस्यापूर्ण यात्रा ने हमें देश को विकास के शिखर की ओर ले जाने का सुनहरा अवसर प्रदान किया है।

स्वतंत्रता संग्राम में हिमाचलवासियों ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। धामी गोलीकांड, प्रजामण्डल आन्दोलन, सुकेत सत्याग्रह तथा पझौता आन्दोलन जैसी घटनाएं इसका ठोस प्रमाण हैं। इस अवसर पर मैं प्रदेश के पुरोधाओं, स्वतंत्रता सेनानियों तथा राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. वाई. एस. परमार को शत्-शत् नमन करता हूं।

वीरभूमि हिमाचल : प्रदेश का इतिहास पराक्रम, शौर्य और बलिदान से ओत-प्रोत रहा है। स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व और आजादी के बाद हुए विभिन्न युद्धों व संघर्षों में प्रदेश के नौजवानों ने सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अदम्य साहस का परिचय दिया है। देश की खातिर कुर्बान होना यहां की गौरवमयी परम्परा है। यही कारण है कि यह प्रदेश देवभूमि के साथ-साथ वीरभूमि भी है। स्वतंत्रता के पहले भी प्रदेश के सैनिकों को 1 जॉर्ज क्रॉस, 2 विक्टोरिया क्रॉस तथा दो मिलिट्री क्रॉस सहित कुल 23 सेना मैडल से नवाजा गया है।

यह बड़े गर्व की बात है कि देश का प्रथम परमवीर चक्र अपने सर्वोच्च बलिदान के लिए प्रदेश के वीर

सपूत मेजर सोमनाथ शर्मा को प्राप्त हुआ था। वर्ष 1999 में कारगिल संघर्ष के दौरान भी हमारे वीर जवानों ने अपनी वीरता का परचम लहराया और कैप्टन विक्रम बतरा व हवलदार संजय कुमार को परमवीर चक्र प्राप्त हुए। कर्नल डी. एस. थापा को भी उल्लेखनीय शौर्य के लिए यह सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ है। प्रदेश के वीर जवानों ने चार परमवीर चक्र व दो अशोक चक्र सहित 1096 वीरता पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

हाल ही में, लद्दाख की गलवान घाटी में देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए शहादत पाने वाले प्रदेश के वीर सैनिकों को भी मैं शत-शत नमन करता हूं। सीमाओं की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सैनिकों का सम्पूर्ण राष्ट्र कृतज्ञ है। वीरों द्वारा रचित शौर्य-गाथाएं आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करती रहेंगी। हमारे सेवारत जवान सरहदों पर मुस्तैदी से जुटे हैं और हमारे पूर्व सैनिक प्रदेश के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रदेश सरकार वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों, स्वतंत्रता सेनानियों के आश्रितों, सैनिकों, भूतपूर्व सैनिकों तथा उनके परिवारजनों के कल्याण के प्रति वचनबद्ध है। प्रदेश सरकार द्वारा उनके कल्याण के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं। प्रदेश सरकार द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों तथा दिवंगत स्वतंत्रता सेनानियों की पत्नियों को 15 हजार रुपये व अविवाहित बेटियों को 10 हजार रुपये प्रति माह प्रदान किए जा रहे हैं। स्वतंत्रता सेनानियों की बेटियों के विवाह के लिए 51 हजार रुपये तथा पोतियों के विवाह के लिए 21 हजार रुपये प्रदान किए जा रहे हैं। स्वतंत्रता सेनानियों के आश्रितों को सरकारी व अर्धसरकारी सेवा में दो प्रतिशत आरक्षण की सुविधा भी प्रदान की गई है।

न्यू इंडिया

आज हमारा देश आत्मनिर्भरता की ओर मजबूती से बढ़ रहा है। न्यू इंडिया के निर्माण में मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के प्रयास वरदान सिद्ध होंगे। केन्द्र सरकार द्वारा लागू नई शिक्षा नीति भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने में सहायक होगी। सफलतापूर्वक चलाए जा रहे स्वच्छ भारत मिशन ने पूरे देश को स्वच्छ व सुन्दर बनाने में अहम भूमिका निभाई है।

हमारी सरकार ने परमवीर चक्र और अशोक चक्र विजेताओं की वार्षिकी को तीन लाख रुपये, महावीर चक्र व कीर्ति चक्र विजेताओं को दो लाख रुपये, वीर चक्र तथा शौर्य चक्र विजेताओं की वार्षिकी को एक लाख रुपये किया है। वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान कीर्ति चक्र व शौर्य चक्र विजेताओं को लगभग 7.50 करोड़ रुपये के लाभ प्रदान किए हैं। युद्ध विधवाओं की बेटियों की शादी के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता को 15,000 रुपये से बढ़ाकर 50,000 रुपये किया गया है।

मैं देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके मजबूत नेतृत्व में भारत एक सशक्त राष्ट्र के रूप में उभरा है। सशक्त नेतृत्व ही एक सशक्त राष्ट्र की पहचान है। आज समूचा विश्व हमारे देश की ताकत व क्षमता का लोहा मान रहा है। सीमा पर पड़ोसी देशों को मुंह-तोड़ जवाब और कोविड-19 के दौरान आत्मनिर्भर भारत अभियान का आगाज इसके सार्थक प्रमाण हैं।

न्यू इंडिया : आज हमारा देश आत्मनिर्भरता की ओर मजबूती से बढ़ रहा है। न्यू इंडिया के निर्माण में मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के प्रयास वरदान सिद्ध होंगे। केन्द्र सरकार द्वारा लागू नई शिक्षा नीति भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने में सहायक होगी। सफलतापूर्वक चलाए जा रहे स्वच्छ भारत मिशन ने पूरे देश को स्वच्छ व सुन्दर बनाने में अहम् भूमिका निभाई है।

समृद्धि की नींव : वर्ष 1948 में अस्तित्व में आने के बाद प्रदेश ने अपनी विकास यात्रा लगभग शून्य से आरम्भ की है। आरम्भिक दो दशकों तक यहां विकास की गति धीमी रही, परन्तु 25 जनवरी, 1971 को पूर्ण राज्य बन जाने के बाद प्रदेश के विकास में गति आई। यह छोटा-सा सुन्दर पहाड़ी प्रदेश आज एक प्रगतिशील राज्य के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। इसका श्रेय प्रदेश की कर्मठ, ईमानदार व भोली-भाली जनता को जाता है। इसके लिए मैं समस्त हिमाचलवासियों को साधुवाद देता हूँ और सबका आभार व्यक्त करता हूँ।

नए युग का उदय : 27 दिसम्बर, 2017 को हमारी सरकार को प्रदेश की जनता की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ और प्रदेश में विकास के एक नए युग का सूत्रपात हुआ। इस कार्यकाल में प्रदेश सरकार ने विकास के अनेक आयाम स्थापित किए तथा नई बुलंदियां छुईं। इस कार्यकाल में प्रदेश के सभी क्षेत्रों के समग्र एवं संतुलित विकास व सभी वर्गों के उत्थान को मूल मंत्र बनाकर प्रदेश सरकार ने अनेक सर्वहितैषी योजनाएं आरम्भ कीं।

मंत्रिमण्डल की पहली बैठक में ही वृद्धजनों को सम्मान देते हुए सामाजिक सुरक्षा पेंशन पाने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया गया तथा इसमें कोई आय सीमा नहीं रखी गई। इस समय प्रदेश में 70 वर्ष से अधिक आयु के 2.85 लाख से अधिक वृद्धजन 1500 रुपये की मासिक पेंशन प्राप्त कर रहे हैं। विधवाओं व दिव्यांगजनों की सामाजिक सुरक्षा पेंशन को भी बढ़ाकर 1000 रुपये प्रतिमाह किया गया है। वर्तमान कार्यकाल में विभिन्न सामाजिक सुरक्षा पेंशन के 1,63,607 नए मामले स्वीकृत किए गए हैं।

जनभागीदारी को प्राथमिकता : जनता की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए आरम्भ 'जनमंच' के तहत प्रदेश के सभी विधानसभा क्षेत्रों में 189 जनमंच आयोजित किए गए, जिनमें 45,000 शिकायतें व मांगें प्राप्त हुईं। इन शिकायतों में से 91 प्रतिशत का समाधान किया जा चुका है। मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाइन-1100 के तहत प्राप्त एक लाख से भी ज्यादा शिकायतों में से अधिकतर का निवारण किया जा चुका है। आमजन की शिकायतों के त्वरित समाधान तथा सरकार की नीतियों व कार्यक्रमों के संबंध में जनता की राय जानने के उद्देश्य से My Gov पोर्टल आरम्भ किया गया है, जिससे सरकार को कल्याणकारी योजनाएं बेहतर ढंग से तैयार करने में सहायता मिलेगी।

बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं : प्रदेश में 'हिमकेयर' योजना के तहत अब तक 5.50 लाख परिवार पंजीकृत हो चुके हैं और एक लाख से ज्यादा लोग अपना उपचार करवा चुके हैं, जिस पर 91.43 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं। सहारा योजना के तहत गम्भीर बीमारियों से पीड़ित रोगियों को 2000 रुपये प्रतिमाह की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। योजना के तहत अब तक 9078 लाभार्थियों को 5.90 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता दी जा चुकी है। इस राशि को अब बढ़ाकर 3000 रुपये प्रतिमाह करने का निर्णय लिया गया है।

हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना के तहत 2.78 लाख महिलाओं को निःशुल्क गैस कनेक्शन उपलब्ध करवाए गए हैं। हिमाचल प्रदेश ऐसी उपलब्धि पाने वाला देश का प्रथम राज्य बन गया है। इस बार बजट में 10 हजार आवासों के निर्माण का लक्ष्य रखा है ताकि प्रदेश में सभी गरीबों को रहने के लिए घर उपलब्ध हों। मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना ने प्रदेश के युवाओं को स्वरोजगार अपनाने को प्रेरित किया है। योजना के तहत 25 प्रतिशत की सब्सिडी प्रदान की जा रही है, जबकि महिलाओं को 30 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है। अब तक 946 इकाइयां स्थापित की जा चुकी हैं, जिस पर सरकार ने 44 करोड़ रुपये की सब्सिडी प्रदान की है। योजना के सफल कार्यान्वयन से प्रदेश के युवा रोजगार तलाशने की बजाए अब रोजगार प्रदाता बन रहे हैं। किसानों और बागवानों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य से अनेक नई कृषि योजनाएं आरम्भ की गई हैं। फसलों को जंगली जानवरों से बचाने में मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना सफल सिद्ध हुई है। अब तक लगभग 2600 किसानों ने लाभ उठाया है, जिस पर 80.36 करोड़ रुपये व्यय

नए युग का उदय

27 दिसम्बर, 2017 को हमारी सरकार को प्रदेश की जनता की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ और प्रदेश में विकास के एक नए युग का सूत्रपात हुआ। इस कार्यकाल में प्रदेश सरकार ने विकास के अनेक आयाम स्थापित किए तथा नई बुलंदियां छुईं। इस कार्यकाल में प्रदेश के सभी क्षेत्रों के समग्र एवं संतुलित विकास व सभी वर्गों के उत्थान को मूल मंत्र बनाकर प्रदेश सरकार ने अनेक सर्वहितैषी योजनाएं आरम्भ कीं। मंत्रिमण्डल की पहली बैठक में ही वृद्धजनों को सम्मान देते हुए सामाजिक सुरक्षा पेंशन पाने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया गया तथा इसमें कोई आय सीमा नहीं रखी गई। इस समय प्रदेश में 70 वर्ष से अधिक आयु के 2.85 लाख से अधिक वृद्धजन 1500 रुपये की मासिक पेंशन प्राप्त कर रहे हैं। विधवाओं व दिव्यांगजनों की सामाजिक सुरक्षा पेंशन को भी बढ़ाकर 1000 रुपये प्रतिमाह किया गया है। वर्तमान कार्यकाल में विभिन्न सामाजिक सुरक्षा पेंशन के 1,63,607 नए मामले स्वीकृत किए गए हैं।

किए हैं। बागवानों के लिए आरम्भ एंटी हेलनेट योजना के तहत 1587 हेक्टेयर क्षेत्र लाया गया है, जिस पर 44.44 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं। प्रदेश में हींग तथा केसर की खेती को बढ़ावा देने के लिए नई परियोजनाएं आरंभ की गई हैं। अब तक 59 हजार किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है।

प्रदेश के लिए स्वीकृत 800 करोड़ रुपये की जायका परियोजना के तहत पौधरोपण और ग्रामीण आजीविका सुधार कार्यों पर 41 करोड़ 78 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। राज्य में आरम्भ मुख्यमंत्री एक बीघा योजना के तहत एक बीघा तक की भूमि में एक महिला या उसके परिवार को बैकयार्ड किचन गार्डन तैयार करने के लिए 40,000 रुपये का अनुदान दिया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'पंचवटी योजना' का शुभारंभ किया गया है, जिसके तहत सभी विकास खंडों में पार्क और बागीचे विकसित किए जाएंगे। प्रदेश में केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित सभी योजनाओं को बड़े प्रभावशाली ढंग से कार्यान्वित किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप इस प्रदेश को राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं। केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेश को दी जा रही उदार वितीय सहायता तथा प्रायोजित की जा रही अनेक बड़ी परियोजनाओं के लिए मैं प्रदेशवासियों की ओर से प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केन्द्र सरकार का आभार व्यक्त करता हूँ।

कोविड-19 महामारी की चुनौती : इस वर्ष पूरी दुनिया एक नई चुनौती का सामना कर रही है। कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा समय पर उठाए गए प्रभावशाली कदमों के कारण देश के नागरिकों के जीवन की रक्षा हो सकी है। इस महामारी के कारण उत्पन्न विकट आर्थिक परिस्थितियों से निपटने के लिए आर्थिक पैकेज की घोषणा और जरूरतमंद लोगों को सीधे आर्थिक सहायता प्रदान करके प्रधानमंत्री जी ने एक संवेदनशील नेतृत्व का आदर्श प्रस्तुत किया है। इस संकट की घड़ी में केंद्र सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के अन्तर्गत 20 लाख करोड़ रुपये का आर्थिक पैकेज जारी किया है। इस पैकेज से किसानों, पशुपालकों, रेहड़ी-फड़ी वालों, गरीबों, कामगारों, सूक्ष्म, लघु व मध्यम वर्गीय उद्यमियों, प्रवासी मजदूरों आदि सभी को राहत पहुंची है।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत देश के गरीब परिवारों को नवम्बर, 2020 तक मुफ्त राशन की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना के तहत 5 लाख 90 हजार पात्र महिलाओं के खातों में प्रति महिला 500-500 रुपये हस्तांतरित किए हैं। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को तीन सिलेंडर निःशुल्क प्रदान किए गए, जिससे प्रदेश में एक लाख 36 हजार गृहिणियां लाभान्वित हुई। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत सभी मेडिकल स्टाफ, सफाई कर्मचारियों व स्वास्थ्य कर्मियों को 50 लाख रुपये का बीमा कवर प्रदान किया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत प्रदेश के 8 लाख 74 हजार किसानों के खातों में 2000-2000 रुपये प्रदान किए गए हैं।

प्रदेश में भवन एवं अन्य सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के तहत पंजीकृत एक लाख श्रमिकों को 2000-2000 रुपये की सहायता राशि प्रदान गई, जिस पर 40 करोड़ रुपये व्यय हुए। आशा कार्यकर्ताओं को मार्च से जून, 2020 तक चार माह के लिए 1000 रुपये की अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई है। अब जुलाई और अगस्त में आशा कार्यकर्ताओं को 2,000 रुपये प्रतिमाह अतिरिक्त दिए गए हैं।

बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं

प्रदेश में 'हिमकेयर' योजना के तहत अब तक 5.50 लाख परिवार पंजीकृत हो चुके हैं और एक लाख से ज्यादा लोग अपना उपचार करवा चुके हैं, जिस पर 91.43 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं। सहारा योजना के तहत गम्भीर बीमारियों से पीड़ित रोगियों को 2000 रुपये प्रतिमाह की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। योजना के तहत अब तक 9078 लाभार्थियों को 5.90 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता दी जा चुकी है। इस राशि को अब बढ़ाकर 3000 रुपये प्रतिमाह करने का निर्णय लिया गया है।

प्रदेश में कोरोना के मामलों का पता लगाने के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से एक्टिव केस फांइडिंग अभियान चलाया गया, जिसके सकारात्मक परिणाम मिले और इस अभियान की देशभर में प्रशंसा हुई। प्रदेश में कोविड-19 के मामलों में रिकवरी दर 63.81 प्रतिशत तथा मृत्यु दर मात्र 0.44 प्रतिशत है। इसी दौरान देश के साथ-साथ प्रदेश में भी ई-संजीवनी पोर्टल आरम्भ किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को घर बैठे चिकित्सा परामर्श प्रदान करना था। यह हर्ष की बात है कि हमारे ई-संजीवनी पोर्टल के

इस प्रयास को देशभर में तीसरा स्थान मिला है।

प्रदेश के 6 डैडिकेटिड कोविड अस्पतालों, 11 डैडिकेटिड कोविड हैल्थ सेंटर तथा 38 डैडिकेटिड कोविड केयर सेंटर में 2809 बिस्तरों की सुविधा उपलब्ध है। केन्द्र सरकार से स्वास्थ्य क्षेत्र में कोविड-19 के लिए 52 करोड़ रुपये की सहायता राशि प्राप्त हुई है। क्वारंटीन केन्द्रों के प्रभावी कामकाज को सुनिश्चित किया गया है और इन पर लगभग 13 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। कोविड-19 के सभी चिन्हित संस्थानों में मास्क, पीपीई किट, वेन्टीलेटर, ऑक्सीजन आपूर्ति के उपकरण जैसी आधारभूत सुविधाएं सुनिश्चित करवाई गई हैं। सरकार ने मार्च, 2020 के बाद 8 RT-PCr- जॉच केन्द्र, 24 TRUNAAt- जॉच केन्द्र और दो CB-NAAt- जॉच केन्द्र स्थापित किए हैं जो कि अपने आप में एक रिकॉर्ड है। इस दौरान राशन, फल सब्जी व दवाइयों जैसी आवश्यक वस्तुओं की होम डिलीवरी के लिए 1750 दुकानों को पंजीकृत किया गया, जिनके माध्यम से 16 लाख 76 हजार लोगों को आवश्यक वस्तुएं घर पहुंचाई गईं। प्रदेश में 'एक देश-एक राशन कार्ड' सुविधा आरम्भ की गई। कोरोना महामारी के दृष्टिगत 5. 69 लाख पेंशनधारकों को सितम्बर, 2020 तक पेंशन का अग्रिम भुगतान कर दिया गया है, जिस पर 424.58 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं। प्रदेश में स्थापित कोविड-19 राज्य आपदा रिस्पांस फंड में लोगों ने उदारता से योगदान दिया है। इसमें लगभग 82 करोड़ 48 लाख रूपये की राशि प्राप्त हुई है, जिसमें से 22 करोड़ 08 लाख रूपये की राशि का प्रयोग इस महामारी से निपटने के लिए किया गया।

कोविड-19 की चुनौती

प्रदेश में कोरोना के मामलों का पता लगाने के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से एक्टिव केस फांइडिंग अभियान चलाया गया, जिसके सकारात्मक परिणाम मिले और इस अभियान की देशभर में प्रशंसा हुई। प्रदेश में कोविड-19 के मामलों में रिकवरी दर 63.81 प्रतिशत तथा मृत्यु दर मात्रा 0.44 प्रतिशत है। इसी दौरान देश के साथ-साथ प्रदेश में भी ई-संजीवनी पोर्टल आरम्भ किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को घर बैठे चिकित्सा परामर्श प्रदान करना था। यह हर्ष की बात है कि हमारे ई-संजीवनी पोर्टल के इस प्रयास को देशभर में तीसरा स्थान मिला है।

अन्य प्रदेशों में कोरोना के बढ़ते मामलों के मद्देनजर प्रदेश सरकार ने मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए लॉकडाउन के कारण देश के दूसरे राज्यों में फंसे प्रदेश के लगभग 2.25 लाख लोगों को घर वापिस लाने का निर्णय लिया। प्रदेशवासियों के व्यापक हितों की रक्षा के लिए यह कदम उठाना आवश्यक था। प्रदेश वापिस आए युवाओं के कौशल मैंपिंग के लिए 'स्किल रजिस्टर' पोर्टल आरम्भ किया गया है, जिससे उन्हें रोजगार के लिए उद्योगों से सीधे जोड़ा जा सकेगा। उनका कौशल विकास भी किया जाएगा। शहरी क्षेत्रों के युवाओं को सुनिश्चित रोजगार मुहैया कराने के लिए मुख्यमंत्री शहरी रोजगार गारण्टी योजना आरम्भ की गई है।

कोविड-19 के कारण जनता से सीधा सम्पर्क बनाए रखने के लिए वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जन समस्याओं का समाधान तथा जन योजनाओं की लगातार समीक्षा की जा रही है। आर्थिक गतिविधियाँ पुनः आरम्भ करने के लिए गठित मंत्रिमण्डलीय उप समिति द्वारा दिए जा रहे सुझावों के अनुसार कार्य किए जा रहे हैं।

कोरोना महामारी के दौरान प्रदेशवासियों ने सरकार द्वारा समय-समय पर दिए गए दिशा-निर्देशों की अनुपालना कर जो सहयोग दिया है, उसके लिए मैं सबका आभार व्यक्त करता हूँ तथा अपील करता हूँ कि कोरोना के संक्रमण से बचाव के लिए सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए मास्क आदि का अवश्य प्रयोग करें। सरकार कोरोना से निपटने के लिए कृतसंकल्प है। सरकार द्वारा सभी आवश्यक कदम उठाए गए हैं और किसी को भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु हमें सचेत और सतर्क रहने की आवश्यकता है।

मैं प्रदेशवासियों को पुनः स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देता हूं तथा सबके स्वस्थ, सुखमय और समृद्ध जीवन की कामना करता हूँ।

जय हिन्द! जय हिमाचल!

मेरा देश

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के 74 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से देशवासियों के नाम अपने संबोधन में स्वतंत्रता दिवस के ऐतिहासिक पलों को नए संकल्पों की ऊर्जा का अवसर बताया। उन्हीं के शब्दों में- ''आजादी का पर्व, हमारे लिए यह स्वतंत्रता का पर्व, आजादी के वीरों को याद कर-करके नए संकल्पों की ऊर्जा का एक अवसर होता है। एक प्रकार से हमारे लिए ये नई प्रेरणा लेकर के आता है, नई उमंग, नया उत्साह लेकर के आता है... और इस बार तो हमारे लिए संकल्प करना बहुत आवश्यक भी है, और बहुत शुभ अवसर भी है क्योंकि अगली बार जब हम आजादी का पर्व मनाएंगे, तब हम 75वें वर्ष में प्रवेश करेंगे। ये अपने-आप में एक बहुत बड़ा अवसर है और इसलिए आज, आने वाले दो साल के लिए बहुत बड़े संकल्प लेकर के हमें चलना है- 130 करोड़ देशवासियों को चलना है। आजादी के 75वें वर्ष में जब प्रवेश करेंगे और आजादी के 75 वर्ष जब पूर्ण होंगे, हम हमारे संकल्पों की पूर्ति को एक महापर्व के रूप में भी मनाएंगे।

सुखद ऐतिहासिक पल

◆ **वेद प्रकाश**

आजादी का मतलब तुम पूछो एक दफा उनसे,
जो तोड़ दिए गुलामी की बेरहम जंजीरें इस दिन।

स्वाधीनता मिली ही जब, गुलामी की लंबी अंधेरी रात को चीरकर स्वाधीनता का सूरज भारत धरा पर अपनी ताजा रश्मियों को बिखेरने लगा। ये कुछ दिनों या महीनों की बात नहीं थी। बरसों का एक लंबा सतत् संघर्ष था। देशवासियों के संकल्प और अनगिनत कुर्बानियों का परिणाम है। अंततोगत्वा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के डूबते सूरज का समय साक्षी बना और भारत को दासता की बेड़ियों से मुक्ति मिली। 15 अगस्त, 1947 का दिन भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया। भारत की स्वाधीनता का अविस्मरणीय दिन। गर्व से मस्तक ऊंचा होने का दिन। स्व के तंत्र के साथ खुली हवाओं में सांस लेने और रहने का दिन। इसके बाद से, देश ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। अतीत की गह्वरों में नहीं खोया। पराधीनता की पीड़ा उसके जख्मों को भुला कर दृढ़ इरादों और संकल्पों के साथ आगे ही बढ़ता गया और भारत आज दुनिया में जहां खड़ा है, वहां अपने मजबूत कदम रखे हुए है। दुनिया भर में एक अलग पहचान के साथ एक अमिट छाप

छोड़ने में कामयाब हुआ है। अपनी समृद्ध संस्कृति, अपनी उन्नत सभ्यता, अपनी सौम्यता और वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत का अग्रगामी है। विश्व की अच्छी सेहत का खयाल रखते हुए योग से रहें निरोग का मंत्र फूंक रहा है। आधुनिक भारत आत्मनिर्भर भारत बनने की दिशा में अग्रसर है। निस्संदेह वह दिन दूर नहीं, जब भारत फिर से विश्व गुरु की भूमिका में होगा।

इसीलिए ....

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के 74 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से देशवासियों के नाम अपने संबोधन में स्वतंत्रता दिवस के ऐतिहासिक पलों को नए संकल्पों की ऊर्जा का अवसर बताया। उन्हीं के शब्दों में- ''आजादी का पर्व, हमारे लिए यह स्वतंत्रता का पर्व, आजादी के वीरों को याद कर-करके नए संकल्पों की ऊर्जा का एक अवसर होता है। एक प्रकार से हमारे लिए ये नई प्रेरणा लेकर के आता है, नई उमंग, नया उत्साह लेकर के आता है. .. और इस बार तो हमारे लिए संकल्प करना बहुत आवश्यक भी है, और बहुत शुभ अवसर भी है क्योंकि अगली बार जब हम आजादी का पर्व मनाएंगे, तब हम 75वें वर्ष में प्रवेश करेंगे। ये अपने-आप में एक बहुत बड़ा अवसर है और इसलिए आज, आने वाले दो साल के लिए बहुत बड़े संकल्प लेकर के हमें चलना है- 130 करोड़ देशवासियों को चलना है। आजादी के 75वें वर्ष में जब प्रवेश करेंगे और आजादी के 75 वर्ष जब पूर्ण होंगे, हम हमारे संकल्पों की पूर्ति को एक महापर्व के रूप में भी मनाएगें।''

आजादी का सुखद अहसास देने वाले ये पल हमें 15 अगस्त 1947 को आजाद भारत के उन अविस्मरणीय क्षणों की याद दिलाते हैं जब हर देशवासी, अपने आपको ऊंची उड़ान भरते पंछी की तरह स्वच्छंद स्वतंत्र महसूस कर रहा था, हर देशवासी के लिए स्वतंत्र भारत का सपना साकार हुआ था।

......''वर्षों पहले हमने नियति के साथ एक वायदा किया था। हमने एक संकल्प लिया था, अब उसे पूरा करने का समय आ गया है। आधी रात के समय जब दुनिया सो रही होगी, भारत स्वतंत्र हो रहा होगा। ऐसा क्षण आता है, मगर इतिहास में विरले ही आता है। जब हम पुराने से बाहर निकल कर नए युग में कदम रखते हैं, जब एक युग समाप्त हो जाता है, जब देश की लंबे समय से दबी हुई आत्मा मुक्त होती है..... । आज एक बार फिर वर्षों के संघर्ष के बाद भारत जागृत और स्वतंत्र है। अतीत बीत चुका है, भविष्य हमें बुला रहा है। भविष्य आराम करने का नहीं बल्कि लगातार प्रयास करने का है ताकि हमने जो प्रण लिए, वो पूरे किए जा सकें।''

देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा आजाद भारत के पहले भाषण के ये कुछ अंश हैं, जो 14 अगस्त 1947 को दिया गया था। स्वतंत्र भारत के इतिहास में दर्ज है कि 14 अगस्त 1947 की रात्रि को 11 बजे संविधान सभा की कार्यवाही शुरु हुई थी, जो 12 बज कर 45 मिनट तक चली। इस दौरान नेहरू ने 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' भाषण दिया जिसे हर देशवासी ने बड़े धैर्य एवं उत्साह के साथ सुना था।

देश के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े अनेक ऐसे किस्से हैं जो आज भी हमें आजादी के ऐतिहासिक क्षणों का स्मरण करवाते हैं। ब्रितानी सरकार ने आजाद भारत का स्वरूप तय करने के लिए इंग्लैंड की संसद में 4 जुलाई 1947 को ' द इंडिपैंडैस एक्ट' प्रस्तुत किया था। इसी विधेयक में भारत के बंटवारे का प्रस्ताव भी रखा गया था। यह विधेयक 18 जुलाई 1947 को पारित हुआ, जिसके तहत अंग्रेजो के भारत छोड़ने और देश की आजादी की तारीख 15 अगस्त 1947 निर्धारित की गई थी। इसी एक्ट के तहत भारत और पाकिस्तान की सीमाएं तय करने के लिए, 'सीमा आयोग' गठित करने का निर्णय लिया गया जिसकी अध्यक्षता सर

15 अगस्त, 1947 का दिन हिमाचल में

15 अगस्त 1947 को जब भारत आजाद हुआ तो स्वतंत्रता दिवस कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल-स्पीति, ऊना, हमीरपुर, डलहौजी और शिमला में धूमधाम से मनाया गया। कांगड़ा में लाला हेमराज वकील, पं. भगत राम, जयलाल नागल, लाला बाशी राम, चौधरी तुलसी राम, कृष्ण चंद पुरी, चौधरी हरी राम, अमरनाथ शर्मा, बख्शी प्रताप सिंह ने स्थान-स्थान पर स्वाधीनता दिवस मनाया। पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को भी यहां बसाने का कार्य किया गया। पालमपुर में लाला जयलाल नागल ने भारी जनसभा की। प्रताप सिंह गुलेरिया ने नगरोटा सूरियां में झंडा लहराया। परागपुर में अमरचंद सूद ने जलूस निकाला। ऊना में बाबा लछमन दास ने दीपमाला की। ढालपुर मैदान कुल्लू में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। 15 अगस्त को भारत के स्वतंत्र होने पर कांगड़ा, ऊना, हमीरपुर, कुल्लू, लाहौल-स्पीति, डलहौजी तथा शिमला शहर स्वतंत्र हुए और उस समय पंजाब प्रांत में सम्मिलित किए गए। शिमला शहर में भी जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान चौधरी दीवान चंद, महामंत्री सालिगराम शर्मा, हरी राम शर्मा, श्याम लाल खन्ना, डॉ. नंद लाल वर्मा, लाला गेंडा मल, दीनानाथ आंधी, सालिगराम गुप्ता, विशेशसर दयाल, मेला राम सूद, आत्मा राम आदि ने तिरंगा लहराया, मिठाइयां बांटी। शिमला शहर में तो खुशियां मनाई गईं।

रेडक्लिफ ने की थी। इसीलिए इंडो-पाक सीमा को रेडक्लिफ लाइन कहा जाता है। भारत आजाद होने के बाद 17 अगस्त 1947 को दोनों देशों की सीमाओं का निर्धारण किया गया। इसी प्रकार देश का बंटवारा होने के बाद ब्रिटिश राज की सेना का भी बंटवारा किया गया। उपलब्ध रिपोर्ट के अनुसार लगभग 2 लाख 60 हजार हिंदु और सिख सैनिक भारतीय सेना का हिस्सा बने जबकि तकरीबन 1 लाख 40 हजार मुस्लिम सैनिक पाकिस्तान के हिस्से में आए। ब्रिटिश राज की गोरखा ब्रिगेड को भारत और ब्रिटेन के बीच बांटा गया। इस पूरी व्यवस्था की प्रकिया को पूर्ण करने के लिए जनरल सर रॉबर्ट लॉकहर्ट भारत के पहले थल सेना अध्यक्ष थे जबकि सर फ्रैंक मेसवीं पाकिस्तान के पहले थल सेनाध्यक्ष थे।

देश की आन बान शान का परिचायक स्वतंत्र भारत का तिरंगा पहली बार 14 अगस्त 1947 को संसद (सेंट्रल हाल) में फहराया गया। अंतिम वायसराय लॉर्ड माऊंटबेटन ने भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारत के संविधान के दस्तावेज सौंपे थे। इस दौरान स्वतंत्रता सेनानी हंसाबेन मेहता ने खादी सिल्क से बना तिरंगा राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद को भेंट किया, जिसे सबसे पहले सैंट्रल हाल में फहराया गया था। इसके अगले ही दिन यानी स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को पंडित जवाहर लाल नेहरू ने दिल्ली में लाल किले से तिरंगा फहराया। भारत का तिरंगा दरअसल इंडियन नेशनल कांग्रेस के स्वराज फ्लैग का ही प्रतिरूप है जिसे स्वतंत्रता सेनानी पिगंली वेंकैया ने डिजाइन किया था। स्वराज तिरंगा पहली बार 1923 में फहराया गया था।

आजाद भारत का प्रथम डाक टिकट भी भारतीय तिरंगे पर जारी किया गया था जिस पर स्वतंत्रता दिवस की तिथि अंकित थी और उस पर जय हिंद लिखा गया था। उस समय भारत में डाक भेजने के लिए टिकट का मूल्य डेढ़ आना तथा विदेश में डाक भेजने के लिए तीन आना तय किया गया था।

विदेशी दासता से भारत को मिली आजादी के साथ बंटवारे का दुखद पहलू जुड़ा है जिससे देश को साम्प्रदायिक दंगों जैसी त्रासदी को भी झेलना पड़ा था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तो इन साम्प्रदायिक दंगों से इतने आहत थे कि वे स्वतंत्रता दिवस के हर्षोल्लासपूर्ण क्षणों के दौरान भी बंगाल के कलकत्ता में हिंदु-मुस्लिम दंगों को रोकने के लिए सद्‌भावना बनाए रखने के कार्य में जुटे हुए थे। आजादी के समय हर कोई देशप्रेम और राष्ट्र भक्ति की भावना से ओतप्रोत नज़र आ रहा था। जिस समय हमारा देश आजाद हुआ, हालांकि उस समय भारत का कोई आधिकारिक राष्ट्रगान घोषित नहीं हुआ था, लेकिन देश के प्रति लोगों की भावनाएं किसी राष्ट्र गान से कम न थीं। देश के आधिकारिक 'जन गण मन' राष्ट्रीय गान को 24 जनवरी 1950 को अपनाया गया जिसे राष्ट्र कवि रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा 1911 में लिखा गया था। भारत के स्वतंत्रता दिवस के रूप में 15 अगस्त की तिथि के चयन के बारे में भी एक रोचक किस्सा जुड़ा है। ब्रिटिश इंडिया के अंतिम वायसराय और स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल लॉर्ड माऊंटबेटन ने भारत को स्वतंत्र करने के लिए 15 अगस्त के दिन का ही चुनाव किया, हालांकि ब्रिटिश पार्लियामैंट ने सत्ता हस्तांतरण के लिए जून 1948 की समय सीमा निर्धारित की थी। लेकिन लॉर्ड माऊंटबेटन ने आजादी के लिए इस समय सीमा से पहले ही 15 अगस्त 1947 की तिथि निर्धारित की, ताकि बंटवारे के कारण साम्प्रदायिक दंगों पर जल्द नियंत्रण पाया जा सके। इसके अलावा माऊंटबेटन इस तिथि को इसलिए भी शुभ मानते थे, क्योंकि दूसरे विश्व युद्ध में 1945 को इसी दिन जापान ने ब्रिटिश सरकार की अलाइड फोर्सिज के समक्ष आत्म समर्पण किया था। 15 अगस्त का दिन भारत के लिए ही नहीं, बल्कि विश्व के पांच अन्य देशों के लिए भी ऐतिहासिक अवसर है जो इसी दिन अपना स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। इन देशों में बेहरान, नोर्थ कोरिया, साऊथ कोरिया, रिपब्लिक आफ कोंगो तथा लिकटेंस्टीन शामिल हैं।

(लेखक पत्रिका के वरिष्ठ संपादक हैं)

कविता

बहुत प्यारा देश मेरा

डॉ. प्रेम लाल गौतम 'शिक्षार्थी'

दिव्य वैदिक ज्ञान से, जिसने मिटाया जग अंधेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

शेष से शत फण फैलाए हेममयी हिम शिखर श्रेणी
किरीट सा उत्तर दिशि में गूंथता घन सघन वेणी
राष्ट्र का यह सजग प्रहरी हिमायल सबका है चितेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

यहीं हमारे पूर्वजों ने वैदिक व लौकिक ज्ञान बांटा
गीता कुरान गुरुग्रंथ रचकर समस्त मानव मूल्य आंका
उस प्रभु की सकल दुनिया छोड़ साजन मेरा-तेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

ध्यातव्य हो इस ज्ञान से ही था हमें जगगुरु बनाया
'सर्वेभवन्तु सुखिनः' का, नाद था सबको सुनाया
परोपकार की मृदुभावना विकास सबका सदा हेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

जगन्नाथ-बद्री-द्वारिका रमणीय रामेश्वर हमारा
समग्रता से भव्यता को जोड़ता है हर किनारा
ये धाम हैं अभिराम भरते भाव का अविरल सवेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

अपनी-अपनी सभ्यता व संस्कृति का रूप अभिनव
मेले उत्सव तीज तीर्थ आयोजनों का हर्ष प्रति पल
संगीत की स्वर लहरियां नाटियों का मधुर घेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

गंगासागर से शुरू है खाड़ी का गंभीर गर्जन
कन्याकुमारी जा के होता त्रय अम्बुधि का नवल सर्जन
प्राची से पश्चिम दिशिः तक लगा पारावार डेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

संदलों के सघन जंगल चाय के फैले बागीचे
मिर्चों-मसालों की यह वसुधा हैं लुभाते ये दलीचे
प्रकृति की अकूत राशि हरित वृक्षों का घनेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

विविध फसलों से सजे हैं दूर तक ये खेत प्यारे
मेष-बकरी-बैल-महिषीचरागाह शिखरों के नजारे
दिन-दुपहरी में कृषक ने निज काम से न मुंह फेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

सर्प सी बलखाती सड़कें शिव पर्वतों को घेरती
बृहद् राजमार्गों की संख्या भ्रमण मति को उकेरती
रेल-वायुयानों ने मिलकर कम किया मीलों का फेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

असंख्य मंदिर और मस्जिद गुरुद्वारों की शोभा न्यारी
अपनी पूजा-पद्धति समृद्ध रीति है हमारी
प्राप्तव्य सबका एक है, एक में सबका बसेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

पहाड़ी उड़िया तमिल तेलगु पंजाबी कन्नड़ भाषाएं प्यारी
हिंदी संस्कृत अंग्रेजी उर्दू डोगरी आदि मधुर न्यारी
कर्णप्रियता सबमें है रूप सबका है सुनहरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

भिन्नता में एकता मेरे राष्ट्र की यह विशेषता
आतिथ्य का भाव उर में स्नेहमयी निर्निमेषिता
सर्वोच्च वसुधैव कुटुंबता भाल पर पहना है सेहरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

'स्वयमेव मृगेन्द्रता' का भाव था हमने जगाया
'वीर भोग्या वसुंधरा' का पाठ था हमने पढ़ाया
'त्रय रंगिणी' सेना हमारी सीमा पर देती है पहरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

सदानीरा गंगा यमुना कावेरी कृष्णा नर्मदा
शतद्रु विपाशा गोमती कल-कल निनादित सर्वदा
उर्वर बनाती देश को धन्य धान्य से भरती बथेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

शक्तिपीठों से सुसज्जित ज्योतिर्लिंग शिवधाम हैं
प्रज्ञान की तल्लीनता तभी तो 'भारत' नाम है
राष्ट्र हो सर्वस्व सबका, यही प्राणाधार मेरा
विविधता का देश मेरा, बहुत प्यारा देश मेरा।

सरस्वती सदन, रबौण, पत्रालय सपरून,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश-173 211

कविता

ये मेरा हिंदुस्तान

शिवेन कुमार 'गैर'

हम सब पूरी शान से कहते
चाहे बूढ़ा हो या जवान
ये मेरा हिंदुस्तान। ये मेरा...

उतना कम है जितना करें
हम इस पर अभियान
ये मेरा हिंदुस्तान! ये मेरा...

जबसे इसपे जन्म लिया है
इसकी ही गुण गाई है
हर पल करेंगे रक्षा इसकी
हमने कसम ये खाई है
इसके खातिर हम दे देंगे
अपनी-अपनी जान
ये मेरा हिंदुस्तान! ये मेरा...

कभी ये राणा, कभी शिवाजी
कभी तिरंगा प्यारा है
हां तिरंगा प्यारा है
हमारे दिल की ऽऽऽऽऽऽऽ
हमारे दिल की है ये धड़कन
हमारा है स्वाभिमान
ये मेरा हिंदुस्तान! ये मेरा...

सुपुत्र श्री तिलक राज, गांव डबरेड़ा, डाकघर डुगली,
तहसील भोरंज, जिला हमीरपुर, 177029,
मो. 0 89884 88307

आलेख

पहाड़ी चित्रकला और मध्यकालीन काव्य

◆ डॉ. तुलसी रमण

पहाड़ी लघुचित्र कला और मध्यकालीन हिंदी काव्य दोनों एक विशेष परिवेश की देन हैं। इस कविता और चित्रकला के माध्यम भिन्न होते हुए भी इनमें गहरे स्तर की सांस्कृतिक एकता है। इन दोनों कला-विधाओं में कथा की मौलिकता से बढ़कर कौशल की प्रमुखता दिखाई देती है। इस तरह जब एक से अधिक कलाएं, एक ही व्यास-रेखा पर समन्वित हो जाती हैं तो वहीं से सौंदर्य बोध का उन्मीलन होता है।

चित्रकला और काव्य कला में सृजन प्रक्रिया, बोध प्रक्रिया शास्त्रीय आधार, कल्पना, अनुकरण और विषयवस्तु के स्तर पर अंतर्संबंध स्पष्ट दिखाई देते हैं। काव्य, चित्र, नाट्य और संगीत आदि कला- विधाओं में तारतम्य स्थापित होता है और इनकी अंतर्निर्भरता स्पष्ट है। प्रत्येक कला में आंशिक रूप से अन्य कलाओं का उपयोग संभव है। एक विधा को बल देने के लिए दूसरी विधा का सहारा भी लिया जा सकता है। काव्य में शब्द प्रधान है, संगीत में स्वर; श्रेष्ठ काव्य में गेयता का उपयोग होता रहा है; यहां तक कि स्वछंद कविता में भी स्वर की लय किसी हद तक रहती ही है, जो उसे गद्य से अलग करती है। चित्रकला की भाषा 'रंग' और 'रेखा' है, साहित्य में शब्द- चित्रों का अपना महत्त्व है। कुछ विचारकों के अनुसार काव्य की सबसे बड़ी शक्ति उसके चित्रों में होती है और ये चित्र कवि की श्रेष्ठता के परिचायक बनते हैं। चित्रात्मकता काव्य का गुण माना गया है। चित्रों से ही काव्य में मूर्ति विधान या बिंब विधान रूप लेता है। उत्कृष्ट शब्द-चित्रों की रचना कवि की कल्पना शक्ति पर निर्भर करती है।

दरअसल, सभी कला-विधाओं में समान तत्त्व सौंदर्य-बोधात्मक अभिव्यंजना है। इसके लिए 'कला' को 'कलाकृति' बनना ही पड़ता है। उसे नाना प्रकार के बाह्य रूप धारण करने पड़ते हैं। नाना माध्यम चुनने होते हैं। मगर रूप की इस भिन्नता में भी तात्त्विक अभिव्यक्ति एक ही रहती है। भारतीय परंपरा में कलाओं की यह परस्पर संबद्धता शास्त्रीय से लेकर लोक कला तक सब जगह रही है। पारंपरिक कलाओं के समवाय का एक श्रेष्ठ उदाहरण पहाड़ी चित्रकला में 'रागमाला' के चित्र हैं। इनमें काव्य, संगीत और चित्र का अद्‌भुत संयोग दृष्टिगोचर होता है। इसमें 'रंग' और 'रेखा' द्वारा 'शब्द' और 'स्वर' का अजब संधान होता है।

आज हम कला की एकल विधा विशेषज्ञता की बात करते हैं। लेकिन यह अपनी युग परंपरा को छोड़कर, आधुनिकता के प्रभाव में सिमट जाने की स्थिति प्रतीत होती है। जबकि हमारी परंपरा में भरत का 'नाट्य शास्त्र' अनेक कलाओं को एक साथ समेटने वाला है। रस, ध्वनि तथा अलंकार आदि सिद्धांत महज काव्य तक सीमित न होकर कई कलाओं तक अपनी पहुंच रखते हैं।

पहाड़ी लघुचित्र कला और मध्यकालीन हिंदी काव्य दोनों एक विशेष परिवेश की देन हैं। इस कविता और चित्रकला के माध्यम भिन्न होते हुए भी इनमें गहरे स्तर की सांस्कृतिक एकता है। इन दोनों कला-विधाओं में कथा की मौलिकता से बढ़कर कौशल की प्रमुखता दिखाई देती है। इस तरह जब एक से अधिक कलाएं, एक ही व्यास-रेखा पर समन्वित हो जाती हैं तो वहीं से सौंदर्य बोध का उन्मीलन होता है।

हिंदी साहित्य का पूर्व मध्यकाल (14वीं शती मध्य से 17वीं शती मध्य तक) साहित्य रचना ही नहीं, अपितु संपूर्ण सांस्कृतिक चेतना, प्रमुख सामाजिक चेष्टा और कलात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'भक्तिकाल' कहा गया है। इस काल के कवियों की प्रतिभा 'भक्ति' की प्रेरणा से ही प्रस्फुटित हुई थी। भक्ति आंदोलन

से पूर्व राजनीतिक अव्यवस्था, उत्पीड़न और असुरक्षा के रहते देश का सामाजिक जीवन विच्छिन्न और क्षीण होता आया था। दक्षिण भारत में आलवार भक्तों का जो भक्ति-मार्ग उत्कर्ष पर था, उसे रामानुज और रामांनद आदि भक्त 12वीं-13वीं शताब्दी में उत्तर भारत तक ले आए थे। इसी के फलस्वरूप तुलसी और सूर जैसे महान कवियों के नेतृत्व में राम-भक्ति और कृष्ण-भक्ति काव्य की रचना के साथ समग्र भक्ति काव्य धारा निकली। इस भक्ति आंदोलन के बहाने उन मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई, जिनमें सामयिक समस्याओं के समाधान के साथ जीवन के शाश्वत सत्य निहित थे। इसमें विविधता और संकीर्णताओं के साथ ऐसी मूलभूत एकता और व्यापकता थी जो मानव मात्र ही नहीं; पशु-पक्षी, कीट-पंतग, जड़- चेतन को भी एक सूत्र में बांधती चलती है। भक्ति धर्म का यह आंदोलन मध्ययुग की सबसे बड़ी घटना रही है। इसी भक्ति काल के कबीर, जायसी, सूर, तुलसी और मीरां आदि भक्त कवि विश्व साहित्य में मान्य हुए।

हिंदी साहित्य का उत्तर मध्य काल (17वीं शती मध्य से 19वीं शती मध्य तक) रीतिकाल कहलाता है। इसमें भक्तिकालीन काव्य धाराओं का विकास भी हुआ; लेकिन रीतिकाल ने एक नई करवट ली और संस्कृत काव्य शास्त्र के अलंकार, रस, शब्द-शक्ति, ध्वनि भेद, नायिका भेद आदि की स्थापनाओं के लिए काव्य रचना का दौर चल पड़ा। दरअसल, भक्ति आंदोलन जन संप्रदायबद्ध होकर कर्मकांड और बाह्याडंबर में ग्रस्त होने लगा तो भक्ति की प्रेरणा भी समाप्त होने लगी थी। इसी के साथ उस दौर के कवि भी कृष्णाश्रय, रामाश्रय और धर्माश्रय छोड़कर राजाओं, सामंतों और बड़े ठाकुरों की शरण खोजने में तत्पर हो गए थे। राधाकृष्ण के आध्यात्मिक रसानंद को इन आश्रयदाताओं के वासनात्मक प्रेम विलास का रूप देने लगे थे। हार्दिक संवेदना और अनुभूति का स्थान वाक् चातुर्य और अलंकरण ने ले लिया था। यह वास्तव में मध्यकाल का उतार था।

वामन की उक्ति 'रीतिरात्मा काव्यस्य' को अपनाते हुए, रीति का अर्थ-प्रणाली यानी पद्धति के अनुसार काव्य रचना करना मान्य हुआ। ऐसा काव्य जो अलंकार, रस, गुण, ध्वनि, नायिका भेद आदि की काव्य प्रणाली पर आधारित हो। इस काव्य रचना के देश-काल की स्थिति को देखते हुए प्रतीत होता है कि सामंती दरबारों की मांग के दृष्टिगत, प्रलोभन में आए तत्कालीन कवि संस्कृत के काव्यालंकार ग्रंथों की ओर उन्मुख हुए, जहां उन्हें अपने उपयोग के लिए पर्याप्त सामग्री मिल गई। रीतिकाल के अधिकांश कवि अपने आश्रयदाता के संरक्षण में रहकर काव्य रचना करते थे। रीतिकाल में कवियों और कलाकारों को मुगल सम्राटों और देसी राजाओं, सामंतों ने एक साथ भरपूर सम्मान और प्रश्रय दिया। इससे काव्य और चित्रकला का सर्जन बढ़ा। दरबारी प्रश्रय के रहते जहां काव्य में प्रशस्तियां लिखी जाने लगीं, वहीं चित्रकला, ऐश्वर्य विलास और वैभव के प्रदर्शन पर केंद्रित हो गई। रीतिकालीन काव्य, संस्कृत के लक्षण या अलंकार साहित्य के अनुकरण की ओर मुड़ा तो तत्कालीन चित्रकला ने भी इसका अनुसरण किया। फलस्वरूप लघुचित्र कला नख-शिख वर्णन, नायिका भेद, 'बारहमासा' और 'रागमाला' आदि के चित्रांकन के साथ भक्ति से रीति में प्रवृत्त होकर शृंगार प्रधान हो गई। भक्ति के आदर्श की अति के बाद अतृप्त की तृप्ति और अलंकरण के संभार आवश्यक हो गए। आध्यात्मिकता हटती गई, ऐंद्रिकता व मांसलता आने लगी। भक्ति व रीति का मानसिक अंतर बढ़ गया। भक्त कवि अपने मानस का दास था, रीति कवि जीविका, धन और ख्याति का दास बन गया।

इस तरह रीतिकाल, समृद्धि और विलासिता के काव्य की प्रमुखता का रहा, भले ही इसमें कुछ रचनाएं वीर काव्य और नीति काव्य की भी हुईं। जबकि इससे पूर्व भक्ति काल साधना का था। लेकिन रीतिकाल में नवाबों, राजाओं, सामंतों की प्रवृत्ति को देखते हुए कविता में कोरी विलासिता साध्य हो गई थी। क्षणभंगुर जीवन में सुखभोग ही लक्ष्य रह गया था। इसीलिए उपासना के पवित्र राम और कृष्ण में भी शृंगार का आरोपण होने लगा था। रीतिकाल के लक्षण मुक्त काव्य में भाषा, भाव, शैली का निखार था।

रीति काल के अधिकांश कवि स्वयं काव्य-शास्त्र के आचार्य भी थे। इनमें प्रमुख केशवदास अलंकार संप्रदाय के अनुयायी थे। मतिराम और देव रस संप्रदाय में प्रवृत्त हुए। इन आचार्य कवियों के साथ बिहारी व मतिराम की सतसई में भी अलंकार व रस से लेकर नायिका भेद तक अनेक अन्य शास्त्रीय सिद्धांत व प्रवृत्तियां हैं।

रीतिकाल में हिंदी कवियों और चित्रकारों को हिंदू और मुस्लिम दोनों दरबारों में पर्याप्त राजाश्रय मिला। यहां तक कि शासकों में कवि और कलाकारों को अपने दरबारों में सजाने की होड़- सी लग गई थी। इस तरह कविता और चित्रकला धंधे के रूप में होने लगी थी। उस काल के राज दरबारों में कवियों और चित्रकारों का सहकार चल पड़ा था।

कला सौंदर्य के लिए विश्व प्रसिद्ध पहाड़ी लघुचित्र कला ने अपनी सुदीर्घ परंपरा में अनेक पीढ़ियों के चित्रकारों और सौंदर्य-शास्त्रियों पर अमिट छाप छोड़ी है। पहाड़ी शासकों के प्रश्रय में 17वीं शती के आरंभ से लेकर 19वीं शताब्दी के अंत तक इस चित्रकला का आंदोलन उत्तर-पश्चिमी पहाड़ों क्षेत्रों में अपने उत्कर्ष पर रहा। जब हम इस कला के इतिहास में झांकते हैं तो पाते हैं कि अपनी 'शबीहों' और शृंगार-चित्रों के रसिक सम्राट, राज्याधिकारी और सामंत, कवियों के साथ इन चित्रकारों के भी इस कदर दीवाने हो गए थे कि उन पर स्वर्ण मुद्राएं बरसाने लगे थे।

दरअसल, मुगलों के आने से एक नए सांस्कृतिक आंदोलन का आरंभ हुआ था। ईरानी उस्ताद चित्रकारों को मुगल दरबार की

चित्रशालाओं में प्रश्रय मिला, तो चित्रकला में विषयवस्तु और तकनीक की नई प्रवृत्तियां आईं। अकबर के दरबार में मध्य एशियाई और हेरात कलम के उस्ताद मौजूद थे और चित्रशालाओं में भारतीय चित्रकारों की मंडलियां जुटी थीं। 'अमीर हम्जा' के किस्से रामायण, महाभारत-नल-दमयंती आदि विषयों का चित्रांकन हुआ था। तभी राजस्थानी और पहाड़ी रजवाड़ों ने भी मुगल शासकों की प्रेरणा से चित्रकला का पोषण शुरू किया। जो युवा राजपूत नीतिगत तरीके से, शाही छत्रछाया में ऊंचे पदों पर रखे जाते थे, वे भी दरबारी संस्कृति के साथ ललित कलाओं से परिचित हो जाते थे। वे जब स्वयं शासक बने तो उन्होंने भी कवियों, कलाकारों को संरक्षण दिया। इस तरह राजपूत शासकों ने अपने राज्यों में, बड़े पैमाने पर मुगल दरबारी संस्कृति और सभ्याचार का अनुकरण किया। इसके फलस्वरूप 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य तक एक विराट लघुचित्र कला आंदोलन पहाड़ी रियासतों के माध्यम से पनपा।

मुगल और राजपूत कला के मिश्रित प्रभाव और स्थानिक विशेषताओं के साथ पहाड़ी स्कूल का अलग अस्तित्व बना। कलाविद आनंद कुमारस्वामी ने पहाड़ी लघुचित्रों की खोज की और सन् 1910 में इलाहाबाद में प्रदर्शनी आयोजित करके, इन पर गंभीरतापूर्वक लिखा भी। उन्होंने प्रथमतया भारतीय चित्रकला की भव्यता को पश्चिम के समक्ष प्रस्तुत किया। कुमारस्वामी ने ही राजपूत शैली के चित्रों की मुगल शैली से अलग पहचान रेखांकित की और इसे राजस्थानी तथा पहाड़ी चित्रकला की श्रेणियों में विभाजित किया। उसके बाद ही ओ.सी. गांगुली, जे.सी. फ्रेंच, डब्ल्यू.जी. आर्चर, एम.एस. रंधावा, मुल्कराज आनंद और कार्ल खंडालावाला आदि ने इस कला को लेकर महत्त्वपूर्ण काम किया। आगे चलकर एन.सी. मेहता, जगदीश मित्तल, डॉ. विश्वचंद्र ओहरी, विजय शर्मा और किशोरी लाल वैद्य आदि ने पहाड़ी चित्रकला के विभिन्न पक्षों पर अंग्रेजी तथा हिंदी में समीक्षात्मक लेखन किया।

उत्तर मुगलकाल में व्याप्त अराजकता और सुरक्षा के कारण शाही चित्रकारों को अन्यत्र आश्रय की तलाश करनी पड़ी। उसी दौर में दिल्ली, लाहौर, अवध के अनेक निष्णात चितेरे 'पहाड़ी राज्यों में आ गए। कालांतर में राजस्थान के जयपुर, मेवाड़, उदयपुर से भी प्रव्रजन करके अनेक चित्रकार पहाड़ी शासकों की शरण में आ गए और यहां के नैसर्गिक सौंदर्य के बीच कला की उड़ानें भरने लगे। मुगल दरबार और हरम की रंगीनियों से निकलकर वे पहाड़ के प्राकृतिक सौंदर्य में वृक्ष, लता-पुष्प, पशु-पक्षी और स्थानिक वास्तुकला आदि के चित्रण में रम गए। पहाड़ी चित्रकला की विभिन्न शैलियों में मुगल और राजपूताना की कई कलमों की परंपरा पुनः जीवित हुई और स्थानिक लोकधारा की कई मौलिकताएं भी इसमें शामिल होती रहीं। राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम, नायक- नायिका के भाव चित्रण, पौराणिक आख्यान, रागमाला और बारहमासा आदि इन चित्रों के मुख्य विषय बने रहे। मगर मुगल कला में सधी कलम से, भोग-विलास प्रधान विषयों का जो महीन काम होता था, पहाड़ी चित्रकला उससे भिन्न दिखाई देने लगी। इसके रूमानी चित्र भी मानवीय संवेदना और अनुभूतियों का अहसास दिलाते हुए, कहीं अध्यात्म को छूने वाले भी रहे हैं। इस चित्रकला में राधा का महाभावपरक आदर्श शिरोधार्य है और दुर्गा तथा पार्वती भी अपने-अपने प्रसंगों में मौजूद है। नारी की शोभा, सुकुमारता तथा शक्ति का त्रिक् सभी दिशाओं में परिव्याप्त है। पीतांबर और मोर-मुकुटधारी कृष्ण कन्हैया धीर ललित और धीरोद्धत नायक हैं।

पहाड़ी चित्रकला का बहुविध भूगोल जम्मू, हिमाचल प्रदेश और गढ़वाल में फैला है। इसका सर्वाधिक विस्तार हिमाचल प्रदेश में है, जहां इस कला की लगभग छह-सात शैलियां अपनी पहचान बनाती हैं। जम्मू से टिहरी-गढ़वाल और पठानकोट से कुल्लू तक लगभग 15 हजार वर्गमील के क्षेत्र में नूरपुर, बसोहली, चंबा, गुलेर, कांगड़ा, मंडी, बिलासपुर और गढ़वाल आदि चित्र-शैलियों की पृथक् विशेषताएं व पहचान उभरी है। दरअसल ये शैलियां विभिन्न राज दरबारों में आश्रित कलाकारों के घरानों के माध्यम से इजाद हुई हैं। कवियों की परंपरा और चित्रकारों-संगीतकारों के घराने उस दौर के राज दरबारों की शोभा बढ़ाते थे। इन विधाओं के विद्वानों का भी सम्मान होता था।

पहाड़ी चित्रकला की विषयवस्तु में धार्मिक और पौराणिक आख्यानों के अतिरिक्त देवी-देवताओं के रूप-ध्यान का बहुलता में चित्रांकन हुआ है। श्रीमद्भागवत् के 'रास पंचाध्यायी' प्रसंग में कृष्ण और गोपियों की शृंगार क्रीड़ाओं का वर्णन है। 'रुक्मिणी मंगल' और 'उषा चरित' के कथा प्रसंगों में शृंगार की झलकें हैं। कृष्ण की प्रियतमा राधा की परिकल्पना और शृंगार का सुंदर संयोग महाकवि जयदेव के 'गीत गोविंद' में है। जयदेव और मैथिल कवि विद्यापति द्वारा राधा-कृष्ण की दिव्य छवि का आलंबन लेकर जो काव्य रचना हुई, उसकी प्रेरणा से अनेक मध्यकालीन हिंदी कवियों ने काव्य रचना की। सूरदास और नंददास जैसे वैष्णव भक्त कवियों ने राधा- कृष्ण के प्रेम पर आधारित शृंगार के 'संयोग' और 'वियोग' पक्षों का जो वर्णन किया, रीतिकालीन कवियों ने अपने नज़रिए से इस प्रेम विषय का उपयोग किया।

भारतीय काव्य परंपरा में लोकगीतों से लेकर संस्कृत व प्राकृत काव्य में भी शृंगार का विशेष स्थान रहा है। हाल कवि की 5वीं शती की प्राकृत रचना 'गाथा सप्तशती' से लेकर भर्तृहरि का 'शृंगार शतक' और अमरू का 'अमरूक शतक' लोकप्रिय शृंगार ग्रंथ हैं। 15वीं सदी में रचित भानुदत्त का नायिका भेद विषयक काव्य ग्रंथ 'रसमंजरी' है तो इसी क्रम में केशवदास ने रसिकप्रिया की रचना की है। इनसे प्रेरणा पाकर अधिकांश रीति कवियों ने

नायिका भेद और नख-शिख वर्णन विषयक अतिरंजित शृंगार की काव्य रचना की। इन विषयों के चित्रांकन के साथ भाव-विभोरकारिणी 'रागमाला' और प्रकृति चित्रण संपन्न 'बारहमासा' के अंकन में पहाड़ी चित्रकला का सौंदर्य लोक है।

'रसिकप्रिया' ग्रंथ पर पहाड़ी शैली में अनेक चित्रों का अंकन हुआ है। बिलासपुर के कला मर्मज्ञ राजा देवीचंद ने 'रसिकप्रिया' ग्रंथ की एक विशेष प्रति तैयार करवाई थी, जिसकी टीका उन्होंने स्वयं लिखी थी। मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा पुरस्कृत सुंदर कविराय के नायिका-भेद विषयक काव्यग्रंथ पर गुलेर के चितेरों ने मंडी दरबार के लिए एक बृहद् चित्रशृंखला तैयार की थी। औरंगजेब के शासनकाल के चर्चित कवि कालिदास त्रिवेदी के 'वारवधू विनोद' काव्य पर कांगड़ा शैली में अनेक चित्रांकन हुए हैं।

पहाड़ी राज्यों में ब्रजभाषा के कई कवि राजाश्रय प्राप्त करते रहे हैं। चंबा के राजा छतर सिंह के शासनकाल में अर्जुन कवि राजाश्रित था। उसका पुत्र उत्तम भी प्रतिभाशाली कवि था, जिसने 1703 ई. में गुलेर राज्य के इतिहास का 'दिलीप रंजनी' काव्य में वर्णन किया और राजा दिलीप से उपहार और पुरस्कार प्राप्त किए। दशम गुरु गोविंद सिंह स्वयं ब्रजभाषा के कवि थे। पांवटा साहिब में उनके दरबार में 52 कवि एकत्र हुए थे। सिख शासक और सामंत भी ब्रजभाषा काव्य के गुण ग्राहक थे। रीति कवि 'ग्वाल' सिख सामंत देसा सिंह मजीठिया का आश्रित कवि था। उसके उत्तराधिकारी लहणा सिंह को महाराजा रणजीत सिंह ने पहाड़ी राज्यों का गवर्नर नियुक्त किया था। लहणा सिंह के माध्यम से ग्वाल कवि को लाहौर दरबार में आश्रय मिला था। वहां उसने 'हमीर हठ' नामक वीररस प्रधान काव्य की रचना की। इस काव्य पर कांगड़ा के चितेरों ने चित्र शृंखलाएं तैयार कीं। ऐसी एक चित्रकला भूरिसिंह संग्रहालय चंबा में संरक्षित है। ग्वाल कवि ने मंडी नरेश बलवीर सेन की शान में 'बलवीर विलास' काव्य की रचना की और सेन राजा ने पुरस्कार में उसे एक ग्राम भूमि व मकान प्रदान किया।

कविवर बिहारी ने अपनी 'सप्तसई' के एक दोहे में 'गोवर्धन धारण' जैसे प्रसंग को दर्शाया है, जिस पर सुंदर चित्रांकन हुआ है। क्योंकि उसमें 'परकीया राधा' के प्रति कृष्ण के प्रेम को अद्‌भुत ढंग से प्रकट किया गया है। लेकिन बिहारी रीतिकाल के ऐसे समर्थ कवि हुए हैं जिन्होंने समाजबोध की दृष्टि से भी सार्थक और महत्त्वपूर्ण रचना की है। महाराजा जयसिंह जब नवविवाहिता रानी के साथ महल में मुग्ध पड़े थे, उस काल में प्रजा बहुत दुखी थी। तब बिहारी ने ये दोहा लिखकर महाराजा के पास पहुंचाया था --

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल
अली कली ही सो बिंध्यो, आगे कौन हवाल।

कवि ने इस युक्ति से राजा को उसका दायित्व बोध कराया, मगर इस दोहे का चित्रांकन सामने नहीं आया है।

भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में अष्टनायिका का विवेचन किया है। संस्कृत और हिंदी के आचार्यों ने भी उन्हें मान्यता दी। रीतिकालीन हिंदी कवियों ने 'नायिका-भेद' विषय पर काव्य रचना हेतु संस्कृत साहित्य से प्रेरणा ली। यह 'नायिका भेद' कांगड़ा घाटी के चित्रकारों का प्रिय विषय रहा है। अधिकांश नायिकाओं के चित्र रीति काव्य ग्रंथों के आधार पर रचे गए हैं। रीति कवियों ने नायिकाओं के असंख्य भेद वर्णित किए हैं। परंतु अष्टनायिका में ये आठ भेद ही मान्य हैं - स्वाधीन पतिका, विरहोत्कंठिता, विप्रलब्धा, प्रोषित पतिका, वासक सज्जा, कलहांतरिता, खंडिता और अभिसारिका।

भारतीय परंपरा में ऋतुवर्णन काव्य का विषय रहा है। संस्कृत तथा हिंदी में ऋतु काव्य पर्याप्त मिलता है। लोक में 'बारहमासा' का वर्णन/गायन विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों में आज भी होता है। पहाड़ी चित्रकला में 'ऋतु चित्रण' के रूप में भी शृंगारित वातावरण की अभिव्यक्ति मिलती है। चैत्र व फागुन के चित्र केशवदास कृत 'कविप्रिया' के कवित्त पर आधारित हैं। ये चित्र 'बारहमासा' शृंखला के कहलाते हैं। रामायण, महाभारत, दुर्गासप्तशती, शिवपुराण आदि पर आधारित चित्रावलियां हैं। तंत्रोक्त महाविद्या और विष्णु के दशावतार तथा 'किरातार्जुनीयम्' आदि का भी चित्रांकन हुआ है। सोहनी-महीवाल, लैला-मजनूं, लाज बहादुर-रूपमती, ससी-पुन्नू की गाथाओं को भी पहाड़ी चितेरों ने अपने चित्रों का विषय बनाया है। राजाओं, रानियों, वजीरों, राज गुरुओं और महत्त्वपूर्ण वहवारियों के 'शबीह' यानी व्यक्ति चित्रों की रचना में भी पहाड़ी चित्र भी निष्णात रहे हैं। धार्मिक, पौराणिक साहित्य में दृष्टांत चित्रण (इलेस्ट्रेशन) भी होता रहा है और हस्तलिखित पांडुलिपियां पहाड़ी लघुचित्रों से सृजित मिलती हैं।

कलाविद् आनंद कुमारस्वामी ने कहा है कि "भारतीय चित्रकला के विद्यार्थियों के लिए हिंदी के रीतिकालीन काव्य ग्रंथों का बहुत महत्त्व है, ताकि वे चित्रों में निहित अर्थ और उनके सौंदर्यपरक गुणों का मूल्यांकन कर सकें। इससे कला आलोचकों को भी विदित होता है कि चित्रकार किस प्रकार से काव्य में वर्णित साहित्यिक भाव-अभिव्यंजनाओं से भली-भांति परिचित थे, जिससे वे चित्रांकन में काव्यानुशासन का कुशलता से निर्वाह कर सके।"

यह बात भी उल्लेखनीय है कि कला की अपेक्षा काव्य की मान्यता उच्चभूमि पर है। श्रुति वाक्य है -- 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभू।' कवि द्रष्टा है, इसलिए 'कविरेव प्रजापति' कहा गया है। कवि परिभूः - अर्थात् अनुभूति के क्षेत्र में सब कुछ समेटने वाला है। कवि स्वयंभू-अर्थात् अनुभूति के लिए किसी का ऋणी नहीं रहता। इस दृष्टि से भी कवि मार्ग-निर्देशक और कलाकार अनुयायी प्रतीत होता है। पारंपरिक पहाड़ी चित्रकला में यह बात घटित होती दिखाई देती है।

वास्तव में रीति काव्य की कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो चित्रांकन में सहायक सिद्ध होती हैं। नायक-नायिकाओं के अंग-प्रत्यंग की रूप माधुरी का रोचक उपमानों सहित इस काव्य में सजीव चित्रण हुआ है। सुकुमार भावों और ललित चेष्टाओं की सुंदर अभिव्यंजना है और मनोभावों का हृदयग्राही सूक्ष्म चित्रण है। यौवन और किशोरावस्था का वर्णन प्रमुखता से हुआ है। ये सारी विशेषताएं चित्रांकन के लिए प्रेरणादायी और निर्देशक साबित होती हैं। लेकिन दूसरी और 'यह कहना भी असंगत न होगा कि मध्य युगीन हिंदी काव्य का अध्ययन उस काल के चित्रों के बिना अधूरा और अपरिपक्व रहता है। क्योंकि कवि जो लिखता या कहता है, चित्रकार उसे अंकित करता है। इतना ही नहीं, अनेक बार चित्रकार जो अंकित करता था, उसे कवि की वाणी कविता में अनूदित कर देती थी। कविता के अनेक स्थल, जिनके अर्थ विवादास्पद हैं, इन चित्रों की सहायता से स्पष्ट हो सकते हैं।' (रायकृष्ण दास) कवि और चित्रकार की इस जुगलबंदी में 'कई बार चित्रकार की कलम कवि की कल्पना से ऊंची उड़ान भरती प्रतीत होती है। साधारण काव्य भाव में भी चित्रकार प्राण फूंकते हैं जो कभी उच्चकोटि के काव्य-भाव में भी सफल नहीं हो पाए हैं।'

कविता और कला की इस जुगलबंदी को लेकर कुछ ऐसी उक्तियां भी निकली हैं कि - 'चित्र वह कविता है, जिसे हम सुनते नहीं, देखते हैं, और कविता वह चित्र है, जिसे हम देखते नहीं, सुनते हैं।' कलाओं का यह मेल मध्यकाल में ही संभव हुआ था। जहां भक्ति और रीति काव्य एक ओर संस्कृत वाङ्मय का अनुकर्ता है तो दूसरी ओर चित्रकला और संगीत सौंदर्य की अभिव्यंजना कर रहा है। इसमें एक ओर इस्लामी प्रभाव गहराया है तो दूसरी तरफ विशाल हिंदू परंपरा है। इस बीच काव्य, संगीत और चित्र की कला धाराएं तत्कालीन जीवन के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं से भी जुड़ी हैं। यह मध्यकाल भक्तिधारा के माध्यम से उत्तर भारत को दक्षिण की परंपराओं से भी जोड़ देता है।

पहाड़ी चित्रकला का सामंती दरबारों से लेकर आम जनजीवन तक व्यापक प्रचलन हो गया था। अपने देशकाल में कई चित्रकार इतने लोकप्रिय थे कि नूरपुर के गोलू नामक पहाड़ी कलाकार के नाम से एक वार्षिक मेला -'गोलू की जातर' शुरू हो गया था। नूरपुर में प्रतिवर्ष 8 आषाढ़ को आज भी यह मेला जुटता है। इस कला का विस्तार चंबा रूमाल, पंखों, बर्तनों व वस्त्रों आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं में भी हो गया है।

पहाड़ी लघुचित्र कला के अनूठे चित्र आज भी देश-विदेश के संग्रहालयों की अमूल्य निधियों में शामिल हैं। कला की वैश्विक चर्चा में भारतीय कला के संदर्भ में इस कला शैली का उल्लेख होता है। हिमाचल प्रदेश में इस पारंपरिक कला को नए सिरे से प्रचलन में लाने के प्रयास हुए हैं। चित्रकार और कला अध्येता पद्मश्री विजय शर्मा के नेतृत्व में ही पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय काम हुआ है। युवा चित्रकारों की एक पीढ़ी उनके निर्देशन में तैयार हुई है और असंख्य चित्र रचे गए हैं। पहाड़ी चित्रकला ने अनेक पीढ़ियों के कवियों और चित्रकारों पर अमिट छाप छोड़ी है। प्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन ने 'कांगड़ा कलम' को अपनी कविता का विषय बनाया है -

ललित कांगड़ा कलम कलित के
रसिक सुजान चलाने वालो !
देख तुम्हारी रेखाओं में
जो चिकनाहट, चटक सफाई
घेर, घुमाव, कसाव, ढलावट
लोच, लटक, बल मोड़ निकाई
सोच नहीं पाता हूं कितनी
सहलाई होगी जीवन की
काया तुमने, भर हाथों में प्यार
कला के नाम निहालो !

दयार, दुर्गा कॉलोनी, ढली, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171 012, मो. 0 94180 86986

कविता और कला की इस जुगलबंदी को लेकर कुछ ऐसी उक्तियां भी निकली हैं कि - 'चित्र वह कविता है, जिसे हम सुनते नहीं, देखते हैं, और कविता वह चित्र है, जिसे हम देखते नहीं, सुनते हैं।' कलाओं का यह मेल मध्यकाल में ही संभव हुआ था। जहां भक्ति और रीति काव्य एक ओर संस्कृत वाङ्मय का अनुकर्ता है तो दूसरी ओर चित्रकला और संगीत सौंदर्य की अभिव्यंजना कर रहा है। इसमें एक ओर इस्लामी प्रभाव गहराया है तो दूसरी तरफ विशाल हिंदू परंपरा है। इस बीच काव्य, संगीत और चित्र की कला धाराएं तत्कालीन जीवन के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं से भी जुड़ी हैं। यह मध्यकाल भक्तिधारा के माध्यम से उत्तर भारत को दक्षिण की परंपराओं से भी जोड़ देता है।

डॉ. परमार जयंती पर विशेष

समृद्ध हिमाचल का शिल्पकार

◆ **योगेश शर्मा**

'आज हम अपने अहद के खाके बनाकर छोड़ जाएंगे
देखना कल हमारे बाद इनमें कोई रंग भर ही देगा'

ये बानगी भर है उस युग पुरुष, योगी, दार्शनिक एवं दूर द्रष्टा की, जिसने पहाड़ों की भोली-भाली, कम साक्षर व भौगोलिक परिस्थितियों से जूझ रही जनता को विकास के सपने दिखाए ही नहीं, बल्कि उनका पूरा ताना-बाना बुन कर भविष्य की राह पर अग्रसर भी किया। वह हिमाचल निर्माता डॉ. यशवंत सिंह परमार ही थे, जिन्होंने एल.एल.बी. व पी.एच-डी. होने के बावजूद धन-दौलत या उच्च पदों का लोभ नहीं किया, बल्कि सर्वस्व प्रदेशवासियों को पहाड़ी होने का गौरव दिलाने में न्योछावर कर दिया। डॉ. परमार हिमाचल की राजनीति के पुरोधा व प्रथम मुख्यमंत्री ही नहीं, बल्कि वह एक राजनेता से कहीं बढ़कर जननायक व दार्शनिक भी थे, जिनकी तब की दूरदर्शी सोच पर आज प्रदेश फल-फूल रहा है।

विश्व भर में अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात आधुनिक हिमाचल प्रदेश की नींव एक ऐसे शख्स ने रखी थी, जिसकी जीवन भर की पूंजी नैतिकता और ईमानदारी थी। समूची दुनिया उस शख्सियत को हिमाचल निर्माता डॉ. वाईएस परमार के नाम से जानती है। समय के वर्तमान दौर में जब राजनेता करोड़ों-अरबों की संपत्ति के मालिक हैं, हिमाचल निर्माता ने जब संसार छोड़ा तो उनके खाते में महज 563 रुपए तीस पैसे थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. वाईएस परमार का सारा जीवन ईमानदारी से गुजरा और उन्होंने अपने लिए कोई संपत्ति नहीं बनाई। समूचा प्रदेश डॉ. परमार का सदैव ऋणी रहेगा जिन्होंने पूरा जीवन इस पहाड़ी प्रदेश को समर्पित कर दिया।

हिमाचल की राजधानी शिमला के ऐतिहासिक रिज मैदान पर स्थापित प्रतिमाएं सबका ध्यान अपनी तरफ खींचती हैं। इन प्रतिमाओं में एक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और एक प्रतिमा पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की है। एक अन्य प्रतिमा अलग से स्थापित है, जिसके नीचे लिखे हैं ये शब्द- हिमाचल निर्माता डॉ. वाईएस परमार के ये शब्द सभी को जिज्ञासा से भरते होंगे।

अविस्मरणीय यादें

डॉ. परमार ने पहाड़ों के विकास का खाका तैयार किया है और उनका जीवन आज भी उनके चहेतों के बीच जिंदा है। डॉ. परमार को चाय और छोले पूरी खाना बेहद पसंद था। इसलिए जब भी वह सिरमौर से शिमला जा आते या फिर शिमला से सिरमौर जाते हुए सोलन रुकते थे, तो वह सोलन बस स्टैंड पर उस समय एक छोटी सी दुकान जिसका नाम प्रेमजीस हुआ करता था, वहां पर अकसर बैठा करते थे। भले ही आज डॉ. यशवंत सिंह परमार हमारे बीच में नहीं है, लेकिन उनके चहेतों के दिलों में आज भी उनकी यादें मौजूद हैं। सोलन के प्रेमचंद शर्मा बताते हैं कि जितने बड़े आदमी डॉ. यशवंत सिंह परमार थे, उनके बारे में बात भी करना या उनके बारे में कुछ भी बोलना अपनी ही हैसियत से बड़ा लगता है। उन्होंने बताया कि आज भी जब उनकी याद आती है तो मन उल्लास से भर जाता है। प्रेमचंद कहते हैं कि आज अगर वह हमारे बीच होते तो हिमाचल में ऐसा विकास होता जो कभी सोच भी नहीं सकते।

प्रेमचंद शर्मा ने बताया कि जब वह डॉ. परमार से मिले तो वह बहुत कम आयु के थे उनकी उम्र उस समय लगभग 20 से 25 साल की रही होगी, लेकिन डॉ. परमार का मार्गदर्शन उन्हें मिलता था। उन्होंने बताया कि एक बार जब वह शिमला उनसे मिलने गए तो दफ्तरों में बैठने और ना ही पानी पीने की सुविधा होती थी। डॉ. परमार के शब्द आज भी गूंजते है कानों में प्रेमचंद शर्मा ने बताया कि जब भी डॉ. परमार गांव जाते थे या फिर सोलन में रुकते थे तो वह हमेशा उनकी दुकान पर चाय और पूरी का नाश्ता किया करते थे। एक बार की बात है जब उन्होंने चाय और पूरी के पैसे लेने से मना किया तो डॉ. परमार खड़े होकर कहने लगे कि प्रेम तुम मेरा दुकान में आने का रास्ता बंद कर रहे हो।

हिमाचल निर्माता के जीवन के बहुत से ऐसे अनछुए पहलू हैं जिनसे आज की पीढ़ी को रू-ब-रू होना जरूरी है।

ऊंची शिक्षा हासिल की, लेकिन जुड़े रहे जमीन से

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. वाईएस परमार कुशल राजनेता के साथ-साथ कला व साहित्य प्रेमी भी थे। हिंदी, अंग्रेजी व उर्दू भाषाओं पर कमाल का अधिकार रखने वाले डॉ. परमार हमेशा जमीन से जुड़े ठेठ पहाड़ी ही बने रहना पसंद करते थे। सिरमौर के अति दुर्गम व पिछड़े गांव चन्हालग में जन्मे परमार ने सारी उम्र परंपरागत पहाड़ी परिधान लोइया व सुथणु आदि ही पहना। उनका जन्म 4 अगस्त 1906 को सिरमौर जिला की पच्छाद तहसील के गांव चन्हालग में शिवानंद सिंह के घर हुआ था। परमार की शिक्षा लखनऊ व लाहौर में हुई। उन्होंने वर्ष 1926 में लाहौर से बीए आनर्स की परीक्षा पास की। लखनऊ से उन्होंने एमए के साथ एलएलबी की डिग्री हासिल की। लखनऊ से ही परमार ने पीएचडी की डिग्री ली और बाद में हिमाचल यूनिवर्सिटी से डॉक्टर ऑफ लॉ भी बने। वे देहरादून में थियोसॉफिकल सोसायटी के सदस्य भी रहे। गुलाम भारत में रियासती समय में डॉ. परमार 1930 में सिरमौर रियासत के जज बने। सात साल तक न्यायाधीश के तौर पर काम किया। बाद में डिस्ट्रिक्ट व सेशन जज बने और 1941 तक इस पद पर रहे।

आज भी दुकान में परमार जी के साथ लगाए ठहाके आते हैं याद

प्रेमचंद शर्मा ने एक वाक्य याद करते हुए बताया कि एक बार की बात है जब डॉ. परमार अपने गांव सिरमौर जा रहे थे तो बस ओल्ड बस स्टैंड पर खड़ी थी और डॉ. परमार उनकी दुकान पर चाय पीने के लिए आ गए, उस समय प्रेमचंद शर्मा ने कहा कि डॉ. परमार मैं आपका सामान फ्रंट सीट पर रख देता हूं तो डॉ. परमार जोर -जोर से ठहाका लगाकर हंसने लगे।

हमेशा करते थे हिमाचल के विकास की बातें

साहित्यकार मदन हिमाचली ने डॉ. परमार जी के साथ बिताए समय को याद करते हुए बताया कि जब भी वह परमार साहब से मिले तब-तब वह हमेशा हिमाचल के लोगों की विकास की बातें किया करते थे। वह कहते थे कि जिस तरह से बड़े-बड़े शहरों में हर सुविधा हर व्यक्ति को मिलती है, उसी तरह हर सुविधा हिमाचल के हर एक गांव में मिले। प्रेमचंद शर्मा ने कहा कि डॉ. परमार हमेशा 100 साल आगे की सोच रखते थे, हिमाचल का आदमी भी हर सूबे की तरह हर चीज में आगे रहे यह डॉक्टर परमार की सोच हुआ करती थी।

प्रजामंडल आंदोलन के क्रांतिकारियों का समर्थन

हिमाचल में राजशाही के खिलाफ प्रजामंडल आंदोलन शुरू हुआ। इस आंदोलन के क्रांतिकारियों पर झूठे मामले बनाए जाने लगे तो परमार से रहा न गया। ये मामले डॉ. परमार की अदालत में आए तो उन्होंने आंदोलनकारियों के हक में फैसले देना शुरू किया। परमार की यह बात सिरमौर रियासत के राजाओं को नागवार गुजरी। राजाओं की नाराजगी देखते हुए परमार ने खुद ही न्यायाधीश के पद से इस्तीफा दे दिया और खुलकर राजशाही के खिलाफ बोलने लगे। प्रजामंडल आंदोलन के सफल होने के बाद डॉ. परमार वर्ष 1948 से 1952 तक अखिल भारतीय कांग्रेस

कमेटी के सदस्य रहे।

हिमाचल निर्माता के साथ राज्य के पहले सीएम थे परमार

डॉ. परमार 3 मार्च 1952 से 31 अक्तूबर 1956 तक हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। वर्ष 1956 में जब हिमाचल यूनियन टेरेटोरियल बना तो परमार 1956 से 1963 तक संसद सदस्य रहे। हिमाचल विधानसभा गठित होने के बाद वे जुलाई 1963 में फिर से मुख्यमंत्री बने। परमार ने ही पंजाब में शामिल कांगड़ा व शिमला के कुछ इलाकों को हिमाचल में शामिल करवाने में अहम भूमिका निभाई थी।

जल-जंगल-जमीन के थे पैरोकार

पर्यावरण की जिस चिंता में आज देश-प्रदेश ही नहीं पूरा विश्व डूबा है, उस कर्मयोद्धा ने इसकी आहट को दशकों पहले ही सुन लिया था। एक भाषण में उन्होंने कहा था '.. वन हमारी बहुत बड़ी संपदा है, सरमाया है। इनकी हिफाजत हर हिमाचली को हर हाल मे करनी है, नंगे पहाड़ों को हमें हरियाली की चादर ओढ़ाने का संकल्प लेना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को एक पौधा लगाना होगा और पौधे ऐसे हों जो पशुओं को चारा दें, उनसे बालन मिले और बड़े होकर इमारती लकड़ी के साथ आमदनी भी दें। एक मंत्र और सुन लें केवल पौधा लगाने से कुछ नहीं होगा, उसे पालना व संभालना होगा। वनों के त्रिस्तरीय उपयोग को लेकर परमार का कहना था कि कतारों में लगाए इमारती लकड़ी के जंगल प्रदेश के फिक्स डिपोजिट होंगे। बाग-बगीचे लगाकर हम तो संपन्न हो सकते हैं, लेकिन वानिकी से पूरे प्रदेश मे संपन्नता आएगी।"

परमार की ही देन है पूर्ण राज्य का दर्जा और आधुनिक हिमाचल

जनवरी 1971 में हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और इसमें डॉ. वाईएस परमार का बड़ा योगदान था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने शिमला के रिज मैदान पर 25 जनवरी 1971 को हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की घोषणा की थी। बाद में परमार ने वर्ष 1977 में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। परमार ने एक महत्वपूर्ण पुस्तक 'पोलीएंड्री एन हिमाचल' भी लिखी थी। भारत सरकार ने डॉ. परमार पर डाक टिकट भी जारी किया था। डॉ. परमार का हिमाचल के विकास को लेकर विजन बिलकुल स्पष्ट था। वे पूरे प्रदेश में प्राथमिकता के आधार पर सड़कों का जाल बिछाने की मुहिम में जुटे थे। वे सड़कों को पहाड़ के निवासियों की भाग्य रेखा कहते थे। डॉ. वाईएस परमार की जयंती पर हिमाचल में साहित्यिक आयोजन नियमित रूप से होते हैं। डॉ. परमार के नाम पर हिमाचल के सोलन जिला में बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी भी है।

पहाड़ों की भाग्यरेखा सिर्फ पहाड़ी ही बदल सकता है....

कहा जाता है कि पहाड़ का विकास पहाड़ी ही कर सकता है, डॉ. यशवंत सिंह परमार ने ना केवल इस कहावत को पूरा किया अपितु देश को हिमाचल की विशुद्ध पहाड़ी संस्कृति से रू-ब-रू भी करवाया। डॉ. परमार के सपनों का हिमाचल एक ऐसा आधुनिक हिमाचल था जहां लोग शिक्षित व संपन्न हों, आवागमन के अच्छे साधन हों और देश के मानचित्र पर हिमाचल का एक अलग नाम हो। डॉ. परमार ने हिमाचल की आबोहवा के अनुरूप यहां बागवानी को विस्तृत फलक प्रदान किया। आज सेब से लदे बगीचे, नदियों पर जल विद्युत परियोजनाएं, गांव गांव तक सड़कों का जाल, ज्ञान की अलख जगाते शिक्षा के मंदिर सब कृतज्ञ होकर डॉ. परमार को जीवंत श्रद्धांजलि दे रहे हैं। डॉ. परमार बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, कुशल प्रशासक एवं राजनीतिज्ञ, प्रखर वक्ता, विधिवेता और हर हिमाचली के प्रिय ईमानदार राजनेता थे। उन्होंने आदर्श विधायी परंपरा के उदाहरण प्रस्तुत किए, 8 पुस्तकें भी लिखीं। डॉ. परमार एक व्यक्ति नहीं अपितु संस्था थे, उनमें जन-जन को साथ लेकर चलने की अद्‌भुत क्षमता थी। इस अजीमो-शान-शख्सियत ने उन ऊंचाइयों को छुआ जहां तक बिरले ही पहुंच पाते है। 2 मई 1981 को नियति के क्रूर हाथों ने डॉ. परमार को हमसे छीन लिया और डॉ. परमार हमारे लिए छोड़ गए जीवंत, सशक्त एवं आत्मनिर्भर हिमाचल।

गांव व डाकघर चौशा, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन,
हिमाचल प्रदेश-173 234, मो. 0 94597 27349

संदर्भ....

1. प्रेमचंद शर्मा (मालिक प्रेमजीस होटल जहां डॉ. परमार चाय और छोले पूरी खाते थे।)
2. मदन हिमाचली (साहित्यकार जिन्होंने डॉ. परमार के सानिध्य में 1968 से 1977 तक काम किया है।)

कहा जाता है कि पहाड़ का विकास पहाड़ी ही कर सकता है। डॉ. यशवंत सिंह परमार ने ना केवल इस कहावत को पूरा किया अपितु देश को हिमाचल की विशुद्ध पहाड़ी संस्कृति से रू-ब-रू भी करवाया। डॉ. परमार के सपनों का हिमाचल एक ऐसा आधुनिक हिमाचल था जहां लोग शिक्षित व संपन्न हों, आवागमन के अच्छे साधन हों और देश के मानचित्र पर हिमाचल का एक अलग नाम हो। डॉ. परमार बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, कुशल प्रशासक एवं राजनीतिज्ञ, प्रखर वक्ता, विधिवेत्ता और हर हिमाचली के प्रिय ईमानदार राजनेता थे। उन्होंने आदर्श विधायी परंपरा के उदाहरण प्रस्तुत किए, 8 पुस्तकें भी लिखीं। डॉ. परमार एक व्यक्ति नहीं अपितु संस्था थे, उनमें जन-जन को साथ लेकर चलने की अद्‌भुत क्षमता थी।

आलेख

हिमाचल की पहाड़ी भाषा-बोलियों के पैरोकार

पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम

◆ उमा ठाकुर

पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम देश के अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी तथा क्रांतिकारी साहित्यकार थे। उनका जन्म 11 जुलाई 1882 को डाडासीबा के गुरनबाड़ में हुआ था। उनके पिता का नाम लखनु राम और माता का नाम रेवती देवी था। जलियांवाला बाग हत्याकांड के उपरांत उन्होंने महात्मा गाँधी के संदेश को कविताओं व गीतों के माध्यम से पहाड़ी भाषा में प्रसारित किया। उन्होंने प्रण लिया था कि जब तक भारत वर्ष आजाद नहीं हो जाता, तब तक वह काले कपड़े ही धारण करेंगे, यही वजह है कि हिमाचल में उन्हें पहाड़ी गाँधी के नाम से जाना जाता है। पहाड़ी कविताओं और छंदों के माध्यम से ब्रिटिश राज के खिलाफ देशभक्ति का संदेश फैलाने के लिए उन्हें 11 बार गिरफ्तार किया गया। नेहरू जी ने इनकी रचनाएं सुनकर और स्वतन्त्रता के प्रति इनका समर्पण देखकर इन्हें पहाड़ी गाँधी कहकर सम्बोधित किया। और उसके बाद से ही वे इसी नाम से प्रसिद्ध हो गये। जीवन में अनेक विषमताओं से जूझते हुए बाबा कांशीराम ने अपने देश, धर्म और समाज पर अपनी चुटीली रचनाओं द्वारा गहन टिप्पणियां कीं। इनमें कुणांल री कहाणी, बाबा पहाड़े या कन्नै चुगहालियां, बालनाथ कनै फरियाद आदि प्रमुख हैं। बाबा के सम्मान में 23 अप्रैल 1984 को ज्वालामुखी में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गाँधी ने बाबा कांशीराम पर डाक टिकट का विमोचन किया था। सन 1982 में उन्होंने अपनी पुस्तक 'द चमचा युग' लिखी।

किसी भी राष्ट्र या देश की उन्नति, सभ्यता, संस्कृति और उसके मानवीय विकास को परखने की कसौटी उसकी बोली है। इसके अलावा बोली का महत्त्व इस बात पर निर्भर करता है कि सामाजिक व्यवहार, शिक्षा और साहित्य में उसका क्या महत्त्व है। प्रत्येक भाषा का विकास बोलियों से ही होता है। यहां तक कि पशु-पक्षी अपनी भाव अभिव्यक्तियों के लिए जिन ध्वनियों का प्रयोग करते हैं, उन्हें भी बोली ही कहते हैं। पुरानी भाषा या बोलियों के नमूने हमें अनेक शिलालेख, ताम्रपत्र, भोजपत्र तथा स्तंभ आदि पर प्राचीनकालीन लिपियों के रूप में मिलते हैं। इसलिए, शायद हमारी पहाड़ी भाषाओं का उद्गम वैदिक संस्कृति से ही माना जाता है। हिमाचल के अधिकतर क्षेत्रों में स्थानीय बोलियां प्रचलित हैं। इनमें महासवी, कुल्लवी, कांगड़ी मंडियाली, किन्नौरी बोलियां प्रमुख हैं।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारे हिमाचल में बारह कोस पर बोली बदल जाती है, लेकिन जो हमारे रीति रिवाज, लोक परम्पराएं और लोक संस्कृति है, वह करीब-करीब एक समान ही है। हाल ही में हिमाचल की बोलियों को हिमाचली भाषा का स्वरूप दिया गया है, जिसकी लिपि तैयार की जा रही है। हम सभी के प्रयासों से ही हिमाचली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जा सकता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य की अगर हम बात करें तो हमारे रहन-सहन, रीति-रिवाजों में काफी बदलाव आ चुका है। आधुनिकता की होड़ में हम पाश्चात्य सभ्यता के रंग में कुछ इस कदर रंग चुके हैं कि मां की लोरी, गांव की मीठी बोली, खेत खलियान, मुंडेर, बावड़ियां, कुएं, मेले, तीज, त्योहार व लोक परम्पराएं पीछे छूट सी गई हैं।

आज की युवा पीढ़ी पहाड़ी बोली नहीं जानते, कसूर उनका

नहीं, कसूर अभिभावक का है, जो उन्हें इन सब से दूर रख रहे हैं। बच्चे हिन्दी और अंग्रेजी तो फर्राटे से बोलते हैं लेकिन मीठी बोली, मां की बोली व गाँव की बोली की मिठास नहीं समझ पाते। हम ही उन्हें टोकते हैं अगर वह गाँव में पहाड़ी में बात कर ले तो हम यही कहते है कि नहीं बेटा ऐसा नहीं बोलते (Speak in English) नहीं तो स्कूल में तुम्हारी वाणी बिगड़ जाएगी। पहाड़ी बोली के अस्तित्व को बिखरने से रोकना है तो यह हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अपने बच्चों को हिन्दी और अंग्रेजी के इलावा मातृ बोली बोलना भी सिखाएं। अभिभावक की ये नैतिक जिम्मेदारी है कि अपने बच्चों में बचपन से ही पहाड़ी बोली के महत्त्व को बताएं। वे अपने बच्चों में संस्कार का बीज अपनी स्थानीय बोली को जीवित रख कर बो सकते हैं, जिससे न केवल बच्चों में लोक संस्कृति, लोक साहित्य व इसके इतिहास में रुचि पैदा होगी, साथ ही उनका नैतिक और बौद्धिक विकास भी होगा। आधुनिकता की चकाचौंध भी उनकी मानसिकता व मूल्यों को बदल नहीं पाएगी। युवा पीढ़ी माँ बोली, गाँव की मीठी बोली को अपना कर अपने जीवन मूल्यों को समझे और अपनी युवा सोच से देश के नवनिर्माण में अपनी भागदारी सुनिश्चित करे।

किसी भी राष्ट्र या देश की उन्नति, सभ्यता, संस्कृति और उसके मानवीय विकास को परखने की कसौटी उसकी बोली है। इसके अलावा बोली का महत्त्व इस बात पर निर्भर करता है कि सामाजिक व्यवहार, शिक्षा और साहित्य में उसका क्या महत्त्व है। प्रत्येक भाषा का विकास बोलियों से ही होता है। यहां तक कि पशु-पक्षी अपनी भाव अभिव्यक्तियों के लिए जिन ध्वनियों का प्रयोग करते हैं, उन्हें भी बोली ही कहते हैं। पुरानी भाषा या बोलियों के नमूने हमें अनेक शिलालेख, ताम्रपत्र, भोजपत्र तथा स्तंभ आदि पर प्राचीनकालीन लिपियों के रूप में मिलते हैं। इसलिए, शायद हमारी पहाड़ी भाषाओं का उद्‌गम वैदिक संस्कृति से ही माना जाता हैं। हिमाचल के अधिकतर क्षेत्रों में स्थानीय बोलियां प्रचलित हैं। इनमें महासवी, कुल्लवी, कांगड़ी मंडियाली, किन्नौरी बोलियां प्रमुख हैं।

वर्तमान में हिमाचल में करीब 33 क्षेत्रीय बोलियां बोली जाती हैं। ये बोलियां लोक साहित्य, दलांगी साहित्य, लोक गीत, लोक गाथाओं और नैतिक मूल्यों का बेशकीमती खजाना अपने आप में संजोए हुए हैं। जनजातीय क्षेत्र जैसे किन्नौर की बात करें तो पुराने जमाने में यहां रेखड़ पद्धति थी। रामपुर बुशहर में टांकरी का प्रचलन रहा और ऊपरी किन्नौर में तिब्बती या भोटी भाषा में तीन भाषाओं के तत्त्व मिले हैं। तिब्बती भाषा को किन्नौरी भाषा का मूल अंश भी माना जाता है। भरमौर के गद्दी जनजातीय क्षेत्र में भरमौरी भाषा बोली जाती है। रोहडू, जुब्बल, कोटखाई, कोटगढ़ यानी अपर हिमाचल में महासुवी बोली बोली जाती हैं। जैसा कि कहा भी जाता हैं कि बारह कोस पर बदले बोली। यह कहावत हिमाचल की बोलियों के लिए चरितार्थ होती है। हिमाचल प्रदेश

पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम द्वारा गुरदासपुर जेल में सजा काटते हुए सन् 1921 ई. में रची गई पहाड़ी कविता

मेरी कैद दुक्खां आल़ी

मेरी कैद दुक्खां आल़ी मुकदी नीं
कदूं बाहर जाई देस सेवा करां मैं।

कमरा मेरा खड्डेआं आल़ा
बाह्‌रों मारन ताल़ा
बेड़ी सिल, लोहे आल़ी, टुटदी बी नीं।

फर्से पर सौणा, वस्त्र नी होणा
बारी-बारी आई के जगाणा
निंद नी औणी दिल घबराणा
मेरी रात दुखां आल़ी मुकदी बी नीं।

अद्‌धी कच्ची, अद्‌धी पक्की रोटी
कन्ने मिलदी सब्जी बी फोकी
ऐहो खांदे जेह्‌ला दे लोकीं
बेड़ी दंदा कने जेहड़ी छुट्‌दी बी नीं।

दाल़ मसरां दी, दल़या आट्‌टा
केई खाह्‌न रज, केई करन फाक्का
असां करदे दोहां हथ स्याप्पा
जेहड़ी दाल़ गुदामों मुकदी बी नीं।

मेरी पतंग आसमान चढ़ी ऐ
जिहदी डोर माया दे हथ फड़ी ऐ,
हवा जोर चली ऐ,
जेहड़ी डोर पतंग वाली टुटदी बी नीं।

कृपा कर हुण दीन दयाला
मन ते अंधेरा, कर देयो उजाला,
भारत दे दुश्मन दा मुंह काला
कांशी अपनी डोर पतंग आल़ी टुटदी बी नीं।

(बाबा कांशीराम : भारतीय साहित्य के निर्माता,
लेखक : गौतम शर्मा 'व्यथित', पृ. 66 से साभार)

नन्ही कलम/ कविता

निकलो ना घर से बाहर

नीरल सैनी

दीदी, भैया, चाचू, निकलो ना तुम घर से बाहर
दादा-दादी, नाना-नानी तुम भी मानो सरकार की बात।
क्योंकि कोरोना कर रहा है घर के बाहर इंतजार।

बाहर तुम जाओगे, कोरोना को साथ लेकर आओगे
और संकट में हम सब फंस जाएंगे

लॉकडाउन का करो पालन, सरकार का दो तुम साथ
ताकि सुरक्षित रहें हम सब एक साथ।

परिवार को बचाना है, देश, गांव, मुहल्ले को सुरक्षित बनाना है
ताकि मिलजुल कर हम सब मना सकें आने वाले त्योहार।

दीदी, भैया, चाचू, निकलो ना तुम घर से बाहर
दादा-दादी, नाना-नानी तुम भी मानो सरकार की बात।

सुपुत्री संजय सैनी, गांव खांदला, डाकघर कुम्मी,
जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश

का गौरवमयी इतिहास रहा है।

हिमाचल प्रदेश की लोक कलाएं, वास्तुकला, पहाड़ी चित्रकला, पहाड़ी रूमाल तथा हस्तशिल्प कला, काष्ठकला इत्यादि देश में ही नहीं बल्कि विश्वभर में अपना लोहा मनवा चुकी है। परंतु खेद का विषय है कि हम 21 वीं सदी में भी पहाड़ी बोली को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान नहीं दिला पाए हैं। पहाड़ी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए पहाड़ी भाषा बोलने वाले आम आदमी को प्रयासरत रहना होगा। मेरा यह मानना है कि युवाशक्ति ही ऐसी शक्ति है जो समाज की धारा ही बदल सकती है। वर्तमान संदर्भ में इंटरनेट का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। युवा वर्ग अपनी स्थानीय बोली में ब्लॉग लिख कर भी विश्वग्राम की परिकल्पना को साकार कर सकता है। पाश्चात्य सभ्यता के रंग में न रंगकर युवा अपनी अमूल्य धरोहर बोली के माध्यम से संजोकर रख सकता है।

हिमाचल प्रदेश का कला संस्कृति विभाग विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लोक संस्कृति साहित्य कला व बोलियों के संरक्षण में अहम भूमिका निभा रहा है। ऐतिहासिक गेयटी थियेटर में भी समय-समय पर लोक भाषा में नाटकों का मंचन किया जाता है आकाशवाणी शिमला, हमीरपुर, धर्मशाला केंद्र भी स्थानीय बोलियों के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं।

पहाड़ी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए हिमाचल के साहित्यकार, कवि व लेखक पहाड़ी बोली में ज्यादा से ज्यादा लेखन कार्य कर विशेष योगदान दे सकते हैं। हिमाचली भाषा का इतिहास काफी गौरवपूर्ण रहा है। साथ ही हमारी गौरवपूर्ण सभ्यता, संस्कृति और साहित्य को वर्तमान संदर्भ में कलमबद्ध करने की नितांत आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ी बोलियों की इस अमूल्य धरोहर से वंचित न रह जाए। अभिभावक भी इसमें अपना योगदान दे सकते हैं । वे अपने बच्चों को संस्कार का बीज अपनी स्थानीय बोली को जीवित रख कर बो सकते हैं, जिससे न केवल बच्चों में लोक संस्कृति, लोक साहित्य व इसके इतिहास में रुचि पैदा होगी, साथ ही उनका नैतिक और बौद्धिक विकास भी होगा। आधुनिकता की चकाचौंध भी उनकी मानसिकता व मूल्यों को बदल नहीं पाएगी। यदि हम आज नहीं संभले तो पहाड़ी बोली के अस्तित्व को तलाशते नजर आएंगे कि हमारे पूर्वज किस बोली में अपने मनोभाव को व्यक्त करते थे। तब शायद बोली के इस मूल रूप को समझने वाला कोई न हो, इसलिए प्रत्येक जिला की बोलियों को सहेज कर रखने की नितांत आवश्यकता है।

हिमाचल की अमूल्य पहाड़ी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिलाने के लिए, सभी साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों और समाज की आम जनता को आगे आना चाहिए ताकि हिमाचल की पहचान, पहाड़ की शान और हर पहाड़ी भाषा बोलने वालों का मान यह पहाड़ी बोली देशभर में अपनी पहचान बना सके।

हम सभी को यह प्रण लेना चाहिए कि पहाड़ी भाषा में ज्यादा से ज्यादा लिखें ताकि हिमाचल की अनेकों बोलियां एक रूप बन कर सुदृढ़ पहाड़ी भाषा बन जाएं। यही होगी सच्ची श्रद्धांजलि पहाड़ी गाँधी बाबा कांशीराम जी जैसे युग पुरुष को जिन्होंने पहाड़ी बोली में लिखकर महात्मा गाँधी जी के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाया और आजादी की अलख जगा कर स्वतंत्रता संग्राम में बहुत बड़ा योगदान दिया।

आयुषमान (साहित्य सदन)
लोअर पंथाघाटी, शिमला, हिमाचल प्रदेश-171 009,
मो. 0 80917 29782

गुलेरी जी पर संस्मरणात्मक आलेख

पंडित चंद्रधर शर्मा और उनका रचना संसार

◆ गोपाल जी गुप्त

राजस्थान के जयपुर में सन् 1883 में जनमे पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी के विषय में बहुसंख्य लोग भ्रांत प्रचार करते हैं कि वह मात्र तीन कहानियां, जिसमें से 'उसने कहा था' मुख्य थी, लिखकर प्रख्यात हो गए जबकि वास्तविकता यह है कि वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। विख्यात साहित्य मनीषी जैनेंद्र कुमार ने उनके बारे में लिखा है कि वह विलक्षण विद्वान, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, बहुत जिंदादिल व्यक्ति थे, उनकी लेखन शैली अनोखी थी, वह न केवल विद्वता में अपने समकालीन साहित्यकारों से ऊंचे ठहरते थे बल्कि वह तो प्रेमचंद से भी अधिक ऊंचे साहित्यकार थे। व्यक्ति-मानस के चितेरे रूप में वह बेजोड़ थे। वस्तुतः जब चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने कहानी लिखनी प्रारंभ की, उस समय हिंदी में कहानियां कम ही लिखी जा रही थीं। उनके कहानी-लेखन के पूर्व सन् 1900 में किशोरी लाल गोस्वामी की कहानी 'इंदुमती', रामचंद्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' 1903 में, बंगमहिला की कहानी 'दुलाईवाली' सन् 1907 में प्रकाशित हो चुकी थी, बावजूद इसके डॉ. सुशील कुमार फुल्ल ने सरस्वती में सन् 1915 में छपी पं. गुलेरी की 'उसने कहा था' को हिंदी की पहली मौलिक कहानी घोषित किया। इस तरह जो लोग पं. चंद्रधर शर्मा को मात्र तीन कहानियों का रचनाकार मानते हैं पूर्णतया भ्रमित हैं क्योंकि गुलेरी जी ने असंख्य रचनाएं लिखी हैं।

अधिसंख्य लोग उन्हें तीन कहानियां 'सुखमय जीवन', 'बुद्धू का कांटा' तथा 'उसने कहा था' का लेखक जानते थे जबकि उनकी पहली कहानी 'घंटाघर' सन् 1904 में लिखी गई थी, जो कार्लाइल की कथा से प्रेरित है ऐसा स्वयं गुलेरी जी ने स्पष्ट किया है। इसके अतिरिक्त महाभारत से ली गई उनकी एक कहानी 'धर्म-पारायण रीछ' भी है। इसके अतिरिक्त उन्होंने विशाखा दत्त के अपूर्ण नाटक 'देवी चंद्रगुप्तम' पर शोध करके यह प्रमाणित किया है कि चंद्रगुप्त द्वितीय से पहले उनके उस भाई रामगुप्त ने भी शासन किया था जिसने खारबेल आक्रमण के समय ध्रुवदेवी को शत्रु को सौंपने के प्रस्ताव को मान लिया था किंतु चंद्रगुप्त ने देवी का छद्म रूप धारण कर शत्रु का वध कर दिया। जयशंकर प्रसाद ने इसी के आधार पर नाटक ध्रुवस्वामिनी लिखा था।

सन् 1915 में सरस्वती में प्रकाशित कहानी 'उसने कहा था' को पूर्वदीप्ति शैली (Flashback) में लिखने की प्रेरणा उन्हें अंग्रेजी के उपन्यासकार वर्जीनिया वुल्फ के 'स्ट्रीम आफ कान्सियसनेश' से मिली। इस कालजयी कहानी में एक ऐसा समाज विद्यमान है जो निरा कल्पनाशून्य नहीं, वहां रोमांस का भी अभाव नहीं, न ही दिवास्वप्न में खोया समाज है अपितु वह जीवन के कठोर यथार्थ से दो-चार होता हुआ जीवंत समाज है। चतुर्दिक व्यापक सत्ता-तंत्र के समक्ष असहाय एवं निरुपाय होते हुए भी इस कहानी के मनुष्य न तो साहस खोते हैं, न हसना-गाना अपितु अपनी कौल पर जीना-मरना उनका संकल्प है। उसका मरना मामूली मरना नहीं बल्कि ऐसा मरना है जिसे सारी दुनिया सदियों-सदियों तक स्मरण रखती है। अदम्य साहस के साथ मृत्यु से साक्षात्कार की क्षमता, शक्ति उसमें विद्यमान है हंसते-हंसते किसी के खातिर स्वयं को कुर्बान करने की दृढ़ता, साहस, वीरता भी उसमें है। यथार्थतः साम्राज्य-विस्तार की अदम्य लालसा के वशीभूत हो विश्वयुद्ध की अग्नि में झांकने की क्रूर एवं हिंसक नीति का रचनात्मक विरोध, प्रतिकार भी था। निश्चित रूप से जिस काल में यह कहानी लिखी गई थी, उस समय यह कहानी अंग्रेजी सत्ता की दासता से मुक्ति के लिए छटपटाती भारतीय जनता के उदार, उदात्त, शौर्यमय जीवन की एक गौरव गाथा बनी जिसने न केवल तत्कालीन समाज को शक्ति

प्रदान की बल्कि सच कहें तो भावी पीढ़ियों की मार्गदर्शिका भी बन गई। 'उसने कहा था' के उपरांत कभी उन्होंने एक और कहानी, जो अपूर्ण रह गई, 'हीरे का हीरा' भी लिखी जो उनके उपन्यास लेखन की ओर संकेत करता है। काश! गुलेरी जी का 39 वर्ष की स्वल्पायु में सन् 1922 में बनारस में निधन न हो गया होता तो संभवतः हिंदी साहित्य के इतिहास में उनका स्थान कुछ और होता।

कहानियों के अलावा गुलेरी जी ने कुछ लघु कहानियां या यों कहें लघुकथाएं भी लिखी थीं जिनमें से 10 लघुकथाएं 'भारतीय लघुकथा कोश' में संकलित हैं, जिनके चलते उन्हें लघुकथाकार भी माना जाता है। प्रसंगवश, गुलेरी जी ने अपने पत्रों में कुछ और कहानियां लिखे जाने का संकेत किया है (जैसे कहानी 'पनघट' का अनेक बार उल्लेख है) किंतु वे अनुपलब्ध हैं। यहां उल्लेखनीय है कि वह युग ऐसा था जब आधुनिक हिंदी के रूप में खड़ी बोली अपना रूप घढ़ रही थी। किशोरी लाल गोस्वामी तथा देवकीनंदन खत्री के ऐयारी उपन्यास शृंखला की धूम मची थी तब गुलेरी जी ने इसकी कटु आलोचना करते हुए कहा था कि यद्यपि इस प्रकार के उपन्यासों से हिंदी का प्रचार, प्रसार तथा व्यापार तो अवश्य हो सकता है तथापि उसकी भाषा का, विशेषकर समृद्ध भावों के रूप में, विकास नहीं हो सकता। इसी समय गुलेरी जी ने निबंधों की रचना भी की और उनका निबंधकार रूप भी अप्रतिम सिद्ध हुआ। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा अन्य निबंधकारों की जमीन गुलेरी जी ने ही तैयार की थी। गुलेरी जी के निबंध काशी के नूपुर, काशी की नींद उपर्युक्त कथन की पुष्टि करने में समर्थ हैं।

एक अप्रतिम निबंधकार होने के साथ-साथ गुलेरी जी व्यंग्यकार, महान भाषा शास्त्री, प्रकांड विद्वान, इतिहासकार, समालोचक, अनुवादक, पत्रकार, समीक्षक, कवि, जीवनीकार, कला-मर्मज्ञ, पुरातत्त्ववेत्ता, संपादक थे। वस्तुतः साहित्य का एवं पत्रकारिता का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था जिसमें गुलेरी जी ने साधिकार कलम न चलाई हो। साहित्य में साक्षात्कार विधा के वह जनक थे। वह निर्भीक थे। रूढ़ियों पर खुलकर प्रहार करते थे तथा प्रगतिशील मूल्यों के पक्षधर थे। इस तरह उनकी धाक राजस्थान से लेकर बनारस तक थी। वह जयपुर से 'समालोचक' नामक पत्रिका निकालते थे तथा उसके संपादक थे।

हिंदी के अलावा वह अंग्रेजी, संस्कृत में समान अधिकार से लिखते थे। इसके अलावा पाली, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज, पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी, लैटिन तथा फ्रेंच आदि में भी उनकी गति थी। धर्म-दर्शन, ज्योतिष, काव्य-शास्त्र, वैदिक-पौराणिक साहित्य, राजनीति शास्त्र का भी उन्हें ज्ञान था। इन विविध विषयों पर भी उनके अनेक लेख एवं टिप्पणियां मिलती हैं।

वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने सबसे पहले साक्षात्कार विधा को साहित्य में स्थान दे स्थापित किया। सन् 1905 में उन्होंने पहली बार लाहौर से अजमेर आए, गंधर्व महाविद्यालय (लाहौर) के संस्थापक और अध्यक्ष पंडित विष्णु दिगंबर पौलुस्कर का साक्षात्कार लेकर उसे 'संगीत की धुन' शीर्षक से अपनी पत्रिका 'समालोचक' में प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने पौलुस्कर के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर विशिष्ट चर्चा की। (प्रसंगवश, उल्लेख्य है कि पं. विष्णु दिगंबर पौलुस्कर सन् 1929 की 11 सितंबर को मेरे पूज्य पितामह स्वर्गीय सुखेदव प्रसाद सर्राफ के आवास टेढीनीम, मीरजापुर में पधारे थे तथा मेरे पितामह की संगीत साधना एवं उनके द्वारा आविष्कृत वाद्य यंत्रों का अवलोकन कर उन्हें 'संगीताचार्य' की उपाधि देकर के सम्मानित किया था। उनके द्वारा लिखित रूप से यह उपाधि आज भी मेरे पास एक बहुमूल्य संपदा के रूप में विद्यमान है।)

इतने प्रकांड विद्वान, महान साहित्यकार, पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी का साहित्य यत्र-तत्र बिखरा पड़ा था तथा लोगों की दृष्टि से दूर रहा। लोग गुलेरी जी के रचना-संसार से अपरिचित रहे किंतु धन्य हैं डॉ. मनोहर लाल जी जिन्होंने गुलेरी जी के समकालीन जीवित व्यक्तियों से भेंटवार्ता कर, उनसे पत्राचार कर, यत्र-तत्र बिखरी उनकी सैकड़ों रचनाओं की खोज की तथा सन् 1991 में किताबघर, दिल्ली से दो खंडों में 'गुलेरी रचनावली' नाम से लगभग 1000 पृष्ठों के ग्रंथ का प्रकाशन कर लोगों को गुलेरी जी की प्रतिभा से अवगत कराया। डॉ. मनोहर लाल के अथक श्रम, लगन से गुलेरी जी की अधिसंख्य रचनाएं इसमें सम्मिलित हुईं फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी और भी रचनाएं हो सकती हैं जिनकी खोज न हो सकी है। इन सबके बावजूद उनका यह प्रयास स्तुत्य है, वह वंदनीय है, सराहनीय है।

प्रेमांगन, एमआईजी 292, कैलासविहार, आवास विकास योजना
#1, कल्याणपुर, कानपुर, उत्तर प्रदेश-208 017
दूरभाष : 0512 2571795

एक अप्रतिम निबंधकार होने के साथ-साथ गुलेरी जी व्यंग्यकार, महान भाषा शास्त्री, प्रकांड विद्वान, इतिहासकार, समालोचक, अनुवादक, पत्रकार, समीक्षक, कवि, जीवनीकार, कला-मर्मज्ञ, पुरातत्त्ववेत्ता, संपादक थे। वस्तुतः साहित्य का एवं पत्रकारिता का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था जिसमें गुलेरी जी ने साधिकार कलम न चलाई हो। साहित्य में साक्षात्कार विधा के वह जनक थे। वह निर्भीक थे। रूढ़ियों पर खुलकर प्रहार करते थे तथा प्रगतिशील मूल्यों के पक्षधर थे। इस तरह उनकी धाक राजस्थान से लेकर बनारस तक थी। वह जयपुर से 'समालोचक' नामक पत्रिका निकालते थे तथा उसके संपादक थे।

आलेख

कलम के साथ कदमताल करता कलम का सिपाही शक्तिप्रसाद सकलानी

◆ डॉ. प्रभा पंत

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसे विवेकशीलता जैसे विशेष गुण के कारण ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति माना जाता है, किन्तु वह अपनी इस विशिष्टता का उपयोग न करने के कारण मनुष्य होकर भी मानवीय गुणों का नहीं, बल्कि पद, नाम, धन, ऐश्वर्यादि का आदर व सम्मान करता दिखाई देता है। यद्यपि अधिकांश लोग जीवन के इस सत्य से भलीभाँति परिचित हैं कि संसार में कोई भी अजर-अमर नहीं, जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है तथा जो आया है उसे एक दिन जाना ही है, परन्तु फिर भी वह स्वयं के पक्ष में इस सत्य से अनभिज्ञ बना रहता है। यह मनुष्य की मूर्खता है, मोह है, स्वार्थपरता है, अल्पज्ञता है, अहंकार है अथवा...और कुछ।

इन प्रश्नों के झंझावात में घिरकर वर्षों मेरा चित्त अशांत रहा। मैंने जब भी बुद्धिजीवी लोगों के समक्ष अपने इन प्रश्नों को रखा तो उनके उत्तर ने मुझे और भी अधिक अशांत व उद्वेलित कर दिया। अंततः एक दिन मैंने मन-ही-मन निश्चय किया, अब इस उलझन को सुलझाने में अपने जीवन का एक भी क्षण व्यर्थ नहीं गंवाउँगी, उचित होगा कि मैं पूर्ण समर्पण एवं श्रद्धाभाव से अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हुए जीवनयापन करूँ। उस दिन से अब तक मुझे अपनी जीवनयात्रा में जो लोग भी अपने कार्य एवं लक्ष्य के प्रति समर्पित लगे, मैंने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को संजोना प्रारम्भ कर दिया।

सन् 1997-98 में शेरसिंह बिष्ट 'अनपढ़' जी के साक्षात्कार से शुभारम्भ करके, विदुषी कवयित्री रजनी 'रंजना', शेरसिंह मेहता 'कुमाउँनी', डॉ. रामसिंह, डॉ. मदन चन्द्र भट्ट, प्रकाश पंत, जुगल किशोर पेटशाली, आदि सहित अब तक उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, राजस्थान के लगभग पिचहत्तर (75) लोगों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को तथा हिंदी साहित्य, कुमाउँनी साहित्य, कुमाउँनी लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति आदि विषयक ज्ञान को कभी शोधार्थियों के सहयोग से तो कभी स्वयं संजोकर, अपने लेखन और स्मृति भण्डार को समृद्ध किया है। आज भी जब कभी मुझे साहित्य साधना में लीन शिथिल देह रचनाकारों के मुखमण्डल पर बिखरी प्रसन्नता, संतुष्टिभाव तथा उनके स्नेहसिक्त आशीर्वचन याद आते हैं तो मैं आनन्द विभोर होकर प्रेरित हो उठती हूँ, उन जैसे अन्य रचनाकारों को खोजकर, सार्थक शोधकार्य करने और करवाने के लिए।

इसी श्रृंखला की अगली कड़ी है, पिचासी (85) वर्ष की आयु में भी अपनी कलम के साथ कदमताल करता एक कर्मठ, अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित, दृढ़निश्चयी, जिजीविषा से परिपूर्ण, अध्ययनशील कलमकार, शक्तिप्रसाद सकलानी। शक्तिप्रसाद जी का जन्म सन् 04 जून 1936 में टिहरी गढ़वाल के भैंसकोटी नामक ग्राम में हुआ। ईश्वर के प्रति आस्थावान माता प्रतिमा देवी और पिता सत्येश्वर प्रसाद ने अपने इकलौते पुत्र को आदिशक्ति का प्रसाद मानकर उसे नाम दिया, शक्तिप्रसाद। यह विडम्बना ही है कि वह, शक्तिप्रसाद आजीवन उसी के अस्तित्व को नकारता रहा, और आज जब वह जीवन के अंतिम पड़ाव की ओर अग्रसर हैं, तब भी उस विराटशक्ति की अद्भुत अनुभूति से वंचित हैं। जब मैंने सकलानी जी के बाल्यकालीन परिवेश एवं परिस्थितियों को जाना तो प्रतीत हुआ, इनकी इस सोच का एक प्रमुख कारण उनका बाल्यकाल भी हो सकता है, क्योंकि अनेक मनोवैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है, 'बाल्यकालीन अनुभव एवं अनुभूतियों का बालमन पर इतना गहन प्रभाव पड़ता है कि व्यक्ति चाहकर भी आजीवन उससे मुक्त नहीं हो पाता।'

जब यह मात्र दो वर्ष के थे, तब असमय पिता का देहावसान हो जाने के कारण इन्हें उनके स्नेहानुशासन से वंचित होना पड़ा, और माँ ने अशिक्षा एवं अज्ञानता के कारण लोगों की अंधविश्वासपूर्ण बातों पर विश्वास करके, अपने पुत्र को पिता की मृत्यु का कारण मान लिया। इस तरह अनजाने ही सही, किन्तु एक माँ ने अपना ही नहीं, अपने अबोध, निरपराधी बालक के जीवन को भी ममत्वहीन करके, कटुतापूर्ण कर दिया। इस तरह बाल्यकालीन नकारात्मक परिवेश एवं पारिवारिक परिस्थितियों की प्रतिकूलता के परिणामस्वरूप शनैः-शनैः एक कोमल हृदय, संवेदनशील बालक अंतर्मुखी, विद्रोही और हठी स्वभाव का व्यक्ति बन गया और खीझकर उसने ईश्वर के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया। इतना ही नहीं, उसने ईश्वर के प्रति अटूट आस्था रखने वाली अपनी मूर्तिपूजक पत्नी, जो पतिनिष्ठ स्त्री, ममतामयी माँ और कर्त्तव्यनिष्ठ पुत्रवधू भी थी, उसके द्वारा अपने घर में स्थापित मूर्तियों को फेंककर, उसे धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित करने में भी संकोच नहीं किया।

सकलानी जी ने अपनी संस्मरणात्मक पुस्तक, 'उसी की याद में' जो सन् 2012 में प्रकाशित हुई थी, के 'वह दिन भी क्या दिन थे' खण्ड में स्पष्टतः लिखा है, "एक दिन मैंने उसके पूजाघर में रखे, कथित भगवानों की कई फोटो, धूप-दीप यह कहकर फेंक दिए कि स्वयं से प्यार करना सीखो, मरे हुओं के पीछे मत मरो।" जब उनका अहं इससे भी तुष्ट नहीं हुआ तो उन्होंने अपनी इस सोच को उचित तथा सत्य सिद्ध करने के लिए तथा आस्तिकों के मन-मस्तिष्क में अविश्वास का बीज आरोपित करने के लिए, अथक परिश्रम से अनेक तथ्यों को एकत्र करके, सन् 2013 में एक पुस्तक लिखी 'क्या ईश्वर है?'

काश! वह समझ पाते मानव ने 'उसके' प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए तथा 'उस' पर ध्यान केन्द्रित करके, स्वयं को दिशाहीन होने से बचाने के लिए, कण-कण में परिव्याप्त उस आदि-अनादि, अनश्वर, अनन्त ऊर्जा को मूर्तिमान किया तथा उसे विविध रूप-आकार, रंग, नाम और धाम देकर, उस सर्वशक्तिमान के प्रति अपने मनोभावों और विचारों को शब्दों में गूँथा है। जिसके अस्तित्व को नकारने के लिए उन्होंने अपने घर के मंदिर में स्थापित प्रतिमाओं को फेंककर, अपने अहं को तुष्ट किया, वह तो एक भाव है, अनुभूति है, आस्था है, विश्वास है और मानव जीवन का आधार है। ईश्वर कोई पदार्थ, स्थूलकाय व्यक्ति, वस्तु या स्थान नहीं है, जिसके अस्तित्व को विज्ञान, इतिहास, भूगोल, तर्क आदि द्वारा प्रमाणित या सिद्ध किया जाए अथवा कुतर्कों द्वार उसके अस्तित्व को नकारा जाए।

सकलानी जी के प्रति मेरे उद्‌गारों को पढ़कर आप इस दुविधा में होंगे कि मैं उनकी प्रशंसक हूँ अथवा निंदक। वास्तविकता यह है, मैं उनसे आपका परिचय कराना चाहती हूँ। निःसंदेह सकलानी जी के और मेरे विचारों में, उम्र में, सोच में और चिंतनादि की दिशा में कोई साम्य नहीं है, किन्तु फिर भी मैं उनका परिचय आपसे कराना चाहती हूँ। जानते हैं क्यों, क्योंकि अपने स्वाभिमानी स्वभाव, कर्मशील एवं दृढ़निश्चयी व्यक्तित्व के कारण वह मेरे लिए सम्मानीय एवं आदरणीय हैं। मैं उन्हें एक ऐसे कलमकार के रूप में जानती हूँ जो 85-86 वर्ष की आयु में भी कलम के साथ कदमताल करता हुआ, निरन्तर गतिमान है। अतः मैं चाहती हूँ कि आप भी कृतित्व को जानें और उनके व्यक्तित्व को पहचानें। सकलानी जी से मेरा परिचय लगभग आठ वर्ष पुराना है। अपने अब तक के अनुभवों के आधार पर मुझे लगता होता कि विपरीत परिस्थितियाँ व्यक्ति को तपाती भी हैं, रौंदती भी हैं और आहत भी करती हैं। ऐसे में कुछ लोग अनुकूल परिस्थिति व परिवेश न पाने से हताश-निराश होकर अपना मनोबल खो देते हैं, किन्तु कुछ लोग अपने मनोबल को क्षीण नहीं होने देते और व्यथा-पीड़ा और कष्टों को सहकर भी अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हुए, निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहते हैं। मेरी दृष्टि में ऐसे जुझारू व्यक्तियों में से एक हैं, शक्ति प्रसाद सकलानी।

सकलानी जी से मेरा प्रथम परिचय उनकी पुस्तक 'उत्तराखण्ड की विभूतियाँ' नामक पुस्तक के माध्यम से हुआ। सन् 2012 में, जब मुझे उत्तराखण्ड भाषा संस्थान की परियोजना 'चरितकोश निर्माण' में सहयोगी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, सौभाग्य इसलिए, क्योंकि यह परियोजना मेरे लिए उत्तराखण्ड के अनेक प्रकाश-स्तम्भों का साक्षात्कार करने तथा तत्संबंधी पुस्तकें पढ़ने का माध्यम बनी। इन्हीं दिनों मुझे सकलानी जी एवं चंदन डांगी जी की पुस्तकों का अध्ययन करने का अवसर मिला। इन पुस्तकों को पढ़कर मैं अभिभूत हो उठी थी। उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे इस परियोजना की प्रेरणास्रोत यही पुस्तकें रही होंगी। एक अंतराल के पश्चात् जब सकलानी जी से मुलाकात हुई तो मैंने इस विषय में उनसे चर्चा की, उन्होंने बताया, "उत्तराखण्ड की विभूतियाँ' मेरी तीसरी पुस्तक है। सन् 2000 में उत्तराखण्ड राज्य के अस्तित्व में आने के साथ ही यह प्रकाशित हो गई थी, जबकि डांगी जी पुस्तक 'उत्तराखण्ड की प्रतिभाएँ' सन् 2003 में प्रकाशित हुई। जिन दिनों डांगी जी यह पुस्तक लिख रहे थे, तब उन्होंने अनेक बार अपनी इस पुस्तक के संबंध में मुझसे विचार-विमर्श किया था।"

शक्ति प्रसाद सकलानी जी विगत पैंतालिस वर्षों से कुमाऊँ के तराई क्षेत्र रुद्रपुर, जो उत्तराखण्ड के जनपद ऊधमसिंह नगर में स्थित है, के निवासी हैं। 17 अगस्त 1975 में आप सपरिवार रुद्रपुर आ गए। अपने पूर्वजों का परिचय देते हुए आपने बताया, "मूलतः कान्यकुब्ज क्षेत्रवासी होने के कारण हम कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहलाए, और ऋषि भारद्वाज के वंशधर हैं, इसलिए शास्त्रानुसार भारद्वाज गोत्री हुए।" अपने सिद्धान्तों से समझौता न कर पाने तथा वैचारिक मतभेद के कारण आप 31 मार्च 1978 में, उत्तर प्रदेश सरकार की सेवा से स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर, 'बाईस वर्ष सात माह नौ दिवस' में अपने घर लौट आए। सन् 1980 में आपने रुद्रपुर में 'आभार भूमि' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन एवं संपादन प्रारम्भ किया। प्रशासनिक अव्यवस्था एवं राजनीति की परिवर्तित होती स्थितियों पर तीव्र प्रहार करने के कारण 'आभारभूमि' चर्चा में भी रहा और उसने लोकप्रियता भी प्राप्त की। तेरह वर्ष तक निरन्तर इस पत्र में लेखन करते रहने के बावजूद भी जब यह साप्ताहिक पत्र सकलानी जी की लेखकीय क्षुधा को शान्त करने में असफल रहा तो इन्होंने सन् 1993 में 'आभार भूमि' का प्रकाशन बंद कर दिया। तत्पश्चात् अपनी अभिरुचि के विषय 'इतिहास' पर ध्यान केन्द्रित करके, आपने 1993 में 'तराई-रुद्रपुर का इतिहास' लिखना प्रारम्भ किया। अपनी उस प्रथम पुस्तक के विषय में वह गर्व से कहते हैं, "तीन वर्षों की मेहनत से मैंने 'तराई-रुद्रपुर का इतिहास और विकास' लिखकर,

साबित कर दिखाया कि विपरीत परिस्थितियों में भी कलम की धार कुन्द नहीं होती है। इस विषय पर लिखने वाला मैं अब तक का पहला लेखक हूँ।" प्रस्तुत पुस्तक द्वारा सकलानी जी ने जहाँ एक ओर, उत्तराखण्ड के इतिहास को समृद्ध किया है, वहीं दूसरी ओर जनसामान्य को मुगलकालीन, ब्रिटिश कालीन तथा स्वाधीन भारत की स्थितियों से भी परिचित कराया है।

सकलानी जी की रचनाओं को पढ़ते हुए प्रतीत होता है कि उन्हें समाज के अनछुए पहलुओं पर जानकारी प्राप्त करना, उपेक्षित विषयों को समझना, विवादास्पद विचारों की विवेचना करना तथा लोकप्रिय एवं ज्वलंत विषयों का चयन करके, उसे कलमबद्ध करना अतिप्रिय है। अपनी इस रचनात्मक प्रवृत्ति के वशीभूत ही उन्होंने 'तराई के औद्योगिक विकास की कहानी' के माध्यम से पाठकों को सिडकुल की स्थापना से पूर्व तराई क्षेत्र में संचालित होने वाले लघु उद्योगों, राइस मिल, कागज, गत्ता, सीमेंट, होटल, ओटोमोबाइल क्षेत्र में प्रयोग होने वाली रबर, फाइबर आदि की विस्तृत जानकारी प्रदान की है। उनके द्वारा रचित 'उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास' नामक पुस्तक कदाचित् ऐसी प्रथम पुस्तक है, जिसमें न केवल 1842 से 2003 तक उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं की सूची है, वरन् इस पुस्तक में पत्रकारों का परिचय, पत्रकारिता का इतिहास, सम्पादन-शब्दावलीय प्रेस पंजीयन, प्रशिक्षण और मिशन से उद्योग की दिशा में अग्रसर पत्रकारिता आदि महत्त्वपूर्ण विषयों की जानकारी भी प्रदान की गई है। 'उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास' पुस्तक को लिखने के लिए सकलानी जी ने उत्तराखण्ड के इस छोर से उस छोर तक की यात्राएँ कीं तथा पत्र-व्यवहार द्वारा ही नहीं, शताधिक लोगों के साक्षात्कार लेकर भी आपने तथ्यात्मक ज्ञान को संजोया ताकि पत्रकार एवं शोधार्थी, दोनों इस पुस्तक से लाभान्वित हो सकें।

आपकी पुस्तक 'भारतीय पुलिस : एक अध्ययन' जो सन् 2007 में प्रकाशित हुई थी, उसे पढ़कर अनेक पुलिस अधिकारियों ने भी यह कहकर सकलानी जी की सराहना की, 'वास्तव में यह पुस्तक समग्र रूप में पठनीय है।' मानवीय स्वभाव है कि अधिकांश लोगों को वर्तमान से अधिक अतीत की स्मृतियाँ आकर्षित करती हैं। सकलानी जी भी इसका अपवाद नहीं, वह प्रारंभ से अपने अतीत को जानने के प्रति जिज्ञासु बने रहे, परिणामस्वरूप इन्होंने अपनी जाति, कुल-खानदान के अतीत से लेकर, उसके वर्तमान तक की विस्तृत जानकारी खोज निकाली। इसका प्रमाण है सन् 2008 में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'सकलानी वंश : अवध से उत्तराखण्ड'। इन पुस्तकों के अतिरिक्त सन् 2012 में प्रकाशित आपकी पुस्तक 'उत्तराखण्ड संदर्भ' तथा 2015 में प्रकाशित 'पंजाब-पंजाबी और पंजाबियत' का नाम भी उल्लेखनीय है। पंजाबी समाज के इतिहास को उजागर करती, इस पुस्तक में सकलानी जी ने देश के विभाजन के समय शरणार्थी बनकर पश्चिमोत्तर से भारत आई, जातियों के अतीत से वर्तमान तक के इतिहास को विस्तारपूर्वक लिखा है। प्रस्तुत पुस्तक में पंजाबी समाज का इतिहास, संस्कृति, साहित्य, सैन्य-सेवा तथा शासन-प्रशासन में इनकी भूमिका, ऐतिहासिक विभूतियों का परिचय, सिनेमा, संगीत, उद्योग, कृषि, क्रीड़ा आदि क्षेत्रों में इनके योगदान का विस्तृत परिचय दिया है। मूलतः उत्तराखण्डी होकर भी सकलानी जी ने जिस तरह पंजाब-पंजाबी और पंजाबियत पर लेखनी चलाई है, वह उनके आत्मविश्वास और अध्ययनशीलता का परिचायक है।

इस तरह जहाँ एक ओर, सकलानी जी बौद्धिकता पर आधारित अनेक पुस्तकें लिखकर, समाज का ज्ञानवर्धन करते रहे, वहीं दूसरी ओर भावुकतावश एक संस्मरणात्मक पुस्तक लिखकर, अनजाने ही अपने व्यक्तित्व के बाह्य आवरण को उघाड़कर रख दिया है। इससे उन्होंने पाठकों को न केवल अपने हृदय की मृदुता और मधुरता से भी परिचित कराया है, वरन् अपने जीवनानुभव के माध्यम से स्त्री के समर्पण को उजागर करके, पुरुष के अहं और स्त्री के आत्मसमर्पण में उसकी संपूर्णता और संबंधों की सार्थकता को भी सिद्ध किया है। जब तक पत्नी जीवित थी तब तक सकलानी ने उपेक्षित और अपमानित होकर भी स्वयं को कभी असहाय नहीं समझा, क्योंकि तब उनका जीवन पत्नी के प्रेम और विश्वास की सुदृढ़ डोर में गुँथा हुआ था, इसीलिए जीवन संगिनी की मृत्यु के आघात को सहना उनके लिए सहज नहीं था।

तब वह टूटकर बिखरे भी, किन्तु पत्नी के साथ व्यतीत किए गए मधुर क्षणों की स्मृतियों ने अतीत को कलमबद्ध करने के लिए प्रेरित करके, इन्हें पुनः संजो लिया। स्मृतियों में संचित अनेक चित्र शब्दबद्ध होकर कभी इन्हें हँसाते, कभी रुलाते, कभी गुदगुदाते, कभी खिझाते और कभी-कभी आक्रोशित भी कर दिया करते थे, "मैं जमाने का हाकी खिलाड़ी, घोर स्वाभिमानी, अलबेला नौजवान। ढाबों में बर्तन माँजे, डॉमैस्टिक हैल्पर रहा तब रोटी नसीब हुई। मालीगिरी की, बाग में चौकीदारी की, दफ्तर में बाबूगिरी की, और खेतों में कामदारी की। बाईस वर्ष लाँग बूट पहने, बीमा एजेंट रहा, साप्ताहिक अखबार चलाया, साबुन बनाया और मई-जून की तपती दोपहरी में साइकिल पर मीलों फेरी लगाई...।"

यद्यपि, कागज-कलम थामे पत्नी की यादों के साथ की गई यात्रा अंततः एक दिन पुस्तक रूप में सम्पन्न हुई, और सकलानी जी ने इसे नाम दिया 'उसी की याद में' किन्तु वास्तविकता यह है इसमें उनका ध्यान 'आत्मकथा' पर अधिक केन्द्रित है। इसके बाद जब मैंने सकलानी जी की पुस्तक, 'जीवन से पहले मृत्यु के बाद' जो 2018 में प्रकाशित हुई, पढ़ी तो उसे पढ़कर यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया कि व्यक्ति के मूलस्वभाव पर परिस्थितियों के

बादल अधिक समय तक आच्छादित नहीं रह सकते। वर्षों पत्रकारिता करते हुए सूचनाएँ एकत्र करके, प्रसारित करने के अभ्यासवश आपने इस पुस्तक में भी पौराणिक एवं धार्मिक ग्रंथों, सम्प्रदायों में जन्म-मृत्यु, आत्मा, ईश्वरीय अस्तित्व, पुनर्जन्म आदि संबंधी प्रचलित लोकविश्वास एवं मान्यताओं पर दार्शनिकों एवं मनोवैज्ञानिकों के विचारों तथा अपने अनुभवों को प्रस्तुत करके, अंतिम निर्णय जिज्ञासुओं पर छोड़ दिया गया है। सन् 2019 में प्रकाशित 'समय और समाज के आईने में नारी' पुस्तक में उन्होंने जिस तरह राष्ट्रीय पटल से वैश्विक क्षितिज तक नारी की स्थितियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है, वह जिज्ञासु पाठकों को महिलाओं की सामाजिक, राजनीति, क्रीड़ा, विज्ञान, मनोरंजन, आदि से संबंधित जानकारियाँ तथा आंकड़े प्रदान करने में सक्षम है।

अन्ततः उनके समस्त सूचनात्मक ज्ञानवर्धक साहित्य का अनुशीलन करने के पश्चात् निष्कर्षतः कहा जा सकता है, सूचना-भंडारण के इस युग में जिस तरह वर्तमान पीढ़ी आत्मिक उन्नति से विमुख होकर, भौतिक विकास को सर्वस्व मानते हुए, जीवन को दिशा प्रदान कर रही है, ऐसे में सकलानी जी की पुस्तकें उनके सूचना भंडार को समृद्ध करने में सहायक सिद्ध होंगी। उन्होंने अपने जीवन में पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं अनुभवों द्वारा जो कुछ भी अर्जित किया, उसे रात-दिन एककर लिखा और अपने परिश्रम से अर्जित जमापूंजी से प्रकाशित करके, सौंप दिया अपने परिचितों, पुस्तक प्रेमियों और पुस्तकालयों को। निःसंदेह सकलानी जी का कृतित्व भी उनके व्यक्तित्व की भाँति सुघढ़, सुव्यवस्थित एवं लीक से हटकर है। यद्यपि जीवन के चौथे आश्रम में चहलकदमी करते-करते वह थक-से गए हैं, किन्तु कलम संगिनी बनकर इनका उत्साह क्षीण नहीं होने देती और इन्हें प्रेरित करती रहती है, पढ़ने-लिखने के लिए, इसीलिए किन्नरों के जीवन से संबद्ध दुर्लभ सूचनाओं और उनकी व्यथा-कथा पर आधारित सकलानी जी की पुस्तक प्रकाशित होने वाली है, 'व्यथा का अमरजीवी हिजड़ा'। निःसंदेह अपनों के आघातों से आहत होकर वह भीतर-ही-भीतर टूटकर बिखरे भी, किन्तु अपने आत्मबल से उन्होंने स्वयं को समेटा और पुनः चलने लगे कलम के सहारे। आज भी अपने अधिकांश कार्य स्वयं करता हुआ स्वाभिमान से चल रहा है यह रचनाकार, कभी त्वरित गति से-कभी आहिस्ता-आहिस्ता...। वास्तव में सकलानी जी प्रेरणास्रोत हैं, हताश-निराश रोजगार की तलाश में भटकते, धन की लालसा में कुपथगामी बनते, स्वार्थवश चाटुकारिता करते हुए, जीवन के अनमोल क्षणों को व्यर्थ गंवाने वाले, असंख्य युवाओं तथा स्वयं को अक्षम मानने वाले बुजुर्गों के लिए।

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, एम.बी.रा.स्ना. महाविद्यालय, हल्द्वानी

कविता

बीत गया दिन

हेमंत गुप्ता

बीत गया दिन
खिड़की की राह
दबे पांव
सांझ चली आई है
लौट रहे हैं
पक्षी
अपने बसेरों में
कुछ खामोश हैं
कुछ मायूस
और कुछ
हर्ष का भाव समेटे हुए
अपने पंखों में
निश्चिंत
सांझ चली आई है
वृक्षों ने
धारण कर लिया है
मौन
धूप की तेजी से
कुम्हलाए चेहरे
खिलने लगे हैं
नन्हे-मुन्ने फूल
निकल पड़े हैं
घरों से
दौड़-भाग कर रहे हैं
यूं ही
या बाथरूम से ले आए हैं
चुरा कर धोबना
खेल रहे हैं
क्रिकेट
गली के नुक्कड़ पर
सांझ चली आई है
चांद
आसमान के किसी कोने में
प्रयासरत है
अपना डेरा जमाने को
विभावरी
उत्सुक है द्वार पर
देने को दस्तक
कब्जा कर लेना चाहती है
आंगन पर
कमरे में
मेरे बिस्तर पर
मेरी किताबों की अलमारी पर
पूरे घर पर
सांझ चली आई है

दिनभर की थकन से चूर
मेरी भावनाएं
असमंजस में हैं
हो रही हैं
आतुर
मुझे अलविदा कह कर
आराम करने को
और मेरे दबाव
व्याकुल हैं
जीवंत होने के लिए
अस्फुट
सांझ चली आई है
सांझ चली आई है
खिड़की की राह
दबे पांव
बीत गया दिन।

ए-101, जयश्री विहार, घेगड़ा पुलिया के पास, कैथून रोड, कोटा, राजस्थान-324 003

आलेख

नई नवेली दुल्हनों का सावन भादों

◆ बलबीर ठाकुर

कहीं सावन तो कहीं भादों में सास नहीं मिलती नयी दुल्हन से। सावन को लेरा व भादों को काला महीना के नाम से जाना जाता है अभी भी।

सावन चढ़या धिया आइयाँ सबने रलमिल पिंगा पाईया

हिमाचल प्रदेश में सैकड़ों देवी-देवताओं के वास के कारण इसे देवभूमि के नाम से जाना जाता है। यहां के रीति-रिवाजों व परम्पराओं का अपना ही एक विशेष महत्व है। अपनी अपनी धार्मिक आस्था के साथ-साथ हर क्षेत्र की अपनी-अपनी परम्पराएं है। प्रदेश के हर कोने को अलग-अलग संस्कृति से पहचाना जाता है। ऐसी ही एक परम्परा सोलन जिले के हँडुर, चंगर व महलोग क्षेत्र में है जहां पर सावन के पवित्र माह में नई दुल्हन को सास से मिलने नहीं दिया जाता। प्रदेश में अभी भी सावन माह को लेरा महीना व भादों माह को काला महीना के नाम से जाना जाता है। जिस दुल्हन का यह सावन या भादों महीना पहला होता है वह अपनी सास से दूर मायके में रहती है।

प्रदेश के कई मैदानी क्षेत्रों में यह पहले सावन वाली दुल्हन सावन सक्रांति से एक दो दिन पहले ही अपने ससुराल को छोड़ सास से दूर मायके चली जाती है। यह परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है। ऐसे ही कई स्थानों पर भादों माह यानी काला महीना में नई दुल्हन को सास से मिलने नहीं दिया जाता और वह भी अपने मायके चली जाती है। नई दुल्हनों के लिए इन महीनों का अपना ही एक विशेष महत्व है क्योंकि जहां ससुराल में यह नई दुल्हन अपनी खुशियां साथ लेकर आती है। नए परिवार में आकर रहना और वहां खुशियां बिखेरना। वहीं इनका मायके में भी बेसब्री से इंतजार रहता है। संक्राति से पहले यह नई सभी दुल्हनें अपने मायके पहुंच जाती हैं। वहां पर वह अपनी सहेलियों से मिलकर अपने नए संसार का वर्णन सुनाती हैं। और गांव में डाले गए सांझे झूले का भी आनंद लेती हैं। और सावन सम्बधी गाने गाकर अपनी खुशी को जगजाहिर करती हैं। एक कहावत अभी भी चलती है 'सावन चढ़या धियाँ आइयाँ सबने रलमिल पिंगा पाइयाँ' अर्थात सावन के झूलो की असली महक तो घर की बेटियों से होती है। और बेटी आने की खुशी में तो कई स्थानों पर उसके स्वागत के लिए घर मे अनेकों व्यजन बनाये जाते हैं। एक तरफ मायके की खुशी तो दूसरी तरफ अपने पति व ससुराल से दूर रहने का गम। फिर यह नई दुल्हन तीज के त्योहार का बेसब्री से इंतजार करती है। क्योंकि उसका राजकुमार तीज के दिन उसके लिए त्योहार लेकर आता है। वह नए वस्त्र, सुहाग का सामान, चूड़ियां, अनेकों मिठाईयां व गहने लेकर जाता है। दामाद के इंतजार में परिवार वाले उसके स्वागत की तैयारी करते हैं और दामाद की पूरी सेवा ससुराल में होती है। फिर जब सावन माह समाप्त हो जाता है तो दुल्हन को अपने घर लाने के लिए किसी पंडित से मुहूर्त निकलवाकर दिन तय किया जाता है। और वह तय तिथि में उसका राजकुमार अपने घर लाता है।लेकिन अब यह परम्परा लुप्त होती जा रही है। मोबाइल फोन क्रांति व पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के चलते अब नई पीढ़ी अपनी संस्कृति में कम विश्वास रखती है।

शहरों से दूर गांवों में यह संक्रांति झलकती है और सावन के झूले भी कहीं कहीं नजर आते हैं। एक समय में पूरे गांव में एक सांझा झूला डाला जाता था गांव की सभी लड़कियां शाम ढलते ही सावन झूले पर गीत गाती थीं। लेकिन अब तो यह सब कहानियां बनकर रह गयी हैं। अब तो नई दुल्हन को मायके भेजने की बजाय सास को ही उसके मायके भेज कर पुराने दिन याद करवा देते हैं। हमारे ही जिला सोलन में यह परम्परा दोनों माह में मनाई जाती है मैदानी क्षेत्र में सावन माह में और पहाड़ी क्षेत्र में भादों माह में यह परम्परा मनाई जाती है। एक परम्परा के अनुसार सावन माह पूरे वर्ष में सबसे पवित्र माह माना जाता है जो कार्य पूरे साल में नहीं होते इस माह में हो जाते हैं। इस बार कोरोना वायरस की मार झूलो पर तो पड़ेगी ही लेकिन लॉकडाउन के चलते शादियां भी बहुत कम हुई। यह कोरोना वायरस काफी हद तक इस सावन को प्रभावित कर रहा है। क्योंकि पड़ोसी राज्यो से आने वाली नई दुल्हनों को भी क्वारंटिन होना पड़ेगा। मंदिरों में भी बहुत कम लोग जा रहे है। जबकि सावन माह में तो सारा महीना ही कई लोग मन्दिर में जल चढ़ाने जाते थे। लेकिन फिर भी कुछ लोगों के कारण अभी भी हमारी यह संस्कृति जिंदा है। बरोटीवाला के मशहूर आचार्य हर्षवर्धन के अनुसार यह परम्परा भगवान श्री कृष्ण के युग से चली आ रही है। इस परम्परा के पीछे भी कई धार्मिक विचार है। हमें इन परम्पराओं को जीवित रखना होगा।

**संवाददाता, पंजाब केसरी, झाड़माजरी, तहसील बद्दी,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश**

आलेख

'हर घर बने पाठशाला' प्रदेश सरकार की बेहतरीन पहल

◆ संजय कुमार

हिमाचल प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में देश भर में अव्वल है। यहां सरकार द्वारा शिक्षा का अधिकार(आर टी ई) के उद्देश्यों को अक्षरशः लागू करने का प्रयास किया गया है जिस के परिणाम स्वरूप प्रदेश का बच्चा बच्चा स्कूल में दाखिल हुआ है। प्रदेश में शिक्षा की इस सुंदर तस्वीर को राष्ट्रीय आंकड़े स्वयं दर्शाते हैं। विशेष आवश्यकता वाले दिव्यांग और बालिका शिक्षा इससे सबसे ज्यादा लाभान्वित हुए है। स्वयं यू-डाइस से प्राप्त डेटा भी ये बताता है कि गुणवत्ता शिक्षा के साथ साथ स्कूली आधारभूत ढांचे और सुविधाओं में भी इजाफा हुआ है। छात्र-अध्यापक अनुपात सर्वाधिक होने के साथ साथ यहां शिक्षा के प्रति जन जागरूकता भी बढ़ी है व अभिभावक अपने बच्चे का शिक्षा स्तर जानने के लिए अब सरकारी स्कूलों की बैठकों व प्रशिक्षणों में जाना सुनिश्चित करने लगे हैं।

हाल ही में कोविड-19 के कहर से पूरी दुनिया सहम सी गई है व प्रगति- चक्र प्रभावित हुआ है। ऐसे में प्रदेश के सरकारी स्कूलों के बच्चों की पढ़ाई पीछे न छूट जाए, इस हेतु प्रदेश सरकार ने अनूठी पहल की है। महामारी के दौरान प्रदेश के दूर दराज के क्षेत्रों के घर बैठे हुए बच्चों को भी पढ़ाई से जोड़े रखा जा सके, इस हेतु प्रदेश सरकार ने शिक्षा को जारी रखने का अभियान चलाया है। इस हेतु समय और पाठ्य सामग्री तय करते हुए सरकार ने एक कदम आगे जा कर शिक्षकों हेतु भी आवश्यक मार्गदर्शिका व दिशानिर्देश तय किये गए हैं। शिक्षा के प्रति अपनी गंभीरता दिखाते हुए शिक्षा विभाग द्वारा बाकायदा 'समय दस से बारह वाला, हर घर बने पाठशाला' नामक कार्यक्रम बनाया गया है जिसके अंतर्गत प्रदेश के समस्त स्कूली बच्चों के लिए सुबह 10 से 12 बजे तक ऑनलाइन वीडियो व व्हाट्सएप्प के माध्यम से पढ़ाई करवाई जाती है व साथ ही उन्हें अभ्यास कार्य भी करने को मिलता है, जिस से बच्चों को घर बैठे ही अध्ययन करवाना सुनिश्चित किया जा रहा है। उधर विभाग ने इस हेतु राज्य शिक्षा निदेशालय की ओर से वेबसाइट भी लांच कर दी है जिस के अंतर्गत कक्षा एक से ले कर बाहरवीं तक के बच्चे के आधारभूत पाठ्य विषय हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, संस्कृत आदि का अध्यापन सुनिश्चित किया गया है। ऑनलाइन पढ़ाई होने से एक तो बच्चों की पढ़ाई में भी बाधा नही पड़ेगी, दूसरा बच्चे घर में रह कर इस कोविड-19 जैसी जानलेवा बीमारी से भी बचे रहेंगे। सरकार द्वारा इस हेतु व्यापक योजना भी बनाई गई है जिसके अंतर्गत विभाग के माध्यम से रोज सुबह 9 बजे तक प्रत्येक कक्षा की पाठ्यसामग्री और अभ्यास कार्य स्कूल मुखियाओं के पास पहुंच जाता है व इसे वे शिक्षकों के माध्यम से प्रत्येक बच्चे के अविभावकों तक व्हाट्सएप्प के माध्यम से समय पर पहुंचाना सुनिश्चित करते हैं। ये सामग्री इतनी सरल तरीके से स्वयम् निर्देशित होती है कि कोई भी अभिभावक या बच्चा दिए गए लिंक पर क्लिक कर के अपनी कक्षा के प्रत्येक विषय का पठन व वीडियो देख-सुन सकता है व तत्पश्चात अपना अभ्यास कार्य कर सकता है। पढ़ने के पश्चात यदि फिर भी विषयवस्तु बच्चे की समझ मे नहीं आ रही है तो इस हेतु पुनः अध्यापकों से फोन के माध्यम से सम्पर्क किया जा सकता है। दिए गए गृहकार्य, जो कि अत्यंत सरल व थोड़ा सा ही होता है, को शाम तक अध्यापकों के पास चेक करवाने हेतु भेजना होता है जिसे अध्यापक चेक करके त्रुटियों से व्हाट्सएप्प के माध्यम से ही बच्चों को अवगत करवा कर निर्देशित करते हैं।

सरकार द्वारा 'हर घर बने पाठशाला' को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए अविभावकों, शिक्षकों और विभाग के उच्चाधिकारियों की भूमिका तय करते हुए उन्हें दिशानिर्देशित किया गया है। इस अनूठी पहल में सब से पहले आग्रह अविभावकों से किया गया है कि उन्हें अपने बच्चे को उस के स्कूल के अध्यापक द्वारा बनाये गए व्हाट्सएप्प ग्रुप से जोड़ना होगा। तत्पश्चात सुबह 10 बजे से 12 बजे तक बच्चे को मोबाइल के माध्यम से पाठ्य सामग्री दिखाना और करवाना उनके माध्यम से सुनिश्चित किया गया है। दूसरे स्तर पर शिक्षकों को अपनी कक्षा के सभी अविभावकों को व्हाट्सएप्प ग्रुप में जोड़ना होगा और समय पर पाठ्यसामग्री भेजनी होगी। उन्हें बच्चों के गृहकार्य को चेक करना और खास उनके लिए बनाए गए 'ऑनलाइन मोनिटरिंग फॉर्म' को शाम तक भर कर वापिस उच्चाधिकारियों को भेजना होगा। इस फॉर्म में उनके

ऑनलाइन शिक्षा आज के विपत्ति के इस दौर में एक बेहतरीन विकल्प है, जिसे प्रत्येक स्तर पर बाखूबी निभाया जा रहा है। यद्यपि ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करना अपने आप में सम्पूर्ण नहीं है क्योंकि जो शिक्षा एक बालक को स्कूली कक्षा के माध्यम से दी जा सकती है वह दुनिया के किसी अन्य माध्यम से प्रदान से नहीं की जा सकती। ऑनलाइन माध्यम से मात्र विषयवस्तु का आदान-प्रदान किया जा सकता है,परन्तु बच्चे का सम्पूर्ण शिक्षित और विकसित होना इस के द्वारा संभव नहीं। साथ ही व्हाट्सएप्प का माध्यम सिर्फ सूचना प्रदान करना हो सकता है, सम्पूर्ण ऑनलाइन व्यवस्था व्हाट्सएप्प ही नहीं है।

द्वारा विषयानुसार पाठ्य विषय वस्तु का आकलन किया जाएगा और इस से सम्बंधित 'टीचर एप्प' पर भी निर्धारित साप्ताहिक कोर्स पूर्ण करने होंगे। उच्चाधिकारियों को भी इन्ही चरणों से क्रमशः गुजरना होगा व अधीनस्थ कर्मचारियों को समय पर सुविधा प्रदान करवाना होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा की गई ये पहल इस लिए भी अनूठी है कि इस से पूर्व प्रारम्भिक व उच्च शिक्षा विभाग में इस तरह की ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने की विधा पर कभी विचार नही हुआ। सरकारी प्रयासों से प्रथम बार शिक्षक, अविभावक ओर विभाग एक लक्ष्य के साथ जुड़ा है। विभागीय आंकड़ों के अनुसार कक्षा एक से बारह तक के लगभग 70 फीसदी बच्चे व्हाट्सएप्प के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा से जुड़े हैं जो कि हिमाचल जैसे दुर्गम पहाड़ी राज्य के लिए गर्व का विषय है। शिक्षक सीधे रूप से अविभावकों से जुड़े हैं व अविभावकों को भी अब पता चल गया है कि अध्ययन-अध्यापन कितना मुश्किल कार्य है और उनका बच्चा किन परिस्थितियों में अध्ययन करता है। अध्यापकों और अविभावकों के परस्पर सहयोग से ही ये ऑनलाइन शिक्षा बच्चों को मिलनी तय हो पा रही है। अभिभावक ये जान गए हैं कि किस तरह सरकारी शिक्षक एवम् व्यवस्था इस जानलेवा महामारी के कठिन दौर में भी उनके बच्चे की बेहतरी के लिये काम कर रहे हैं। कुल मिला कर अध्यापकों और अभिभावकों में परस्पर सहयोग, निष्ठा, पारदर्शिता और एक दूसरे पर विश्वास बढ़ा है।

उधर बच्चे भी इस दौरान ऑनलाइन शिक्षा हेतु स्वयं तैयार हो रहे हैं। नित्यप्रति अपना गृह कार्य अपने माता -पिता के मोबाइल में देखना, उसे समझना, करना व उस के बाद अभ्यास कार्य को अपने अध्यापकों के पास ऑनलाइन भेजना अपनी जिम्मेदारी समझने लगे हैं। इस तरह से सरकारी स्कूलों के बच्चे एक तो जिम्मेदार बन रहे, दूसरे वे तकनीकी तौर पर भी अपने आप को सक्षम कर रहे। अब वे अपना समय मोबाइल पर गेम्स खेलने या कार्टून देखने पर बिताने की बजाय पाठ्य सामग्री के अध्ययन पर लगा रहे। इस से अविभावक भी खुश हैं और शिक्षकों के लिये भी विषय वस्तु का अध्यापन कुछ हद तक सरल हुआ है।

विभागीय स्तर पर भी जिम्मेदारी और मार्गदर्शन से विभागीय तालमेल बढ़ा है। घर बैठे अध्यापन कार्य करने से एक ओर जहाँ कुछ हद तक स्वच्छंदता मिली है वहीं नित्यप्रति विभागीय मॉनिटरिंग शिक्षण कार्य में गुणवत्ता, सुनिश्चितता और सहभागिता पर भी जोर दिया जा रहा है। अतः विभागीय जवाबदेही भी सुनिश्चित हुई है।

अतः संक्षेप में कहा जाए तो ऑनलाइन शिक्षा आज के विपत्ति के इस दौर में एक बेहतरीन विकल्प है, जिसे प्रत्येक स्तर पर बाखूबी निभाया जा रहा है। यद्यपि ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करना अपने आप में सम्पूर्ण नहीं है क्योंकि जो शिक्षा एक बालक को स्कूली कक्षा के माध्यम से दी जा सकती है वह दुनिया के किसी अन्य माध्यम से प्रदान करने से नहीं दी जा सकती। ऑनलाइन माध्यम से मात्र विषयवस्तु का आदान प्रदान किया जा सकता है, परन्तु बच्चे का सम्पूर्ण शिक्षित और विकसित होना इस के द्वारा संभव नहीं। साथ ही व्हाट्सएप्प का माध्यम सिर्फ सूचना प्रदान करना हो सकता है, सम्पूर्ण ऑनलाइन व्यवस्था व्हाट्सएप्प ही नहीं है। हमें प्रदेश में अधिकतर इंटरनेट की असुविधा और सिग्नल की परेशानी के चलते ऑनलाइन शिक्षा की अन्य संभावनाओं जैसे दूरदर्शन, रेडियो, फोन-इन आदि पर भी विचार करना होगा। साथ ही ऑनलाइन शिक्षा से उपजे बच्चों के स्वास्थ्य और मनोभावों के बदलाव सम्बन्धी दुष्प्रभावों को भी समय रहते भांप कर उनके निदान हेतु उपाय करने होंगे। माता-पिता की आय और सामर्थ्य को भी ध्यान में रखना होगा क्योंकि हर माता पिता एंड्रॉयड या स्मार्ट फोन नहीं रख सकते या नेट खरीदना उनके लिये मुश्किल होगा। साथ ही ये बच्चे के मुफ्त शिक्षा प्राप्त करने के अधिकारों से भी विपरीत होगा। अतः सरकार को भी बच्चों हेतु चलाई जा रही अन्य योजनाओं या छात्रवृत्तियों से आगे सोच कर ऑनलाइन शिक्षा पर व्यय बढ़ाना होगा ताकि सही मायने में प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक रूप के आगे बढ़े।

**गाँव बनोरडू (योल केम्प), तहसील धर्मशाला जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश-176052, मो. 0 94184 94041**

साहित्य में मेघ वर्णन

घन घमंड गर्जत घन घोरा

◆ **श्याम नारायण श्रीवास्तव**

जेठ माह की भीषण गर्मी के प्रभाव से तपती धरती और धरती के लोग, क्या सम्पूर्ण परिवेश जब बढ़ते तापमान से विकल हो उठता हैं तब हरियाली से लुप्त होती धरती की निगाहें आसमान की ओर झांकने लगती हैं। कब आएंगे भूरे -काले बादल और तृप्त करेंगे अपने अमृत जल कण से। गर्मी से आकुल जन जीवन, व्याकुल पशु-पक्षी सब निहारते है उस मेघ को गगन की ओर।

और फिर ऐसे में एक दिन जब आता है आषाढ़ का महीना तो महाकवि कालिदास का वह संदेश वाहक 'मेघ' दस्तक देता है। अपनी विशेष गर्जना के साथ कहता है, "लो मैं आ गया। तुम्हारी प्यास बुझाने तुम्हारी आस पूरी करने।" जिसकी दस्तक से अगवानी करने को खुल जाते हैं न जाने कितने द्वार। किसानों के, पशु-पक्षियों के, बाग-बगीचों के, पेड़ों के, पौधों के। लोगों का विश्वास जाग उठता है मेघ आयें हैं, जल वर्षा करेंगे। भीगेगी धरती और घटेगा ताप। खेतों में पानी होगा तो किसानों की किसानी भी होगी। प्रारम्भ होगी प्रकृति के सृजन की प्रक्रिया।

और ऐसे ही दस्तक में अगवानी को उठ जाती है साहित्यकार की लेखनी भी। जिस परिवेश को देख कवि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी कहते हैं। देखो काले कजरारे बादल कैसा बन ठन कर आये हैं। लगता है जैसे पाहुन आये हों और उनके स्वागत में बुजुर्ग से लेकर बच्चे तक सभी व्यस्त हो गये हैं। वे लिखते हैं ----

मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के
आगे-आगे नाचती गाती बयार चली
दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगीं गली गली
पाहुन ज्यों आये हों गाँव में शहर के
मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के

यहाँ इस कविता में मेघ के स्वागत की तुलना पाहुन के स्वागत से की गई है। विशेष कर गांवों में तो जैसे पूरा गांव ही पाहुन के स्वागत में जुट जाता है। मेघ शहर से जैसे किसी जमाई की तरह सज संवर कर आया है। और हवा उसके स्वागत में आगे-आगे नाचती गाती हुई चल रही है। लोग दरवाजे और खिड़कियाँ खोलकर जैसे उसे एक झलक देखना चाहते हैं --

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाये
आंधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये
बांकी चितवन उठा, नदी ठिठकी घूंघट सरके
मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।

और मेघ की अगवानी में बूढ़ा पीपल आगे बढ़कर मेघ को जय जोहर करता है तो लताएँ किवाड़ की ओट से व्याकुल हो पूछती हैं। पाहुन बहुत दिनों बाद सुध लिया है। सच भी तो है ये मेघ, ठिठुरन भरी ठंड और नवतपा के भीषण गर्मी के पश्चात् ही तो सुध लेते हैं धरती की।

साहित्य में ऋतुओं के आगमन और प्रकृति परिवर्तन पर कवियों की लेखनी कभी चुप नहीं रही। आकाश में काले भूरे बादल देख कर लेखक की लेखनी भी कुछ न कुछ रचने को वैसे ही विकल हो उठती है जैसे सावन में विरह से व्याकुल नायिका अपने नायक से मिलने को आतुर रहती है।

यों तो सभी ऋतुओं की अपनी उपयोगिता है। लेकिन वर्षा ऋतु प्रकृति के सृजन की ऋतु है। हमारे जीवन में चार माह आषाढ़, सावन, भादों, क्वार का अपना विशेष महत्व है। एक पुरानी लोक कथा प्रचलित है कि एक बार राजा अकबर ने अपने दरबार में एक प्रश्न किया। बारह में से यदि चार निकाल दिए जाएँ तो कितने बचेंगे। दरबारियों ने कहा आठ। लेकिन राजा का आशय समझते हुए उनके कुशल बुद्धिमान मंत्री बीरबल ने कहा, 'महाराज बारह में से चार घटा देंगे तो कुछ भी नहीं बचेगा अर्थात साल के बारह महीने में से यदि वर्षा के चार माह निकाल दिए जायें तो निश्चय ही जन जीवन शेष नहीं रह जायेगा। मात्र कुछ अवशेष ही बचेगा।'

यों तो सभी ऋतुओं की अपनी उपयोगिता है। लेकिन वर्षा ऋतु प्रकृति के सृजन की ऋतु है। हमारे जीवन में चार माह आषाढ़, सावन, भादों, क्वार का अपना विशेष महत्व है। एक पुरानी लोक कथा प्रचलित है कि एक बार राजा अकबर ने अपने दरबार में एक प्रश्न किया। बारह में से यदि चार निकाल दिए जाएँ तो कितने बचेंगे। दरबारियों ने कहा आठ। लेकिन राजा का आशय समझते हुए उनके कुशल बुद्धिमान मंत्री बीरबल ने कहा, "महाराज बारह में से चार घटा देंगे तो कुछ भी नहीं बचेगा अर्थात साल

के बारह महीने में से यदि वर्षा के चार माह निकाल दिए जायें तो निश्चय ही जन जीवन शेष नहीं रह जायेगा। मात्र कुछ अवशेष ही बचेगा।

साहित्य में छायावादी कवयित्री 'मैं नीर भरी दुःख बदरी' कहने वाली महादेवी वर्मा बादलों को देख कर लिखती हैं :

कहाँ से आये बादल काले
कजरारे मतवाले
शूल भरा जल धूल भरा नभ
झुलसी देख दिशाएं निष्प्रभ
सागर में क्या सो न सके यह
करुणा के रखवाले

और फिर उपरोक्त प्रश्न का उत्तर तब प्राप्त होता है जब हिंदी साहित्य में मेघ का वर्णन करते हुए बाबा नागार्जुन कहते हैं। ये बादल रूपी पाहुन कहाँ से बन ठनकर आये हैं मैं जानता हूँ। वे लिखते हैं ---

बादल को घिरते देखा है
अमल धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है
छोटे छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है

घुम्मकड़ स्वभाव के कवि बाबा नागार्जुन ने देश ही नहीं विदेश में भी घूम-घूमकर प्रकृति की लीला को बहुत निकट से महसूस किया है। तभी वे कहते हैं। "मैंने स्वच्छ उज्ज्वल हिमालय के शिखरों पर बादल को घिरते देखा है" ---

तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी बड़ी कई झीलें हैं
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों से आ आकर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त मधुर विष तन्तु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है

छायावाद के दूसरे आधार स्तंभ सुमित्रानंदन जी ने बादल ही नहीं उसमें चमकती चांदी की रेखा अर्थात दमकती दामिनी को भी देखा है। वे कहते हैं कि मैंने भी देखा है ----

सुनता हूँ मैंने भी देखा हूँ
काले बादल में रहती चांदी की रेखा
काले बादल जाती द्वेष के
काले बादल विश्व क्लेश के
काले बादल उठते पथ पर
नव स्वतंत्रता के प्रवेश पर
सुनता हूँ मैंने भी देखा हूँ

घाघ भंडरी ने तो पूरे मौसम विज्ञान को ही अपनी कविताओं में समेट दिया था। बादल कब आयेंगे। कब तक रहेंगे। कब बरसेंगे। वे कहते है :

अम्बा झोर चले पुरवाई , तब जानो वर्षा ऋतु आई।

और जब पानी नहीं बरसता तो कहते हैं।

रात निर्मली दिन को छाहीं, घाघ कहे अब वर्षा नाही।

एक जगह आगे कहते है :

शुक्र की छाई बादरी , रही सनीचर छाय
घाघ कहे सुन घाघनी बिन बरसे न जाय

जीवन में आज भी बहुत सी कहावतें सच हो जाती हैं, तो बहुत कुछ सच के दायरे दूर भी। लेकिन जब ये बादल आते हैं। और तप्त प्यासी धरती के आंचल को अपने अमृत जल कण के बौछार से भिगोते हैं तो धरा से उठती है भीनी-भीनी महक। सम्पूर्ण वातावरण खुशियों से भर जाता है। जल कण अर्थात ये बूदें जब आंगन में गिरती हैं तो ऐसा प्रतीत होता कि ये धरती से मिल कर खुशी में नाच उठी हैं। ऐसे में मुझे अपना ही एक छंद याद आता है कि ---

वरखा के स्वागत में भीनी भीनी गंध उठी
देखो जलकण आंगन में ठुमके नाचे लगे
झरना औ झींगुर देखो अलि गुंजहिं मत्त यहाँ
कल-कल, कुल-कुल सा बाजन बजे लगे
कहें श्याम शुक पिक चातक से गायक यहाँ
मधुर-मधुर गीत गावन तबै लगे
आम्र जम्बु नीम पक महकन यों लगे
मानों बरखा के स्वागत में व्यंजन पके लगे

हिंदी साहित्य में प्रगतिवादी विचार धारा के महत्वपूर्ण कवि त्रिलोचन जी जहाँ ग्राम्य जीवन, किसान व प्रकृति को कविता में उचित स्थान देते हैं वहीं वे बादल से बतियाते हैं। उनकी कविता के बादल सूने आसमान में चित्र बनाते हैं। बहुत सुंदर मानवीकरण है। जैसे सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कहते है। मेघ आये बड़े बन ठन कर यानि पाहुन की तरह, एक विशेष मेहमान की तरह। त्रिलोचन जी उसी क्रम को आगे बढ़ाते हैं। वे बादल जो पाहुन बनकर आये थे। अब वे बादल चले गये हैं। त्रिलोचन शास्त्री जी 'धरती' काव्य संग्रह में लिखते हैं ...

बना बनाकर चित्र सलोने
यह सूना आकाश सजाया
राग दिखाया, रंग दिखाया
क्षण-क्षण छवि से चित्र चुराया
बादल चले गये वे

दो दिन सुख के
दो दिन दुःख के
कभी हास है कभी अश्रु है
जीवन नवल तरंगी जल में
बादल चले गये वे
दो दिन पाहुन जैसे रहकर

त्रिलोचन ने देखा कि पाहुन से आये मेघ अपनी स्मृतियाँ छोड़ कर चले गये। जैसे दो दिन के लिए पाहुन आकर चले जाते हैं। सच है बादल आते हैं जाते हैं। बहुत बड़ी धरती है, उन्हें हर घर में जाना है। इन्ही बादलों से घिरी भादों माह की अष्टमी की रात्रि में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। पौराणिक कथाओं में वर्णित है कि पिता वासुदेव जब बालक कृष्ण को मथुरा से गोकुल ले जा रहे थे। भादों के कृष्ण पक्ष की इस अष्टमी को घनघोर वर्षा हो रही थी। साहित्य में बहुत से रचनाकारों ने उस सन्दर्भ का सजीव वर्णन किया है। आज हिंदी ही नहीं किसी भी अन्य भाषा के साहित्य में ऋतु वर्णन को देखा जाये तो उसमें दो ही ऋतुओं पर अधिक लिखा गया है। एक वसंत दूसरा पावस अर्थात वर्षा ऋतु। वैसे वर्षा ऋतु है भी बहुत सुखदायी। ग्रीष्म ऋतु के तपते भास्कर की किरणों से झुलसी हुई धरा के ऊपर जब काले भूरे बादल आकाश में छा जाते हैं और वर्षा करते हैं तो अमृत की बूंदों से धरती का वातावरण सुहाना हो जाता है। वन उपवन, खेत हरे भरे हो जाते हैं। सूखे तालाब और कुएं भर जाते हैं, नदियाँ भर कर इतराने लगती हैं।

ऐसे ही अवसर पर गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं ---

छुद्र नदी भरि चली तोराई
जस थोरे धन खल इतराई
समिट-समिट जल भरहिं तलावा
जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा
वर्षा के आगमन पर गोस्वामी जी कहते हैं ---
कृषि निवारहिं चतुर किसाना
जिमि बुध तजहिं मोह मद माना

और इसी में किसान का परिवार जब खेती किसानी से थोड़ी सी राहत पाता है तो वर्षा ऋतु द्वारा अपने साथ लाये गये तमाम पर्वों में खो जाता है अपनी थकान मिटाने के लिए। जिसमें हरेली, नागपंचमी, कजरी तीज, रक्षाबन्धन, कृष्ण जन्माष्टमी जैसे महत्वपूर्ण पर्व इसी वर्षा आगमन के पश्चात् मनाये जाते हैं।

सावन आते ही पेड़ों पर झूले पड़ जाते हैं। इसी में बहू-बेटियों के अपने मायके आने-जाने का भी रिवाज है। कई प्रदेशों में सावन में कजरी गाई जाती है। लोक धुन में झूले पर बैठी महिलाएं जब कजरी गाती हैं तो सारा गाँव संगीत मय हो उठता है। बहुत दिनों के बाद मिली सखियाँ इन गीतों में अपने सुख दुःख वर्णन कर जाती हैं। स्थितियों का बयान करती हैं।

एक चर्चित गीत है ---

कैसे खेले जईबू सावन मा कजरिया
बदरिया घिरी आई ननदी
तू तो जात हौ अकेली, केहू संग न सहेली
छैला रोक लेई हैं तोहरी डगरिया
बदरिया घेरे आवे ननदी

सीता की खोज में भगवान राम छोटे भाई लक्ष्मण के साथ बैठे हैं। आकाश बादलों से घिरा हुआ है। और ऐसे में एक दिन जब वर्षा हो रही है तो गोस्वामी तुलसी दास जी दोनों भाइयों के वार्तालाप को लिखते है

कहत अनुज सन कथा अनेका
भगति विरत नृप नीति विवेका
वर्षा काल मेघ नभ छाये
गर्जत लागत परम सुहाए

और ये बादल जो गरजते हुए परम सुहावने लग रहे हैं। यही अगले क्षण जब अचानक गर्जना तेज हो जाती है और राम को सीता की याद आ जाती है तो गोस्वामी जी लिखते हैं ----

घन घमंड गरजत घनघोरा
प्रिया हीन डरपत मन मोरा

इसी दृश्य को सावन में झूले पर बैठी सखियाँ जब कजरी गाती हैं तो पूरा एक दृश्य खड़ा हो जाता है --- कजरी है कि

लक्ष्मण कहाँ जानकी होई हैं ऐसी विकट अंधेरिया न
भीजत गात पात हे तात कि रात में चलत बयरिया न

महाकवि कालिदास अपनी कृत 'ऋतु संहारम' में परम सुहावन वर्षा आगमन का सजीव चित्रण करते हैं तो वही 'मेघदूतम' कालिदास की वियोग शृंगार प्रधान एक प्रसिद्ध कृति है जिसमें एक यक्ष स्वर्ग लोक से पृथ्वी पर कुछ समय हेतु निष्कासित कर दिया जाता है। ऐसे में वह यक्ष अपनी व्यथा कथा को अपनी प्रेयसी तक प्रेषित करने के लिए इन्हीं मेघ का सहारा लेता है। दूत बन कर जाता है ये मेघ।

इस प्रकार साहित्य में मेघ वर्णन बहुत कवियों ने किया है। आवागमन प्रकृति का शाश्वत नियम है। यह तो सच है कि जीवन में प्रत्येक क्रिया पर प्रतिक्रिया होती ही है। हम प्रकृति को नष्ट करते हैं तो वह भी हमें तमाम कष्ट भोगने के लिए बाध्य कर देती है। कवि अपनी कविता में कितना भी मेघ वर्णन करे, आखिर जब आसमान में मेघ होंगे तभी तो ये रचनाएँ होंगी। सच तो यह है यदि वर्षा ऋतु का हमें भरपूर आनन्द लेना है तो हमें प्रकृति के संरक्षण पर भी सदैव गम्भीरता से विचार करना होगा। तभी हम सबका संरक्षण भी सम्भव है। तभी जीवित रहेंगे हमारे पर्व , हमारे त्योहार, हमारी लोक संस्कृति। जीवित रहेगी धरती पर सृजन की प्रक्रिया और साथ-साथ साहित्य में मेघ वर्णन भी।

सम्पर्क-बी.एफ. 1 जिंदल स्टील एंड पावर लि. रायगढ़, छत्तीसगढ़-496001, मो. 0 79996 52646

माह के कवि
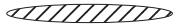
राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविताएं

इतिहास का इतिहास

आजादी से पहले / इतिहास के पन्नों पर
गिरता रहा खून/ वे लथपथ हुए
और सूखकर चिपक गए
एक दूसरे से / सही इतिहास ओझल रहा
हमारी नजरों से / आजादी के बाद
गिर गया पानी / इतिहास के पन्नों पर
और हम पानी पानी हुए / देखते रहे इतिहास को
पानी में जाते / इतिहास से ज्यादा
अपनी पहचान के लिए / दूसरा कोई नहीं तड़पा है
हमारे इस मुल्ख में/ इतिहास का इतिहास बनना
इतिहास के हाथों में है/ उसी को उठाने होंगे कड़े कदम
अपने इतिहास के लिए।

प्रश्न और उत्तर के बीच

तुम कुछ प्रश्नों के उत्तर / ढूंढ़ने के लिए निकले हो
प्रश्न उलझा रहे हैं ले रहे हैं मजा
कि तुम कैसे पागलों की तरह
ढूंढ़ रहे हो उनके उत्तर/ कभी यहां कभी वहां
प्रश्न ठहाके मार रहे हैं/ प्रश्न देख रहे हैं कि
तुम्हारे दिन का चैन खो गया है
और रातों की नींद भी/ तुम नहीं बता पा रहे हो
किसी के पूछने पर भी/ कि बात आखिर क्या है
बात आखिर है भी क्या/ प्रश्न हंस रहे हैं मजाकिया हंसी
प्रश्न जानते हैं उत्तर/ क्योंकि उत्तर हैं तभी तो प्रश्न हैं
भला ऐसे भी कोई प्रश्न होते हैं
जिनके उत्तर न हों / तो तुम गलत नहीं हो
प्रश्न हैं तो उत्तर तो हैं ही/ तुम्हारा उत्तर ढूंढ़ना ठीक ही है
उत्तर हैं इनके निश्चित/ प्रश्न लगातार हंस रहे हैं
वे जानते हैं / उनके उत्तर कहां हैं/ उत्तर हैं तभी तो प्रश्न हैं/
और इतना भर तो तुम जानते ही हो
कि ये प्रश्न कहां की उपज हैं।

पृथ्वी के साथ हमारी बात

हम बचा नहीं पाये पर्यावरण
या पचा नहीं पाये पृथ्वी का औदार्य
हमारा किया धरा/ माफ करना वसुन्धरा
यह हमने आज तक नहीं कहा
हम उन्मादी आत्महन्ता हैं
मौत को ललकार रहे हैं / अपने बनाये खिलौनों से

तुम्हारे लगभग सभी कोनों से
तुम पर खड़े होकर तुमको लतियाना
अपनी तुच्छता पर अहं का रंग चढ़ाना
आकार में हमारे अपराध/ तुमसे भी बड़े हो रहे हैं
जो हमारी छद्म उन्नति के रूप में
खड़े हैं हमारे सामने / तुम्हारी माफ करने की हदें
कहाॅं तक हैं बता दो हमें/ या फिर अपनी जैसी किसी
दूसरी पृथ्वी का पता दो/ हमसे नहीं रहा जा रहा
तुम्हारी सहनशीलता को / सच में नहीं सहा जा रहा।

हमारे होने से

मंगल पर जल की आशा बलवती हुई है
प्लूटो पर नीला आकाश
और जल-जीवन की अपार संभावना
कल को हो सकता है / हम पृथ्वी से मंगल की ओर हों
हम पृथ्वी से प्लूटो की ओर हों
हमें जरूरत है कुछ खुली जगहों की
अपने लिए-अपनी नस्लों के लिए
मंगलवासी या फिर प्लूटोवासी
या इनकी संभावनाओं पर पटाक्षेप के बाद
कुछ दूसरी संभावनाएँ/ मंगल आज मंगल है
प्लूटो आज प्लूटो है / मंगल पर हमारे पहुँचने पर
मंगल नहीं रह पाएगा मंगल/ प्लूटो पर हमारे पहुँचने पर
प्लूटो नहीं रह पाएगा प्लूटो/ मंगल नहीं होना चाहेगा मंगल
प्लूटो नहीं होना चाहेगा प्लूटो
हमारे होने से पृथ्वी शर्मसार है जैसे
वह नहीं होना चाहती पृथ्वी।

थका हुआ कवि

थका हुआ कवि नींद में है
थका हुआ कवि / आराम कर रहा है
कविता के वक्त

कविता के वक्त/ थका हुआ कवि
कविता नहीं लिख रहा है
थका हुआ कवि/ हल की कलम से
बीज-बीज शब्दों से
दाना-दाना अर्थ उगा देता है

थका हुआ कवि/ जीवन लिखता है
पर लाख कोशिशों के बावजूद
जीवन नहीं होता
थके हुए कवि के पक्ष में।
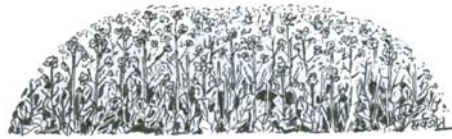
सच में भयावह है

तुम पुस्तक लिखो / मैं उसे छापूंगा जिल्द लगाऊंगा
तुम साज बनाओ / मैं बजाते हुए गान गाऊँगा
तुम भवन बनाओ / मैं उसे सजाऊंगा संवारूंगा
तुम चित्र बनाओ / मैं भरता हूं रंग
तुम निर्देशन करो / मैं करूंगा अभिनय
तुम नाचो खुलकर / मैं बजाऊंगा ढोल
तुम पत्थर तो लाओ/ मैं उसे तराशूंगा
तुम रचो स्वांग/ मैं हंसूंगा जोर से
कभी तुम मुझसे रहो / कभी मैं रहूं तुमसे
पर जब नहीं हो रहा हो
इन कामों में से कोई काम
तब मैं मैं होता हूं / और तुम तुम होते हो
सच में भयावह है/ मेरा बस मैं होना
तुम्हारा बस तुम होना।

विवेक की उत्पत्ति तक

मैं इसका भी सुन चुका हूं/ उसका भी बहुत कुछ
और उन सब का भी सुन चुका हूं
न सुनना चाहते हुए भी / सुनना पड़ा है बहुत कुछ
अब मैं नहीं चाहता हूं / कुछ भी सुनना
हां इतना सुन लेने के बाद
मेरे पास नहीं बचा है / कुछ भी सुनाने के लिए
इसलिए कृपया ध्यान दें/ और शान्ति का दान दें
मैं नहीं सुनना चाहता हूं / कुछ भी उलूल-जलूल
आप जिसको चाहिए सुनिए
जिसको चाहिए गुनिए/ किसी भी बहकावे को चुनिए
आपके अपने हाथ में हैं / और जब जिस रूप में भी
उत्पन्न हो विवेक/ तब अपना सिर धुनिए।

प्रेम के होने पर

तुम्हारी सोच के सपाटपने से
बहुत दूर फिसल चुका है प्रेम
इसलिए तुम प्रेम-प्रेम चिल्लाती हो
प्रेम इतनी दूर छिटक चुका है कि
चीख-पुकार पर भी नहीं सुनता
प्रेम तो भीतर ही है कहीं
बन्द करो चीख-पुकार/ एकदम शान्त होकर सुनो
वह लगातार पुकार रहा है तुम्हें,

सुख में दुःख में अविचलित
बनाए रखना अपने विश्वास को
निरन्तर इस सृष्टि के ऊपर
असल में प्रेम ही है/ किसी हद तक
प्रेम ही है कि न रहे तन-मन की सुध
खो जाना अपने में ही
किसी ऊसर में बदली की छांव के भरोसे
बीज बो जाना भी / भरी दोपहरी में ताड़ की छांव तले
सो जाना भी प्रेम ही है / प्रेम है तभी तो शान्ति है बची हुई
हाथ के पसीने से लिपटी हुई ही सही
उड़ भी गयी सबके हाथों के पसीनों के साथ
तो छायेगी घनेरी घटा बनकर
बरसेगी यत्र-तत्र-सर्वत्र।

तुम्हारे लिए जरूरी संदेश

अभी बहुत लम्बी लड़ाई है तुम्हारी
भरे हुए बोरों में सारे पत्र तुम्हारे थे
वैसे ही आज सोशल मीडिया पर
तुम्हारे नाम हैं सारे आधुनिक संदेश
तुम्हारे कमरे में बहुत कुछ है
तुम्हारा वह बाहर का सब भी
तुम्हारे लिए ही है / समुद्र तुम्हारा है
पहाड़ तुम्हारा है
नीले-नीले आकाश के साथ
एक हवा का टुकड़ा तुम्हारा है
यहां तक तो सब ठीक है पर
कुछ और भी है तुम्हारा
साम्यवाद भी तुम्हारा है
पूंजीवाद भी तुम्हारा
तुम किससे मांगोगे रास्ता
यह तय कर सकता है
तुम्हारी जीत की दिशा
पर आखिर जीत किसकी है
यह निर्भर है लड़ाई के अन्त पर
तुम अपने हिस्से का भी
कहीं खो न दो पाते-पाते
क्योंकि जीत कोई भी जाए
तुम्हारी हार तो बनती है।
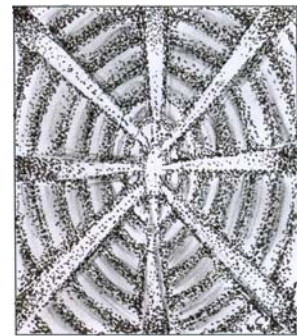
इससे बढ़कर क्या चाहिए

मैंने चांद को देखा है
तो चांद ने भी
किसी व्यस्त पल में
अपनी चांदनी के साथ
देखा ही होगा मुझे
मैंने सूरज को
भले ही भरी आंख से न देखा हो
पर सूरज ने देखा ही होगा मुझे
आंखें फाड़-फाड़कर
किसी तपते दिन में
अब इससे बढकर क्या चाहिए
कि मेरे खड़े होने के लिए
जगह दी है इस धरती ने
और मुझे देखा है
चांद ने सूरज ने।

गांव-लंघू, डाकघर-गांधीग्राम
तहसील बैजनाथ, जिला-कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-176125
मो. 0 94181 93024

आलेख

समस्याओं में उलझी महिला कामगार

◆ अंकुश्री

पारिश्रमिक प्राप्त कर काम करने वाली महिला को महिला कामगार कहते हैं। काम कई तरह के होते हैं। किसी को काम उसकी योग्यता, परिश्रम और पहुंच के अनुसार मिलता हैं, किसी योग्य महिला को तभी काम मिलता है, जब किसी काम को करने के लिये वह यथेष्ठ परिश्रम करने में सक्षम हो। कोई योग्य और परिश्रमी महिला भी बिना पहुंच के काम नहीं कर सकती, क्योंकि काम किसी के घर नहीं जाता। काम तक लोगों को ही पहुंचना पड़ता है। पहुंच का तात्पर्य पैरवी नहीं है, बल्कि संपर्क और माध्यम है।

काम के साथ शिक्षा का गहरा संबंध है। अशिक्षित महिलाएं आसपास के घरों में चौका-बर्तन करती हैं। जो महिला घर से थोड़ी दूर जाने की इच्छा रखती है, वह घर से बाहर जाकर दिन भर मजदूरी करती है। कुछ महिलाएं कई महीनों के लिये गांव-घर से काफी दूर जाकर मजदूरी करती हैं। ईंट भट्ठों और चाय बागानों का काम घर से दूर-दराज जाकर करना पड़ता है। उद्योगों के विस्तार के साथ ही कामगारों की संख्या बढ़ी, जिनमें महिला कामगार भी शामिल हुईं। अकुशल महिलाएं भी विभिन्न उद्योगों में काम करते-करते उसका ढंग सीख कर कुशल कामगार बन जाती हैं। तदनुसार उन्हें पारिश्रमिक भी अधिक मिलने लगता है। अशिक्षित महिलाएं मजदूरी करती हैं और शिक्षित महिलाएं नौकरी।

पहले नौकरी का मतलब सरकारी नौकरी था। शिक्षिका, नर्स, टंकक, लिपिक, आशुलिपिक जैसे पदों पर महिलाएं काम करती थीं। उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएं व्याख्याता, चिकित्सक और पदाधिकारी बनती थीं। न्यायपालिका से भी कुछ महिलाएं जुड़ीं। पुलिस, सेना और बैंक में महिलाएं काम करने लगीं। रेल विभाग से लेकर रेलगाड़ी में भी उन्हें काम मिलने लगे। अब महिलाएं टैक्सी, बस, रेल तो चला ही रही हैं, हवाई जहाज भी उड़ा रही हैं।

पुराने ढर्रे से हट कर निजी क्षेत्र में अब तरह-तरह के काम आ गये हैं। ये ऐसे काम हैं, जिनके बारे में दो-तीन दशक पूर्व किसी ने सोचा भी नहीं था। महिलाएं देश ही नहीं, विदेशों में भी निजी क्षेत्र में कार्यरत हैं। सूचना तकनीक ने तो हर क्षेत्र में महिलाओं को भर दिया है। क्या दिन और क्या रात, महिलाएं दिन-रात कभी भी, कहीं भी धड़ल्ले से काम कर रही हैं।

फैशन डिजाइनिंग क्षेत्र का काफी विस्तार हुआ है। इस क्षेत्र में बहुत महिलाएं कार्यरत हैं। डिजाइनिंग का काम दिन के उजाले तक ही सीमित नहीं है। कई जगह रात होने पर भी यह काम होता रहता है और महिलाओं को भी रात्रि पाली में काम करना पड़ता है। निजी क्षेत्र में अनेक कामों में लगी महिलाओं को रात होने पर घर पहुंचना पड़ता है या काम के लिये निकलने में ही रात हो जाती है। रात्रि पाली में काम करना महिलाओं के लिये एक बहुत बड़ी समस्या है. मगर समस्याओं से जूझते हुए भी अनेक महिलाएं रात्रि पाली में काम करने में लगी हुई हैं।

महिलाओं में शुरू से सौंदर्य बोध रहा है। मगर इधर करीब दो दशकों से उनमें मेक-अप के प्रति रुझान बहुत बढ़ गया है। यहां तक कि ग्रामीण क्षेत्र और शहर के गरीब तबके की महिलाएं भी मेक-अप में रहने लगी हैं। इससे कॉस्मेटिक सामानों के निर्माण से लेकर बिक्री में काफी बढ़ोतरी हुई है। लोगों में महंगी से महंगी मेक-अप सामग्री खरीदने की होड़ लगी हुई है। उसी तरह ब्यूटी पार्लर का व्यवसाय भी पिछले ही दो दशकों की देन है। गली-गली में कॉस्मेटिक की दुकानें खुल गयी हैं और उसी तरह ब्यूटी पार्लर भी खुल गये हैं। ऐसी अधिकतर दुकानों और पार्लरों में महिलाएं कार्यरत हैं।

दवा, कपड़ा, शृंगार और सजावट की सामग्री आदि दुकानों में महिलाएं पहले से कार्यरत थीं। अब मोबाइल की बिक्री, मरम्मती अथवा रिचार्ज की दुकानें शहर की गली-गली और गांव-गांव में खुल गयी हैं। इन दुकानों में महिलाओं को खूब काम मिलने लगा है।

छेड़छाड़ और शिकायत

काम का कोई भी क्षेत्र हो, वह निरापद नहीं है। कार्य स्थल पर या कार्य स्थल तक पहुंचने के क्रम में कई तरह की बाधाएं आती हैं या आ सकती हैं। यह बात स्वीकार करनी चाहिये कि सामान्य बाधा भी महिला के लिये बड़ी बाधा बन जाती है। महिला कामगारों के साथ सबसे बड़ी बाधा है कार्यालय में उनके साथ छेड़छाड़। छेड़छाड़ पुरुष सहकर्मी द्वारा हो ही सकती है, चौकीदार, लिफ्टमैन या हॉकर जैसे अन्य किसी द्वारा भी हो सकती है। छेड़छाड़ की घटनाएं मार्ग में भी घट सकती हैं। छेड़छाड़ कहीं भी हो, उसके साथ एक बहुत बड़ी विसंगति जुड़ी हुई है। अधिकतर महिलाएं छेड़छाड़ की घटनाओं को उजागर नहीं कर पातीं। इंडियन बार एसोसियेशन द्वारा छह हजार से अधिक महिला कामगारों पर किये गये सर्वेक्षण से यह बात सामने आयी है कि 70 प्रतिशत

महिला कामगार कार्यालय में होने वाली छेड़छाड़ के विरुद्ध षिकायत नहीं कर पातीं। घर से सैकड़ों मील दूर काम करने वाली महिला कामगारों का जीवन अधिकतर एकाकी होता है। यह बहुत संयोग की बात है कि उसका पति भी उसके साथ उसी शहर में हो। अधिकतर मामलों में ऐसा संयोग नहीं बन पाता।

संकोच से बाधा

महिला कामगारों के साथ घटित घटनाओं को वे अक्सर छिपा लेती हैं। सभी बातें सभी को बतायी भी नहीं जा सकतीं। लेकिन कुछ बातें कुछ लोगों को बतायी जा सकती हैं। अपनी बातें दूसरों को बताने से उसके दो लाभ मिलते हैं। एक तो इससे मन का घुटन कम हो जाता है। दूसरे, उस विषय में अन्य की राय जानने का अवसर मिल जाता है। एक से दो भले। विचारों के आदान-प्रदान से समस्या का समाधान आसान हो जाता है। कामगार महिलाएं, अर्थात् कमाने के लिये निकली हुई महिलाएं। घर से कमाने के लिये निकली हुई महिलाओं को अनावश्यक रूप से संकोची नहीं होना चाहिये। यदि कोई समस्या आती है तो उस पर अपनी सहेली से चर्चा की जा सकती है। कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें अपने नियोजक या व्यवस्थापक को भी बताना आवश्यक होता है। यदि समस्या नियोजक या व्यवस्थापक के कारण ही उत्पन्न हो तो ऐसी स्थिति में विषय की जानकारी उनसे वरीय अथवा कनीय को दी जा सकती है। उसी अंतराल में अपने महिला या पुरुष सहकर्मी को भी घटना की जानकारी दे देनी चाहिये। संकोच करके चुप रह जाने से छेड़छाड़ करने वाले का मनोबल बढ़ जाता है और हो सकता है कि बाद में स्थिति और बिगड़ जाए। बात दूसरों की जानकारी में आ जाने से गलत विचार वालों का मनोबल टूटता है। निःसंकोच होकर बोलने वाली महिला कामगार से छेड़छाड़ करने वाले सहकर्मी को डर बना रहता है। उसे यह आशंका घेरे रहती है कि पता नहीं वह महिला कब किस स्तर पर बात खोल दे और इस कारण वह परेशानी में पड़ जाए। पुरुष सहकर्मी को जब यह पता चल जाता है कि साथ वाली महिला कामगार पता नहीं कब किसे बता दे तो वह सावधान हो जाता है। उसे यह भय हो जाता है कि बात खुल जाने से उस पर और उसकी नौकरी पर आफत आ सकती है। इस भय के कारण वह कभी छेड़छाड़ के बारे में सोच ही नहीं सकता।

घबराहट बुरी बात है

किसी महिला कामगार के साथ यदि कोई घटना घटित हो जाती है तो सबसे पहले अपनी दृढ़ता पर अड़े रहना चाहिये। किसी घटना से घबरा जाने पर स्थिति सुधरने के बजाय और बिगड़ जाती है। घबराहट में निर्णय क्षमता कमजोर पड़ जाती है। इसलिये घबराने के बजाय दूसरे की राय लेकर आगे की कार्रवाई सुनिश्चित करनी चाहिये, क्योंकि घबराहट किसी भी समस्या का समाधान नहीं है।

साथी विश्वसनीय हो

हर महिला कामगार को एक या दो साथी बना कर रखना चाहिये, जिससे मन की बात की जा सके या जिससे किसी समस्या में फंसने पर मदद मांगी जा सके। मगर किसी को भी साथी बनाने से पहले उसकी विश्वसनीयता की परख आवश्यक है। ऐसा साथी नहीं होना चाहिये जो परेशानियों को जानकर उलटे बौद्धिक शोषण करने लगे।

पति के अलावा मां, बहन या भाई को भी साथी बनाया जा सकता है और उन्हें अपने मन की बातें बतायी जा सकती हैं। ऐसे रिश्ते में कम से कम बौद्धिक शोषण की स्थिति उत्पन्न नहीं होती। मगर दूर-दराज रह रहे मां, बहन या भाई को मन की बातें बताने से ऐसा नहीं हो कि उलटे वह परेशान हो जाए। दूरी के कारण उनसे कोई कारगर मदद तो मिल नहीं सकती, उल्टे वे मानसिक परेशानी में पड़ सकते हैं। ऐसी स्थिति से बचना चाहिये।

आत्मविश्वास सबसे बड़ा सहायक

जब कोई महिला कामगार घबराहट और संकोच छोड़ कर दूसरों को अपनी बात बताती है तो उसके मन में आत्मविश्वास जगता है। इससे उसको आत्मविश्वास का बल मिलता है। आत्मविश्वास दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है, जो हमेशा साथ रहती है। इसलिये आत्मविश्वास की ताकत को कभी कमजोर नहीं पड़ने देना चाहिये।

एकजुटता की ताकत

किसी समस्या या उसकी संभावना पर एकजुट हो जाने से उससे निपटना आसान हो जाता है। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। समूह में ताकत होती है, जो किसी भी समस्या से निपटाने में सहायक होती है। कार्य स्थल पर यदि दूसरा कार्यालय अथवा विभाग हो तो वहां की महिला कर्मी से भी संपर्क बनाये रखना बुरा नहीं है। हां, इसके लिये बहुत समय बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं है। भोजनावकाश में एक-दूसरे के माध्यम से संपर्क बढ़ाया जा सकता है, हालांकि ऐसे संपर्क को दोस्ती का रूप नहीं दिया जाना चाहिये और न ही ऐसे संपर्क वालों से अपनी सभी समस्याओं पर खुल कर चर्चा करनी चाहिये। ऐसा संपर्क तो सिर्फ दूसरों को अपनी ताकत दिखलाने के लिये होता है। इसे कोई वास्तविक ताकत नहीं समझना चाहिये।

सुरक्षा के उपाय

महिला कामगारों की सुरक्षा में बाधक तत्वों की संभावना के प्रति सावधानी आवश्यक है। निडर होना अच्छी बात है, मगर निडरता के नाम पर सुरक्षा के उपाय नहीं करना गलत है। अपने कार्य क्षेत्र के माहौल के अनुसार संभावित असुरक्षा के प्रति सचेष्ट रहना जरूरी है, ताकि समस्या नहीं आये और यदि आये तो उसकी विकरालता कम हो सके।

तनाव से दूर रहें

कविता

दादी

सुरभि

आंगन की चौखट से गायब है/ दादी
दादी नहीं दिखती अब छज्जे के नीचे
नहीं दिखता उसका मचिया
नाक में ठूंसती नसवार
घर आए मेहमान से सवाल करती
रिश्ते-नाते का हालचाल पूछती/ दादी
कानों पर चढ़ी धोती
चश्में की टूटी डंडी
गायब हाथ की छड़ी
दादी सबको संभालती
रसोई की चौखट से
घर की ड्योढ़ी तक
नई नवेली दुल्हन को समझाती
उठने-बैठने, चलने-फिरने का
सिखाती सलीका
नाती-पोतों की करती उबटन-स्नाान
लोरी सुनाकर जब सुलाती
दादी/ सुख-दुख का छेड़ती राग
पीपल को हर सुबह / चढ़ाती जल
सबकी मुसीबतों का निकालती हल
परिवार की मुखिया बफादार
मर्द नहीं फिर भी गांव में सरदार
दादी/ अब नहीं दिखती दादी
याद आती है / दादी की धुंधली सी यादें
घर की दिवार पर टंगी तस्वीर
देख कर फिर से
दिल में जीने की नई उमंग जगाती
दादी

द्वारा प्रभुनाथ शुक्ल
सुरभि न्यूज एण्ड फीचर एजेंसी
नजदीक मुख्य डाकघर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश-175101

बात सिर्फ छेड़छाड़ की नहीं है। दूसरे कई कारणों से भी महिला कामगारों के समक्ष समस्याएं आ सकती हैं। समस्या या संभावित समस्या से मन में जो विकार पैदा होते हैं, उनसे तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। तनाव एक छोटा-सा शब्द है। मगर यह जितना छोटा है, उतना ही घातक भी है। तनाव के कई कारण हो सकते हैं। कार्य की अधिकता, घर से कार्य स्थल की अत्यधिक दूरी, घरेलू कार्यों की जवाबदेही, पति-पत्नी का अलग रहना, एकाकी जीवन आदि अनेक कारणों से तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। तनाव के साथ रक्तचाप, मधुमेह और हृदय संबंधी रोग हो जाते हैं। ये बीमारियां कुछ मामलों में आनुवांशिक होती हैं, जो परिस्थितिवश उभर जाती हैं। मगर अधिकतर मामलों में महिलाएं तनाव के कारण बीमार रहने लगती हैं। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि बीमारी का कारण तनाव है यह जानने में काफी समय लग जाता है और कई बार तो यह पता भी नहीं चल पाता। बाद में जब पता चलता है तो यह भी पता चलता है कि तनाव से निपटना आसान नहीं है, क्योंकि वह आदत में शामिल हो चुका है। फिर भी परिस्थितियों में परिवर्तन, स्वध्याय और ध्यान-मनन से तनाव को बहुत कम किया जा सकता है।

महिला कामगारों को घरेलू कार्यों के साथ समुचित सामंजस्य स्थापित करना बहुत जरूरी है। दूसरी बात अति महत्वपूर्ण है कि घर में रहने वाले दूसरे सदस्यों को भी कुछ घरेलू कार्यों की जवाबदेही बांटनी चाहिये। इससे बैल की तरह बोझ ढोकर बीमार रहने वाली महिलाओं की स्थिति में बहुत कुछ सुधार संभव है।

खुश रहना जरूरी है

काम से बोझिल महिला कामगारों को खुश रहने की आदत डालनी चाहिये। खुशी एक ऐसी स्थिति है, जिसका सीधा प्रभाव मन पर पड़ता है और इससे तन भी प्रभावित होता है। खुश रह कर अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। काम करते रहना मजबूरी हो सकती है, मगर काम के बारे में सोचते रहना आदत है। कुछ महिलाएं काम करने के बजाय उसे कैसे निपटाना है इसी बारे में सोचती रहती हैं। उन्हें पता है कि काम सोचने से नहीं, करने से पूरा होता है। फिर भी अपनी आदत से वह लाचार रहती हैं। काम के बारे में जितना सोचा जाता है, वह उतना अधिक बोझिल होते जाता है। ऐसी स्थिति का सीधा असर स्वास्थ्य पर पड़ता है। इसलिये यह आवश्यक है कि अनावश्यक चिंता में नहीं घुल कर हमेशा खुश रहा जाए। कुछ लोगों की आदत होती है कि वह काम के बोझ के बीच भी कुछ हंस-बोल लेती हैं। यह आदत बहुत अच्छी है। इससे तनाव की स्थिति उत्पन्न होने से बचती है।

हर महिला कामगार को समस्या से निपटने का उपाय करना चाहिये, न कि आयी हुई समस्या को मापते रह कर उसे और बढ़ाया जाए। जिन्दगी है तो समस्याएं तो आएंगी ही। उनसे घबराने की नहीं, निपटने की आवश्यकता है।

8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, रांची,
झारखण्ड-834 010, मो. 08809 972549

डॉ. अनीता शर्मा की कविताएं

कोरोना का दानव

बचपन में बताई हमें शिष्टता,
आज तक है काम आई।/ अगली पीढ़ियों में टूटा यह क्रम,
है तभी तो यह नौबत आई।
हमें सिखाया हमने तो सुना,/ हमें पढ़ाया हमने तो गुना ।
भारतीय सभ्यता, सनातन संस्कृति
हम सबने अब धीरे धीरे भुलाई।
इसे समझ कर मूर्खता /हमने बाहरी सभ्यता अपनाई
धोना हाथ बार बार, जूठा न खाना,
रखना जूते बाहर
प्रणाम नमस्ते करना, साफ सफाई का रखना खयाल
गाँव गाँव में मेहनतकश,
प्रकृति के कण कण को ईश्वर मानना
वृक्ष, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि को समझ देवता
कर्म-धर्म, मन प्राण से पूज्य जानना।
समझ कर पोंगापंथी आज/ सभी कुछ भुला दिया हमने
आचार व्यवहार छोड़ छाड़,
भोजन भी विदेशी अपना लिया हमने।
सम्पूर्ण प्रकृति को समझ कर दास अपना,
क्रूरता भरा चेहरा मानव ने दिखाया,
जब अब विषाणु बिखरा फैला,
तब जाकर परब्रह्म ईश्वर याद आया।
ऋषिमुनियों के अनेक वर्षों के अमूल्य शोधों से
जो कुछ था हमने पाया,
गिरते मूल्यों की चकाचौंध में
हमने धीरे धीरे सब कुछ भुलाया ।
क्रूर निठल्ले मानव तू लौट चल
शाश्वत, सनातन मूल्यों की ओर,
नहीं तो हर एक वर्ष पड़ेगा देखना
कई तरह के कोरोनाओं का कहर ।
ठिठक जा, रुक जा,
कि घर में बैठ चिंतन तो कर
नहीं तो प्रलयकारी कोरोना का दानव
सृष्टि को जाएगा निगल।
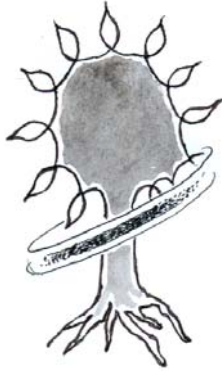
गांव अब भी मेरा गांव है

गर्मियों की गहन अंधियारी, यह ठंडी रात है।
जुगनुओं की चमचमाहट,
तारों की भी शुभ्रता है,
आकाश की नीलाभ आभा में
विराट विशालता है/ टकटकी बाँधे हुए मैं
लेटी हुई, स्थिर हो गयी हूँ
प्रकृति ने, कविता मेरी रच तो दी है
मैं भला क्या काव्य लिखूं ?
घने वृक्षों की भयंकर सनसनाहट,
आँधी वर्षा के थपेड़े,/ हरे पत्तों की वो चंचल थाप,
हरितिमा बिछ कर गलीचे बैठने को है बिछाती
मचल कर वो वृक्ष बूढ़े/ सीटियां और गीत जब हैं,
गुनगुनाते।/ बांस मिलकर ढोलकी सा ताल देते
भीगी हुई, सकुची हुई सी,/ बरामदे में, चुपचाप बैठी ,
चकित होकर सोचती हूँ,
गीत मौसम ने रचे हैं/ मैं भला, क्या गीत छेड़ूँ ।
शाम ढलती पर्वतों पर,
चोटियों पर धूप है,/ मंदिर बनाती
ढलता सूरज धूप बाती करने आता
बर्फ बनकर आरती ठंडक दिलाता,
दिन का पड़ा तन मन कुचैला,
धुलने लगता
पक्षियों के झुंड आ घण्टी बजाते,
झींगुरों की शंख ध्वनियां चुप्पी देतीं
मैं भला, पूजन या फिर अर्चन करूँ क्या ?
मेरे गाँव, घर के आंगन और पिछवाड़े की दहलीजों के ऊपर कविता
बिछती, राग बजते,
आज भी है आरती की गंध उठती
कौन कहता है कि भइया
गांव अब वो स्वर्ग नहीं है।

**जिला भाषा अधिकारी (सेवानिवृत्त) मकान नं. 78, रौड़ा सैक्टर
नं. 2, बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश,174 001,
मो. 0 78075 36520**

रोहित ठाकुर की कविताएं

भाषा

वह बाजार की भाषा थी/ जिसका मैंने मुस्कुरा कर
प्रतिरोध किया/ वह कोई रेलगाड़ी थी जिसमें बैठ कर
इस भाषा से/ छुटकारा पाने के लिए
मैंने दिशाओं को लाँघने की कोशिश की
मैंने दूरबीन खरीद कर/ भाषा के चेहरे को देखा
बारूद सी सुलगती कोई दूसरी चीज
भाषा ही है यह मैंने जाना/ मरे हुए आदमी की भाषा
लगभग जंग खा चुकी होती है
सबसे खतरनाक शिकार/ भाषा की ओट में होती है।

घर

कहीं भी घर जोड़ लेंगे हम/ बस ऊष्णता बची रहे
घर के कोने में / बची रहे धूप
चावल और आंटा बचा रहे/ जरूरत भर के लिए

कुछ चिड़ियों का आना-जाना रहे
और/ किसी गिलहरी का

तुम्हारे गाल पर कुछ गुलाबी रंग रहे
और/ पृथ्वी कुछ हरी रहे
शाम को साथ बाजार जाते समय
मेरे जेब में बस कुछ पैसे।

लौटना

समय की गाँठ खोल कर/ मैं घर लौट रहा हूँ
मैं लौटने भर को/ नहीं लौट रहा हूँ
मैं लौट रहा हूँ/ नमक के साथ
उन्माद के साथ नहीं

मैं बारिश से बचा कर ला रहा हूँ
घर की औरतों के लिये साड़ियाँ/ ठूंठ पेड़ के लिये हरापन
लेकर मैं लौट रहा हूँ/ मैं लौट रहा हूँ
घर को निहारते हुए खड़े रहने के लिये
मैं तुम्हारी आवाज/ सुनने के लिये लौट रहा हूँ।

उसे इस समय एक घड़ी चाहिए

उसे घर की खाली दीवार के लिए
एक दीवार घड़ी चाहिए/ दरभंगा टावर की घड़ियाँ बंद रहीं
कई सालों तक/ फिर वह शहर छूट गया
पिता की कलाई घड़ी बंद पड़ी है
उनके जाने के बाद/ घड़ीसाजों की दुकानें बंद
हो रही हैं/ फिल्मों में घड़ीसाज का किरदार -
अब कौन निभाता है/ नींद में बजती रही है
घड़ी की अलार्म/ पर उससे कुछ हासिल नहीं हुआ
तकनीकी रूप से/ राजा और प्रजा की घड़ियाँ
समान होती हैं/ पर समय निरंतर निर्मम होता जाता है
प्रजा के लिए/ मैंने/ उसे समझाया/ कोई घड़ी
जनता के लिए जनता ही बनाती है
पर उसमें बजने वाले समय को
नियंत्रित करता है शासक/ तुम बाजार से -
कोई भी घड़ी ले आओ/ तुम्हारे हिस्से
नहीं आयेगा -/ समय का उज्ज्वल पक्ष।

एकांत में उदास औरत

एक उदास औरत चाहती है/ पानी का पर्दा
अपनी थकान पर/ वह थोड़ी सी जगह चाहती है
जहाँ छुपाकर रख सके/ अपनी शरारतें
वह फूलों का मरहम/ लगाना चाहती है
सनातन घावों पर/ वह सूती साड़ी के लिए चाहती है कलप
और/ पति के लिए नौकरी
बारिश से पहले वह/ बदलना चाहती थी कमरा
जाड़े में बेटी के लिए बुनना
चाहती है ऊनी स्कार्फ/ बुनियादी तौर पर वह चाहती है
थोड़ी देर के लिए /हवा में संगीत।

पुल

पुल से गुजरने वाला आदमी/ नदी को निहारता है
पुल पर खड़ा आदमी/ अपनी स्मृतियों में खो जाता है
पुल पर खड़ी औरतों की साड़ी/ उड़ती है बादलों की तरह

पुल पर खड़े बच्चे नदी में छलांग लगाते हैं
तैरते हैं मछलियों की तरह
पुल प्रफुल्लित होता है यह सब देख कर
लावारिश लाशें बहती है पुल के नीचे
पुल स्तब्ध खड़ा रहता है।

कविता

कविता में भाषा को/ लामबन्द कर
लड़ी जा सकती है लड़ाईयाँ
पहाड़ पर/ मैदान में/ दर्रा में
खेत में/ चौराहे पर/ पराजय के बारे में
न सोचते हुए ।

रेलगाड़ी

दूर प्रदेश से/ घर लौटता आदमी
रेलगाड़ी में लिखता है कविता
घर से दूर जाता आदमी/ रेलगाड़ी में पढ़ता है गद्य
घर जाता हुआ आदमी/ कितना तरल होता है
घर से दूर जाता आदमी/ हो जाता है विश्लेषणात्मक।

गौरैया

गौरैया को देखकर/ कौन चिड़िया मात्र को याद करता है
गौरैया की चंचलता देखकर
बेटी की चंचल आँखें याद आती हैं
पत्नी को देखता हूँ रसोई में हलकान
गौरैया याद आती है
एनीमिया से पीड़ित एक परिचित लड़की
कंधे पर हाथ रखती है/ एक गौरैया भर का भार
महसूस करता हूँ अपने कंधे पर
गौरैया को कौन याद करता है चिड़िया की तरह।

यादों को बांधा जा सकता है गिटार की तार से

प्रेम को बाँधा जा सकता है/ गिटार की तार से
यह प्रश्न उस दिन हवा में टँगा रहा/ मैंने कहा -
प्रेम को नहीं/ यादों को बाँधा जा सकता है
गिटार की तार से / यादें तो बँधी ही रहती हैं -
स्थान, लोग और मौसम से/ काम से घर लौटते हुए
शहर खूबसूरत दिखने लगता था
स्कूल के शिक्षक देश का नक्शा दिखाने के बाद कहते थे
यह देश तुम्हारा है/ कभी संसद से यह आवाज नहीं आयी
कि यह रोटी तुम्हारी है
याद है कुछ लोग हाथों में जूते लेकर चलते थे
सफर में कुछ लोग जूतों को सर के नीचे रख कर सोते थे
उन लोगों ने कभी क्रांति नहीं की
पड़ोस के बच्चों ने एक खेल ईजाद किया था
दरभंगा में
एक बच्चा मुँह पर हथेली रख कर आवाज निकालता था -
आ वा आ वा वा/ फिर कोई दूसरा बच्चा दोहराता था
एक बार नहीं दो बार -/ आ वा आ वा वा
रात की नीरवता टूटती थी/ बिना किसी जोखिम के
याद है पिता कहते थे -
दिन की उदासी का फैलाव ही रात है।

भाषा का दारोगा

भाषा का दारोगा/ आया था घर
वह जोर-जोर से हँसता था
उसने कहा - तुम हर चीज को कविता में ले आते हो
यह अच्छी बात नहीं है
भाषा पर दबाव बढ़ रहा है।

साधारण क्षणों में भी असाधारण रूप में औरतों को याद करता हूं

दादी को/ माँ को/ चाची को/ भौजी को
पत्नी को/ बहन को/ असंख्य औरतों को
गन्दे बर्तनों के बीच/ गन्दे कपड़ों के बीच
अंधेरे रसोई में/ साधारण कपड़ों में
साधारण बात कहते हुए
असाधारण रूप में याद करता हूँ।

द्वारा श्री अरुण कुमार
सौदागर पथ, काली मंदिर रोड के उत्तर
संजय गांधी नगर, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना,
बिहार-800026, मो. 0 62004 39764

प्रतिभा प्रभा की कविताएं

मैं ऊपर आऊँ

दरख्त बहुत मिले/ मेरे बेहिसाब
बंजर जमीन पर
बादलों का / जर्रा-जर्रा
सोख लेने पर भी
नहीं फूटता / किसी बीज का सीना
जो / फट पड़े थाथी से
झाँक भी ले
फटे बिवाइयों के साथ
काँधे पर जुआ लिए
ढोती रही / इस मेढ़ से उस मेढ़ तक
सूख चुके मुहाने तक
आ पड़ी हूँ / और ये
मवेशियों की मौत / पड़ोसियों की पीड़ा
देखी नहीं जाती / मेरी मिट्टी की मलाई
जलते हुए रेत के दानों में
बदलती जा रही है
जीवन की आस अब
सबकी / छूटती जा रही है
हे ईश्वर / तूने मेरे पास
इसके अलावा/ कोई रास्ता नहीं छोड़ा
कि / तू खुद /नीचे आता है
या मैं /ऊपर आऊँ।

तेरे आने के बाद

हाँ / कुछ तो हुआ है
जीवन में मेरे / तेरे
आने के बाद / दिनचर्या तो बिलकुल
वैसी ही है / पहले जैसी
वही / सूरज के जगने से
तीन घंटे पहले / मेरा जगना
वही / सबके उठने से पहले ही
नहा-धोकर / रसोईं में जमना
देना सबको बिस्तर पर
ले जाकर चाय / ऑन कर देना टीवी
और / पकड़ा देना रिमोट
पिता के हाथों में / बनाना टिफिन
बच्चों के लिए / अपने लिए भी
और / चल देना
गंतव्य तक / सब कुछ था जैसे
चल रहा है / बिलकुल वैसे
पर/ न जाने कैसे / भर आई हैं साँसें
ताजगी से/ न जाने कैसे
उँगलियाँ / थिरकती हैं
द्विगुणित हो / न जाने कैसे
मुस्कान देर तक/ गालों पर
बनी रहती है/ लोग कहते हैं
आजकल तुम्हारी आँखें
मुस्कराती रहती हैं
न जाने कैसे / मगर हाँ
कुछ तो हुआ है / जीवन में मेरे
तेरे आने के बाद।

जिद्दी लड़कियां

जिद्दी लड़कियाँ / सुनती नहीं
बेकार की बातें / वो
गुन लेती हैं / काम की बातें
जिद्दी लड़कियाँ / कर लेती हैं
रार की बातें / छोड़ देती हैं
तकरार की बातें / जिद्दी लड़कियाँ
ढाँक लेती हैं सिर / प्यार से
खुला छोड़ देती हैं / चेहरा
अधिकार से / जिद्दी लड़कियाँ
पहन लेती हैं / पायल
बिछुआ / और चूड़ियाँ
जब वो तैयार होती हैं
जिद्दी लड़कियाँ / निकाल फेंकती हैं
गहने /जब वो / अपने आपे में
अपने साथ होती हैं
जिद्दी लड़कियाँ / ज्यादातर
खूबसूरत / पर/ कभी-कभी
खूंखार होती हैं / क्योंकि / ये
सलीका पसंद /और
खुशगवार होती हैं
ये जिद्दी लड़कियां / उफ्फ / ये
जिद्दी लड़कियाँ।

आईना हूं

आईना हूँ
झूठ नहीं बोल सकता
इसलिए
टूटता नहीं
तोड़ा जाता हूँ
टूटकर
बिखर जाता हूँ
किरचों - किरचों में
लेकिन
फिर भी
चुभने के लिए नहीं
समेटे जाने के लिए
बिखरा पड़ा हूँ
जानता हूँ
तुम्हारी
इन कोमल
मासूम उँगलियों को
बहुत पुरानी पहचान है
मेरी इनसे
इसलिए डरता हूँ
सूरज की रोशनी को
जज्ब करता हूँ
रोक लेता हूँ
तुम्हारी आँखों तक पहुँचने से पहले
पिघल जाने के डर को
धकेल कर
सूरज की आँखों पर पट्टी
बाँध ही लेता हूँ।

गांव बहादुरपुर, डाकघर कुष्ठ सेवा आश्रम पड़ाव, जिला चंदौली, उत्तर प्रदेश-232101, मो. 0 73554 68914

सुरेश भारद्वाज 'निराश' की ग़ज़लें

(1)

लिपट तिंरगे में जब देह तुम्हारी घर में आई थी
दूध उतरा माँ की छाती में अंतिम दी विदाई थी

देश की खातिर बाप का कंधा कैसा मजबूत हुआ
जिसने बेटे की अर्थी भी साहस करके उठाई थी

सर्व शान्त देह तुम्हारी पत्नी ने थी जब निहारी
नन्ही सी प्यारी विटिया 'पापा उठो' थी पुकारी

बाँधुंगी राखी किसको बहन को रोना आया था
भाई ने भी जब फोटो हार पहना कर थी सँवारी

आस पड़ोस की आखों में बह रही थी जलधारा
मित्रों के भी तो दिलों पर धधक रहा था अंगारा

दुखी था हर कोई सबके दिल में आग लगी थी
सबने आज खोया था अपना एक जांबाज प्यारा

स्तब्ध था ये वातावरण आसमाँ भी रो रहा था
गति हवा की रुकी थी प्रकाश मद्धम हो रहा था

पशु मौन थे चारागाह में घोंसलों में चुप थे पंछी
मानव देव सभी दुखी थे दुखी वक्त भी हो रहा था

देश पर जाँ लुटा दी तुमने सदा को अमर हो गये
तोड़े सारे रिश्ते नाते माँ मृत्यु की गोद में सो गये

यह देश तुम्हारा ऋणी रहेगा सदियों तक ऐ वीरो !
भारत माँ की रक्षा करते पंचतत्व में लीन हो गये

(2)

दर्द में भी जी सका जो दर्द उसको भार क्यूँ
जीना मरना हाथ उसके जीना फिर बेजार क्यूँ

गर्दिशों में भी जो अपना है सुकूँ खोता नहीं
जीना ऐसे लोगों का है इस तरह बेकार क्यूँ

मिलते थे जो रोज यारो अब नजर आते नहीं
वक्त कैसा आ गया है खाली है बाजार क्यूँ

अपनी अपनी सब करें अब कोई भी सुनता नहीं
बिन तेरे जचता नहीं है अब मुझे घरबार क्यूँ

क्या करें कैसे मनायें रूठे हैं यूँ हमसे जो
कोई जो अपना नहीं तो दुश्मन भी संसार क्यूँ

कर भला होगा भला ये बात मेरी मान ले
किसलिए दूँ साथ तेरा खुद नहीं बेदार क्यूँ

सांसें मेरी चल रही हैं तेरे ही बस नाम से
मैं तेरा कोई नहीं तो मुझ पे ये अधिकार क्यूँ

प्यार जिसको था किया है दूर उसको कर दिया
तोड़ा रिश्ता साथ उसके फिर कहो शृंगार क्यूँ

दुश्मनी जिसने निभायी हर कदम मुझसे यहां
मैं नहीं जाना कभी उस पर मेरा एतवार क्यूँ

हर तरफ हैं आँधियाँ क्यूँ मौत का भी शोर है
खाब में भी सुन रहा हूँ जीने से इन्कार क्यूँ

दर्द दिल का क्या बतायें अब सुनायें हम किसे
रूह तक जख्मी हुई है हमसे ऐसी रार क्यूँ

(3)

महफिलें अब तुम सजाओ तो सही
हमको भी दिल से बुलाओ तो सही

प्यास है अनबुझ ये अपनी सदियों से
होंठों से अपने पिलाओ तो सही

देख कर जो तुमको कुछ राहत मिले
पर्दा चिलमन से हटाओ तो सही

प्यार है कितना तेरी इन आँखों में
नजरें यूँ हमसे मिलाओ तो सही

छलनी दिल ये मेरा है क्यूँकर हुआ
तुम कोई मरहम लगाओ तो सही

होश मुझको फिर कभी आए नहीं
जाम ऐसा अब पिलाओ तो सही

चाँदनी रातों में यादें हैं तेरी
खिड़की पे इक बार आओ तो सही

दिल में अब मेरे है कुछ होने लगा
सीने से अपने लगाओ तो सही

मानता है अब ये दिल मेरा नहीं
बाहों में मेरी समाओ तो सही

(4)

ये जीवन अभी हमने हारा नहीं है
मदद को तुझे भी पुकारा नहीं है

जरा देख चलती है धड़कन ये मेरी
तेरा नाम भूलूँ गवारा नहीं है

है मझधार में अब ये कश्ती हमारी
कहीं दूर तक भी किनारा नहीं है

न समझे नदी ये न लहरें ही जानें
कि तिनके का मुझको सहारा नहीं है

जो छोड़ी है अब डोर मैंने तुझी पर
किसी और को तो पुकारा नहीं है

हमारी है दुनिया ये कहते हैं सारे
यहां कोई क्यूँकर हमारा नहीं है

वो महमाँ भी अब कैसे आने लगे है
अभी घर तो मैंने सँवारा नहीं है

है क्यूँ भूख साथी मेरी जिन्दगी की
मिले रोटी मुझको ये चारा नहीं है

है मतलब की दुनिया यहाँ मतलबी सब
मेरा दर्द समझे जो यारा नहीं है

(5)

अपने ख्यालों में किसको बसाये हो तुम
अपनी यादों में किसको ले आये हो तुम

दर्द देते हो मुझको कहो किसलिए
क्यूँ मुझे रात दिन यूँ सताये हो तुम

गहरी नजरें तेरी क्या हैं कहती बता
दिल में तेरे है क्या जो छुपाये हो तुम

सूनी बस्ती मेरी घर भी सूना मेरा
द्वार मेरे अलख क्यूँ जगाये हो तुम

साथ मेरे तुम्हारा कहो रिश्ता क्या
दूर से पास मेरे जो आये हो तुम

तुमने ऐसा बता यूँ है क्या कर दिया
नजरें अपनी ये क्यूँकर झुकाये हो तुम

है न साकी यहां जाम कोई नहीं
महफिलें कैसी हैं जो सजाये हो तुम

आँख फड़के बहुत होने क्या है लगा
कौन है वो जिसे याद आये हो तुम

किसलिए उठ रही टीस दिल में मेरे
यार मुझको ही क्यूँकर भुलाये हो तुम

चाहता हर कोई यूँ तो होगा तुम्हें
किसलिए दिल मेरा यूँ जलाये हो तुम

तुम लामत रहो अपनी फरियाद है
दुश्मनों से निगाहें मिलाये हो तुम

बिन तुम्हारे ये जीना तो आसाँ नहीं
हमको तेबर क्यों अपने दिखाये हो तुम

बिन तुम्हारे हमें जीना आता नहीं
हमको कैसा नशा ये पिलाये हो तुम

धौलाधार कालोनी झिकली बड़ोल, पीओ दाड़ी,
धर्मशाला, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-176057

कहानी

छलीट

◆ **डॉ. देव कन्या ठाकुर**

घन्टी और मन्त्रोचार की ध्वनि के साथ तारा की आँखें खुलीं। घड़ी में समय देखा तो सुबह के साढ़े चार बज रहे थे। आज पौष की सन्क्रान्त है। वैसे भी तारा के ससुर हर मंगलवार, वीरवार और रविवार को घर की सबसे ऊपर की मंजिल में अपने कुलदेवता के निशान के समक्ष सुबह-सुबह धौड़छ में अंगार डालकर धूप जलाकर मन्त्रोचार के साथ घन्टी और शंखनाद करते हैं, वह बालू नाग के गूर जो हैं। तारा जल्दी से उठकर हाथ मुँह धोकर रसोई में चली जाती है। उसकी सास चूल्हे की लिपाई के बाद पूरे घर में गोंतर छिड़क कर रसोई में लौटी तो बहू को बिना धाठू के चाय बनाते देखकर सुबह-सुबह ही उसे डांटती है।

'तुझे पिछले नौ सालों से समझा रही हूँ कि सिर पर हमेशा धाठू लगाया कर। अब अगर गूर ने तुझे बिना धाठू के देखा तो उन्हें पूरा दिन भूखा रहना पड़ेगा। गूर अगर सुबह-सुबह सुहागन स्त्री को नंगे सिर देख ले तो अपशकुन होता है। आइन्दा गूर के आने से पहले धाठू पहनकर आना।'

सास की फटकार सुनकर तारा अपने कमरे की ओर भागी। वह भी जानती है कि उसके ससुर उनके परगने के सबसे बड़े देवता बालू नाग के वरिष्ठतम गूर हैं। गूर के सभी नियमों का पालन उन्हें करना पड़ता है।

कुछ ही क्षणों में शंखनाद के साथ तारा के ससुर की पूजा सम्पन्न हो गई और वह सीढ़ियों से उतरकर रसोई घर में बीचों बीच लगे तन्दूर के पास बैठ गये।

तारा ने ससुर को स्टील के गिलास में चाय दी और साथ में शाम की बची हुई मक्की की रोटी गरम करके दी।

'बहु, यह रोटी वापिस रख ले। आज रोटी नहीं खाऊँगा।'

तभी तारा का पति रूपचन्द भी तन्दूर के पास चाय का गिलास लेकर बैठ गया और अपनी पत्नी से बोला,

'आज देवते के भण्डार में छलीट देने जाना है इसलिए पिता जी भण्डार में पूजा से पहले कुछ नहीं खायेंगे और मैं भी नहीं खाऊँगा।'

'छलीट क्यों है जी आज? देवता तो माघ में निकलता है और अभी तो पौष महीना शुरू ही हुआ है।'

तारा अपने पति से पूछती है। तभी उसका आठ साल का बेटा पीयूष भी अपने दादा के पास आकर बैठ गया।

तारा नौ साल पहले जब इस घर में ब्याह कर आई थी तो घर के जरूरी बर्तन और कपड़ों के साथ एक टेलीविजन भी दहेज में लाई थी। स्टार टी. वी. में आने वाले नाटकों को वह बड़े चाव से देखती थी। इन्हीं में से एक नाटक का मुख्य पात्र पीयूष तारा को बहुत प्रिय था। विवाह के एक वर्ष बाद जब उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तो घर में अपने गूर ससुर और गांव के पंडित के सुझाये नाम को न मानते हुये उसने अपने टी. वी. धारावाहिक के प्रिय पात्र के नाम पर अपने बेटे का नाम पीयूष रखा। पीयूष के दादा-दादी को पीयूष बोलना अट्पटा लगता था तो वह उसे पीशू कहकर ही पुकारते। अब पीयूष घर और गांव में पीशू के नाम से ही जाना जाता।

पीशू के गूर दादा अपने लम्बे सफेद केशों को तन्दूर के सामने उसकी गर्मी में सूखाने लगते हैं और साथ में चाय पीने लगते हैं । देवता के गूर को अपने केशों को कैंची लगाना मना होता है ।

'दादाजी आप रोज इतनी सुबह ठंड में क्यों नहाते हैं ? बाहर देखो कितनी बर्फ गिरी हुई है और आपको नहाने की पड़ी होती है।'

'पीशू बेटा तेरे दादा गूर है न इसलिए मुझे रोज नहाना पड़ता है। नहीं तो देवता महाराज नाराज हो जाते हैं। ये मेरे जो केश हैं ये मेरे नहीं बालू नाग जी के हैं। मेरे बाद तेरे पिताजी गूर बनेंगे और हो सकता है बड़े होकर महाराज जी तुझे गूर चुनें, तब तो तुझे भी सुबह-सुबह नहाना पड़ेगा। तब चाहे बारिश हो या बर्फ, इन केशों को रोज सुबह धोना पड़ेगा।'

'रहने दो दादा जी, आप तो मुझे ही डराने लग गये।'

मुँह बनाते हुये पीशू बोला। पास ही बैठे पीशू की अम्मा उठी और बाल्टी लेकर पशुशाला में गाय दूहने के लिये चली गई।

पीशू के दादा ने अपने केश बाँधे और पास ही रखी नीले, पीले और हरे बॉर्डर वाली गोल कुल्लूवी टोपी पहनी। टोपी के पीछे की तरफ गूर ने अपना नाम दर्जी से कढ़ाई करके लिखवाया था। 'बशाखू राम गूर'। पीशू को अपने दादा की टोपी में लिखा हुआ

नाम बहुत अच्छा लगता था। उसे हमेशा से लगता है कि उसके दादा की टोपी दुनिया में सबसे अद्भुत है क्योंकि उसने अपने गांव में किसी भी व्यक्ति का उसकी टोपी पर नाम नहीं देखा था।

'रूपू बेटा आज, देवते के भण्डार में अंगाह की लकड़ी पर छलीट डालनी है, तो पूरे परगने के अठारह गांव के लोग आएंगे। फिर कल से देवते की काष्ठदेह का काम शुरू हो जायेगा।'

'पिताजी यह अंगाह की लकड़ी क्या होती है, मैं तो आपसे पहली बार सुन रहा हूँ।'

'बेटा जब पीशू पैदा हुआ था, उसके बाद तुम सब इसकी नानी के घर महीने भर के लिये गये हुये थे, उस समय ढियो गांव से अंगाह की लकड़ी लाई गई थी। उस समय जब देवता ने आदेश दिया था कि उनकी काष्ठदेह दोबारा बनाई जानी है। इससे पहले अस्सी वर्ष पूर्व हमारे देवता महाराज की काष्ठदेह बनाई गई थी।'

'पिताजी अंगाह की लकड़ी ढियो गांव से ही क्यों लाई जाती है ?'

'बेटा देवता के हर काम पूरे विधि-विधान से परम्परा अनुसार निभाये जाते हैं। ढियो गांव के लोगों को सदियों से अंगाह वृक्ष के संरक्षण की जिम्मेदारी दी गई है। मेरे पिताजी ने मुझे बताया था कि जब वे छोटे थे तो देवता महाराज की काष्ठदेह के लिये लकड़ी ढियो गांव से ही लाई गई थी। इस बार देवता महाराज के आदेश से आठ साल पहले हमारे गांव के बलबीर महंत अपने कुल के बाकी पुरूषों के साथ ढियो गांव गये जहाँ उन्होंने अंगाह वृक्ष की विधि विधान से पूजा की और फिर वृक्ष की लकड़ी पैदल यहाँ गांव में भण्डार तक पहुँचाई गई।'

'पिताजी ढियो गांव तो यहाँ से कोई पच्चीस किलोमीटर दूर है। यहाँ तो लकड़ी बड़ी मुश्किल से ही पहुँचाई होगी।'

'बेटा सबसे जरूरी बात तो यह है कि देवता की काष्ठदेह के लिये जो लकड़ी लाई जाती है वह कंधे पर उठाकर लाई जाती है और रास्ते में कहीं पर भी वह लकड़ी नीचे नहीं रखी जाती। इसलिए लकड़ी लाने के लिये बारह से सोलह लोग जाते हैं ताकि किसी व्यक्ति के थकने पर वह लकड़ी दूसरे व्यक्ति के कंधे पर दी जा सके और जब लकड़ी देवते के भण्डार में पहुँची तो फिर भण्डार प्रांगण में ही गढ़ढा खोदकर मिट्टी में दबा दी गई थी।'

'मिट्टी में क्यों दबाई गई पिताजी ?'

'बेटा इससे अंगाह की लकड़ी पक्की होती है। उसके छह महीने बाद वह लकड़ी निकालकर भण्डार के पीछे वाली कोठी में सुरक्षित रखी गई थी। देवता महाराज के आदेशानुसार आज आठ साल बाद उन लकड़ियों पर छलीट डालकर देवता की काष्ठदेह का काम शुरू हो जायेगा। बेटा आज ही देवता की प्रतिष्ठा का दिन भी देवभार्ता के बाद बता दिया जायेगा।'

पीशू अपने दादा और पिता जी की बात बड़े ध्यान से सुनता है और दादी खाना बनाते हुये उन दोनों की बातचीत में बीच-बीच में कान लगाती है तभी बहु तारा दूध की बाल्टी लेकर पहुँची और सास के काम में सहायता करने लगी। पिता के कहने पर रूपचन्द पीशू को लेकर नहाने चला गया।

बाहर पौष की ठंड थी, गूर ने ऊन का कोट पहना। पीशू और रूपचन्द भी गर्म कपड़े पहनकर भण्डार जाने के लिये तैयार हो गये।

पीशू के स्कूल में आज छुट्टी थी। वैसे भी गांव में जब भी कोई देवते के कार्यों का आयोजन होता तो गांव के बच्चे स्कूल जाने की बजाय देवकार्यों में हिस्सा लेते थे । पीशू इस बात से भी खुश था कि उसके सभी दोस्त आज भण्डार में आएंगे और वह वहाँ उनके साथ खूब खेलेगा।

तारा ने अपने ससुर, पति और बेटे को दूध का गिलास दिया और फिर वे तीनों गांव की पगडण्डी में नीचे देवते के भण्डार को चल पड़े। सुबह-सुबह ठण्ड में बर्फ जमी होने के कारण वे तीनों सावधानी से चलते हुये देवता के भण्डार में बीस- पच्चीस मिनट में पहुँच गये। भण्डार के प्रांगण में आग जलाकर हेसी अपने वाद्ययन्त्रों के साथ पहले ही पहुँच गये थे और बैठ कर बीड़ी सुलगा रहे थे। बशाखू राम गूर को देखकर सबने उन्हें राम-राम कहा और फिर अपने ढोल और नगाड़ों की रस्सियां कसने लगे।

भण्डार के अन्दर कारदार और कुछ देउलू पहले से ही पहुँच गये थे। थोड़ी ही देर में भण्डार प्रांगण में बहुत लोग इक्ट्ठे हो गये। बालू नाग के अधीन अठारह गांव के हर घर से एक-एक व्यक्ति हाजिरी देने पहुंचा था। सभी देवकार्यों में ग्रामीण इन नियमों का पालन करते अन्यथा देवदोष का भय उन्हें हमेशा सताता रहता।

थोड़ी ही देर में वाद्ययन्त्रों की ध्वनियों से सभी दिशाएं गूँजने लगती हैं। देवरथ को उठाकर देवता के कारकून बाहर ले आते हैं और बशाखू राम गूर देवता के पीछे नंगी छाती और पीठ पर खुले केश और हाथ में घन्टी और धौड़च के साथ धोती पहने भण्डार के साथ देवते की सौह (मैदान) में आ जाते हैं। उनके पीछे तीन अन्य गूर उसी तरह उनका अनुसरण करते हुये पहुँचते हैं। इस देवकार्य

में केवल पुरूष और बच्चे ही शामिल होते हैं। देवरथ को एक ऊँचे पत्थर के चबूतरे पर दरी बिछाकर उस पर रखा जाता है और फिर देवते की सौह में देवखेल शुरू होता है। मलेघा गूर बशाखू राम सबसे पहले लोहा खेलते हैं लोहे की गुरजी सौह के बीचोबीच गाड़ने के बाद बशाखू राम गूर कटार लेकर उसके चारों ओर धीरे-धीरे ऊपर नीचे करके गोल घूमते है फिर लौहे की सांगल से अपनी नंगी पीठ पर गुरजी के गोल घूमते हुए मारते हैं और फिर बारी-बारी से अन्य तीन गूर भी लोहा खेलते हैं फिर मलेघा गूर बशाखू राम देवभार्ता करता है। सभी व्यक्ति हाथ जोड़कर अपने घुटनों के बल बैठकर देवभार्ता सुनते हैं। उस समय वाद्ययन्त्र बजाने बन्द कर दिए जाते हैं। पीशू भी अपने दोस्तों के साथ देवरथ के एक ओर बैठे हुये अपने दादा को देवभार्ता करते हुये सुनता है।

देवभार्ता में बालू नाग अपने उद्‌भव से लेकर उस गांव और मन्दिर में स्थापित होने की कथा विस्तार से कहते हैं। देवभार्ता के बाद देवरथ को उठाकर सौह तक लाया जाता है और फिर कारदार देवता से काष्ठदेह के काम की इजाजत माँगते हैं। मलेघा गूर देवता की ओर से कल से काम करने की इजाजत देता है और फिर देवता, गूर और पंडित के परामर्श पर माघ की सक्रांत का दिन काष्ठदेह की प्रतिष्ठा के लिये निकाला जाता है। तभी गांव के लड़के सफेद ऊन वाले एक भेड़ू को पकड़कर देवता के समक्ष लाते हैं। उसके कान और पीठ पर गूर चावल-फूल डालता है और फिर पानी के छींटे उस पर फैंके जाते हैं। फिर चारों ओर आवाज गूँजती है, 'जय महाराज, बालू नाग इसे स्वीकार करें,' ताकि इसके खून से अंगाह की लकड़ी को छलीट देकर देवकार्य का शुभारम्भ किया जा सके।

तभी भेड़ू अपने शरीर को झनझनाहट के साथ हिलाता है, जिसे देवता की स्वीकार्यता समझने के बाद उसे काटकर रसोइयों के हवाले किया जाता है फिर इसी तरह और पांच-छह भेड़ू काटे गये। उनके खून से अंगाह की लकड़ियों को छलीट दी गई। देवता को दोबारा चबूतरे पर बिछी दरी पर बैठाया गया और फिर काष्ठदेह बनाने वाले मिस्त्रियों के नाम का चयन हुआ। देवता ने स्वयं गूर के माध्यम से छह लोगों को मिस्त्री के काम के लिये चुना। ये मिस्त्री आज से यहीं भण्डार परिसर में रहेंगे। इन मिस्त्रियों के वंशज ही देवता की काष्ठदेह बनाने के लिये पात्र होते हैं जिन्हें ब्रीतदार मिस्त्री कहते हैं। इन मिस्त्रियों का मुखिया चमन मिस्त्री बशाखू राम गूर से चावल लेकर संकल्प करता है कि वह पूरे विधि-विधान से निष्ठापूर्वक अपने पूर्वजों की भान्ति भक्तिभाव से अपने साथी मिस्त्रियों के साथ देवता की काष्ठदेह बनायेगा और समय पर तैयार करके देवता के कारकूनों को सौंप देगा और इस एवज में देवकोश से जो भी मेहनताना उसे और उसके साथियों को दिया जायेगा वह उसे स्वीकार्य है।

फिर देवता को भण्डार के अन्दर वापिस ले जाया गया। गूर ने भी अपने केश बांधकर टोपी पहन ली और अपनी धोती बैग में डालकर गर्म पजामे और ऊनी स्वैटर कोट पहन लिये। पीशू अपने दोस्तों को छोड़कर दादा के पास उनका बैग पकड़कर बैठ गया।

बशाखू राम गूर ने अपने बेटे रूपचन्द और कारदार के बेटे खूबराम को भण्डार के साथ वाली सराय में अंगाह की लकड़ी ब्रीतदार मिस्त्री को सौंपने के लिये कहा।

'बेटा काष्ठदेह का काम एकान्त में होता है इसलिये तुम दोनों जाकर स्वयं अंगाह की लकड़ियाँ ब्रीतदार मिस्त्री चमन को देना और यह भी कहना कि काष्ठदेह बनाने के दौरान कोई भी बाहर का व्यक्ति उनकी सराय में प्रवेश न करे। रोज स्नान करने के बाद व्रती रहकर काम करें और दोपहर बारह बजे काम बन्द करके एक ही बार दिन में भोजन करें। भोजन की व्यवस्था हमारे घर से रोज कर दी जायेगी। स्त्रियों का उस दौरान सराय में आना निषेध रहेगा। इस बात का ख्याल रखें। हालांकि गूर परिवार की स्त्री इस बन्धन से मुक्त है।'

'ठीक है पिताजी मैं और खूबराम ब्रीतदार मिस्त्री को बता देते हैं और अंगाह की लकड़ी भी दे आते हैं।'

तभी कारदार भी रूपचन्द को पीछे से आवाज लगाकर बोला

'रूपू उन मिस्त्रियों को यह भी बोलना कि जब तक देवता की काष्ठदेह तैयार नहीं होती, वह न तो घर जा सकते हैं और न ही कहीं और। उन्हें बस यहीं सराय में रहना होगा और आज विधिवत थोड़ा सा काम शुरू करके उनको भोजन करा देना फिर कल से वह नियमित रूप से काम करें।'

'ठीक है कारदार जी,'

इतना कहकर दोनों भण्डार की सीढ़ियों से नीचे उतरकर सराय की ओर चले गये।

इधर भण्डार प्रांगण में भेडूओं के माँस का भोज सभी ग्रामीणों में परोसा जाने लगा। सूरज सामने वाली पहाड़ी के पीछे छुपने की तैयारी करने लगा और ग्रामीण भी अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान करने लगे। थोड़ी ही देर में भण्डार में कुछ ही देउलू रह गये। बजन्त्री भी इजाजत लेकर अपने-अपने घर की ओर निकल गये।

देवकार्य सम्पन्न होने के बाद बशाखू राम गूर अपने बेटे और पोते के साथ ऊपर पहाड़ी की ओर अपने घर चल पड़े। रास्ते में कारदार जी के आमन्त्रण पर वह तीनों चाय पीने के लिये कारदार जी के घर पर रुके। कारदार की नव विवाहित बहु बोन चाइना के कप में चाय लाई। वैसे तो पीशू चाय नहीं पीता लेकिन चाय के कप की सुन्दरता देखकर वह आकर्षित हुआ और उसने एक कप जल्दी से उठा लिया, और चाय पीने लगा, शायद उसे ठंड भी लग रही थी। जैसे ही कारदार की बहु गूर को चाय देने के लिये कप आगे बढ़ाती है तो गूर ने चाय पीने से मना कर दिया।

देवकार्य सम्पन्न होने के बाद बशाखू राम गूर अपने बेटे और पोते के साथ ऊपर पहाड़ी की ओर अपने घर चल पड़े। रास्ते में कारदार जी के आमन्त्रण पर वह तीनों चाय पीने के लिये कारदार जी के घर पर रुके। कारदार की नव विवाहित बहु बोन चाइना के कप में चाय लाई। वैसे तो पीशू चाय नहीं पीता लेकिन चाय के कप की सुन्दरता देखकर वह आकर्षित हुआ और उसने एक कप जल्दी से उठा लिया, और चाय पीने लगा, शायद उसे ठंड भी लग रही थी। जैसे ही कारदार की बहु गूर को चाय देने के लिये कप आगे बढ़ाती है तो गूर ने चाय पीने से मना कर दिया। बोन चाइना के कप देखकर कारदार अपनी बहु को बोले,

'गूर जी कप में नहीं, स्टील के गिलास में चाय पीते हैं, जाओ दोबारा चाय बनाओ और स्टील के गिलास में ही लाना।'

कारदार की बहु दोबारा चाय बनाने चली गई और कारदार गूर के साथ देऊली की चर्चा करने लगे।

'कारदार जी, अब तो पूरे परगने में सब घरों को भेड़ूओं का इन्तजाम करना पड़ेगा।'

'हाँ गूर जी, कल खूबराम गाड़ागुशैड़ी की तरफ मेरी धर्म बहन के गाँव में जा रहा है। उनके गांव में सबके पास भेड़-बकरियां हैं। अगर आपको भी चाहिये तो रूपचन्द को कल सुबह खूबराम के साथ भेज देना। गाँव के आठ-दस लोग उसके साथ जा रहे हैं। गाड़ी का किराया भी सब में बंट जायेगा।'

'हाँ कारदार जी हमें और आपको तो पाँच-छह भेड़ू का इन्तजाम करना पड़ेगा। यहां भण्डार से ऊपर मन्दिर तक ले जाते हुये रास्ते में हमारे कई भेड़ू लग जायेंगे। मलिमुख लगने के बाद तो फिर हर घर की छत पर एक-एक ही भेड़ू लगेगा।'

चाय पीने के बाद कारदार से विदा लेकर बशाखू राम गूर अपने बेटे रूपचन्द और पोते पीशू के साथ घर पहुँचे। अगली सुबह रूपचन्द कारदार के बेटे खूबराम और गांव के कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ गाड़ी करके गाड़ागुशैणी के लिये निकल गये।

गूर की पत्नी और बहु ने ब्रीतदार मिस्त्रियों के लिये खाना बनाया और पीशू को स्कूल भेजा फिर गूर अपनी बहु तारा के साथ खाना लेकर भण्डार पहुँचे। अभी बारह बजने में थोड़ा समय और है। सभी छह ब्रीतदार मिस्त्री सराय के अन्दर काम में लगे हुये थे।

गूर की आवाज सुनकर ब्रीतदार मिस्त्री चमन बाहर आया।

'राम राम गूर जी।'

'राम राम, चमन, तो कर दिया तुमने काम शुरू।'

'हाँ जी गूर जी, सबसे पहले हमने काष्ठदेह के लिये पटड़ा तैयार करना है, जिसके ऊपर सारा काम होना है। कुछ दिन तो लकड़ी की रंदाई करने में लगेंगे गूर जी।'

'अच्छा ठीक है, रोटी रख लो तुम लोग, हम चलते हैं, अपने टाइम से खा लेना। ब्रती रहकर अब इतना ही काम होगा। एक और बात बतानी रह गयी थी तुम लोगों को। जब तक काम पूरा नहीं होता, तुम सबने न तो दाढ़ी बनानी है और न ही बाल काटने हैं।'

'जी गूर जी, हम सारे नियमों का पालन कर रहे हैं, आप निश्चिंत रहिये। दोपहर बाद गूर और उनकी बहु घर पहुँचे।

पीशू अपने स्कूल से सांझ होने से पहले पहुँचा, जैसे ही वह अपने घर के आंगन में पहुँचा तो भेड़ों के मिमयाने की आवाज से वह हैरान हुआ। अपना स्कूल का बस्ता वहीं छोड़कर वह पशुओं के कठार में झांकने लगा। अन्दर उसके पिता भेड़ों को भीहूल के पत्ते दे रहे थे। 'पीशू बेटा तुम स्कूल से आ गये।'

'हां जी पापा जी, आप कब पहुँचे।'

'अभी-अभी पहुँचा बेटा, तू दरवाजा बन्द कर, कहीं ये भेड़ें बाहर न भाग जाएं।'

पीशू दरवाजा बन्द करने ही लगा था कि एक छोटा सा सफेद रंग का मेमना उछलते हुये बाहर निकला। पीशू उसके पीछे दौड़ा। मेमना यही कोई महीने भर का होगा। मेमना पूरे आंगन में उछल-कूद करने लगा और पीशू उसके पीछे उसे पकड़ने के लिये दौड़ा। आखिर पीशू ने उसे पकड़ा। पीशू को उसे अपनी गोद में रखकर बहुत प्यार आया। अपने छोटे-छोटे हाथों से उसने उस मेमने को सहलाया और पुचकारा तभी पीशू के पिता आये और उन्होंने मेमेने को पकड़कर किल्टा उल्टा करके मेमने को उसके नीचे डाल दिया।

'चलो ऊपर, कल खेल लेना, अभी बाहर बहुत ठंड है तुम्हारी अम्मा इसे बाद में अंदर कर देगी।'

पीशू और उसके पिता आकर तन्दूर के पास बैठ गये। उसके गूर दादा ने बेटे रूपचन्द को देखकर पूछा,

'बेटा पहुँच गया तू, कितने भेड़ू लाया ?'

'पिताजी पांच तो बड़े हैं, दस-दस हजार का एक-एक मिला। एक छोटा मेमना ही है, वह हजार रूपये का पड़ा। कुल मिलाकर आज हमारी गाड़ी में पच्चीस भेड़ू लाये। यह तो अच्छा हुआ, हम आज ही लाये। हमारे इलाके के सारे लोग उधर ही भेड़ू लेने के
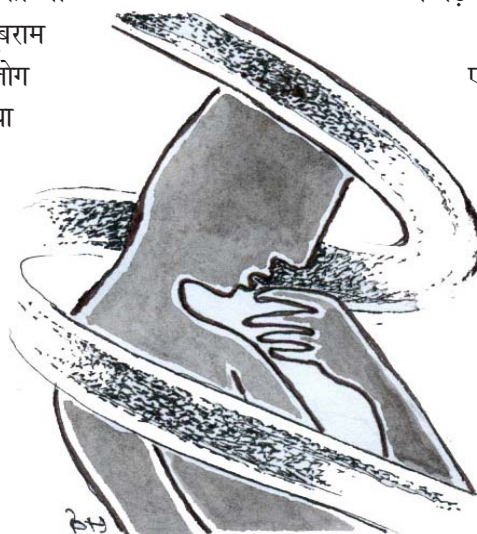
लिये घूम रहे हैं, तो उन्होंने भी कीमत बढ़ानी शुरू कर दी है।'

'अब हमारे परगने में कम लोग भेड़-बकरियां पालने लगे हैं। पहले तो यहीं हमारे गांव में कुल मिलाकर दो सौ से ज्यादा भेड़-बकरियां थीं। ये ऊन के कोट, पट्टू और दोहडू के ढेर ऐसे ही थोड़े न बने हैं।'

दादा और पापा की देउली की चर्चा चल रही थी और इधर पीशू सोचने लगा कि रात जल्दी बीत जाये और फिर वह मेमने के साथ खेलेगा।

सुबह दादा की पूजा की घन्टी की आवाज सुनते ही पीशू उठ गया और मेमने को उठाकर तन्दूर के पास रसोई घर में ले आया।

'पीशू , बेटा क्या हो गया, आज इतनी जल्दी उठ गया और इस मेमने को यहाँ क्यों ले आया।'

'दादी, अब इसका नाम कंचू है। यह मेरा दोस्त है।'

'तू न इससे ज्यादा दिल न लगा समझा.....आज बाहर बर्फ गिर रही है, आज स्कूल जाना रहने देना।'

'ठीक है दादी, तो आज कंचू के साथ मैं दिन भर खेल सकता हूँ।'

पीशू के पापा आज भण्डार में व्रीतदार मिस्त्रियों के लिये खाना लेकर गये। इस तरह अगले कुछ और दिन बीते। पूरे परगने के लोग देवता की प्रतिष्ठा की तैयारियां करने लगे। घरों में राशन इकट्ठा करते और छलीट के लिये हर घर में भेडूओं का इन्तजाम करते और इधर पीशू कंचू का पक्का दोस्त बन गया। जहां-जहां पीशू जाता कंचू उसके पीछे उछल-उछल कर जाता। सफेद ऊन वाला कंचू जब पीशू की गोद में बैठता तो वह कभी उसके चेहरे को चाटता, तो कभी उसके हाथ को चाटता। पीशू जब स्कूल जाता तो शाम को दौड़ा-दौड़ा पहले कंचू के ही पास जाता, उसके साथ खूब खेलता।

पीशू के पापा आज भण्डार में व्रीतदार मिस्त्रियों के लिये खाना लेकर गये। इस तरह अगले कुछ और दिन बीते। पूरे परगने के लोग देवता की प्रतिष्ठा की तैयारियां करने लगे। घरों में राशन इकट्ठा करते और छलीट के लिये हर घर में भेडूओं का इन्तजाम करते और इधार पीशू कंचू का पक्का दोस्त बन गया। जहां-जहां पीशू जाता कंचू उसके पीछे उछल-उछल कर जाता। स्फेद ऊन वाला कंचू जब पीशू की गोद में बैठता तो वह कभी उसके चेहरे को चाटता, तो कभी उसके हाथ को चाटता। पीशू जब स्कूल जाता तो शाम को दौड़ा-दौड़ा पहले कंचू के ही पास जाता, उसके साथ खूब खेलता।

एक दिन रविवार को पीशू अपने पिता के साथ भण्डार में व्रीतदार मिस्त्रियों को खाना देने गया। जब पीशू अपने पिता जी के साथ सराय के अन्दर गया तो उसने देखा कि देवता का निचला और मध्य हिस्सा बन चुका है। पीशू के पिता को चमन व्रीतदार मिस्त्री ने बताया कि अगले रविवार तक काम पूरा हो जायेगा। अब काष्ठदेह के सबसे ऊपरी हिस्से का कार्य रहता है जो कि देवरथ का सिर कहा जाता है।

मिस्त्रियों का काम देखकर रूपचंद आश्वस्त हो गया कि प्रतिष्ठा से पहले काष्ठदेह का काम पूरा हो जायेगा दोपहर बाद पीशू अपने पिता के साथ घर पहुँचा। पीशू कंचू के साथ खेलने लग गया और उसके पिता को उसके गूर दादा ने जरूरी काम से घर के अन्दर बुला लिया।

'बेटा अगले वीरवार को देवता की प्रतिष्ठा है। मिस्त्रियों का काम कहाँ पहुँचा।'

'पिताजी चमन मिस्त्री कह रहा था कि अगले रविवार तक काम पूरा हो जायेगा।'

'यह तो अच्छी बात है, अब बाकी तैयारियाँ भी करनी पड़ेंगी। कारदार जी आज दो सौ मीटर सफेद कपड़ा और दो सौ मीटर लाल कपड़ा जिसे लठा कहते हैं, यहां छोड़कर गये हैं। कल सुबह गांव के सात-आठ लड़के आएंगे, तुम्हें यह कपड़ा लेकर ऊपर बालू नाग के मन्दिर जाना होगा और वहाँ की झील के पानी में इसे प्रतिष्ठा से पहले पांच-छह बार धोना होगा। कल धोकर वहीं सराय में यह कपड़ा रख देना। फिर दो दिन बाद जाकर फिर इसे गीला करना और फिर प्रतिष्ठा से एक दिन पहले जाकर फिर धोना होगा। इसे धोते हुये एक बात ध्यान रखना, यह तुम सब के हाथ पर ही धुलना चाहिये। इसे जमीन पर मत रखना। इसके बाद एक पांच मीटर का सफेद कपड़ा धोकर तू यहां घर पर लाकर रखना और अपने लिये भी उससे कुरता-पजामा बनवाकर रख लेना।'

'क्यों पिताजी, मेरे लिये कुरता-पजामा क्यों ?'

'बेटा गूर खानदान का पुरूष ही देवता की काष्ठदेह को भण्डार से मन्दिर तक ले जायेगा और यह तेरा सौभाग्य है कि तुझे देवता का यह मंगल कार्य करने का अवसर मिल रहा है।'

पिता-पुत्र के बीच देर रात तक देवकार्यों पर बातचीत होती रही। अगली सुबह होते ही रूपचन्द नहा धोकर गाँव के अन्य व्यक्तियों के साथ सफेद और लाठ के कपड़े लेकर मंदिर की झील में धोने के लिये लेकर गया। गाँव में प्रतिष्ठा की तैयारियों ने जोर पकड़ लिया। पीशू निश्चिंत होकर कंचू के साथ खेलता। उसका स्नेह कंचू के प्रति दिन-प्रतिदिन बढ़ता देखकर पीशू की दादी उससे बोली, 'पीशू बेटा, इस मेमने से इतना दिल भी मत लगा। कुछ दिनों बाद बाकी भेडुओं के साथ यह मेमना भी देवते की भेंट चढ़ जायेगा। तब तुम्हें बहुत दुःख होगा।'

'क्या कहा दादी, मैं कंचू को किसी को नहीं दूँगा, यह मेरा है।'

पोते की आँखों में कंचू के लिये अगाध स्नेह देखकर दादी आगे कुछ नहीं बोल पाई। लेकिन पीशू के मन में यह बात अब बैठ

गई कि कंचू को किस मकसद से घर पर लाया गया है। अगर सचमुच ऐसा है तो उसके जीवन के थोड़े ही दिन पीशू के साथ बचे हैं। पीशू कंचू से वायदा करता है कि वह उसे कुछ नहीं होने देगा।

प्रतिष्ठा से एक दिन पहले गांव में मेहमान पहुँचने लगे। गांव की सभी महिलाओं और लड़कियों को हिदायत दी गई कि भण्डार से मन्दिर तक जब काष्ठदेह जायेगी तो वे सभी घर के अन्दर बन्द रहें क्योंकि माना जाता है कि देवरथ की काष्ठदेह मोहरों के बगैर निर्वस्त्र व्यक्ति की तरह होती है तो भगवान को स्त्रियों से शर्म आती है। इसलिये किसी भी स्त्री की दृष्टि काष्ठदेह पर नहीं पड़नी चाहिये। वीरवार की सुबह पीशू के पिता सफेद कुरता-पजामा पहनकर अपने गूर पिता के साथ भण्डार जाने के लिये तैयार हुये। घर पर बहुत मेहमान आये हुये थे। गूर ने पीशू के मामा को समझा दिया कि कौन सा भेडु कहां छलीट के लिये जाना है। पीशू की गोद में कंचू को देखकर उन्होंने उसके मामा को सबसे अन्तिम छलीट के लिये रखने के लिये कहा, जो कि मन्दिर में बन्दूक की आवाज के बाद गाँव और परगने की हर छत पर होनी थी। पीशू अपने दादा की हर बात कान लगाकर सुन रहा था। उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। मन से बहुत डर गया था लेकिन किसी से कुछ कह नहीं पा रहा था। पीशू के दादा ने उसे भण्डार में साथ चलने को कहा लेकिन पीशू ने साथ जाने से मना कर दिया।

यह देवता की ही कृपा हुई कि आज प्रतिष्ठा के दिन सूर्य का आवरण पूरी तरह से चमक रहा था। चारों ओर बर्फ से लदी पहाड़ियां और वृक्ष इस ऐतिहासिक घटना की साक्षी बनने के लिये खड़ी थीं। रूपचन्द अपने पिता के साथ दोपहर से पहले भण्डार पहुंचा। वाद्ययन्त्रों की धुन से समस्त घाटियां गूँजने लगीं। हजारों की संख्या में देऊलू भण्डार प्रांगण में एकत्रित हुये। ब्रीतदार मिस्त्रियों को उनका नजराना कारदार ने दिया और समस्त ग्रामीणों और देऊलुओं की ओर से उनका धन्यवाद किया। रूपचन्द के मुँह में पंजरत्न डाला गया। सफेद कपड़े पहने हुये पूजा के बाद काष्ठदेह को सफेद वस्त्र से ढक कर रूपचन्द ने अपनी पीठ पर बांधा और उठा कर गांव की पगडण्डी पर चलते हुये ऊपर देवदार के जंगल के बीचोंबीच स्थित मन्दिर की ओर चल पड़ा।

आज कुलूत देश के एक दुर्गम कोने में एक देवता अपनी पुरानी काष्ठदेह को त्याग कर अपनी नई काष्ठदेह में प्रतिष्ठित होने जा रहा है। सदियों पुरानी परम्परा को एक बार फिर दोहराया जा रहा है। यही परम्परा इस कुलूत देश की देवपरम्परा की धुरी रही है। ढोल नगाड़ों और देवता महाराज के जयकारों के साथ ज्यों-ज्यों रूपचन्द के कदम गांव के रास्तों पर जहां-जहां रुकते हैं वहां-वहां भेडुओं के रक्त से उनके रास्ते की बाधाओं को दूर किया जाता है।

मन्दिर पहुँचने तक चौदह बार रूपचन्द के कदम रुके और हर रूके हुये कदम पर एक भेडु की बलि दी गई। इस तरह मन्दिर पहुँचने तक कुल चौदह भेडुओं की बलि दी गई।

मन्दिर पहुँचने पर बालू नाग के पुराने देवरथ के सामने रूपचन्द ने नई काष्ठदेह रखी। देवता के मलेघा गूर बशाखू राम सहित ब्राहम्ण और महंत देवरथ के पास बैठ गये। काष्ठदेह के ऊपर का सफेद कपड़ा बलबीर महंत ने हटाया और फिर उन्होंने सफेद रंग का दो सौ मीटर का गीला कपड़ा काष्ठदेह पर नीचे से ऊपर की ओर लपेटना शुरू किया। ब्राहम्ण मन्त्रोचार करने लगे। गूर घन्टी बजाते हुये देवभार्ता करने लगे। फिर दो सौ मीटर का ही लाल रंग का कपड़ा जिसे लाठ कहते हैं, उसी सफेद कपड़े के ऊपर लपेटा जाता है।

इस प्रक्रिया के दौरान पुरानी काष्ठदेह से नई काष्ठदेह में ब्राहम्णों द्वारा मन्त्रोचार से शक्तियां प्रतिस्थापित की जाती है। काष्ठदेह के सबसे ऊपर के हिस्से में चुरू की पूंछ के बाल लगाये जाते हैं। इसे देवरथ का सिर कहा जाता है। अन्तिम विधि में देवता के मोहरे लगाये जाते हैं। सबसे पहले मध्य भाग के पिछले हिस्से में दो मोहरे लगाये गये। उसके बाद एक-एक करके दाएं और बाएं मध्य भाग में दो-दो मोहरे स्थापित किये गये। तत्पश्चात् देवरथ के सामने वाले हिस्से में मध्य भाग के ऊपर की ओर एक मोहरा स्थापित किया गया उसके बाद उसके नीचे देवरथ का मुख्य मोहरा मलिमुख स्थापित किया गया। मलिमुख की स्थापना के साथ ही मन्दिर प्रांगण में सत्तर से ज़्यादा भेडु काटे गये और देवरथ के मोहरों पर उनके खून से छलीट दी गई। उसी समय मन्दिर प्रांगण से रात को एक बजे बन्दूक छोड़ी गई। गाँव की हर घर की छत पर लोग पहले से भेडू लेकर बैठे थे। जैसे ही बन्दूक की आवाज गांव तक पहुँची गांव की हर घर की छत पर भेडुओं के सिर धड़ से अलग कर दिये गये।

इसी तरह एक गाँव से अगले गांव को बन्दूक की आवाज से मलिमुख की प्रतिष्ठा की खबर दी गई और अठारह गांव की हर घर की छत पर कुल ढाई हजार से ज़्यादा भेडु एक साथ काटे गये।

इधर गूर के घर पर हड़कंप मचा हुआ था क्योंकि पीशू कंचू को लेकर घर से भाग गया था। उसकी दादी ने परिस्थिति को संभालते हुये घर पर कहीं से जटाधारी नारियल ढूँढ लाया और पीशू के मामा को दिया और फिर उन्होंने छत पर जाकर उसकी बलि दी क्योंकि बलि में कोई विलम्ब नहीं होना था।

आज इस बात को तीन साल बीत गये हैं। पीशू पिछले तीन सालों से कंचू के साथ सुबह शाम खेलता है। छुट्टियों में उसे चराने जंगल भी जाता है और आज तो वह बहुत खुश है उसके दादा कंचू की ऊन से बनी पट्टी का कोट सिलवाकर उसके लिये लाये हैं। पीशू कोट पहनकर कंचू के पास जाता है और उसे उसके इस तोहफे के लिये धन्यवाद करता है।

बुरांश लॉज, MIG, हाउस नं. 18, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, संजौली, शिमला-171 006

कहानी

रामजी की फोटो

◆ महेश शर्मा

दरअसल गलती मेरी ही थी। यदि उस दिन मेले मे जाकर मां के लिये रामजी का फोटू पसंद करके ना लाता तो घर में इतना बखेड़ा ही ना होता।

रामजी के फोटो को लेकर घर में घमासान मचा हुआ था मां और छोटा बन्टी एक तरफ थे तो बिन्नी और उसकी मम्मी यानी श्रीमती एक तरफ। और मैं? मैं किधर था? मां की तरफ, बेटी की तरफ या श्रीमती की तरफ? मैं तो सब तरफ था हर तरफ था। यद्यपि मैं कोई देवता नहीं था जो हर तरफ हो सब की तरफ हो। लेकिन मैं अकेला कहां था मैं बेटा भी था में बाप भी था और मैं पति भी था। अब यदि इन सारे स्वरूपों में ही जंग होने लग जाये तो बेचारा मैं कहां जाये। खैर बात तफसील से बतानी होगी तभी आपकी भी समझ में आयेगी।

होता यूं है कि गांव से मां आई हुई है महीने दो महीने साथ रहने के लिये। नयी बात नहीं है साल में दो तीन बार आती है मेरे यहां रहना उसे अच्छा लगता है पत्नी को भी कोई परेशानी नहीं होती सास बहू दोनों में अच्छा सामंजस्य है और बच्चे तो दादी के प्रति बहुत स्नेह भी रखते हैं और उसे ज्यादा से ज्यादा अपने साथ रखना चाहते हैं क्योंकि मैं तो व्यस्त रहता हूं ऑफिस कार्य में और पत्नी व्यस्त रहती घरेलू काम में। अब इनका दिन भर का साथ देने वाली तो दादी ही थी तो बड़ा बेटा गोलू बिन्नी और छोटा बन्टी तीनों दादी से प्यार भी करते थे और उसका साथ भी पसन्द करते थे। लेकिन यहां एक पेंच अक्सर फंस जाता था बिन्नी और मां के बीच यानी दादी और पोती के बीच। वैसे ये आम घरों की कहानी है कि दादी पोती में प्यार भी बहुत होता है लेकिन बहस और जिद्द भी बहुत होती रहती है।

मेरे यहां भी बिन्नी यानी मेरी आठ-नौ साल की बेटी अपनी दादी से प्यार भी बहुत करती है उसका ध्यान भी बहुत रखती है लेकिन अपनी बात मनवाने या ऊपर रखने में कोई समझौता नहीं करती बल्कि दादी से भी पूरी टक्कर लेती थी। अक्सर दादी पोती में बहस और विवाद होता रहता था विवाद के कारण वही कुछ जो पीढ़ियों के अंतर या विचारधारा का फर्क पुराने रहन सहन का ढंग और नयी पीढ़ी की नफासत भरी लाइफ स्टाइल। मां अपने सिरहाने प्लास्टिक के तीन चार छोटे छोटे डब्बे रखती थी जिनमें उसकी दवाई गोली, खाने का कुछ आइटम बिस्किट वगैरा रखती थी। बिन्नी इस बात की जिद्द करती कि ये डब्बे यहां अच्छे नहीं लगते इनको अन्दर रखो मां नहीं मानती मां शाम पांच बजे से कल सुबह पहनने के कपड़े अपने सिरहाने रख लेती बिन्नी इस बात पर बहुत गुस्सा होती कहती दादी ने बैठक रूम की बारा बजा दी है। और मां का कहना था कि, इम्मे कंइ गलत हे ...।

बिन्नी के कपड़े आजकल की फैशन के अनुसार थोड़े शार्ट होते मां कहती, अच्छा नी लगे ...। ऐसी कई छोटी छोटी बातें बहस का रूप ले लेतीं। और इन सब बहस का अन्त होता मां के इस वाक्य पर कि... वा म्हके कइं करनो जैसो तमारे अच्छो लगे वैसो करो ...। इतना कह कर मां चुप होकर सो जाती। मां को नाराज जान कर थोड़ी देर बाद खुद बिन्नी ही दादी के गले लग जाती उसे मना लेती और मां नार्मल हो जाती।

इसी तरह दिन भर में घर में कोई खास घटना होती, रिश्तेदारों का कोई पत्र या जानकारी पता चलती तो शाम को जब मैं ऑफिस से घर आता तब दादी और पोती में इस बात की होड़ मचती कि सबसे पहले वो सारी बातें मुझे कौन बतायें।

मेरे घर में घुसते ही मां शुरू करना चाहती तभी उसकी बात काट कर बिन्नी सुनाने लग जाती लेकिन मां उसे तत्काल डांटती ... चुप चुप रे तु म्हके बताने दे ... दोनों में बहस छिड़ जाती ऐसी बहस का अन्त इस स्तर तक आ जाता कि बिन्नी जोर से कहती मेरे पापा हैं मैं बताऊंगी उनको। लेकिन मां उससे ज्यादा जोर से चिल्लाकर कहती कि... म्हारो भी छोरो है वो मैं बताऊंगा उके..।

और मैं किंकर्तव्यविमूढ़ सा दोनों के बीच खड़ा इस बालवृद्ध बहस का अन्त होने का इन्तजार करता। ऐसे में थर्ड पार्टी के रूप में श्रीमती का आगमन होता। कुछ बिन्नी को डांट कुछ मां को उलाहना देकर दोनों योद्धाओं को अलग अलग कर देती और दोनो ही थोड़ा थोड़ा गुस्सा लिये चुप हो जाते हालांकि चलती बहस के दौरान ही दोनों जोर जोर से बोल बोल कर संबंधित घटना का पूरा ब्योरा मुझे बता भी देते।

ऐसी कई छोटी मोटी खट्टी मीठी बातें होती रहतीं सभी घरों में होती रहती हैं। लेकिन इन्हीं के बीच मैं जिस समस्या मे उलझा वो बात आगे बढ़ाते हैं। नगर में लगे मेले में हम पति-पत्नी और

बच्चे इन्जाय करने गये थे वहीं एक फोटो एवं पेंटिग्स की दुकान पर मैं ठिठक गया। वहां बहुत से धार्मिक फोटो के अलावा फिल्म स्टार के और प्राकृतिक दृश्यों के फोटो रखे थे। लेकिन मेरी नजर एक क्षण में ही सामने रखे एक बड़े फोटो पर टिक गई जिसमें भगवान श्री राम सीता और लक्षमण का चित्र पूरे खड़ी मुद्रा में दर्शित था तथा उनके चरणों में हनुमान जी बैठे थे। फोटो बहुत सुन्दर, पुरातन एवं प्रभावी था फोटो की साइज भी काफी बड़ी थी लगभग साढ़े तीन फुट ऊंचा और ढाई फुट चौड़ा था फोटो का चित्रांकन तुलसी की रामायण में वर्णित प्राचीन शैली का होकर बड़ा मोहक और श्रद्धा जाग्रत करने वाला था।

मुझे पता था मां बहुत धार्मिक स्वभाव की है तथा श्रीराम उसके आराध्य हैं जिन्हें वो अन्य सभी भगवानों से ज्यादा स्मरण करती है। मेरे दिमाग में आया कि ये फोटो मां को बहुत अच्छा लगेगा और पूजा घर की सुन्दरता में भी अभिवृद्धि होगी।

श्रीमती को बताया वो भी सहमत थी। मोलभाव करके फोटो घर ले आये। फोटो घर ले जाते समय रास्ते में मैं स्वयं को बहुत प्रफुल्लित महसूस कर रहा था मां यह फोटो देख कर बहुत खुश होगी ये एहसास था।

वैसे भी जीवन की वास्तविक खुशी का सार ही यह होता है कि हम किसी अपने प्रिय या अपने स्वजन के लिये कुछ करते हैं जिससे वो खुश होता है तथा उसे खुश देखकर उसकी खुशी का कारण स्वयं को मानकर हम भी खुश होते हैं और खुद में ही कुछ बड़प्पन महसूस करते हैं।

घर पहुंचते-पहुंचते रात के दस बज चुके थे। मां लगभग सो चुकी थी मैं बेचैन था मां को रामजी का फोटो बताने के लिये लेकिन मुझे रात को उसे उठा कर फोटो बताने के बजाय सुबह बताना ही ठीक लगा।

मां हमेशा ड्राइंग रूम में रखी शैट्टी पर ही सोती थी। दो बेडरूम किचन डायनिंग ओर गेस्ट रूम यही कुछ था हमारे निजी मकान में। एक बेडरूम में हम पति-पत्नी दूसरे में बच्चे और कोई गेस्ट आये तो गेस्ट रूम में।

मैंने मां से कहा कि वो गेस्टरूम में आराम से सोया करे लेकिन मां का कहना था कि अलग कमरे में उसे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगेगा। मैं तो ड्राइंगरूम में ही सोऊंगी और दिन भर बैठूंगी भी।

मैंने उसकी व्यवस्था ड्राइंगरूम में ही रखी शैट्टी पर कर दी थी। अब वो रात में वहीं सोती और दिन में भी ज्यादातर समय वहीं गुजारती। हालांकि कभी कभी मित्रों या अन्य मिलने वालों के आने पर वहीं बैठ कर बातें करना थोड़ा असहज सा लगता था लेकिन मैंने इन स्थितियों को स्वीकार कर लिया था। अगर किसी तरह की असहज स्थिति को बदल ना पायें तो उसे उसी रूप में स्वीकार कर लेना चाहिये, फिर वही स्थिति सामान्य लगने लगती है।

दूसरे दिन प्रातः उठते ही मैंने राम जी का फोटो मां को दिखाया फोटो देखते ही मां गदगद हो गई। अरे वाह बेटा कितना सुन्दर फोटो लाया है, कितना भव्य और मोहक। तत्काल ही मां ने फोटो में भारतीय जनमानस के हृदय नायक श्रीराम लक्ष्मण सीता और उनके चरणों में बैठे हनुमान जी के आगे श्रद्धा से सिर झुका दिया।

हम पति पत्नी बन्टी बिन्नी और गोलू बहुत अभिभूत थे मां को इतना प्रसन्न और आह्लादित देख कर लेकिन इन आह्लादकारी क्षणों के तत्काल बाद आने वाली एक छोटी किंतु गम्भीर समस्या का किसी को भान नहीं था।

भीगी पलकें और गहराती श्रद्धायुक्त आवाज में मां बोली सुबह उठते ही ऐसे रामजी के फोटू का दर्शन रोज कर लो तो जीवन धन्य हो जाए सब पाप मिट जायें।

हम सब ने बिना उनकी बात का आशय समझे सहमति में सर हिलाया। पत्नी किचन में जा चुकी थी बच्चे भी उनके कामों में व्यस्त हो गये थे। मैं मां के पास ही बैठा था अचानक मां बोली बेटा एक काम कर दे तू आज।

क्या मां मैंने मां की आंखो की ओर देखा।

ये राम जी का फोटो तू लाया है ना इसको सामने दिवार पर लगा दे ऐसा लगा कि में सुबह उठूं तो आंख खोलते ही राम जी के दर्शन हों।

मैं चौंका यहां? ड्राइंग रूम में? रामजी का फोटो? मां ये फोटो बहुत बड़ा है यहां अच्छा नहीं लगेगा।

क्यों अच्छा क्यों नहीं लगेगा ? भगवान का फोटो है इसमें अच्छा नी अच्छा क्या?

ठीक है देखेंगे मां मैंने बात खत्म करने की गरज से कहा और जाना चाहा तभी मां का स्वर फिर गूंजा, तो आज बाजार से बड़ी बिरंजी लेते आना और शाम को लगा देना फोटो ...।

वैसे भी जीवन की वास्तविक खुशी का सार ही यह होता है कि हम किसी अपने प्रिय या अपने स्वजन के लिये कुछ करते हैं जिससे वो खुश होता है तथा उसे खुश देखकर उसकी खुशी का कारण स्वयं को मानकर हम भी खुश होते हैं और खुद में ही कुछ बडप्पन महसूस करते हैं। घर पहुंचते पहुंचते रात के दस बज चुके थे। मां लगभग सो चुकी थी मैं बेचैन था मां को रामजी का फोटो बताने के लिये लेकिन मुझे रात को उसे उठा कर फोटो बताने के बजाय सुबह बताना ही ठीक लगा।

मां की बात पूरी होते ना होते बिन्नी बाहर आई क्या हुआ दादी? बिरंजी किसलिये बुला रही हो? अरे ये रामजी का फोटो लगाना है यहां दिवार पर। अच्छा लगेगा ना बिन्नी?

कहां? यहां दिवार पर? ड्राइंग रूम में रामजी का फोटो? बिन्नी हंसने लगी

मां के चेहरे का रंग बदलने लगा क्यों हंसी क्यों?

अरे दादी भगवान का इतना बड़ा फोटो कोई ड्राइंगरूम में लगाता है क्या ?

भगवान का नी लगाय तो किनका फोटो लगाय ? ये पहाड़ का जंगल का और नदी का फोटो लगाए और भगवान का फोटो लगाने में शरम आये वाह रे जमाना।

मैंने बातचीत का रुख बदलने की कोशिश की मैं जानता था कि कुछ ही मिनटों में बात एक बहस का रूप ले लगी। लेकिन दोनों पूरी तैयारी से थे। बिन्नी बोली 'दादी आजकल भगवान का फोटो कोई नहीं लगाता ड्राइंग रूम में। यहां तो पेंटिग लगाते हैं नेचर के फोटो लगाते हैं भगवान के फोटो तो गांव के लोग लगाते हैं।

अरे वाह तू शहरवाली चुप रे तू। श्याम तू लगा तो फोटो आज ही लगा दिवार पे।

नहीं पापा ये फोटो पूजाघर में लगेगा ड्राइंगरूम में नहीं। बिन्नी भी पूरे अधिकार से जोरों से बोली। मैं दोनों की बहस सुनता अनिश्चय की स्थिति में खड़ा था। मैंने तात्कालीन उपाय निकाला चलो शाम को देखते हैं बिन्नी तुमको भी स्कूल जाना है ना चलो बात खत्म करो। यह कहते हुए मैं रामजी का फोटो पूजाघर की दिवार के सहारे रखते हुए ऑफिस जाने की तैयारी करने लगा।

मैं अपनी तैयारी कर रहा था पर मेरे दिमाग में रामजी का फोटो और मां और बिन्नी की बहस गूंज रही थी। मां के तेवर देख कर लग रहा था कि वो शाम को फिर ये बात उठायेगी क्योंकि उसकी नजर में इससे अच्छी कोई बात हो नहीं सकती। इतना अच्छा भगवान का फोटो ड्राइंगरूम में लगाने से क्या गलत हो जायेगा ?

वैसे वो सही थी अपनी जगह। मुझे याद आया मेरे गांव का मेरा पैतृक मकान जिसके बैठक रूम की क्या हर कमरें की दिवारें भगवानों के फोटुओं से भरी रहती थीं।

रामजी कृष्ण जी भोलेनाथ देवी जी हनुमान जी कोन से देवता बचते जिनका फोटो दिवार पर ना लगा होता। दिवारों के ऊपरी हिस्से में कोई जगह ना बची रहती जहां कोई ना कोई भगवान का फोटो ना लगा रहता और सिर्फ मेरे घर की ही नहीं सभी के घरों की यही स्थिति होती थी।

लेकिन ये भी सच था कि अब वर्तमान बदलते सामाजिक परिवेश में ड्राइंगरूम से भगवान के फोटो गायब हो रहे थे। उनकी जगह प्राकृतिक दृश्यों के फोटो मॉडर्न आर्ट की पेंटिंग या बच्चों की बनाई कलाकृतियों ने ले ली थी। भगवान के फोटो अब सिमट कर पूजाघरों तक ही सीमित हो गये थे। हालांकि ये स्थिति शहरों की थी। गांवों में अभी भी पुराना पैटर्न बचा था। और घर की दिवारों पर भगवान की तस्वीरों का कब्जा था।

बिन्नी का कहना बिलकुल गलत नहीं था। साढ़े तीन बाई ढाई की साइज का भगवान का फोटो ड्राइंगरूम में तो विचित्र ही लगेगा। मां को ही समझाना पड़ेगा। मैंने ऑफिस जाते-जाते ड्राइंगरूम की दिवारों पर नजर डाली एक दिवार पर ऊंचे पहाड़ से गिरते झरने की बड़ी सी पेंटिंग लगी थी दूसरी दिवार पर ऊपर की तरफ एक सुन्दर सी दिवालघड़ी लगी थी जिसके नीचे की तरफ चार तितलियों की एक एक के क्रम से चिपकी हुई प्रतिकृति लगी थी तीसरी दिवार पर बिन्नी की बनाई हुई एक गुड़िया की कलाकृति ने जगह घेर रखी थी। रही चौथी दिवार तो वह खिड़की और दरवाजे ने बांट ली थी। अब रामजी के इतने बड़े फोटो को कहां जगह दी जाये ? वैसे कर्मयोगी श्रीकृष्ण का एक छोटा सा फोटो दिवालघड़ी के नीचे शोभा पा रहा था लेकिन रामजी के इस विशाल फोटो के लिये जगह निकाल पाना मुश्किल ही लग रहा था।

समस्या का फिलहाल तो कोई हल नहीं दिख रहा था मैंने ज्यादा चिन्ता तो नहीं की शाम तक संभव था कि दोनों ही इस बात को भूल जायें और बात खत्म।

ऑफिस से लौटते हुए मेरे दिमाग में फिर रामजी का फोटो आ चुका था। सुबह उठा मुद्दा अब तक खत्म हो चुका होगा ऐसा मेरा विचार था लेकिन घर में घुसते ही घर में फैला सन्नाटा मुझे कुछ संशयजनक लग रहा था।

वही हुआ घर में घुसते ही मां का पहल प्रश्न था बिरंजी लाया बेटा फोटो लगाने की ?

मैंने कहा हां मां देखते हैं अभी। और मैंने बेडरूम में प्रवेश किया मेरी नजरे बिन्नी को खोज रही थीं। बिन्नी मुंह फुलाये बिस्तर पर पड़ी थी

क्या हुआ भइ बिन्नी को ? मैंने श्रीमती से पूछा।

क्या क्या हुआ दिन भर दोनो दादी पोती में बहस होती रही फोटो लगाने के लिये। ओफ मेरा माथा ठनका। श्रीमती फिर बोली मांजी ने तो गजब ही कर दिया बन्टी से बाजार से बिरंजी बुलवा ली और मुझसे कहने लगी की बहू तू ही ठोक दे बिरंजी दिवार में और टांग दे रामजी की फोटो।

फिर ? मैं आश्चर्यचकित था।

फिर क्या इधर से बिन्नी बोली उधर से मां जी बोलती रही मैंने तो कह दिया मांजी आप जानो और आपका बेटा जाने मैं तो कुछ नहीं करूंगी। तब से मांजी आपका रास्ता देख रही है। मां ने खाना खा लिया क्या ? हां मांजी ने तो खाना तो खा लिया है मगर ये बिन्नी ने नहीं खाया है इसे मना कर खाना खिलाओ।

मैंने बिन्नी को गुदगुदी की और अपनी गोद में छुपा लिया मगर वो नाराज होती हुई बोली 'पापा मैं गलत कह रही हूं क्या? इतना बड़ा रामजी का फोटो ड्राइंगरूम में अच्छा लगेगा क्या ? दादी समझती क्यों नहीं। दिन भर मुझसे लड़ती रही बहस करती रही।

मैंने उसे समझाया ' बेटा बड़े बूढ़ों का स्वभाव ऐसा ही होता है जो बात उन्हें ठीक लगती है वो उन्हीं पर टिके रहते हैं।

लेकिन आप बताओ गलत है ना फोटो वाली बात ?

हां हां ठीक है हम देख लेते हैं क्या करना है। तभी श्रीमती बोली देखना आप भी मांजी की बात में मत आ जाना। रामजी का फोटो पूजाघर में ही लगाओ उनको बोलो कि रोज सुबह पूजाघर में रामजी के दर्शन कर लिया करे।

हमारी बातें सुन रहा छोटा बंटी बीच में बोल पड़ा पापा जब दादी इतनी जिद्द कर रही है तो भगवान का फोटो ड्राइंगरूम में ही लगा दो ना।

तू चुप रह बन्टी, बिन्नी ने बन्टी को डांटा तो बंटी ने भी जवाब दिया 'तू चुप रह सुबह से दादी से लड़ाई कर रही है चलो सब चुप हो जाओ मैंने बात खत्म करते हुए पत्नी से खाना लगाने का कहा। खाना खाकर आगे ड्राइंगरूम में मां के पास बैठा और उसके हाथ पर हाथ रखा।

खाना खा लिया बेटा ? हां मां खा लिया है मैंने जवाब दिया। तो अब वो फोटो लगा दे ना बेटा।

हां मां देखता हूं। मैंने कुछ ठण्डे ठण्डे गोलमाल जवाब दिया।

देखता हूं, देखता हूं? कई देखता हूं ? मां बिस्तर पर बैठी हो गई तू भी इनकी बात में उलझी गयो शायद थारो मन भी नी है फोटो लगाने को। मां अब खुलकर सामने आ गई थी।

मां आजकल ड्राइंगरूम में ऐसे बड़े फोटो कोई नहीं लगाता। मैंने विरोध शुरू किया। कोई से कई मतलब अपने अच्छो लगे तो लगानो है बस। भगवान को फोटो अपना घर में लगाने में कई शरम की बात। रोज सुबह उठी ने भगवान का दर्शन अच्छा रे बेटा। मां ने फिर भावुकता का हथियार उपयोग किया।

ठीक है मां तुझे सुबह सुबह आंख खुलते ही रामजी के दर्शन करना है ना ?

बस बेटा एक ही इच्छा है।

ठीक है हो जायेंगे सुबह भगवान के दर्शन।

तो रात में लगायेगा कई चुपचाप जब सब सो जायेगा तब। मां ने बड़े राजदार अन्दाज में पूछा।

हां मां तुमको सुबह भगवान के फोटो के दर्शन हो जायेंगे बस। मां को आश्वासन देकर में बेडरूम में आ गया। बच्चे उनके कमरे में पढ़ाई कर रहे थे। श्रीमती अभी जाग रही थी। मुझे देख मुस्कराती हुइ बोली 'क्या वादा करके आये हो अपनी मां से श्रवण कुमार जी?'

कुछ नहीं मैंने ठंडे स्वर में कहा और लेट गया। पत्नी समझ गई कुछ ठीक नहीं है अभी। मेरी नजर दिवार पर लगी घड़ी पर गई रात के दस बज रहे थे। मेरा दिमाग इस समस्या का समाधान सोच रहा था। कुछ राह नजर भी आ रही थी लेकिन पत्नी और बच्चों का सोना भी जरूरी था। साढ़े ग्यारह होते-होते सभी सो चुके थे। मुझे भी नींद आने लगी थी लेकिन जागना जरूरी था। बारह बजे मैं उठा डायनिंग हाल में लगे पूजाघर के सामने कुर्सी पर बैठा सामने ही रामजी का फोटो रखा हुआ था। रामजी की तरफ प्रश्नवाचक नजरों से देखने लगा।

प्रभुजी क्या करूं आप ही कोई रास्ता सुझाओ। मां को खुश करूं या बिन्नी की मानूं?

रामजी भी मुस्कराये मुझे लगा कह रहे हों वाह बेटा मेरी दुनिया में रहके मजे मार रहा है और तेरे ड्राइंगरूम में मेरे फोटो के लिये भी जगह नहीं।

अब मैं कैसे बताता रामजी को कि भगवानों के फोटो से दिवारें भरने का फैशन अब नहीं रहा। ड्राइंगरूम में भगवान का इतना बड़ा फोटो बेहूदा लगेगा। मेरा मन भी यही मानता था बिन्नी सही थी लेकिन मां जी की आस्था भी तो सही थी।

ऐसे में मां को भी तो दो टूक नहीं कहा जा सकता कि फोटो नहीं लगा सकते। फिर भी कुछ तो करना होगा।

मैं उठा कुछ उपाय सोच चुका था। आगे ड्राइंग रूम में देखा मां जिस शैट्टी पर सोई थी उसके सामने दिवार से लगी जगह खाली थी। मैंने डायनिंग टेबल की एक कुर्सी खिसका कर दिवार से सटाकर लगाई उस पर रामजी का फोटो दिवार के सहारे इस प्रकार रखा कि सुबह उठते ही मां की नजर उस फोटो पर ही जाये। फोटो गिरे नहीं इसका भी इंतजाम किया। फिर आश्वस्त होकर अपने बेडरूम में आकर लेट गया।

मुझे मालूम था मां सुबह पांच बजे उठ जाती है जबकि श्रीमती और बच्चे सुबह साढ़े छः तक उठते हैं। अब मुझे सुबह मां के उठ कर बाथरूम जाने के बाद और श्रीमती के उठने के

मैं उठा कुछ उपाय सोच चुका था। आगे ड्राइंग रूम में देखा मां जिस शैट्टी पर सोई थी उसके सामने दिवार से लगी जगह खाली थी। मैंने डायनिंग टेबल की एक कुर्सी खिसका कर दिवार से सटाकर लगाई उस पर रामजी का फोटो दिवार के सहारे इस प्रकार रखा कि सुबह उठते ही मां की नजर उस फोटो पर ही जाये। फोटो गिरे नहीं इसका भी इन्तजाम किया। फिर आश्वस्त होकर अपने बेडरूम में आकर लेट गया

पहले फोटो वापस पूजाघर में रखना था। चिन्ता के मारे नींद भी बड़ी मुश्किल से आई लेकिन सुबह पांच बजे ही खुल भी गई।

मां के राम राम भजने की आवाज आ रही थी मैं उठ कर ड्राइंगरूम में गया मां बहुत खुश थी उसने सुबह उठ कर बैठते ही रामजी के हाथ जोड़ कर दर्शन किये थे। वाह बेटा बहुत अच्छा किया तूने सुबह सुबह रामजी के दर्शन हो गये बस ऐसे ही रोज दर्शन होते रहें तो बेड़ा पार है।

मांजी अब मैं रामजी को वापस पूजाघर में रख रहा हूं।

क्यों मां चौंकी। ऐसा है मां यहां भगवान का फोटो दिन भर रखा तो आते जाते सब टकरायेंगे लात लगायेंगे भगवान को।

ठीक है बेटा कहते हुए मां तो बाथरूम जा चुकी थी मैं वापस बिस्तर पर आकर बाकी नींद पूरी करने की कोशिश करने लगा।

सुबह आठ बजे वापस नींद खुली घर में बड़ी शान्ति थी। पत्नी ने बताया सुबह सुबह बहुत खुश थी मां जी और बिन्नी को चिड़ा भी रही थी कि उसने तो सुबह पांच बजे रामजी के फोटो के दर्शन किये थे यहीं बिस्तर पर बैठे बैठे। बिन्नी मानने को तैयार नहीं थी लेकिन मांजी बहुत खुश थी। तो कौन सा फार्मूला चलाया मेरे पतिदेव? पत्नी ताना मार रही थी। खैर मैं भी खुश हुआ ये जानकर कि फिलहाल मांजी और बिन्नी दोनों खुश हैं। मैंने दूसरे दिन भी यही फार्मूला अपनाया। देर रात को रामजी का फोटो आगे ड्राइगरूम मे दिवार के सहारे कुर्सी पर रखा और सुबह सुबह चिन्ताकर पांच बजे उठ कर वापस पूजाघर में। फिर तीसरी रात भी साढ़े बारह पर रामजी वापस ड्राइंगरूम में।

इन तीन दिनों में मेरी नींद बहुत गड़बड़ा चुकी थी वैसे भी मैं बहुत आरामी जीव रहा हूं। रोजाना आराम से उठने वाला लेकिन पिछली तीन रातों से मेरी नींद पूरी नहीं हो पा रही थी। तबियत बिगड़ने लगी थी। रात को रामजी का फोटो ड्राइंगरूम में ले जाते हुए मेरी नजर रामजी पर पड़ी मुझे लगा वो भी परेशान हो रहे हैं उनकी भी रोजाना परेड हो रही है। कभी पूजाघर तो कभी ड्राइंगरूम। मैंने असहाय नजरों से उन्हें देखा क्या करूं मैं भगवान आप ही कुछ करो शायद मेरी याचना उन तक पहुंचे।

तीसरी रात में रामजी का फोटो ड्राइंगरूम में जमा कर मैं बिस्तर पर लेटा। लेटते ही नींद आ गई। सुबह लगा कोई मुझे उठा रहा है आंखें खोलीं बिन्नी मुझ पर झुकी हुई मुझे झिंझोड़ रही थी। पापा उठो पापा उठो।

क्या हुआ बिन्नी ? मैं आधी अधूरी नींद में ही था।

उठो मैं आपसे बहुत नाराज हूं पापा

क्यों बेटा? मेरी नींद उड़ चुकी थी क्या हुआ बिन्नी?

पापा वो रामजी का फोटो ?

अरे बाप रे मैं उठ कर भागा घड़ी की तरफ नजर डाली सात बज रहे थे ओफ आज मैं चूक गया। ड्राइंगरूम में पहुंचा रामजी वहीं मेरा इन्तजार कर रहे थे मैंने तत्काल फोटो उठाया और पूजाघर में रखने चला तभी बिन्नी ने मुझे रोक दिया मेरा हाथ पकड़ लिया।

क्या हुआ बिन्नी ? मैंने बिन्नी की ओर देखा बिन्नी की आंखों में आंसू तैर रहे थे।

आप मेरे पापा हो ना ? मैं तो नादान बच्ची हूं कोई बेवकूफी की बात करूं तो आप मुझे डांट भी सकते हैं रोक भी सकते हैं।

हां तो क्या हुआ ?

मम्मी ने मुझे सब बता दिया है आप तीन दिन से देर रात तक जाग कर रामजी का फोटो दादी के लिये ड्राइंगरूम में कुर्सी पर जमाते हो और सुबह हमारे उठने से पहले उठकर वापस पूजाघर में रखते हो।

हां तो क्या हुआ बिन्नी? ये कौन सी बड़ी बात है?

पर क्यों? आप मेरी जरा सी जिद्द के लिये तीन दिन से सो नहीं पा रहे है मैं जानती हूं आपको सुबह देर तक सोने की आदत है। बिन्नी की आंखों से आंसू बह रहे थे आवाज भर्रा रही थी वो फिर बोली सॉरी पापा सॉरी दादी मुझे माफ करो। पापा आप रामजी की फोटो आज ही आगे ड्राइंगरूम में दिवार पर लगा दो।

अरे बिन्नी ऐसी कोई बात नहीं है वो तो मैं खुद भी यही सोचता था। नहीं पापा आप अभी लगाओ यह फोटो बिन्नी रामजी के फोटो की ओर बढ़ी।

ठीक है चलो तुम कहती हो तो ....

मेरी बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि मैंने मेरी पीठ पर मां के हाथ का स्पर्श महसूस किया। सारी बातचीत के दौरान मां वहीं हमारे पीछे ही खड़ी थी।

अरे रुक बेटा , पता है आज रामजी आये थे मेरे सपने में।

क्या? मैं गौर से देखने लगा मां की आंखें कुछ भींग रही थीं, आवाज कुछ भारी हो रही थी। रामजी कह रहे थे मुझे तुम्हारे ड्राइंगरूम में अच्छा नहीं लगता है मैं पूजाघर में ही ठीक से रह पाऊंगा तो अब तू उनका फोटो आज से पूजाघर में ही रखा रहने दे .... मां मुश्किल से अपनी बात पूरी कर पाई।

मैं समझ रहा था मां ऐसा क्यों बोल रही है। मैंने उसका विरोध करते हुए कहा अरे नहीं मां मैं अभी ड्राइंगरूम में यह फोटो लगाता हूं। नहीं बिलकुल नहीं मैंने कहा ना रामजी की इच्छा पूजाघर में ही रहने की है मेरा क्या? मैं सुबह उठ कर दो कदम चल कर पूजाघर में ही उनके दर्शन कर लूंगी। तू पूजाघर में ही सजा दे रामजी की फोटू। मैं बिन्नी और मांजी के बीच खड़ा रामजी के फोटो की ओर देखने लगा। रामजी मुस्करा रहे थे शायद कह रहे थे 'अब तो ठीक है ना ?'

मैंने बिन्नी को और मां को अपने गले से लगा लिया।

224 सिल्वर हिल कालोनी धार, जिला धार, मध्य प्रदेश

उर्दू कहानी

तमाशा

◆ मूल लेखक : मंशा याद   अनुवादक : हरिंदर सिंह गोगना

किनारे पर जगह-जगह अध खाई और मरी हुई मछलियाँ बिखरी पड़ी हैं। छोटा कहता है, “यह लधरों की कारस्तानी लगती है अब्बा।”

“हाँ बेटा। वह ऐसा ही करते हैं। जरूरत से ज्यादा मछलियाँ मार-मार कर जमा करते रहते हैं मगर खाते वक्त आपस में लड़ पड़ते हैं और शिकार को खराब और एक दूसरे को लहूलुहान कर देते हैं।” बड़े ने कहा।

“एक रात में इतनी मछलियाँ मारते हैं, तो दरिया मछलियों से खाली न हो जाएगा?”

“अगर लधरों की तादाद बढ़ती रही तो ऐसा हो सकता है।”

वो सामान रखकर किनारे पर खड़े हो जाते हैं और उस पार देखते हैं। बस्ती जहां उन्हें पहुंचना है, उस की मस्जिद के मीनार साफ नजर आते हैं मगर उस तक पहुंचने के लिए पुल है न किश्ती। वह परेशान हो कर दरिया की तरफ देखते हैं। दरिया हर जगह से एक जैसा गहरा और चौड़ा है। बड़ा कुछ देर ताम्मुल करता है फिर कहता है, “अल्लाह का नाम लेकर चल पड़ते हैं ...।”

“जैसे तुम्हारी मर्जी अब्बा।”

“अगर डूब गये तो...”

“तो आइन्दा ऐसी गलती नहीं करेंगे।”

“तू काफी होशियार हो गया है जमूरे”, बड़ा हंसते हुए कहता है।

“तुम्हारा चेला जो हुआ अब्बा।”

“जरूर चल पड़ते।” बड़ा कुछ देर सोचने के बाद कहता है, “मगर मुझे रात वाला ख़्वाब याद आ रहा है।”

“कैसा ख्वाब...अब्बा?”

“बहुत डरावना ख़्वाब था।”

“क्या देखा था अब्बा?”

“मैंने देखा जमूरे कि बहुत बड़ा मजमा है। मैं तमाशाइयों के दरमियान कौडियों वाले को गले में डाले खड़ा हूँ। बच्चे तालियाँ बजाते और बड़े जमीन पर बिछी चादर पर सिक्के फेंक रहे हैं कि अचानक कौड़ियों वाला जिसे मैंने तुम्हारी तरह लाड प्यार से पाला है, मेरी गर्दन में दाँत गाड़ देता और अपना जहर उंडेल देता है।”

“फिर क्या हुआ अब्बा ?”

“फिर मेरी आँखों के सामने अंधेरा छाने लगता है, लोगों के चेहरे धुंधला जाते और आवाजें डूब जाती हैं। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं मौत की ऐसी नींद के अंधे कुएं में नीचे ही नीचे गिरता चला जा रहा हूँ। डूबते-डूबते रही सही ताकत जमा कर के चारों तरफ फैली हुई तारीकी में आवाज का तीर फेंक तुम्हें पुकारता हूँ।”

“फिर ?”

“फिर मैं अपनी ही चीख की आवाज सुनकर हड़बड़ा कर उठ बैठा। क्या देखता हूँ कि आधी रात का वक्त है। चांद डूब चुका है। कुत्ते रो रहे हैं और ओस से बोझल हवा उदास-उदास फिर रही है।”

“फिर क्या हुआ?”

“फिर मैंने देखा कि तुम ठंड की वजह से सिमटे हुए हो। मैंने तुम्हारे ऊपर चादर डाल दी जैसे अखाड़े में तुम्हारे गले पर छुरी चलाने और तुम्हें दुबारा जिंदा करने के लिए डाला करता हूँ। मगर रात के उस उदास पहर में मुझे अपना चादर डालने का ये अंदाज बहुत ही नहस मालूम हुआ और नींद उड़ गयी।

“बस !” छोटा कहता है, “इस से तुमने ये नतीजा निकाल लिया कि हमें दरिया में नहीं उतरना चाहिए।”

“हाँ आज का दिन हमारे लिए अच्छा नहीं है।”

वो टांगें फैला कर बैठ सुस्ताने लगता है। छोटा अभी तक ताजा-दम है। दौड़-दौड़ कर टीलों पर चढ़ता-उतरता है और अचानक पुकारता है।

“अब्बा पुल...मुझे पुल दिखाई दे रहा है। ज्यादा दूर नहीं है।”

पुल का नाम सुनकर बड़े के बूढ़े जिस्म में जिंदगी की ताजा लहर दौड़ जाती है। वो उठकर भागता हुआ टीले पर आता है और उस तरफ को देखता है जिधर पानी बहता है। फिर खुश हो कर कहता है, “हाँ पुल ज़्यादा दूर नहीं...मगर रास्ता दुश्वार-गुजार है।”

“कोई बात नहीं अब्बा।”

दोनों अपना-अपना सामान उठा लेते हैं और दरिया के साथ-साथ चलने लगते हैं। रास्ता मुश्किल है। बहुत से नशेब-ओ-फराज, टीले और खाइयाँ नदी-नाले घना जंगल, खारदार झाड़ियाँ और पांव लहूलुहान कर देने वाली दूब मगर वो चलते रहते हैं। चलते रहते हैं। और उनके साथ साथ दूसरे किनारे पर बस्ती की मस्जिद के ऊंचे मीनार भी चलते रहते हैं। चलते-चलते वो थक जाते हैं। सुबह से दोपहर हो जाती है मगर पुल अब भी इतना ही दूर नजर आता है जितना उस वक्त नजर आता था जब वो चले

थे। बड़ा कहता है, "अजीब बात है जमूरे...पुल आगे ही आगे चलता जाता है।"

"और बस्ती भी अब्बा," छोटा कहता है, "मीनार हमारे साथ-साथ चल रहे हैं।"

"अजीब बात है जमूरे।"

"बहुत ही अजीब अब्बा।"

"ये कोई इसरार है ...।"

"मेरा खयाल है अब्बा हम हर-रोज लोगों से मखौल करते हैं आज हमारे साथ मखौल हो रहा है।"

"अल्लाह खैर करे।"

चलते-चलते दोपहर ढलने लगती है। वो चल-चल कर निढाल हो जाते हैं। दरिया का गंदला पानी पी पी कर उनके होंटों पर पपड़ियाँ जम जाती हैं। खारदार झाड़ियों से उलझ-उलझ कर लिबास तार-तार हो जाता और पांव जख्मी हो जाते हैं। मगर पुल और बस्ती के मीनार अब भी इतने ही फासले पर नजर आते हैं।

"रुक जा छोटे।" बड़ा कहता है, "उस पार वाली बस्ती तक पहुंचना शायद हमारे मुकद्दर में नहीं है, हम इस तरह आगे ही आगे चलते हुए पुल तक कभी न पहुंच पाएँगे।"

"फिर क्या करें अब्बा?"

"वापस चलते हैं...?"

"नहीं अब्बा। वापस जा कर क्या करेंगे। हमारी मंजिल तो उस पार की बस्ती है और फिर अब्बा... वापस पलट जाना मर्दों का काम नहीं है।"

"हाँ बेटा। तुम ठीक कहते हो...हमारी तो जनानियां भी दरिया की बिफरी हुई लहरों से नहीं डरतीं... कच्चे घड़ों पर चल पड़ती हैं।"

"वाह अब्बा...क्या बात कही है...चलो चल पड़ते हैं।"

"नहीं बेटा... तुम थक जाओगे...और फिर हमारे पास सामान है।"

"तुम मेरी फिक्र न करो अब्बा...और सामान का क्या है वहां जा कर नया बना लेंगे।"

बड़ा कोई जवाब नहीं देता। सामान नीचे रखकर दरिया की तरफ देखता रहता है।

अचानक कुत्तों के भूँकने और मवेशियों के डकराने की आवाजें सुनाई देती हैं।

"ये आवाजें?" छोटा कहता है, "इस जंगल बियाबान में?"

"मेरा खयाल है यहां करीब ही कोई आबादी है कोई दूसरी बस्ती।"

"ऐसा ही मालूम होता है।"

"जमूरे क्यों न आज की रात यहीं इस बस्ती में गुजार लें। सुबह ताजा दम हो कर चलेंगे।"

"जैसे तुम्हारी मर्जी अब्बा।"

बड़ा कुछ देर सोचता रहता है। छोटा पलट-पलट कर दरिया के उस पार वाली बस्ती की तरफ देखता उसके पीछे-पीछे चलने लगता है। दरिया का किनारा लहज़ा-लहज़ा दूर होता जाता है और वो छोटी सी एक बस्ती के करीब पहुंच जाते हैं।

अचानक बड़ा ठिटक कर खड़ा हो जाता है और बेरी के पेड़ की तरफ देखकर कहता है, "ये क्या तमाशा है ...।"

जमूरा बेरी की तरफ देखता है। जमीन से मिट्टी का ढेला उठा कर मारता है फिर जमीन से बैर उठा कर चख कर थूक देता है।

"तुम्हारा शक ठीक है अब्बा...धरकोने ही हैं कड़वे जहर।"

"रब खैर करे। बेरी के साथ धरकोने।" बड़ा कहता है, "कोई इसरार है बेटा।"

छोटा कोई जवाब नहीं देता। आसमान की तरफ मुँह उठा कर देखता रहता है। बड़ा पूछता है, "क्या देख रहे हो, अबाबीलें हैं?"

"हाँ अब्बा...पूरा लश्कर है।"

"दाना दुनका ढूंढ रही होंगी...।"

"क्या पता कुछ और ढूंढ रही हों अब्बा।"

"और क्या?"

"हाथियों को अब्बा।"

"नहीं बेटा...ये वो अबाबीलें नहीं हैं। ये तो हाथियों पर बैठ कर चहचहाने और चोग बदलने वाली अबाबीलें हैं।"

"यहां से निकल चलें अब्बा...ये ठीक जगह नहीं है।"

"रब खैर करेगा बेटा।" बड़ा कहता है, "कुछ धंधा कर लें। रात बसर कर के निकल चलेंगे।"

"जैसे तुम्हारी मर्जी अब्बा।"

बस्ती में दाखिल होते ही वो एक खुली जगह पर सामान रखकर आस-पास का जायजा लेते हैं। फिर छोटा जमीन पर चादर बिछा कर उसके एक कोने पर बैठ जाता है और बड़ा बाँसुरी और डुगडुगी निकाल कर बजाने लगता है।

देखते ही देखते बहुत से बच्चे उनके गिर्द जमा हो जाते हैं। दोनों के चेहरे खुशी से खिल उठते हैं। बड़ा छोटे की तरफ देखकर सिर हिलाता है, जैसे कह रहा हो, अब रात बसर करने का अच्छा बंदोबस्त हो जाएगा।

बड़ा बाँसुरी और डुगडुगी बजाता रहता है, जब थक जाता है तो कहता है, "... बस्ती भी अजीब है। डुगडुगी बजाते-बजाते मेरा बाजू थक गया है और बाँसुरी में फूंकें मारते-मारते मेरे भीतर से जैसे सब खाली हो गया मगर अभी तक किसी बालिग मर्द या औरत ने जिसके खीसे में पैसे हों इधर का रुख नहीं किया।"

"क्या पता अब्बा।" छोटा कहता है, "यहां के लोग बहरे हों या उन्होंने कानों में रुई ठूंस रखी हो।"

"वो क्यों?"

"वो इसलिए अब्बा कि जब बंदा कभी भी खैर की खबर न

सुने तो आहिस्ता-आहिस्ता उसका दिल इक्का सुनने से ही उचाट हो जाता है।"

"वाह जमूरे तूने सबक खूब पकाया हुआ है, अच्छा ये बता तुझे कैसे पता चला कि इन लोगों ने कभी खैर की खबर नहीं सुनी?"

"मैंने उन बच्चों की सूरतों से अंदाजा लगाया है अब्बा।"

"तू बहुत होशियार हो गया है जमूरे।"

"तुम्हारा चेला जो हुआ अब्बा।"

"वाकई बेटा...ऐसा लगता है जैसे ये सारे यतीम हैं।"

"मुझे तो ऐसा लगता है अब्बा जैसे इन्होंने अपने बापों को शहर-बदर कर दिया हुआ है।"

"शायद हम गलत जगह आ गये हैं।"

"हाँ अब्बा।"

"देखना छोटे...सारी बस्ती में कोई एक भी बालिग मर्द-औरत नहीं। ऐसा लगता है जैसे वो सब भी हमारी तरह दूसरी बस्तियों में तमाशा दिखाने गये होंगे।"

"फिर तो उनकी वापसी का इंतजार जरूर करना चाहिए अब्बा।"

"क्यों बेटा ?"

"ये देखने के लिए कि वो बड़े मदारी हैं या तुम ?"

"नहीं... मुझे इन बच्चों से खौफ आने लगा है। अजीब से बच्चे हैं।"

"तो फिर यहां से चलते हैं अब्बा।"

"हाँ जमूरे...चले जाना ही अच्छा है मगर तू जरा इन छोटों से ये तो पूछ इनके बड़े कहाँ हैं ?"

"हम खुद बड़े हैं।" मजमे में से एक बच्चे की आवाज आती है, "क्या हम तुम्हें छोटे नजर आते हैं ?"

बड़ा और छोटा चौंक कर एक दूसरे की तरफ देखते हैं और अभी अपनी हैरत पर काबू पाने की कोशिश कर रहे होते हैं कि छोटी उम्र का एक और बच्चा निहायत पुख्ता लहजे में कहता है, "मुंशी ठीक कहता है...तुम लोग जल्दी-जल्दी खेल दिखाओ और अपनी राह लो...हम ऐसे लोगों को जो खुद को हमसे बड़ा समझते हैं बस्ती में ज्यादा देर रुकने की इजाजत नहीं देते।"

"तो क्या इस बस्ती में पूरे कद का कोई आदमी नहीं रहता?"

"हम रहने ही नहीं देते..." एक बच्चा हंसकर कहता है, "ठिकाने लगा देते हैं।"

"तो ये बस्ती?" बड़ा हकला जाता है।

"हाँ ये बस्ती...ये हमारी बस्ती है और मैं यहां का सरदार हूँ। लेकिन तुम वक्त जाए न करो।अगर तुमने कोई अच्छा करतब दिखाया तो हम तुम्हें जरूर इनाम देंगे...चलो तमाशा दिखाओ।"

"अभी तो हम खुद देख रहे हैं।" छोटा कहता है।

"तमीज से बात करो लड़के।" सरदार गुस्से से कहता है, "वर्ना !"

"अरे।" छोटा हँसता है, "तुम तो वाकई सरदार के बेटे लगते हो।"

"सरदार का बेटा नहीं...मैं खुद सरदार हूँ।"

"हाँ हाँ...ये सरदार है।" बहुत सी आवाजें आती हैं। छोटा हँसता चला जाता है फिर बड़े के करीब आकर कहता है, "मेरा खयाल है हम बौनों की बस्ती में आ गये हैं।"

"मदारी...ये क्या बकवास है।" सरदार चिल्ला कर कहता है, "ये हमें बौना कहता है इस बदतमीज बच्चे को चुप कराओ वर्ना बस्ती से निकल जाओ।"

बड़ा शश्दर खड़ा चारों तरफ देखता है। फिर आहिस्ता से कहता है, "जमूरे चुप हो जा...ये कोई इसरार है।"

"क्या इसरार है अब्बा...ये बच्चे ?"

"ये बच्चे नहीं हैं जमूरे।" बड़ा उसकी बात काट कर कहता है।

"फिर क्या हैं अब्बा ?"

"गौर से देख जमूरे...इनके बाल सफेद हैं और इनके चेहरों पर झुर्रियाँ हैं। इनकी उमरें ज्यादा हो गई हैं मगर इनके जेह्न नाबालिग रह गये हैं। ये निहायत खतरनाक हो सकते हैं।"

"अजीब बात है।"

"बहुत ही अजीब बेटा...रब खैर करे।"

अचानक चंद बच्चे बहुत सी चारपाइयाँ और मोंढे उठाए आते हैं और सरदार बच्चे समेत बहुत से दूसरे तमाशाई बच्चे इन चारपाइयों और मोंढों पर बैठ जाते हैं। सरदार कहता है, "खेल शुरू किया जाये।"

बड़ा परेशान हो कर तमाशाइयों पर एक नजर डालता है। फिर थैले में से चीजें निकालने लग जाता है। सबसे पहले वो तीन गोले निकाल कर जमीन पर रखता है फिर उन्हें तीन प्यालों से ढाँप देता है। कुछ पढ़ कर फूंक मारता और बारी-बारी सारे प्याले उठा कर दिखाता है। गोले गायब हो चुके हैं।

वो तमाशाइयों की तरफ दाद तलब नजरों से देखता है मगर वो तालियाँ नहीं बजाते, दाद नहीं देते, चुप-चाप खड़े रहते हैं।

फिर वो प्यालों को औंधा कर के बारी-बारी ऊपर उठाता है अब हर प्याले के नीचे एक एक गोला दिखाई देता है वो दुबारा सरदार और दूसरे तमाशाइयों की तरफ देखता है मगर वो अब भी खामोश रहते हैं। फिर वो जेब से एक रुपये का सिक्का निकालता है, एक के दो और दो के चार बनाता है और कहता है, "मेहरबान. ..कद्र-दान...मैं जादूगर नहीं हूँ। ये महज हाथ की सफाई है जादूगर होता तो यहां न होता घर में बैठा सिक्के बना रहा होता।"

"हमें मालूम है, तुम खेल दिखाओ।" सरदार उसे टोकता है।

"तो फिर तुम खुद ही मैदान में आ जाओ।" जमूरा तंज

कविता

खत आएगा

हंसराज भारती

भले ही आज
खत लिखने का जमाना नहीं
फिर भी मुझे इंतजार रहता है
कि मेरे नाम जरूर आएगा
आज भी कोई खत
खत आएगा सरहद के
उस पार से
सारी सरहदों को पार और
तार-तार करता
ये खत कहेगा
सब सरहदें बेमानी हैं
प्यार-मुहब्बत के आगे
अपनी हवा, मिट्टी, जमीन
के नाम पर इनसान का
कर्ज लिखा होता है
खत आएगा बचपन के बिछुड़े
यार-बेलियों का
यह कहते हुए कि
कयामत की इस भीड़ में
तुम्हें कहां ढूंढें
सब ओर अजनबी से
शहर पसरे हैं
खत आएगा परदेस गए पुत्र के नाम
उसकी अकेली बूढ़ी मां का
कि पुत्र आज मेरी उम्र से
बड़ा हो गया है
इसलिए भूल गया है
अपनी मां और मिट्टी को
खत आएगा
उस लड़की का
जिसकी आंखों में
बहता था मुहब्बत का दरिया
जो कहती थी कि
मुहब्बत के रंग के आगे
दुनिया के सारे रंग फीके हैं
खत आएगा उन
मेहरबान मौसमों का
जो कभी चलकर आए थे
सौगातों की गठड़ी लेकर
मेरी छोटी-सी दुनिया में
उजाला बिखेरने।

बसंतपुर, सरकाघाट, जिला मंडी,
हिमाचल प्रदेश–175 042, मो. 0 98163 17554

करता है।

"मदारी...ये लड़का।" सरदार गजबनाक हो जाता है।

"मैं माफी चाहता हूँ सरदार।" बड़ा कहता है और इशारे से जमूरे को खामोश रहने की तलकीन करता है और बारी-बारी बहुत से खेल दिखाता है। खाली गिलास पानी से भर जाता है और भरा हुआ गिलास औंधा करने से पानी नहीं गिरता।

मुट्ठी में बंद कर के निकालने से रूमाल का रंग तब्दील हो जाता है। जलता हुआ सिगरेट निगल कर कानों की तरफ से धुआँ निकालता है। कौडियों वाले से डसवाता और उसे गर्दन में डाल लेता है। मुँह के रास्ते पेट में खंजर उतार कर निकाल लेता है।

मगर सरदार समेत कोई तमाशाई ताली नहीं बजाता, दाद नहीं देता। वो परेशान हो जाता है। फिर ऐलान करता है, "अब आखिर में मैं जमूरे के गले पर छुरी चलाऊंगा और इसे जब़ह कर के दुबारा जिंदा कर दिखाऊँगा।" सरदार समेत सारे तमाशाई जोर-जोर से तालियाँ पीटते हैं। वो बेहद हैरान होता है। आम तौर पर तमाशे के आखिर में जब वो इस खेल का ऐलान किया करता है तो बहुत से तमाशाई इस खेल को नापसंद करते और उसे मना कर देते हैं मगर पता नहीं ये कैसे सफ्फाक तमाशाई हैं कि छुरी चलाने की बात सुनकर तालियाँ पीटने लगे हैं।

वो जमूरे को जमीन पर लिटाता है, उसके ऊपर उसी तरह चादर डालता है जैसे हमेशा डाला करता है। फिर थैले में से छुरी निकाल कर उसकी धार पर हाथ फेरते हुए कहता है, " साहिबान. ..कदर दान... कोई बाप अपने बेटे की गर्दन पर छुरी नहीं चला सकता... न ही अल्लाह के पैगम्बरों के सिवा किसी में इतनी हिम्मत और हौसला हो सकता है...ये सब कुछ एक खेल है...नजर का धोखा...इस पापी पेट की खातिर।"

"हमें मालूम है।"

"हम जानते हैं।"

"बातों में वक्त़ जाए न करो।" सरदार कहता है।

"छुरी चलाओ..." एक तरफ से आवाज आती है।

"छुरी चलाओ...छुरी चलाओ।" तमाशाई शोर मचाते हैं।

वो अपनी घबराहट पर काबू पाने की कोशिश करता और जमूरे के करीब आकर छुरी चलाता है।

तमाशाई जोर-जोर से तालियाँ और सीटियाँ बजाते हैं, सिक्के फेंकते और बकरे बुलाते हैं और जमूरे के दुबारा जिंदा होने का खेल देखे बगैर खिसकने लगते हैं।

देखते ही देखते सारा पिंड खाली हो जाता है।

वो जमूरे को आवाज देता है, "उठ जमूरे...पैसे जमा कर।"

मगर जमूरा कोई जवाब नहीं देता।

वो घबरा कर चादर हटाता है। क्या देखता है कि जमूरा खून में लथपथ है और उसकी गर्दन सचमुच कटी पड़ी है। उसकी चीखें सारी बस्ती में गूँजने लगती हैं।

कंट्रोलर दफ्तर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
मो. 0 98723 25960

कहानी

फसल कटनी बाकी है

◆ चंद्रेश कुमार

फोन पर बतियाते हुए गौरी की आवाज अचानक लड़खड़ाने लगी थी, फोन के उस पार उसकी आवाज खड़-खड़ और सांय- सांय में दबती जा रही थी, 'हेलो! हेलो! हेलो!' में बस मैं इतना ही सुन पाया था कि काले घने बादलों ने आसमान को घेर लिया है, लगता है कि बहुत जोरों की बारिश होने वाली है। इतने में ही हम दोनों नेटवर्क क्षेत्र से बाहर हो गए थे। बारिश का नाम सुनकर मेरे पैरों तले जमीन खिसक गयी थी, "अरे ससुर, इहो कउनौ बखत है बरसात होवै कै, दस- पंद्रह दिन और नाहीं रह सकत रहा?!", बुदबुदाकर रह गया था मैं। गाँव में शायद बस अब मेरी ही गेहूं की फसल अब तक खड़ी थी, पटीदारों ने अपनी- अपनी फसल काट ली थी। गौरी मुझसे कब से कह रही थी कि 'घर आ जाओ, फसल काट लेते हैं।'' लेकिन कुछ पैसे और जमा करने के चक्कर में रुक गया था मैं। बस इसी बीच 'लाकडाउन' का आकस्मिक फरमान आ गया था, जैसे आकस्मिक भूकंप जिसके आने से गाँव के झुग्गी -झोपड़ तहस-नहस हो जाते हैं। हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी का हाल भी कुछ ऐसा ही हो गया था। अब क्या होगा, फसल बर्बाद हुई तो इस साल खाने के लाले पड़ जायेंगे, दो बीघे की फसल में वैसे भी कुछ नहीं बचता था, बस गुजर-बसर हो जाता था। क्या करूँ, क्या करूँ, कुछ समझ नहीं आता, गाड़ी-घोड़ा सब बंद हो चुका है, सड़क पर अब बस कुत्ता और गाय ही दिखते हैं ।

न कोई ट्रेन चल रही है न बस, न ट्रक और इंसान जैसे चिड़ियाघर में बंद हो गया है। मैं भी एक कमरे में अपनी ही तरफ के चाय की टपरी लगाने वाले काका के साथ बंद हो गया था, बची-खुची कमाई से बस किसी तरह गुजारा कर रहे थे हम दोनों। काम धंधा तो ठप हो ही गया था। ना काका की चाय की टापरी खुलती थी और मैं जिन साहब के यहाँ साफ-सफाई का काम करता था, उन्होंने बंगले पर दो महीने के लिए काम पर आने को मना कर दिया था। कोई कह रहा था कि ट्रेन चलने वाली है, लेकिन ये चलेगी कब, एक दो दिन में कि एक दो महीने में, कुछ भी पता नहीं था। इतने दिनों तक मैं तो किसी तरह जी लेता, लेकिन गेहूं की फसल ट्रेन चलने तक तो नहीं रुकी रहेगी ना। कहीं एक-आध बार और बरस गया तो समझो कि गेंहू खेत से उठाने लायक नहीं बचेगा। फसल की बर्बादी, कर्ज, साहूकार और आने वाले समय में नौकरी मिलने के लाले, ये सब सोच कर बस मैं खुद को ही कोस रहा था। कहाँ तो सोचा था कि कुछ पैसे जमा कर लें तो इस दुनिया में अपनी औलाद को लाएंगे ताकि उसे अपने से अच्छी जिंदगी दे सकें। इसी फेर में चालीस की उमर होने को थी। उधेड़बुन में इधर- उधर करते-करते मैंने सोच लिया था, कि कुछ भी हो, मुझे कैसे भी कर के घर पहुंचना ही होगा। लेकिन पहुँचता भी तो कैसे। गाड़ी-घोड़ा तो बंद थे, एक बस वाला आठ हजार में ले जाने को तैयार तो था लेकिन जब तक लोग न हो जायें, वो तैयार नहीं होता था। सुना था कि दिल्ली, बम्बई, सूरत से तमाम लोग अपने घर पैदल ही निकल पड़े थे। काका कह रहे थे, "कउनो लड़की है, दिल्ली से दरभंगा अपने बाबू जी को सायकिल पे बिठा के ले गयी, बड़ी बहादुर बिटिया है भाई।" पन्द्रह साल की बिटिया सचमुच बहुत बहादुर रही, मैं सोचने लगा, "जो पन्द्रह साल की बिटिया इतना साहस कर लिए है तो हम काहे नहीं, बस इच्छा-शक्ति होनी चाहिए, या फिर 'मजबूरी।"

मैंने सोच लिया था कि मैं भी पैदल निकल जाऊंगा, चार-पांच दिन में तो पहुँच ही जाऊंगा, ट्रेन और बस के फेर में नहीं पडूंगा, जाने कब खुले सब, और फिर बंगले पर काम करने की भी मनाही थी। रात होते-होते मन पक्का कर लिया था कि अगले दिन सबेरे-सबेरे निकल जाऊंगा। साथ ले जाने को बिस्कुट के कुछ बचे पैकेट बचे थे, रात की बनी दाल और चावल से अगले दिन दोपहर तक काम चल जाता और एक एन जी ओ वालों ने थोड़ा कच्चे चावल और दाल पहुंचा दिया था। उसमें से आधा काका के लिए छोड़ मैं निकल पड़ा था छः सौ किलोमीटर के लम्बे सफर पर। सामान्य दिनों में शायद ऐसी हिम्मत या कह लो 'जुर्रत' करने की सोचता भी नहीं लेकिन ये दिन सामान्य कहाँ थे। बस 'सरजू मइया' का नाम ले निकल पड़े थे। अरे हाँ, पिछली बार गौरी ने कहा था, "अगली बार आना तो एक चादर और तकिये के दो खोल ले आना", तो मैंने भी दिल्ली वापस आते ही झट से खरीद लिए थे, आसमानी नीले रंग की चादर और खोल।

झोले में सबसे ऊपर रख लिए थे इनको, सोचा था कि देखते ही गौरी खुशी से झूम उठेगी, आखिर नीला रंग उसे बहुत रास आता था। जब मैं सड़क पर निकला तो 'राही' अकेला मैं नहीं था, मुझ जैसे जाने कितने थे, मेरे आगे, मेरे पीछे, सड़क के इस तरफ और सड़क के उस तरफ भी। जब इतने लोग सड़क पर पैदल निकले हैं, तो सचमुच मजबूरी ही रही होगी, नहीं तो ई देस कुछ ना कुछ तो इंतजाम हमारे लिए करता ही। तो मुझे तसल्ली थी कि ये मेरी और इन सबकी नियति है, पिछले जन्म में पक्का हम सब

'पापी' रहे होंगे! बगल में लंगड़ाती गर्भवती महिला अपने दो बच्चों के साथ धीरे-धीरे चलती जा रही थी, उसके दर्द को समझने की कोशिश में मैं उसे काफी देर तक निहारता ही रहा, उसकी नजर मुझ पर पड़ी तो वह मुस्कुरा दी। अपनी नादानी पर मैं थोड़ा सा लजा गया, लेकिन मुझे यह समझ नहीं आया कि उसके होंठों पर किस 'चीज' की मुस्कुराहट थी, या भला वह 'मुस्कुराहट' थी भी। छह घंटों तक पैदल चलते रहने से अब थकान का शरीर पर असर दिखने लगा था। लेकिन दूरी इतनी तय करनी थी कि 'इतनी थकान' 'बस इतनी सी' लगती थी। रात का बना दाल-भात कहीं खराब ना हो जाये, बस इसलिए एक पेड़ के किनारे दो पल के लिए रुक गया। जैसे ही खाने का डब्बा खुला, तो 'झाक' से मन बिदक गया, फिर भी जल्दी से मैंने दो-चार कौर मार ही लिए। क्या पता आगे कुछ मिले न मिले।

बगल से झर्र-झर्र करती बड़ी- बड़ी गाड़ियां लू और गर्मी के थपेड़ों की मार को दुगना कर देती थीं। गाड़ियों से बाहर झांकते कौतुहल से भरे चेहरे हमें चिढ़ाते से लगते थे, मानो कह रहे हों 'और भर जाओ शहरों में!' एक अधेड़ उम्र के बुदबुदाते आदमी से पता चला कि इसी रस्ते में कहीं पैदल चलते किसी परिवार को एक ट्रक ने कुचल दिया था। अगर मेरे साथ ऐसा हो जाये तो गौरी का क्या होगा, ये सोच कर मन भर आता था। रात को सफर से चूर हो प्रवासियों की भीड़ सड़क के किनारे छप्पर के बने खाली चाय की टपरियों और ढाबों में शरण ले चुकी थी। भूख से बिलबिलाते बच्चे और उनको जल्दी घर पहुँच जाने का झांसा देते माँ-बाप, ऊँघते- पड़ते, हाँफते और हताश लोग, ठेले और रिक्शे घसीटते लोग जिनके पैर सूज कर 'हाथी पैर' से हो गए थे, इन सब को देखते- देखते मैं अपनी भूख-प्यास भूल सा गया था। आनन-फानन में मैं कच्चे-दाल चावल तो ले आया था लेकिन बर्तन-भांडे का ध्यान ही नहीं रहा। समस्या का हल ढूँढ़ते हुए मैंने सामने वाले छप्पर में शरण लिए तीन बच्चों के साथ मियां-बीवी को देख लिया थाय उनके झोले में खनकते बर्तनों से मदद की कुछ आस जगी तो मैंने उनकी ओर कदम बाधा दिए थे। उनके पास बर्तन तो थे, लेकिन शायद अनाज कुछ कम था। कहते हैं मुसीबत में इन्सान ही इंसान के काम आता है। बस फिर क्या था फारुख भाई, उनकी बेगम, सादिया और मैंने मिल कर खिचड़ी बना ही ली थी। भूख और थकान से बेबस रोते-बिलखते उनके बच्चे कब के सो चुके थे। सोते हुए बच्चों को देख ख्याल आया कि देखो भला, भूख भी कितनी दयावान होती है , न मिटे तो खुद ही मर जाती है। खैर, बच्चों को जगा कर हम सब खिचड़ी खाने लगे।

मैंने सोच लिया था कि मैं भी पैदल निकल जाऊंगा, चार-पांच दिन में तो पहुँच ही जाऊंगा, ट्रेन और बस के फेर में नहीं पडूंगा, जाने कब खुले सब, और फिर बंगले पर काम करने की भी मनाही थी। रात होते-होते मन पक्का कर लिया था कि अगले दिन सबेरे-सबेरे निकल जाऊंगा। साथ ले जाने को बिस्कुट के कुछ बचे पैकेट बचे थे, रात की बनी दाल और चावल से अगले दिन दोपहर तक काम चल जाता और एक एन जी ओ वालों ने थोड़ा कच्चे चावल और दाल पहुंचा दिया था। उसमें से आधा काका के लिए छोड़ मैं निकल पड़ा था छः सौ किलोमीटर के लम्बे सफर पर। सामान्य दिनों में शायद ऐसी हिम्मत या कह लो 'जुर्रत' करने की सोचता भी नहीं लेकिन ये दिन सामान्य कहाँ थे।

खाते-खाते कब आँख लग गयी, पता ही नहीं चला था। अगले दिन हम सफर के लिए फिर निकल पड़े थे। अब मैं अकेला नहीं था, मेरे साथ फारुख मियां और उनका परिवार भी था। अब सोचने और बुदबुदाने के साथ बातें भी थीं करने को। फारुख मियां रेढ़ी लगाते थे दिल्ली में, कभी सब्जी, कभी फल तो कभी मूंगफली की। अपने 'रौजा गांव' के ही रहने वाले थे। बातों में उलझे रहने पर सफर कुछ कम मुश्किल हो जाता है, बस ऐसे ही बातों- बातों में हमने काफी रास्ता तय कर लिया था। फारुख मियां और सैकड़ों प्रवासियों के साथ-साथ और भी हमसफर थे मेरी इस यात्रा में। चिलचिलाती धूप, पसीने में भीगी दो दिन से पहनी एक बुशर्ट, चप्पल, अपने ही गमछे का बना मास्क, झोला, बंद पड़ा मोबाइल और बिसलेरी की एक बोतल। अरे नहीं साहब !, बिसलेरी वालों का नहीं, 'बंबे' का ही पानी था। और हाँ , हम सब को कुछ और नए हमसफर भी मिल गए थे इस दौरान। चप्पलों की रगड़ से पैरों में पड़े छाले, झोले की रगड़ से छिले हुए कंधे और हथेलियों में पड़ी गांठ। भरा-पूरा था सफर में साथ देने वालों का हुजूम।

सूरज सर पर आ गया था और थकान अब तक चरम को छूने लगी थी, मन करता था, बस अब यहीं रुक जाऊं, आगे कदम बढ़ाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। दिल को तो थकान महसूस होती थी लेकिन दिमाग को फसल बर्बाद होने का डर ही दिखता था। बस यही था जो कदमों को घसीटता जा रहा था। लेकिन आखिर कब तक, बस अब मुझे कुछ देर आराम करना था, भूख से अंतडियां सिकुड़ रही थीं। "अरे फारुख मियां, थोरक रुक लीन जाय", मैंने बुदबुदाते हुए उनसे कहा तो वे थोड़ी दूर पर बरगद के पेड़ की ओर बस इशारा ही कर पाए थे। पेड़ के नीचे पहुँचते ही पसर गया था मैं। अधखुली आँखों से दिखाई दे रहा था- सड़क के दोनों ओर चींटियों से रेंगते लोगों की लंबी लाइनें, सब एक जैसे ही दिखते थे। जात, धरम, मजहब 'कुच्छौ' पता नहीं लगता था और फिर शमशान में बदले गांव, विशालकाय राक्षस के जैसी लपकती हुई बड़ी-बड़ी गाडियाँ, पुलिस के कान-फाडू सायरन और रुंधे गले से 'साब छोड़ दो, घर जाने दो, अब फिर नहीं लौटेंगे' की गुहार। कब नींद लग गयी, पता ही नहीं चला। सो कर उठा तो ऐसा लगा मानो कई दिनों से सोया हुआ था। सारी थकान मिट

बाल कहानी

जब दोस्त बना पौधा

प्रभात कुमार

शेखू के पापा का कार्यालय जिस बिल्डिंग में था उसमें एक नया कार्यालय खुला। हराभरा व सुंदर लगने के लिए कार्यालय के अन्दर खूबसूरत कुदरती पौधे रखे गए। कुछ दिन तक पौधों का बहुत ध्यान रखा गया लेकिन उसके बाद उन्हें समय पर धूप व प्राकृतिक हवा नहीं मिल पाई। गुड़ाई और खाद तो दूर की बात, यहां तक कि उन्हें पानी भी मुश्किल से मिलता। कार्यालय प्रबंधक समेत सब अपना काम निबटा कर घर चले जाते। सभी की उदासीनता के कारण अधिकांश पौधे परेशान हो सूखते गए, केवल एक पौधा जो आकार में बड़ा व जानदार था, बचा रहा।

एक दिन शेखू, पापा के साथ उस कार्यालय में गया तो उसकी नजर उस पौधे पर पड़ी। उदास, भूखे प्यासे पौधे को लगा कि बच्चे ने उसकी दयनीय हालत देख ली है। पौधे ने मौत से जूझ रही जड़ों में, बचीखुची ताकत इकट्ठी की और मां प्रकृति से निवेदन किया, काश यह बच्चा उसे अपने घर ले जाए अगर ऐसा नहीं हुआ तो कल तक तो मर जाऊंगा। शेखू ने वापस आते समय पापा से कहा, 'पापा देखिए न कितना सुंदर पौधा है लेकिन मुरझाया हुआ है। लगता है यहां कोई इसकी देखभाल नहीं करता। क्या मैं इसे अपने घर ले जा सकता हूँ।' पौधे की प्रार्थना, कुदरत ने शेखू के माध्यम से सुन ली थी। उसने मानो शेखू से भी कहा, ' यहां घुटन के मारे मेरी जान निकली जा रही है। मैं जीना चाहता हूं मुझे यहां से ले चलो। अपने घर में जगह दोगे तो आपका उपकार होगा'। पहले शेखू ने पौधे में पानी डाला फिर पापा से कहा कि वे कार्यालय प्रबन्धक से बात करें। उन्होंने प्रबंधक से आग्रह किया तो वह मान गए।

शेखू ने छोटी बहन अन्नू की मदद से पौधे को एक बड़े गमले में लगा दिया। गोबर से बनी खाद डाली, पानी दिया व खुली हवा में रख दिया। सुबह होते ही शेखू को पौधे का खयाल आया। वह बिना देर किए पौधे के पास आया, उसे प्यार से छुआ। आज पौधा सीधा व स्वस्थ दिख रहा था। लग रहा था उसे नया जीवन मिल गया है। शेखू ने महसूस किया कि पौधा हिलते हुए, मुस्कुराकर उसका धन्यवाद कर रहा है। उसने अन्नू को दिखाया तो उसने भी शेखू की कोशिश की खूब तारीफ की। अब दोनों मिलकर दूसरे पौधों के साथ नियमित रूप से नए पौधे का पूरा खयाल रखने लगे। पौधा धीरे-धीरे बढ़ने लगा, कुछ दिन बाद उसमें बहुत सुंदर फूल खिले। कुछ दिनों बाद शहर में पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन होना था। इस बारे समाचार पत्र के साथ आए एक पेम्फलेट से पता चला तो शेखू के पापा ने उसे अपने खास पौधे को प्रदर्शनी में रखने बारे कहा। उसने पौधे के पास जाकर मन ही मन उससे बात की तो पौधे ने कहा, 'दोस्त, आप मुझे प्रदर्शनी में जरूर लेकर जाओ।' शेखू और अन्नू दोनों पौधे को प्रदर्शनी में ले गए तो सभी ने तारीफ की क्योंकि उसे जैसे सुन्दर फूल दूसरे किसी प्रतियोगी के पौधे में नहीं खिले थे। स्वाभाविक है निर्णायकों की टीम को भी पसंद आना ही था, हुआ भी ऐसा और सभी के एकमत से पौधे को प्रथम पुरस्कार मिला। शेखू और अन्नू की खुशी का ठिकाना नहीं था। घर आकर पौधे को स्नेह से छूकर, शेखू ने शुक्रिया अदा किया तो पौधे ने कहा, 'क्या बात करते हो, जब आप मेरी जान बचा सकते हो तो क्या मैं आपको पुरस्कार नहीं दिला सकता?' अगली सुबह सभी स्थानीय अखबारों में प्रथम पुरस्कार विजेता शेखू का चित्र पौधे के साथ छपा। इस घटना ने अड़ोसपड़ोस में रहने वालों के दिलों में भी फूल-पौधों के प्रति प्यार और बढ़ा दिया।

गुलिस्तान ए साथी, पक्का तालाब, नाहन,
हिमाचल प्रदेश-173001 मो. 0 98162 44402

चुकी थी और मैं कितना हल्का महसूस कर रहा था। मैंने फारूख मियां को आवाज लगायी तो उन्होंने अनसुना कर दिया, कई बार आवाज लगाने पर भी वो नहीं बोले तो मैं खुद ही आगे बढ़ने लगा। कुछ कदम ही आगे चला था कि सोचा एक बार फिर आवाज दूँ, शायद इस बार वे साथ चल पड़ें। पीछे मुड़कर आवाज लगाने को हुआ तो देखा कि फारुख मियां कुछ उलट-पलट से रहे थे। मैंने फिर कदम उनकी ओर बढ़ा दिए। पास आकर देखा तो वे मेरे औंधे शरीर को नीले रंग के कपड़े से ढँक रहे थे। कई लोग मेरे शरीर के आसपास जमा हो गए थे। किसी ने पूछा, "लू लग गयी क्या?" दूसरे ने अंदाजा लगाया, "लगता है भूख की मार सह नहीं पाया बेचारा!", तीसरे ने कहा- ''खराब खाना!''

किसी ने बताया, इसका मास्क कहाँ है भाई!

और किसी ने कहा .... दर्द से, ओहो!

वो कपड़ा कुछ और नहीं बल्कि वही चादर थी, आसमानी नीले रंग की चादर, जो मैं अपनी गौरी के लिए सहेज कर ले जा रहा था। नीली चादर, आसमान को एकटक निहार रही थी, मानो उससे लड़ते हुए कह रही हो, ''नहीं नहीं, अभी इसे नहीं ले जाने दूंगी, अभी इसकी फसल कटनी बाकी है...।"

सहायक प्रबंधक, नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय, 32, एस डी ए कॉम्प्लेक्स, कसुम्पटी, शिमला, हिमाचल प्रदेश-171009,
मो. 0 99049 77064

कहानी

सीताराम सीतापुर

◆ एच. आनंद शर्मा

मुंशी सीताराम ब्रिटिश शासनकाल में डाक विभाग में मुलाजिम थे। वे चिट्ठियां बांटते, लोगों को चिट्ठियां पढ़कर सुनाते और उनके लिए चिट्ठियां लिखते भी थे। इसीलिए उनका नाम सीताराम से मुंशी सीताराम पड़ा।

उनकी नौकरी अल्पकालिक थी। गर्मियों में जब देश की राजधानी दिल्ली से शिमला शिफ्ट होती तो मुंशी जी की नौकरी शुरू हो जाती थी। सर्दियों के लिए जब राजधानी वापस दिल्ली चली जाती तो वे अगले 6 माह के लिए बेरोजगार हो जाते। लेकिन सूझबूझ से वे सर्दियां पूरी मौजमस्ती से बिताते और कुछ अतिरिक्त कमाई भी कर लेते।

मुंशी जी नौकरी छूटते ही शिमला से पुराने गर्म कपड़ों की गठरियां खरीदते और ऊपर पहाड़ों में ले जाकर कपड़े बेचते। वे व्यवहारकुशल थे और साथ ही गीत, संगीत, नृत्य के अच्छे कलाकार भी। इस कारण भी पहाड़ों में लोग उनकी खूब आवभगत करते। जहां भी रात को ठहरते, खूब महफिल जमती। इसी दौरान वे कपड़े भी बेचते जाते।

उन दिनों आज की तरह मनोरंजन के अन्य साधन नहीं थे। इसलिए पहाड़ीजन सर्दियों की लंबी रातें गाते नाचते हुए बिताना पसंद करते थे। इन दिनों खेतों, बागीचों में कोई खास काम नहीं होता है। ईंधन के लिए लकड़ियां भी पहले ही काटकर इकट्ठी की हुई होती हैं। मात्र मवेशियों को चारा पानी देने का काम होता है जो ज्यादातर घरों की महिलाएं ही निपटाती हैं। चूल्हा चौके का काम भी महिलाओं के ही पास रहता हैं। पुरुषों के लिए बहुत कम काम बचता है।

शायद इसलिए भी लोग सर्दियां पड़ते ही मुंशी जी का इंतजार करने लगते। और जब उन्हें कहीं से उड़ती हुई खबर मिलती है कि मुंशी जी फलां गांव के फलां छोर तक कपड़े की गठरी लिए पहुंच गए हैं तो ग्रामीणों में खुशी की लहर दौड़ जाती। गांव भर के संगीत- नृत्य प्रेमी यहां वहां से हारमोनियम, बांसुरी, ढोलक, खंजरी आदि वाद्य जुटाने शुरू करते। मुंशी जी को सामान सहित लाने के लिए किसी को एक घोड़ा लेकर उनके पास भेज दिया जाता। गांव में उनकी खूब आवभगत होती और फिर रात रात भर महफिलों का दौर शुरू हो जाता।

बस इसी तरह गांव दर गांव मुंशी जी का पड़ाव पड़ता। लोग उनकी खूब खातिरदारी करते। लगे हाथ उनके कपड़ों- गरम कोट, स्वैटर, शाल, टोपियों आदि की बिक्री भी होती रहती। मुनाफे का एक-एक रुपया जोड़ते रहते और जब सर्दियां बीतने को आतीं तो वापस घर लौट आते। सबसे पहले सारी जमा रकम डाक विभाग में अपने खाते में जमा करा देते। गर्मियों में फिर से चिट्ठियां बांटने की नौकरी पर चले जाते।

बस ऐसे ही मजे से वक्त गुजरता चला जा रहा था। लोगों ने उन्हें काफी समझाया कि- 'दर-दर भटकना बहुत हो गया, भाइयों ने अपने घरबार बसा लिए हैं, अब तुझे भी गृहस्थी जमा लेनी चाहिए।' लेकिन मुंशी जी को तो बस अपनी बेपरवाह आवारगी पसंद थी। वे इसी में मस्त थे। दूसरी कोई बात उन्हें सूझती ही नहीं थी। वन में स्वच्छंद विचरण करने वाले हिरण को किसी खूंटे से बंधना भला कहां पसंद होता है?

फिर एक दिन वह भी आया जब भाइयों में जमीन का

मुंशी जी धुन के पक्के थे। उन्होंने शील में घर बनाया और पहाड़ों से ही अपने लिए एक दुल्हन भी छांट लाए। फिर वहीं से सेब के पौधों का जुगाड़ कर और कुछ आरंभिक तकनीकी ज्ञान हासिल कर बागीचा भी रोप लिया। शेष कुछ भाग में खेतीबाड़ी शुरू की। सब कुछ योजना के अनुसार चलता रहा, लेकिन अभी भी उन्हें लगता था कि पता नहीं बाहर लोग सीतापुर को जानते भी होंगे या नहीं। वे अभी भी बाहर लोगों के पूछने पर अपने गांव का नाम सीतापुर कहने के बजाए शील ही कह देते थे। हालांकि यह भी बता देते कि यह नाम बदलकर अब सीतापुर हो गया है।

बंटवारा हो गया तो उन्हें कुछ होश आया। सामाजिक दबाव भी बढ़ता जा रहा था। क्या करें क्या नहीं, समझ ही नहीं आ रहा था। काफी सोचा विचारा और फिर पता नहीं कहां से कोई प्रेरणा लेकर उन्होंने जीवन में कुछ नया करने का फैसला ले लिया। यानी गृहस्थी बसाने का मन बना लिया।

बंटवारे में मुंशी जी के हिस्से गांव के किनारे ठंडे से भाग में जमीन का टुकड़ा आया। शीतलता के कारण उस भू-भाग को शील कहा जाता था।

मुंशी जी ने बंटवारे में मिले भूमि के टुकड़े पर कोई ऐतराज नहीं किया, बल्कि मन ही मन प्लान बनाया कि यहां सेब का बागीचा लगाउंगा, जो इस क्षेत्र का पहला बागीचा होगा। उन दिनों ऊपरी शिमला में कोटगढ़ के बाद जुब्बल, कोटखाई, कुमारसेन, चौपाल से लेकर ठियोग तक सेब के बागीचों का शोर मचा हुआ था। शायद वहीं से उन्हें इसकी प्रेरणा मिली होगी।

मुंशी जी को ऐतराज था तो केवल इस जगह के नाम को लेकर। शील !!! भला यह भी कोई नाम हुआ? ऐसे लगता है जैसे सर्दी के मौसम में किसी ने ऊपर ठंडे पानी का घड़ा उंडेल दिया हो।

...तो क्या मुंशी सीताराम अब शील में रहेगा? नहीं, बिलकुल भी नहीं। वे सोचते रहे। 'कोई समाधान?' सबसे पहले इस जगह का नाम बदलना पड़ेगा। कोई फड़कता हुआ सा नाम होना चाहिए। शील तो बिलकुल नहीं चलेगा...।

मुंशी जी को पता नहीं क्यों बसंतपुर, धर्मपुर, सुल्तानपुर, सुजानपुर जैसे नाम पसंद थे। गहन विचार मंथन के बाद उन्होंने जगह का नाम अपने नाम सीताराम को साथ जोड़ते हुए सीतापुर रखने का निर्णय लिया। फिर कुछ राजस्व महकमे की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद उन्होंने एक दिन भाइयों और गांव वालों के समक्ष ऐलान कर दिया- 'देखिए! अब आगे कोई भी इस जगह को शील वील ना कहें, बल्कि सीतापुर कहें। अब यह शील नहीं, सीतापुर है।'

इस तरह मुंशी सीताराम अब शील के बजाय सीतापुर में रहने लगे। गांव वालों ने खूब हंसी उड़ाई। आपस में बतियाये- 'ये बचपन से ही नौटंकी करता आया है, आगे भी नौटंकी ही करेगा। घर गृहस्थी बसाना इसके बस की बात नहीं है। ...करने दो इसे जो करना चाहे। ...हमें क्या?'

लेकिन मुंशी जी धुन के पक्के थे। उन्होंने वहां घर बनाया और पहाड़ों से ही अपने लिए एक दुल्हन भी छांट लाए। फिर वहीं से सेब के पौधों का जुगाड़ कर और कुछ आरंभिक तकनीकी ज्ञान हासिल कर बागीचा भी रोप लिया। शेष कुछ भाग में खेतीबाड़ी शुरू की।

सब कुछ योजना के अनुसार चलता रहा, लेकिन अभी भी उन्हें लगता था कि पता नहीं बाहर लोग सीतापुर को जानते भी होंगे या नहीं। वे अभी भी बाहर लोगों के पूछने पर अपने गांव का नाम सीतापुर कहने के बजाए शील ही कह देते थे। हालांकि यह भी बता देते कि यह नाम बदलकर अब सीतापुर हो गया है।

मुंशीजी एक दिन दूर किसी जानकार के यहां विवाह समारोह में शामिल थे। सर्दियों के दिन थे। लोग कमरों में बैठे अंगीठी ताप रहे थे। एक- दूसरे से परिचय भी हो रहा था। आंगन में मंडप सजा था, जहां परंपरागत रूप से विवाह की रस्में निभाई जा रही थीं।

कमरे में साथ बैठे एक व्यक्ति ने मुंशी जी से पूछा- "आपका घर कहां है?"

मुंशी जी सीतापुर कहना चाहते थे, लेकिन झिझके कि इस नाम से उनके गांव को यहां कौन जानता होगा। उन्होंने कहा, "देवठी के नजदीक शील में रहता हूं।"

"शील? ये कहां पड़ता है?" उस व्यक्ति ने कहा। "मैं उस ओर में गया हूं। वहां एक जगह है सीतापुर, जहां किसी ने सेब का बागीचा भी लगाया है। वहां से कितनी दूर है आपका गांव?"

मुंशी जी यह सुनकर बहुत खुश हुए। उन्होंने तपाक् से कहा, "बस सीतापुर में ही है और वह सेब का बागीचा भी मैंने ही लगाया है।"

मुंशी जी अब बहुत खुश थे कि जिस जगह का उन्होंने अपने नाम से नामकरण किया था, आज लोग उसे दूर- दूर तक जानने लगे हैं। वे मन ही मन बड़बड़ाए, "अब तो मैं रहूं ना रहूं, मेरा नाम हमेशा रहेगा।"

साथ लगते गांव देवठी में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की ओर से सिनेमा शो रखा गया था। दूर- दूर से लोग सिनेमा देखने पहुंचे। आयोजकों ने शो से पहले कुछ स्थानीय गायक कलाकारों की रिकार्डिंग भी करनी चाही। इसमें भी मुंशी जी सबसे आगे थे। वे रिकार्ड के लिए जब भी कोई गीत गाते तो अंत में अपना परिचय जोड़ते हुए कहते- 'सीताराम सीतापुर।'

फिल्म शो के दौरान जब रील बदलने के समय कुछ देर के लिए शो रोकना पड़ता तो आपरेटर खाली समय में दर्शकों के मनोरंजन के लिए मुंशी जी का कोई रिकार्डिड गीत बजा देता। गीत के अंत में जब- 'सीताराम सीतापुर' आता तो लोग भी जोश में आकर दोहराते- सीताराम सीतापुर...सीताराम सीतापुर...।

धार व्यू, नजदीक आईएसबीटी, टूटीकंडी,
शिमला-171004

पुस्तक समीक्षा

भावों की सशक्त अभिव्यक्ति, भाषा का सरल प्रवाह

◆ डॉ. सीमा शर्मा

'खिड़कियों से झाँकती आँखें' सुधा ओम ढींगरा का सातवाँ कहानी संग्रह है। इन सभी कहानी संग्रहों को पढ़ने के बाद स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि आपकी कहानियाँ भारत और अमेरिका के बीच एक ऐसे पुल का निर्माण करती हैं, जिस पर चलकर आप इन दोनों देशों के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने बहुत बारीकी से समझ सकते हैं। आप चीजों को व्यापक परिदृश्य में देखते हैं और इस प्रक्रिया में आपके कई पूर्वाग्रह ध्वस्त हो जाते हैं। यह प्रक्रिया किसी एक कहानी में नहीं बल्कि कहानी-दर-कहानी चलती रहती है। समीक्ष्य संग्रह की पहली कहानी 'खिड़कियों से झाँकती आँखें' से लेकर अंतिम कहानी 'एक नई दिशा' तक आते-आते आपकी धारणा और अधिक पक्की होती जाती है।

संग्रह की प्रतिनिधि और प्रथम कहानी 'खिड़कियों से झाँकती आँखें' अत्यंत संवेदनशील है। इस कहानी में 'आँखें' प्रतीक हैं, उन वृद्धों की, जिनकी संतानें सफलता की राह पर आगे बढ़ गईं और ये बहुत पीछे छूट गए। अब ये 'आँखें' स्नेह एवं प्रेम की एक किरण जहाँ दिखाई दे उसी से चिपक जाना चाहती हैं, लेकिन यही 'आँखें' कथा नायक डॉ. मलिक को असहज कर देती हैं क्योंकि वह इनकी सच्चाई नहीं जानता। डॉ. खान उसे इनकी सच्चाई बताते हुए कहता है -'यंग मैन, इन आँखों से डरने की जरूरत नहीं, इनको दोस्ती का चश्मा चाहिए, पहना दो, चिपकना बंद कर देंगी।' (पृष्ठ -16) डॉ. मलिक को बहुत जल्दी ये बात समझ आ जाती है और वह कहता है - 'मैं जान गया कि सहारे को तलाशती ये आँखें किसी भी अजनबी में अपनापन ढूँढ़ने लगती हैं। (पृष्ठ -17)

इस कहानी में कई आयाम हैं। एक ओर अपनी जड़ों से कटकर स्वयं को कहीं और स्थापित करना। अपनी जड़ें जमाने और वहीं रच-बस जाने के बाद आप ही की तरह आपकी अगली पीढ़ी कहीं किसी देश में अपनी दुनिया बसा लेती है। अब आप नितांत अकेले हो जाते हैं, इसलिए एक बार पुनः अपने देश लौटने की चाह उत्पन्न होना स्वाभाविक है लेकिन तब वहाँ आपके पास कोई स्थान शेष नहीं रह जाता। यह ऐसा ही है जैसे किसी पौधे को निकाल कर कहीं और रोप दिया जाये तो कुछ समय के बाद वहाँ उस पौधे के लिए कोई स्थान शेष नहीं रह जाता। ऐसा भी हो सकता है कि उस पौधे के स्थान पर कोई और पौधा उगे एवं वृक्ष बन जाये। 'डॉ. मलिक देश की धरती में लगे पौधे को उखाड़कर हमने विदेश की धरती में बो दिया। पहले पहल उसे बहुत मुश्किलों का सामना करना पढ़ा, फिर धरती और पौधे दोनों ने एक दूसरे को स्वीकार कर लिया' (पृष्ठ -21) 'जब पौधा वृक्ष बन गया तो हम उसे उखाड़ कर फिर पुरानी धरती में लगाने ले गए। जिन रिश्तों के लिए पौधा विदेश में वृक्ष बना, उन्हीं रिश्तों ने स्वार्थ की ऐसी आँधी चलाई कि वृक्ष के सारे पत्ते झड़ गए, टुंड-मुंड हो गया वह। पुरानी धरती और टुंड-मुंड हुए वृक्ष ,दोनों ने एक दूसरे को स्वीकार नहीं किया और रोप दिया हमने विदेश की धरती पर वह वृक्ष एक बार फिर। इस धरती ने उसे पहचान लिया और सीने से लगा लिया।'(पृष्ठ -21)

सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में यह बात बार-बार उभर कर सामने आती है कि स्वदेश में रहने से सब बहुत अच्छे और विदेश में रहने से बुरे नहीं बन जाते। न ही उन संस्कारों को भूलते हैं जो उन्हें परिवार और समाज से मिले और जो भूल जाते हैं या स्वार्थी बन जाते हैं, ऐसे अपवाद कहीं भी हो सकते हैं। किसी के व्यक्तित्व निर्माण में देश विशेष का प्रभाव तो अवश्यंभावी है, लेकिन और भी अनेक कारक हो सकते हैं। समीक्ष्य संग्रह की दूसरी कहानी 'वसूली' में ऐसे ही एक विषय को उठाया गया है। 'वसूली' कहानी सत्तर के दशक से नब्बे के दशक तक जाती है, इसमें लेखिका ने हरि और सुलभा के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है कि प्रवासी भारतीय अपनी भारतीयता, देश और परिवार से कितना लगाव रखते हैं, जबकि भारत में रहने

वाले कितने भारतीय ऐसे हैं जिन के लिए उनका स्वार्थ सर्वोपरि है। शंकर और उमा को उस मनोवृत्ति के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। हरि मोहन अमेरिका में रहकर भी अपने परिवार को सुखी और प्रसन्न देखना चाहता है। विदेश जाकर बसने के पीछे भी यही कारण था लेकिन हरि के लिए जो सच्चाई थी, शंकर के लिए वह निरी भावुकता। शंकर के शब्दों में 'हरि, तुम शुरू से ही भावुक थे, विदेश जाकर तो भावनात्मक बेवकूफ बन गए हो।' हरि के लिए शंकर का यह व्यवहार आश्चर्यजनक था, तभी तो वह कहता है- 'कहाँ गई आपकी मर्यादा ! कहाँ गया आपका संस्कार ! विदेश में तो मैं रहता हूँ और समुद्र का खारापन आपकी आँखों पर छा गया है। (पृष्ठ-26)

हरि भारत में जन्मा, छह भाई-बहनों के बीच अत्यंत गरीबी में पला-बढ़ा। बहुत मेहनत करके पढ़ाई की संभवतः इसलिए उसका व्यक्तित्व एक भावुक और उदार व्यक्ति के रूप में निर्मित हुआ जबकि उन्हीं परिस्थितियों के बीच पले-बढ़े उसके बड़े भाई शंकर का व्यक्तित्व ठीक उलट दिखाई देता है। जबकि बचपन में वह भी हरि की ही तरह अत्यंत संवेदशील था। ऐसे में क्या इसे मात्र व्यक्तिगत भिन्नता के रूप में देखा जा सकता है या संगत भी एक कारक रूप में रही होगी। लेखिका ने इस और संकेत किया है। शंकर के व्यवहार का उसके परिवार पर जो असर है, वह उसके समूचे परिवार पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। एक माँ का अपने ही बेटे से डरना और अपनी व्यथा को इस तरह व्यक्त करना 'उमा उसे भड़काती रहती है, अब बार-बार एक ही बात करता है, मैं, मेरी पत्नी मेरा परिवार है और बाकी सब यानी बहन-भाई आपकी गृहस्थी हैं।' (पृष्ठ-27) वह समझ नहीं पाती उससे क्या गलती हो गई, वह बेटा जो सारे विश्व को अपना परिवार समझता था, अब सबको अलग कैसे समझने लगा।

समीक्ष्य संग्रह की तीसरी कहानी 'एक गलत कदम' वृद्धआश्रम और परिचर्चागृह के एक दृश्य के साथ शुरू होती है जहाँ दयानंद शुक्ला एवं शकुंतला शुक्ला को उनके दो पुत्र और पुत्र वधुओं ने यहाँ तक पहुँचाया है। यह 'एडल्ट लिविंग एंड नर्सिंग होम' लिखित रूप में तो सबके लिए है लेकिन अघोषित रूप से यह केवल भारतीयों के लिए और इसमें सूक्ष्म भारत की झलक मिलती है। 'सारे डाक्टर, नर्स, सेवक-सेविकाएँ और कर्मचारी भारतीय हैं। हर गृह में एक मंदिर भी होता है। हर प्रदेश का भारतीय भोजन यहाँ दिया जाता है और भारतीय माहौल उत्पन्न किया जाता है।' अप्रवासी भारतीयों के अंदर जो भारत बसता है, वृद्धाश्रम उसी का प्रतिबिम्ब है। यह उन लोगों का आश्रय स्थल बन जाता है जो किन्हीं कारणों से भारत नहीं जा पाते और अपने परिवार के साथ भी नहीं रह पाते। सभी सुख -सुविधाओं से सम्पन्न यह वृद्ध आश्रम भारतीय बुजुर्गों में बहुत लोकप्रिय है। यह एक ऐसा स्थल है जहाँ उन्हें अहसास हो कि वे भारत में ही रह रहे हैं। इस अहसास से उन्हें सुख की अनुभूति होती है। 'चारों ओर भारतीय ! शोर -शराबा, संयुक्त परिवार-सा खान-पान, सुबह-शाम घंटियों की आवाज, शंख का नाद, भारतीय संगीत, धूमधाम से मनाये जाते भारतीय उत्सव। ढलती उम्र में जन्मभूमि बहुत याद आती है, बस ऐसे गृहों में उसे ही मुहैया करवाने की कोशिश की जाती है।' (पृष्ठ-45) विशेष बात यह है कि इसका निर्माण भी एक भारतीय 'डॉ. सुमंत हीरादास पटेल' ने कराया था। इस कहानी का बहुत बड़ा भाग पूर्वदीप्ति शैली (फ्लैश बैक) में आगे बढ़ता है। यह कहानी एक ओर सजातीय और विजातीय होने के भ्रम को तोड़ती है और इस तथ्य को स्थापित करती है कि अच्छे-बुरे लोग देश-विदेश सब जगह होते हैं और अपवाद कहीं भी हो सकते हैं। डॉ. शरद शुक्ला और डॉ. जैनेट शुक्ला जैसे पात्रों के माध्यम से लेखिका ने कई पूर्वाग्रहों को तोड़ने का कार्य किया है। इस कहनी में उन्होंने इस धारणा को भी ध्वस्त किया है कि यूरोपीय देशों में संयुक्त परिवार नहीं होते या उनके बीच वैसी परवाह, स्नेह और सामंजस्य नहीं होता जैसा कि भारत में। सुधा ओम ढींगरा ने 'ऐसा भी होता है' कहानी में एक ऐसे विषय को उठाया है जिस पर हम या तो ध्यान नहीं देते या देना नहीं चाहते। समाज में दहेज की समस्या पर खूब बात होती है लेकिन लेखिका ने समीक्ष्य कहानी में इससे ठीक विपरीत एक विषय को उठाया है। कहानी पत्रात्मक शैली में लिखी गयी है। इसकी मुख्य पात्र दलजीत कौर के माध्यम से लेखिका ने उन सभी स्त्रियों की पीड़ा को शब्द दिये हैं, जो अपना 'मायका' (एक ऐसा घर जो सामान्यतया उनका होता ही नहीं) बचाने के लिए अपनी सामर्थ्य से अधिक प्रयास करती हैं लेकिन अंततः उन्हें निराशा ही हाथ लगती है। कहानी भले विदेश में बसी बेटी को लेकर बुनी गयी है लेकिन यह समस्या सार्वदेशिक कही जा सकती है। कहानी में उस मानसिकता पर प्रहार है, जहाँ सारा प्यार-दुलार तो बेटों के हिस्से आता है लेकिन सारी अपेक्षाएँ बेटियों से। कथा नायिका 'दलजीत कौर' के माध्यम से लेखिका ने प्रश्न किया है- 'आप सबके दिल में मेरा सिर्फ इतना ही स्थान है कि मैं आपकी अपेक्षाएँ पूरी करने के लिए बनी हूँ। आप लोगों के जीवन और दिलों में मेरा और कोई महत्त्व नहीं।'(पृष्ठ -62) कहानी में एक सहज प्रश्न है कि बच्चों के जन्मने की एक जैसी प्रक्रिया के बाद, धरती पर आते ही भेदभाव कैसे शुरू हो सकता है ? उससे भी बड़ा प्रश्न कि एक माँ कैसे भेदभाव कर सकती है ? 'बीजी, जैसे आप वीरों को सीने से लगाती हैं, कभी आपने अपनी धीयों (बेटियों) को भी सीने से लगाया। क्यों नहीं लगाया ? हम तो आपकी ही हैं, आपकी जात की। बाऊजी और चाचाजी ऐसा करें तो मैं मान सकती हूँ, वे पुरुष हैं, वीर उनकी जात के हैं, पुरुष प्रवृत्ति ऐसी ही होती है। अफसोस तो इसी बात का है, स्त्री ही अपनी जात के साथ गद्दारी करती है।' (पृष्ठ-63) 'दलजीत' अक्सर महसूस करती थी, "हमारे घर में कुड़ियाँ आँगन के फूल

नहीं बस ऐंवई पैदा हुई खरपतवार हैं। सारा प्यार, दुलार और सारी सुख - सुविधाएँ तो वड्डे वीर जी और छोटे वीरे के लिए हैं।' (पृष्ठ -63)

लेखिका ने 'दलजीत' के पिता के रूप में एक ऐसे पात्र को गढ़ा है जिनके लिए बेटियाँ उनके सपनों को पूरा करने का माध्यम मात्र हैं। 'दलजीत' की पीड़ा के माध्यम से लेखिका ने उस समूचे वर्ग पर व्यंग्य किया है, जो अपनी बेटियों को परदेश में केवल इसलिए ब्याहते हैं कि उनके सपने पूरे हो सकें। इन सपनों के बीच उपेक्षित हुई लड़कियों की मनोदशा को लेखिका ने बहुत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है- 'बाऊजी जिसने यह रिश्ता करवाया, उसने आपके साथ धोखा किया है। यहाँ डॉलर उगते नहीं, कमाने पड़ते हैं, कड़ी मेहनत से........इस परिवार ने मुझे अहसास दिलवाया कि मैं सिर्फ एक स्त्री नहीं, इंसान भी हूँ और मुझे भी सोचने और कहने का हक है, जो आपके घर में मुझे कभी नहीं मिला'(पृष्ठ-65) 'कॉस्मिक की कस्टडी' कहानी की कथावस्तु की बात की जाये तो दो पंक्तियों में आ सकती है। माँ (मिसेज रॉबर्ट) और बेटे (ग्रेग) कॉस्मिक की कस्टडी के लिए केस लड़ते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि 'हर केस में कुछ टूटता है या छूटता है।' लेकिन यहाँ इसके ठीक विपरीत स्थिति है। यह केस न केवल एक माँ-बेटे के रिश्ते में निकटता लाता है वरन भावात्मक रूप से भी उसे सुदृढ़ बनाता है। यह इस कहानी की खूबी है। संग्रह की छठी कहानी 'यह पत्र उस तक पहुँचा देना' को सतही ढंग से देखने पर तो 'जैनेट' और 'विजय' की प्रेम कहानी है किंतु लेखिका ने इस कहानी के द्वारा दो देशों की राजनीतिक व्यवस्था, समाजगत ढांचा एवं इन व्यवस्थाओं में विभिन्न विभेद को सामने रखा है जिनके कारण कई तरह की जटिलताएँ उत्पन्न होती हैं। घटिया राजनीति, नस्लवाद और रंगभेद के कारण दो भोले-भाले लोगों का जीवन समाप्त होना, इससे दुखद क्या हो सकता है? राजनीति एवं राजनेताओं की स्थिति लगभग सभी जगह एक जैसी है।

'अँधेरा-उजाला' समीक्ष्य-संग्रह की एक अनूठी कहानी है। जब आप इसे पढ़ते हैं तो अनायास ही आपको चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' याद आने लगती है। मोटे तौर पर दोनों कहानियों में कोई साम्य नहीं है। कथावस्तु, पात्र, देशकाल और परिस्थितियाँ सब कुछ अलग है। लेकिन इन दोनों कहानियों में कुछ तो ऐसा है जो भावनात्मक स्तर एक समता इनमें दिखने लगती है। 'उसने कहा था' का लहना सिंह और 'अँधेरा -उजाला' कहानी का मनोज दोनों ही पात्र एक ही धरातल पर खड़े दिखाई देते हैं। लहना सिंह अपनी प्रेयसी के लिए मृत्यु का वरण करता है तो मनोज अपनी फैन इला से किये वादे को जीवन पर्यन्त निभाता है क्योंकि- किसी फैन ने उससे वादा लिया था 'इसलिए वह निरंतर रियाज करता है और गाता है कि वह दुनिया के किसी भी कोने में रहे उसकी गायकी सुनती रहे।" इसके अतिरिक्त इस कहानी में और भी कई आयाम हैं। कहानी की कथावस्तु कई दशक पहले के परिवेश से शुरू होती है उस समय जाति और वर्ग-भेद की खाई अब से कहीं अधिक गहरी थी। कथा नायिका का बाल मन इस अमानुषिक भेदभाव से खिन्न हो जाता। इला देखती कि उसकी दादी ने 'सोमा' को आँगन की दहलीज कभी पार करने नहीं दी। इला की माँ को यह सब पसंद नहीं था लेकिन वह कभी कह नहीं सकी चूँकि उसकी खुद की दशा दोयम दर्जे की थी। इला की माँ का जो मूक विरोध था, वह इला में मुखरित होता है। वह तो 'सोमा' के बेटे मनोज से स्नेह करने का दुस्साहस कर बैठती है। ये अलग बात है कि उसे सफलता नहीं मिलती किंतु उसका विद्रोह जारी रहता है। 'अँधेरा-उजाला' कहानी बाल मनोवज्ञान को भी छूकर जाती है। लेखिका ने समीक्ष्य कहानी में अभिभावकों की उस मनोवृत्ति की ओर संकेत किया है,जब वे अपनी अतृप्त इच्छाओं को बच्चों से पूरा करना चाहते हैं- 'उससे बच्चे किस मानसिक तनाव से गुजरते हैं माँ-बाप कभी महसूस ही नहीं कर पाते। कई बार बच्चे अवसाद में चले जाते हैं। ऐसे में बच्चों के व्यक्तित्व का सही विकास नहीं हो पाता।' (पृष्ठ-100)

संग्रह की अंतिम कहानी 'एक नई दिशा' भारतीय मूल के परेश और मौली जैसे पात्रों के माध्यम से कही गई एक सकारात्मक कहानी है। पूर्वदीप्ति शैली में लिखी इस कहानी में रीटा भास्कर और उसके पति के रूप बंटी और बबली (ठग) जैसे पात्र हैं, जिनके माध्यम से कहानी आगे बढ़ती है। परेश व मौली एक सजग दम्पति हैं जो कठिनाइयों से जूझना जानते हैं। एक दूसरे का साथ देते हैं। जीवन में आयी किसी जटिलता या नकारात्मकता को भी एक नई और सार्थक दिशा देते हैं। यही इस कहानी का उद्देश्य भी है। सुधा ओम ढींगरा कहानियाँ लिखती नहीं वे उन कहानियों में स्वयं रच-बस जाती हैं। आपके पास व्यापक अनुभव है इसलिए हर कहानी कथावस्तु की दृष्टि से, एक दूसरे से नितांत भिन्न होती है लेकिन एक ऐसा तंतु इन कहानियों में छुपा रहता है जिससे ये लेखक का परिचय स्वयं दे देतीं हैं। भावों की सशक्त अभिव्यक्ति, भाषा का सरल प्रवाह और बीच-बीच में पंजाबी भाषा का प्रयोग जैसे बघार का काम करता है और कहानियाँ एक सौंधी सी महक से भर जाती हैं। 'वसूली' हो या 'एक गलत कदम' या 'खिड़कियों से झाँकती आँखें' भारतीयता और भारत से प्रेम इन कहानियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

शास्त्रीनगर, मेरठ, उ. प्र.,-250004
मो. 0 94570 34271

कहानी संग्रह खिड़कियों से झाँकती आँखें, **लेखिका** सुधा ओम ढींगरा **प्रकाशन :** शिवना प्रकाशन, पी. सी. लैब, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, सीहोर, मप्र, 466001, **प्रकाशन वर्ष** 2020, **मूल्य** 150 रुपये, **पृष्ठ** 132

पुस्तक समीक्षा

कवि की दृष्टि में आलोचना, आलोचक की दृष्टि में कविता

◆ दिनेश शर्मा

कवि व आलोचक डॉ. सत्यनारायण स्नेही की आलोचना पुस्तक 'समकालीन कविता का लोक' लोक जीवन के संवेदनशील कवि द्वारा कविता के यथार्थ की भावपूर्ण, दृष्टि संपन्न व मूल्यपरक पड़ताल है। आलोचना जैसे शुष्क, वस्तुनिष्ठ व शोधपरक कार्य में वे मनुष्य व उसके कोमल भावों को ढूंढते हैं। कविता के प्रतिमानों की बजाय मनुष्यता की हिफाजत के मूल आधारों की खोजबीन करते हैं। लोक जीवन को जब पिछड़ा, रूढ़िबद्ध और अनावश्यक समझकर नजरअंदाज किया जा रहा है, तब डॉक्टर स्नेही समकालीन कविता में सहज जीवन के बीज तलाशते हैं। मिट्टी में उपजे संस्कारों के पोषण की कविता को पाठकों के समक्ष रेखांकित करते हैं। ऐसी दृष्टि उसी आलोचक की हो सकती है जिसका कवि हृदय 'अम्मा के जौ' जैसी कविता को उगाता है और 'पिता का लोईया' जैसी रचना को पहाड़ की ठंड में ओढ़ता हो, बढ़ते बच्चों की चिंताओं के साथ पगडंडियाँ चढ़ता हो। मूल्यों के ह्रास, सांस्कृतिक क्षरण, सामाजिक विघटन जैसी समस्याओं व त्रासदियों के बीच विश्वास की चट्टान पर केदारनाथ की तरह खड़ा रहता है। स्पष्ट है कि आलोचक कविता की देह की बजाय आत्मा को टटोलना चाहता है। तकनीक, बाजारवाद, भौतिकवाद के जीवन पर हावी होने के कारण जो बेसुध है।

समकालीन हिंदी कविता का फलक व्यापक है। अध्ययन की संस्कृति में आई गिरावट के बावजूद अत्यधिक लिखा जा रहा है, हरेक विषय पर लिखा जा रहा है। क्या और कैसे लिखा जा रहा है? नया व महत्वपूर्ण क्या है? समय की पड़ताल कैसे की जा रही है? आलोचक के समक्ष ये प्रश्न रहते हैं। कविता के प्रति अपने दायित्व व सरोकारों के फलीभूत डॉक्टर स्नेही ने मनुष्यता, लोकांचल, सामाजिक - राजनीतिक स्थितियों व प्रश्नों, कविता के बदलते सरोकारों और भाषाई चिंताओं पर अपने चिंतन को इस पुस्तक के सात अध्यायों में केंद्रित किया है।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, उदय प्रकाश, ज्ञानेंद्रपति, कुमार कृष्ण, अशोक वाजपेयी, एकांत श्रीवास्तव, बोधिसत्व, वरयाम सिंह, सुनीता जैन, निर्मला पुतुल व यादवेंद्र शर्मा आदि महत्त्वपूर्ण समकालीन कवियों के लेखन में वे विघटन, बाजारवाद, और उपभोक्तावाद का दर्द, विदेशी संस्कृतियों के आक्रमण, विलुप्त होती सांस्कृतिक विरासत की चिंताओं और मूल्यों का ह्रास देखते हैं, वर्तमान समाज में घायल मनुष्यता की बगल में कविता को खड़ा पाते हैं। उनका मानना है कि शब्द अपना अर्थ खो रहे हैं और जीवन अभिप्राय से दूर है। तकनीक, सूचना तंत्र, मीडिया और इंटरनेट मानव चेतना एवं सहृदयता को पंगु बना रहे हैं। वैश्विक, वृहद समाज की संकल्पना ने जहाँ लघु समाजों और उनकी बोलियों को विलोपन के कगार पर पहुँचा दिया है, वहीं मुख्य धारा की भाषाओं तथा शब्दों में भी विकृतियाँ आई हैं। हिमाचल के कवियों की रचनाओं का विश्लेषण व मुख्य धारा से उनको जोड़ना इस पुस्तक का एक और उजला पक्ष है। पहाड़ की लेखनी पहाड़ की राजनीति व समाज को

राष्ट्रीय संवाद व परिचर्चा से संयुक्त करती है। धूमिल व कुमार कृष्ण, राजेश जोशी व वरयाम सिंह, एकांत श्रीवास्तव व सतीश धर, बोधिसत्व व यादवेंद्र सिंह की कविता एक साथ खड़ी होकर एक ही बात को एक ही शक्ति व प्रभाव से कह रही है। डॉ. स्नेही का आलोचना कर्म इस तथ्य को पाठकों के समक्ष उजागर करता है।

'हिमाचल की हिंदी कविता में व्यक्तिनामपरक संज्ञाएं' स्नेही
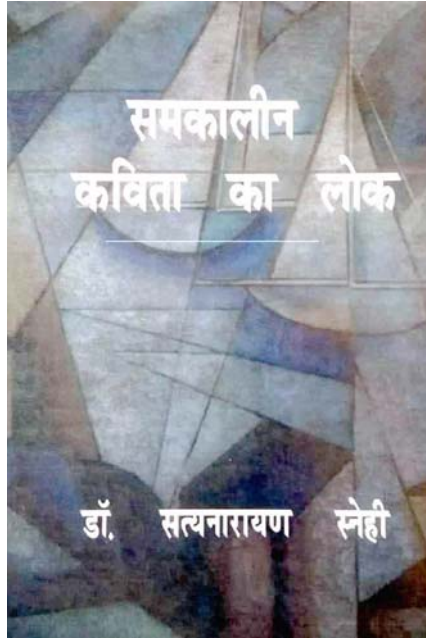
लघु कथा

मुखौटा

चितरंजन भारती

"ये साहब लोग स्वयं को समझते क्या हैं। हमेशा हम लोगों के साथ बुरा सलूक करते हैं।" उसकी आवाज बुलंद थी, "बराबरी का व्यवहार तो जैसे जानते ही नहीं। छोटी ही सही, आखिर हम भी नौकरी करते हैं। लेकिन ये हमेशा हमें दोयम दर्जे का समझते हैं।"

"ठीक कहते हो भाई। समय भी बदल गया है। फिर लोकतंत्र है। और यहां भी बराबरी का नियम लागू होता है।"

अचानक ऑफिस का चपरासी दीनाराम उनके पास आ खड़ा हुआ और उनसे बोला, "भोला बाबू आपसे एक जरूरी काम था।"

"ठीक है! अभी तू जा।" भोला बाबू बोले, "अभी हम व्यस्त हैं। तू बाद में आना।"

"भोला बाबू, अभी ही आपसे काम था। बहुत जरूरी है।"

"अब तू मेरे सर पर सवार होगा क्या।" भोला बाबू चिल्लाए, "चल भाग यहां से। मैंने कहा न कि थोड़ी देर बाद आना।"

दीनाराम के जाते ही उनके मुंह से बेसाख्ता निकल पड़ा, "साले ये नान्ह जात, अपनी औकात भूल जाते हैं। कल तक दिहाड़ी पर खटता फिरता था। रिजर्व कोटा से नौकरी स्थायी क्या हुआ, मुझपर हुकुम चलाने पहुंच गया।"

क्वा. नं. वी-152, एचपीसी टाउनशिप, पो. पंचग्राम, असम-788 802, मो. 0 94013 74744

का एक और महत्त्वपूर्ण अध्ययन है। व्यक्ति का चेहरा समाज का चेहरा है। व्यक्ति समूह का प्रतिनिधि है। उसके सुख-दुख हम सबके साझे हैं। यह आलोचकीय शोध-कार्य बताता है कि समकालीन कविता में पूर्ववर्ती कविताओं के विपरीत आम आदमी के माध्यम से समाज के सरोकारों, मानवीय हित, सुख - दुःख, पीड़ा-उल्लास, प्रश्नों-सहमतियों को अभिव्यक्त किया गया है। यह मेरा - आपका चेहरा प्रतीकों की बजाय अधिक संप्रेषणीय है। हिमाचल के कवियों द्वारा गढ़े गए आम चेहरों को यह संग्रह अपने रंग, रूपों और भावों के साथ एक मंच पर खड़ा करके पाठकों की बेहतरीन समझ के लिए प्रस्तुत करता है। कुमार कृष्ण की 'छेरिंग दोरजे', 'चरण दास की डायरी', 'मोटर अड्डे में गुल मोहम्मद' आनंद की 'करमू और कविता' यादवेंद्र शर्मा की 'बरई' तथा 'रोशनी देवी' प्रफुल्ल कुमार परवेज की 'गरीब दास' और वरयाम सिंह की 'उदू गरड़ाए' आदि व्यक्तिनामपरक कविताओं का उनकी पृष्ठभूमियों, स्थितियों व पहाड़ी लोक जीवन के संदर्भों में विवेचन किया गया है।

पुस्तक की भाषा सरल किंतु जीवंत और प्रभावी है। विवेचन में निरंतरता व नयापन है। आलोचना कर्म गूढ़ समझ व व्यापक अध्ययन का परिणाम है। कुल मिलाकर यह गंभीर शोध का दस्तावेज है जो पाठकों को कविता के मर्म व साहित्य के ध्येय से रूबरू करा कर समकालीन समाज से परिचित कराता है। इसमें आलोचक ने लगभग तीस कवियों के लगभग एक सौ काव्य संग्रहों की कम से कम एक हजार रचनाओं का निचोड़ साहित्य प्रेमियों को समर्पित किया है।

आलोचक जिन विषयों को महत्वपूर्ण मानता है, उनकी समकालीन कवियों के लेखन में पड़ताल की गई है। बेहतरीन व चुनिंदा उद्धरणों के द्वारा उन्हें पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। ये कविताएँ अपने ध्येय में कितनी खरी उतरी हैं, इस प्रश्न के प्रत्युत्तर में यहाँ सन्नाटा है। पाठक की दृष्टि और सामाजिक प्रभाव की विवेचना भी अनुत्तरित है। कवियों की प्रतिबद्धताओं, वैचारिकी और सैद्धांतिक पक्षों का विश्लेषण इस आलोचना कर्म को और बेहतर बना सकता है। वैश्विक उद्धरण और तुलनात्मक अध्ययन इस कार्य को व्यापक आधार दे सकते हैं। दो आलोचना पुस्तकें लिख चुके लेखक के सामने ये कुछेक रिक्तियाँ हैं, जिनको भर कर तीसरी पुस्तक का भविष्य मुझे दृष्टिगोचर हो रहा है। कविता व आलोचना के प्रति अपने हार्दिक और निःस्वार्थ प्रयत्नों के लिए डॉ. सत्यनारायण स्नेही को हार्दिक बधाई।

असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय चायल कोटी, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171012 मो. 0 94184 74084

आलोचना पुस्तक : समकालीन कविता का लोक, **लेखक** डॉ. सत्यनारायण स्नेही **प्रकाशक :** प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली-110 002, **प्रकाशन वर्ष** 2017, **मूल्य** 225 रुपये, **पृष्ठ** 110

ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 64 सितंबर 2020 अंक : 6

सम्पादकीय कार्यालय : हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tell: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in/himprastha.asp

ज्ञान सागर

यदि आंतरिक स्थिति अशांति की होगी तो सभी बाह्य चीजों में गड़बड़ी मालूम पड़ती है।

- अज्ञात

इस अंक में

लेख

उजली उजली सुबह की किरण 'अटल टनल रोहतांग'	नर्बदा कंवर	3
राजभाषा हिंदी के पक्ष में भावुकता से आगे कुछ व्यावहारिक कदम उठाए जाने की दरकार	आत्मा रंजन	6
एक महाकवि के प्रति दूसरे कवि की भाव पुष्पांजलि	आचार्य ओमप्रकाश 'राही'	8
बद्री सिंह भाटिया की रचनाधर्मिता संदर्भ : हिमाचल की हिंदी कहानी	नेम चन्द ठाकुर	11
भूमंडलीकरण एवं वैश्वीकरण के दौर में हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की संपर्क भाषा बने	विष्णु भट्ट	15
राजभाषा हिंदी का व्यावहारिक पक्ष	अंजना देवी	17
चलिए, चलते हैं देवीदहड़	पवन चौहान	23
पौंग में जलमग्न 'बाथू की लड़ी के मंदिर'	कपिल मेहरा	25
किसी पुराने अलाव के पास (शैलेय की कविता : संदर्भ-पहाड़)	प्रो. शंभु गुप्त	32
अंधविश्वास : विश्वास नहीं एक भय	डॉ. शशि गोयल	36

कहानी

नया सवेरा	सुशील लोहिया	44
जिंदगी की छांव	डॉ. दीपा त्यागी	47
उम्मीद	जगदीश कश्यप	52

कविता

आखरी वक्त	सुशील 'बेफिक्र'	28
माह के कवि गणेश गनी		29
सीताराम शर्मा 'सिद्धार्थ' की मिट्टी की खुशबू में रची दस कविताएं		39
गांव की माटी	हितेंद्र शर्मा	40
पहाड़, पेड़ और मौसम	विमल कुमार शर्मा	41

ग़ज़ल

अशोक कालिया की ग़ज़लें		42
कुलदीप गर्ग 'तरुण' की ग़ज़लें		43

समीक्षा

बच्चों के व्यक्तित्व को तराशती बाल कहानियों का अनोखा दस्तावेज 'दादाजी की चौपाल'	दीपक गिरकर	55

अपनी बात

मित्राणी धन धान्यानि प्रजानां सम्मतानिव।
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थात यद्यपि मित्र, धन-धान्य आदि का संसार में बहुत अधिक महत्व है, लेकिन माता और जन्मभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर होता है। मनुष्य को मातृभूमि की मातृभाषा ही प्रिय लगती है, क्योंकि यह हमारे भावों और विचारों को व्यक्त करने के लिए सुगम्य होती है। हम जब समाज में रहतें हैं तो अपने सामूहिकता के भाव प्रदर्शित करने के लिए विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और इनके संप्रेषण के लिए भाषा की जरूरत पड़ती है। किसी भी देश की भाषा उसकी सांस्कृतिक विरासत की संवाहक होती है। भारतवर्ष भाषायी दृष्टि से अत्यंत समृद्ध देश है, जहां वर्तमान में हिंदी सहित अनेक भाषाएं बोली एवं पढ़ी लिखी जाती हैं। हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है, जो पूरे देश को सामाजिक एवं भावनात्मक रूप से एक सूत्र में पिरोने का काम कर रही है। लोक व्यवहार में भी हिंदी अपने आप में प्रेम, मिलन और सौहार्द की भाषा है, जो आपसी मेल-जोल का एक सशक्त एवं समर्थ माध्यम है। यह प्रकृति से जुड़ी एक उदार, ग्रहणशील, सहिष्णु, सरल और सहज भाषा है जो राष्ट्रीय चेतना की भी संवाहिका है। स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी। इसके पश्चात हिंदी को हर क्षेत्र में प्रचारित-प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर वर्ष 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी-दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। तदोपरांत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरुकता पैदा करने और हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विश्व स्तरीय हिंदी आयोजनों का सिलसिला आरंभ हुआ। परिणामस्वरूप इस दिन को विश्व हिंदी दिवस के रूप में भी मनाया जाने लगा है और धीरे-धीरे हिंदी भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के एक विशाल क्षेत्र के जनसमूह की भाषा बनती चली गई। आज स्थिति यह है कि पूरे विश्व में अंग्रेजी और चाइनीज के बाद हिंदी तीसरी सबसे ज्यादा बोलने वाली भाषा बन गई है। हिंदी को देश की राज भाषा के रूप में लोकप्रिय बनाने की दिशा में हालांकि सरकारी स्तर पर निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन एक राष्ट्रीय भाषा को जितना मान सम्मान मिलना चाहिए वह अभी बाकी है। जहां तक इसे लोकप्रिय बनाने की बात है तो फिल्म जगत विशेषकर हिंदी फिल्मों व गानों ने इसके प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके बाद मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता ने भी इसे आगे बढ़ाने का काम किया है। नब्बे के दशक के बाद से इलैक्ट्रॉनिक चैनलों से प्रसारित हिंदी कार्यक्रमों की लोकप्रियता में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गई है। आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने उत्पाद के प्रचार-प्रसार, पैकिंग, गुणवत्ता के लिए हिंदी को अपना रही हैं और उनकी यही विवशता हिंदी भाषा के सशक्तीकरण का जरिया बनती जा रही है। दरअसल 90 के दशक में भारत में उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया भी काफी तेज हुई। इसके परिणामस्वरूप जब अनेक विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत आईं, तो शुरू-शुरू में हिंदी के लिए एक खतरा दिखाई दे रहा था, क्योंकि वे अपने साथ अंग्रेजी लेकर आई थीं। लेकिन हिंदी की बढ़ती ताकत ने इन सबको हिंदी अपनाने के लिए विवश कर दिया, क्योंकि इनके लिए हिंदी के बगैर अपना व्यवसाय बढ़ाना संभव नहीं था। आज दुनिया के समस्त चैनल तथा फिल्म निर्माता अंग्रेजी कार्यक्रमों और फिल्मों को हिंदी में डब करके प्रस्तुत करने लगे हैं। वेब, वेब-सीरीज, विज्ञापन, संगीत, सिनेमा और उपभोक्ता बाजार जैसे क्षेत्रों में हिंदी की मांग जिस तेजी से बढ़ी है वैसी किसी अन्य भाषा की नहीं बढ़ी है। अभी हाल ही में केन्द्र सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने को मंजूरी प्रदान की है, जिसमें देश की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी को प्रोत्साहन देने पर बल दिया गया हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्कूली स्तर पर पांचवी कक्षा तक विद्यार्थियों को क्षेत्रीय भाषा अथवा हिंदी माध्यम में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाएगा जिससे हिंदी को भाषा के रूप में बुनियादी स्तर पर सशक्त बनाने में सहायता मिलेगी। हिमाचल सरकार ने इस दिशा में पहल करते हुए राज्य में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अपनाने को सैद्धांतिक रूप में मंजूरी प्रदान कर दी है। हिमाचल में इससे पहले भी सभी सरकारी कार्य हिंदी में ही किए जा रहे हैं और यहां समय-समय पर इसे प्रोत्साहन देने की दिशा में सार्थक कदम उठाए गए है।

वरिष्ठ संपादक

उजली उजली सुबह की किरण 'अटल टनल रोहतांग'

✍ नर्बदा कंवर

लाहौल घाटी के लोगों का वर्षों का सपना 3 अक्तूबर को पूरा होने जा रहा है। इस दिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पीति जिले में मनाली-लेह राजमार्ग पर 10 हजार फुट की ऊंचाई पर निर्मित दुनिया की सबसे लम्बी सुरंग 'अटल टनल रोहतांग' को अपने कर कमलों से देश को समर्पित करेंगे। इस सुरंग का उद्घाटन करने के बाद राज्य की लाहौल घाटी अभूतपूर्व विकास की गवाह बनेगी। इस सुरंग का निर्माण पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की दूरदृष्टि का परिणाम है कि आज लाहौल घाटी के विकास के रूपांतरण के लिए अटल टनल रोहतांग बनकर तैयार हो गई है।

सुरंग बनाए जाने का ऐतिहासिक फैसला जून 2000 में लिया गया था जब अटल बिहारी वाजपेयी देश के प्रधानमंत्री थे। यद्यपि इसकी नींव कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने 2010 में रखी थी। यह सुरंग जहां विकास की एक सशक्त कड़ी है वहीं दुनिया के लिए तकनीक की भी मिसाल है।

इस सुरंग का सामरिक महत्व है और देश की सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण साबित होने वाली है। लगभग 3500 करोड़ की लागत से निर्मित 9.2 किलोमीटर लम्बी यह सुरंग कई मायनों में विशेष है। पीर-पंजाल पर्वत शृंखला को काटकर निर्मित इस सुरंग से मनाली और लेह के बीच की दूरी 46 किलोमीटर कम हो जाएगी। साथ ही क्षेत्र के निवासियों को वर्ष भर सम्पर्क सुविधा रहेगी और हिमाचल प्रदेश को लाहौल घाटी और लेह-लद्दाख के बीच हर मौसम में सुचारू रहने वाला मार्ग मिल जाएगा। यह सुरंग चीन के साथ चल रहे गतिरोध के मद्देनजर और भी महत्वपूर्ण है। इसके निर्मित होने से पाकिस्तान, चीन सीमा पर भारत की ताकत बढ़ जाएगी। इसके अतिरिक्त लद्दाख व साथ लगती सीमाओं पर तैनात सैनिकों से बेहतर सम्पर्क भी बना रहेगा और उन्हें हथियार और रसद समय पर पहुंचाने में मददगार साबित होगी।

इस सुरंग से जहां देश की आंतरिक सुरक्षा मजबूत होगी वहीं यहां पर्यटन गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा और जिले के आर्थिक, सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आएगा। मनाली से लेह की दूरी अब 4-5 घंटों में तय होगी। जो क्षेत्र वर्ष में छः माह ही आवाजाही के लिए खुला रहता था अब वही क्षेत्र बारह महीने विश्व के अन्य भागों से जुड़ा रहेगा। सुरंग ने अभियांत्रिकी के इतिहास में कई कीर्तिमान रचे हैं। इस सुरंग में कई ऐसे काम हैं जिन्हें पहली बार इस परियोजना में अंजाम दिया गया है। अब तक की यह ऐसी पहली सुरंग है जिसके भीतर डबललेन सड़क का निर्माण किया गया है।

दस हजार फुट की ऊंचाई पर निर्मित दुनिया की यह सबसे लम्बी वाहन योग्य सुरंग है जो करीब 10.5 मीटर चौड़ी और 5.32 मीटर ऊंची है। सुरंग के अन्दर हर 60 मीटर की दूरी पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं तथा 500 मीटर की दूरी पर आपातकालीन द्वार बनाए गए हैं। सुरंग के अन्दर एक और सुरंग बनाई गई है जो किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने व विशेष परिस्थितियों में आपातकालीन निकास का काम करेगी।

सुरंग के अन्दर एक्सीडेंट सेंसर भी लगाए गए हैं जो किसी भी तरह के हादसे की सूचना नार्थ व साऊथ पोल पर बने कंट्रोल रूम को देंगे। सुरंग के अन्दर 4जी कनेक्टिविटि मुहैया करवाने वाली भी यह दुनिया की पहली सुरंग है। सुरंग निर्माण से जहां लाहौल के लोगों का वर्षों पुराना सपना साकार हुआ है वहीं पूरे क्षेत्र में विकास के प्रति नए उत्साह का संचार हुआ है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि पीर-पंजाल पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित रोहतांग दर्रा सदियों से जनजातीय जिला लाहौल-स्पीति के लोगों के पिछड़ेपन का पर्याय रहा है।

सुरंग से सुरम्य घाटी का दीदार

क्षेत्र के पिछड़ेपन को दूर करने व स्थानीय लोगों की जिंदगी सुविधाजनक बनाने के लिए केन्द्र सरकार के सार्थक प्रयास जल्द ही फलीभूत होने वाले हैं। यह सब रोहतांग के नीचे निर्मित सुरंग से संभव होने जा रहा है।

शीत मरुस्थल के नाम से विख्यात इस जिले के लोगों की तकदीर बदलेगी बल्कि चीन व पाकिस्तान के नापाक मंसूबों पर भी लगाम लग सकेगी। सुरंग के निर्माण का सपना पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने दो दशक पहले देखा था। उन्होंने इस परियोजना के निर्माण की घोषणा तीन जून, 2000 को की थी। यूपीए की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने जून 2010 में मनाली के सोलंगनाला में इस सुरंग का शिलान्यास किया था।

वि व के सबसे ऊंचे रोहतांग दर्रे जो समुद्रतल से 13950 फुट की ऊंचाई पर स्थित है, के नीचे पहाड़ों के बीचों-बीच यह सुरंग बनाई गई है। 9.2 किलोमीटर लंबी यह सुरंग एक प्राकृतिक नाले के नीचे से गुजरती है। आधुनिक सुविधाओं से लैस रोहतांग सुरंग देश की पहली ऐसी सुरंग है, जिसमें आपात् स्थिति में एक्जिट टनल बगल में न होकर मुख्य सुरंग के नीचे से बनाई गई है ताकि मुश्किल हालात में नीचे वाली सुरंग से लोगों को बाहर निकला जा सके। इसके लिए हर पांच सौ मीटर की दूरी पर एक बाहर निकलने का रास्ता बनाया गया है। सुरंग में हर 250 मीटर की दूरी पर सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाएगी। हर एक किलोमीटर पर 'पार्किंग' की जगह बनाई गई है। हवा की गुणवत्ता जांचने के लिए जगह-जगह मशीनें लगाई जा रही हैं, जो सुरंग में ऑक्सीजन की मात्रा की जांच करती रहेंगी।

रोहतांग दर्रे पर अत्यधिक बर्फबारी के कारण समूची लाहौल घाटी साल में करीब 6 महीने तक शेष विश्व से कटी रहती है। रोहतांग दर्रे को ऊपर से पार करते वक्त 40 ऐसी जगहें आती हैं, जहां हिमस्खलन की संभावना सबसे ज्यादा होती है। रोहतांग दर्रे के 78 किलोमीटर का रास्ता इस सुरंग के बनने से 46 किलोमीटर कम हो जाएगा। बर्फबारी के चलते यहां यातायात पूरी तरह से बंद हो जाता है, ऐसे में सीमा पर सरहदों की सुरक्षा करने वाले जवानों तक हथियार, गोलीबारूद और रसद सड़क के रास्ते पहुँचा पाना मुश्किल हो जाता है। जंग की तैयारियों के लिहाज से भी सरहदी इलाकों तक पहुंच आसान बनाना जरूरी है।

लाहुल घाटी को 12 महीने खुला रखने के मकसद से बनाई

विश्व के सबसे ऊंचे रोहतांग दर्रे जो समुद्रतल से 13950 फुट की ऊंचाई पर स्थित है, के नीचे पहाड़ों के बीचों-बीच यह सुरंग बनाई गई है। 9.2 किलोमीटर लंबी यह सुरंग एक प्राकृतिक नाले के नीचे से गुजरती है। आधुनिक सुविधाओं से लैस रोहतांग सुरंग देश की पहली ऐसी सुरंग है, जिसमें आपात् स्थिति में एक्जिट टनल बगल में न होकर मुख्य सुरंग के नीचे से बनाई जा रही है ताकि मुश्किल हालात में नीचे वाली सुरंग से लोगों को बाहर निकला जा सके। इसके लिए हर पांच सौ मीटर की दूरी पर एक बाहर निकलने का रास्ता बनाया गया है। सुरंग में हर 250 मीटर की दूरी पर सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाएगी। हर एक किलोमीटर पर 'पार्किंग' की जगह बनाई गई है। हवा की गुणवत्ता जांचने के लिए जगह-जगह मशीनें लगाई जा रही है, जो सुरंग में ऑक्सीजन की मात्रा की जांच करती रहेंगी।

जा रही रोहतांग सुरंग 2019 में देश को समर्पित की जानी थी परंतु किसी कारणवश यह संभव नहीं हो पाया। तत्कालीन केंद्रीय रक्षा मंत्री (अब वित्त मंत्री) निर्मला सीतारमण की उपस्थिति में 24 अक्तूबर 2017 को एक समारोह में बीआरओ ने रोहतांग सुरंग के दोनों छोर जोड़े थे। शुरुआती तौर पर इस सुरंग के निर्माण की अनुमानित लागत 1500 करोड़ रुपये आंकी गई थी लेकिन विकट भौगोलिक परिस्थितियों के कारण इसकी लागत 3500 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। रोहतांग सुरंग का नामकरण पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर किया गया है। लाहौल-स्पीति के लोगों की परेशानियों को कम करने और पर्यटन को बढ़ावे के लिए पहली बार वाजपेयी के मन में 1998 में रोहतांग सुरंग बनाने का विचार आया था। यह दुखद है कि अब जब यह सुरंग बनकर तैयार हो गई है तो उनका देहांत हो गया है। पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी के प्रयासों से ही रोहतांग टनल के जरिये आधे साल तक कटी रहने वाली लाहुल-स्पीति घाटी आज प्रदेश और देश से जुड़ पाई है।

रोहतांग सुरंग का निर्माण न्यू आस्ट्रिया तकनीक से किया गया है। सुरंग के निचले वाले भाग में पैदल राहगीरों व भेड़-बकरियों को आने-जाने की व्यवस्था रहेगी व उससे ऊपर वाहन दौड़ेंगे। हर 200 मीटर के बाद एक आपात् काल दरवाजा होगा, जिससे आपात स्थिति में राहगीर पैदल रास्ते से बाहर निकल सकेगा। सड़क में वाहन के दुर्घटनाग्रस्त होने व आग लगने की स्थिति में हर दूरी पर हवा खींचने वाले पंखे लगे होंगे, जो सारा धुआं टनल में नहीं फैलने देंगे। टनल के बनने से अब रोहतांग दर्रे को नहीं लांघना पड़ेगा। मनाली से धुंधी और धुंधी से सुरंग द्वारा सीधे लाहुल के सिसु पहुंचेंगे।

भारत तिब्बत सीमा पर तैनात जवानों को रसद व दीगर साजो सामान पहुंचाने के लिए पठानकोट-श्रीनगर मार्ग का इस्तेमाल किया जाता है। इस मार्ग से सेना को तकरीबन 1500 किलोमीटर का फासला तय करना पड़ता है। पठानकोट से कुल्लू-मनाली पहचान, लेह होकर यर दूरी 800 किलोमीटर हो जाती है।

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में सर्दियों के मौसम में तापमान शून्य से 40 डिग्री नीचे तक पहुंच जाता है। हाड़ कंपा देने वाली सर्दी में स्थानीय लोग कई-कई दिनों तक घरों के अन्दर ही रहने पर मजबूर हो जाते हैं।

हिमाचल सरकार की ओर से हालांकि इन क्षेत्रों के लोगों को बाहर निकालने के लिए रियायती दरों पर हैलीकाप्टर भी मुहैया करवाया जाता है लेकिन सभी लोगों को इस हवाई सेवा से लाना व ले जाना संभव नहीं हो पाता है। ऐसे में हजारों लोग इसी इंतजार में रहते हैं कब सर्दियां हटेंगी और रोहतांग दर्रा खुल जाए। ऐसे में कहा जा सकता है कि रोहतांग सुरंग का बनना न सिर्फ लाहौल घाटी के लोगों के लिए वरदान सिद्ध होगा बल्कि तिब्बत सीमा तक पहुंचना भी आसान हो सकेगा।

केन्द्र सरकार व राज्य सरकार के अथक प्रयासों से उनका वर्षो पुराना सपना साकार हुआ है। निःसंदेह अब अटल टनल रोहतांग से स्थानीय लोगों की जिन्दगी में एक नई सुबह की शुरुआत होगी।

(लेखिका हिमप्रस्थ की संपादक हैं)

आलेख

राजभाषा हिंदी के पक्ष में भावुकता से आगे कुछ व्यावहारिक कदम उठाए जाने की दरकार

◆ आत्मा रंजन

हिंदी भारत की अस्मिता की और इस देश के जनमानस के सुख-दुख, हर्ष-विषाद की अभिव्यक्ति की भाषा है। इसलिए ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने आजादी से भी बहुत पहले सन 1917 में गुजरात के भरूच शैक्षिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है। 1918 में इंदौर में आयोजित आठवें हिन्दी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए भी गांधी जी ने कहा था कि - मेरा यह मत है कि हिन्दी को ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करें। इसी बात के दृष्टिगत उसी वर्ष उनके ही द्वारा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की गई। 1918 में ही मराठी भाषी होते हुए भी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जी ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से यह घोषणा की कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी। सन् 1935 ईस्वी में मद्रास राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री सी. राजगोपालाचारी जी ने भी वहां हिन्दी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया था। इसी तरह स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहन राय, सुभाष चन्द्र बोस, सुब्रह्मण्य भारती जैसे अनेकानेक अहिंदी भाषी महापुरुषों ने भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का सपना देखा था और हिंदी की भरपूर पैरवी भी की।

इन जननायकों द्वारा व्यक्त की गई इन जनभावनाओं के अनुरूप ही भारतीय संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस तरह संविधान की धारा 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी है। किन्तु हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने की व्यावहारिक और जरूरी तकनीकी तैयारियों के लिए समय देते हुए संविधान में यह व्यवस्था की गई कि संघ के कार्यकारी, न्यायिक और वैधानिक प्रयोजनों के लिए आगामी पंद्रह वर्षों के लिए यानी 1965 तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा। साथ ही संविधान द्वारा सरकार को इस दौरान हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने के लिए जरूरी प्रयास करने हेतु निर्देश भी जारी किए गए।

इन्हीं निर्देशों के अनुसार सरकार द्वारा अनेक महत्वपूर्ण प्रयास शुरू हुए। 1955 में राजभाषा आयोग की और सन् 1960 में केंद्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना की गई। सन् 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भी स्थापना की गई।

इस बीच भाषा आधारित राजनीति के स्वर भी मुखर होने लगे। और ऐसे ही प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रभावों के बीच 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित हुआ जिसमें यह व्यवस्था दी गई कि केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्यों से पत्राचार में अंग्रेजी के प्रयोग को उसी स्थिति में समाप्त किया जाएगा जबकि सभी अहिंदी भाषी राज्यों के विधान मण्डल इसकी समाप्ति के लिए संकल्प पारित कर दें और उन संकल्पों पर विचार करके संसद के दोनों सदन उसी प्रकार के संकल्प पारित करें। और सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग भी अनिश्चित काल के लिए जारी रखा जाए। इस तरह हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने की समय सीमा की बाध्यता से मुक्त होते हुए सरकारी काम काज, न्यायालयों आदि के कामकाज के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की छूट हमने अनिश्चित काल के लिए ले ली। यद्यपि राजभाषा अधिनियम में हिंदी के विस्तार के संबंध में संवैधानिक निर्देशों को भी बरकरार रखा गया।

शिक्षा के लिए भी पहले भारतीय शिक्षा परिषद् और फिर संसद द्वारा त्रिभाषी सूत्र या फार्मूले का भी अनुमोदन किया गया।

धारा 351 के दिशा निर्देशों द्वारा हिंदी के राजभाषा के रूप में विकसित किए जाने की दिशा में प्रयास भी लगातार जारी रहे।

हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि, हिंदी कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के विकास ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो का भी गठन हुआ।

हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने के लिए 1968 में संसद में राजभाषा संकल्प पारित किए गए और सन् 1976 में राजभाषा नियम बनाए गए।

सन् 1967 में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय हिंदी समिति का गठन किया गया। विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में हिंदी कार्यान्वयन समितियों के साथ साथ उनके समन्वय हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ गठित की गईं। वर्तमान समय में भी पूरे भारत में 500 से अधिक ऐसी नगर राजभाषा कार्यान्वयन

समितियाँ कार्य कर रहीं हैं। 1987 से लगातार राजभाषा सम्मान दिए जा रहे हैं। और अब ज्ञान विज्ञान लेखन पुरस्कार भी।

हिंदी भाषा और साहित्य संवर्धन हेतु जहां केंद्रीय साहित्य अकादमी, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, भारतीय ज्ञानपीठ, भारत भवन भोपाल, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, अन्य अनेक विश्वविद्यालय, राज्यों के भाषा विभाग व अकादमियां आदि अनेकानेक संस्थाएं अपने अपने स्तर पर निरंतर बेहतर कार्य कर रही हैं वहीं दूसरी ओर गृह मंत्रालय के अन्तर्गत राजभाषा विभाग का हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत केंद्रीय हिंदी निदेशालय दिल्ली और केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा जैसी बड़ी संस्थाएं हिंदी को राजभाषा के रूप में विकसित करने के लिए निरंतर और वृहद स्तर पर प्रयासरत हैं। एक बड़ा आधारभूत ढांचा, बड़ा बजट और हिंदी अधिकारियों कर्मचारियों का एक बड़ा अमला निरंतर प्रयासरत है। इस दिशा में बहुत काम हुआ है और हो भी रहा है।

इसके बावजूद भी आज जब हम देखते हैं कि क्या हिंदी हमारी राजभाषा यानी सरकारी कामकाज की भाषा बन पाई है? या राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को जो सम्मान मिलना चाहिए क्या वह आजादी के सात दशकों बाद भी मिल पाया है? तो जवाब हम सभी जानते हैं वह निश्चित रूप से नहीं में ही है। हिंदी वर्तमान समय में चीनी भाषा के बाद विश्व की दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत और विदेशों में करीब 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं तथा इस भाषा को समझने वाले लोगों की कुल संख्या करीब 90 करोड़ है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने अपेक्षित विस्तार पाया है। साहित्य सृजन की दृष्टि से भी यह विश्व की अग्रणी भाषाओं के समकक्ष है। हिंदी को लोकप्रिय बनाने और विस्तार देने में हिंदी फिल्मों और फिल्मी गीतों ने विशेष भूमिका निभाई है। हिंदी के क्षेत्रीय लहजे भी विकसित हुए हैं। हिंदी का चरित्र ही बहुलतावादी रहा है। अनेक क्षेत्रों और अंचलों ने इसे समृद्ध किया है। स्वाभाविक है इसके हित और विस्तार के लिए हिंदी के प्रति हमारी दृष्टि पवित्रतावादी नहीं समावेशी ही होनी चाहिए। बाजारवाद भी हिंदी के विस्तार में अच्छी भूमिका निभा रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में अलबत्ता जरूर अंग्रेजी को तरजीह दी जा रही है। हिन्दी का वैश्विक विस्तार भी अपनी सहज गति में हो रहा है। अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ी और पढ़ाई जा रही है। विदेश मंत्री के रूप में श्री अटल बिहारी वाजपेई और श्री नरसिंह राव जी के संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के हिंदी संबोधनों को भी हिंदी के संदर्भ में हम गौरव सहित याद करते हैं। किन्तु भाषा को उसका उचित स्थान और सम्मान भाषा भाषियों के व्यवहार से ही मिलता है। इधर बोलना सीख रहे छोटे बच्चों को 'नोज, आइज...' रटवाने और अनेक बड़े प्रतिष्ठित स्कूलों में हिंदी बोलने तक पर जुर्माना जैसी प्रवृति वर्तमान में हिंदी की व्यावहारिक स्थिति के ही मुंह बोलते उदाहरण हैं। तथाकथित अंग्रेजी स्कूलों की दुकानें आज शहरों कस्बों से आगे गांव-गांव में विस्तार पा रही हैं। हिंदी की उपेक्षा और अंग्रेजी के इस आकर्षण की पड़ताल करें तो सदियों की गुलामी और गुलाम मानसिकता तो है ही। हिंदी के लिए रोजगार या आजीविका का न होना या बहुत कम होना भी इसका एक बहुत बड़ा कारण है। यह भी सदियों के व्यवहार का जांचा परखा निष्कर्ष है कि शासक और शासित की, शास्त्र और लोक की भाषा हमेशा से अलग रही हैं। यहां तक कि न्याय की भी। इसलिए न्याय तक भी प्रभुवर्ग और बिचौलियों की गिरफ्त में अधिक रहा है। भाषा का यह अलगाव या यह दूरी प्रभु वर्ग के लिए शासन और वर्चस्व बनाए रखने में अत्यन्त सहायक और सुविधाजनक रहती है। अफसोस कि आजादी और लोकतंत्र के सात दशकों बाद भी यह अलगाव या भेद बना हुआ है। हिंदी को उसका अपेक्षित स्थान तभी मिल पाएगा जब वह शासन, न्याय और रोजगार की भाषा बन पाएगी। हिंदी किसानों, मजदूरों और मेहनतकश आमजन की भाषा रही है। आमजन का आचार व्यवहार हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में चलता है लेकिन शासन अंग्रेजी में। उनके लिए बनाई जाने वाली तमाम योजनाएं अंग्रेजी की फाइलों से निकलती हैं। यह लोकतंत्र की मूल भावना के भी विपरीत है।

विचारणीय है कि आखिर आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम ऐसा तंत्र क्यों नहीं विकसित कर पा रहे कि हिंदी शासन, न्याय और रोजगार की भाषा बन पाए। दरअसल ऐसा होने से समाज में मुठ्ठी भर प्रभुजन का वर्चस्व टूटता है। अवसरों पर पीढ़ियों का एकाधिकार भी। ऐसा वह क्यों चाहेगा। इस दिशा में कुछ व्यावहारिक और बुनियादी कदम उठाए जाने चाहिए कि हिंदी रोजगार मूलक भाषा बन पाए।

इस संदर्भ में दृढ़ इच्छाशक्ति भी अपेक्षित है। राष्ट्रवाद के उभार के बीच भी राष्ट्रभाषा के मुद्दे का प्रमुखता से न उभर पाना खेदजनक ही है। हिंदी दिवस या माह आते ही हम 'भारत माता के भाल की बिंदी...मेरी प्यारी हिंदी...' की अतिभावुकता में बहते नजर आते हैं। यदि ऐसा है तो साढ़े सात दशकों बाद भी मां के भाल की इस बिंदी का ऐसा हश्र क्यों..? हिंदी के प्रति यह दया या आत्मदया भाव क्यों! हिंदी हम सब के लिए आत्मदया नहीं आत्मसम्मान और आत्मगौरव का विषय है। आइए बड़ी बड़ी भावुकतापूर्ण बातों के बजाए हम रोजमर्रा के जीवन में अपने आसपास हिंदी के पक्ष में जो कुछ भी संभव हो व्यावहारिक भूमिकाएं निभाएं। हमारे नीति नियंताओं को भी इस दिशा में दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कुछ व्यावहारिक और ठोस नीतिगत निर्णयों की ओर बढ़ना चाहिए।

स्वस्तिका भवन, ग्राउंड फ्लोर, न्यू टुटू, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171011, मो. 0 94184 50763

आलेख

एक महाकवि के प्रति दूसरे कवि की भाव पुष्पांजलि

◆ आचार्य ओमप्रकाश 'राही'

निस्संदेह कवि कर्म निपुण आचार्य मनोहर लाल 'आर्य' ने 'केशवाचार्य-चरितम्' महाकाव्य की रचना कर न केवल वर्तमान में मंद पड़ चुकी प्राचीन संस्कृत महाकाव्य परंपरा को पुनरुज्जीवित करने में अपना महनीय योगदान दिया है बल्कि वे अन्यों के लिए प्रेरणापुंज भी बन गए हैं और अपने समकालीन एक वरिष्ठ एवं श्रद्धेय, महनीय राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित, ब्रह्मर्षि एवं महामहोपाध्याय जैसी उपाधि से विभूषित, समूचे भारतवर्ष में ख्यातिप्राप्त संस्कृत महाकवि आचार्य केशव के प्रति महाकाव्य के रूप में भाव पुष्पांजलि समर्पित कर साहित्य के इतिहास में एक उदाहरण भी प्रस्तुत कर गए हैं।

अपनी प्रतिभा के अनुरूप शार्दूलविक्रीडित छंद में अपने जनक-जननी के चरण युगल में इस श्रेष्ठ कृति को समर्पित करने की बात कहकर अपने गुरुजनों की आशीरभिलाषा के साथ सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के उपरांत अपने इस एकादश सर्गीय महाकाव्य का शुभारंभ देवाधिदेव महादेव की स्तुति से करते हैं जिसमें महाकवि कालिदास के "या स्रष्टुःसृष्टिराद्य.." अभिज्ञानशाकुंतल का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। महाकवि कालिदास ने अपनी जिस विनम्रता का परिचय 'रघुवंशम्' महाकाव्य के "क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः..." तथा "मन्दः कवियशःप्रार्थी..." पद्यों में दिया है वही छाप आचार्य मनोहर के "नैवास्ति वाचि मम यद्यपि काव्यशक्तिः..." (1/9) तथा 'कामं विचक्षणवराः सुरवाचिदक्षा मामज्ञमल्पधिषणं न हि नन्दितारः..." (1/11) पद्यों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

इस प्रकार विनम्रता व शालीनता के साथ आरंभ किए गए इस महाकाव्य के प्रथम सर्ग में प्राचीन हिमाचल वर्णन, स्वतंत्रता से पूर्ववर्ती राज्यवंशवर्णन, अंग्रेजी शासन व्यवस्था व हिमाचल के गठन की कहानी के बाद विद्वद्वरेणय केशव के जन्म ग्राम 'जराशी' की निघण्टु तथा व्याकरण सम्मत (1/35-36) व्याख्या के बाद लोकश्रुति व जनभावनाओं तथा मान्यताओं के वर्णन सहित जराशी गांव की विशेषताओं का रोचक वर्णन किया है तथा विद्वज्जन्मस्थली को नमन "...विनम्रमनसा वंदे जराशी' च नाम्" करते हुए प्रथम सर्ग को समग्रता प्रदान की है।

इस जराशी ग्राम में निवास कर रहे शांडिल्य गोत्रीय परिवार के वर्णन प्रसंग में योगी (जगी), शिबुराम, जयवंतराम तथा उनके घर वेदचतुष्टयी के समान जन्मे चार पुत्रों मोहन, केशवराम, हीरामणि तथा हेतराम के जन्म का वर्णन ग्रामीण कृषिपरक अर्थव्यवस्था के साथ दूसरे सर्ग में बड़ी ही सुंदरता से किया गया है।

तीसरे सर्ग में तेजस्वी बालक केशव के जन्म से माता-पिता के साथ जराशी गांव की प्रसन्नता तथा प्रकृति में हुए आकस्मिक परिवर्तन के साथ बाल लीला का बड़ा ही मनोहारी चित्रण हुआ है। बालक के नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेधादि संस्कारपरक कार्यो के निष्पादन के अवसर पर लेखक के कर्मकांड व ज्योतिष शास्त्र ज्ञान से परिचित होने का अवसर पाठकों को मिल जाता है। गोद में खिलाने पर माता-पिता के सुख की प्राप्ति, बालक के तुतलाने पर मिलने वाले आंनद के वर्णन को कवि ने जिस स्वभावोक्ति से प्रस्तुत किया है, वह निस्संदेह पठनीय है।

जराशी गांव में तब पठन-पाठन की उचित व्यवस्था न होने के कारण प्रतिदिन चार कोस दूर घने जंगल व पर्वतश्रेणियों से गुजरने तथा अनेक कठिनाइयों से संघर्ष करते धमांदरी विद्यालय में अध्ययनरत बालक केशव ने अपने सहपाठियों तथा गुरुजन का दिल जीत लिया। इसी चतुर्थ सर्ग में समग्र शास्त्री विधि से बालक के यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर कवि के कर्मकांड तथा वैदिक ज्ञान के दर्शन होते हैं। चार वर्ष इस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत पिता ने बालक को ज्योतिष, कर्मकांड व वैदिक शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से प्रखर विद्वान रतिराम के पास भेजा, जहां इन विषयों में पारंगत होते हुए बालक को वहां पधारे पुराणवेत्ता दिवाकर दत्त शर्मा ने देखा तो प्रथम दृष्ट्या ही बालक की प्रतिभा को पहचान इन्हें संस्कृत के मौलिक ज्ञान की ओर प्रेरित किया तथा शिमला स्थित संस्कृत विद्यालय में अध्ययनार्थ प्रेरित किया।

इस निमित्त पिता से आज्ञा लेने घर पधारे पुत्र केशव को पिता जयवंतराम ने शीघ्र ही गृहस्थ के बंधन में बांधने का विचार किया, क्योंकि तब इस क्षेत्र में बाल विवाह का प्रचलन था। इस पंचम सर्ग के दसवें पद्य से इक्कीसवें पद्य तक बाल विवाह से व्यथित तथा भविष्य के प्रति चिंतित बालक केशव की मनोदशा विचलित कर देने वाली है, किंतु "...रोद्धुं क्षमःक इह वै नियतेः प्रभावम्" कवि-वचनानुरूप नियति अपना प्रभाव दिखाती है और केशव को इस बंधन में बंधना पड़ता है। तदुपरांत विवाह की तैयारियों, रिश्तेदारों के आवागमन, महिला संगीत, उबटन मर्दन, नृत्य गीतयुक्त मंगलध्वनि आदि सहित सैंतीसवें तथा अड़तीसवें पद्य में सेहरा बंधन की शोभा पढ़ते ही बनती है। तदुपरांत बारात प्रस्थान, वधु पक्ष द्वारा बारात स्वागत, यज्ञवेदी के पास संपन्न सप्तपदी जैसे सभी वैवाहिक विधाओं का समग्र एवं सूक्ष्म वर्णन इस पाणिग्रहण प्रमुख

नामक पंचम सर्ग में मनोहर छटा से किया गया है।

विधि के विधान अथवा ग्राम्य परंपरा के अनुरूप भले ही केशव को विवाह के लिए बाध्य होना पड़ा किंतु विद्यामृत पिपासु होने के नाते उन्हें वधूप्रेम बाधित न कर सका और वे संस्कृत भाषा के सूक्ष्म अध्ययन की ओर प्रवृत्त होकर आचार्य दिवाकर दत्त शर्मा के शरणापन्न हो गए। यहां भी जराशी से शिमला जाते समय 51वें से 60वें पद्य तक किए मार्ग वर्णन में कवि मनोहर महाकवि कालिदास से प्रभावित दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि इस प्रसंग को पढ़ते समय पाठक को अनायास ही रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग में गुरु वशिष्ठ के आश्रम की ओर जाते राजा दिलीप के मार्गवर्णन का स्मरण हो आता है। अगले पद्यों में शिमला की गगनचुंबी अट्टालिकाओं को पहली बार विस्फारित नेत्रों से देख रहे बालक का माल रोड पर घूम रही भूमि पर अवतरित अप्सराओं (68) के सामन लगने वाली सुंदरियों को देख आश्चर्यचकित होना अस्वाभाविक नहीं। इन सभी स्थितियों से आगे गुजरते हुए केशव ने आचार्य दिवाकर दत्त के आशीर्वाद व प्रयत्नों से सुचारू रूपेण संचालित संस्कृत विद्यालय में प्रवेश लिया और तब वहां अपनी एकनिष्ठ साधना से अध्ययनरत होकर शास्त्री उपाधि प्राप्त की। इतने से संतुष्ट न होकर तब इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से दर्शनाचार्य की उपाधि प्रथम स्थान के साथ प्राप्त की और हिमाचल का मान बढ़ाते हुए वास्तव में दार्शनिक बन गए। अपनी बढ़ती ज्ञान पिपासा के अनुरूप तब और आगे बढ़ते हुए हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से संस्कृत एम.ए. व एम.फिल. उपाधियां भी सस्वर्ण पदक प्राप्त कीं और तब वेदों, पुराणों, स्मृतियों, शिक्षाग्रंथों, उपनिषदों, षड्दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण, निरुक्त, काव्य शास्त्रादि विविध विधाओं के गहन अध्ययन से ज्ञानार्जित कर श्रेष्ठ कवि बन गए।

अध्यापनादि वर्णन प्रमुख नामक सप्तम सर्ग में कवि मनोहर ने अब आचार्य केशव के कुशल एवं सफल अध्यापन कर्म का सुंदर वर्णन किया है जिसके अनुरूप इन्होंने शिमला के 'लेडी इरविन' विद्यालय में सर्वप्रथम कन्याओं को संस्कृत में वार्तालाप करने में निपुण बनाकर देवकन्या स्वरूपा बना दिया। तदुपरांत सोलन स्थित संस्कृत महाविद्यालय में "स्वज्ञानपीयूषपृषत्प्रवाहैः..."(30) स्वज्ञानामृत से अनेक शिष्यों को अभिषिंचित कर विषयनिपुण बना दिया। दस वर्ष यहां सेवा उपरांत प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण कर शासकीय महाविद्यालय कुल्लू में नियुक्त होकर अनेक शिष्यों को समर्थ सुरभारतीसमुपासक बना दिया। साथ ही कुल्लू की प्राकृतिक सुंदरता तथा देवभूमि में अनुकूल वातावरण में रहते हुए सैकड़ों कविताएं तथा शोधपरक लेख लिख डाले जिनमें 'भुवनेश्वरीचरितम्' तथा 'भारतीय दर्शन-एक अनुशील' को खूब ख्याति मिली। कुल्लू में पंचवर्षीय सेवा उपरांत राजकीय महाविद्यालय सोलन में स्थानांतरित होकर कार्यग्रहण किया, जहां इनके आने से कवि मनोहर के शब्दों "...सरस्वती मोदजले न्यमाङ्क्षीत्" (62) में देवी सरस्वती भी आनंदमग्न हो गई। अगले पद्यों में कवि मनोहर द्वारा उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपकादि अलंकारों से वर्णित वर्णन निस्संदेह मनोहारी हो गया। यहीं सोलन में अध्यापन कार्य में लगभग बीस वर्षों तक संलग्न रहते हुए अनेक सुंदर काव्यों की रचना की और भारतवर्ष में दूसरे कालिदास के रूप में "...श्रीकालिदासो प्रथितोऽतपरोऽभूत्" (63) विख्यात हो गए। लंबी अवधि तक सरकारी सेवा उपरांत सेवामुक्त होकर अब आचार्य केशव पूरी तरह देववाणी संस्कृत की सेवा में संलग्न हैं।

ऐसे परम ओजस्वी, शालीन स्वभाव के धनी, प्रखर वक्ता, देववाणी समुपासक, उच्चकोटि के विद्वान द्वारा प्राप्त मान-सम्मान का वर्णन महाकाव्य के अष्टम सर्ग में किया गया है जिनमें 'कालिदास पुरस्कार' 'राज्य विद्वत्ता पुरस्कार' आदि के साथ राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त राष्ट्र स्तरीय सर्वोच्च पुरस्कार विशेष उल्लेखनीय हैं। दिल्ली संस्कृत अकादमी ने जहां इनके सम्मान में 'शीर्षस्थ विद्वान से मिलिए' विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया वहीं हिमाचलियों ने इनके सम्मान में सोलन में 'नागरिक अभिनंदन' समारोह आयोजित कर कृतज्ञता ज्ञापित की। इस सर्ग के अगले (71 से 132 सर्गान्त) पद्यों में कविश्रेष्ठ आचार्य केशव की अन्य उपलब्धियों के साथ इन्हें 'ब्रह्मर्षि' तथा 'महामहोपाध्याय' की उपाधि से महिमामंडित किए जाने की बात कही गई है, जिससे न केवल आचार्य केशव अपितु पूरा हिमाचल गौरवान्वित हुआ है।

महाकाव्य के 'प्रकाशितरचनागौरववर्णन प्रमुख' नामक नवम सर्ग की शतपदी में कवि मनोहर ने केशवाचार्य की प्रकाशित भुवनेश्वरीचरितम्, दिवाकर दत्ताचार्यचरितम्, हिमाचल वैभवम्, शतकचतुष्टयम्, संस्कृत सरिता, भास रचित अभिषेक का पहाड़ी अनुवाद, शालिग्रामचरितम् अभिनव कवितांजलिः, भारतीय दर्शन एक अनुशीलन तथा शशिधरशतकम् नामक दस काव्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय सहित वर्णन किया है जबकि दसवें सर्ग में उनकी प्रकाशनार्ह रचनाओं से परिचित कराया है।

महाकाव्य के ग्यारहवें तथा अंतिम सर्ग विद्वज्जनों की दृष्टि में आचार्य केशव के प्रति प्रदर्शित भावनाओं को स्थान दिया गया है, जिनमें आरंभिक 33 पद्यों में आचार्य कुमारसिंह सिसोदिया, 40 से 48 तक आचार्य प्रेमलाल गौतम, 51 से 55 तक आचार्य रामानंद शर्मा तदनंतर च परमानंद भारद्वाज, दिनेश शर्मा, शंकर वासिष्ठ आदि की गुरुवर तथा विद्वद्वरेण्य आचार्य केशव के प्रति व्यक्त भावनाओं को साधिमान प्रकाशित किया गया है। आगे के 91 से 94 पद्यों में आचार्य केशव के चिरस्थायी यश का कवि मनोहर द्वारा किया गया मनोहारी वर्णन मन को छू जाने वाला है। जीवन के आठवें दशक में चलते हुए भी केशवाचार्य का तेजस्वी ललाटयुक्त दीप्त मुखमंडल, वाणी की प्रभावी शक्ति, चिंतन की अद्भुत क्षमता, देववाणी के प्रति वही पूर्वानुराग उनके चिरयुवा होने का प्रमाण है।

अंतिम पद्य में समस्त शास्त्र पारंगत अपने महामनीषी गुरुवर आचार्य विजयपाल 'प्रचेता' के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए काव्य रसिकों को प्रसन्नता प्रदान करने की मंगल कामना के साथ आचार्य मनोहर अपनी लेखनी को विराम देते हैं।

अब यदि हम महाकाव्य के लक्षणपरक तात्त्विक गुणों पर विचार करें तो इस कसौटी पर भी यह कृति पूरी तरह खरी उतरती है। "सर्गबंधों महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः। सद्वंशः ...." लक्षण के अनुरूप यह कृति सर्गबद्ध है और कम से कम आठ सर्गों की निर्धारित सीमा को पूरा करती नातिलघु और नातिदीर्घ ग्यारह सर्गों में सन्निबद्ध है। सद्वंशीय धीरोदात्तगुणान्वित केशव इसके नायक हैं और उन्हीं के नाम तथा कथावस्तु पर ही महाकाव्य का नामकरण किया गया है। कथावस्तु के अंतर्गत ऋतजु, वन, नगर, यात्रा, विवाह और अभ्युदय आदि का सांगोपांग वर्णन यहां पढ़ने को मिलता है। काव्य का कथानक सज्जन व्यक्ति से संबंधित है। प्रत्येक सर्ग एक वृत्त/छंद में रचित है तथा प्राचीन महाकवियों की प्रशस्त सरणि का अनुसरण करते हुए सर्ग के अंत में छंद बदल दिया है तथा सर्ग नाम भी सर्गगत कथा के आधार पर निर्धारित है।

'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' तथा 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' के अनुरूप सुंदर शब्द एवं अर्थ को काव्य का शरीर माना गया है और संरचना शैली को रीति 'पदसंघटनारीतिरंगसंस्थाविशेषवत्' कहा गया है। अल्पसमास, मध्य समास तथा प्रचुरसमास के आधार पर रीति के वैदर्भी, पांचाली और गौड़ी ये तीन रूप माने गए हैं। सरल, सरस व अल्पसमासयुक्त शब्दावली के प्रयोग कारण महाकवि कालिदास बारे 'वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते' यह मान्यता प्रचलित है किंतु कालिदास के अनुयायी के रूप में जिस प्रकार कवि मनोहर ने वैदर्भी रीति में महाकाव्य की रचना की है, उसे देख महाकाव्य की भूमिका के लेखक डॉ. विजयपाल शास्त्री 'प्रचेता' ने बिलकुल सही कहा है ' "मनोहरेण वैशिष्ट्यम् तत्प्राप्तं नात्र संशयः'। इस महाकाव्य में वैदर्भी रीति और सरल, सरस एवं अलंकार सहित पदसमूह प्रसाद गुण के प्रभाव से तुरंत अर्थबोध करवाकर सहृदयों के हृदय को आकर्षित करने में समर्थ दूसरे सर्ग के तेईसवें पद्य को उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है - पदं पदेन स्ववचो वचोभि -

ईदा समं स्वं हृदयं दधानौ।
तौ दम्पती सर्वमनोऽहृषातां
सज्जम्पती श्रेष्ठतमे हि मित्रे॥

प्रस्तुत महाकाव्य शब्दालंकारों तथा अर्थालंकारों से अलंकृत होकर सुंदर, सरल तथा सरस बनकर सहृदय जनों को अनुरंजित करने में समर्थ बन पड़ा है। इसमें लोकोत्तरवर्णन निपुण कवि मनोहर ने अनुप्रास-यमकादि शब्दालंकारों तथाा उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपकादि अर्थालंकारों का यथोचित सन्निवेश किया है, जिसमें उपमा की बहुलता कवि को उपमा के लिए विख्यात 'उपमा कालिदासस्य' महाकवि कालिदास के समीप लाने को उद्यत दिखाई पड़ती है। काव्यकर्ता का छंद ज्ञान भी मननीय है। कवि का जैसा सुललित पद विन्यास कौशल अनुष्टुप् वृत्त में दिखाई देता है, वही चमक वसंततिलका, मंदाक्रांता, शार्दूलविक्रीडित आदि में भी दिखाई पड़ती है। संभवतः कवि को वसंततिलका छंद अतिप्रिय है जिसका प्रयोग उन्होंने प्रथम, चतुर्थ तथा पंचम सर्ग में किया है। अन्य सर्गों में अनुष्टुप्, उपजाति, मालिनी, मंदाक्रांता, शार्दूलविक्रीडित आदि छंदों की छटा देखते ही बनती है। 'शृंगारवीरशांताना-मेकोऽंगी रस इष्यते' के पालन के अनुरूप समग्र महाकाव्य में शांत रस के आस्वादन में निमग्न पाठक स्वयं भी शांति का अनुभव करते हैं।

'भारवेरर्थगौरवम्' कहकर समीक्षकों ने भारवि के अर्थगौरव को सर्वोपरि माना है, जिसमें कोई संदेह भी नहीं। किंतु कवि मनोहर के इस महाकाव्य में जिस प्रकार अर्थांतरन्यास युक्त सूक्तियों का बहुलता से समावेश हुआ है और सार्धद्विशताधिक ऐसी अर्थगौरव प्रदर्शित करती सूक्तियां इस महाकाव्य में पढ़ने को मिलती है उससे आचार्य मनोहर इस दृष्टि से महाकवि भारवि के आस-पास खड़े नजर आते हैं। इस प्रकार नवार्थकल्पना, स्वभावोक्ति, रसभावादिनिवेश सहित प्रसाद गुण एवं विकटाक्षरबंधयुक्त ओज गुण के यथोचित सन्निवेश से सन्निविष्ट इस महाकाव्य के सुखपूर्वक अर्थावबोध के लिए महाकाव्य रचयिता कविश्रेष्ठ मनोहर लाल 'आर्य' ने अन्वय एवं हिंदी भाषाअर्थ भी पद्यों के साथ प्रस्तुत कर इसे सर्वजनग्राह्य बना दिया है। साथ ही पाद टिप्पणियों में विशिष्ट पदों की व्युत्पत्ति तथा व्याकरण की प्रक्रिया प्रदर्शित करते हुए विशेष शब्दों के पर्यायवाची भी कोशवचनोद्धरणपूर्वक प्रस्तुत किए हैं जो कविवर के प्रकांड पांडित्य के द्योतक होने के साथ पाठक को विस्तार से समझाने में सहायक भी हैं। निस्संदेह महाकाव्य को जिस मेहनत और लगन से कविवर ने तैयार किया है, मुद्रण में भी वही भाव नजर आता है। वर्तमान में प्रायः दिखने वाले अशुद्ध मुद्रण का यहां लगभग सर्वथा अभाव है। बस केवल एक बात समझने में कठिनाई हो रही है कि काव्य के आरंभ में 'शुभाशिषः' के पहले पृष्ठ का एक-एक शब्द 'पुरोवाक्' में अक्षरशः दिखाई पड़ता है। यद्यपि इससे कवि कर्म अथवा काव्य में कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगता किंतु अक्षरशः शब्दावृत्ति समझ से परे रही है। सारांशतः एक महाकवि के प्रति दूसरे कवि की भाव पुष्पांजलि स्वरूप विरचित महाकाव्य 'केशवाचार्यचरितम्' की रचना कर कविवर मनोहर लाल 'आर्य' ने संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि कर महनीय कार्य किया है जिसके लिए आने वाली पीढ़ी उनकी चिरऋणी रहेगी और इस दिशा में कुछ और विशेष करने की प्रेरणा लेती रहेगी।

सेवानिवृत्त प्राध्यापक, प्रकाश पुंज-131, हिमुडा कॉलोनी (महाविद्यालय के समीप), पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश-173 025

हमारे साहित्यकार

बद्री सिंह भाटिया की रचनाधर्मिता संदर्भ : हिमाचल की हिंदी कहानी

◆ नेम चन्द ठाकुर

समाज एक ऐसी इकाई है जो भौगोलिक परिदृश्य के अनुसार आसपास के वातावरण के आधार पर लोगों के समूह द्वारा निर्मित होती रही है। प्रत्येक समाज में लोग अपनी दैनंदिन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक दूसरे के सम्पर्क में रहते हैं। वे समाज द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार कार्यव्यवहार करते हैं। यह इसलिए अनिवार्य है क्योंकि एक स्वस्थ समाज का विकास इसी से संभव है। साहित्य समाज की इस प्रक्रिया से गुजरता है और विभिन्न विधाओं के अंतर्गत इन प्रक्रियाओं को प्रतिबिम्बित करता है। समाज में होने वाले घात-प्रतिघात, उनसे उत्पन्न होने वाले सम्बंधों तथा समस्याओं का विशद वर्णन हमें साहित्य की विधाओं के माध्यम से ही उपलब्ध होता है। कारण स्पष्ट है कि समाज का अर्थ सामाजिक अंतःक्रिया है। इसे और स्पष्ट कर दें कि जब तक भावों, विचारों का आदान प्रदान तथा सामाजिक अंतःक्रिया न हो तब तक समाज का अस्तित्व सम्भव नहीं। मानवता के जीवन दर्शन का चित्रण साहित्य सृष्टि का विषय है। यही कारण है कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने साहित्य को समाज का दर्पण कहा है।

जीवन जगत के विभिन्न चिंतक अथवा साहित्यकार जिन सिद्धांतों को मान्यता देते हैं उनकी समष्टि उनकी आइडियोलोजी अथवा विचारधारा के अनुसार होती है। उसका दर्पण जो जिस तरह से देखता है उसका उसी तरह अपनी तार्किक क्षमता के अनुसार निरूपण करता है। यह उसकी चेतना और ग्राह्यता पर निर्भर करता है। हिमाचल प्रदेश से सम्बन्धित बद्री सिंह भाटिया आज हिन्दी साहित्य में एक स्थाापित हस्ताक्षर हैं। उन्होंने साहित्यिक लगन से समाज को देखने की अलग दृष्टि, मेहनत और शब्द शक्ति के बल पर अपनी कलम की रचनात्मकता का लोहा प्रदेश ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर मनवाया है। आज राज्य या राष्ट्रीय स्तर का ऐसा कोई पत्र या पत्रिका नहीं है जिसमें उनकी साहित्यिक रचना न छपी हो ।

बद्री सिंह भाटिया हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने के बाद की दूसरी-तीसरी पीढ़ी के रचनाकारों में आते हैं। उनका जन्म हिमाचल प्रदेश के सोलन जिला के अर्की उपमण्डल के अन्तर्गत अत्यन्त पिछड़े (तत्कालीन) गांव ग्याणा में 4 जुलाई, 1947 को हुआ। यद्यपि वे अपने शिक्षाकाल से ही रचनारत थे मगर 1981 में उनके कहानी संग्रह 'ठिठके हुए पल' के प्रकाशन से पाठकों और साहित्यकारों का ध्यान उनकी ओर गया। इससे पूर्व वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी और सामान्य साहित्य गोष्ठियों से भी अपनी पहचान बना चुके थे। बद्री सिंह भाटिया किसी विशेष विचारधारा का पोषण नहीं करते। उनकी रचनाओं में समाज के आमजन की अवस्थितियों और समस्याओं का गुंफन हुआ है। इनमें भी उन्होंने ग्रामीण जनों की भावनाओं को उजागर किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक अवस्थितियों को स्वर दिया है। उनकी रचनाओं में नारी विमर्श, दलित विमर्श, कृषक चिन्तन से लेकर औद्योगिकीकरण और मिडिया के माध्यम से हो रहे सांस्कृतिक परिवर्तन की चिन्ता साफ दिखाई देती है। अपने उम्र के इस पड़ाव में वह जिस ऊर्जा और सजगता से साहित्य के प्रति समर्पित है यह इससे साफ पता चलता है कि गत वर्ष उनकी दस कहानियाँ राज्य और राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में जगह हासिल करने में कामयाब रहीं जिन्हें पाठकों ने हाथों हाथ लिया। इनमें पाज्जे के फूल, गोरखू चाचा, दोष मुक्त, विषधर, जिनका कोई नहीं होता, कहां है मेरा घर, छल्ले में जिंदगी, माटी की कसम, एक बार फिर और फिर किसी और जगह। ये कहानियां पाखी, प्राची, समहुत, कथाक्रम, लमही, जनपथ, मधुमती आदि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और दैनिक ट्रिब्यून में प्रकाशित हुई हैं। आज उनके खाते में चौदह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास और एक कविता संग्रह हैं । उपरोक्त के अतिरिक्त बद्री सिंह भाटिया एक अच्छे अनुवादक भी हैं। उन्होंने क्रिस्टोफर मार्लो के नाटक 'डॉक्टर फॉस्टस' और रूपर्ट ब्रुक के नाटक 'लिथवानिया' का हिन्दी अनुवाद भी किया है जिनका राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अनेक बार मंचन हुआ हो चुका है । बद्री सिंह भाटिया ने अनेक नाटकों की रचना भी की है जिनमें कठोपनिषद पर आधारित एक नाटक 'आत्म तत्व की खोज' और महाभारत के एक प्रतिष्ठित पात्र पर आधारित नाटक 'एकलव्य' का अनेक जगह मंचन हुआ है जो दर्शकों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने में पूर्ण सफल रहे ।

इस शोध पत्र में उनके चौदह संग्रहों में से कतिपय कहानी संकलनों की कहानियों को ही लिया गया है। उनकी आरम्भिक रचनाओं में जो उठान था वह आज एक प्रौढ़ और अनुभवों की सांद्रता में और अधिक पुष्ट और पल्लवित हुआ है। ठिठके हुए पल' शीर्षक कहानी में वे समाज में वृद्धों और शहर से गाँव आए बेटों, बहुओं की अवस्थिति को प्रकट करते हैं। गांव का एक चलन है। वहां खेत हैं खलिहान हैं। रोजमर्रा के जीवन में पालतू पशुओं के लिए घास-पात लाते लोग हैं और वृद्धों के साथ छेड़खानी करते बच्चे हैं। समय देखने का यंत्र घड़ी उन्हें किसी काम से नहीं रोकता। स्वतः ही सारे काम होते रहते हैं। मगर बूढ़े पिता को लगता है कि अब सभी लोग हाथ में घड़ी बांधने लगे हैं। उसकी चाह भी है और बेटा उसकी इस चाह को पूरा कर देता है। तभी बच्चे उसे छेड़ने लगते हैं उससे यूँ ही समय पूछने लगते हैं- ''दादू क्या बजा है?'' वे जानते हैं कि बूढे दादा की नजर घड़ी के बारीक अंकों को पढ़ने में सक्षम नहीं है। केवल हंसी की खातिर समय पूछना और भाग जाना। परिवार शहर में रहता है और वह अकेले हैं। बच्चों की हरकत से वह नाराज होता है तो वे और चिढ़ाते हैं। उधर गांव में जब उसके बहू-बेटा नातियों संग आते हैं तो उन्हें गोबर गंध महसूस होती है। वे गांव में स्वयं को सहज महसूस नहीं करते। सम्बंधों की इसी कड़ी में 'आवाज' संग्रह की कहानी 'घाट वालों की बहू' को भी देखा जा सकता है। यहां का बच्चा बिना मां-बाप का बच्चा है। वह अपने दादा के साथ सोते कई बार पूछता है कि उसकी मां कैसी थी? यह प्रश्न बहुत ही मार्मिक है। दादा अपने खोए बेटे और घर की रौनक बहू के न होने से उसे बता पाने में असमर्थ है और जब कभी बताता है तो बस इतना कि वह घाट वालों की बहू की तरह थी। बच्चा अपने दिमाग में एक छवि बनाता है और उस बहू में अपनी मां देखने लगता है। यहां दादा का उपहास नहीं होता। इसी संग्रह की कहानी 'नया हलबाह' में बच्चा अपनी विधवा मां के सहारे की कड़ी बनता है। वह मां के कहने पर खेतों में हल की मूठ पकड़ता दिखता है। हालांकि हल की मूठ पर दबाव मां का है मगर लोगों को तो दिखाना है। इस समाज में औरतों का हल चलाना ठीक नहीं समझा जाता।

'ठिठके हुए पल' संग्रह की एक और कहानी 'भायथू' में वह तत्समय की स्थितियों को उजागर करता है। गडरिये उस समय अपने रेवड़ों के साथ गाँव-गाँव आया करते थे। भेड़-बकरियां चराने के लिए उनके साथ पुहाल होते थे। पुहाल गांव के बच्चों को स्कूल जाते देखता है तो मन में ललक जागती है कि उसे भी स्कूल में जाकर पढ़ना चाहिए। इसी क्रम में 'धूप की ओर' कहानी संग्रह से 'बैल बनी बेटियां' कहानी में समय की मांग को लक्ष्य बनाया गया है। घर में बैल नहीं है। इघर फसल लगाने का समय हो गया है। बैल खरीदने के लिए माकूल धन की भी कमी है। तभी बड़ी बेटी के मन में आता है कि इस समस्या के निदान के लिए यह किया जा सकता है कि वे दोनों बहने 'जुआ' (जुंगड़ा) खींचे और हल की मूठ(आड़ी) पर पिता हो। फिर बारी-बारी सभी 'जुआ' खींच कर फसल लगा सकेंगे। यहां वही बेटी मां से भी कहती है कि वे शहर से उनके छोटे भाई को भी बुला लें ताकि काम और आसान हो सके।

समाज एक गोरखधंधा है। बद्री सिंह भाटिया ने समाज के विभिन्न पहलुओं को समेटने की कोशिश की है। मानवीय सम्बंधों पर भी उन्होंने खूब कलम चलाई है। वे सम्बंध माता-पिता के हों, भाई-बहन के और पति-पत्नी के हों अथवा सामान्य प्रेम और प्रेम की परिणति के। दाम्पत्य सम्बंधों में उनकी 'यातना शिविर' संग्रह में संकलित 'सालगिरह' कहानी में पति-पत्नी के भीतर की खटक को देखते हुए सालगिरह पर पति का देर से घर लौटना और पत्नी का प्रतीक्षारत रहने के ताने-बाने में रात की बहुत सी अवस्थितियों को उजागर किया गया है। वह अपने दोस्त के घर शराब पीकर लौटता है तो इतना नशे में होता है कि गाड़ी चलाना मुश्किल हो जाता है। वह सील्ड रोड पर से गाड़ी चलाता घर पहुंचता है तो घर में अलसाई दरवाजा खोलती बिना किसी प्रतिवाद के पीछे हटती पत्नी को देख चौंकता है कि वह कहीं गलत घर में तो नहीं आ गया। वह तभी कैलेंडर में उस दिन के गिर्द लगाए लाल निशान को देख मन ही मन चौंकता है और बुदबुदाता है कि आज तो उनकी शादी की सालगिरह थी। पत्नी इस दिन को मार्क कर रखती है। और सुबह अनबोले भी आग्रह करती है कि वह शाम को जल्दी घर आए। दाम्पत्य संबंधों में ठिठके हुए पल की कहानी 'नंगा वृक्ष' को देखें तो यहां आपातकाल के समय की समस्या को उजागर किया गया है जहां पति की जबरन नसबंदी कर दी जाती है और वह नपुंसक हो जाता है। युवा पत्नी उसे दुत्कारती है और वह घर में गांव के अन्य लोगों को उसके साथ हंसी ठिठोली करते देखता है तो उसका दिमाग भन्ना जाता है। 'उसका रोना' कहानी एक और पहलू को दर्शाती है। विवाह के समय दुल्हने बदल गई थीं। परिवार एक था तो इसे मान्यता देने के लिए कहा गया। परंतु एक पत्नी ने पति को उस रूप में नहीं स्वीकारा और वे बिना किसी प्रक्रिया के उसी घर में अलग-अलग रहने लगे। पत्नी के देवर के साथ सम्बंध हो गए और बच्चे भी। यह सामान्य बात हो सकती है मगर जब पति दूसरे गांव वाली जमीन में रहने लगा और एक उम्र तक पहुंच अचानक मृत्यु को प्राप्त हो गया तब स्थिति भिन्न हो गई। उसकी लाश घर में सड़ती रही। और जब पता चला तो वह लाश उठाते समय अचानक दहाड़ मार कर रोने लगी ,'ओ मेरेआ मालका'। उसका इस प्रकार का प्रलाप लोक दिखावा बन जाता है और उनके दाम्पत्य सम्बंधों के जानकार लोगों के लिए हास्यस्पद भी बनता है। 'मालक' उस पति के लिए जिसे उसने कभी पति माना ही नहीं।

बद्री सिंह भाटिया की एक और कहानी है 'और वह गीत हो गई'। इस कहानी में दुहाजू पति का इलाके की रीत प्रथा के अनुसार

विवाह होना तय हुआ। होने वाली पत्नी भी दुहाजू ही थी। होने वाला पति सरकारी नौकरी करता था और आवागमन के साधन न के बराबर थे। वह समय पर घर नहीं पहुंच पाया। इधर लोग रिवाज के अनुसार दुल्हन को घर ले आए। रात को खूब गिद्दा पड़ा। वह नाची भी मगर जब शाम तक वह नहीं आया तो दूसरे दिन संध्या तक प्रतीक्षा कर वहाँ से चली गई। घटना यह कि अभी वह गांव की सीमा भी नहीं लांघी थी कि पति आ गया। लोग दौड़ाए गए मगर नहीं वह कहीं और चली गई थी। इस पर एक लोक गायक ने गीत बना दिया जो लम्बे समय तक गाया जाता रहा।

रिश्तों के इसी क्रम में भाई-बहन के प्यार को दर्शाती मार्मिक कहानी है 'पाज्जे के फूल'। इसी शीर्षक से उनका संग्रह भी आया है। यहां बहन भाई बहुत अमीर नहीं है। बहन की शादी एक ऐसे परिवार में हुई है जिनके पास अधिक जमीन नहीं है। वह विधवा भी हो गई है। परिणामतः विपन्न जीवनयापन करती है। वह रक्षाबंधन के त्योहार पर भाई के घर जाती है तो वही पुराने धुले कपड़े पहने। भाभी कटाक्ष भी करती है मगर गरीबी की मारी बहन तो मन मसोस कर रह जाती है। वह जब लौटने लगती है तो भाई को प्रकृति के इशारे से कहती है कि तू भी उसके घर लेकिन तब आना जब 'पाज्जे' फूले हों। पाज्जे के फूलने का समय नई फसल के आने का द्योतक होता है। लेकिन भाई बहन का इशारा भूल गया और विडम्बना देखिए कि भाई जब उसके घर जाता है तो मौसम दूसरा होता है। आदर स्वरूप वह क्या पकाए? यहाँ बहुत ही मार्मिक चित्रण पेश किया गया है। 'बची हुई आदमीयत' कहानी में पिता की दयनीय अवस्थिति को दर्शाया गया है। बेटी बलात्कार के बाद मार दी जाती है। दूरदराज गांव में पोस्टमार्टम की व्यवस्था नहीं है। पिता को पुलिस चौदह किलोमीटर दूर पोस्टमार्टम कराने का आदेश देती है। गांव में कोई उसकी मदद नहीं करता और विपन्न वह अपनी बेटी की लाश को साइकिल पर बांध कर बतियाता उसे अस्पताल ले जाता है। रास्ते में उसे एक युवा मिलता है जो कुछ समय तक उसका साथ देता लाश को ढोता है। शहर के बाहर एक पत्रकार मिलता है जो सारी स्थिति का जायजा लेकर उसकी मदद कर पोस्टमार्टम करवाने में सफल होता है। यह कहानी हमारे यहां के पहाड़ी समाज की नहीं लगती मगर जब हम अन्य राज्यों के दूरदराज के क्षेत्रों की खबरे अखबारों में पढ़ते हैं टेलीविजन में देखते हैं तो लगता है कि कहानी अपने रचनात्मक यथार्थ को पूर्ण करती है और आदमी की मानसिकता को प्रकट करती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक अपने को आँचलिक लेखक की परिधि से बाहर निकलने में पूर्ण सफल रहा है। 'धूप की ओर' संग्रह की एक और कहानी 'उल्टे रास्ते में' एक चाचा के माध्यम से उसकी भतीजी के साथ पति द्वारा किए गए पशुवत बर्ताव को स्वर दिया गया है। 'बड़ियां डालती औरतें और शुभांगी कथा' कहानी इसी शीर्षक से आए संग्रह की लम्बी कहानी है।

बद्री सिंह भाटिया का रचना संसार

कहानी संग्रह

- ठिठके हुए पल तथा अन्य कहानियाँ (1985), भावना प्रकाशन, नई दिल्ली।
- छोटा पड़ता आसमान तथा अन्य कहानियाँ (1985), आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली।
- मुश्तरका जमीन तथा अन्य कहानियाँ (1987), भावना प्रकाशन, नई दिल्ली।
- बावड़ी तथा अन्य कहानियां (1988), राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली।
- यातना शिविर तथा अन्य कहानियाँ (1992), प्रेम प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कवच तथा अन्य कहानियाँ (2003), पंकज प्रकाशन, नई दिल्ली।
- और वह गीत हो गई तथा अन्य कहानियाँ (2009), नीरज प्रकाशन, नई दिल्ली।
- डी एन ए तथा अन्य कहानियाँ (2011), नीरज प्रकाशन, नई दिल्ली।
- लोगों को पता होता है तथा अन्य कहानियाँ (2012), नीरज प्रकाशन, नई दिल्ली।
- धूप की ओर तथा अन्य कहानियाँ (2016), नीरज प्रकाशन, नई दिल्ली।
- आवाज तथा अन्य कहानियाँ (2016), सोम्य प्रकाशन, नई दिल्ली।
- प्रेत संवाद तथा अन्य कहानियाँ (2016), राही प्रकाशन, नई दिल्ली।
- पाज्जे के फूल तथा अन्य कहानियाँ (2018), नीरज प्रकाशन, नई दिल्ली।
- बड़ियाँ डालती औरतें और शुभांगी कथा (2019), सरोज प्रकाशन, नई दिल्ली।

उपन्यास :

- पड़ाव (1987), (पुनः प्रकाशन 2010), भावना प्रकाशन, नई दिल्ली।
- डेंजर जोन (2014), नीरज प्रकाशन, नई दिल्ली।
- रिले रेस (2015), नीरज प्रकाशन, नई दिल्ली।

कविता संग्रह :

- कंटीली तारों का घेरा (1983), प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली।

कहानी में उन औरतों को एक युवती दिखती है। मेहमान आई नातिन पूछती है और फिर अमुक शुभांगी के दाम्पत्य संबंधों के बिखराव की एक लम्बी कहानी सुनाई जाती है।

बद्री सिंह भाटिया मूलतः ग्रामीण कथाकार है। उनकी कहानियों में अधिकांश ग्रामीण परिवेश को परिलक्षित किया जा सकता है। इधर हाल ही में औद्योगिकीकरण विशेषकर सीमेंट उद्योग से जो प्रभाव ग्रामांचल पर पड़ा है उन्होंने उसे महसूस कर कलमबद्ध करने की कोशिश की है। यह एक सजग रचनाकार का दायित्व भी है कि वह समाज की दैनंदिन घटनाओं को महसूस कर पाठकों से रूबरू करवाता रहे। 'लक्कड़बग्घा' उनकी एक महत्त्वपूर्ण कहानी है। इलाके में सीमेंट उद्योग की स्थापना हो गई है। लोग प्रसन्न है कि उनकी जमीन का अधिग्रहण हो रहा है वे मिले पैसे से अपना जीवनस्तर ऊंचा करने की सोच रहे हैं। मगर इसीके दृष्टिगत गांव की बुढ़िया अपने बेटे को बताती भी है कि आज तो जो जमीन अधिगृहित हो रही है वह केवल घासनी है। वहां फसल नहीं होती मगर वहां जो घास होता है वह तो उनके पालतू पशुओं के काम आता है। कल तुम्हारे बच्चे दूध की मांग करेंगे। खेत फसल लगाने के लिए हरी खाद की मांग करेंगे। कहां से लाओगे? इसी प्रश्न के तहत उसे लगता है कि सीमेंट कम्पनी विकास का पर्याय हो सकती है मगर वह तो उसके लिए एक बाघिन की तरह है। लक्कड़बग्घे की मानिंद है। औद्योगिकीकरण के तहत जब भूमि का अधिग्रहण होता है तो पता चलता है कि जो परिवार जिस भूमि को काश्त कर रहा होता है उसमें तो बहुत से लोगों की हकदारी है। इनमें परिवारों के विघटन के साथ बहने भी आती हैं। दिवंगत बहनों के बच्चे भी हकदार होते हैं। यहां तक कि मुतबन्ने भी। सभी अपना हक लेते हैं और जब बैंक के ऋण अदा न होने का नोटिस या कोई पत्र गांव में आता है तो कोई नहीं जानता कि अमुक उस गांव का वासी भी है या नहीं। वे कभी अमुक गांव में रहे ही नहीं। पता गलत लिखा मान लौटा दिया जाता है। यह सब 'गलत पते की चिट्ठी' में अभिव्यक्त हुआ है। इसी क्रम में बद्री सिंह भाटिया ने पटवार शास्त्र को भी अपनी रचनाओं का वर्णय विषय बनाया है। पटवारी जो न करें सो कम। 'पीतल का फुट्टा' में पटवारी किस तरह जमीन के नक्शे देता है और किस तरह जमाबंदी की नकल देता है बखूबी प्रकट हुआ है। पटवार शास्त्र यानी जो पटवारी कर सकता है वह कोई नहीं कर सकता, से जुड़ी एक और कहानी 'मिठाई' में पटवारी के दिए निशान और कचहरी में रिश्वत की प्रक्रिया को भी दर्शाया गया है।

बद्री सिंह भाटिया ने स्त्री मन को लेकर भी अनेक कहानियां लिखी हैं। उनकी 'और वह गीत हो गई' संग्रह की सभी कहानियां स्त्रीमन की कहानियां हैं। उन्होंने समाज में स्त्री की विभिन्न स्तरों पर भागीदारी और अवस्थिति को प्रकट किया है। 'और वह गीत हो गई' में यदि एक दिन की दुल्हन होने की बात है तो 'लौटा दो मेरा मान' में एक ऐसी महिला की कहानी है जिसे स्कूल की बच्चियों को देह व्यापार में धकेलने के षड्यंत्र के तहत फंसाया गया था। जब वह बाइज्जत बरी हो जाती है तो वह प्रश्न करती है कि क्या उसका वह खोया हुआ मान वापस आ जाएगा। 'हूक' कहानी में एक लड़की अपने प्रेमी को पाने के लिए एक षड्यंत्र का शिकार होती है और जब वह एक लम्बे अंतराल के बाद मिलता है तो अंतःपीड़ा से तड़प उठती है। 'मिस काल' में एक पत्नी को पति के साथ बराबरी में चिराई करते पाया जाता है। इसी क्रम में दोषमुक्त, एक औरत की मनोइच्छा, खाली, प्रेतात्मा की गवाही, सुबह होनेवाली है, आंखें, शायद आदि कहानियां औरत के विभिन्न स्तरों पर कार्यव्यवहार और अवस्थितियों को प्रकट करती हैं।

भाटिया जी ने कुछ कहानियां प्रचलित कथा शैलियों से हटकर अन्य शैलियों यथा बेताल कथाओं की शैली में भी लिखी हैं। आज का बेताल विक्रमार्क के बेताल की तरह पेड़ पर नहीं रहता। वह कहीं भी विचरण कर कथा सुनाता रहता है। आज का विक्रमार्क भी लगभग भिन्न है। वह पेड़ के पास नहीं जाता बल्कि बेताल उसके पास आता है। वह उसके चौबारे पर आकर कथा सुनाता है या वह कहीं बाजार में मिल जाता है। विक्रमार्क अपने राज्य की विभिन्न स्थितियों से परिचित होता है। इस शैली को अपनाने का उद्देश्य संभवतः उन कथानकों को उजागर करना है जो प्रायः आम कथातत्वों के माध्यम से अभिव्यक्ति को प्राप्त नहीं होते। लोग सच कहां बोलते हैं, कर्मजली, शुचिता के सवाल आदि कहानियां इसी शैली की कहानियां हैं। बद्री सिंह भाटिया ने प्रेत संवाद, चुड़ैल बावड़ी और प्रेतात्मा की गवाही कहानियों में फेंटेसी को भी जगह दी है। प्रेत संवाद में वे जातियों के दंश में सवर्णों के भीतर भी छोटे बड़े की समस्या को देखते हैं। उनके श्मशान भी विभाजित हैं और यदि एक सवर्ण दूसरे बड़े सवर्ण के श्मशान पर लाश जलाने को ले जाता है तो उस पर विवाद हो जाता है। यहां प्रेत बनी स्त्री प्रेतात्मा को जाग्रत करने वाले दलित को अपनी व्यथाकथा सुनाती है।

समाज यद्यपि लोगों से बनता है मगर यह एक स्वचालित प्रक्रिया के तहत चलता रहता है। इसमें राजनीति होती है तो इसमें धार्मिक आर्थिक संकट भी हैं। समाज में विचारधारा की खेती भी होती है और लोग उसके तहत विभाजित हो अपने कार्यव्यवहार को रूप देते रहते हैं। बद्री सिंह भाटिया ने यद्यपि बहुत सी स्थितियों को उजागर किया है, परंतु इससे अभिप्राय यह कदापि नहीं कि उनका लेखन पूर्णता को प्राप्त हो गया है। उनमें लेखन की क्षमता बहुत है तभी तो हर बार उनकी कहानियाँ नए आकार प्रकार में अपने को रच रही हैं।

शिक्षा-क अनुभाग, कमरा नं. 402 (ए)
आर्मजडेल बिल्डिंग, हिमाचल प्रदेश सचिवालय
शिमला-171002, मो. नं. 0 94180 33783

आलेख

भूमंडलीकरण एवं वैश्वीकरण के दौर में हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की संपर्क भाषा बने

◆ विष्णु भट्ट

आज भूमंडलीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण विश्व के सभी देश एक दूसरे के संपर्क में आते जा रहे हैं। इस संपर्क को और प्रगाढ़ बनाने के लिए हर देश एक ऐसी संपर्क भाषा अपनाए जिससे उनके संबंधों में मैत्री भाव के साथ-साथ प्रगाढ़ता हो। संयुक्त राष्ट्र संघ ही एक ऐसा मंच है जिससे हर देश एक दूसरे के संपर्क में आकर न केवल अपने देश की उन्नति में सहायक हो, बल्कि किसी भी तरह की समस्या का समाधान पा सके। यह जानना अति आवश्यक है कि संयुक्त राष्ट्र संघ किस तरह का संगठन है और इसकी स्थापना क्यों? कैसे? और कब हुई? यह जाने के लिए इतिहास के उन पन्नों को खंगालना पड़ेगा जब संयुक्त राष्ट्र संघ की आवश्यकता महसूस की गई।

संयुक्त राष्ट्र संघ का उद्भव और विकास

संयुक्त राष्ट्र संघ का उद्भव द्वितीय विश्व युद्ध के भयावह परिणामों के संदर्भ में हुआ था। इसकी आधारभूमि नाज़ी जर्मनी तथा उसके सहयोगी राष्ट्रों के विरोधी मित्र-राष्ट्रों ने तैयार की थी। इस संगठन की स्थापना के निर्णय पर पहुंचने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका तथा उसके प्रमुख सहयोगियों में विचार-विमर्श का एक लंबा क्रम चलता रहा।

3 सितंबर, 1939 ई. को आरंभ द्वितीय विश्व युद्ध में धुरी-राष्ट्रों- जर्मनी, इटली और जापान की प्रारंभिक सफलताओं के बाद मित्र-राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, सोवियत रूस, फ्रांस तथा चीन के समक्ष उन्हें निरंतर विफलताओं का मुंह देखना पड़ा। मित्र राष्ट्रों ने शत्रु का मुकाबला करने के लिए साथ ही एक नए अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना की संभावनाओं पर पारस्परिक विचार-विमर्श भी जारी रखा।

जून, 1941 ई. की 'लंदन घोषणा' में इंग्लैड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा दक्षिण अफ्रीका ने एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना का प्रस्ताव किया था। तत्पश्चात् 1941 ई. के 'एटलांटिक चार्टर' में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा ब्रिटेन ने विश्व शांति तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के सिद्धांतों को आकार दिया। अक्तूबर, 1943 ई. में सोवियत रूस ने भी दोनों राष्ट्रों के साथ विचार-विमर्श करके उद्देश्य प्राप्ति का सिलसिला आगे बढ़ाया। इसी प्रकार कई बार आपसी विचार-विमर्श के बाद सन् 1944 ई. में 'डम्बार्टन ओक्स सम्मेलन' में अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत रूस तथा चीन के प्रतिनिधियों द्वारा भावी संस्था की रूपरेखा तैयार की गई। यही रूपरेखा आगे चलकर संयुक्त राष्ट्र संघ का आधार बनी। सैन फ्रांसिस्को में जून, 1945 ई. को संसार की दो-तिहाई जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले 50 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने एक घोषणा-पत्र स्वीकार किया। इसी घोषणा-पत्र के आधार पर 24 अक्तूबर, 1945 ई. को एक नई अंतर्राष्ट्रीय संस्था औपचारिक रूप से अस्तित्व में आई। अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रेंकलीन रूज़वेल्ट के सुझाव पर इस संगठन का नामकरण 'संयुक्त राष्ट्र' किया गया। इसके महत्त्व तथा उपयोगिता से आकर्षित होकर इसकी सदस्य संख्या में वृद्धि होती गई, जो 1984 ई. में 159 हो गई। और अब करीब-करीब सभी स्वतंत्र देशों ने इसकी सदस्यता ग्रहण कर ली है।

'संयुक्त राष्ट्र संघ' का मुख्यालय न्यूयार्क में रखा गया। इसके प्रमुख अंग हैं - महासभा, सुरक्षा परिषद, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद, न्याय परिषद, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय एवं सचिवालय।

संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाएं हैं - इंग्लिश, फ्रैंच, चाइनीज़, रशियन, अरबी तथा स्पेनिश। इनमें से इंग्लिश तथा फ्रैंच कार्यकारी भाषाएं हैं। भारत 15 अगस्त, 1947 ई. को आजाद हुआ। तब संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का प्रतिनिधि अंग्रेजी भाषा में ही अपना वक्तव्य देता था।

15 अगस्त सन् 1947 ई. की स्वतंत्रता के बाद भारत का अपना संविधान बना जो 26 जनवरी, 1950 ई. से लागू किया गया। तब 14 सितंबर, 1949 ई. को 'हिंदी' को राजभाषा बनाने के लिए 'संविधान सभा' के निर्णय के पालन में संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत संघ की राजभाषा 'हिंदी' और लिपि 'देवनागरी' घोषित की गई। इसके साथ ही यह भी आश्वासन दिया गया कि 26 जनवरी, 1965 ई. से 'अंग्रेजी' का प्रयोग सरकारी क्षेत्र में समाप्त हो जाएगा। परंतु अंग्रेजी के व्यामोह से ग्रसित जन प्रतिनिधियों ने सुनियोजित तरीके से 'राजभाषा संशोधन विधेयक 1967' ई. पारित करके राजभाषा हिंदी की उन्नति में गतिरोध पैदा कर दिया। यद्यपि इससे पूर्व 6 बड़े राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में हिंदी के विकास में द्रुत गति प्रदान करने के लिए 'राजभाषा अधिनियम 1963' और उसके अंतर्गत 'राजभाषा अधिनियम-1976' बनाए गए। जिससे संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संपर्क-भाषा के रूप में विकसित होकर 'हिंदी' राष्ट्रभाषा के रूप में

सार्वदेशिक स्वरूप में स्थापित हो जाए। चूंकि यह सरकार की ही नहीं वरन् स्वतंत्र भारत के हर नागरिक की इच्छा थी कि लोकतंत्र की सफलता के लिए, राष्ट्र की उन्नति के लिए तथा देश की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अखंडता के लिए सर्वमान्य देशीय भाषा 'हिंदी' के अलावा कोई अन्य भाषा नहीं हो सकती। इस सार्वजनिक इच्छा की पूर्ति के लिए भारत सरकार ने केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों, केंद्र नियंत्रित प्रतिष्ठानों, सरकारी क्षेत्र के बैंकों आदि विभिन्न संस्थाओं तथा राष्ट्रीय निगमों और कंपनियों में जन संपर्क बिंदुओं व आंतरिक कामगाज में अंग्रेजी के साथ- साथ हिंदी का प्रयोग अनिवार्य कर दिया। इसी तरह भारत सरकार ने विदेशों में भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में कोई कमी नहीं आने दी। जिसके फलस्वरूप आज दुनिया के कोने-कोने में हिंदी भाषियों की वृद्धि होती चली जा रही है। यही नहीं, विदेशों में स्थित इलैक्ट्रौनिक एवं प्रिंट मीडिया भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी सक्रिय हैं। भारत में भी केंद्रीय सरकार के सभी प्रतिष्ठानों, मंत्रालयों, निगमों आदि के साथ सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन कार्यरत इलैक्ट्रौनिक मीडिया एवं प्रिंट मीडिया भी 'हिंदी' की सर्वांगीण उन्नति के लिए अधिक से अधिक प्रयत्नशील हैं। यहां का फिल्मोद्योग भी हिंदी फिल्मों और गीतों के माध्यम से हिंदी का भरपूर प्रचार-प्रसार कर रहा है।

भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में विश्व की जनसंख्या में भारत जैसा विशाल जनसंख्या वाला देश आज एक अहम बाजार बन गया है। इसलिए यहां बहुसंख्यक आबादी द्वारा बोली जाने वाली भाषा 'हिंदी' की भी अहमियत बढ़ गई है। इसीलिए आज विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों में जिनकी संख्या 160 से भी अधिक हो गई है, हिंदी के अध्ययन, पठन-पाठन और अनुसंधान की व्यवस्था है। विश्व के 45 से भी अधिक देशों में करोड़ों लोगों द्वारा हिंदी बोली और समझी जाने वाली भाषा बन गई है। इसमें निरंतर वृद्धि हो रही है।

यह कहा जाता है कि मैक्समूलर ने ही हिंदी और संस्कृत को जर्मनी के म्यूनिख विश्वविद्यालय में पढ़ाना आरंभ किए जाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यह सन 1823-1900 के मध्य में हुआ और ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में हिंदी और संस्कृत अध्यापन का कार्य भी मैक्समूलर ने ही शुरू करवाया। कैंब्रिज, पैरिस, बर्लिन, बुखारेस्ट, मास्को, कैलिफोर्निया, हवार्ड आदि विश्वविख्यात विश्वविद्यालयों में आज भी हिंदी पढ़ाई जा रही है।

हिंदी को विकसित करने और संपर्क भाषा के रूप में निरंतर विश्व संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थापित करने के प्रयासों के अंतर्गत अब तक दस विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं। पहला विश्व हिंदी सम्मेलन सन् 1975 ई. में नागपुर (भारत) में, फिर पोर्ट ऑफ स्पेन के त्रिनीडाड व टोबेगो में, लंदन व पारामारिबो में (सुरीनाम), सन् 2007 में संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयार्क में, नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन सितंबर 2012 में दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में आयोजित हुआ। और फिर अंतिम 10वां 2015 में विश्व हिंदी सम्मेलन मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में हुआ। अब तक जो विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुए हैं, उनमें हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की संपर्क भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए केवल प्रस्ताव ही पारित हुए लेकिन उन प्रस्तावों का क्या हुआ? किसी भी तरह की कोई हलचल किसी भी स्तर पर हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की संपर्क भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए नहीं दिखाई दी। विश्व के करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाने वाली 'हिंदी' अब भी संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना स्थान नहीं पा रही है।

यद्यपि विगत में जब संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के प्रतिनिधि के रूप में जनता सरकार के पूर्व विदेशी मंत्री के रूप में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपना भाषण हिंदी में दिया। उसके बाद दूसरी बार श्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने भी अपना भाषण हिंदी में दिया और हिंदी को गौरवशाली बनाया। किंतु बाद में फिर वही ढाक के तीन पात। अंग्रेजी के व्यामोह में बाद में गए प्रतिनिधियों ने अपना वक्तव्य 'अंग्रेजी' में देकर 'हिंदी' का अपमान किया।

वर्तमान में जब से एन.डी.ए. सरकार के प्रतिनिधि के रूप में प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रथम कार्यकाल में संयुक्त राष्ट्र संघ गए तो अपनी हिंदी को गौरवान्वित करते हुए अपना वक्तव्य 'हिंदी' में ही दिया। इनके अतिरिक्त प्रधान मंत्री जी के मंत्री भी जब भी विदेशी यात्रा पर गए, उन्होंने अधिक से अधिक 'हिंदी' में ही अपना भाषण दिया। इस संबंध में विदेश मंत्री श्रीमती स्व. सुषमा स्वराज का हिंदी प्रेम उल्लेख योग्य है। उन्होंने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में संपर्क भाषा बनाने के बारे में लोकसभा के 3 जनवरी, 2018 की बैठक में कहा, "हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा 400 करोड़ देकर भी बनाएंगे।" अर्थात् अब सरकार पूर्ण रूप से सक्रिय हो गई है। यू.एन. के नियमानुसार यू.एन. में आधिकारित भाषा के दर्जे के लिए सदस्य देशों को भुगतान करना होता है तथा दो तिहाई सदस्यों देशों का समर्थन चाहिए। अर्थात् वर्तमान में कुल 193 सदस्यों में से दो तिहाई यानी 129 देशें का भारत को समर्थन चाहिए। अतः इस भूमंडलीकरण एवं वैश्वीकरण के दौर में भारत सरकार 'हिंदी' को संयुक्त राष्ट्र संघ में संपर्क भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए प्रयत्नशील है। यह पूर्व विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के लोकसभा में दिए प्रश्नोत्तर काल के वक्तव्य से स्पष्ट हो रहा है जिसमें उन्होंने 400 करोड़ रुपये देकर भी हिंदी को यू.एन.ओ. की संपर्क भाषा बनाने की बात कही है।

अतः अब देखना यह है कि वर्तमान में मोदी-तीन सरकार के कार्यकाल में वह कौन सा शुभ दिन होगा जब संयुक्त राष्ट्र संघ 'हिंदी' को संपर्क भाषा के रूप में मान्यता देता है। इसके लिए प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के तीसरे कार्यकाल में युद्ध स्तर पर प्रयत्नशील होना होगा तभी 'हिंदी' यू.एन.ओ. की संपर्क भाषा के रूप में मान्य हो सकेगी। अगर ऐसा हो सका तो तभी हिंदी का मस्तक ऊंचा और ऊंचा होगा और हमारा हर वर्ष 'हिंदी' दिवस ' मनाने का सार्थक प्रयास हो सकेगा।

मं. नं. 1 म. गायत्री नगर, हिरनमगरी, से. 5, उदयपुर, राजस्थान, 313 002, मो 0 94614 03169

शोध लेख

राजभाषा हिंदी का व्यावहारिक पक्ष

◆ अंजना देवी

भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना का सशक्त माध्यम है। भाषा खासकर सीखी गई भाषा, जिसका पहला शब्द 'माँ' बोलना 'माँ' सिखाती है, हमारे समझने और सोचने की क्षमता तथा इच्छाशक्ति दोनों इस सीमा तक प्रभावित करती है, जिसकी हम पूरी तरह कल्पना भी नहीं कर सकते। किसी भी भाषा की नींव बचपन में ही रखी जाती है क्योंकि माँ ही बच्चों को पहला शब्द सिखाती है और जिस भाषा में वह संवाद करती है, उसी भाषा में बच्चे की बौद्धिक क्षमता विकसित होती है अर्थात् मनुष्य को सोचने समझने तथा सृजनशीलता की अभिव्यक्ति भी उस भाषा में प्रवीण होती है। जिस भाषा के माध्यम से हमारा पालन-पोषण हुआ, शुद्ध संस्कार दिए, शिक्षा हासिल करने का माध्यम दिया, ग्रामीण और शहरी वातावरण का तर्कसंगत परिचय दिया, सांस्कृतिक धरोहर एवं इतिहास जानने का अवसर तथा विभिन्न ज्ञान की पोथियां व ग्रन्थों को पढ़ने तथा अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया, क्या ऐसी भाषा को छोड़कर हम पर थोपी गई भाषा में हम जीवन-यापन कर सकते हैं?

भाषा : अर्थ

भाषा शब्द 'भाष्' धातु से निष्पन्न हुआ है। शास्त्रों में कहा गया है 'भाष् व्यक्ताम् वाचि' अर्थात् व्यक्त वाणी ही भाषा है। भाषा स्पष्ट और पूर्ण अभिव्यक्ति प्रकट करती है। भाषा का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पुराना मानव इतिहास। भाषा के लिए सामान्यतः यह कहा जाता है कि भाषा मनुष्य के विचार-विनिमय और अभिव्यक्ति का साधन है। ''भाषा शब्द का संबंध 'भाष' (बोलना) धातु से है अर्थात् 'भाषा' का शब्दार्थ है- जिसे बोला जाए। किन्तु मोटे तौर पर उन सभी साधनों को भाषा कहते है, जिनके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता है।''[1]

भाषा : परिभाषा

भाषा संस्कृति की वाहक होती है और संस्कृति उन मूल्यों को आधार प्रदान करती है जिसके सहारे हम दुनिया में अपनी जगह बनाते हैं। निःसंदेह किसी भी देश का प्रतिबिम्ब उस देश की संस्कृति एवं भाषा में समाहित होता है और हिन्दी तो कालान्तर से ही साधु-सन्तों, महापुरुषों, फकीरों, वेद-पुराणों, आध्यात्मिक विद्वानों, धार्मिक गुरुओं, अन्य साधकों और जन-सामान्य के साथ-साथ पर्यटकों आदि के मध्य वैचारिक आदान-प्रदान का प्रमुख माध्यम रही है। भाषा की परिभाषा निम्न प्रकार से हैं- **''भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है व्यक्ति मन और सम्पूर्ण सामाजिक जीवन अपने पूरे राग-रंग, रीति-रिवाज, परिवेश, सरोकार, सभ्यता एवं संस्कृति के साथ भाषा में ही मुखर होती है इसलिए भाषा व्यक्ति के साथ-साथ पूरे समाज की पहचान तथा धरोहर है।''[2]** ''विभिन्न अर्थों में संकेतित शब्द समूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं।''[3] अतः इस प्रकार भाषा यादृच्छिक वाक् प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसे मुख द्वारा उच्चारित किया जाता है तथा कानों से सुना जाता है और जिसकी सहायता से मानव समुदाय परस्पर सम्पर्क और सहयोग करता है। उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मुख से उच्चरित ऐसे परम्परागत सार्थक एवं व्यक्त ध्वनि संकेतों की समष्टि ही भाषा है जिनकी सहायता से हम आपस में अपने विचार एवं भावों का आदान-प्रदान करते हैं।

भाषा के विविध रूप

भाषा का सृजनात्मक आचरण के सामानन्तर जीवन के विभिन्न व्यवहारों के अनुरूप भाषिक प्रयोजनों की तलाश आज के दौर की आवश्यकता है भाषा की पहचान केवल यही नहीं है कि उसमें कविताओं, कहानियों और उपन्यासों का सृजन कितनी प्रवीणता के साथ जुड़ा है, बल्कि भाषा की व्यापक सम्प्रेषणीयता का एक अनिवार्य प्रतिफल यह भी है कि उसमें सामाजिक और नए प्रयोजनों को साकार करने की कितनी संभावना है। संसार भर की भाषाओं में यह प्रयोजनीयता धीरे-धीरे विकसित हुई है और रोजी रोटी का माध्यम बनने की विशिष्टताओं के साथ भाषा का नया आयाम सामने आया, जिसको वर्गभाषा, तकनीकी भाषा, साहित्यिक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा, बोलचाल की भाषा और

मानक भाषा आदि नामों से व्याख्यायित किया गया हैं।

बोलचाल की भाषा

बोलचाल की भाषा को समझने के लिए बोली (Dialect) को समझना जरूरी है। बोली उन सभी लोगों की बोलचाल की भाषा का मिश्रित रूप है जिनकी भाषा में पारस्परिक भेद को अनुभव नहीं किया जाता। विश्व में जब किसी मानव समूह का महत्त्व किसी भी कारण बढ़ जाता है तो उसकी बोलचाल की बोली भाषा कही जाने लगती है, अन्यथा वह बोली ही रहती है अतः यह स्पष्ट है कि भाषा की अपेक्षा बोली का क्षेत्र उसके बोलने वालों की संख्या और उसका महत्त्व कम होता है।

मानक भाषा

भाषा के स्थिर तथा सुनिश्चित रूप को मानक या परिनिष्ठित भाषा कहा जाता है। भाषा विज्ञान कोश के अनुसार किसी भाषा की उस विभाषा को परिनिष्ठित भाषा कहते है मानक भाषा शिक्षित वर्ग की शिक्षा, पत्राचार एवं व्यवहार की भाषा होती है। इसके व्याकरण तथा उच्चारण की प्रक्रिया लगभग निश्चित होती है। मानक भाषा को टकसाली भाषा भी कहते हैं। वस्तुतः मानक भाषा एक प्रकार से सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक होती है। उसका संबंध भाषा की संरचना से न होकर सामाजिक स्वी ति से होता है। मानक भाषा को इसी रूप में भी समझा जा सकता है कि समाज में एक वर्ग मानक होता है जो अपेक्षा त अधिक महत्त्वपूर्ण होता है और समाज में उसी का बोलना, लिखना, उसी का खाना-पीना, उसी के रीति-रिवाज अनुकरणीय माने जाते हैं। अतः मानक भाषा मूलतः उसी वर्ग की भाषा होती है।

सम्पर्क भाषा

अनेक भाषाओं के अस्तित्व के बावजूद जिस विशिष्ट भाषा के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति, राज्य-राज्य तथा देश-विदेश के बीच सम्पर्क स्थापित किया जाता है उसे सम्पर्क भाषा कहते हैं। एक भाषा परिपूरक और सम्पर्क भाषा दोनों ही हो सकती है। भारत में आज सम्पर्क भाषा के तौर पर हिन्दी प्रतिष्ठित होती जा रही है जबकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित हो गई है।

राजभाषा

जिस भाषा में सरकार के कार्यों का निष्पादन होता है उसे राजभाषा कहते हैं। कुछ लोग राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अन्तर नहीं करते और दोनों को सामानार्थी मानते हैं लेकिन दोनों के अर्थ भिन्न-भिन्न है। राष्ट्रभाषा सारे राष्ट्र के लोगों की सम्पर्क भाषा होती है जबकि राजभाषा केवल सरकार के कामकाज की भाषा है भारत के संविधान के अनुसार हिन्दी संघ सरकार की राजभाषा है राज्य सरकार की अपनी-अपनी राज्य भाषाएं है। राजभाषा जनता और सरकार के बीच एक सेतू का कार्य करती है। अतः किसी भी राष्ट्र की उसकी अपनी स्थानीय राजभाषा उसके लिए राष्ट्रीय गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक होती है। विश्व के अधिकांश राष्ट्रों की अपनी स्थानीय भाषाएं ही राजभाषा है।

राष्ट्रभाषा

देश के विभिन्न भाषा भाषियों में पारस्परिक विचार-विनिमय की भाषा को राष्ट्र भाषा कहते हैं। राष्ट्र भाषा को देश के अधिकतर नागरिक समझते है, पढ़ते है या बोलते हैं। किसी भी देश की राष्ट्रभाषा उस देश के नागरिकों के लिए गौरव, एकता, अखण्डता और अस्मिता का प्रतीक होती है। एक भाषा कई देशों की राष्ट्रभाषा भी हो सकती है। जैसे- अंग्रेजी आज अमेरिका, इग्लैंड तथा कनाडा इत्यादि कई देशों की राष्ट्रभाषा है। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा तो नहीं दिया गया है, लेकिन इसकी व्यापकता को देखते हुए इसको राष्ट्रभाषा कहना उचित है। दूसरे शब्दों में राजभाषा के रूप में हिन्दी, अंग्रेजी की तरह न केवल प्रशासनिक प्रयोजनों की भाषा है, बल्कि उसकी भूमिका राष्ट्रभाषा के रूप में भी है यह भाषा हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान भी है। गांधी के अनुसार, किसी देश की राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो सरकारी कर्मचारियों के लिए सहज और सुगम हैय जिसको बोलने वाले बहुसंख्यक हो और जो पूरे देश के लिए सहज रूप में उपलब्ध हो। उनके अनुसार भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के निर्धारित अभिलक्षणों से युक्त है। उपर्युक्त सभी भाषाएं एक-दूसरे की पूरक है इसलिए यह प्रश्न निरर्थक है कि राजभाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा आदि में से कौन सर्वाधिक महत्त्व की है, जरूरत है हिन्दी को अधिक व्यवहार में लाने की।

अंतर्राष्ट्रीय भाषा

विभिन्न राष्ट्रों के बीच संपर्क के लिए जिस भाषा का प्रयोग होता है उसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा कहा जाता है। आज अंग्रेजी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की भी भाषा है। इससे स्पष्ट है कि एक भाषा विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होती है। जो भाषा पहले बोली के रूप में प्रयुक्त होती है वह अधिक व्यक्तियों द्वारा व्यवहार में लाए जाने के बाद विभाषा बन जाती है। व्याकरण के नियमों में बंधकर, शिक्षित लोगों द्वारा प्रयुक्त होने पर यह परिनिष्ठित भाषा कहलाती है। जब साहित्यकार इसका प्रयोग करते हैं तो वह साहित्यिक भाषा बन जाती है जब यह भाषा सरकार के कामकाज में प्रयोग होती है तो वह राजभाषा बन जाती है। जो सारे राष्ट्र में संपर्क की भाषा बनती है वही राष्ट्रभाषा कहलाती है और जब राष्ट्रों के बीच संपर्क का माध्यम बनती है तो वह अंतर्राष्ट्रीय भाषा कहलाती है।

राजभाषा हिन्दी : उद्भव एवं विकास

राजभाषा वह भाषा है जिसके माध्यम से राज-काज चलाया जाता है अर्थात् इसका मतलब यह हुआ की राजभाषा प्रशासनिक माध्यम की भाषा हुई, साहित्यिक भाषा की अपेक्षा इससे ज्यादा विस्तार होगा। वस्तुतः राजभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जो

राज-काज की भाषा, शासनतंत्र की भाषा हो और जिसके माध्यम से प्रशासन के समस्त कार्य किए जा सके। 15 अगस्त, 1947 को जब देश आजाद हुआ तो संविधान सभा द्वारा इस बात पर भी चिंतन किया गया कि देश का शासन कैसे चलाया जाना है तथा स्वभाविक रूप से किस भाषा में देश का शासन एवं प्रशासन चलाया जाए। भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए विषय गम्भीर था। **''संविधान सभा की नियम निर्माण समिति ने पहले ही डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में यह निर्णय ले लिया था कि सभा की कामकाज की भाषा हिन्दुस्तानी या अंग्रेजी होगी, पर कोई भी सदस्य अनुमति से सदन में अपनी मातृभाषा में भाषण दे सकेगा। दिनांक 14 जुलाई, 1947 को संविधान सभा के चौथे सत्र के दूसरे दिन ही यह संशोधन प्रस्तुत किया गया कि ''हिन्दुस्तानी'' के स्थान पर ''हिन्दी'' शब्द रखा जाए। संविधान सभा और कांग्रेस पार्टी में इस विषय पर विचार-विमर्श प्रारंभ हुआ। मतदान में हिन्दी के पक्ष में 63 तथा विपक्ष में 18 वोट मिल गए।''[4]** चर्चा परिचर्चा के बाद यह तय किया गया कि ''संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के प्रशासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।''[5]

अतः 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(प) के अनुसार हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। स्वतंत्र भारत में हिन्दी भाषा का सही रूप अपनाया और विकसित किया गया। अतः ''26 जनवरी, 1950 से संविधान देश में लागू हुआ और इतिहास में पहली बार हिन्दी को राष्ट्रीय धरातल पर राजभाषा के रूप मे संवैधानिक मान्यता प्राप्त हुई।''[6]

राजभाषा हिन्दी : अर्थ एवं परिभाषा

राजभाषा एक पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है- 'सरकारी राजकाज के लिए प्रयुक्त भाषा'। हिन्दी में राजभाषा शब्द अंग्रेजी के ꣳिविपबपंस संदहनंहमश् के प्रायः के रूप में प्रयुक्त हो रहा है। इस शब्द का प्रयोग कानूनी तौर पर स्वतंत्र भारत के संविधान में सर्वप्रथम किया गया। भारत की स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता की रक्षा के जो अनेक साधन है, उनमें राजभाषा की स्वीकृति प्रशासन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिस भाषा के द्वारा केन्द्र प्रशासन संबंधी कार्यभार संभाले और संचालन करे, वही राजभाषा है। आज लोकतंत्रात्मक- समाजवादी व्यवस्था पर आधारित स्वतंत्र शासन का युग है, जहां सरकार, विधानमण्डल और प्रशासन के सेवामात्र है। एक राजभाषा के द्वारा ही केन्द्र सरकार प्रशासन का कार्य कर समस्त जनता पर व्यापक प्रभाव डाल सकती है।

भारत का संविधान, अध्याय (17), अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी होगी। यहां संघ की भाषा से तात्पर्य विधानांग, कार्यांग, न्यायांग आदि तीन प्रमुख अंगों के कार्यकलाप में प्रयुक्त भाषा से है।

''किसी प्रदेश की राज्य सरकार के द्वारा उस राज्य के अंतर्गत प्रशासनिक कार्यों को संपन्न करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे राजभाषा कहते हैं।''[7]

''जिस भाषा में सरकार के कार्यों का निष्पादन होता है, उसे राजभाषा कहते हैं।''[8]

''किसी भी प्रकार की सरकार के विधानांग, कार्यांग के कार्यकलाप के लिए माध्यम के रूप में प्रयुक्त संवैधानिक मान्यता प्राप्त भाषा ही राजभाषा कहलाती है।''[9]

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि सरकारी कामकाज में अर्थात् कार्यालयी पत्राचार, प्रशासनिक कार्यों, आदेशों, टिप्पणी आदि कार्यों में हिन्दी भाषा के प्रयोग की बात भारतीय संविधान में अंकित है। इस आधार पर हमारी राजभाषा अथवा कार्यालयी भाषा हिन्दी है। अतः हम कह सकते हैं कि कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप हिन्दी की अन्य प्रयुक्तियों से सर्वथा भिन्न है। कार्यालयी हिन्दी में निश्चित अर्थ वाले और आम प्रचलित शब्दों का प्रयोग ही अभीष्ट है। इसके साथ-साथ इसमें सरलता होनी चाहिए ताकि वह हर क्षेत्र और हर स्तर के व्यक्ति को आसानी से समझ में आ सके।

राजभाषा हिन्दी : संवैधानिक पक्ष

राजतंत्र के समय सरकार की व्यवस्था राजाज्ञा के अनुसार चलती थी। आज विश्व के अधिकांश राष्ट्रों में लोकतंत्र है। प्रजातंत्र या लोकतंत्र में सरकार के विभिन्न अंगों- कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका के कार्यों एवं शक्तियों का विभाजन करने, उनके कार्यों एवं शक्तियों में संतुलन स्थापित करने, नागरिकों के कर्त्तव्यों एवं अधिकारों की व्याख्या एवं उन्हें सुरक्षित रखने इत्यादि के लिए लिखित या अलिखित संविधान है। वास्तव में संविधान लोकतंत्र का एक ऐसा पवित्र ग्रन्थ है जो प्रत्येक नागरिक के लिए पूजनीय है। प्रजातंत्र-प्रणाली में संविधान रीढ़ की हड्डी के समान है।

भारत में अनेक धर्मों, जातियों एवं भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते हैं। सबके हितों की रक्षा के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लिखित संविधान अपनाया गया है। संविधान की रचना करते समय अन्य व्यवस्थाओं की तरह संविधान सभा ने राजभाषा के मुद्दे पर भी काफी चर्चा के बाद इससे संबंधित प्रावधान किए है। संविधान के अनुच्छेद 343 से लेकर 351 तक संघ की राजभाषा, प्रादेशिक भाषा तथा भाषाओं के विकास आदि के बारे में प्रावधान किए गए है। संविधान के अनुच्छेद 120 में संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा तथा अनुच्छेद 210 में विधानमण्डलों में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं के बारे में प्रावधान किए गए हैं। संविधान की 8वीं अनुसूची में भारत की प्रमुख भाषाओं का उल्लेख किया गया है। संविधान में अलग-अलग विषयों के संबंध में भाषा संबंधी जो प्रावधान किए गए हैं वे इस प्रकार हैं-

''अनुच्छेद 120. संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा - अध्याय 1--संघ की भाषा

1. भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ-भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

2. जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो ''या अंग्रेजी में'' शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो।

अनुच्छेद 210 विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा -

1. भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा।

परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा।

2. जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो "या अंग्रेजी में" शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो

परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले "पंद्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "पच्चीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हों ।परंतु यह और कि अरूणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले "पंद्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "चालीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हों ।

अनुच्छेद 343. संघ की राजभाषा

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

2. खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था। परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

3. इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा

ंण् अंग्रेजी भाषा का, या

इण् अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 344.

राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति--

1. राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

2. आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को--

ंण् संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधि ाकाधिक प्रयोग,

इण् संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों,

बण् अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,

कण् संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,

मण् संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।

3. खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस तिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

4. एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

5. समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1) के अध

ीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

6. अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा।

अनुच्छेद 345. राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अध्याय 2 - प्रादेशिक भाषाएं

अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगाः

परंतु जब तक राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

अनुच्छेद 346.

एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा--

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी

परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 347. किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध--

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

2.3.2.8 अनुच्छेद 348.

अध्याय 3 उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा

उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा--

1. इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक--

ंण् उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी,

इण् यपद्ध संसद् के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विध ाान-मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के,

यपपद्ध संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के,और

यपपपद्ध इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अध ीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधि त पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

2. खंड(1) के उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधि त कर सकेगाः परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।

3. खंड (1)के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने, उस विधान-मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा यपअद्ध में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधि त पाठ समझा जाएगा।

अनुच्छेद 349. भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया--

इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुरःस्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुरःस्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् ही देगा, अन्यथा नहीं।

अनुच्छेद 350. व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में

प्रयोग की जाने वाली भाषा--

अध्याय 4 विशेष निदेश

प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

अनुच्छेद 350 क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं--

प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 350 ख. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी--

1. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।

2. विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे,

राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद् के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश-- संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।''[10]

निष्कर्ष

अतः यह आवश्यक है कि यदि अभी किन्हीं तकनीकी कारणों से विभागों के कार्यों की प्रोग्रेमिंग हिन्दी में संभव न भी हो रही हो तो भी कंप्यूटर खरीदते समय इस बात की अनिवार्यता होनी चाहिए कि सभी कंप्यूटरों पर हिन्दी में कार्य करने की सुविधा हो और जब कर्मचारियों को कंप्यूटर पर कार्य करने का मूल प्रशिक्षण दिया जाए तो उस समय ही उसे कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने का प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए। कर्मचारियों, अधिकारियों की भर्ती के समय यह शर्त होनी चाहिए कि कंप्यूटर पर अंग्रेजी में कार्य की जानकारी के साथ-साथ हिन्दी में भी टाइप करने की जानकारी होनी चाहिए। ऐसा करने से कंप्यूटरीकरण के कारण कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग के लिए प्रस्तुत हुई चुनौती का आसानी से मुकाबला किया जा सकता है।

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
समरहिल, शिमला-171005, मो. 0 8626 903146

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिन्दी भाषा (नई दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, 2007), पृ. 15
- डा. श्री नारायण सिंह, राजभाषा भारती (वर्ष-39, अंक-149), (नई दिल्ली : राजभाषा विभाग एन.डी.सी.सी. भवन-2, अक्तूबर-दिसम्बर, 2016), पृ. 16
- आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, भारतीय भाषा विज्ञान (वाराणसी : चौखम्भा विद्याभवन, 1962), पृ. 12
- हरिबाबू कंसल, राजभाषा संघर्षों के बीच, (नई दिल्ली : रीगल बुक डिपो, 1977), पृ. 20
- प्रशांत कुमार मिश्र, हिन्दी के प्रयोग संबंधी आदेशों का संकलन, (नई दिल्ली : राजभाषा विभाग, 2005), पृ. 1
- विनोद गोदरे, प्रयोजमनमूलक हिन्दी, (नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2016), पृ. 71
- किरण प्रभा, राजभाषा हिन्दी विकास एवं महत्त्व (नई दिल्ली : अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, अंसारी रोड़, दरियागंज, 2017), पृ. 9
- डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, राजभाषा हिन्दी कल, आज और कल (हरियाणा : आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2012), पृ. 17
- डॉ. दंगल झाल्टे, प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग, (नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2003), पृ. 58
- www.rajbhasha.nic.in

पर्यटन

चलिए, चलते हैं देवीदहड़

◆ पवन चौहान

दुनिया में ऐसी बहुत सी जगहें हैं जो रोजाना पर्यटकों से गुलजार रहती हैं। ये स्थल वे हैं जो विश्व पर्यटन मानचित्र में अपना स्थान बना चुके हैं। परंतु ऐसे ही सुंदर पर्यटन स्थलों का किस्सा यहीं पर ही नहीं रुक जाता है। इन स्थलों की फेहरिस्त तब और लंबी हो जाती है जब हम उन स्थलों से रु-ब-रु होते हैं जहाँ अभी दुनिया की नजर ढंग से पहुंच ही नहीं पाई है। ऐसे ही स्थानों में से एक है हिमाचल प्रदेश का देवीदहड़, जिसकी अनछुई खूबसूरती को देखकर पर्यटकों के मुँह से बस 'वाह-वाह' के शब्द ही निकलते हैं।

खजियार जैसा देवीदहड़ : देवीदहड़ का नैसर्गिक सौंदर्य लोगों को इस कदर आकर्षित करता है कि एक बार यहाँ पहुँचने वाला बार-बार यहाँ आने की तमन्ना दिल में पाल लेता है। जिला मण्डी की ज्यूणी घाटी में स्थित यह छोटा-सा पर्यटक स्थल चम्बा के खजियार का भौगोलिक परिवेश याद दिला देता है। छोटी-सी ढलान पर बसा यह स्थल समुद्रतल से लगभग 7800 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। इसे 'मिनी खजियार' की संज्ञा से भी नवाजा जाता है।

ज्यूणी घाटी : देवीदहड़ पहुँचने के लिए हमें बग्गी नामक जगह से होते हुए चैलचौक तक पहुँचना होता है। चैलचौक से थोड़ा-सा आगे गणेश चौक से सड़क दो हिस्सों में बँट जाती है। एक रास्ता जंजैहली घाटी तथा दूसरा देवीदहड़ के लिए मुड़ जाता है। जंजैहली घाटी के सौंदर्य के तो क्या कहने! जैसे धरती पर स्वर्ग। परंतु अभी हमें देवीदहड़ के रास्ते को चुनना है। देवीदहड़ के इस रास्ते पर हमें जिस प्रकार के प्राकृतिक सौंदर्य का दीदार होता है वह हमें इस इलाके का कायल बना देता है। देवीदहड़ तक पहुँचने के लिए हमें कोट, शाला, जाछ, तुन्ना, धंग्यारा, जहल छोटे-बड़े गॉव के बीच से होकर गुजरना होता है। इन सभी गॉव की खूबसूरती, यहाँ का रहन-सहन, यहाँ की दिनचर्या हमें शहर के शोर-शराबे से कोसों दूर एक शांत इलाके की सैर करवाती है जो उम्र भर की सारी थकानों को जैसे छुमंतर कर देती है। यह सारा इलाका ज्यूणी घाटी में बसा है। इस पूरे इलाके से ज्यूणी खड्ड बहती है जिसके कारण इस पूरे इलाके को 'ज्यूणी घाटी' के नाम से संबोधित किया जाता है। यह पूरी घाटी बहुत ही उपजाऊ है। सीढ़ीनुमा खेत यहाँ के सौंदर्य में चार चाँद लगाते हैं। इन खेतों में जहाँ हर बर्ष गेहूँ, मक्की, धान आदि की परंपरागत फसलें उगाई जाती हैं वहीं अब इन खेतों में लोग बहुतायत मात्रा में नकदी फसल भी उगाने लगे हैं। आलू और मटर की फसल के लिए यह इलाका खूब जाना जाता है। यही नहीं इस पूरे इलाके में हमें ढेरों जड़ी-बूटियाँ मिलती हैं। बस, इनकी पहचान करने वाला होना चाहिए।

हर जगह खूबसूरती : चैलचौक से 17 कि0मी0 दूर बसे देवीदहड़ तक पहुँचते-पहुँचते हम प्रकृति की बेइन्तहा खूबसूरती को आत्मसात करते चले जाते हैं। इस

दिलचस्प कथा

मैदान के ऊपर वाले हिस्से में हमें दर्शन होते हैं माता मुंडासनी के खूबसूरत मंदिर के। माता का यह मंदिर धार्मिक पर्यटन का खास आर्कषण है। मुंड नामक राक्षस को मारने के कारण देवी को माता मुंडासनी के नाम से पुकारा जाता है। यूं माता दुर्गा का रुप है। मंदिर के साथ बने इस ढलानदार मैदान के बनने के पीछे की एक दिलचस्प कथा का जिक्र यहां के लोग कुछ इस तरह से करते हैं- भीम ने सत्तु का लड्डू पाने के लिए दौड़ती राक्षसी को मारने के लिए अपनी गद्दा से जोरदार वार किया। गद्दा के वार से संभलती राक्षसी के हाथ का पंजा लगने के कारण इस बड़े से ढलानदार मैदान का निर्माण हुआ है। यहां थोड़ा-सा नीचे जहल की ओर जाने पर एक बड़ा गोल पत्थर भी है जिसके बारे में बताया जाता है कि यह वही सत्तु वाला लड्डू है जिसको राक्षसी ने श्राप देकर पत्थर का बना डाला था।

गांव देवीदहड़

रास्ते पर कहीं-कहीं बने लकड़ी के छोटे-छोटे पुल बहुत ही आकर्षित करते हैं। पहाड़ी से प्रस्फुटित छोटी-छोटी धाराएं, देवदार के जंगल, लहलहाते खेत, गॉव का जनजीवन हमें असीम आत्मसंतुष्टि से भर देता है। सड़क मार्ग बेशक कई जगहों पर कच्चा भी है लेकिन इस प्राकृतिक सौंदर्य का सम्मोहन हमें इस कच्चे रास्ते ही परेशानियों को भुलाता चला जाता है। जहल गॉव के उपरांत जब हम देवीदहड़ की सीमा पर पहुॅचते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे हम किसी काल्पनिक दुनिया में आ गए हों। ढलानदार सुंदर मैदान जो चारों ओर से देवदार के वृक्षों से घिरा है चम्बा के खजियार की खूबसूरती को ताजा कर देता है।

बर्फ के दौरान गांव के सीढ़ीनुमा खेत का नयनाभिराम दृश्य

खास आकर्षण : माता मुंडासनी के दाहिनी ओर एक अन्य आकर्षण आपकी बाट जोहता नजर आता है। यह आकर्षण है देवदार का वह विशालकाय पेड़ जिसके एक तने पर चार अन्य पेड़नुमा बड़े-बड़े तने उगे हुए हैं। इस पेड़ की संरचना सबको अचरज में डाल देती है। इसका धार्मिक महत्व भी है। जब वर्षा के देवता कमरुनाग कभी रुठ जाते हैं तो वे कमरुघाटी से आकर इसी पेड़ के नीचे विराजते हैं। फिर माता मुंडासनी उनको मना कर वापिस अपने स्थान पर भेजती है। यह धार्मिक परंपरा का एक खास हिस्सा है। ज्ञात रहे माता मुंडासनी कमरुनाग की बड़ी बहन है।11 से 15 अगस्त तक यहॉ हर वर्ष मेला लगता है जिसमें आस-पास के इलाकों के देवी-देवता और खूब सारी संख्या में आस-पास के लोग पहुॅचते हैं।

रोमांच को जीने वालों के लिए : रोमांच के नए फलसफों को लिखने वालों के लिए यह स्थल एक तोहफा है। यह स्थान ट्रैकिंग के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। इसके मुख्यतः दो ट्रैकिंग रुट हैं। एक, जहल-देवीदहड़-शिकारी देवी तथा दूसरा जाछ- जहल-कमरुनाग झील। रोमांच को जीने वालों के लिए ये दोनों रुट बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। पिछले कुछ वर्षों से देवीदहड़ एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल के रुप में उभरा है। इसकी सुंदरता को निहारने आस-पास के इलाके के लोग ही नहीं अपितु देशी-विदेशी पर्यटक भी अब खूब आने लगे हैं। सभी इस इलाके की खूबसूरती को जहॉ अपने कैमरों में कैद करते हैं वहीं इसके सौंदर्य को अपने मानसपटल में एक सुनहरी याद के रुप में बसा कर ले जाते हैं। **अन्य आकर्षण :** देवीदहड़ के नजदीक जो अन्य स्थान घूमने के लिए आकर्षित करते हैं, वे हैं शिकारी देवी पर्वत, कमरुनाग झील, संपूर्ण जंजैहली घाटी, सरोआ माता मंदिर और धुमादेवी इलाके का सौंदर्य। देवीदहड़ तक पहुॅचने वाले पर्यटकों को इन स्थानों का अवश्य ही दीदार करना चाहिए। तो फिर देर किस बात की है। आइए, चलते हैं देवीदहड़ की अनछुई खूबसूरती को जीने अपने परिवार, दोस्तों के संग।

सही समय : अप्रैल से अक्तूबर तक का समय देवीदहड़ आने के लिए बहुत बढ़िया है। यह ठंडा इलाका है और सर्दियों में यह बर्फ से ढक जाता है। **कहॉ ठहरें :** मुंडासनी माता मंदिर के साथ ही वन विभाग का रेस्ट हाऊस है। साथ ही यहॉ निजी गैस्ट हाऊस और रेस्टोरैंट में भी हैं जहॉ पर्यटक आराम से ठहर सकते हैं।

कैसे पहुॅचें : जिला मुख्यालय मण्डी से सड़क मार्ग द्वारा इस रास्ते की दूरी लगभग 56 कि0मी0 तथा सुन्दरनगर से 44 कि0मी0 है। कुल्लू से आने वालों के लिए वाया पण्डोह का रास्ता भी सूट करता है। नजदीक का रेलवे स्टेशन जोगिन्द्रनगर (मण्डी) तथा हवाई अड्डा भुंतर (कुल्लू) है।

गांव व डा. महादेव, तहसील सुन्दरनगर, जिला मण्डी
हिमाचल प्रदेश-175018, मो. : 098054 02242

गांव का एक दृश्य

एक अन्य दृश्य में गांव देवीदहड़

आस्था

पौंग में जलमग्न 'बाथू की लड़ी के मंदिर'

◆ कपिल मेहरा

हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा की पौंग झील के बीच स्थापित एक ऐसा शिव मंदिर है जो साल के 8 महीने जलमग्न रहता है। पानी उतरने के बाद तीन-चार महीने ही इस मंदिर में लोगों की आवाजाही होती है। यह आठ मंदिरों का एक ऐसा समूह है, जो बाथू के पत्थरों से बनाए गए हैं, इसलिए इसे बाथू की लड़ी कहा जाता है। मौजूदा समय में 6 मंदिर ही पूर्ण रूप से नजर आते हैं। मंदिर स्थल पर ज्वाली से होकर बाया गुगलाड़ा या धमेटा के सिहाल व पौंग डैम के रास्ते पहुंचा जा सकता है।

बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण द्वापर युग में पांडवों ने किया था। उन्होंने इस स्थान पर पहुंचकर बाथू के पत्थरों से आठ मंदिर बनाए, जिनमें शिव मंदिर मुख्य है। एक दंत कथा के अनुसार इस स्थान पर पांडवों ने स्वर्ग के लिए पौढ़ियों का निर्माण करना चाहा था। यह कार्य पांडवों ने मात्र एक रात में पूरा करना था और भगवान श्री कृष्ण की लीला के अनुसार एक रात छह महीनों के बराबर थी। पांडवों को जब सीढ़ियों का निर्माण करते मात्र अढ़ाई सीढ़ियां शेष रह गईं तो एक रात का समय इतना लंबा होने पर नजदीकी गांव की किसी महिला ने दीपक जला दिया। पांडवों ने उस दीपक की रोशनी को देख यह समझ लिया कि सूर्य उदय होने वाला है। इस कारण कार्य में विघ्न पड़ने से पांडवों ने यह कार्य अधूरा छोड़ दिया। हालांकि, यह लीला भी भगवान श्रीकृष्ण द्वारा ही रची गई थी। इसके बाद पांडवों द्वारा बनाई गई पौढ़ियां नीचे गिर गईं और कुछ पौढ़ियां ही शेष रह गईं। इसके बाद पांडव यहां से चले गए। जब मंदिर आठ महीने तक जलमग्न रहता है तो उस दौरान इस मंदिर का ऊपरी हिस्सा ही दिखाई देता है। इस समय किश्ती या नाव के माध्यम से मंदिर स्थल तक पहुंचा जा सकता है। मौजूदा समय में इन मंदिरों की माला में छह मंदिर मौजूद हैं, इनमें शेषनाग व विष्णु भगवान की मूर्तियां भी स्थापित है। मंदिरों की श्रृंखला के बीच शिव मंदिर मौजूद है, जिसमें एक पवित्र शिवलिंग है और इसके साथ ही भगवान गणेश और देवी काली की भी तस्वीर बनी हुई है। मंदिर की एक खास बात यह भी है कि इस मंदिर का निर्माण कुछ इस तरह से किया गया है कि सूर्य अस्त होने से पहले सूर्य की किरणें बाथू मंदिर में बिराजमान महादेव यानि शिवलिंग के चरण छूती हैं।

मनमोहक है नजारा : मंदिर के आसपास का नजारा बेहद मनमोहक है। खासकर जब यह जलमग्न हो जाता है तो पौंग झील के बीच इसकी छवि सबको अपनी ओर आकर्षित करती है। बताया

जाता है कि कई वर्षों से हर साल आठ महीने तक पानी में रहने के बावजूद मंदिर की इमारत आज भी ज्यों की त्यों नजर आती है। इसी कारण पर्यटक एवं शिव भक्तों का आवागमन इसे देखने व पूजा-अर्चना के लिए होता रहता है। महाशिवरात्रि के दिन यहां काफी रौनक रहती है, क्योंकि अक्सर महाशिवरात्रि फरवरी के अंत या मार्च महीने के आरंभ में ही आती है। इस दौरान पौंग झील का पानी बाथू की लड़ी से उतर चुका होता है और यहां पर लोगों की चहल-पहल शुरू हो जाती है। महाशिवरात्रि के दौरान आसपास के गांवों के अलावा दूरदराज क्षेत्रों के लोग भी यहां शिव पूजन के लिए आते हैं। मंदिर के आसपास कुछ छोटे टापू भी बने हुए हैं जिन्हें रेंसर के नाम से जाना जाता है। इसके आसपास वन विभाग के कुछ रिजॉर्ट्स भी हैं, जहां पर पर्यटकों के ठहरने की भी व्यवस्था है।

मंदिर में फसल कटाई के बाद चढ़ता था अनाज : अगर हम पौंग बांध बनने से पूर्व 1970 से पहले के इस क्षेत्र के इतिहास की बात करें तो इस इलाके के आसपास कई गांव बसते थे। काफी कोशिश के बाद हमें एक ऐसे बुजुर्ग मिले, जो अब मूल रूप से धमेटा निवासी हैं और 1970 से पहले पौंग डैम क्षेत्र में रहते थे। रामकृष्ण नाम के बुजुर्ग के घर जाकर हमने उनसे बाथू की लड़ी और इससे जुड़े इतिहास की जानकारी जुटाई। उनका कहना है कि पौंग डैम बनने से पहले यह क्षेत्र काफी हरा-भरा था और बाथू की लड़ी के मंदिर चारदीवारी से घिरे हुए थे। इसके एक छोर पर एक बड़ा गेट हुआ करता था और गेट के पास एक विशालकाय बट वृक्ष भी था, जिसपर झूले डालकर लोग त्योहार मनाते थे। खासकर जन्माष्टमी और महाशिवरात्रि के अवसर पर लोग यहां आकर पूजा-अर्चना करते थे और एक-दूसरे को प्रसाद बांटकर त्योहार मनाया करते थे। मंदिर के अंदर पूजा-अर्चना के लिए महंत अर्थात पुजारी बैठा करते थे और लोग मंदिर में कनक अर्थात गेहूं व अन्य अनाज चढ़ाते थे। कहा जाता है कि मंदिर में किसी जमाने में चांदी की परत चढ़ी मोटी गेहूं के दाने भी रखे हुए होते थे, जिनके सामने लोग माथा टेकते थे। बताया जाता है कि उस समय इस इलाके में गेहूं, मक्की, उड़द, धान, चना, मसुर, सरसों व सब्जियों की भरपूर पैदावार हुआ करती थी। लोग हर सीजन की फसल कटाई के बाद मंदिर में अनाज चढ़ाना कभी नहीं भूलते थे। जनमाष्टमी के दिन यहां पर एक भंडारा होता था और दूरदराज क्षेत्रों से लोग यहां पहुंचते थे। बताया जाता है कि बाथू मंदिर के महंत उस समय आवाज देकर बंदरों को बुलाते थे और उन्हें गेहूं से बनी कुंगणियां खाने के लिए देते थे। कुंगणियां गेहूं को उबाल कर बनाया गया प्रसाद है, जिसमें शक्कर या नमक मिलाकर देवी-देवताओं को अर्पित किया जाता था।

इलाके में दौड़ती थी कोयले से चलने वाली रेलगाड़ी : बताया जाता है कि क्षेत्र में दर्जनों गांव बसते थे और अंग्रेजों के जमाने की कोयले से चलने वाली नैरोगेज रेलगाड़ी लोगों के लिए परिवहन सुविधा का साधन थी। यह गाड़ी पठानकोट से चलकर भरमाड़- ज्वाली होते हुए अनूर पहुंचती थी और यहीं से शुरू होता है पौंग डैम का एरिया, जहां पर अब विशालकाय झील बनी हुई है। अनूर के साथ ही बाथू गांव पड़ता था, जहां पर पांडवों ने ये मंदिर बनाए थे। इसके बाद रेलगाड़ी राजपुरा, कुट्टी दा पुल, जगतपुर, मंगवाल, दरोका, नरियाना पत्तन अर्थात शिव की बाड़ी होते हुए डाडासिब्बा पहुंचती थी। राजपुरा, कुट्टी दा पुल, जगतपुर, मंगवाल, दरोका, नरियाना पत्तन आदि इलाके अब पौंग बांध में समा गए हैं। रेलगाड़ी के अलावा लोग ऊंट, घोड़ों, खच्चरों व पैदल यात्रा कर अपने गंतव्यों पर पहुंचते थे। पौंग बांध बनने के बाद ज्वांवालाशहर अर्थात ज्वाली से रेल लाइन को डायवर्ट करके वाया हरसर, मेघराजपुरा, नगरोटा सूरियां, बरियाल, नंदपुर भटोली और गुलेर से होकर बनाया गया। इस टरैक को मौजूदा समय में पठानकोट-जोगिंद्रनगर रेललाइन कहा जाता है और अब कोयले की जगह डीजल वाले इंजन रेललाइन पर दौड़ते हैं। गुलेर से आगे लूनसू, त्रिपल, ज्वालामुखी रोड, कोपरलाहड़, कांगड़ा आदि स्टेशन आते है, इसके बाद विभिन्न स्टेशनों से होकर रेलगाड़ी जोगिंद्रनगर पहुंचती है।

इलाके में मशहूर थे पांच पीर : एक अन्य पूछताछ के दौरान बताया गया कि बाथू की लड़ी के आसपास का इलाका पांच पीरों से घिरा हुआ था। इन इलाकों के लोग पांच पीरों की दरगाह पर माथा टेकने जरूर जाया करते थे। इन पांच पीरों में महुए दा पीर, दरोके दा पीर, टंडोलिया दा पीर, चटवाल दा पीर व एक अन्य पीर शामिल हैं। हालांकि पांचों पीर पौंग झील क्षेत्र में आ गए हैं और अब केवल लोग महूए दा पीर पर ही झील का जलस्तर उतरने पर दर्शनार्थ पहुंच पाते हैं। इसके अलावा पंजबड़ नामक जगह पर भी एक समाधि बताई जाती है, जहां पर किसी जमाने में तीन दिवसीय मेले का आयोजन हुआ करता था।

कुंओं का पानी पीते थे लोग : बताया जाता है कि पौंग डैम बनने से पहले इस क्षेत्र के लोग पेयजल के लिए कुंओं का प्रयोग करते थे। बाथू गांव में भी लोगों ने बड़े-बड़े कुएं बनाए थे। कुछ कुओं के अंदर तो सीढ़ियां भी बनाई गई थीं, ताकि गर्मियों में जलस्तर नीचे उतर जाने पर पानी लेने में किसी तरह की कोई दिक्कत न हो। इसके साथ ही दरियाओं के किनारे बसे लोगों को दरियाई कहा जाता था, जो लोगों, पशुओं व सामान को दरिया पार करवाते थे और इसके बदले में अनाज या नकद मुद्रा प्राप्त कर अपनी अजीविका चलाते थे।

तांबे, पीतल व लकड़ी के बर्तनों का होता था इस्तेमाल : पौंग क्षेत्र में बसे लोग तांबे, पीतल, मिट्टी व लकड़ी के वर्तनों का इस्तेमाल करते थे। आजकल मॉडर्न साइंस सेहत के लिए इनका उपयोग सर्वोत्तम मानती है। शायद यही कारण था कि लोग आर्गेनिक खानपान के साथ साधारण जीवन जीने के बावजूद लंबी उम्र जीते थे। इसके साथ ही यहां के लोग काफी मेहनती भी थे। यह क्षेत्र कृषि पैदावार के लिए भी काफी मशहूर था और यहां से पैदा किया गया अनाज आसपास के इलाकों में सप्लाई भी किया जाता था।

सिड्डू, बबरू व तली रोटी थे अहम पकवान : अब हम अगर यहां के लोगों के खानपान की बात करें तो यहां सिड्डू, बबरू व तली रोटी अहम पकवान थे। घर में किसी भी त्योहार, रीति-रिवाज या परंपरा के आयोजन पर बबरू, आटे की सेवइयां, हलवा, सिड्डू व तली रोटियां बनाई जाती थीं। यहां तक कि किसी मेहमान के आने पर ये पकवान प्रमुख रूप से बनाए जाते थे।

दूसरी जगहों पर जा बसे लोग : इस क्षेत्र में पौंग झील बनने के बाद लोगों को सरकार की ओर से राजस्थान व अन्य जगहों पर भूमि अलॉटमेंट करके दूसरी जगह बसाया गया। ज्यादातर लोग आज भी पौंग झील के आसपास के इलाकों में बसे हैं और बुजुर्ग लोगों को अक्सर अपने जमाने की बातें करते और इन पर ठहाके लगाते सुना जा सकता है।

मुक्तेश्वर महादेव

हिमाचल प्रदेश की सीमा के साथ सटे पंजाब राज्य के पठानकोट के नजदीकी कस्बे शाहपुरकंडी के पास रावी नदी के तट पर बसा है छोटा सा गांव डूंग जहां पर मुक्तेश्वर महादेव के रूप में भोले नाथ की आराधना की जाती है।

किंवदंति है कि यहां स्थापित गुफाएं 5500 वर्ष पुरानी हैं और इन्हें अर्जुन ने अपने तीरों से चीर कर बनाया था। तीरों के निशान मंदिर के अंदर बनीं गुफाओं में आज भी दिखाई देते हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर पांडव अपने अज्ञातवास के दौरान कुछ समय यहां पर रूके थे। और इसके बाद वे रावी नदी पार कर जम्मू-कश्मीर के अखनूर जिले में जिसे विराट राजा की नगरी कहा जाता था, वहां चले गए थे। जहां उन्होंने अपना अज्ञातवास पूरा किया। लेकिन, पांडव जितने समय भी इन गुफाओं में रुके, उन्होंने इस स्थान पर भगवान भोलेनाथ व अन्य देवी-देवताओं की आराधना की जिसके प्रमाण मंदिर में स्थापित रक्त शिराओं वाले शिवलिंग, धूने और अन्य देवी-देवताओं की आकृतियों से मिलते हैं। मंदिर के अंदर धर्मराज युधिष्ठिर की गद्दी और धूना आज भी मौजूद है। अनुमान लगाया जाता है कि इस स्थान पर बैठकर युधिष्ठिर ध्यान लगाया करते होंगे। इसके साथ ही एक रसोई मौजूद है, जिसे द्रौपदी की रसोई कहा जाता है।

रावी नदी के किनारे स्थापित ये प्राचीन गुफाएं अपने भीतर द्वापर युग के इतिहास को समेटे हुए हैं। कहा जाता है कि इस पावन स्थल का जिक्र स्कंद पुराण के कुमार खंड में बाबा मुक्तेश्वर के नाम से आता है। गुफा के नीचे रावी नदी बहती है और गुफा के नीचे का पानी कभी भी सूखता नहीं है।

इसके ऊपरी भाग में तीन अन्य गुफाएं मौजूद हैं, जिन्हें नकुल, सहदेव और भीम की गुफा बताया जाता है। पांचवी गुफा खंडित होने से बंद हो चुकी है। यह भी अनुमान ही है कि इस गुफा का रास्ता सीधे हरिद्वार निकलता है, तभी इस स्थान को हरिद्वार की संज्ञा दी गई है। लेकिन, यह गुफा पूर्ण रूप से बंद पड़ी है। गुफा के अंदर पांडवों का ध्यान कक्ष भी मौजूद है, जिसकी छत पर श्रीयंत्र बना है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर बैठकर पांडव ध्यान लगाया करते थे।

रावी नदी के किनारे स्थापित ये प्राचीन गुफाएं अपने भीतर द्वापर युग के इतिहास को

समेटे हुए हैं।

कहा जाता है कि इस पावन स्थल का जिक्र स्कंद पुराण के कुमार खंड में बाबा मुक्तेश्वर के नाम से आता है। गुफा के नीचे रावी नदी बहती है और गुफा के नीचे का पानी कभी भी सूखता नहीं है। शिवलिंग पर जलाभिषेक कर जो पूजा-अर्चना करता है वह मोक्ष का भागीदार बनता है। इसलिए इस स्थान का महत्व हरिद्वार जैसा माना गया है। कहा जाता है कि स्थान की खोज गांव के ही व्यक्ति ने करीब 150 वर्ष पहले की थी। पशुओं को चराते समय जब वह व्यक्ति इस स्थान पर पहुंचा तो पहाड़ में बनी गुफाओं को बाहर से देख हैरान रह गया। उसने यह बात गांव के अन्य लोगों को बताई और गांववासियों ने मिलकर इस स्थान पर पहुंच इसका रहस्य ढूंढ निकाला। इसके बाद धीरे-धीरे लोगों की आस्था इस मंदिर के प्रति बढ़ती गई और आज यहां पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। इस स्थान पर लोग अपने पित्तरों का पिंडदान करके अपने कुल की शांति के लिए भी स्नान आदि करके शिव आराधना करते हैं। मंदिर कमेटी की ओर से श्रद्धालुओं के स्नान व रावी नदी के तट पर पहुंचने के लिए करीब 250 पौढ़ियों का निर्माण करवाया गया है। अब लोग आसानी से नदी पर स्नान के लिए पहुंच पाते हैं।

यहां हर साल मार्च महीने में तीन दिवसीय मेले का आयोजन होता है, जिसमें हजारों की संख्या में पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और अन्य क्षेत्रों से श्रद्धालु दर्शनार्थ आते हैं। यहां पर श्रद्धालुओं का आवागमन साल भर चला रहता है। मंदिर के उचित रख रखाव के लिए कमेटी का गठन भी किया गया है। कमेटी सदस्य मंदिर की पूरी व्यवस्था देखते हैं और समय-समय पर यहां होने वाले आयोजनों एवं त्योहारों पर श्रद्धालुओं को सुविधा प्रदान करते हैं।

कैसे पहुंच : यह स्थान पठानकोट से करीब 20 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस स्थान पर सड़क मार्ग से दोपहिया व चौपहिया वाहन के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। मंदिर स्थल के एक छोर से रावी नदी का भव्य नजारा देखने को मिलता है। रावी नदी यूं तो कांगड़ा जिले के बड़ा भंगाल से निकलती है, लेकिन चंबा के होली, खड़ामुख, राख होते हुए यह चंबा शहर से निकलकर पंजाब के शाहपुरकंडी पहुंचती है। इसी नदी पर रणजीत सागर डैम बनाया गया है। लोग मुक्तेश्वर महादेव के दर्शनों के बाद आसपास का मनमोहक नजारा भी अपने कैमरों में कैद करते हैं।

गांव, डाकखाना व तहसील ज्वाली
जिला कांगड़ा हिमाचल प्रदेश-176023
मो : 0 98164 12261

नई कलम/कविता

आखरी वक्त

सुशील 'बेफिक्र'

आखरी वक्त में जिंदगी और मौत की परवाज पर सवार हूं मैं
अपने रिश्ते नाते, प्यार के धागे तोड़ने को तैयार हूं मैं
जाने के बाद मैं तुमको कभी ना नजर आऊंगा
जेहन में, ख्वाबों में, तस्वीरों में चस्पां हो जाऊंगा मैं
इन बहते आंसुओं की कद्र क्या जाने ये बेदर्द दुनिया
तुम्हारे आंसुओं के सैलाब में बह जाने को तैयार हूं मैं
दूर फलक से अक्सर जब मेरी नजरें निहारेंगी तुको
घर में तुम्हारे रखी हर चीज में नजर आऊंगा मैं
तुम्हारे इस प्यार और सहारे ने दिल लबरेज कर दिया
मुझे खुशी-खुशी इस जहां से विदा करो मेरे प्यारो!
याद रहे तुम्हें नाते-नातियों की हरकतों में नजर आ ऊंगा मैं
फलक ही मंजिल है इंसा की सितारों की कतार में नजर आऊंगा मैं
टिमटिमा कर अक्सर तुम्हें देख कर मुस्कुराया करूंगा मैं
पथराई आंखों से सबको एकटक देखता हुआ जहां से जाऊंगा मैं
ऐ रब मेरे अपनों की खुशियों के जहाज पर सवार करना
उन्हें इस जहां की हर मुसीबत और परेशानियों से पार करना।
सुना है कि दुआओं में असर होता है
खुदा के आगोश में जाने को तैयार हूं मैं।

नरेंद्रा ब्रादर्ज, दी माल, सोलन, हिमाचल प्रदेश,
मो. 0 94183 23410

माह के कवि

गणेश गनी की कविताएँ

उन ध्वनियों को समझ लेना

एक शाम की बात बताता हूँ
शाम भी क्या
बल्कि रात कोई बीस हाथ दूर रही होगी
उन लोगों ने लगभग उठते हुए ऊंची उम्मीद में कहा-
तुम और भी एक शानदार कविता लिखना
किसी दुपहरी बैठेंगे फिर सांझ तक।

जबकि
सबसे बेहतरीन कविता तो
कभी लिख ही नहीं पाऊंगा
कि अन्तिम दुःख जब आएगा
तब हाथ जवाब दे जाएंगे
जुबान इन्कार कर देगी शब्दों को
आँखें पत्थरा जाएंगी तब।

हो सकता है कि तुम्हारी उंगलियां
मेरी हथेलियों को धीरे से सहलाएं
कुछ जरूरी शब्दों को तब महसूस करना
जब तुम्हारे अंगूठे की छुअन से
मेरी उंगलियों के पोर खिल उठेंगे
तो थोड़ा और करीब खिसककर
उन ध्वनियों को समझ लेना अच्छे से
वही अंतिम सच्ची और
बेहतरीन कविता होगी।

अगली यात्रा से बस दो घड़ी पहले

भले ही पृथ्वी की पीठ पर बैठकर
सूर्य का एक और चक्कर पूरा कर लिया
इस बीच
धरती पर छोटी छोटी यात्राएं करते करते
बगल में बह रही नदी को
न ढंग से देखा
और न ही उसकी धुन सुन पाए।

बहुत दिनों बाद लगा आज
कि जैसे जमीन पर नजरें गड़ाए चलते चलते
नीले आकाश में उड़ते बादलों को
आँख भर देखने से चूक गए
ब्रह्माण्ड में अद्भुत ग्रहों और तारों को
देखने का एक और अवसर खो दिया।

बहुत दिनों बाद लगा
पतझड़ का मौसम कितना जिद्दी है
पहाड़ पर खड़ा जंगल तो
उससे भी अधिक
उसे पता है
एक मेंढक की जिह्व पर
उसके खुरों में नाल नहीं ठोकी जा सकती।

अगली यात्रा से बस दो घड़ी पहले
उनका जिक्र नहीं आएगा
जिनकी पकड़ कमजोर थी
वो तो ख्यालों में भी नहीं आएंगे
जो हाथ पकड़ने से कतराते रहे
लेकिन वो सपनों में आएंगे जरूर
जिन्हें घड़ी पल की दूरी भी बर्दाश्त नहीं हुई।

सिमटने और फैलने के बीच का खेल

आज फिर
चाँद को बड़ा दिखना था
पर तुम्हारे मन में कहीं
जो जगह घेर रखी थी
वो सिमटने लगी है।

वैसे इससे भी बड़ी जगह
जो तुम्हारी चुपी में
बना रखी थी मैंने
वो अब बातों ही बातों में
खाली होने लगी है।

धूप का कुछ कम चमकना
इस बात की तस्दीक करता है कि
तुम्हारा विश्वास आज
कुछ तो कमजोर हुआ है।

कई स्मारिकाओं पर
धूल कुछ अधिक ही बैठ गई
तो ऐसे वक्त कई किस्से
भूलने की कगार पर जा बैठे।

किसी दिन
सुबह और रात के दरम्यान वाले वक्त
जब उठो तो पाओ कि
कुछ धुँआ धुआँ सा
बैठा हो घात लगाए।

और फिर हो एहसास कि
हवा से खतरनाक पानी है
पानी से भी खतरनाक आग
सारा खेल सिमटने और फैलने का है
कि इनके भीतर जीवन और मृत्यु
रहते हैं एकदम अगल बगल।

तब पाए हुए को खोने का
असली भय पसलियों के भीतर
घर कर जाता है।

आशीर्वाद लेने और देने की मुद्राएं

यहां उन दिनों कोई मेले नहीं लगते थे
पर यह नदी थोड़ी और ऊँचाई पर बहती थी
जहां अब ढालपुर मैदान है
यहाँ उन दिनों इन्सान नहीं होते थे
तो जंगली जानवर खूब धमाचौकड़ी मचाते
जब बर्फ पिघल जाती।

आदमियों का आना
और जानवरों का जाना लगभग एक साथ हुआ
पर आदमी और देवता
लगभग साथ साथ आए
फिर एक दिन एक राजा बना
तो एक महल बना और बगल में एक मंदिर।

त्यौहार के दिनों में
राजा की पालकी और
रथ में देवता के मोहरे कन्धों पर बैठ
खूब बल्लियों उछलते
ढोल नगाड़ों की थाप में
देवलुओं की आहें गुम हो जातीं
ढालपुर बहुत कुछ देखता-
आशीर्वाद लेने और देने की मुद्राएं।

मैदान के एक किनारे बुक कैफे है
उधर कोई गिटार बजा रहा
बगल के पुस्तकालय में
कोई कविता पढ़ रहा है
और बाहर दीवार पर
संजू पॉल के हाथ से बने पोस्टर
इस बात की तस्दीक कर रहे हैं कि
उधर सम्वाद चल रहा है।

पुस्तकालय के अहाते से बाहर
जो ओपन एयर थिएटर है
उधर कुछ रंगकर्मी इकट्ठा हुए हैं
एक कलाकर जोर जोर से सम्वाद कर रहा है
पूछने पर पता चला

कि रंगकर्मी केहर सिंह रियाज कर रहा है
शाम को एक शो होगा राजा पर
और उसे भ्रमित करने वाले दरबारियों पर
चिड़िया के बहाने।

उसकी शुष्क पलकें

तुम्हें लगेगा कि
वह हथौड़े से घड़े हुए पत्थरों की
बेतरतीब चिनी हुई दीवार में
देवदार से बने खिड़की के चौखटे पर बैठा
कोई सरगम ले रहा है बुलन्द आवाज में
जहां जहां वह सांस लेता है
वहां वहां लगेगा जैसे
गले में सात सुरों के घरों के आसपास
कुछ खाली जगहें अभी भी बची हैं।

हालांकि ऐसा बिल्कुल भी नहीं है
दरअसल वह चट्टानों के बीच
अधलेटे देवदार के पेड़ की
उन सूखी शाखों पर बैठा है
जो कुछ दिन पहले तक बहुत से पक्षियों का घर था
उसे पता नहीं कि
वह जंगल के इस ओर है या अंतिम छोर पर
बेसुध होने पर भी
उसके विलाप में शामिल हैं
उजड़े जंगल की कुछ सिसकियों के अंश
कुछ अंतिम चीखों की कड़ियाँ
कुछ उदास घड़ियाँ अपनों को खोने की।

सूखी टहनियों की धीमी चटक में
शामिल है उसके भीतर की टूटन
उसकी शुष्क पलकें गवाह हैं कि
दुःख का ताप पसलियों के भीतर
डेरा जमाए बैठा है एक लंबे समय से
गले के भीतर खाली जगहें
उसने अपने रोने के लिए बचा रखी हैं।

खोने का पता ही नहीं चला

बहुत लोग
इसलिए परेशान रहते हैं कि
उनकी कुछ चीजें खो गई हैं
जो उन्होंने पिछले मेले में
या उससे पिछले मेले में
या उससे भी पिछले मेले में खरीदी थीं।

पूरा जीवन ही निकल जाता है
उन खोई हुई चीजों को याद करते करते
इस बीच कब मुस्कुराहट खो गई पता ही नहीं चला
न कभी इसका जिक्र किया कि
कब और कैसे यह कीमती चीज
अचानक गुम हो गई
यह तो तब पता चला जब कुछ लोगों ने कहा-
अरे! तुम्हारी मुस्कुराहट कहाँ खो गई।

गणेश गनी की कविता हिंदी साहित्य में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कर चुकी है। वे अपनी भाषा के लिए जाने जाते हैं। यही कारण है कि इनकी कविताएँ और गद्य अपनी भाषा की काव्यात्मक शैली और अनूठी किस्सागोई के कारण चर्चा में रहा है। गनी की कविताओं के बिम्ब अनूठे हैं। कविताएँ अपनी अलग शिल्प और शैली के कारण पाठकों को आकर्षित करती हैं।
गणेश गनी की कविताएं हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और ब्लॉग आदि में प्रकाशित तथा आकाशवाणी शिमला से प्रसारित हो चुकी हैं।

एम सी भारद्वाज हाऊस, भुट्टी कॉलोनी, शमशी, कुल्लू-175126
मोबाइल 9736500069, 9817200069

आलेख

किसी पुराने अलाव के पास

(शैलेय की कविता : संदर्भ-पहाड़)

◆ प्रो. शंभु गुप्त

हिमालय का बहुविध यथार्थ शैलेय की कविताओं में विस्तार के साथ आया है। वहाँ न केवल उसकी भू-आकृतियाँ हैं, बल्कि वहाँ की भू-संस्कृति भी गहराई और व्यापकता के साथ ली गई है। इसके साथ ही, इधर उस भू-क्षेत्र की जो राजनीतिक व सामाजिकार्थिक परिस्थितियाँ बनी हैं और आम-अवाम की जो स्थिति है, उस तरफ भी कवि का बराबर ध्यान गया है। यहाँ सबसे उल्लेखनीय तथ्य यह है कि शैलेय को पढ़ते हुए लगातार यह बाकायदा और बखूबी महसूस होता है कि हम एक ऐसे कवि को पढ़ रहे हैं, जिसके पहाड़ के प्रति सरोकार बेहद ईमानदार और दृष्टि-सम्पन्न हैं। यह लगातार महसूस होता है कि अपने इलाके के प्रति इस कवि को कितना गहरा और सच्चा-स्वाभाविक प्रेम है। यहाँ भावुकता भी बराबर है, लेकिन वास्तविकताओं की निर्मम पड़ताल भी साथ-साथ है। यह क्षेत्रवाद या अंधक्षेत्रवाद नहीं है, बल्कि अपने इलाके के प्रति लगभग 'बैक टु सोसाइटी' का काव्योदाहरण है। लोग तो कथित आधुनिकतावाद और न जाने किस-किस विचारधारा के लबादे ओढ़कर अपनी जड़ों के प्रति एक विस्मृति का भाव अपना लेते हैं। उनकी जड़ें उन्हें गाहे-बगाहे झकझोरती तो हैं, लेकिन वे अपनी मनगढ़न्त मूसेड़ों में घुसे हुए उन्हें अन्यथाकृत करते रहते हैं। लेकिन एक असल कवि की असल पहचान ही यह है कि वह मिट्टी से अपना रिश्ता तोड़े नहीं, उसे बरकरार रखे, बल्कि लगातार और गहरे से गहरा करता जाए! शैलेय 'कवि' शीर्षक कविता में लिखते हैं -

मिट्टी से जिसने भी रिश्ता रखा
फिर सातों आसमान / चाहे जीतने गहरे हों
वह / कहीं दूब-कहीं धूप बनकर ही निकला

किन्तु
इस गहन यात्रा का शुभारम्भ तो
अपनी ही मिट्टी खोदने से होता है
और
यह कदम जन्मना कवि ही उठाते हैं

(या, पृष्ठ- 96)

अपनी मिट्टी, अपनी जड़ों से जुड़ना अपनी परम्परा से जुड़ना भी है। कुछ लोगों को 'परम्परा' से आदतन चिढ़ रहती है लेकिन यह एक तथ्य है कि परम्परा से जुड़ना परंपरावाद नहीं होता। हालाँकि एक तथ्य यह भी तो है ही कि परम्परा में सब-कुछ अच्छा या वरेण्य नहीं होता, वहाँ बहुत-कुछ निरर्थक भी होता ही है। इसका एक रास्ता यह है कि हम चयन-दृष्टि अपनाएँ। शायद इसीलिए यह कवि यह सुझाव देता है कि -

नये साल में/ अगर आप चाहें तो
पिछले सौ सालों का / कूड़ा जलाकर
समूची धरती पर / हल चला सकते हैं

ताकि / आने वाली सदी/ सिर्फ
फसलों की हो।

(वही, पृष्ठ- 95)

दरअसल हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को भी यही संदृष्टि प्रदान करनी चाहिए कि उनको भी यह लगे कि उनके पैरों के नीचे भी पुख्ता जमीन है -

हम बच्चों को अपने हाथ / कुछ इस तरह सौंपेंगे
कि / जैसे उनके कदमों को जड़ें मिल गई हों।

(वही, पृष्ठ- 88)

अपनी मिट्टी, अपनी जड़ों की यह तासीर होती है कि उनके पास आपकी हर कँपकँपी, हर हताशा का कोई न कोई तोड़ जरूर होता है। इतिहास में एक प्रकार की अकूत संजीवनी पाई जाती है-

चाहे जिस वजह से / ठंडा हो मन
कँपकँपा रहा हो बदन/ आदमी को
किसी पुराने अलाव के / पास जाना चाहिए
जाड़ा ही नहीं / वह / रात को भी कटेगा।

(वही, पृष्ठ- 86)

अपनी जमीन एक केन्द्रीय कथ्य के बतौर शैलेय की कविताओं में आती है। जमीन एक भौतिक उपागम है तो एक सांस्कृतिक प्रतीक भी कि यदि तुम अपनी जमीन पर दृढ़ता से टिके नहीं हो तो इसका मतलब है, कभी न कभी तुम डूबोगे ही क्योंकि यही निसर्ग का नियम है-

अपनी जमीन पर/ खड़ा न हो पाना भी
डूबते जाने से कम नहीं होता।

(वही, पृष्ठ- 32)

अपनी जमीन पर खड़े रहना अपने भू-क्षेत्र, उस भू-क्षेत्र के समस्त इतिवृत्त से एकमेक होना भी है। अपने पहाड़ के प्रति शैलेय में लगभग यही तद्वत्ता पाई जाती है। यदि यह कहा जाए कि यह तद्वत्ता ही शैलेय के यहाँ एक विचारधारा है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। इसका तात्पर्य यह है कि यथार्थ के प्रति जो अन्तर्दृष्टि उनके यहाँ बनी है, वह किसी विचारधारा-विशेष के अन्तर्गत नहीं है, बल्कि अपने घर को उसकी अपनी निगाह, उसकी अपनी जरूरतों की निगाह, उसके अस्तित्व की सलामती की निगाह से देखना ही अपने-आप में उनके यहाँ एक मुकम्मल विचारधारा है। वे किसी आरोपित विचार के चक्कर में नहीं पड़ते, हालाँकि अपने क्षेत्र के प्रति जिस विचार-सरणि से वे संचालित हैं, वह प्रगतिशीलता का ही विचार है। लेकिन यह अपनी स्थानीय जरूरतों के हिसाब से पैदा प्रगतिशीलता ही है, जैसा कि मार्क्सवाद में हम यह देखते हैं कि हर जगह का मार्क्सवाद अपनी जगह के हिसाब से होगा! शायद शैलेय की इन पंक्तियों के पीछे यही अन्तर्भाव निहित है। अपनी 'घर' शीर्षक कविता-शृंखला की कविता संख्या 4 की अन्तिम पंक्तियों में शैलेय ने लिखा है -

मत करो बन्द / ये दरवाजे
ये खिड़कियाँ/बाहर से लाये गये पर्दों से।

(तो, पृष्ठ- 54)

पहाड़ पर भूमंडलीकरण के प्रभावों, कथित नए विकसोपक्रमों के यथार्थ पर शैलेय का आकलन ध्यान देने योग्य है। भूमंडलीकरण की वस्तुस्थिति पर थोड़ा भिन्न तरीके से भी सोचा जाए, खास तौर से स्थानीय संदर्भों में। दरअसल, भूमंडलीकरण का समय और उसकी विभीषिकाएँ तो अब आई हैं और इन्होंने बहुत सारी चीजें इधर-उधर कर दी हैं, लेकिन यहाँ की राजनीतिक व सामाजिकार्थिक वास्तविकताएँ अरसे से यहाँ का जीवन मुहाल किए हैं। यों तो ऐसा भारत के प्रायः हर भू-भाग में देखने को मिलता है, लेकिन पर्वतीय और विशेषतः पर्वत के ग्रामीण इलाकों में सामान्य जन के हित की योजनाएँ लगभग नदारद हैं। जैसा कि हम बखूबी जानते हैं, पहाड़ी जीवन दैनंदिन रूप से कितने खतरों और जोखिमों से भरा होता है। लेकिन एक सच यह भी है कि जितनी खतरों और जोखिमों से भरी जिन्दगी यहाँ की होती है, जीवन के उल्लास, खिलंदड़ेपन, जुझारूपन के दृश्य भी बराबर यहाँ मिल जाते हैं। शैलेय पहाड़ी हैं, वे पहाड़ में रचे-बसे हैं, पहाड़ उनमें रचा-बसा है। शैलेय के चारों संग्रहों में पहाड़ पर अलग-अलग, हर संग्रह में, इतनी कविताएँ हैं कि केवल उन्हें जोड़कर पूरा एक संग्रह तैयार किया जा सकता है। और, ये सभी कविताएँ एकल नहीं, शृंखला में हैं। ऐसी अनेक शृंखलाएँ इन चारों संग्रहों में हैं। पहाड़ के साथ पहाड़ से जुड़े अन्य प्राकृतिक घटक, जैसे नदी, झरने, सीर, घाटियाँ, तरह-तरह के पेड़, तरह-तरह के विशिष्ट फूल एवं फलोत्पाद, पौधे, वनस्पतियाँ, बर्फ, उकाव-हुलार, भ्योव-गधेरे, कोहरा, बादल, बारिश, हाड़-कँपाता शीत, बोरसी, जंगल, पगडंडियाँ, सीढ़ीदार खेत, विशिष्ट और भिन्न प्रकार की सामग्री से बने भिन्न वास्तु-शिल्प के मकान, भू-स्खलन, पनचक्की, पोखर आदि-आदि भी, यहाँ ओर-छोर बिखरे पड़े हैं। शैलेय एक अन्दर के आदमी की तरह पहाड़ को लेते हैं, किसी बाहरी सैलानी या अन्दर के किसी ऐसे व्यक्ति की तरह नहीं, जो अपनी जमीन, अपने पहाड़ से एक तरह के अलगाव और असम्बद्धता की मनःस्थिति में आ लिया हो, जिसके कई कारण हो सकते हैं, जो खास निजी भी हो सकते हैं या राजनीतिक भी। जो लोग पहाड़ के प्रति अलगाव की मनःस्थिति में आ गए हैं, ऐसे लोग पहाड़ के अन्दर भी होते हैं और वहाँ से पलायन कर अन्यत्र प्रस्थान कर चुके भी होते हैं। ये लोग पहाड़ की बहबूदी में कोई योगदान न तो दे पाते हैं और न ही इसका कोई मलाल इन्हें होता है। शैलेय अपने बारे में जो कुछ सोचते हैं, स्वयं को इस सम्बन्ध में जिस तरह लेते हैं, वह सचमुच श्लाघनीय है। अपने भू-क्षेत्र के प्रति उनका यह लगाव स्वयं में एक काव्य-वस्तु की तरह है-

हिमालय!
मैं तेरा वंशज / तू / समुद्र तक की प्यास बुझाता है
मैं / दुनिया को बंजर भला कैसे देख सकता हू!!

(तो, पृष्ठ- 97)

पहाड़ की राजनीतिक व सामाजिकार्थिक स्थिति उम्दा नहीं है, इसमें कोई सन्देह नहीं और जो लोग वहाँ से निकल चुके हैं, उन्हें दोषी या कमजर्फ भी नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह पहाड़ से नीचे पलायन कर आ बसे लोगों में अमूमन देखने में आया है कि वे ताजिन्दगी पहाड़ को, वहाँ की भू-आकृति, प्रकृति, जलवायु, निसर्ग के टटकेपन, भू-संस्कृति इत्यादि को भूले नहीं भूलते, एक कसक की तरह पहाड़ उनके दिल में हमेशा धड़कता रहता है। वे नगर-महानगर में जरूर आ बसते हैं, लेकिन उनकी आदतें, उनका स्वभाव, खान-पान बहुत-कुछ वैसा का वैसा रहा आता है। अपनी प्रथाओं, परम्परा इत्यादि से एकदम कटकर वे नहीं जी पाते। लेकिन अब चूँकि वे एक भिन्न परिवेश में रहने और वहाँ अपडेट बने रहने की विवशता से भी घिरे हैं, अतः अपनी बहुत सारी परम्परागत सांस्कारिकता से इन्हें अपना पीछा छुड़ाए रखने को तैयार होना पड़ता है। इस पूरी प्रक्रिया में होता यह है कि आदमी न इधर का रहता है, न उधर का! वह हालाँकि इधर का भी होता है और उधर का भी, लेकिन लगभग आधा-आधा, पूरा वह किधर का भी नहीं होता! इसका कुल नतीजा यह होता है कि वह एक व्यक्तित्वहीनता की स्थिति में आता चलता है, जिसका अगला विकास यह होता है कि वह लगभग समायातीत/अप्रासंगिक हो आता है। गाँव से शहर में प्रवासन का मध्य व निम्नमध्यवर्गीय आख्यान इसी के इर्द-गिर्द संघटित होता है। शैलेय ने अपनी 'रिवाज' शीर्षक कविता में यत्किंच इसे संरचित किया है, हालाँकि

इस मामले में वे थोड़ा और गहराई में जाते तो कुछ जरूरी तथ्य और भी उजागर हो सकते थे। लेकिन खैर! कविता के अन्तिम हिस्से में वे लिखते हैं -

आत्मा/ हमसे चिरौरी कर रही है कि
अभी और कितना/ शहरी होना बाकी है ?
गाँव को हमने खुद ही दुत्कारा और
यहाँ कोई मोहल्ला रास नहीं आ रहा है
धोबी के कुत्ते / घर के / न घाट के।

(कुढब कुबेला, पृष्ठ- 42-43)

पहाड़ हालाँकि अनन्त संभावनाओं, जीवट और नवोन्मेष की इबारत लिखता भी लगातार हमें दिखाई पड़ता है, संघर्षशीलता यहाँ की जीवन-चर्या का सहज हिस्सा है, यहाँ लोग बिना थके आगे बढ़ते चले जाते हैं, लेकिन यह भी एक तथ्य है कि ऐसा इकतरफापन आखिर कब तक चल सकता है? लोग कभी न कभी तो इससे ऊबेंगे ही! वे अपने लिए कोई और विकल्प तलाशेंगे ही सही! पहाड़ का पिछला राजनीतिक और सामाजिकार्थिक इतिहास कोई ज्यादा शानदार नहीं रहा है। केन्द्र और राज्य दोनों की राजनीति पहाड़ के साथ लगभग सौतेला व्यवहार करती आई है। सौतेला उपमान शायद ठीक नहीं है, दरअसल आम जनता को ध्यान में रखकर सरकारों का किसी भी जगह का विकास एक मृग-मरीचिका से ज्यादा उम्दा नहीं रहा है। निश्चय ही एक कवि के रूप में शैलेय का यह मानना है कि राज्य मूलतः कल्याणकारी होना चाहिए -

जाड़े के मौसम में / हर एक देश को
हर एक नागरिक के लिए
एक पुलोवर जैसा होना ही चाहिए।

(तो, पृष्ठ- 15)

जबकि हकीकत इसके एकदम उलट है। पहाड़ किसी भी राज्य के लिए दायित्व से अधिक दोहन का स्रोत बनते आए हैं।

यह आवश्यक नहीं कि कोई कवि इस तरह की बहस से विज्ञ हो ही। विज्ञ हो तो सोने में सुहागा। लेकिन कवि के सोने के लिए सुहागे से ज्यादा जिस चीज की जरूरत है, वह है, सामान्यता का तांबा, जिसके मिलाए बिना सोने से कोई आभूषण नहीं गढ़ा जा सकता। कवि में यह साधारणता यदि है तो वह यथार्थ की तहों के अन्दर के अन्दर घुसकर तथ्य और सत्य का बाकायदा पता कर लाएगा, जहाँ से दरअसल सारी वैचारिकता और बहसें अमूमन शुरू हुआ करती हैं। यह ठीक वैसा है जैसे एक समाजशास्त्रीय शोधार्थी वस्तु-सत्य की तह तक पहुँचने के लिए अनेकानेक माध्यमों और विधियों से आँकड़े तथा अन्य सामग्री इकट्ठा करता है और फिर उसे व्याख्यायित-विश्लेषित करता है। अन्तर सिर्फ इतना है कि एक कवि ज्यादातर अपने संवेदनात्मक ज्ञान से संचालित होता है और अनुभव के धरातल पर सत्य का संग्रहण करता है जबकि समाजशास्त्री ज्ञानात्मक तरीके से तथ्यों का संग्रह करते हुए सत्य के अन्वेषण तक पहुँचता है। हालाँकि, एक अन्तर और इनमें यह होता है कि जहाँ समाजशास्त्र में वस्तुपरकता के नाम पर पक्ष-ग्रहण/प्रतिबद्धता की मनाही होती है, वहाँ काव्य-संरचना में कवि की प्रतिबद्धता को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। जो हो। बात साधारणता की है, जो दोनों जगह होनी ही चाहिए। प्रामाणिकता का ही नहीं, गतिकता/गैर-यथास्थितिवाद का पैमाना भी यही होगा। शैलेय अपनी 'मानक' शीर्षक कविता में लिखते हैं-

सही जेवर के लिए/ बाईस कैरेट का सोना ही चलेगा
तांबे की पकड़ वाला/ ठीक वैसे ही
एक सामान्य आदमी/ कई बार कहीं अधिक भरोसेमंद होता है

यानी / शत प्रतिशत शुद्धता का मानदंड
गतिशीलता में प्रथम अवरोधक है।

(वही, पृष्ठ- 13)

भू-स्खलन पहाड़ की एक नैसर्गिक समस्या है, जिस पर किसी का जोर नहीं, लेकिन पहाड़ जो उजड़ रहे हैं, वीरान हो रहे हैं, राजनीतिक और सामाजिकार्थिक रूप से खोखले हो रहे हैं, उसका इलाज तो हमारे हाथों में है -

पिछले कई वर्षों से
सब चिल्ला रहे हैं-
पहाड़ ढह रहा है / पहाड़ ढह रहा है
पहाड़ ढह रहा है / जैसे कि

दून-दिल्ली अंधे-बहरे रहते हों

हाँ, यह रिपोर्ट सही है कि
लगातार क्षरण होते रहने के कारण
कहीं गहरे धँस गया है पहाड़

कोई इसके / घाटियों से घाव और
नदियों सी वेदना को देखे तो सही।

(या, पृष्ठ- 43)

बुनियादी ढाँचे की यह बदहाली केवल पहाड़ में नहीं है। यह एक सार्वदेशिक परिघटना है। पहाड़ के सन्दर्भ में यह थोड़ा ज्यादा मारक इसलिए है कि वहाँ निसर्गजन्य परिस्थितियाँ विकट हैं। शैलेय ने पहाड़ी जीवन की दैनंदिन दुर्वहताओं का अनेकानेक कविताओं में अंकन किया है। पहाड़ जैसे नैसर्गिक रूप से विशिष्ट इलाकों में ये दुर्वहताएँ प्रायः एक जैसी पाई जाती हैं। पानी की उपलब्धता, आवागमन के साधन, प्राकृतिक आपदाओं, पशुओं इत्यादि से बचाव तथा इसी तरह की न्यूनतम अनिवार्यताएँ यहाँ बहुत दुर्लभ रही हैं। विशेषतः ग्रामीण इलाकों में तो स्थिति बहुत ही खराब है। मेरा अंदाज है कि शैलेय जब पहाड़ की बात करते हैं

तो उसका यह नितांत पिछड़ा और अविकसित ग्रामीण इलाका ही उनके ध्यान में रहता है। उनका स्वयं का पैतृक सम्बन्ध एक ग्रामीण पहाड़ी इलाके से है और वे चाहे नीचे एक निकटस्थ शहर में आ बसे हों, लेकिन गाँव से अभी भी वे न केवल जुड़े हैं बल्कि बराबर वहाँ रहने जाते रहते हैं। वहाँ उनके खेत, घर-मकान आदि हैं। जैसा कि उन्होंने अपनी एक कविता 'गोत्र' में लिखा है कि 'अपने जैंती रानीखेत में बैठा हुआ/मैं जब यह सोचता हूँ तो जैसे/अपने इस पहाड़ के उकाव-हुलार/मेरी रोजमर्रा की साँस होते जाते हैं और ...' आदि। (कुढब कुबेलाय पृष्ठ- 84)। यानी कि पहाड़ उनके लिए मंगलेश डबराल की तरह एक स्मृति नहीं है, बल्कि वीरेन डंगवाल की तरह उनके जीवन और वजूद का संघटक और हमेशा साथ रहने वाला अटूट जीवित हिस्सा है। दरअसल यही कारण है कि वे कोई भी बात कहें पहाड़ कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में उनकी अंतर्वस्तु में शामिल होता है। इसीलिए मैंने कहा कि उनकी कविताएँ प्रामाणिकता लिए हुए हैं। स्मृतिगत और प्रत्यक्ष यथार्थ अपनी काव्यान्विति में किस तरह भिन्नता ग्रहण कर लेते हैंय मंगलेश डबराल की 'पहाड़ पर लालटेन' और शैलेय की 'तो' में संग्रहित 'पहाड़' शृंखला की कविता संख्या 7, जो उन्होंने अग्रज कवि मंगलेश डबराल के लिए लिखी है, इन दोनों को एक साथ पढ़कर देखा जा सकता है। पहाड़ी जीवन की बदहाली के बिम्ब दोनों जगह हैं, एक आतंक की तरह पहाड़ की भीषण दुश्वारियाँ दोनों जगह हैं, यहाँ तक कि यथास्थिति के विरुद्ध संघर्ष और परिवर्तन की चेतना के संकेत भी दोनों तरफ हैं, लेकिन मंगलेश की कविता जहाँ इन संकेतों का क्रियात्मक विकास न कर उन्हें एक अनिर्दिष्ट और संभ्रमित विडंबनात्मकता की ओर धकेल देती है, वहीं शैलेय इस संघर्षशीलता को आमजन की सामूहिकता और पारस्परिकता के सहयोग से एक सन्नद्ध सक्रियता की तरफ अग्रसर होने देते हैं। मंगलेश के पहाड़ पर कभी जो लालटेन जली दिखती थी, वह उन्हीं के अनुसार कालान्तर में बुझ गई, उनकी आगे की कविताएँ इसकी तसदीक करती भी हैं, लेकिन शैलेय पहाड़ की अपनी अंतःप्रकृति को पहचानते हुए जिस अन-अलगाव और सम्बद्ध सामाजिकता का सहारा लेते हैं, वह हमें एक ठोस उम्मीद पर लाकर जरूर छोड़ती है। मंगलेश जी वाली पहाड़ की लालटेन दरअसल बुझी ही इस अन-अलगाव और सम्बद्ध सामाजिकता के अभाव में थी -

दरअसल / यह एक युद्ध है साथी
झरनों से कुर्बानी / नदियों से बिजली
वनों से बुरांस / लिए बिना पहाड़ पर लालटेन
भला कब जली?
गहरे उतर / गहरी और गहरी ऊँची आवाज दो
बाकी/ पहाड़ तो गाता ही कोरस में है। (तो, पृष्ठ- 104)

यह अन-अलगाव और सम्बद्ध सामाजिकता शैलेय के पहाड़ी यथार्थ-निरूपण का लब्बो-लुआब है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पहाड़ सम्बन्धी बावजूद तमाम इल्लतों के उनका यह लगाव और सामाजिकता बरकरार हैं। पहाड़ में जिन्दगी कितनी दूभर होती है, इसका जितना वर्णन शैलेय ने किया है, उसके बरक्स लगभग उतना ही, कई बार उससे ज़्यादा भी, उसके नवनवोन्मेषी नैसर्गिक सौन्दर्य, उसके भौतिक और आधिभौतिक आकर्षण, उसकी अनिंद्य अस्मिता का अंकन भी उनके यहाँ दिखाई देता है। चारों संग्रहों में पहाड़ सम्बन्धी उनकी कविता-शृंखलाएँ तो इसका प्रमाण देती ही हैं, भूमंडलीकरण के जलजले के बाद आए बिखराव को आँकती कविताएँ भी इसकी गवाह हैं। पहाड़ सम्बन्धी शृंखला की कविताओं को देखा जाए तो शुरुआती कविताओं में बदहाली, दुश्वारियाँ, दुष्चिन्ताएँ हलकान कर देने वाली स्थितियों में मिलेंगी लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे, उन बदहालियों, दुश्वारियों, दुष्चिन्ताओं इत्यादि की जगह अपनी जमीन, अपने 'देस', अपने लोगों के प्रति लगाव और आकर्षण का स्थायी और बद्धमूल भाव अपनी गहरी जड़ें जमाता दिख जाएगा। यहाँ तक कि कई कविताएँ तो ऐसी हैं कि उनके शुरुआती हिस्से में तो पहाड़ की इल्लतें हैं, असहनीय दिक्कतें/दुश्वारियाँ हैं, लेकिन जैसे-जैसे कविता आगे बढ़ती है, पहाड़ी जीवन-चर्या काव्य-नायक के व्यक्तित्व के सहज व अटूट हिस्से की तरह सतह पर उभरकर आने लगती है। यह सांस्कृतिक राष्ट्रवादी किस्म का कथित जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी वाला भाववादी खोखला आवेग नहीं है, अपितु रसूल हमजातोव वाला मेरा दागिस्तान वादी जीवन की आदतों में शामिल अपनी जमीन वाला ठोस और सहज-स्वाभाविक प्रेम है, जो हर तकलीफ पर भारी पड़ता है। इसके लिए कवि पाठक पर कोई एहसान नहीं कर रहा होता कि देखो, मैं अपने पहाड़ को कितना प्यार करता हूँ, बल्कि उसे यह अंदरूनी अहसास दिला रहा होता है कि कैसा भी दूभर जीवन यहाँ का हो, कैसी भी विपत्ति इस पर आई हो, कितने भी संकट से यह और हम गुजर रहे हों, आखिरकार यह हमारा घर है, और घर को कोई आने वाली विपत्ति की आशंका के डर से यों ही तो नहीं छोड़कर चल देता! क्या जिस जगह ने हमें जीवन दिया, जिसकी वजह से हमारा अस्तित्व है, क्या हमें उसे उसकी नियति के हवाले यों ही छोड़कर अपने निजी हित में यहाँ से निकल जाना चाहिए? क्या यही हमारा दायित्व-बोध है? क्या हमें ठहरकर यह नहीं सोचना चाहिए कि अपने इस घर की सलामती के लिए हम क्या कर सकते हैं? इसे इस पर आए संकट से कैसे बाहर निकाल कर ला सकते हैं?

21, सुभाष नगर, एन ई बी , अग्रसेन सर्किल के पास, अलवर,
राजस्थान-310 001,
मोबा. 91-9414789779, 91-8600552663

आलेख

अंधविश्वास : विश्वास नहीं एक भय

◆ डॉ. शशि गोयल

बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों के मालिक, ऊँचे ऊँचे ओहदों पर काम करने वाले ,अपनी मेज पर फेंगशुई या वास्तु से जुड़ी चीजों को सजाये दिखेंगे। अपनी कुर्सी पर बैठने से पहने नमन करेंगे हाथ बढ़ाकर छूकर प्रभु को स्मरण करते हैं तब आगे बढ़ते हैं। दिन व दिन आस्तिकता नहीं अंधविश्वास बढ़ रहा है। अपनी कार या वाहन पर छोटी मूर्ति या तस्वीर लगाते हैं कि निर्विघ्न यात्रा हो इसमें साईं बाबा, हनुमान जी और दुर्गाजी सबसे आगे हैं। किसी के नाम के शब्द खिंच कर लम्बे हो जायेंगे तो किसी की कुर्सी का स्थान बदल जायेगा। मेले या प्रदर्शनी में हर दूसरी स्टॉल वास्तु या फेंगशुई की मिल जायेगी। भारतीय स्वास्तिक इस समय फेंगशुई के मुकाबले कमजोर है हॉ गणेशजी कुछ बाजी मार रहे हैं।

लोक सभा चुनावों के समय मंदिर, तीर्थ स्थान आदि में एक अलग ही नजारा होता है। ईश्वर को प्रसन्न कर सत्ता हथियाने का उपाय सबसे सरल नजर आता है। आम जनता को प्रसन्न करना कठिन कार्य है उसके लिये उनके हित की सोचना, फिर उसे कार्यान्वित करना बड़ा मुश्किल कार्य है। उसके लिये तो सत्ता मिलने से पहले भी भगदड़ करनी पड़ेगी और अपना समाज में एक स्थान बनाना पड़ेगा, जनहित के लिये, अपने हितों का त्याग करना पड़ेगा। सत्ता मिलने पर जब तक सत्ता रहेगी तब भी खटना पड़ेगा। इतना सब करने से अच्छा है भगवान के आगे हाथ जोड़ो। रिश्वत के दो फूल चढ़ाओ। सत्ता हथियाओ फिर अपना भला ही भला। शुभ मुहूर्त होगा तो काम सिद्ध होगा ही। उस समय सभी दलों के नेता हर उस मंदिर, ज्योतिषी या पंडित की ओर दौड़ रहे होते हैं जो जरा सी भी आशा दिला रहा होता है। भारत में जीवन के विविध रूप मिलते हैं और कहा जाता है कि जितने रूप हैं उतनी ही मान्यताऐं हैं। मान्यताओं के साथ मानव के अपने विचार एक रूप लेते हैं। यह अवश्य है कि समय के साथ मान्यताएं रूप बदल लेती हैं या उनकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है क्योंकि वे साधन ही समाप्त हो गये हैं।

भारत में ही नहीं विश्व के किसी कोने में जाइये उसके अपने विचार किन्हीं बंधनों में उलझे मिलेंगे। असफलता का भय उसे हर पग उठाने से पहले सोचने को मजबूर कर देता है कि कहीं काम बिगड़ न जाये। इसके लिये हर संभव उपाय करता है। रंग जाति धर्म अलग होने से मानव स्वभाव तो नहीं बदल जायेगा। इसी वजह से दुनिया के किसी कोने में जाइये आपको अपने अपने विश्वास मिल जायेंगे। यह नहीं है कि मानव इन बंधनों से निकलने के लिये प्रयास नहीं करता है, लेकिन यदि उस प्रयास में असफलता मिलती है तो सहम कर यह सोच कर पीछे हट जाता है यदि इस समय यह काम नहीं करेंगे तो क्या हो जायेगा जरा रुक कर कर लेंगे। अन्ध विश्वासी माने जाने के लिये वह तैयार भी नहीं होगा ,लेकिन मानता भी जायेगा और कहेगा वैसे तो कुछ मानता नहीं पर हॉ चलो तुम कह रहे हो तो इस समय ऐसा नहीं करूंगा। यानि मैं अन्धविश्वासी नहीं हूँ आप हैं, मैं तो आपका मान ही रख रहा हूँ। अधिकांश विश्वास अंधविश्वास विश्व व्यापी हैं। विश्व के जनमानस में अंधविश्वास गहरे पैठा हुआ है पर कुछ कहीं अधिक माने जाते हैं कुछ कहीं अधिक। अंधविश्वास को धर्म से जोड़ा गया है लेकिन किसी भी धर्म में अंधानुकरण करने के लिये नहीं कहा गया है किसी भी धर्म में शुभ या अशुभ या किसी के पीछे कोई विचार निश्चित किया गया है एक ही देश में है यह नहीं कहा जा सकता। कभी कभी मान्यताएं बिलकुल विपरीत होती हैं। कोई नियम भी निर्धारित नहीं होते कि इनके पीछे कोई वैज्ञानिक कारण है या सामाजिक। हर शुभ अशुभ के पीछे कोई कारण अवश्य होता है लेकिन लकीर का फकीर बनने के लिये कहीं नहीं कहा गया है। धर्म कभी अंधविश्वास का स्रोत नहीं होता। यह तो एक व्यक्ति के साथ हुई घटना को यदि स्वयं के साथ जोड़ते जायें तो यह परिपाटी हो जाती है।

इंगलैंड की नौ सेना में शुक्रवार का दिन अशुभ माना जाता है। इस दिन पर से अशुभ ठप्पा हटाने के लिये एक जहाज के निर्माण का कार्य शुक्रवार को ही प्रारम्भ किया गया। उसका कप्तान फ्राइडे नामक व्यक्ति को बनाया गया। शुक्रवार के दिन ही उसे समुद्र में उतारा गया, लेकिन शुक्रवार के ही दिन जहाज लापता हो गया, और उसका कोई अता पता नहीं मिला। विश्वास है कि मृत समुद्री नाविक सीगल के रूप में जन्म लेती है किसी भी जहाज पर सीगल बैठ जाये तो समझ लिया जाता है तूफान आयेगा। विश्वास है कि सर फ्रांसिस ड्रेक के पास एक ड्रम था जिसमें जादुई ताकत थी जब भी इंगलैंड पर खतरा होता है अपने आप बज उठता है आज भी प्लाई माउथ के पास बकलैंड एवे में वह लटका हुआ है। 1596 में अपनी मृत्यु के समय ड्रेक ने वेस्ट इंडीज से ड्रम अपने जन्म स्थान प्लाइमाउथ भिजवाया तथा मृत्युशैया पर शपथ ली कि जब कभी इंगलैंड खतरे में हो अगर कोई ड्रम बजाये तो वह जरूर

बजेगा। धीरे धीरे परिस्थितियों ने मोड़ लिया और खतरे के समय अपने आप बज उटता है। नेपोलियन को कैद कर जब प्लाईमाउथ लाया गया ड्रम बजने लगा था और परिणाम था वाटरलू का युद्ध। बीसवीं शताब्दी में ड्रम को तीन बार सुना गया। 1914में जब प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हुआ। चार साल बाद जब रॉयल ऑक जहाज आया 1918 में जर्मन दस्ता आत्म समर्पण करने के लिये सिलवर ओक में आया ड्रम जोर जोर से बजने लगा था और बजाने वाला कहीं नहीं दिखाई दिया था। जब सिल्वर ओक ने लंगर डाल दिया तब बजना बंद हो गया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय यह फिर बज उठा था।

'टच वुड' लकड़ी छूने का रिवाज दो व्यक्तियों के एक साथ कुछ बोलने पर है। यह विश्वास किया जाता है कि संसार के मूर्त ,अमूर्त सभी वस्तु में ईश्वर विद्यमान है ,और भाग्य बदले नहीं इसके लिये लकड़ी छूकर उस देवता की प्रार्थना की जाती है। टच वुड के समय लकड़ी बिना पेन्ट किये हुए हिस्से की छूनी चाहिये। घोड़े की नाल या कोयले का टुकड़ा किसी शुभ कार्य के लिये ले जाया जाता है विश्वास है कि इन वस्तुओं के साथ होने से बिगड़ा कार्य बन जाता है। नमक फैलना दुर्भाग्य का सूचक माना जाता है। इसके पीछे हो सकता है असली बात यह हो प्राचीन समय में मॉस को सुरक्षित रखने का बस नमक ही साधन था।

इंगलैंड में अभी भी नये घर में जाते समय पुराने घर से जलती लकड़ी ले जाकर उससे ही नये घर के चूल्हे में आग सुलगाते हैं। यद्यपि यह प्रथा अपना स्वरूप खोती जा रही है। पर कुछ स्थानीय निवासी घर के बाहर चूल्हा बनाते हैं या फायर प्लेस से जलती लकड़ी ले जाते हैं इसके पीछे निरंतर सुख समृध्दि बनी रहे यही भाव है। रोम के लोग यह विश्वास करते हैं कि वायुमंडल में अच्छी आत्माएं भी घूमती रहती हैं और अपना आश्रय स्थल चूल्हे में या फायरप्लेस में बनाती हैं, इनके घर में रहने से सौभाग्य बना रहता है। इसके लिये वहॉ की महिलाएं इन आत्माओं को प्रसन्न रखने के लिये चूल्हे में कुछ आग बचा देती थीं जिससे उन्हें गर्मी मिल सके। चाकू लोहे से बना है,सबसे अधिक अंधविश्वास इसको लेकर है। चाकू साथ रखने से बुरी बलाएं दूर होती हैं। मेज पर दो छुरियॉ अगर एक दूसरे को काटें तो समझ लीजिये झगड़ा अवश्य होगा, हॉ यदि कोई बाहर का आदमी उसको हटा दे तो झगड़ा रुक जायेगा। 13 की संख्या अशुभ मानी जाती रही है यहॉ तक कि खाने की मेज पर तेरह व्यक्ति एक साथ नहीं बैठाये जाते क्योंकि ईसा को क्रूस पर लटकाने से पहले आखिरी खाना खाते समय तेरह व्यक्ति थे उनमें ईसा की मौत का कारण जू दास भी था। पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इस संख्या को अपने लिये शुभ समझा क्योंकि 13 वीं लोक सभा में वे विजयी रहे , लेकिन तेरह तारीख को ही चौदहवीं लोक सभा ने उन्हें नकार दिया। यहॉ तक कि होटलों में या बिल्डिंग में 13 नं. का कमरा नहीं होता 13वॉ फ्लोर ही नहीं होता है उसे 12 उ या सीधे 14 नं. दे दिया जाता है।

दक्षिण कोरियाई चार की संख्या को अशुभ मानते हैं। मसलन वहॉ किसी भी होटल में चौथी, चौदहवीं या चौबीसवीं मंजिल नहीं है और ना ही किसी कमरे का नम्बर चार, एक सौ चार, दो सौ चार होता है। यही नहीं ऊँची इमारतों में भी एक, दो तीन के बाद चार के स्थान पर अंग्रेजी के एफ का प्रयोग होता है। अस्पतालों में कमरा नम्बर चार या बैड नम्बर चार नहीं होता। दरअसल कोरियाई भाषा में चार का अर्थ होता है मौत। चीन और जापान में भी चार का अर्थ मौत होता है, इसलिये यहॉ भी चार की संख्या अशुभ मानी जाती है और यहॉ भी होटलों में चार नम्बर का कमरा नहीं होता। भारत में 7 का अंक शुभ है तो पश्चिम में भी 7 का अंक शुभ माना जाता हैं चीन में आठ का अंक शुभ माना जाता है ओलंपिक शुरू होने की तिथि थी 08.08.2008, रात्रि 8. 08 मिनट।

स्कॉटलैंड में माना जाता है तीन हंस साथ उड़ते जिस देश के ऊपर से गुजरेंगे उस देश का नाश अवश्यंभावी है। लाल और हरा साथ नहीं पहनना चाहिये। दरवाजे के किनारे पीठ टिका कर खड़े नहीं होना चाहिये दुर्भाग्य आता है। आग में सब्जी नहीं फेंकनी चाहिये। प्रेम पत्र क्रिसमस के दिन नहीं डालने चाहिये। किसी घर से कुल्हाड़ी जाने का मतलब है किसी की मौत। आयर लैंड में विश्वास है कि टूटी कब्र की ईंटे घर में नहीं लगानी चाहिये। पेय पदार्थ जमीन पर फैलना शुभ माना जाता है।

माल्टा में चर्च में दो घड़ियॉ लगाई जाती हैं एक सही समय की दूसरी गलत समय की यह शैतान को बहकाने के लिये है। आइसलैंड में कहा जाता है कि नाव का पीछा करती चिड़िया को मारना दुर्भाग्य का सूचक है। अविवाहित व्यक्ति अगर मेज के कोने पर बैठता है तो आगामी सात साल तक उसकी शादी नहीं होगी। गर्भवती स्त्री यदि चटके कप में कुछ पीती है तो बच्चे के होंठ खरगोश जैसे होंगे। चीनी लोगों की मान्यता है नववर्ष के दिन घर को झाड़ने का अर्थ है सौभाग्य को झाड़ देना।

नाइजीरिया वासी मानते हैं रात्रि में झाडू देना दुर्भाग्य का सूचक है जबकि सुवह उठते ही सबसे पहले घर में झाडू देने से सभी बुरी आत्माओं से छुटकारा मिलता है। किसी पुरुष को झाडू से मारने से वह नपुंसक हो जाता है जब तक कि सात बार उसी झाडू से फिर से न मारा जाये। किसी व्यक्ति के घर से जाने के बाद घर झाड़ना बुरी बलाओं से छुटकारा पाना है। जापान में माना जाता है कि सामने दांतों से कंघा पकड़ना दुर्भाग्य शाली है। सुबह-सुबह मकड़ी मारना एक मनुष्य मारने के बराबर है। बिल्लियॉ दुर्भाग्य लाती हैं। काली बिल्ली के जाने के बाद यदि एक व्यक्ति के साथ संयोगवश दुर्घटना हो गई तो उसे अशुभ मान लिया गया। काली बिल्ली कितनी दुःखी होगी कि ऐसे व्यक्ति का रास्ता काट दिया कि हमेशा के लिये बदनाम हो गई। ब्रिटेन में काली बिल्ली पालना शुभ माना जाता है प्रिंस चार्ल्स के पास काली बिल्ली

थी वह उसे बहुत प्यार करते थे एकदिन वह ऊँचाई से गिरकर मर गई चार्ल्स के मुँह से निकला 'ओ ! मेरा दुर्भाग्य' जिप्सी विश्वास करते हैं कि लांघा हुआ खाना नहीं खाना चाहिये।

रूस के राजकुमार उरुसेफ और उसकी नवविवाहित पत्नी काले सागर पर हनीमून मना रहे थे कि पत्नी के हाथ से शादी की अंगूठी फिसल कर पानी की लहरों में समा गई रूस और उरुसेफ के परिवार में विश्वास किया जाता था कि शादी की अंगूठी खोने का मतलब है पत्नी की मृत्यु। उरुसेफ ने काले सागर के इधर उधर के दोनों किनारे चालीस लाख पाउन्ड में खरीद लिये। किनारे उसके हो गये तो बीच का समुद्र और उसके तल में पड़ी वस्तुएं उसकी हो गईं। इस प्रकार अंगूठी जहाँ कहीं भी थी उसकी हो गई। लेकिन यह विश्वास उसके उत्तराधिकारियों के लिये बहुत फायदेमंद साबित हुआ क्योंकि उसके मरने के पश्चात् उसकी अंगूठी से तो उन्हें कुछ लेना देना था नहीं उन्होंने जमीन अस्सी लाख पाउन्ड में बेच दी। अमेरिका का अंडे लुढ़काने का खेल बहुत पुराना है। पहले किसान खेत में अच्छी फसल की आशा से अंडे लुढ़काया करते थे। अब यह अमेरिका के ह्वाइट हाउस में सामूहिक रूप से मनाया जाता है। रोमन कैथोलिक लोगों में विश्वास है कि चर्च की घंटियों में कुछ पराशक्ति होती है 14 वीं शताब्दी में जब प्लेग से मौत की काली छाया इंगलैंड पर छायी थी तब प्लेग को भगाने के लिये बराबर घंटियां सब चर्चों में बजाई जाती थीं। विश्वास किया जाता है कि घंटियाँ मुसीबत के समय अपने आप बजने लगती हैं। दक्षिणी फ्रांस के विषय में अपनी पुस्तक' पिक्चर्स ऑफ ट्रेवल्स ' में अलेक्जेंडर डयूमास ने लिखा है कि 1407 में राइन नदी का पुल टूटने से पहले एक अमानवीय शोर सा सुनाई पड़ रहा था जिसमें घंटियों की आवाज सबसे ऊपर थी। बीसलू , पोलैंड आदि में विश्वास किया जाता है कि अगर प्राकृतिक रूप से चर्च की घंटियां बजने लगें तो समझना चाहिये देश के किसी प्रमुख व्यक्ति की मृत्यु होगी

प्यार पाने के लिये बहुत टोने टोटके किये जाते हैं। देश हो या विदेश इनमें तरह तरह के उपकरण प्रयोग में लाये जाते हैं। लकड़बग्घे की आंतें , बछड़े का दिमाग, भेड़िये की पूंछ का बाल, सांप की हड्डियां, उल्लू के पंख आदि मुख्य वस्तुएं हैं। फूल और जड़ी बूटियों से प्रेम जंजीरें बनाई जाती हैं पूर्ण फल प्राप्ति के लिये आवश्यक है कि उन्हें निश्चित समय पर ही तोड़ा जाये। इंगलैंड में गेंदे के फूल को अप्रतिम प्यार का प्रतीक माना जाता है। दक्षिण पूर्वी इंगलैंड में अपने पति या पुरुष मित्र को वश में करने के लिये स्त्रियाँ अपने पैरों से गड्ढा खोदकर उसमें गेंदे के बीज डालकर पैर से मिट्टी से ढक देती हैं। अगर पौधा फूट जाता है तो मनोरथ सफल होता है नहीं तो असफल।

प्राचीन काल में टमाटर का नाम 'सुनहरा सेब' था और उसे प्रेम का सेब माना जाता था लेकिन एक समय आया उन्हें जहरीला माना जाने लगा और करीब दो सौ साल तक टमाटर का उपयोग बन्द रहा करीब, 1803 के आस पास ही टमाटर पुनः उपयोग में लाया गया।

प्यार की देवी अफ्रेदिति की उत्पत्ति सागर से मानी गई है इसलिये सागर के खाद्य पदार्थ घोंघे, आक्टोपस आदि भी प्यार के प्रतीक माने गये हैं। सबसे अधिक दिनों तक जो विश्वास बना रहा था वह था गेंडे का सींग। भारतीय गेंडे का शिकार केवल गेंडे के सींग के लिये किया जाता रहा है। यह सोने से अधिक कीमत का है और अभी तक काम शक्ति के लिये इसका उपयोग भारत और पूर्वी देशों में किया जाता है।

बीकानेर में एक मंदिर है कढ़ाई मां का। इस मंदिर में दस हजार से ऊपर चूहे हैं। विश्वास किया जाता है कि चूहे पूर्व जन्म के चारण हैं। अगर कोई चारण कवि मर जाता है तो चूहा बन कर वहाँ पहुंच जाता है। और अगर कोई चूहा मर जाता है तो एक कवि का जन्म होता है। अगर कोई चूहा किसी भक्त के सिर पर पर चढ़ जाये तो उसके लिये अच्छा संकेत है और अगर किसी से चूहा मर जाता है तो उस वजन की चांदी चढ़ानी पड़ती है।

पपुआ के पास ट्रोबिआन्ड द्वीप में लड़की अपनी पसंद के लड़के को जाकर काटती है। न्यू इंगलैंड हालैंड, स्विट्जरलैंड, स्कॉटलैंड में विवाह से पूर्व दम्पति को एक बिस्तर पर कपड़े सहित अलग अलग कंबल में लिपटकर सोना होता है।

सोलोमन द्वीप पर लड़की को शादी से पहले पिता की निगरानी में कई साल तक पिंजरे में बंद रहना पड़ता है।

पहले बुरी नजर से बचाने के लिये फांसी के फंदे की रस्सी को लाकर उसको जलाकर राख घोलकर पिलाई जाती थी। अगर किसी को अपने दुर्भाग्य का कारण बुरी नजर लगती थी तो जिस पर शक होता था उसके पैरों के निशान पर पानी फेंकता था। पोप प्यूस नवें, 1792-78 के विषय में कहा जाता था कि वह जिस पर आंख ठहरा देता था वह मर जाता था। फ्रांस का राजा अलफांसो भी बुरी नजर के लिये कुख्यात था। 1930 में वह सरकारी यात्रा पर इटली आया। अनेकों जहाजी बेड़े जो उसे सलाम देने आये बह गये। एक खान में तो विस्फोट हो गया।

एक पुरानी तोप जब सलामी के लिये दागी गई आसपास के लोगों को मौत के घाट उतारते हुए फट गई। एक नौसैनिक अधिकारी राजा से हाथ मिलाने के तुरंत बाद मर गया। ग्लैनो झील की यात्रा के दौरान एक बांध टूट गया जिससे पचास व्यक्ति मर गये और पांच सौ बेघर बार हो गये।

तानाशाह मुसोलनी अलफांसो की बुरी नजर से बचने के लिये अलफांसो से व्यक्तिगत रूप से मिलने से कतराता रहा। सारे कार्य माध्यम ही माध्यम से किये। अभिनेताओं में सौभग्य और दुर्भाग्य का खेल बहुत चलता है।

(शेष पृष्ठ 56 पर)

सीताराम शर्मा 'सिद्धार्थ' की मिट्टी की खुशबू में रची दस कविताएँ

(1)
सुखद है यह सोचना भी
कि सृष्टिकर्ता बन गया था
एक किसान
हल चलाकर बांट दिया था उसने
इस दुनिया को सात बड़े टुकड़ों में
ताकि बराबर किया जा सके
सबके हिस्से का पानी
सबके हिस्से का जीवन !

(2)
खींचना वास्तव में कला है
कर्षण पहली वैज्ञानिक दृष्टि है
कृषक सभ्यता और जंगल के बीच का
सेतु है
वही जान सका कि कैसे खींचा जा
सकता है
मिट्टी से अनाज
और कैसे कम की जा सकती हैं
दुनिया में
बेजुबानों की हत्याएं

(3)
जुंगडा (जूं) निश्चित दूरी बनाता
सहकर्मियों का एक योजक है
कभी सोचता हूं कि अंग्रेजी का 'जॉइन'
और 'योक'
कितने पास हैं इसके
योगबल यही है

(4)
ट्रांसफॉर्मेशन आसान नहीं होता
जमीन जोतने के लिए
पशु को मनुष्य और
मनुष्य को पशु होना पड़ता है

(5)
नजर आगे की ओर सीधी हो
कंधे पर कितना भी बोझ हो
गुलामी के कितने ही बंधन हों
साथी का बराबर सहयोग हो
कोई बस थोड़ा बताता रहे
बिना पीछे देखे
बैलों की जोड़ी भी लगा सकती है
धार से धार मिलाती हुई
जीवन की स्वर्णिम रेखाएं !

(6)
दिन भर की थकान
पल भर में उतर जाती है
जब हल खोलने के बाद
दोनों बैलों के बीच खड़े होकर
उनकी पीठ पर दी जाती हैं
हृदय से भरपूर थपकियां
ये शाबाशी उनके पुट्ठें को और मजबूत करती है
काम के अगले दिन के लिए
घर्षण का दर्द गर्दन पर सूखने लगता है
केवल स्पर्श से
दो मीठी पिन्नियों में बांट ली जाती हैं
मुक्ति और समापन की सारी खुशियां
उनकी दो चार कुलांचों में नाच उठता है आसमान
मुस्कुराते बतियाते हंस पड़ता है मिट्टी से सना
मिट्टी का आदमी

(7)
जमीन जानती है
सृजन का ज्ञान
ये उपजाती है अन्न
जैसे मां जानती है
मन का विज्ञान
इसकी एक तस्वीर भर
किसी हृदय में
प्रस्फुटित कर सकती है
सरस्वती !

(8)
गौर से देखता हूं
तो पाता हूं
जुते हुए हैं सब
बंधे हैं गर्दन पर सबकी
जुंगड़े
सबकी जमीन अलग-अलग है !

(9)
मिट्टी की नमी
ज्यादा वक्त नहीं टिकती
जोत ली जाए
भुजाओं में बल के रहते
अपने हिस्से की जमीन
खाली जमीन पर केवल
झाड़-झंकाड़ उगते हैं
नस्लें गालियां देती हैं

(10)
मुट्ठियां भर भर
बीज बोते
बुदबुदाते जाते थे
भलकू और चानणू माम
'पज माटियै सबीयै भागै
पन्छीयै भागै माणुयैं भागै'
लोहे के बैलों
और पत्थर के इंसानों का
अब मिट्टी से ये संवाद कहां !

सैट नं. 37, टाईप-3, ब्लॉक-ई,
पी.डब्ल्यू.डी. कॉलोनी,
कुसुम्पटी, शिमला, हिमाचल प्रदेश-171 009,

(आखिरी कविता में भलकू और चानणू हमारे घर के सदस्यों जैसे दोनों सेवक हाली यानी हल चलाने वाले थे जिन्हें मैं अपना सबसे करीबी सखा मानता था और इनको माम यानी मामा कहता था। हल चलाने से पहले बीज बोते हुए ये कहते थे कि हे धरती सभी के भाग्य से अन्न पैदा कर मनुष्यों के भाग्य से और पशु-पक्षियों के भाग्य से खूब फल फूल जा)

कविता

गांव की माटी

हितेंद्र शर्मा

गुनगुनी धूप पर
हरी घास का बिछौना
बेफिक्री के आलम में
खुले आसमां तले सोना

दिल से हँसना
दिल से ही रोना
क्षणिक नाराजगी
अटूट बंधन का होना

कंटीले पथ पर चलना
गिली मिट्टी का खिलौना
कंदमूल बड़े चाव से खाना
गुफाओं को घर बनाना
कपड़े की गेंद बनाकर
खेल की दुनिया में खो जाना
कागजी कश्ती और फूल बनाकर

आसमां में अपने जहाज उड़ाना
गिल्ली डंडा, लंगड़ी, खो-खो
कबड्डी, कुश्ती में दांव लगाना
तंदुरुस्ती गांव, गली-मोहल्ले
कंचे, गुट्टे, पोशम्पा खेलते जाना

मिट्टी की सुंदर लिपाई
रंगोली से आंगन सजाना
ढेर सारे चित्रों की नकल उतारना
दीपमाला से हर त्योहार मनाना

तख्ती सुखाना, लेप लगाना
स्लेट-पेंसिल से हुनर दिखाना
नीली-काली स्याही की पुड़िया
दवात भरना और कलम बनाना

कविता सुनाना, पहाड़े गुनगुनाना
पढ़ना-लिखना, कंठस्थ कर जाना
हर पल मुस्कान चेहरे पर रखना
पगडंडियों में गिरते फिसलते चलते जाना

दूध, दही, लस्सी, घी, मक्खन
गौमाता के संग चरागाह जाना
सब्जी, फल चहुँ ओर हरियाली
बांसुरी की मधुर ध्वनि में झूम जाना

माँ और मिट्टी सबसे न्यारी
जीवन का इनसे बंध जाना
चारों तरफ स्नेहिल मौसम
गुरुजनों का सानिध्य पाना

पिता के साये में जीना
ममता के आंचल में सोना
गांव की माटी से जुड़कर
मेरा दिल चाहे फिर बच्चा होना।

गांव व डाकघर किंगल, तहसील कुमारसैन, शिमला, हिमाचल प्रदेश-172024
मो. 0 94180 97815

कविता

पहाड़, पेड़ और मौसम

विमल कुमार शर्मा

पहाड़ों की ऊंची चोटियां और बर्फीली वादियां
गुनगुनाते झरने और जवान बेपरवाह नदियां
ऊपरवाले का बहुरंगी कैनवास
देवी-देवता करते हैं जहां निवास
इनके साथ रहते हैं यहां के सीधे सादे वासी
गर्मियों में घूमने आते हैं, देश विदेश से प्रवासी
सर्पीली घुमावदार तंग सड़कें शाम तक पहुंचाती हैं
उन ठिकानों तक जो आंखें बहुत करीब बताती हैं
रेल, बस या कार की खिड़की वाली तरफ घेरते हैं
कौतूहल अपने चरम पर है, खुश हैं सभी
कौंधती हैं आंखें गर्दन उठती तो झुकती कभी
ठंडी हवाएं स्पर्श करती हैं जब भी
आकाश इतना नीला भी होता है, अच्छा सा आसमानी
पहली बार पहाड़ पे मैदान से आए बच्चे को हुई हैरानी
बाजू खींच के अपनी मां से बोला बच्चा
देखो छोटा सा सफेद बादल है कितना अच्छा
सूरज से आंख मिचौनी खेल रहा है
मां ने मोबाईल से आंख उठा के देखा पल भर को
बच्चा क्या बोल रहा है?
फिर बिना कुछ कहे मोबाइल की दुनिया में खो गई।

देवदार के पेड़, खड़े हैं शान से सिर उठाए
अपने पड़ोसी आकाश और पर्वतों से बतियाएं
हवाओं के झोंकों को भेजते हैं बादलों को ढूंढने
लाएंगे खबर सरिता और सागरों से पूछके
कब आएंगे बादल आकाश के घर मेहमान बनके
बरसेंगे जब बादल, खुशी से झूमेंगे देवदार
कितने खुश हैं देवदार
उनके पूर्वज भी हैं युवा और मस्त
सच में डाऊन टू अर्थ हैं
जड़ें गहरी हैं आपसी रिश्ते हैं स्वस्थ।

पहाड़ों की सर्दियां खूबसूरत हैं
चांदी बरसती है आकाश से
चारों तरफ सच के जैसा सफेद
जैसे खुदा ने दौलत बिखेरी दोनों हाथ से
सर्दी की शाम को, गरम बुखारी की तपिश
रात भर टीन की छत पर पड़ती वर्षा का संगीत
निद्रा देवी के गोद को मखमली बनाता है
बरसात में बादलों का प्रेम साफ दिखता है
वो आसमान में इंद्रधनुष बन के इठलाता है।

**वैज्ञानिक-ई, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171 002, मो. 0 98162 50166**

अशोक कालिया की ग़ज़लें

एक

भीड़ में भी मैं नहीं तनहा हुआ
मेरे भीतर है कोई पसरा हुआ

दी खुशी मुझको खुदा ने मुश्त भर
और गम कि ता-उफ़क़ फैला हुआ

शोरो- गुल पहलू का बरबस थम गया
दिल का होना अब कोई किस्सा हुआ

फ़क़त मुझको ही समझ आता नहीं
पानी महंगा खून क्यों सस्ता हुआ

इब्तिदा-ए-इश्क़ हो गई इंतिहा
मतला कहने था चला मक्ता हुआ

रूह जब-जब भी मुसव्विर है हुई
कैनवस पर इक वही चेहरा हुआ

दूर तक मेरा रहा वो हमसफर
पास मंजिल के अलग रस्ता हुआ

मुश्त : मुट्ठी, ता-उफक़ : क्षितिज तक, फ़क़त : केवल, इब्तिदा-ए-इश्क : प्रेम का आरम्भ, इंतिहा : अंत या पराकाष्ठा, मतला : गजल का पहला शे'र, मक्ता : गजल का आखिरी शे'र, मुसव्विर : चित्रकार।

दो

गांव जब-जब शहर गया होगा
जहर सांसों में भर गया होगा

नफरतों की शदीद आतिश से
जल अमन का शजर गया होगा

लफ़्ज़ जानलेवा रहे होंगे
बेवजह न कोई मर गया होगा

रूह बेसबब तड़पी नहीं होगी
कोई खंजर उतर गया होगा

आईना दिल का एक ठोकर से
टुकड़े-टुकड़े बिखर गया होगा

आशना जो नहीं था खुद से ही
अक्स अपने से डर गया होगा

दरो-दीवार जो लिपट गए उससे
बाद मुद्दत के वो घर गया होगा

शदीद आतिश : प्रचंड अग्नि, शजर : वृक्ष, आशना : परिचित, अक्स : प्रतिबिम्ब।

तीन

अपनों, अगियारों ने बेशक लाख भड़काया हमें
नफरतों को सींचना ताहम नहीं आया हमें

हम समंदर हैं, हमारी खू में हैं खामोशियां
कब किसी ने शोर नदियों-सा किए पाया हमें

तोड़ पाया न हमारा अज़्म कोई जौर भी
जालिमों ने मौत का भी खौफ दिखलाया हमें

कोयलों को दे रहे कौए तालीमे-मौसीकी
इक यही अंदाज़ बस उनका नहीं भाया हमें

हम खुदाई की रहे करते परस्तिश उम्र भर
अहबाब ने गो मजहबों, फ़िरकों में उलझाया हमें

हमको भी दो एक फन पर कुछ तो हासिल था उबूर
हुनर न लेकिन खुशामद का कभी आया हमें

है अभी मौका बिठा लो मिज़गां पर अब भी इन्हें
फिर मयस्सर हो न हो मां-बाप का साया हमें

अग़ियार : पराए (गैर का बहुवचन), ताहम : तथापि, खू : आदत, अज़्म : संकल्प, जौर : अत्याचार, अंदाज : ढंग, खौफ : भय, तालीमे-मौसीकी : संगीत की शिक्षा, खुदाई : सृष्टि, परस्तिश : पूजा, अहबाब ने : मित्रों ने(हबीब का बहुवचन), मजहबों : धर्मो, फिरकों : सम्प्रदायों, फन : कला, मिजगां : पलकें, मयस्सर : उपलब्ध।

24, बसोली मार्ग, रक्कड़ कॉलोनी,
ऊना, जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश-171303
सचलभाष : 0 94180 00006

कुलदीप गर्ग 'तरुण' की ग़ज़लें

एक

मुझको भी बहारों का अहसास हुआ होता,
गर फूल कोई दिल की बगिया में खिला होता।

चुटकी में ही कट जाता ये वक़्त, सुना होता,
कुछ हाल हमारा और कुछ अपना कहा होता।

पत्थर ही कहूँगा मैं तुम लाख बुरा मानो,
गर इश्क जिया होता इंसान कहा होता।

फिर कुछ न कमी रहती घरबार भरा होता,
साँचे में अँधेरे के गर मैं भी ढला होता।

ये ज़ीस्त महक उठती गर लफ्ज मुहब्बत का,
तूने भी कोई अपनी राहों में लिखा होता।

ये फूल कहे खुश्बू होती न अगर मुझमें,
गुलदान में ओरों के मैं भी न सजा होता।

कलियों की हिफाजत गर की होती, सुनेंगे हम,
गुलशन में हमारे भी इक फूल खिला होता।

दो

सच का यारो बयान हैं हम लोग,
उस खुदा का निशान हैं हम लोग।

खा गयी देश को सियासत ही,
क्यों भला, बेजुबान हैं हम लोग।

धर्म जब राह है मिलन रब की,
क्यों जमीं आसमान हैं हम लोग।

दर्द का रिश्ता कुछ बचा ही नहीं,
यार खाली मकान हैं हम लोग।

वो कहे पेट जिनका भरता नहीं,
मुफलिसों की जुबान हैं हम लोग।

जिंदगी मौत ने कभी बख्शी ?
कर्म का इम्तिहान हैं हम लोग।

तीन

जाना पहचाना रस्ता है,
मंजिल भी कब पोशीदा है।

बस इतना बतला दे मुझको,
क्या गम की भी कोई दवा है।

दुनिया ने अपनी बात कही,
मिजाज तेरा क्यों बिगड़ा है।

जीने वाले को जीवन का,
हर पल ही मीठा लगता है।

कद ऊँचा है दौलत का, और,
झूठा भी यारो सच्चा है।

प्यास लिए बहता है वो ही,
जीवन जिसका भी दरिया है।

दिल की रोई है जमीन तरुण,
पानी आँखों से बरसा है।

चार

कोई रोना कोई हँसना नहीं है,
कहानी में कोई बच्चा नहीं है।

उसे मालूम है कीमत सपन की,
कई रातों से जो सोया नहीं है।

चढ़ा है झूठ ही सबकी जबाँ पर,
सदाकत का कहीं चर्चा नहीं है।

नफा नुक्सान इसमें किसने देखा,
मुहब्बत है कोई पेशा नहीं है।

समझ उसको कहाँ इंसानियत की,
जो आखर प्रेम का समझा नहीं है।

बहल जाए तुम्हारी बात से जो,
मेरा दिल है कोई बच्चा नहीं है।

नफा नुक्सान बेशक देखिए, पर,
ये लहजा आपका अच्छा नहीं है।

गांव वनिया देवी, डा. बखालग, तह. अर्की, जिला सोलन,
हिमाचल प्रदेश-173 208, मो. 0 98164 67527

कहानी

नया सवेरा

◆ सुशील लोहिया

पोस्टमैन की आवाज सुन कर राधेश्याम कमरे से बाहर आए। आज पोस्टमैन उनके लिए क्या ले आया है। अभी पोस्टमैन से पूछना चाहते थे तभी पोस्टमैन ने उनसे कहा, "लो बाबा आपकी बुढ़ापा पेंशन आई है। तीन महीनों के पैंतालीस सौ रुपये।" पोस्टमैन ने अपने बैग से पांच सौ रुपये के नौ नोट निकाल कर उन्हें देकर फार्म पर हस्ताक्षर करा लिए।

राधेश्याम ने अपने कोट की जेब में हाथ डाला। जेब से बीस रुपये का एक नोट निकाला। उसे पोस्टमैन को देते हुए कहा, "लो बेटा, तुम भी मुंह मीठा कर लेना।"

पोस्टमैन इनकार करता रहा, लेकिन राधेश्याम ने जबरदस्ती नोट दे दिया था। पोस्टमैन चला गया। राधेश्याम पैसे लेकर कुर्सी पर बैठ गए। तभी पत्नी भी कमरे से बाहर आई। पति के हाथों में रुपये देखकर खुश हुई। उसने जल्दी से पति से सवाल कर दिया, "क्या नागेंद्र ने पैसे भेजे हैं।" बेटे का नाम सुनकर राधेश्याम चिढ़ गए थे। फिर गुस्से से बोले, "हमारे बेटे में इतनी दया कहां है जो अपने बूढ़े मां-बाप का ख्याल रखे। अरे, यह पैसा तो सरकार ने मुझे बुढ़ापा पेंशन के दिए हैं। सरकार ने सत्तर (70) साल के हो जाने पर हरेक को पेंशन के पंद्रह सौ रुपये महीना देने का फैसला किया है। मैंने भी फार्म भरा था। अब मुझे पेंशन लग गई है। आज पैंतालीस सौ रुपये तीन महीने का मनिऑर्डर आया है।"

एक पांच सौ का नोट पत्नी को देते हुए कहा, "इसे अपने लिए रख लो। कभी जरूरत पर काम आएंगे।" पत्नी नोट लेकर कमरे में जाने लगी तभी राधेश्याम ने कहा, "अब इस खुशी के मौके पर एक कप चाय तो पिता दो।"

पत्नी मुस्कुराती हुई कमरे में चली गई। राधेश्याम पैसे डाल कर सोचने लगे यदि सरकार बुढ़ापे का सहारा नहीं बनती, तब बूढ़े व्यक्ति को कितनी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। इसके वह स्वयं भुक्तभोगी हैं। आज बेटा भी कितना बेगाना हो गया है। बेटे के लिए उसने क्या-क्या नहीं किया। उसे अपना अतीत स्मरण हो आया।

गांव में उसका जन्म हुआ था। तीन भाई थे। पिता की मौत के बाद घर की हालत बिगड़ गई थी। तीनों भाई छोटे थे। मां ने लोगों के खेतों में काम करके उन्हें पाला। ज्यों-ज्यों भाई बड़े होते गए, वह भी मजदूरी करने लगे थे। जिससे घर के हालात सुधरे थे। घर में थोड़ी जमीन थी। उस पर भी सभी मेहनत करके फसलें उगाते थे। धीरे-धीरे दोनों भाइयों का विवाह हो गया। दोनों भाई ब्याह के बाद अपना हिस्सा लेकर जुदा हो गए। अपना अलग घर बना लिया था। अब वह ही मां के साथ रहता था। मां बूढ़ी हो गई थी। अब घर का सारा बोझ उस पर आ गया था। वह गांव में वन विभाग द्वारा नर्सरी तैयार कर जंगल में पेड़ लगाने के लिए मजदूरी करने लगा था। गांव में ही काम था इसीलिए सारा काम ठीक चला था। तीन माह बाद वन विभाग का काम खत्म हो गया। वह बेकार हो

गए थे। नए काम के लिए शहर जाना चाहते थे। तभी दूसरे दिन फारेस्ट गार्ड ने उनसे कहा कि शहर में विभाग में मजदूरों की जरूरत है। यदि काम के लिए जाना चाहते हो तब वह उन्हें ले जाएगा। गांव के चार-पांच लड़के और वह गार्ड के साथ शहर जाने को तैयार हो गया था। अगले दिन गार्ड लेकर ऑफिस गया। उन्हें दैनिक मजदूरी पर रखा गया। मजदूरी बीस रुपया दैनिक थी। सवेरे नौ बजे से शाम पांच बजे तक काम करना पड़ता था। दिन को आधा घंटा विश्राम का मिलता था जिसमें वह घर से लाई रोटी खाता था। काम के लिए कभी जंगल में पौधे लगाने जाते, कभी सड़क बनाने। कभी विभाग की बन रही बिल्डिंगों के काम पर जाना पड़ता। शाम को पांच बजे पांचों युवक साथ गांव में वापिस आ जाते थे। घर रात को पहुंचते थे। मां रोटी तैयार करके रखती थी। मां अब ज्यादा बूढ़ी हो गई थी। ज्यादा काम नहीं हो पाता था। इसीलिए गांव में ही राधा से शादी हो गई। अब मां को आराम मिला था। उसे भी समय पर रोटी मिल रही थी। हर साल उसकी दैनिक मजदूरी पांच रुपया बढ़ जाती थी। अब उसे चालीस रुपये दैनिक के मिलते थे। उसका एक बेटा भी हो गया था। खुशी से दिन बीत रहे थे। एक रोज मां बीमार पड़ी। बीमारी ऐसी हुई फिर मां उठ नहीं पाई थी। इलाज कराने के बाद भी मां की मृत्यु हो गई थी।

मां की मौत के बाद अब राधा पर सारा काम आ पड़ा था। वह काम पर निकल जाता था। राधा बेटे के साथ सारा घर संभालती थी। कभी बेटा बीमार हो जाए, उस समय कितनी मुश्किलें होती थीं। वह काम पर नहीं जाए तब मजदूरी कट जाती थी। गांव में काम नहीं था। इसीलिए वह राधा तथा बेटे को अपने साथ लेकर शहर आ गया। और एक कच्चे मकान में कमरा सौ रुपया महीना किराए पर ले लिया था। गांव की जमीन भी भाइयों को बेच दी थी। एक लाख रुपया दिया था भाइयों ने। उसे लेकर वह घर बनाने के लिए जगह ले लेगा। उस वक्त शहर इतना फैला नहीं था। उसका ऑफिस भी शहर से तीन किलोमीटर दूर ही था। गांव में ही उसे भी एक प्लाट जिसमें दो कमरे बन सकते थे, एक लाख में मिल गया था। उसने गांव से लाए पैसों से जगह को खरीद लिया। फिर यही सोचा कि मेहनत करके अपना घर बना लेगा। अब परिवार को शहर ले आने से शाम को उसे आराम करने का समय मिल गया। अब शाम को वह अपना समय बेटे के साथ बिताता और राधा रोटी बनाती थी।

समय कितनी तेजी से बदल गया, इसका पता ही नहीं चला।गांव का वह खाली स्थान जहां कुछ नहीं था, वह ठेकेदार ने खरीद लिया। फिर वहां प्लाट बना कर बेचने लगा। शहर में जगह की तंगी से लोग बाहर निकलना चाहते थे। इसी लिए प्लाट हाथों हाथ बिक गए। वही जगह जो कुछ हजार रुपये बीघा नहीं बिकती थी, अब लाख रुपया बिस्वा हो गई। उसके प्लाट को भी खरीदने कई आए लेकिन उसने अपना मकान बनाने का निर्णय किया था। वह निर्जन स्थान शीघ्र ही मकानों से भर गया। अब यहां चहल-पहल हो गई थी।

दो साल बाद ही उसे दैनिक मजदूरी करते हुए दस साल हो गए। अब उसकी रेगुलर पोस्ट हो गई थी। वेतन हो गया था दस हजार महीना। उसकी पोस्ट वन विभाग के कार्पोरेशन विभाग में हुई थी। यहां पेंशन नहीं थी लेकिन पी.एफ. दुगुना मिलना था। वह खुश था। वन विभाग के लकड़ी, कोयला स्टोर में चौकीदार बन गया था। कभी दिन की कभी रात को चौकीदारी करनी पड़ती थी। पक्की नौकरी होने से विभाग से मकान बनाने के लिए लोन मिल गया। दो कमरों का पूरा सैट तैयार कर दिया था। पैसा हर माह उसके वेतन से कट जाने लगा था। अब उसका बेटा भी स्कूल में पढ़ने लगा था। उसकी इच्छा थी कि बेटे को पढ़ा कर अच्छी नौकरी मिले। अब उसे पूरी छुट्टियां भी मिलने लगी थीं। उसे बेकार बैठने की आदत नहीं थी। अब पास ही कॉलोनी बन गई थी। मकानों की भरमार थी। इसीलिए वह नौकरी के साथ सब्जी बेचने का काम भी करने लगा। वह सब्जी मंडी से सब्जी लाकर कॉलोनी में बेच देता था। उसकी आय बढ़ गई थी।

बेटा भी पढ़ाई में तेज था। उसने सरकारी स्कूल से जमा दो अच्छे नंबरों से पास कर ली थी। टेस्ट के लिए कोचिंग लेकर इंजीनियरिंग का टेस्ट पास कर लिया। उसे इंजीनियरिंग की सीट मिल गई। उस दिन जब वह मिठाई बांटने लगा, तब सभी परिचित लोगों ने उसे बधाई देते हुए कहा था कि यह तुम्हारी मेहनत और ईमानदारी का फल है जो लायक पुत्र मिला है। वह हंसकर सबका धन्यवाद करता था। बेटा पढ़ने के लिए चला गया। अपने वेतन का अधिकांश पैसा वह बेटे को भेजता रहा। अब वेतन पंद्रह हजार हो गया था। सब्जी बेच कर भी पैसा कमा लेता था। अब बेटे की पढ़ाई तथा घर आकर रहने के लिए ऊपरी मंजिल पर एक कमरे का सैट बना लिया था। बेटा जब भी छुट्टी पर घर आता था, अब वहीं रहता था। समय पर बेटे की पढ़ाई पूरी हुई और शीघ्र ही एक अच्छी कंपनी में इंजीनियर की नौकरी भी मिल गई।

बेटे की नौकरी लगते ही उसकी शादी के लिए रिश्ते आने लगे थे। वह भी चाहता था कि बहू आ जाए। उसने बेटे से शादी के लिए कहा और आए रिश्तों के बारे में बताया था। लड़का चुप रहा था। फिर एक दिन उसे समाचार मिला कि लड़के ने अपनी पसंद की लड़की से कोर्ट में शादी कर ली है।

उसने शादी के अवसर पर बेटे-बहू को घर बुलाया और धाम का आयोजन किया। बेटे-बहू के साथ अन्य दोस्त आए थे। बेटे-बहू को घर के उसी कमरे में रखा और उसके साथ आए मेहमानों को होटलों में रखा था। दूसरे दिन जब मेहमान जाने लगे, उसी समय बेटा-बहू भी जाने को तैयार हो गए थे। उसने बेटा-बहू को कुछ दिन रहने को कहा लेकिन काम का बहाना करके दोनों मेहमानों के साथ ही चले गए थे। बाद में पता चला कि बहू को यहां

रहना ठीक नहीं लगा। इसीलिए चली गई। फिर कभी यहां नहीं आई। उसका बेटा ही कभी कभी आकर उनसे मिल लेता था।

तीन साल बाद उसकी रिटायरमेंट हुई। रिटायरमेंट के आयोजन पर उसने धाम दी थी। बेटा बहू भी बुलाए थे। बहू नहीं आई थी। बेटा अकेला ही आया था। उसने बताया कि उसका बेटा हुआ है। छोटे बच्चे के साथ सफर करना मुश्किल था इसीलिए वह अकेला ही आ पाया था। पोते की खुशी में बहू के नहीं आने का उसे दुःख नहीं हुआ था।

रिटायरमेंट के बाद उसे जमा फंड के दस लाख रुपये मिले थे। उसने उन पैसों को फिक्स कराकर ब्याज से ही घर चलाने का निर्णय लिया था। लेकिन एक दिन उसका बेटा फिर घर आया था। उसने मां से कहा था कि वह घर बनाने के लिए जमीन खरीदना चाहता है। उसके विभाग के कई लोग जमीन खरीद रहे हैं। एक ठेकेदार जमीन खरीद कर अब प्लाट बना कर बेच रहा है। वह जगह अच्छी है। अच्छी कॉलोनी बन जाएगी। वहां लोगों की होड़ लगी है। सस्ती है। चार कमरों के सैट के लिए दस लाख का प्लाट मिलेगा। उसने बताया कि जहां वह रहता है, वहां धीरे-धीरे जमीन की कीमत बढ़ रही है। कल को इसी जगह के दाम दुगुने हो जाएंगे। यदि पिता जी अपना रिटायरमेंट का पैसा मुझे दे देंगे, तब मैं वहां प्लाट ले लूंगा। यही नहीं, उसने कहा था कि हर महीने वह उन्हें खर्च के लिए दस हजार रुपये दे दिया करेगा। उसकी मां उसकी बातों में आ गई और उससे कहा था कि बेटा ठीक कह रहा है। अगर पैसा उसके काम आएगा तब दे ही दें। वह हमें हर माह खर्च का पैसा दे देगा। आखिर नहीं चाहते हुए भी उसने अपना सारा पैसा बेटे को दे दिया। बेटा चला गया था। बाद में पता चला कि बेटे ने जगह ले ली है और घर बनाने के लिए पचास लाख का लोन भी स्वीकृत करा कर काम शुरू कर दिया है। उसे यह जानकर खुशी हुई थी। सात महीने में ही मकान बन गया था। घर की प्रतिष्ठा कराने पर बेटा उसे और मां को लेने स्वयं आया था। दोनों खुशी-खुशी बेटे के साथ चले गए। वहां जाकर उन्हें दुःख हुआ था। वहां उन्हें कोई मान-सम्मान नहीं दिया गया। प्रतिष्ठा वाले दिन उन्हें एक कमरे में बैठा दिया गया था। सिर्फ नौकर ही उनकी सेवा कर रहा था। बेटा बहू आ रहे लोगों का स्वागत कर रहे थे। एक बार भी उनके कमरे में नहीं आए। कब प्रतिष्ठा की रस्म पूरी हुई। कब खाना बना, उन्हें कमरे में बैठे रहने से पता नहीं चला था। नौकर ही उन्हें खाने की थालियां ले आया था। रात भी हो गई थी। मेहमान भी चले गए थे। वह अपने कमरे में बैठे थे। बेटे-बहू के लड़ने की आवाज सुनाई दी थी। बहू पति से साफ कह रही थी, अभी बूढ़े-बूढ़िया को यहां रहना उसे अच्छा नहीं लगता। हमारा स्टेट्स क्या है। इनके रहने से हमारी इज्जत घट जाएगी। उन्हें फिर से वापिस घर भेज दें। बेटा बहू से डरता था। इसीलिए सवेरे उठ कर उनके कमरे में आया। और बोला था, पिता जी, मैं चाहता हूं कि अब आप साथ रहें परंतु अभी घर का काम रह गया है। जो फिर से शुरू होगा। मैं ऑफिस जाऊंगा। आपकी बहू को घर और मजदूरों का काम देखना पड़ेगा। घर में काम होगा। आपकी ठीक से सेवा नहीं हो पाएगी। इसीलिए मैं चाहता हूं कि जब तक घर पूरी तरह तैयार नहीं हो जाता, आप वापिस अपने पुराने घर में आराम से रहें। मैं हर माह खर्चे के पैसे भेज दूंगा। फिर उसी वक्त उनका सामान उठा कर उन्हें स्टेशन तक छोड़ने चल पड़ा था।

वापिस आते हुए उन्हें दुःख हुआ था, कि जिस बेटे के लिए इतना कुछ किया वह एक दिन भी उन्हें घर नहीं रख सका। बस स्टैंड आकर उसने दो टिकट लेकर उन्हें दिए साथ ही पांच हजार रुपये खर्चा के दे दिए थे। दोनों को गाड़ी में बैठा कर घर वापिस चला गया था। वह दोनों अपने शहर अपने मकान में आ गए थे। बेटा एक दो महीने खर्चा के लिए पांच हजार रुपये महीना भेजता था। फिर दो माह बाद वह भी बंद कर दिया। आखिर घर चलाने के लिए उन्होंने ऊपर वाला सेट दो हजार रुपया महीना किराये पर चढ़ा दिया। अब उसी किराये से घर चल रहा था। कितनी कठिनाइयां उठानी पड़ी थीं। बेटे को पैसा भेजने को कहा था। उसका जवाब आया कि अभी खर्चे बढ़ गए हैं। इसीलिए कुछ समय तक पैसा नहीं भेज सकता। घर की तंगी दूर करने के लिए पास पैसा नहीं था जिससे कोई काम कर सकूं। उम्र भी इतनी हो चुकी थी कहीं काम मिलना मुश्किल था।

आज आई पेंशन... "लो चाय ले लो।" पत्नी की आवाज सुन चौंका।

पत्नी से चाय लेकर पीने लगा। पत्नी भी पास बैठी थी। चाय पीते हुए उसने पत्नी से कहा, "राधा हम बेटे पर आश्रित हो गए। लेकिन बेटा हमें भूल चुका है। अब मैंने फैसला किया कि आश्रित होकर नहीं मेहनत करके आत्मनिर्भर होकर जीऊंगा। मुझे पेंशन लग गई। कल का सवेरा मेरा नया सवेरा होगा। मैं सब्जी मंडी जाकर सब्जी खरीद कर यहां लाकर बेचना शुरू करूंगा। मुझे आशा है मेरी मेहनत अवश्य रंग लाएगी। पत्नी खाली गिलास उठाकर मुस्कुराती हुई कमरे में चली गई थी।

गांव देहरीधार, डा. कोटमोरस, जिला मंडी,
हिमाचल प्रदेश-175 001, मो. 0 97365 98269

कहानी

जिंदगी की छांव

◆ डॉ. दीपा त्यागी

सफेद एम्बेसेडर कार घर के दरवाजे पर आ कर रुकी, तो शोभा देवी के होठों पर मुस्कान दौड़ गई, वे आंखों पर अपना चश्मा ठीक करती हुई उठीं और घर के मुख्य द्वार की तरफ चल पड़ी। इससे पहले कि वे दरवाजा खोलती गौरी और मुन्नू के साथ राजेश ने दौड़ कर दरवाजा खोलते हुए कहा, "आइए पापा, आपका स्वागत है।"

महेंद्र जी आज दफ्तर से अपने रिटायरमेंट के स्वागत-विदाई समारोह से लौटे थे उनके दफ्तर के कुछ सहकर्मी उन्हें घर तक छोड़ने आए थे। गले में पहनाई गई गुलाब और गेंदे के फूलों की माला उनके हाथ में झूल रही थी जिसे उनकी पोती गौरी ने उनके हाथ से लेकर अपने गले में पहन लिया था। स्टॉफ-कार के ड्राइवर ने उन्हें दफ्तर से मिले उपहारों का थैला शोभा देवी को देते हुए कहा, "आप जब भी हमें याद करेंगी, हम आ जाएंगे मेम साहब।"

"खूब खुश रहो अमर सिंह, अब तो हम बच्चों के साथ अमेरिका चले जाएंगे, बच्चे अपने पापा के रिटायरमेंट के लिए लंबी छुट्टी लेकर हिंदुस्तान आए हैं, अब तो बस यहां से समेटना है और अमेरिका चले जाना है।" शोभा देवी ने तनिक गर्व और निश्चिंतता से कहा।

दफ्तर के सहयोगी वापस चले गए तो महेंद्रजी की बहू नीलम और बेटे राजेश ने कहा, "पापा आप अपना और मम्मी का पासपोर्ट दे दीजिएगा, अब मैं जल्दी आप दोनों का विज़ा बनवा लेता हूं, टिकट की व्यवस्था करके, चलने की तैयारी करते हैं, घर का सामान, फर्नीचर बेच डालते हैं, और मकान किराये पर चढ़ा देते हैं।"

"मकान किराए पर क्यों देना है? जब यहां रहना ही नहीं है तो मकान बेच देते हैं, आजकल किरायेदारों का भी कोई भरोसा नहीं है।" नीलम ने अपनी सलाह देते हुए कहा।

महेंद्र जी बहू-बेटे का वार्तालाप चुपचाप सुन रहे थे, फिर अपना फैसला सुनाते हुए बोले, "देखो, मैं अभी कहीं नहीं जा रहा हूं। अब मैं अपने उन सब रिश्तेदारों से मिल कर आऊंगा, जहां मैं बरसों से नहीं गया।"

"चले जाना, खूब तसल्ली से सबसे मिल लेना।" शोभा देवी ने मुस्कराते हुए कहा।

"फिर सोचता हूं तुम्हें भी उन सभी धार्मिक स्थलों की सैर करा दूं, जहां दफ्तर की व्यस्त दिनचर्या के कारण नहीं जा सके।" महेंद्र जी ने पत्नी से कहा।

"ये सब तो आप पंद्रह दिन में कर लेंगे, उसके बाद आपका यहां क्या काम रह जाएगा?" राजेश ने पिता से पूछा।

"फिर मैं बीकानेर के पास अपने पैतृक गांव जाऊंगा, अपनी पुरानी हवेली में दो-चार दिन अपने परिवार के साथ रहूंगा, जहां मेरा बचपन बीता है।" महेंद्र जी ने कहा।

"आपने अपना प्रोग्राम इतना गुपचुप बना रखा था?" शोभा देवी हंसते हुए बोली।

"हां, फिर मैं अपने मन में बसे सामाजिक कार्य करूंगा।" महेंद्र जी हंस कर बोले।

"सामाजिक कार्य! ये कौन से कार्य हैं?" शोभा देवी ने आश्चर्य से पूछा।

"अरे मैं नौकरी से ही तो रिटायर हुआ हूं, जीवन तो अभी जीना है।" महेंद्र जी ने हंसते हुए कहा।

"तो क्या आप कुछ और कार्य करने की योजना बना रहे हैं?" शोभा देवी ने आश्चर्य से पूछा।

"अरे, अभी मैं अपने लिए कहां जिया हूं... अभी मुझे अपनी खुशी के लिए जीना है... मुझे काम करना है..." महेंद्र ने अपने जूते उतार कर रैक में रखते हुए कहा।

"इस उमर में आप क्या काम कर पाएंगे?" राजेश ने आश्चर्य से कहा।

"तुम्हें पता है लोकमान्य तिलक पचास वर्ष की आयु में राजनीति में सक्रिए हुए थे... महात्मा गांधी ने पैंतालीस वर्ष तक सामान्य जीवन जिया... उसके बाद राजनीति में सक्रिय हुए..." महेंद्र ने महापुरुषों की कार्यक्षमता का परिचय देते हुए कहा, फिर वे कुर्ता-पायजामा लेकर गुसलखाने में चले गए।

शोभा देवी को कुछ दिन पहले महेंद्र जी के कहे शब्द याद हो आए, "सफलता मिलने और प्रतिभा स्फुरित होने का आयु से कोई संबंध नहीं है, आयु न कार्यक्षमता मंद करती है, न हौसला पस्त करती है। कार्यक्षमता या सफलता का आधार है सुव्यवस्थित योजना, प्रखर बुद्धि, सघन प्रयास, मेहनत और कार्य में रुचि हो तो हर उम्र में सफल हुआ जा सकता है।"

महेंद्र जी गुसलखाने से नहा-धो कर कुर्ता-पायजामा पहन कर निकले तो तरोताजा थे, वे ड्राइंग-रूम में आकर अपने पोते को गोद में लेकर हंसते हुए सोफे पर बैठ गए।

राजेश और नीलम ने ड्राइंग-रूम में आकर महेंद्र जी से पूछा, "अब आपका का क्या प्रोग्राम है, पापा?"

"अभी तो मैं मुन्नू और गौरी के साथ पार्क में घूमने जा रहा

हूं।" वे हंस कर बोले।

"आप इस तरह बात को टालिए मत, आपको मालूम है, हम अमेरिका से छुट्टी लेकर आप दोनों को लेने आए हैं, नीलम कितने दिनों से प्रोग्राम बना रही थी कि जब आप रिटायर होंगे तो हम सब इकट्ठे साथ रहेंगे।"

"अभी तुम अपनी मां को अपने साथ ले जाओ, मैं अभी कुछ दिन घर पर आराम करना चाहता हूं... मेरी देखभाल के लिए रामू घर पर है ही..." महेंद्र जी ने बेटे-बहू से कहा।

"आप तो कह रहे थे आप सामाजिक कार्य करेंगे... देखिए आप इस तरह अपने को परेशान मत करिए..." राजेश ने कहा।

"अरे नहीं...नहीं...। मैं तनिक भी परेशान नहीं होने वाला।" महेंद्र जी को यह सुन कर बहुत संतोष हुआ कि उनके बच्चे उनका इतना ध्यान रखते हैं।

नीलम फिर घरेलू नौकर रामू के साथ रसोई में खाना बनाने लगी और शोभा देवी पति और पोते-पोती के साथ पार्क में घूमने निकल गईं। घर से कुछ दूर निकल कर वे पार्क में बैंच पर आ बैठे। महेंद्र सिंह पत्नी से बोले, "तुम्हें याद है शोभा, हमने यह घर कितनी परेशानी से बनाया है... किस तरह रुपये-पैसे का इंतजाम किया था।"

"हां, याद है।" शोभा देवी अतीत की बातें याद करते हुए बोलीं।

"जिस साल मकान की अंतिम किस्त अदा की थी उसी साल रीना की शादी की गई थी... राजेश को विदेश भेजा गया था।" महेंद्र धीरे-धीरे याद कर रहे थे।

"वो एक साल सबसे कठिन साल था।" शोभा देवी ने कहा।

"मैं इस घर को खोना नहीं चाहता... यह घर हमारा आसरा है। अगर कभी हमें विदेश से लौटना पड़ा, तो कहां ठहरेंगे? रीना आज लंदन में है, कभी वह हिंदुस्तान लौटी तो कहां ठहरेगी?" महेंद्र जी ने कहा।

"सच कहते हो... मैं भी राजेश के साथ अकेली नहीं जाऊंगी।... आप कभी अकेले नहीं रहे...।" शोभा देवी ने कहा।

"बच्चे हमें लेने आये हैं, उनका दिल तोड़ना ठीक नहीं होगा, तुम बच्चों के साथ चली जाओ... वहां जा कर रहो, देखो-परखो, अगर हम दोनों वहां रह सकते हैं तो बाद में मैं भी आ जाऊंगा... अगर मकान बेचना पड़ा तो बाद में देखेंगे...।" महेंद्र जी ने कहा।

"हां, यह ठीक रहेगा। हम कभी विदेश गए नहीं, पहले वहां का वातावरण तो देख लें... यही ठीक रहेगा।" शोभा देवी पति की बात से सहमत होकर बोलीं। अब शोभा देवी को भी मकान से मोह हो आया था।

वे दोनों फिर देर तक अपने घर-परिवार की चर्चा करते रहे, फिर बच्चों के साथ घर लौट आए।

महेंद्र जी अपने पूरे परिवार के साथ अपने नजदीकी रिश्तेदारों से मिलने गए, कई सालों बाद वे उनसे मिलने गए थे अतः उनके लिए उपहार ले जाना भी नहीं भूले। राजेश और नीलम सोच रहे थे अपनों से मिला मान सम्मान ही असली गौरव है, यह अपनापन है कि सब रिश्तेदार आज भी उन्हें इतना मानते हैं। पूरा परिवार घर लौटा तो सबके मन रुई की तरह हल्के हो गए थे, रुई हल्की होकर कैसी तो फूल जाती है और लिहाफ की गर्मी भी बढ़ जाती है। ऐसी उत्तेजना राजेश ने बरसों बाद महसूस की थी।

जल्दी ही राजेश ने शोभा देवी का टिकट बुक करवा लिया, शोभा देवी वहां के मौसम के हिसाब से अपने कपड़े सहेजने में व्यस्त हो गई थीं, यह उनकी पहली लंबी यात्रा थी।

एयर-पोर्ट पर बोर्डिंग-पास लेकर लाउंज में जाते हुए पहली बार शोभा देवी को पति के अकेले रह जाने का अहसास हुआ। वे बरसों बाद पति को अकेला छोड़ कर इतनी दूर जा रही थी। उनका मन भर आया, वे बस इतना बोलीं, "अपना ध्यान रखिएगा।"

"हां-हां, यहां रामू तो है ही, तुम वहां पहुंच कर टेलिफोन करना, यहां की चिंता यहीं छोड़ कर चैन से जाओ... अपने बच्चों के साथ रहो... रीना ने कहा है वह भी जल्दी आ कर तुम से मिलेगी. .. जाओ सब खुश रहो।" महेंद्र जी हाथ हिला कर विदा देते हुए बोले।

हवाई जहाज रन-वे पर दौड़ते हुए ऊपर उठा तो लगा सब कुछ पीछे छूट गया है। कुछ देर तक शून्य बना रहा, फिर विमान परिचारिका सुरक्षा के उपाय, बैल्ट बांधने का तरीका, आपातकालीन सुरक्षा की जानकारी यात्रियों को देने लगी। कुछ ही देर बाद दैनिक अखबार, पानी की बोतल, तौलिया सब यात्रियों में बांट दिया गया। शोभा देवी फिर सहज होने लगी।

हवाई यात्रा बहुत रोमांचकारी थी अमेरिका की गगनचुंबी इमारतों के ऊपर से उड़ता हुआ हवाई जहाज देश के वैभव से यात्रियों का परिचय करवा रहा था। राजेश और नीलम सबको लेकर हवाई अड्डे पर पहुंचे तो वहां उन्हें रिसीव करने उनके मित्र-सहयोगी पहुंचे हुए थे। उनकी कारों से ही वे अपने घर तक पहुंचे। इतने दिनों का बंद पड़ा घर सबने मिल कर साफ किया।

शोभा देवी राजेश का सुंदर फर्नीचर से सजा घर देखकर बहुत खुश हुई। घर में भौतिक सुख-सुविधा की सब चीजें मौजूद थीं। महंगी रंगीन क्रॉकरी में खाना खाते हुए उन्हें बहुत अच्छा लगा।

अगली सुबह शोभा देवी ने महेंद्र जी को टेलिफोन किया, "यहां अच्छी ठंड है, गर्म कपड़े उतारने का मन ही नहीं करता...धूप बहुत अच्छी लगती है। राजेश के घर के सामने दूर तक लंबी सड़क चली गई है, सड़क के दोनों तरफ ऊंचे-ऊंचे हरे पेड़ हैं, दिन में भी यहां सन्नाटा पसरा रहता है।"

"तुम्हें तो बहुत अच्छा लग रहा होगा।" महेंद्र जी ने कहा।

"हां, सड़क के दोनों तरफ पक्के-पुख्ता सुंदर मकान हैं, जिनके पोर्टिकों में बड़ी-बड़ी गाड़ियां खड़ी रहती हैं। खिड़कियां और दरवाजे

लकड़ी की जगह गहरे रंग के अपारदर्शी शीशे के बने हैं, सब कुछ बड़ा सुंदर लगता है।" शोभा देवी ने बताया।

"ठीक है, बच्चे सब ठीक हैं... ठीक... फिर फोन करना।.. . रखता हूं।" महेंद्र जी ने खुश होकर टेलिफोन रख दिया।

महेंद्र जी ने फिर कई दिनों तक अपनी पेंशन के कागज पूरे किए, बैंक के रिकार्ड देखे, अपनी अल्मारियां साफ कीं, रामू के साथ जाकर घर का राशन लाए। रद्दी अखबार कबाड़ी को बेचे, एक मजदूर लगा कर घर की छत साफ करवाई।

हफ्ते भर आराम करने के बाद उन्होंने विचार करना शुरू किया कि उन्हें क्या काम करना चाहिए जिससे अधिक लोगों को फायदा पहुंचे और पूंजी की लागत भी कम हो। तरह-तरह के विचार महेंद्र जी के दिमाग में आते-जाते रहे, एक दोपहर वे सो कर उठे तो शोभा देवी का टेलिफोन बज उठा उन्होंने महेंद्र जी की कुशलक्षेम के बाद पूछा, "घर तो ठीक चल रहा है।"

"हां-हां जैसा छोड़ कर गई थीं उससे अधिक साफ-सुथरा पाओगी और सुनाओ।" महेंद्र जी हंस कर बोले।

"बच्चों की परीक्षाएं निकट आ रही हैं, नीलम बच्चों को परीक्षा की तैयारी कराने में व्यस्त रहती है, बहुत चिड़चिड़ी हो गई है। बात-बात पर गुस्सा करती है। मुझे लगता है नीलम को बच्चों को पढ़ाना अच्छा नहीं लगता, वह चाहती है बच्चे किताब खोल कर बैठें और झटपट तोते की तरह रट डालें।" शोभा देवी ने कहा।

"आज की युवा पीढ़ी में सब्र नहीं है।" महेंद्र हंस कर बोले।

"यहां सब आधा-अधूरा सा लगता है, दिन की रौनक पीछे छूट गई है, अब दिन रुखे-रुखे से हो गए हैं, किसी काम में मन नहीं लगता... खाना भी डिब्बाबंद आता है... डिब्बा खोलो और माइक्रोवेव में गर्म कर लो... न तलना न भूनना... कोई काम नहीं. .. वहां कैसा चल रहा है...?" शोभा देवी ने पूछा।

"यहां सब ठीक है... तुम अपना ध्यान रखना।" महेंद्र ने कहा।

"अच्छा, कल टेलिफोन करेंगे... रखती हूं।" शोभा देवी ने फोन रख दिया।

महेंद्र जी ने मन ही मन सोचा, "अच्छा हुआ शोभा देवी बच्चों के साथ चली गई, अब उन्हें विदेशी तौर-तरीकों का ज्ञान हो जाएगा, उन्हें यह भी अहसास हो जायेगा कि वे वहां रह सकती हैं या नहीं।"

महेंद्र जी को वे लड़के याद हो आए जो कुछ महीने पहले उनके गांव-देहात से उनके पास काम की तलाश में दफ्तर आए थे। महेंद्र जी ने सोचा उनसे पूछ कर देखता हूं, उन्हें कोई काम मिला या नहीं, वे अपनी डायरी में एक लड़के का लिखा मोबाइल नंबर ढूंढने लगे जो उन्होंने लिखा था। नंबर ढूंढ कर महेंद्र जी ने डायल किया। उनमें से एक को चपरासी की नौकरी मिली थी दो अभी घूम रहे थे। महेंद्र जी ने उन्हें अपने घर का पता लिखवा कर इतवार के दिन आने के लिए कहा।

वे तीनों लड़के इतवार को महेंद्र जी के पास पहुंचे तो महेंद्र ने उनसे पूछा, "तुम तीनों वहां क्या काम करते थे?"

"वहां हम बीकानेरी-भुज्जियां बनाने का काम करते थे, घर की महिलाएं पापड़ बेलने का और बड़ी-भंगोड़ी बनाने का काम करती थीं और कुछ तो हम जानते नहीं बाबू जी।" उन्होंने बताया।

"जब वहां अपना काम कर रहे थे तो फिर छोड़ कर यहां क्यों आ गए?" महेंद्र ने पूछा।

"बीकानेर के आसपास लगभग 300 लघु व्यवसायी हैं जो भुजिया बनाने का कारोबार करते हैं। उनके साथ हमारे जैसे पांच हजार कारीगर काम पर लगे हुए हैं। जब से भुजिया का बहुराष्ट्रीय कंपनी ने घुसपैठ करके पेप्सी-नमकीन और लहर-नमकीन ट्रेडमार्क से बाजार पर अपना कब्जा कर लिया तब से छोटे व्यवसायी ठप्प हो गए , काम बंद हो गया। मजदूर रोजगार से बाहर हो गए।"

"वहां तो मजदूर पैसे-पैसे को मोहताज हो गए, इसीलिए हम इधर चले आए, दो रोटी तो कमानी थी बाबूजी।" एक ने कहा।

महेंद्र जी कुछ देर तीनों लड़कों की बात सुनते रहे, तब तक रामू ने सबको चाय बनाकर पिलाई, महेंद्र जी सोचते रहे वे इनके लिए क्या कर सकते हैं। महेंद्र जी ने लड़कों से पूछा, "तुम लोग भुजिया अच्छी तरह बना लेते हो?"

"हां, बाबूजी। बचपन से यही तो देखते-सीखते आ रहे हैं।" एक ने पूरे आत्मविश्वास से बताया।

"भुजिया तीन किस्म की बनती है। पहली तो मोटी भुजिया होती है। इसमें तीखे मसालों का प्रयोग बेसन के साथ होता है, यह भुजिया सस्ती होती है। दूसरी बारीक भुजिया जो एकदम कड़क तथा स्वादिष्ट होती है। आलू मिक्स करके बनाई जाती है। इसमें बेसन के साथ आलू मिला होता है। तीसरी भुजिया, मुलायम व कम मिर्च की होती है, बच्चे इसे बहुत पसंद करते हैं। यह बिकती भी बहुत है। इनके अलावा 'डंकोली' भुजिया होती है। इसमें मसाला अधिक होता है और इसे देर तक धीमी आंच पर पकाया जाता है। तलने में तेल भी खूब लगता है। आजकल पालक की भुजिया भी बनने लगी है, पालक और बेसन से बनी यह भुजिया हरा रंग लिये बहुत स्वादिष्ट होती है, इसका स्वाद एकदम भिन्न होता है।"

"पापड़, उड़दी, मंगोड़ी भी बनाते हो?" महेंद्र जी ने पूछा।

"पापड़, तो मूंग की दाल, मोठ की दाल, उड़द की दाल के बनते हैं। इनमें साजी या क्षार पड़ता है। अब तो उधर साजी की खूब पैदावार होने लगी है। इसमें सोडियम-वाई-कारबोनेट पाया जाता है।" एक ने जानकारी दी।

"आलू के चिप्स भी बनाना जानते हो?" महेंद्र जी ने पूछा।

"हां साहब। आलू के चिप्स में लागत कम और मुनाफा बहुत है। आलू का चिप्स 240 रुपये किलो के भाव से बिकता है।" लड़कों ने बताया।

"अच्छा बिजनैस है।" महेंद्र जी ने लड़कों से कहा।

"उड़दी तो कई तरह से उड़द की दाल से बनाई जाती है, सादी, मसाले वाली, मेथी की, चटपटी, छोटी और बड़ी लेकिन मंगोड़ी मूंग की दाल से सादी, छोटी और कम मसाले की बनती हैं। बाजार में दोनों की डिमांड बहुत है, खूब बिकती है।" लड़कों ने बताया।

"मैं इस बारे में अच्छी तरह सोच-विचार करके फिर तुम्हें टेलिफोन करता हूं, हम सब मिलजुल कर योजना बनाएंगे।" महेंद्र जी ने कहा।

"हम पूरी मेहनत से काम करेंगे, आप जैसा बताएंगे, हम वैसा करते जाएंगे... ठीक है साहब... अब हम चलते हैं।" कह कर लड़के चले गए।

महेंद्र जी ने सोचा, क्यों न बीकानेरी भुजियां बनाने का काम शुरू किया जाए। बचपन में उन्होंने भी दादी को बच्चों के लिए भुजिया बनाकर शीशे के मर्तबान में रखते हुए देखा है। स्वादिष्ट भुजिया को हर उमर का आदमी पसंद करता है, कितने ही लड़कों को रोजगार मिलेगा, भुजिया बनाने वाले लड़के, माल का ऑर्डर लाने वाले लड़के, माल सप्लाई करने वाले लड़के। खूब काम रहेगा, अच्छी समाज सेवा होगी, औरतों को पापड़ के लिए गूंथे आटे की लोथ तोल कर दे दी जाएगी, वे पापड़ बेल कर अगले दिन दे जाएंगी। मजदूरी का भुगतान साप्ताहिक या पाक्षिक रहेगा।

महेंद्र जी ने सोचा अपनी कार्य-योजना के बारे में शोभा देवी से राय-मशविरा किया जाए। उन्होंने टेलिफोन बूथ पर जाकर अमेरिका टेलिफोन मिलाया। टेलिफोन संयोग से शोभा देवी ने ही उठाया, पति की आवाज सुनते ही वे भाव-विभोर हो गई। बोली, "आज मेरा आपसे बात करने का बड़ा मन हो रहा था, अच्छा किया टेलिफोन कर लिया। आज मुन्नू का जन्मदिन मनाया गया है, बड़ी धूमधाम थी, यहां जन्मदिन पर इतनी बड़ी पार्टी होती है मैंने पहली बार देखा, कितने सारे लोग आए थे, यहां हिंदुस्तानी चेहरे भी खूब दिखाई देते हैं पर कोई हिंदी नहीं बोलता। सब आपस में बात कर रहे थे और मैं चुपचाप उन्हें देख रही थी, मुझे बड़ा अधूरा अधूरा सा लगता रहा है...।" शोभा देवी बता रही थीं।

"अच्छा है, तुम्हें विदेशी तहजीब भी देखने को मिली, मुन्नु कहां है, मैं भी उसे मुबारकबाद दे दूं।" महेंद्र जी ने हंसते हुए कहा।

"वे सब तो अभी पार्टी में हैं, राजेश ने मुझे ड्राइवर के साथ जल्दी घर भेज दिया, पार्टी तो अभी बहुत देर तक चलेगी, इस समय तो मैं अकेली हूं... तुम इतवार में मुन्नू से बात करना, इधर जब से परीक्षाएं खत्म हुई हैं, बच्चे अपने दोस्तों के साथ छुट्टी मनाने चले जाते हैं।" शोभा देवी ने बताया।

"अच्छा, और सब ठीक है... ठीक रखता हूं।" महेंद्र ने टेलिफोन रख दिया।

घर लौटते ही महेंद्र जी मन ही मन हंसते हुए सोच रहे थे शोभा देवी से जो भुजिया-नमकीन के बारे में राय-मशविरा करना था, वह तो उन्हें ध्यान ही नहीं रहा... पर चलो अच्छा हुआ, शोभा देवी कहतीं इस उम्र में क्या अब हलवाई वाले काम शुरू करोगे? शोभा देवी को बाद में बताएंगे, महेंद्र जी ने सोचा पहले बिजनैस की रूपरेखा तैयार कर लेते हैं, ट्रेडमार्क का रजिस्ट्रेशन करवा लेते हैं।

महेंद्र जी ने पहली बार जिन तीन लड़कों से बातचीत की थी, उन्हें उन्होंने फिर बुलाया। इस बार उनके साथ दो लड़के और आए। सभी युवक कर्मठ और उत्साही थे, उन्हें केवल मार्गदर्शन और रोजगार की तलाश थी। वे काम करना चाहते थे पर उनके पास पूंजी नहीं थी, शहर में ठिकाना नहीं था, बाजार में खड़े होने की हिम्मत नहीं थी।

महेंद्र जी ने यह जान लिया था कि इन लड़कों के साथ बिजनैस शुरू करके वे घाटे में नहीं रहेंगे। उन्होंने लड़कों से पूछा, "कभी माल सप्लाई का ऑर्डर लाये हो?"

"बीकानेर में तो ऑर्डर मिल जाते थे, यहां मेहनत करनी होगी. .. बाजार में घूमना होगा..." एक ने कहा।

"पहले सैंपल तैयार करना होगा, सैंपल दिखा कर ऑर्डर मिलने में आसानी होगी। नीली कमीज वाला उत्साही लड़का अपनी कमीज की बांहें मोड़ता हुआ बोला।

"...तो ठीक है, काम का श्रीगणेश करो।" महेंद्र जी ने फैसला लेते हुए कहा।

एक हफ्ते बाद बड़ी कड़ाही, बेसन, तेल, मसाले, झरनी और गणेश पूजन के साथ भुजिया लघु कुटीर-उद्योग की नींव पड़ गई। लड़कों ने शाम तक तीन तरह की भुजिया बना कर सफेद पालिथिन के पैकेटों में पैक कर लीं और माल सप्लाई का ऑर्डर लेने शहर के अलग-अलग बाजारों की तरफ चल पड़े।

महेंद्र जी को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि लड़कों की मेहनत और लगन के बलबूते पर उनका भुजिया उद्योग तीन हफ्ते में ही चाल पकड़ गया। दो लड़के ऑर्डर लाने और सप्लाई के काम में लग गए और तीन लड़के भुजिया बनाने में लग गए। आसपास की महिलाएं पापड़ बनाने के लिए तौल कर दाल के मिश्रण का लोथ ले जातीं और अगले दिन दे जातीं। आलू के चिप्स के पैकेट हाथों-हाथ बिक रहे थे। महेंद्र जी ने उद्योग का रजिस्ट्रेशन करा दिया था और ट्रेड नाम रखा 'शिखर नमकीन भुजिया'।

महेंद्र जी आज डाक में आई चिट्ठियां देख रहे थे दो चिट्ठी उनके रिश्तेदारों की थीं जिन्होंने रिटायरमेंट की बधाई भेजी थी और आने का अग्रह किया था। एक चिट्ठी उनके पैतृक गांव से आई थी जिसमें उन्हें मुकदमे में गवाही देने के लिए तारीख पर आने के लिए कहा गया था। एक चिट्ठी शोभा देवी की थी। पत्नी की चिट्ठी बरसों बाद लिखी गई थी इसलिए महेंद्र जी तल्लीनता से चिट्ठी पढ़ने लगे।

शोभा देवी ने लिखा था, बच्चों की उंगली पकड़ कर आंख मूंद कर चलना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है, अच्छा हुआ जो हमने अपना मकान नहीं बेचा, मेरी ममता उस दिन टुकड़े-टुकड़े हो गई

जब मैंने नीलम और उसकी सहेली के बीच बातचीत सुनी, उसकी सहेली पूछ रही थी, “तेरी सास कब तक यहां रहेगी, उनके यहां रहने से तेरे घर पर होने वाली कॉकटेल पार्टी भी टलती जा रही है।” मैंने सोचा था नीलम अपनी सहेली को करारा जवाब देगी पर मैं हैरान रह गई जब उसने कहा, “इनके यहां आ जाने से हमारी तो सारी योजना मिट्टी में मिल गई। हम तो चाह रहे थे दिल्ली वाला मकान बेच कर यहां इन्वेस्ट कर लेते हैं, दूसरे-तीसरे साल हिंदुस्तान जाने का हमारा भी खर्चा बचा रहेगा और ये दोनों मिल कर यहां अपनी ओल्ड-ऐज़ गुजार लेंगे।। यहां न दिन के लिए मेड मिलती है न माली, उसकी भी समस्या हल हो जाती... अब अकेले यहां इनका मन नहीं लगता, रोज-रोज हिंदुस्तान टेलिफोन मिलाती रहती हैं, टेलिफोन का बिल अलग बढ़ गया है, इसलिए मैं चिट्ठी लिख रही हूं। अब आप टेलिफोन करें तो सोमवार की शाम को करें, उस दिन ये सब बाजार जाते हैं और देर शाम तक खाना खा कर लौटते हैं।

पत्नी की चिट्ठी पढ़ते-पढ़ते महेंद्र जी हतप्रभ रह गए। आजकल माता-पिता किस तरह बोझ बनते जा रहे हैं यह तो उन्होंने सुना था पर अपने घर में उनके बच्चे भी उन्हें बोझ समझेंगे यह तो उन्होंने सोचा ही न था। उन्हें यकीन नहीं आ रहा था कि उन्हें ऐसी कड़वी सच्चाई से सामना करना होगा। वे अब सोमवार का इंतजार करने लगे। उन्होंने शाम का समय देख कर टेलिफोन मिलाया, उधर से शोभा देवी की आवाज आई ‘हैलो’।

महेंद्र जी का डर थोड़ा कम हुआ। वे बोले, “जैसा तुमने चिट्ठी में लिखा था सोमवार को टेलिफोन करना तो मैंने सोमवार को ही टेलिफोन किया है, बच्चे कहां हैं?”

“बाजार गए हैं... गौरी और मुन्नू भी बाजार गए हैं... नीलम न जाने क्यों अब बच्चों को मुझसे दूर रखती है। जब मैं अमेरिका आई थी तो मेरे भीतर एक उत्साह था, खुशी थी, लेकिन यहां की बनावटी, संवेदनाशून्य संस्कृति ने मेरी हंसी-खुशी, उत्साह, उमंग, प्यार-दुलार सब पर पानी फेर दिया है।” शोभा देवी ने कहा।

“मैं यह सुनता था कि वृद्धावस्था में पुरुषों की बनिस्बत स्त्रियां अधिक आसानी से सामंजस्य बना लेती हैं, क्योंकि पारिवारिक रिश्तों को वे ही बनाए रखती हैं, अगर तुम्हें विदेशी धरती पर सामंजस्य बनाने में कठिनाई का अनुभव हुआ है तो यह जान लो मैं तो वहां एक दिन भी नहीं रह सकूंगा।” महेंद्र जी ने कहा।

“कल नीलम कह रही थी हम बच्चों के भविष्य की ओर देखें या बुजुर्गों की देखभाल करें? बच्चों की परवरिश और उनके भविष्य की सुरक्षा के लिए उन्हें उच्च शिक्षा देना तो हमारा नैतिक कर्तव्य है, ये दोनों तो हठ करके हिंदुस्तान में रहेंगे और हम इनकी देखभाल में इस देश से उस देश के बीच चक्कर लगाते रहेंगे।” शोभा देवी ने कहा।

“अभी हमें देखभाल की जरूरत नहीं है, हम इतने अशक्त नहीं हुए हैं. अगर तुम वहां से जल्दी आना चाहो तो मैं तुम्हारे टिकट का इंतजाम करवा देता हूं, जिस एजेंसी ने तुम्हारे जाने का टिकट कराया था वह तुम्हारे लौटने का भी टिकट बनवा देगी... तुम्हें वहीं टिकट मिल जाएगा...” महेंद्र जी ने कहा।

“यह ठीक रहेगा... मैं अब जल्दी घर लौटना चाहती हूं।” शोभा देवी ने कहा।

“ठीक है... तुम्हें अब अगले सोमवार को टेलिफोन करूंगा, तुम्हारा टिकट भी बनवाता हूं... अब मैं रखता हूं... अपना ध्यान रखना... ठीक...।” महेंद्र जी ने टेलिफोन रख दिया। जल्दी ही महेंद्र जी ने ट्रैवल एजेंसी से हवाई टिकट बुक करवा कर शोभा देवी को भिजवा दिया।

महेंद्र जी खाली बैठते तो सोचने लगते समय के साथ-साथ लोगों की भूमिकाएं, योग्यताएं तथा रिश्ते सब बदल जाते हैं, ऐसे में यह आवश्यक है कि हमें भी अपने व्यवहार, अपेक्षाओं यहां तक कि अपने जीवन मूल्यों में भी फेर बदल करना चाहिए। अपने जीवन में व्यक्ति विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं निभाता है, उनमें आयु बहुत महत्त्वपूर्ण है, छोटों को प्यार-दुलार और बड़ों को सम्मान हमारी संस्कृति में है। बढ़ती आयु के कारण नई स्थिति में उन्हें अपनी भूमिका स्पष्ट करनी होगी। बच्चों पर निर्भरता, आत्म सम्मान तथा मानवीय मर्यादा को जोखिम में डाल देगी। स्वयं को व्यस्त रखना और लगातार काम करके पैसा कमाना बहुत जरूरी है।

महेंद्र जी को आज एयरपोर्ट जाना है, वे सुबह से ही उत्साहित थे। उन्होंने अपनी देखरेख में घर साफ करवाया था। आज वे भुजिया उद्योग के लड़कों को छुट्टी देना चाहते थे पर माल सप्लाई का बड़ा ऑर्डर आया हुआ था इसलिए काम बंद नहीं किया जा सकता था। वे शोभा देवी को लेने समय से घर से निकल पड़े।

शोभा देवी अपने देश की धरती पर उतरीं तो अतिरिक्त उत्साह से भर उठीं। महेंद्र जी को देख कर उनकी आंखों में आंसू आ गए, घर लौटते हुए वे महेंद्र जी से बोलीं, “हमारी भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्यों का जो महत्त्व है, वही असली धरोहर है, हम गैर वातावरण और संस्कृति से तालमेल नहीं बैठा सकते।”

“तुमने बहुत जल्दी आराम करने का विचार बना लिया था अब घर चल कर देखना मैं अपनी ऊर्जा का कैसा उपयोग कर रहा हूं।” महेंद्र जी मुस्करा कर बोले।

घर लौट कर शोभा देवी ‘शिखर नमकीन भुजिया’ का लघु कुटीर-उद्योग देख कर आश्चर्यचकित हो गईं।, और खुश हो कर बोलीं, “सचमुच अपना घर ही अपना होता है।”

डी-306, स्वर्ण नगरी, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश-201310

कहानी

उम्मीद

◆ जगदीश कश्यप

बस से उतरते ही फोन बजने लगा - टनन...टनन...टनन...

'जी हां, मैं, हां जी।' आवाज पहचान कर-

'अच्छा। शुक्र है श्रीहरि का; आपकी आवाज सुनने को मिली।'

'मनोजी, सुनो, मैं अपने घर शिमला में हूं, कल तक; और परसों मुझे दिल्ली निकल जाना है। कल घर आ जाओ न।'

'ठीक है।'

'कितने बजे तक आओगे?'

'कोई एक-डेढ़ बजे तक।'

'इंतजार करूंगी।'

फोन बंद हो गया और मनोज चाय बनाने लगा। स्थिर आंखें अंदर-ही-अंदर कहीं दूर ताक रही थीं। धीरे-धीरे वह अतीत गहराने लगा -

......'वह पुराने ढंग का मकान जिसमें लेपन, गारा-मिट्टी और पत्थर की छतें- रसोई टीन से ढकी। विपन्नता यों कि कोई मेहमान आ जाए तो चाय तक की चिंता सताने लगती। ऐसे में अनेकानेक अवसर आए लेकिन उन दोनों ने वे सब दिन जैसे-तैसे बिताए। मनोज का समर्पण जाने इतना क्यों था कि रमा की आंखों और वाणी के माधुर्य ने बेचारे को बांध रखा था।'

कपड़े बदलते-बदलते व चाय की चुस्की लेते-लेते वह सोचने लगा.....

.....'कल तहसील ऑफिस भी जाना है, डाक देने.... और इधर बरसों बाद कानों में चिर-अभिलषित ध्वनि सुनने को मिली है।... वह ऐसे सुनहरी अवसर को हाथ से न जाने देना चाहता था। खाना भी अनचाहे मन से खाया और रजाई में पसर गया। सवेरे की सोचकर अपने बिस्तर पर लेटा तो था किंतु रात-भर वे अतीत के प्रसंग मन-मस्तिष्क पर दस्तक देते रहे।

.... मनोज जब घर आने लगता तो उसे छोड़ने धार की उस उपत्यका तक रमा आया करती; वहां घंटों ही बतियाते। दोपहर में आ जाते तो शाम ही ढल आती। बातें वो कि विराम लगता ही नहीं। मनोज भी उसके मनोहर रूप-लावण्य का रसपान करता-करता कभी पलक भी न झपकता, आंखें त्राटक कर रही होतीं। आज बरसों बाद वह मधुर वाणी सुनने को मिली...

......'परसों दिल्ली निकल जाना है; कल घर आ जाओ न।'

इन्हीं खयालों में करवटें लेते रात बीत गई। रमा की मां तो थी नहीं। बचपन में ही छोड़कर चली गई थी। बड़ी अम्मा ने पाला था उसे। बस पूरा ममत्व लुटाया था उसने। लाड़ली यों कि उसकी खुशी के लिए आसमान के तारे भी तोड़ लाएगी। मनोज का घर आना उसे भी अच्छा लगता था। वैसे भी मनोज का स्वभाव सबको भाता था। सादा रहन-सहन और पीछे परिवार भी ठीक था। हां, बस भाई-भाभी जरूर चिढ़े रहते थे। भला, जवान बेटी घर में हो और कोई युवा गबरू घर में आता-जाता रहे; बड़े-बूढ़े तो इतना सोचते नहीं लेकिन युवा पीढ़ी एक बार जरूर सकते में आ ही जाती है।'

अगले दिन, प्रातः एक ही परांठा खाकर मनोज अपने क्वार्टर से निकला; बस में बैठा सोच रहा था ....

.....'डाक, जल्दी ही डायरी करवाऊंगा किंतु दफ्तर के बाबुओं को 'इंडियन टाईम' पर आने की आदत है। उन्हें स्वतंत्रता का संस्कार मिला ही कहां है? पूछने वाला भी कोई नहीं। आजादी का अर्थ कौन समझाए?'

यह सब सोचकर मनोज चुप हो रहा। ग्यारह बजे कहीं डाक डायरी करवाई और झट से निकलने के लिए दो-दो सीढ़ियां लांघी। अर्की बस स्टैंड से सरकारी बस ली और टिकट लेकर निश्चिंत बैठा-बैठा सोच रहा था ....

...एक बार मनोज के घर जाते बहुत पहले....

'कब आओगे? महीनों बाद दीखते हो। आखिर ऐसा क्या है जो फुर्सत लगती ही नहीं? अपनी तो तुम्हें फिकर नहीं, दूसरे का ही खयाल कर लिया करो।'

रमा अनवरत बोले जा रही थी। प्रश्नों की यों झड़ी लगाए थी ज्यों यह बरसात की वर्षा, थमने का नाम न लेती हो।

'जानते हो, तुम नहीं आते, रोटी गोबर-सी लगती है। नींद कोसों दूर भाग जाती है। किसी से बात करने को जी नहीं करता. .. सभी तो अपने होते नहीं।'

मनोज उसकी सीधी और सच्ची बातों से एक बार पुनः सिहर उठा था। बस घणाहट्टी पहुंच चुकी थी। स्पीड भी पर्याप्त थी किंतु

उसे लग रहा था कि....

....'पंख होते तो अपनी अबाध गति से रमा के पास शिमला झट से पहुंच जाता।'

कल्पना तो कल्पना ही होती है और यथार्थ के धरातल पर ठस्स हो जाती है। यों भी ऐसी उड़ान ही नया क्षितिज सृजित कर रही होती है। ड्राईवर भी मानो मनोज के मन की बात समझ गया था और वैसे भी कितने ही मनोज बैठे होते हैं बस में। मोड़ यों मुड़े मानों बच्चों का सिर सहला रहा हो। झट से बालूगंज और पलक झपकते ही शिमला।

बस से जल्दी उतरकर मिनी बस द्वारा अपने गंतव्य की ओर ऐसे गया जैसे हर रोज का रास्ता हो। वहां सीढ़ियां चढ़ीं और उतरीं, फिर हाथ कॉल बेल पर। उसे पता ही न चला कि वह यह सब स्वचालित-सा किये जा रहा था।

दरवाजा खुला। मनोज ने भीतर प्रवेश किया तो उसने उसी पुरातन मुस्कान के साथ स्वागत और अभिवादन किया। मनोज ने चाहा था कि वह उसे बाहु... किंतु उसका वैधव्य रूप निहार कर कुछ पल ठिठक-सा गया। अपलक दृष्टि जमाये स्तब्ध हो गया समूचा वातावरण। खामोशी तब टूटी जब बाहर सीढ़ियों पर से चलने की आहट हुई। अपराह्न काल में अंग्रेजी स्कूल के बच्चे घर आए थे। तभी रमा ने बैठने का संकेत किया और रसोई घर की ओर चल दी।

वहां आलीशान फ्लैट, घर की चमक-दमक; जाने क्या-क्या देख, वह लंबी सांस भरने लगा था। काफी देर रमा पानी का गिलास लिए खड़ी रही। फिर हाथ में गिलास थमाते कहने लगी...

'अब भी दिन में खुली आंख सोते हो? नहीं छोड़ी न अपनी आदत। अरे! मैं तो ढो रही हूं अपने आपको किंतु तुमसे तो ऐसी उम्मीद नहीं थी।'

मनोज ने फिर दीर्घ श्वास ली तथा सोचने लगा ....

...'पुरुषस्य भाग्यं स्त्रिस्य चरित्रं.... गलत है। सटीक नहीं बैठ रहा यहां। ...यह तो विपरीत-सा है।'

मनोज ने गिलास हाथ में पकड़ा और पानी पीया तथा पानी के लिए और बढ़ाया- पीत्वा और पुनः पुनः पीत्वा की बेढभ स्थिति में आ गया। पांचवां गिलास पी लेने पर रमा झल्ला उठी ...

'पानी से ही पेट भरोगे? खाना जो बना है...।'

'आज बरसों बाद...।' रमा के शब्द अस्फुट हो गए। सहज ही मनोज के मुंह से निकला --

'रमे! यह पानी नहीं, अमृत है। बूंद-बूंद पी जाना चाहता हूं। जानती हो तीन दशकों बाद...।' वाणी अवरुद्ध हो गई।

रमा खाली गिलास लिए मंद हास बिखेरती, होंठ काटती, रसोई की ओर चली गई। थोड़ी देर में बासमती चावल और गंधमी फुलके की सुवास आने लगी। दोनों ही बीते दिनों में इतरा-उतरा रहे थे।

...रमा का अठाहरवां चल रहा था। जन्मदिन के इस समारोह की सारी व्यवस्था मनोज ने संभाली थी। खूब बधाइयां दी जा रही थीं। वही सिलसिला था सवेरे से शाम तक। अतिथि-सेवा में इतना लीन कि भोजन तक करने की सुध न थी। भीड़ जब शांत हुई तो ढेरों उपहार दिखाने रमा आई -

'दिन में खाना खाया था? मैंने तो किटी, मोंटी, जया, सरला, सप्पू इनके साथ खा लिया था।'

मनोज के दिल की बात वह समझ जाया करती थी।

'जानती हूं, तुमने खाना नहीं खाया है। भला इतने लोगों में. ..आखिर क्या करती... तुम समझा करो न।'

मनोज का भूख से बुरा हाल था। आज भी वही भूख थी क्योंकि शाम के साढ़े तीन बज चुके थे। रमा भोजन के लिए टेबल सजाने लगी। उसे देख मनोज भी हाथ धोने वॉश बेसन की ओर गया और सीधा टेबल पर जा बैठा।

रमा ने अनेकानेक व्यंजन बनाए थे। बेचारा मनोज समझ ही न पाया कि उसे क्योंकर बुलाया है। वह जल्दी-जल्दी खाये जा रही थी किंतु मनोज जो कौर नीचे निगलता वही ऊपर आने लगता। पानी का घूंट पीकर निगले जा रहा था। यों भी दिल को दिल से राह होती है। संभवतः दिल ने कुछ समझा होगा और शरीर को स्वीकारोक्ति दे डाली होगी।

'मनोजी! तुम्हें आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा? खाना तो तुम खा नहीं रहे, ऐसी क्या बात है?'

ऐसे कई प्रश्न थे किंतु मनोज की जैसे सांस भी रुक रही हो। उसे अंदर-ही-अंदर कुछ साले जा रहा था। शब्द अस्फुट हो रहे थे। वह यह सब भीतर-ही-भीतर समेट देना चाहता था।

फिर यह चेहरा हमारे अंतःकरण का आईना होता है। प्रयास करने पर भी कुछ झलकें छोड़ ही देता है। उसने बहुत-सा भोज्य लौटाया। कुल्ला किया और हाथ पोंछे।

रमा ठीक सामने बैठी मनोज पर नजर गड़ाये थी। मानो आज वह सारी मन की भड़ास निकाल लेगी। उसने कहना शुरू किया-

'जानते हो, जब कभी तुम्हारा फोन आता तो मुझे क्या कुछ कह कर पिंड छुड़ाना पड़ता। जब दिन में आता; बच्चे पूछ बैठते-

'मॉम, किसका फोन है?'

'बेटे। वो शिमला वाले अंकल हैं न, तुम्हारे; उनकी नौकरी लगी है। बता रहे थे- रेवन्यु के दफ्तर में एक चपरासी की जगह खाली थी। यों पढ़े-लिखे तो खूब हैं किंतु समाज का ताना-बाना जाति-आधार पर है और ऊपर बैठे वे ही लोग हैं जो हमेशा भेदभाव करते आए हैं। वे निम्न वर्ग को ऊपर के पद पर आने ही नहीं देना चाहते हैं।...

...ऐसे बच्चों को समाज की वस्तुस्थिति से भी अवगत करवाती। साहब के सामने जब भी फोन आता, तो कुछ समय लगता उन्हें नॉर्मल करने में। कुछ पुरुष शंकालु भी अधिक ही होते

हैं।'

मनोज स्वाभाविक कहने लगा -

'भला मेरा क्या दोष? आखिर कब तक दबाए रखता अपने आपको? जब हृदय छलक पड़ता तो तुम्हारे वे शब्द मुझे याद हैं.. ..

....'जब कभी पहाड़ों की इन वादियों में ऊब जाओ तो मुझे फोन कर लिया करना।'

'मैंने नहीं सोचा था - गांव में पली-बढ़ी एक सुघड़ बालिका, ऐसी गर्मी में दिल्ली रहेगी।'

रमा - 'हां, कहा था, तुमने भी तो कहा था, -

'दिल्ली तो दिल है।'

दोनों के चेहरे पर हल्की-सी स्मित रेखा खिंची और विलीन हो गई। हां, यह सब कहते-कहते दोनों की आंखें डबडबा आई थीं। इन दोनों का साथ प्रकृति भी देने लगी थी। सावन की झड़ी फिर से शुरू हो गई। शांत भाव से चुपचाप खिड़कियों के पर्दों में से हल्की-हल्की फुहारें आने लगीं तथा शीत की चुभन होने लगी। बड़े-बड़े मेघ घिर आए थे, उसी मानिंद मनोज की आंखों में भी ऐसी ही घटाएं छाई थीं।

रमा अपनी पूरी बात आज ही कह देना चाहती थी। उसने साहस बटोरा -

'जानती हूं, हम दोनों की देह पवित्र है। हमने उस दृष्टि से कभी परस्पर छुआ तक नहीं। मन में जो है - उसे हम दोनों ही संजोये हैं। आज 30 साल हो गये दिल्ली रहते...

...उनके हार्ट अटैक के बाद मैं अकेली पड़ गई हूं। अपना दुःख-दर्द किससे बांटूं? तुम हो तो बहुत दूर हो। ...अब बच्चे भी बड़े हो गए हैं, बड़ी बेटी तीस की पूरी हो गई है। ...शादी आ गई थी... बीच में इसके डैड नहीं रहे... अब कुछ समय बाद तो...। . ..मनोजी! मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूं, प्लीज़! बच्चों के कैरियर का सवाल है। अब फोन भी न किया करना और मुझसे कभी न मिलना। मुझसे वादा करो मनोजी! कि मेरी जिंदगी में कभी न आओगे।'

ये सब कहते-कहते वह हांफने-सी लगी थी। पसीने से तर-बतर थी वह। दिल की धड़कन कुछ शांत होते कहने लगी -

'संयोग तो टाला नहीं जा सकता, कहीं भूले से दिल के झरोखे से निहारा करना, मैं वहीं मिलूंगी। मैं उम्मीद करती हूं कि तुम दिल की बात दिल से ही कहोगे।'

एक सांस में यह सब कहते ही उसके दिल की धड़कन और तेज होने लगी; धीरे-धीरे वह पीछे सोफे पर लुढ़क-सी गई। मनोज भी झट से उठा और टेबल पर रखे जग से रमा के चेहरे पर पानी छिड़का और दोनों पैरों के तलुवे सहलाए। थोड़ी देर बाद वह आंखें मलती हुई उठ बैठी। तब तक मनोज भी ठीक उसके सामने अपनी जगह पर आ बैठा था। अभी भी रमा की सांस सामान्य न हुई थी, कहने लगी -

'दफ्तर से ननद भी आने वाली है; पौने छः हो गए हैं।'

मनोज चलने की सोचने लगा -

'कोशिश करूंगा।'

रमा बीच में ही बोल उठी -

'मेरी उम्मीद को जीवंत रखना। तुमने मेरे लिए इतना सब किया है। ...अब उम्र ही कितनी है।'

रमा के हाथ मनोज की तरह बंध गए विदाई के लिए। नाटकीय ढंग से कहने लगी -

'जाओ; अपना खयाल रखना।'

उसकी आंखों में आंसुओं की बाढ़ आ गई।

मनोज भी लड़खड़ाते कदमों से बाहर निकला; उसकी आंखों में भी वही बरसात थी। स्वचालित-सा सीढ़ियां चढ़ने लगा। मनोज के आने की उमंग और जाने की बेबसी 36 का आंकड़ा बनी थी। ये हृदय विदारक क्षण उन दोनों को भले ही अतिरंजित कर रहे थे किंतु उनकी भावना की यौवनावस्था अपनी चरम सीमा का संस्पर्श करती हुई, उन्हें भीतर-ही-भीतर अपने संयम की जीवटता का भी दिग्दर्शन करवा रही थी।

द्वार पर खड़ी रमा मनोज को अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से विवशता की जीवंत मूर्ति बन, दूर तक निहारती रही। वर्षा भी थमने का नाम न ले रही थी। उसने भी लंबी सांस ली और भीतर चली गई।

मनोज अपने गांव मांजू की ओर सीट पर बैठा सोच रहा था-

'रमा की उम्मीद कभी टूटने न दूंगा। आज तक भी निभाया है.... आगे भी निभाऊंगा। रहीम का दोहा बरबस ही उसे स्मरण हो आया -

'रहिमन निज मन की व्यथा,
मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलै हैं लोग सब,
बांट न लै है कोय॥

आंखों के आंसू वह अंदर-ही-अंदर पी गया। उसे पता ही न चला कि वह अपनी ही धुन में अपने गांव मांजू पहुंच गया है। कंडक्टर ने लंबी सीटी बजाई और कहा -

'अंकल, आपका स्टेशन आ गया है।'

मनोज कंडक्टर की सीटी से चौंक गया और ठंडी सांस भर कर नीचे उतर गया। रिमझिम वर्षा होने लगी थी।

सेवा. अध्यापक, गांव कलहोग, पत्रालय चनोग
जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश-171 011
मो. 0 94180 34397

समीक्षा

बच्चों के व्यक्तित्व को तराशती बाल कहानियों का अनोखा दस्तावेज 'दादाजी की चौपाल'

◆ दीपक गिरकर

देश के विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से ललित शौर्य के व्यंग्य, लघुकथा, बाल कहानी एवं कविताओं का प्रकाशन हो रहा हैं। 'दादाजी की चौपाल' सद्य प्रकाशित बाल कथा संग्रह से पहले लेखक का एक कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है और इन्होंने छः संयुक्त काव्य संग्रहों का सम्पादन किया है। ललित अभी तक 250 से अधिक बाल कहानियाँ लिख चुके हैं। वे बाल साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी बाल कथाएँ राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। दादाजी की चौपाल बाल कहानी संग्रह में लेखक द्वारा 19 बाल कथाओं का समावेश किया गया है। इस संग्रह की शीर्षक रचना 'दादाजी की चौपाल' में दादाजी ने ओजस और उसके साथियों को स्वच्छता की महत्ता बताई। मोहल्ले की बैसाखी कथा में शांतिपुर मोहल्ले के बच्चे बैसाखी पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन करते है, इसमें मोहल्ले के रामदीन, जो एक किसान है, को मुख्य अतिथि बनाते हैं और उनका सम्मान करके सभी लोगों को आश्चर्य चकित कर देते हैं। 'हनी बी की होशियारी' कहानी में हनी बी अपनी लगन और मेहनत से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करके ऐसा उपकरण बनाता है जिससे कॉलोनी वालों की समस्या हमेशा के लिए दूर हो जाती है। 'हैप्पी मदर्स डे' शरारती बालक चंदू की कथा है। चंदू की शरारतों से उसकी मम्मी हमेशा परेशान रहती थी लेकिन मदर्स डे पर वह किस प्रकार बदल जाता है और शरारतें करना बंद कर देता है, 'सकारात्मक सोच का जादू' रचना में बच्चों का नजरिया किस प्रकार बदल जाता और उनमें किस प्रकार सकारात्मक ऊर्जा का संचार होने लगता है यह तो आप पुस्तक पढ़कर ही समझ सकेंगे। जन्मदिन पर संकल्प, धरती रही पुकार, पृथ्वी के रक्षक कहानियाँ बच्चों में पर्यावरण के प्रति सजगता उत्पन्न करती हैं। विज्ञान और कंप्यूटर के प्रति चेतना जागृत करती है इस संकलन की बाल कथा किट्टू कबूतर की होशियारी। 'फास्टफूड का कीड़ा' कहानी में फास्ट फूड खाने से होने वाली बीमारियों और शरीर को होने वाले नुकसान के बारे में रोचक कथ्य के माध्यम से प्रकाश डाला है। तीसरी कक्षा में पढ़ने वाली प्रियांशी को मोबाइल गेम की भयंकर लत लग जाती है जिससे वह मानसिक रूप से बीमार हो जाती है। उसके स्कूल की प्रिंसिपल मैम उसकी बीमारी को पहचानकर उसे रियल लाइफ और रियल गेम्स की ओर मोडती है इस संकलन की बाल कथा 'प्रियांशी का बुखार' में।

इस बाल कथा संग्रह की अन्य रचनाएँ मैं भी फौजी बनूँगा, अप्रैल फूल डे पर सबक, साधू महाराज की सीख, कन्नू और कक्कू, मजदूर एकता जिंदाबाद, सफलता के सूत्र, दादाजी की सीख, जंगल पार्टी बच्चों को सीख देने वाली जीवनोपयोगी रोचक बाल कथाएँ हैं। इस आलोच्य संग्रह की कहानियों के शीर्षक कहानी पढ़ने की उत्सुकता बढ़ाते हैं। हनी बी, चीकू खरगोश, डैंजर भेड़िया, हक्कू हाथी, पिंटू पांडा, किट्टू कबूतर, मिट्ठू तोता, चंचल चील, गबरू गिद्ध, शर्मिला सारस, गौरैया मैम, मिस्टर मोर, साइंटिस्ट कोयल, सिप्पी
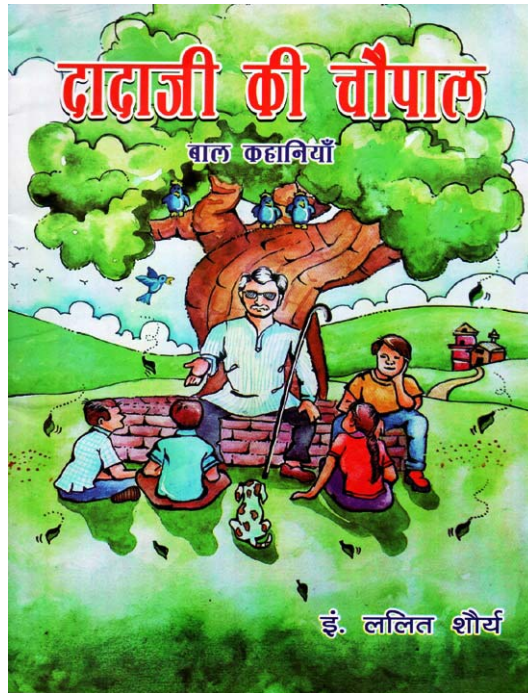
सियार, घोंचू गधा, बद्दू बंदर, मोहिनी नदी, आमी आम, कन्नू कोयल, कक्कू कौव्वा, शेरू शेर, भोलू भालू, मीकू मंकी जैसे पात्रों के नाम कथानक को रोचक बनाते है।

इस पुस्तक में संकलित लेखक की रचनाएँ 5 से 10 वर्ष तक के बच्चों की समस्याओं का निवारण कर रचनात्मक रास्ता सुझाती हैं। ललित शौर्य के पास गजब की शिल्प सामर्थ्य है। बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ उन्हें अन्य कथाकारों से अलग करती है। हर कहानी में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से कोई सन्देश मौजूद है। बच्चों के दैनन्दिनी जीवन में घटने वाली घटनाओं को कथ्य बनाकर लेखक ने बच्चों में आत्मविश्वास दृढ करने, परिश्रम की आदत डालने और चुनौतियों का सामना करने की सीख दी है। पूरी किताब का उद्देश्य बच्चों में अच्छी आदतों का विकास करना है। आकर्षक रंगीन चित्रों से युक्त सभी कहानियाँ पाठकों को बांधे रखती हैं। लेखक की बाल कथाएँ चित्रकथा जैसा आनंद देती हैं। इस संग्रह की सभी कहानियाँ बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। इस संकलन की बाल कथाओं में आत्मीयता के अनेक रंग मौजूद हैं। संकलन की बाल कथाओं का कथा शिल्प सरल व सरस है जिससे बच्चे इन कहानियों को आसानी से समझ सकते हैं। इस पुस्तक की कथाओं में बच्चों के हर पक्ष को उकेरने का प्रयास बाल कथाकार द्वारा किया गया है। यह बाल कथा संग्रह सभी वयस्क लोगों के लिए भी अनमोल खजाना है जो बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं और जिनका स्टॉक खत्म हो चुका है। ललित शौर्य की रचनाएँ शिक्षाप्रद हैं, जिन्हें पढ़कर बच्चों में संस्कार, चेतना, संवेदना, जागरूकता और पर्यावरण के प्रति सजगता उत्पन होती है। इस पुस्तक की बाल कहानियों की एक मुख्य विशेषता है कि बच्चों के व्यक्तित्व को तराशती, मूल्य संस्थापन से ओतप्रोत इन बाल कथाओं में रोचकता और मनोरंजन भी भरपूर हैं। यह बाल कथा संग्रह बच्चों और वयस्क पाठकों द्वारा बहुत पसंद किया जा रहा है। हर माता-पिता को इस बाल कथा संग्रह को खरीदकर बच्चों को देना चाहिए। ललित शौर्य ने बाल साहित्य को समृद्धि प्रदान की है।

28-सी, वैभव नगर, कनाडिया रोड,
इंदौर- 452016, मो : 0 94250 67036

पुस्तक : दादाजी की चौपाल (बाल कथा संग्रह), लेखक : ललित शौर्य
प्रकाशक : उत्कर्ष प्रकाशन, 142, शाक्यपुरी, कंकरखेड़ा, मेरठ (उ.प्र.) , मूल्य : 160 रुपये

अंधविश्वास : विश्वास नहीं एक भय

(पृष्ठ 38 से जारी) उन्हें इसमें पूरा विश्वास होता है। किसी सौभग्य शाली अभिनेता के द्वारा प्रयुक्त साबुन मलने से विश्वास किया जाता है कुछ सौभाग्य उसे भी मिल जायेगा। जो अभिनेता गुसलखाने में साबुन छोड़ देता है वह अपना भाग्य छोड़ देता है। इंगलैड के अभिनेता जॉन मिल के पास काली बिल्ली थी वह उसे हमेशा अपने साथ रखता था हालीवुड का अभिनेता जॉन ब्रायन अपनी प्रथम फिल्म में प्रयुक्त बंदूक ही प्रयोग में लाता रहा। जेम्स स्टुअर्ट अपनी प्रथम फिल्म में प्रयुक्त हैट ही प्रयोग में लाते रहे बुरी तरह कट फट जाने के कारण एक निदेशक ने हैट बदलने के लिये कहा तो उसने वह फिल्म ही छोड़ दी।

ड्रैसिंगरूम में सीटी बजाना बहुत अशुभ समझाा जाता है। हाली वुड के बहुत से अभिनेता पीले रंग को अशुभ मानते हैं और यह घ्यान रखा जाता है कि सैट पर पर्दे पीले रंग के न हों। अधिकतर अभिनेता मोर को देखना भी पसंद नहीं करते शायद बहुरंगीपन के कारण या उसकी अनेकों आंखों के कारण। भारत में भी मोर या मोर की आकृति घर में रखना अच्छा नहीं माना जाता। कोरिया में इम्तहान के दिन बाल नहीं धोते ,वेनेजुएला में रुमाल का उपहार नहीं लिया जाता। ताइवान में सुबह कौवा दिख जाए तो लोग परेशान हो जाते हैं जब कि भारत में कौआ मुंडेर पर बैठे तो अतिथि के आगमन की सूचना होती है विशेष रूप से प्रिय की।

1950 का एकल लॉन टेनिस का घोषित विश्व चौंम्पियन लारसम खेलने से पहले सीमा रेखा ,लौन रैकेट कुर्सी आदि को पहले थपथपाता था फिर खेलना प्रारम्भ करता था। फुटबाल की टीमें बहुत अंधविश्वासी होती हैं। अनेकों टीमों का विश्वास है कि कप्तान से गेंद गिरकर तीन बार लुढ़के तो सौभग्य लाती है। रूस के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गोल कीपर लेवयाशिन हमेशा मैच में दो कैप साथ रखते थे। एक वो पहनते थे एक वो जाल के पीछे सौभग्य के लिये रख देते थे। भूतपूर्व विश्व हैवीवेट चौम्पियन जो लुइस हमेशा पहले बांये हाथ का ग्लब बंधवाते थे।

मछली पकड़ने वाले मौसम की पहली मछली अगर मादा हो तो छोड़ देते हैं, उनके हिसाब से मादा निर्बल होने की वजह से पूरा साल कमजोर जायेगा। जुआरियों के अपने ही विश्वास होते हैं। भैंगे व्यक्ति के साथ खेलने वाला चाहे पार्टनर ही क्यों न हो हारेगा। उधार देने वाला हारेगा और जो उधार लेगा वह जीतेगा। ताश का जमीन पर गिरना हार की निशानी है। ताश खेलने के दौरान गुनगुनाना भी हार लाता है।

3/28 ए/2 जवाहर नगर रोड
खंदारी, आगरा-282002

ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 65 अक्तूबर-नवंबर-दिसंबर 2020 अंक : 7-8-9

सम्पादकीय कार्यालय : हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tell: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in/himprastha.asp

ज्ञान सागर

यौवन विकारों को जीतने के लिए मिला है, उसे व्यर्थ ही न जाने दें।

- महात्मा गांधी

उपलब्धियों भरे तीन वर्ष

विकासात्मक लेख

लेख	लेखक	पृष्ठ
घर-घर पहुंची विकास की अविरल धारा	मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर	3
लाहौल घाटी में खुले आर्थिक समृद्धि के द्वार		8
आमजन से सीधा संवाद	हरबंस सिंह ब्रसकोन	10
पर्यटन की नई उड़ान	वेद प्रकाश	12
सामाजिक सुरक्षा कवच	नर्बदा कंवर	15
आसान हुई यातायात की राहें	सतपाल	17
हर घर में नल से जल	रीना नेगी	20
ग्रामीण क्षेत्रों का बदलता स्वरूप	योग राज शर्मा	22
सुलभ हुई स्वास्थ्य सुविधाएं	विवेक शर्मा	24
निवेशकों का पसंदीदा गंतव्य	चंद्रशेखर वर्मा	27
किसानों के चेहरों पर मुस्कान	मोहित शर्मा	29
मौन पालन से स्वरोजगार	सनम छेरिंग नेगी	31
शिक्षा का सिरमौर	लुभित सिंह	32
ऊर्जा सरप्लस राज्य		35
शहरों का सुनियोजित विकास	मानवी सिंह	36
बैस्ट परफार्मिंग मुख्यमंत्री		38
स्किल रजिस्टर		39
कृषि से संपन्नता		40
पंचवटी में बुजुर्गों की खुशियां		41
पुनः पटरी पर अर्थव्यवस्था		42
सकुशल घर वापसी		43
मुख्यमंत्री रोशनी योजना		45
दवा उद्योग को संजीवनी		46
जीवन धारा		47
डेयरी उद्योग		48
हुनर को सम्मान		49
ई-परिवहन सेवा		50
सुशासन की ई-पहल		51
प्री-फेब्रिकेटिड अस्पताल		52
मुख्यमंत्री युवा निर्माण योजना		53
नगर परिषदों का स्तरोन्नयन		54
सोशल मीडिया में अपनी बोली		56

अपनी बात

भारत को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का गौरव हासिल है। हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली में लोग हर पांच साल बाद चुनाव के माध्यम से निर्वाचित सरकार के गठन में भागीदार बनते हैं। लोगों को बहुत सारी उमीदें होती हैं कि पांच साल की अवधि के दौरान सरकार उनकी अपेक्षाओं और आकांक्षाओं पर खरी उतरे। हिमाचल प्रदेश की वर्तमान सरकार ने 27 दिसम्बर, 2020 को अपने सेवाकाल के सफल तीन वर्ष पूरे किए हैं। इस अवधि में लगभग 10 महीने का वह समय भी शामिल है जिसमें पूरा विश्व कोरोना के रूप में इस सदी की सबसे बड़ी महामारी को झेल रहा है। और इससे हिमाचल भी कैसे अछूता रह सकता है। ऐसे कठिन दौर के बावजूद प्रदेश सरकार न केवल पूरी ताकत के साथ कोरोना से डट कर मुकाबला कर रही है बल्कि विकास की रफ्तार को भी तेजी से आगे बढ़ा रही है। सरकार ने गत तीन वर्षों में लोगों से किए अधिकतर चुनावी वायदों को समय से पहले ही पूरा कर दिखाया है। जन कल्याण की अनेक नई योजनाएं आरम्भ कर विकास को मानवीय रूप दिया है। प्रदेश के इतिहास में उस समय एक सुनहरा अध्याय जुड़ गया जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश के लिए सामरिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण अटल टनल रोहतांग 3 अक्तूबर, 2020 को राष्ट्र को समर्पित कर प्रदेशवासियों को एक बड़ा उपहार दिया। इससे लाहौल-स्पीति घाटी के लोगों के आर्थिक परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव आएगा। साथ ही क्षेत्र में बड़े पैमाने पर पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा भी मिलेगा। साल आरंभ से ही महामारी के रूप में एक ऐसा संकट लेकर आया है। जिसने आमजन विशेषकर सरकार के सामने दुश्वारियां ही पेश नहीं कींए बल्कि इस पहाड़ी प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है। फिर भी हिमाचल की सरकार और मेहनतकश लोग इसका मजबूती के साथ मुकाबला कर रहे हैं। सरकार ने कोरोना काल के दौरान लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देने की दिशा में सार्थक कदम उठाए हैं। इस गंभीर स्थिति से निपटने के लिए प्रदेश भर में 'मुख्य मंत्री हिम सुरक्षा' अभियान चलाया, जिसमें स्वास्थ्य, आयुर्वेद, महिला एवं बाल विकास, पंचायती राज विभागों, जिला प्रशासन और गैर-सरकारी एवं स्वयंसेवी संगठनों को शामिल किया गया। इस अभियान में आठ हजार टीमों ने घर-घर जाकर कोविड महामारी से जुड़े मामलों की जानकारी जुटाई, जो कोरोना से निपटने में अहम साबित हो रही है। यही नहीं दूर.दराज क्षेत्रों के लोगों को घर-द्वार पर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए मेडिकल यूनिट-'जीवन धारा' आरंभ की, जो मोबाइल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के रूप में कार्य कर ही है। स्वास्थ्य क्षेत्र में 'हिमकेयर' 'सहारा', 'अटल, 'आशीर्वाद', 'मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोष', 'मुख्यमंत्री निरोग योजना', 'मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवाई योजना' तथा 'टेलिमेडिसन सुविधा' जैसी अभिनव योजनाओं के माधयम से बेहतर चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा रही हैं। ग्रामीण आर्थिकी को मजबूत करने की दिशा में कारगर कदम उठाए गए। प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में गत तीन वर्षों में अभूतपूर्व विकास हुआ है। नई शिक्षा नीति-2020 को राज्य में लागू करने की सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान कर दी है, जिसे हिमाचल ने सर्वप्रथम लागू करने की पहल की है। कोरोनाकाल में ऑनलाइन पढ़ाई की अहमीयत को देखते हुए 'हर घर पाठशाला' कार्यक्रम आरम्भ करने का प्रयोग बड़ा उपयोगी साबित हो रहा है। सरकार ने सामाजिक सरोकारों के दायित्वों का निर्वहन करते हुए वृद्धावस्था पेंशन पाने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया। गत तीन वर्षों के दौरान 1,63,607 नए सामाजिक सुरक्षा पेंशन के मामले स्वीकृत किए गए । महिलाओं को खाना पकाने के लिए धुएं भरे चुल्हे से छुटकारा दिलाने तथा पर्यावरण संरक्षण में हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। हिमाचल धुंआमुक्त राज्य बनने वाला देशभर में पहला राज्य बन गया है। सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने के उद्देश्य से सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के साथ कृषि गतिविधियों में विविधता लाने के लिए अनेक नई योजनाएं आरम्भ की हैं जिनके सफल कार्यान्वयन से किसानों की आर्थिक दशा में परिवर्तन आया है। 'प्राकृतिक खेती-खुशहाल किसान योजना' के तहत प्रदेश में वर्ष 2022 तक सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को प्राकृतिक खेती के तहत लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अब तक प्रदेश के 74 हजार से भी अधिक किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है। राज्य में औद्योगिक व्यवसाय में सुगमता लाने के लिए जटिल प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया। विभिन्न विभागों की सेवाओं को ऑनलाइन किया गया। उद्योग, ऊर्जा, पर्यटन एवं ईको पर्यटन जैसे अहम क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए इन विभागों की नीतियों को संशोधित कर निवेश अनुकूल बनाया है। इससे निवेश आकर्षित करने में सहायता मिली है, परिणामस्वरूप हिमाचल निवेशकों का आदर्श गंतव्य बनकर उभरा है। प्रदेश में बहने वाली सदाबहार नदियों व इनकी सहायक नदियों में जलविद्युत उत्पादन की अपार संभावनाएं मौजूद होने और इसके तीव्र दोहन से आर्थिक संसाधन जुटाने में सहायता मिल रही है। केन्द्र सरकार ने राज्य के कुल्लू और शिमला जिलों में स्थित लुहरी चरण-एक जलविद्युत परियोजना में 1810.56 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी प्रदान की है। प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण इस पहाड़ी राज्य के अनछुए पर्यटनों स्थलों को विकसित करने के उद्देश्य से कार्यान्वित की जा रही 'नई राहें नई मंजिलें' परियोजना के तहत 50 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। सरकार ने अपने गत तीन वर्षों के कार्यकाल के दौरान अनेक जनहितैषी कार्यक्रम एवं योजनाएं आरंभ कर इनके लाभ आमजन तक पहुंचाने का भरसक प्रयास किया है। सरकार के इन प्रयासों से आज प्रदेश में 37808 हजार किलोमीटर लंबी सड़कों के सुदृढ़ नेटवर्क के साथ 97 प्रतिशत से भी अधिक पंचायतें सड़क सुविधा से जुड़ चुकी हैं।

प्रधान संपादक

प्रदेशवासियों की सेवा में समर्पित सरकार के तीन साल

घर-घर पहुंची विकास की अविरल धारा

भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश की वर्तमान सरकार, 27 दिसम्बर, 2020 को अपने सेवाकाल के सफल तीन वर्ष पूर्ण कर रही है। प्रदेश सरकार का यह कार्यकाल उपलब्धियों भरा रहा है। इस दौरान सरकार ने अनेक नई योजनाएं आरम्भ कीं और विकास के हर क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए। वैसे तो कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था अपनी छोटी-बड़ी उपलब्धियों पर गर्व कर सकती है, लेकिन लोकप्रिय एवं कल्याणकारी सरकार का अपने कार्यकाल में किए गए विकासात्मक कार्यों एवं उपलब्धियों का सुखद परिणाम उसकी अवाम से प्राप्त सराहना, प्रशंसा और उसके आशीर्वाद पर निर्भर करता है। निस्संदेह हमारी सरकार इसमें पूर्णतया सफल रही है, ऐसी अपेक्षा अवश्य है।

हमारे लिए यह सम्मान की बात है कि देश को प्रधान मंत्री के रूप में एक स्वच्छ एवं ईमानदार छवि के नेता श्री नरेंद्र मोदी का कुशल एवं दूरदर्शी नेतृत्व मिला है, जिनके विशेष स्नेह एवं लगाव का हिमाचल को भरपूर लाभ मिल रहा है। कोरोना महामारी से प्रभावित परिस्थितियों के चलते उन्होंने अपने सार्वजनिक कार्यक्रमों का सिलसिला, लॉकडाउन खुलते ही पुनः जारी रखने के लिए हिमाचल को चुना। देश के लिए सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण अटल टनल रोहतांग 3 अक्तूबर, 2020 को राष्ट्र को समर्पित की। निश्चित ही प्रदेशवासियों को यह एक बड़ा उपहार है। इस सुरंग के यातायात के लिए खुल जाने से लाहौल-स्पीति घाटी के लोगों के आर्थिक परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव आएगा। साथ ही क्षेत्र में बड़े पैमाने पर पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा भी मिलेगा।

हमारी सरकार की तीन साल की अवधि निस्संदेह कामयाबियों से भरी रही है, लेकिन इस दौरान, 2020 का साल आरंभ से ही एक अलग तरह का संकट महामारी के रूप में लेकर आया है, जिसने हमारी सरकार के समक्ष अनेक चुनौतियां ही पेश नहीं कीं, बल्कि अर्थव्यवस्था को भी तहस-नहस कर दिया है। यह महामारी आज भी पूरी दुनिया में अपना असर दिखा रही है। हिमाचल भी इससे अछूता नहीं है। फिर भी हमारी सरकार ने विकासात्मक कार्यों को कम वित्तीय संसाधनों के बावजूद जारी रखा है।

मील पत्थर हमारे बताते हैं मंजिलों का पता
बिछाए हुए पथ राजमार्गों के कालीन
आसान करते हैं उन तक पहुंच।

आलेख
जय राम ठाकुर
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

बेटी है अनमोल

सरकार के प्रयास, अतुल्य विकास

गत तीन वर्षों के दौरान प्रदेश में विद्यमान 4320 सरकारी तथा 258 निजी स्वास्थ्य संस्थानों के सुदृढ़ नेटवर्क को और बेहतर बनाया गया है। स्वास्थ्य क्षेत्र में 'हिमकेयर', 'सहारा', 'अटल' 'आशीर्वाद', 'मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोष', 'मुख्यमंत्री निरोग योजना', 'मुख्यमंत्री निःशुल्क दवाई योजना' तथा 'टेलिमेडिसन सुविधा' जैसी अभिनव योजनाओं के माध्यम से बेहतर चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा रही हैं। प्रदेश में लोगों को हिमकेयर योजना के तहत प्रदेश में 5.50 लाख परिवार पंजीकृत कर 1,17,578 लाभार्थियों को 115.47 करोड़ रुपये व्यय कर निःशुल्क इलाज सुविधा दी गई।
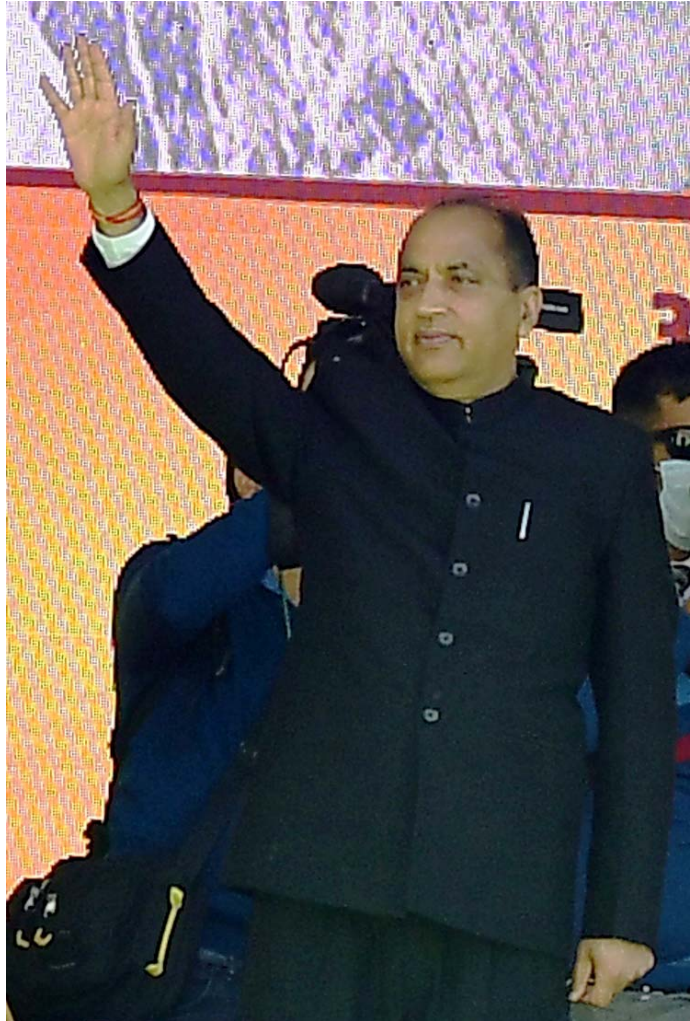
जैसा कि हम सब भली-भांति जानते हैं, लॉकडाउन के दौरान देश भर में ठप्प पड़ी अर्थव्यवस्था को सामान्य बनाने के लिए अनलॉक का समय आते ही केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं। इस दौरान नवंबर महीने में त्योहारों के सीजन के चलते कोरोना के मामलों में फिर से बढ़ोतरी हुई है। हमारी सरकार ने इस गंभीर स्थिति से निपटने के लिए प्रदेश भर में 'मुख्य मंत्री हिम सुरक्षा' अभियान चलाया, जिसमें स्वास्थ्य, आयुर्वेद, महिला एवं बाल विकास, पंचायती राज विभागों, जिला प्रशासन और गैर-सरकारी एवं स्वयंसेवी संगठनों को शामिल किया गया। इस अभियान में 8000 टीमें गठित की गई, जो घर-घर जाकर कोविड महामारी से जुड़े मामलों के साथ-साथ क्षय रोग, तपेदिक रोग, शुगर और रक्तचाप जैसे रोगों से पीड़ित लोगों की जानकारी भी जुटा रहीं हैं। प्रदेश सरकार ने दूर-दराज क्षेत्रों के लोगों को घर-द्वार पर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए मेडिकल यूनिट-'जीवन धारा' आरंभ की है, जो मोबाइल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के रूप में कार्य करेगी। सरकार ने कोरोना काल में स्वास्थ्य क्षेत्र को अहमियत देते हुए चिकित्सा संस्थानों के सुदृढ़ीकरण पर ध्यान दिया।

गत तीन वर्षों के दौरान प्रदेश में विद्यमान 4320 सरकारी तथा 258 निजी स्वास्थ्य संस्थानों के सुदृढ़ नेटवर्क को और बेहतर बनाया गया है। स्वास्थ्य क्षेत्र में 'हिमकेयर', 'सहारा', 'अटल' 'आशीर्वाद', 'मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोष', 'मुख्यमंत्री निरोग योजना', 'मुख्यमंत्री निःशुल्क दवाई योजना' तथा 'टेलिमेडिसन सुविधा' जैसी अभिनव योजनाओं के माध्यम से बेहतर चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा रही हैं। प्रदेश में लोगों को हिमकेयर योजना के तहत प्रदेश में 5.50 लाख परिवार पंजीकृत कर 1,17,578 लाभार्थियों को 115.47 करोड़ रुपये व्यय कर निःशुल्क इलाज सुविधा दी गई। 'आयुष्मान भारत योजना' के तहत 3.27 लाख परिवारों के गोल्डन कार्ड बनाए गए और 73,934 लाभार्थियों को 75.46 करोड़ रुपये व्यय कर निःशुल्क उपचार सुविधा प्रदान की गई है। आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए चलाई जा रही सहारा योजना से 10 हजार से अधिक लाभार्थियों को 3000 हजार रुपये प्रतिमाह की दर से 9.75 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता दी गई।

प्रदेश सरकार ने इस अवधि के दौरान राज्य में औद्योगिक व्यवसाय में सुगमता लाने के प्रयासों के तहत विभिन्न प्रक्रियाओं को सरल बनाया है। विभिन्न विभागों की सेवाओं को ऑनलाइन किया गया है। उद्योग, ऊर्जा, पर्यटन एवं ईको पर्यटन जैसे क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए इन विभागों की नीतियों को संशोधित कर निवेश अनुकूल बनाया है।

सिनेमा उद्योग को हिमाचल में शूटिंग के लिए प्रोत्साहन देने हेतु

फिल्म नीति तैयार की गई है। प्रदेश में औद्योगिक निवेश के तीव्र दोहन के दृष्टिगत गत वर्ष धर्मशाला में ग्लोबल इन्वेस्टर मीट का सफल आयोजन कर 96,720 करोड़ रुपये निवेश के 703 एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किए गए। इसके आयोजन के मात्र दो महीनों के उपरांत ही 13,656 करोड़ रुपये के 204 समझौता ज्ञापनों के ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह का सफल आयोजन कर निवेश गतिविधियों को आगे बढ़ाया गया है।

प्रदेश में बहने वाली सदाबहार नदियों व इनकी सहायक नदियों में जलविद्युत उत्पादन की अपार संभावनाएं मौजूद होने और इसके तीव्र दोहन से आर्थिक संसाधन जुटाने में सहायता मिल रही है। राज्य में उपलब्ध 27 हजार मेगावाट से भी अधिक जलविद्युत क्षमता में से अभी तक 10,600 मेगावाट ऊर्जा का दोहन किया जा चुका है। प्रदेश सरकार ने इस क्षमता के शीघ्र दोहन को प्राथमिकता देते हुए गत वर्ष सितंबर में शिमला में आयोजित पॉवर कॉन्क्लेव में 2,927 मेगावाट क्षमता की जलविद्युत परियोजनाओं के लिए 10 एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित कर 25,772 करोड़ रुपये के निवेश आकर्षित करने में सफलता हासिल की है, जिनमें 13 हजार से अधिक युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे। केन्द्र सरकार ने राज्य के कुल्लू और शिमला जिलों में स्थित लुहरी चरण-एक जलविद्युत परियोजना में 1810.56 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी प्रदान की है। सतलुज नदी पर बनने वाली इस परियोजना में 758.20 मिलियन यूनिट बिजली का उत्पादन होगा। प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण इस पहाड़ी राज्य में पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाएं मौजूद है। कोरोना महामारी ने इस क्षेत्र को सबसे अधिक प्रभावित किया है। सरकार ने इसकी भरपाई के लिए कोरोना अवधि के लिए बिजली की मांग के शुल्क को माफ कर दिया है, जिसके लिए लगभग 15 करोड़ रुपये की राहत प्रदान की गई। प्रदेश के लिए एशियाई विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित 1892 करोड़ रुपये की ट्रैंच-दो पर्यटन विकास परियोजना को स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इसके अलावा ग्लोबल इनवेस्टर मीट में पर्यटन क्षेत्र में 16000 करोड़ रुपये निवेश के 225 एम. ओ. यू. हस्ताक्षरित किए गए हैं। राज्य के अनछुए पर्यटन स्थलों को विकसित करने के उद्देश्य से पहले से ही कार्यान्वित की जा रही 'नई राहें नई मंजिलें' परियोजना के तहत 50 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं।

हमारी सरकार ने प्रदेश की ग्रामीण आर्थिकी को मजबूत करने की दिशा में कारगर कदम उठाए हैं। विकास कार्यों के लाभ ग्राम स्तर तक पहुंचाने के लिए राज्य में 387 नई पंचायतों का गठन किया गया है। गांव स्तर पर विकास कार्यों के बेहतर निष्पादन के लिए पंचायती राज संस्थाओं के लिए अलग से तकनीकी विंग का गठन किया गया है और विभाग में विभिन्न श्रेणियों के 1409 पद सृजित किए गए हैं। हिमाचल को 15वें वित्त आयोग से वर्ष 2020-21 के लिए पंचायतों के लिए 214 करोड़ रुपये की पहली किस्त प्राप्त हो गई है जिससे पंचायतों में विकास को गति मिली है।

प्रदेश सरकार ने अपने वर्तमान कार्यकाल के दौरान ग्रामीणों को घर-द्वार पर रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए मनरेगा के तहत लगभग 6.06 करोड़ कार्य दिवस अर्जित किए, जिसमें महिलाओं की भागीदारी 63 प्रतिशत रही। इस दौरान 1780.43 करोड़ रुपये व्यय कर 1.52 लाख से ज्यादा कार्य पूर्ण किए जिनमें 1.32 लाख परिवारों को 100 दिन से अधिक का रोजगार प्राप्त हुआ।

हमारी सरकार सामाजिक सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। वृद्धजनों के प्रति आदर-सत्कार का भाव रखते हुए वृद्धावस्था पेंशन पाने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया गया। इसकी पात्रता के लिए कोई आय सीमा भी नहीं रखी गई है। वर्तमान प्रदेश सरकार द्वारा अपने सेवाकाल के दौरान 1,63,607 नए सामाजिक सुरक्षा पेंशन के मामले स्वीकृत किए गए जिनमें 1,30,931 वृद्धावस्था पेंशन, 18,203 विधवा व एकल नारी पेंशन तथा 14,473 दिव्यांगजन पेंशन के मामले थे। प्रदेश में इस समय 5.69 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन लाभार्थी हैं जिनमें लगभग 3.85 लाख वृद्धावस्था पेंशन लाभार्थी हैं। इन लाभार्थियों को पेंशन सुविधा प्रदान करने पर अब तक 424.58 करोड़ रुपये व्यय किए जा चुके हैं। प्रदेश में इस समय 93.45 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध करवा दी है। प्रदेश में सभी गांवों और बस्तियों को पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए महत्त्वाकांक्षी 'जलजीवन मिशन' कार्यक्रम आरम्भ किया गया है। प्रदेश में अगस्त, 2019 से आरम्भ जलजीवन मिशन के तहत प्रथम चरण में 2,896.54 करोड़ रुपये की लागत की 327 योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई। प्रदेश को मिशन के तहत 326 करोड़ रुपये जारी किए जा चुके हैं। हिमाचल देश का पहला ऐसा राज्य है जिसे केंद्र द्वारा 81.5 करोड़ रुपये की चारों किस्तें जारी कर दी हैं।

प्रदेश में शिक्षा के आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने के बाद अब गुणात्मक शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में गत तीन वर्षों में अभूतपूर्व विकास हुआ है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति-2020 को राज्य में लागू करने की सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान कर दी है, जिसे हिमाचल ने सर्वप्रथम लागू करने की पहल की है। प्रदेश में इस समय सरकारी क्षेत्र में छः

विश्वविद्यालय, 128 कॉलेज, 1863 वरिष्ठ माध्यमिक, 924 हाई स्कूल, 2038 मिडिल स्कूल तथा 10721 प्राथमिक स्कूल कार्यरत हैं, जो विद्यार्थियों को बेहतर एवं गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने में अपना योगदान दे रहे हैं।

कोरोना महामारी के कारण अधिकतर शिक्षण संस्थानों में बच्चों की पढ़ाई पर विपरीत असर पड़ा है, इसकी भरपाई के लिए ऑनलाइन' पढ़ाई अब समय की मांग है तथा प्रदेश में इस दिशा में पहल भी की गई है। इस दौरान 'हर घर पाठशाला' कार्यक्रम आरम्भ करने का प्रयोग बड़ा उपयोगी साबित हो रहा है।

हमारी सरकार महिला सशक्तिकरण उपायों के तहत इस वर्ष महिला एवं बाल विकास तथा अन्य कल्याण गतिविधियों पर 586. 82 करोड़ रुपये व्यय कर रही है। राज्य में महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, मदर टेरेसा असहाय योजना, मातृ संबल योजना, बेटी है अनमोल और बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ सहित अनेक योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सुविधा के लिए उन्हें स्मार्ट फोन प्रदान किए हैं। महिलाओं को खाना पकाने के लिए धुएं भरे चुल्हे से छुटकारा दिलाने तथा पर्यावरण संरक्षण में हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। इस योजना में अब तक 2. 78 लाख महिलाओं को नि:शुल्क गैस कुनेक्शन उपलब्ध करवाए जा चुके हैं, जिससे अब हिमाचल धुंआमुक्त राज्य बनने वाला देशभर में पहला राज्य बन गया है।

हमारी सरकार ने युवाओं को सरकारी तथा निजी क्षेत्र में रोजगार एवं स्वरोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाकर उन्हें राष्ट्र निर्माण गतिविधियों में लगाया है। निजी क्षेत्र में प्रदेश के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार सुनिश्चित करने के लिए राज्य में स्थापित औद्योगिक इकाइयों और जलविद्युत परियोजनाओं में हिमाचलियों को 70 प्रतिशत रोजगार देना अनिवार्य बनाया गया है। युवाओं में उद्यमिता कौशल का विकास कर उन्हें स्वरोजगार से जोड़ने के लिए चलाई जा रही 'मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना' के तहत गत तीन वर्षों के दौरान बैंकों को कुल 8148 ऋण मामले भेजे गए जिनमें से 2797 मामलों को स्वीकृति प्रदान की गई, जिन्हें उद्योग स्थापित करने के लिए लगभग 53 करोड़ रुपये का उपदान दिया गया। इसी प्रकार 'मुख्यमंत्री स्टार्टअप योजना' के तहत 100 लाभार्थियों को लगभग 1.70 करोड़ रुपये के लाभ प्रदान किए गए। हिमाचल एक कृषि प्रधान राज्य है जहां अधिकतर आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों पर निर्भर है। वर्तमान सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने के उद्देश्य से सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के साथ कृषि गतिविधियों में विविधता लाने के लिए अनेक नई योजनाएं आरम्भ की हैं जिनके सफल कार्यान्वयन से किसानों की आर्थिक दशा

में परिवर्तन आया है।

प्रदेश में रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के उपयोग से मानव जीवन पर दुष्प्रभाव को रोकने के लिए 'प्राकृतिक खेती-खुशहाल किसान योजना' चलाई जा रही है। इस योजना का मूल उद्देश्य खेती में रासायनिक खादों का प्रयोग न कर प्राकृतिक रूप से उपलब्ध वैकल्पिक संसाधनों को अपनाना है ताकि खेती करने की लागत को कम किया जा सके। साथ ही नागरिकों को पौष्टिक फल-सब्जियां भी उपलब्ध हो सकें। प्रदेश में वर्ष 2022 तक सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को प्राकृतिक खेती के तहत लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अब तक प्रदेश के 74 हजार से भी अधिक किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है, जिससे 3556 हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक पद्धति से खेती-बाड़ी होने लगी है। इसके अलावा कृषि एवं सिंचाई की 'मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना', 'मुख्यमंत्री नूतन पॉलीहाउस योजना', 'कृषि यंत्रीकरण कार्यक्रम', 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना', 'सौर सिंचाई योजना', 'प्रवाह सिंचाई योजना' जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं के माध्यम से कृषि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा रहा है।

प्रदेश सरकार ने अपने गत तीन वर्षों के कार्यकाल के दौरान अनेक जनहितैषी कार्यक्रम एवं योजनाएं आरंभ कर इनके लाभ आमजन तक पहुंचाने का भरसक प्रयास किया है। सरकार के इन प्रयासों से आज प्रदेश में 37808 हजार किलोमीटर लंबी सड़कों के सुदृढ़ नेटवर्क के साथ 97 प्रतिशत से भी अधिक पंचायतें सड़क सुविधा से जुड़ चुकी हैं। प्रदेश में वर्तमान में 2592 किलोमीटर लम्बे 19 राष्ट्रीय उच्च मार्ग है। वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान 77 स्वीकृत कार्य प्रगति पर है तथा लगभग 349.45 किलोमीटर के इन कार्यों के लिए 1580.28 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। 7094.99 करोड़ रुपये की कुल प्रोजैक्ट लागत से परवाणू-सोलन-शिमला- ढली तथा गरामौड़ा- स्वारघाट-मंडी-मनाली फोरलेन परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है, जबकि पिंजौर-बद्दी नालागढ़ तथा शिमला-मटौर पठानकोट- चक्की-मंडी के लिए 429.253 किलोमीटर की डी.पी.आर. तैयार की जा रही हैं।

अंत में, मैं यही कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार राज्य को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। प्रदेशवासियों से भी अपेक्षा रखती है कि इसमें वे भी अपना सक्रिय योगदान देकर इसके भागीदारी बनें। और सबसे जरूरी कोरोना महामारी का खतरा अभी टला नहीं है। हम सबको मिलकर इसे हराना है। सरकार द्वारा समय समय पर जारी दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करें ताकि इस बुरे दौर से शीघ्र बाहर आ सकें और विकास की गाड़ी फिर से पटरी पर सरपट दौड़ती नजर आए।

जय हिमाचल, जय भारत!

अटल टनल रोहतांग ने खोले

लाहौल घाटी में आर्थिक समृद्धि के द्वार

हिमालय की पीरपंजाल पर्वत शृंखला के बीच स्थित रोहतांग दर्रा सदियों से जनजातीय जिला लाहौल स्पीति के लोगों के पिछड़ेपन का पर्याय रहा है। क्षेत्र के इस पिछड़ेपन को दूर करने व स्थानीय लोगों की जिंदगी सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार के सार्थक प्रयास आज फलीभूत हो गए हैं। यह सब रोहतांग के नीचे तकनीक के बेजोड़ करिश्मे से बनाई गई अटल टनल से संभव हो पाया हैं। इस टनल के बन जाने से एक ओर जहां दो संस्कृतियों का मिलन हुआ है वहीं शीत मरुस्थल के निवासियों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आने की उम्मीद है।

उल्लेखनीय है कि रोहतांग दर्रा जो समुद्रतल से 13950 फुट की ऊंचाई पर स्थित है, के नीचे पहाड़ों के बीचोबीच यह सुरंग बनाई गई है। 9.02 किलोमीटर लंबी यह सुरंग एक प्राकृतिक नाले के नीचे से गुजरती है। आधुनिक सुविधओं से लैस रोहतांग सुरंग देश की पहली ऐसी सुरंग है, जिसमें आपात स्थिति में एक्जिट टनल बगल में न होकर मुख्य सुरंग के नीचे से बनाई गई है। ताकि मुश्किल हालात में नीचे वाली सुरंग से लोगों को बाहर निकला जा सके। इसके लिए हर पांच सौ मीटर की दूरी पर एक बाहर निकलने का रास्ता बनाया गया है। सुरंग में हर 250 मीटर की दूरी पर सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जा रही है। बर्फबारी के चलते यहां यातायात पूरी तरह से बंद हो जाता है, ऐसे में सीमा पर सरहदों की सुरक्षा करने वाले जवानों तक हथियार, गोला-बारूद और रसद सड़क के रास्ते पहुँचा पाना मुश्किल हो जाता है। लेकिन इस सुरंग के बन जाने से सरहदी इलाकों तक पहुंच आसान हुई है और रोहतांग सुरंग के जरिए भारत ने चीन को

रोहतांग दर्रा जो समुद्रतल से 13950 फुट की ऊंचाई पर स्थित है, के नीचे पहाड़ों के बीचोबीच यह सुरंग बनाई गई है। 9.02 किलोमीटर लंबी यह सुरंग एक प्राकृतिक नाले के नीचे से गुजरती है। आधुनिक सुविधाओं से लैस रोहतांग सुरंग देश की पहली ऐसी सुरंग है, जिसमें आपात स्थिति में एक्जिट टनल बगल में न होकर मुख्य सुरंग के नीचे से बनाई गई है ताकि मुश्किल हालात में नीचे वाली सुरंग से लोगों को बाहर निकला जा सके।

जवाब देने की शुरुआत कर दी है। स्थानीय लोगों के लिए यह टनल उम्मीदों की नई किरण लेकर आई है क्योंकि पहले लाहौल घाटी में 6 महीने के लिए आवाजाही बंद हो जाती थी। परन्तु अब वर्षभर आवागमन की सुविधओं से आर्थिक गतिविध्यिों का विस्तार होगा। आवाजाही से कृषि व बागबानी के उत्पादित माल के क्रय-विक्रय की गतिविधियां शुरू होंगी जिससे यहां के लोगों की आर्थिकी मजबूत होगी।

गौरतलब है कि वर्तमान में लाहौल-स्पीति में करीब 5 हजार बीघा भूमि पर आलू, मटर, गोभी और लिली के फूलों की खेती की जा रही है। जौका उत्पादन भी लाहौल- स्पीति में अध्कि होता है। हिमाचल में जौ के कुल उत्पादन का 70 प्रतिशत लाहुल-स्पीति तथा किन्नौर जिला में उत्पादित होता है। लाहौल में 2 हजार बीघा में सेब के बागीचे लगे हुए हैं जो यहां के जनजातीय समाज की आर्थिकी को सुदृढ़ता प्रदान करता है। यह घाटी अपने आप में अपार सौन्दर्य भी समेटे हुए है ऐसे में हर मौसम में यातायात में यह सुरंग मदद प्रदान करेगी। इस सुरंग के बन जाने से यहां से वाहनों और पर्यटकों का आवागमन साल भर सामान्य रहेगा। इससे यहां के पर्यटन कारोबार को खूब पंख लगने की उम्मीद जताई जा रही है। इस टनल का फायदा सिर्फ मनाली और लेह वालों को ही नहीं होगा, जनजातीय क्षेत्र लाहौल-स्पीति को भी इससे कई अवसर मिलेंगे। मनाली से लेह लद्दाख का रास्ता इस टनल से आसान हो गया है। अब कृषि, पर्यटन और बागवानी के क्षेत्र में विकास की नयी गाथा लिखी जाएगी।

कुल्लू जिले के मनाली में पर्यटक खूब आते हैं। पर्यटक अक्सर वहां से लाहौल-स्पीति के केलंग की घाटियों में भी जाते हैं, जहां धर्मिक स्थल है।वहां जाने में 5-6 घंटे लगते थे। पर्यटक अब कम समय में वहां पहुंच सकते हैं। विशेष रूप से फल और सब्जी विक्रेताओं को बहुत फायदा होगा। लाहौल-स्पीति में उत्तम किस्म की सब्जियों की खेती होती है जिसकी हिमाचल प्रदेश के अलावा पड़ोसी राज्य पंजाब व हरियाणा में अच्छी खासी मांग रहती है। इसके अलावा यहां कई प्रकार की जड़ी- बूटियां भी पैदा होती है। अब यहां के किसानों और बागवानों को उम्मीद है कि वे अपने उत्पाद जल्द ही देशभर के बाजार तक आसानी से पहुंचा सकेंगे और यहां के किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य मिला सकेगा। जबकि पहले सब्जियां समय पर मार्केट नहीं पहुंच पाती थीं और किसानों को मेहनताना भी ठीक नहीं मिल पाता था। यह टनल लाहौल वासियों की जिंदगी में उम्मीदों की किरणें लेकर नए सफर पर निकलने वाली है।

रोहतांग के बाद अब शिंकुला और बारालाचा दर्रे पर भी ऐसी ही टनल का निर्माण करने की तैयारी हो रही है। अटल टनल रोहतांग के निर्माण से प्रतिदिन 30 से 40 हजार पर्यटक पहुंचने की उम्मीद है। गौरतलब है कि 6 फरवरी 2014 को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल-एनजीटी ने रोहतांग में आने वाले पर्यटकों की सीमा को नियंत्रित किया था। जिसका आधार वर्ष 2013 में रोहतांग पहुंचने वाले पर्यटकों के 5 से 6 हजार वाहन थे, जिसमें से अधिकतर उन पर्यटकों के वाहन थे जो रोहतांग दर्रे की खूबसूरती को देखने पहुंचते थे।

पर्यटकों के लिए इंजीनियरिंग का नायाब नमूना अटल टनल रोहतांग भी बड़े आकर्षण का केंद्र बन गया है। इस तरह प्रतिदिन 70 से 80 हजार पर्यटक टनल से आना-जाना कर सकते है। जो निश्चित रूप से मनाली और लाहौल में पर्यटन की संभावनाओं को बहुत अध्कि बढ़ाने वाला है।

ंंं

प्रधान मंत्री को थंका पेंटिंग भेंट करते हुए मुख्यमंत्री

जन शिकायत निवारण

आमजन से सीधा संवाद

हरबंस सिंह ब्रसकोन

लोकतांत्रिक प्रणाली में जनता सर्वोपरि मानी जाती है। उनकी अनुमति से शासन होता है, उनकी प्रगति ही शासन का एकमात्र लक्ष्य माना जाता है। जनता की इच्छाओं और आकांक्षाओं के अनुसार ही सरकार अपनी नीतियों एवं कार्यक्रमों को अमलीजामा पहनाती है। निर्वाचित सरकार का यह परम कर्तव्य होता है कि वह आमजन की समस्याओं के समाधान हेतु उनके तीव्र सामाजिक-आर्थिक कल्याण को सदैव अधिमान प्रदान करें। आमजन को लाभान्वित करने के लिए सरकार ऐसी योजनाएं बनाती हैं जिसमें उन्हें अपने कार्य करवाने में किसी प्रकार की परेशानी भी न हो और सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों व कार्यक्रमों पर भी उनका विश्वास बना रहे। वर्तमान प्रदेश सरकार ने राज्य में सत्ता सम्भालने के बाद 'सबका साथ सबका विकास' की भावना को मूलमंत्र बनाकर शासन को जनसेवा का जरिया बनाया जिसके लिए विकास एवं जन कल्याण की कई नई योजनाएं आरम्भ की गई। प्रदेश में जन शिकायतों के त्वरित निवारण तथा विकास में जन भागीदारी के लिए प्रभावी प्रशासनिक तंत्र विकसित किया गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के अधिकतम प्रभाव का उपयोग करके जन सामान्य को जवाबदेह, एवं पारदर्शी प्रशासन सुनिश्चित किया गया है। इस दिशा में गत तीन वर्षों में सरकार द्वारा कई कार्यक्रम आरम्भ किए गए हैं। इन्हीं कार्यक्रमों में 'जनमंच' एक प्रमुख कार्यक्रम है।

प्रदेशवासियों से सीधा संवाद स्थापित करने तथा जन शिकायतों का त्वरित समाधान करने में जनमंच एक कारगर मंच सिद्ध हुआ है। मंत्रियों के नेतृत्व में प्रत्येक माह विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में जनमंच आयोजित करने का प्रावधान किया गया है जिसमें सभी विभागों के जिला अधिकारी भी उपस्थित रहते हैं ताकि अधिक जन शिकायतों का मौके पर ही समाधान किया जा सके।

लोगों की समस्याओं को स्थानीय स्तर पर निपटाने के लिए जून 2018 में 'जनमंच' के रूप में एक अनूठी पहल की जिसका उद्देश्य जन शिकायतों को उनके घर-द्वार के समीप त्वरित निपटारे के लिए एक ऐसी कार्य प्रणाली विकसित करना था जिससे जनता को छोटे-मोटे कार्यों के समाधान के लिए सरकारी कार्यालयों के बार-बार चक्कर न लगाने पड़े और उनके बहुमूल्य समय के साथ धन की बचत भी हो सके। परिणामस्वरूप आज यह मंच सरकार और जनता के बीच सेतू का कार्य कर रहा है। बड़ी संख्या में लोगों ने इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर भाग लेकर न केवल समाधान के अवसर का भरपूर लाभ उठाया बल्कि सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों को धरातल पर कार्यान्वित होते देख इसके प्रत्यक्ष साक्षी भी बने हैं। जनमंच कार्यक्रम की सबसे अहम बात यह है कि इसकी अध्यक्षता प्रदेश के एक मंत्री द्वारा एक जिले में की जाती है ताकि लोग खुले मन से उनके समक्ष अपनी बात रख सकें। सरकार ने जनमंच कार्यक्रम की शुरुआत इसी मकसद से की थी। लेकिन कोरोना महामारी के चलते मार्च माह के बाद से जनसमस्याओं के त्वरित समाधान के लिए सरकार फिर जनता

के द्वार पहुंची है। हालांकि कोरोना का प्रकोप अभी खत्म नहीं हुआ है बावजूद इसके सरकार ने जनमंच को दोबारा शुरू करने का फैसला लिया। लाहौल-स्पीति जिला को छोड़कर प्रदेश के 11 जिलों में गत 8 नवम्बर 2020 को जनमंच कार्यक्रम का आयोजन पुनः शुरू किया गया। अभी तक कुल 65 विधानसभा क्षेत्रों में 200 जनमंच कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इस दौरान विभिन्न विभागों से सम्बन्धित लगभग 48694 मामले आए जिनमें से 44394 मामले निपटाए जा चुके हैं जो लगभग 91 प्रतिशत है।

इसके अतिरिक्त, जनमंच में 7.19 लाख राशन कार्ड बनाए गए, 78 हजार महिलाओं को निःशुल्क गैस कुनैक्शन वितरित किए गए तथा 2.46 लाख लाभार्थियों को पेंशन वितरित की गई।

जनमंच ने आमजन की समस्याओं एवं अन्य मामलों को प्रशासन व सरकार के समक्ष उठाने के लिए ऐसा बेहतर मंच प्रदान किया है जिसमें उन्हें घर-द्वार पर ही समस्याओं का शीघ्र निपटारा करने में सहायता मिल रही है और इस बहुआयामी कार्यक्रम के अपेक्षाओं से अधिक सार्थक परिणाम सामने आ रहे हैं। इस कार्यक्रम के तहत प्रदेश सरकार द्वारा लोगों की समस्याओं के समाधान करने के साथ-साथ विभिन्न योजनाओं का लाभ पहुंचा है। जनमंच की प्रासंगिकता व लोकप्रियता को देखते हुए, सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतर सदुपयोग करके जन शिकायत निवारण तंत्र को और भी बेहतर एवं प्रभावशाली बना दिया है। मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाइन के माध्यम से अब प्रदेश के किसी भी कोने में बैठा व्यक्ति टोल फ्री नम्बर-1100 पर कॉल करके शिकायत दर्ज करवा सकता है। 16 सितम्बर, 2019 से आरम्भ इस हेल्पलाइन को संचालित करने के लिए शिमला में एक कॉल सेंटर स्थापित किया गया है। यह प्रतिदिन सुबह 7 बजे से लेकर रात 10 बजे तक कार्यशील रहता है। सेवा संकल्प हेल्पलाइन कम समय में ही बड़ी लोकप्रिय हुई है तथा बड़ी संख्या में प्रदेशवासी अपनी समस्याओं के समाधान के लिए इस सेवा का लाभ उठा रहे हैं। इस सेवा के प्रभावी संचालन के कारण आम जन को सरकारी कार्यालयों के बार-बार चक्कर नहीं काटने पड़ते है। मुख्यमंत्री स्वयं इस हेल्पलाइन में प्राप्त होने वाली शिकायतों के निपटारे की समीक्षा कर रहे हैं। जुलाई, 2020 के अन्त तक एक लाख से भी ज्यादा शिकायतें इस हेल्पलाइन में प्राप्त हुई जिनमें से अधिकतर का निपटारा किया जा चुका है तथा शेष शिकायतों के आगामी कार्रवाई के लिए संबंधित विभागों को प्रेषित किया गया है।

स्वच्छ प्रशासन

- **जन शिकायत निवारण की अनूठी पहल 'जनमंच'**
- **इसमें 7.19 लाख राशन कार्ड बनाए गए। 78 हजार महिलाओं को निःशुल्क गैस कुनेक्शन वितरित**
- **मुख्यमंत्री सेवा संकल्प से घर बैठे समस्याओं का समाधान**
- **हिम प्रगति पोर्टल से विकास की ऑन लाइन मॉनिटरिंग**
- **'भारत नेट' के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी**

सरकार व प्रशासन में जन भागीदारी को बढ़ावा देने तथा सरकार की नीतियों व कार्यक्रमों में आमजन की राय जानने व सुझाव आमंत्रित करने के लिए 'माई गोव' के नाम से एक अभिनव पोर्टल आरम्भ किया गया है। 6 जनवरी, 2020 को आरम्भ इस नागरिक जुड़ाव मंच के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता अभियान चलाने व नागरिकों के विचार जानने में सहायता मिली है। इस पोर्टल से सोशल मीडिया का सदुपयोग करके सुशासन की दिशा में एक और पहल की गई है।

प्रदेश में चल रही महत्त्वपूर्ण योजनाओं व परियोजनाओं की ऑनलाइन निगरानी के लिए हिम प्रगति पोर्टल बड़ा कारगर सिद्ध हुआ है। इस पोर्टल के माध्यम से विद्युत, औद्योगिक, पर्यटन व अन्य अधोसंरचनात्मक परियोजनाओं की स्वीकृतियां व अनुमोदन जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए 'भारतनेट' परियोजना के तहत प्रदेश में प्रथम चरण में हमीरपुर के नादौन, सुजानपुर टिहरा, बिजह, बमसन तथा मण्डी के सिराज और सोलन के नालागढ़ के 6 ब्लॉकों को फाइबर केबल कनेक्टिविटी से जोड़ा गया है। दूसरे चरण में प्रदेश की दूरदराज की 153 ग्राम पंचायतों को इससे जोड़ने का कार्य चला हुआ है। 88 स्थानों पर वी सैट उपकरण पहुंचा दिए गए हैं 30 ग्राम पंचायतों को लाइव किया गया है।

सरकार व प्रशासन में जन भागीदारी को बढ़ावा देने तथा सरकार की नीतियों व कार्यक्रमों में आमजन की राय जानने व सुझाव आमंत्रित करने के लिए 'माईगव' के नाम से एक अभिनव पोर्टल आरम्भ किया गया है। 6 जनवरी, 2020 को आरम्भ इस नागरिक जुड़ाव मंच के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता अभियान चलाने व नागरिकों के विचार जानने में सहायता मिली है। इस पोर्टल से सोशल मीडिया का सदुपयोग करके सुशासन की दिशा में एक और पहल की गई है।

घुम्मकड़ी

पर्यटन की नई उड़ान

✍ वेद प्रकाश

वैसे तो हिमाचल प्रदेश की पहचान विकासोन्मुख, जनकल्याणकारी कार्यों व कुशल आर्थिक प्रबंधन के चलते देश दुनिया में होने लगी है। लेकिन यहां की प्राकृतिक छटा, सुंदरवादियां, सर्दियों के मौसम में बर्फ से लदे पहाड़ सदैव ही पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के कुशल नेतृत्व में सरकार ने नई पर्यटन नीति बनाई गई है ताकि प्रदेश में साहसिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व धारोहर पर्यटन तथा आयुष व कृषि-बागबानी पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके। ऐसी नवीन योजनाओं के कार्यान्वयन से हिमाचल प्रदेश पर्यटन मानचित्र पर एक नई पहचान बना कर उभर रहा है। हालांकि वैश्विक महामारी कोरोना के कारण प्रदेश के पर्यटन उद्योग पर विपरीत असर हुआ लेकिन सरकार ने पर्यटन व्यवसाय से जुड़े उद्यमियों को कई रियायतें प्रदान कर इस क्षेत्र को पुनः पटरी पर लाने का सार्थक प्रयास किया है।

प्रदेश की हसीन वादियां सिने जगत की भी हमेशा से पहली पसंद रही हैं। फिल्मों के माध्यम से प्रदेश को पर्यटन मानचित्र पर उभारने के लिए राज्य में नई फिल्म नीति को भी लागू किया गया है। इसके साथ ही उच्च वर्ग के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अधोसंरचना के विस्तार पर बल दिया जा रहा है। अनेक एयरपोर्ट बनाए जा रहे हैं, रेलवे विस्तार की संभावनाओं को तलाशा जा रहा है। नए अनछूए पर्यटन स्थलों को विकसित किया जा रहा है। बीते तीन वर्षों में पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए सरकार द्वारा अनेक परियोजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं।

अनछुए क्षेत्रों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए आरम्भ नई राहें-नई मंजिलें योजना के अन्तर्गत अब तक 150 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है जिसके तहत कांगड़ा जिला के बीड़-बिलिंग को पैराग्लाइडिंग गंतव्य के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके लिए 8.37 करोड़ रुपये की राशि वन विभाग तथा पर्यटन विभाग को जारी की गई है। 8 करोड़ रुपये की लागत से यहां पैराग्लाइडिंग केन्द्र का निर्माण भी किया जा रहा है। शिमला जिला की प्रसिद्ध चांशल घाटी को स्की गंतव्य के रूप में विकसित करने के

स्पीति घाटी

लिए 5.31 करोड़ रुपये की राशि वन विभाग को जारी की गई है जबकि जिला मण्डी के जंजैहली को ईको-पर्यटन के रूप में विकसित करने के लिए 18.18 करोड़ रुपये की राशि वन विभाग को जारी की गई है। इसके अतिरिक्त, देवनाल (बगस्याड़) में 'वे-साइड' सुविधाएं विकसित करने के लिए 1.28 करोड़ रुपये तथा पैलेस कालोनी में फोरेस्ट ट्रैक रूट के निर्माण के लिए 50 लाख रुपये जारी किए हैं। बंजार अबैंडेन्ड रोड़ लारजी की मुरम्मत व इसे ट्रैकिंग उद्देश्य के लिए पुनः विकसित करने के लिए लोक निर्माण विभाग को 1.24 करोड़ रुपये की धनराशि जारी की गई है। इसके अलावा लारजी व तत्तापानी में एडवेंचर वाटर स्पोर्टस आरम्भ करने के लिए हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड को 3.72 करोड़ रुपये तथा अटल बिहारी वाजपेयी पर्वतारोहण एवं खेल संस्थान, मनाली को 6.44 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं ताकि इन स्थलों पर शीघ्र गतिविधियां आरम्भ की जा सकें। प्रदेश के युवाओं को साहसिक खेलों में प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है जिसके लिए पर्वतारोहण संस्थान को 2 करोड़ रुपये की राशि अलग से जारी की गई है।

पौंगबांध जलाशय में की तर्ज पर पंडोह जलाशय में भी जल क्रीड़ाएं आरम्भ करने की योजना है। नई राहें-नई मंजिलें योजना के तहत अब करगाणु-सरजगास वनौहराधार-चूड़धार का भी पर्यटन की दृष्टि से विकास किया जा रहा है जिसके लिए 8 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई है। सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रोहतांग टनल को अब पर्यटन की दृष्टि से ब्रांडिंग करने की योजना बनाई गई है। इस टनल के आसपास हेलीपैड सहित आवश्यक सुविधाएं विकसित करने के लिए 5 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जा रही है। जिला मण्डी के कंगनीधार में 20करोड़ रुपये की लागत से एक भव्य शिवधाम का निर्माण किया जा रहा है। विविध पर्यटन संभावनाओं एवं इस क्षेत्र में रोजगार सृजन की व्यापक क्षमता को देखते हुए केन्द्र सरकार ने स्वदेश दर्शन योजना आरम्भ की है जिसके तहत विषय-आधारित सर्किट निर्धारित किए गए हैं। हिमाचल प्रदेश को हिमालयन सर्किट के तहत लाया गया है तथा इसके तहत क्यारीघाट, धर्मशाला, सौरव कालिया वन विहार, हाटकोटी, कांगड़ा, चम्बा, मनाली, शिमला तथा बीड़ को चिन्हित किया गया है। इस योजना के तहत इस समय लगभग 60 करोड़ रुपये की परियोजनाएं चल रही हैं जिनमें 25 करोड़ रुपये लागत की क्यारीघाट में कन्वेंशन सेन्टर का निर्माण, शिमला में 7 करोड़ रुपये की लागत से हेलीपोर्ट का निर्माण, धर्मशाला में 4 करोड़ के रुपये से लागत

- **नई फिल्म नीति से हिमाचल की हसीन वादियों में हो सकेंगी शूटिंग**
- **नई मंजिलों को नई उड़ान**
- **पैरा ग्लाइडिंग के अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर बीड़ बीलिंग**
- **उड़ान योजना के तहत होगा 22 हेलिपैड का निर्माण**

नई राहें नई मंजिलें

अनछुए क्षेत्रों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए आरम्भ नई राहें-नई मंजिलें योजना के अन्तर्गत अब तक 150 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है जिसके तहत कांगड़ा जिला के बीड़-बिलिंग को पैराग्लाइडिंग गंतव्य के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके लिए 8.37 करोड़ रुपये की राशि वन विभाग तथा पर्यटन विभाग को जारी की गई है। 8 करोड़ रुपये की लागत से यहां पैराग्लाइडिंग केन्द्र का निर्माण भी किया जा रहा है। शिमला जिला की प्रसिद्ध चांशल घाटी को स्की गंतव्य के रूप में विकसित करने के लिए 5.31 करोड़ रुपये की राशि वन विभाग को जारी की गई है जबकि जिला मण्डी के जंजैहली को ईको-पर्यटन के रूप में विकसित करने के लिए 18.18 करोड़ रुपये की राशि वन विभाग को जारी की गई है। जबकि जिला मण्डी के जंजैहली को ईको-पर्यटन के रूप में विकसित करने के लिए 18.18 करोड़ रुपये की राशि वन विभाग को जारी की गई है। इसके अतिरिक्त, देवनाल (बगस्याड़) में 'वे-साइड' सुविधाएं विकसित करने के लिए 1.28 करोड़ रुपये तथा पैलेस कालोनी में फोरेस्ट ट्रैक रूट के निर्माण के लिए 50 लाख रुपये जारी किए हैं।

से डल-झील का विकास एवं सौन्दर्यकरण, 4 करोड़ रुपये की लागत से कांगड़ा में विलेज हार्ट का निर्माण, बीड़ में 8 करोड़ रुपये की लागत से पैराग्लाइडिंग केन्द्र का निर्माण, शिमला में लाइट एण्ड साउंड शो, भलेई माता चम्बा में कला एवं सांस्कृतिक तथा मनाली में अन्तरराष्ट्रीय स्तरीय कृत्रिम क्लाइम्बिंग वॉल का निर्माण प्रमुख हैं। धार्मिक स्थलों के सुनियोजित विकास व सौन्दर्यकरण के लिए केन्द्र की प्रसाद योजना सतत पर्यटन विकास के माध्यम से श्रद्धालुओं को इन स्थलों के भ्रमण पर आलौकिक अनुभूति हो सके। इस योजना के तहत 45 करोड़ रुपये की लागत से मां चिन्तपूर्णी मंदिर के विकास के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा सैद्धान्तिक स्वीकृति प्रदान की गई है। 100 करोड़ रुपये की एक अन्य परियोजना धार्मिक पर्यटन सर्किट के तहत प्रेषित की गई है।

प्रदेश में उच्च श्रेणी पर्यटकों विशेषकर फिल्म निर्माताओं व सिने जगत की अन्य हस्तियों को आकर्षित करने के लिए एयर कनेक्टिविटी के विस्तार को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। प्रदेश में पहले से विद्यमान हवाई पट्टियों का विस्तार किया जा रहा है तथा नई छोटी हवाई पटिट्यों का निर्माण किया जा रहा है। इस समय प्रदेश में 22 नए हेलिपैड बनाए जा रहे हैं। जिला मण्डी के नागचला में अन्तराष्ट्रीय स्तर के ग्रीन फील्ड हवाई अड्डे की स्थापना की प्रक्रिया जारी है। इसके लिए 15 जनवरी, 2020 को एयरपोर्ट अथोरिटी ऑफ इंडिया के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। इस हवाई अड्डे के निर्माण के लिए 2936 बीघा भूमि चिन्हित कर दी गई है।

उड़ान-2 के तहत प्रदेश में बद्दी, मण्डी के कांगनीधार व कुल्लू के सासे हेलीपैड तथा शिमला के रामपुर हेलीपैड को हेलीपोर्ट के रूप में विकसित किया जा रहा है। प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से रोप-वे निर्माण को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। इस समय प्रदेश में 150 करोड़ रुपये की लागत की धर्मशाला-मैकलॉडगंज रज्जुमार्ग का कार्य प्रगति पर है जिसे अगले वर्ष मई माह तक पर्यटकों के लिए आरम्भ किए जाने की संभावना है। आदि हिमानी चामुण्डा जी रज्जूमार्ग के लिए भूमि का चयन कर लिया गया है, भुंतर से बिजली महादेव रज्जूमार्ग के लिए कंपनी द्वारा टावर की स्थापना के लिए सर्वेक्षण कार्य किया जा रहा है।

पर्यटन विकास के लिए अधोसंरचनात्मक सुविधाएं सृजित करने के लिए एशियन विकास बैंक की सहायता से महत्वाकांक्षी परियोजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। एडीबी-1 के तहत प्रदेश में ट्रान्च-1 व ट्रान्च-3 शृंखला आरम्भ की है। ट्रान्च-1 में 19 उप परियोजनाओं पर कार्य पूरा किया गया जिसमें लिफ्ट, टाउनहॉल तथा टूटीकण्डी पार्किंग प्रमुख हैं। ट्रान्च-3 के तहत उप-परियोजनाएं आरम्भ की गई हैं जिनमें महत्त्वपूर्ण मंदिरों का जीर्णोद्धार, शिमला में बेंटनी कैसल का सरंक्षण, नालदेहरा में इको-टूरिज्म पार्क की स्थापना, जंजैहली में सांस्कृतिक केन्द्र तथा मनाली के समीप बड़ाग्रां में पारम्परिक कला एवं शिल्प केन्द्र की स्थापना प्रमुख है। एडीबी-2 के रूप में लगभग 1892 करोड़ रुपये की नई पर्यटन विकास परियोजना को सैद्धांतिक स्वीकृति मिल चुकी है। इस परियोजना के प्रथम चरण के लिए 47 प्रोजेक्ट प्रस्तावित हैं। बीते वर्ष धार्मशाला में आयोजित वैश्विक सम्मेलन के परिणामस्वरूप पर्यटन क्षेत्र में लगभग 17540. 76 करोड़ रुपये के प्रस्तावित निवेश के 256 एमओयू साइन किए गए जिनमें से 3162.41 करोड़ रुपये के निवेश के 78 एमओयू परियोजनाएं धरातल पर उतार दी गई हैं।

০০০

मानवीय दृष्टिकोण

बेसहारा एवं वृद्धों को सामाजिक सुरक्षा कवच

नर्बदा कंवर

आज पूरा विश्व कोविड-19 महामारी से जंग लड़ रहा है। देश भर में लॉकडाउन के दौरान सभी नागरिकों का जीवन घर की चार दीवारी तक सीमित हो गया था। ऐसी परिस्थिति में भी प्रदेश सरकार ने अपने दायित्व का निर्वहन पूरी शिद्दत से किया। बुजुर्गों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन समय पर उपलब्ध करवाने के लिए नई पहल करते हुए चलने-फिरने में असमर्थ लोगों के घर-द्वार पर पेंशन वितरित करवाई ताकि पैसों के अभाव से उन्हें किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े। सरकार अन्य पात्र लोगों को भी बढ़ी हुई सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान कर रही है।

घर-द्वार पर पेंशन सुविधा

कमजोर वर्गों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना वर्तमान सरकार की मुख्य प्राथमिकताओं में शामिल है। इन वर्गों के कल्याण तथा विकास के लिए कई योजनाएं आरम्भ की गई है जिनसे लोगों का सामाजिक व आर्थिक उत्थान सुनिश्चित किया गया है। इन्हीं जनहितकारी योजनाओं में शामिल है सरकार द्वारा आरंभ की गई विभिन्न सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं। 27 दिसम्बर, 2017 को शपथ ग्रहण करने के उपरान्त पहले दिन ही मंत्रिमण्डल की प्रथम बैठक में वृद्धावस्था पेंशन पाने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया गया तथा इसकी पात्रता के लिए कोई आय सीमा निधारित नहीं की गई। इस फैसले से उस समय एक लाख 30 हजार वृद्धजन लाभान्वित हुए थे। उस समय 80 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के वृद्धों को केवल 700 रुपये प्रतिमाह पेंशन मिलती थी। सरकार ने पेंशन राशि की वृद्धि हेतु और इस योजना में पंजीकरण की प्रक्रिया को सुलभ बनाने हेतु कई कारगर कदम उठाए । सरकार द्वारा वृद्धजनों की सामाजिक पेंशन पर समय-समय पर बढ़ोतरी की जो आज बढ़कर 1500 रुपये प्रतिमाह हो गई है। मौजूदा समय में 70 वर्ष से अधिक आयु वर्ग वाले लगभग 3.85 लाख वृद्धजन इस बढ़ी हुई पेंशन का लाभ उठा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त विधवाओं तथा दिव्यांगजनों की पेंशन में प्रथम अप्रैल, 2020 से एक बार फिर से बढ़ोतरी की गई। इस बढ़ी हुई पेंशन से लगभग 1. 20 लाख विधवाएं तथा 63,498

की मुख्यधारा से जोड़ने के उद्देश्य से सक्षम युवक एवं युवतियों को ऐसे अक्षम व्यक्तियों, जिनकी अक्षमता 40 प्रतिशत से अधिक है, के साथ विवाह करने के लिए 'दिव्यांगजन पुरस्कार योजना' के तहत 25000 रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए जा रहे हैं। यदि दम्पत्ति दोनों ही दिव्यांग हो तो भी वे इस योजना के तहत पात्र है। 70 प्रतिशत या इससे अधिक दिव्यांगता होने पर यह पुरस्कार राशि 50,000 रुपये प्रदान की जा रही है।

समावेशी समाज के निर्माण में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है।

दिव्यांगजन लाभान्वित हुए हैं। इस समय प्रदेश में 5.69 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन लाभार्थी हैं, जिनमें लगभग 3.85 लाख वृद्धावस्था पेंशन लाभार्थी है। इन सभी लाभार्थियों को सितम्बर, 2020 तक की पेंशन का भुगतान कर दिया गया है, जिस पर अब तक 424. 56 करोड़ व्यय किए जा चुके हैं। वर्तमान प्रदेश सरकार द्वारा बीते तीन वर्षों के दौरान 1,63,607 नए सामाजिक सुरक्षा पेंशन के मामले स्वीकृत किए गए, जिनमें 1,30,931 वृद्धावस्था पेंशन, 18,203 विधवा व एकल नारी पेंशन तथा 14,473 दिव्यांगजनों के पेंशन के मामले है।

प्रदेश सरकार की कल्याणकारी योजनाएं पिछड़े एवं कमजोर वर्ग के लोगों के उत्थान के लिए वरदान साबित हुई है। इन योजनाओं की मदद से न केवल गरीब एवं कमजोर वर्ग के लोगों के जीवन का उत्थान हुआ है बल्कि उनको जीने का सम्बल भी मिला है। पिछड़े एवं गरीब वर्ग के परिवारों को आवास सुविधा प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा गृह निर्माण अनुदान योजना शुरू की गई है। इस योजना के अन्तर्गत पात्र परिवारों को मिलने वाली अनुदान राशि को वर्तमान सरकार द्वारा 1.30 लाख से बढ़ाकर 1.50 लाख रुपये किया है।

सामान्य वर्ग व अनुसूचित जातियों के बीच छुआछूत की कुरीति को दूर करने व अन्तरजातीय विवाह को प्रोत्साहित करने के लिए दम्पत्ति को 50,000 रुपये पुरस्कार के रूप में दिए जा रहे हैं। इस योजना से प्रदेश के लोगों में एक सकारात्मक सामाजिक सोच का संचार होता दिखाई दे रहा है। दिव्यांगजनों को समाज

स्वस्थ समाज के निर्माण में बच्चों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास भी जरूरी है। वर्तमान सरकार ने गत तीन वर्षों में इन सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया है। केन्द्र सरकार द्वारा शुरू की गई उज्ज्वला योजना से छूट गए परिवारों को गैस कुनेक्शन उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से सरकार ने हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना आरम्भ की है। इस योजना के तहत पात्र परिवारों को अतिरिक्त रिफिल्ड सिलैण्डर की सुविधा भी दी जा रही है।

बेसहारा एवं निर्धन परिवारों की बेटियों की शादी के लिए सरकार ने 'मुख्यमंत्री कन्यादान योजना' शुरू की जिसके अन्तर्गत 51 हजार रुपये की सहायता अनुदान राशि दी जा रही है। इस योजना के अंतर्गत अब तक दो हजार से भी अधिक परिवारों को लगभग 10 करोड़ की सहायता राशि वितरित की जा चुकी है। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों में जन्मी दो बेटियों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए 'बेटी है अनमोल' योजना शुरू की गई है। योजना के तहत बारह हजार की छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है।

प्रदेश में बालिकाओं व किशोरिओं के सशक्तीकरण तथा उनके खिलाफ हो रहे अपराधों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से सक्षम गुड़िया बोर्ड गठित किया गया है। ग्यारह वर्ष से लेकर 45 वर्ष तक की किशोरियों व महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने व उनका कौशल विकास करके आर्थिक गतिविधियों के साथ जोड़ने के उद्देश्य से सशक्त महिला योजना को प्रदेशभर में लागू किया गया है।

सामाजिक सुरक्षा

- **वृद्धावस्था पेंशन पाने की आयु सीमा 70 वर्ष**
- **प्रदेश में 6.69 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन लाभार्थी**
- **गृह निर्माण अनुदान राशि अब 1.50 लाख**
- **हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना से महिलाओं को मिली धुएं से निजात**

सुगम्य हिमाचल

आसान हुई यातायात की राहें

सतपाल

तीव्र आर्थिक विकास, कृषि- बागबानी उत्पादों को मण्डियों तक पहुंचाने व उद्योग उन्नयन और इससे भी बढ़ कर आमजन के आवागमन के लिए सुदृढ़ एवं बेहतर सड़क नेटवर्क विशेष महत्त्व रखता है। हिमाचल में पर्यटन की अपार संभावनाओं के दृष्टिगत यहां इसका विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण और भी जरूरी हो जाता है। प्रदेश में इस दिशा में सघन प्रयास हुए हैं और आज यहां कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद बेहतर एवं मजबूत सड़क ढांचा उपलब्ध है व इसके विस्तार के लिए केन्द्रीय एवं राज्य सड़क मार्ग योजनाओं के अधीन प्रयास जारी हैं।

प्रदेश के अस्तित्व में आने तक यहां मात्र 288 कि.मी. लम्बी सड़कें थीं। 1971 में पूर्ण राज्यत्व का दर्जा प्राप्त होने तक इनकी लम्बाई 7370 कि.मी. तक पहुंची और आज इनका विस्तार 37808 कि.मी. तक पहुंच गया है। सड़क सघनता 1971 में प्रति 100 वर्ग कि.मी. में 13 कि. मी. लम्बी सड़कों की अपेक्षा आज प्रदेश में सड़क सघनता 67.91 कि.मी. है। पक्की सड़कों की लम्बाई 28588 कि.मी. है। प्रदेश की 3226 पंचायतों (नई सृजित पंचायतें शामिल नहीं) में से 3162 पंचायतें सड़क सुविधा सम्पन्न हैं। हर गांव की ओर भी सड़क गई है और 10,488 से भी अधिक गांव को यह सुविधा प्राप्त है। शेष बचे गांव व पंचायतों को सड़क मार्गों से जोड़ने के प्रयास शीघ्र फलीभूत होने की सम्भावनाएं सामने हैं। सड़कों को खड्डों व नदी -नालों पर एक छोर से दूसरे छोर से जोड़ने के लिए 2199 पुल सेतु रूप में निर्मित हैं। इन की संख्या 1971 तक महज 232 ही थी।

वर्तमान सरकार के 3 वर्षों के कार्यकाल के दौरान सड़क निर्माण तीव्र गति से हुआ और इस अवधि में करीब 2886 कि.मी. लम्बी सड़कें बन कर तैयार हुई हैं।

प्रदेश में 9 राष्ट्रीय उच्च मार्ग, 19 राज्य राज मार्ग, 45 प्रमुख जिला सड़क मार्ग राज्य के जन-जन को एक से दूसरे स्थान से जोड़ते हैं जो एक बड़ी उपलब्धि है। प्रदेश में राष्ट्रीय उच्च मार्गों की लम्बाई 1238 कि.मी., प्रमुख जिला मार्गों की लम्बाई 4638

फोरलेन से सुदृढ़ हुआ सड़क नेटवर्क

कि.मी., ग्रामीण सड़कों की लम्बाई 30578 कि.मी. हैं। राष्ट्रीय उच्च मार्ग (एन.एच.ए.आई) 785 कि.मी. है, बी.आर.ओ. के तहत सड़कों की लम्बाई 569 कि.मी. है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना – यह योजना ग्रामीण बस्तियों को सम्पर्क मार्ग सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए केन्द्र सरकार की एक महत्त्वाकांक्षी योजना है। इस योजना के तहत अब तक 2564 बस्तियों में से 2335 बस्तियों को सम्पर्क मार्ग सुविधा उपलब्ध करवाई जा चुकी है। इस पर 4900 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं और 16786 कि. मी. लम्बे सम्पर्क मार्ग बने हैं।

भारत सरकार ने अब पी.एम.जी.एस.वाई.-III का शुभारम्भ किया है। इसके तहत ग्रामीण कृषि मण्डियों, वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाओं, अस्पतालों को जोड़ने वाले वर्तमान मार्गों का स्तरोन्नयन किया जाएगा। इसके लिए प्रदेश को 2135 कि.मी. की मार्ग लम्बाई स्वीकृत हुई है।

नाबार्ड : ग्रामीण क्षेत्रों में चिरस्थायी सम्पत्तियों (सड़कों) के सृजन हेतु नाबार्ड के तहत स्वीकृत 1828 प्रोजेक्टों में से 1424 प्रोजेक्टों को पूरा किया जा चुका है, जिस पर अब तक 3410.97 करोड़ रुपये की राशि व्यय हुई है। वर्ष 2020-21 के दौरान इस योजना पर 17.84 करोड़ रुपये की राशि खर्च हुई है।

हिमाचल प्रदेश में पथ परिवहन

प्रदेश में सड़क परिवहन यातायात का प्रमुख साधन है। इसे लोगों के लिए सुगम एवं आरामदायक बनाने के लिए सघन एवं त्वरित प्रयास हुए हैं। फलत: शहर से गांव-कस्बों तक परिवहन व्यवस्था सुदृढ़ हुई है।

राज्य में तीव्र आर्थिक विकास के चलते प्रदेश की सड़कों पर 31 अगस्त 2020 तक छोटे-बड़े 16,88,781 पंजीकृत वाहन दौड़ रहे हैं। अब तक इनकी संख्या बढ़ी ही होगी। यह सुगम एवं संपन्न परिवहन का द्योतक तो है ही राजकीय प्रयासों का प्रतिफल भी है।

वर्तमान सरकार द्वारा पूर्व कोरोना काल में 174 अतिरिक्त रूटों पर बसें चलाई गईं तथा 221 बसों के रूटों में बढ़ोतरी की गई जिससे आम जन का परिवहन सफर 25291 किलोमीटर तक बढ़ा।

कोरोना संक्रमण काल के चलते हालांकि परिवहन व्यवस्था एवं अन्य सुविधााएं प्रभावित हुई हैं, फिर भी निकट एवं सुखद पल हमारे समक्ष हैं। कामना एवं संकल्प के साथ हम इससे और भी आगे जरूर बढ़ेंगे, जन-जन का जीवन और भी सुखद होगा। पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिगत प्रदेश में इलैक्ट्रिक (विद्युत चालित) बसों एवं अन्य वाहनों के प्रचलन को बढ़ावा दिया जा रहा है। 25 इलैक्ट्रिक बसें मनाली में, 50 इसी तरह की बसें शिमला शहर व 36 बसें अन्य रूटों पर चल रही हैं। 50 टैक्सियां प्रदेश के 17 शहरों एवं कस्बों में चलाई जा रही हैं। अन्य शहरों में इलैक्ट्रिक बसें चलाने के लिए रिचार्जिंग सुविधा सृजन के कार्य को अंजाम दिया जा रहा है।

प्रदेश में ट्रांसपोर्ट नगर स्थापित किए जा रहे हैं और 16 करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया गया है। सर्वप्रथम हमीरपुर के नादौन में ट्रांसपोर्ट नगर स्थापित करने का कार्य शीघ्र आरंभ किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त सोलन के बद्दी व ऊना में भी इन नगरों की स्थापना हेतु भूमि का चयन कर लिया गया है और कार्य शीघ्र शुरू होगा। इन नगरों में ड्राइविंग टैस्ट ट्रैक, ट्रैफिक पार्क, ड्राइविंग ट्रेनिंग सैंटर जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

हिमाचल में सड़क

(संक्षिप्त विवरण)

सड़क लंबाई	37,808 किलोमीटर
पक्की सड़कें	28,588 किलोमीटर
सड़क से जुड़े गांव	10,488
सड़क से जुड़ी पंचायतें	3,162
सड़क घनत्व (प्रति 100 वर्ग कि.मी.)	67.91 किलोमीटर
पुल	2,199

सरकार की प्रदेश में आधुनिक सुविधाओं से युक्त बस अड्डों के निर्माण की संकल्पना है। ऊना व संधोल में सुविधा संपन्न बस अड्डे कार्यशील हैं जबकि स्वारघाट व सुन्नी में इनका कार्य पूरा हो चुका है और पांवटा साहिब, नाहन, निरमंड, भंजराड़ू, करसोग, कोटखाई, परवाणू व नालागढ़ में बस अड्डों के निर्माण का कार्य प्रगति पर है।

रोप-वे : प्रदेश में रोप-वे व मोनोरेल निगम की स्थापना सरकार द्वारा की गई है जिसके अंतर्गत वैकल्पिक यातायात व्यवस्था के लिए प्रदेश भर में रोप-वे स्थापित करने के लिए स्थान चिन्हित किए जा रहे हैं।

जलमार्ग : भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण की पहल पर गोबिंद सागर, कौल डैम व चमेरा डैम में तकनीकी-आर्थिक सर्वेक्षण करवा कर इसकी संभाव्यता रिपोर्ट तैयार करके इन क्षेत्रों में जल परिवहन व्यवस्था विकसित करने के लिए 26.01 करोड़ रुपये का प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजा गया है। शुरुआती चरण में कौल डैम पर चार जेटिज के निर्माण के लिए शिमला के सुन्नी, मंडी के गांव रंधोल, तत्तापानी व गांव कसोल को चिन्हित किया गया है। इनमें से प्रथम चरण में 2 जगहों पर कार्य किया जा रहा है।

वायु मार्ग : हिमाचल प्रदेश विश्व पर्यटन मानचित्र पर विशेष स्थान रखता है और यहां हर वर्ष हजारों-लाखों देशी-विदेशी पर्यटक व अन्य महानुभाव पदार्पण करते हैं। इन सबकी सुविधार्थ प्रदेश में कांगड़ा के गग्गल, कुल्लू के भुंतर व शिमला के निकट जुब्बड़हट्टी में हवाई पट्टियां स्थापित हैं। यहां विमान उतरते व उड़ानें भरते हैं। गग्गल व जुब्बड़ हट्टी की हवाई पट्टियों का विस्तार प्रक्रियाधीन है।

हवाई पट्टियां

गग्गल (कांगड़ा)

भुंतर (कुल्लू)

जुब्बड़हट्टी (शिमला)

रेल सुविधा

नंगल-ऊना-दौलतपुर

कालका-शिमला (नैरोगेज)

पठानकोट-जोगिंद्रनगर (नैरोगेज)

इसके अतिरिक्त जिला मंडी की बल्ह घाटी के नागचला में एक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के निर्माण का सपना भी शीघ्र ही धरातल पर उतरने वाला है।

रेल सुविधा : प्रदेश में अभी तक रेल यातायात सुविधा हालांकि नगण्य ही कही जा सकती है। फिर भी यहां एकमात्र ब्रॉडगेज रेलवे लाईन नंगल (पंजाब)-ऊना-दौलतपुर कार्यशील है जिसका विस्तार तलवाड़ा (पंजाब) तक होना है। यह रेलवे लाईन वर्ष 1999 से विद्युत चालित है। यह आवागमन के साथ व्यापारिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त दो नैरोगेज रेलवे लाइनें पठानकोट-जोगिंद्रनगर व कालका- शिमला भी प्रदेश के लोगों की सुविधार्थ मौजूद हैं। कालका-शिमला रेलवे लाईन तो प्रदेश में आने वाले आगंतुकों के लिए विशेष आकर्षण रखती है।

इसके अतिरिक्त भानुपल्ली (पंजाब)-बिलासपुर व चंडीगढ़-बद्दी रेलवे लाइनों के निर्माण के भी प्रस्ताव हैं जिनके देर-सबेर कार्यरूप लेने की संभावनाएं प्रबल हैं। बिलासपुर-लेह तक भी रेलवे की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। यह सामरिक दृष्टि से भी उत्तम होगा और प्रदेशवासी भी लाभान्वित होंगे।

हिमाचल को भौगोलिक दृष्टि से कठिन जरूर समझा गया, पर अब यह सुगम्य है। यहां सड़क ने हर घर-द्वार तक दस्तक दी है, सार्वजनिक-निजी परिवहन प्रदेशवासियों की पकड़ में है। जलमार्ग, वायुमार्ग, रेल सब कुछ का पदार्पण यहां हो चुका है जिसका विस्तार होना एक सपने से हकीकत में बदलने वाला है। हर प्रयास पंख लगा कर उड़ रहा है। प्रतिफल मिलना भी तय है।

जलमार्ग से यातायात

जल जीवन मिशन

हर घर में नल से जल

रीना नेगी

भारत सरकार द्वारा संचालित 'जल जीवन मिशन' के कार्यान्वयन में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रदेश सरकार ने अग्रणी राज्य का दर्जा हासिल किया है जोकि हमारे लिए गर्व की बात है। इस समय प्रदेश में 93.45 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध है और जुलाई 2022 तक प्रदेश के प्रत्येक घर को नल से पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए इसके लिए प्रथम चरण में 2896 .54 करोड़ रुपये की लागत से 327 योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई। केन्द्र सरकार ने हिमाचल को जल जीवन मिशन के तहत 326 करोड़ की राशि दे दी है जो प्रदेश को चार किश्तों में मिली है। हिमाचल देश का ऐसा पहला राज्य बन गया है जिसे केन्द्र सरकार द्वारा घोषित पूरी राशि प्राप्त हो गई है। जिससे प्रदेश के हर घर में पेयजल उपलब्ध करवाने के लक्ष्य को हासिल करने में सहायता मिलेगी। वर्ष 2019-20 के लिए 530 और 2020-21 के लिए 696 योजनाएं स्वीकृत की गई हैं। जुलाई 2022 तक प्रदेश के प्रत्येक घर को नल से पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए इसके लिए प्रभावी ढंग से कार्य किया जा रहा है। घरेलू नल कनेक्शन तीन स्तर पर दिए जाएंगे जिसमें रसोई घर, स्नान, कपड़े धोने और शौचालय शामिल हैं। घरेलू नल लगाने के लिए लाभार्थियों से केवल 100 रुपये का योगदान लिया जाएगा। इस मिशन के तहत प्रदेश में अभी तक 56 प्रतिशत घरों को पानी का कनेक्शन दिए जा चुके हैं। वर्तमान वित्त वर्ष के दौरान 2,44,351 घरों को पेयजल सुविधा उपलब्ध करवाने का लक्ष्य रखा गया है। हिमाचल प्रदेश में समुद्र तल से 14 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित लाहौल स्पीति के टाशीगंग गांव के प्रत्येक घर में नल से पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल हुई है। किन्नौर के पूह, जिला सोलन के कण्डाघाट में भी शत-प्रतिशत क्रियाशील घरेलू नल उपलब्ध करवा दिए गए हैं। जून 2021 दिसम्बर 2020 तक जिला ऊना व किन्नौर, बिलासपुर, हमीरपुर और सोलन; मार्च 2022 जिला मण्डी और कांगड़ा तथा जुलाई 2020 तक जिला

प्रदेश सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में भी सुचारू पेयजल सुनिश्चित करने के लिए मध्यावधि कार्यक्रम बनाया है। शिमला शहर में 24 घंटे पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कोल डैम से उठाऊ पेयजल योजना का कार्य प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त 14 अन्य शहरी क्षेत्रों के क्लस्टर्ज में भी पेयजल आपूर्ति तथा प्रबन्धन को और प्रभावी बनाने के लिए महत्त्वाकांक्षी योजना बनाई गई है जिनमें पर्यटक क्षेत्रों में क्रमशः धर्मशाला क्लस्टर कांगड़ा, पालमपुर, डलहौजी तथा ज्वालाजी नगर परिषद, मंडी क्लस्टर में मंडी, सुन्दरनगर, नेरचौक तथा रिवालसर नगर परिषद, कुल्लू- मनाली क्लस्टर में भुंतर, कुल्लू तथा मनाली नगर परिषद और शिमला क्लस्टर में शिमला नगर निगम के साथ-साथ हाल ही में निगमें में परिवर्तित सोलन नगर परिषद भी सम्मिलित है।

शिमला, सिरमौर, चम्बा और कुल्लू का मिशन के तहत शत प्रतिशत कवरेज का लक्ष्य निर्धारित किए गया है। इसके अतिरिक्त 16,478 स्कूलों और 18,533 आंगनबाड़ी केन्द्रों में पेयजल सुविधा उपलब्ध करवाई जा चुकी है। जल जीवन मिशन के तहत पेयजल सुविधाओं को और अधिक बेहतर व सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विभाग में 2322 कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की जा रही है तथा जल गार्डों, पैरा फीटर्ज और पम्प ऑपरेटर्ज के मानदेय में 300 रुपये की बढ़ोतरी होगी। प्रदेश सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में भी सुचारू पेयजल सुनिश्चित करने के लिए मध्यावधि कार्यक्रम बनाया है। शिमला शहर में 24 घंटे पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कोल डैम से उठाऊ पेयजल योजना का कार्य प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त 14 अन्य शहरी क्षेत्रों के क्लस्टर्ज में भी पेयजल आपूर्ति तथा प्रबन्धन को और प्रभावी बनाने के लिए महत्त्वाकांक्षी योजना बनाई गई है जिनमें पर्यटक क्षेत्रों में क्रमशः धर्मशाला कलस्टर कांगड़ा, पालमपुर, डलहौजी तथा ज्वालाजी नगर परिषद, मंडी कलस्टर में मंडी, सुन्दरनगर, नेरचौक तथा रिवालसर नगर परिषद, कुल्लू- मनाली क्लस्टर में भुंतर, कुल्लू तथा मनाली नगर परिषद और शिमला क्लस्टर में शिमला नगर निगम के साथ-साथ हाल ही में निगमें में परिवर्तित सोलन नगर परिषद भी सम्मिलित है। इन सभी क्लस्टर्ज का तीव्रता से शहरीकरण हो रहा है तथा यह सभी शहरी क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

प्रथम चरण में इस योजना के अंतर्गत लगभग दो हजार 900 करोड़ रुपये की लागत से 327 परियोजनाएं कार्यान्वित किए जाने का लक्ष्य है। इसके अतिरिक्त इस योजना के तहत 211 करोड़ रुपये की लागत से 209 निर्माणाधीन पेयजल परियोजनाओं का निर्माण तथा सुदृढ़ीकरण भी सुनिश्चित किया जाएगा। सरकार का वर्ष 2020-21 तक एक लाख से अधिक घरेलू नल कनेक्शन प्रदान करने का लक्ष्य है। पेयजल प्रबन्धन के लिए 2020-21 में 2,213 करोड़ रुपये बजट राशि प्रस्तावित की गई है। प्रदेश में पानी की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए 'जल जीवन मिशन' के दिशा- निर्देशों के अनुसार प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों में ग्रामीण पेयजल व स्वच्छता समितियों का गठन किया जा रहा है। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 47 प्रयोगशालाएं स्थापित की गई है और यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी प्रयोगशालाएं नेशनल एक्रीडिशन बोर्ड फॉर लैबोरेट्रीज (एनएबीएल) द्वारा मान्यता प्रदान की जाए। इस मिशन को सफल बनाने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा इस वर्ष 243.10 करोड़ प्राप्त हुए है। प्रदेश को समृद्ध बनाने के लिए अनेक सिंचाई योजनाएं चल रही हैं। किसानों और आम नागरिकों को बरसात में बाढ़ से बचाने के प्रबन्धन के लिए स्वां नदी बाढ़ नियंत्रण परियोजना के चरण-4 के जिला ऊना के दौलतपुर से संतोखगढ़ पुल तक के लिए 200.150 किलोमीटर लम्बाई के तटीयकरण कार्यों पर अभी तक 439.77 करोड़ व्यय करके 3560.53 हेक्टेयर भूमि का बाढ़ से बचाव किया गया है।

इस राशि में से 405.50 करोड़ रुपये केन्द्रीय सरकार तथा शेष राशि राज्य सरकार द्वारा जारी की गई है। कांगड़ा जिला की छौंछ खड्ड में 40.04 करोड़ व्यय करके 18.5 किलोमीटर क्षेत्र में बाढ़ नियंत्रण कार्य किए गए जिससे 250 हेक्टेयर भूमि को सुरक्षा प्रदान की गई। इस परियोजना के लिए भी केन्द्र सरकार से 21 करोड़ प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त केन्द्र सरकार ने 784.87 करोड़ की चार अन्य बाढ़ नियंत्रण परियोजनाओं को सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की है जिनमें सीर खड्ड परियोजना, सरकाघाट तहसील में ब्यास नदी पर कंडापत्तन परियोजना कांगड़ा में नकेड़ तथा पांवटा साहिब में यमुना व इसकी सहायक खड्डों में बाढ़ नियंत्रण प्रमुख हैं।

- **2896.54 करोड़ की 327 पेयजल योजनाओं की स्वीकृति**
- **जल जीवन मिशन के तहत मिली 326 करोड़ की राशि**
- **इस वर्ष 2,44,351 घरों को मिलेगी पेयजल सुविधा**

पंचायती राज

ग्रामीण क्षेत्रों का बदलता स्वरूप

योग राज शर्मा

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में प्रदेश की विकास यात्रा 27 दिसंबर 2017 को आरंभ हुई थी। नई ऊर्जा व जोश के साथ प्रदेश का कार्यभार संभालने के पहले ही दिन सरकार ने भारतीय जनता पार्टी के स्वर्णिम हिमाचल दृष्टिपत्र-2017 को नीति गत दस्तावेज बनाकर विकास का जो पहिया घुमाया है, वह अनवरत जारी है। हालांकि हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य में सीमित आर्थिक संसाधनों के चलते विकास की गति को बढ़ाना किसी चुनौति से कम नहीं है लेकिन बीते तीन वर्षों की अवधि में जिस वित्तीय कुशलता के साथ प्रदेश सरकार आगे बढ़ रही हैं, उसके सुखद परिणाम गांव स्तर पर भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व की बदौलत ही आज हिमाचल प्रदेश देश भर में विकास का आदर्श बनकर उभरा है। ग्रामीण परिवेश से ताल्लुक रखने के कारण मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने विकास का रूख शहरों से गांव की ओर मोड़ा है ताकि विकास का लाभ ग्रास रूट लेवल तक पहुंच सके। पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से आम लोगों तक विकास के लाभ पहुंचाने के लिए सरकार ने प्रदेश में अनेक प्रभावशाली कल्याणकारी ग्रामीण विकास योजनाओं को आरंभ किया है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां बढ़ी हैं तथा ग्रामीणों के सामाजिक व आर्थिक जीवन में विशेष बदलाव देखने को मिला है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन, भुखमरी का अन्त, सबको शिक्षा व चिकित्सा सुविधाएं तथा बिजली-पानी जैसी सुविधाएं उपलब्ध करवाने को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में भी कारगर कदम उठाए जा रहे हैं। प्रदेश में नई पंचायतों प्रदेश सरकार ने बीते तीन वर्षों की अवधि में पंचायत व ग्रामीण विकास को लेकर अनेक कल्याणकारी योजनाओं को आरंभ किया हैं। 14वें व 15वें वित्त आयोग की सिफारिशों के तहत राज्य को केन्द्र से मिली धनराशि को पंचायतों को सीधे तौर पर लाभ पहुंचा है। 15वें वित अयोग के तहत वर्ष 2020-21 के लिए ग्राम पंचायतों के लिए 214 करोड़ की पहली किस्त मिल गई है जिससे ग्राम पंचायतों में विकास कार्यों को गति

मिली है। इसके अलावा भी प्रदेश सरकार ने पंचायतों के विकास को लेकर कई अहम कदम उठाए हैं। पंचायत प्रतिनिधियों के मानदेय में बढ़ोतरी के साथ-साथ पंचायतों को इंटरनेट की सुविधा के साथ जोड़ा गया है। परिवार रजिस्टर की प्रतियां भी प्रार्थियों को ऑनलाइन उपलब्ध करवाई जा रही हैं। बीते तीन वर्षों की अवधि में 671 पंचायत घरों के निर्माण व उनकी मरम्मत पर 35.74 करोड़ रुपये की राशि खर्च की गई। पंचायत कार्यालयों को आधुनिक सुविधाओं के साथ जोड़ दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए राज्य स्तर पर सचिव पंचायती राज, जिला कार्यकारी अधिकारी (जिला परिषद), तथा खंड स्तर पर मुख्य कार्यकारी अधिकारी (पंचायत समिति) के संपूर्ण पर्यवेक्षण और निरीक्षण में पंचायती राज संस्थाओं के लिए एक अलग तकनीकी विंग का गठन किया गया है। जिसमें विभिन्न श्रेणियों के 1409 पद सृजित किए गए हैं।

ग्राम स्तर पर बेहतर कार्य निष्पादन के लिए सरकार ने प्रदेश भर में 387 नई ग्राम पंचायतों का भी गठन किया है। सरकार ने सिलाई अध्यापिकाओं के मानदेय को 6800 रुपये कर दिया है। साथ ही पंचायत चौकीदारों को देय मासिक पारिश्रमिक को भी 4500 से बढ़ाकर 5300 कर दिया गया है। ग्रामीणों को घर-द्वार पर रोजगार मुहैया करवाने के लिए मनरेगा के तहत वर्तमान प्रदेश सरकार के कार्यकाल के दौरान लगभग 6.06 करोड़ कार्य दिवस अर्जित किए गए जिसमें महिलाओं की भागीदारी 63 प्रतिशत रही। इस दौरान 1.32 लाख परिवारों ने 100 दिन से अधिक रोजगार प्राप्त किया। मनरेगा के तहत इस दौरान 1780.43 करोड़ रुपये व्यय किए गए तथा 1.52 लाख से ज्यादा कार्य पूर्ण किए।

ग्रामीण आवास योजनाओं के तहत ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक व आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बेघर लोगों को मकान की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना को 90:10 के अनुपात में चलाया जा रहा है जिसके तहत लाभार्थी को केंद्र सरकार द्वारा 1.30 लाख रुपये तथा प्रदेश सरकार द्वारा अपने संसाधनों से 20 हजार रुपये अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। वर्तमान प्रदेश सरकार के कार्यकाल के दौरान 7135 मकान निर्मित किए गए है।

इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबी रेखा से नीचे परिवारों को मकान बनाने के लिए 1.50 लाख रुपये प्रति लाभार्थी सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है और वर्तमान सरकार के कार्यकाल में अब तक 3350 मकान निर्मित किए जा चुके हैं जिस पर 61.83 करोड़ रुपये कम हुए हैं। मुख्यमंत्री आवास मरम्मत योजना के तहत भी लगभग 2000 लाभार्थियों को 5.68 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की गई है। मरम्मत योजना के तहत 35,000 रुपये प्रति लाभार्थी दिए जाने का प्रावधान किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास के उद्देश्य से भूमि विकास, नमी संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों का विकास जैसी गतिविधियां प्रदेश में लगभग 1260 करोड़ रुपये की लागत से प्रभावशाली ढंग से चल रही हैं। वर्तमान प्रदेश सरकार के कार्यकाल में अब तक इन परियोजनाओं में 4.88 लाख कार्य दिवस सृजित किए गए हैं। इन परियोजनाओं में अधिकतर जल संग्रहण ढांचे निर्मित किए जा रहे हैं। सभी गरीब परिवारों को गरीबी रेखा से बाहर लाकर सम्मान- जनक जीवन यापन करने के योग्य बनाने के लिए उन्हें आजीविका गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। सैनिकों की विधवाओं, एकल नारी, दिव्यांगजन तथा एकल वृद्धों को प्राथमिकता के आधार पर आजीविका मिशन से जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं।

आजीविका मिशन को प्रदेश के सभी 12 जिलों के 80 विकास खण्डों में चलाया जा रहा है। इस मिशन के तहत वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान 9210 स्वयं सहायता बनाए गए हैं जिन्हें वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। मुख्यमंत्री एक बीघा योजना के तहत एक महिला या उसके परिवार को बैकयार्ड किचन गार्डन तैयार करने के लिए 40 हजार रुपये का अनुदान दिया जा रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए पंचवटी योजना आरम्भ की गई है। इस योजना के तहत सभी विकास खंडों में चरणबद्ध ढंग से पार्क और बागीचे विकसित किए जा रहे है। पारम्परिक कला एवं शिल्प को धरोहर स्वरूप संरक्षित करने लिए मुख्यमंत्री ग्राम कौशल योजना आरंभ की गई है। ऐसे कार्यों से जुड़े कारीगरों को आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करके उनकी क्षमता बढ़ाया जा रहा है। इस योजना को प्रथम चरण में मण्डी, ऊना, सोलन व हमीरपुर जिलों के 18 विकास खण्डों में लागू किया गया है। योजना के तहत प्रशिक्षण प्रदान करने वाले को 7500 रुपये प्रतिमाह तथा प्रशिक्षु को 3000 रुपये प्रतिमाह प्रोत्साहन भत्ता दिया जा रहा है।

गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परम्परागत कलाओं के दस्तकारों को औजार खरीदने की आवश्यकता पूरी करने के लिए मुख्यमंत्री दस्तकार सहायता योजना आरम्भ की गई है, जिसके तहत 30 हजार रुपये तक की कीमत के औजार 75 प्रतिशत अनुदान पर प्रदान किए जा रहे हैं। प्रदेश में गरीब परिवारों को मुफ्त विद्युत कुनेक्शन प्रदान करने के लिए आरम्भ मुख्यमंत्री रोशनी योजना के तहत लगभग 17,550 कनैक्शन देने का लक्ष्य रखा गया है। अब तक 5862 लाभार्थी इस योजना का लाभ उठा चुके हैं। प्रत्येक कुनेक्शन पर लाभार्थी को लगभग 7500 रुपये की सहायता मिलती है। इस योजना का लाभ उठाने के लिए प्रार्थी बी.पी.एल. परिवार से सम्बन्धित होना चाहिए या परिवार अन्त्योदय अन्न योजना में आता है अथवा प्रार्थी की सभी संसाधनों से वार्षिक आय 35,000 रुपये से कम हो अथवा प्रार्थी की कुल 'लोड' की मांग दो किलो वाट से कम हो। इनमें से कोई भी शर्त प्रार्थी पूरा करता हो तो वह इस योजना का लाभ उठाने के लिए पात्र होगा।

स्वास्थ्य कवच

सर्वसुलभ हुई स्वास्थ्य सुविधाएं

विवेक शर्मा

हिमाचल प्रदेश ने स्वास्थ्य क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए अनेक राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त किए हैं। स्वास्थ्य संबंधी मानकों में प्रदेश के इस शिखर तक के सफर में प्रदेश के मजबूत नेतृत्व, स्वास्थ्य सेवायें सुलभ करवाने वाले डॉक्टर व अन्य स्वास्थ्यकर्मी शामिल हैं।

प्रदेश की अधिकांश आबादी को आज बेहतर एवं विशेषज्ञ स्वास्थ्य सुविधा घर-द्वार के समीप ही उपलब्ध है। इस समय प्रदेश में विभिन्न स्तर के 2898 एलोपैथी स्वास्थ्य संस्थान तथा छः मेडिकल कॉलेज स्थापित हैं जिनके माध्यम से प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लोग विभिन्न चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रदेशवासियों को बेहतर से बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदेश में ही उपलब्ध करवाने के लिए बिलासपुर के कोठीपुरा में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) का कार्य प्रगति पर है। अपने तीन वर्ष के कार्यकाल में हिमकेयर व सहारा जैसी महत्त्वाकांक्षी योजनाओं का सफल संचालन कर इन्हें धरातल तक पहुंचा कर प्रदेश सरकार ने पूरे देश के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इन योजनाओं के माध्यम से गरीब और गंभीर रोगों से ग्रस्त लोगों को विशेष रूप से लाभ हुआ है। हिमकेयर योजना, आयुष्मान भारत में कवर न होने वाले प्रदेशवासियों के लिए इसी योजना की तर्ज पर प्रथम जनवरी, 2019 से हिमकेयर योजना आरम्भ की गई है जिसके तहत अब 5.50 लाख परिवार पंजीकृत हैं। इस योजना के तहत 1,17,578 लाभार्थियों को 115.47 करोड़ रुपये के निःशुल्क उपचार की सुविधा प्रदान की जा चुकी है। सहारा योजना, पार्किन्सन, कैंसर, मस्कुलर डिस्ट्रोफी, अधरंग, किडनी फेलिअर व टी.बी. जैसी गंभीर बीमारियों से पीड़ित रोगियों को स्वास्थ्य सेवाओं के अतिरिक्त निरंतर देखभाल की आवश्यकता रहती है। इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए राज्य में यह योजना आरम्भ की गई है। इस योजना में आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों को 2000 रुपये प्रतिमाह दिए जा रहे थे, जिसे अगस्त, 2020 से बढ़ाकर 3000 रुपये प्रतिमाह किया गया है। अब तक 10 हजार से भी ज्यादा लाभार्थियों को इस योजना में कवर कर उन्हें 9.75 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की गई है।

गंभीर बीमारियों से पीड़ित गरीब लोगों को उपचार प्रदान करने के उद्देश्य से 20 अक्तूबर, 2018 को मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता

सचल स्वास्थ्य केंद्र 'जीवनधारा'

कोष, गठित किया गया है। इस कोष के तहत अब तक 579 लोगों को उपचार के लिए 7.70 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की जा चुकी है। मुख्यमंत्री निरोग योजना, गैर संचारित रोगों की रोकथाम व नियंत्रण के लिए वर्ष 2019 में आरम्भ इस योजना के अंतर्गत 18 वर्ष से ऊपर के सभी लोगों की शर्करा और रक्तचाप इत्यादि की निःशुल्क जांच की जा रही है। प्रदेश में क्षय रोग के उन्मूलन के लिए क्षय रोग निवारण योजना आरम्भ की गई है ताकि समय सीमा से पहले इस रोग का उन्मूलन किया जा सके। वर्ष 2019 में क्षय रोग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रदेश को देशभर में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रदेश सरकार द्वारा 'एमडीआर-टी.बी.' मरीजों को 1500 रुपये प्रति माह पोषण सहायता दी जा रही है। इसके अतिरिक्त, ऐसे रोगियों को केन्द्र सरकार की 'निक्षय पोषण' योजना के तहत भी 500 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। योजना के तहत अब तक 7.60 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की जा चुकी है।

अपने तीन वर्ष के कार्यकाल में प्रदेश में स्वास्थ्य अधोसंरचना को और अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए 22 नए स्वास्थ्य उप-केंद्र, 24 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खोले, 3 स्वास्थ्य उप-केंद्रों को स्तरोन्नत कर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, 13 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को स्तरोन्नत कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, 14 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को नागरिक अस्पताल बनाया है। एक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और 17 नागरिक अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या में बढ़ोतरी की गई। इसके अतिरिक्त प्रदेश में 3 नए खण्ड स्वास्थ्य कार्यालय भी खोले गए है।

वैश्विक महामारी के दौर में प्रदेश में चलाए गये एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान, निगाह कार्यक्रम कुछ ऐसी ही पहल हैं जिनकी राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा हुई है। मौजूदा चिकित्सा अधोसंरचना पर बोझ कम करने के लिए व लोगों को अतिरिक्त अस्पताल सुविधा प्रदान करने के लिए सरकार ने 3 करोड रुपये की लागत से शिमला, टांडा, नेरचौक, नालागढ़ और ऊना में प्री-फैब्रिकेटेड अथवा 50 और 75 बिस्तरों वाले अस्थायी अस्पताल स्थापित करने का निर्णय लिया है। अस्पतालों में बाह्य रोगियों की भीड़ को कम करने के लिए सरकार ने नई तकनीक का सदुपयोग कर हिमाचल में ई-परामर्श सुविधा को आरंभ किया। इस सुविधा के माध्यम से लैपटॉप या कंप्यूटर के माध्यम से रोगी घर बैठे ही विशेषज्ञ परामर्श प्राप्त कर सकते हैं। यह सुविधा भारत सरकार की ई-संजीवनी ओ.पी.डी. पोर्टल के माध्यम से संचालित की जा रही है। हर एक व्यक्ति के पास लैपटॉप या कंप्यूटर न होने से इस सुविधा को सभी लोगों तक पहुंचाने की समस्या का सामना करना पड़ रहा था जिसके लिए अब ई-संजीवनी ओ.पी.डी. मोबाइल ऐप बनाई गई है। इस सुविधा के लिए मंडी, शिमला और टांडा में विशेषज्ञ हब बनाए गये है। इन हबों के माध्यम से अब होम आइसोलेशन वाले करोना मरीजों के स्वास्थ्य की निगरानी एवं उन्हें आवश्यक परामर्श देने का भी कार्य किया जा रहा है।

प्रदेश के चंबा, सिरमौर व शिमला के दूरदराज के इलाकों के 25 स्वास्थ्य संस्थानों में प्रथम चरण में टेलीमेडिसिन के माध्यम से उपचार सुविधा उपलब्ध करवाई गई है। वर्तमान समय में लाहौल-स्पीति के केलंग, काजा और चंबा के पांगी के लोगों को चेन्नई में स्थित अपोलो अस्पताल के विशेषज्ञों से स्वास्थ्य परामर्श की सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं। हिमाचल के दूरदराज इलाकों के लोग जहां कभी भौगोलिक परिस्थितियों के कारण उचित स्वास्थ्य सुविधाओं के न होने से परेशान थे, आज वे टेलीमेडिसिन की सुविधा मिलने से संतोष व राहत महसूस कर रहे हैं। पिछले वर्ष के अप्रैल माह से अब तक प्रदेश के 50 उप-स्वास्थ्य केंद्रों में टेलीमेडिसिन उपचार सुविधा प्रदान की गई है। उपचार सुविधाओं में सुधार के लिए वर्तमान प्रदेश सरकार ने कई योजनाओं को लागू किया है जिनमें से एक प्रमुख योजना है मुख्यमंत्री निःशुल्क दवाई योजना। इसके अंतर्गत राज्य के सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में निर्धारित दवाएं, सुइयां व पट्टियां इत्यादि निःशुल्क प्रदान की जा रही हैं। इसके अंतर्गत गत वर्ष 80 करोड़ रुपये व्यय किये गए जबकि इस वर्ष योजना के लिए 100 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है। प्रदेश के सभी आयु वर्गों की स्वास्थ्य देखभाल संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिमाचल सरकार विशेष वर्गों पर केंद्रित योजनाएं व कार्यक्रमों को चला रही है। इनमें से मुख्य है-अटल आशीर्वाद योजना, जननी सुरक्षा योजना, मुस्कान कार्यक्रम आदि। संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अटल आशीर्वाद योजना लागू की है। योजना के तहत अस्पताल में जन्में नवजात शिशुओं को लगभग 1175 रुपये मूल्य की 'आगंतुक किट' प्रदान की जा रही है जिसमें शिशुओं व उनकी माताओं के लिए क्रीम-पाउडर जैसी उपयोगी वस्तुएं शामिल की गई हैं। योजना के तहत प्रदेश के विभिन्न सरकारी व निजी अस्पतालों के माध्यम से 31 अक्तूबर,

निःशुल्क चिकित्सा का वैध दस्तावेज
हिमकेयर स्वास्थ्य कार्ड

जन औषधि रोगियों को नि:शुल्क दवाइयां

2020 तक 1,12,000 आगंतुक किट वितरित की जा चुकी थी। सभी नवजात शिशुओं को 88, 114 आगंतुक किट वितरित की गई जिस पर प्रति किट 1174.98 रुपये की दर से व्यय किया जा रहा है।

प्रदेश में जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू किया जा रहा है जिसके तहत संस्थागत प्रसव पर जननी सुरक्षा योजना के अंतर्गत लाभार्थी माता को 1100 रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जा रही है। अब तक इस योजना के तहत 15364 लाभार्थियों को यह राशि प्रदान की गई है। प्रदेश में बच्चों की मृत्यु दर को कम करने के उद्देश्य से डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मेडिकल कॉलेज, टांडा में आधुनिक बाल चिकित्सा केंद्र स्थापित किया जा रहा है। प्रदेश में प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान भी प्रभावशाली ढंग से चलाया जा रहा है जिसमें गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व जांच करवाई जा रही है। इस अभियान के तहत अब तक ऐसी 38 हजार से भी अधिक महिलाओं की जांच की गई है। मुस्कान कार्यक्रम के अंतर्गत 65 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों और बी.पी. एल. व अन्य श्रेणी के लोगों को आर.के.एस. की दरों पर नि:शुल्क डेन्चर दिये जा रहा है।

- बिलासपुर में एम्स का सपना हुआ साकार
- हिमकेयर योजना में 5.50 लाख लोग पंजीकृत
- सहारा योजना से लाभान्वित हुए 10 हजार लोग
- नि:शुल्क दवाई योजना के अंतर्गत 80 करोड़ व्यय
- अटल आशीर्वाद योजना के अंतर्गत 1,12,000 आगंतुक किट वितरित

प्रदेश के दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को विभिन्न बीमारियों के आधुनिक निदान और परीक्षण सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से हाल ही में प्रदेश सरकार ने मेडिकल मोबाइल यूनिट-जीवन धारा, मोबाइल स्वास्थ्य और आरोग्य केन्द्रों को आरम्भ किया है। मुख्यमंत्री द्वारा प्रदेश की राजधानी के ऐतिहासिक रिज से आरंभ की गई इस स्वास्थ्य एवं आरोग्य वैन में आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध होंगी। जीवन धारा में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में प्रदान की जाने वाली आवश्यक दवाइयां उपलब्ध होंगी। इस वैन में एक चिकित्सा अधिकारी, एक फार्मासिस्ट, प्रयोगशाला टेक्निशियन और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत होंगे। लोगों को नि:शुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए शुरूआत में 10 मोबाइल वैन संचालित की जाएंगी। इनमें कांगड़ा, मंडी, और शिमला जिलों को दो-दो तथा चंबा, कुल्लू, सिरमौर और सोलन जिलों को एक-एक वैन उपलब्ध करवाई जाएगी।

अस्पतालों में ऑक्सीजन की बढ़ती मांग को पूरा करने के संबंध में हिमाचल सरकार द्वारा केंद्र से किये गए आग्रह पर राज्य में सात स्थानों पर शीघ्र ऑक्सीजन प्लांट स्थापित किये जाएंगे। केंद्र सरकार द्वारा स्वीकृत यह प्लांट नाहन, चंबा, नेरचौक, टांडा मेडिकल कॉलेज, हमीरपुर, शिमला कॉलेज सहित धर्मशाला अस्पताल में स्थापित किये जायेंगे।

मौजूदा स्थिति में कोरोना महामारी से निपटने के लिए हिमाचल सरकार ने प्रदेश में 24 नवंबर, 2020 को 'हिमसुरक्षा अभियान' का शुभारम्भ किया है। इसके तहत राज्य की स्वास्थ्य, आयुर्वेद, महिला एवं बाल विकास, पंचायती राज विभाग, जिला प्रशासन और स्वयंसेवी संस्थाओं को शामिल कर लगभग 8,000 टीमें गठित की गई जो घर-घर जाकर लोगों से टी.बी., कुष्ठ, मधुमेह, रक्तचाप आदि बीमारियों के लक्षणों के बारे में सूचना एकत्रित करेगी। इस अभियान के अंतर्गत न केवल लक्षण वाले कोविड-19 के मरीजों को खोजा जाएगा बल्कि अन्य बीमारियों से ग्रस्त रोगियों को भी सूचीबद्ध किया जाएगा।

०००

औद्योगिक विकास

आकर्षक प्रोत्साहनों से बना निवेशकों का पसंदीदा गंतव्य

चन्द्रशेखर वर्मा

हिमाचल प्रदेश की स्वच्छ आबोहवा, शांतिपूर्ण माहौल, निर्बाध और सस्ती विद्युत आपूर्ति की बदौलत प्रदेश निवेशकों का पसंदीदा गंतव्य बन कर उभरा है। हिमाचल में सरकार का प्रयास निवेश आकर्षित करने व राज्य को एक विकसित औद्योगिक प्रदेश बनाने का रहा है। सरकार द्वारा समावेशी विकास एवं पर्यावरण पहलुओं को केन्द्र में रखकर राज्य की आय बढ़ाने व नए रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने पर बल दिया गया है। अनुसंधान व औद्योगिक अपशिष्ट निवारण के साथ-साथ जल की उपलब्धता व इसके उचित प्रबंधन पर जोर दिया गया है। वर्ष 1951-52 में जहां हिमाचल में उद्योग क्षेत्र का राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान मात्रा एक प्रतिशत था आज वह बढ़कर 30 प्रतिशत से अधिक हो गया है। राज्य में बद्दी बरोटी- वाला, नालागढ़, परवाणु और सोलन कुछ प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र हैं जिनमें दवा निर्माण व इलैक्ट्रॉनिक उपकरण निर्माण आदि बड़े उद्योग शामिल हैं। इसके अतिरिक्त राज्य में कई सीमेंट उद्योग भी स्थापित हैं।

राज्य में पर्यटन को भी एक उद्योग के रूप में स्वीकृति दी गई है। राज्य सरकार चिरपरिचित पर्यटक स्थलों के अतिरिक्त नए एवं अनछुए पर्यटक स्थलों को विकसित करने पर भी बल दे रही है। इसके अतिरिक्त सरकार राज्य में मछली उत्पादन, कृषि प्रसंस्करण उद्योग, फल प्रसंस्करण उद्योग, खादी उद्योग, हथकरघा उद्योग, दुग्ध उत्पाद उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए भी विशेष प्रयास कर रही है। राज्य में अधिक निवेश को आकर्षित करने के लिए हिमाचल प्रदेश औद्योगिक निवेश नीति-2019 तैयार की गई है। नीति में औद्योगिक उद्यमों को आकर्षक प्रोत्साहन देने के प्रावधान किए गए हैं।

निवेशकों की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए परियोजनाओं की मंजूरी के लिए ऑनलाइन प्रणाली विकसित की गई है। राज्य में अधिक निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य से 7 व 8 नवम्बर, 2019 को धर्मशाला में ग्लोबल इंवेस्टर्स मीट का आयोजन किया गया। इस दौरान राज्य सरकार ने 96000 करोड़ रुपये के निवेश के साथ 703 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। इसके उपरांत 13500 करोड़ की परियोजनाओं का पहला ग्राऊंड ब्रेकिंग समारोह का आयोजन किया गया। प्रदेश सरकार द्वारा हिमाचल प्रदेश मुजारियत तथा भू-सुधार अधिनियम की धारा 118 की अनुमति से संबंधित मामलों के निपटारे को भी प्राथमिकता दी गई हैं और उद्यमियों को समय-समय पर मंजूरी देकर सुविधा प्रदान की जा रही है।

इसके अतिरिक्त राज्य सरकार ने सिंगल विंडो प्रणाली को भी विकसित किया है जो राज्य निवेश करने के लिए उद्यमियों को अनुकूल माहौल प्रदान करने के लिए सरकार की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार ने आई टी नीति, आयुष नीति, एमएसएमई अध्यादेश 2019, हिमाचल पर्यटन नीति भी

☐ नई औद्योगिक नीति से हुआ नियमों का सरलीकरण
☐ आकर्षक निवेश प्रोत्साहन से औद्योगिकीकरण को बढ़ावा
☐ इन्वेस्टर मीट में 96 हजार करोड़ निवेश के एमओयू हस्ताक्षरित

तैयार की है।

हिमाचल ने आज एशिया के सबसे बड़े फार्मा हब के रूप में पहचान बनाई है। चूना पत्थर के निर्यात से सीमेंट हब, प्रदेश में बहती नदियों के जल से बिजली राज्य बनने तक की यात्रा तय की है। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश को फिल्म निर्माताओं का पसंदीदा गंतव्य बनाने के उद्देश्य से फिल्म नीति-2019 बनाई गई है जिसके तहत प्रदेश में फिल्म की शूटिंग के लिए अनेक प्रोत्साहन देने का प्रावधान किया गया है। राज्य सरकार ने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग में भी सुधार किया है तथा राज्य अब देश में 7वें स्थान पर होने के साथ ही पहाड़ी राज्यों में अग्रणी राज्य बनकर उभर रहा है। सरकार द्वारा आरम्भ की गई मुख्यमंत्री स्टार्टअप योजना का मुख्य उद्देश्य रोजगार ढूंढने वालों की जगह रोजगार उपलब्ध कराने को प्रेरित करना है। इस योजना के अंतर्गत कृषि, स्वच्छ तकनीक पर आधारित नये विचारों का सृजन, खाद्य प्रसंस्करण, पर्यटन, बायोटैक्नोलॉजी आदि को मुख्य बिंदुओं में शामिल गया गया है। इस योजना के अंतर्गत 100 लाभार्थियों को लगभग 1.70 करोड़ रुपये के लाभ दिए गए हैं। राज्य सरकार द्वारा स्थापित राज्य एकल खिड़की समाधान एवं अनुश्रवण प्राधिकरण द्वारा वर्ष 2019-20 से अक्तूबर 2020 तक 398 परियोजना प्रस्तावों को मंजूरी प्रदान की गई है। इन प्रस्तावों से 8978.71 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित है। इन परियोजनाओं से प्रदेश के 24809 लोगों को रोजगार प्राप्त होगा।

हिमाचल प्रदेश औद्योगिक निवेश नीति-2019 में हथकरघा एवं हस्तशिल्प क्षेत्र के विकास हेतु विशेष प्रोत्साहन दिये गए हैं।

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना के अंतर्गत गत 3 वर्षों में 3,219 युवाओं को विभिन्न बैंकों के माध्यम से ऋण प्रदान कर स्वरोजगार स्थापित करने हेतु सहायता प्रदान की गई है।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में वर्तमान सरकार ने प्रदेश में अवैध खनन में संलिप्त दोषियों को सजा देने के प्रावधानों को और कठोर किया गया है वहीं दूसरी ओर खनन रियायतें प्रदान करने के लिए नियमों का सरलीकरण भी किया गया है। वर्तमान सरकार ने सत्ता में आते ही प्रदेश में खनन पट्टे के आवेदन एवं खनिजों के आवागमन के लिए और पारगमन पास जारी करने की प्रक्रिया ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से उपलब्ध करवाने का प्रावधान कर दिया था।

प्रदेश में युवाओं में उद्यमिता विकास व स्वरोजगार सृजन हेतु 'मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना' का क्रियान्वयन किया जा रहा है। योजना के तहत गत तीन वर्षों के दौरान बैंकों को कुल 8,148 ऋण मामले भेजे गए जिनमें 2,797 मामलों को स्वीकृति प्रदान की गई तथा 53 करोड़ रुपये का उपदान दिया गया है।

कौशल उन्नयन से रोजगार

कृषि एवं बागबानी विकास

किसानों के चेहरों पर मुस्कान

✍ मोहित शर्मा

जब-जब हिमाचल के विकास की बात होगी इसमें कृषि एवं बागबानी क्षेत्र के योगदान को सर्वोपरि माना जाएगा। हमेशा से हिमाचल की आर्थिकी में इस क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हिमाचल की मिट्टी में जिसने भी परिश्रम के बीज बोए है व खून-पसीने से इसे सींचा है, उसे इस पावन धरा ने हमेशा मेहनत से ज्यादा ही लौटाया है। यही कारण रहा है कि हिमाचल प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में सरकार ने अपने तीन वर्ष के कार्यकाल में कृषि क्षेत्र की तरफ विशेष ध्यान दिया है। राज्य सरकार ने कृषि क्षेत्र के विकास के लिए किसानों को आधुनिक तकनीकों और नवाचार अपनाने की ओर प्रेरित किया है। गत तीन वर्षों में सरकार ने किसानों की आय को दोगुना करना ही अपना मुख्य लक्ष्य बनाया है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए सरकार ने कई महत्त्वाकांक्षी योजनाएं तैयार की है। इन योजनाओं के सफल कार्यान्वयन से कृषि के क्षेत्र में बेहतर विकास दर देखने को मिली है व परिणामस्वरूप किसानों की आर्थिकी में भी उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं।

जगंली जानवरों व आवारा पशुओं की समस्या से निपटने के लिए आरम्भ की गयी मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना किसानों के लिए वरदान साबित हुई है। इस योजना के तहत अब तक लगभग 26,000 किसानों ने सोलर फैंसिंग व कांटेदार तार द्वारा बाड़बन्दी करके अपनी फसलों का संरक्षण सुनिश्चित किया है। योजना के तहत सोलर बाड़बन्दी के लिए 80 प्रतिशत, किसान समूह आधारित बाड़बन्दी के लिए 85 प्रतिशत, कांटेदार व चेन लिंक बाड़बन्दी पर 50 प्रतिशत, कम्पोजिट बाड़बन्दी पर 70 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है।

प्रदेश में कृषि को रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के उपयोग से मुक्त करने के लिए प्रदेश में प्राकृतिक खेती-खुशहाल किसान योजना शुरू की गयी है। इससे जहां किसान आत्मनिर्भर हुए है वहीं कृषि लागत में भी कमी देखी गयी है। इसके तहत प्राकृतिक रूप से उपलब्ध वैकल्पिक संसाधानों को अपनाने की तरफ कदम बढ़ाए जा रहे हैं। इस योजना का लक्ष्य वर्ष 2022 तक प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को प्राकृतिक खेती के तहत लाना है। अब तक प्रदेश

ऐंटी हेलनेट से फसल सुरक्षा

के 74,000 से अधिक किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाकर इसका फायदा उठाया है। सरकार द्वारा 77,000 से अधिक किसानों को इसे अपनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जा चुका है। मौजूदा समय में 3,600 हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक पद्धति से खेती-बाड़ी होने लगी है। योजना के तहत किसानों को प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा देसी नस्ल की गाय की खरीद पर 50 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान की जा रही है। 'मिशन मोड' पर चल रहे इन प्रयासों के कारण आज हिमाचल प्रदेश को पूरे देश में प्राकृतिक खेती के आदर्श के रूप में जाना जा रहा है।

प्रदेश भर के किसानों में संरक्षित खेती को बढ़ावा देने के लिए 150 करोड़ रुपये की मुख्यमंत्री नूतन पॉलीहाउस परियोजना आरम्भ की गयी है। इसके तहत 5,000 पॉलीहाउस बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके तहत पॉलीहाउस बनाने तथा इसके अन्दर सूक्ष्म सिंचाई सुविधा सृजित करने पर 85 प्रतिशत उपदान सरकार दे रही है। साथ ही मुख्यमंत्री ग्रीनहाउस नवीकरण योजना के तहत पांच वर्ष के बाद या फिर आपदा से क्षतिग्रस्त होने पर पॉलीशीट को बदलने पर 70 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश भर में खेती के मशीनीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके लिए प्रदेश सरकार कृषि यंत्रीकरण योजना लेकर आयी है जिसके तहत खेती के लिए काम आने वाली मशीनरी, अन्य उपकरण और औजार की खरीद पर 50 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। इस योजना के तहत आज एक लाख से अधिाक किसानों को कृषि यन्त्र व उपकरण दिए जा चुके है। प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न सिंचाई योजनाओं के अंतर्गत 24,007 किसान लाभान्वित हुए है तथा 10,428 हेक्टेयर भूमि पर नयी सिंचाई सुविधाओं का सृजन हुआ है। सौर सिंचाई योजना के तहत सौर पम्पों से जल उठाने के लिए किसानों को व्यक्तिगत पम्पिंग मशीनरी लगाने हेतु 90 प्रतिशत वित्तीय सहायता दी जा रही है। सभी वर्ग के किसानों के लिए सामुदायिक तौर पर पम्पिंग मशीनरी लगाने का

देश का फल राज्य

हिमाचल प्रदेश का विविध मौसम, भौगोलिक स्थिति व मेहनतकश बागबान इसे बागबानी के लिए आदर्श राज्य बनाते हैं। सरकार द्वारा भी प्रदेश को फल-राज्य बनाने की दिशा में सघन प्रयास किए जा रहे हैं। वर्तमान में प्रदेश का कुल 2.32 लाख हेक्टेयर क्षेत्र बागबानी के तहत है तथा प्रदेश में फल उत्पादन लगभग 14.13 लाख मीट्रिक टन है। राज्य सरकार और अधिक क्षेत्र को बागबानी के तहत लाने व प्रति हेक्टेयर उत्पादन को बढ़ाने के लिए फलों की नयी किस्मों और नवीनतम कृषि तकनीकों को अपनाने की ओर बढ़ावा दे रही है। इसके लिए सरकार द्वारा कई महत्त्वपूर्ण योजनाएं चलाई जा रही है। बागबानों को मौसम की मार से सुरक्षित रखने हेतु ओला अवरोधक जाली (एंटी हेलनेट) योजना शुरू की गयी है। इस योजना के तहत ओला अवरोधक जाली लगाने के लिए बागबानों को 80 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जा रही है। बांस अथवा स्टील के स्थाई ढांचे पर भी 50 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है।

मुख्यमंत्री ग्रीन हाउस नवीनीकरण योजना के तहत 52.84 लाख रुपये खर्च कर 1.12 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र को लाया गया है जिससे प्रदेश के 223 बागबान लाभान्वित हुए हैं। खुम्ब की खेती को बढ़ावा देने के लिए खुम्ब विकास योजना आरम्भ की गई है। इसके तहत खुम्ब उत्पादन इकाई व खाद निर्माण इकाई इत्यादि स्थापित करने के लिए अनुदान दिया जा रहा है। प्रदेश में फलों की उच्च उत्पादकता व गुणवत्ता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1,134 करोड़ रुपये की सात वर्षीय विश्व बैंक पोषित हिमाचल प्रदेश बागबानी विकास योजना कार्यान्वित की जा रही है। इसके तहत अब तक बागबानों के 375 समूह गठित किए गए है। इस योजना के अंतर्गत न्यूजीलैंड के बागबानी विशेषज्ञों द्वारा 15,000 बागबानों तथा 600 विभागीय अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। इस परियोजना के तहत अब तक 11 लाख से अधिाक सेब व अखरोट के पौधे बागबानों में वितरण के लिए आयात किए गए तथा 17,000 के करीब आम, लीची व अमरूद के पौधे अन्य राज्यों से मंगवाए गए है। प्रदेश के निचले उपोष्णीय क्षेत्रों में बागबानी विकास के लिए वर्ष 2020-21 में एशियन विकास बैंक मिशन की सहायता से हिमाचल प्रदेश उपोष्णीय बागबानी सिंचाई एवं मूल्यवर्धन परियोजना (एच. पी. शिवा) आरम्भ की गयी है। इस परियोजना के तहत अमरूद, लीची, नींबू व अनार को प्रदेश के चार जिलों के 10 विकास खण्डों में 170 हेक्टेयर क्षेत्र में पायलट प्रोजेक्ट के आधार पर उगाया जाएगा। बागबानों को सामयिक तकनीकी जानकारी प्रदान करने के लिए 1,688 करोड़ रुपये की एम-किसान योजना एशियन विकास बैंक की सहायता से आरम्भ की गई है। इसके तहत लगभग 7.69 लाख किसानों का पंजीकरण किया गया है। फूलों की संरक्षित खेती को बढ़ावा देने के लिए हिमाचल पुष्प क्रांति योजना शुरू की गयी है। योजना के तहत पॉलीहाउस व पॉलीटनल स्थापित करने के लिए पंखे व पैड इत्यादि पर 85 प्रतिशत तक का उपदान दिया जा रहा है। पौधा सामग्री पर भी 50 प्रतिशत उपदान और फूलों के परिवहन भाड़े पर व्यापक छूट दी जा रही है। महक योजना के तहत सुगन्धित पौधों की खेती को बढ़ावा देने तथा प्रस्संकरण इकाइयां स्थापित करने के लिए ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है।

शतप्रतिशत खर्च प्रदेश सरकार उठा रही है। अब तक सौर सिंचाई योजना के तहत करीब 1,300 सोलर पंप स्थापित किये जा चुके है। सूक्ष्म सिंचाई योजना जैसे ड्रिप व स्प्रिंकलर सिंचाई सुविधाएं सृजित करने पर 80 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है। इससे लगभग 14,000 किसान लाभान्वित हुए हैं। उपयुक्त स्थलों पर चेकडैम व तालाब बनाने के लिए जल से कृषि को बल योजना के तहत सामुदायिक स्तर पर कार्य करने का शत-प्रतिशत व्यय सरकार वहन कर रही है। इसके अतिरिक्त प्रवाह सिंचाई योजना के तहत कूहलों का निर्माण किया जा रहा है। सामुदायिक स्तर कूहलों के निर्माण पर शत-प्रतिशत व्यय सरकार कर रही है।

फसल विविधीकरण योजना से किसानों की आर्थिकी को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए 7,464 हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र को नगदी फसल के अंतर्गत लाया गया है। कृषि उत्पादन व उत्पादकता को बढ़ाने हेतु 2,63,600 क्विंटल सुधरे हुए बीज (अनाज, दलहन, तिलहन, चारा फसलें, सब्जियां आदि) उपदान दरों पर प्रदान किए जा रहे हैं।

प्रदेश में किसानों की फसलों को प्राकृतिक आपदाओं से हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए किसान 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' शुरू की गयी है। अब तक इस योजना के तहत 1,01,585 प्रभावित किसानों को फसल को हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए 19.54 करोड़ रुपये वितरित किये जा चुके है।

उत्तम चारा योजना के अंतर्गत पशुपालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किसानों को चारा फसलों के उत्पादन के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके तहत 1,50,533 हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र को चारा फसलों के उत्पादन के लिए इस्तेमाल में लाया जा चुका है।

o o o

मुख्यमंत्री मधु विकास योजना

मौन पालन से मिला स्वरोजगार का बेहतर विकल्प

सिरमौर जिला के राजगढ़ उपमंडल की ग्राम पंचायत जदोल टपरोली के टपरोली गांव के जोगिन्द्र सिंह की जिंदगी में मुख्यमंत्री मधु विकास योजना नई क्रांति लेकर आई है। इस योजना का लाभ उठाकर उन्होंने मौन पालन को अपनाया जिससे उनकी आर्थिक स्थिति का स्वरूप बदल गया। उनके अनुसार यह बदलाव प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही 'मुख्यमंत्री मधु विकास' योजना से संभव हो पाया है जिससे प्रदेश के ग्रामीण बेरोजगारों को स्वरोजगार का बेहतर विकल्प उनके घर-द्वार पर ही उपलब्ध हो रहा है।

जोगिन्द्र सिंह ने बताया कि इस योजना के तहत उन्होंने डॉ. वाई. एस. परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी जिला सोलन से उच्च वरीयता प्राप्त वैज्ञानिकों से मौन पालन व 'बी ब्रीडर' पर 40 दिनों का निःशुल्क प्रशिक्षण व उत्तम तकनीक की जानकारी हासिल की। वर्ष 2019 में उद्यान विभाग राजगढ़ द्वारा मुख्यमंत्री मधु विकास योजना के तहत उन्हें बी ब्रीडर के लिए तीन लाख रुपये की अनुदान सहायता राशि प्रदान की गई।

मधुमक्खी पालन व्यवसाय को कड़ी मेहनत, लगन और अच्छी देखभाल के साथ किया जाए तो बहुत अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। जोगिन्द्र ने 300 मौनवंशों से एक साल में पांच से छः क्विंटल शहद प्राप्त किया जिससे उन्हें चार लाख रुपये आय प्राप्त हुई। जोगिन्द्र ने बताया कि दिसम्बर और जनवरी महीनों में सरसों की खेती के कारण ज्यादा मात्रा में शहद प्राप्त होता है। इसलिए शहद उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए मौन वर्षों को मौसम के अनुसार देश व प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में ले जाया जाता है।

'मुख्यमंत्री मधु विकास' योजना का लाभ उठाने के लिए इच्छुक किसान-बागबान को जिला स्तर पर जिला उप-निदेशक उद्यान व खण्ड स्तर पर उद्यान विकास अधिकारी के कार्यालय में आवेदन कर सकते हैं। तकनीकी व अन्य पहलुओं की समीक्षा के उपरांत उन्हें विभाग की ओर से आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में मुख्यमंत्री मधु विकास योजना के तहत 80 प्रतिशत तक का उपदान दिया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा अब तक 6,343 कृषकों को सात करोड़ का उपदान दिया जा चुका है। गत तीन वर्षों में 1,200 मौन वंशों का बागबानों में वितरण किया गया है, साथ ही 6,800 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन हुआ है।

✍ **सनम छेरिंग नेगी**

भविष्य

शिक्षा का सिरमौर

लुभित सिंह

शिक्षा व्यक्ति के मानसिक व बौद्धिक विकास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू है। मानसिक विकास के बिना बौद्धिक विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। हिमाचल प्रदेश में विगत 7 दशकों के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई है। दूसरे राज्यों की तुलना में शिक्षा के क्षेत्र में राज्य की स्थिति काफी बेहतर है। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में वर्तमान प्रदेश सरकार ने गत तीन वर्षों के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य किया है। वर्तमान प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में उठाए गए महत्त्वपूर्ण कदमों तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण कई पुरस्कार भी हासिल हुए हैं। नई शिक्षा नीति-2020 को सर्वप्रथम लागू करने वाला हिमाचल देश का पहला राज्य है। इस नीति को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए 43 सदस्यों की टास्क फोर्स का गठन किया गया है। नई शिक्षा नीति लागू होने से प्रदेश में कई अहम बदलाव पाठ्यक्रम और शिक्षा प्रणाली में भी देखने को मिलेंगे। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों में समीक्षात्मक सोच विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी। नई नीति के तहत 11वीं से स्नातक स्तर तक संकाय प्रणाली खत्म हो जाएगी। छात्रों को विज्ञान गणित आई. टी. और वोकेशनल विषय पढ़ना अनिवार्य होंगे। नई शिक्षा नीति के तहत प्रदेश में भी दसवीं और 12वीं कक्षा में दो बार बोर्ड की परीक्षा होगी।

कोविड-19 महामारी के दौरान भी शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रदेश को देश भर में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। प्रदेश में सरकारी व निजी क्षेत्र में शैक्षणिक संस्थानों का एक सुदृढ़ नेटवर्क उपलब्ध है। इस समय प्रदेश में राजकीय क्षेत्र में छः विश्वविद्यालय, 128 कॉलेज, 1863 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, 924 हाई 2038 माध्यमिक स्कूल तथा 10721 प्राथमिक स्कूल हैं। इन संस्थानों के माध्यम से राज्य सरकार अब गुणात्मक शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है।

कोरोना महामारी के कारण 'ऑनलाइन' पढ़ाई अब समय की मांग है तथा प्रदेश में इस दिशा में पहल की गई है। कोरोना महामारी के चलते शिक्षण कार्य जारी रखने के लिए राज्य सरकार ने विद्यार्थियों की सुविधा के लिए 'हर घर पाठशाला' कार्यक्रम और ऑनलाइन कक्षा सुविधा प्रदान की है। कार्यक्रम के अंतर्गत आकाशवाणी और दूरदर्शन के माध्यम से 10वीं तथा 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए विशेष कार्यक्रम आरम्भ किए गए हैं। व्हाट्सऐप तथा गूगल हैंगआउट के माध्यम से ऑनलाइन

विद्यार्थियों को निःशुल्क स्कूल बैग

कक्षाएं आयोजित करवाई जा रही है। प्रदेश सरकार द्वारा आरम्भ किए गए ये कार्यक्रम बेहद सफल रहे हैं।

गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ राज्य सरकार आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने पर भी विशेष ध्यान दे रही है। शिक्षण संस्थानों को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जा रहा है तथा सरकार छात्रों को विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करने के लिए लगातार प्रयासरत है। वित्त वर्ष 2020-21 में शिक्षा क्षेत्र पर 8016 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं।

राज्य सरकार द्वारा आरम्भ की गई 'अखण्ड शिक्षा ज्योति, मेरे स्कूल से निकले मोती' योजना के अंतर्गत उन सभी विद्यार्थियों के नाम प्रत्येक विद्यालय के गौरव पट्ट पर अंकित किए जा रहे हैं जिन्होंने जीवन में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं ताकि उस विद्यालय व क्षेत्र के बच्चे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा पा सकें। यह योजना राजकीय विद्यालयों की गरिमा बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध हो रही हैं।

प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही 'अटल आदर्श विद्या केंद्र' योजना के तहत प्रदेश के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में जहां नवोदय अथवा एकलव्य विद्यालय नहीं हैं, आवासीय विद्या केंद्र खोले जा रहे हैं। प्रथम चरण में 10 अटल आदर्श विद्या केंद्र अधिसूचित किए गए हैं जिनमें पांच विद्या केंद्र केवल छात्राओं के लिए बनाए जा रहे हैं। 15 नए अटल विद्या केंद्र अधिसूचित किए गए हैं। इन आवासीय विद्या केंद्रों में छात्रावास, खेल के मैदान, जिम व स्विमिंग पूल इत्यादि आधुनिक सुविधाएं होगी। इसके अतिरिक्त इनमें सभी कक्षाओं को स्मार्ट क्लासरूम बनाया जा रहा है। मण्डी के धर्मपुर विधानसभा के मड़ी में स्थापित हो रहे आवासीय विद्या केंद्र के लिए 15 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई है तथा अन्य अधिसूचित विद्या केंद्रों को स्थापित करने की प्रक्रिया को तेज किया गया है।

राज्य सरकार ने पहली से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए स्कूल वर्दी के दो सेट मुफ्त प्रदान करने के लिए 'अटल स्कूल वर्दी योजना' प्रारम्भ की है। वर्ष 2020-21 के दौरान इस योजना से 7,90,692 विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं। इसी योजना के तहत पहली, तीसरी, छठी और नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों को मुफ्त स्कूल बैग प्रदान करने का भी प्रावधान किया गया। इस योजना के तहत 2,56,514 छात्र-छात्राएं वर्ष 2019-20 में लाभान्वित हुए है। पहली, तीसरी, छठी तथा नौवीं कक्षाओं के लगभग 2.57 लाख विद्यार्थियों को निःशुल्क स्कूल बैग प्रदान किए जा रहे हैं। सभी राजकीय विद्यालयों में प्रत्येक माह के चौथे शनिवार को 'बैग मुक्त दिवस' रखा गया है ताकि इस दिवस पर विभिन्न सांस्कृतिक एवं खेल गतिविधियां आयोजित की जा सके।

प्रदेश सरकार द्वारा सभी राजकीय विद्यालयों में प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक के सभी विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करवाई जा रही हैं। इस योजना के तहत गत वर्ष लगभग 23. 48 करोड़ रुपये व्यय किए गए जिससे 5 लाख से भी ज्यादा विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं। प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही अटल निर्मल जल योजना के तहत सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए सभी माध्यमिक स्तर के स्कूलों तक वॉटर फिल्टर/ प्यूरीफायर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। प्रथम चरण में लगभग 450 पाठशालाओं में यह सुविधा उपलब्ध करवा दी गई है। 150 अन्य विद्यालयों में शीघ्र ही यह सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही हैं। इसके अलावा नौवीं व दसवीं कक्षाओं के विद्यार्थियों को स्टील की बोतलें हिमाचल प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही हैं। मेधा प्रोत्साहन योजना के तहत प्रदेश

हिमाचल के बढ़ते कदम

- **नई शिक्षा नीति को लागू करने वाला हिमाचल प्रथम**
- **कोरोना काल में हर घर बनी पाठशाला**
- **अटल आदर्श विद्या केंद्र योजना से मिली आवासीय पाठशाला सुविधा**
- **अटल स्कूल वर्दी योजना के तहत विद्यार्थियों को वर्दी के दो सैट**

साक्षरता में अव्वल

- आठवीं कक्षा तक विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें
- शिक्षा सारथी ऐप से स्कूलों की ऑनलाइन निगरानी
- स्वर्ण जयंती सुपर-100 योजना मेधावी छात्रों को निःशुल्क कोचिंग
- दूरदराज क्षेत्र में शुरू हुए सी.वी. रमन वर्चुअल क्लासरूम

के आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी विद्यार्थियों को बारहवीं तथा स्नातक के उपरान्त मेडिकल, इंजीनियरिंग व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए मेधा प्रोत्साहन योजना वरदान सिद्ध हो रही है। पांच करोड़ रुपये के बजट प्रावधान के साथ आरम्भ इस योजना के अंतर्गत प्रथम वर्ष में 500 विद्यार्थियों को लाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके तहत बारहवीं के 350 विद्यार्थी व स्नातक स्तर के 150 विद्यार्थी कक्षा सम्मिलित किए गए। इसके तहत वर्ष 2019-20 में 182 चयनित योग्य विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है। वर्तमान वर्ष में भी इस योजना के तहत 500 विद्यार्थियों का चयन किया जा रहा है। योजना के अंतर्गत 84 लाख रुपये स्वीकृत किए जा चुके हैं।

प्रदेश सरकार द्वारा इस वर्ष पूर्ण राज्यत्व की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य पर दसवीं कक्षा के 100 मेधावी विद्यार्थियों को व्यावसायिक कोर्स में प्रवेश पाने के योग्य बनाने के लिए यह नई स्वर्ण जयंती सुपर-100 योजना आरम्भ की जा रही है। दसवीं कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 100 विद्यार्थियों को आवश्यक प्रशिक्षण के लिए 1 लाख रुपये प्रति विद्यार्थी वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। इस योजना की पात्रता के लिए कोई भी आय सीमा नहीं है। चयन केवल मेरिट के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस वर्ष 9 विद्यालयों को उत्कृष्ट बनाने का कार्य चल रहा है जिनमें जिम सहित अन्य सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। इस योजना के लिए 9 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। 50 विद्यालयों में गणित प्रयोगशालाएं स्थापित की जा रही हैं ताकि इस कठिन विषय को विद्यार्थियों के लिए रुचिकर बनाया जा सके। प्रदेश के 280 विद्यालयों तथा सोलन, मण्डी, कांगड़ा व हमीरपुर के 'डाइट' संस्थानों में स्मार्ट वर्चुअल क्लासरूम स्थापित किए गए हैं।

इसके अतिरिक्त 36 वरिष्ठ माध्यमिक स्कूलों में इंग्लिश भाषा प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं।

सी. वी. रमन वर्चुअल क्लासरूम योजना के तहत प्रदेश के दूर-दराज के क्षेत्रों में चल रहे विद्यालयों व महाविद्यालयों में जहां कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अक्सर शिक्षकों की कमी रहती है, ऐसे शिक्षण संस्थानों में वर्चुअल क्लासरूम स्थापित कर उन्हें शिक्षा प्रदान की जा रही हैं। आरम्भ में मण्डी जिले के आठ महाविद्यालयों को इस योजना के तहत लाया गया जिन्हें पायलट आधार पर मण्डी शहर के राजकीय महाविद्यालय के साथ जोड़ा गया। इस योजना के बेहतर प्रदर्शन के कारण, इस वर्ष प्रदेश के 106 नए शैक्षणिक संस्थानों में वर्चुअल क्लासरूम स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।

राज्य सरकार ने 25 प्राथमिक विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालयों तथा नए स्तरोन्नत विद्यालयों में विभिन्न श्रेणियों के 63 नए पद सृजित किए हैं। प्रदेश सरकार ने 'शिक्षा सारथी ऐप' आरम्भ किया है जिसके तहत गत 3 माह के दौरान 1000 स्कूलों का निरीक्षण किया जा चुका है।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में गत तीन वर्षों के दौरान राज्य सरकार ने 3052 अध्यापकों की भर्ती कर्मचारी चयन आयोग के माध्यम से तथा बैच आधार पर की है। 1738 अध्यापकों की भर्ती प्रक्रिया प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त 1051 पीटीए अध्यापकों की सेवाएं नियमित की गई है। इसके अतिरिक्त 1790 सी एंड वी श्रेणियों के अध्यापकों की भर्ती की गई है तथा 2147 पदों की भर्ती प्रक्रिया जारी है। राज्य सरकार ने इसी श्रेणी के 2440 शिक्षकों की सेवाएं नियमित भी की हैं। प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2018 से अभी तक 1347 जेबीटी अध्यापकों की भर्ती की है तथा 2053 पदों को जिला स्तर पर भरने की प्रक्रिया जारी है।

000

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में गत तीन वर्षों के दौरान राज्य सरकार ने 3052 अध्यापकों की भर्ती कर्मचारी चयन आयोग के माध्यम से तथा बैच आधार पर की है। 1738 अध्यापकों की भर्ती प्रक्रिया प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त 1051 पीटीए अध्यापकों की सेवाएं नियमित की गई है। इसके अतिरिक्त 1790 सी एंड वी श्रेणियों के अध्यापकों की भर्ती की गई है तथा 2147 पदों की भर्ती प्रक्रिया जारी है। राज्य सरकार ने इसी श्रेणी के 2440 शिक्षकों की सेवाएं नियमित भी की हैं। प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2018 से अभी तक 1347 जेबीटी अध्यापकों की भर्ती की है तथा 2053 पदों को जिला स्तर पर भरने की प्रक्रिया जारी है।

देश का पहला ऊर्जा सरप्लस राज्य हिमाचल

हिमाचल प्रदेश को देश का विद्युत राज्य होने का गौरव प्राप्त है। प्रदेश सरकार के प्रयासों से हिमाचल प्रदेश आज देश का 'सरप्लस विद्युत राज्य' बन चुका है। प्रदेश में 27,436 मेगावाट जल विद्युत क्षमता विद्यमान है जिसमें से अभी तक 10,600 मेगावाट क्षमता का दोहन किया जा चुका है। जल विद्युत क्षमता के पूर्ण दोहन के लिए वर्तमान सरकार ने जल विद्युत नीति में बदलाव लाकर कई कार्य योजनाएं तैयार की हैं जिनमें लोकल एरिया डेवेल्पमेंट फंड (एल.ए.डी.एफ.) के प्रबंधन के लिए संशोधित दिशा-निर्देश शामिल हैं तथा 25 मेगावाट तक की क्षमता वाली परियोजनाओं से उत्पादित ऊर्जा को एच.पी.एस. ई.बी. एल. द्वारा एच.पी.ई.आर.सी. द्वारा निर्धारित दरों पर अनिवार्य रूप से खरीदा जाएगा।

कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद आज हमारे शत प्रतिशत गांव विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल कर चुके हैं। लगभग एक लाख किलोमीटर ट्रांसमिशन लाइनों के माध्यम से प्रदेश के 25 लाख से अधिक घरेलू उपभोक्ताओं के लिए बिजली आपूर्ति की जा रही है। प्रदेश में विद्युत आपूर्ति के लिए 30 हजार से अधिक बिजली उपकेंद्र स्थापित किए गए हैं। प्रदेश में पांच मेगावाट से अधिक क्षमता वाली आठ परियोजनाएं एन.एच.पी.सी., एस.जे.वी.एन. लिमिटेड तथा बी. बी.एम.बी. को आवंटित हैं। इन परियोजनाओं की क्षमता 2567 मेगावाट है तथा 3397 मेगावाट क्षमता वाली 12 जलविद्युत परियोजनाओं के लिए एन.एच.पी.सी. लिमिटेड, एन.टी.पी.सी. लिमिटेड, एस.जे.वी.एन. लिमिटेड तथा बी.बी.एम.बी. के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किए गए हैं।

राज्य विद्युत बोर्ड ने 568,280 किलोमीटर उच्च संचरण तथा 687,200 किलोमीटर निम्न संचरण की लाइनों के निर्माण के साथ 1352 विद्युत वितरण उपकेंद्र को स्थापित और 977 वितरण उप-केंद्रों को स्तरोन्नत किया है और विभिन्न श्रेणियों के 79846 विद्युत कुनैक्शन उपलब्ध करवाए गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रदेश सरकार द्वारा गरीब लोगों को नि:शुल्क विद्युत कुनैक्शन उपलब्ध करवाने के लिए मुख्यमंत्री रोशनी योजना आरंभ की है जिसके तहत गरीब लोगों को विद्युत कुनैक्शन प्राप्त करने के लिए जमा किए जाने वाले 7500 रुपये के शुल्क से छुटकारा मिला है तथा योजना के लाभार्थियों को अग्रिम खपत भुगतान में 50 प्रतिशत छूट का भी प्रावधान है।

हिमऊर्जा द्वारा जनजातीय व दूरस्थ क्षेत्रों में स्थापित ऑफ ग्रिड सोलर पावर प्लांट भी लोगों को विद्युत आपूर्ति करने में सहायक हुए हैं। सरकार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में ऑफ ग्रिड सौर ऊर्जा संयंत्रों के लिए इस वित्तीय वर्ष में एक करोड़ रुपये खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है।

इसके अतिरिक्त चंबा जिले के पांगी उपमंडल में 1000 बी.पी. एल. परिवारों के घरों में 250 वॉट के ऑफ ग्रिड सोलर पावर प्लांट स्थापित करने का कार्य प्रगति पर है। हिमऊर्जा द्वारा शुरू की गई रूफ टॉप योजना से न केवल बिजली के बिलों में कटौती हो रही है, अपितु उपभोक्ता अपनी मांग पूरी होने के उपरांत अतिरिक्त उत्पादित ऊर्जा को बिजली बोर्ड को विक्रय कर रहे हैं जिस पर उन्हें प्रति यूनिट की दर से अतिरिक्त आय उपलब्ध हो रही है। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा 40 मेगावाट रेणुकाजी बांध परियोजना को राष्ट्रीय महत्त्व की परियोजना घोषित किया गया है। इस परियोजना से प्रदेश को 200 मिलियन यूनिट बिजली मिलेगी, जिससे लगभग 60 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होगा।

जल विद्युत दोहन प्रदेश की आय का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। वर्ष 2020-21 में लगभग 515 मेगावाट क्षमता की परियोजनाएं चालू होने की संभावना है। हाल ही में केंद्र सरकार ने हिमाचल प्रदेश के कुल्लू व शिमला जिले में स्थित लुहरी चरण-एक जलविद्युत परियोजना में 1810.56 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी प्रदान की है। सतलुज नदी पर बनने वाली इस परियोजना से वार्षिक 758.20 मिलियन यूनिट बिजली का उत्पादन होगा। 210 मेगावाट की इस परियोजना को बिल्ड-ऑन-ऑपरेट-पेनटेन (बूम) आधार पर भारत सरकार और राज्य सरकार की सक्रिय सहायता से तैयार किया जा रहा है।

केंद्र सरकार ने आधारभूत ढांचे को सक्रिय करने के लिए 66.19 करोड़ का अनुदान प्रदान कर इस परियोजना में सहायता प्रदान की है। इस परियोजना से तैयार होने वाली बिजली से ग्रिड में स्थिरता लाने और बिजली आपूर्ति सुधार में सहायता मिलने के साथ लगभग 2000 लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। लुहरी चरण-एक जलविद्युत परियोजना को आगामी पांच वर्षों में कार्यशील किया जाएगा तथा 40 वर्षों की अवधि चक्र में हिमाचल प्रदेश को लगभग 1140 करोड़ रुपये की नि:शुल्क विद्युत का लाभ होगा।

✍ **ओजस नेगी**

स्मार्ट शहर

नगर व शहरों का सुनियोजित विकास

शहरों का योजनाबद्ध एवं नियोजित विकास समय की मांग है। शहर में रह रहा हर व्यक्ति एक बेहतर जीवन जीना चाहता है जिसके लिए बुनियादी नागरिक सुविधाएं उपलब्ध करवाना स्थानीय प्रशासन का दायित्व होता है। स्थानीय सरकार जन प्रशासन का एक रूप है जो अधिकांश जगहों पर किसी राज्य या राष्ट्र की सबसे निचली श्रेणी की प्रशासनिक इकाई होती है। स्थानीय सरकारों के पास वह अधिकार होते हैं जो संवैधानिक रूप से या विधेयकों द्वारा उन्हें दिए जाते हैं। भारत एक संघीय गणराज्य है जिसमें सरकार के तीन क्षेत्र है : केन्द्रीय, राज्य और स्थानीय। 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधन स्थानीय सरकारों को मान्यता और संरक्षण देते हैं। संविधान के 74वें संशोधन में शामिल शहरी इलाकों में नगरपालिका के गठन का प्रावधान किया गया है जिनकी शक्तियां राज्य सरकारों द्वारा तय की जाती है। नगर निगमों की स्थापना राज्य सरकार द्वारा विशेष अधिनियम के तहत की जाती है। नगर निगम एक व्यवस्थापिका के तहत कार्य करती है। पिछले कुछ दशकों में बढ़ते शहरीकरण के दृष्टिगत शहरों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं पर दबाव बढ़ा है। सरकार हर नागरिक को श्रेष्ठ सुविधाएं प्रदान करने के प्रति कटिबद्ध है। हिमाचल प्रदेश में बीते तीन वर्षों में सरकार द्वारा महत्त्वपूर्ण शहरों व कस्बों के सुनियोजित विकास एवं सौंदर्यीकरण के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। शिमला व धर्मशाला शहरों को स्मार्ट सिटी मिशन के तहत लाकर उनका सुनियोजित विकास किया जा रहा है। नगर निकायों में बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से अटल नवीनीकरण और शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत) के तहत शिमला तथा कुल्लू शहरों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। प्रदेश सरकार ने हाल ही में राज्य के प्रमुख शहरों, सोलन, मण्डी और पालमपुर की नगर परिषदों को नगर निगम में स्तरोन्नत कर वर्षों से चल रही अटकलों को विराम देकर एक ऐतिहासिक फैसला लिया है। प्रदेश की सबसे बड़ी नगर परिषद् सोलन को स्तरोन्नत कर नगर निगम बनाने को लेकर नवम्बर, 2014 में पहली बार प्रस्ताव पास कर सरकार को भेजा गया था। प्रदेश की सबसे पुरानी नगर परिषदों में शुमार मंडी शहर कोई नया शहर नहीं बल्कि छोटी काशी के नाम से विख्यात रियासत काल का महत्त्वपूर्ण शहर है। आजादी के बाद वर्ष 1948 में जब हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ तो उस वक्त से ही मंडी शहर के विकास के लिए नगर निकाय का प्रावधान रखा गया था। सात वार्डों की केवल 32 सौ के करीब मतदाताओं की नगर परिषद् पालमपुर को निगम बनाये जाने की वर्षों पुरानी मांग को भी सरकार ने पूरा किया है। कुछ वर्ष पूर्व तक प्रदेश में शिमला को छोड़कर कोई और नगर निगम नहीं था, जो कई वर्षों से लगातार कार्य कर रहा है। परन्तु पांच वर्ष पूर्व धर्मशाला को भी नगर निगम का दर्जा दिया गया। मंडी, सोलन व पालमपुर को नगर निगम का दर्जा मिलने से जहां कुछ लोग आपत्ति जता रहे थे तो वहीं काफी संख्या में लोग इसका समर्थन भी कर रहे थे। विरोध करने वाले लोगों का तर्क है कि नगर निगम में शामिल किए गए क्षेत्र ग्रामीण हैं और वहां की जनता टैक्स देने में असमर्थ है लेकिन सरकार द्वारा नए शहरी स्थानीय निकायों में शामिल क्षेत्रों में भूमि और भवनों को तीन वर्ष की अवधि के लिए सामान्य कर के भुगतान से छूट देने और प्रदान किए गए प्रचलित अधिकारों को बहाल रखने का फैसला लिया है। इसके अतिरिक्त प्रदेश सरकार द्वारा शहरी क्षेत्रों में रह रहे गरीब परिवारों के सामाजिक व आर्थिक उत्थान के लिए कई तरह की योजनाएं भी शुरू की गई हैं जिनमें मुख्यमंत्री शहरी आजीविका गारंटी योजना प्रमुख है। लॉकडाउन के कारण बेरोजगार हुए युवाओं को रोजगार मुहैया करवाने के लिए यह योजना शुरू की गई। योजना के तहत हर घर में 120 दिनों का गारंटीड रोजगार प्रदान किया जा रहा है। योजना के तहत जहां 300 से अधिक व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध करवाया जा चुका है, वहीं योजना से शहरी बुनियादी ढांचे और शहरी स्थानीय निकायों में गुणवत्तापूर्ण नागरिक सुविधाओं को भी मजबूती मिल रही है। शहरी क्षेत्रों में सबके लिए पक्का मकान उपलब्ध करवाने के लिए प्रदेश में प्रधानमंत्री आवास योजना चलाई जा रही है।

हिमाचल प्रदेश में अभी भी कृषि व बागबानी का अधिक योगदान है। बावजूद इसके यह बात तो साफ है कि इन निगमों के बनने से विकास को अवश्य गति मिलेगी। निगम का दर्जा मिलने से जहां इन शहरों का सुनियोजित ढंग से विकास होगा वहीं स्थानीय लोगों को रोजगार का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

प्रदेश सरकार का इन शहरों को नगर निगम का दर्जा प्रदान करने के पीछे की मंशा स्थानीय लोगों को बेहतर आधारभूत ढांचा जैसे पेयजल, ऊर्जा, मल निकासी सुविधा, परिवहन सुविधा, बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के साथ निवेश को मौका देना व आजीविका के व्यापक अवसर प्रदान करना है। इन सुविधाओं के मिल जाने से जहां वाणिज्यिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा वहीं लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में भी बदलाव आयेगा।

मानवी सिंह

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अनुकरणीय पहल

'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान'

प्रधानमंत्री ने की हिमाचल सरकार की भूरि-भूरि प्रशंसा

मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश सरकार कोरोना महामारी से निपटने की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है। कोरोना महामारी से लड़ने में प्रदेश सरकार के कारगर प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस में हिमाचल प्रदेश में 'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' को प्रभावी रूप से चलाने के लिए सरकार के प्रयासों की न केवल प्रशंसा की बल्कि अन्य राज्यों को भी कोरोना महामारी से लड़ने में हिमाचल से प्रेरणा लेने का परामर्श दिया। हिमाचल जैसे छोटे से पहाड़ी प्रदेश के लिए यह गौरव की बात है कि राष्ट्रीय स्तर पर इसके कार्यों को पहचान मिली है। इस अभियान के तहत राज्य में 70 लाख से भी अधिक लोगों की स्वास्थ्य जानकारी जुटाई गई है, जिससे प्रदेश के लोगों में इन्फ्लुएंजा जैसी बीमारी के लक्षणों की स्क्रीनिंग करने में सहायता मिली है। एक्टिव केस फाइंडिंग कार्य को एक विशेष अभियान के रूप में चलाने के लिए 16 हजार कर्मचारियों के दल द्वारा प्रदेश भर में लोगों की स्वास्थ्य संबंधी व्यापक जानकारी हासिल की गई। इस कार्य में आशा कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, पैरा मेडिकल स्टाफ तथा पुलिस कर्मचारी शामिल किए गए। सरकार के इन प्रयासों के परिणामस्वरूप प्रदेश में कोरोना वायरस की जांच का अनुपात 700 प्रति मिलियन व्यक्ति है, जो देश में सबसे अधिक है। केन्द्र सरकार ने कोरोना महामारी से कारगरता के साथ निपटने के लिए कर्मचारियों की स्वास्थ्य जानकारी जुटाने एवं इसकी निगरानी के लिए सरकारी एवं निजी क्षेत्र के समस्त कर्मचारियों को आरोग्य सेतु एप डाउनलोड करना अनिवार्य कर दिया है। हिमाचल प्रदेश औषधि निर्माण में देश का अग्रणी राज्य है, इसलिए कोरोना महामारी के दौरान दवाइयों की कमी को पूरा करने के लिए प्रदेश की फार्मास्यूटिकल इकाइयों में दवाई निर्माण कार्य शुरू कर इन्हें देश-विदेश में भेजा जा रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस में हिमाचल प्रदेश में 'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' को प्रभावी रूप से चलाने के लिए सरकार के प्रयासों की न केवल प्रशंसा की बल्कि अन्य राज्यों को भी कोरोना महामारी से लड़ने में हिमाचल से प्रेरणा लेने का परामर्श दिया।

देश के 'बैस्ट परफॉर्मिंग चीफ मिनिस्टर' मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर

हिमाचल के लिए भी यह गौरव की बात है कि श्री जय राम ठाकुर को भाजपा शासित राज्यों में देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में स्थान दिया गया है और वे देश के 7वें सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में उभरे हैं। हिमाचल प्रदेश न केवल मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के गतिशील नेतृत्व में प्रगति और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है, बल्कि कोरोना महामारी से भी प्रभावी तरीके से निपट रहा है।

किसी भी देश व प्रदेश के सर्वांगीण विकास में नेतृत्व का दूरदर्शी होना आवश्यक होता है। राज्य की संतुलित तरक्की तभी संभव हो पाती है जब शासन तंत्र में आसीन लोग पारदर्शी एवं भेदभाव रहित नीतियां अपनाकर विकास को नई राह दिखा सकें। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर ने इसी भावना से कार्य करते हुए कोरोना संकट के दौरान दूरदर्शी नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्रदेश की प्रगति में कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए हिमाचल को नई बुलंदियों की ओर बढ़ाया है। अपनी नवीन सोच व उमंग के साथ विकास की गति को इस तरह अग्रसर किया है जिसकी चौतरफा सराहना हुई है। इसका जीता जागता प्रमाण आईएएनएस-सी वोटर द्वारा हाल ही में करवाए गए सर्वेक्षण में उस समय देखने को मिला जब मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर को देश का बैस्ट परफॉर्मिंग मुख्यमंत्री और भाजपा शासित राज्यों में सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्री घोषित किया गया।

यह सर्वेक्षण राज्यों में मुख्यमंत्रियों की संतोषजनक (सेटिस्फेक्शन) रेटिंग के आधार पर किया गया है। हिमाचल प्रदेश में सेटिस्फेक्शन का प्रतिशत 73.96 है, जो कि अधिकांश बड़े राज्यों की तुलना में बहुत अधिक है। सेटिस्फेक्शन का शुद्ध प्रतिशत कर्नाटक में 67.21 प्रतिशत, असम में 67.17 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 58.73 प्रतिशत, गुजरात में 58.53 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 57.81 प्रतिशत है, जबकि अखिल भारतीय सेटिस्फेक्शन का औसत 57.36 प्रतिशत है। हिमाचल के लिए भी यह गौरव की बात है कि श्री जय राम ठाकुर को भाजपा शासित राज्यों में देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में स्थान दिया गया है और देश के 7वें सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में उभरे हैं। हिमाचल प्रदेश न केवल मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के गतिशील नेतृत्व में प्रगति और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है, बल्कि कोरोना महामारी से भी प्रभावी तरीके से निपट रहा है। सरकार ने प्रदेश में कोविड-19 के दौरान अपनी जान जोखिम में डालकर विभिन्न स्तर पर कार्य कर रहे फ्रंटलाइन कर्मियों की मृत्यु हो जाने की स्थिति में उनके परिवार के नजदीकी सम्बन्धी को 50 लाख रुपये का अनुग्रह अनुदान देने की घोषणा की है।

प्रतिभा का दस्तावेज
स्किल रजिस्टर

सुनहरे भविष्य की तालाश में देश के विभिन्न भागों में कार्य कर रहे लाखों हिमाचलवासियों के लिए कोरोना महामारी किसी अभिशाप से कम नहीं है। रोजगार छिन जाने के कारण ऐसे असंख्य हिमाचली आए दिन अपने घर वापिस आ रहे हैं, जो प्रदेश सरकार के अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप आज सुकुशल अपने परिवारों के साथ रह रहे हैं। प्रदेश सरकार ने संकट की घड़ी में जरूरतमंदों को राहत देने की दिशा में तत्परता के साथ कार्य करते हुए आजीविका के लिए देश के किसी भी कोने में काम कर रहे हिमाचली को सकुशल वापिस लाने के पुख्ता प्रबंध किए। प्रदेश सरकार ने देश के विभिन्न हिस्सों में फंसे ऐसे लगभग दो लाख लोगों को वापस लाने पर 15 करोड़ रुपये व्यय कर अपने कर्त्तव्यों का भलीभांति निर्वहन किया है। राज्य के हजारों लोगों को विशेष रेलगाड़ियों और बसों द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों से वापिस लाया गया। अपने गृह राज्य में वापिस आए इन लोगों को अब बेरोजगारी की चिंता सताने लगी है। ऐसे हालात में हिमाचल प्रदेश सरकार इन लोगों के लिए रोजगार का एक वैकल्पिक समाधान लेकर आई है। प्रदेश सरकार ने कोरोना संकट के चलते बेरोजगार हुए इन लोगों के कौशल का खाखा तैयार करने के लिए एक प्रतिभा रजिस्टर तैयार किया है। इस रजिस्टर के आधार पर इन्हें राज्य में ही रोजगार और स्वरोजगार के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाएंगे। हिमाचल सरकार ने ऐसे लोगों का डेटाबेस बनाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा विकसित स्किल रजिस्टर का शुभारम्भ किया है। इस रजिस्टर में कोई भी पात्र व्यक्ति skillregister.hp.gov.in के माध्यम से अपना पंजीकरण करवा सकता है। विभिन्न कंपनियां और औद्योगिक घराने भी इस पोर्टल पर श्रमशक्ति आवश्यकताओं को दर्ज कर सकते हैं। इस पोर्टल के माध्यम से राज्य में लौटे लोग अपनी शैक्षिक योग्यता, कौशल और नौकरी की आवश्यकताओं के संबंध में जानकारी अपलोड कर सकते हैं। इससे राज्य में उपलब्ध कौशल की पहचान कर कौशल उन्नयन एवं आवश्यकताओं के विश्लेषण में भी सहायता मिलेगी। पोर्टल पर उद्योगों को एक क्लिक पर कुशल श्रमशक्ति की उपलब्धता की जानकारी मिल जाएगी। पंजीकरण के लिए मोबाइल नंबर और आधार नंबर आधारित प्रक्रिया अमल में लाई जाएगी और पात्र व्यक्तियों को एसएमएस के माध्यम से सूचित किया जाएगा। कौशल के बारे में जिला, शैक्षिक योग्यता और कार्य अनुभव के अनुसार रिपोर्ट तैयार की जाएगी। कौशल रजिस्टर को औद्योगिक घरानों के साथ जोड़ा जाएगा ताकि उद्योगों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार जानकारी मिल सके। इस रजिस्टर में आवश्यकता के अनुसार कौशल उन्नयन का भी प्रावधान है।

कृषि से संपन्नता

हींग व केसर से महकेगी हिमाचल की माटी

गुणों से भरपूर हींग व केसर न केवल हमारे स्वास्थ्य को चुस्त-दुरुस्त रखते हैं बल्कि स्वाद व सुगंध में भी ये दोनों बेमिसाल हैं। अपनी लाजवाब खुशबू से सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाले इन मसालों से हमारा भोजन स्वादिष्ट व जायकेदार भी बनता है। इन सभी गुणों के साथ-साथ ये प्रदेश के किसानों की आय में बढ़ोतरी का भी जरिया बन सकते हैं क्योंकि इन दोनों तरह के मसालों की बाजार में मांग भी काफी अधिक हैं और प्रति किलो के दाम भी अन्य मसालों की तुलना में अधिक मिलते हैं। इन्हीं खूबियों के मद्देनजर प्रदेश की जयराम सरकार राज्य में हींग व केसर की खेती को लोकप्रिय बनाने लिए ठोस कदम उठा रही है। 'कृषि सम्पन्नता योजना' के तहत प्रदेश सरकार राज्य में हींग व केसर की फसल को प्रोत्साहित कर रही है। इसकी फसल प्रदेश के ऊंचाई वाले क्षेत्रों चम्बा, लाहौल-स्पीति और किन्नौर जिलों में उगाई जा सकती है। सरकार की यह योजना किसानों को न केवल आत्मनिर्भर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, बल्कि हींग और केसर की देश में खपत को भी पूरा करेगी। मुख्यमंत्री ने वित्त वर्ष 2020-21 के अपने बजट भाषण में केसर और हींग की पफसलों से कृषि से संपन्नता योजना की शुरुआत करने की घोषणा की थी। प्रदेश में हींग की खेती करने के लिए बीज लाने का कार्य हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर ने किया है। हींग के बीज को ईरान से लाने के बाद संस्थान में इसकी पौध तैयार की गई। प्रदेश के जनजातीय जिलों में इसकी खेती की संभावनाओं को देख इसका प्रयोग किया गया। संस्थान की मेहनत रंग लाई और जनजातीय क्षेत्रों में हींग की खेती तैयार कर ली। अब हींग की नर्सरी तैयार की जा रही है। जब इसके पौधे बन जाएंगे तो किसानों को उपलब्ध करवाते हुए प्रदेश में हींग का उत्पादन शुरू हो जाएगा। देश में हींग की खपत 1100 टन है और ज्यादातर विदेश से आयात किया जाता है। अब इसका उत्पादन हिमाचल में ही होगा तो उसका पूरा लाभ किसानों को मिलेगा। प्रदेश में केसर और हींग की फसल उगाकर किसान खुशहाली की नई कहानी लिखेगा। दूसरी तरफ जम्मू-कश्मीर में प्रमुखता से की जाने वाली केसर की खेती के लिए भी प्रदेश के ऊंचाई वाले क्षेत्रों की जलवायु उपयुक्त पाई गई है। देश में केसर की खपत सौ टन है, लेकिन यहां सिर्फ छह टन का ही उत्पादन होता है। बाकी का केसर विदेश से आता है। आइएचबीटी पालमपुर ने हिमाचल में ही केसर की खेती की संभावनाएं तलाशते हुए कुछ क्षेत्रों को इसकी खेती के लिए उपयुक्त पाया है। सिरमौर, रामपुर, चंबा का कुछ भाग और पालमपुर के साथ लगते क्षेत्रों में केसर का उत्पादन हो सकता है। इसके लिए संस्थान किसानों के छोटे समूह बनाकर उन्हें जोड़ेगा। किसानों को केसर उत्पादन की तकनीकी जानकारी संस्थान ही देगा। बाजार में हींग का मूल्य 35 से 40 हजार रुपये प्रति किलो है। दूसरी तरफ केसर का मूल्य दो लाख रुपये प्रति किलो है। ईरान में हींग और केसर की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। वहीं से उसे भारत भी इनका आयात करता है।

योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों की आय में वृद्धि करना

संस्थान ने कड़ी मेहनत कर योजना बनाकर सरकार को भेजी थी। किसानों के लिए केसर के बल्ब तैयार करने का कार्य आइएचबीटी प्रमुखता से कर रहा है। साथ ही हींग के पौधें को नर्सरी में तैयार किया जाना है। प्रदेश के किसान यदि हींग व केसर की खेती करते हैं तो इससे हिमाचल को बहुत लाभ होगा और प्रदेश के युवाओ के लिए नए रोजगार के संसाधनों को जुटाने में मदद मिल सकेगी। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश में संचालित की जा रही कृषि सम्पन्नता योजना का मुख्य उद्देश्य भी किसानों की आय में वृद्धि करना है।

‘पंचवटी’ में खिलेंगी बुजुर्गों की खुशियां

समाज शास्त्री प्रोफेसर आर.के. सिंह के अनुसार एक उम्र के बाद हमारे बुजुर्गों को, चाहे वे हमारे माता-पिता हों या दादा-दादी सभी को एक खास तरह की देखभाल की जरूरत रहती है। ऐसा न होने पर वे खुद को घर में उपेक्षित महसूस करने लगते हैं। तनहाई उनका सबसे बड़ा दुश्मन बन जाता है। मन में कई तरह की आशंकाएं घर करने लगती हैं और धीरे-धीरे ये अवस्था मानसिक बीमारी का रूप ले लेती हैं। ऐसी स्थिति में नितांत आवश्यक हो जाता है कि हम अपने बुजुर्गों को एहसास कराएं कि वह हमारे लिए कितने महत्त्वपूर्ण हैं। उनके अनुभवों की हमें कितनी जरूरत है। इसलिए शारीरिक व मानसिक तौर पर स्वस्थ रखने के लिए जरूरी है कि उन्हें किसी न किसी तरह से क्रियाशील बनाये रखा जाए। ऐसे में उनके लिए सुबह शाम की सैर एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। शहरों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए खाली समय व्यतीत करने के लिए कई तरह के विकल्प हैं जैसे क्लब इत्यादि जहां वे तरह-तरह की गतिविधियों में शामिल होकर अपने आपको व्यस्त रखते हैं। परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठ नागरिकों के मनोरंजन के लिए क्लब जैसी कोई सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती। हमारी सरकार बुजुर्गों के प्रति काफी संवेदनशील है। सरकार की संवेदनशीलता का अंदाजा हाल ही में ग्रामीण क्षेत्रों के वरिष्ठ नागरिकों की जरूरतों के मद्देनजर ‘पंचवटी योजना’ शुरू करने से लगाया जा सकता है। योजना का मुख्य उद्देश्य बुजुर्गों को सेहतमंद रखने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना भी है। चूंकि हिमाचल एक पहाड़ी इलाका है। रास्ते उबड़-खाबड़ होने की वजह से सबसे ज्यादा परेशानी का सामना बुजुर्गों को ही करना पड़ता है, जिस कारण उन्हें घर के अन्दर ही रहने को मजबूर होना पड़ता है। पंचवटी योजना के अंतर्गत प्रदेश भर में आवश्यक सुविधाओं से युक्त सभी विकास खण्डों व हर पंचायत में चरणबद्ध तरीके से 100 पार्क और बगीचे विकसित किए जाएंगे, जहां वरिष्ठ नागरिकों के मनोरंजन से जुड़ी सभी सुविधाएं मुहैया करवाई जायेंगी। प्रदेश में बनाए जाने वाले इन पार्कों के निर्माण के पीछे सरकार का एक ही मकसद है, बुजुर्गों को एक ऐसी जगह देना, जहां वह मनोरंजन के साथ खाली समय में अपनी सेहत का भी ध्यान रख सकें। साथ ही साथ इन पार्कों में बुजुर्ग सैर करने के अलावा एक दूसरे के साथ अपने दुःख-सुख व अच्छे-बुरे अनुभव भी साझा कर सकेंगे। प्रदेश में बनाए जाने वाले इन पार्कों के जरिए बुजुर्गों को एक ऐसी जगह देना है जहां वह अपने खाली समय में अपनी सेहत का ध्यान रख सकें। बुजुर्गों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए पार्कों का निर्माण स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के अन्तर्गत किया जायेगा। इन बगीचों में औषधीय पौधों को भी लगाया जाएगा, साथ ही यहां पैदल पथ, मनोरंजन के उपकरण और अन्य बुनियादी सुविधाओं को प्रदान करने के लिए भी सरकार प्रयास कर रही है। न्यूनतम एक बीघा समतल भूमि पर इन बगीचों का निर्माण किया जायेगा। पार्कों और बगीचों का विकास मनरेगा के तहत किया जाएगा, जिसका सारा खर्च सरकार वहन करेगी। योजना के जरिए जहां ग्रामीण मजदूरों को रोजगार मिलेगा, उनका भरण-पोषण होगा, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे लोगों की आजीविका भी बेहतर होगी। सरकार द्वारा शुरू की गई यह योजना निःसंदेह सराहनीय है जो ग्रामीण बुजुर्गों में एक नई उमंग के साथ सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगी और उन्हें शारीरिक व मानसिक तौर पर स्वस्थ रखने में मददगार साबित होगी।

पुनः पटरी पर लौटी अर्थव्यवस्था

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के कुशल नेतृत्व में वर्तमान प्रदेश सरकार राज्य की अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर लाकर इसे गति देने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। अर्थव्यवस्था के पुनरूत्थान के लिए गठित मंत्रिमंडल उप समिति और टास्क फोर्स की अनुशंसा के अनुसार आर्थिक गतिविधियों को खोला जा रहा है। प्रदेश सरकार ने आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करने के लिए अनेक प्रभावी कदम उठाए हैं, जिनसे आर्थिकी को पुनः पटरी पर लाने में सहायता मिली है। प्रदेश भर मे कर्फ्यू अवधि में पर्याप्त छूट देकर व्यापारिक गतिविधियों को सुचारू बनाया गया है। औद्योगिक इकाइयों में उत्पादन दोबारा से आरंभ करने के लिए पर्याप्त प्रबंध किए गए है। प्रदेश सरकार ने लॉकडाऊन के दौरान हिमाचल वापिस लौटे लोगों को रोजगार देने व उनके पुनर्वास के लिए 'मुख्यमंत्री शहरी आजीविका गारंटी योजना' आरंभ की है। ग्रामीण महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए 'मुख्यमंत्री एक बीघा योजना' आरंभ की गई है। इस योजना को मनरेगा से जोड़कर 5,000 स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लगभग 1.50 लाख महिलाओं को स्वरोजगार के साथ जोड़ा जाएगा। योजना के तहत एक बीघा भूमि पर बैकयार्ड किचन गार्डन तैयार कर सब्जियां एवं फल उगाने का कार्य आरंभ किया जा सकता है। आम लोगों के जीवन को सामान्य बनाने की दिशा में कारगर कदम उठाए गए हैं। जनधन योजना के अंतर्गत प्रदेश की 5.90 लाख पात्र महिलाओं के खाते में धनराशि हस्तांतरित कर उन्हें लाभान्वित किया गया है। किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसानों के बैंक खातों में प्रति किसान को छः किस्तों में दो-दो हजार रुपये हस्तांतरित किए गए हैं।

कोरोना महामारी के दृष्टिगत राज्य सरकार ने भवन एवं अन्य सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के तहत पंजीकृत 1.37 लाख कामगारों को राहत प्रदान करने के लिए 2,000 रुपये की अतिरिक्त किस्तें उपलब्ध करवाई हैं।

इस राशि के मिलने से लाभार्थियों को 27.42 करोड़ रुपये की अतिरिक्त ध नराशि मिलेगी। 18 से 60 साल की आयु का कोई भी व्यक्ति जिसे पिछले 12 महीनों में बीओसीडब्ल्यू या मनरेगा के तहत कम से कम 90 दिनों का अनुभव हो, बोर्ड के तहत अपने को पंजीकृत करवाकर बोर्ड द्वारा कामगारों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा सकता है।

'एक राष्ट्र एक राशन कार्ड' योजना आरम्भ करने वाला हिमाचल प्रदेश देश का प्रथम राज्य है, जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति देश में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सब्सिडी पर राशन ले सकता है।

'एक राष्ट्र एक राशन कार्ड' योजना आरम्भ करने वाला हिमाचल प्रदेश बना देश का प्रथम राज्य जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति देश में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सब्सिडी पर राशन ले सकता है। केंद्र सरकार द्वारा घोषित 20 लाख करोड़ रुपये के पैकेज तथा इसके उपरांत अन्य आर्थिक पैकेज से देश व प्रदेश की आर्थिकी में अप्रत्याशित सुधार हुआ है और लोगों को इस आर्थिक पैकेज से बहुत सहायता मिली है।

विकासात्मक आलेख प्रस्तुति : हिमप्रस्थ डेस्क

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने विदेशों में घर वापिसी की आस लगाए लोगों की सहायता में विशेष रुचि लेकर राज्य प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त किया जबकि मुख्य सचिव अनिल खाची ने इस कार्य की प्रभावी तरीके से निगरानी की। राज्य नोडल अधिकारी ओंकार शर्मा, पूर्व आवासीय आयुक्त संजय कुण्डू, नई दिल्ली में तैनात वर्तमान आवासीय आयुक्त रजनीश ने इस कार्य में शामिल होकर विशेष सहयोग दिया। आवासीय आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली ने अपने अथक प्रयासों से राज्य सरकार द्वारा सौंपे गए इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाने में योगदान दिया। इस कार्य के नोडल अधिकारी, उप-आवासीय आयुक्त विवेक महाजन ने विदेश मंत्रालय से तत्काल समन्वय स्थापित कर विभिन्न दूतावासों के साथ बातचीत की।

जय राम सरकार के सराहनीय प्रयास

विदेशों से प्रदेशवासियों की हुई सकुशल घर वापिसी

कोविड-19 महामारी के कारण विदेशों में विभिन्न जगहों पर फंसे हजारों लोगों के लिए केन्द्र सरकार द्वारा आरंभ 'वंदे भारत मिशन' बेहद कारगर एवं प्रभावी उपाय साबित हुआ है जिसके तहत विशेष उड़ानों के सफल संचालन से हजारों लोगों की सकुशल घर वापिसी सुनिश्चित हो पाई है। इस मिशन के तहत हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा किए गए सार्थक प्रयासों का ही परिणाम है कि विश्व के 69 देशों में फंसे 713 हिमाचलियों को वापिस लाया जा सका, जिनमें संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, रूस, किर्गिस्तान, यूक्रेन आदि देश मुख्य रूप में शामिल हैं। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने विदेशों में घर वापसी की आस लगाए इन लोगों की सहायता में विशेष रुचि लेकर राज्य प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त किया जबकि मुख्य सचिव अनिल खाची ने इस कार्य की प्रभावी तरीके से निगरानी की। राज्य नोडल अधिकारी ओंकार शर्मा, पूर्व आवासीय आयुक्त संजय कुण्डू, नई दिल्ली में तैनात वर्तमान आवासीय आयुक्त रजनीश ने इस कार्य में शामिल होकर विशेष सहयोग दिया। आवासीय आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली ने अपने अथक प्रयासों से राज्य सरकार द्वारा सौंपे गए इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाने में योगदान दिया। इस कार्य के नोडल अधिकारी, उप-आवासीय आयुक्त विवेक महाजन ने विदेश मंत्रालय से तत्काल समन्वय स्थापित कर विभिन्न दूतावासों के साथ बातचीत की। विभिन्न देशों में यात्रियों के साथ व्हाट्सऐप ग्रुपों के माध्यम से संवाद किया। उड़ान की समय-सारिणी, सहायता डैस्क, जरूरी दस्तावेज जैसे अहम पहलुओं में मार्गदर्शन व समस्त जरूरी जानकारी उपलब्ध करवाई, जो उनके भारत वापिसी के लिए आवश्यक थी। हिमाचलवासियों को वापिस लाने के लिए यह उड़ानें दिल्ली, चण्डीगढ़ और अमृतसर हवाई अड्डों पर उतरीं जहां राज्य सरकार के अधिकारियों की एक टीम पहले से ही तैनात की गई थी। इस अभियान का नेतृत्व उप-आवासीय आयुक्त ने किया जिन्होंने दिल्ली में जिला मेजिस्ट्रेट और दिल्ली, चण्डीगढ़ और अमृतसर के नोडल अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित किया।

मानक संचालन प्रक्रिया के अनुसार दिल्ली और पंजाब के हवाई अड्डों पर वहां की सम्बन्धित सरकारों द्वारा यात्रियों की चिकित्सकीय जांच की गई। इसके बाद उन्हें हिमाचल के

सहायता डैस्क को सौंपा गया तथा उन्हें एक प्रमाण पत्र दिया गया, जिसमें स्पष्ट रूप से उल्लेखित था कि उनकी चिकित्सकीय जांच की गई है तथा वह आगे की यात्रा के लिए स्वस्थ पाए गए हैं। सहायता डैस्क का काम दिल्ली या पंजाब आदि सरकारों से घर वापिसी के इच्छुक लोगों को लेना और जरूरत पड़ने पर उन्हें टैक्सी किराए पर लेकर आगे की यात्रा की सुविधा प्रदान करना था। आवासीय आयुक्त कार्यालय द्वारा सम्बन्धित जिलों में क्वारंटीन की व्यवस्था करके सम्बन्धित जिला प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित किया गया। जिला प्रशासन को आवासीय आयुक्त कार्यालय द्वारा वाहनों की आवाजाही और विवरण आदि के बारे विधिवत जानकारी दी गई। प्रारम्भ में विदेश मंत्रालय/ दूतावास हिमाचल के लोगों को राज्य सरकार को सौंपने का अनिच्छुक था, क्योंकि वह हिमाचल सरकार से लिखित में आश्वासन चाहते थे कि हिमाचल के लोगों को क्वारंटीन के लिए हिमाचल वापिस ले जाया जाएगा। इसके तुरन्त बाद मानक संचालन प्रक्रिया जारी की गई ताकि हिमाचल के लोगों को कोई परेशानी पेश न आए।

हिमाचल भवन, नई दिल्ली में स्थापित हेल्प डेस्क

मानक संचालन प्रक्रिया जारी होने के उपरान्त अधिक से अधिक हिमाचली लोगों की वापसी सुनिश्चित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था क्योंकि पूरे देश से एयर इण्डिया की उड़ानों में सीटों की भारी मांग थी। हालांकि विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव और नोडल अधिकारी के ठोस प्रयासों और मदद के पश्चात लगभग सभी हिमाचलियों को वापिस लाने में कामयाबी हासिल हो सकी। दुबई में फंसे 40 लोगों की सूची आवासीय आयुक्त कार्यालय को प्राप्त हुई थी। नोडल अधिकारी व उप-आवासीय आयुक्त दिल्ली ने दुबई के लोगों से बातचीत करते हुए व्हाट्सऐप ग्रुप बनाए गए तथा दुबई में फंसे लगभग 250 लोगों की सूची तैयार की गई। इस मामले को विदेश मंत्रालय/ दूतावास कार्यालय से लगातार उठाया गया परिणामस्वरूप संयुक्त अरब अमीरात/मध्य पूर्व में फंसे 213 लोग दिल्ली, अमृतसर, चण्डीगढ़ के हवाई अड्डे पर पहले ही पहुंच चुके थे। इसी प्रकार नेपाल में फंसे आठ लोगों को लाने के लिए उत्तराखण्ड राज्य के चम्पावत जिला के जिला मेजिस्ट्रेट से बात की गई जिन्हें नेपाल सीमा से एक बस में बैठाकर पांवटा साहिब भेजा गया, जहां पर आवासीय आयुक्त कार्यालय द्वारा उपायुक्त सिरमौर से पहले ही बातचीत करके उन सभी को क्वारंटीन किया गया। इसी प्रकार अटारी सीमा पर पाकिस्तान में फंसे हिमाचलियों को वापिस लाने का मामला पुलिस से उठाया गया। आधिकारिक पत्र के साथ अधिकारियों की एक टीम अटारी सीमा पर भेजी गई तथा सभी औपचारिकताएं पूरी करने के उपरान्त उन्हें संस्थागत क्वारंटीन के लिए हिमाचल भेजने के लिए टैक्सी सुविधा शुरू की। मालदीव में फंसे लोग केरल और तमिलनाडु पहुंचे थे। यह मामला केरल और तमिलनाडु की सरकार के समक्ष उठाया गया तथा उन्हें केरल और तमिलनाडु में संस्थागत क्वारंटीन रखा गया था। यूक्रेन और किर्गीस्तान में फंसे लोगों, चिकित्सा के विद्यार्थियों को वापिस लाने के लिए विदेश मंत्रलय और दूतावास के साथ मामला उठाया गया तथा काफी प्रयासों के बाद 54 विद्यार्थियों का पहला जत्था यूक्रेन से विद्यार्थियों को लेकर एयर इण्डिया के चार्टिड विमान से चण्डीगढ़ एयरपोर्ट पहुंचा।

नोडल अधिकारियों की एक टीम विद्यार्थियों को लेने के लिए पहले से तैनात थी तथा हिमाचल पथ परिवहन निगम के प्रबन्ध निदेशक से समन्वय स्थापित करके उन्हें क्वारंटीन के लिए सम्बन्धित अंचलों के क्वारंटीन होटलों में भेजा गया। ऐसे ही प्रयासों के बाद किर्गीस्तान से आए विद्यार्थियों को चण्डीगढ़ और नई दिल्ली के हवाई अड्डों पर पहुंचाया गया।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की प्रतिबद्धता के कारण ही इस अत्यन्त कठिन कार्य को पूरा किया जा रहा है तथा अधिकतम हिमाचलियों को लाने की प्रक्रिया अभी भी जारी है।

(गिरिराज डेस्क)

मुख्यमंत्री रोशनी योजना

गरीब परिवारों के घरों में उजाला

हिमाचल सरकार गरीब तबके के कल्याण के लिए लगातार कार्य कर रही है। इसी कड़ी में प्रदेश सरकार ने एक और पहल करते हुए मुख्यमंत्री रोशनी योजना आरम्भ की है। इस योजना के तहत राज्य के गरीब नागरिकों को अब बिजली का मुफ्त कुनेक्शन प्रदान किया जा रहा है। दरअसल राज्य के ऐसे लोग जिन्हें अब तक बिजली का कुनेक्शन प्राप्त नहीं हुआ है वे अब इस योजना के तहत बिजली का कुनेक्शन प्राप्त कर लाभ उठा सकते हैं। योजना के पात्र लाभार्थियों को इसके लिए कोई भी शुल्क देने की आवश्यकता नहीं होगी। इस योजना के तहत 17,550 अनुमानित गरीब परिवारों को मुफ्त कुनेक्शन प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। हिमाचल प्रदेश में 2019-20 की बजट घोषणा के अनुरूप इस योजना को आरम्भ किया गया है।

योजना के लिए 13 करोड़, 16 लाख रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। योजना की निगरानी विद्युत बोर्ड मुख्यालय स्तर पर की जा रही है जबकि सरकार द्वारा इसकी समीक्षा की जा रही है। योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए तय पात्रता शर्तों के अनुसार लाभार्थी परिवार की आय पात्रता प्रतिवर्ष 35000 रुपये से नीचे निर्धारित की गई। ऐसे लाभार्थी जिनके घर में बिजली का लोड 2 किलोवाट या उससे कम होगा उन्हें ही योजना का लाभ मिलेगा। योजना के लाभार्थियों का चयन गरीबी रेखा से नीचे आने वाले बीपीएल कार्डधारकों की सूची के आधार पर किया जाएगा। जो परिवार अन्त्योदय अन्न योजना की सूची में शामिल हैं उन्हें भी इस योजना के योग्य माना जाएगा। इसके अतिरिक्त पात्र परिवार राज्य सरकार द्वारा तैयार की गई प्राथमिकता सूची में भी होने चाहिए तथा लाभार्थी प्रदेश का निवासी होना चाहिए। योजना का लाभ लेने के लिए किसी एक पात्रता शर्त को पूरा करना आवश्यक होगा। लाभार्थियों के पास आवेदन के समय बीपीएल कार्ड, आय प्रमाण पत्र तथा पहचान पत्र होना अनिवार्य होगा।

इस योजना को प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना के तहत आरम्भ किया गया है। बिजली कुनेक्शन प्राप्त करने के लिए परिवार के मुखिया को नजदीकी बिजली बोर्ड के कार्यालय में आवेदन करना होगा तथा जरूरी दस्तावेज जमा करवाने होंगे। राज्य के ऐसे गरीब परिवार जिन्हें अब तक बिजली का कुनेक्शन प्राप्त नहीं हुआ है वे अब इस योजना के तहत बिजली का कुनेक्शन प्राप्त कर सकेंगे। लाभार्थियों को कोई भी शुल्क देने की आवश्यकता नहीं होगी।

(गिरिराज डेस्क)

इस योजना को प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना के तहत आरम्भ किया गया है। बिजली कुनेक्शन प्राप्त करने के लिए परिवार के मुखिया को नजदीकी बिजली बोर्ड के कार्यालय में आवेदन करना होगा तथा जरूरी दस्तावेज जमा करवाने होंगे। राज्य के ऐसे गरीब परिवार जिन्हें अब तक बिजली का कुनेक्शन प्राप्त नहीं हुआ है वे अब इस योजना के तहत बिजली का कुनेक्शन प्राप्त कर सकेंगे। लाभार्थियों को कोई भी शुल्क देने की आवश्यता नहीं होगी।

बल्क ड्रग पार्क से दवा उद्योग को मिलेगी संजीवनी

हिमाचल प्रदेश दवा निर्माण के क्षेत्र में देशभर में अग्रणी राज्य है। यहां पर बनाई जाने वाली दवाइयों से न केवल घरेलू मांग की पूर्ति होती है बल्कि विदेशों के लिए भी प्रदेश में उत्पादित विभिन्न प्रकार की दवाओं का निर्यात किया जाता है। इसका ताजा उदहारण वै वक महामारी कोविड-19 के दौरान उस समय देखने को मिला जब प्रदेश में निर्मित हाईड्रोक्सीक्लोरोक्विन व पैरासिटामोल की गोलियों को अमेरीका सहित अन्य विकसित देशों को मुहैया करवाया गया।

प्रदेश में दवा उद्योग को और मजबूती प्रदान करने के लिए प्रदेश सरकार केन्द्र के सहयोग के साथ अनेक सार्थक कदम उठा रही है। पिछले तीन वर्षों के दौरान मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने प्रधानमंत्री से प्रदेश के हितों की जोरदार तरीके से पैरवी की है। नतीजन, प्रदेश के लिए कई बड़ी परियोजनाएं स्वीकृत हुई हैं। ऊना जिला के हरोली में निर्मित होने वाला बल्क ड्रग पार्क भी इन्हीं परियोजनाओं में से एक है। दस हजार करोड़ की लागत से बनने वाले इस ड्रग पार्क से प्रदे ा में फार्मा उद्योग सुदृढ़ होने के साथ-साथ प्रदेश के युवाओं को रोजगार भी मिल सकेगा। इससे क्षेत्र के हजारों युवाओं को उद्यम स्थापित करने के अवसर भी प्राप्त होंगे।

उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार ने देशभर में तीन बल्क ड्रग पार्क स्थापित करने का निर्णय लिया है। इन्हीं में से प्रदेश का यह ड्रग पार्क भी एक है। देश में ड्रग पार्कों के निर्माण से बल्क ड्रग के उत्पादन लागत में कमी आएगी और बल्क ड्रग के लिए विदेशों पर हमारी निर्भरता भी कम हो जायेगी।

हिमाचल प्रदेश स्वच्छ आबोहवा, शांतिपूर्ण माहौल निर्बाध एवं सस्ती विद्युत आपूर्ति की बदौलत निवेशकों का पसंदीदा गंतव्य स्थल बन कर उभरा है। सोलन जिले के बद्दी बरोटीवाला व नालागढ़ में स्थापित दवा उद्योग एशिया का सबसे बड़ा फार्मास्यूटिकल हब है।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के कु ाल नेतृत्व में प्रदेश में औद्योगिक निवेश को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक निवेशक सम्मेलन भी आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में करीब 96 हजार करोड़ के निवेश प्रस्तावों के समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुए थे। इसमें से प्रदेश में लगभग 13000 करोड़ के निवेश पर मुहर लग चुकी है। (गिरिराज डेस्क)

हिमाचल प्रदेश की स्वच्छ आबोहवा, शांतिपूर्ण माहौल निर्बाध एवं सस्ती विद्युत आपूर्ति की बदौलत निवेशकों का पसंदीदा गंतव्य स्थल बन कर उभरा है। सोलन जिले के बद्दी बरोटीवाला व नालागढ़ में स्थापित दवा उद्योग एशिया का सबसे बड़ा फार्मास्यूटिकल हब है।

मरीजों के लिए सहारा बनी 'जीवन धारा'

प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रें में आम लोगों की सेहत का ख्याल रखने के लिए आरम्भ की गई 'जीवन धारा' (सचल क्लीनिक) ने लोगों के स्वास्थ्य को जांचना शुरू कर दिया है। शिमला ग्रामीण की पाहल ग्राम पंचायत के न्हेवट गांव में गत दिनों यह 'जीवन धारा' वाहन पहुंचा और मौके पर लोगों की स्वास्थ्य की जांच की। क्षेत्र की स्वयंसेवी संस्था 'साक्षी' के सहयोग से चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया जिसमें 50 लोगों की स्वास्थ्य जांच हुई। इसमें शुगर, रक्तचाप और कोविड-19 के परीक्षण किए गए। संस्था के अध्यक्ष भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि 50 लोगों में से 30 के कोविड-19 परीक्षण हुए जो सभी नेगेटिव पाए गए। प्रदेश सरकार ने लोगों और गंभीर बीमारियों से पीड़ितों को सहायता प्रदान करने के लिए कई योजनाएं चलाई हैं।

वैसे भी हिमाचल प्रदेश चिकित्सा मानकों में देश के उत्कृष्ट राज्यों में शामिल है। आज पूरी दुनिया में मानव अस्तित्व के लिए खतरा बना कोरोना संक्रमण की रफ्तार को लगाम लगाने और इस स्थिति से निपटने के लिए मुस्तैदी से कार्य कर रही है। राज्य के दूरदराज, दुर्गम और सुविधा के अभाव वाले क्षेत्रें में स्वास्थ्य सुविधाएं घर-द्वार पर उपलब्ध हो, इसके लिए जीवन धारा मोबाइल चिकित्सा और आरोग्य केन्द्र एक नया और सराहनीय कदम है। इस स्वास्थ्य एवं आरोग्य वैन में विभिन्न बीमारियों के निदान और परीक्षण की आधारभूत सुविधाएं, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में प्रदान की जानी वाली आवश्यक दवाइयां और अन्य सामग्री उपलब्ध करवाई गई है। इस वैन में एक चिकित्सा अधिकारी, एक फार्मासिस्ट, प्रयोगशाला टेक्निशियन और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत होंगे जिनमें रोगी निःशुल्क चिकित्सा परामर्श और जांच की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं।

इस प्रकार सही मायनों में यह वैन ग्रामीण क्षेत्रें के लिए स्वास्थ्य सुविधा की जीवन धारा साबित होगी। शुरुआत में दस वैन संचालित की गई हैं। इनमें कांगड़ा, मण्डी और शिमला जिलों में दो-दो और चम्बा, कुल्लू, सिरमौर और सोलन जिलों को एक-एक वैन उपलब्ध करवाई गई हैं। प्रदेश की प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लोगों के बेशकीमती जीवन को बचाने की दिशा में जीवन धारा एक महत्त्वपूर्ण कदम है। (गिरिराज डेस्क)

स्वरोजगार का जरिया बना डेयरी उद्योग

प्रदेश सरकार ने आत्मनिर्भर भारत उपायों के तहत किसानों, गरीबों और समाज के अन्य पिछड़े वर्गों के लोगों के कल्याण की दिशा में कारगर कदम उठाए हैं। किसानों की आय को दोगुना करने में कृषि क्षेत्र में व्यापक सुधार किए गए हैं। पशुपालन व्यवसाय एवं संबंध गतिविधियों को स्वरोजगार के साथ जोड़कर इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर सृजित किए जा रहे हैं। पशुपालन और डेयरी फार्म को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश सरकार ने अनेक योजनाएं कार्यान्वित की हैं जिसके परिणामस्वरूप आज मिल्क फैड का सालाना कारोबार बढ़कर 132 करोड़ तक पहुंच गया है। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए ऐसी दुग्ध उत्पादन इकाइयों को, जहां पर 500 लीटर से ज्यादा दूध एकत्र होता है, बल्क कूलर प्रदान किए जा रहे हैं। प्रदेश सरकार ने करसोग सब्जी मण्डी में अन-यूटेलाइज्ड (अप्रयुक्त) स्थान पर बल्क मिल्क कूलर तथा चीलिंग प्लांट लगाने का फैसला लिया है। अब तक प्रदेश में दुग्ध उत्पादन क्षमता 1.30 लाख लीटर तक पहुंच गई है।

पशुपालकों को उनके दुग्ध उत्पाद का सही दाम मिल सके, इसके लिए वर्तमान प्रदेश सरकार ने अपने कार्यकाल के दौरान लगभग पांच रुपये प्रति किलोग्राम दूध के दाम बढ़ाए हैं। दुग्ध उत्पादों के विपणन हेतु सरकार ने राज्य और राज्य से बाहर दूध की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए कई अहम कदम उठाए हैं। हि.प्र. दुग्ध प्रसंघ ने पूरे राज्य में वितरकों को नियुक्त कर बाजार में प्रतिस्पर्धा ब्रांडों का मुकाबला करने के लिए अपने दूध और दूध से बने उत्पादों की री-ब्रांडिंग की है। इसके अतिरिक्त दुग्ध प्रसंघ शिमला के आसपास के क्षेत्रों में दुग्ध उत्पादकों को उनके घर-द्वार पर ही दूध खरीदने और विपणन की सुविधाएं उपलब्ध करवा रहा है। इसके लिए 'हिम गौरी' नाम से होमाजनाइजड और पाश्चरीकृत गाय के दूध को बाजार में उतारा गया है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए मिल्क फैड ने पोषण युक्त 'हिम हल्दी दूध' की भी शुरुआत की है।

हिमाचल प्रदेश देश का मिल्क बाउल बने इसके लिए प्रदेश सरकार डेयरी फार्मिंग के लिए पशुपालकों को नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान कर रही है। प्रदेश में गौ सेवा आयोग का गठन किया गया है और हर जिले में गौ अभयारण्य व गौ सदन खोले जा रहे हैं

मण्डी, शिमला और कुल्लू जिले में राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम के तहत दुग्ध उत्पादकों को प्रोत्साहन राशि प्रदान की जा रही है। लाभार्थियों को देसी गाय खरीदने के लिए 20 प्रतिशत अतिरिक्त उपदान दिया जा रहा है। प्रदेश में अधिक से अधिक पशु औषधालयों को खोला जा रहा है। राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत पशुओं का बीमा करवाने के लिए 2.42 करोड़ स्वीकृत किए गए हैं।

पालमपुर में स्थापित पशुधन भ्रूण प्रत्यारोपण प्रयोगशाला में रेड सिन्धी तथा साहिवाल नस्ल में भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक पर कार्य आरम्भ करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा 1.95 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत ऊना जिला के थानाकलां में हिमाचल का प्रथम गोकुल ग्राम स्थापित किया जाएगा। इस गोकुल ग्राम में देसी नस्ल के दुग्ध उत्पादन वाले 300 पशु तथा 200 बेसहारा पशुओं को रखा जाएगा।

हिमाचल प्रदेश में दुग्ध उत्पादों के विपणन के लिए लोक मित्र केन्द्र (सीएससी) के माध्यम से ई-गवर्नेंस प्लेटफार्म के लिए सीएससी ई-गवर्नेंस सर्विसेज इण्डिया लिमिटेड के मध्य एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया है। मण्डी, शिमला और सिरमौर जिले में लोक मित्र केन्द्र के माध्यम से दुग्ध उत्पादों की बिक्री शुरू हो गई है। दुग्ध उत्पादकों को उनके घर-द्वार पर ही विपणन सुविधाएं उपलब्ध करवाने और उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए सात नए वाहन शामिल किए गए हैं।

(गिरिराज डेस्क)

प्रदेश के कारीगरों के हुनर को मिला सम्मान

भारत की स्वदेशी आंदोलन से लेकर स्वाधीन होने तक की पूरी यात्रा इस बात की गवाह है कि हथकरघा उद्योग केवल आजीविका ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत का संवाहक भी है। यह उद्योग जहां ग्रामीणों को रोजगार मुहैया करवा रहा है, वहीं यह पर्यावरण के अनुकूल भी है। प्रदेश सरकार इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही हैं। प्रदेश सरकार द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' की अवधारणा के तहत हथकरघा उद्योग के पारम्परिक उत्पादों को लोकप्रिय बनाने व इन्हें मजबूती प्रदान करने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं।

'क्रॉफ्ट हैंडलूम विलेज' में शुमार हुआ कुल्लू का शरण गांव

हिमाचल के लिए यह गौरव की बात है कि राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर प्रदेश के कुल्लू जिले के शरण गांव को केन्द्र सरकार द्वारा 'क्राफ्ट हैंडलूम विलेज' के रूप में चुने गए देश्ठा के 10 गांवों में शामिल किया है। इस चयन से प्रदेष्ठा के कारीगरों के हुनर को सम्मान मिला है। यहां के उत्पादों की समृद्धि और विविधता के बारे में दुनिया जितना जानेगी उतना ही हमारे कारीगरों और बुनकरों को लाभ होगा और साथ ही उनका मनोबल भी बढ़ेगा। हिमाचल प्रदेश की किन्नौरी, बुशहरी और कुल्लुवी टोपी देश और विदेश में काफी लोकप्रिय है। केन्द्र सरकार द्वारा किन्नौरी व कुल्लुवी शॉल को हथकरघा संरक्षण अधिनियम के तहत संरक्षित कर इन दोनों उत्पादों का पेटेंट करवाया गया है। शरण गांव को 'हैंडलूम विलेज' के रूप में विकसित करने के लिए केन्द्र सरकार ने 118.63 लाख रुपये स्वीकृत किए हैं। जबकि राज्य सरकार इसमें 13.40 लाख का योगदान देगी। प्रदेश में मुख्यमंत्री ग्राम कौशल योजना के तहत प्राचीन व पारम्परिक हिमाचली कला जैसे हस्तकला, हस्तशिल्प, स्थानीय कलाकृतियों, लकड़ी व धातु शिल्प आदि कलाओं को पुनर्जिवित किया जाएगा।

प्रदेश के युवाओं को इन कलाओं में प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाया जाएगा जिससे उन्हें स्वरोजगार के उचित अवसर प्राप्त होंगे। इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा प्रशिक्षकों व परीक्षार्थियों को प्रतिमाह 7,500 और 3,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए हथकरघा उद्योग अहम योगदान प्रदान करे इसके लिए हथकरघा उद्यमियों को1 राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम के माध्यम से धागा खरीदने के लिए 10 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जा रहा है। राज्य हथकरघा एवं हस्तशिल्प निगम के माध्यम से 9 जिलों के लगभग 450 हथकरघा बुनकरों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

राज्य में विक्रय केन्द्रों के माध्यम से हथकरघा उत्पादों की बिक्री सुनिश्चित की जा रही है। कुल्लू, मंडी और कांगड़ा जिलों में राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। वर्तमान में इस उद्योग में लगभग छह हजार उद्यमी कार्यरत होकर अपनी जीविकोपार्जन कर रहे हैं। बुनकरों के उत्पादों की बिक्री के लिए प्रदेश भर में स्थापित विक्रय केन्द्रों में हिमाचली शॉल, टोपी, मफलर जैसे उत्पादों को रखा गया है ताकि उन्हें अपने उत्पादों का उचित मूल्य मिल सके।

(गिरिराज डेस्क)

ई-परिवहन सेवा शुरू करने वाला हिमाचल पहला राज्य

हिमाचल प्रदेश ई-परिवहन व्यवस्था शुरू करने वाला देश का पहला राज्य बन चुका है। अब लोगों को अपने वाहन से संबंधित किसी भी कार्य के लिए सरकारी दफ्तरों के चक्कर नहीं काटने होंगे। राज्य में हाल ही में पायलट आधार पर ई-परिवहन व्यवस्था को शुरू किया गया है। शिमला और कांगड़ा दो जिलों को अभी ऑनलाइन सुविधा से जोड़ा गया है।

लोगों को घर-द्वार पर सेवाएं प्रदान करने के लिए विभाग सदैव ही तत्परता से कार्य कर रहा है। इसी कड़ी में ई-परिवहन सेवाएं प्रदान करना एक सराहनीय कदम है। इस व्यवस्था के तहत लोग अपने घर, कार्यालय और लोकमित्र केन्द्रों के माध्यम से परिवहन विभाग की सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं। इस व्यवस्था के अंतर्गत माल वाहक वाहन व टैक्सी परमिट, वाहन पंजीकरण सर्टीफिकेट, ड्राइविंग लाइसेंस, टोकन टैक्स अदायगी जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

ई-परिवहन व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति अपनी गाड़ी के परमिट आदि का ऑनलाइन स्टेट्स भी देख सकेंगे। प्रदेश की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण सड़कें लोगों की भाग्य रेखाएं हैं। गांव-गांव तक सड़कों का जाल बिछाकर सरकार ने प्रत्येक नागरिक को सुरक्षित, सुविधाजनक एवं आरामदायक परिवहन सेवा प्रदान करने को सुनिश्चित बनाया है। परिवहन बेड़े में नई तथा इलैक्ट्रिक बसों को जोड़ा जा रहा है। कोरोना काल में सड़क निर्माण कार्य में हिमाचल देशभर में अव्वल रहा है, जो प्रदेश के लिए गर्व की बात है। मजदूरों की कमी के बावजूद पहाड़ी प्रदेश प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना की प्रगति के मामले में दूसरे राज्यों के लिए नजीर बना है तथा योजना के सड़कों का व्यापक विस्तार किया जा रहा है। पहाड़ी राज्यों की श्रेणी में प्रदेश को श्रेष्ठ कार्य करने के लिए तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी नवाजा गया है। इस योजना में अच्छे प्रदर्शन के लिए 65.51 करोड़ रुपये की विशेष प्रोत्साहन राशि प्राप्त हुई है, जिसे सड़क सुधार कार्यों पर खर्च किया जा रहा है।

(गिरिराज डेस्क)

ई-पंचायत पुरस्कारों में हिमाचल अव्वल

सुशासन की ई-पहल पर केन्द्र सरकार की मोहर

आम लोगों को स्वच्छ एवं पारदर्शी सुशासन प्रदान करने की दिशा में हिमाचल प्रदेश लगातार अग्रसर रहा है। प्रशासनिक कार्यों में दक्षता एवं गुणवत्ता लाने के लिए राज्य में आरंभ की गई ई-गवर्नेंस मुहिम रंग लाने लगी है। ई-गवर्नेंस के माध्यम से आम नागरिकों को सुविधाएं प्रदान करने के मामले में हिमाचल प्रदेश शीर्ष राज्यों की श्रेणी में शामिल हो गया है। पंचायत स्तर से लेकर विधानसभा तक की कार्रवाई ऑन लाइन प्रणाली के माध्यम से सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। हाल ही में भी हिमाचल प्रदेश को ई-पंचायत पुरस्कारों की श्रेणी में अव्वल आंका गया है। प्रदेश को यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा विकसित ई-एप्लीकेशन तथा राज्य की अपनी सर्विस एप्लीकेशन के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए मिला है। भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा पंचायतों में पारदर्शी रूप से प्रभावी उत्तरदायित्व निभाने के लिए तीन श्रेणियों में ई-पंचायत पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। यही नहीं प्रदेष्ठा के क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटे जिला हमीरपुर ने 'दीनदयाल पंचायत सशक्तीकरण' योजना के तहत पंचायत, ब्लॉक व जिला परिषद् की देशभर में हुई स्पर्धा में प्रथम स्थान हासिल किया है। देश भर के 629 जिलों को पछाड़ कर जिले को इस योजना में पहला पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव हासिल हुआ है। यह पुरस्कार सनेटाइज, स्वच्छ भारत मिशन, जमीनी जल स्तर को बढ़ाने के प्रयास के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में स्ट्रीट लाइटें लगाने, लिंग अनुपात बढ़ाने और हर बैठक में जिला परिज़द् की शत-प्रतिशत हाजिरी सुनिश्चित करने के साथ कई स्तरों पर खरा उतरने के लिए दिया गया है। पंचायतों में सूचना प्रौद्योगिकी के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन का परिणाम है कि केन्द्र सरकार द्वारा घोषित ई-पंचायत पुरस्कारों में प्रदेश को राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह हिमाचल प्रदेश के लिए बड़े गर्व की बात है। साथ ही बड़ी उपलब्धि भी है। इस सबका श्रेय प्रदेश के दूरदर्शी मुख्यमंत्री श्री श्री जय राम ठाकुर को जाता है जिनके मार्गदर्शन में सुशासन के लिए पंचायतों में जो मॉडल अपनाया गया है देश भर में हिमाचल को उसके लिए सराहना मिली है।

हिमाचल प्रदेश में वैसे भी पंचायतों के सशक्तीकरण और उत्कृष्ट कार्यों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतर तरीके से उपयोग किया जा रहा है। सरकार सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पंचायतों के कामकाज में कुशलता, पारदर्शिता तथा दक्षता लाने के प्रयास कर रही है। प्रदेश में ई-पंचायत के माध्यम से जन्म मृत्यु पंजीकरण सहित आय व्यय का लेखा-जोखा और अन्य सुविधाओं को ऑनलाइन किया गया है। प्रदेष्ठा की सभी 3226 पंचायतों को इंटरनेट के साथ जोड़ा गया है। जन्म व मृत्यु पंजीकरण को लोक सेवा गारंटी अधिनियम के दायरे में लाया गया है। इसमें निर्धारित अवधि के भीतर सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। यही नहीं मनरेगा के तहत होने वाले कार्यों को भी ऑनलाइन की श्रेणी में शामिल किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री श्री जय राम ठाकुर ने पंचायती राज विभाग को भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय द्वारा दिए जाने वाले ई-पंचायत पुरस्कार- 2020 के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार हासिल करने पर बधाई दी है। मुख्यमंत्री का कहना है कि पंचायती राज मंत्रसलय सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पंचायतों के कामकाज में कुशलता, पारदर्शिता तथा दक्षता लाने के प्रयास सराहनीय हैं। यह पुरस्कार उन प्रदेशों को दिया जाता है, जिन्होंने पंचायतों के विभिन्न कार्य निष्पादन में सूचना प्रौद्योगिकी का अधिकतम प्रयोग सुनिश्चित किया हो।

ई-गवर्नेंस प्रणाली के प्रभावी कार्यान्वयन का ही नतीजा है कि प्रदेश सरकार को विभिन्न विकासात्मक योजनाओं और नीतियों को बनाने के लिए सारे आँकड़े आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप एक कॉमन डाटा तैयार हो जाता है जिसका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिये किया जा सकता है। इससे जनता और सरकार के बीच स्वस्थ एवं पारदर्शी संवाद को मजबूत बनाया जा सकता है बल्कि ई-गवर्नेंस का सुशासन, भ्रष्टाचार रोकने एवं लोक सेवाओं को आम नागरिकों तक आसानी से पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

(गिरिराज डेस्क)

प्री-फेब्रिकेटिड अस्पताल से कोरोना पर होगा वार

हिमाचल प्रदेश सरकार ने राज्य में कोरोना वायरस से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए प्री- फेब्रिकेटिड अस्थायी अस्पताल बनाने का निर्णय लिया है। राज्य के 5 स्थानों शिमला, टांडा, नेरचौक, नालागढ़ और ऊना में कोविड-19 के इलाज के लिए इन अस्पतालों का निर्माण किया जाएगा। इन अस्पतालों के निर्माण पर अढ़ाई से 3 करोड़ रुपये की लागत आएगी। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सी.एस. आई.आर.) के सहयोग से निर्मित होने वाले इन अस्पतालों में 50 से 75 बिस्तरों की सुविधा मुहैया करवाई जाएगी जिनमें कोरोना लक्षण वाले मरीजों को रखा जाएगा। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सी. बी. आर. आई.) रुड़की की मदद से इन अस्थायी अस्पतालों का निर्माण किया जा रहा है। संस्थान की एक टीम ने हाल ही में भूमि का चयन करने के लिए प्रदेश का दौरा किया है। अस्पताल का कार्य आरंभ होने के उपरांत मात्र 15 से 20 दिनों की अवधि के भीतर ही इन प्री- फेब्रिकेटिड अस्पतालों के निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया जाता है। ऐसे में इन पांच अस्थायी अस्पतालों का निर्माण कार्य जल्द किए जाने की उम्मीद है।

नई पहल

राज्य के जिला सोलन औद्योगिक क्षेत्र बद्दी-बरोटीवाला-नालागढ़ क्षेत्र में कोविड के सर्वाधिक मामले दर्ज किए गए हैं। इसके दृष्टिगत नालागढ़ में प्री फेब्रिकेटिड अस्थायी अस्पताल के निर्माण के लिए 5000 वर्ग फुट भूमि को चयनित किया गया है। अस्थायी अस्पताल को वर्तमान अस्पताल के साथ ही बनाया जाएगा। ऐसे अस्पतालों में अतिरिक्त विशेषज्ञों तथा पैरा-मेडिकल स्टाफ उपलब्धता भी सरकार सुनिश्चित बनाएगी। शिमला में भी जल्द ही इसी तर्ज पर प्री-फेब्रिकेटिड अस्पताल बनेगा।

इस अस्पताल का निर्माण प्रदेश के सबसे बड़े अस्पताल आई.जी.एम.सी. के नजदीक किया जाएगा। इस बाबत आई. आई.टी. रुड़की की टीम द्वारा बनाई गई ड्राईं के आधार पर तैयार किए गए एस्टीमेट को सरकार द्वारा मंजूरी प्रदान कर की गई है। प्रशासन जलद ही इस बाबत निविदा आमंत्रि करने जा रहा है।

कार्य आवंटन के उपरांत अस्पताल का निर्माण कार्य शीघ्र ही आरंभ किया जाएगा। आई.आई.टी. के केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान की ओर से अस्पताल बनाने के लिए नक्शा बनाया गया है। नवनिर्मित होने वाले अस्पताल का संचालन आई.जी.एम.सी. प्रशासन करेगा। अस्पताल के निर्माण से न केवल कोरोना संक्रमितों को राहत मिलेगी बल्कि संक्रमण के सामुदायिक प्रसार का खतरा भी कम हो सकेगा। आई.जी.एम.सी. में बनने वाला अस्पताल 57 बिस्तरों की क्षमता का होगा।

इन्हीं अस्पतालों की तर्ज पर प्रदेश सरकार द्वारा अन्य क्षेत्रों टांडा, नेरचौक तथा ऊना में प्री-फेब्रिकेटिड अस्पतालों का निर्माण किया जाएगा। इन क्षेत्रें में भी स्थान चिन्हित कर लिए गए हैं। जबकि नाहन में अस्थायी अस्पताल के निर्माण के लिए तलाश जारी है। इन अस्पतालों में खर्च होने वाली ध्नराशि का वहन संयुक्त रूप से कोविड केयर फंड और राज्य आपदा राहत कोष द्वारा किया जाएगा। ऊना में अस्थायी अस्पताल का निर्माण श्रम विभाग के भवन में किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि गत माह कैबिनेट की बैठक में प्री-फेब्रिकेटिड अस्पताल बनाने का निर्णय लिया गया ताकि कोरोना संक्रमित मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा सकें।

(गिरिराज डेस्क)

प्रदेश के युवाओं को खेलों के प्रति प्रेरित करेगी 'मुख्यमंत्री युवा निर्माण योजना'

भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है। युवाओं की ऊर्जा और प्रतिभा के सदुपयोग से ही हमारा देश पुनः विश्व गुरु बन सकता है। युवा शद्रि का उपयुद्र दोहन तभी संभव है, जब वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से पुष्ट होंगे। वर्तमान में विश्व के अनेक देश युवाओं में नशे की प्रवृत्ति से परेशान हैं। हमारा देश और प्रदेश भी इस समस्या से अछूता नहीं है।

खेल युवाओं में नशे की प्रवृति को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। खेलों के माध्यम से बच्चों में अनुशासन, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और शारीरिक-मानसिक मजबूती का संचार होता है। इसी के मद्देनजर प्रदेश सरकार द्वारा 'मुख्यमंत्री युवा निर्माण' योजना को आरंभ करने का ैसला लिया है जिसके लिए शीघ्र प्रारूप तैयार किया जायेगा। योजना के अन्तर्गत सभी विधानसभा क्षेत्रें में दो बहु-उद्देशीय स्टेडियम निर्मित किए जाएंगे, जिसमें प्रत्येक स्टेडियम के निर्माण पर 15 लाख रुपये व्यय किए जाएंगे। यह योजना इस पर्वतीय प्रदेश की खेल प्रतिभा उभारने के लिए एक दूरदर्शी निर्णय साबित होगा । इस योजना से प्रदेश के खिलाड़ियों को खेल संबंधी सुविधाएं सुलभ हो पाएंगी जिससे वे अधिक से अधिक समय अपने अभ्यास पर लगाकर प्रदेश का नाम रोशन कर पाएंगे। इस अभिनव पहल से प्रदेश के सभी विधानसभा क्षेत्रों में चरणबद्ध) तरीके से खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए दो-दो बड़े बहुउद्देशीय मैदान बनाए जाएंगे। ये फुटबाल मैदान के आकार के होंगे। युवा खिलाड़ियों की मुख्य आवश्यताओं में से एक व्यायामशाला की सुविधा भी इन मैदानों के परिसरों में ही उपलब्ध करवाई जाएगी। युवाओं में खेलों के प्रति बढ़ती रुचि का अनुमान राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिमाचली खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन से लगाया जा सकता है। विभिन्न मंचों पर प्रदेश के युवा खिलाड़ियों ने नए आयाम हासिल किए है। आंचल ठाकुर, अजय ठाकुर, शिवा केशवन, सुषमा वर्मा जैसी अनेक प्रतिभाएं हैं, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस छोटे से पहाड़ी प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। इन्होंने अपने-अपने खेलों में बेहतर प्रदर्शन कर ख्याति तो प्राप्त की ही, साथ ही न जाने कितने युवाओं को खेलों के प्रति प्रेरित किया है। देश एवं प्रदेश की सरकारें भावी पीढ़ी के लिए खेल सम्बन्धी आवश्यक अधोसंरचना का विकास करने के लिए कृतसंकल्प है। इन प्रयासों से जहां युवाओं में खेल संस्कृति का संचार होगा, वहीं युवाओं को नशे के दल-दल से बचाने में भी इस प्रकार की योजनाएं मीलपत्थर साबित होंगी ।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के सुयोग्य और प्रगतिशील नेतृत्व में प्रदेश सरकार 'मुख्यमंत्रे युवा निर्माण' जैसी योजनाओं का समावेश कर प्रदेश को सर्वांगीण विकास के पथ पर प्रशस्त कर रही है। (गिरिराज डेस्क)

'योजना के तहत सभी विधानसभा क्षेत्रों में पन्द्रह लाख रुपये की लागत से दो बहुद्देशीय स्टेडियम निर्मित किए जाएंगे।'

मंडी, सोलन व पालमपुर नगर परिषदें नगर निगमों में स्तरोन्नत

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में गत दिनों शिमला में आयोजित प्रदेश मंत्रिमण्डल की बैठक में मण्डी, सोलन और पालमपुर की नगर परिषदों को इनके आस-पास के क्षेत्रों सहित नगर निगम में स्तरोन्नत करने का निर्णय लिया गया। छह नई नगर पंचायतों के गठन का भी निर्णय लिया गया है जिनमें जिला सोलन में कंडाघाट, जिला ऊना में अम्ब, जिला कुल्लू में आनी और निरमंड, जिला शिमला में चिड़गांव और नेरवा शामिल हैं। मंत्रिमण्डल ने कुछ शहरी स्थानीय निकायों के पुनर्गठन को भी स्वीकृति दी है, जिनमें कुछ क्षेत्रों को सम्मिलित करे जबकि कुछेक को बाहर निकाल कर जिला मण्डी की करसोग और नेरचौक तथा जिला कांगड़ा में नगर पंचायत जवाली शामिल हैं।

मंत्रिमंडल ने नए शहरी स्थानीय निकायों में शामिल क्षेत्रों में भूमि और भवनों को तीन साल की अवधि के लिए सामान्य कर के भुगतान से छूट देने और वाजिब-उल- उर्ज में प्रदान किए गए प्रचलित अधिकारों को बहाल रखने का निर्णय लिया। बैठक में यह भी निर्णय लिया कि नवगठित नगर पंचायतें प्रदेश के शहरी स्थानीय निकायों तथा मंडी, सोलन और पालमपुर में नवगठित नगर निगमों में चुनाव राज्य निर्वाचन आयोग के परामर्श के बाद जनवरी, 2021 में आयोजित किए जाएंगे। चुनाव में बार-बार व्यय से बचने के लिए नगर निगम धर्मशाला के चुनाव भी शहरी स्थानीय निकायों के साथ जनवरी 2021 में आयोजित किए जाएंगे जबकि शिमला नगर निगम के चुनाव वर्ष 2022 में निर्धारित समय में आयोजित किए जाएंगे। मंत्रिमण्डल ने लोगों की समस्याओं का घर-द्वार के निकट त्वरित समाधान प्रदान करने के लिए 8 नवम्बर 2020 से जनमंच कार्यक्रम को दोबारा शुरू करने का निर्णय लिया है।

मंत्रिमंडल के निर्णय

बैठक में 2 नवम्बर, 2020 से प्रदेश के शैक्षणिक संस्थानों में 9वीं से 12वीं तक की कक्षाएं नियमित रूप से आरंभ करने तथा महाविद्यालयों में भारत सरकार के केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानक संचालन प्रक्रिया/ दिशा-निर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित होने के बाद नियमित कक्षाएं शुरू करने का निर्णय लिया गया। मंत्रिमंडल ने कांस्टेबल के 1334 रिक्त पद सीधी भर्ती के माध्यम से नियमित आधार पर भरने को स्वीकृति प्रदान की। इनमें 976 पुरुष और 267 महिला कांस्टेबलों जबकि 91 पद चालकों के पद शामिल हैं। मंत्रिमण्डल ने शिक्षा विभाग में आउटसोर्स आधार पर सेवाएं दे रहे आईटी शिक्षकों का मानदेय 1 अप्रैल, 2020 से 10 प्रतिशत बढ़ाने को मंजूरी प्रदान की। इस निर्णय से 1345 आईटी शिक्षक लाभान्वित होंगे। बैठक में शैक्षणिक सत्र 2020-21 के लिए प्रारम्भिक और उच्च शिक्षा विभागों में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे एसएमसी शिक्षकों को सेवा विस्तार दिया गया है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय में लंबित विशेष अवकाश याचिका (सिविल) का अंतिम फैसला आने तक इन शिक्षकों को अकादमिक वर्ष 2020-21 का पारिश्रमिक आवंटित किया जा सकता है। बैठक में उन परियोजनाओं की जीरो डेट को पुनर्भाषित करते हुए एकमुश्त छूट देने का फैसला लिया गया जो अभी जांच और स्वीकृति के चरण के अंतर्गत हैं और जहां कार्यान्वयन समझौतों पर पहले ही हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। इसके साथ-साथ निर्माण स्तर पर जो परियोजनाएं हैं उनके लिए निर्धारित व्यावसायिक संचालन तिथि को भी पुनर्भाषित किया जाएगा। इस निर्णय से 1060 मेगावाट क्षमता की 221 विद्युत परियोजनाएं लाभान्वित होंगी।

मंत्रिमंडल ने लीडिंग फायरमैन के 32 पद, कांगड़ा जिले के संसारपुर टेरेस, किन्नौर जिले के भावानगर और सांगला और कुल्लू जिले के पतलीकूहल में नई खुली अग्निशमन

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर शिमला में लोक निर्माण व एनएचएआई के अधिकारियों के साथ बैठक की अध्यक्षता करते हुए

चौकरी में ड्राइवर-एवं-पम्प ऑपरेटर के 11 पद भरने को सहमति प्रदान की। राज्य के 22 अधीनस्थ न्यायालयों में नियमित आधार पर प्रतिलिपक (कॉपीइस्ट) के 22 पदों को सृजित कर इन्हें भरने का निर्णय लिया गया है।

मंत्रिमंडल ने राज्य खाद्य आयोग की कार्यप्रणाली को सुचारू रूप से चलाने के लिए आयोग में विभिन्न श्रेणियों के 9 पदों को भरने के लिए अपनी स्वीकृति दी। मंत्रिमंडल ने कोविड-19 महामारी के दृष्टिगत यूजी के दिशा-निर्देशानुसार, शैक्षणिक सत्र 2019- 20 के प्रथम व द्वितीय वर्ष के पंजीकृत पूर्व स्नातक विद्यार्थियों का अगले शैक्षणिक सत्र में पंजीकरण करवाने की मंजूरी दी। जिला कांगड़ा के राजकीय कॉलेज तकीपुर का नाम बदलकर अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय कॉलेज करने को अपनी स्वीकृति प्रदान की गई है। मंत्रिमंडल ने जिला कांगड़ा के स्वास्थ्य उप-केंद्र टयोडा को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्तरोन्नत करने के साथ विभिन्न श्रेणियों के तीन पद सृजित कर उन्हें भरने की भी स्वीकृति प्रदान की। बैठक में इंदिरा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, शिमला में सुपर स्पेशिलिटी सर्जिकल ओन्कोलॉजी सैल में सहायक प्रोफेसर का एक पद सृजित कर, भरने की सहमति प्रदान की गई। मंत्रिमंडल ने जिला सिरमौर के औद्योगिक क्षेत्र काला अम्ब में सामान्य प्रवाहयुक्त उपचार संयंत्र स्थापित करने के लिए मैसर्ज काला अंब इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवल्पमेंट कंपनी को 19-13 बीघा भूमि विशेष प्रयोजन वाहन के लिए 95 वर्षों के लिए एक रुपये प्रति वर्ष प्रति वर्ग मीटर की दर से पट्टे पर प्रदान करने का निर्णय लिया। मंत्रिमंडल ने मैसर्ज काला अंब डिस्टिलरी एंड ब्रेवरी प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में जिला सोलन की तहसील नालागढ़ के गांव भंगला में डिस्टिलरी स्थापित करने के लिए लेटर ऑफ इंटेंट (एलओआई) की वैधता अवधि में विस्तार के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की। मंत्रिमंडल के समक्ष बहुद्देश्यीय परियोजनाएं एवं ऊर्जा व गैर पारंपरिक ऊर्जा एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभागों के मार्च, 2021 तक छह महीनों के लक्ष्य और अप्रैल, 2021 से मार्च, 2022 तक एक वर्ष के लक्ष्यों के बारे में प्रस्तुति दी।

मंत्रिमंडल ने निर्देश दिए कि वांछित लक्ष्य निर्धारित समय सीमा में पूरे हों। मंत्रिमंडल ने श्रीनगर में 3 अगस्त, 2017 को आतंकवादियों से लोहा लेते शहीद हुए जिला लाहौल-स्पीति के गांव व डाकघर करपाट के शहीद तेंजिन छुलटिम की बहन तेंजिन डोलकर को रोजगार प्रदान करने का निर्णय लिया। उन्हें वन मंडल अधिकारी लाहौल- स्पीति कार्यालय में अनुबन्ध आधार पर जूनियर ऑफिस असिस्टेंट (आईटी) के रूप में नियुक्त किया जाएगा।

(गिरिराज डेस्क)

सोशल मीडिया में अब अपनी बोली

यूं तो हिमाचल प्रदेश में बहुत सारी बोलियां बोली जाती हैं जिनमें कांगड़ी, मंडयाली, चंबियाली, महासुवी, बघाटी, कहलूरी, क्योंथली व हिंडूरी मुख्य तौर पर शामिल हैं। प्रदेश सरकार इन बोलियों के संरक्षण के लिए लंबे अर्से से प्रयासरत है। पहाड़ी भाषा की इन बोलियों में से तीन बोलियों को सोशल मीडिया के माध्यम से संरक्षण की कवायद शुरू हो गई हैं। सर्च इंजन गूगल इसके संरक्षण के लिए आगे आया हैं और गूगल ने अपने की-बोर्ड में हिमाचल की तीन पहाड़ी बोलियों कांगड़ी, मंडयाली व महासुवी को शामिल किया है। वैश्विक मंच गूगल की-बोर्ड में हिमाचल की तीन बोलियों के शामिल होने से प्रदेश के लोग अपने एंड्रॉयड मोबाइल पर इन तीनों बोलियों में अपने संदेश फेसबुक, व्हटसएप, मैसेंजर आदि पर लिखकर भेज सकते हैं। गूगल की-बोर्ड एवं गूगल इंडीक में इस सुविधा के मिल जाने से हिमाचल की इन बोलियों के संरक्षण में मदद मिलने की उम्मीद है। अभी तक यह सुविधा हिंदी व अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध थी। गूगल की-बोर्ड का प्रयोग करने के लिए सबसे पहले आपको गूगल की-बोर्ड ऐप की सेटिंग में जाना होगा। यहां पर आपको हिमाचल की इन तीनों बोलियों को चयन करने के विकल्प मिलेंगे और आप अपनी मनचाहे विकल्प को चुन सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि गूगल सर्च इंजन में हिमाचल के लोगों को अब तक अपनी बात लिखने के लिए अंग्रेजी या हिंदी भाषा का ही सहारा लेना पड़ता था। गूगल पर सिर्फ यही दो भाषाएं हिमाचल के लोगों के लिए उपयोग करने का विकल्प होती थीं। हालांकि गूगल सर्च इंजन में देश की अन्य क्षेत्रीय भाषा जिसमें पंजाबी, कन्नड़, तेलगू जैसी करीब 15 भाषाओं को प्रयोग करने का विकल्प था, लेकिन अधिकतर लोग हिंदी व अंग्रेजी का ही प्रयोग करते थे। अब हिमाचल के लोग कांगड़ी, मंडयाली और महासु बोलियों में भी अपनी बात लिखकर भेज सकेंगे। गूगल जैसे प्रतिष्ठित सर्च इंजन द्वारा हिमाचल की बोलियों को अपनी सूची में शामिल करना महत्वपूर्ण कदम है। इससे संवाद के स्तर पर अवश्य प्रदेश को अतिरिक्त संबल प्रदान होगा। आज नेट यूजर्स की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि की स्थिति में प्रदेशवासी इस निर्णय का सार्थक लाभ उठा पाएंगे।

प्रदेश के अधिकतम जनसंख्या वाले जिला कांगड़ा, मंडी और महासुवी की बोलियों को गूगल की-बोर्ड में शामिल करने से प्रदेश की इन बोलियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त हुई है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मातृ भाषा में शिक्षा प्रदान करने की दिशा में सार्थक प्रयास किया गया है। हिमाचल प्रदेश की आधे से अधिक की जनसंख्या मोबाइल का इस्तेमाल करती है और जिन जिलों की बोलियों को गूगल ने शामिल किया है। वे जनसंख्या के आधे से अधिक हिस्से में बोली जाती हैं। इससे हिमाचली भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करवाने के प्रयास को गूगल के इस निर्णय से लाभ पहुंचेगा। गूगल की बोर्ड और गूगल इंडीक में हिमाचल प्रदेश की तीन बोलियों के शामिल हो जाने से प्रदेश के युवा उत्साहित हैं। (गिरिराज डेस्क)

गूगल ने अपने की-बोर्ड में हिमाचल की तीन पहाड़ी बोलियों कांगड़ी, मंडयाली व महासुवी को शामिल किया है। वैश्विक मंच गूगल की-बोर्ड में हिमाचल की तीन बोलियों के शामिल होने से प्रदेश के लोग अपने एंड्रॉयड मोबाइल पर इन तीनों बोलियों में अपने संदेश फेसबुक, व्हाट्सएप, मैसेंजर आदि पर लिखकर भेज सकते हैं।

ithdj.k l[;k % 845@1957 tuojh&Qjojh] 2021 ,p-ih-@79 ,l-,e-,y- 2021&23

अटल टनल, रोहतांग के रूप में राष्ट्र को समर्पित अनूठा उपहार

अटल टनल, रोहतांग के उद्घाटन के उपरान्त सुरंग का निरीक्षण करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

gjcl flg cldku] fun'kd] lpuk ,o tu lEidZ foHkkx] fgekpy çn'k }kjk çdkf'kr rFkk jhek d';i] fu;=d] eæ.k ,o y[ku lkexh foHkkx }kjk fgekpy çn'k ljdkj d fy, jktdh; çl] f'keyk&171005 l efær djokdj f'keyk l çdkf'krA ofj"B lEiknd on çdk'kA

ISSN 2454-972X

स्वर्ण जयंती विशेषांक

हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्यत्व

स्वर्णिम

वर्ष

"हिमाचल प्रदेश इस वर्ष पूर्ण राज्यत्व की स्वर्णिम जयंती मना रहा है। प्रदेश का हर नागरिक इस ऐतिहासिक यात्रा का सहभागी रहा है। प्रदेश ने अपने इस स्वर्णिम सफर के दौरान पर्वतीय विकास का आदर्श प्रस्तुत करते हुए विश्व मानचित्र पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है।"

जय राम ठाकुर

मुख्य मंत्री
हिमाचल प्रदेश

हिमाचल तब और अब

	1948	1971	2021
क्षेत्रफल	10,451 वर्ग कि.मी.	55,673 वर्ग कि.मी.	55,673 वर्ग कि.मी.*
आबादी	11.09 लाख	34.60 लाख	68.64 लाख*
पुरुष	-	17.67 लाख	34.82 लाख*
महिला	-	16.93 लाख	33.82 लाख*
लिंग अनुपात	915 प्रति हजार	958 प्रति हजार	972 प्रति हजार*
जिले	4	10	12
नगर निगम	1	1	5
ग्राम पंचायतें		2062	3615
आबाद गांव	-	16,916	17,882*
साक्षरता दर	4.8 प्रतिशत	31.96 प्रतिशत	82.80 प्रतिशत*
प्रति व्यक्ति आय	240 रुपये	651 रुपये	1,95,255 रुपये
सकल घरेलू उत्पाद	27 करोड़	223 करोड़	1,65,472 करोड़
खाद्यान्न उत्पादन	1.99 लाख मी. टन	9.40 लाख मी. टन	16.36 लाख मी. टन
फलोत्पादन	1200 मी. टन	1.78 लाख मी. टन	8.45 लाख मी. टन
पशु औषधालय	9	275	2,293
बिजली सुविधा	6 गांव	2944 गांव	शत प्रतिशत
सड़कों की लम्बाई	288 किलोमीटर	10,617 किलोमीटर	37,808 किलोमीटर
पुल	-	231	2,192
स्वास्थ्य संस्थान	88	587	4320
शिक्षण संस्थान	331	4693	15553

* आंकड़े, जनगणना-2011

ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 65 जनवरी-फरवरी 2021 अंक : 10-11

सम्पादकीय कार्यालय : हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tell: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in/himprastha.asp

ज्ञान सागर

मनुष्य के लिए कठिनाइयों का होना बहुत जरूरी है क्योंकि कठिनाइयों के बिना सफलता का आनंद नहीं लिया जा सकता।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

इस अंक में

गौरवमय अतीत के धरातल पर वर्तमान हिमाचल की संवरती तस्वीर
मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर 07
हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्यत्व और उसके पश्चात
डॉ. यशवन्त सिंह परमार 14

हमारे मुख्यमंत्री
हिमाचल के आज तक के मुख्यमंत्री : जीवन परिचय 19-25

कुछ स्मृतियां कुछ यादें
25 जनवरी का वह ऐतिहासिक दिन
बद्री सिंह भाटिया 27
ऐतिहासिक दिवस और साइकिल यात्रा
कुल राजीव पंत 30
यायावरों व साहित्यकारों के यात्रा संस्मरण में हिमाचल
मुरारी शर्मा 32

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
हिमाचल का प्रशासनिक सफरनामा
नेम चन्द ठाकुर 36
हिमाचल प्रदेश की स्थापना और स्वर्णिम सफर
सुदर्शन वशिष्ठ 40
जन आंदोलनों की बुनियाद से सियासत के शिखर तक का सफर
एम. शर्मा 45
भारतीय गणतंत्र का 18वां सितारा
विनोद भारद्वाज 47

लोक संस्कृति एवं साहित्य
पहाड़ी-हिमाचली भाषा एवं लोक कलाएं
डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित' 51
हिमाचल की सांस्कृतिक पहचान और पूर्ण राज्यत्व
डॉ. तुलसी रमण 56
सुविधा संपन्न समय में पारंपरिकता
पवन चौहान 62
दोहों में हिमाचल
मंजु गुप्ता 65
विकास यात्रा संग संस्कृति
डॉ. योगेश चंद्र सूद 66
जागृति के पैरोकार : हिमाचल की पत्र-पत्रिकाएं
श्रीनिवास जोशी 68

विकास के नए सोपानों की तलाश

समग्र -सतत विकास के सुनहरी पथ पर स्वर्णिम हिमाचल
अजय पाराशर 74
स्वर्णिम सफर की उमंग विकास के संग
वेद प्रकाश 78
पर्यटन क्षेत्र में हिमाचल का अतुल्य सफर
नर्बदा कंवर 81
देश का ऊर्जा सरप्लस राज्य हिमाचल प्रदेश
डॉ. देव कन्या ठाकुर 84
सामाजिक सुरक्षा का सहारा
सत पाल 88
प्रगति और खुशहाली के पथ पर अग्रसर
रीना नेगी 89
स्वर्णिम सफर की वाहिकाएं हमारी सड़कें
योग राज शर्मा 91
स्वस्थ हिमाचल का साकार होता सपना
विवेक शर्मा 93
शिक्षा व साक्षरता में अव्वल
चंद्रशेखर वर्मा 96
गतिशील अर्थव्यवस्था का स्वर्णिम कृषि आधार
मोहित शर्मा 98
प्रदेश की समृद्धि में सेब का योगदान
आरती हेटा 102

विविध

सुनहरे सफर में आकाशवाणी व दूरदर्शन
भानु प्रिया वर्मा 105
हिमाचल स्वर्ण जयंती की स्वर्णिम यात्रा
डॉ. अदिति गुलेरी 108
मेरी पहचान मेरा हिमाचल
वंदना राणा 109
पांच दशकों में किन्नौर
नरेंद्र शर्मा 110
जनजातीय इलाकों में विकास की चमक
रत्न चंद निर्झर 112

विद्यार्थियों की नज़र से

मेरी नज़र में हिमाचल
प्रीति 115
खास हैं हिमाचल के पचास
अस्तित्व शर्मा 116
प्रभावित करता हिमाचल का विकास
तानिया चौधरी 116
कविता/ हिमाचल
अलौकिक शर्मा 119
शिक्षा में अव्वल
रानी देवी 120
कविता/ मेरा हिमाचल
आस्था 121
विकास की बहती अविरल धारा
तारुषी 122
इतिहास के पन्नों पर हिमाचल
ईशा 123
मेरा हिमाचल मेरी पहचान
गीतांजलि 124

आखिरी पन्ना

तब और अब से कहीं दूर तलक
एक अटल पहचान
कुमार भमौता 125

हिमाचल
की बात

प्रधान संपादक की कलम से...

नए दौर का उदय

हिमाचल प्रदेश इस साल भारतीय संघ के एक राज्य के रूप में अपने पचास साल का स्वर्णिम सफर पूरा कर रहा है। प्रदेश सरकार सुनहरे इतिहास से जुड़े इस अध्याय को अविस्मरणीय बनाने के लिए स्वर्ण जयंती वर्ष को हर्षोल्लास से मना रही है। इस सफर के इतिहास से पता चलता है कि प्रदेश की यह यात्रा बहुत ही चुनौतियों भरी रही है। यह मुकाम हासिल करने के लिए प्रदेश को कड़ा संघर्ष करना पड़ा। प्रदेशवासियों, विशेषकर इसके कुशल नेतृत्व की मेहनत और सतत प्रयासों का ही प्रतिफल है कि आज हम हिमाचल को एक सम्पन्न और आदर्श राज्य के रूप में देख रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश में पूर्ण राज्यत्व की पचास सालों की यात्रा में सामाजिक आर्थिक उत्थान के नए दौर का उदय हुआ है। जब से प्रदेश में सड़कों का जाल बिछना शुरू हुआ है, तब से यहाँ विकास ने भी अपना नया अध्याय लिखना शुरू कर दिया था। सड़क सुविधा आज गांव-गांव तक जा पहुंची है। जिससे प्रदेश के भीतरी, दूरस्थ एवं दुर्गम इलाकों से नकदी फसलों के साथ अन्य उत्पादों को शहरों और मंडियों तक ले जाना आसान हुआ है तथा बाहरी राज्यों से यहां की जरूरतों का सामान एवं दूसरी सामग्री को लाना भी बहुत आसान हुआ है। सरकार के प्रयासों से उन्हें प्रदेश के भीतर ही उच्च से उच्चतर शिक्षा की सुविधाएं मिलने लगी हैं। इससे बच्चों के सपनों को भी पंख लगे, जो उनको नए से नए रोजगार के द्वार खोलने में मददगार बनी है। इसके अलावा बड़े बुजुर्गों एवं बीमार के लिए उपचार की सुविधाएं भी आसानी से मिलने लगी है। एंबुलैंस सुविधा घर द्वार तक पहुंच गई है। आज हर घर में नल से जल मिल रहा है। गृहिणियों की रसोई धुआंमुक्त हो गई है।

प्रदेश ने बागबानी क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। सेब इस पहाड़ी प्रदेश की पहचान बन चुका है। प्रदेश की आर्थिकी में सेब उत्पादन ने क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। राज्य के शिमला, कुल्लू, चंबा, मंडी और किन्नौर जिलों में हर वर्ष करोड़ों की संख्या में सेब पेटियों का उत्पादन हो रहा है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में सेब उत्पादन सालाना लगभग 5000 करोड़ रुपये का योगदान दे रहा है। लाखों लोगों को रोजगार मिल रहा है। इसके अलावा राज्य में आम, किन्नू संतरा, नींबू प्रजाति के फलों सहित फल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए फल उत्पादकों को समर्थन मूल्य दिया जा रहा है। इससे लोगों की आर्थिकी में आशातीत परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

प्रदेश में इस अवधि के दौरान नकदी फसलों विशेषकर गैर मौसमी सब्जी उत्पादन को बड़े स्तर पर बढ़ावा मिला है। सोलन में लाल सोना यानी टमाटर, फूलों और मशरूम की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। सोलन को आज देश की मशरूम सिटी के नाम से भी जाना जाता है। सिरमौर में अदरक, लहसुन व टमाटर, लाहौल-स्पीति में आलू उत्पादन, विशेषकर उन्नत किस्म के बीज आलू व मटर तथा शिमला जिला में गोभी के रूप में गैर मौसमी सब्जी उत्पादन किया जा रहा है। कृषि बागबानी के क्षेत्र में लगभग 3000 करोड़ रुपये का सब्जी उत्पादन कारोबार हो रहा है। हिमाचल प्रदेश का प्राकृतिक सौदर्य और विविध जलवायुगत परिस्थितियां इसे पर्यटन का आदर्श गंतव्य बनाते हैं। प्रदेश में आर्थिक संसाधनों के सृजन में इस क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

स्वर्णिम विकास की इस यात्रा के दौरान प्रदेश में यातायात की सुविधाओं का विस्तार हुआ है। प्रदेश में विद्यमान तीन हवाई अड्डों से नियमित सेवाओं के संचालन से पर्यटन विकास गतिविधियों को बढ़ावा मिला है। यहां हर वर्ष करोड़ों की संख्या में पर्यटक भ्रमण पर आते हैं जिससे राज्य के पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ प्रदेश के लाखों युवाओं को रोजगार मिल रहा है। सरकार की 'होम स्टे' योजना के तहत राज्य के लोगों ने भी अपने घरों के द्वार पर्यटकों के लिए खोले हैं। इसके अलावा प्रदेश सरकार की 'नई मंजिले नई राहें' योजना के तहत अनछुए पर्यटन स्थलों को विकसित किया जा रहा है। इस क्षेत्र में पर्यटन विकास की अन्य परियोजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन से हिमाचल ने पर्यटन की ऊंची उड़ान भरी है।

प्रदेश में आर्थिक संसाधनों के सृजन में औद्योगिक विकास गतिविधियों का भी अहम योगदान है। पिछले पचास वर्षों के सफर से लेकर आज तक प्रदेश में हजारों की संख्या में औद्योगिक इकाइयां स्थापित हुई, जिनमें करोड़ों रुपये निवेश के साथ प्रदेश के लाखों बेरोजगार युवाओं को राज्य के भीतर ही रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

प्रदेश की विकास यात्रा में वर्तमान सरकार के तीन साल के कार्यकाल का विशेष योगदान रहा है, जिसके दौरान विकास को नई दिशा मिलने के साथ-साथ राज्य में सामाजिक आर्थिक उत्थान के नए दौर का उदय हुआ है। प्रदेश में हुई अभूतपूर्व विकास का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज हिमाचल की प्रति व्यक्ति आय बढ़कर 1,95,255 रुपये तक पंहुच गई है। परिणामस्वरूप प्रदेश को देश भर में एक खुशहाल राज्य के रूप में जाना जाता है, जो विकास के सभी मानकों में अन्य राज्यों से आगे है।

000

अपनी बात

पहाड़ों में जो कोई जितना ऊंचा चढ़ता है उसका मार्ग उतना ही कठिन होता जाता है। एक राज्य के रूप में हिमाचल प्रदेश इस वर्ष 25 जनवरी को 50 वर्ष का हो गया है। प्रदेश के इस स्वर्णिम सफर में पहाड़ सी ऊंची कठिनाइयों का सामना करते हुए हिमाचल ने बेमिसाल प्रगति की है। वर्ष 1948 और आज के विकास सूचकों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पता चलता है कि हिमाचल ने कठिन परिस्थितियों तथा सीमित संसाधनों के बावजूद अभूतपूर्व प्रगति की है। 25 जनवरी, 1971 को प्रदेशवासियों के लगभग 23 वर्ष के कठिन संघर्ष के फलस्वरूप हिमाचल को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा मिला और हिमाचल आजाद भारत का 18वां राज्य बना। हिमाचल प्रदेश के गौरवमयी इतिहास में जनवरी महीने का विशेष महत्त्व है। नव वर्ष के साथ-साथ इस माह पूर्ण राज्यत्व की प्राप्ति और गणतंत्र दिवस मनाने का अवसर प्रदान करता है। इस वर्ष यह महीना इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस साल हिमाचल ने अपने पूर्ण राज्यत्व का स्वर्णिम सफर पूर्ण कर लिया है। पहाड़ जैसे बुलंद इरादों के साथ हिमाचल ने विकास की नई बुलंदियों को छुआ है। प्रदेश ने अपने 50 साल के सफर में बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि व औद्योगिक विकास जैसे क्षेत्रों में विकास को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। आज प्रदेश राष्ट्रीय ही नहीं, वरन पूरी दुनिया के पटल पर अपना नाम अर्जित करने में सफल हो पाया है। यह यहां के लोगों के कठिन परिश्रम और नीति-निर्धारकों की दूरदर्शी सोच का ही परिणाम है कि आज प्रदेश की गिनती देश के अग्रणी राज्यों में होती है। इस ऐतिहासिक अवसर पर हम प्रदेश के उन तमाम नेताओं को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं, जिनके प्रयासों के बिना हिमाचल को 1966 में सही आकार और 1971 में पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त नहीं हो सकता था। पूर्ण राज्यत्व की इस स्वर्णिम बेला पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के शब्द आज भी प्रासंगिक है 'हिमाचल के वीर, साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ लोग प्रदेश को समृद्ध बनाने के लिए भरसक प्रयास करेंगे। जिस प्रकार वीर हिमाचली तूफानों का सामना करते हैं उसी तरह वे अपने प्रदेश की उन्नति के लिए ऐतिहासिक तूफानों का सामना करेंगे।' हिमाचल निर्माता डॉ. यशवन्त सिंह परमार को स्मरण किए बिना हमारा यह स्वर्णिम सफर अधूरा रहेगा, जिन्होंने राज्य को सही आकार और पूर्ण राज्यत्व का दर्जा दिलवाने के अथक प्रयास किए। इस राज्य को अपनी किशोरावस्था में दूरदर्शी नेतृत्व प्रदान कर उन्होंने पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश में शामिल करने और इसे पूर्ण राज्यत्व का दर्जा दिलाने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने हिमाचल को अलग अस्तित्व, उचित दर्जा और आकार दिलवाकर विकास की मजबूत नींव रखी थी। इसके उपरांत राज्य के नेताओं के समक्ष राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ प्रदेश को अपना वजूद बनाए रखने के लिए पिछड़े एवं अविकसित क्षेत्रों के विकास को सुनिश्चित बनाना भी किसी बड़ी चुनौती से कम न था। पूर्ण राज्य बन जाने के साथ ही हिमाचल के लोगों को अपना भाग्य स्वयं निर्धारित करने के अपार अवसर प्राप्त हुए। हिमाचल प्रदेश के मेहनती व शान्तिप्रिय लोगों

ने समृद्धि के पथ पर तेजी से कदम बढ़ाए और फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। हिमाचल प्रदेश का यह स्वर्णिम सफर प्रदेश के अभूतपूर्व सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन और चंहुमुखी विकास का साक्षी बना है। इस अवधि के दौरान हिमाचल देश भर में ही नहीं अपितु विदेशों में भी पर्वतीय विकास का आदर्श बनकर उभरा है। किसी समय पिछड़े कहे जाने वाले इस राज्य के दूर-दराज क्षेत्रों के जनजीवन में आशातीत परिवर्तन आया है। प्रदेश ने साक्षरता एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व प्रगति की है। सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क का विस्तार हुआ है, स्वास्थ्य सेवाओं का सुदृढ़ीकरण और सबसे बढ़कर प्रदेश में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में विकासात्मक अधोसंरचना का बड़े पैमाने पर सृजन हुआ है। भौगोलिक कठिनाइयों के बावजूद आज हमारे इस सुंदर प्रदेश ने यह उपलब्धियां प्राप्त करने में सफलता हासिल की है। आज हिमाचल की तस्वीर में मटियाले की जगह खुशहाली के सुनहरे रंग भर चुके हैं। वर्तमान प्रदेश सरकार ने हाल ही में अपने सफल एवं उपलब्धियों भरे तीन वर्ष का कार्यकाल पूर्ण किया है। प्रदेश सरकार ने इस अवधि के दौरान नई एवं दूरदर्शी सोच के साथ कार्य करते हुए प्रदेश में संतुलित व समान विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है जिससे समाज के हर वर्ग का तीव्र सामाजिक-आर्थिक उत्थान सुनिश्चित हुआ है। प्रदेश सरकार ने सत्ता संभालने के तुरंत बाद प्रदेश में बिना किसी आय सीमा के प्रदान की जाने वाली वृद्धावस्था पेंशन की पात्रता आयु को 80 से घटाकर 70 वर्ष करने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया जिससे प्रदेश में 1.30 लाख वृद्धजन लाभान्वित हुए हैं। महिलाओं के प्रति बढ़ती आपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए सरकार ने गुड़िया हैल्पलाइन '1515' शुरू की। प्रदेश सरकार के प्रयासों से आज हिमाचल देश का पहला धुआंरहित राज्य बना है। प्रदेश के शत-प्रतिशत गांवों का विद्युतीकरण हो चुका है। 90 प्रतिशत से अधिक गांवों में नल से स्वच्छ जल मुहैया करवाया जा रहा है। प्रदेश सरकार द्वारा बनाई गई नीतियां एवं कार्यक्रमों में आमजन को केंद्र में रखा गया है। प्रदेश के दूर दराज के क्षेत्रों में रह रहे लोगों की शिकायतों का निवारण उनके घरद्वार पर करने के उद्देश्य से आरंभ किया गया 'जनमंच' सरकार का सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम बना। प्रदेश में औद्योगिक निवेश को बढ़ावा देने और हिमाचली युवाओं को रोजगार प्रदान करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना शुरू की है। ग्रामीणों के उत्थान के लिए व घरद्वार के समीप रोजगार उपलब्ध करवाने में मनरेगा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। प्रदेश में किसानों-बागबानों की समृद्धि के लिए सिंचाई सुविधाओं का विस्तारीकरण किया गया है। निवेशकों को आकर्षित करने के लिए औद्योगिक नीति का सरलीकरण किया गया है। सरकार के इन्हीं प्रयासों से आज प्रदेश स्वावलंबन, समृद्धि, संपन्नता की ऊंचाइयों को लांघ चुका है। हिमाचल प्रदेश के पूर्ण राज्यत्व की पांच दशकों की यात्रा में आप सभी पाठक भागीदार बनें, इसके लिए हिमप्रस्थ पत्रिका का यह विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत है जिसमें हमने प्रदेश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ लोक संस्कृति एवं साहित्य व पचास वर्ष के स्वर्णिम सफर के हर पहलू को समाहित करने का प्रयास किया है।

संपादक

गौरवमय अतीत के धरातल पर वर्तमान हिमाचल की संवरती तस्वीर

हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्यत्व स्वर्ण जयंती पर मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर का आलेख

प्रिय प्रदेशवासियो

नव वर्ष का पहला महीना, हिमाचल के लिए हर साल ढेर सारी खुशियां लेकर आता है। नए साल की नई उमंग के साथ पहले पूर्ण राज्यत्व दिवस और उसके अगले ही दिन गणतंत्र दिवस के पावन अवसरों को हम, एक पर्व के रूप में मनाते हैं। पिछले एक साल से पूरा विश्व कोरोना महामारी के कठिन दौर से गुजर रहा है और हिमाचल भी इससे अछूता नहीं है। ऐसी विकट परिस्थितियों से उभरने के लिए हर कोई खुशियों के पलों की तलाश में रहता है। हमारे लिए यह बड़े संतोष की बात है कि ऐसे कठिन दौर से गुजरने के बाद अब हमें अपने अतीत से जुड़ी गौरवमय एवं अविस्मरणीय स्मृतियों को याद कर उन्हें मनाने का मौका मिला है।

प्रदेशवासियो! इस साल पूर्ण राज्यत्व दिवस हम ऐसे समय में मना रहे हैं जब यह प्रदेश, देश के 18वें राज्य के रूप में 50 साल की अपनी स्वर्णिम यात्रा पूरी कर रहा है। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली समझता हूं कि इस ऐतिहासिक उपलब्धि के इन क्षणों का मैं, न केवल साक्षी बन रहा हूं, बल्कि प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में इसका प्रतिनिधित्व करने का भी मुझे सुअवसर मिला है। प्रदेश के लिए यह गौरव

का बहुत बड़ा अवसर है। इसे आप सभी प्रदेशवासियों के साथ मिलकर मनाना अपने आप में सम्मान की बात है। हिमाचल निर्माता एवं प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार और स्वर्णिम यात्रा से जुड़े अन्य नेताओं के हम कृतज्ञ हैं, ऋणी हैं, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से इस पहाड़ी राज्य को साकार रूप देकर यहां विकास की ठोस बुनियाद रखी।

हिमाचल की इस यात्रा के सहभागी यहां के भोले भाले मेहनतकश एंव ईमानदार लोग और प्रदेश को समय-समय पर मिले कुशल नेतृत्व के सतत प्रयासों का ही प्रतिफल है कि आज यह पहाड़ी प्रदेश विकास का आदर्श बन कर उभरा है। प्रदेश में विकास की इस अविरल धारा में प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. वाई. एस. परमार ने वर्ष 1952 में प्रदेश की बागडोर संभाली। इसके बाद श्री राम लाल ठाकुर, श्री शांता कुमार, श्री वीरभद्र सिंह और प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने राज्य का कुशल नेतृत्व कर विकास की ठोस बुनियाद पर खुशहाल एवं प्रगतिशील हिमाचल की इमारत खड़ी की है। हिमाचल के इस स्वर्णिम सफर के दौरान मैं भले ही अभी केवल तीन साल से ही प्रदेश की सेवा में बतौर मुख्यमंत्री कार्यरत हूं, लेकिन दुनिया की इस सदी की सबसे बड़ी कोरोना महामारी की लड़ाई में मेरी सरकार ने हिमाचल को इस नाजुक दौर से बाहर निकालने में सफलता पाई है। इससे भी अधिक संतोष मुझे इस बात पर है कि तमाम कठिनाइयों और चुनौतियों के बावजूद सरकार प्रदेशवासियों को कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से महफूज रखने में सफल हो पायी है। इस महामारी से निपटने में हमारे प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है।

प्रदेश सरकार द्वारा महामारी के आरंभ में चलाए गए 'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' में रिकार्ड समय में लगभग 70 लाख लोगों की स्वास्थ्य संबंधी जानकारी जुटाई गई, जिसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं हमारे कारगर प्रयासों की सराहना की। हिमाचल जैसे छोटे राज्य के लिए यह निःसंदेह सम्मान की बात है। लेकिन यह भी सच्चाई है कि महामारी का खतरा अभी टला नहीं है, इसके बचाव के लिए अभी एहतियाती उपाय जारी रखने होंगे। इसके बचाव के लिए प्रधानमंत्री द्वारा 16 जनवरी से देश भर में टीकाकरण अभियान का शुभारंभ किया गया है, जिसके तहत सबसे पहले कोरोना वॉरियर को टीका लगाया जा रहा है और इसमें हमारा प्रदेश भी शामिल है।

इतनी बड़ी वैश्विक महामारी से साल भर लगातार जूझने के साथ-साथ हिमाचल को प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर रखना, निःसंदेह बहुत बड़ी चुनौती थी, लेकिन मेरी सरकार ने इसका पूरी ताकत के साथ सामना किया। इसके लिए मैं प्रदेश के शांतिप्रिय एवं कर्मठ लोगों का आभारी हूं, जिन्होंने इस दौरान सरकार को लगातार अपना बहुमूल्य सहयोग देकर, इससे निपटने में हमारा भरपूर साथ दिया।

प्रदेश ने अपनी इस स्वर्णिम यात्रा के दौरान हर क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल की हैं। हमारी सरकार के लिए यह सम्मान की बात है कि हमें इन्हें प्रदेशवासियों तक पहुंचाने का अवसर मिला है। हिमाचल जैसे पहाड़ी प्रदेश के लिए पूर्ण राज्यत्व का सफर इतना आसान न था। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और सीमित आर्थिक संसाधनों के बावजूद इसे विकास के वर्तमान स्वरूप तक पहुंचाना अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती थी। इस दौरान सत्तासीन रही सरकारों को आर्थिक संसाधन जुटाने के साथ-साथ सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए दिन रात एक करना पड़ा। वर्ष 1971 में 7370 किलोमीटर सड़कें थीं। उस समय सड़क निर्माण में बहुत कुछ किया जाना बाकी था। राज्य में सत्तासीन सरकारों ने सड़क निर्माण को उत्तरोत्तर अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया। परिणाम यह हुआ किया कि आज प्रदेश में 37,808 किलोमीटर लंबी सड़कों का सुदृढ़ नेटवर्क उपलब्ध है। 97 प्रतिशत से अधिक पंचायतों को सड़कों से जोड़ा जा चुका है।

देश के लिए सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण 'अटल टनल रोहतांग' के बन जाने से साल में छः महीने बाहरी दुनिया से कटे रहने वाली लाहौल स्पीति घाटी अब बारहमासी सड़क सुविधा से जुड़ गई है। प्रधानमंत्री ने कोरोना संकट के बावजूद इस टनल का 3 अक्तूबर, 2020 को शुभारंभ कर प्रदेशवासियों को बड़ा उपहार दिया है। इससे लाहौल घाटी और मनाली के बीच की दूरी कम होने के साथ-साथ सदियों से अलग-थलग रहे इस क्षेत्र को विकास की मुख्य धारा के साथ जोड़ने में सहायता मिली है। इस क्षेत्र की नकदी फसलों को मंडियों तक पहुंचाने में आसानी होगी और पर्यटन गतिविधियों का भी विस्तार

होगा। अब घाटी के लोग किसी भी मौसम में सुबह घर से चलकर कुल्लू मनाली में खरीददारी के बाद सांय वापिस अपने घर लौट सकते हैं।

विकास की आधारभूत आवश्यकताओं से जुड़े शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश ने इन 50 वर्षों में अभूतपूर्व तरक्की की है। साक्षरता दर जो वर्ष 1948 में महज 4.8 प्रतिशत थी, वह आज बढ़कर 82.80 प्रतिशत तक पहुंच गई है। वर्ष 1971 में प्रदेश में 4945 शिक्षण संस्थान केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित थे, लेकिन आज गांव-गांव में भी बड़ी संख्या में शिक्षा संस्थान खोले गए हैं। जिससे प्रदेश भर में इनकी संख्या बढ़कर 15,553 हो गई है। विगत पांच दशकों के दौरान हमने बालिका शिक्षा, शिक्षा के सार्वभौमीकरण, स्कूलों के ड्रॉप आउट दर में सुधार, विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और अब स्मार्ट क्लास रूम के बाद हम संकट की किसी भी स्थिति में ऑनलाइन माध्यम से हर घर को पाठशाला बनाने जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो गए हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आज हमारे पास विश्व स्तरीय संस्थानों का सुदृढ़ नेटवर्क मौजूद है। आई. आई.टी. मण्डी, आई.आई.एम. सिरमौर, आई.आई.आई.टी. ऊना, तकनीकी विश्वविद्यालय हमीरपुर तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला जैसे स्तरीय शिक्षण संस्थान आज विद्यार्थियों को राज्य के भीतर ही अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उच्च शिक्षण सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। देश की पुरानी शिक्षा पद्धति में सुधार लाने के लिए केन्द्र सरकार की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रदेश में लागू करने को हमारी सरकार ने सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान कर दी है।

लोगों की आधारभूत सुविधाओं से जुड़ा स्वास्थ्य दूसरा ऐसा क्षेत्र है, जिसमें हमने इन 50 वर्षों में लंबी छलांग लगाई है। इस क्षेत्र में भी लगभग शून्य से अपनी यात्रा शुरू करते हुए वर्ष 1971 में 482 स्वास्थ्य संस्थानों के मुकाबले आज 4,320 स्वास्थ्य संस्थानों के सुदृढ़ नेटवर्क के माध्यम से लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जा रही है। आज प्रदेश में छः मेडिकल कॉलेज, अखिल भारतीय

आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स) कोठीपुरा, बिलासपुर, पीजीआई सेटेलाइट सैंटर ऊना तथा मेडिकल युनिवर्सिटी सहित चिकित्सा क्षेत्र के विश्व स्तरीय संस्थान लोगों को घरद्वार के नजदीक स्वास्थ्य की विशेषज्ञ एवं सुपर स्पेशियलिटी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। प्रदेश सरकार की 108 एंबुलेंस सुविधा लोगों के लिए वरदान साबित हो रही है। इसी प्रकार 102 एंबुलेंस सेवा ने जच्चा-बच्चा को राहत दी है। ये दोनों ही सेवाएं सरकार द्वारा निःशुल्क उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

हमारी सरकार ने तीन साल की छोटी- सी अवधि में ही स्वास्थ्य क्षेत्र में 'हिमकेयर', 'सहारा', 'अटल आशीर्वाद', 'मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोष', 'मुख्यमंत्री निरोग योजना', 'मुख्यमंत्री निःशुल्क दवाई योजना' तथा 'टेलिमेडिसन सुविधा' जैसी अभिनव योजनाएं आरंभ कर लोगों को चिकित्सा की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं। प्रदेश में मौजूद स्वास्थ्य के सुदृढ़ नेटवर्क के बलबूते आज हम कोरोनाकाल जैसे मुश्किल समय में भी घर-घर जाकर कोरोना मामलों का पता लगाने के साथ-साथ लोगों की स्वास्थ्य जानकारी जुटाने में सक्षम है। पहले 'ऐक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' और अब 'मुख्यमंत्री हिम सुरक्षा' अभियान के दौरान हमने यह कर दिखाया है।

स्वर्णिम विकास की इस यात्रा के दौरान प्रदेश में विकास के आधारभूत ढांचे विशेषकर यातायात नेटवर्क का सुदृढ़ीकरण हुआ है। हवाई सेवाओं का भी विस्तार हुआ है। हमारी सरकार ने राज्य में हेलिटेक्सी सेवा आरंभ की है। हवाई सेवाओं के और विस्तार के लिए मंडी में हवाई अड्डा बनाने की प्रक्रिया प्रगति पर है। हमारे इन प्रयासों और आधारभूत सुविधाओं के सुदृढ़ होने से प्रदेश में पर्यटन क्षेत्र को फलने-फूलने में भरपूर मदद मिली है। आज प्रदेश सरकार की 'होम-स्टे योजना' के तहत लोगों में खूब लोकप्रिय हुई है। इसके अलावा प्रदेश के अनछुए स्थलों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए कार्यान्वित की जा रही है 'नई मंजिलें नई राहें' योजना मील का पत्थर साबित हो रही है। प्रदेश के लिए एशियाई विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित 1892 करोड़ रुपये की पर्यटन विकास परियोजना को स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इससे राज्य

में पर्यटन विकास गतिविधियों को बड़े पैमाने पर बढ़ावा मिलेगा। सरकार के इन प्रयासों से हिमाचल को पर्यटन मानचित्र पर उभारने में मदद मिली है और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण यह राज्य देश-विदेश के पर्यटकों के लिए सैरगाह की पहली पंसद बनकर उभरा है। आज प्रदेश में हर साल इसकी आबादी से तीन गुणा ज्यादा पर्यटक आ रहे हैं, जो कि हमारे पर्यटन उद्योग के लिए अच्छे संकेत है।

किसी भी राज्य के समग्र आर्थिक विकास में औद्योगिकीकरण का अहम योगदान होता है। वर्ष 1971 में यहां औद्योगिकीकरण के नाम नाहन फाउंड्री, मोहन मेकिन सोलन, दो बरोजा फैक्टरियां तथा मण्डी में छोटी गन फैक्टरी जैसे गिने चुने उद्योग ही थे। प्रदेश में वर्ष 1971 के उपरांत औद्योगिकीकरण की शुरुआत सही मायनों में केन्द्र में भाजपा की वाजपेयी सरकार के शासनकाल में हुई जब हिमाचल को औद्योगिक पैकेज मिला। इस पैकेज के बाद प्रदेश में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए आकर्षक निवेश प्रोत्साहन प्रदान किए गए, जिनके परिणामस्वरूप यह प्रदेश उद्यमियों के लिए निवेश का आदर्श गंतव्य बन बन कर उभरा है। इस दिशा में हमारी सरकार के सार्थक प्रयासों के चलते आज यह प्रदेश औषधि निर्माण के क्षेत्र में एशिया का फार्मा उद्योग हब बन कर उभरा है और कोरोनाकाल के दौरान हिमाचल से दुनिया भर में दवाइयों की आपूर्ति की गई। आज प्रदेश में हजारों औद्योगिक इकाइयां स्थापित हैं जिनमें लाखों करोड़ रुपये निवेश के साथ लाखों बेरोजगार युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। प्रदेश में औद्योगिक विकास के क्षेत्र में वर्तमान प्रदेश सरकार का अहम योगदान रहा है। इस दिशा में प्रदेश सरकार के सार्थक प्रयासों का ही परिणाम है कि धर्मशाला में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर मीट में 96,720 करोड़ रुपये निवेश के 703 एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किए गए। इस आयोजन के उपरांत ही 13,656 करोड़ रुपये के 204 समझौता ज्ञापनों के ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह का सफल आयोजन कर हिमाचल में ग्लोबल निवेश के नए द्वार खुले हैं। इस कड़ी में दूसरा ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह भी शीघ्र आयोजित किया जा रहा है। प्रदेश में औद्योगिक निवेश के साथ हिमाचली युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार प्रदान करने के लिए कार्यान्वित की जा रही

'मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना' मददगार साबित हो रही है जिसके तहत युवाओं को पूंजी निवेश में 25 प्रतिशत उपदान के साथ अन्य रियायतें भी दी जा रही हैं।

प्रदेश में इस अवधि के दौरान जलविद्युत, ऊर्जा दोहन के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ है। वर्ष 1971 में प्रदेश के 2944 गांवों में ही बिजली उपलब्ध थी जबकि आज प्रदेश के सभी गांवों में बिजली उपलब्ध है। प्रदेश में उपलब्ध लगभग 27 हजार मेगावाट जलविद्युत क्षमता में से अब तक 10,645 मेगावाट जलविद्युत क्षमता का दोहन किया जा चुका है। हिमाचल प्रदेश आज 'सरप्लस बिजली राज्य' बन कर उभरा है। जलविद्युत के बाद अब सौर ऊर्जा के दोहन पर भी ध्यान दिया जा रहा है। प्रदेश में महिला सशक्तीकरण को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ कर 'हिमाचल गृहिणी सुविधा' योजना आरंभ की गई है जिसके तहत अब तक 2.91 लाख पात्र लाभार्थियों को निःशुल्क गैस कुनेक्शन उपलब्ध करवाए गए हैं। इससे हिमाचल देश का पहला धुआंमुक्त राज्य बन गया है।

पूर्ण राज्यत्व के इस सफर में प्रदेश ने कृषि क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है। अस्तित्व में आने के समय यहां 3.92 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कृषि की जाती थी और उस समय खाद्यान्न मात्र 1.99 लाख मीट्रिक टन था। आज प्रदेश में 9.55 लाख हेक्टेयर में कृषि की जा रही है और खाद्यान्न उत्पादन भी 16.36 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच गया है।

प्रदेशवासियो! प्रदेश के गौरवमय इतिहास से जुड़ी 50 साल की स्वर्णिम यात्रा में वर्तमान प्रदेश सरकार की अवधि भले ही थोड़ी हो, लेकिन इस अल्प अवधि में भी हमने विकास प्रक्रिया के लाभ आमजन तक पहुंचाने का भरसक प्रयास किया है। हमारी सरकार ने जनमंच और जनसंवाद जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों के दुःख-दर्द को दूर करने का भरसक प्रयास किया है। इस दौरान लोगों से जो हमें समर्थन और सहयोग मिला, वह दर्शाता है, कि हम अपने इन प्रयासों में सफल हुए हैं।

आओ! आज पूर्ण राज्यत्व के इस ऐतिहासिक अवसर पर प्रण लें कि हिमाचल के सुनहरे भविष्य के निर्माण के लिए हम कंधे-से-कंधा मिला कर काम करेंगे और प्रदेश को विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में भागीदार बनेंगे।

जय हिंद जय हिमाचल।

0 0 0
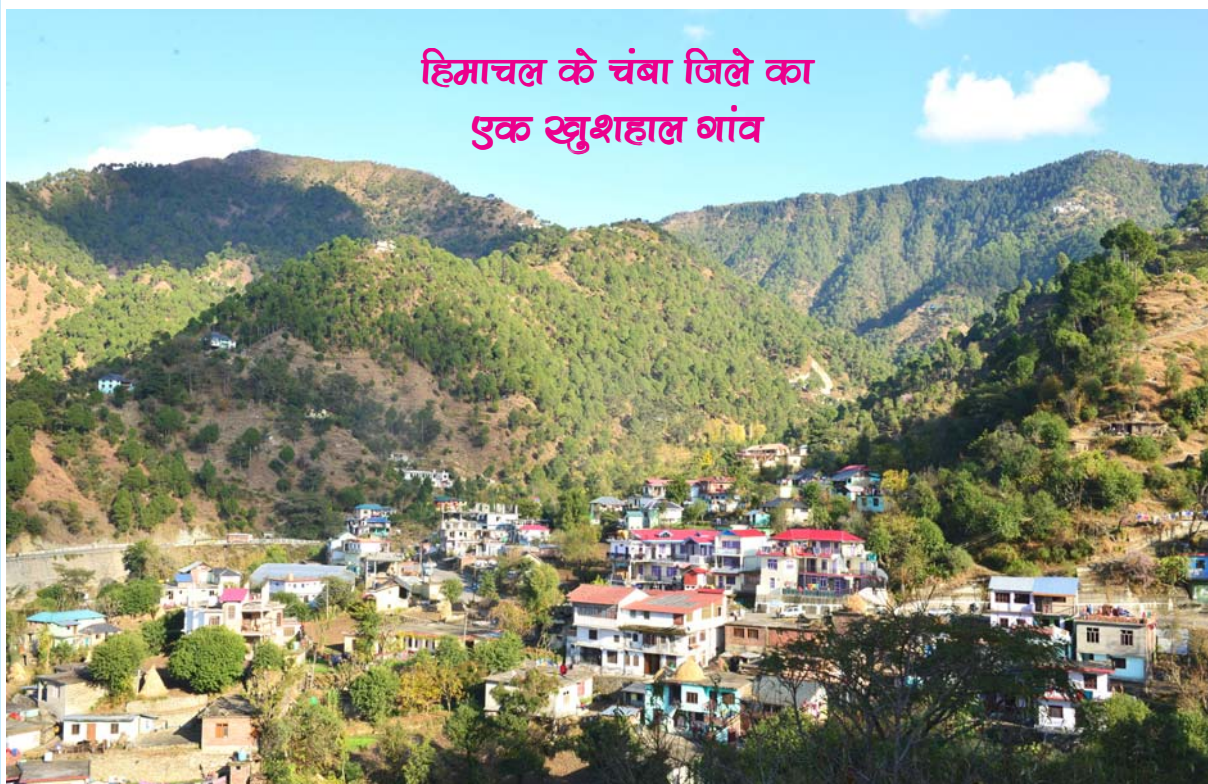
25 जनवरी, 1971
प्रथम पूर्ण राज्यत्व दिवस

ऐतिहासिक पलों का साक्षी शिमला

हजारों हिमाचलवासियों ने भारी हिमपात की परवाह न करते हुए 25 जनवरी, 1971 को बड़ी संख्या में रिज मैदान पर एकत्रित होकर पूर्ण राज्यत्व दिवस समारोह में भाग लिया।

25 जनवरी, 1971 को शिमला में पूर्ण राज्यत्व दिवस के अवसर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी लोगों का अभिवादन स्वीकार करते हुए।

जब तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी अनाडेल से 7 किलोमीटर रास्ता तय कर रिज मैदान पर पहुंचीं तो पहाड़ों की रानी शिमला नगरी -इंदिरा गांधी जिंदाबाद' और हिमाचल निर्माता 'डॉ. परमार' के नारों से गूंज उठी। पंद्रह स्वागत द्वार जिन पर 1948 से हिमाचल का संवैधानिक इतिहास अंकित था, रंग बिरंगी झण्डियों और पारम्परिक वेशभूषा से सुसज्जित नाचते गाते लोक नर्तक ठिठुरती सर्दी में श्रीमती इंदिरा गांधी के स्वागत के लिए तत्पर थे।

लोगों की भीड़ ने रास्ते के दोनों ओर से खुली गाड़ी में आते हुए प्रधानमंत्री का भव्य स्वागत किया। श्रीमती इंदिरा गांधी ने हाथ जोड़कर और बच्चों पर फूल बरसाकर जनता का अभिवादन स्वीकार किया। उस समय प्रदेश के राज्यपाल श्री एस. चक्रवर्ती और मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार, श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ ही खड़े थे।

जब गाड़ी लाजपतराय चौक (सकैण्डल प्वाइंट) में से गुजरी तो प्रतीक्षा में खड़ी स्त्रियों और बच्चों ने प्रधानमंत्री पर गुलाब की पंखुड़ियों की वर्षा की। पटाखे छोड़कर पहाड़ी परम्परा के अनुसार प्रधानमंत्री का स्वागत किया गया। भारतीय संघ के अठारहवें राज्य का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि हिमाचल के वीर, साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ लोग प्रदेश को समृद्ध बनाने के लिए भरसक प्रयत्न करेंगे। उन्होंने कहा जिस प्रकार वीर हिमाचली बर्फीले तूफानों का सामना करते हैं, उसी तरह वे अपने प्रदेश और प्रदेश की उन्नति के लिए ऐतिहासिक तूफानों का भी सामना कर सकेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि पहाड़ों में कोई जितना ऊंचा चढ़ता है मार्ग उतना ही कठिन हो जाता है और चढ़ने वालों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परन्तु उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रदेश के लोग नए राज्य में प्राप्त अवसर का लाभ उठाएंगे।

26 जनवरी के सम्बन्ध में श्रीमती इंदिरा गांधी ने लोगों को रावी नदी के किनारे ली गई शपथ याद दिलाई। उन्होंने कहा कि देश को राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो चुकी है और अब वह आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्ति के रास्ते पर है। हमारा उद्देश्य अपने प्राचीन देश को आधुनिकतम बनाना है ताकि भारत आधुनिक संसार में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सके। श्रीमती गांधी ने कहा कि सभी लोगों को संगठित रहना चाहिए ताकि देश समाजवाद के रास्ते से समृद्धि प्राप्त कर सके।

तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार ने कहा कि हिमाचल को सदा से नेहरू परिवार का आशीर्वाद प्राप्त रहा है, विशेष रूप से स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू का, जिन्होंने इस प्रदेश की कुशलता में सदा रुचि ली थी। शिमला का ऐतिहासिक रिज मैदान अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी रहा है। आजादी से पूर्व व आजादी के उपरान्त यहां अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने लोगों को सम्बोधित किया है।

साभार : हिमप्रस्थ, फरवरी 1971

हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्यत्व और उसके पश्चात्

डॉ. यशवन्त सिंह परमार

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पूर्ण राज्यत्व की प्राप्ति से हिमाचल ने 35 लाख हिमाचलियों की राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा किया है, लेकिन इससे उन्हें सभी क्षेत्रों में बेहतर काम करने की चुनौती का भी सामना करना पड़ा है।

पूर्ण राज्यत्व की प्राप्ति के मार्ग पर चुनौती और अवसर को हमने इसी दृष्टि से देखा था और उस समय वास्तव में मैंने कहा भी था, 'पूर्ण राज्यत्व प्रदेश की उपलब्धियों की अन्तिम परिणति नहीं है बल्कि यह तो कठिन परिश्रम के उस नये युग का प्रारम्भ है जो सभी पर्वतीय लोगों को उसकी समृद्धि का आश्वासन दिलाता है।' इसके पीछे प्रदेश में सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण के महान कार्य को फलीभूत करने के लिए किए गए संकल्प के प्रति हमारी समर्पण की भावना है क्योंकि आज वे बहुत सी बाधाएं इसके मार्ग से हट गई हैं।

किसी भी नये राज्य की तरह हमारी भी समस्याएं हैं लेकिन ये समस्याएं, हमारी विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों तथा इसके साथ ही निर्धनता के बोझ और सदियों की अवहेलना के परिणामस्वरूप पिछड़ेपन के कारण कई गुना बढ़ जाती है। दूसरी ओर, कई कमियों के बावजूद हमारे समाने विभिन्न क्षेत्रों में पिछले 23 वर्षों की प्रभावकारी उपलब्धियों का लेखा है। हमारे लोगों ने हिमाचल प्रदेश को देश के अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में एक आदर्श मानक के रूप में स्थापित करने के लिए भरसक प्रयत्न किए हैं और क्योंकि उन्हें अब और भी अधिक अवसर प्राप्त हैं, उन्हें विश्वास है कि वे अब नई ऊंचाइयों तक पहुंचने में समर्थ रहेंगे।

नितान्त शान्तिपूर्ण तरीकों और गत उपलब्धियों के प्रकाश में हिमाचल को पूर्ण राज्यत्व मिलने पर सभी क्षेत्रों में इसकी काफी सराहना की गई है लेकिन कुछ ऐसे सन्देहवादी तत्त्व भी थे जिन्हें हमारी सोचनीय वित्तीय स्थिति की आड़ में, अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए हमारी सामर्थ्य में सन्देह था। अपनी मन:स्थिति के प्रभाव में उन्होंने हिमाचल का कुछ ऐसा चित्र खींचा जिससे यह स्पष्ट होता था कि हिमाचल की आर्थिक स्थिति भारी केन्द्रीय सहायता या अतिरिक्त कराधान के बिना आत्मक्षम नहीं बनी रह सकती। अपने प्रादुर्भाव काल से आज तक हिमाचल ने राजस्व आय की दिशा में जो उल्लेखनीय प्रगति की उसे उन्होंने सहज ही भुला दिया। वास्तव में किसी भी अन्य राज्य का घरेलू राजस्व 35 गुना नहीं बढ़ा है, जबकि हिमाचल में 1948 में यह आय 35 लाख रुपये से बढ़कर 1971 में 30 करोड़ रुपये हो गई।

बढ़ती हुई आमदनी

फिर भी हम अपनी राजस्व आय को और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता की अपेक्षा नहीं कर सकते। लेकिन यह सरकार अपनी नीति के अनुसार, प्रदेश के गरीब लोगों पर, जो कर अदा करने की बहुत कम क्षमता रखते हैं, अनुचित कराधान के जरिये नहीं किया जा सकता था। इसलिए इस दिशा में नये सिरे से विचार करना आवश्यक हो गया जो एक ओर हमारी विकास योजनाओं के कुशल कार्यान्वयन के लिए सहायक सिद्ध हो और दूसरी ओर जनता में आर्थिक उपायों की हमारी समर्थता के प्रति विश्वास पैदा हो। प्रदेश को पूरा राज्य बने अभी 7 महीने ही हुए हैं और हमारी नयी नीतियों की उपादेयता को आज़माने के लिए यह अवधि बहुत कम है फिर भी अब तक जो उपलब्धियां हुई हैं तथा इससे प्रदेश के भविष्य पर जो प्रभाव पड़ेगा, उससे प्रभावशाली परिणाम निकले हैं।

इस घटनापूर्ण अवधि में हिमाचल प्रदेश में उच्च न्यायालय और सेवा आयोग की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त 1970 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की स्थापना हुई जो देश भर में पहला बहु-संकाय विश्वविद्यालय है। इसने इसी अवधि में सुचारू रूप से कार्य करना आरम्भ कर दिया है। प्रदेश के लिए एक अलग उच्च न्यायालय की स्थापना इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि पंजाब और हरियाणा जैसे पड़ोसी राज्यों के पास भी अभी तक अलग-अलग उच्च न्यायालय नहीं है। 1 नवम्बर, 1966 से पूर्व हिमाचल के पास केवल न्यायायुक्त की अदालत ही थी जो कि एक प्रकार से उच्च न्यायालय की तरह ही थी। इसके बाद इस एक

देश की तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी हिमाचल के जनजातीय किन्नौर जिले के अपने प्रवास के दौरान प्रदेश के प्रथम मुख्य मंत्री डॉ. वाई. एस. परमार के साथ।

सदस्यीय उच्च न्यायालय की जगह किसी उच्च न्यायालय के सर्केट बैंच ने ले ली। शिमला में उच्च न्यायालय की स्थापना से पिछली प्रणाली की कमियां दूर हो गई हैं।

हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग की स्थापना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे पूर्व हिमाचल प्रदेश के लोगों को सभी राजपत्रित पदों के लिए अखिल भारतीय स्तर पर मुकाबला करना पड़ता था। ऐसी स्थिति में हमारे युवा स्त्री-पुरुषों को उन लोगों से मुकाबला करना पड़ता था जिन्हें शिक्षा तथा तत्सम्बन्धी सुविधाएं उपलब्ध थीं। दूसरी ओर दूर पार से आए युवक जो हमारी विशिष्ट परिस्थितियों में अपने आपको ढालने में और हमारी कठिनाइयों को समझ पाने में असमर्थ थे, अब हम पर थोपे नहीं जा सकते।

बहुसंकाय विश्वविद्यालय ने स्थानीय युवाजनों के लिए विशेष शिक्षण कक्षाएं आरम्भ की हैं ताकि वे अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में प्रवेश पा सके।

इसने सेवारत उम्मीदवारों के लिए भी नए अवसर जुटाए हैं, खासकर शिक्षकों के लिए, जो अब त्रिवर्षीय पत्राचार स्नातकीय पाठ्यक्रम के अतिरिक्त बी.एड., एम.एड. और एम.ए. का अध्ययन भी कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय में स्नातक-पूर्व तथा स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर अर्धवर्षीय परीक्षा प्रणाली के आरम्भ होने से अध्ययन को अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलेगा। हमारा विश्वविद्यालय अध्ययन को अधिकाधिक आवश्यकता धर्मी बनाने के उद्देश्य से पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों में भी आवश्यक परिवर्तन कर रहा है।

स्वायत्त समितियां व निगम

हमने एक नीति निर्धारित की है जिसके अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में स्वायत्त समितियां हैं और निगमों की स्थापना की जाएगी ताकि वे केवल सरकारी साधनों पर निर्भर होने की बजाये संस्थानीय वित्त पर आधारित रहे।

इसके साथ ही साथ लगभग 30 से 40 प्रतिशत की बचत को ध्यान में रखते हुए सड़कों और भवनों के निर्माण सम्बन्धी नीतियों के अंतर्गत कुछ दीर्घकाल प्रभावी निर्णय भी लिए गए हैं। दूसरी ओर यह ध्यान भी रखा गया है कि व्यय में यह बचत करने के कारण किसी भी प्रकार की कार्यकुशलता तथा क्रियात्मक उपयोगिता पर बुरा प्रभाव न पड़े।

सरकार ने प्रदेश में एक बिजली बोर्ड की स्थापना की है जो बिजली के आयोजन, प्रसारण तथा वितरण के कार्य का संचालन करेगा। यह बिजली बोर्ड देहाती बिजलीकरण के कार्यक्रम को बढ़ावा देने तथा प्रदेश में विभिन्न परियोजनाओं के द्रुत कार्यान्वयन के उद्देश्य से प्रदेश को जीवन बीमा निगम, वाणिज्य बैंकों और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों से धन उपलब्ध कराएगा। निगम

ने पहले ही पांच करोड़ रुपये की राशि प्रस्तुत की है।

राज्य लाटरी

यह सरकार केन्द्र प्रशासित व्यवस्था के अंतर्गत अन्य राज्य की तरह राज्य लाटरी के कार्य को आरम्भ नहीं कर सकती थी। अब हमने इस कार्यक्रम को अन्तिम रूप दे दिया है जिससे इस वर्ष 48 लाख रुपये की आमदनी होने की सम्भावना है। आने वाले वर्षों के दौरान निश्चित रूप से यह आमदनी बढ़ेगी ही।

राहदारी लगाना पूर्ण राज्यत्व प्राप्त करने के बाद एक नया कदम है जिससे राज्य सरकार को पर्याप्त सहायता मिलेगी। आरम्भ में इस कर का विरोध किया गया परन्तु अनुभव से यह पता चला कि यह अधिकांशतः कर वसूल करने वालों के विरुद्ध, या कर प्राप्तियों के विरुद्ध नहीं। अपनी हाल ही की विश्व-यात्रा के दौरान मैंने देखा है कि सभी बड़े देशों में राहदारी चौकियां बनी हुई हैं जहां मार्ग का उपयोग करने वाले स्वेच्छा से कर अदा करते हैं। वास्तव में हिमाचल प्रदेश पर लगने वाली राहदारी से अत्यन्त आवश्यक सड़कों और पुलों का निर्माण सम्भव हो सकेगा। हम इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखेंगे कि राहदारी की उगाही बिना किसी विलम्ब के हो। टोल टैक्स सड़कों और पुलों के निर्माण तथा उनकी मुरम्मत पर हुए खर्चे की पूर्ति करेगा और एक बार इस प्रकार आवर्ती कोष के बन जाने से अनेकों परियोजनाओं का कार्यान्वयन किया जा सकेगा क्योंकि इन पर होने वाले खर्चे की पूर्ति टोल टैक्स से निरन्तर होती रहेगी।

निजी क्षेत्र में 200 टन दैनिक उत्पादन क्षमता वाले अखबारी कागज के एक कारखाने की स्थापना के लिए अनुबन्ध पर हुए हस्ताक्षर इस क्षेत्र में एक अन्य कीर्तिमान है। प्रदेश की वन सम्पदा राजस्व आय का सबसे बड़ा साधन रही है। इस वर्ष वनों से कुल कर-रहित राजस्व आय का 37.80 प्रतिशत हिस्सा प्राप्त होगा। आज से 5 वर्ष पूर्व वनों से कर-रहित राजस्व आय का 53.73 प्रतिशत भाग ही प्राप्त होता था। आज तक प्रदेश के वनों का उपयोग केवल यहां से इमारती लकड़ी के निर्यात के लिए ही होता रहा है लेकिन अब हम इनका उपयोग अधिकाधिक औद्योगिक प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए ही करेंगे। वनों से लगभग दस हजार परिवारों को लाभदायक रोजगार उपलब्ध होने के अतिरिक्त इनसे राज्य के राजस्व में बहुत वृद्धि होगी।

वनों का वैज्ञानिक रीति से प्रबन्ध, मशीनी ढंग से निकर्षण और अर्थकारी वन-रोपण कुछ ऐसे नए उपाय हैं जिन्हें हम अपना रहे हैं। एक रियॉन-पल्प कारखाना स्थापित करने के सम्बन्ध में भी बातचीत काफी आगे बढ़ी है।

गैर-सरकारी मदद

राष्ट्रीय वन नीति के अन्तर्गत निर्धारित कार्यक्रम को अमली जामा पहनाने के लिए बाह्य स्रोतों से धन प्राप्त करने के लिए प्रदेश सरकार गम्भीरता से सोच विचार कर रही है ताकि 60 प्रतिशत भूमि को हरित परिधान दिया जा सके। इस सम्बन्ध में विभिन्न उत्पादों का अध्ययन किया जा रहा है जिनके अन्तर्गत योजना विशेष का वित्तीय पोषण करने के लिए संस्थानों से सम्पर्क स्थापित किया जा सके।

प्रदेश में देहाती बिजलीकरण के द्रुत विकास से तथा देश के अन्य भागों की तुलना में सस्ती दर पर लोगों को बिजली मुहैया होने के कारण रसोई बनाने और गर्म करने के काम में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी के खर्च से जंगल बचे रह सकेंगे और इससे वनों से प्राप्त आमदन में भी वृद्धि होगी। इसी प्रकार लगभग दस हजार किलोमीटर सड़कों का जाल भी वनों के उत्तम प्रबन्ध तथा अधिक उत्पादन में सहायक सिद्ध होगा।

पूर्ण राज्यत्व मिलने के उपरान्त हिमाचल प्रदेश ने सड़क निर्माण के क्षेत्र में एक नितान्त नई नीति को अपनाया है। इस सम्बन्ध में अखिल भारतीय विन्यास में आवश्यक रद्दोबदल किया गया है ताकि उसे स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप रखा जा सके और विशिष्टयों का पुनर्निर्धारण भी किया गया है ताकि 30 प्रतिशत की बचत को सम्भव बनाया जा सके। राजकीय और राष्ट्रीय मार्गों को छोड़कर कई स्थानों पर सड़कों की चौड़ाई तथा उनकी ढाल भी कम कर दी गई है।

सड़क-निर्माण हेतु चौथी योजना के प्रावधान में भी पर्याप्त वृद्धि हो गई है। इस वर्ष इस कार्य के लिए एक करोड़ रुपये और नियत किए गए हैं। सम्पर्क सड़क निर्माण सम्बन्धी सघन कार्यक्रम भी चला हुआ है। और आगामी मार्च तक पांच सौ किलोमीटर सम्पर्क सड़कों का निर्माण किया जाएगा जिससे ग्यारह हजार ग्रामीणों को रोजगार हासिल होगा।

सस्ता भवन निर्माण

प्रदेश सरकार ने लोगों को भवन निर्माण तथा बने बनाए घर खरीदने में वित्तीय सहायता तथा तकनीकी सलाह देने के लिए एक गृह निर्माण बोर्ड स्थापित करने का निश्चय किया है। यह बोर्ड भी राज्य की वित्तीय समृद्धि में सहायक सिद्ध होगा।

साथ ही साथ भवन निर्माण के लिए नई विशिष्टियां भी अपनाई जा रही हैं जिनमें पहाड़ों में अत्यधिक अनुकूल पारम्परिक स्थापत्य अपनाने के अतिरिक्त स्थानीय निर्माण सामग्री के उपयोग पर भी बल दिया जाएगा। इससे भवनों पर होने वाले खर्चे में तीस से चालीस प्रतिशत तक बचत होगी।

वजन में हल्के तथा जाड़ों में गर्म रहने वाले भवनों का निर्माण किया जाएगा। सीमेन्ट का प्रयोग जो कि अत्यधिक ठंड के प्रभाव के कारण अनुपयुक्त है, बन्द किया जायेगा। इससे निर्माण-व्यय में भी कमी आएगी क्योंकि सीमेन्ट की ढुलाई का व्यय वहन नहीं करना पड़ेगा। इन धारणाओं का उपयोग कार्यालयों, रिहायशी तथा संस्थागत आवासों में ही नहीं, पर्यटक आवासों में भी किया जाना है ताकि प्रदेश शीघ्र फलदायी पर्यटन अपनाने में समर्थ हो सके।

स्कॉच अधिकारियों ने की थी हिमाचल की राजधानी की खोज

स्कॉच अधिकारी 30 अगस्त, 1817 की अपनी डायरी में लिखते हैं : "...... शिमला एक मझोला-सा गांव, जहां राहगीरों को पानी पिलाने के लिए एक फकीर रहता है...... हम जाखू की ओर ठहरे और वहां से बहुत मनोरम और सुन्दर दृश्य देखा।" मि. ए. विलसन का मत है कि शिमला की खोज उन स्कॉच अधिकारियों ने की जो सतलुज घाटी के सर्वे के लिए आए थे। दूसरा मत यह भी है कि 1816 में गोरखा सेना को कोटगढ़ ले जाते समय एक अंग्रेज अफसर द्वारा यह गांव खोजा गया जो घने जंगल और जानवरों से भरा था। आज के शिमला को पुरानी श्यामला देवी के नाम से भी जोड़ा जाता हैं जो जाखू में रहने वाले एक साधु द्वारा पूजी जाती थी। 'बड़ी सरकार'' के लिए समर कैपिटल की खोज चाहे किसी ने भी की हो, उसके पहले यह एक छोटा सा पहाड़ी गांव था- वर्तमान रिपन अस्पताल से ऊपर और रोमन कैथलिक चर्च के नीचे।

1815 में इस गांव को जींदराणा से लेकर राजा पटियाला को नेपाल की लड़ाई में अंग्रेजों का साथ देने के लिए दिया गया। भावी शिमला कहलाने वाला भू-भाग राजा पटियाला और राजा क्योंथल के अधिकार में था।

सन् 1819 में पहाड़ी रियासतों के असिस्टेंट पॉलिटिकल एजेंट कैप्टन रॉस ने शिमला में पहला कॉटेज बनाया। सन् 1822 में उनके उत्तराधिकारी कैप्टन कैनेडी नें पहला मकान यहां बनाया। सन् 1824 में कुछ अंग्रेजों ने राणा क्योंथल से इजाजत ले कर कुछ मकान बनाए क्योंकि शिमला की जमीन क्योंथल की थी। राणा क्योंथल ने यह शर्त लगाई कि यहां पेड़ों को न काटा जाए और जंगली जानवरों को भी न मारा जाए। सन् 1827 में गर्वनर जनरल लॉर्ड एमरस्ट का आगमन हुआ और शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाने का विचार आया। सन् 1830 में क्योंथल तथा पटियाला से जमीन लेकर शिमला स्टेशन आबाद किया गया। लॉर्ड एमरस्ट ने राजधानी के निर्माण बारे राणा क्योंथल से बातचीत की। क्योंथल से बारह गांव, जिनकी मालगुजारी 937 रुपये थी, लिए गए और इसके बदले परगना रावीं में शराचली और गठासू के इलाके दिए, जिनकी वार्षिक मालगुजारी 1289 रुपये थी, (जो अंग्रेजों ने अपने पास रखा हुआ था) दिया गया। (हिमप्रस्थ, नवंबर-दिसंबर, 2014)

इस प्रकार के आवासों के बाहरी और भीतरी दोनों ही भाग और इनकी सजावट और साज-सामान पारम्परिक पर्वतीय परिवेश प्रदर्शित करेंगे ताकि पर्यटक अपने आगमन के दौरान पहाड़ों और उनकी जीवन-विधि का भली प्रकार अनुमान लगा सकें।

उद्योगों के क्षेत्र, विशेषत: खनिज, वन एवं आवश्यकताधारित उद्योगों के क्षेत्र में, जिनके लिए हिमाचल में महान संभावनाएं हैं, पर्याप्त प्रगति की गई है। सरकार ने नई नीति अपनाई है जिसके अन्तर्गत स्थानीय उद्योगपतियों को सहायतायुक्त भाड़े के रूप में अथवा मूल्य पर रिबेट या प्रिमियम के रूप में पन्द्रह से बीस प्रतिशत तक सुविधा दी जाएगी।

पर्यटन को प्राथमिकता

प्रदेश में पर्यटन के विकास, जिसके लिये यह एक आदर्श परिस्थितियां प्रस्तुत करता है, को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। विभिन्न विश्राम गृहों तथा पर्यटन गृहों में आवास सुविधाओं में सुधार करने के अतिरिक्त नये मोटल और पर्यटन गृहों के निर्माण की भी योजना है। स्केटिंग तथा स्कीइंग जैसी शरदकालीन खेलों तथा पर्वतारोहण की सुविधाओं का भी विस्तार किया जायेगा। कुफरी के अतिरिक्त मनाली दूसरा शीतकालीन खेलों तथा पर्वतारोहण का केन्द्र होगा। स्मारिका उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिये भी प्रयत्न किये जा रहे हैं ताकि स्थानीय दस्तकारी को बढ़ावा मिल सके। हिमाचल जहां पहले ही इतने पर्यटक आते हैं, अब और अधिक पर्यटकों को आकर्षित करेगा जिससे प्रदेश का राजस्व बढ़ेगा और लोग भी खुशहाल होंगे। इस अवधि में पांवटा के निकट राजवन में भारत सीमेंट निगम द्वारा एक सीमेंट का कारखाना स्थापित किया जा रहा है। इस उद्योग के उद्देश्य का पत्र जारी हो गया है और आरंभिक कार्यवाही भी की जा रही है।

सात महीने की अल्प अवधि में हुए इन विकासों ने विश्वास के साथ राहें खोजते हमें अत्यधिक प्रोत्साहित किया है। हमारी अर्थ व्यवस्था ऊर्ध्वगामी है और आत्म-निर्भरता की स्थिति दूर मालूम नहीं देती। अपनी अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए ये हमारे अल्पकालीन उपाय हैं लेकिन जलविद्युत-शक्ति की संभावनाओं का उपयोग और बागबानी का विकास जैसे दीर्घ-कालीन कदम हिमाचल को भारत के समृद्ध राज्यों में से एक बनायेंगे जो राष्ट्र की सम्पूर्ण समृद्धि में योगदान देगा। (हिमप्रस्थ, सितंबर, 1971)

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल (1971 से अब तक)

श्री एस. चक्रवर्ती	25.1.1971 से 16.2.1977
श्री अमीनुदीन अहमद खान	17.2.1977 से 25.8.1981
श्री ए.एन. बैनर्जी	26. 8. 1981 से 15.4.1983
श्री होकेशे सेमा	16.4.1983 से 7.3.1986
न्यायमूर्ति पी.डी. देसाई (दोहरा प्रभार)	8.3.1986 से 16.4.1986
वाइस एडमिरल आर.के.एस. गांधी	17.4.1986 से 15.2.1990
श्री बी. रचैया	16.2.1990 से 19.12.1990
श्री वीरेन्द्र वर्मा	20.12.1990 से 29.1.1993
श्री सुरेन्द्र नाथ (कार्यवाहक)	30.1.1993 से 10.2.1993
श्री बली राम भगत	11.2.1993 से 29.6.1993
श्री गुलशेर अहमद	30.6.1993 से 26.11.1993
श्री सुरेन्द्र नाथ (कार्यवाहक)	27.11.1993 से 9.7.1994
श्री न्यायमूर्ति वी. रत्नम (दोहरा प्रभार)	10.7.1994 से 29.7.1994
श्री सुधाकर राव नाइक	30.7.1994 से 17.9.1995
श्री महावीर प्रसाद (अतिरिक्त कार्यभार)	18.9.1995 से 16.11.1995
श्रीमती शीला कौल	17.11.1995 से 22.4.1996
श्री महावीर प्रसाद (अतिरिक्त कार्यभार)	23.4.1996 से 25.7.1997
श्रीमती वी.एस. रमा देवी	25.7.1997 से 1.12.1999
श्री विष्णु कान्त शास्त्री	2.12.1999 से 23.11.2000
डॉ. सूरज भान	24.11.2000 से 7.5.2003
न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) विष्णु सदाशिव कोकजे	8.5.2003 से 18.7.2008
श्रीमती प्रभा राव	19.7.2008 से 24.1.2010
श्रीमती उर्मिला सिंह	25.1.2010 से 27.1.2015
श्री कल्याण सिंह	28.1.2015 से 11.8.2015
आचार्य देवव्रत	12.8.2015 से 21.7.2019
श्री कलराज मिश्र	22.7.2019 से 10.9.2019
श्री बंडारू दत्तात्रेय	11.9.2019 से अब तक

हमारे मुख्यमंत्री

स्वर्णिम यात्रा के दौरान छः मुख्यमंत्रियों ने हिमाचल प्रदेश का कुशल नेतृत्व किया। प्रस्तुत है उनका संक्षिप्त जीवन परिचय

डॉ. यशवंत सिंह परमार

रामलाल ठाकुर

शान्ता कुमार

वीरभद्र सिंह

प्रो. प्रेम कुमार धूमल

जय राम ठाकुर

डॉ. यशवन्त सिंह परमार

प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार का जन्म 4 अगस्त, 1906, सिरमौर जिला के गांव चन्हालग, हिमाचल प्रदेश में हुआ। उन्होंने फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज लाहौर से सन् 1926 में बी.ए. (आनर्स) तथा सन् 1928 में केनिंग कॉलेज, लखनऊ से एम.ए. और एल.एल.बी, सन् 1944 में लखनऊ विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की। डॉ. परमार सन् 1929–30 थियोसॉफिकल सोसायटी के सदस्य, 1930–37 सिरमौर रियासत के सब–जज और मैजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास, 1937–41 डिस्ट्रिक्ट एंड सैशन जज और इसके उपरांत राजनीतिक मतभेद के कारण रियासत से निर्वासित हुए। उन्होंने सन् 1943–46 सिरमौर एसोसिएशन के सचिव, 1946–47 हिमाचल हिल स्टेट काउन्सिल के प्रधान, 1947–48 सदस्य ग्रुपिंग एंड एमल्गमेशन कमेटी (ऑल इंडिया पीपल्स कान्फ्रेंस), प्रधान प्रजामंडल सिरमौर, संचालक सुकेत आंदोलन के रूप में कार्य किया।

डॉ. परमार सन् 1948–52 सदस्य सचिव हि.प्र. चीफ कमिश्नर एडवाइजरी काउन्सिल, 1948–64 अध्यक्ष हि.प्र. कांग्रेस कमेटी, 1952–56 मुख्यमंत्री, 1957 सांसद, 1961 हिमाचल प्रदेश के लिये सुप्रीम कोर्ट में सलाहकार और 24 जनवरी, 1977 तक प्रदेश के चार बार मुख्यमंत्री रहे। डॉ. परमार की लेखन में विशेष रुचि रही और उन्होंने पॉलीऐंड्री इन हिमालयाज, हिमाचल : इट्स शेप एंड स्टेट्स, हिमाचल प्रदेश : केस फॉर स्टेटहुड, हिमाचल प्रदेश : एरिया एण्ड लैंग्वेजिज तथा स्ट्रेटजी फॉर डेवेलप्मेंट ऑफ हिल ऐरियाज नामक लोकप्रिय पुस्तकें लिखीं।

उनका देहावसान 2 मई, 1981 को हुआ।
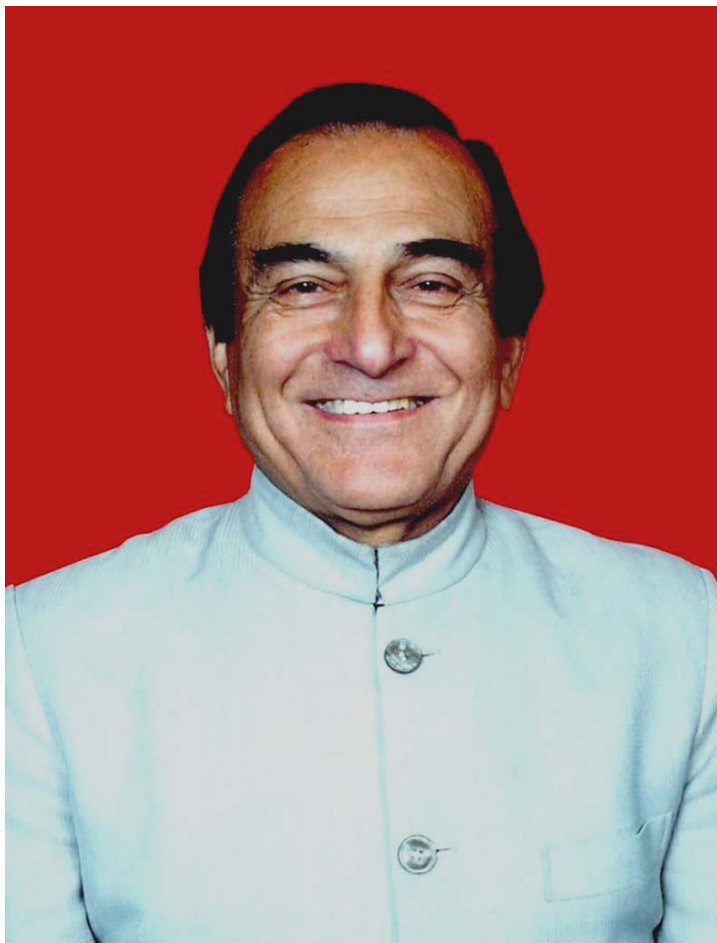
श्री रामलाल ठाकुर

श्री रामलाल का जन्म 15 जनवरी, 1929 को ग्राम बरथाटा, तहसील जुब्बल, जिला शिमला में हुआ। श्री रामलाल का शैक्षणिक जीवन बहुत शानदार रहा। कॉलेज के दिनों में उत्तम खिलाड़ी रहे। देश तथा प्रदेश के सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में गहरी रुचि ली। विभिन्न प्रकार की साहित्यिक, सामाजिक तथा नाट्य समितियों का संगठन किया। श्री रामलाल विधि स्नातक थे।

श्री राम लाल पहली बार 1957 में निर्दलीय सदस्य के रूप में क्षेत्रीय परिषद् में निर्वाचित हुए। 1966 में कांग्रेस विधायक दल के प्रमुख सचेतक नियुक्त हुए। 1967 में हिमाचल प्रदेश विधानसभा के लिए निर्वाचित हुये और उन्हें शिक्षा मंत्री का कार्य भार सौंपा गया। 1972 में हिमाचल प्रदेश विधानसभा में पुनः निर्वाचित हुए। 1977 में हिमाचल प्रदेश विधानसभा के लिए चौथी बार चुने गये तथा कांग्रेस पार्टी के नेता निर्वाचित हुए।

श्री राम लाल जनवरी, 1977 में प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार द्वारा त्यागपत्र दिये जाने पर प्रदेश के दूसरे मुख्यमंत्री बने। परन्तु अप्रैल, 1977 में विधानसभायें भंग कर दिये जाने पर उन्हें पद छोड़ना पड़ा था।

वे 15 अगस्त, 1983 से 29 अगस्त, 1984 तक आंध्र प्रदेश के राज्यपाल रहे।

6 जुलाई, 2002 में उनका देहावसान हुआ।

शान्ता कुमार

श्री शान्ता कुमार का जन्म 13 सितम्बर, 1934 को कांगड़ा जिले की पालमपुर तहसील में गांव गढ़ जमूला में हुआ। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के आन्दोलन से प्रेरित हुए और 1951 में कांगड़ा में इसके प्रचारक बने। दो वर्ष तक वे इसी कार्य से जुड़े रहे। जम्मू-कश्मीर को भारत में शामिल करने के लिए इन्होंने पठानकोट सत्याग्रह में भाग लिया। 19 वर्ष की अवस्था में ही इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और नौ महीनों तक हिसार तथा गुरदासपुर की जेलों में रखा गया। इन्होंने दो वर्ष तक एस.डी. हाई स्कूल थुरल में अध्यापन कार्य किया। तत्पश्चात् 1956 में वे दिल्ली चले गए। वहां विभिन्न स्कूलों में अध्यापक के तौर पर कार्य करने के साथ-साथ इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक तथा कानून की डिग्री हासिल की। श्री शान्ता कुमार ने अम्बाला तथा कांगड़ा में आर.एस.एस. के प्रचारक के रूप में कार्य किया और बाद में पालमपुर में वकालत आरम्भ कर दी। 1964 में इन्हें गढ़ जमूला ग्राम पंचायत का पंच निर्वाचित किया गया। वे कांगड़ा जिला परिषद के उपाध्यक्ष भी रहे। 1972 और फिर 1977 में वे हिमाचल विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए। श्री शान्ता कुमार एक जाने-माने लेखक भी हैं और इन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें 'धरती है बलिदान की', 'हिमालय पर लाल छाया', 'देश भक्त स्वामी विवेकानन्द', 'मन के मीत', 'पहाड़ बेगाने नहीं होंगे', 'ओ प्रवासी मीत मेरे' तथा एक उपन्यास लाजो प्रमुख हैं। 26 जून, 1975 को देश में आपात स्थिति के दौरान इन्हें रासुका के तहत गिरफ्तार कर लिया गया और 19 मास तक नाहन जेल में रखा गया। उसके बाद इन्हें जनता विधायक दल का नेता चुना गया। वे पहली बार 22 जून, 1977 से फरवरी, 1980 तक हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। 1982 में वे सुलह निर्वाचन क्षेत्र से हि.प्र. विधानसभा के लिए एक बार फिर चुने गये। वर्ष 1989 में लोकसभा के लिए हुए चुनावों में श्री शान्ता कुमार लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। हि.प्र. विधानसभा चुनावों में वे पालमपुर तथा सुलह दोनों निर्वाचन क्षेत्रों से विजयी रहे। वे दूसरी बार 5 मार्च 1990 से 15 दिसंबर 1992 तक हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। 13 अक्तूबर, 1999 से 30 जून, 2002 तक वे केंद्रीय खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्री रहे। इसके बाद वे जुलाई, 2002 से अप्रैल, 2003 तक केंद्र में ग्रामीण विकास मंत्री रहे। पढ़ना-लिखना, योग और खेलें इनकी विशेष रुचियां हैं।

वीरभद्र सिंह

शिमला जिले के सराहन में 23 जून, 1934 को श्री पदम सिंह व माता श्रीमती शांति देवी के घर जन्में श्री वीरभद्र सिंह ने शिमला के बिशप कॉटेज व देहरादून से कर्नेल बाउनी स्कूल से प्रारंभिक शिक्षा तथा स्नातक व स्नातकोत्तर की शिक्षा नई दिल्ली सेंट स्टीफन कॉलेज से हासिल की। 15 अगस्त, 1961 को श्री वीरभद्र सिंह ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। वर्ष 1962 में पहली बार तीसरी लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। वर्ष 1967 में दूसरी बार चौथी लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। वर्ष 1971 में तीसरी बार पांचवीं लोकसभा के सदस्य बने। वर्ष 1976-77 में केन्द्र सरकार में उपमंत्री पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन विभाग रहे तथा इस दौरान प्रदेश सहित देशभर में पर्यटन विस्तार के लिए अहम योगदान दिया। वर्ष 1980 में सातवीं लोकसभा के चुनावों में चौथी बार सांसद बने तथा 1982-83 में केन्द्रीय उद्योग राज्य मंत्री बने। वर्ष 1983 में तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के आग्रह पर पहली बार 8 अप्रैल, 1983 को प्रदेश के मुख्यमंत्री की बागडोर संभाली। इसके उपरांत, 1985, 1993, 1998, 2003 तथा 2012 में छः बार प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे और 1983 से 2017 तक नौ बार हिमाचल प्रदेश विधानसभा के लिए चुने गए। वर्ष 1998 से 2003 तक प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के नेता रहे। वर्ष 2009 में 15वीं लोकसभा के चुनावों में पुनः निर्वाचित हुए। 31 मई, 2009 से 18 जनवरी 2011 तक केन्द्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री बने। अध्ययन एवं बागबानी में गहरी रुचि है। उन्होंने 20 से अधिक देशों का भ्रमण कर अपने अनुभव को और अधिक पुख्ता किया है।

वर्ष 1976 में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा को सम्बोधित किया जो कि प्रदेश के लिए एक गर्व की बात है।

प्रेम कुमार धूमल

श्री प्रेम कुमार धूमल का जन्म 10 अप्रैल, 1944 को जिला हमीरपुर के गांव समीरपुर में हुआ। श्री धूमल ने जिला हमीरपुर के टौणी देवी से मैट्रिक की परीक्षा पास करने के उपरान्त डीएवी कॉलेज जालन्धर से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। तदोपरान्त गुरु नानक देव विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर तथा विधि की डिग्री प्राप्त की। श्री प्रेम कुमार धूमल सदैव मेधावी छात्र रहे तथा शैक्षणिक प्रतिभा के फलस्वरूप उन्होंने छात्रवृत्तियां हासिल की। श्री धूमल ने पंजाब विश्वविद्यालय के सांध्य कॉलेज जालन्धर में अध्यापन कार्य आरम्भ किया तथा बाद में जालन्धर के दोआबा कॉलेज में 10 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया।

श्री प्रेम कुमार धूमल वर्ष 1982 से 1985 तक भारतीय जनता युवा मोर्चा के सचिव और फिर उप-प्रधान रहे। श्री धूमल 1987 से 1993 तक राज्य भाजपा के सचिव बने तथा फिर पार्टी के अध्यक्ष नियुक्त हुए। श्री धूमल ने वर्ष 1989 तथा 1991 में हमीरपुर लोकसभा सीट से चुनाव जीता। इससे पूर्व श्री धूमल ने वर्ष 1984 में भी लोकसभा का चुनाव लड़ा था। वर्ष 1998 में श्री धूमल प्रथम बार विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। श्री प्रेम कुमार धूमल ने 24 मार्च, 1998 को पहली बार हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री का पदभार सम्भाला। दिसम्बर, 2007 को हुए विधानसभा चुनाव में उनके नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के विजयी होने पर उन्हें एक बार पुनः प्रदेश का मुख्यमंत्री चुना गया और वे 24 दिसंबर, 2012 तक मुख्यमंत्री रहे।

श्री धूमल संसदीय आंकलन कमेटी के सदस्य तथा अध्यक्ष रहे। श्री धूमल ने विभिन्न कमेटियों के सदस्य के रूप में विशेष योगदान दिया। उन्होंने शिक्षा कमेटी में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। श्री धूमल ने अनेक देशों का दौरा किया। श्री धूमल आईपीयू के दो प्रतिनिधिमण्डलों के सदस्य रहे तथा इस दौरान अमेरिका, उरुग्वे और कोलम्बिया का दौरा किया। श्री प्रेम कुमार धूमल ने आईपीयू प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में कश्मीर मसले पर जोरदार पैरवी की। आज भी श्री प्रेम कुमार धूमल के विचारों को कश्मीर के मसले पर आईपीयू में महत्त्वपूर्ण दस्तावेज माना जाता है।

जय राम ठाकुर

श्री जय राम ठाकुर का जन्म 06 जनवरी, 1965 को मण्डी जिला के ग्राम पंचायत मुराहग के गांव तान्दी में हुआ। इनके पिता का नाम श्री जेठू राम तथा माता का नाम श्रीमती ब्रिकु देवी है।

श्री ठाकुर ने अपनी प्राथमिक शिक्षा कुरानी पाठशाला में ग्रहण की और थुनाग के निकट उच्च पाठशाला बगशयाड़ में दसवीं तक शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने वल्लभ राजकीय महाविद्यालय मण्डी से स्नातक तथा पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण की।

श्री ठाकुर तीन भाइयों में सबसे छोटे हैं और इनकी दो बहनें है। महाविद्यालय व विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के दौरान इन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की सदस्यता ग्रहण की तथा 1993 में चच्योट विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा उस समय इनकी आयु 26 वर्ष की थी।

1998 में भी चच्योट विधान सभा क्षेत्र से विजयी रहे और चच्योट, जो परिसिमन के उपरान्त सराज विधान सभा क्षेत्र से जाना जाता है, से विधायक बने। श्री ठाकुर लगातार पांचवीं बार विधायक बने।

श्री ठाकुर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष तथा पूर्व की भाजपा सरकार में ग्रामीण विकास मंत्री भी रहे। वे राज्य नागरिक आपूर्ति निगम के उपाध्यक्ष भी रहे। वे भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष भी रहे। इनका विवाह डॉ. श्रीमती साधना सिंह से हुआ और इनकी दो बेटियां हैं।

कुछ स्मृतियां कुछ यादें

हिमाचल प्रदेश के इतिहास; विशेषकर, पूर्ण राज्यत्व की स्वर्णिम यात्रा से जुड़े विशिष्ट व्यक्तियों एवं रचनाकारों की स्मृतियों, पर आधारित कुछ रचनाएं

- बद्री सिंह भाटिया
- कुल राजीव पंत
- मुरारी शर्मा

25 जनवरी, 1971 का वह ऐतिहासिक दिन...

बद्री सिंह भाटिया

हिमाचल प्रदेश 1948 में अस्तित्व में आया तो इसका आकार आज से बहुत भिन्न था। चम्बा जिले को पंजाब के कांगड़ा जिले से होकर जाना पड़ता था। मण्डी जिले को बिलासपुर होकर जाना होता था। बिलासपुर भी 1954 में इस राज्य का हिस्सा बना। यह प्रदेश उपराज्यपाल के अधीन क्षेत्रीय परिषद के अधीन केंद्र शासित ग वर्ग अथवा 'सी' श्रेणी का राज्य था। हिमाचल अभी एक बिखरा हुआ राज्य था। यह अपने नाम के अनुरूप पूर्ण पहाड़ी राज्य नहीं था। हिमाचल की राजधानी बेशक शिमला में थी मगर शिमला अभी भी पंजाब सरकार का हिस्सा था। यही नहीं कसौली, नालागढ़, कण्डाघाट जैसे पहाड़ी क्षेत्र पंजाब में थे। बहुत से और क्षेत्र भी पंजाब के अधीन थे। उस समय की सरकार डा. यशवंत सिंह परमार के मुख्यमंत्रित्व के तहत गठित थी। तब पहले चरण में सरकार ने प्रयत्न किया कि हिमाचल के साथ लगते पहाड़ी क्षेत्रों को इस राज्य का हिस्सा बनाया जाए। सरकार के प्रयत्न सुफल लाए और वर्ष 1966 में इस राज्य को एक नया रूपाकार मिला। पंजाब के कांगड़ा, कुल्लू और लाहुल-स्पीति के साथ कुछ और पहाड़ी क्षेत्रों का इसमें विलय कर विशाल हिमाचल बना। इस रूपाकार के बाद भी यह राज्य केंद्र शासित राज्य ही रहा। उस समय हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. यशवतं सिंह परमार थे। अब उनके मन में यह बात कुलबुलाने लगी कि यह प्रदेश बागवानी से समृद्ध प्रदेश है। यहां की नदियों में बहता सोना है। प्रदेश में माकूल तरक्की तभी सम्भव होगी यदि यहां सड़कों का जाल बिछे। उनकी दिक्कत यह थी कि प्रत्येक विकास योजना के प्रस्ताव को केंद्र सरकार को भेजना पड़ता था। उन्होने सोचा कि इस प्रदेश की समग्र तरक्की तभी सम्भव है यदि इसे पूर्ण राज्य का दर्जा मिले। वे इसके लिए प्रयासरत हो गए। उस समय केंद्र में कांग्रेस सरकार थी और प्रधानमंत्री थीं श्रीमती इंदिरा गांधी। डा. परमार के उनसे अच्छे सम्बंध थे। वे अपने मंतव्य में सफल हुए और 18 दिसम्बर, 1970 को इस प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा मिलने के आदेश पारित हुए। सभी प्रसन्न थे। इस घोषणा के लिए दिन तय हुआ 25 जनवरी, 1971।

पहाड़ों में विशेषकर शिमला में जनवरी के महीने में बर्फ का मौसम होता है। मगर 25 जनवरी का दिन पूर्ण राज्यत्व के लिए निर्धारित होने के पीछे विगत में चल रहा सूखा मौसम था। पूरे प्रदेश में राज्य को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने की प्रसन्नता की लहर व्याप्त थी। सभी के मन में नई आशाएं और प्रगति के नए द्वार खुलने की उम्मीद जगी थी। अब प्रदेश में नए चुनाव होंगे और ऐसी सरकार बनेगी जो अपने फैसले स्वयं लेगी।

उन दिनों मैं मेडिकल कालेज में लिपिक के पद पर कार्यरत था। मेरा क्वाटर संजौली के एक कस्बे चिलौंठी में था। मेरे ससुर भी उन दिनों हमारे घर आए हुए थे। मेरा बेटा एक वर्ष का होने वाला था। पत्नी महासु जिले की ठियोग तहसील के एक गांव में अध्यापिका के पद पर तैनात थी और उसे इन दिनों सर्दी की छुट्टियां थीं।

ससुर जी पूर्ण राज्यत्व के इस दिन के दर्शक बनना चाहते थे। इधर राज्य सरकार अपनी तैयारियों में जुटी थी। शिमला को एक नया रूप दिया गया था। मालरोड में रोशनी ही रोशनी थी। हम 24 जनवरी की शाम को शिमला के माल पर टहल कर आए थे। मौसम में हरारत थी। इससे पहले भी थोड़ी बर्फ गिर चुकी थी। आसमान में बादल घिरे थे। इससे अनुमान लगाया जा रहा था कि जो कुछ बर्फ बची है वह बादल की गर्मी अथवा बादल के साथ प्राकृतिक रिएक्शन से जैसे पिघलती आ रही थी पिघल जाएगी। समारोह में कोई रुकावट नहीं होगी।

मगर यह क्या? सुबह जागे तो बाहर चारों ओर बर्फ ही बर्फ। लगभग छः इंच से एक फुट तक। बर्फ तब भी गिर रही थी। मैंने ससुर जी को बताया कि अब पूर्ण राज्यत्व का समारोह नहीं होगा। उन दिनों टी.वी. तो होता नहीं था इसलिए रेडियो का ही आसरा था। रेडियो पर तो अनुकूल समाचार आ रहे थे। खैर! हमने तय किया कि नौ बजे के करीब हम यहां से चल पड़ेंगे। पैदल। अब लक्कड़ बाजार तक तो वाहन जाने का कोई मतलब ही नहीं था। यूं भी उन दिनों आज की सी स्थानीय बसें नहीं चला करती थीं। हम तैयार हुए और गर्म कपड़े और हंटर शूज पहन कर चल दिए। हमें संजौली में ही पता चल गया कि समारोह तो होकर रहेगा। कुछ देर हो सकती है। बादल जैसे ही छंटेंगे श्रीमती इंदिरा गांधी जी चण्डीगढ़ से उड़ान भरेंगी और शिमला कैथू के हेलीपेड पर उतर कर वहां से सीधे रिज पर जाएंगी। हम आगे बढ़े। रास्ते में कुछ साथी और मिले। बर्फ पर धक्के खाते हम आगे बढ़ते रहे। कच्ची बर्फ पर चलने का अपना ही मजा है। एक कदम आगे रखो तो पता नहीं सड़क पर पहले से बने गड्ढे में पड़ जाए और मोच आ जाए। गिर भी सकते हैं। पहले से चले किन्हीं व्यक्तियों के पैरों से दबी बर्फ पर पांव रखें तो कब फिसल कर गिर जाए और हड्डी पसली टूट जाए कोई पता नहीं। बस सम्भलकर चलना ही श्रेयस्कर होता है। हम इन्हीं सावधानियों के साथ आगे बढ़ते रहे। लक्कड़ बाजार के समीप आते ही हमें रिज मैदान से संगीत की ध्वनि सुनाई दी। गिरती बर्फ के बीच बने धुंधलेके के बीच रिज पर चलते कुछ काले मूंड भी दिखाई दिए। हम आगे बढ़े तो पुलिस ने रोक लिया। भाई यहां से नहीं, आपको तो नीचे कार्ट रोड़ से होकर जाना पड़ेगा। मैंने पूछा भी कि पहले तो रिज के बाहर से एक रास्ता लोगों के लिए रखा जाता था अब यह क्यों नहीं। तब एक थानेदार ने कहा कि आपको जो कहा उसे करो। यदि समारोह देखना है तो नीचे से जाओ। बहस नहीं करो। बहुत से लोग निराश डेढ़ किलोमीटर और चलने के लिए बाध्य हो गए। बर्फ पर उतराई उतरना काफी खतरनाक होता है।

लक्कड़ बाजार के उस मोड़ से कार्ट रोड़ को उतरना काफी दिक्कत भरा रहा। हाथ में सोठी होती तो कुछ सहारा होता। फिर भी यत्र-तत्र बची कच्ची बर्फ पर से टेढ़े-मेढ़े कदम रखते हम उतर गए। आगे रिवोली से तो फिर चढ़ाई थी। इसमें ससुर जी को काफी दिक्कत हुई। उनका सांस फूलने लगा। यूं भी बर्फ में और बादलों में उन्हें दिक्कत होती थी। फिर भी हम श्रम के साथ स्कैण्डल प्वाइंट पर पहुंच ही गए। यहीं से रिज शुरू होता है। यहां कतिपय लोग थे। माल पर सजावट के लिए लगाए तोरण द्वारों में कपड़े भीग कर भी हवा के साथ जबरदस्ती लहराने की कोशिश कर रहे थे। हम आगे बढ़े। रिज के चौड़े भाग की ओर जहां श्रीमती इंदिरा गांधी ने पूर्ण राज्यत्व की पट्टी का अनावरण करना था। अभी कुछ आगे ही गए थे कि स्पीकर पर अनाऊंस हुआ कि भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी थोड़ी देर में ही आने वाली हैं। वे पहाड़ी राज्य को प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. यशवंत सिंह परमार जी के हाथों में एक पूर्ण राज्यत्व के रूप में सौंपेगी। अभी हाल ही में मौसम साफ हुआ है और वे चण्डीगढ़ से शिमला पहुंचने ही वाली हैं। यह दोहरी जैसी उद्घोषणा थी। मगर तभी दूसरी घोषणा कि वे आने ही वाली है। हम आगे बढ़े। भीड़ इतनी कि तिल धरने को कोई जगह नहीं। फिर भी हम भीड़ के बीच से थोड़ी-थोड़ी जगह बनाते आगे सरक रहे थे। मन में पश्चाताप यह कि घर से जल्दी चलना चाहिए था। आगे पहुंचने को इतनी मुशक्कत नहीं करनी पड़ती। मैंने ससुर जी का हाथ पकड़ रखा था। वे बजुर्ग थे। ग्रामीण थे इस तरह की भीड़ के आदी नहीं थे पर उत्साहित थे। मुझ में भीड़ की धक्का-धुक्की सहन करने की क्षमता थी।

हम अभी आगे सरक ही रहे थे कि पॉयलट गाड़ी हॉर्न बजाती आई। आवाज सुन हम वहीं स्थिर हो गए। पॉयलट गाड़ी आगे निकली तो लोक सम्पर्क विभाग की फोटो गाड़ी आई। खुली। इसके पीछे एक खुली जीप में श्रीमती इंछिरा गांधी जी, डा. यशवंत सिंह परमार और एक दो और भी खड़े थे। जीप धीरे-धीरे आगे सरक रही थी। श्रीमती इंदिरा गांधी जी जनता का अभिवादन स्वीकार कर रही थीं। बर्फ तब भी गिर रही थी। काले कोट पर बर्फ के फूल बहुत अच्छे लग रहे थे। वे आगे सरकी तो इधर भीड़ का एक जोरदार धक्का हमें लगा। मेरे हाथ से ससुर जी का हाथ छूट गया। मैं धक्के के रेले में आगे की ओर चला गया। कुछ देर बाद यह धक्का रुका तो मैंने ससुर जी को ढूंढा। इधर-उधर देखने के बाद कुछ पीछे वे मिल गए। बोले, 'बाबू भाटिया, भीड़ ने तो इतना उठाया कि काफी आगे तक तो मेरे पांव जमीन पर ही नहीं थे।' मैं हंसा और बोला, 'यही तो पूर्ण राज्यत्व की खुशी है। आपने सही तौर पर सैलीब्रेट की।'

इंदिरा जी ने महात्मा गांधी जी के बुत के पास दीवार में बने हिमाचल प्रदेश के नक्शे के साथ एक पट्टिका पर से आवरण हटाया और सारा रिज मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो गया। हमने भी पीछे तालियां बजाई। अनजान लोगों से हाथ मिलाए। प्रसन्न कि आज हमारा प्रदेश पूर्ण राज्य बन गया। भारत वर्ष का अठारहवां गणराज्य। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपनी बारी पर प्रदेश के लोगों को सम्बोधित किया और केंद्र से माकूल सहायता प्रदान करने का अपना वायदा दोहराया। हम केंद्र शासित राज्य से स्वशासित राज्य के बाशिंदे एक क्षण में हो गए। आज मन में विचार आता है कि इस क्षण को प्राप्त करने के लिए उस समय के नेताओं के साथ डा. वाई. एस. परमार जी ने कितनी तपस्या की होगी। कितने संकटों और अवरोधों का सामना किया होगा। उस समय प्रदेश की भीतरी दिक्कतें भी थी। एक ओर वे प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा दिलाने के लिए केंद्र सरकार के अधिकारियों से जूझ रह थे तो दूसरी ओर प्रदेश में अधीनस्थ कर्मचारियों का पंजाब स्तर पर वेतनमान दिए जाने का संघर्ष चल रहा था। यह कर्मचारी संघर्ष 35 दिन तक चला था। लोगों से सुना था कि जब केंद्र ने डा. परमार से इस कर्मचारी आंदोलन के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा था कि ये भी पूर्ण राज्य की ही मांग कर रहे हैं।

पूर्ण राज्यत्व मिलना ही काफी नहीं था। अब डा. वाई. एस. परमार ने प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से प्रदेश को एक और रूपाकार दिया। उन्होंने महासू जिले के दो भाग कर दिए। अब शिमला जिला और सोलन जिला का उदय हुआ। कांगड़ा जिले को तीन भागों में विभक्त कर दिया ताकि विकास कार्य सुचारू रूप से चल सके। हमीरपुर, ऊना और कांगड़ा जिला नए रूप में सामने आए। इधर कुल्लू जिला अलग से बना तो सीमांत जिला लाहुल-स्पीति भी बना। अब हिमाचल बारह जिलों का एक छोटा मगर क्षेत्रफल (55673 वर्ग किमी) में बहुत बड़ा राज्य बनकर भारत के मानचित्र पर उभर कर आया।

25 जनवरी, 1971 को हिमाचल पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त कर गया। यह दृश्य लगभग दस-पंद्रह हजार लोगों ने तो साक्षात देखा। रेडियो पर हजारों लोगों ने यह सुना। हम लौटने लगे तो फिर वही रास्ता। सोचा चलो माल का एक चक्कर लगा लेते हैं। देखा रिज पर जो बर्फ रात की गिरी थी वह तो लोगों के पांव तले दब एक चादर का एक पतरा बन गई थी। पर माल पर की बर्फ भी उसी तरह दबी थी। हम सम्भलते टहलते आगे बढ़े तो उस समय के लेडिज पार्क(रानी झांसी पार्क) में पहाड़ी नाटी लगी थी। गेट तक खूब भीड़ थी। ऊपर जाना कठिन लग रहा था। तभी किसी ने कहा कि इस नाटी में डा. यशवंत सिंह परमार भी झूमझूम कर नाचे। हम फिर वापस लौटे। क्वाटर में पत्नी ने कोलथ की खिचड़ी बनाई थी। भारी थकान के बीच वह खाई और रजाई ओढ़ कर सो गए।

आज जब हम इस पचास साल के हिमाचल प्रदेश के अपने पैरों पर खड़े होने के सफर को देखते हैं तो दांतों तले उंगली दब जाती हैं। चारों ओर विकास की धमक है। सड़कों का जाल बिछा हुआ है। ऐसा कोई बड़ा गांव नहीं होगा जहां सड़क नहीं है। चौबीस घंटे की अपनी ही बिजली नहीं बल्कि प्रदेश बाहर को भी बिजली बेचने वाला राज्य बन गया है। यहां का सेब तो विश्व में अपना एक स्थान रखता है। शिक्षा के प्रसार में सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कॉलेज और मेडिकल कॉलेज खुले हुए है। यदि इस विकास को गिनने लगे तों जाने कितने पृष्ठ भर जाएं। यह सब पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने पर ही सम्भव हुआ है।

गांव ग्याणा, डाकखाना मांगू वाया दाड़लाघाट
तहसील अर्की, जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश-171192
मो. 0 98051 99422

पहाड़ों में विशेषकर शिमला में जनवरी बर्फ का मौसम होता है। मगर 25 जनवरी का दिन पूर्ण राज्यत्व के लिए निर्धारित होने के पीछे विगत में चल रहा सूखा मौसम था। पूरे प्रदेश में पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने की प्रसन्नता की लहर व्याप्त थी। सभी के मन में नई आशाएं और प्रगति के नए द्वार खुलने की उम्मीद जगी थी। अब प्रदेश में नए चुनाव होंगे और ऐसी सरकार बनेगी जो अपने फैसले स्वयं लेगी। उन दिनों मैं मेडिकल कालेज में लिपिक के पद पर कार्यरत था। मेरा क्वाटर संजौली के एक कस्बे चलौंठी में था। मेरे ससुर भी उन दिनों हमारे घर आए हुए थे। मेरा बेटा एक वर्ष का होने वाला था। पत्नी महासु जिले की ठियोग तहसील के एक गांव में अध्यापिका के पद पर तैनात थी और उसे इन दिनों सर्दी की छुट्टियां थीं।

ऐतिहासिक दिवस और साइकिल यात्रा...

कुल राजीव पंत

पहाड़ों में सीधी चढ़ाई-उतराई होने के कारण साइकिल चलाना शुरू से ही दुष्कर रहा है। फिर भी कुछ पहाड़ी कस्बों में साइकिलें चलाई जाती थीं। उनमें से एक कस्बा सोलन भी था। यहां से ही साइकिलें चलती थीं जो गिने-चुने लोगों के पास ही थीं। समय बीतने के साथ-साथ आस-पास के गांवों से पढ़ने आने वाले कुछ विद्यार्थी साइकिलों पर आने-जाने लगे। कुछ ग्रामीण अपनी नकद फसल आढ़तों में बेचने के लिए और वापसी में अपनी जरूरतों का सामान साइकिलों पर ही लाते ले जाते थे। छठे दशक के अंत तक सोलन ब्रूरी नौकरी करने जाने वाले अधिकांश कर्मचारियों ने धीरे-धीरे अपनी साइकिल खरीद ली थी। इस तरह कुछ वर्षों में ही सोलन में साइकिलों की भरमार हो गई। एक दो नई साइकिलों की दुकानें और साइकिल मरम्मत की दुकानें भी खुल गई थीं। मरम्मत के लिए हंसराज जी और सरदार इंदर जीत सिंह की दुकानें काफी मशहूर थीं। इन दोनों दुकानों में किराए पर साइकिलें भी मिलती थीं। अतः यह दुकानें युवाओं में काफी लोकप्रिय थीं। साइकिल चलाना सीखने के लिए वहीं से साइकिलें किराए पर ली जाती थीं। किशोरों में साइकिल सीखने के लिए 18 इंच की साइकिल लेने की होड़ रहती थी।

किराए की साइकिलों पर युवा दूर-दूर की सैर कर आते थे। सन् 1970 में चंडीगढ़ में लगी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' देखने के लिए हमारे तीन मित्र विनोद कुमार अमर, केशव चौहान और दिनेश सक्सेना साइकिलों पर ही फिल्म देखने के लिए चंडीगढ़ गए थे। वापिस लौटने पर वह साइकिल यात्रा और फिल्म की कहानी कई दिनों तक सुनाते रहे।

1971 में जैसे ही हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने के कार्यक्रम की घोषणा हुई, सोलन के कुछ युवाओं का मन साइकिलों पर शिमला पहुंच इन ऐतिहासिक पलों का साक्षी बनने के लिए मचल उठा। ऐतिहासिक रिज मैदान पर होने वाले इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा 25 जनवरी को नए राज्य की घोषणा कर उसका उद्घाटन करना था। यह संस्मरणात्मक यात्रा विवरण हमारे तीन मित्रों - विनोद कुमार अमर, केशव चौहान और अविनाश चंद्र वर्मा के शिमला जाने और वहां से लौटने पर उसे कई दफा सुनाने के आधार पर लिखा गया है।

तीनों साइकिल सवार 25 जनवरी, 1971 की धुंधभरी सर्द सुबह में साइकिल की घंटियां टनटनाते हुए शिमला के लिए चल पड़े, कड़ाके की ठंड पड़ रही थी, पर तीनों के हौसलें बुलंद थे। सोलन से कंडाघाट तक कहीं हल्की ढलान और कहीं सीधी सड़क

है। सलोगड़ा और कंडाघाट के बीच उस समय घना जंगल था। शिमला पहुंचने के जोश और युवावस्था के जज्बे के कारण कंडाघाट तक का सफर एक घंटे से कम समय में तय हो गया। यहां चाय की एक दुकान नजर आई जहां आग भी जल रही थी। तीनों ने वहां आग सेंकी, चाय पी और फिर आगे की यात्रा पर निकल पड़े।

कंडाघाट से क्यारी बंगला तक तीखी चढ़ाई है, पर तीनों ने धीरे-धीरे साइकिल चलाते हुए चढ़ाई चढ़ी। उस समय गाड़ियां बहुत कम चलती थीं इसलिए खुली सड़क में साइकिल चलाने का आनंद कुछ और ही था। कुछ जगह सड़क बहुत तंग थी। दो बसों या ट्रकों के आमने-सामने आ जाने पर एक के पीछे हटने पर ही दूसरी गाड़ी आगे बढ़ पाती थी। क्यारी बंगला से तारा देवी तक की चढ़ाई भी आराम से चलाते हुए तय की। बीच में बस क्यारी घाट चाय पीने के लिए रुके। संकट मोचन तक पहुंचते-पहुंचते तीनों थक चुके थे और वहां से चढ़ाई भी सीधी शुरू हो जाती है अतः तीनों साइकिलों से उतर गए और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। बस स्टैंड पहुंचने पर साइकिलें वहां खड़ी कीं और सीधे रिज मैदान पहुंच गए।

रिज पर कार्यक्रम शुरू होने से पहले शिमला में बर्फबारी हो चुकी थी। भीषण ठंड होने के बावजूद हजारों लोग रिज और माल रोड पर जमा थे। बहुत से पुरुष और महिलाएं अपनी पारंपरिक वेशभूषा में आए हुए थे। लोगों में गज़ब का उत्साह था। सबके मन में अपनी लोकप्रिय नेता श्रीमती इंदिरा गांधी की एक झलक पाने की लालसा थी। सड़क के दोनों ओर लकड़ी के जंगले लगाए गए थे पर फिर भी भीड़ को काबू में रखने के लिए पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ रही थी।

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी अनाडेल से खुली जीप नंबर एचआईएल-3908 में खड़े होकर रिज तक पहुंची। उनके साथ तत्कालीन मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश, डॉ. यशवंत सिंह परमार तथा राज्यपाल एस. चक्रवर्ती भी खड़े थे। जगह-जगह सड़क के दोनों ओर खड़े लोगों ने नारे लगाकर उनका स्वागत किया।

श्रीमती गांधी ने पूर्ण राज्य का उद्‍घाटन करते हुए अपने संबोधन में हिमाचल वासियों की वीरता और साहस की प्रशंसा की। उन्होंने विश्वास जताया कि डॉ. परमार के कुशल नेतृत्व में प्रदेशवासी अपने कठिन परिश्रम और ईमानदारी से प्रदेश को एक समृद्ध राज्य बनाएंगे। यह भविष्य की कल्पना सत्य सिद्ध हुई है क्योंकि आज हिमालच प्रदेश पर्वतीय राज्यों के लिए विकास के एक मॉडल के रूप में उभर कर सामने आया है। इसी बीच बर्फबारी का दौर फिर शुरू हो गया मानो प्रकृति भी इस अवसर पर अपनी खुशी का इजहार कर रही हो। प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. परमार ने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी का आभार जताया। पूर्ण राज्य की घोषणा के बाद जगह-जगह नाटियों का दौर शुरू हो गया। मुख्यमंत्री डॉ. परमार भी नाटी में शामिल हुए और खूब झूमे। लेडीज पार्क में ठंड से बचाव के लिए अलाव भी जलाया गया। अब पूर्ण राज्यत्व दिवस की अविस्मरणीय मधुर यादों को संजोए इन साइकिल यात्रियों का सोलन वापसी का समय हो रहा था। वापसी से पहले तीनों ने कॉफी हॉउस में गर्मागर्म कॉफी का आनंद लिया। केशव चौहान ने ठंड से बचाव के लिए स्वैटर खरीदा। बाद के वर्षों में केशव जब भी वह स्वैटर पहने मिलते तो, साइकिल यात्रा के संस्मरण फिर साझा हो जाते। शिमला बस स्टैंड पहुंचने पर एक बार फिर साइकिलों की घंटियां टनटनाई और वापसी की यात्रा शुरू हो गई। बर्फबारी होने के कारण जाड़ा बहुत बढ़ गया था। बर्फ पर साइकिल चलाना भी मुश्किल हो रहा था। फिर भी जोश और होश के साथ जैसे-तैसे साइकिल चला रहे थे। कभी साइकिल से उतर जाते, कभी साइकिल पर बैठ जाते। इस प्रकार यह यात्रा अपनी मंजिल यानी अपने घर सोलन तक के लिए जारी थी। ठंडी हवाएं चल रही थीं। शिमला से बाहर निकलते ही ढलान होने के कारण साइकिलें तेज गति से चल रही थीं। ऐसे माहौल में स्कूल में पढ़ी अंग्रेजी कविता 'गोइंग डाउन हिल ऑन ए बाइसाइकिल' याद आना स्वाभाविक था।

चाय पीने के लिए अब पहला पड़ाव क्यारी घाट पड़ा। सुबह आते हुए भी यहां चाय पीते हुए अविनाश सोच रहा था कि इस सुनसान जगह में चाय का कितना काम होता होगा? अब उसने पूछा तो दुकानदार ने बताया कि आस पास के ग्रामीण इधर- उधर आते-जाते यहां चाय पीने के लिए रुकते हैं। उनसे गप्प-शप्प भी हो जाती है और थोड़ा-बहुत काम भी चलता रहता है। इस बीच भाप से चलने वाली रेलगाड़ी की सीटी की आवाज पास के जंगल में गूंजी और साइकिल सवार भी आगे की यात्रा के लिए चल पड़े।

शाम हो रही थी और ठंड काफी बढ़ गई थी। ठंड से बचाव के लिए तीनों ने अपने स्वैटर अच्छी तरह सिर पर बांध लिए। कोट के कॉलर खड़े कर ऊपर से रस्सियां लपेट लीं ताकि गला और छाती ठंड से बच सकें। क्यारी बंगला पहुंचते-पहुंचते हल्का-हल्का अंधेरा होना शुरू हो गया था। सड़क पर वाहनों का आना-जाना बहुत कम था और उतराई होने के कारण जल्दी ही कंडाघाट पहुंच गए। कंडाघाट और सलोगड़ा के बीच घना जंगल होने के कारण अंधेरा अधिक लग रहा था पर साइकिलें चलाने में कोई दिक्कत नहीं आई। ब्रूरी पहुंच कर चाय पी और उसके बाद तो आराम से चलते हुए लगभग साढ़े सात बजे सोलन पहुंच गए। अविनाश के पास हंसराज जी की किराए वाली साइकिल थी। वह उनके घर जाकर लौटाई और रात में लौटाने पर उनकी डांट खाई। इस तरह एक चिरस्मरणीय साइकिल यात्रा समाप्त हुई।

सतकुल, नजदीक दयानंद स्कूल, सन्नी साइड, सोलन, हिमाचल प्रदेश-173 212, मो. 0 85804 49989

...यायावरों व साहित्यकारों के यात्रा संस्मरणों में हिमाचल की सांस्कृतिक राजधानी

मुरारी शर्मा

ब्यास नदी ब्यास नदी के तट पर बसा मण्डी नगर प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का खजाना तो रहा ही है वहीं हिमाचल की साहित्यिक और सांस्कृतिक स्वर्णिम यात्रा का महत्त्वपूर्ण केंद्र होने के साथ-साथ पश्चिमी हिमालय की ओर जाने वाले अनेक विद्वानों, कवियों और यायावर लेखकों के यात्रा संस्मरणों और डायरी के पन्नों में मण्डी नगर का बार-बार उल्लेख हुआ है। हिमालय की संस्कृति को लेकर प्रसिद्ध समाज शास्त्री पूर्ण चंद जोशी ने लिखा है -हिमालय और उसके आश्रय में स्थित उस विस्तृत भू-भाग का जो आज कई राज्यों के रूप में विभाजित है भारत के भूगोल, इतिहास, अर्थ, समाज, संस्कृति के मूल स्रोत के महत्त्व को जिन लोगों ने समझा उनमें राहुल सांकृत्यायन प्रमुख हैं। पहाड़ी सभ्यता और संस्कृति राहुल की राय में पृथक्ता और विशिष्टता तथा समानता का अद्‌भुत मिश्रण है। इस सभ्यता, संस्कृति की विचित्रता तो इसी में है कि यह कई प्रकार के तत्त्वों, कई धाराओं और प्रभावों के मिश्रण से बनी है। इसलिए आंचलिक भी है और साथ ही बहुआंचलिक भी। इसकी जड़े तो एक अंचल कई अंचलों से जुड़कर बहुआंचलिक चरित्र भी देती है।

राहुल सांकृत्यायन : मण्डी नगर भी हिमालयी संस्कृति और सभ्यता के आंचल में बसा है। महान यायावर लेखक राहुल सांकृत्यायन हिमाचल की यात्रा पर पांच बार आए लेकिन दो बार उन्होंने विशेष तौर से कुल्लू और लाहुल की यात्राएं की। राहुल सांकृत्यायन मण्डी कई बार आए। 19 अप्रैल, 1954 को राहुल सांकृत्यायन रात 8 बजे बिलासपुर से होते हुए मण्डी के बस अड्डे पर पहुंचे थे। इस यात्रा के बारे में वे लिखते हैं कि मण्डी का बाजार काफी बड़ा है जिसके भीतर से चलकर एक जगह बस को पानी में से चलना पड़ा और सवा 8 बजे रात को हम मण्डी के मोटर अड्डे पर पहुंच गए। मण्डी मैं कई बार आ चुका था लेकिन विभाजन के बाद शरणार्थियों का जो रेला आया उसमें उसने बाजार को दूसरा ही रूप दे दिया है। रात कृष्णा होटल में जाकर ठहरे। उन दिनों राहुल सांकृत्यायन जी से मण्डी के युवा सुंदर लोहिया का पत्र के माध्यम से परिचय था। वह उनसे मण्डी में मिले। 20 अप्रैल को सवेरे पहले डिप्टी कमीश्नर अंतानी जी के बंगले पर गए। जो शहर से बाहर बहुत रमणीय स्थल में था, जिसे अंग्रेज दीवान ने अपने लिए बनवाया था। इसमें फुलवारी, बाग, सड़क और अच्छे कमरे मौजूद थे। राहुल जी आगे लिखते हैं कि अंतानी जी ने हर तरह की सहायता देने के लिए कहा और निश्चय हुआ कि साढ़े 10 बजे नीचे ऑफिस में मिलूं। वहां जाने पर उन्होंने अपने अधिकारियों से मण्डी जिले के बारे में आंकड़ों को देने के लिए कह दिया।

भारत में खनिज नमक की एकमात्र खान यहीं है। हमने चाहा उस दफतर से भी नमक की उपज आदि के बारे में बातें मालूम करें लेकिन नमक विभाग तो केंद्रीय सरकार के हाथ में था और अंतानी साहब के हाथों से बाहर की बात थी। वहां से असिस्टेंट ने गुप्त रहस्य कह कुछ भी बताने से इंकार कर दिया। कहा इसके लिए केंद्रीय सरकार को लिखें। दोपहर का खाना खाकर कुछ देर सुन्दरलाल जी और दूसरे मित्रों से बातचीत करके फिर निकले। आज सवेरे के परिदर्शन में शहर के भीतर भूतनाथ मंदिर में हर गौरी की खंडित पुरानी मूर्ति देख चुके थे। अब पुल से ब्यास पार गए जहां पुरानी राजधानी थी। अब उसकी जगह एक गांव तथा बहुत से पुराने परित्यक्त मंदिर हैं। त्रिलोकी नाथ के मंदिर में सम्वत् या शक् 1335 का शिलालेख लगा हुआ है। लेख बडा है। इसमें शक नहीं कि मण्डी का यह भाग हिन्दूकाल का है। मुगल काल में पहले इसको लूटा और ध्वस्त किया गया होगा फिर ब्यास के बाएं किनारे राजधानी बसाई गई। बाईं तरफ भी नदी के किनारे यमराज के मंदिर के अहाते में शिव की कुछ पुरानी मूर्तियां हैं जिससे लगता है कि इधर भी नगर का एक भाग पुराने काल में रहा होगा।

शाम को छह बजे साहित्य सदन में साहित्यकारों की एक छोटी सी मंडली में भाषण दिया और नौ बजे चौहाटा बाजार में सार्वजनिक सभा में शांति पर बोलना पड़ा। अब तक मण्डी के शिक्षकों को मेरे आने का पता लग चुका था। 23 अप्रैल को कुल्लू के लिए रवाना हुए जबकि 24 अप्रैल सुबह भोजन हुताशन शर्मा शास्त्री की ससुराल में था। उन्होंने जल्दी-जल्दी में मण्डी का भोजन तैयार करवाया था साढ़े सात बजे ही हमें अड्डे पर पहुंचना था। इसलिए इतमिनान से कोई काम नहीं हो सकता था। मण्डी में राहुल जी के इस प्रवास में युवाओं को पुरातत्व, लोकगीत, लोक मुहावरों, लोक कला संरक्षण तथा जीवन को वैज्ञानिक तरीके से देखने परखने का गुरुमंत्र दिया था। उनके लोक संवाद में लोगों को विश्व शांति तथा साझी संस्कृति की विरासत को संभालने व संवारने की भी सीख दी। यह राहुल जी के मण्डी प्रवास का ही प्रभाव था कि उस वक्त कई युवाओं ने इतिहास लेखन तथा लोक साहित्य संग्रह का कार्य किया जिससे मण्डी नगर को एक पहचान मिली।

यशपाल : राहुल सांकृत्यायन के बाद हिमाचल से जिस बड़े साहित्यकार का जुड़ाव रहा। वह थे हिमाचल के सपूत और कथा शिल्पी यशपाल। मण्डी जनपद की पृष्ठभूमि पर उनकी कहानी पहाड़ की स्मृति में मण्डी को लेकर कई तरह के संकेत दिए गए हैं। यशपाल मण्डी से कई बार गुजरे। कभी क्रांतिकारी की तरह तो कभी एक यात्री के रूप में। मण्डी का जिक्र उनकी कई कहानियों व उपन्यासों में मिलता है। यशपाल अपने मनाली भ्रमण के दौरान मण्डी में रुके मगर उनका स्वागत समारोह हिंदी साहित्य संगम संस्था सुंदरनगर द्वारा आयोजित किया गया। उनकी अध्यक्षता में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

अज्ञेय : इसी प्रकार छठे दशक में मशहूर साहित्यकार संपादक सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय भी मनाली जाते हुए यहां से गुजरे। वे तब पठानकोट की ओर से आए थे, जब उनकी बस मण्डी के विक्टोरिया पुल से होकर गुजर रही थी। उन क्षणों का वर्णन उन्होंने अपने लेख देवताओं का अंचल कुल्लू में कुछ इस प्रकार किया-यहां से देवताओं का अंचल आरंभ होता है। इसका बड़ा बढ़िया प्रमाण यह मिला कि मानवों की सृष्टि मोटर को देवताओं की सृष्टि मानव के पीछे-पीछे चलना पड़ा। मण्डी से कुल्लू प्रदेश में जाते हुए ब्यास नदी को रस्सी के झूला पुल से पार करना पड़ता है। उस पर लारी का जाना काफी खतरनाक है। लारी चार मील की रफतार से तेज न चले। इसका प्रबंध यह किया गया है कि पुल का चौकीदार अपनी पीठ पर एक तख्ती टांगे जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है-चार मील रफतार। इस आदमी के पीछे-पीछे इसी की चाल से चलो। वह आगे-आगे चलता है और मोटर उसके पीछे चलती है। पुल के दोनों ओर पहरा पड़ा रहता है कि कोई चौकीदार की अनुमति के बिना आरपार न जा सके।

मोहन राकेश : मण्डी नगर में नई कहानी की प्रणेता मोहन राकेश छठे दशक में यहां आए और लाल होटल में ठहरकर उन्होंने अपना रचनाक्रम किया। मण्डी नगर को लेकर उन्होंने नीली रोशनी की बांहें उपन्यास लिखा जिसकी कुछ कड़ियां साप्ताहिक धर्मयुग में प्रकाशित हुई थी। मोहन राकेश के शिष्य साहित्यकार सुंदर लोहिया के अनुसार शाम के समय मोहन राकेश घूमने निकलते थे। एक बार वह विक्टोरिया पुल पर खड़े थे चांदनी रात थी नदी के किनारे स्थित शिवालयों और मंदिरों के अक्स ब्यास में झिलमिला रहे थे। इस पर मोहन राकेश ने कहा था- जिस शहर के पास अपनी नदी होती है वह शहर सबसे सुंदर होता है तब ब्यास की धारा भी साफ -सुथरी और पारदर्शी हुआ करती थी।

कुमार विकल व अवधेश : साहित्यिक संस्थाओं के आयोजन की वजह से भी देश के मशहूर साहित्यकारों का आगमन मण्डी में होता रहा है। वहीं पर कुछ साहित्यकारों से अंतरंग मित्रता की वजह से भी कई महत्त्वपूर्ण साहित्यकार मण्डी में आते रहे हैं जिनमें कवि कुमार विकल और अवधेश कुमार कहानीकार नरेश पंडित के यहां आते रहते थे। वहीं पर कवि प्रफुल्ल कुमार परवेज के यहां महत्त्वपूर्ण समकालीन कवि असद जैदी का भी आना हुआ है। उसी प्रकार कवि कुमार विकल भी नरेश पंडित के यहां बतौर मेहमान रहते रहे हैं। मण्डी प्रवास के दौरान जब वे बीमार पड़ गए और बीमारी की हालत में भी उन्होंने कई कविताएं लिखी, जिनमें ब्यास नदी को लेकर नदी मां कविता उल्लेखनीय है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान : उसी प्रकार प्रदेश में साहित्यिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजना के तहत मध्य प्रदेश के कवियों

का एक दल मण्डी में रूका था। जिसमें मशहूर कवि विनोद कुमार शुक्ल, चंद्रकांत देवताले, भगवत रावत, सत्येन कुमार, मंजूर एहते शाम, राजेश जोशी, कमला प्रसाद, ध्रुव शुक्ल, नरेंद्र जैन, सशांक, अजीत चौधरी तथा पूर्ण चंद्र रथ आदि शामिल थे। स्थानीय गांधी भवन में विशाल आयोजन हुआ जिसमें मध्य प्रदेश और हिमाचल के कवियों ने एक मंच पर कविता पाठ किया। उसी प्रकार मुक्तिबोध सृजन पीठ सागर मध्य प्रदेश के अध्यक्ष वरिष्ठ कवि त्रिलोचन हिमाचल प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ के प्रांतीय अधिवेशन में भाग लेने 11-12 जून, 1988 को मण्डी में पधारे। इस दौरान त्रिलोचन की कविता नगई मेहरा का मंचन किया गया और कथाकार नरेश पंडित ने अभिनय किया था। इसके अलावा प्रख्यात कवि केदारनाथ सिंह ने भी मण्डी में आयोजित साहित्यिक समारोह की अध्यक्षता की। केदारनाथ सिंह ने अपनी मशहूर कविता बनारस का पाठ भी मण्डी में किया था। उनकी इस कविता में बनारस की गलियों, घाटों और मंदिरों की घंटियों के बिम्ब उभरे वे छोटी काशी मण्डी में भी चरित्रार्थ होते हैं। 2007 में आयोजित शिखर संस्था के सम्मेलन में कथाकार संपादक कमलेश्वर भी मण्डी पधारे थे। उनके अलावा देश के कई रचनाकार जिनमें मशहूर उपन्यासकार चित्रा मुदग्ल व अन्य मण्डी की साहित्यक यात्रा के सहयात्री रह चुके हैं।

गिरिराज किशोर : संगमन 2014 के आयोजन में गांधीवादी चिंतक एवं कथाकार गिरिराज किशोर की उपस्थिति उत्साहवर्धक रही। कथाकार प्रियवंद के संयोजन में आयोजित होने वाले इस साहित्यिक आयोजन में देश के लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारों की मौजूदगी ने मण्डी शहर के इस आयोजन को भी यादगार बना दिया था। देश भर के करीब चालीस साहित्यकारों ने दो दिन तक विभिन्न सत्रों में समसामयिक और साहित्यिक मुद्दों पर चर्चा करने के पश्चात् धर्मत्रिवेणी रिवालसर का भी भ्रमण किया।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी : कवि आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के यात्रा संस्मरण का यह अंश गौर योग्य है-अब हम विपाशा के किनारे चल रहे हैं। आगे मण्डी है विपाशा के तट पर बसा एक पहाड़ी कस्बा। 760 मीटर की उंचाई पर बसा यह कस्बा कुल्लू-मनाली और उसके भी आगे की दुनिया के लिए प्रवेशद्वार है। मण्डी का अर्थ बाजार होता है। आगे के दुर्गम पहाड़ों के लोग और लद्दाख आदि के व्यपारी यहां से खरीद-फरोख्त करते होंगें इसीलिए इसका नाम मण्डी पड़ा होगा। वैसे यह भी कहा जाता है कि यहां माण्डव्य ऋषि ने ब्यास के तट पर कठिन तपस्या की थी और उन्हीं के नाम पर इसका नाम मण्डी पड़ा।

हम मण्डी से आगे बढ़ रहे हैं। विपाशा के किनारे-किनारे पत्थरों के छोटे बड़े टुकड़ों के बीच बह रही है विपाशा। जम्मू कटरा के आगे वैष्णव देवी के रास्ते में बाण गंगा बहती है लेकिन बाण गंगा के पत्थर काले रंग के हैं। विपाशा के पत्थरों में अभी सफेदी है। प्रवाह दोनों का एक जैसा है। पहाड़ी नदियों में गहराई नहीं होती। प्रवाह होता है। नीचे विपाशा बह रही है। दोनों तरफ ऊंचे पहाड़। बीच में सडक और बस में हम। जानते हैं कौन सा गीत बज रहा है बस के भीतर! तीसरी कसम फिल्म का गीत है सजनवा बैरी हो गए हमार और फिर सजन रे झूठ मत बोला खुदा के पास जाना है। मैं सोचता हूं अगर क्षण भर के लिए भी ड्राईवर के हाथ से स्टेरिंग इधर-उधर हो जाए तो हम खुदा के पास पहुंच जाएंगे और दोनों ही गाने चरित्रार्थ हो जाएंगे। पिछले पांच दशकों में देश-विदेश के साहित्यकारों की यात्राओं का अहम पड़ाव छोटी काशी के नाम से विख्यात प्रदेश का सांस्कृतिक शहर मण्डी शामिल रहा है...उनकी स्मृतियों में यह बार-बार दस्तक देता रहा है।

133/7 मोती बाजार, मण्डी-175001 हिमाचल प्रदेश।

महान यायावर लेखक राहुल सांकृत्यायन हिमाचल की यात्रा पर पांच बार आए लेकिन दो बार उन्होंने विशेष तौर से कुल्लू और लाहुल की यात्राएं की। राहुल सांकृत्यायन मण्डी कई बार आए। 19 अप्रैल, 1954 को राहुल सांकृत्यायन रात 8 बजे बिलासपुर से होते हुए मण्डी के बस अड्डे पर पहुंचे थे। इस यात्रा के बारे में वे लिखते हैं कि मण्डी का बाजार काफी बड़ा है जिसके भीतर से चलकर एक जगह बस को पानी में से चलना पड़ा और सवा 8 बजे रात को हम मण्डी के मोटर अड्डे पर पहुंच गए। मण्डी मैं कई बार आ चुका था लेकिन विभाजन के बाद शरणार्थियों का जो रेला आया उसमें उसने बाजार को दूसरा ही रूप दे दिया है। रात कृष्णा होटल में जाकर ठहरे। उन दिनों राहुल सांकृत्यायन जी से मण्डी के युवा सुंदर लोहिया का पत्र के माध्यम से परिचय था। वह उनसे मण्डी में मिले।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने के बाद
पूर्ण राज्यत्व तक की
ऐतिहासिक यात्रा से जुड़ी जानकारी

- नेम चन्द ठाकुर
- सुदर्शन वशिष्ठ
- एम. शर्मा
- विनोद भारद्वाज

हिमाचल का प्रशासनिक सफरनामा

नेम चन्द ठाकुर

पन्द्रह अप्रैल सन् 1948 को जब हिमालच प्रदेश का उदय हुआ तभी से यह प्रदेश अपना निश्चित स्वरूप प्राप्त करने के प्रयत्न में रहा। इसका क्षेत्र बढ़ता बदलता रहा। उचित स्वरूप और स्तर प्राप्त करने की इसकी कोशिश के पीछे पहाड़ी लोगों का भारतीय संघ के अन्तर्गत पूर्ण राज्यत्व का दर्जा प्राप्त करने का संकल्प रहा। राजनैतिक उठा-पटक के होते हुए और प्रशासनिक बाधाओं के चलते पहाड़ के लोग समान भाषा, संस्कृति और भूगोल के बंधनों से बंधे हुए परस्पर समीप आने की कोशिश करते रहे। पहाड़ी लोगों के प्रयत्न किसी हद तक सफल हुए और निःसन्देह उनका चिर-संचित स्वप्न आँशिक रूप से साकार हुआ, लेकिन बहुत सी मनोकामनाएं पूर्ण होनी शेष थी।

सन् 1948 में जब 30 पहाड़ी रियासतों के विलय से मुख्य आयुक्त के प्रान्त के रूप में हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ तो उस समय इसका क्षेत्रफल केवल 27,018 वर्ग किलोमीटर था। ये तीस रियासतें थीं- बाघल, बघाट, बलसन, रामपुर बुशहर, खनेटी, देलठ, बेजा, भज्जी, दरकोटी, धामी, जुब्बल, रावीं, ढाढी, क्यौंथल, ठियोग, कोटी, घूण्ड, मधान, रतेश, कुम्हारसेन, कुनिहार, कुठाड़, माँगल, महलोग, शांगरी, थरोच, मण्डी, चम्बा, सुकेत और सिरमौर। 15 अप्रैल सन् 1948 को इन तीस रियासतों ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। हिमाचल प्रदेश के गठन के बाद प्रशासनिक तौर पर इसे चार जिलों चम्बा, मण्डी, महासू व सिरमौर में बांटा गया।

सन् 1950 ईसवी में महासू जिले के कुछ क्षेत्र को घटा बढ़ा कर उसका पुनर्गठन किया गया। कोटखाई के क्षेत्र को खनेटी और दरकोटी रियासतों के क्षेत्र के साथ मिला कर एक स्वतन्त्र उप-तहसील बनाया गया। उसमें कुम्हारसेन उप-तहसील के कुछ गाँव व बलसन रियासत के कुछ क्षेत्र शामिल किये गए। कोटगढ़ का क्षेत्र कुम्हारसेन उप-तहसील में शामिल किया गया। उत्तर प्रदेश के दो गाँव को जुब्बल तहसील में मिलाया गया। पेप्सू का चकरोट क्षेत्र कसुम्पटी तहसील में मिलाया गया। पंजाब से नालागढ़ (पुरानी हिन्डूर रियासत) के सात गाँव को लेकर सोलन तहसील में मिलाया गया। सोलन तहसील में नालागढ़ (पेप्सू राज्य) के सात गाँव को सम्मिलित करने के बदले में कसुम्पटी तहसील के (1) संजौली (2) भराड़ी (3) बाखना (4) रामपुर (5) काटो (6) भरी (7) कसुम्पटी गाँव पंजाब को दिए गए।

सन् 1952 में क्षेत्र में किसी परिवर्तन के बिना यह प्रदेश भाग 'ग' का राज्य बना और इसका अपना एक मन्त्रिमण्डल बन गया। सन् 1954 में 1,163 वर्ग किलोमीटर में फैले भाग 'ग' के राज्य बिलासपुर को भी इसमें मिला दिया गया। बिलासपुर के इसमें मिलने से इसका क्षेत्रफल बढ़कर 28,241 वर्ग किलोमीटर हो गया। बिलासपुर हिमाचल का पांचवां जिला बना।

हिमाचल प्रदेश के गठन के बाद से इस प्रदेश के मुख्यमन्त्रियों और शासनाध्यक्षों का अब तक का विवरण निम्न प्रकार से है -

डॉ. यशवन्त सिंह परमार, मुख्यमन्त्री, 24 मार्च, 1952 से 31 अक्तूबर, 1956

ठाकुर कर्मसिंह, अध्यक्ष - क्षेत्रीय परिषद, 15 अगस्त, 1957 से 1 जुलाई, 1963

डॉ. यशवन्त सिंह परमार, मुख्यमन्त्री, 1 जुलाई, 1963 से 13 मार्च, 1967

डॉ. यशवन्त सिंह परमार, मुख्यमन्त्री, 14 मार्च, 1967 से 15 मार्च, 1972

डॉ. यशवन्त सिंह परमार, मुख्यमन्त्री, 15 मार्च, 1972 से 27 जनवरी, 1977

ठाकुर राम लाल, मुख्यमन्त्री, 28 जनवरी, 1977 से 30 अप्रैल, 1977

राष्ट्रपति शासन, 30 अप्रैल, 1977 से 22 जून, 1977

श्री शांता कुमार, मुख्यमन्त्री, 22 जून, 1977 से 14 फरवरी, 1980

ठाकुर राम लाल, मुख्यमन्त्री, 14 फरवरी, 1980 से 8 अप्रैल, 1983

श्री वीरभद्र सिंह, मुख्यमन्त्री, 8 अप्रैल, 1983 से 8 मार्च, 1985

श्री वीरभद्र सिंह, मुख्यमन्त्री, 8 अप्रैल, 1985 से 4 मार्च, 1990

श्री शांता कुमार, 5 मार्च, 1990 से 15 दिसम्बर, 1992

राष्ट्रपति शासन, 15 दिसम्बर, 1992 से 3 दिसम्बर 1993

श्री वीरभद्र सिंह, मुख्यमन्त्री, 3 दिसम्बर, 1993 से 5 मार्च, 1998

श्री वीरभद्र सिंह, मुख्यमन्त्री, 6 मार्च, 1998 से 23 मार्च, 1998

प्रो. प्रेम कुमार धूमल, मुख्यमन्त्री, 24 मार्च, 1998 से 5 मार्च, 2003

श्री वीरभद्र सिंह, मुख्यमन्त्री, 6 मार्च, 2003 से 29 दिसम्बर, 2007

प्रो. प्रेम कुमार धूमल, मुख्यमन्त्री, 30 दिसम्बर, 2007 से 24 दिसम्बर, 2012

श्री वीरभद्र सिंह, मुख्यमन्त्री, 25 दिसम्बर, 2012 से 26 दिसम्बर, 2017

श्री जयराम ठाकुर, मुख्यमन्त्री, 27 दिसम्बर, 2017 से अब तक।

सन् 1956 में जब राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट (अध्यक्ष श्री फजल अली ने असहमति प्रकट की) में बहुमत से हिमाचल को पंजाब में मिलाने की सिफारिश की गई तो प्रदेश हित में लोग और लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल में उनके प्रतिनिधि एक बहुत बड़े बलिदान अर्थात अपनी विधान सभा को त्यागने के लिए तैयार हो गए। वह हर हालात में हिमाचल का अपना अलग अस्तित्व चाहते थे। केन्द्र प्रशासित क्षेत्र को विधान सभा नहीं मिल सकती थी। यदि उसने ऐसा चाहा ही, तो उसे एक राज्य के साथ विलीन होना पड़ता। जब कोई विकल्प नहीं रहा तो हिमाचल, पंजाब का हिस्सा बनने के बजाय 1 नवम्बर 1956 को उपराज्यपाल नामक प्रशासक के अधीन एक केन्द्र प्रशासित क्षेत्र बन गया। संवैधानिक रूप में प्रदेश उसी अवस्था में पहुँच गया जहाँ से 1948 में यात्रा शुरू की थी।

सन् 1948 में सरदार पटेल ने कहा था कि 'अन्तिम चरण में जब यह क्षेत्र अपने साधनों और प्रशासन की दृष्टि से पर्याप्त रूप में विकसित हो जाएगा तो यह विचार है कि किसी अन्य राज्य की तरह ही इसका संविधान होना चाहिए।' लेकिन सन 1956 में भारत सरकार की इस घोषणा के फलस्वरूप कि अन्ततः इसे पंजाब के साथ विलीन किया जाएगा, प्रदेश का भविष्य अंधकारमय प्रतीत होने लगा। तब तत्कालीन गृह मन्त्री गोविन्द वल्लभ पंत ने इस घोषणा से कि 'हिमाचल को वहाँ के लोगों की
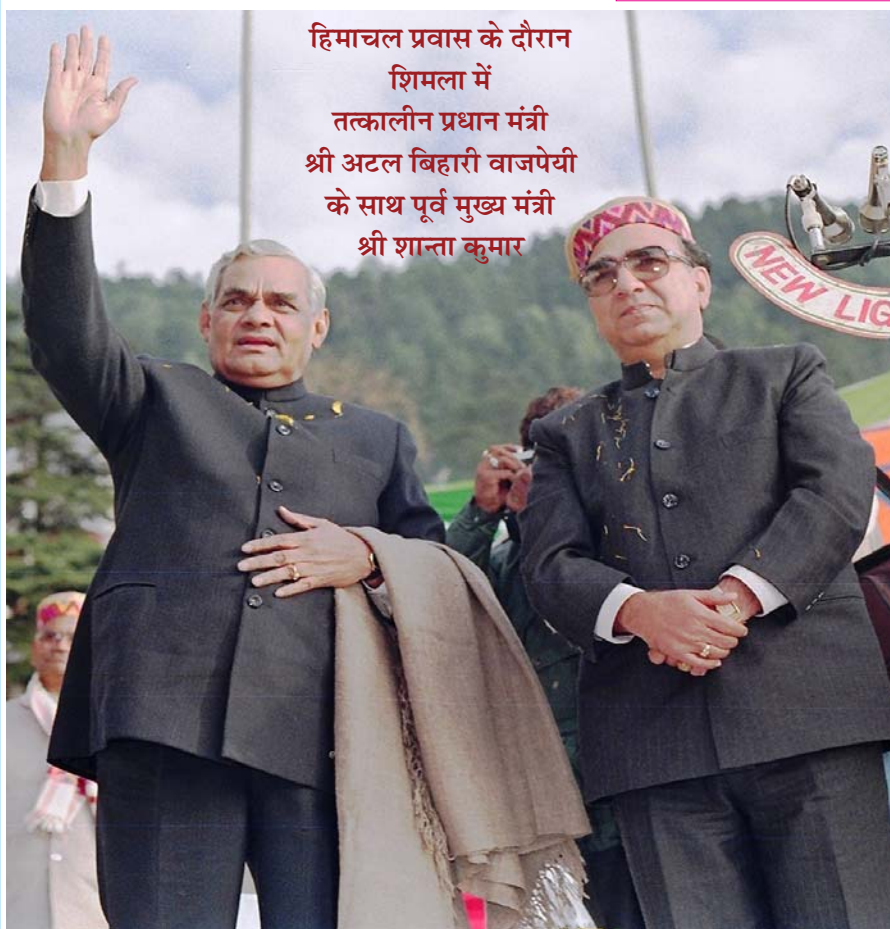
हिमाचल प्रवास के दौरान शिमला में तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ पूर्व मुख्य मंत्री श्री शान्ता कुमार

भावनाओं के विरूद्ध पंजाब में विलीन नहीं किया जाएगा', पहाड़ के लोगों को एक आशा की किरण दिखाई दी।

15 अप्रैल 1957 को हिमाचल प्रदेश में 'टेरीटोरियल कौंसिल' बनी जिसमें प्रजा के प्रतिनिधि लिए गए। यह कौंसिल 'जिला बोर्ड' के समान थी। ठाकुर कर्मसिंह ने इस क्षेत्रीय परिषद के अध्यक्ष के रूप में शपथ ली। प्रशासन के सभी अधिकार उप-राज्यपाल के पास थे। मजबूर होकर पहाड़ के लोगों को शान्तिमय संघर्ष का मार्ग अपनाना पड़ा। अन्ततः केन्द्रीय गृह मन्त्री लाल बहादुर शास्त्री ने 29 मार्च 1961 को लोक सभा में एक वक्तव्य दिया- 'यह उचित होगा कि हम अधूरे मन से निर्णय न लें और जन-प्रतिनिधियों को जो अधिकार देना चाहते हैं, दें ताकि वे अपना प्रशासन स्वयं चला सकें।' केन्द्रीय गृह मन्त्री के इस वक्तव्य ने लोगों में आशा की एक किरण जगा दी। सन् 1962 के चुनाव के बाद 'हिमाचल क्षेत्रीय परिषद' ने फिर से केन्द्र सरकार से प्रदेश के लिए लोकप्रिय सरकार की माँग की। लोगों की भावनाओं को देखते हुए लोकसभा ने 1963 में गवर्नमेंन्ट ऑफ यूनियन एक्ट 1963 पास किया। इसके फलस्वरूप जुलाई 1963 को हिमाचल प्रदेश क्षेत्रीय परिषद को हिमाचल प्रदेश विधान सभा में परिवर्तित कर दिया गया। एक जुलाई 1963 को हिमाचल प्रदेश में एक बार फिर लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल की स्थापना हुई। डॉ. यशवन्त सिंह परमार दूसरी बार हिमालच प्रदेश के मुख्यमन्त्री बने। इस संघर्ष के फलस्वरूप सात वर्ष बाद इस दुःखद अध्याय का अन्त हुआ।

इससे पूर्व आर्थिक विकास और अन्य राजनैतिक कारणों को ध्यान में रखते हुए एक मई 1960 को महासू जिला का आकार छोटा करके इसकी चीनी तहसील में रामपुर के चौदह गांवों को मिलाकर एक नये जिले का निर्माण किया गया। किन्नौर के रूप में आए इस छठे जिले को तीन तहसीलों निचार, कल्पा व पियो में बाँटा गया।

सन् 1965 में पंजाब के पुनर्गठन के प्रश्न पर पुनर्विचार हुआ। इसके कारण पंजाब और हिमाचल के पहाड़ी लोगों को अपनी उस चिर-प्रतीक्षित मांग पर फिर से बल देने का मौका मिल गया जिसे उन्होंने राज्य पुनर्गठन आयोग के समक्ष रखा था। अन्ततः उनका संघर्ष रंग लाया और पहली नवम्बर 1966 को काँगड़ा, कुल्लू, शिमला और लाहौल-स्पीति के जिलों और अम्बाला का नालागढ़ उप-मण्डल, जिला होशियारपुर की ऊना तहसील के कुछ भाग और जिला गुरदासपुर के डलहौजी और बकलोह क्षेत्रों को मिलाकर हिमाचल प्रदेश को विस्तृत आकार दिया गया।

हिमाचल प्रदेश को वर्तमान स्वरूप मिल गया था लेकिन डॉ. यशवन्त सिंह परमार के मन में एक टीस रह गई। उनके अनुसार, 'इस ऐतिहासिक घटना पर विस्तृत प्रदेश में सभी जगह उत्साह की एक लहर दौड़ गई और लोगों ने इसमें परस्पर इकट्ठे होने की चिर-संचित आकाँक्षा की पूर्ति देखी। लेकिन साथ ही लोगों ने यह चुभन भी महसूस की कि तहसील पठानकोट, उप-तहसील कालका, नारायणगढ़ की मोरनी हिल्ज, उप-तहसील कलसिया के कालेसर, ऊना तहसील के भागों, मुकेरियाँ उप-तहसील और इनके अतिरिक्त गढ़वाल और जम्मू-काश्मीर के लोग उनके इस नये प्रयत्न में साथ नहीं दे सके।' इस प्रकार हिमाचल प्रदेश का आकार बढ़कर 55,673 वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या 34,24,323 हो गई।

इसके बाद प्रदेश को प्रशासनिक आधार पर दस जिलों में

बाँटा गया :

बिलासपुर, चम्बा, काँगड़ा, किन्नौर, कुल्लू, लाहौल-स्पीति, महासू, मण्डी, शिमला, सिरमौर।

प्रदेश के मुख्यमन्त्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश सरकार ने पूर्ण राज्य की माँग केन्द्रीय सरकार से उठाई। 31 जुलाई 1970 को तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने लोकसभा में हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की घोषणा की। तत्पश्चात 18 दिसम्बर 1970 ईसवी में 'स्टेट ऑफ हिमाचल प्रदेश एक्ट 1971' पेश किया गया। 25 जनवरी 1971 ईसवी को श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने स्वयं शिमला आकर यहाँ के ऐतिहासिक रिज में भारी बर्फबारी के बीच हजारों की संख्या में उपस्थित हिमाचलवासियों के समक्ष हिमाचल प्रदेश का भारत के अठारहवें पूर्ण राज्य के रूप में उद्घाटन किया।

पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के बाद प्रदेश के विभिन्न भागों से जिलों के पुनर्गठन की माँग उठने लगी। प्रशासकीय तौर पर भी यह महसूस किया जाने लगा था। परिणामस्वरूप 29 अगस्त 1972 को जिलों के पुनर्गठन को मन्त्रिमण्डल ने अनुमोदित कर दिया। इसके बारे में 2 सितम्बर 1972 को शिमला में रिज पर एक भारी जन समूह को सम्बोधित करते हुए हिमालच प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार ने कहा कि 'हिमाचल में जिलों का पुनर्गठन देशभर में एक अनुपमेय उदाहरण प्रस्तुत करता है, यद्यपि कई अन्य राज्यों में भी नये जिलों का निर्माण हुआ है। हिमाचल में जिलों का यह परिमेयकरण न केवल जनसाधारण के लिए और अधिक सुविधाएँ जुटाने अथवा उनकी आकाँक्षाओं को पूरा करने में सफल हुआ है।'

इस दौरान डॉ. यशवन्त सिंह परमार ने कहा था कि 'शिमला और महासू के लोग हमेशा से अपने आपको एक समझते आये हैं यद्यपि भिन्न प्रशासन व्यवस्थाओं के अन्तर्गत इनको रहना पड़ा।' परमार ने कहा कि 'जिलों का आकार छोटा होना चाहिए ताकि दूरपार के इलाकों में रहने वाले लोगों की तरफ भी ध्यान दिया जा सके। हिमाचल में इससे पूर्व सभी आकार के जिले होने के कारण यह अनुभव हो गया कि छोटे जिले बड़े जिले की अपेक्षा जल्दी से प्रगति करते हैं।'

इसी जनसभा में डॉ. यशवन्त सिंह परमार ने शिमला और सोलन जिलों के सीमाँकन के सन्दर्भ में कहा कि पहाड़ों के इन हिस्सों में रहने वाले छः लाख लोग एक जिला बने रहने की बात पर भी राजी थे यदि महज ऊना को ही एक जिला बनाने की बात की जाती। हालाँकि हमीरपुर के लोग ऊना से मिलने पर राजी नहीं थे और उन्हें धर्मशाला जाने की असुविधा से बचाने के लिए एक अलग जिला बनाना पड़ा। अब क्योंकि हिमाचल प्रदेश एक पूर्ण राज्य है, इसलिए सरकार ने दो नये जिले बनाने का निश्चय किया ताकि सभी लोगों की आकाँक्षाओं को पूरा किया जा सके। महासू के लोग अपने जिले का नाम बदलने और शिमला का नाम अपनाने के लिए राजी होने पर विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि इस स्थिति में नये जिलों को 50 लाख रुपये प्राप्त होंगे जिससे लाखों लोग लाभान्वित होंगे।

इस प्रकार महासू जिला की सोलन और अर्की तहसीलें निकालकर तथा शिमला जिला की कण्डाघाट और नालागढ़ तहसीलों को सोलन और अर्की में मिलाकर नये जिले सोलन का गठन किया गया जिसका मुख्यालय सोलन रखा गया। दूसरा जिला हमीरपुर बनाया गया। इस जिले में काँगड़ा की हमीरपुर और बड़सर तहसीलों को शामिल किया गया। इस तरह हिमाचल प्रदेश के मानचित्र पर दो नये जिले सोलन और हमीरपुर उभरकर सामने आए और कुल जिलों की संख्या 12 हो गई।

28 नवम्बर, 1972 को तत्कालीन मुख्यमन्त्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार की अध्यक्षता में हुई मन्त्रिमण्डल की बैठक में निर्णय लिया गया कि परवाणू में योजनाबद्ध तरीके से एक औद्योगिक नगर स्थापित किया जाए और यदि आवश्यक हुआ तो इस सिलसिले में एक उपयुक्त विधान लाया जाए। इसके अतिरिक्त मन्त्रिमण्डल ने पाँवटा साहिब (सिरमौर), संसारपुर टैरेस, नगरोटा बगवाँ, डमटाल कन्द्रोड़ी (काँगड़ा), नालागढ़, बरोटीवाला-परवाणू (सोलन जिला), बिलासपुर (बिलासपुर), मैहतपुर (ऊना) और छोलटू (किन्नौर) में भी औद्योगिक नगर बसाए जायेंगे। यह डॉ. परमार की दूरदर्शिता थी कि आज परवाणू, बद्दी, बरोटीवाला, नालागढ़ सोलन जनपद में विश्वस्तर पर अपनी पहचान बनाए हुए स्थापित औद्योगिक नगर है।

पूर्ण राज्यत्व का दर्जा प्राप्त करने के बाद गत् 50 वर्षों में हिमाचल प्रदेश ने विकास की जिन ऊँचाइयों को छुआ है वह अन्य पहाड़ी राज्यों के लिए प्रेरणादायक है। इस अवधि के दौरान प्रदेश ने सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में क्रॉंतिकारी परिवर्तन लाकर चहुंमुखी विकास में नये आयाम स्थापित किए हैं। विगत पचास वर्षों में हिमाचल प्रदेश ने अपने अस्तित्व, भौगोलिकता, आकार-प्रकार और पूर्ण राज्यत्व की प्राप्ति के लिए अनेक दुष्कर रास्तों को तय किया है। कठिन भौगोलिक स्थिति, आवागमन के साधनों की कमी, आर्थिक विपन्नता और संसाधनों के अभाव ने दूसरे साधन सम्पन्न राज्यों के लोगों के मन में यह भ्रॉंति पैदा कर दी थी कि गरीबी और पिछड़ापन ही इस प्रदेश की नियति है लेकिन यहाँ के कर्मठ एवं परिश्रमी लोगों ने इस चुनौती को स्वीकार किया। यहाँ की राजनैतिक स्थिरता भी इस प्रदेश के विकास का मुख्य कारण रहा जिससे यह प्रदेश आत्मनिर्भरता के मार्ग पर अग्रसर है।

जल-शक्ति विभाग- बी शाखा
हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला
मोबाईल नं. 0 94180 33783

हिमाचल प्रदेश की स्थापना और स्वर्णिम यात्रा

सुदर्शन वशिष्ठ

25 जनवरी 1971 से पहले हिमाचल प्रदेश एक पूर्ण प्रदेश नहीं था। प्रथम नवम्बर 1966 से पहले तो यह एक बिखरा प्रदेश था। पहाड़ी प्रदेश के तत्कालीन रूप को अलग-अलग खण्डों में देखा जाता था। सिरमौर से महासू एक खण्ड। इधर को मंडी हिमाचल में तो कुल्लू से कांगड़ा अलग। सुदूर चंबा हिमाचल प्रदेश में जोड़ दिया मगर भौगोलिक दृष्टि से कोई जुड़ाव नहीं। पुराने महासू में भी पूरा क्षेत्र हिमाचल में नहीं था। कोटगढ़, कोटखाई पंजाब के शिमला जिले की एक तहसील थी। शिमला भी पंजाब में था। जब मैं जुलाई 1965 में शिमला आया और एस.डी.वी. कॉलेज में दाखिला लिया तो कहीं भी आभास नहीं हुआ कि यहां हिमाचल प्रदेश का अस्तित्व भी है। शिमला में पंजाब पुलिस होती थी। हम क्योंकि पालमपुर से आए थे तो वह भी पंजाब में था। वहां मंडी से पठानकोट के लिए पीले रंग की सरकारी छोटी बसें आती थीं जो पुराने हिमाचल की परिचायक थीं। कांगड़ा में तो उस समय भी सरकारी बसों के अलावा प्राइवेट बसों की भरमार थी।

हां, शिमला का अपना एक अलग अस्तित्व था, एक अलग ही सभ्यता और संस्कृति थी। एक ब्रिटिश कॉलोनी की तरह यहां अंग्रेजों की आत्माएं वास करती थीं। गोथिक स्टाइल की ऊंची-ऊंची बिल्डिंगों के अलावा सूटबूट और टाई की पाश्चात्य सभ्यता यहां वास करती थी जो आज तक अपना प्रभाव लिए हुए है। शिमला के लोगों की ड्रेस सेंस को देख बाहर के लोग हैरान होते थे। एक सम्भ्रांत और सम्पन्न समाज के विपरीत उस समय एक अतिविपन्न समाज भी था। शिमला में मानव चलित रिक्शा भी चलते थे। दो आदमी घोड़े की तरह रिक्शे में आगे जुत कर तेजी से दौड़ते। शाही सवारी तो चढ़ाई में दो आदमी पीछे से धकेलते। सवारी के स्टेटस के मुताबिक इनका अपना ड्रेस कोड भी था। माल रोड़ पर वर्तमान रोटरी हॉल के सामने ये खड़े रहते। बस स्टैण्ड, छोटा शिमला की ओर लेबर हॉस्टल में भी इनका अड्डा था। बस स्टैण्ड (अब लोकल) में गुरुद्वारे से पीछे एक शेड में एक बूढ़ा हुक्का लिए लेटा रहता। यहां बस में आने वाले यात्रियों का सामान भी रखा जाता था जो रात के समय दूर के घरों में ले जाना सम्भव नहीं होता। लोग अगले दिन यहां से सामान ले जाते क्योंकि रात को कोई मजदूर नहीं मिलता था। बहुत से मजदूर यहां रात को रहते थे। अंग्रेज कम हो गए तो देसी

अमीर और हाकिम इन रिक्शों की सवारी करने लगे।

1965 के युद्ध में एनसीसी में होने के कारण रात को ब्लेक आउट चैक करने की हमारी ड्यूटियां लगीं। उस समय वर्तमान सचिवालय का पुराना भवन शायद खाली था। हम एनसीसी कैडेट वहीं इकट्ठा होते और एक रात इसी भवन में रहे।

प्रथम नवम्बर 1966 को विशाल हिमाचल के गठन से पूर्व शिमला में हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व का भान नहीं होता था। यहां शिमला हिल्ज के राजा राणाओं के उनकी रियासत के नाम से आवास थे जिनके बाहर गुमटी में पुलिस तैनात रहती थी। दूसरे नामों के अलावा इन भवनों को उनकी रियासत के नाम से ज्यादा जाना जाता था जैसे जुब्बल हाउस, बुशहर हाउस, नालागढ़ हाउस आदि-आदि। वह प्रिवि पर्स का जमाना था अतः राजा-राणाओं का अस्तित्व बना हुआ दिखता था। हिमाचली राजाओं के अलावा कुछ पंजाब के राजाओं के नाम से भवन थे जैसे नाभा हाउस, पटियाला हाउस।

पर्वतीय जनता का स्वाधीनता संग्राम में दखल

प्रदेश की पहाड़ी जनता का देश के स्वाधीनता संग्राम में बराबर योगदान बना रहा। 1857 की क्रान्ति में यहां की रियासतों के रियासती राज में राजा राणाओं तथा जनता ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और जगह-जगह विद्रोह हुए।

इस जनक्रान्ति की सूचना हिमाचल में ग्यारह मई तक पहुंची जिसके बाद रियासतों में विद्रोह की चिंगारी फैल गई।

जनक्रान्ति और अंग्रेजी तख्ता पलटने के आरोप में कुल्लू के प्रताप सिंह और उनके साले बीरसिंह को धर्मशाला में 3 अगस्त 1857 को फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। शेष बारह क्रान्तिकारियों को फांसी का दृश्य दिखा कर छोड़ा गया। प्रतापसिंह के महल को गिरा दिया गया और पत्नी की जागीर व पेंशन जब्त कर लीं। रानी रणपतू और उसके पुत्र को देश निकाला दिया गया।

शिमला में हुई क्रान्ति को ''शिमला आतंक'' के नाम से जाना जाता है जब यहां रह रहे अंग्रेजों को अपनी जान बचाने के लिए स्थानीय राजा राणओं के पास शरण लेनी पड़ी। कुछ कसौली जा छिपे। शिमला बाजार में एक गोरखा सैनिक ने खुखरी से एक अंग्रेज को मार दिया। लगभग आठ यूरोपीय चर्च और वर्तमान ग्रैंड होटल मे छिपे। इंग्लैंड के समाचार पत्रों में यहां का समाचार ''शिमला आतंक'' तथा ''शिमला कत्लेआम'' शीर्षक से छापा गया।

कांगड़ा के टिहरा में संसारचंद के पौत्र प्रताप चंद ने विद्रोह किया। टिहरा के किले में हथियार, गोला बारूद इकट्ठा कर लिया। इस विद्रोह में टिहरा के थानेदार ने भी साथ दिया मगर क्रान्ति सफल न हो पाई। इसी तरह हिमाचल की अन्य रियासतों में भी विद्रोह फैला किंतु सफल नहीं हो पाया।

ग्रीष्मकालीन राजधानी बनी शिमला

शिमला की स्थापना के इतिहास में जाएं तो स्कॉच अधिकारी 30 अगस्त, 1817 की अपनी डायरी में लिखते हैं ''...... शिमला एक मझोला-सा गांव, जहां राहगीरों को पानी पिलाने के लिए एक फकीर रहता है....... हम जाखू की ओर ठहरे और वहां से बहुत मनोरम और सुन्दर दृश्य देखा।''

मि. ए. विलसन का मत है कि शिमला की खोज उन स्कॉच अधिकारियों ने की जो सतलुज घाटी के सर्वे के लिए आए थे। दूसरा मत यह भी है कि 1816 में गोरखा सेना को कोटगढ़ ले जाते समय एक अंग्रेज अफसर द्वारा यह गांव खोजा गया जो घने जंगल और जानवरों से भरा था। आज के शिमला को पुरानी श्यामला देवी के नाम से भी जोड़ा जाता हैं जो जाखू में रहने वाले एक साधु द्वारा पूजी जाती थी।

'बड़ी सरकार' के लिए समर कैपिटल की खोज चाहे किसी ने भी की हो, उसके पहले यह एक छोटा सा पहाड़ी गांव था-वर्तमान रिपन अस्पताल से ऊपर और रोमन कैथलिक चर्च के नीचे।

1815 में इस गांव को जींदराणा से लेकर राजा पटियाला को नेपाल की लड़ाई में अंग्रेजों का साथ देने के लिए दिया गया। भावी शिमला कहलाने वाला भू-भाग राजा पटियाला और राजा क्योंथल के अधिकार में था।

सन् 1819 में पहाड़ी रियासतों के असिस्टेंट पॉलिटिकल एजेंट कैप्टन रॉस ने शिमला में पहला कॉटेज बनाया। सन् 1822 में उनके उत्तराधिकारी कैप्टन कैनेडी नें पहला मकान यहां बनाया। सन् 1824 में कुछ अंग्रेजों ने राणा क्योंथल से इजाजत ले कर कुछ मकान बनाए क्योंकि शिमला की जमीन क्योंथल की थी। राणा क्योंथल ने यह शर्त लगाई कि यहां पेड़ों को न काटा जाए और जंगली जानवरों को भी न मारा जाए।

सन् 1827 में गर्वनर जनरल लॉर्ड एमहर्स्ट का आगमन हुआ और शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाने का विचार आया। सन् 1830 में क्योंथल तथा पटियाला से जमीन लेकर शिमला स्टेशन आबाद किया गया। लॉर्ड एमहर्स्ट ने राजधानी के निर्माण बारे राणा क्योंथल से बातचीत की। क्योंथल से बारह गांव, जिनकी मालगुजारी 937 रुपए थी, लिए गए और इसके बदले परगना रावीं में शराचली और गठासू के इलाके दिए, जिनकी वार्षिक मालगुजारी 1289 रुपए थी, (जो अंग्रेजों ने अपने पास रखा हुआ था) दिया गया।

1830 में हिल स्टेट्स के पहले पोलिटिकल एजेंट मेजर कैनेडी ने राजा क्योंथल, राणा संसार सेन से 13 गांवों की एक पहाड़ी ली। यहां केनेडी हाउस का निर्माण हुआ, जो शिमला में बनने वाला पहला भवन था। इसी वर्ष पोलिटिकल एजेंट ने कोटी रियासत से भी कुछ भूमि ली।

शिमला हिल स्टेट्स से बना हिमाचल

हिमाचल प्रदेश का गठन शिमला हिल स्टेट्स और मण्डी व चम्बा रियासतों से हुआ। पंजाब हिल स्टेट्स अलग रह गई।

पंजाब हिल स्टेट्स में कांगड़ा के अलग रहने का मुख्य कारण यह भी था कि कांगड़ा के शासक महाराजा संसारचंद की महलमोरियां में गोरखों से हार के बाद कांगड़ा किला छुड़ाने के प्रयास में पूरा इलाका महाराजा रणजीत सिंह के हाथ आ गया। कांगड़ा के मुख्य शासक कटोच वंश के बाद पूरा क्षेत्र छोटी-छोटी रियासतों में बंट गया जो सिखों के अधीन हो गईं। इनका अपना अस्तित्व न रहा। अतः मण्डी, चम्बा, बिलासपुर की भान्ति यहां अंग्रेजों के अधीन स्वतन्त्र शासक नहीं थे। पंजाब का फैसला ही इन इलाकों पर लागू होता था।

अतः कुल्लू, लाहौल स्पीति, भंगाल, कांगड़ा तथा इसकी शाखाएं : गुलेर, जसवां, सीब्बा, दतारपुर, नूरपुर, कुटलेहड़ का विलय हिमाचल प्रदेश में उस समय नहीं हो पाया।

पंजाब हिल स्टेट्स के अंग्रेजों से पहले ही सिखों के अधीन आने से हक हकूक नहीं रहे थे जबकि शिमला हिल स्टेट्स के हक हकूक अंग्रेजों ने दिए थे।

शिमला हिल्स में रियासतों के हक हकूक

गोरखों के शासन की समाप्ति के बाद अंग्रेज सरकार द्वारा सभी शासकों को उनके हक हकूक वापिस किए गए जबकि कांगड़ा में सब रियासतें सीधे सिखों के अधीन चली गई। शिमला हिल्स में रियासतें पुश्त दर पुश्त के लिए लौटाई गई और बेगार के बदले रियासत की वार्षिक आय आंकने के बाद तदनुसार खिराज या कर निर्धारित किया गया। शासकों को व्यस्क होने पर ही गद्दीनशीन किया गया। सभी रिसासतों के राणाओं और ठाकुरों को अंग्रेजों द्वारा वार्षिक आय के अनुसार ''हिज हाइनेस'' लिखने, राजा या राणा लिखने, तोपों की सलामी लेने की सुविधा दी गई थी। इन में सबसे अधिक 13 तोपों की सलामी का अधिकार हिज हाइनेस शमशेर प्रकाश राजा सिरमौर को था। मण्डी, कहलूर, चम्बा, सुकेत को 11 तोपों की सलामी का हक था। इसी हक के अनुसार ये दरबार में तरतीबवार बैठते थे।

हिंद सरकार की विदेश विभाग की चिट्ठी नम्बरी 5731 तिथि 8 फरवरी, 1889 के अनुसार जिन्हें दस या इससे अधिक तोपों की सलामी दी जाती थी, उन्हें ''हिज हाइनेस'' लिखने का हक था। इस सूची में तीस रियासतों का तरतीबवार विवरण दिया गया है।

सन् 1857 की क्रान्ति में जिन पहाड़ी शासकों ने अंग्रेजों का साथ दिया उन्हें भी ठाकुर से राणा और राणा से राजा बनाया गया।

शिमला हिल स्टेट्स में किसी को भी तोपों की सलामी का हक नहीं दिया गया। इन्हें शिमला पहाड़ी रियासतों के सुपरिटेंडेंट की निगरानी में रखा गया। उक्त चिट्ठी के अनुसार इन शासकों में केवल क्योंथल और बाघल को 'राजा' लिखा गया है शेष को 'राणा'। कुनिहार और सांगरी के शासकों को ठाकुर लिखा गया। रईस बाजगुजारों की सूची में खनेटी, देलठी, कोटी, ठियोग, मधाण, घूंड, रतेश के शासकों को 'ठाकुर' लिखा गया।

शिमला हिल्स की सत्ताईस रियासतों द्वारा 8 मार्च 1948 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए गये। ये रियासतें थीं क्योंथल, जुब्बल, बुशहर, कोटी, ठियोग, मधांण, घूंड, खनेटी, देलठ, बाघल, बघाट, रावीं, ढाडी, कुमारसेन, भज्जी, महलोग, बलसन, धामी, कुठाड़, कुनिहार, अर्की, मांगल, बेजा, दरकोटी, शांगरी, थरोच और रतेश। मण्डी के राजा जोगेन्द्र सेन द्वारा 14 मार्च को विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए गये। 23 मार्च, 1948 को नाहन के चौगान में सिरमौर के महाराजा राजेन्द्र प्रकाश ने हस्ताक्षर किए। भारत सरकार द्वारा चम्बा में पुलिस भेजी गई और चम्बा के राजा ने भी हस्ताक्षर कर दिए। शिमला हिल्स को जिला महासू नाम दिया गया। चम्बा, मण्डी तथा सिरमौर अलग इकाइयां रहीं। उस समय इस प्रोविंस का क्षेत्रफल 27,018 वर्ग किलोमीटर था। सन् 1952 तक यह चीफ कमिशनर प्रोविंस के रूप में ही कार्य करता रहा।

हिमाचल प्रदेश : वर्तमान नामकरण

स्वाधीनता संग्राम के अंतिम चरण में प्रदेश के नामरकण पर भी विचार होने लगा। पहला विचार ''हिमाचल प्रान्त'' नाम का आया। प्रजामण्डल के नेताओं ने 4 जनवरी 1948 को शिमला में, 13 जनवरी को कोटगढ़ में और 19 जनवरी को रामपुर में कांफ्रेंस कर ''हिमालय प्रान्त'' के गठन का प्रस्ताव रखा। हिमालयन हिल रीजनल सब कांउसिल ने भी ''हिमालय प्रान्त'' नाम की पुष्टि की। 25 जनवरी को गंज मैदान शिमला में डॉ. वाई.एस. परमार की अध्यक्षता में एक जनसभा हुई जिसमें पं. पद्मदेव, लीलादास वर्मा, शिवनंद रमोल, संतराम कांगा, दौलतराम सांख्यान, देवी दास मुसाफिर, स्वामी पूर्णानंद, दौलतराम गुप्ता, सदाराम चंदेल, दुर्गासिंह राठौर आदि शामिल थे। इस सभा में भी ''हिमालय प्रान्त'' के ही गठन का प्रस्ताव पारित किया गया।

प्रदेश के नामकरण के बारे में सोलन में हुई सभा महत्त्वपूर्ण रही। बघाट के राजा दुर्गासिंह और मण्डी के राजा जोगेन्द्रसेन ने दिल्ली में महात्मा गांधी से भेंट की और 26 जनवरी 1948 को प्रजामण्डल के नेताओं की सोलन में एक सभा बुलाई। इस सभा में सत्ताईस रियासतों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनमें भागमल सौहटा (जुब्बल), जियालाल (शरकोटी), केवलराम चंदेल (कुमारसेन), ठाकुर हरिदास (कुनिहार), देवीराम केवला (क्योंथल), पं. सीमाराम (धामी), भास्करानंद (भज्जी), हीरासिंह पाल (बाघल), चिंतामणि (महलोग), बुधराम (सोलन) आदि थे।

अब तक पद्म-परमार तथा सौहटा-बुशहरी अलग धड़े बन चुके थे।

सोलन की इस सभा में बघाट के राजा दुर्गासिंह को अध्यक्ष चुना गया, भागमल सौहटा को सदन का नेता और महावीर को

सचिव। दरबार हॉल में तिरंगा लहराने के बाद कार्यवाही आरम्भ हुई। सभा में देशी रिसासतों के ''रियासती संघ' और प्रजामण्डल के ''हिमालय प्रान्त'' नामों पर विचार विमर्श हुआ। रियासती संघ के नाम पर राजाओं ने समझौते का प्रस्ताव रखा।

सभा में आखिरकार इस रियासती संघ का नाम ''हिमाचल प्रदेश'' रखा गया। कुंवर मोहन सिंह(बाघल) ने प्रस्ताव रखा कि शिमला की 25 रियासतें 'हिमाचल प्रदेश' के गठन पर अपनी सत्ता सरकार को सौंप देंगी। गृह मन्त्री केन्द्र सरकार सरदार पटेल को भी यह प्रस्ताव भेजा गया कि पंजाब की समस्त रियासतों को भी ''हिमाचल प्रदेश'' में विलय कर एक बड़ा प्रान्त बनाया जाए। इस कार्य के लिए एक आठ सदस्यीय कमेटी बनाई गई जिसमें राजा दुर्गासिंह, भागमल सौहटा, ठाकुरसेन नेगी, सत्यदेव बुशहरी, कुंवर मोहन सिंह और हीरासिंह पाल थे। सम्मेलन के बाद गंज बाजार सोलन में सभा करके 25 पहाड़ी रियासतों को मिला कर 'हिमाचल प्रदेश' बनाने की घोषणा की गई।

27 जनवरी को 'द ट्रिब्यून' में ''भारत के मानचित्र पर एक नया सितारा हिमाचल प्रदेश'' खबर प्रकाशित हुई।

स्वाधीनता के इस प्रयास में पड़ोसी राज्य भी सोच विचार में लगे हुए थे। कुछ नेता महापंजाब बनाने के हक में थे तो कुछ टिहरी गढ़वाल, सिरमौर और शिमला की रियासतों को उत्तर प्रदेश में मिलाना चाहते थे। महाराजा पटियाला के समर्थक नालागढ़, क्योंथल, सिरमौर, चम्बा और शिमला हिल्स को मिला कर कोहीस्तान बनाना चाहते थे। इधर टिहरी गढ़वाल के नेता इस पहाड़ी राज्य को अपनी ओर मिलाना चाहते थे। यहां के पहाड़ी नेताओं ने अपना अलग संघर्ष चलाया। एक ओर डॉ. यशवंत सिंह परमार और पं. पद्मदेव थे तो दूसरी ओर सत्यदेव बुशहरी और भागमल सौहटा। परमार, पद्म ने हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काउंसिल अलग बना ली।

8 फरवरी 1948 को ये लोग डॉ. पट्टाभि सीतारम्मैया से मिले तो सोलन सभा के प्रस्ताव का विरोध किया। इन्होंने 12 फरवरी को तत्तापानी में एक बैठक कर के सुकेत सत्याग्रह की योजना बनाई और रीजनल काउंसिल की ओर से सुकेत के राजा लक्ष्मणसेन को रियासत संघ में विलय के लिए नोटिस भेजा। अंततः सुकेत को भारत सरकार की फौज ने सम्भाल लिया और यहां एक अंतरिम सरकार बनाई गई जिसका अध्यक्ष सिरमौर के शिवानंद रमौल को बनाया गया।

इस बीच 'मिनिस्ट्री ऑफ स्टेट्स' के अधिकारियों से पद्म-परमार तथा सौहटा-बुशहरी अलग अलग मिलते रहे। अखिल भारतीय लोक राज्य परिषद् की प्रथम मार्च को पटियाला में हुई बैठक में डॉ. पट्टाभि सीतारम्मैया से डॉ. परमार व दौलतराम सांख्यान ने भेंट की। 2 मार्च 1948 को 'मिनिस्ट्री ऑफ स्टेट्स' ने दिल्ली में पंजाब तथा शिमला हिल्स स्टेट्स के शासकों की बैठक बुलाई। इस बैठक में मिनिस्ट्री के सचिव सी.सी. देसाई ने शासकों से बिना शर्त विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने को कहा। बघाट नरेश दुर्गासिंह ने सोलन सभा के अनुसार 'हिमाचल प्रदेश' में विलय का प्रस्ताव रखा। सचिव द्वारा विरोध के कारण बैठक का बहिष्कार किया और अगले दिन भागमल सौहटा तथा बुशहरी के साथ सरदार पटेल से भेंट की। सरदार पटेल ने इन्हें देशी राज्य सचिव बी.पी. मेनन से मिलने को कहा। इस शिष्टमण्डल के आग्रह पर ''हिमाचल प्रदेश'' नाम से इस क्षेत्र का चीफ कमिशनर प्रान्त और फिर उपराज्यपाल तथा राज्यपाल वाला प्रान्त बनाने का निश्चय हुआ और शासकों ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

अतः 8 मार्च 1948 को शिमला हिल्स की 27 रियासतों के विलय से 'हिमाचल प्रदेश' बनाने की प्रक्रिया आरम्भ हो गई।

पद्म-परमार धड़े द्वारा इस घोषणा का स्वागत करते हुए ''हिमाचल प्रदेश'' के स्थान पर ''हिमालय प्रान्त'' नाम रखने का आग्रह किया गया किन्तु सरदार पटेल ने 'हिमाचल प्रदेश' नाम का ही अनुमोदन दिया।

पहाड़ी रियासतों के विलय की प्रक्रिया

अंग्रेजी राज के समय पर्वतीय क्षेत्र की राजनैतिक इकाई को ''शिमला हिल स्टेट्स'' के नाम से जाना जाता था। शिमला क्षेत्र में जो रियासतें थीं, उन्हें शिमला हिल स्टेट्स कहा जाता और जो क्षेत्र पंजाब थे, (जिन्हें जालन्धर डिविजन भी कहा जाता था), उन्हें ''पंजाब हिल स्टेट्स''। इधर सिरमौर, नालागढ़ और उस ओर मण्डी, बिलासपुर, कांगड़ा, चम्बा के पर्वतीय क्षेत्र होते हुए भी शिमला में शामिल राज्यों का अलग नाम और महत्व रहा। हिमाचल प्रदेश के गठन में शिमला हिल्स की तीस रियासतों का विशेष योगदान रहा। शिमला के ऊपर अट्ठारह ठकुराईयां थीं और शिमला से नीचे बारह। जुब्बल, चौपाल, कुसुम्पटी, अर्की, सोलन, ठियोग, रामपुर, रोहड़ू, महासू जिले की तहसीलें बनी और कोटखाई, सुन्नी, कुमारसेन सब-तहसीलें। ब्रिटिश काल के एक नक्शे में जिला महासू की सीमाएं किन्नौर, बिलासपुर, मण्डी, पंजाब, सिरमौर और उत्तरप्रदेश के साथ लगती दिखाई गई हैं। अतः इन सीमाओं के बीच का सारा भू-भाग महासू नाम से जाना जाने लगा। सतलुज तथा टोंस नदियों के बीच के इस इलाके में पन्द्रहवीं शताब्दी तक मैदानों से आए शासकों का अधिकार हो चुका था। इन शासकों को राणा या ठाकुर कहा जाता था। इनका अधिकार क्षेत्र विस्तृत न हो कर बहुत छोटा था। शिमला हिल्स की सबसे छोटी ठकुराई रतेश का क्षेत्रफल तीन वर्गमील था और वार्षिक आय मात्र दो सौ रुपये। बेजा ठकुराई मात्र चार वर्गमील में थी। मांगल ठकुराई की आय मात्र सात सौ रुपये वार्षिक थी।

अट्ठारह और बारह ठकुराइयों के नाम औार संख्या यूरोपियन यात्रियों और यहां तैनात पॉलिटिकल एजेंटों, असिस्टेंट कमिशनरों ने अलग-अलग दी है।

हिमाचल का गठन स्वाधीनता के बाद

15 अगस्त 1947 को भारत स्वाधीन हो गया किंतु उत्तर भारत में उस समय हिमाचल प्रदेश नाम का कोई स्वतन्त्र भू भाग नहीं था। इस पर्वतीय क्षेत्र में स्वाधीनता के लिए अभी संघर्ष जारी था। यह देश की स्वाधीनता के बाद की बात है कि हिमाचल प्रदेश नाम से एक स्वतन्त्र भू भाग अस्तित्व में आया। यह 15 अप्रैल 1948 का ही दिन था जब इस पर्वतीय क्षेत्र की तीस रियासतों के साथ मण्डी, चम्बा और सिरमौर के विलय होने से एक प्रदेश का जन्म हुआ जिस का नाम 'हिमाचल प्रदेश' रखा गया। इस दिन से हिमाचल प्रदेश को 'चीफ कमिशनर प्रोविंस'' का दर्जा भी दिया गया जो 1952 तक बना रहा। केन्द्र सरकार द्वारा एन.सी. मेहता को चीफ कमिशनर नियुक्त किया गया और ई.वी. मून को डिप्टी कमिशनर बनाया गया। कोटगढ़, कोटखाई पंजाब के शिमला हिल्स की एक तहसील थी, जिसे 15 अप्रैल 1950 को हिमाचल प्रदेश में मिलाया गया। बिलासपुर का विलय प्रथम जुलाई 1954 को हुआ।

विशाल हिमाचल के गठन पर गतिविधियां तेज हो गई थी। पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड सब की निगाहें हिमाचल प्रदेश के साथ लगते क्षेत्रों पर थीं। कांगड़ा और पंजाब के साथ लगते क्षेत्र तो पहले से ही पंजाब में थे जिन्हें छुड़ा पाना आसान न था। इस संकट के समय नेताओं ने पहाड़ी भाषा और संस्कृति का सहारा लिया। यह तर्क रखा गया कि एक ही पहाड़ी संस्कृति और भाषा के क्षेत्र एक राज्य में होने चाहिए। कांगड़ा में जनगणना के समय अपनी मातृभाषा पंजाबी न लिख कर पहाड़ी या हिन्दी लिखाने की मुहिम चलाई गई। सत्यदेव बुशहरी ने हिमाचल समिति गठित कर भूख हड़ताल तक कर दी। कांगड़ा के नेताओं ने इस मुहिम में साथ दिया। कांगड़ा के पंजाब में उपमन्त्री बख्शी प्रताप सिंह, कुल्लू के विधायक लालचंद प्रार्थी, पालमपुर के विधायक अमरनाथ शर्मा, नूरपुर के विधायक कामरेड रामचंद, बड़सर की विधायक सरला शर्मा, हमीरपुर के विधायक रूपसिंह फूल, देहरा के विधायक मेहरसिंह ठाकुर सभी ने यह मांग रखी।

पर्वतीय क्षेत्रों में जिला कांगड़ा चीन की सीमा से लेकर लद्दाख, चंबा और उधर होशियारपुर तक विशाल जालंधर दैत्याकार में फैला हुआ था। अंततः प्रथम नवम्बर 1966 को विशाल हिमाचल के गठन पर कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल स्पीति और ऊना के साथ शिमला, नालागढ़, डलहौजी, बकलोह को भी हिमाचल में मिलाया गया और बारह जिले बने जिनमें महासू का नाम बदल कर शिमला के ऊपरी क्षेत्रों को मिला कर जिला शिमला हुआ। प्रथम जुलाई, 1970 को संसद में हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व प्रदान करने की घोषणा हुई जिसके फलस्वरूप 25 जनवरी, 1971 को पूर्ण राज्यत्व की घोषणा शिमला के रिज मैदान से हुई और हिमाचल प्रदेश देश का अठारहवां राज्य बना।

'अभिनंदन' कृष्ण निवास, लोअर पंथाघाटी,
शिमला-171009, मो. 0 94180 85595

शिमला शहर का दुर्लभ चित्र
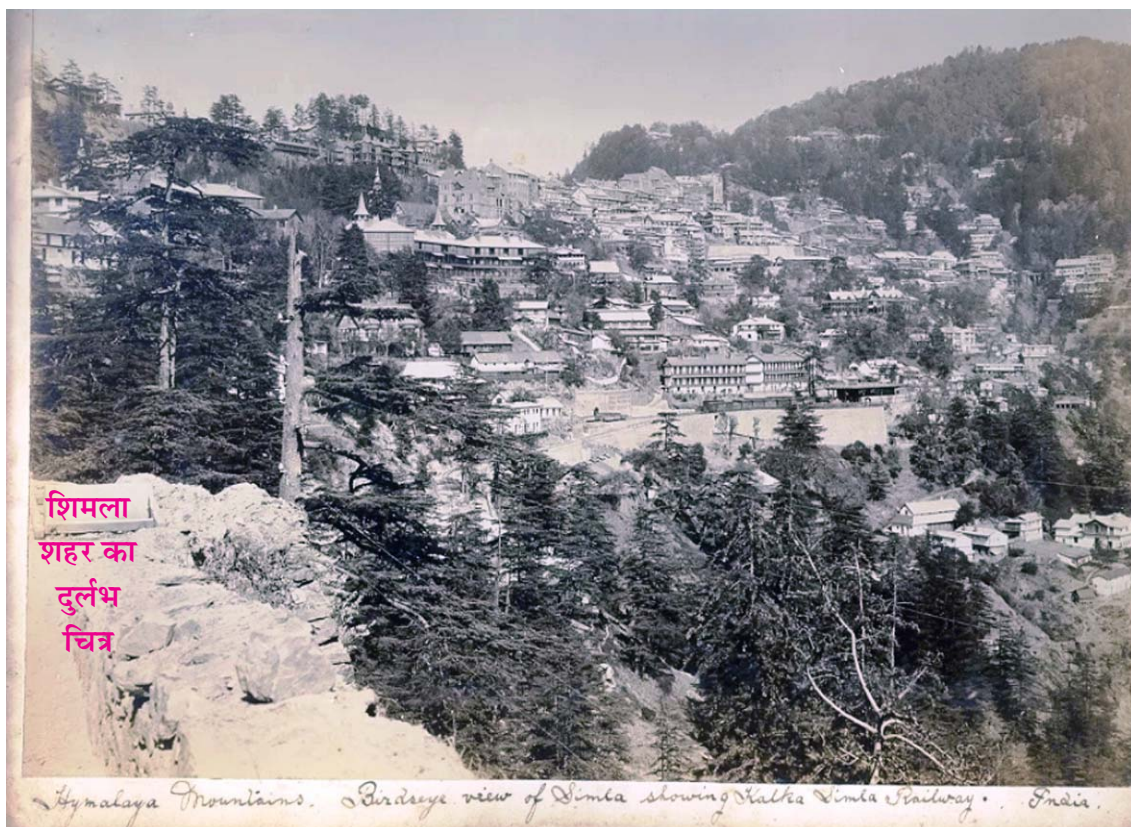
जन-आंदोलनों की बुनियाद से सियासत के शिखर तक का सफर

एम. शर्मा

हिमाचल प्रदेश की राजनीति को जन-आंदोलनों का पुख्ता आधार मिला है। यहां के राजनेताओं ने सियासत की बागडोर अपने हाथों में थामने से पूर्व जनता के हितों को लेकर कई बड़े जन आंदोलनों की या तो कमान संभाली या फिर उनमें सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हुए अपने सियासी आधार को मजबूत किया था। इनमें सिरमौर का पझौता आंदोलन, शिमला व आसपास की रियासतों का प्रजामंडल आंदोलन और धामी गोली कांड, बुशहर की दूम्ह, बिलासपुर का झुग्गा डांडरा, मंडी जिला के सुकेत सत्याग्रह और मुजारा आंदोलन से कई नेता उभरे, जिन्होंने आगे चल कर हिमाचल की सियासत की बागडोर संभाल कर इस पहाड़ी प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ विकास की इबारत को लिखने में अहम भूमिका निभाई है। इसी से प्रदेश में लोकतंत्र की नींव पड़ी। पहाड़ी रियासतों में जन आंदोलनों का स्वरूप भले ही अलग-अलग रहा हो, लेकिन इनके पीछे के कारण लगभग एक समान ही थे। इनमें से अधिकांश जमीनों के अधिकार, बंदोबस्त, लगान, बेगार प्रथा, राजा या उसके करिंदों के अत्याचार और उनकी दमनकारी नीतियों के खिलाफ लोगों की सामूहिक आवाज थी, जिसे जन आंदोलनों के रूप में मुखर किया गया। इन जन आंदोलनों में किसान और आमजनमानस शांतिपूर्वक अपनी एकता का प्रदर्शन करते हुए शासक वर्ग तक अपनी आवाज पहुंचाने का प्रयास करता रहा है। मगर शासक वर्ग इन जन आंदोलनों को बर्बरतापूर्वक दबाने का प्रयास करता, जिसमें कई आंदोलनकारियों को अपनी जान भी गवानी पड़ती।

आज हिमाचल प्रदेश अपने अस्तित्व के स्वर्णिम पचास दशक मनाने जा रहा है। ऐसे में इस पहाड़ी प्रदेश के उन सशक्त व कद्दावर नेताओं के योगदान को याद करना जरूरी है, जिन्होंने इस प्रदेश के निर्माण से लेकर यहां के चहुंमुखी विकास की नींव रखी। हिमाचल के पहले मुख्यमंत्री डॉ. वाईएस परमार को हिमाचल निर्माता के नाम से याद किया जाता है। वे भी इसी तरह के जन आंदोलनों से उभरे नेता थे। डा. परमार ने शिवानंद रमोल, वैद्य सूरत सिंह, मियां चूंचू राम, गुलाब सिंह आदि प्रमुख आंदोलनकारियों के नेतृत्व में हुए पझौता आंदोलन में भाग लिया था और प्रदेश में चले प्रजामंडल व मुजारा आंदोलन को एक नई दिशा दी थी। डा. परमार के कार्यकाल में लागू हुए भूमि सुधार कानून का आधार किसानों का मुजारा आंदोलन ही बना। डा. परमार के साथ मंडी के नेता ठाकुर कर्म सिंह ने मुजारा आंदोलन को दिशा देने के साथ-साथ इसे अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में अहम भूमिका अदा की। वहीं धामी रियासत के

पं. सीता राम स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ योद्धा रहे। जिन्होंने बाद में प्रदेश की राजनीति में भी अपनी अहम भूमिका निभाई। प्रजामंडल आंदोलन में पंडित जी ने 23 महीने की जेल काटी, उन्हें रियासत से भी निकाल दिया गया था। वे 1952 में टेरिटोरियल काउंसिल के सदस्य थे। जबकि मंडी के ठाकुर कर्म सिंह टेरिटोरियल कॉउंसिल के अध्यक्ष रहे। पं. सीताराम ने कांग्रेस के निर्णय के खिलाफ जाकर हिमाचल विधानसभा के गठन का समर्थन किया, इस पर उन्हें कांग्रेस से निकाल दिया गया। मगर लाल बहादुर शास्त्री के हस्तक्षेप के चलते उनकी कांग्रेस में वापसी हुई।

रामपुर बुशहर में प्रजामंडल आंदोलन की कमान प. पदमदेव के हाथ में थी। आजादी के बाद पं.पदमदेव भी उन गिने चुने नेताओं में से थे, जो जन आंदोलनों की उपज थे और जिनके लिए राजनीति भी प्रदेश के नवनिर्माण का एक संकल्प थी। उसी प्रकार पं.गौरी प्रसाद, गोपी राम, प. बेसर राम, पीरूराम, कृष्णचंद्र, कुल्लू से लालचंद प्रार्थी, बिलासपुर से दौलत राम सांख्यान, सुंदरनगर से वैद्य लक्ष्मीदत्त भी ऐसे ही कद्दावर नेता थे जो राजनीति से पहले जन आंदोलनों में किसी न किसी रूप में सक्रिय रहे। मंडी के ही स्वतंत्रता सेनानी तेज सिंह निधड़क भी राजनीति में सक्रिय रहे, वे निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े मगर जीत नहीं पाए। सिंध के गांधी के नाम से विख्यात स्वतंत्रता सेनानी स्वामी कृष्णानंद गदर पार्टी के योद्धा रहे। उन्होंने मंडी सदर से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीता और क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। मगर वे मुजारा आंदोलन के पक्ष में नहीं थे, बतौर विधायक वे भूमि सुधार कानून का विरोध करने के लिए अनशन पर बैठ गए। जिसकी कीमत उन्हें 1962 में निर्दलीय उम्मीदवार पं. सुखराम से हार कर चुकानी पड़ी। क्योंकि सुंखराम के समर्थन में मुजारा आंदोलन के नेता ठाकुर धनी राम थे। मंडी के ही स्वामी पूर्णानंद भी हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काऊंसिल के संस्थापक अध्यक्ष रहे।

किसानों के हक में चले मुजारा आंदोलन के कई नेता सक्रिय राजनीति में आए। बिलासपुर के वामपंथी नेता कामरेड शमशेर के चर्चित गीत -हियूंआ री धारा ते लेणियां गवाहियां हो किने-किने खादी री लोका री कमाईयां..। यह गीत मुजारा आंदोलन को जनगीत बन गया था और यह हर आंदोलनकारी की जुबां पर था। मुजारा आंदोलन के कर्णधारों में से कामरेड कश्मीर सिंह और धनी राम ठाकुर विधायक चुने गए। उसी प्रकार जोगिंद्र नगर के कामरेड ताराचंद को भी लोगों ने मुजारा आंदोलन की वजह से विधायक चुना। कांगड़ा से कामरेड परस राम भी मुजारा आंदोलन की वजह से विधानसभा की दहलीज पार कर सके। मंडी में इस आंदोलन को एनडी जोशी और ठाकुर धनीराम ने नेतृत्व दिया। एडवोकेट कामरेड भगत राम मुजारा आंदोलन के कानूनी सलाहकार थे।

जन आंदोलनों से उभरे इन नेताओं ने सियासत में भी कार्यकुशलता और कर्मठता की छाप छोड़ी। डा. वाई.एस. परमार जहां हिमाचल निर्माता के नाम से मशहूर हुए, वहीं पर मंडी के कर्म सिंह ठाकुर जो ईमानदरी की राजनीति के पर्याय माने जाते हैं, वे भी प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री बनने की दौड़ में सबसे आगे थे। टेरिटोरियल काउंसिल के अध्यक्ष होने के नाते उन्हें अधिकांश विधायकों का समर्थन भी था। मगर ऐन वक्त पर स्वयं कर्मसिंह ठाकुर मुख्यमंत्री की दौड़ से बाहर हो गए और डा. परमार प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री बने।

25 जनवरी 1971 का वह ऐतिहासिक दिन आया जब हिमाचल प्रदेश को पूर्णराज्य का दर्जा मिला। इसमें डा. वाई.एस. परमार के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता। जिन्होंने इस पहाड़ी राज्य को भौगोलिक एवं भाषाई आधार पर पंजाब से अलग कर पूर्णराज्यत्व के सपने को साकार किया। हिमाचल प्रदेश देश के पहाड़ी राज्य के रूप में अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को कायम रखते हुए सामाजिक एवं आर्थिक विकास की यात्रा पर निरंतर अग्रसर हो रहा है। और देश के पहाड़ी राज्यों में मॉडल बनकर उभरा है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस पहाड़ी प्रदेश में भौगालिक जीवटता यहां के जनजीवन को और भी कठिन बना देती है। दूर-दराज के क्षेत्रों को जोड़ने के लिए पहाड़ों को काटकर नदी-नालों पर पुल बनाकर सडकों का निर्माण कर दूरियों को कम किया। भाखड़ा, ब्यास-सतलुज लिंक परियोजना और पौंग बांध जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के माध्यम से शतप्रतिशत विद्युतिकरण का मील पत्थर स्थापित किया। वहीं 1977 के बड़े राजनैतिक बदलाव जनता पार्टी की सरकार के मुख्यमंत्री के रूप में शांता कुमार ने हर घर नल की योजना को लागू कर पानी वाले मुख्यमंत्री के रूप में ख्याति अर्जित की। इधर, छह बार मुख्यमंत्री रहे वीरभद्र सिंह ने अपनी मैराथन पारी में प्रदेश के विकास में कई मील के पत्थर स्थापित किए। इसके अलावा 1998 में गठबंधन सरकार में मुख्यमंत्री बने प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने सडकों वाले मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश के विकास में अपना योगदान दिया।

प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री की दौड़ में शामिल रहे ठा. कर्म सिंह के बाद भी मंडी जिला से बार-बार यह दावेदरी उभरती रही। आखिर आजादी के 70 साल बाद ठाकुर कर्म सिंह के ही चुनाव क्षेत्र से किसान के बेटे जयराम ठाकुर ने लंबे समय से संजोए सपने को साकार किया। जन आंदोलनों की बुनियाद पर सियासत के शिखर तक के सफर का यह महत्त्वपूर्ण पड़ाव रहा है।

-133/7 मोती बाजार मंडी-175001 हिमाचल प्रदेश।

भारतीय गणतंत्र का 18वां सितारा

विनोद भारद्वाज

हिमाचल के इतिहास के पन्ने पलटे जाएं तो ज्ञात होगा कि 25 जनवरी, 1971 को एक लंबे संघर्ष के उपरांत, यह पहाड़ी प्रदेश भारतीय गणतंत्र का 18वां राज्य बना। इस दिन से इस छोटे से पर्वतीय राज्य ने एक सशक्त राजनैतिक प्रतिबद्धता व मेहनतकश लोगों की आशाओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप एक कठिन विकास पथ पर अपने कदम आगे बढ़ाए। इस वर्ष प्रदेश पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति की स्वर्ण जयंती मना रहा है। पांच दशकों की विकास यात्रा पर नज़र दौड़ाएं तो हिमाचल ने एक छोटे राज्य से लेकर एक प्रगतिशील एवं खुशहाल राज्य बनने तक का दर्जा हासिल कर लिया है। इसका श्रेय विभिन्न कालखंडों में यहां सत्तासीन रही सरकारों को जाता है।

हिमाचल निर्माता एवं प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार के 50 वर्ष पूर्व कहे शब्द आज सार्थक नज़र आते हैं : “हिमाचल प्रदेश के लिए पूर्ण राज्यत्व की प्राप्ति उपलब्धियों का अंत नहीं है। वास्तविकता में यह सभी पहाड़ी निवासियों के जीवन में समृद्धि लाने के लिए परिश्रम से कार्य करने के एक नए युग का आरंभ है।”

हालांकि हिमाचल का उदय 31 छोटी-बड़ी रियासतों के विलय से 15 अप्रैल, 1948 को हो चुका था। इसी दिन से राज्य ने अपना वुजूद तथा हक की लड़ाई आरंभ कर दी थी। आरंभ में इसे ‘चीफ कमीश्नर प्रांत’ का दर्जा मिला।

वर्ष 1966 में पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों के विलय से एक विशाल हिमाचल भारत के नक्शे पर उभर कर आया। विशाल हिमाचल के निर्माण में भाषा, रीति, पहाड़ी संस्कृति, परंपराओं ने अहम भूमिका निभाई। पहाड़ी साहित्य ने भी इस एकीकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। प्रदेश के विद्वानों ने हिमाचल की भाषा व साहित्य पर पी-एच.डी. की थी, पुस्तकें जो विशाल हिमाचल में आधार बनीं वे थीं- पीयूष गुलेरी की- मेरा देश हिमाचल, लोक संपर्क विभाग द्वारा प्रकाशित-हिमाचल के लोकगीत, रोशन लाल चौहान की पब्बर की लहरें, ध्यान सिंह कुटलैरिया की पुस्तक हिमाचल की लोक गाथाएं, गौतम व्यथित की चेते, ओमप्रकाश प्रेमी की स्वाद बकरे-बकरे व डॉ. एम.एस. रंधावा की कुल्लू व कांगड़ा के लोकगीत। पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम की लगभग 500 कविताएं तथा दस लघु कहानियां भी कांगड़ा जिले को हिमाचल में मिलाने का आधार बनीं।

1971 में विशाल हिमाचल ने एक साथ प्रगति पथ पर कदम आगे बढ़ाए। प्रदेश में विकास के अहम पड़ावों की बात करें तो वर्ष 1966 में शिमला में प्रदेश का पहला मेडिकल कॉलेज व 1970 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की स्थापना कर दी गई थी।

औद्योगिक क्षेत्र के नाम पर बिरोजा, तारपीन, चाय, बंदूक, शॉल व गन्ने पिलाई के छोटे-मोटे उद्योग ही थे। वर्ष 1971 में 28 लाख की जनसंख्या वाले प्रदेश ने प्रदेश वासियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में बदलाव लाने के लिए कदम आगे बढ़ाए।

हिमाचल में विकास की नींव डॉ. यशवंत सिंह परामर ने रख दी थी। उन्होंने सड़क निर्माण, बागबानी विकास तथा वन संरक्षण के तहत त्रिस्तरीय खेती को बढ़ावा देकर एक नए कल की कल्पना की थी। प्रगति की संभावनाओं में उन्होंने जलविद्युत दोहन, खनिज संपदा, वनों का वैज्ञानिक दोहन, कृषि बागबानी आर्थिकी को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया। वर्ष 1969-70 में प्रदेश की कुल राजस्व प्राप्ति 17.96 करोड़ में से वनों से प्राप्ति 6.52 करोड़ रुपये आंकी गई थी। डॉ. परामर के हाथ में राज्य की बागडोर वर्ष 1977 तक रही। वे पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के उपरांत लगभग सात वर्ष तक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। इस दौरान हिमाचल सेब राज्य बनने की दहलीज पर पहुंच चुका था। अपना विश्वविद्यालय, मेडिकल कॉलेज, कृषि कॉलेज, गिरि जलविद्युत, मंडी जिले में ऊहल परियोजना, चंबा में बैरास्यूल से विद्युत उत्पादन आरंभ हो गया था जबकि कोल बांध, पार्वती परियोजनाओं की रूपरेखा तैयार की जा चुकी थी। संचार, बैंकिंग सहकारिता, पर्यटन के क्षेत्र में हिमाचल तेजी से आगे बढ़ रहा था।

डॉ. परमार के त्याग पत्र देने के उपरांत श्री राम लाल ठाकुर, राज्य के मुख्यमंत्री बने। वे 28.1.1977 से 30 अप्रैल, 1977 तक मुख्यमंत्री रहे। राम लाल ठाकुर ने डॉ. परमार की नीतियों को आगे बढ़ाया तथा वे एक कुशल प्रशासक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने बागबानी क्षेत्र को व्यापक बढ़ावा दिया।

देश में आपात काल के उपरांत राजनैतिक माहौल में बदलाव आया। वर्ष 1977 में हुए चुनावों में जनता पार्टी 55 सदस्यों की विजय के साथ सत्तासीन हुई। इस विजय से प्रदेश के गठन के उपरांत पहली बार गैर कांगेस सरकार सत्ता में आई। श्री शांता कुमार प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। वे 22 जून, 1977 से 14 फरवरी 1980 तक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। श्री शांता कुमार का पहला कार्यकाल अनेक मायनों में महत्त्वपूर्ण रहा। एक साहित्यकार व आम जन से जुड़े होने के नाते, उन्होंने गरीबों, पिछड़ों तथा महिलाओं की कठिनाइयों को भलीभांति जाना और उनके दर्द को दूर करने के लिए प्रभावी प्रयासों को आगे बढ़ाया। हर घर में नल की अवधारणा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने पेयजल को हर घर तक पहुंचाने का बीड़ा उठाया। वे इसके लिए 'जल' देने वाले मुख्यमंत्री के तौर पर याद किए जाते हैं। इसके अलावा अन्त्योदय की अवधारणा को अपनी विकास प्राथमिकताओं के मूल में रखा। राजनैतिक अस्थिरता के कारण उनका कार्यकाल अढ़ाई वर्ष का रहा।

तदोपरांत एक बार फिर श्री राम लाल ठाकुर ने 14 फरवरी, 1980 को प्रदेश की सत्ता संभाली और वे 24 मई, 1982 तक इस पद पर रहे। राज्य में हुए चुनावों में कांग्रेस पार्टी सत्तासीन हुई और श्री रामलाल ठाकुर का कार्यकाल 24 मई, 1982 से 8 अप्रैल, 1983 तक रहा। श्री वीरभद्र सिंह को 8 अप्रैल, 1983 को मुख्यमंत्री बनाया गया। वे पहले कार्यकाल में 8 मार्च 1985 तक मुख्यमंत्री पद पर रहे।

दूसरी बार वे 8 मार्च, 1985 से 4 मार्च, 1990 तक मुख्यमंत्री पद पर रहे। उनके इस कार्यकाल में प्रदेश व राष्ट्रीय हित में 'हरे पेड़ के कटान पर प्रतिबंध लगाने का रहा। वहीं प्रदेश में पहली बार फलों की डिब्बाबंदी के लिए परपंरागत लकड़ी की पेटियों की बजाय गत्ते के डिब्बों का इस्तेमाल शुरू हुआ। इसी दौरान 1989 में प्रदेश की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजना नाथपा-झाकड़ी के निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ।

1980 से 1990 के एक दशक में सड़कों की लंबाई 13 हजार किलोमीटर से बढ़कर 16,488 किलोमीटर, बिजली प्राप्त गांवों की संख्या 12787 से बढ़कर 16,916 हुई। शिक्षा संस्थानों की संख्या 8,931 से बढ़कर 10,185 हुई। इसी दौरान राज्य में 10 जमा दो शिक्षा प्रणाली लागू की गई। स्वच्छ प्रशासन को सुनिश्चित बनाने के लिए राज्य में लोकायुक्त की व्यवस्था की गई। इसी दौरान पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए शिमला हवाई अड्डे का निर्माण पूर्ण हुआ।

वर्ष 1990 में हुए विधान सभा के चुनावों में राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी और श्री शांता कुमार एक बार फिर राज्य के मुख्यमंत्री बने। उनका कार्यकाल 5 मार्च, 1990 से 15 दिसंबर 1992 तक रहा। राज्य में यह पहली भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। श्री शांता कुमार को पहले भी प्रदेश की बागडोर संभालने का अनुभव था। उन्होंने लोक कल्याण को अपनी सरकार की प्राथमिकता सूची में सर्वोपरि रखते हुए गरीब व्यक्ति के तीव्र सामाजिक-आर्थिक उत्थान को तरजीह दी। उन्हीं के कार्यकाल में 'गरीबी से मुक्ति का संकल्प' अन्त्योदय योजना का शुभारंभ 15 अगस्त, 1990 से आरंभ किया गया। गौरतलब है कि प्रदेश में गरीबी दूर करने का पहला वास्तविक तथा गंभीर प्रयास तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शांता कुमार के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार ने किया था। उस वर्ष महात्मा गांधी के जन्म दिवस पर सरकार ने अन्त्योदय कार्यक्रम को एक यज्ञ के रूप में आंरभ किया था।

इस अल्प कार्यकाल के दौरान राज्य में औद्योगिक तथा जलविद्युत विकास में तेजी लाने के लिए सरकारी-निजी भागीदारी की अवधारणा को लागू किया गया। जलविद्युत क्षेत्र को बढ़ावा देने व राज्य को आर्थिक तौर पर संपन्न बनाने के लिए पांच राज्यों के साथ पार्वती परियोजना के निर्माण पर हस्ताक्षर किए गए। सरकारी क्षेत्र में दक्षता लाने व अनुशासन की भावना को बढ़ाने के लिए 'काम नहीं वेतन नहीं' की नीति को सख्ती से लागू किया

गया। गैर उत्पादित खर्चों पर लगाम लगाई गई।

देश में राम जन्म भूमि आंदोलन के मद्देनजर प्रदेश सरकार को बर्खास्त कर दिया गया और वर्ष 1993 में हुए चुनावों में कांग्रेस पार्टी सत्तासीन हुई और श्री वीरभद्र सिंह राज्य के मुख्य मंत्री तीसरी बार बने। उनका कार्यकाल तीन दिसंबर, 1993 से 24 दिसंबर, 1997 तक रहा। शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण को बढ़ावा मिला। बालिकाओं की शिक्षा को सभी स्तरों पर निःशुल्क किया गया।

इसी दशक में राज्य विधान सभा के चुनावों में श्री वीरभद्र सिंह चौथी बार अल्प अवधि के लिए 6 मार्च, 1998 से 23 मार्च 1998 तक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। तदोपरांत हिमाचल विकास कांग्रेस के सहयोग से श्री प्रेम कुमार धूमल के नेतृत्व में राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। वे 24 मार्च, 1998 से 5 मार्च 2003 तक राज्य के मुख्यमंत्री रहे। राज्य में दूसरी बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। उनके कार्यकाल में राज्य की जीवन रेखाएं मानी जाने वाली सड़कों के निर्माण को प्राथमिकता मिली। गांव-गांव तेजी से राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ने लगे। उनके इन प्रयासों से उन्हें 'सड़क वाला मुख्यमंत्री' के रूप में जाना गया। शिक्षा, औद्योगिक विकास तथा पर्यटन को इस दौरान पंख लगे। भावनात्मक एकता में मजबूती, रिकार्ड केंद्रीय वित्तीय सहायता, रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी, पर्यावरण मित्र उद्योगों को बढ़ावा, इस सरकार की उपलब्धि रही।

वर्ष 2003 में हुए चुनावों में श्री वीरभद्र सिंह के नेतृत्व में राज्य में कांग्रेस सरकार बनी। इस दौरान सामाजिक-सुरक्षा कार्यक्रमों को संबल मिला। धर्मशाला में हिमाचल प्रदेश विधान सभा का शीतकालीन सत्र आयोजित करने की परंपरा आरंभ हुई।

वर्ष 2007 में हुए चुनावों में प्रदेश में एक बार फिर श्री प्रेम कुमार धूमल के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। वे 2007 से 2012 तक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। इस दौरान कर्मचारियों को नए वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुसार भुगतान किया गया, वहीं शिक्षा के क्षेत्र में अनेक मील पत्थर स्थापित हुए। राज्य में निजी क्षेत्र में लगभग 18 नए विश्वविद्यालय खोले गए। इससे राज्य के भीतर ही छात्रों को विश्व स्तरीय शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित हुई। नए उद्योगों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

वर्ष 2012 के अंत में हुए चुनावों में एक बार फिर कांग्रेस सरकार के नेतृत्व में श्री वीरभद्र सिंह ने पद संभाला।

2017 में राज्य में हुए विधान सभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की सरकार सत्तासीन हुई तथा राज्य की बागडोर श्री जय राम ठाकुर को सौंपी गई। एक नई युवा प्रतिभा को राज्य के तीव्र विकास करने का सुअवसर मिला है। राज्य को आर्थिक तौर पर सशक्त बनाने के लिए वर्तमान सरकार ने तीन वर्षों के कार्यकाल में अनेक ऐतिहासिक निर्णय लिए - धर्मशाला में ग्लोबल इन्वेस्टर मीट का सफल आयोजन करने के बाद शिमला में 13,656 करोड़ रुपये के 204 समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किए गए। तीन अक्तूबर, 2020 को देश के लिए सामरिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण 'अटल टनल रोहतांग' देश को समर्पित की गई। आम जन तक प्रशासन की पहुंच सुनिश्चित बनाने के लिए 'जनमंच' कार्यक्रम की अवधारणा को लागू किया गया। हर घर में स्वच्छ जल, मंडी में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का निर्माण, सामाजिक सुरक्षा की पात्रता आयु सीमा में कमी, हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना के तहत रसोई गैस की उपलब्धता, हर परिवार को स्वास्थ्य कवच, स्वरोजगार को बढ़ावा, आत्मनिर्भर हिमाचल बनाने के लिए पर्यटन, ऊर्जा क्षेत्रों को गति मिली है। इस दौरान राज्य ने दुनिया के साथ कोविड महामारी का भी दृढ़तापूर्वक मुकाबला किया।

अंत में, पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति से लेकर आज तक के पांच दशकों में डॉ. यशवंत सिंह परमार, ठाकुर राम लाल, श्री वीरभद्र सिंह श्री शांता कुमार, प्रो. प्रेम कुमार धूमल व श्री जय राम ठाकुर की सरकारों ने अपने-अपने कार्यकाल में राज्य को आर्थिक रूप से संपन्न बनाने, सामाजिक-न्याय को बढ़ावा देने, कृषि बागबानी, पर्यटन व औद्योगिक विकास से संसाधनों के सृजन को बढ़ावा दिया है

भारतीय गणतंत्र के 18वें सितारे को यहां की दूरदर्शी राजनैतिक प्रतिबद्धता तथा मेहनत लोगों ने तराशा है। अभी भी इसे आत्मनिर्भर एवं समृद्धतम राज्य बनाने के लिए नए संकल्प, नए इरादे से कार्य करने की आवश्यकता है। स्वर्ण जयंती के इस पावन अवसर पर यही उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में प्रदेश पहाड़ों की पवित्रता, पहाड़ की संस्कृति, परंपराओं को यथावत बनाकर, एकजुटता से आगे बढ़ेगा।

दयाल हाऊस, जाखू रोड, संजौली, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171006, मो. 0 94181 58987

इस वर्ष प्रदेश पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति की स्वर्ण जयंती मना रहा है। पांच दशकों की विकास यात्रा पर नज़र दौड़ाएं तो हिमाचल ने एक छोटे राज्य से लेकर एक प्रगतिशील एवं खुशहाल राज्य बनने तक का दर्जा हासिल कर लिया है। इसका श्रेय विभिन्न कालखंडों में यहां सत्तासीन रही सरकारों को जाता है।

लोक संस्कृति एवं साहित्य

हिमाचल प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक
एवं साहित्यिक धरोहर को
उजागर करती रचनाएं

- डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित'
- डॉ. तुलसी रमण
- पवन चौहान
- मंजु गुप्ता
- डॉ. योगेश चंद्र सूद
- श्रीनिवास जोशी

पूर्ण राज्यत्व के परिप्रेक्ष्य में पहाड़ी-हिमाचली भाषा एवं लोक कलाएं

डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित'

हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्यत्व के पचास वर्ष पूरे कर रहा है। ऐसे अवसर पर अतीत की कालावधि अनायास मस्तिष्क में तिरने लगती है और संवाद करने लगता है इसके अस्तित्व का इतिहास क्रम। इसके पूर्व में उत्तरांचल, दक्षिण में हरियाणा, पश्चिम में पंजाब, उत्तर में जम्मू और कश्मीर तथा उत्तर-पूर्व तिब्बत से घिरा हुआ है। ऐसी भौगोलिक स्थिति के कारण हिमाचल का जनजीवन, भाषा-बोलियां, लोकाचार-संस्कृति तथा निष्पादन एवं ललित कलाएं उक्त सीमांती प्रदेशों की भाषा-बोलियों, संस्कृति तथा कला-रूपों से प्रभावित रही हैं। इसका अस्तित्व इतिहास बताता है कि पूर्वकाल में यह क्षेत्र छोटी-बड़ी स्थानीय रियासतों में बंटा था। भारत की आज़ादी के बाद 15 अप्रैल, 1948 को मुख्यायुक्त के प्रांत के रूप में पहली बार हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ जिसमें चंबा, मंडी, सिरमौर, बुशहर और सुकेत की रियासतें थीं। तब बिलासपुर रियासत इसमें शामिल नहीं हुई। तत्पश्चात 26 जनवरी, 1950 में जब भारत का संविधान लागू हुआ तो हिमाचल और बिलासपुर दोनों 'सी' राज्य हो गए। कालांतर 1954 में 28 मई को हिमाचल प्रदेश तथा बिलासपुर अधिनियम लागू हुआ तब बिलासपुर को मिलाकर नए हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ। इसके इतिहास ने पुनः इसके क्षेत्रफल को विस्तार दिया। पंजाब के भाषाई आधार पर जब 1966 में पंजाब का पुनर्गठन हुआ तो उसके पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल से मिला दिया। उसमें यह ध्यान रखा गया कि किन-किन क्षेत्रों की हिमाचल के साथ टेरेटरी भाषाई तथा सांस्कृतिक साम्यता थी। इस प्रकार प्रथम नवंबर 1966 को महा या विशाल हिमाचल अस्तित्व में आया। परिणामतः इसका क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर हो गया। पच्चीस जनवरी, 1971 को हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ और यह भारतीय संघ का 18वां राज्य बना।

हिमाचल प्रदेश हिमालयी भू-भाग में स्थित है। इस धरती को आदिकाल में वैदिक ऋषि-मुनियों की तपोभूमि कहा गया है अर्थात् सात नदियों द्वारा सिंचित भूभाग। इनमें से पांच नदियां आज भी इसमें से बहती हैं। सतलुज (शतद्रु) किन्नौर जिले से बहती गोविंद सागर भाखड़ा-नंगल-डैम का स्वरूप लिए है। व्यास (अर्जीकी) कुल्लू जिला के बीच से गुजरती मंडी से होती कांगड़ा में प्रवेश करती पौंग डैम 'महाराणा प्रताप सागर' की संज्ञा पाती नहरों के माध्यम से दूरस्थ राजस्थान तक खेत सींच रही है। रावी नदी चंबा जिले से निकलती बहती है। यमुना नदी वर्तमान उत्तरांचल और हिमाचल के

शिमला और सिरमौर जिलों के साथ सीमा बांधती है। विद्वानों का मत है कि सरस्वती नदी भी हिमालय के शिवालिक क्षेत्र में सिरमौर की पहाड़ियों से निकलती थी। निष्कर्षतः यह क्षेत्र आर्यों के सप्तसिंधु का प्रमुख भाग रहा है।

हिमाचल प्रदेश भूगोल की दृष्टि से एक पहाड़ी प्रदेश है। पूर्वकाल में इसकी पहाड़ी रियासतें थीं जिनके निवासी पहाड़िये या पहाड़ी कहलाते जिनकी रियासती आधारित संज्ञाएं भी प्रचलन में रहीं, आज भी हैं। इन क्षेत्रों की भाषा 'पहाड़ी' कही जाती है। पंजाब में भाषाई आधार पर चले लंबे संघर्ष के बाद जब प्रथम नवंबर, 1966 को पंजाब का पुनर्गठन हुआ तो हिमाचल से लगते पहाड़ी स्पीकिंग क्षेत्रों को, जिनकी भाषायी और सांस्कृतिक साम्यता हिमाचल से थी, इस प्रदेश के साथ मिला दिया गया।

हिमाचल की क्षेत्रीय बोलियां भाषा विज्ञान के आधार पर किस परिवार की बोलियां या उपभाषाएं हैं, इस मुद्दे को लेकर सियासी और भाषाविदों में काफी मतभेद और तर्क-वितर्क रहा है। अधिकांश गियर्सन की 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया' में दर्ज किए गए हवालों को आधार मानकर एक लंबी बहस करते रहे। परंतु भारतीय भाषाविद् डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा ने ग्रियर्सन के सिद्धांतों का खंडन किया है। जान वीम्स ने भी अपनी पुस्तक 'आउट लाइन्स आफ इंडियन फिलालाजी' 1886 में भी स्पष्ट किया है कि सीमांती क्षेत्रों की भाषा-बोली तथा संस्कृति पर न्यूनाधिक पारस्परिक प्रभाव होते हैं, अतः उन्हें भाषाई-सांस्कृतिक सर्वेक्षण को आधार मानकर कोई मत स्थापित करना तर्कसंगत नहीं माना जा सकता। इसी प्रसंग में डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा ने वेब्स्टर की 'न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ दी इंगलिश लैंग्वेज़' 1945 का हवाला देते लिखा है कि -बोली भाषा का स्थानीय प्रांतीय रूप होती है जो विभिन्न व्यक्तियों की जुबान पर बदलती जाती है, परंतु यह परिवर्तन अपेक्षतया सीमित रूप में होता है। हिमाचल एक पहाड़ी प्रदेश है और इसकी भाषा पहाड़ी है जिसे पश्चिमी पहाड़ी भी कहते हैं।

निःसंदेह हिमाचल पर्वतीय प्रदेश होने के कारण आजादी से पूर्व और बाद में भी कुछ दशकों तक नदियों पर पुल न होने के कारण, यातायात के साधनों की कमी, सीमांती जनजातीय क्षेत्र होने के कारण आमने-सामने व निकटवर्ती गांवों से भी सुगमता-सहजता से संपर्क में नहीं आ पाता। दूर-संचार के साधन भी नहीं थे। अतः यहां भाषा-सांस्कृतिक द्वीपीय (Linguistic cultural study) जनजीवन था। मेरा निजी अनुभव है, 1960-61 तक शाहपुर क्षेत्र के धारकंडी के कई लोगों ने मोटर नहीं देखी थी। रेडियो भी पंचायत घरों में बजता सरपंच के घर वृक्ष पर टंगे लाउड स्पीकर से। मैं 1957 से 1962 तक वहां प्राइमरी स्कूल में अध्यापक रहा। पुलिस का नाम सुनते ही लोग नदी-नालों की ओर भाग जाते, इतना डरते थे वे लोग। सरपंच को ही अन्नदाता, रक्षक मानते। ऐसे क्षेत्रों में नदी-नालों के आर-पार भाषा-बोली और संस्कृति उसी रूप में पनपती-विकसित होती रही। ऐसे लोगों तक कहां पहुंचे हमारे भाषा सर्वेक्षक। नगरों में कहां होता है किसी भी क्षेत्रीय-प्रांतीय भाषा का प्रचलन। वह जो शासन-प्रशासन, व्यापार, उच्च शिक्षा, पर्यटन आदि का स्थान होता है। मैं यहां हिमाचल प्रदेश : क्षेत्र और भाषा (लेखक डॉ. यशवंत सिंह परमार, मुख्यमंत्री, हि. प्र.) पुस्तिका के पृ. 29 पर दर्ज इस टिप्पणी को उद्धृत करना चाहूंगा --

"1961 में जनगणना अधिकारियों ने पश्चिमी पहाड़ी या पहाड़ी को एक विशिष्ट या पुरानी भाषा के स्थान से हटाकर उसकी जगह मातृभाषा फार्मूला के तहत क्षेत्रीय बोलियों को दे दी। ऐसा चाहे जिस वजह से किया गया हो, लेकिन यह इस भाषा को समाप्त करने की आखिरी कोशिश थी।''

इस संबंध में दिए गए सभी तथ्यों के होते हुए भी, कुछ लोगों का विचार है कि 'पहाड़ी' जो सदियों तक प्राणवान भाषा रही, अब या भविष्य में भाषा नहीं कहला सकती क्योंकि यह उन भारतीय भाषाओं में से नहीं है जिन्हें संविधान ने मान्यता दी है। इस तर्क में कोई सार-सत्य नहीं है। केवल इसीलिए कि कोई भाषा संविधान में स्थान न पा सकी, उसे उसके प्रयोग और उचित स्तर से वंचित नहीं किया जा सकता। जब संविधान बनाते हुए भाषा के संबंध में विचार विनिमय हुआ तो उपेक्षित, गरीब पहाड़ी लोगों की आवाज संख्या और राजनीतिक दृष्टि से कमज़ोर रही। परंतु अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। सिंध पाकिस्तान में है और 'सिंधी' वहां से आए उन लोगों की भाषा है जिन्होंने भारत में शरण ली और इस समय सारे देश में इधर-उधर फैले हैं। फिर भी उनकी भाषा 'सिंधी' भाषा को पांच वर्ष पूर्व राष्ट्रीय भाषा मान लिया गया। इसके विपरीत पहाड़ी तो एक निश्चित प्रदेश तथा इसमें एक साथ रहने वाले निश्चित जन-समुदाय की भाषा है और सदियों से चालीस लाख से ऊपर लोगों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है।"

इस पुस्तिका के आधार पर जो एक सरकारी दस्तावेज़ है, जिसे मुख्यमंत्री हि. प्र. की ओर से प्रचारित-प्रसारित किया गया है, से स्पष्ट है कि पहाड़ी भाषा ही हिमाचल की प्रादेशिक भाषा है। और इसी आधार पर इसका पुनर्गठन हुआ, विशाल हिमाचल अस्तित्व में आया।

'पहाड़ी भाषा' जब प्रदेश के साहित्यकारों, कवियों, रंगकर्मियों द्वारा मंच पर आई, एक ही मंच पर यहां विभिन्न भाषा बानगियों को सुनने के अवसर मिलने लगे तो पुनः इसके विरोधियों का माथा ठनका और फिर प्रश्न उठा- कौन सी पहाड़ी, कहां की पहाड़ी, आदि आदि, दूसरा सवाल पहाड़ी, जिसका कोई व्याकरण नहीं, वह भाषा कैसे बन सकती है? कई बार खुल्लमखुल्ला बहस होती रही, इसी मुद्दे पर। शायद उन्हें ज्ञात नहीं था या उक्त पुस्तिका उन्होंने देखी न हो। इसी के पृ. 34 पर छपा है -

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर प्रदेश के एक सांस्कृतिक दल के साथ

1. सिरमौरी व्याकरण : श्री रामदयाल नीरज

2. कुल्लुवी व्याकरण : श्री मौलू राम ठाकुर

3. कांगड़ा व्याकरण : प्रो. चंद्रवरकर

4. हिमाचली भाषा का उद्‌भव और विकास : आचार्य दिवाकर दत्त

5. पहाड़ी व्याकरण : हि. प्र. भाषा कला संस्कृति अकादमी शिमला

इसके लोक साहित्य को लेकर कितने शोध प्रबंध स्वीकृत हुए हैं, यह भी दर्ज है।

9वें दशक में मंडी स्थित गांधी भवन में आयोजित 'पहाड़ी दिवस पर' इसी विषय पर बहस को विराम देते मैंने प्रदेश के साहित्यकारों से सादर अनुरोध किया कि आपका कहना तर्कसंगत है - पहाड़ तो कश्मीर से लेकर आसाम तक फैला है, सारे क्षेत्र पहाड़ी हैं और उनमें बोली जाने वाली भाषाएं भी पहाड़ी। परंतु उन्होंने प्रादेशिक भाषायी-सांस्कृतिक एकता को सम्मुख रखते उनके साथ कुमाऊंनी-पहाड़ी, गढ़वाली-पहाड़ी, असमिया पहाड़ी, कश्मीरी पहाड़ी संज्ञाएं स्वीकार ली हैं अतः हम भी 'हिमाचली भाषा' नाम दें तो सारा विवाद खत्म हो सकता है। तब अस्सी प्रतिशत लेखक पक्ष में रहे। तत्पश्चात हि. प्र. भाषा-कला-संस्कृति अकादमी की बैठक में जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह कर रहे थे, मैंने अकादमी का मनोनीत सदस्य होने के नाते यह प्रस्ताव रखा कि यदि अन्य राज्यों की तर्ज़ पर हम भी 'पहाड़ी' शब्द के स्थान पर जो विवादास्पद है, 'हिमाचली' का प्रयोग करें तो प्रदेश के लिए गौरव का विषय होगा। इसे माननीय मुख्यमंत्री ने सहर्ष स्वीकार किया और कहा, "हिमाचल की हिमाचली! इस पर किसे एतराज़ हो सकता है।" कालांतर देश की दो प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थाओं - राष्ट्रीय साहित्य अकादमी दिल्ली और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास दिल्ली ने हिमाचल के लेखकों की हिमाचली में पुस्तकों का प्रकाशन किया और इससे 'हिमाचली' को सम्मान दिया।

साहित्य अकादमी दिल्ली ने इसे हिंदी की सहभाषा हिमाचल नाम से अलंकृत किया है। मैं यहां पाठकों की जानकारी के लिए 'हिमाचली' पुस्तक का जिक्र करना चाहूंगा कि जिसके लेखक हैं मौलू राम ठाकुर, प्रकाशन साहित्य अकादमी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012। इसके पृ. 12-13 पर लिखा है - 'हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी लोगों द्वारा हज़ारों वर्षों से बोली जाने वाली भाषा हिमाचली है। इसके बारह ज़िलों में से किन्नौर, लाहुल-स्पीति, ... भारतीय आर्य भाषा से संबंध नहीं रखतीं। यह 'भारत-तिब्बती परिवार' की भाषा है। "शेष ज़िलों के समस्त क्षेत्र में हिमाचली भाषा बोली जाती है जिनकी स्थानक संज्ञाएं सिरमौरी, बघाटी, महासुई, कुल्लुई, मंडियाली, बिलासपुरी, कांगड़ी, चंबयाली, जौनसारी, भद्रवाही हैं। भाषा-बोलियों पर सीमावर्ती प्रभाव

अनायास रूप में आ जाते हैं जिन्हें रोका नहीं जा सकता। इस दृष्टि से हिमाचली भाषा की बोलियों को दो शाखाओं में बांटा गया है-भीतरी शाखा और बाहिरी शाखा।

इस पुस्तक में प्रकाशन समय तक के हिमाचली काव्य, कथा, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं में हुए प्रकाशित साहित्य व साहित्यकारों का विवरण भी मिलता है जिससे यह साबित होता है कि हिमाचली में रचना समर्थ कितनी है। संक्षेप में यह कहना तर्कसंगत है कि 'हिमाचली भाषा' को संविधान की आठवीं सूची में दर्ज होने के लिए अब आवश्यकता है तो केवल राजनैतिक इच्छा शक्ति की। क्योंकि सिंधी की तरह और भी ऐसी भाषाएं संविधान की आठवीं सूची में दर्ज हैं जिनकी न बोलने वालों की संख्या अधिक है न ही प्रचार प्रकाशत साहित्य है। हिमाचली में प्रदेश के अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार अपनी रचनाधर्मिता से इसके भंडार को समृद्ध कर रहे हैं। इसके लिए हि. प्र. भाषा कला संस्कृति अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर दिए जाने वाले पुरस्कार, प्रकाशन सहायतानुदान तथा पुस्तक थोक खरीद योजनाएं उद्धरण हैं। इसी क्रम में हि. प्र. भाषा संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम व योजनाएं प्रकाशन आदि द्रष्टव्य हैं। शब्दों की तरह आकृतियां, रंग, रेखाएं, अभिनय, नृत्य, ताल, नाद, भंगिमाएं आदि भी मानवीय मनोभावों की अभिव्यक्ति के सफल माध्यम हैं जो भिन्न-भिन्न नामों से परंपरित हैं। हिमाचल प्रदेश के हर क्षेत्र में परंपरित कलाओं के विरसा परिवार, समुदाय, वर्ग विशेष हैं जो अपनी परंपरित कलाओं के माध्यम से इस प्रदेश की भवन शैलियों, काष्ठ कलाकृतियों, धातु कला रूपों, मूर्तियों, प्रस्तर कलाकृतियों, भव्य प्रासादों, किलों, मंदिरों आदि रूपों में दर्शनीय चित्ताकर्षक हैं। जनजातीय क्षेत्रों में गोंपाओं में संरक्षित धर्म ग्रंथों की पांडुलिपियां, थंका कला, बौद्ध प्रतिमाएं, भवनों में भीतरी सज्जा, वेशभूषा, अलंकरण पकवानों, गीत-नृत्य-नाट्य रूपों में सर्वत्र दिखाई देता है लोककला अभिरुचि तथा संरक्षण-संवर्द्धन की लंबी परंपरा। इन क्षेत्रों का भ्रमण जहां प्राकृतिक भव्यता के कारण चित्ताकर्षक है वहां जनजातीय लोकजीवन की जीवन शैलियां भी विस्मय से विमोहित करती हैं। धर्म और लोक आस्थाओं के सहारे पर्वतीय जीवन ने अनेक वाचक कलाओं की परंपरा भी संभाल कर रखी है। इन्हें हम हिमाचली सांस्कृतिक ही मानते हैं।

इसके अन्य क्षेत्रों में लोक नृत्यों, लोक नाट्यों, लोक गायन आदि निष्पादन कलाओं की परंपरा को हिमाचल के पूर्ण राज्य के रूप में अस्तित्व पाने पर विकास के अनेक आयाम और एकरूपता के निकट आने के अवसर मिले हैं। प्रदेश में 25 जनवरी, 26 जनवरी, 15 अप्रैल, 15 अगस्त, प्रथम नवंबर राज्य के विशेष दिवसों के रूप में मनाए जाते हैं जिनमें से प्रदेश के हर क्षेत्र के निष्पादक कलाकारों को अपनी परंपरित कलाओं के प्रदर्शन का अवसर मिला करता है। ऐसे अवसरों पर पूरे प्रदेश की लोक संस्कृति एक ही विशाल मंच पर प्रदर्शित मंचित होती रोमांचित करती है। प्रदेश की ऐसी लोक सांस्कृतिक विविधता जो भरमौरी (गद्दी) चंबयाली, पंगवाली, लाहुली, किन्नौरी, कुल्लुई, मंडयाली, बिलासपुरी, सिरमौरी, महासुवी, कांगड़ी आदि नृत्य-नाटियों द्वारा प्रदर्शित होती हैं तो हर दर्शक इसकी लोककला व भाषा बोलियों के पारंपरिक सौंदर्य से विमोहित हो उठता है। मैं यहां 1989 में हुए भारत कला उत्सव जो दिल्ली में एक कलानगरी का सृजन कर एक महीना भर वहां हुआ था, उसका उदाहरण देना चाहूंगा। उन दिनों मैं धर्मशाला कॉलेज में था। हमने तब कालेज में भी झमाकड़ा तैयार करवाया था। डॉ. आत्माराम प्राचार्य थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने हमारे कॉलेज को वहां जाने का आदेश दिया है। उनकी प्रेरणा और प्रयास से मैं वहां गया। 20 लड़कियों का दल था। वाद्य वादकों के साथ हिमाचल भवन में ठहरे थे। दो कॉलेज और भी थे। प्रदेश के हर जिले के लोक नर्तक दल भी गए थे। मैं वहां जितने दिन उस सत्व में निर्धारित-निश्चित मंचों पर कांगड़ा महिला लोक नृत्य झमाकड़ा के प्रदर्शन हेतु जहां भी गया, वहां पर हिमाचल प्रदेश के कलाकारों की प्रस्तुतियां देखकर हर दर्शक यही कहता कि जितना सौंदर्य और लोककला रूपों की विविधता, लोक नृत्यों की भाव भंगिमाएं, ताल, सुखाद्य हर क्षेत्र के अलग-अलग रूप रंग हिमाचल के देखने-सुनने को मिल रहे हैं, अन्यत्र कम हैं।" हमारे लिए वे शब्द और क्षण अत्यंत गौरवमय होते। उस समय हमने अपने लिए हिमाचली संबोधन ही सुना, जो प्रिय लगता।

वास्तव में ही हिमाचल के साथ कांगड़ा आदि क्षेत्रों का विलय वरदान सिद्ध हुआ है। पंजाब राज्य में ये क्षेत्र उस प्रांत के पिछड़े पहाड़ी क्षेत्र थे। जालंधर में था रेडियो स्टेशन। अक्तूबर 1964 में मेरी भेंट डॉ. एम.एस. रंधावा से पहाड़ी गायक के रूप में शाहपुर विश्राम गृह में हुई थी, तब मैं नेरटी स्कूल में प्राइमरी अध्यापक था। ब्लॉक समिति रैत के चेयरमैन पंडित बख्शी राम डोगरा जी ले गए थे मुझे वहां। वे 'पर्वत की गूंज' कार्यक्रम हेतु लोक गीतों की रिकार्डिंग भी करवा रहे थे एस. एस. शशी द्वारा। मैंने पहाड़ी पापुलर लोकधुनों पर अपने बनाए गीत सुनाए, उन्हें पसंद और शाबाशी दी और पहुंचा दिया रेडियो स्टेशन पर रिकार्डिंग के लिए। परंतु विशाल हिमाचल बनने पर शिमला रेडियो स्टेशन पर पहुंचने का प्रसंग बड़ा चकित करता। अवसर था शिमला में पहली नवंबर 1966 को पंचायत महासम्मेलन जिसमें रैत ब्लॉक के समिति चेयरमैन पंडित बख्शी राम मुझे और पीयूष गुलेरी को भी समिति की मोटर में बिठाकर शिमला ले गए। रात को यू.एस. क्लब में ठहरे। उस रात हमने देखा शिमला आकाश पर तारों की जगमगाहट और धरती पर शिमला शहर की रौशनियां, उनमें गूंजती तुरही, करनाल, ढोल, नगाड़ों की ताल- सुर ध्वनियों के साथ भिन्न-भिन्न भाषा-बोलियों में गायन के स्वर। हम

स्वयं पर गौरव महसूस कर रहे थे लोक कलाओं और भाषा बोलियों के वैविध्य के उस महोत्सव में आकर।

प्रातः माननीय मुख्यमंत्री डॉ. वाई. एस परमार, लाल चंद प्रार्थी जी के साथ नए हिमाचल के समिति सदस्यों, अध्यक्षों से मिलने आए। मिलते-मिलाते वे रैत ब्लॉक के कमरे में आए और हम दोनों- मुझे और गुलेरी- को देखकर परमार जी बोले- ये दोनों भी प्रतिनिधि हैं? तब एकदम पंडित बख्शीराम जी ने कहा- जनाब! ये दोनों हमारे ब्लॉक कवि हैं।' उनका इतना कहना था कि प्रार्थी जी ने एकदम कहा - क्या बात है। कांगड़ा के दो कवि भी आए हैं। और परमार जी की तरफ बात करते कहा- अब निश्चित रूप से हमारी पहाड़ी के कवियों की वृद्धि होगी और बनेगी पहाड़ी भाषा।' खैर, यह एक प्रासंगिक बात थी परंतु महत्त्वपूर्ण इसलिए कि डॉ. परमार जी ने उसी समय वहां उपस्थित आकाशवाणी के सहनिर्देशक खेड़ा जी को कहा- इन्हें कल आकाशवाणी बुलाओ, इनकी कविताएं रिकार्ड करो, और सुनाओ।' दूसरे दिन वैसा ही हुआ। महासम्मेलन में भी अवसर मिला। हमें प्रदेश के मुख्यमंत्री ने पहचान दी हम गौरवान्वित हुए।

मेरे कहने का अभिप्राय हिमाचल के साथ कांगड़ा आदि पहाड़ी क्षेत्रों का विलय होना यहां की भाषा-बोली, साहित्य, लोकनृत्य झमाकड़ा, लोक गायन, भगत, भरमौरी नृत्य-नाटियों, कांगड़ा चित्रकला, कशीदाकारी आदि निष्पादन तथा ललित कलाओं को विकास के विविध आयाम मिले। प्रदेश में शिक्षा, बागबानी, कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, तकनीकी शिक्षा, स्कूल कॉलेज, विश्वविद्यालय, सड़कें, पुल, यातायात, हवाई पट्टियां, हैलीपैड और अब तो 'अटल टनल' बनने से रोहतांग के आर-पार की दूरियां सिमट गईं। यातायात हर मौसम में खुल गया। 'सरकार की हर गांव की कहानी' योजना के अंतर्गत 'मेरा गांव नेरटी' भी भारतीय पर्यटन मानचित्र पर उभरा, मुझे भी पहचान मिली गांव के इतिहास और सांस्कृतिक-पर्यटन संभावनाओं व धरोहर के साथ। इसलिए मुझे हिमाचली होने पर गर्व है।

पाठकों को हिमाचल के पूर्ण राज्यत्व की स्वर्ण जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं। जय हिमाचल।

राजमंदिर परिसर, नेरटी, कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश-176 208
मो. 094180 30860

कांगड़ा कलम

हिमाचल की सांस्कृतिक पहचान और पूर्ण राज्यत्व

डॉ. तुलसी रमण

हिमाचल वास्तव में हिमालय का ही पर्यायवाची शब्द है। पौराणिक मिथक-कथाओं और लोक कथाओं आदि में पार्वती के पिता का नाम हिमाचल आया है। सामान्यतया पार्वती हिमालय की ही पुत्री मानी जाती है। स्वतंत्रता के बाद जब इस पिछड़े पहाड़ी क्षेत्र की अनेक रियासतों को मिलाकर एक राज्य के गठन की प्रक्रिया चली तो इस प्रांत के लिए 'हिमाचल प्रदेश' और 'हिमालय प्रांत' ये दो नाम विचारार्थ सामने आए। तत्कालीन केंद्रीय गृह मंत्री सरदार पटेल ने 'हिमाचल प्रदेश' नाम का अनुमोदन किया था।

पश्चिमी हिमालय के अंचल में आबाद यह भूखंड 15 अप्रैल, 1948 को, छोटी-बड़ी 30 रियासतों को मिलाकर एक केंद्र प्रशासित राज्य के रूप में भारत के नक्शे पर अस्तित्व में आया। इनमें से 26 रियासतों को मिलाकर एक ही 'महासू' जिला बना था। कह सकते हैं कि 26 देशों का एक महादेश था जो अब शिमला, किन्नौर और सोलन इन तीन जिलों में विभक्त है। महासू के अतिरिक्त सिरमौर, मंडी और चंबा ये तीन जिले इन्हीं पुराने राज्यों के नाम पर बने थे। जुलाई, 1954 में कहलूर राज्य का पांचवां जिला बिलासपुर नाम से हिमाचल प्रदेश में शामिल हुआ।

सन् 1954-55 के दौरान में राज्यों के पुनर्गठन के लिए विचार-विमर्श होने लगा तो उत्तरी क्षेत्र के मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में अपने आम वक्तव्यों में पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरों ने कह दिया था कि - 'हिमाचल पंजाब से लगता एक छोटा-सा पहाड़ी क्षेत्र है, इसे पंजाब में मिला देना चाहिए, ताकि सीमा पर एक विशाल और सशक्त राज्य बन सके।' मगर हिमाचल के पहले मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार ने अपने साथी नेताओं से तभी कह दिया था कि, 'देखते हैं, हिमाचल को ये लोग पंजाब में मिलाते हैं या जो पहाड़ी इलाके पंजाब में रह गए हैं, वे हिमाचल में मिलते हैं।' डॉ. परमार को पहाड़ी भूगोल के जनजीवन और भाषा-संस्कृति की अलग पहचान के अपने तर्क पर पूरा भरोसा था। पंजाब और हिमाचल के दो बड़े शेरों का यह दंगल अब उत्तरी भारत की राजनीति में चर्चा का विषय बन गया था। पंडित नेहरू, सरदार पटेल, गोविंद वल्लभ पंत और लाल बहादुर शास्त्री जैसे केंद्रीय नेता इस द्वंद्व को बड़ी गंभीरता और चाव से देख रहे थे, जिसमें पंजाब के शक्तिशाली नेता कैरों हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व को ही मिटाने पर तुले थे। जबकि डॉ. परमार पहाड़ी पर्यावरण में समाज और संस्कृति की पंजाब से भिन्नता साबित करने पर अड़े थे।

कानून और समाज शास्त्र के प्रबल अध्येयता डॉ. यशवंत सिंह परमार ने राज्यों के पुनर्गठन आयोग के समक्ष दलील पेश की थी कि, 'ग्रियर्सन के भाषायी सर्वे के अनुसार हिमाचल के भू-भाग की पहाड़ी भाषा का अलग अस्तित्व है, और पहाड़ी भूगोल के रियासती समाजों की सभ्यता तथा संस्कृति भी पंजाब से अलग पहचान रखती है। इसलिए शिवालिक पहाड़ियों से लेकर पश्चिमी हिमालय की उच्च पर्वत-श्रृंखला तक

के जो क्षेत्र पंजाब राज्य में हैं, उन्हें हिमाचल में मिलाकर इस पहाड़ी प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलना चाहिए।' इसी जद्दोजहद में एक दशक निकल गया, मंगर डॉ. परमार अपने सशक्त तर्क के साथ अपने समाज-सांस्कृतिक धरातल पर अडिग रहे तो प्रथम नवंबर, 1966 को पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में मिला दिए गए। इसी से हिमाचल विशाल बना। इस उपलक्ष्य में प्रथम नवंबर को 'पहाड़ी भाषा-संस्कृति दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पंजाब के मैदानों से लेकर हिमालय की चोटियों तक फैले, इन नए मिलाए गए क्षेत्रों के, आज हिमाचल प्रदेश में- कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना, कुल्लू तथा लाहुल- स्पीति ये पांच जिले हैं।

दिलचस्प बात यह है कि आज हिमाचल प्रदेश के जो कुल 12 जिले हैं, स्वतंत्रता से पहले इस सारे भू-भाग में 45 राज्य यानी देश थे। इन सबके अपने छोटे-बड़े शासक थे और अपनी अलग शासन व्यवस्थाएं थीं। इनमें भूगोल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य बुशहर 3820 वर्गमील का था। जबकि 24 रियासतें सौ वर्गमील से भी कम क्षेत्र की थीं। सबसे छोटी बेजा रियासत केवल 4 वर्गमील की थी। उसका भी अपना शासक था और अलग शासन व्यवस्था थी। क्षेत्र की लघुता के उदाहरण स्वरूप हमारी जो अपनी ठियोग नामक एक तहसील है, इस क्षेत्र में स्वतंत्रता पूर्व राज्य थे। इनके शासकों ने बेगार के काम कराने और राहदारी वसूलने तथा सजा देने के अपने अलग नियम बना रखे थे। इसी कारण हर रियासत के रीति-रिवाजों में भिन्नता रहती थी।

पहाड़ी क्षेत्रों के अलग-अलग राज्यों में बंटे होने के कारण हिमाचल प्रदेश में आज तक भाषा-बोली, रीति-रिवाज, समाज व्यवहार में गजब की विविधता नजर आती है। पारंपरिक खान-पान, रहन-सहन, वस्त्राभूषण आदि में पुराने रियासती क्षेत्रों की रंगत मुखर रहती है। उदाहरण के लिए हिमाचल में टोपियों के ही अनेक प्रकार हैं। सर्दियों की ठंड से बचाव के लिए हर क्षेत्र के लोगों ने अपनी अलग टोपी तैयार की है। घाटियों में बंटे भू-भाग की विभिन्न बोलियों और टोपियों के नाम क्षेत्रों व पुरानी रियासतों से जुड़कर कुल्लुई, बुशहरी, सिरमौरी, किन्नौरी, लाहुली, पंगवाली, गद्दी, मंडयाली, कांगड़ी आदि प्रचलन में हैं। मगर एक पहाड़ी समूह में आकर ये सब बोलियां और टोपियां हिमाचली हैं। हमारे आज के राजनेता अपने क्षेत्र की टोपी पहनकर और वहां की बोली बोलकर मतदाताओं को रिझाने के प्रयास करते हैं। प्रदेश के नेता राष्ट्रीय नेताओं को अपनी शानदार टोपी भेंट करते हैं, तो बुजुर्ग और गंजे नेता इसे बड़े शौक से धारण करते हैं। हिमाचल में आने वाले पर्यटक भी यहां की यादगार पहचान के रूप टोपियां खरीद ले जाते हैं। डॉ. परमार ने हिमाचल की जिस सांस्कृतिक पहचान के तर्क से इन पहाड़ों को संगठित किया आज वह विभिन्न आयामों में अंतर्राष्ट्रीय प्रसार पा रही है। यह बात भी उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता पूर्व की 45 रियासतों का इतिहास और परंपराएं आज के हिमाचली जनजीवन और समाज में पर्याप्त मुखर होती हैं। विशाल भारत की सामासिक सभ्यता और संस्कृति में गजब की विविधता के रहते, इसके लिए 'अनेकता में एकता' या 'एकता में अनेकता' के जो जुमले अक्सर दुहराए जाते हैं, ये हिमाचल प्रदेश की बहुआयामी आंतरिक विविधता को लेकर भी सटीक बैठते हैं।

आज हिमाचल प्रदेश का क्षेत्र 55,673 वर्ग किलोमीटर में फैला है। इसकी सीमाएं जम्मू-कश्मीर, तिब्बत, उत्तराखंड, हरियाणा और पंजाब से जुड़ती हैं। ये सीमावर्ती राज्य सुदूर अतीत से हिमाचली भू-भाग के जनजीवन और संस्कृति को प्रभावित करते रहे हैं। इस कारण भी प्रदेश की कला-संस्कृति में विविधता बनी है। किन्नौर तथा लाहुल-स्पीति के सीमांत क्षेत्रों में बौद्ध धर्म और संस्कृति का सर्वाधिक प्रसार व प्रभाव तिब्बत से लौटकर हुआ है। बहुविध कलाओं और विधाओं का शास्त्रीय ज्ञान यहां कश्मीर से आया है, जबकि हिमाचल से व्यापार के द्वार पहले तिब्बत की ओर भी थे, अब सर्वाधिक पंजाब व हरियाणा की दिशा में व्यापार खुला है।

भूगोल के निर्माण के साथ संस्कृति के सृजन और संधान में नदियों की आधारभूत भूमिका रही है। विश्व की आदि सभ्यताएं नदियों के तटों पर ही पनपी हैं। हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय भू-क्षेत्र में तीन बड़ी नदियां बहती हैं। मानसरोवर से निकलने वाली आज की सतलुज वैदिक काल की शतुद्री या शतद्रु है। यह हिमालय की सैंकड़ों जलधाराओं को समेटने वाली पौराणिक शतधारा भी है। लाहुल के प्रवेश द्वार रोहतांग के व्यासकुंड से निकली आज की व्यास नदी मुनि वशिष्ठ को पाश-मुक्त करने वाली पौराणिक विपाशा है। इससे पहले यह आर्जीकिया कहलाती थी। इस प्रदेश की तीसरी बड़ी नदी रावी है। यह पौराणिक परुष्णी और इरावती है। इनके अतिरिक्त चंद्रभागा और यमुना भी हिमाचल के सीमांत क्षेत्रों की नदियां हैं। इन सभी नदियों के साथ समग्र भारतीय संस्कृति का सुदूर इतिहास जुड़ा है। वैदिक-पौराणिक ऋषियों के कृतित्व और उन युगों की सभ्यता तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का इन नदियों से सीधा संबंध रहा है। इनके उद्गमों, तटों और सतत प्रवाह का गुणगान वैदिक काल से भारतीय वाङ्मय में होता रहा है। इन नदियों के अस्तित्व के साथ हिमाचल-भूमि का सांस्कृतिक इतिहास वैदिक-पौराणिक कालों से जुड़ता है। अतः पश्चिमी हिमालय के अंचल का यह क्षेत्र भारतीय सांस्कृतिक इतिहास और परंपरा में विशेष स्थान रखता है।

महाभारत काल में पांडवों का हिमाचल भ्रमण हमारी परंपरा में रचा-बसा है। उत्तराखंड और हिमाचल में पांडवों के अनेक मंदिर हैं। सीमावर्ती नैटवार क्षेत्र में तो दुर्योधन और कर्ण के भी कई मंदिर हैं। हिमाचल के शिमला तथा सिरमौर जिलों में आज तक प्रचलित पारंपरिक नृत्य-नाट्य 'ठोडा' वास्तव में महाभारत युद्ध के जीवंत

छाया : नरेंद्र शर्मा

साक्ष्य प्रस्तुत करता है। पांडवों और कौरवों की ओर से महाभारत में लड़ने वाले योद्धाओं के वंशज आज भी धनुष-बाण का यह युद्ध-नाट्य महज़ मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि महाभारत की स्मृति कायम रखने के लिए प्रस्तुत करते हैं। महाभारत कथा का गायन लोक शैली में वाद्य धुनों पर नृत्य सहित होता है। कथा प्रसंगों पर आधारित यह लोक काव्य-रूप ठेठ स्थानिक बोलियों में है। सिरमौर क्षेत्र में यह गायन शैली 'पंडवायण' कहलाती है। इसी तरह दिवाली की रात को या विशेष उत्सवों पर लोक रामायण का गायन भी वाद्य धुनों पर नृत्य सहित होता है। यह रामकथा पर रची गई हिमाचल की लोक रामायण है। इस तरह दोनों महाकाव्यों का सार हमारी विभिन्न बोलियों में संरक्षित है और अनेक कलाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होता रहा है। यह समग्र परंपरा हमारे जातीय संस्कार में निहित है।

हिमाचल प्रदेश प्राचीन जनपदों का क्षेत्र है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में हिमाचल-भूमि के औदुम्बर, त्रिगर्त, कुलूत और कुलिंद जनपदों का उल्लेख हुआ है। इस भू-क्षेत्र को चार विभिन्न संस्कृतियों के लोगों ने बसाया है। कोल यहां के आदिवासी हैं। दूसरी संस्कृति के लोग काशगर और कश्मीर की घाटियों को पार करके हिमाचल भूमि में फैल गए थे। ये इतिहास प्रसिद्ध खश जाति के लोग हैं, इन्होंने महाभारत युद्ध में भी भाग लिया था। इस बात का प्रमाण है युद्ध नाट्य 'ठोडा' है जो परंपरा से पाशी (पांडव) और शाठी (शतदल कौरव) में विभक्त खशों के खूंदों (दलों) द्वारा ही खेला जाता है। यह नृत्य-नाट्य या खेल शिमला व सिरमौर जिलों में गर्मियों के बिशू आदि मेलों का प्रमुख आकर्षण रहता है।

महाभारत के समय से ही भारतीय आर्य संस्कृति के लोग इन पहाड़ों में प्रवेश करने लगे थे। फिर मंगोल मूल के लोगों ने हिमालयी अंचलों में अपने गांव बसा लिए थे। किन्नौर और लाहुल-स्पीति में इन जातियों का बसाव प्रत्यक्ष नजर आता है। ईसा की सातवीं-आठवीं शताब्दी के पश्चात राजपूत लोग यहां की विभिन्न घाटियों में आकर विभिन्न राज्यों के स्वामी बन गए। इसी के फलस्वरूप यहां राज्यों की संख्या 45 तक पहुंच गई। राजपूतों के साथ ब्राह्मण, वणिक आदि जातियों ने इन पहाड़ों में व्यापक रूप से प्रवेश किया। राजपूत शासकों ने अपनी जरूरत के मुताबिक विभिन्न शिल्पकर्मी और कलाकारों को अपने राज्यों में आमंत्रित करके बसाया। इनमें राजमहल और दुर्ग बनाने वाले कारीगर, धातु-प्रस्तर-काष्ठ के हुनरमंद शिल्पी तथा मूर्तिकार व चित्रकार आदि थे। इनके साथ यहां की स्थानिक जातियों के विरासती कलाकारों और शिल्पियों का हुनर भी मिल गया। सातवीं-आठवीं शताब्दी से लेकर पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी तक हिमाचल के विभिन्न स्थानों में निर्मित मंदिर, मूर्तियां और पुराने किले आदि इन्हीं कारीगरों की शिल्प-साधना के जीवंत प्रमाण हैं। इसमें अकेले चंबा की कला धरोहर को लेकर ही हेरमन गोएत्स ने लिखा है -

"जिस प्रकार अजंता के भित्तिचित्र मध्य भारत के कुछ अगम्य मठों में हमें गुप्त और चालुक्य काल की भव्य कला का बोध कराते हैं, ठीक उसी तरह बर्फीली पर्वत शृंखलाओं तथा हिमालय के दर्रों में परिरक्षित भरमौर तथा छतराड़ी के मंदिर व मूर्तियां उत्तर गुप्तकालीन कला का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें

नेपाल, ग्रेटर इंडिया तथा तुर्किस्तान, चीन व जापान की कला का प्रारंभिक स्रोत माना जाता है। लाहुल के एकांत उदयपुर में अवस्थित मृकुला देवी मंदिर उस उत्तरवर्ती कश्मीरी लुप्तप्रायः कला का अंतिम प्रमाण है जो तिब्बती परंपरा के प्रमुख स्रोतों में एक थी। इसलिए ये मंदिर तथा मूर्तियां स्थानीय अभिरुचि के अतिरिक्त अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। ये एशिया तथा विश्व कला के इतिहास के महान युगों की कुंजियां हैं।"

हिमाचल प्रदेश के सीमांत जनजातीय क्षेत्रों में किन्नौर, लाहुल-स्पीति से लेकर पांगी तक अनेक बौद्ध विहार पारंपरिक सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में हैं। इनमें मूर्ति व चित्रकला के अतिरिक्त कई तरह की कला-कृतियों और असंख्य प्राचीन पांडुलिपियों के भंडार हैं। 'हिमालय की अजंता' कहलाने वाला स्पीति घाटी का ताबो छोसखोर हजार साल से अधिक पुराना है। इन बौद्ध विहारों के इर्द-गिर्द जनजातीय जीवन और बौद्ध संस्कृति की अनूठी हलचल आज भी देखी जा सकती है।

हिमाचल के सांस्कृतिक परिदृश्य में लोक देवता की संस्था व्यापक रूप से अपनी सत्ता कायम रखे हुए है। कुल्लू, शिमला, मंडी, सोलन, सिरमौर तथा किन्नौर जिलों में विभिन्न लोक देवता सदियों से जनजीवन के केंद्र में हैं। इनमें आदिम समाज से चले आ रहे कुछ ऐसे लोक देवता भी हैं जो कबीलाई सभ्यता की याद दिलाते हैं। फिर शैव-शाक्त परंपरा के देवी-देवता सर्वाधिक और प्रमुख हैं। कुछ ऐसे समाज नायक भी देवता के रूप में पूज्य हैं, जिन्होंने अपने समय में मनुष्य जीवन के कल्याण हेतु अभूतपूर्व कार्य किए हैं। इनमें अनेक नाग देवता भी हैं। ये देवता आज भी अपने गूर (प्रवक्ता) के माध्यम से प्रजाजनों की समस्याओं का समाधान करते हैं। इन देवी-देवताओं के पारंपरिक मेले-उत्सव, यात्राएं और अनुष्ठान लोक संस्कृति को उसकी मौलिक भव्यता में दर्शाते हैं। इन देवी-देवताओं के मंदिर, मोहरे, रथ, छत्र तथा यात्रा व पूजा के उपकरणों के अतिरिक्त पारंपरिक लोक वाद्य भी विलक्षण हैं। देवनृत्य दर्शाने वाले नर्तक मेले-उत्सवों में पारंपरिक वेशभूषा में आकर्षक निष्पादन प्रस्तुत करते हैं। लोक देवता के प्रश्रय में वर्षभर की सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का नियमित संचालन होता है। देवता की संस्था के अंतर्गत विभिन्न लोक कलाओं को प्रश्रय मिलता है। कांगड़ा, ऊना, हमीरपुर और बिलासपुर जिलों में ऐसे शक्तिपीठ व अन्य मंदिर हैं जहां पंजाब आदि क्षेत्रों से लाखों श्रद्धालु आकर सांस्कृतिक यात्रा करते हैं।

हिमाचल की पहाड़ी रियासतों में शासक और लोक देवता मिलकर शासन चलाते रहे हैं। लोक देवता, राजा और प्रजा का कुल-देवता कहलाता है। इसलिए वह समाज-सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र में रहता है। जनता में देवी-देवता का भय व्याप्त रहता है। आस्था के रहते पहाड़ी लोगों ने भले ही देवी-देवताओं के रथों और पालकियों को अपने कंधों पर उठाया है, लेकिन वक्त आने पर जनता अपने देवता को लताड़ती भी है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लोक देवता वही है, जिसे लोगों ने अपनी आस्था, भय, सामाजिक एकता और मौज-मेले के लिए स्वयं स्थापित किया है। ये क्षेत्रीय समाज की समेकित श्रद्धा का एक पुंज है। हिमाचल निर्माता डॉ. यशवंत सिंह परमार तथा यहां के सभी नेताओं और जनता के समक्ष जब आशंका आ बैठी थी कि पंजाब में मिलकर इस प्रदेश का अस्तित्व ही मिट जाएगा, पहाड़ के लोग तब भी अपने हिमाचल को बचाने के लिए अपने देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना कर रहे थे।

आशंकाओं से घिरे उस काल में हिमाचल के दुर्गम पहाड़ों में अशिक्षा और गरीबी चरम पर थी। पहाड़ के युवक दुकान, होटल या घरों पर नौकरी करने के लिए पंजाब के मैदानों की ओर जाया करते थे। उन युवकों को वहां 'पहाड़ी मुंडू' कहा जाता था। डॉ. परमार की अपने समाज पर गहरी नजर रहती थी। अन्य नेताओं के साथ वह दूर-दराज के गांवों तक पद यात्रा करते थे। उनके सामने 'पहाड़ी मुंडू' की बात आई तो उन्होंने इसे पहाड़ के आत्म सम्मान का प्रश्न बनाते हुए आम जन-सभाओं में कहा, 'अगर हिमाचल के कर्मठ और ईमानदार युवा 'पहाड़ी मुंडू' हैं तो पहला मुंडू मैं हूं।' गहरी पीड़ा से निकला उनका यह कथन पहाड़ी समाज की अस्मिता का उद्घोष बन गया। तभी पंजाबी लेखक एम.एस. रंधावा ने लिखा था, 'डॉ. परमार के आह्वान के बाद पंजाब के लोग कहने लगे हैं कि अब पहाड़ों से काम करने वाले मुंडू नहीं आ रहे।' डॉ. परमार के इस अभियान ने पहाड़ी कहलाने की हीन भावना को पहाड़ की चोटी जैसा ऊंचा उठाकर गर्वमय बना दिया था। इस तरह पहाड़ी आत्म-सम्मान के जागने से, कांगड़ा, कुल्लू आदि विशाल क्षेत्र के पहाड़ी लोग पंजाब से हिमाचल की ओर आकर्षित होने लगे थे।

अपने को 'पहला मुंडू' कहने का यह उद्घोष हीनता की ग्रंथि को तोड़कर, स्वाभिमान जगाने का कारगर सांस्कृतिक प्रयोग साबित हुआ। यह अफ्रीका में भारतीयों की दुर्दशा देखकर महात्मा गांधी के 'पहला गिरमिटिया' कहलाने की याद दिलाने वाला भी था। दरअसल एक सुशिक्षित और मानवीय संवदेना वाला नेता, अपने क्षेत्रों के समाज-सांस्कृतिक आधार को गहराई से समझकर जन जागरण में अभूतपूर्व सफलता हासिल कर सकता है। पहाड़ की अस्मिता और स्वाभिमान की सोच का जनता पर असर देखते ही डॉ. परमार ने हिमाचल भूमि की अपनी खास पहचान स्थापित करने के लिए यहां की पारिस्थितिकी से लेकर भाषा, कला, संस्कृति के विभिन्न आयामों को उभारने की दिशा में युद्ध स्तर पर आंदोलन शुरू किया। इसमें कवियों, लेखकों, पत्रकारों, बुद्धिजीवियों, गायकों, अभिनेताओं व नर्तकों आदि का भी पूरा सहयोग लिया गया। अपनी वेशभूषा, लोकगीत-नृत्य, खान-पान व रहन-सहन को लेकर हमारे पहाड़ी लोग गर्व से भर गए थे।

पहाड़ी भाषा की विभिन्न बोलियों का संवाद और नृत्य-गीतों, गाथाओं आदि में व्यवहार हिमाचल की खास पहचान उभारने में कारगर साबित हुआ। गांव-कस्बों तक पहाड़ी कवि सम्मेलनों के मंच सजने लगे थे। हिमाचल को लेकर ही असंख्य कविताएं रची गईं। माला नृत्यों और नाटी-गीतों ने भी अपनी संस्कृति का डंका बजाया।

उन दिनों पहाड़ के मेले-त्योहार प्रादेशिक अस्मिता कायम करने के माध्यम बन गए थे। इस बीच यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो भारत यात्रा पर थे। वह जब शिमला आए तो डॉ. परमार का निर्धारित कार्यक्रम ठियोग के मेले में भाग लेने का था। मार्शल टीटो भी उनके साथ चलने को तैयार हो गए। ठियोग के पोटेटो ग्राउंड में महाभारत के युद्ध-नाट्य ठोडा की धुन बज उठी थी। उसी धुन में योद्धा नर्तक दो दिशाओं से डॉ. परमार और मार्शल टीटो के स्वागत में आगे बढ़े तो सबसे पहले टीटो का अंग रक्षक जैकिट उतार कर नाचते-झूमते मेले के बीच कूद पड़ा। फिर मार्शल टीटो से भी न रहा गया। उनके साथ ही डॉ. परमार मेले में इस तरह पहली बार खुले नाचे। दोनों नेताओं के नाचने की खबर सब तरफ फैल गई। उस पहाड़ी मेले और पहाड़ की लोकधुन ने हिमाचल की अस्मिता का प्रमाण दिया।

उस मेले में हजारों लोग एक साथ नाच रहे थे। तब डॉ. परमार ने पहली बार चेताया कि जनता को अपने साथ जोड़ने और खुद जनता के बीच समा जाने का यह सबसे कारगर माध्यम है। उन्होंने अपने मंत्रियों, विधायकों और अन्य नेताओं को लोक नृत्य सिखाने की व्यवस्था भी की। जो लोग नृत्य करना नहीं जानते थे, उनके प्रशिक्षण के लिए कार्यशालाएं लगाई गईं। नेता लोग नाचने लगे तो अफसरों ने भी उनके नक्शे-कदम पर जैसा-कैसा नाचना सीख लिया। इस तरह लोकतंत्र की राजनीति में जनता के साथ लोकनृत्य का सार्थक उपयोग हिमाचल भूमि पर हुआ। गीत, नृत्य, नाट्य, कवि सम्मेलन व लेखक गोष्ठियों के माध्यम से ऐसा माहौल बनाया गया कि हिमाचल की सांस्कृतिक पहचान साक्षात् नजर आने लगी। इससे राजनीतिक दावों को भी ऐसा बल मिला कि हिमाचल पहले विशाल बना और 25 जनवरी, 1971 को देश की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने शिमला आकर इसे देश का 18वां पूर्ण राज्य भी घोषित किया।

हिमाचल प्रदेश के गरिमामय अस्तित्व और सांस्कृतिक आधार के साथ, घाटियों में बंद पड़े पहाड़ों के खुलने और विकास योजनाओं का ऐसा सिलसिला चला कि पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने के दो-तीन दशकों में ही हिमाचल में कोई 'मुंडू' नहीं रह गया। बल्कि नेपाल, बिहार, राजस्थान, उड़ीसा आदि के हजारों मज़दूर, कारीगर, व्यवसायी आज फल-राज्य हिमाचल में काम करके अपने परिवार पाल रहे हैं। यह सब उस लोकोन्मुख राजनीतिक दृष्टि से संभव हुआ है जिसके अनुसार प्रदेश के मेहनती लोगों का स्वाभिमान जगाकर, उन्हें पहाड़ की भौगोलिक और समाज-सांस्कृतिक स्थितियों के अनुकूल विकास की रूपरेखा और योजनाएं बनाकर, इन पिछड़े पहाड़ों की सूरत बदलने के लिए प्रेरित किया गया। इसी के फलस्वरूप हिमाचल के अस्तित्व के 25 साल पूरे होने पर 15 अप्रैल, 1973 को मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार ने कहा था -

"हिमाचल ने समस्त भारत के लोगों को यह नई आशा बंधाई है कि निर्धनता पर्वतों की नियति नहीं। यह भी यकीन दिलाया है कि यदि वे अपने साधनों का कल्पनाशीलता से उपयोग करें तो वे न केवल समृद्ध हो सकते हैं, बल्कि राष्ट्रीय समृद्धि में भी योगदान दे सकते हैं।"

हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत में लोक संगीत सबसे समृद्ध रहा है। यहां के लोक संगीत में विभिन्न घाटियों की अनेक बोलियों की मिठास, विविध लोक वाद्यों के सुर-ताल और बहुजातीय कंठों के माधुर्य से विलक्षण विविधता आई है। पंजाबी भंगड़े की तीव्र थिरकन के प्रभाव से लेकर उच्च हिमालयी अंचलों की खामोश हकीकत के बीच सहज लास्य तक यहां के लोक नृत्य बहुरंगी वेशभूषा के साथ विरल भाव-भंगिमाएं दर्शाते हैं। एकल गायन, वादन या नृत्य से बढ़कर यहां सामूहिक लोक संगीत का प्रचलन रहा है। मेले-उत्सवों में हर जाति, समुदाय के स्त्री-पुरुष हजारों की संख्या में भी एक साथ गाते, बजाते, नाचते हैं। कुल्लू का दशहरा, चंबा का मिंजर, मंडी की शिवरात्रि, शिमला व सिरमौर के बिशू मेलों के अतिरिक्त कई जनजातीय उत्सवों में इसे साक्षात् देखा जा सकता है।

इस भू-भाग में लोक नाट्यों का भी विशेष प्रचलन रहा है। मंडी-सुकेत का बांठड़ा शासन-व्यवस्था के दोष उद्घाटित करने में कारगर साबित हुआ है। शिमला व सिरमौर का करयाला हास्य-व्यंग्य के माध्यम से मनोरंजन के साथ सामाजिक विसंगतियों को भी उजागर करता है। इसी तरह धाजा, भगत, हरणातर आदि लोक नाट्य ग्रामीण जनता को शिक्षित व जागृत करने के पारंपरिक माध्यम रहे हैं। ब्रिटिश राज में शिमला भारत की गर्मियों की राजधानी बना तो यहां अंग्रेजी नाटकों का ऐसा चलन हुआ कि यह शहर 'थियेटर का मक्का' कहलाता था। अंग्रेजों की देखा-देखी यहां हिंदुस्तानी रंगमंच भी शुरू हुआ। गेटी थिएटर के तैयार होने पर 1887 से इसमें मंचन होने लगे। शिमला के रंगमंच में रुडयार्ड किपलिंग और सर बेडन पावल जैसी हस्तियों ने भाग लिया। प्रख्यात चित्रकार अमृता शेरगिल ने भी 1922 ई. में एक मूकाभिनय में भूमिका निभाई थी। उसके बाद काका बाबू के. एल. सहगल, शिवशरण सिंह ठाकुर, पं. विजय कुमार आदि यहां रंगमंच में सक्रिय रहे। पृथ्वी राज कपूर, बलराज साहनी आदि भी यहां के नाट्य उत्सवों में शामिल होते रहे। पचास के दशक में शहर के अपने कलाकार मनोहर सिंह ने इसी गेटी थिएटर में अभिनय शुरू

किया और भारतीय रंगमंच के बेमिसाल अभिनेता साबित हुए। समय के साथ गेटी थिएटर की इस ऐतिहासिक परंपरा ने प्रदेश के विभिन्न शहरों में रंगकर्मियों को प्रेरित किया।

इसी तरह शास्त्रीय संगीत में उस्ताद बूटे खां के अनेक शागिर्द आजादी से पहले ही यहां की पहाड़ी रियासतों के संगीतज्ञ हो गए थे। चंबा, मंडी और सुकेत आदि राज्यों में शास्त्रीय संगीत की समृद्ध विरासत रही है। शिमला के अमर गायक मास्टर मदन ने करीब 15 वर्ष की उम्र तक जीकर ही संगीत की दुनिया को अपने करिश्मे से चौंका दिया था। ऐसी परंपरा की ज़मीन पर प्रदेश में आज तक शास्त्रीय संगीत जीवित है।

कला सौंदर्य के लिए विश्व प्रसिद्ध पहाड़ी लघुचित्र कला ने अपनी सुदीर्घ परंपरा में अनेक पीढ़ियों के चित्रकारों और सौंदर्य शास्त्रियों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। पहाड़ी शासकों के प्रश्रय में 17वीं शती के आरंभ से लेकर 19वीं शताब्दी के अंत तक इस चित्रकला का आंदोलन हिमाचल भूमि के पहाड़ी क्षेत्रों में अपने उत्कर्ष पर रहा। यह चित्रकला जहां एक ओर समग्र भारतीय चित्रकला की परंपरा और इतिहास में अपने सौंदर्य के कारण जीवंत और प्रमुख शैली के रूप में प्रतिष्ठित है, वहीं अपने समाज-सांस्कृतिक जीवन को समझने का उपयोगी माध्यम भी है। पहाड़ी चित्रकला के अनूठे चित्र आज भी शामिल हैं। इस कला शैली के नाम में ही पहाड़ी शब्द जुड़ा होना पहाड़ की अस्मिता का द्योतक है। पहाड़ी भाषा की विभिन्न बोलियों की तरह कला शैली की भी कई उपशैलियां हैं जो भौगोलिक व सांस्कृतिक पहचान के साथ एक पहाड़ी शैली में समाहित होती हैं।

आधुनिक रंगमंच की तरह आधुनिक चित्रकला के क्षेत्र में भी हिमाचल में उल्लेखनीय काम हुआ है। चित्रकला के इतिहास में ख्याति प्राप्त अमृता शेरगिल, जे. स्वामीनाथन, रामकुमार और कृष्ण खन्ना जैसे प्रख्यात चित्रकारों के नाम हिमाचल की राजधानी शिमला से जुड़े हैं। अमृता शेरगिल ने शिमला में रहते हुए समरहिल स्थित अपने स्टुडियो में सबसे महत्त्वपूर्ण चित्रों की रचना की, जो पहाड़ी स्त्री, पहाड़ी पुरुष के नाम से व्यापक चर्चा में रहे। चित्रकार जे. स्वामीनाथन और रामकुमार तथा लेखक निर्मल वर्मा का बीसवीं सदी के तीसरे दशक में शिमला में ही जन्म हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी इसी पहाड़ी शहर में हुई। कला जगत में ऊंची उड़ानें भरने के बाद भी इन दिग्गजों का शिमला और हिमाचल से जुड़ाव बना रहा। विश्वविख्यात कला मनीषी निकोलाई रोरिख ने कुल्लू घाटी के नग्गर नामक गांव में अपना कला एस्टेट बसाया और चित्रकार सरदार सोभा सिंह ने भी कांगड़ा घाटी के अंद्रेटा गांव में स्थायी रूप से बसकर यहां की प्रकृति और संस्कृति के अंग-संग कला साधना की। इन प्रख्यात कलाकारों की प्रेरणा और परंपरा में यहां अनेक आधुनिक चित्रकार उल्लेखनीय काम कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त पहाड़ी राज्य हिमाचल में अनेक लोक कलाओं और शिल्पों का अनुपम संसार है। यहां के मंदिरों, महलों और अनेक पुराने भवनों में पहाड़ी वास्तुकला, काष्ठकला, मूर्तिकला और भित्तिचित्रों आदि का अद्‌भुत समवाय दर्शनीय है।

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों किन्नौर, लाहुल-स्पीति, पांगी तथा भरमौर में किन्नौरी, लाहुली, भोट, गद्‌दी, गूजर तथा पंगवाल आदि जनजातियों का मिश्रित समाज है। इस विविधता में अनेक बोलियों, कलाओं, शिल्पों और लोकवार्ता की समृद्ध संपदा है। इन क्षेत्रों में हिंदू, मुस्लिम, भारतीय तथा तिब्बती बौद्ध संस्कृतियों के साथ आदिम लोकधर्म के साक्ष्य भी मौजूद हैं। हिमाचल के सांस्कृतिक परिदृश्य में ये अनूठे और मौलिक रंग हैं। इन सब बातों में यह तथ्य सामने आता है कि सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में भूगोल का आधार रहता है। इसी कारण हिमाचल की कला-संस्कृति के प्रत्येक अंक और आयाम को पहाड़ी होने का नाम मिल जाता है, यही हमारी सांस्कृतिक पहचान का मुख्य कारक भी है। इसीलिए अलग पूर्ण राज्य की हमारी आकांक्षा और इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमारी जनता तथा नेताओं की स्पष्ट दलीलों में हमारा सगर्व पहाड़ी होना ही सर्वोपरि रहा। इसी तथ्य और सत्य के आधार पर आज हिमाचल प्रदेश भारतवर्ष के मानचित्र का मस्तक राज्य है।

दयार, दुर्गा कालोनी, ढली, शिमला-171 012
मो. 0 94180 86986

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों किन्नौर, लाहुल-स्पीति, पांगी तथा भरमौर में किन्नौरी, लाहुली, भोट, गद्‌दी, गूजर तथा पंगवाल आदि जनजातियों का मिश्रित समाज है। इस विविधता में अनेक बोलियों, कलाओं, शिल्पों और लोकवार्ता की समृद्ध संपदा है। इन क्षेत्रों में हिंदू, मुस्लिम, भारतीय तथा तिब्बती बौद्ध संस्कृतियों के साथ आदिम लोकधर्म के साक्ष्य भी मौजूद हैं। हिमाचल के सांस्कृतिक परिदृश्य में ये अनूठे और मौलिक रंग हैं। इन सब बातों में यह तथ्य सामने आता है कि सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में भूगोल का आधार रहता है। इसी कारण हिमाचल की कला-संस्कृति के प्रत्येक अंक और आयाम को पहाड़ी होने का नाम मिल जाता है, यही हमारी सांस्कृतिक पहचान का मुख्य कारक भी है।

सुविधासंपन्न समय में पारंपरिकता हम और प्रासंगिकता

पवन चौहान

अनंत काल से समय अपनी रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। यह कभी नहीं रुका है। निरंतर गतिशील है। इसने अपने हर अंतराल में कई बदलाव, विकास और संघर्ष देखे हैं। समय का हर हिस्सा अपने साथ बहुत-सी नई चीजें, नए विचार, नई खोज लेकर आता है। समय की इस चाल के साथ चलते हुए मनुष्य कंदराओं से निकलकर आज हर प्रकार की सुविधाओं से संपन्न आलीशान घरों में रहता है। बटन दबाते ही उसकी जरूरत की हर चीज उसके सामने पेश हो जाती है। आज उसके हर कार्य के लिए मशीनें हैं। इस इलेक्ट्रौनिक युग की छत्रछाया में पलक झपकते ही आप दुनिया को अपने पास पाते हैं। विश्व की हर जानकारी आप तक पहुंच जाती है। घर बैठे आप किसी भी जगह की सैर पर निकल जाते हैं। लेकिन एक वह भी वक्त था जब मनुष्य ने इस इलैक्ट्रौनिक युग की कल्पना भी नहीं की होगी। यदि समय के इस बहाव के विपरीत हम कुछ दशक पीछे लौटें तो हम अपने आप को एक अलग ही दुनिया में पाएंगे। तो चलिए, समय कि इस मशीन को ज्यादा पीछे न ले जाते हुए पांच दशक पीछे लेकर चलते हैं। बात 70 के दशक से शुरू करते हैं। यहां 70 के दशक के शुरुआत में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटित हुई जिसने हिमाचल प्रदेश को इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज कर दिया। जी हां, 25 जनवरी, 1971 को हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ और हिमाचल भारत का 18वां राज्य बना। 25 जनवरी, 2021 को हिमाचल अपने पूर्ण राज्यत्व के 50 वर्ष पूरे कर दिए हैं। इस स्वर्णिम अवसर पर यदि हम उस दौर से वर्तमान सफर तक का अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि हिमाचल ने अपने हर क्षेत्र में बहुत से बदलावों को जिया है और निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर रहा है।

हम अपनी बात को इसी 70 के दशक के आस-पास हिमाचल के परंपरागत साधनों, चीजों व विधियों से शुरू करते हुए आगे बढ़ाते हैं। यह उस दुनिया की बात हो रही है जो श्रम से रजी और वर्तमान जैसी सुविधाओं से वंचित थी। ज्यादातर कार्य मानव श्रम से ही संपन्न होते थे। दिनभर की हाड़-तोड़ मेहनत पूरा व्यायाम करवा देती थी। वर्तमान की तरह मशीनों, उपकरणों की घर-घर में पैठ नहीं थी। लेकिन उस समय हम इसके बदले बहुत सारी चीजों, विधियों या सुविधाओं का प्रयोग जरुर करते थे। बता दें कि ये चीजें, उपकरण व विधियां उस समय हमारे रोजाना के कार्यों को बहुत आसान व सफल बनाती थीं। बेशक, इनमें मानव श्रम ही मुख्य था लेकिन ये फिर भी मनुष्य को काफी राहत प्रदान करती थीं। इसमें हम रसोईघर के साथ घर में, घर के बाहर तथा खेती में इस्तेमाल किए जाने वाले परंपरागत साधनों की बात करते हुए इन चीजों, साधनों और विधियों में इन पांच दशकों में आए परिवर्तन की बात करेंगे। रसोई में हम कन्वाला, मिट्टी के बर्तन, डोए, सलोटू, कूंडी, न्लोसू, घड़ोह्ली, दौंग्मो आदि प्रयोग

करते थे जबकि घर में पाखी, खिंद-खंदोल्हू, पाथा, भरनी, हुक्का, पेडू, करंडी, किश्तीनुमा करंडी, कोयला प्रैस, झूंफ, चक्की, मांजरी, बिन्ने, कोठड़, खाल्हड़ू, घड़ा आदि का इस्तेमाल किया जाता था। खेतों में या घर के बाहर अन्य जगहों पर प्रयोग की जाने वाली इन चीजों की बात करें तो इसमें हम धड़, धुईं, खुरली, जुंगड़ा, त्यांगल, छिकड़ी, उखल, चोरिंग, घ्वारा, तान, कोयला भट्टी, कड़याठी, ख्वाड़ा, चिड़ुआ री बाएं, पशुशाला, उरछ, डोली, पालकी आदि को रख सकते हैं। बताता चलूं कि यह सूची अंतिम नहीं है। इसमें और भी बहुत कुछ जोड़ा जा सकता है। ये सब चीजें उस समय के हमारे वे साधन, उपकरण व विधियां थीं जो हमारे कार्यों को आसान बनाती थी और मानव के अनुभव, आविष्कार की कहानी सुनाती थी। पिछले 50 वर्षों में हिमाचल में कृषि, बागबानी, सड़क, पन बिजली उत्पादन, औद्योगिक क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, सिंचाई एवं जलापूर्ति, वानिकी, शिक्षा, पर्यटन आदि क्षेत्रों में कई तरह के बदलाव हुए हैं जिसमें इन पारंपरिक वस्तुओं, विधियों और उपकरणों को भी शामिल किया जाता है। इस दौरान इन चीजों की कार्यप्रणाली व स्वरूप बदला है जिससे हमारे कार्य का काफी समय बचा है। हिमाचल को अप्पर और लोअर हिमाचल के रूप में भी वर्गीकृत किया जाता है। इतना अवश्य है कि हर इलाके ने अपने-अपने हिसाब से, अपनी भौगोलिक परिस्थितियों की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए अपनी दिनचर्या के कार्यों को बांटा है। इसमें कोई कार्य आसान रहता तो कोई बहुत मुश्किल। मुश्किल कार्यों को आसान बनाने के लिए हर इलाके के लोगों ने अपनी तरह से नई विधियों व चीजों का आविष्कार किया। ये सारी चीजें फिर परंपरागत अगली से अगली पीढ़ी को परिष्कृत और नवीनतम तरीके से मिलती रहीं। समय की रफ्तार के साथ इनमें परिवर्तन आता गया और ये हमें और बेहतर, और उन्नत रूप में मिलाती गईं। यह सिलसिला आदिकाल से जारी है और आज भी निरंतर कार्य कर रहा है। इनमें बहुत सारी चीजें हैं जो अब इस्तेमाल में नहीं है। उन्हें आज या तो मनुष्य ने अपने से दूर कर दिया है या फिर वे घर के किसी कोने में अकेली पड़ी धूल फांक रही हैं। बता दें, ये वस्तुएं जहां हमें हमारे अतीत के रोजाना संघर्ष की बात बताती हैं वहीं पूर्णतयः मानव श्रम से सजी दुनिया और उस कठिन दौर से भी रूबरू करवाती हैं। इन चीजों, साधनों व विधियों तथा इनके स्वरूप में इन 50 वर्षों में जो

पारंपरिक चक्की

परिवर्तन आया है हम उसकी बात करते हैं।

सबसे पहले हम रसोईघर के भीतर चलते हैं और बात करते हैं 'कन्वाला' की। 'कन्वाला' लकड़ी की वह परात थी जिस पर आटा गूंधा जाता था। वह आज कई प्रकार की धातुओं से बनी उपलब्ध हैं। अब इससे इसके टूटने का खतरा लगभग समाप्त हो गया है। मिट्टी के बर्तन की बात करें वे भी आज कई किस्म और कई तरह की धातुओं के हैं। 'कुंडी' व 'सलोटू' का कार्य मिक्सर ग्राइंडर ने संभाल लिया है। 'न्लोसू' (नमक को गलाने में प्रयोग) की आज आवश्यकता शेष नहीं रह गई है। उसके बदले आज बंद पैकेट में पीसा हुआ नमक आसानी से मिल जाता है। 'घड़ोल्ही' जो मक्खन लगाने के कार्य में इस्तेमाल होती थी, आज उसका कार्य बिजली से चलने वाली मधानी ने बहुत सरल कर लिया है। इसमें 'डोए' (साग घोटने में इस्तेमाल), 'दौंग्मों' (नमकीन चाय बनाने का बर्तन) आदि कुछ ऐसी चीजें हैं जो आज भी उसी रूप में ही इस्तेमाल में लाई जाती हैं। यह बहुत सुखद है। यदि घर में इस्तेमाल की जाने वाली चीजों की बात करें तो यहां भी खूब सारा बदलाव हुआ है जिसने आज हमारी दिनचर्या में भी काफी फेरबदल कर दिया है। यदि 'पाखी' से शुरू करें तो इसने टेबल फैन से होते हुए ए.सी. तक की यात्रा तय कर ली है। 'खिंद-खंदोल्हू' का स्वरूप बदलकर आज उन्नत किस्म की रजाई के साथ विभिन्न प्रकार की तलाई व गद्दे के रूप में वह आज हमारे समक्ष है। 'पाथे' के स्थान पर आज बेहतर किस्म की सही प्रकार से तोलने की मशीनें व तराजू हमारे पास उपलब्ध हैं। बांस की 'भरनी' के बदले आज प्लास्टिक, स्टील व जी.सी. शीट की सहायता से बनी कीपें विद्यमान है। बांस से बना 'पेडू' भी आज स्टील, प्लास्टिक व जी.सी. शीट के बड़े-छोटे कंटेनरों के रूप में मौजूद है। 'चक्की' के स्थान पर आज बिजली से चलने वाली आटा मशीनें उपलब्ध हैं जो बेहतर कार्य कर रही हैं। 'करंडी' की जगह जहां आज प्लास्टिक या अन्य विभिन्न प्रकार की चीजों से बने कंटेनर हैं तो वहीं 'किश्तीनुमा करंडी' का स्थान आज कई प्रकार के पर्स और बैगों ने ले लिया है। 'कोयला प्रैस' के स्थान पर बिजली व गैस से चलने वाली उन्नत किस्म की प्रैस वर्तमान में हमारे कार्य को सरलता प्रदान कर रही है। 'झूंफ' (बोरी या पत्तों से बना साधन, जिसे बारिश के दौरान सिर पर रखकर बारिश से बचा जाता था) की जगह तरह-तरह के रंग-बिरंगे कई किस्म के छाते हैं। 'मांजरी' व

'बिन्ने' की बात करें तो इनका स्थान कई प्रकार के आकर्षक मैट तथा कालीनों ने ले लिया है। वैसे आज भी मांजरी और बिन्ने गांव में कई घरों में इस्तेमाल में लाए जाते हैं लेकिन समय के बदलाव के साथ इनका इस्तेमाल भी सीमित-से क्षेत्र तक रह गया है। पूर्व समय की तरह हर जगह के लिए नहीं। 'कोठड़' (घर के सामान महफूज रखने का संदूक) के कई विकल्प आज हमारे सामने हैं जैसे बैड बॉक्स, कई प्रकार की अलमारियां या ट्रंक इत्यादि। 'खाल्हडू' आटा, पानी, अनाज, आदि लाने, ले जाने व संभालकर रखने वाला वह शुरुआती थैला था। उसके कई विकल्प मिलते ही मनुष्य ने कुछ दशक पहले ही उसे छोड़ दिया है। वर्तमान में इसके दर्शन भी दुर्लभ हैं। 'घड़ा' बेशक, वर्तमान में कार्य कर रहा है लेकिन बहुत कम। अब इसके विकल्प फ्रीज या वाटर कूलर आदि हमारे पास हैं। इसके अलावा घर के बाहर या खेतों में उपयोग होने वाले हमारे उपकरण व विधियों में भी काफी परिवर्तन व विकास हुआ है। 'उखल' जो दालों के साथ धान के छिलके निकालने के लिए इस्तेमाल में लाया जाता था, अब उसका स्थान सैलर या अन्य मशीनों ने ले लिया है। अब कुछ क्विंटल अनाज को निकालने के लिए कई दिन नहीं बल्कि कुछ घंटे का ही काम रह गया है। उपलों को सुरक्षित रखने की विधि 'घ्वारा' हमें अब न के बराबर देखने को मिलती है। लेकिन उपले तो गांव में आज भी तैयार किए जाते हैं। उन्हें रखने के लिए अब घ्वारा नहीं बल्कि एक अलग-सा शैड बना लिया जाता है। फसल को पशुओं आदि के नुकसान से बचाने तथा खेतों की देखभाल के लिए 'तान' का अपना महत्त्व था। तान के बदले वर्तमान में अब खेतों के चारों ओर कंटीली तार या बाड़ लगा दी गई हैं। 'ख्वाड़ा' में जहां पहले हर प्रकार की बैठकें, शादी, उत्सव आदि कार्यक्रम निपटाए जाते थे, वह आज हमारी नजरों से गायब है। आज उसके बदले शादी या अन्य कार्यक्रमों के लिए बड़े-बड़े हाल, पंडाल आदि किराए पर बुक कर लिए जाते हैं। वैसे भी, कई मकानों आदि के निर्माण के चलते ऐसी खुली जगह मिलना अब मुश्किल है और दूसरी बात यह कि ऐसी खुली जगह अब यूं ही छोड़कर रखने का चलन भी शेष नहीं रह गया है। कोई भी जमीन का मालिक अब अपनी जमीन का थोड़ा-सा भी हिस्सा किसी दूसरे के साथ किसी भी निश्चित स्थान पर ख्वाड़ा बनाने के लिए शेयर नहीं करना चाहता। जैसा पहले हुआ करता था। घर अपनी जरुरत के हिसाब से तैयार किया जाता है। पहले भी इसी बात को मद्देनजर रखते हुए घर तैयार किए जाते थे। परंतु उसमें अनाज को रखने के लिए घर से बाहर अलग-सा या घर के अन्दर ही छोटा या बड़ा कमरा भी तैयार कर लिया जाता था, जिसे उरछ' या 'कोठार' कहकर संबोधित किया जाता है। समय के बदलाव के चलते अब यह चलन में नहीं है। घर के साथ ही बाजार या दुकानों के आ जाने से अब अनाज के संग्रहण की आवश्यकता नहीं रह गई है। इसलिए आज उरछ या कोठार हमारी दिनचर्या से गायब हैं। लेकिन आप उरछ को आज भी जनजातीय क्षेत्रों में देख सकते हैं। जिनमें कई इस्तेमाल में लाए जा रहे हैं और कई इस्तेमाल में नहीं है। परंतु वे अपनी जगह पर खड़े हैं। चाहे फिर उनका इस्तेमाल किसी अन्य कार्य या सामान रखने के लिए ही क्यों न किया जाता हो। जब गाड़ियों की सुविधा नहीं थी तो लड़का-लड़की के विवाह के समय 'पालकी' और 'डोली' दूल्हा दुल्हन को लाने, ले जाने के लिए प्रयोग में लाई जाती थी। आज लगभग हर घर में गाड़ी है। ज्यादातर गांव तक सड़क सुविधा है। इसलिए आज पालकी और डोली के बदले गाड़ियों में ही दूल्हा-दुल्हन को ले जाया जाता है। बावजूद इसके, हमें कई पहाड़ी क्षेत्रों में आज भी पालकी व डोली के दर्शन हो जाते हैं। 'धुईं' जहां पर पॉपकॉर्न तैयार किए जाते थे, का स्थान अब उन्नत किस्म की पैकेट में बंद मक्की ने ले लिया है। जिसे घर में ही बर्तन में भूनकर स्वादिष्ट पॉपकॉर्न तैयार कर लिए जाते हैं। 'चिड़ुआ री बाएं' (पक्षियों को पानी रखने का बर्तन) अब पत्थर वाली बहुत ही कम बल्कि मिट्टी, प्लास्टिक या अन्य बर्तन इस्तेमाल में लाए जाते हैं।

गर्मियों में इनसान का साथी पंखी

इसके साथ ही खेतों में 'जुंगड़ा', 'हल' आदि का इस्तेमाल ट्रैक्टर या छोटे ट्रैक्टर के चलते समतल इलाकों में नहीं रह गया है। इनका इस्तेमाल उन पहाड़ी इलाकों में होता है जहां ट्रैक्टर नहीं पहुंच पाता। 'खुरली' (पशुओं को घास डालने की जगह) पहले की तरह मैदान या लकड़ी की न रहकर सीमेंट की, बढ़िया तरीके से तैयार की जाती है। कच्चे घर की 'पशुशाला' आज पक्के घरों में आ चुकी है। अब इसके भीतर पशुओं को पूरे रख-रखाव के साथ पंखे आदि की सुविधा भी विद्यमान रहती है। मनुष्य से लेकर पशुओं तक की जीवन शैली में बराबर परिवर्तन हुआ है। 'त्रयागंल' (बांस से बनी हाथ के पंजे जैसी आकृति) और 'कड़याठी' (बांस से बनी अंक 7 या अंग्रेजी अल्फाबेट एल की

तरह की छड़ी) का इस्तेमाल अब इसलिए समाप्त हो गया है क्योंकि अब सारा घास बंधा हुआ और भूसा बड़े-बड़े बोरों में ही रखा जाता है। न अब हमें पराली को बार-बार उछालने की आवश्यकता बचती है और न ही भूसे से गेहूं को अलग करने की। मशीनें इस कार्य को स्वतः ही सही प्रकार से करके पुराने समय की उस मुश्किल प्रक्रिया से निजात दिलाती है।

लोअर हिमाचल में इन चीजों, साधनों या विधियों के नाम लगभग एक जैसे ही हैं लेकिन अप्पर हिमाचल में अपनी-अपनी बोली के अनुसार इन चीजों, साधनों के नामों में काफी भिन्नता देखी जा सकती है। इसी बात को आगे बढ़ाएं तो आराम से कहा जा सकता है कि इन सबके नाम तो पहले जैसे ही हैं लेकिन समयानुसार इनका स्वरूप बदलता गया है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी ने पिछले तीन दशकों में तेजी से अपने पांव पसारे हैं। जहां गांव में मुश्किल से एकाध दुकान सीमित-सी जरूरत की चीजों को लेकर हुआ करती थी वहीं बाजार आज हमारे घर के भीतर तक चला आया है। आज आप अपनी पसंद की चीज को अपने मोबाइल या कंप्यूटर की स्क्रीन पर छूते ही मंगवा सकते हो।

इन 50 वर्षों में हिमाचलवासियों की दिनचर्या के हर कार्य में बहुत बदलाव हुए हैं। ढेर सारे उपकरण, विधियां व चीजें हमारी दैनंदिनी में शामिल हो चुकी हैं जिन्होंने हमारे कार्यों को बहुत आसान बना दिया है। इसका कारण इन वर्षों में हुई वैज्ञानिक उन्नति मुख्य है। हमने अपने पुराने औजारों, चीजों, सुविधाओं, साधनों व विधियों का इस्तेमाल जरूर बंद कर दिया है लेकिन यदि समय के साथ चलना हो तो यह जरुरी हो जाता है। परंतु इतना अवश्य है कि हमें अपनी इन चीजों की अहमियत को ध्यान में रखते हुए इन्हें संग्रहित करने की बहुत आवश्यकता है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी पिछले दौर के मुश्किल वक्त की दास्तानों, इन चीजों, उपकरणों, विधियों आदि के माध्यम से स्मरण रख सके। साथ ही उस कठिन दौर में हमारे वैज्ञानिक बुजुर्गों के अपने अनुभव, जरुरत और परिस्थिति के चलते जिस परिश्रम से इन चीजों के द्वारा कार्यों को आरामदायक बनाया था, उसका एहसास वे कर पाएं। 50 वर्षों के इस सफर में यह पहाड़ी प्रदेश हिमाचल भी दुनिया के साथ चलने की पूरी कोशिश करते हुए विकास की दास्तान सुना रहा है। बेशक, हिमाचल के विकास कार्यों को अभी बहुत आगे ले जाने की आवश्यकता है लेकिन राज्य अपनी इस यात्रा में कठिन भौगोलिक परिस्थितियों व अन्य मुश्किलात को पछाड़ते हुए दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। यह बहुत सुखद है।

गांव व डाकघर महादेव
तहसील सुंदरनगर, जिला मंडी-175018
मो. 0 98054 02242

दोहों में हिमाचल

डॉ. मंजु गुप्ता

बनी पच्चीस जनवरी, भारत में है खास ।
प्रदेश हिमाचल बनके महकी जन की आस।।

सबसे सुंदर जगत में, प्यारा भारत देश ।
अठाहरवां राज्य जो, है हिमाचल प्रदेश।।

आबादी इसकी हुयी, है अब अस्सी लाख ।
खूबसूरती में बनी, दुनिया में है साख ।।

देव रमण होता यहाँ, दें वे आशीर्वाद ।
भोले-भाले लोग से, करते वे संवाद ।।

शिमला की सुंदरता, करे मंजु गुणगान ।
कुदरत की नियामत है, कैसे करूँ बखान।।

हिंदू संस्कृति की धरा, शिल्प कला अनमोल।
बहुभाषी भाषा यहाँ, मधुर पहाड़ी बोल ।।

लिखती मंजू कलम से, हिमाचली संसार ।
शॉल पेंटिंग कुर्सियाँ, हस्तकला का सार।।

है हिमाचल प्रदेश की, घाटियाँ शानदार।
हरी -भरी हैं वादियाँ, सेबों की भरमार ।।

घने-घने जंगल भरे, औषध पेड़ भरमार ।
बुरांश फूलों से लदे, हिमाचल की बहार ।।

कई जिलों में हैं बने, साहसी खेल स्थान।
कोर्स ट्रैकिंग सीखते, मस्त स्केटिंग शान।।

शिमला, चंबा, ऊना, हिमाचली पहचान।
पालमपुर, कुल्लू बने, पर्यटकों की जान ।।

हो, कांगड़ा में कई, स्पर्धाएँ हर साल ।
हैंग ग्लाइडिंग करती, खिलाड़ी में कमाल ।।

लगता स्विटजरलैंड यह, और महिमा अपार
चाँदी जैसे है बहें, झरनों की जो धार।।

हिमाचली संस्कृति लगे, जग को 'मंजू' अनूप।
प्रेम, नेह आदर भरे, लोगों के मन - रूप।।

शुभ दिन पर शुभकामना, करें आप स्वीकार।
आज हिमाचल में खिली, बधाई की बहार ।।

झड़ी आशीष की लगी, संग स्नेह ओ प्यार ।
खूब हिमाचल में बहे, प्रगति विकास बयार ।।

19, द्वारका, प्लॉट 31, सेक्टर, 9/ι, वाशी, नवी मुम्बई-400703, मो. 0 80804 20533

विकास यात्रा संग संस्कृति

डॉ. योगेश चंद्र सूद

हिमाचल प्रदेश भारत के एक प्रमुख राज्य के रूप में उभरा एक गतिशील प्रदेश है जिसने बीते लगभग 50 वर्षों के अपने अस्तित्व के लम्बे सफर में तरक्की के ऊंचे आयाम स्थापित किए हैं। पचास वर्ष का यह सफर उतार-चढ़ाव से भरा संघर्ष का साक्षी रहा है। एक पहाड़ी प्रदेश के लिए विकास करना सरल एवं आसान नहीं होता क्योंकि भौगोलिक, जलवायु एवं अन्य जीवन की शर्तें, ढंग तथा परिस्थितियां इतनी कठिन तथा जटिल होती हैं कि विकास एक टेढ़ी खीर बन कर रह जाता है। परन्तु हिमाचल एक अपवाद है जिसने पिछले 50 वर्षों में जीवन के सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व विकास करके सभी को आश्चर्यचकित कर दिया है।

असली हिमाचल गांव में रहता है। यदि किसी भी देश अथवा प्रदेश की वास्तविक तरक्की देखनी हो तो एक नजर उसके गांवों पर डालनी चाहिए। शहर तो सक्षम होते हैं तथा सुधार की गुंजाइश संसाधनों के अभाव के चलते गांव में ही होती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का भी मानना था कि असली भारत गांव में रहता है तथा गांव के विकास से ही राष्ट्र का विकास है। हिमाचल के गांव की तस्वीर पिछले 50 वर्षों में पूरी तरह से बदली है जो कि इस पहाड़ी प्रदेश के लिए शुभ संकेत है। 30-40 वर्षों पूर्व एक गांव से दूसरे गांव जाना या फिर गांव से शहर जाना बहुत ही कठिन कार्य था। क्योंकि सड़क मार्ग इतने विकसित एवं सुरक्षित नहीं थे तथा यातायात के साधनों का भारी अभाव था। परन्तु आज सड़कों का जाल बिछ गया है तथा यातायात के साधन भी बहुत बढ़ गए हैं। पक्के सड़क मार्गों से गांव को शहर से जोड़ा गया है। लिंक रोड के माध्यम से गांव को दूसरे गांव से जोड़ कर लोगों का जीवन सुगम बनाने का एक सफल प्रयास बीते 50 वर्षों में हुआ है। कहा जा सकता है कि आज का हिमाचल कल के हिमाचल से एकदम भिन्न है।

पानी अमृत है। पानी जीवन का आधार है। जल के बिना कल की कल्पना भी नहीं की जा सकती। 40-50 वर्षों पूर्व समय काल पर एक दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि उस समय प्रदेश के लोगों को पानी की भारी कमी अनुभव होती थी। गर्मी के मौसम में हिमाचल के दूर दराज, दुर्गम गांवों में पानी की एक बाल्टी लाना अथवा प्राप्त करना भी एक बड़ी उपलब्धि माना जाता था। सार्वजनिक नलों पर लोगों की भारी भीड़ देखी जा सकती थी। पानी के लिए लोगों में मारो मार के चलते धक्का-मुक्की तथा लड़ाई-झगड़े होना एक सामान्य बात थी। कितना कठिन था उन दिनों जीवन हिमाचल के पिछड़े हुए गांवों में। परन्तु आज हिमाचल प्रदेश के पूर्ण राज्यत्व के 50 वर्षों में यह तस्वीर बिल्कुल अलग है। गांव के लगभग हर घर में पानी का नल है। पानी की कोई दिक्कत नहीं है। लोगों का जीवन आसान बन गया है। हिमाचल के अन्दरूनी एवं पिछड़े हुए ग्रामीण क्षेत्रों में 40-50 वर्षों पूर्व बिजली का हाल भी पानी जैसा ही था।

पिछड़े एवं दुर्गम क्षेत्रों में बिजली की सुविधा न होने के कारण लोग अंधेरे में रहने के लिए विवश थे। जीवन की गति बहुत धीमी थी जैसे जीवन ठहर सा गया हो। परन्तु आज राज्य को अस्तित्व में आए लगभग 50 वर्षों में हर गांव के घर में बिजली पहुंचाने का सफल प्रयास सयम-समय पर राज्य सरकारों ने किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 50 वर्षों के समय काल में क्रांति आई है। विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों की भरमार के चलते शिक्षा घर-द्वार का उद्देश्य पूर्ण हुआ है। मिड-डे मील, वजीफे, निःशुल्क पाठ्य सामग्री, लड़कियों के लिए निःशुल्क शिक्षा इत्यादि सरकारी योजनाओं ने निर्धन परिवारों के बच्चों विशेष तौर पर लड़कियों के लिए पढ़ाई-लिखाई के अनेक मार्ग खोल दिए हैं। प्रयास हो रहा है कि धन की कमी के चलते कोई भी बच्चा अपने शिक्षा पाने के अधिकार से वंचित न रहे। हर बच्चे को स्कूल तक लाना सरकार एवं शिक्षा विभाग की प्राथमिकता है। हिमाचल प्रदेश के शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ते कदम गुरुदेव टैगोर के सपनों के भारत को साकार करने जैसा है।

हिमाचल के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। 40-50 वर्षो पूर्व हिमाचल की कृषि इतनी विकसित नहीं हुई थी, परन्तु आज जब हिमाचल प्रदेश अपने राज्यत्व के 50 वर्ष की दहलीज पर खड़ा है तो इस क्षेत्र में तस्वीर बहुत अच्छी है। जहां कृषक की उपज बढ़ी है उसके साथ-साथ वह आर्थिक रूप से भी पहले से कहीं अधिक समृद्ध हुआ है। कृषि के आधुनिक एवं नवीनतम उपकरणों ने हिमाचल की कृषि को नई दिशा प्रदान की है। सीमाओं की सुरक्षा में भी हिमाचल का योगदान इन 50 वर्षों में कोई कम नहीं रहा। मातृभूमि की रक्षा करते हुए देश की सीमा पर हिमाचल के अनेक वीर सपूतों ने शहादत दी है जिससे लाल बहादुर शास्त्री के 'जय जवान- जय किसान' के नारे को बल मिला है। कृषि तथा सेना के साथ-साथ पिछले 50 वर्षों में हिमाचल के उद्योग जगत की दशा तथा दिशा में भी बेहतरी की ओर भारी अंतर आया है। उद्योग जगत के विकसित होने से प्रदेश के युवाओं को रोजगार के अच्छे अवसर प्राप्त हुए हैं।

बात यदि साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र की करें तो इन 50 वर्षो के लम्बे सफर में साहित्य एवं संस्कृति का निरंतर विकास हुआ है। साहित्य एवं संस्कृति एक-दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। यदि साहित्य पनपता है तो संस्कृति का उत्थान जरूर होता है। सुविधाओं के बढ़ने से मेलों तथा समारोहों के आयोजन में वृद्धि हुई है जिससे संस्कृति को प्रोत्साहन एवं बढ़ावा मिला है। जहां तक साहित्य की बात है इन 50 वर्षों में कविता की तो भरमार है। परन्तु कहानी, लेख, एकांकी, निबन्ध एवं समीक्षा के क्षेत्र में उपज एवं प्रगति अपेक्षाकृत कम है। साहित्य जगत में महिलाओं तथा युवाओं की सहभागिता बढ़ने से साहित्य में निखार आना तय है। ठीक ही कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण है तथा स्वच्छ साहित्य स्वस्थ समाज की नींव रखता है। हिमाचल के पूर्ण राज्यत्व के इन 50 वर्षों में समय-समय पर अनेक प्रमुख कवियों, साहित्यकारों एवं लेखकों ने अपना भरपूर योगदान दिया है। परन्तु बात भले ही किसी भी समय अथवा काल की रही हो जब तक उसमें हिमाचल के साहित्य की चर्चा करते हुए हिमाचल के साहित्य के पितामह के समकक्ष यशपाल तथा पं. श्रीधर शर्मा गुलेरी का उल्लेख न हो तो वह बात संपूर्ण नहीं हो सकती। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि साहित्य के क्षेत्र में आने वाले समय में हिमाचल प्रदेश आकाश की बुलंद ऊंचाइयों को छूएगा।

सूद कॉटेज, प्रोफेसर कॉलोनी, मैहतपुर, ऊना, हिमाचल प्रदेश-174 315, मो. 0 70186 55242

जागृति के पैरोकार

हिमाचल की पत्र-पत्रिकाएं

• श्रीनिवास जोशी

आम लोगों को जागरूक करने के लिए पत्र-पत्रिकाओं की विशेष अहमियत है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पर यदि नज़र दौड़ाई जाए तो तत्कालीन नेताओं ने पत्र-पत्रिकाओं को हथियार बनाकर आम जनमानस को आंदोलन के लिए प्रेरित किया था। हिमाचल प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर अपने गठन और उसके बाद पूर्ण राज्यत्व प्राप्त करने के लिए पत्र-पत्रिकाएं ही जागृति की पैरोकार रही हैं। प्रदेश से निकलने वाली पत्र-पत्रिकाओं ने आम लोगों को जागरूक ही नहीं किया, बल्कि देशभर के लेखकों व साहित्य प्रेमियों को मंच भी प्रदान किया है। सन् 1955 हिमाचल के पत्र-पत्रिकाओं के इतिहास में एक मीलपत्थर कहा जा सकता है। शिमला से लोक सम्पर्क तथा पर्यटन विभाग ने, जी हां, यही नाम होता था तब इस विभाग का, एक पत्रिका निकाली 'हिमप्रस्थ' जिसके सम्पादक थे हरि कृष्ण मिट्टू और रामदयाल नीरज। इसमें कहानियों, कविताओं, आलेखों के अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश में घटित घटनाएं संक्षेप में तथा चित्रों के माध्यम से दी जातीं थीं। इस पत्रिका ने हिमाचल के लेखकों की पहचान प्रदेश से बाहर बनानी आरम्भ की। बाहर और भीतर, इस पत्रिका का स्वागत हुआ। इसके बाद वर्ष 1978 में विभाग द्वारा गिरिराज साप्ताहिक समाचार पत्र आरंभ किया गया। तब से लेकर आज तक ये दोनों निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं। अब सूचना एवं जन संपर्क विभाग नए दौर के माध्यमों को अपनाते हुए वेबसाईट, ट्वीटर, फेसबुक, विभागीय एप के माध्यम से लोगों को विकासात्मक जानकारी उपलब्ध करवा रहा है। सूचनाओं को आम जनता तक वीडियो के माध्यम पहुंचाने के लिए विभाग ने अब यू-ट्यूब चैनल भी आरंभ किया है जिसमें प्रतिदिन की गतिविधियों से संबंधित समाचार प्रसारित होते हैं। वर्ष 2020 में विभाग ने लोगों तक सरकार की प्रतिदिन की गतिविधियों को पहुंचाने के लिए हिमाचल बुलेटिन आरम्भ किया है। यह बुलेटिन हर सायं यू-ट्यूब पर अपलोड किया जाता है।

एक कहानी सा लगता है कि एक राज्य की राजधानी ठंडे स्थान पर हो जहां बिजली न हो, पानी का नियमित आवंटन न होता हो, भिश्ती मशक से घर घर जा कर पानी की जरूरत पूरी करते हों, किसी किसी सड़क को ही उचित कहा जा सके और घरों को गरम रखने की कोई सभ्य व्यवस्था न हो। कभी कभी तो ऐसा लगता है कि हम हॉलीवुड की फिल्म देख रहे हों जिसमें एक ऐसा शहर दिखाई दे रहा है जिसमें अंधेरा होते ही कुत्तों की भौंक के साथ बिल्लियों के कलरव की जुगलबन्दी हो रही है, रोमन गार्ड आकर दीवारों से सटी मशालों को एक लम्बे प्रदीपक से जला कर अंधेरे से निजात दिला रहा है। यह शहर 1864 का हमारा शिमला है। इस वर्ष गवर्नर जनरल और वायसरॉय सर जॉन लॉरेंस लन्दन में बैठे सेक्रेटरी ऑव स्टेट सर चार्ल्स वुड, को लिखते हैं कि उनके लिए गर्मियों में तपते तथा चिलचिलाते कलकत्ता में कार्य करना असम्भव है और वह गर्मियों में शिमला से देश का प्रबन्धन करेंगे अन्यथा उनका त्यागपत्र स्वीकार किया जाए ताकि वह इंग्लैंड वापस आ सकें। सर वुड अपने एक कर्मठ अधिकारी को खोना नहीं चाहते थे, अतः उन्होंने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। गवर्नर जनरल के शिमला में रहने के कारण उनकी काउंसिल के अन्य सदस्य भी शिमला आ गए और ठंडा शिमला भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बना और आज शिमला को भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित किए हुए 150 साल हो चुके हैं। 1864 से 1947 तक शिमला अपने इसी ओहदे पर विराजमान रहा।

1884 में पाइप द्वारा आने वाला पानी प्राप्त होना शुरू हुआ। 1903 में रेलगाड़ी शिमला पहुंची, रिक्शा-योग्य सड़कें इसके बाद बनने लगीं हालांकि कॉम्बरमियर ब्रिज और जाखू राउंड 1828 में बन गया था। 1913 को चाबा से बिजली आनी आरम्भ हुई। हालांकि इससे पूर्व 1887 में बने वायसरीगल लॉज में जेनेरेटर द्वारा चालित 16 कैन्डल वॉट के 1000 बल्ब लगा दिए गए थे। लेडी डफरिन, जो उस भवन की पहली महिला रहीं हैं, लिखती हैं, "कितना आनन्द है - एक बटन दबाओ और प्रकाश हो जाता है। मैं तो दिन में भी कई कई बार ऐसा करती हूं।"

आप सोचेंगे कि शिमला में पत्र-पत्रिकाओं की यात्रा 1864 के बाद ही आरम्भ हुई होगी। नहीं, ऐसा नहीं है। सन् 1848 में शिमला अखबार नाम से पहला साप्ताहिक समाचार पत्र निकला था। इसके प्रकाशक और सम्पादक शेख अब्दुल थे। इसे नागरी लिपि में लिथोग्राफ किया जाता था। लिथोग्राफी एक विधा होती है जिसमें पत्थर या धातु में शब्द अंकित किए जाते हैं और फिर उनमें स्याही पोत कर कागज में उतारा जाता है। वह धातु या पत्थर केवल शब्दों की स्याही ही कागज पर लाता है बाकि के

स्थान की नहीं। सारा काम हाथ से होता था, बिजली की आवश्यकता नहीं होती है। आरम्भ में इस अखबार की 50 प्रतियां ही निकालीं गईं थीं -22 भारतीयों को बेची गईं थीं, 8 अंग्रेजों को और 20 निःशुल्क बांट दी गईं थीं। उस वक्त शिमला शहर की जनसंख्या 9000 हुआ करती थी। इतनी कम बिक्री और विज्ञापन आदि की कोई आय नहीं - परिणाम यह हुआ कि शेख साहिब का बटुआ खाली होने लगा। उन्होंने 1849 में यानि एक साल बाद ही इससे मुक्ति पाने की सोची और अखबार बन्द हो गया। 1850 में इसे द्विमासिक के रूप में फिर से आरम्भ किया गया -पहले इसकी छपाई संख्या 50 थी तो अब 66 हो गई - पर शेख साहिब की पूंजी में छेद बढ़ता गया और सन् 1851 में उन्होंने अखबार निकालने के व्यवसाय से तौबा कर ली। इस तरह से लिखित रिकॉर्ड के अनुसार शिमला अखबार अपनी दो साल की जिन्दगी के बाद बाल मृत्यु का शिकार बना।

इन्हीं दिनों शिमला में एल्बियन प्रेस की स्थापना हुई और यहां से एक समाचार पत्र 'दी माउन्टेन मॉनीटर' निकलना आरम्भ हुआ। 6 माह तक यह पत्र घिस-पिट कर निकलता रहा और एक सुबह कब्र में सोया हुआ मिला। दी माउन्टेन मॉनीटर ने कइयों को प्रेरित किया कि वे भी पत्र निकालें और लगभग आधा दर्जन पत्र-पत्रिकाएं उस वक्त के शिमला में नजर आने लगीं पर अंग्रेजी की कहावत का सहारा लूं तो यह सब अखबार नौं पिनों की तरह झड़ गए।

बहुत लोग जानते हैं कि 'दी सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ेट' लाहौर से निकलने वाला समाचार पत्र था क्योंकि इसके साथ नाबेल लॉरिएट रुडयार्ड किपलिंग का नाम जुड़ा है। पर वास्तव में यह पहले शिमला से निकलता था और इसका पहला अंक 22 जून, 1872 को निकला था। इस पत्र को ऊंचाइयां दिलाने में इसके सम्पादक ईके रॉबिनसन का योगदान रहा है। आगरा से निकलने वाले पत्र मौफुसलाइट के साथ इसका विलय सन् 1876 में हुआ और इसके बाद ही यह लाहौर को स्थानान्तरित कर दिया गया। रुडयार्ड किपलिंग 1882 से 1889 तक लाहौर में इसके सम्पादकीय मण्डल में रहे।

शिमला के स्टेज के बारे में सिविल एण्ड मिलिट्रि गजेट में छपी उनकी टिप्पणी मुझे इतनी अच्छी लगती है कि अंग्रेजी में होने के बावजूद मैं उसे यहां बोलने से जरा भी नहीं हिचकिचा रहा हूं:

As tribute to your taste
We certify that Simla stage is chaste.
Mellowed by age, and cooled by tempering Time,
We find it venerable and sublime.

अप्रैल से अक्तूबर तक सात महीने भारत सरकार शिमला से चलती थी - बाकी के महीनों में 1911 तक कलकत्ता से और उसके बाद दिल्ली से ब्रिटिश सरकार चली। उन दिनों जो नियतकालिक पत्रिकाएं शिमला से निकलतीं थी, उनके नाम थे- कुरियर, स्टेशन, पायोनियर बुलेटिन, दी शिमला टाईम्स और शिमला न्यूज। सन् 1904 का शिमला जिला का गजेटियर कहता हैः "साप्ताहिक दी शिमला न्यूज ही केवल एक ऐसी पत्रिका है जो विज्ञापन पन्नों से अधिक है। दी पायोनियर बुलेटिन तमाम ग्रीष्मकाल में रोजाना प्राप्त तथा भेजे जाने वाले तारों का उल्लेख करता था।" तार से मुझे याद आया कि यह दोनों खुशी और गमी के संदेशों का पर्चा होता था - कोई इसे पाकर मदहोश हो जाता था तो कोई बेहोश हो जाता था। जुलाई 14, 2013 को राहुल गांधी को अश्वनी मिश्रा द्वारा भेजे गए अन्तिम तार के साथ हमने 169 साल पुरानी इस संचार विधा को भी अलविदा कह दिया है।

दी शिमला टाईम्स का मस्तूल-शिखर कहता था 'प्रो दिओ एत इम्पीरियो' यथा 'ईश्वर और साम्राज्य के लिए' -देख लें, एक छोटा सा पत्र और डंके में चोट। यह पत्र अन्य पत्रों से अधिक चला और बाद में यह दैनिक तक हो गया था। यह पत्र 20वीं सदी के दूसरे दशक तक छपता रहा। छोटे से तत्कालीन शिमला के लिए इसमें किस प्रकार के समाचार छपते होंगे, यह मेरे लिए कौतुहल का विषय रहा और मैंने जब खोज की तो बहुत रुचिकर भाषा में कुछ तब के समाचार पढ़ने को मिले :

"राईफलमैन फरनान्डेज जो हर बात पर आपत्ति उठाता था और ड्रिल करने से भी मना करता था, 50 रुपए जुर्माने के अतिरिक्त 28 दिन की जेल की सजा पर भेजा गया था। फरनान्डेज पिछले वीरवार को सजा काटने के बाद जेल से रिहा कर दिया गया है।" दी शिमला टाईम्स 13 सितम्बर, 1917।

यही पत्र 22 नवम्बर, 1917, यानि दो माह बाद लिखता है, "शिमला राईफल्स के राईफलमैन फरनान्डेज को आज रेजिमैन्ट के समक्ष घुमाया गया और ड्रिल न करने के कारण उसका कोर्टमार्शल किया गया। सजा भी सुना दी गई, 6 माह की कैद और 100 रुपए जुर्माना। उसने अपने लिए वकील लेने से भी मना कर दिया। वह एम्बुलैंस में काम करना चाहता है और उसे सिपाही बनाया जा रहा है। हम सरकार की नीति के विरुद्ध बात कर रहे हैं और समझते हैं कि यदि वह इंग्लैंड में होता तो शायद उसके साथ वह नहीं होता जो यहां हो रहा है।"

1918 में जब विश्व युद्ध-प्रथम समाप्त हुआ तब यही अखबार 14 नवम्बर, 1918 को लिखता है : "सोमवार को सात बजे के थोड़ी देर बाद जब युद्धस्थिति समाप्त होने की घोषणा दूरभाष द्वारा शिमला के चारों कोनों में फैल गई तब दिन की महानता के द्योतक के रूप में गिरिजाघरों के घंटे झनझना उठे। कैथोलिक कैथेडरल, क्राईस्ट चर्च और सेंट एन्ड्रयूस के घंटों की मधुर आवाजें लम्बी और तीव्र थीं और बार्न्स कोर्ट तथा संजौली के बीच की घाटी चेल्सी कान्वेन्ट के घंटाघर से उभरती आवाजों से गूंज रही थी।"

17 अप्रैल, 1919 को दी शिमला टाईम्स का कथन है "विश्व

युद्ध के दौरान नाचने पर पूर्ण पाबन्दी थी। अब जब सब कुछ सामान्य हो गया है, तब नाच भी खुल गए हैं - इसीलिए 25 अप्रैल को वायसरीगल लॉज में नाच होगा।''

इस अखबार के कुछ चटपटे विज्ञापन भी सुन लें: ''एक नव-विवाहित जोड़े के लिए अक्तूबर माह में किसी युरोपियन परिवार के साथ रिहाइश और भोजन की सुविधा चाहिए। दैनिक या मासिक लागत बताएं।''

'' एक सिख स्नातक को नौकरी चाहिए -सरकारी अथवा निजी। सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं।''

लिडल्स शिमला वीकली एक और लोकप्रिय साप्ताहिक रहा है। इसका प्रकाशन सन् 1930 से आरम्भ हुआ था। लिडल्स प्रेस उस जगह होता था जहां स्कैन्डल प्वाईंट में आजकल स्टेट बैंक ऑफ पटियाला है। मई 4, 1935 को यह समाचार देता है : ''वास्तुकला के प्रशंसित भवनों में से एक रिज में स्थित शिमला का बैंडस्टैंड है जिसमें आजकल आशियाना रैस्टॉरैन्ट चल रहा है। जो ठेकेदार यह भवन बना रहा था, उसके पास सामग्री की कमी पड़ गई, तब उसने बैंडस्टैंड की छत गवर्नमैन्ट हाई स्कूल की स्लेटें चुरा कर पूरी कर दी। अगर इस बात पर किसी को कोई शक है तो वह उन छोकरों से इस बारे में जानकारी ले सकता है जो शाम को बैंडस्टैंड के इर्द-गिर्द खेलते रहते हैं।''

रामगढ़िया गज़ेट, एक पंजाबी साप्ताहिक, शिमला से 1920 में निकलना आरम्भ हुआ। यह सिखों की राजनीतिक जागरूकता को प्रतिबिम्बित करता था और उनकी धार्मिक-दार्शनिक सोच को दर्शाने वाले पहले पत्रों में से एक था। इसके सम्पादक हजारा सिंह अस्सी थे। एक बार इसका छपना बन्द हो गया था पर फिर से चालू हो गया था। चंडीगढ़ से कुछ देर छपने के बाद सन् 1996 में यह सदा के लिए बन्द हो गया।

बीसवीं सदी के चौथे दशक में फौजी अखबार भी शिमला से निकला पर बहुत लम्बी कहानी न कहता हुआ सिमट गया। वर्ष 1942 में जब महात्मा गांधी कारावास में थे तब राजकुमारी अमृत कौर ने अपनी कोठी मेनरविला, समरहिल से महात्मा गांधी के पत्र 'हरिजन' का सम्पादन किया था। क्या आप जानते हैं कि महात्मा गांधी का जो पत्राचार राजकुमारी अमृत कौर के साथ होता था, उसमें गांधी कौर को मूर्ख या विद्रोही लिख कर सम्बोधित करते थे और पत्र का अन्त तुम्हारा तानाशाह या तुम्हारा योधा या तुम्हारा डाकू लिख कर सम्पन्न करते थे?

फिर आई स्वतन्त्रता। शिमला में स्वतन्त्रता का बड़ा जश्न सचिवालय के बाहर लगे ध्वज-स्तम्भ में झंडा फहरा कर किया गया था। हजारों लोग यहां एकत्र हुए थे। पंजाब का लोकप्रिय समाचार पत्र दी ट्रिब्यून शिमला आ गया और मालरोड में तारघर के साथ बनी बैंटनी से 25 सितम्बर, 1947 को दो पृष्ठ का अंक निकलता था। इसके पृष्ठों की संख्या लगातार बढ़ती रही - पहले 6 हुई और जनवरी 1948 के अन्त तक 8 हो गई। तब इसके सम्पादक राणा जंग बहादुर होते थे। उन के बाद जे. नटराजन आए और शिमला से यह पत्र अम्बाला छावनी गया तथा वहां से अन्ततः चंडीगढ़, जहां से यह पत्र उत्तर क्षेत्र के प्रमुख दैनिक के रूप में अभी भी अपनी पैठ बनाए हुए है। शिमला से दी ट्रिब्यून छपने से हिन्दुस्तान टाइम्स ने प्रेरणा ली और शिमला से दो-पृष्ठीय परिशिष्ट निकालना आरम्भ किया। सन् 1955-56 तक यह व्यवस्था चलती रही।

हिमाचल प्रदेश का गठन सन् 1948 में हुआ और नए प्रदेश के अपने पत्र-पत्रिकाओं का होना पढ़ने लिखने वालों को झकझोरने लगा। आचार्य दिवाकर दत्त शर्मा और शम्भु दत्त शास्त्री ने उसी वर्ष से एक साप्ताहिक 'विश्वशान्ति' शिमला से निकालना आरम्भ किया जिसमें हिमाचल प्रदेश के समाचार और प्रदेश पर विचार दिए जाने लगे। यह साप्ताहिक भी अनेक अन्य पत्रों की भांति आर्थिक संकट की बलि चढ़ गया।

आचार्य दिवाकर दत्त ने अक्तूबर 12, 1956 को संस्कृत में एक मासिक पत्रिका 'दिव्य ज्योति' शिमला से निकालनी आरम्भ की। इसके सम्पादक थे केशव शर्मा। यदि भारत की नहीं तो उत्तरी भारत की सम्भवतः यही एक संस्कृत की पत्रिका थी जिसने अपनी यात्रा के पचास वर्ष पूरे किए हों। चालीस और पचास के दशक में शिमला से निकलने वाले अनेक पत्र-पत्रिकाओं को संजोया। मदन लाल मधु और महेन्द्र प्रताप जोशी ने 'सुधा' नाम का एक साहित्यिक साप्ताहिक निकाला। घनश्याम ने 'हिम ज्योति' नाम से साप्ताहिक शुरू किया जिसका सम्पादन कुछ देर बाद रतन सिंह हिमेश ने किया। हिमेश ने अपना सम्पादकीय कौशल 'हिम तरंग' को भी दिया और अन्ततः शिक्षा विभाग के मासिक 'शिक्षा जगत' का सम्पादन करना आरम्भ कर दिया। प्रदेश के एक राजनेता हीरा सिंह पाल ने सन् 1948 में 'हिमाचल संदेश' आरम्भ किया जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचारधारा को व्यक्त किया जाता था। इसका सम्पादन जयनन्द शास्त्री करते थे। एक अन्य कांग्रेसी राजनेता जे.बी.एल. खाची ने अंग्रेजी साप्ताहिक 'चैलेंज' सन् 1956 में आरम्भ किया था। इस पत्रिका को चलाने में खाची का सहयोग जे.एन. कौल ने दिया था। इसी वर्ष स्वयं- सम्पादित जयचन्द की 'हिमवाणी' भी आरम्भ हुई। यह सभी पत्रिकाएं अधिक से अधिक 5-6 साल चलीं और जाने कहां विलोप हो गईं।

द्वारिका प्रसाद उनियाल का दी 'हिमालयन टाईम्स' उन दिनों का एक ख्यातिप्राप्त साप्ताहिक माना जा सकता है।

ग्रामीण विकास विभाग ने 1954 में एक विभागीय पत्रिका 'झरना' आरम्भ की जिसमें विकास सम्बन्धी लेख होते थे। जब पंचायत गतिविधियों ने जोर पकड़ा तब इस पत्रिका का नाम बदल कर 'पंच जगत' कर दिया गया। शिक्षा विभाग ने भी हिमशिक्षा

नाम से एक पत्रिका 60 के दशक के अन्त में निकालनी आरम्भ की जिसके सम्पादक हरिराम जस्टा थे।

सन् 1966 में पंजाब के कुछ भागों का विलय हिमाचल प्रदेश में किया गया और पहले से लगभग दोगुनी जनसंख्या वाले बृहत्तर हिमाचल बनने के बाद हवा में यह बात तैरने लगी कि हिमाचल का अपना एक दैनिक समाचार पत्र होना चाहिए। हवा में तैरने को तैयार हुए सीताराम खजूरिया जिन्होंने वीर हिमाचल नामक दैनिक का सम्पादन कार्य सन् 1975 में सम्भाला। उन दिनों के आवाजाही के साधन, छपाई सामग्री, समयानुसार समाचार एकत्र करना शिमला जैसे एक-घोड़े वाले शहर में कठिन हो गया और अगले ही साल इसे शिवालिक संदेश का नाम देकर इसका रुख चंडीगढ़ को कर दिया गया।

अंग्रेजों के समय में एक पत्र में शिमला के डिप्टी कमिश्नर के लिए चार पंक्तियां छपीं थीं :

'It is hard we know
In a place so slow
To earn advancement and promotion
DCs in Shimla come and go.'

मैं समझता हूं कि जब मैं उन पत्रिकाओं के नाम आपके सामने रखूंगा जो 60 और 70 के दशक में शिमला से निकलीं थीं तब आपको शिमला का लेखन के प्रति रुझान नजर आएगा और आप भी यदि यही मानते हो कि शिमला ब्रिटिश टाईम्स से सैरगाह, आमोद-प्रमोद, कुल-कल्लोल का स्थान रहा है तो सम्भवतः शिमला के प्रति आपका दृष्टि-परिवर्तन हो। हिम प्रताप और हिम केसरी 1969-70 में शुरु हुईं और आठ-नौ साल तक चलीं। हिमाचल दर्पण को 1965 में गोपीराम और कश्मीर सिंह ने आरम्भ किया और बाद में रामरतन पाल अपनी मृत्यु तक इसे सम्पादित करते रहे। कामेश्वर पंडित ने हिमाचल जनता का सम्पादन 1967-68 में किया था। लोकराज पत्रिका 1970 से 1974 तक छपती रही। महेन्द्र प्रताप जोशी की हिमवान 1970-71 में धमाकेदार रही। पर्वत की गूंज बिशम्बर लाल सूद का अखबार 1971 में छपना आरम्भ हुआ और उनकी कुछ वर्ष पूर्व हुई मृत्यु तक छपता रहा। राधा रमण शास्त्री की हिमबाला, खुशी राम शर्मा का हिमाचल सौन्दर्य और सीता राम खजूरिया का अंग्रेजी में न्यूज पोस्ट इस दौरान की अन्य पत्र-पत्रिकाएं हैं।

हिम-भारती, पहाड़ी भाषा में निकलने वाली पत्रिका भाषा, कला और संस्कृति अकादमी की देन है जो सन् 1967 में छपनी आरम्भ हुई और आज भी छप रही है। अकादमी ने ही एक लोक कला, संस्कृति, भाषा और साहित्य की त्रैमासिक शोध पत्रिका 'सोमसी' सन् 1974 से निकालनी आरम्भ की। 'श्यामला' नामक संस्कृत पत्रिका अकादमी ने सन् 1989 से वार्षिकी के रूप में निकालनी आरम्भ की थी जिसे बाद में अर्ध-वार्षिक कर दिया गया। बलदेव शर्मा का मासिक पत्र शैल 1974 में निकलना आरम्भ हुआ जिसे जल्दी ही साप्ताहिक में परिवर्तित कर दिया गया था।

एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'गिरिराज' सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग ने सन् 1978 में शुरू किया। 1984 में इसकी बिक्री 10,000 तक पहुंच गई थी। यह हर ग्राम पंचायत और सरकारी इदारों में जाने लगा। आज इसकी प्रसार संख्या 15 हजार से भी अधिक है।

सन् 1983 में शिमला में एक लेखक सम्मेलन हुआ था जिसकी रिपोर्ट देते हुए श्रीकृष्ण लिखते हैं : '' आजादी के बाद दूर तक याद करें तो भी हिमाचल प्रदेश के साहित्यिक इतिहास में इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ कि गुजरात से लेकर बंगाल और कश्मीर से लेकर महाराष्ट्र तक से शिमला आकर इतने अधिक लेखक एक साथ बैठे हों और देश की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के साथ साहित्यिक समस्याओं पर गंभीर विचार-विमर्श किया हो। यह अवसर जुटाया था हिमाचल प्रदेश के संस्कृति विभाग के सहयोग से शिमला की साहित्यिक संस्था शिखर ने। शायद हिमाचल के साहित्यिक इतिहास में यह भी पहला ही अवसर होगा कि यहां से शिखर जैसी साहित्यिक लघुपत्रिका का प्रकाशन शुरु हुआ, जिसके प्रवेशांक का इस अवसर पर अग्रज कथाकार जैनेन्द्र कुमार ने विमोचन किया।'' 'शिखर' केशव के सम्पादन में एक अनियतकालीन पत्रिका के रूप में निकलनी आरम्भ हुई और इसके आठ अंक निकले।

भाषा और संस्कृति विभाग ने 1985 में विपाशा का पहला अंक निकाला। यह हिम-संस्कृति का बदला हुआ नाम था। इस नामकरण संस्कार में पंडिताई मैंने भी निभाई थी। सन् 1984 में मैं विभाग का निदेशक नियुक्त किया गया था और मैंने कहा 'हिम' नाम घिसा पिटा सा हो गया है - कोई नाम सोचो जो हिमाचल से जुड़ा भी हो और हमारी संस्कृति को हरा भरा भी रख सके। तब नाम सूझा विपाशा। शतद्रु, विपाशा और परुषणी यानि रावी, हिमाचल प्रदेश में बहने वाली तीन प्राचीन नदियां हैं जो आज भी यहां की लोक-नदियां कही जा सकतीं हैं। पीरपांजाल पर्वत श्रृंखला के रोहतांग से निकल कर प्रदेश के मध्य से होकर बहने वाली आज की व्यास का नाम है-विपाशा। सन् 1984 में ही विभाग की उर्दू पत्रिका 'फिक्रोफन' निकलनी आरम्भ हुई जिसके सम्पादक थे धर्मपाल आकिल। जिस लगन और कर्त्तव्यनिष्ठा से उन्होंने पत्रिका को उसके लड़खड़ाते दिनों में सम्भाला वह काबिलेतारीफ है। डॉ. शबाब ललित और उनके बाद आजकल सुरेश शौक उसका सम्पादन कर रहे हैं। आकिल के बाद शबाब ललित ने फिक्रोफन का सम्पादन ग्यारह साल तक किया और इस पत्रिका को अपने जीवन का हिस्सा मान कर किया। मैं उनके आखिरी दिनों में जब उनसे उनके घर में मिला था। अपना एक शेर कहा था :

''दायरों के इस सफर की इन्तिहा कोई नहीं।
लौट महवर (एक्सिस) की तरफ ऐसे सफर को छोड़ दे।''

गौतम ने अंग्रेजी की एक मासिक पत्रिका हिम वॉयस 80 के दशक में आरम्भ की थी जो कुछ अंक निकलने के बाद पाठकों के आशीर्वाद रूपी ऑक्सीजन के सिलैन्डर के सहारे जी और फिर दम तोड़ गई। इसी दौरान सन्तोषी का दैनिक हिमाचल सेवा बड़े ही तूर्यनाद से आरम्भ हुआ था पर चंडीगढ़ से निकलने वाले दैनिकों की चकाचौंध में आंखों से ओझल हो गया। जिया सिद्दीकि सरीखे विद्वान ने लोक-सम्पर्क विभाग से सेवानिवृत्ति के उपरान्त एक सीमित उद्देश्य से छपने वाले हिमालय सूर्य का सम्पादन करना स्वीकार किया और सन् 1996 में रंगीन साप्ताहिक निकालना आरम्भ किया। एक पाक्षिक सन् 2008 में निकलना आरम्भ हुआ - जनपक्ष मेल - इसके मुख्य सम्पादक थे अनिल किम्टा। इसकी साज-सज्जा, चित्र-प्रकाशन, विन्यास इतना भव्य और सुन्दर था कि दिल्ली से निकलने वालीं आउटलुक और इंडिया टुडे का मुकाबला करता था। शायद दो साल चली होगी यह मेल, फिर इसके सामने आया लाल सिग्नल कभी हरा न हो पाया।

हिमाचल ट्रिब्यून, देव एस पांधी द्वारा सम्पादित, साप्ताहिक सन् 2000 से लगातार छप रहा है। यह हिमाचल टाईम्स नामक दैनिक का अंश है जिसका सम्पादन शिमला से पांधी द्वारा किया जाता है। संचायिका मेल, हर शाम निकलने वाली पत्रिका अप्रैल 1998 से मार्च 2000 तक चली। भारतेन्दु शिखर भी अप्रैल 2000 में आरम्भ हुआ और दो साल चलने के बाद सम्पन्न हुआ। इंडियन एक्सप्रेस जैसे प्रख्यात अखबार ने शिमला में सम्पादित 'शिमला न्यूजलाईन' 22 अप्रैल 2000 में आरम्भ की थी जो 17 फरवरी 2001 को अपने अन्तिम अंक के साथ समाप्त हुई।

लिटक्रिट इन्डिया नाम से अंग्रेजी की एक अर्ध-वार्षिक पत्रिका सन् 1997 में निकलनी आरम्भ हुई। इसका प्रवेशांक 12 पन्नों का पैम्फलेट जैसा है परन्तु सामग्री में हिमाचल तथा बंगाल के कवियों की रचनाएं हैं। यह पत्रिका अंग्रेजी भाषा में लिखे गए सृजनात्मक और आलोचनात्मक लेखों के लिए उन लेखकों के लिए एक प्लेटफार्म थी जो अच्छा लिख रहे हैं पर छपने के लिए पत्रिकाओं की तलाश में भटक रहे हैं। इसका सम्पादन पत्रिका के आरम्भ में डा. दिनेश सिंह ने किया। इसकी रूप-सज्जा और पृष्ठ-संख्या में लगातार बढ़ोतरी होती रही और इसके साथ एक और सम्पादक एनडीआर चन्द्रा जुड़े। इस पत्रिका ने न केवल भारत के बल्कि विदेशों के कवियों की रचनाएं भी छापीं। यह पत्रिका ग्यारह साल लगातार छपने के बाद सन् 2008 में बन्द हो गई। कारण वही पुराना रहा - आर्थिक संकट। इसके स्थान पर अर्ध-वार्षिक हाईफन नामक द्विभाषी पत्रिका-अंग्रेजी और हिन्दी में सन् 2010 से आनी प्रारम्भ हुई है। इसका सम्पादन भी डा. दिनेश सिंह ही कर रहे हैं। यह आर्थिक लाभ को ध्यान में न रखते हुए राजनीति से दूर अन्तरानुशासनिक शोध पर केन्द्रित अन्तरराष्ट्रीय पत्रिका के रूप में निकाली जा रही है। इसमें साहित्य के साथ सामाजिक सरोकार भी उठाए जाते हैं। हाल में इसका हाइकु विशेषांक निकला है।

प्रगतिशील इरावती, एक और समृद्ध पत्रिका है जो साहित्य सृजन व विचार की संवाहक है। यह सन् 2005 से निकलनी आरम्भ हुई। पहले धर्मशाला इसका सम्पादकीय पता रहा, बाद में हमीरपुर हो गया। इसके सम्पादक राजेन्द्र राजन हैं।

आश्रय, खलिनि से 'सेतु' नामक अर्धवार्षिक पत्रिका डॉ. देवेन्द्र गुप्ता के सम्पादन में सन् 2006 से लगातार निकल रही है।

यहां मैं यह भी कहना चाहता हूं कि विश्वविद्यालय, कॉलेज, स्कूल, हिमाचल प्रदेश प्रशासकीय अधिकारियों की 'पल्स', भारतीय प्रशासनिक अधिकारियों की 'गार्डियन', विधान सभा की पत्रिका, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की पत्रिका, हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक संस्थान की भी पत्रिकाएं निकल रही हैं, पर उनका वर्णन यहां नहीं कर रहा हूं क्योंकि वे विशेष वर्ग के लिए निकलने वाली पत्रिकाएं हैं।

मैं उन सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने शिमला से पिछले 166 सालों में ढेर सारी पत्रिकाएं निकाल कर पत्र-पत्रिका सफर में हमें, यानि पाठकों को, सहयात्री बनाया। शिमला से ही क्यों, पूरे हिमाचल से निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं के जनकों को मैं साधुवाद देता हूं जिनमें बिलासपुर से निकलने वाला 'सत्यम, शिवम, सुन्दरम' का मस्तूल वाक्य लिए, अठारह साल से चल रहा शब्द मंच भी है जिसका सम्पादन जय कुमार कर रहे हैं।

मैं पत्र-पत्रिकाओं की यात्रा के अन्तिम पड़ाव में सेतु के 2009 में निकले सातवें अंक के सम्पादकीय के साथ अपनी बात सम्पन्न करता हूं। यह सम्पादकीय पत्र-पत्रिकाओं की राह में आने वाली महत बाधा की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जो थक-हार के बैठ जाने से हट कर चलते रहने का संदेश देता है। ''मुझे इस बात का अहसास होने लगा है कि लघु पत्रिका का जीवन बहुत संक्षिप्त होता है। सोचा था राह पर निकल रहा हूं सब कुछ ठीक रहेगा और कारवां बढ़ेगा। भूल ही गया था कि हिन्दी की रंग-बिरंगी पत्रिकाओं का सम्बन्ध व्यापारिक घरानों परिवारों से रहा है। इधर विश्वव्यापी मंदी के चलते विज्ञापनों पर भी मार पड़ रही है। ऐसी मार लघु-पत्रिकाओं को भी खाद-पानी से वंचित कर रही है। इस स्थिति का मुक़ाबला करने के लिए कदाचित हमें भी मितव्ययता, कुशलता और प्रभावशीलता जैसे वित्तीय प्रबन्धन के सूत्र पकड़ने पड़ेंगे क्योंकि 'द शो मस्ट गो ऑन'।

(हिमप्रस्थ, नवंबर-दिसंबर, 2014)

विकास के नए सोपानों की तलाश

हिमाचल प्रदेश ने अपनी पूर्ण राज्यत्व की स्वर्णिम यात्रा में विकास के नए शिखर हासिल किए हैं। प्रदेश के विकास पर केंद्रित कुछ सारगर्भित आलेख

- अजय पाराशर
- वेद प्रकाश
- नर्बदा कंवर
- सतपाल
- रीना नेगी
- डॉ. देवकन्या ठाकुर
- योग राज शर्मा
- विवेक शर्मा
- चंद्रशेखर वर्मा
- मोहित शर्मा
- आरती हेटा

समग्र–सतत विकास के सुनहरी पथ पर स्वर्णिम हिमाचल

अजय पाराशर

पच्चीस जनवरी 1971 को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने के पचास वर्षों के दौरान हिमाचल प्रदेश ने जिस तरह जीवन के हर क्षेत्र में समग्र और सतत विकास के नित, नए आयाम स्थापित किए हैं, उससे न केवल आम हिमाचली का जीवन आसान और सुविधापूर्ण हुआ है बल्कि राज्य, देश के पहाड़ी प्रदेशों अपितु बड़े राज्यों की श्रेणी में भी विकास के मॉडल के रूप में उभर कर सामने आया है। समय-समय पर प्रदेश को राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य संस्थाओं और संगठनों के अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, अभिकरणों और संस्थाओं द्वारा तमाम क्षेत्रों में प्रदत्त और प्रदान किए जाने वाले सम्मान और पुरस्कार इस बात की गवाही देते हुए नजर आते हैं कि वर्ष 2021 का हिमाचल प्रदेश, विकास के सफर में असंख्य मील पत्थर स्थापित करते हुए विकास के सुनहरी पथ पर अग्रसर है। राज्य में अब तक सत्तासीन तमाम प्रदेश सरकारें बिना किसी भेदभाव के राज्य के विकास में जी-जान से जुटी रही हैं। पिछले वर्ष समूचे विश्व में कोविड-19 के उत्पात के बावजूद मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व वाली वर्तमान प्रदेश सरकार ने राज्य में विभिन्न क्षेत्रों के विकास में कोई कमी नहीं आने दी है। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूरा करने में हिमाचल पूर्णतया कृतसंकल्प है।

राज्य ने शिक्षा, सिंचाई एवं पेयजल, स्वास्थ्य, सडकें एवं परिवहन, विद्युत, बागबानी, सामाजिक सुरक्षा, राजस्व, युवा एवं महिला विकास, पर्यटन, ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन जैसे तमाम क्षेत्रों में सर्वांगीण विकास पर बल दिया है। राज्य सरकार ने विकास को केवल भौतिक न मानते हुए इसे आम आदमी के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया है, जिसके चलते समाज के सशक्तीकरण में मदद मिली है। आज प्रदेश का कोई भी कोना ऐसा नहीं है, जहां बिजली न पहुंची हो, बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबन्ध न हो, स्वास्थ्य सुविधाएं या फिर पेयजल उपलब्ध न हो। हो सकता है कि कुछ हिस्से अब तक सड़क से न जुड़ पाए हों। लेकिन वर्तमान राज्य सरकार तमाम भौगोलिक बाधाओं के बावजूद आने वाले दिनों में इन्हें प्रदेश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए वचनबद्ध और प्रयत्नशील है। अपनी इन्हीं प्रतिबधताओं के चलते नीति आयोग ने हिमाचल प्रदेश को वर्ष 2019-20 के लिए देश भर में सतत विकास लक्ष्य प्राप्ति में दूसरे नम्बर पर आंका है।

कोई भी हिमाचली आज इस बात पर गर्व कर सकता है कि प्रदेश में प्रति व्यक्ति सकल आय जो सन् 1971 में, चंद सैंकडों में थी, वह आज लगभग दो लाख रुपये तक जा पहुंची है। अगर आंकड़ों की बात करें तो यह वर्ष 1970-71 में महज 651 रुपये थी, जो साल 2018-19 में 1,83,108 बढ़ कर रुपये तक जा पहुंची थी, जबकि साल 2019-20 में इसका मूल्यांकन 1,95,255 रुपये था। इसका श्रेय सरकार के साथ, उन तमाम हिमाचलियों को भी जाता है, जिन्होंने दिन-रात मेहनत कर प्रदेश को इस मकाम तक पहुंचाया है।

हिमाचल प्रदेश को आज सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षा हब के रूप में मान्यता प्राप्त हो रही है। जहाँ एक ओर इसके दुर्गम क्षेत्रों में भी सभी बच्चों तक शिक्षा की रोशनी पहुंच रही है, वहीं इसमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के आईआईटी, आईआईएम, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, अखिल भारतीय चिकित्सा आयर्विज्ञान संस्थान, नौणी विश्वविद्यालय जैसे संस्थान न सिर्फ प्रदेश बल्कि देश-विदेश के छात्रों को भी उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। आज प्रदेश की साक्षरता दर 82.80 प्रतिशत हो गई है। राज्य की स्थापना के समय यह दर सिर्फ 4.8 फीसदी थी। काबिलेगौर है कि आरम्भ से ही सभी प्रदेश सरकारें शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने और प्रभावी बनाने के लिए सतत प्रयास करती आ रही हैं। वर्ष 1971 में शिक्षण संस्थानों की संख्या 4,960 थी, जो आज बढ़कर 15,000 से अधिक हो गई है। उस समय साक्षरता की दर करीब 32 फीसदी थी। आज राज्य में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों में बालक और बालिकाओं की संख्या का अनुपात लगभग बराबरी का है, जो सरकार द्वारा बालिकाओं की शिक्षा के लिए चलाए जा रहे अभियान की सफलता का द्योतक है।

राज्य सरकारों ने शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए समय-समय पर जो अभियान और योजनाएं चलाई हैं, उनमें सन् 1995 में आरम्भ जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डीपीईपी), वर्ष 2001-02 में राष्ट्रीय सर्वशिक्षा अभियान, सन् 2004 में मध्यान्ह भोजन योजना, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान और सन् 2013 में बेहतर आधारभूत ढांचा विकसित करने के लिए राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) सम्मिलित हैं। आज साक्षरता के मामले में राज्य समूचे प्रदेशों और केन्द्रीय शासित प्रदेशों की श्रेणी में देश में चौथे स्थान पर मौजूद है। शिक्षा को बिना किसी भेदभाव के सभी वर्गों तक पहुंचाने के लिए स्मार्टबोर्ड योजना, निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें, अटल वर्दी योजना, अटल आदर्श विद्यालय योजना, अटल निर्मल जल योजना, मेधा प्रोत्साहन योजना, अखंड शिक्षा ज्योति मेरे स्कूल से निकले मोती, सीवी रमन वर्चुअल क्लास रूम योजना, श्रीनिवास रामानुजन छात्र डिजिटल योजना, वाईफाई योजना आदि शामिल हैं। तकनीकी शिक्षा के लिए राज्य में पांच इंजीनियरिंग महाविद्यालय, चार फार्मेसी महाविद्यालय, 15 बहुद्देश्यीय तकनीकी महाविद्यालय, 132 राजकीय आईटीआई जबकि निजी क्षेत्र में 12 इंजिनियरिंग महाविद्यालय, 14 फार्मेसी महाविद्यालय, 111 बहुद्देश्यीय तकनीकी महाविद्यालय तथा 151 आईटीआई शामिल हैं। दक्षता प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत 953 वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाओं में विभिन्न 15 क्षेत्रों में करीब एक लाख छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

राज्य में 22 जुलाई, 1970 को शिमला में प्रदेश का प्रथम विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था। इसी तरह 01 मई, 1966 को स्थापित कृषि महाविद्यालय की स्थापना के पश्चात् 01 नवम्बर, 1978 को कृषि विश्वविद्यालय और सन् 1985 में सोलन के नौणी में डॉ. यशवंत सिंह परमार बागबानी और वानिकी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। प्रदेश में उच्च तकनीकी और प्रबंधन शिक्षा के विस्तार के लिए मंडी के कमान्द में आईटीआई, हमीरपुर में एनआईटी, ऊना में आईआईआईटी, हमीरपुर में हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय और सिरमौर में आईआईएम स्थापित किए गए हैं। भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रदेश स्वर्ण जंयती ज्ञानोदय क्लस्टर श्रेष्ठ विद्यालय योजना तथा स्वर्ण जंयती उत्कृष्ट विद्यालय योजना आरम्भ किए जाने प्रस्तावित हैं। नई शिक्षा नीति-2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार ने टास्क फोर्स का गठन किया है। प्रदेश सरकार ने रूसा के तहत राज्य में उच्च शिक्षण संस्थानों के विकास और उन्नति के लिए हि. प्र. राज्य उच्च शिक्षा परिषद् की स्थापना की है।

जहां तक किसी भी क्षेत्र की भाग्य रेखा कही जाने वाली सड़कों का प्रश्न है, साल 1971 में राज्य के पास महज 7,370 किलोमीटर लम्बी सड़कें थीं, जिनकी लम्बाई आज बढ़ कर 37,808 किलोमीटर तक पहुंच गई है। आज प्रदेश की 3,162 पंचायतों के करीब साढ़े दस हजार गांवों को सड़कों से जोड़ा जा चुका है। वर्ष 1971 में प्रति 100 वर्ग किलोमीटर राज्य में सड़कों का जो घनत्व सिर्फ 13 किलोमीटर था, वह आज बढ़कर 67.91 किलोमीटर हो गया है।

रोहतांग में विश्व में दस हजार फुट की अधिकतम ऊँचाई पर 3,200 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 9.02 किलोमीटर लम्बी सुरंग 'अटल टनल', स्पीति घाटी में 13,596 फुट की ऊँचाई पर चीचम और किब्बर गाँवों को जोड़ने वाले एशिया के सबसे ऊँचे चीचम पुल, मनाली-लेह सड़क पर 11,020 फुट की ऊँचाई पर निर्मित 360 मीटर लम्बे दारचा-बरसी पुल के अलावा कई स्थानों पर सुरंगों का निर्माण किया जा रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 25 जनवरी, 2000 को आरम्भ प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) प्रदेश के लिए वरदान साबित हुई है। इसके तहत मंजूर 21,859 किलोमीटर लम्बी सडकों में से अब तक 4,900 करोड़ रुपये की लागत से 16,786 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया जा चुका है। इसके निर्माण से लक्षित 2,564 गांवों में से 2,335 गांवों को जोड़ा जा चुका है।

आधुनिक कृषि औजार

राज्य में जो विशेष सड़क योजनाएं चलाई जा रही हैं इसमें हिमालयन एक्सप्रेसवे, फोर-लेनिंग परियोजनाओं में एनएच-22 (वर्तमान में एनएच-5) के हिस्से के रूप में परवाणू-शिमला सेक्शन तथा कीरतपुर-नेरचौक-मनाली रोड शामिल हैं। भविष्य की योजनाओं में 2,690 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली 110 किलोमीटर लम्बी हमीरपुर-मंडी सड़क तथा 106 किलोमीटर लम्बा पांवटा साहिब-गुम्मा-फेडज पुल मार्ग शामिल हैं।

पुष्प खेती

वर्तमान में राज्य में कुल 4,118 स्वास्थ्य संस्थान हैं। पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त होने तक इनकी संख्या केवल 587 थी। सन् 1950-51 में प्रदेश में कुल 455 बिस्तर क्षमता वाले 91 चिकित्सा संस्थान थे। वर्तमान में राज्य में 14,527 स्वीकृत बिस्तर वाले 98 सामान्य अस्पताल, 92 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 588 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 16 नागरिक औषधालय, 2,104 स्वास्थ्य उप-केन्द्र हैं। इसके अलावा 2,898 एल्योपैथी स्वास्थ्य संस्थान, 1,252 आयुर्वेदिक तथा होम्योपैथिक संस्थान शामिल हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश ने अभूतपूर्व तरक्की की है। आज प्रदेश में छः राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय हैं, जिनमें शिमला स्थित इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मेडिकल कॉलेज, टांडा, यशवंत सिंह परमार मेडिकल कॉलेज, नाहन, जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, चम्बा, डॉ. राधाकृष्णन मेडिकल कॉलेज, हमीरपुर और श्री लाल बहादुर शास्त्री मेडिकल कॉलेज, नेरचौक (मण्डी) शामिल हैं। इसके अतिरिक्त बिलासपुर के कोठीपुरा में प्रतिष्ठित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एआईआईएमएस) का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जिसके दिसम्बर, 2021 तक पूर्ण होने की सम्भावना है।

कृषि, प्रदेशवासियों की आजीविका का मुख्य साधन है। आज भी प्रदेश की तकरीबन 90 फीसदी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए तमाम राज्य सरकारों ने फसल विविधीकरण पर ध्यान देते हुए किसानों को बे-मौसमी सब्जियों और फल उत्पादन के लिए प्रेरित किया है। जब हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ था, उस वक्त कृषि पारम्परिक ढंग से की जाती थी। भौगोलिक परिस्थितियों के चलते आज भी महज 19 प्रतिशत भूमि पर ही खेती हो पाती है। इसके अलावा बड़ी बाधा है सीमान्त किसानी, जो प्रदेश की कुल किसानी का 89 प्रतिशत है। लेकिन तमाम चुनौतियों के बावजूद आज राज्य को फल राज्य का दर्जा हासिल है और यह बे-मौसमी सब्जियों के अतिरिक्त बीज आलू और विदेशी सब्जियों के उत्पादन में अग्रणी राज्य के रूप में उभर कर सामने आया है। राज्य की कुल घरेलू आय में कृषि और सम्बद्ध क्षेत्रों का हिस्सा 22.1 प्रतिशत है। यह क्षेत्र प्रदेश में करीब 62 प्रतिशत लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

राज्य में कृषि विभाग की स्थापना साल 1948 में हुई थी। लेकिन कृषि अनुसंधानों को उस वक्त बल मिला, जब मई, 1966 में कृषि महाविद्यालय की स्थापना की गई थी। इसके बाद 01 नवम्बर, 1978 को पालमपुर में कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, जिसे आज चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। ध्यातत्व है कि वर्ष 1970-71 में प्रदेश में जहां मात्र 14,960 हेक्टेयर भूमि पर सब्जियाँ उत्पादित होती थीं, वहीं आज यह रुकबा बढ़ कर 86,144 हेक्टेयर तक पहुंच गया है। अगर उत्पादन की बात करें तो अब यह दो लाख मीट्रिक टन से बढ़ कर करीब 19 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच गया है। वहीं अगर बागबानी क्षेत्र की चर्चा की जाए तो वर्ष 1971 में केवल 28,000 हेक्टेयर क्षेत्र में 1.78 लाख मीट्रिक टन फल उत्पादन होता था, जो पिछले वित्त वर्ष तक बढ़ कर 2,32,139 हेक्टेयर में 8.45 लाख मीट्रिक पहुंच गया था।

राज्य की आर्थिकी, कृषि और बागबानी के विकास में पशुपालन की महत्ता से इनकार नहीं किया जा सकता। इसी महत्व को रेखांकित करते हुए प्रदेश सरकार पशुपालन को बढ़ावा दे रही है। 19वीं पशु गणना के अनुसार देश के कुल पशुओं की संख्या का 1.1 प्रतिशत हिस्सा प्रदेश में है। प्रदेश में कुल पशुओं की संख्या 48,44,431 है, जिसमें से 21,49,259 गाएं, 7,16,016 भैंसे, 8,04,871 भेड़ें, 11,19,491 बकरियां और 15,081 घोड़े हैं। सन् 1948 में स्थापित पशुपालन विभाग ने ग्रामीण आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए समय-समय पर दुग्ध उत्पादन में वृद्धि और पशुधन की नस्लों के स्तरोन्नयन के लिए विभिन्न योजनाओं को अंजाम दिया है। इसी कड़ी में सन् 1951 में गायों की नस्ल सुधारने के लिए अखिल भारतीय मुख्य ग्राम योजना, 1954-55 में कृत्रिम गर्भाधान के संचालन के अतिरिक्त बिलासपुर के कोठीपुरा में नव

पशु प्रजनन फार्म की स्थापना की गई। सन् 1974 में इंडो-न्यूजीलैंड पशुधन संवर्धन परियोजना के तहत न्यूजीलैंड से 175 जर्सी नस्ल के पशुधन को राज्य में लाया गया। तत्पश्चात् यह पालमपुर कृषि विश्वाविद्यालय के अनुसंधान कार्यक्रम का हिस्सा बना। आज प्रदेश में पशुधन को उत्कृष्ट पशु स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया करवाने के लिए जो 3,449 पशु चिकित्सा संस्थान मौजूद हैं, उनमें नौ पॉलीक्लीनिक, 53 उपमंडलीय अस्पताल, 329 पशु चिकित्सालय, 30 केन्द्रीय पशु चिकित्सालय औषधालय और छः पशु चिकित्सा चौकियां शामिल हैं। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री आरोग्य पशुधन योजना के तहत 1,251 पशु चिकित्सा औषधालय स्थापित किए गए हैं। इसी तरह मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए राज्य में सन् 1966 में पृथक विभाग की स्थापना की गई थी, जिससे ग्रामीण आर्थिकी को सशक्त करने में मदद मिली है। आज प्रदेश मत्स्य उत्पादन 1,40,20 मीट्रिक टन तक पहुंच गया है।

ज्ञातव्य है कि बागबानी ने हिमाचल को अग्रणी प्रदेश बनाने में अहम भूमिका निभाई है। हिमाचल प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार ने अपने अनुभव के आधार पर पाया कि बागबानी प्रदेश के लोगों की आर्थिकी की रीढ़ बन सकती है। बागबानी के इसी महत्त्व को देखते हुए सन् 1970 में कृषि विभाग से इतर बागबानी विभाग की स्थापना की गई। तब से लेकर आज तक बागबानी ने शिक्षा, अन्न उत्पादन और सुरक्षा, परिवहन, स्वास्थ्य, विद्युत क्षेत्रों की तरह राज्य के विकास में अपनी भूमिका को बखूबी अदा किया है। एक अनुमान के अनुसार प्रदेश के करीब 4.7 लाख किसान बागबानी के क्षेत्र में अपना जौहर दिखा रहे हैं। गौरतलब है कि जहाँ कृषि और उसके सहाई क्षेत्र राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में नौ फीसदी योगदान देते हैं। इसमें से करीब 40 प्रतिशत योगदान अकेले बागबानी क्षेत्र का है। वर्ष 1985 में डॉ. वाई.एस. परमार बागबानी और वानिकी विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद प्रदेश में प्रशिक्षण के अलावा नई प्रौद्योगिकी के प्रसार को बल मिला है। इससे पूर्व इस कार्य को वर्ष 1962 में स्थापित हिमाचल कृषि महाविद्यालय और अनुसंधान संस्थान, सोलन संचालित करता था। आज इस विश्वविद्यालय के अधीन चार महाविद्यालय कार्य कर रहे हैं। यह महाविद्यालय ईरान, नेपाल, इथोपिया, भूटान, अफगानिस्तान, सीरिया, मोजाम्बीक, जाम्बिया और वियतनाम जैसे देशों के छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहा है।

हिमाचल यूं ही विद्युत राज्य नहीं कहलाता है। प्रदेश की कुल पन विद्युत क्षमता 27,436 मेगावाट आंकी गई है। अब तक 22,800 मेगावाट पन विद्युत क्षमता के दोहन को मंजूरी प्रदान की जा चुकी है, जिसमें करीब 11 हजार मैगावाट पन बिजली का दोहन किया जा चुका है। हालाँकि प्रदेश सौ फीसदी विद्युतीकरण के लक्ष्य को काफी पहले हासिल कर चुका है लेकिन राज्य पूर्ण पन विद्युत क्षमता के दोहन के लक्ष्य की प्राप्ति की ओर पूर्ण ध्यान दे रहा है। इससे प्रदेश को अतिरिक्त आय के साधन जुटाने में मदद मिलेगी। हमारे लिए यह गौरव का विषय है कि मुख्यमंत्री गृहिणी सुविधा योजना और उज्ज्वला योजना में किए गए सफल प्रयत्नों की वजह से हिमाचल प्रदेश को 27 दिसम्बर, 2019 को भारत का प्रथम धुआंमुक्त राज्य होने का सौभाग्य मिला। इस योजना के तहत हर घर को धुआंमुक्त बनाने के लिए खाना बनाने वाली गैस (एलपीजी) सिलेंडर मुहैया करवाया जाता है। यह राज्य सरकार की प्रतिबद्धता और लोगों की सहभागिता का ही परिणाम है कि आज से करीब पांच साल पहले राज्य को स्वच्छ भारत अभियान-ग्रामीण के अन्तर्गत देश भर में खुले में शौच मुक्ति वाले राज्यों की श्रेणी में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ था।

हिमाचल प्रदेश ने अपनी सभ्यता और संस्कृति को संवर्धित और संरक्षित करते हुए जीवन के हर क्षेत्र में बदलाव की नई बयार लाने की जो कोशिश की है, वह पूरी तरह सफल रही है। इस तरह अपने प्राकृतिक संसाधनों के पूर्ण दोहन के साथ उनके संरक्षण के लिए किए जा रहे तमाम प्रयास सार्थक रहे हैं। इससे न केवल हिमाचल बल्कि देश के विकास में भरपूर भी मदद मिली है। समग्र और सतत विकास के पथ पर चलते हुए हिमाचल को कार्बनमुक्त राज्य बनाए रखना अपने आप में चुनौती है, जिसे पाने में राज्य अब तक पूरी तरह सफल रहा है। सभी मुख्यमंत्रियों का ध्यान इस तरफ रहा है कि औद्योगिक विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति में पर्यावरण से कोई समझौता न किया जाए।

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के सपनों को साकार करने हेतु मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने प्रदेश में आम लोगों के जीवन को सरल, सुगम और सुविधापूर्ण बनाने के लिए स्वच्छ, पारदर्शी और भ्रष्टाचारमुक्त शासन प्रदान करने के लिए जनमंच, मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाईन, हिमकेयर, सहारा, गुडिया हेल्पलाईन, होशियार सिंह हेल्पलाईन, एक बूटा बेटी के नाम जैसी अनेक योजनाओं का प्रभावी एवं सफल क्रियान्वयन किया है।

पाँच दशकों के हिमाचल प्रदेश के अब तक के सफर को देखते हुए उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले समय में राज्य न केवल देश के पहाड़ी प्रदेशों बल्कि मैदानी और बड़े राज्यों की श्रेणी में विकास के मामले में सिरमौर बन कर उभरेगा। दूसरों शब्दों में कहें तो समग्र और सतत विकास के सुनहरी पथ पर हिमाचल का सुनहरी सफर इसी तरह जारी रहेगा, जिससे हिमाचल दूसरे राज्यों से मीलों आगे नजर आएगा।

उप निदेशक,
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग,
क्षेत्रीय कार्यालय, धर्मशाला।

स्वर्णिम सफर की उमंग विकास के संग

वेद प्रकाश

भारतीय गणतंत्र के एक राज्य के रूप में हिमाचल की 50 वर्ष की स्वर्णिम विकास यात्रा में भागीदार बनना अपने आप में एक सुखद एहसास है। हिमाचल आज विकास के जिस मुकाम पर है उसे देख कर शायद यह लगे कि इसका सफर आसान रहा होगा। लेकिन इतिहास का अवलोकन करने पर मालूम होता है कि देश के इस पहाड़ी प्रदेश ने अपने अस्तित्व से लेकर वर्तमान स्वरूप तक पहुंचने के लिए एक लंबी लड़ाई लड़ी है।

हिमाचल के रियासतकालीन दौर में एक तरफ तो रजवाड़ाशाही हुकूमत के दमनकारी शासन के विरुद्ध संघर्ष, तो दूसरी तरफ विदेशी दासता की बेडियों में जकड़े भारत के स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई। देश की आजादी के ठीक आठ महीने बाद 15 अप्रैल 1948 को छोटी-बड़ी पहाड़ी रियासतों के विलय के बाद हालांकि हिमाचल प्रदेश अस्तित्व में आ चुका था। लेकिन इस पहाड़ी प्रदेश में पूर्ण राज्य के रूप में विकास का सफर सही मायने में वर्ष 1971 में प्रारंभ हुआ। और पूर्ण राज्यत्व के इस लंबे सफर के दौरान प्रदेश ने अनेक उतार चढ़ाव देखे।

अंततः 23 वर्षों के लंबे संघर्ष के बाद हिमाचलवासियों के लिए 25 जनवरी 1971 का वह ऐतिहासिक अवसर आया, जब उनका चिरप्रतीक्षित सपना साकार हुआ। पूर्ण राज्य के रूप में हिमाचल

परवाणू-चंबाघाट फोरलेन

सड़क सुविधा से जुड़े दुर्गम क्षेत्र

की इस यात्रा को स्मरणीय बनाने के लिए यह साल प्रदेश में स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। यदि पिछले 50 वर्षों के इतिहास पर नज़र दौड़ाई जाए तो पता चलता है कि प्रदेश ने अपने पूर्ण राज्यत्व के सफर में सीमित वित्तीय संसाधनों के बावजूद अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए विकास यात्रा को एक सफल अंजाम तक पहुंचाया। हिमाचल की गिनती आज देश के एक खुशहाल एवं प्रगतिशील राज्यों की श्रेणी में होती है। पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों को विकास की भाग्य रेखाएं कहा जाता है। लेकिन प्रदेश ने वर्ष 1948 में 288 किलोमीटर तथा 1971 में 7740 कि.मी. लंबी सड़कों के साथ अपने विकास का सफर शुरू किया। आज प्रदेश में सड़कों की लंबाई बढ़कर 37808 किलोमीटर हो गई है। 97 प्रतिशत से भी अधिक पंचायतें सड़कों से जुड़ चुकी हैं। शेष पंचायतों को भी शीघ्र ही सड़क सुविधा से जोड़ दिया जाएगा।

प्रदेश के जन जातीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ने के लिए सड़कों के साथ साथ सुंरगों के निर्माण को प्राथमिकता के आघार पर पूरा किया जा रहा है। अटल टनल रोहतांग इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसके बन जाने से सर्दियों में शेष भारत से कटे रहने वाले लाहुल स्पीति क्षेत्र को अब हर मौसम में सड़क सुविधा सुलभ हो गई है। देश के लिए सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण इस टनल से लाहुल घाटी और मनाली के बीच दूरी तो कम हुई ही है, साथ ही इस क्षेत्र की आलू बीज और अन्य नकदी फसलों को बिक्री के लिए समय पर बाजार पहुंचाने में भी मदद मिलेगी। सबसे बड़ी बात इस क्षेत्र में सैलानियों की आमद भी बढ़ेगी, जिससे घाटी में आर्थिक गतिविधियों का सृजन होगा, स्थानीय लोगों को स्वरोजगार मिलेगा। लाहुल स्पीति घाटी के लोगों के लिए यह सुरंग विकास की नई रोशनी लेकर आई है।

प्रदेश ने विगत 50 साल के सफ़र में चिकित्सा के क्षेत्र अभूतपूर्व तरक्की की है। राज्य में वर्ष 1971 में केवल 482 स्वास्थ्य संस्थानों के मुकाबले आज 4,320 स्वास्थ्य संस्थानों के माध्यम से लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। मुख्य मंत्री श्री जय राम ठाकुर के कुशल नेतृत्व में गत तीन वर्षों की छोटी सी अवधि में ही 'हिमकेयर योजना', 'सहारा योजना', 'अटल आशीर्वाद योजना', 'मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोष', 'मुख्यमंत्री निरोग योजना', 'मुख्यमंत्री निशुल्क दवाई योजना' तथा 'टेलिमेडिसन सुविधा' जैसी नई योजनाएं आरंभ की गईं। अब प्रदेश के युवाओं को स्वास्थ्य शिक्षा के लिए अन्य राज्यों में नही जाना पड़ता। प्रदेश में छः मेडिकल कॉलेजों से हर वर्ष सैकड़ों युवा डॉक्टर बन कर निकल रहे हैं। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स) कोठीपुरा, बिलासपुर तथा पीजीआई सेटेलाइट सेंटर ऊना जैसे विश्व स्तरीय संस्थान लोगों को घरद्वार के नजदीक स्वास्थ्य की विशेषज्ञ एवं सुपर स्पेशियलिटी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। प्रदेश में गत तीन वर्षों के दौरान ही हिमकेयर योजना के तहत 5.50 लाख परिवार पंजीकृत कर 1,17,578 लाभार्थियों को 115.47 करोड़ रुपये व्यय कर निःशुल्क इलाज

सुविधा दी गई। 'आयुष्मान भारत योजना' के तहत 3.27 लाख परिवारों के गोल्डन कार्ड बनाए गए और 73,934 लाभार्थियों को 75.46 करोड़ रुपये व्यय कर निःशुल्क उपचार सुविधा प्रदान की गई है। हिमाचल प्रदेश ने गत पांच दशकों में शिक्षा के क्षेत्र में नए सोपान तय किए हैं। साक्षरता में हिमाचल देश भर में केरल के बाद आज दूसरे स्थान पर है। आज साक्षरता दर बढ़ कर 86 प्रतिशत है। प्रदेश में शिक्षण संस्थानों की संख्या वर्ष 1971 में 4963 से बढ़कर आज 15,553 तक पहुंच गई है। आई. आई. टी. मण्डी, आई. आई. एम. धौलाकुंआ, ट्रिप्पल आईटी ऊना, सेंट्रल युनिवर्सिटी धर्मशाला जैसे स्तरीय शिक्षण संस्थान आज विद्यार्थियों को राज्य के भीतर ही स्तरीय उच्च शिक्षण सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। वर्ष 1971 में प्रदेश के 2944 गांवों में ही बिजली उपलब्ध थी जबकि आज प्रदेश के सभी गांवों में बिजली उपलब्ध है। हिमाचल प्रदेश आज 'सरप्लस बिजली राज्य' बन कर उभरा है। प्रदेश में जल विद्युत दोहन की अपार संभावनाएं

मौजूद है। प्रदेश में बहती सदाबहार नदियों में लगभग 27 हजार मेगावाट जल विद्युत क्षमता विद्यमान है, जिसमें सें अभी तक 10,600 मेगावाट ऊर्जा का दोहन किया जा चुका है। प्रदेश सरकार ने इस क्षमता के शीघ्र दोहन को प्राथमिकता देते हुए गत वर्ष सितंबर में शिमला में आयोजित पॉवर कॉन्क्लेव में 2,927 मेगावाट क्षमता की जलविद्युत परियोजनाओं के लिए 10 एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित कर 25,772 करोड़ रुपये निवेश आकर्षित करने में सफलता हासिल की है, जिनमें 13 हजार से अधिक युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे। केन्द्र सरकार ने राज्य के कुल्लू और शिमला जिलों में स्थित लुहरी चरण-एक जलविद्युत परियोजना में 1810.56 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी प्रदान की है। सतलुज नदी पर बनने वाली इस परियोजना में 758.20 मिलियन यूनिट बिजली का उत्पादन होगा।

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण इस पहाड़ी राज्य में पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाएं मौजूद है। प्रदेश ने विकास के स्वर्णिम सफर में इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रदेश के लिए एशियाई विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित 1892 करोड़ रुपये की ट्रैंच-दो पर्यटन विकास परियोजना को स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इसके अलावा ग्लोबल इनवेस्टर मीट में पर्यटन क्षेत्र में 16000 करोड़ रुपये निवेश के 225 एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किए गए हैं। राज्य के अनछुए पर्यटनों स्थलों को विकसित करने के उद्देश्य से पहले से ही कार्यान्वित की जा रही होम स्टे योजना सैलानियों को आकर्षित करने में सहायक सिद्ध हुई है। 'नई राहें नई मंजिलें' योजना के तहत 50 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। प्रदेश में पर्यटन विकास गतिविधियों के व्यापक प्रभाव का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज हिमाचल में इसकी आबादी से तीन गुणा अधिक पर्यटक यहां भ्रमण पर आते हैं। पूर्ण राज्यत्व के इस सफर के दौरान प्रदेश के आर्थिक विकास में औद्योगिकीकरण का अहम योगदान रहा है। वर्ष 1971 में यहां उद्योगीकीकरण के नाम पर गिने चुने उद्योग ही स्थापित थे। प्रदेश में इसके उपरांत ही औद्योगीकरण की शुरुआत हुई। केन्द्र में भाजपा की वाजपेयी सरकार के शासनकाल में हिमाचल को औद्योगिक पैकेज मिला, जिसके बाद प्रदेश में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए आकर्षक निवेश प्रोत्साहन प्रदान किए गए। जिनके परिणामस्वरूप यह प्रदेश उद्यमियों के लिए निवेश का आदर्श गंतव्य बन कर उभरा है।

वर्तमान प्रदेश सरकार की गत तीन वर्षो की अवधि में निवेश आकर्षित करने के नवीन प्रयासों के तहत विदेशी उद्यमियों ने भी हिमाचल का रुख किया है। राज्य में औद्योगिक व्यवसाय में सुगमता लाने के प्रयासों के तहत विभिन्न प्रक्रियाओं को सरल बनाया है। विभिन्न विभागों की सेवाओं को ऑनलाइन किया गया है। उद्योग, ऊर्जा, पर्यटन एवं ईको पर्यटन जैसे क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए इन विभागों की नीतियों को संशोधित कर निवेश अनुकूल बनाया है। सिनेमा उद्योग को हिमाचल में शूटिंग के लिए प्रोत्साहन देने हेतु फिल्म नीति तैयार की गई है।

इस दिशा में प्रदेश सरकार ने सार्थक प्रयासों से हिमाचल आज एशिया में दवाई उद्योग का हब बन कर उभरा है। कोरोनाकाल में जब पूरे विश्व में दवाइयों की जरूरत थी तो उसे हिमाचल के दवाई उद्योग ने पूरा किया। आज प्रदेश में स्थापित हजारों औद्योगिक इकाइयों में भारी निवेश के साथ लाखों बेरोजगार युवाओं को रोजगार मिल रहा है। इस दिशा में प्रदेश सरकार के सार्थक प्रयासों का ही परिणाम है कि धर्मशाला ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट में 96,720 करोड़ रुपये निवेश के 703 एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किए गए। इस आयोजन के मात्र दो महीनों के उपरांत ही 13,656 करोड़ रुपये के निवेश को धरातल पर लाकर हिमाचल में ग्लोबल निवेश के द्वार खोले है।

हिमाचल प्रदेश कृषि प्रधान राज्य है, जिसकी अधिकतर आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। पूर्ण राज्यत्व के इस सफर में प्रदेश कृषि क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है। अस्तित्व में आने के समय यहां 3.92 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कृषि की जाती थी और उस समय खाद्यान्न मात्र 1.99 लाख मीट्रिक टन था। वर्ष 1966 में पंजाब के पुनर्गठन से हिमाचल में नए क्षेत्र शामिल होने से कृषि भूमि में तथा खाद्यान्न उत्पादन में कुछ वृद्धि हुई। उस समय 7,76,000 हेक्टेयर क्षेत्र कृषि के अधीन था जबकि खाद्यान्न उत्पादन 7,04,000 मीट्रिक टन था। आज प्रदेश में 9.55 लाख हेक्टेयर में कृषि की जा रही है और खाद्यान्न उत्पादन भी 16.36 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच गया है।

हिमाचल को आज देश भर में सेब राज्य के बाद अब फल राज्य के रूप में जाना जाता है। राज्य के कुल फल उत्पादन में सेब का महत्त्वपूर्ण योगदान है और इस क्षेत्र में सीधे तौर पर लाखों लोगों को रोजगार मिल रहा है। इसके अलावा राज्य में आम, किन्नू संतरा, निंबू प्रजाति के फलों सहित फल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए फल उत्पादकों को विभिन्न योजनाओं के तहत उपदान देने के साथ-साथ समर्थन मूल्य भी दिया जा रहा है। इससे लोगों की आर्थिकी में आशातीत परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

प्रदेश में इस अवधि के दौरान नकदी फसलों विशेषकर गैर मौसमी सब्जी उत्पादन को बड़े स्तर पर बढ़ावा मिला है। सोलन में टमाटर, फूलों और मशरूम की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। इसके अलावा सिरमौर में अदरक, लहसुन व टमाटर, लाहौल-स्पीति में गुणवत्तायुक्त एवं बीज आलू तथा मटर तथा शिमला जिला में गोभी के रूप में गैर मौसमी सब्जी उत्पादन किया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश में पचास साल के अविरल विकास सफर में, मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के युवा नेतृत्व में वर्तमान सरकार का कार्यकाल उपलब्धियों भरा रहा है। तीन साल के इस सेवाकाल में लगभग एक साल कोरोना महामारी के बावजूद सरकार ने विकास की गति को धीमा नहीं होने दिया। इस अल्प अवधि में सरकार ने प्रदेश को प्रगति एंव खुशहाली के शिखरों तक पहुंचाकर समग्र एवं समायोजित विकास की अनुकरणीय पहल है। गत तीन वर्षों के दौरान प्रदेश को सुशासन, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि-बागबानी सहित सतत् विकास लक्ष्यों में बेहतर प्रदर्शन के लिए मिले अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार सरकार की बेहतर कारगुजारी के प्रत्यक्ष प्रमाण है।

वरिष्ठ संपादक, गिरिराज कार्यालय, मो. 0 94180 06164

पर्यटन क्षेत्र में हिमाचल का अतुल्य सफर

नर्बदा कंवर

आजादी के बाद से अपने अस्तित्व में आने और 25 जनवरी 1971 को पूर्ण राज्य का दर्जा हासिल करने के बाद से विकास के मामले में हिमाचल प्रदेश ने एक लम्बी छलांग लगाई है। अपने सीमित वित्तीय संसाधनों के बावजूद प्रत्येक सरकारों ने हिमाचल को अपने पैरों पर खड़ा करने तथा भारत के बड़े राज्यों के मध्य अनेक पैमानों पर सर्वश्रेष्ठ साबित करने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है।

प्रसिद्ध हिन्दी नाटककार स्वर्गीय जयशंकर प्रसाद के एक नाटक में एक उक्ति है कि वाक्-संयम विश्वमैत्री की प्रथम सीढ़ी है। जहां तक मैत्री की बात है, इस दिशा में पर्यटन भी उत्साहवर्धक माध्यम है। हिमाचल प्रदेश अपने अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य, वन व वन्य जीवन, नदियों और पारंपरिक संस्कृति के लिए जाना जाता है। प्रकृति की गोद में बसे हिमाचल की खूबसूरती अन्य राज्यों से अलग है। हिमाचल पर प्रकृति ने वो नेमतें बख्शी हैं जो शायद विदेशों में भी नहीं है। तभी तो इस छोटे से प्रदेश में मिनी स्विट्जरलैंड, छोटी काशी, मिनी लहासा जैसे कई शहर बसते हैं। इस प्रदेश की खास बात यह है कि यहां हर ऋतु में घूमने का लुत्फ उठाया जा सकता है। 19वीं शताब्दी तक हिमाचल प्रदेश में पर्यटन केवल आध्यात्मिक स्थलों में आने वाले तीर्थ यात्रियों की आवाजाही तक ही सीमित था। लेकिन जब अंग्रेजों ने हिल स्टेशनों की श्रृंखला को स्थापित करना शुरू किया तो पर्यटन को राज्य में मान्यता मिलनी शुरू हुई। 1864 में अंग्रेजों ने शिमला को 'भारत की ग्रीष्मकालीन' राजधानी घोषित करने के साथ ही पर्यटन गतिविधियों को नई दिशा मिली। तब से लेकर आज तक इस छोटे से पहाड़ी राज्य में पर्यटन गतिविधियों पर कभी भी विराम नहीं लगा। आज स्थिति कुछ ऐसी है कि हिमाचल आने वाले पर्यटकों की संख्या यहां की आबादी से तीन गुणा है। सरकारी प्रयासों व नीतियों के चलते सभी मौसमों में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रदेश में विभिन्न पर्यटन गतिविधियों का विकास हुआ है। परिणामस्वरूप आज हिमाचल प्रदेश को पर्यटकों का स्वर्ग कहा जाता है और विश्व पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। जिसका श्रेय प्रदेश सरकारों को जाता है जिन्होंने पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाओं का समय-समय पर उत्तरोत्तर विस्तार किया है तथा इसके विकास और प्रसार के लिए द्रुतगति से कार्यशील रही हैं।

आज पर्यटन उद्योग को विश्व का सबसे बड़ा उभरता उद्योग माना जाता है। हिमाचल प्रदेश में पर्यटन की अपार संभावनाएं विद्यमान हैं। प्रदेश सरकार इनके समुचित दोहन पर विशेष ध्यान दे रही है। हिमाचल प्रदेश के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 7 प्रतिशत हिस्सा पर्यटन उद्योग से ही आता है। पर्यटन उद्योग में रोजगार एवं स्वरोजगार की व्यापक संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए यह क्षेत्र प्रदेश की आर्थिक उन्नति में महान भूमिका निभा सकता है।

प्रदेश के शिमला, धर्मशाला, कुल्लू- मनाली, डलहौजी तथा कसौली जैसे प्रमुख पर्यटक स्थल अपनी नैसर्गिक सुंदरता के साथ-साथ ऐतिहासिक धरोहरों के कारण बड़ी संख्या में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। प्रदेश में बहुत से अनछुए पर्यटन गंतव्य मौजूद हैं जहां पर पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं हैं। आज प्रदेश में 37000 कि.मी. से भी अधिक लम्बी सड़कों का जाल बिछ चुका है। प्रदेश का शत- प्रतिशत विद्युतीकरण किया जा चुका है। संचार सेवाएं लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्ध हैं। इंटरनेट की पहुंच भी प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र में है। इन सब सुविधओं के कारण प्रदेश प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में उभरा है। प्रत्येक गुजरते वर्ष के साथ प्रदेश में सैलानियों की आमद में तीन गुणा बढ़ोतरी हो रही है। प्रदेश में धार्मिक व साहसिक पर्यटन को बढ़ावा मिलने से यह पहाड़ी प्रदेश साल के हर सीजन में सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है।

उच्च क्षेत्र वर्ग के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अधोसंरचना के विस्तार पर विशेष बल दिया जा रहा है। अनेक एयरपोर्ट बनाए जा रहे हैं, रेलवे विस्तार की सम्भावनाओं को तलाशा जा रहा है। हिमाचल प्रदेश ने साहसिक खेलों में नए

धौलाधार का मनोरम दृश्य

आयाम स्थापित कर भारत के 'एडवैंचर हब' के रूप में विश्वभर में अपनी पहचान बनाई है। साहसिक खेलों व साहसिक पर्यटन में नाम अर्जित करने में अटल बिहारी वाजपेयी पर्वतारोहण व संबद्ध खेल संस्थान मनाली का विशेष योगदान रहा है। इस संस्थान के माध्यम से देश के स्कीयर, ट्रेकर और पर्वतारोहियों को विशेष प्रशिक्षण कोर्स शुरू कर प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

प्रदेश की जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए, राज्य सरकार ने पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अनेक साहसिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं बनाई हैं जिनका उद्देश्य प्रदेश के पर्यटकों को मनमोहक दृश्य और अद्भुत अनुभवों के साथ-साथ अविस्मरणीय साहसिक अनुभव उपलब्ध करवाना है। अनछुए क्षेत्रों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए आरम्भ की गई 'नई राहें-नई मंजिलें' योजना के अन्तर्गत कांगड़ा जिला के बीड़-बिलिंग को पैराग्लाइडिंग गंतव्य के रूप में विकसित किया जा रहा है। शिमला जिले की प्रसिद्ध चांशल घाटी को स्की गंतव्य के रूप में विकसित किया जा रहा है। जबकि जिला मण्डी के जंजैहली को ईको-पर्यटन के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त लारजी व तत्तापानी में एडवेंचर वाटर स्पोटर्स गतिविधियों को शुरू किया जा रहा है। सरकार की पौंग बांध जलाशय की तर्ज पर पंडोह जलाशय में भी जल क्रीड़ाएं आरम्भ करने की योजना है।

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रदेश में और भी कई प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही हैं। जैसे कि शिमला के प्रसिद्ध बैंटनी कैसल का जीर्णोद्वार, मण्डी में ब्यास नदी के तट पर हरिद्वार और बनारस की तर्ज आरती के लिए घाटों का निर्माण किया जाना, ऐतिहासिक भवनों को संरक्षित और पुनःस्थापित करना, पर्यावरण पर्यटन को विकसित करना व सामुदायिक गतिविधियों को बढ़ावा देना शामिल है।

धार्मिक चेतना से हिमाचल व हिमाचलवासी इस प्रकार सराबोर है कि यदि आप प्रदेश में किसी भी स्थान में भ्रमण पर निकले तो संभावना रहेगी कि हमें हर एक कि.मी. के भीतर किसी न किसी देवी या देवता का मंदिर अवश्य मिल जाएगा। धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए श्रद्धालुओं के लिए चौरासी मंदिर, बाबा बालक नाथ, बिजली महादेव, भागसुनाग, हिडिम्बा मंदिर नयना देवी, ज्वालाजी व मणिकरण जैसे धार्मिक स्थलों को विकसित किया गया है।

प्रदेश में हरे-भरे वनों, सुरम्य स्थलों तथा विविध वन्य एवं जैव संपदा भंडार विद्यमान है जिन्हें इको पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने पर बल दिया जा रहा है। प्रदेश सरकार ने अनछुए क्षेत्रों की पारिस्थितिकी वन एवं संपदा के संरक्षण के लिए इको

टूरिज्म नीति तैयार की है। इस नीति के अंतर्गत स्थानीय लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की गई है। प्रदेश को देश का अग्रणी इको पर्यटन गंतव्य बनाने के लिए यहां आने वाले कुल पर्यटकों का वर्ष 2030 तक लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा इको पर्यटन की ओर आकर्षित करने का लक्ष्य निर्धरित किया है। इससे राज्य में हर वर्ष बड़ी संख्या में आने वाले सैलानियों को अनछुए क्षेत्रों विशेषकर समृद्ध वन्य एवं जैव संपदा की ओर आकर्षित करने में सहायता मिलने के साथ-साथ राज्य के प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में सैलानियों की भीड़ कम करने में भी सहायता मिलेगी।

पर्यटन उद्योग के लिए जरूरी मानव संसाधन श्रम शक्ति को सक्षम बनाकर सभी वर्ग के पर्यटकों को सुरक्षित व बेहतर सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं, ताकि प्रदेश में सतत पर्यटन विकास के लिए निवेश आकर्षित करने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार हो सके। इसके अंतर्गत पर्यटन की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में पर्यटन परियोजनाएं स्थापित करने के लिए पूंजी निवेश उपदान को भी स्वीकृति तथा इन पर्यटन इकाइयों के लिए सड़क सुविधाएं व जलापूर्ति जैसी आधारभूत सुविधाएं प्राथमिकता के आधार पर प्रदान करने पर बल दिया गया है। पौंग बांध को जल क्रीड़ा गंतव्य और शिमला के चांशल क्षेत्र को शीतकालीन खेलों तथा स्कीइंग के पसंदीदा गंतव्य के रूप में विकसित करने के लिए सकारात्मक प्रयास किये जा रहे हैं। इन स्थलों के विकसित होने से शिमला, कुल्लू, मनाली और धर्मशाला जैसे पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों को अन्य अनछुए स्थलों की ओर आकर्षित करने में सहायता मिलेगी।

प्रदेश में निजी क्षेत्र के सहयोग से रज्जू मार्गों के निर्माण में निवेश के दृष्टिगत निवेशकों के लिए विभिन्न स्थान चिन्हित किए गए हैं जिनमें श्री आनंदपुर से श्री नैना देवी जी, शिकारी देवी, न्यूगल, शाहतलाई से दयोटसिद्ध, मैकलोडगंज से त्रियुंड, नारकंडा से हाटू चोटी के मध्य रोप वे परियोजनाएं शामिल हैं। त्रियुंड, पौंग बांध, बीड़ बीलिंग, कसौली, चायल, डलहौजी, जंजैहली, शिकारी देवी, थुनाग, कमरू नाग, बागा सराहन के स्थान टैंट एकोमोडेशन के लिए चिन्हित किए गए हैं। हेली टैक्सी सुविधा के लिए चण्डीगढ़-धर्मशाला-मण्डी-मनाली, हैली टूअर किन्नौर, लाहौल स्पीति और शिमला चिन्हित किए गए हैं। लेक टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए गोबिंद सागर झील, पंडोह डैम, चमेरा झील, पौंग डैम और लारजी चिन्हित किए गए हैं।

50 वर्षों के सफर की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है। सामरिक दृष्टि से तो यह महत्त्वपूर्ण है ही साथ ही प्रदेश की इस स्वर्णिम सफर में हाल ही में पर्यटन और सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण समर्पित रोहतांग टनल प्रदेश व प्रदेशवासियों को गौरवान्वित करवाती है।

अब इस टनल को पर्यटन की दृष्टि से ब्राडिंग भी करने की योजना बनाई गई है। इस टनल के आसपास हेलीपैड सहित आवश्यक सुविधाएं जल्द विकसित की जाएगी।

हिमाचल प्रदेश का प्राकृतिक सौंदर्य तथा यहां के आकर्षक पर्यटक स्थल सदैव फिल्म निर्माताओं के लिए आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। प्रदेश में अभी भी ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिन्हें फिल्म निर्माण की दृष्टि से विकसित किया जा सकता है।

इसी के दृष्टिगत राज्य सरकार द्वारा हिमाचल प्रदेश फिल्म नीति-2019 तैयार की है ताकि राज्य में फिल्म निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण सृजित किया जा सके। नीति के तहत प्रदेश को फिल्म निर्माण के महत्त्वपूर्ण गंतव्य के रूप में विकसित किया जाएगा ताकि फिल्मों के माध्यम से प्रदेश की सांस्कृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक विरासत तथा गौरवशाली परम्पराओं को प्रचारित व प्रसारित कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके।

संपादक, गिरिराज साप्ताहिक,
मो. 0 94180 26402

पौंग बांध को जल क्रीड़ा गंतव्य और शिमला के चांशल क्षेत्र को शीतकालीन खेलों तथा स्कीइंग के पसंदीदा गंतव्य के रूप में विकसित करने के लिए सकारात्मक प्रयास किये जा रहे हैं। इन स्थलों के विकसित होने से शिमला, कुल्लू, मनाली और धर्मशाला जैसे पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों को अन्य अनछुए स्थलों की ओर आकर्षित करने में सहायता मिलेगी। प्रदेश में निजी क्षेत्र के सहयोग से रज्जू मार्गों के निर्माण में निवेश के दृष्टिगत निवेशकों के लिए विभिन्न स्थान चिन्हित किए गए हैं जिनमें श्री आनंदपुर से श्री नैना देवी जी, शिकारी देवी, न्यूगल, शाहतलाई से दयोटसिद्ध, मैकलोडगंज से त्रियुंड, नारकंडा से हाटू चोटी के मध्य रोप-वे परियोजनाएं शामिल हैं। त्रियुंड, पौंग बांध, बीड़ बीलिंग, कसौली, चायल, डलहौजी, जंजैहली, शिकारी देवी, थुनाग, कमरू नाग, बागा सराहन के स्थान टैंट एकोमोडेशन के लिए चिन्हित किए गए हैं। हैली टैक्सी सुविधा के लिए चण्डीगढ़-धर्मशाला- मण्डी-मनाली, हैली टूअर किन्नौर, लाहौल स्पीति और शिमला चिन्हित किए गए हैं। लेक टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए गोबिंद सागर झील, पंडोह डैम, चमेरा झील, पौंग डैम और लारजी चिन्हित किए गए हैं।

देश का ऊर्जा सरप्लस राज्य हिमाचल प्रदेश

डॉ. देव कन्या ठाकुर
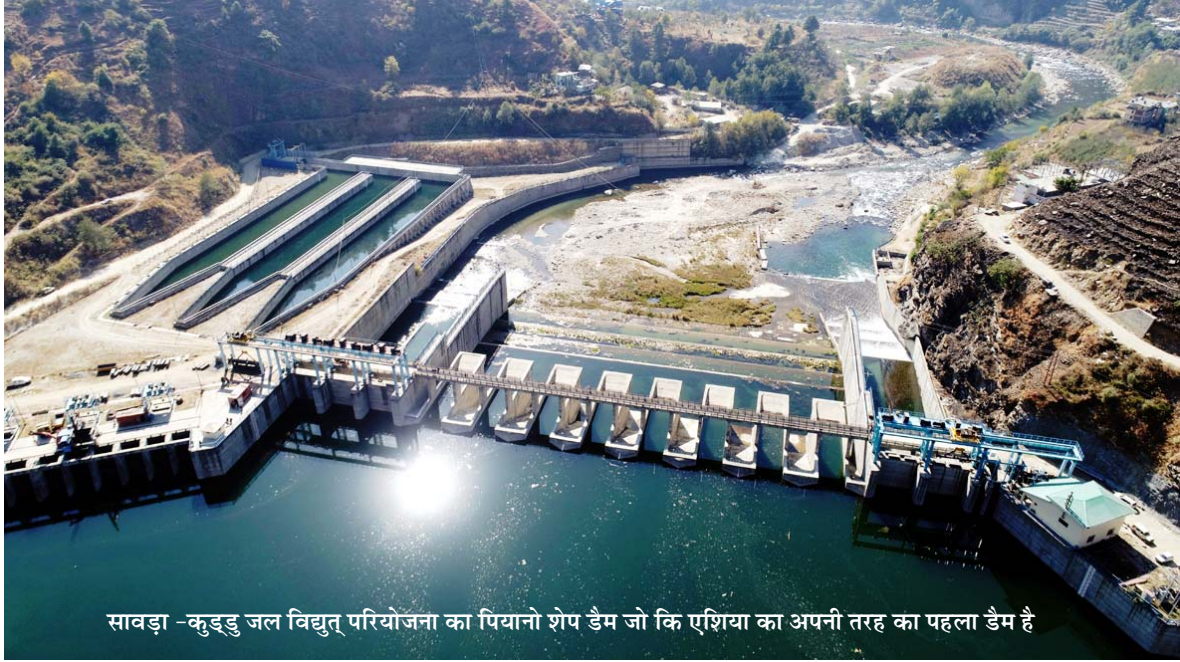
सावड़ा -कुड्डु जल विद्युत् परियोजना का पियानो शेप डैम जो कि एशिया का अपनी तरह का पहला डैम है

कहते हैं पर्वत शोभा निकेतन होते हैं, फिर हिमालय का तो कहना ही क्या। और इससे बहने वाली पर्वत नंदिनी सरिताएं जब धरा पर बहने लगती हैं तो निष्प्राण में भी नफस का संचार करती हैं। हिमाचल प्रदेश ऊर्जा राज्य के रूप में उदित हुआ है। यहाँ बर्फ या फिर बारिश से पोषित दो तरह की सदानीरा रिवर सिस्टम है। हिमाचल प्रदेश में इंडस रिवर सिस्टम के तहत सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब /चंद्रभागा, नदी और उनकी सहायक नदियाँ आती हैं जबकि गंगा रिवर सिस्टम के तहत यमुना और इसकी सहायक नदियां हैं। इन नदियों से हिमाचल प्रदेश की जल विद्युत उत्पादन क्षमता 27,436 मेगावॅाट है जो कि पूरे देश के हाइड्रो पावर क्षमता का 25 प्रतिशत है, इसमें से अभी तक कुल 10645.57 मेगावॅाट जल विद्युत दोहन किया जा चुका है जो कि हिमाचल प्रदेश की कुल ऊर्जा उत्पादन क्षमता का 44 प्रतिशत है। पिछले तीन वर्षों में हिमाचल प्रदेश को 3153.35 करोड़ रुपये का राजस्व जल विद्युत परियोजनाओं से मिलने वाली मुफ्त और इक्विटी पावर बेच कर हुआ है, जिससे हिमाचल प्रदेश की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। हिमाचल प्रदेश सरकार विद्युत ऊर्जा के दोहन के लिए गंभीरता से कार्य कर रही है। जलविद्युत परियोजनाएं नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन की सबसे विश्वसनीय स्रोत हैं। क्योंकि हाइड्रो पावर प्लांट की आयु एक सदी से भी अधिक होती है। इन्हें कम रख-रखाव की आवश्यकता होती है। जहाँ थर्मल प्लांट की तरह इसे कीमती कोयले की जरुरत नहीं पड़ती वहीं सोलर और विंड एनर्जी प्लांट की तरह धूप और हवा के उतार चढ़ाव पर भी यह निर्भर नहीं है। हाइड्रो पावर प्लांट को शून्य से अधिकतम उत्पादन तक मिनटों में पहुंचाया जा सकता है जबकि थर्मल, सोलर और विंड प्लांट में यह संभव नहीं है। इसलिए ग्रिड को संतुलित रखने में जल विद्युत परियोजनाओं का अहम योगदान है। हिमाचल प्रदेश को देश का सबसे बड़ा भूमिगत हाइड्रो पावर स्टेशन स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त है। सतलुज नदी पर 1500 मेगावॅाट का नाथपा झाकड़ी हाइड्रो पावर स्टेशन जिसमें देश की सबसे बड़ी 250/6 मेगावाट की सिंगल यूनिट स्थापित है जबकि प्रदेश में भावा पावर स्टेशन का हेड (887 मीटर) देश के सबसे ऊँचे हेड में तीसरे स्थान पर है। हिमाचल प्रदेश का पूर्ण रूप

से विद्युतीकरण 1988 में ही हो गया था जो ऊर्जा क्षेत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है।

जल विद्युत परियोजनाओं के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश हमेशा से ही अग्रज राज्य रहा है। शिमला जिला में 50 किलोवॉट की जुब्बल परियोजना वर्ष 1911 और चम्बा में 170 किलोवाट की भूरी सिंह मिनी हाइड्रो स्कीम वर्ष 1902 में सबसे पहले बनी परियोजनाओं में हैं । 170 किलोवाट की भूरी सिंह मिनी हाइड्रो स्कीम में 35 किलोवॉट की दो यूनिट 1904 में स्थापित की गयी थी जबकि 100 किलोवाट की तीसरी यूनिट 1938 में स्थापित की गयी थीं। 1750 किलोवॉट का चाबा पावर स्टेशन वर्ष 1913 में शिमला और 1932 में 48 मेगावॉट जोगिन्दरनगर पावर स्टेशन स्थापित किया गया। 12 मेगावॉट की चार यूनिट के साथ 48 मेगावाट की शानन परियोजना 1932, ऊहल-2 परियोजना वर्ष 1966 में स्थापित की गई। इस परियोजना की 60 मेगावाट कैपेसिटी वर्ष 1982 में बढ़ाई गई।

हालांकि सतलुज नदी पर भाखड़ा बाँध के सर्वेक्षण एवं अन्वेषण का कार्य स्वतंत्रता से पूर्व वर्ष 1944 में आरम्भ हो गया था किन्तु इसकी स्थापना के लिए देश के आजाद होने के बाद तेजी से कार्य हुआ। भाखड़ा बाँध का निर्माण कार्य 1952 में आरम्भ हुआ और 1963 में यह पूर्ण हुआ। वर्तमान में भाखड़ा बांध विभिन्न चरणों में कुल 2918 मेगावाट विद्युत उत्पादन कर रहा है जिसमें से सतलुज और ब्यास नदी पर बने 990 मेगावॉट क्षमता की डेहर और ब्यास नदी पर स्थापित 396 मेगावाट की पौंग डैम परियोजना हिमाचल प्रदेश में है जिनका परिचालन बीबीएमबी कर रहा है। इन परियोजनाओं में हिमाचल को अपना हिस्सा लेने के लिए पंजाब और हरियाणा सरकार से लम्बी कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी। हिमाचल प्रदेश सरकार को राज्य की स्थापना से चार हजार करोड़ रुपये के मुआवजे को पंजाब और हरियाणा सरकार ने देने से इनकार कर दिया है और सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है कि यदि हिमाचल सरकार भाखड़ा डैम के निर्माण में खर्च हुई कैपिटल एक्सपेंडिचर का वहन करता है तो ही वह मुआवजे का हकदार है। हिमाचल प्रदेश सरकार को अब वर्ष 2018 से भाखड़ा बाँध से प्रति वर्ष उत्पादित होने वाली 12000 मिलियन यूनिट्स बिजली का 7. 19 प्रतिशत मिलता है।

पहाड़ी क्षेत्रों में अपार जल विद्युत उत्पादन क्षमता को देखते हुए अगस्त 1953 में लोक निर्माण विभाग के अंतर्गत इलेक्ट्रिकल डिवीजन बनाया गया बाद में विद्युत ऊर्जा के दोहन को गति देने के लिए वर्ष 1964 में बहुउद्देशीय परियोजना एवं ऊर्जा विभाग बनाया गया। हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा मिलने के बाद वर्ष 1971 में स्टेट इलेक्ट्रिसिटी एक्ट 1948 के तहत विद्युत उत्पादन और जल विद्युत परियोजनाओं का क्रियान्वयन हिमाचल प्रदेश राज्य बिजली बोर्ड के अंतर्गत लाया गया। वर्ष 2003 में भारत सरकार ने सेंट्रल इलेक्ट्रिसिटी एक्ट 2003 लाया जिसके अंतर्गत विद्युत उत्पादन और आपूर्ति में सुधार लाने के मकसद से राज्य बिजली बोर्ड का विघटन प्रस्ताव लाया गया। 10 जून 2006 को जारी अधिसूचना में हिमाचल प्रदेश बिजली बोर्ड का ट्राईफरकेशन किया गया और 18 दिसंबर 2006, को हिमाचल पावर कॉरपोरेशन और अगस्त 2008 में हिमाचल प्रदेश ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड की स्थापना की गई। तत्पश्चात् दिसंबर 2009 में हिमाचल प्रदेश राज्य बिजली बोर्ड लिमिटेड की स्थापना हुई। जल विद्युत परियोजाओं के लिए अनुमोदन एवं निर्माण की अवधि ज्यादा और कम कीमत पर बिजली बिकने के कारण कई निजी क्षेत्र की कंपनियों ने जल विद्युत परियोजनाओं को स्थापित करने का कार्य छोड़ दिया। नतीजतन जिस गति से हाइड्रो पावर सेक्टर को गति मिलनी थी वो नहीं मिल पाई। जल विद्युत क्षेत्र की विभिन्न चुनौतियों के मद्देनजर हिमाचल सरकार ने वर्ष 2018 में हाइड्रो पावर पॉलिसी 2006 में कुछ संशोधन किये हैं जिससे कि हाइड्रो सेक्टर रफ्तार पकड़े। इसके मुताबिक प्रदेश को मिलने वाली 12 प्रतिशत मुफ्त बिजली परियोजना के निर्माण से 12 वर्षों तक के लिए मुल्तवी की गई है। भविष्य में आवंटित की जाने वाली परियोजनाओं से 12 प्रतिशत निःशुल्क पॉवर रॉयलिटी एक सामान रूप में लेने सम्बन्धी निर्णय लिया गया। 25 मेगावॉट क्षमता तक की जल विद्युत परियोजनाओं से उत्पादित बिजली स्टेट डिस्कॉम एचपीएसइबी लिमिटेड द्वारा खरीदना अनिवार्य बनाया गया है। विद्युत दरों का निर्धारण परियोजना के कमर्शियल संचालन से लागू किया जाएगा। वे सभी परियोजनाएं जिनकी क्षमता 25 मेगावॉट तक है उनको ओपन असेस चार्ज में छूट दी गई। लंबित पड़ी परियोजनाओं को गति देने के उद्देश्य से सरकार द्वारा परियोजना की समयावधि में एकमुश्त रियायत प्रदान की गई।

वर्तमान में हिमाचल प्रदेश राज्य बिजली बोर्ड लिमिटेड 28 परियोजनाओं से 489.16 मेगावॉट विद्युत उत्पादन कर रहा है जिनमें 126 मेगावाट का लारजी हाइड्रो प्रोजेक्ट, 120 मेगावॉट संजय जल विद्युत परियोजना, 66 मेगावॉट बस्सी पावर हाउस प्रोजेक्ट, 60 मेगावाट गिरी पावरहाउस प्रोजेक्ट प्रमुख हैं। इनके आलावा 22.5 मेगावॉट घानवी-1, 16.95 मेगावॉट आंध्रा, 10 मेगावॉट घानवी-2 , 6 मेगावॉट बिनवा, 10.50 मेगावॉट गज भी निरंतर विद्युत उत्पादन कर रहे हैं।

हिमाचल सरकार का उपक्रम हिमाचल प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन दो परियोजनाओं से 165 मेगावॉट बिजली पैदा कर रहा है। सतलुज नदी की सहायक नदी काशंग खड्ड पर 65 मेगावॉट काशंग हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट , ब्यास नदी की सहायक नदी सैंज पर 100 मेगवाट का सैंज हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट स्थापित है। इसके अलावा 5 मेगावॉट बैरा-डोल सौर ऊर्जा संयंत्र बिलासपुर

में नैना देवी के समीप स्थापित है।

यमुना की सहायक नदी पब्बर पर स्थापित 111 मेगावॉट की सावड़ा -कुड्डू जल विद्युत परियोजना भी तैयार हो गयी है। हिमाचल प्रदेश पावर कॉरपोरेशन की सतलुज नदी पर 450 मेगावॉट की शोंगटोंग-कड़छम और काशंग और केरंग खड्ड पर काशंग-2 और काशंग-3 जल विद्युत परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं। हिमाचल प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड के 1373 मेगावॉट के हाइड्रो प्रोजेक्ट्स निर्माण पूर्व एवं निवेश अनुमोदनाधीन हैं जबकि 927 मेगावॉट के प्रोजेक्ट्स विभिन्न रिवर बेसिन में सर्वेक्षण एवं अन्वेषणाधीन हैं। यमुना नदी पर प्रस्तावित 660 मेगावॉट की किशाऊ बहुउद्देश्यीय परियोजना हिमाचल सरकार का उपक्रम हिमाचल प्रदेश पॉवर कॉरपोरेशन और उत्तराखंड सरकार का उपक्रम उत्तरांचल जल विद्युत निगम संयुक्त रूप से करेंगे।

हिमाचल प्रदेश सरकार और भारत सरकार का संयुक्त उपक्रम एसजेवीएन और भारत सरकार के उपक्रमबी बीएमबी, एनटीपीसी और एनएचपीसी कुल 12 परियोजनाओं से 7457.73 मेगावॉट हिमाचल की नदियों से विद्युत उत्पादन कर रही हैं।

भारत सरकार और हिमाचल प्रदेश सरकार के संयुक्त उपक्रम एसजेवीएन में भारत सरकार की 59.92 प्रतिशत, हिमाचल सरकार की 26.85 प्रतिशत और पब्लिक की 13.23 प्रतिशत हिस्सेदारी है। एसजेवीएन के 1500 मेगावॉट नाथपा झाकड़ी हाइड्रो पावर स्टेशन और 412 मेगावॉट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन रिकॉर्ड विद्युत उत्पादन कर रहे हैं। ये दोनों परियोजनाएं अपनी डिजाइन एनर्जी से ज्यादा विद्युत उत्पादन कर रही हैं। नाथपा झाकड़ी हाइड्रो पावर स्टेशन की डिजाइन एनर्जी 6612 मिलियन यूनिट प्रतिवर्ष विद्युत उत्पादन की है जबकि इस प्रोजेक्ट से अधिकतम 7445 मिलियन यूनिट बिजली पैदा करने का रिकॉर्ड है। इसी तरह 412 मेगावॉट के रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन की डिजाइन एनर्जी 1878 मिलियन यूनिट प्रतिवर्ष विद्युत उत्पादन की है जबकि इस प्रोजेक्ट से अधिकतम 2098 मिलियन यूनिट बिजली पैदा करने का रिकॉर्ड है।

यूँ तो हिमाचल प्रदेश की आर्थिकी पर्यटन, कृषि, सीमेंट उद्योग और जल विद्युत परियोजनाओं पर निर्भर है। हिमाचल के विकास की गति को प्रदेश में स्थापित जल विद्युत परियोजनाओं ने रफ्तार दी है। इस बात का आभास हमारी सरकार को है इसीलिए तो इस प्रगति की रफ्तार को और तेजी प्रदान करने के लिए, निवेश को आकर्षित करने और आर्थिक गतिविधियों को सुनिश्चित करने के लिए घरेलू रोड शो की शृंखला में हिमाचल प्रदेश सरकार ने नवंबर 2019 में 'पावर कॉन्क्लेव एवं राइजिंग हिमाचल ग्लोबल इन्वेस्टर मीट का आयोजन किया। जल विद्युत परियोजनाओं के विकास के लिए सरकार की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जो भी समझौता ज्ञापन इस दौरान हुए वो देश की प्रतिष्ठित कंपनियों के साथ हुए जिन्होंने पहले से ही हिमाचल की मुश्किल भौगोलिक परिस्थितियों में हाइड्रो प्रोजेक्ट् की कमीशनिंग की है, इनमें एसजेवीएन, एनएचपीसी और एनटीपीसी प्रमुख हैं।

इस दौरान एसजेवीएन ने कुल 2388 मेगावॉट की आठ जल विद्युत परियोजनाओं के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किये। यह परियोजनाएं हिमाचल प्रदेश में सतलुज, ब्यास और चिनाब बेसिन पर बनना प्रस्तावित हैं। इन परियोजनाओं के विकास में 24000 करोड़ रुपये का निवेश होगा और रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे। हाल ही में सतलुज नदी पर प्रस्तावित 210 मेगावॉट की लूहरी स्टेज-1 जल विद्युत परियोजना के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध यक्षता में आर्थिक मामलो की कैबिनेट समिति की मंजूरी मिल गयी है और ब्यास नदी पर 66 मेगावॉट की धौलासिद्ध जल विद्युत परियोजना निर्माण के लिए भी सरकार ने 667 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दे दी है। एसजेवीएन द्वारा स्थापित की जाने वाली इन परियोजनाओं की आधारशिला माननीय प्रधानमंत्री 25 जनवरी 2021 को हिमाचल प्रदेश की स्थापना के गोल्डन जुबली कार्यक्रम के दौरान रखेंगे। सतलुज नदी पर 172 मेगावाट की लुहरी स्टेज-2, 382 मेगावाट की सुन्नी डैम, 780 मेगावॉट की जंगी थोपन पोवारी जल विद्युत परियोजना चिनाब बेसिन पर 138 मेगावॉट का बरदंग, 210 मेगावॉट का पुर्थी और 430 मेगावाट का रियोली दुगली हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट्स सर्वे एवं अन्वेषणाधीन परियोजनाएं हैं।

पावर कॉन्क्लेव एवं राइजिंग हिमाचल ग्लोबल इन्वेस्टर मीट के दौरान चिनाब बेसिन पर एनएचपीसी को 449 मेगावाट डुगर हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट और एनटीपीसी को 400 मेगावाट सेली और 120 मेगावॉट मियाड़ हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट और मंडी जिला में बीबीएमबी को 40 मेगावॉट का बग्गी पावर प्रोजेक्ट हिमाचल सरकार द्वारा आवंटित किया गया है।

हाल ही में हिमाचल प्रदेश सरकार ने एसजेवीएन को चिनाब बेसिन पर 501 मेगावॉट की तीन अन्य जल विद्युत परियोजनाएं आवंटित की है। 104 मेगावॉट की तांदी, 130 मेगावॉट की राशिल और 267 मेगावॉट की साच-खास जल विद्युत परियोजनाओं को मिलाकर अब एसजेवीएन के पास चिनाब बेसिन पर 1279 मेगावॉट क्षमता की छह परियोजनाएं हैं। अगर एसजेवीएन के पिछले रिकॉर्ड को देखा जाए तो एसजेवीएन की विशेषज्ञता जल विद्युत क्षेत्र में है। एसजेवीएन में हिमाचल प्रदेश सरकार की भी शेयर धारिता होने से इन प्रोजेक्ट्स का सीधा फायदा हिमाचल सरकार को ही होगा। एसजेवीएन अभी तक हिमाचल प्रदेश सरकार को 1943.99 करोड़ रुपये के लाभांश का भुगतान कर चुका है।

सौर ऊर्जा के बारे में इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी ने वर्ष 2014 में एक रिपोर्ट पेश की थी जिसके मुताबिक वर्ष 2050 तक दुनिया में सौर ऊर्जा से ही सबसे ज्यादा मात्रा में विद्युत उत्पादन होगा। इस आकलन के मुताबिक सौर ऊर्जा की एक तकनीक सोलर फोटोवोल्टिक सिस्टम से 2050 तक दुनिया की जरुरत की सोलह फीसदी बिजली पैदा की जा रही होगी। दूसरी तकनीक सोलर थर्मल इलेक्ट्रिसिटी से लगभग ग्यारह फीसदी बिजली पैदा हो रही होगी। इन दोनों सौर तकनीक से पैदा होने वाली बिजली से लगभग छह अरब टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन हर साल रोका जा सकेगा। सौर ऊर्जा के 40 -100 वर्षो के लाइफ स्पैन, कम परिचालन लागत और अपेक्षित सामाजिक और पर्यावरणीय पहलुओं को देखते हुए सौर ऊर्जा संयंत्रों को स्थापित करने को सरकार द्वारा प्रोत्साहन दिया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में एसजेवीएन के आधार और सामर्थ्य को देखते हुए ऊर्जा मंत्रालय ने हिमाचल के जिला लाहौल-स्पीति के काजा में सौर ऊर्जा के 1000 मेगावाट के सोलर पार्क के निर्माण के लिए एसजेवीएन को नोडल एजेंसी बनाया है। लेकिन शीत मरुस्थल काजा में उत्पादित होने वाली बिजली को यहाँ से बाहर ले जाना चुनौतीपूर्ण कार्य था। कई वर्षों से ट्रांसमिशन की समस्या के कारण यह मामला लटका हुआ था। एसजेवीएन, हिमऊर्जा और बिजली बोर्ड के अधिकारी ट्रांसमिशन की संभावनाओं पर कार्य कर रहे थे। हाल ही में विश्व बैंक की प्री-फिजिबिलिटी रिपोर्ट में 880 मेगावॉट के सोलर पार्क को हरी झंडी दे दी है। ट्रांसमिशन लाइन को निकालने को भी सैद्धांतिक मंजूरी मिल गयी है। 1000 मेगावॉट के प्रस्तावित सोलर पार्क के लिए भूमि कम होने के कारण अब 880 मेगावॉट के सोलर पार्क का निर्माण किया जाएगा। 1100 करोड़ रुपये की लागत से एसजेवीएन इसका निर्माण करेगा। हिमाचल प्रदेश में 25 मेगावॉट से कम की परियोजनाएं हिमऊर्जा द्वारा या इसके माध्यम से संचालित की जाती हैं। हिम ऊर्जा की पांच परियोजनाएं 0.76 मेगावाट विद्युत उत्पादन कर रही हैं। निजी क्षेत्र की 25 मेगावॉट से कम की 88 लघु जल विद्युत परियोजनाएं 326.25 मेगावॉट विद्युत उत्पादन कर रही हैं। हिमऊर्जा का 5 मेगावॉट का एक प्रोजेक्ट निर्माणाधीन है और 29. 50 मेगावॉट की 7 परियोजनाएं अनुमोदन और अन्वेषण के विभिन्न चरणों में है। निजी क्षेत्र की 25 मेगावॉट से कम की 1348. 54 मेगावॉट की 620 परियोजनाएं अनुमोदन और अन्वेषण के विभिन्न चरणों में है।

प्राइवेट सेक्टर में 25 मेगावॉट से अधिक की कुल 2047.5 मेगावॉट की 28 परियोजनाएं बिजली पैदा कर रही हैं जबकि 656. 3 मेगावॉट की 15 परियोजनाएं निर्माण की विभिन्न स्टेज में हैं और 1782.5 मेगावॉट की 53 परियोजनाएं अनुमोदन और अन्वेषण के विभिन्न चरणों में हैं। इनके आलावा यमुना प्रोजेक्ट में और रणजीत सागर डैम में हिमाचल सरकार का 131.57 और 27.60 मेगावाट शेयर है। वर्तमान में पंजाब, चंडीगढ़, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू कश्मीर, राजस्थान और उत्तर प्रदेश को हिमाचल प्रदेश बिजली बेच रहा है। इस समय हिमाचल प्रदेश में जल विद्युत ऊर्जा उत्पादन की जो कंपनियां चल रही हैं उनमें हिमाचल प्रदेश राज्य बिजली बोर्ड लिमिटेड हिमाचल प्रदेश सरकार, भाखड़ा ब्यास मैनेजमेंट बोर्ड केंद्र सरकार का उपक्रम, एसजेवीएन केंद्र और हिमाचल सरकार का संयुक्त उपक्रम, एनएचपीसी केंद्र सरकार का उपक्रम, हिमाचल प्रदेश पावर कारपोरेशन लिमिटेड हिमाचल प्रदेश सरकार का उपक्रम, नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन लिमिटेड केंद्र सरकार का उपक्रम प्रमुख हैं।

इसके अतिरिक्त निजी उपक्रमों में जेएसडब्ल्यू करछम-वांगतू हाइड्रो कारपोरेशन लिमिटेड, मलाणा हाइड्रो पावर लिमिटेड, एलेन दुहनगान हाइड्रो पावर कारपोरेशन लिमिटेड, जीएमआर बिजली होली हाइड्रो पावर लिमिटेड, एल एंड टी हाइड्रो पावर प्राइवेट लिमिटेड, आई ए एनर्जी, तांगु रोमाई पावर लिमिटेड, लैंको ग्रीन पावर प्राइवेट लिमिटेड, नुजीवीडू सीड्स लिमिटेड, हिमाचल सोरंग पॉवर कारपोरेशन लिमिटेड, ब्यास वैली पावर कारपोरेशन तथा एवेरेस्ट वैली पावर लिमिटेड शामिल हैं।

हिमाचल प्रदेश में उत्पादित विद्युत क्षमता और भविष्य में स्थापित होने वाली परियोजनाओं को देखते हुए उत्पादित बिजली की प्रदेश के बाहर सुचारु रूप से ट्रांसमिशन के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार ने विभिन्न रिवर बेसिन में ट्रांसमिशन कॉरिडोर का निर्माण आरम्भ कर दिया है। विद्युत संचार के क्षेत्र में प्रदेश सरकार का यह ऐतिहासिक कदम होगा। 400 /220 /66 के वी विद्युत उपकेंद्र का जिला किन्नौर के वांगतू में सितम्बर 2019 में शुभारम्भ हो गया है जो कि हिमाचल का अपना 400 के वी का पहला विद्युत उपकेंद्र है। हिमाचल प्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कारपोरेशन लिमिटेड ने 66 के वी और इससे ऊपर क्षमता की ट्रांसमिशन लाइनस और सब स्टेशनों के निर्माण कार्य प्रगति पर हैं। जनवरी 2018 से दिसंबर 2020 के दौरान प्रदेश में कुल 2342.एमबीए क्षमता के आठ सब स्टेशन और कुल 159 किलोमीटर की सात ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण किया गया। इसके आलावा 19 बड़ी संचार लाइन निर्माणाधीन हैं। 400 /220 /132 के वी विद्युत क्षमता के 16 सब स्टेशन निर्माणाधीन हैं। वर्ष 2021 तक राज्य संचार नेटवर्क क्षमता में लगभग 834 सर्किट किलोमीटर और 3420 एमवीए की वृद्धि होगी। ऊर्जा उत्पादन से लेकर उसके वितरण तक हिमाचल सरकार ने योजनाबद्ध रणनीति अपनाई है। इसके आकलन से ऐसा लगता है कि हिमाचल प्रदेश ऊर्जा राज्य के रूप में अग्रिम पंक्ति में अपनी जगह बनाने में सफल हुआ है।

बुरांश लॉज, MIG, हाउस नं. 18, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
संजौली, शिमला-171 006

सम्मानजनक जीवन यापन के लिए सामाजिक सुरक्षा का सहारा

सत पाल

सुखद जीवन का सपना प्रत्येक व्यक्ति संजोकर रखता है। चाहे वह युवा हों, महिला-पुरुष या फिर वृद्धजन। बहुत एक इसके सहचरी बनते हैं तो कुछ वंचित रह जाते हैं। इन पीछे छूट गए लोगों का सम्मान, जीवनयापन समाज और राजकीय प्रतिबद्धता से सुनिश्चित एवं रेखांकित होता है। आज अच्छी बात यह है कि इनके प्रति समाज सजग है और इस दिशा में राजकीय संकल्पशीलता से नए आयाम स्थापित हुए हैं। और इनके सामाजिक-आर्थिक उत्थान के साथ इन सबका जीवन सरल-सरस हुआ है। पन्द्रह अप्रैल, 1948 को हिमाचल प्रदेश के गठन के बाद से प्रदेश ने आगे बढ़ना शुरू किया और 25 जनवरी, 1971 को पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के बाद सामाजिक-आर्थिक विकास के नए द्वार खुले। प्रदेश ने पूर्ण राज्यत्व के अब तक के 50 वर्षों में सभी क्षेत्रों में नए-नए आयाम स्थापित हैं। और सामाजिक सुरक्षा क्षेत्र का दायरा भी विस्तार पाता गया। वर्तमान में प्रदेश में कमजोर वर्गों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान एवं कल्याण के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं जिनमें सामाजिक सुरक्षा पेंशन व आवासीय सुविधाएं विशेष रूप से आर्थिक दृष्टि से कमजोर एवं पात्र लोगों के जीवन में माधुर्य भर रही हैं। प्रदेश में 70 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धजनों को बिना आय सीमा के 1500 रुपये प्रतिमाह पेंशन प्रदान की जा रही है। पहले इसके लिए 80 वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध ही पात्र थे जिसे वर्तमान सरकार ने सत्ता सम्भालने के तुरन्त बाद घटा कर 70 वर्ष किया था। 60 से 69 वर्ष आयु वर्ग के वृद्धजनों को 850 रुपये प्रतिमाह प्रदान की जा रही है। विधवा पेंशन 1000 रुपये प्रतिमाह की दर से प्रदान की जा रही है जबकि ट्रांसजेंडर व कुष्ठ रोगी पेंशन भत्ता 850 रुपये प्रतिमाह प्रदान किया जा रहा है। बी.पी.एल. परिवारों से सम्बन्धित दिव्यांग व्यक्तियों को 40 से 49 प्रतिशत विकलांगता पर 1000 रुपये व इससे अधिक विकलांगता होने पर 1500 रुपये प्रतिमाह पेंशन भत्ता प्रदान किया जा रहा है।

वित्तीय वर्ष 2019-20 में प्रदेश सरकार द्वारा के दौरान 1,63,607 सामाजिक सुरक्षा पेंशन के नए मामले स्वीकृत किए गए जिनमें 1,30,931 वृद्धावस्था पेंशन, 18,203 विधवा व एकल नारी पेंशन तथा 14,473 दिव्यांगजन पेंशन मामले शामिल हैं।

प्रदेश में अनुसूचित जाति एवं जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्प संख्यक, विधवाओं और दिव्यांग व्यक्तियों को, जिनकी आय 35 हजार से अधिक न हो, को गृह निर्माण हेतु 1.50 लाख रुपये और मुरम्मत के लिए 35000 रुपये की गृह अनुदान राशि प्रदान की जा रही है। वित्त वर्ष 2019-20 में इस योजना के अंतर्गत 20.93 करोड़ रुपये व्यय किए गए और 1718 लोगों को लाभान्वित किया गया। इस योजना के तहत समाज से जाति एवं छुआछूत जैसी कुरीतियों को दूर करने के लिए और सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने के लिए अन्तरजातीय विवाह करने वाले दम्पत्ति को 50 हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। वर्ष 2019-20 में इस योजना के तहत 3.19 करोड़ रुपये अन्तर्जातीय विवाह करने वाले दम्पत्तियों को प्रदान किए गए जिससे 643 दम्पत्तियों को लाभान्वित हुए हैं। इसी तरह दिव्यांग विवाह अनुदान भी प्रदान किया जा रहा है। सामान्य व्यक्ति को दिव्यांग महिला या पुरुष से विवाह करने पर 40 पतिशत से 74 प्रतिशत दिव्यांगता तक 25 हजार और इससे अधिक दिव्यांगता पर 50 हजार रुपये की विवाह प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। वित्तीय वर्ष 2019-20 के दौरान इस योजना पर 72.30 लाख रुपये व्यय करके 271 व्यक्तियों को लाभान्वित किया गया है। इस योजना का उद्देश्य वृद्धजनों के जीवन स्तर एवं गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए उन्हें आश्रय, भोजन, दवाई व मनोरंजन की सुविधा प्रदान करना है। वर्तमान सरकार द्वारा इस योजना के तहत चौपाल, चम्बा व सुकेत (सुन्दरनगर) में वृद्धाश्रम खोले गए हैं व हमीरपुर, बिलासपुर और सोलन में वृद्धाश्रम खोलने के प्रस्ताव केन्द्र सरकार से स्वीकृत हो चुके हैं। वर्ष 2019-20 के दौरान इस योजना पर 1.37 करोड़ रुपये व्यय किए गए। ये योजनाएं पात्र लोगों के लिए लाभकारी सिद्ध हो रही हैं। सरकार के प्रयास फलीभूत हो रहे हैं।

सहायक संपादक, गिरिराज कार्यालय,
मो. 0 98820 37359

प्रगति और खुशहाली के पथ पर अग्रसर ग्रामीण हिमाचल

रीना नेगी

पच्चीस जनवरी 1971 एक ऐसा ऐतिहासिक दिन है जब हिमाचल प्रदेश भारतीय संघ के अठारहवें राज्य के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। अपनी इस उल्लेखनीय प्रगति से हिमाचल ने यह साबित कर दिखाया कि पूर्ण राज्यत्व की यह सौगात उसकी विकास प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण योगदान बन कर आई है। यहां के मेहनतकश लोगों और उनके जनप्रतिनिधियों ने भी प्रदेश की पंचायतों, जो गांवों के स्तर पर लोकतंत्र की सबसे छोटी इकाई और अपने क्षेत्र के विकास के प्रति सर्वोपरि दायित्व को निभाते हुए विकास के लाभ को आम जन तक पहुंचाया है। प्रदेश को समृद्ध व सुदृढ़ करने हेतु विभिन्न ग्रामोन्मुखी कल्याणकारी योजनाओं को कार्यान्वित किया गया।

राज्य के पुनर्गठन से पूर्व हिमाचल प्रदेश में मात्र 638 ग्राम पंचायतें हुआ करती थी। एक नवम्बर, 1966 को जब पंजाब के पर्वतीय क्षेत्रों को इस राज्य में विलय कर दिया गया तो पंजाब पंचायत समिति और जिला परिषद् अधिनियम के प्रावधानों के तहत एक त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था अस्तित्व में आई लेकिन प्रदेश में 73वें संविधान संशोधन के उपरान्त नए पंचायती राज अधिनियम 1994 को लागू करने के पश्चात् 12 जिला परिषदों का गठन किया गया। वर्ष 2020 में फिर ग्राम पंचायतों के विभाजन व पुनर्गठन का कार्य किया गया जिसके उपरान्त राज्य में ग्राम पंचायतों की संख्या 3226 से बढ़कर 3615 हुई तथा पंचायत समितियों की संख्या 81 हुई। प्रदेश में अभी 12 जिला परिषदें गठित की गई। इन संस्थाओं के गठन ने विकास के वर्तमान स्वरूप तक पहुंचने में अहम भूमिका निभाई ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने और युवावर्ग को प्रोत्साहित करने के लिए मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की गई।

गांव को विकास की मूल इकाई मानते हुए पंचायतों को सशक्त बनाने की परिकल्पना को पूरा करने की दिशा में कई कार्य आरंभ किये गये, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य पेयजल बेहतर सड़क संचार, स्वच्छता और शहरी सुविधाओं को गांव तक पहुंचाना है। राज्य सरकारों द्वारा जन-जन तक पहुंचाये गये इन विकास कार्यों ने एक मिसाल कायम की। आज हमारा प्रदेश देश में विकास का आदर्श राज्य बनकर उभरा है तथा इसकी आर्थिकी में तीव्र वृद्धि हो रही है। प्रदेश के गठन के समय राज्य में केवल छः गांवों में बिजली तथा 331 गांवों में पेयजल सुविधाएं थी और आज प्रदेश का कोई भी ऐसा कोना नहीं है जहां बिजली या पेयजल उपलब्ध न हो। प्रदेश के शत-प्रतिशत गांवों का विद्युतीकरण कर लिया गया है। आज प्रदेश देश का सरप्लस पॉवर स्टेट बन गया है। हर घर को नल से स्वच्छ पेयजल का लक्ष्य हासिल करने हेतु सभी घरों को चरणबद्ध तरीके से नल से जोड़ा जा रहा है। शिक्षा की अलख को गांव-गांव तक पहुंचाया जा रहा है। सब पढ़े सब बढ़े के

नारे के साथ हिमाचल प्रदेश शिक्षा की ओर उन्मुख है। निःशुल्क पाठय पुस्तकें, अटल वर्दी योजना, अटल आदर्श विद्यालय योजना, अखंड शिक्षा ज्योति, स्मार्ट बोर्ड जैसी सुविधाओं से नवाजा गया है, जिसके परिणामस्वरूप आज हमारा प्रदेश साक्षरता के क्षेत्र में देश में चौथे स्थान पर है। प्रदेश में वर्ष 1971 में जहां 4960 शिक्षा संस्थान थे, आज बढ़कर 15000 से भी अधिक हो गए हैं।

मुख्यमंत्री एक बीघा योजना

1971 में हमारे राज्य के पास मात्र 7,370 किलोमीटर लम्बी सड़कें थीं लेकिन आज इन की लम्बाई 37,808 किलोमीटर तक पहुंच गई है। आज राज्य के लगभग सभी गांव को सड़क सुविधा से जोड़ा गया है। सड़कों के इस विस्तार से ग्रामीण आर्थिकी को पंख मिले। लोग अपने उत्पादों को मंडियों तक आसानी से पहुंचाने लगे हैं। 25 जनवरी, 2000 को आरम्भ प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना प्रदेश के लिए वरदान साबित हुई। इसके तहत 2,335 गांवों को सड़कों से जोड़ा गया है। गांवों में सड़कों का जाल बिछे, इसके लिए प्रदेश में मुख्यमंत्री सड़क योजना शुरू की गई है। जब राज्य को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला तो उस समय राज्य में कुल 587 स्वास्थ्य संस्थान थे। लेकिन आज प्रदेश स्वास्थ्य मानकों में देशभर में अग्रणी राज्य बनकर उभरा है। राज्य सरकार ने प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में निजी अस्पताल सुविधाओं को प्रोत्साहित करने के लिए स्वास्थ्य में सहभागिता योजना आरम्भ की है, जिसके अंतर्गत यदि कोई व्यक्ति अथवा चिकित्सक चिन्हित ग्रामीण क्षेत्रों में निजी एलोपैथिक अस्पताल स्थापित करता है, तो सरकार इसके लिए एक करोड़ रुपये के निवेश पर 25 प्रतिशत उपदान प्रदान करेगी और बैंक ऋण पर तीन वर्षो के लिए पांच प्रतिशत ब्याज अनुदान भी प्रदान करेगी।

ग्रामीण भारत के लिए पहला स्वच्छता कार्यक्रम 1954 में भारत सरकार ने लागू किया था। प्रदेश में भी सवच्छता के लिए जनान्दोलन चलाए गए। इन कार्यक्रमों के सफल कार्यान्वियन से 28 अक्तूबर, 2016 को हिमाचल ने खुले में शौच मुक्त राज्य का दर्जा प्राप्त किया। आगामी वर्षो के दौरान मनरेगा तथा स्वच्छ भारत के संसाधनों के उपयोग से पूरे प्रदेश में ठोस तथा तरल कचरा प्रबंधन की प्रभावी व्यवस्था स्थापित की।

स्वतंत्रता के तुरन्त पश्चात् देश में ग्रामीण आवास योजना शुरू की गई। गृह आवासों का निर्माण राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (एनआरईपी) के तहत प्रमुख गतिविधियों में से एक है। प्रदेश में भी गरीबी रेखा से नीचे रह रहे परिवारों के लिए मुख्यमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, राज्य आवास योजना तथा अटल आवास जैसी योजनाओं से लोगों को लाभान्वित किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगार और बेरोजगार व्यक्तियों के लिए अतिरिक्त लाभकारी रोजगार पैदा करना गरीब समूहों के प्रत्यक्ष और सतत लाभ के लिए उत्पादक सामुदायिक संपत्ति बनाना और ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की समग्र गुणवत्ता में सामान्य सुधार लाने के लिए आर्थिक और सामाजिक बुनियादी ढांचा सुदृढ़ करने के उद्देश्य से वर्ष 1980 में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम लागू किया गया।

15वें वित्त आयोग के तहत वर्ष 2020-21 के लिए ग्राम पंचायतों को धनराशि प्राप्त हो गई है, जिससे ग्राम पंचायतों में विकास के कार्य को गति मिली। इसके अतिरिक्त प्रदेश सरकार ने पंचायतों को इंटरनेट की सुविधा के साथ जोड़ा है जिसके लिए प्रदेश सरकार को भारत सरकार द्वारा ई-पंचायत 2020 के प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। ग्रामीणों को परिवार का रिकॉर्ड लेने में सुविधा हो, इसके लिए ऑनलाइन परिवार रजिस्टर की शुरुआत की। पंचायती राज संस्थाओं में बेहतर कार्य निष्पादन हो इसके लिए इन संस्थाओं के प्रतिनिधियों को समय-समय पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। साथ ही पंचायत प्रतिनिधियों के मानदेय में बढ़ोतरी भी की गई है।

वर्तमान सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को एक विशेष तरजीह दी है। प्रदेश सरकार के इन कारगर प्रयासों की सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रदेश को केन्द्रीय योजनाओं के कार्यान्वयन में बेहतर प्रदर्शन के लिए आठ पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें से पांच ग्रामीण विकास में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए हैं।

सहायक संपादक, गिरिराज कार्यालय,
मो. 0 94180 63145

स्वर्णिम सफर की वाहिकाएं हमारी सड़कें

योग राज शर्मा

सड़कें व पुल मानवीय जीवन का एक ऐसा अभिन्न अंग हैं, जो इन्सान को केवल शारीरिक या भौगोलिक रूप से ही नहीं बल्कि भावनात्मक रूप से भी एक-दूसरे से जोड़ने में मदद करते हैं। दूरियों को पाटने में सड़कों और पुलों की भूमिका आरंभ से ही अहम रही है। समय के साथ-साथ सड़कों व पुलों का आकार और प्रकार दोनों ही बदले हैं, परन्तु इनकी अहमियत दिन प्रतिदिन बढ़ती ही चली गई। लोगों के जीवन में सड़कों के महत्त्व को रेखांकित करते हुए प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार ने कहा था कि किसी भी स्थान पर सड़क पहुंचने से वहां का विकास अपने आप ही आरंभ हो जाता है। परन्तु सड़कों के अभाव में जिंदगी अधूरी ही रहती है, खासकर पहाड़ी राज्यों में जहां वैकल्पिक मार्ग प्रायः उपलब्ध नहीं होते। हिमाचल जैसे पर्वतीय प्रदेश में तो सड़कों का महत्त्व और भी अधिक है। वर्तमान में यहां के निवासियों के जीवन में सड़कों के माध्यम से ही खुशहाली का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। हिमाचल प्रदेश में यातायात के साधनों में यूं तो जल और रेल मार्ग भी शामिल है लेकिन इन दोनों साधनों की उपलब्धता प्रदेश में अधिक न होने के कारण संचार का पूरा दारोमदार पूर्णतः सड़कों व पुलों पर ही है। हालांकि प्रदेश की वर्तमान सरकार संचार के इन वैकल्पिक मार्गों के सुदृढ़ीकरण पर विशेष ध्यान दे रही लेकिन इनके कार्यशील होने में अभी और वक्त लग सकता है। ऐसे में लोगों की समस्याओं को समझते हुए प्रदेश सरकार ने भी सड़क निर्माण को ही विशेष प्राथमिकता प्रदान की है। यही वजह है कि आज प्रदेश के दूरदराज क्षेत्रों तक आसान पहुंच सड़क व पुल परियोजनाओं के माध्यम से ही सुनिश्चित हो पाई है। वैसे भी हमारे इस प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियां बेहद कठिन हैं। ऐसे में सड़कें ही इस प्रदेश में विकास और प्रगति की वाहिकाएं हैं। इन वाहिकाओं के माध्यम से प्रदेश के दुर्गम से दुर्गम क्षेत्रों में पहुंच आसान हो पाई है। चाहे शिमला जिले का अति दूरस्थ क्षेत्र डोडरा क्वार हो या कांगड़ा जिले का दुर्गम भंगाल इलाका, चाहे शीतमरुस्थल के नाम से प्रसिद्ध लाहुल-स्पीति हो या जनजातीय जिला किन्नौर के चीन सीमा से सटे क्षेत्र। इन सभी क्षेत्रों में आज आसान पहुंच प्रदेश में सत्तासीन रही प्रगतिशील सरकारों द्वारा सड़क निर्माण को दी गई सर्वोच्च प्राथमिकताओं के कारण संभव हुई है। हिमाचल प्रदेश में विकास और प्रगति का सफर यूं तो इसके गठन के साथ ही आरंभ हो गया था लेकिन विकास की असली बयार 25 जनवरी 1971 को पूर्ण राज्यत्व मिलने के उपरांत ही आरंभ हो पाई।

अब तक प्रदेश के सभी मुख्यमंत्रियों ने लोगों की पीड़ा को अंगीकार करते हुए सड़कों व पुलों के निर्माण को ही सर्वोपरि रखा। उनके इन्हीं प्रयासों के चलते आज प्रदेश के अधिकांश दुर्गम स्थान साल भर देश व दुनिया से जुड़े रहते हैं। हाल ही में निर्मित अटल टनल रोहतांग इसका सबसे बड़ा उदहारण है। प्रदेश का लाहौल-स्पीति जिला सर्दियों के दिनों में भारी बर्फबारी के चलते समूचे विश्व से कट जाता था और स्थानीय लोगों का जीवन कष्टमय हो

जाता था। लेकिन केन्द्र सरकार की ओर से अटल टनल के रूप में मिली सौगात ने इस क्षेत्र को अब हर मौसम में आवाजाही के अनुकूल बनाया है।

हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्य में, जहां रेलवे और जल परिवहन के पर्याप्त साधन नहीं हैं, वहां सड़कों का बहुत महत्त्व है। ऐसे में ग्राम स्तर तक सड़कों का जाल फैलाना मौजूदा सरकार का भी मुख्य ध्येय है। प्रदेश की मौजूदा सरकार जहां प्रदेश में नई सड़कों के निर्माण को विशेष तरजीह दे रही है वहीं पुरानी सड़कों के रखरखाव की ओर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। प्रदेश में सड़कों का नेटवर्क मजबूत बनाने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों ने कई योजनाएं आरंभ की हैं। इनमें प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, केन्द्रीय सड़क निधि योजना, नाबार्ड और केन्द्र द्वारा हिमाचल प्रदेश राज्य परिवहन कार्यक्रम मुख्य तौर पर शामिल है। इन योजनाओं के माध्यम से प्रदेश भर में सड़कों का जाल बिछ चुका है। प्रदेश में फोरलेन के कार्यों में भी काफी इजाफा हुआ है। कई फोरलेन परियोजनाएं चल रही हैं। इन परियोजनाओं के माध्यम से प्रदेश में पर्यटन, उद्योग व वाणिज्यिक गतिविधियों में भी बढ़ोतरी हुई है। हिमाचल के कृषि प्रधान राज्य होने के नाते सड़कों पर निर्भरता और भी बढ़ जाती है।

कृषि उपज को बेहतर विपणन सुविधाएं प्रदान करने और मार्केट तक पहुंचाने में भी सड़कें ही यातायात का मुख्य साधन है। प्रदेश सरकार के सार्थक प्रयासों की बदौलत आज प्रदेश की 3615 पंचायतों में से 3162 पंचायतों को मोटरवाहन योग्य सड़कों से जोड़ा जा चुका है। शेष बची हुई पंचायतों में सड़क निर्माण कार्य विभिन्न चरणों में है। यदि प्रदेश में सड़कों के आंकड़ों पर नजर दौड़ाई जाए तो हिमाचल प्रदेश के गठन के समय हिमाचल प्रदेश में मात्र 288 किलोमीटर लंबी सड़कें मौजूद थी। पूर्ण राज्यत्व मिलने के दौरान 1971 में राज्य में सड़कों की कुल लंबाई 7370 किलोमीटर हो गई थी। लेकिन उसके बाद विकास का जो पहिया घूमा, उसकी बदौलत आज प्रदेश में 37,808 किलोमीटर लम्बी सड़कों का एक सुदृढ़ नेटवर्क उपलब्ध है। इनमें से 28,588 किलोमीटर पक्की सड़कें उपलब्ध हैं। प्रदेश के करीब 10,488 गांवों में सड़क की सुविधा उपलब्ध है। इसी तरह दूरियों को पाटने वाले पुलों की भी गांवों के विकास में अहम भूमिका है। वर्तमान में प्रदेश में 2,199 पुल भी यातायात को संचालित करने में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

हाल ही में केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने भी सामरिक महत्त्व के तीन पुलों को देश को समर्पित किया है। दारचा, बरसी व पलचान नामक यह तीनों पुल प्रदेश के दूर दराज क्षेत्रों में स्थित हैं। आम लोगों को आवाजाही की सुविधा प्रदान करने के लिए सड़कों के साथ-साथ प्रदेश में परिवहन व्यवस्था को भी सुदृढ़ किया गया। हालांकि हिमाचल प्रदेश के गठन के दौरान 1948 में प्रदेश में अलग से कोई परिवहन विभाग नहीं था। लेकिन परिवहन व्यवस्था के संचालन व नियंत्रण के लिए जल्द ही परिवहन विभाग स्थापित किया गया और प्रदेश में परिवहन विभाग के अंतर्गत राज्य परिवहन प्राधिकरण की स्थापना की गई। पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के पश्चात हिमाचल प्रदेश में नए परिवहन प्राधिकरण की स्थापना की गई। इसके बाद परिवहन सेवाओं को विस्तार देने और यातायात को सही ढंग से नियंत्रित करने के लिए वर्ष 1971 में ही दो और क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण शिमला व धर्मशाला में स्थापित किए गए, जिसके परिणाम स्वरूप आज राज्य के दूरस्थ स्थानों पर आवाजाही सुलभ हो पाई है। सड़कों के साथ हवाई व जल मार्ग भी आज परिवहन का माध्यम बन गया है। इसके माध्यम से प्रदेश ही नहीं राज्य से बाहर भी यातायात संचालित किया जा रहा है। राज्य में अगर हवाई सेवाओं की बात की जाए तो वर्तमान में तीन हवाई अड्डे कार्यशील हैं। इनके द्वारा घरेलू उड़ानों से देशी व विदेशी पर्यटक व स्थानीय लोग प्रदेश की खूबसूरती देखने को पहुंचते हैं। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने मंडी जिला में बल्ह क्षेत्र के नागचला में भी एक हवाई अड्डा विकसित करने की योजना बनाई है जिसके लिए भूमि चयन की प्रक्रिया जारी है। इसके अलावा हैली टैक्सी सेवा भी केन्द्र की सरकार की उड़ान योजना के अंतर्गत संचालित की जा रही है। प्रदेश में कई पर्यटक स्थल ऐसे हैं जहां न तो सड़कें बन सकती हैं और न ही हैली टैक्सी सेवा संचालित की जा सकती है। ऐसे में वर्तमान प्रदेश सरकार रज्जू मार्गों को बनाने को भी प्राथमिकता प्रदान कर रही है। इसके लिए वर्तमान प्रदेश सरकार ने रोप-वे व मोनोरेल निगम बनाया है। इस निगम के माध्यम से वैकल्पिक यातायात के लिए रोप-वे के स्थान चिन्हित किए गए हैं। आज प्रदेश में पन विद्युत परियोजनाओं के लिए बनाए गए बांधों के कारण बनी झीलों से जल मार्ग परिवहन की संभावनाएं बढ़ी हैं। इसके लिए केन्द्र सरकार ने चार अन्तर्देशीय जल मार्ग अधिसूचित किए हैं। भारतीय अन्तर्देशीय जल मार्ग प्राधिकरण की पहल पर गोबिन्द सागर झील, कोल डैम व चमेरा डैम को तकनीकी व्यवहार्यता रिर्पोट तैयार कर दी गई है। प्रदेश में जल मार्ग के शीघ्र दोहन के लिए कोल डैम पर जैटिज के निर्माण के लिए चार जगहों सुन्नी, तत्तापानी, रंधोल व कसोल गांव को चिन्हित किया गया है।

हिमाचल प्रदेश भले ही अपनी भौगोलिक परिस्थितियों के चलते कठिन माना जाता रहा हो लेकिन बीते पांच दशकों में प्रदेश में सत्तासीन रही सरकारों ने सड़क एवं परिवहन को विशेष प्राथमिकता दी हैं। नतीजतन आज हिमाचल सुगम्य हो गया है। सड़कों के साथ-साथ वायु व जल मार्ग परिवहन सेवाओं को भी विस्तार मिला हैं। सरकार के सकारात्मक प्रयासों ने निश्चित तौर पर प्रदेश के लोगों के सफर को सुगम व आरामदेह बनाया है।

उप संपादक, गिरिराज कार्यालय, मो. 0 94181 72686

स्वस्थ हिमाचल का साकार होता सपना

विवेक शर्मा

वर्ष 1971 में भारत के 18वें पूर्ण राज्य के रूप में अस्तित्व में आने के बाद हिमाचल ने विकास की एक लंबी यात्रा तय की है। पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के बाद इस पहाड़ी प्रदेश को नई पहचान तो प्राप्त हुई लेकिन साथ ही चुनौतियों से भी इसका परिचय हुआ। अटल निश्चय के साथ कदम दर कदम प्रदेश ने प्रगति पथ पर अपना सफर आरम्भ किया। समस्याओं को पाटते हुए राज्य ने इन पांच दशकों में दूसरे राज्यों के लिए विकास का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। हिमाचल की विकास गाथा आज भारत के अन्य राज्यों के लिए अनुसरणीय बन गयी है। वर्ष 1971 की बात की जाए तो कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में बसने वाली जनसंख्या को स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए शहरों का रुख करना पड़ता था। इस पर राज्य सरकारों ने कार्य करते हुए पिछले पांच दशकों में स्वास्थ्य संबंधी मानकों में अभूतपूर्व सुधार किये हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में राज्य द्वारा लिखी गयी यह इबारत दूरदर्शी, प्रगतिशील और संवेदनशील प्रतिनिधियों एवं कर्त्तव्यनिष्ठ स्वास्थ्य कर्मियों के परिश्रम का प्रतिफल है।

रोगियों को निःशुल्क दवाइयां

1971 से अबतक प्रदेश ने 37 जनरल अस्पतालों की संख्या को 98 जनरल अस्पताल किया है, जो प्रदेशवासियों को बेहतर स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित होने का एक छोटा सा परिमाण है। पिछले पांच दशकों का हम यदि विश्लेषण करें तो राज्य में मात्र 76 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र थे, जिनकी संख्या आज 588 हो गई है।

किसी भी राज्य की उन्नति में वहां के लोगों का अमूल्य योगदान होता है। मुख्यतः कृषि से जुड़े यहां के लोगों की स्वास्थ्य देखभाल के लिए वर्ष 1974 में जहां 284 स्वास्थ्य उप केंद्र थे वहीं आज 2104 स्वास्थ्य उप केंद्रों के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य देखभाल सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान समय में शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं घरद्वार पर उपलब्ध है।

सीमित संसाधनों व बढ़ती जनसंख्या से हिमाचल की प्रगति अवरुद्ध न हो इसलिये प्रदेश की विकासात्मक अवश्यताओं के लिए अनेक प्रयास अमल में लाये गए। स्वास्थ्य देखभाल के साथ-साथ कुछ अन्य पहलुओं पर ध्यान दिया जाना भी अनिवार्य था। इनमें मुख्य थे बच्चों को प्रतिरक्षण, माताओं को टेटनेस टाकसाइड, न्यूट्रिशनल रक्ताल्पता, परिवार नियोजन आदि। इनके लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, उप केंद्रों ने अपनी अहम भूमिका निभाई। हिमाचल की जो नींव हिमाचल को पूर्ण राज्यत्व दिलाने वाले महान विभूतियों ने रखी उसका अनुसरण करते हुए आज हिमाचल में प्रगति की अविरल धारा बह रही है।

हिमाचल की पर्वतीय जलवायु एवं यहां की दुर्गम भौगोलिक स्थितियां चुनौतीपूर्ण हैं। यहां के लोगों की विशेष स्वास्थ्य संबंधी आवश्यताओं के मद्देनजर उनके स्वास्थ्य वर्धन एवं संक्रामक रोगों से सुरक्षा के लिए प्रदेश में कई रोगों की रोकथाम के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए एवं क्रियान्वित किये गए हैं। एक ऐसा ही कार्यक्रम है क्षय रोग

अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस स्वास्थ्य संस्थान

निवारण एवं नियंत्रण के लिए चलाया गया कार्यक्रम। इसके लिए राज्य को वर्ष 2019 में समस्त भारत में अव्वल आंका गया और हिमाचल को इसके लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रदेश में आज सड़क संपर्क की अच्छी सुविधा उपलब्ध है। इसके फलस्वरूप आज प्रदेश में 108 राष्ट्रीय एम्बुलेंस सेवा के माध्यम से रोगियों को चौबीस घंटे आपातकालीन रोगी वाहन सुविधा प्राप्त हो रही है। सड़क सुविधा के बेहतर होने से पिछले दस वर्षों में 108 सेवा के माध्यम 14 लाख 39 हजार 393 आपात मामलों की जानकारी मिली जिनमें 13 लाख 98 हजार 268 स्वास्थ्य संबंधी आपात मामले थे तथा अन्य पुलिस व अग्निशमन संबंधी मामले थे।

परिवार नियोजन एवं संस्थागत प्रसव के क्षेत्र में भी राज्य ने आशातीत प्रगति की है। पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के समय यहां की आबादी को नियंत्रित करना एक बड़ी चुनौती था जिसके लिए प्रदेश में बड़े स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चलाए गए। परिवार नियोजन के लिए जागरूकता के साथ-साथ गर्भनिरोधक उपकरणों जैसे निरोध और गर्भनिरोधक गोलियों के वितरण के लिए स्वास्थ्य परिचारिकाओं ने अपनी सराहनीय सेवाएं प्रदान की। आज प्रदेश में संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने के लिए व माता-शिशु को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। इसके लिए अटल आशीर्वाद योजना, जननी सुरक्षा योजना आदि के माध्यम से इन्हें लाभान्वित किया जा किया जा रहा है। अटल आशीर्वाद योजना के तहत शिशु के लिए सरकार द्वारा उपहार स्वरूप 1175 रुपये मूल्य की नव आगंतुक किट निःशुल्क प्रदान की जाती है। इसकी सफलता का परिमाण है पिछले एक वर्ष में 31 अक्तूबर 2020 तक 1 लाख 12 हजार नव आगंतुक किटों का वितरण।

भौगोलिक विषमताओं के दृष्टिगत हिमाचल के सभी क्षेत्रों के लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना कठिन हैं परंतु कल्याणकारी राज्य का प्रमुख ध्येय नागरिकों को प्रभावकारी स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना होता है। प्रदेश ने कल्याणकारी राज्य के रूप में अपना परिचय देते हुए अनेक मीलपत्थर स्थापित किये हैं। इनमें से एक है वर्ष 2019 में 1 करोड़ 66 लाख 76 हजार 700 बाह्य रोगी विभाग और 21 लाख 3 हजार 590 अन्तरंग रोगी विभाग के रोगियों के साथ 1 लाख 88 हजार 661 माइनर व 63 हजार 88 गंभीर बीमारियों का उपचार किया जाना, जबकि वर्ष 1986 में बाह्य रोगी विभाग के 7 6 लाख 153 अन्तरंग रोगी विभाग के 11 लाख 57 हजार 568 रोगियों का उपचार किया गया था। इन आंकड़ों की मदद से हम कुछ हद तक समझ सकते हैं कि प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास पर कितना ध्यान दिया गया है। हिमाचल की अधिकांश जनसंख्या को आज बेहतरीन स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं मयस्सर हैं। इसके लिए राज्य सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। केंद्र की कल्याणकारी योजनाओं को आम जनता तक पहुंचाने के लिए सरकार तत्पर है। आयुष्मान भारत की तर्ज पर हिमाचल में वर्ष 2019 में हिमकेयर योजना आरम्भ की

गई जिसके तहत अब 5.50 लाख प्रदेशवासी पंजीकृत हैं और इनमें से 1 लाख 17 हजार 578 लाभार्थियों को इस योजना के अंतर्गत निःशुल्क उपचार सुविधा उपलब्ध हुई है। गंभीर बीमारियों जैसे पार्किंसन, कैंसर, मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी, अधरंग, किडनी की खराबी, क्षय रोग (टी.बी.) जैसे रोगों से जूझ रहे लोगों के प्रति राज्य सरकार संवेदनशील है। इन रोगियों को जहाँ स्वास्थ्य देखभाल चाहिए वहीं इन्हें निरंतर देखभाल की आवश्यकता भी रहती है। इसके लिए प्रदेश सरकार ने राज्य में सहारा योजना के माध्यम से ऐसे निर्धन रोगियों को 3000 रुपये प्रति माह देने का सराहनीय कदम उठा कल्याणकारी राज्य होने का एक और उदाहरण प्रस्तुत किया है। स्वास्थ्य देखभाल को अधिक बेहतर व सर्वसुलभ बनाने के लिए मुख्यमंत्री निःशुल्क दवाई योजना जैसी पहल की गई है। इसके अंतर्गत राज्य के सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में निर्धारित दवाएं, सुइयां व पट्टियां इत्यादि निःशुल्क प्रदान की जा रही हैं।

स्वास्थ्य अधोसंरचना में सुधार के साथ-साथ हिमाचल में चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कार्य किया गया है। इस समय राज्य में छः मेडिकल कॉलेज है। जिनमें इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज शिमला, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मेडिकल कॉलेज टांडा, डॉ. वाई एस परमार मेडिकल कॉलेज नाहन, पंडित जवाहर लाल मेडिकल कॉलेज चम्बा, डॉ. राधाकृष्णन मेडिकल कॉलेज हमीरपुर और लाल बहादुर मेडिकल कॉलेज नेरचौक शामिल हैं। इसके साथ-साथ राज्य में एम्स बिलासपुर और चिकित्सा विश्वविद्यालय भी क्रियाशील हो चुके हैं।

यहां पर शिक्षा प्राप्त डॉक्टरों ने विशेष उपलब्धियां हासिल कर हिमाचल में उपलब्ध चिकित्सा शिक्षा के स्तर की वैश्विक स्तर पर व्याख्या की है। यहां से पढ़े कुछ चिकित्सक जिन्हें पूरा विश्व जानता है , पद्मश्री डॉ. रणदीप गुलेरिया जो इस समय ऐम्स नई दिल्ली के निदेशक है, इसके अलावा पद्मश्री डॉ. जगत राम जो वर्तमान में पी. जी. आई. चंडीगढ़ के निदेशक हैं। यह दोनों उन विख्यात डॉक्टरों में से है जिन्होंने शिमला स्थित मेडिकल कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की है।

प्रदेश के सभी क्षेत्रों विशेषकर दूरदराज इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ करवाने के लिए टेलीमेडिसिन व मेडिकल मोबाइल यूनिट जीवनधारा, मोबाइल स्वास्थ्य और आरोग्य केंद्र सेवा को आरम्भ किया गया है। वर्तमान में काजा, केलांग और पांगी के लोग चेन्नई स्थित अपोलो अस्पताल के विशेषज्ञों से स्वास्थ्य परामर्श की सुविधाएं प्राप्त कर रहे हैं।

आयुर्वेद विभाग भी प्रदेश के सामान्य एवं दुर्गम क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। यह विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धतियों में से एक है। आयुर्वेद ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में आमजन की विभिन्न बीमारियों को साध्य करने के लिए लोकप्रिय एवं कारगर सिद्ध हुई हैं। वर्ष 1984 में आयुर्वेद विभाग को हिमाचल में एक अलग विभाग के रूप में पहचान मिली और उस समय 388 आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केंद्र , 02 आयुर्वेदिक अस्पतालों के माध्यम से यह स्वास्थ्य सुविधाएं लोगों तक पहुंचा रहा था। एलोपैथी एवं आयुर्वेद से संबंधित स्वास्थ्य संस्थानों के मिले-जुले प्रयासों से ही आज प्रदेश स्वास्थ्य मानकों में अपनी अर्जित उपलब्धियों की भी स्वर्ण जयंती मना रहा है। इसलिए वर्ष 1984 के बाद यदि हम आज आयुर्वेदिक संस्थओं की संख्या देखे तो हिमाचल में आज 1185 आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केंद्र और 34 आयुर्वेदिक अस्पताल हैं।

ईमानदार एवं सेवाभाव से रोगियों को स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध करने में स्वास्थ्य विभाग के कर्मठ स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन सभी के अथक परिश्रम को सम्मान प्रदान करते हुए, विभागीय विभूतियों को राष्ट्रीय स्तर पर अधिमान प्राप्त हुआ है। इनमें डॉ उमेश भारती को पद्मश्री, आर डी नेगी, चम्पा चौहान, उर्मिल गुलेरिया को राष्ट्रीय नाइटिंगेल पुरस्कार से अलंकृत किया गया है।

हिमकेयर स्वास्थ्य कार्ड

उप संपादक, गिरिराज कार्यालय,
मो. 0 98171 14806

शिक्षा और साक्षरता में अव्वल

चंद्रशेखर वर्मा

हिमाचल प्रदेश 15 अप्रैल 1948 को अस्तित्व में आया था। विगत 7 दशकों के दौरान प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई है। शैक्षणिक पृष्ठभूमि की दृष्टि से यदि हम देखें तो शिक्षा विभाग मुख्य शिक्षा अधिकारी के साथ 4 जिलों के जिला निरीक्षक तथा एक महिला पर्यवेक्षक के साथ गठित किया गया था। वर्ष 1950 में मुख्य शिक्षा अधिकारी का पद पुनः नामित करके शिक्षा उपनिदेशक किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हिमाचल प्रदेश की साक्षरता दर केवल 8 प्रतिशत थी जो वर्तमान में बढ़कर 82.80 प्रतिशत हो गई है। साक्षरता की दृष्टि से समस्त राज्यों में हिमाचल प्रदेश दूसरे स्थान पर है।

वर्ष 1971 में जब प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा हासिल हुआ उस समय पुरुष साक्षरता दर 41.19 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 21.23 प्रतिशत थी। यदि शैक्षणिक संस्थानों की स्थिति को देखें तो वर्ष 1948 में प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या मात्र 261 थी जो वर्ष 1971 में 3768 तथा वर्ष 2020 में प्राथमिक संस्थानों की संख्या बढ़कर 10716 हो गयी। वर्ष 1971 में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 742 थी जबकि वर्ष 2020 में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 2016 हो गई है। वर्ष 1971 में कक्षा एक से आठ तक 344159 विद्यार्थी नामांकित थे जो वर्ष 2020 में बढ़कर 488097 हो गए हैं । वर्ष 1971 में अध्यापकों के स्वीकृत पदों की संख्या 14058 थी जो वर्ष 2020 में बढ़कर 59031 हो गयी है।

हिमाचल प्रदेश ने पूर्ण राज्यत्व का दर्जा हासिल करने के उपरांत प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां हासिल की है। वर्ष 1970-71 में प्रदेश की साक्षरता दर 31.96 प्रतिशत थी जो की 2011-2020 के दशक में बढ़कर 82.80 प्रतिशत हो गयी हैं। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण की दिशा में कार्य किया जा रहा ह। गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने पर विशेष बल दिया जा रहा है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम- 2009 के अंतर्गत 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों को सभी सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जा रही है। गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने हेतु अध्यापकों को नवीन अध्यापन विधियों से अवगत करवाया जा रहा है। हर बच्चा विद्यालय तक पहुंचे इसके लिए प्रति 1.5 किलोमीटर प्राथमिक तथा प्रति 3 किलोमीटर की दूरी पर माध्यमिक विद्यालय खोले गये हैं। साथ ही राज्य परिवहन की बसों में बच्चों को आने जाने की निःशुल्क यात्रा सुविधा प्रदान की जा रही है।

हिमाचल प्रदेश में यदि उच्च शिक्षा की बात की जाये तो हिमाचल प्रदेश में 22 जुलाई 1970 को हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी थी। हिमाचल प्रदेश में मई 1966 को कृषि कॉलेज की स्थापना की गयी जिसे पहली नवंबर 1978 को चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय में स्तरोन्नत किया गया। वर्ष 1985 में डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। इस विश्वविद्यालय की स्थापना से राज्य में उच्च शिक्षा को नये आयाम मिले हैं।

हिमाचल प्रदेश में वर्ष 1985 में दस जमा दो जमा तीन प्रणाली आरम्भ की गयी थी। प्रदेश के हमीरपुर जिला में वर्ष 1986 में पहला इंजीनियरिंग कॉलेज आरम्भ किया गया था। वर्ष 1999 में प्रदेश में सरस्वती बाल विद्या संकल्प योजना आरम्भ की गयी थी। योजना के तहत प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में तीन कमरे बनाने का प्रावधान था। वर्ष 2001-02 में गुणवत्तायुक्त प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान आरम्भ किया गया था। अभियान के तहत वर्ष 2020 तक 6-14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करना था। सितम्बर 2004 में पहली से पांचवी कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए वर्ष सितम्बर 2004 में पहली से पांचवी कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए मिड डे मील योजना आरम्भ की गयी थी। योजना का उद्देश्य स्कूली विद्यार्थियों को पोषक आहार प्रदान करना था।

विद्यार्थियों में कंप्यूटर के ज्ञान को बढ़ाने के लिए वर्ष

2001-02 में शिक्षा विभाग द्वारा कंप्यूटर शिक्षा आरम्भ की गयी थी। सूचना प्रौद्योगिकी में दक्षता बढ़ाने के लिए दिसंबर 2004 में सूचना प्रौद्योगिकी योजना आरम्भ की गयी थी। वर्ष 2013-14 में राष्ट्रीय कौशल शिक्षा फ्रेमवर्क के तहत व्यावसायिक शिक्षा आरम्भ की गयी।

वर्तमान में प्रदेश के 953 वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाओं में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जा रही है जिसके तहत एक लाख से अधिक विद्यर्थियों को 15 विभिन्न विषयों में शिक्षा प्रदान की जा रही है। प्रदेश में उच्च शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए वर्ष 2013-14 में राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान आरम्भ किया गया था। इस अभियान में नब्बे फीसदी केंद्रीय फंडिंग है। वर्तमान समय में अध्यापक आधुनिक शैक्षिक सुविधाओं से लैस है। कॉलेज में अब स्मार्ट कक्षाएं, कम्पयूटर लैब, जिम्नेजियम, विज्ञान लैब, ज्योग्राफी लैब, स्वास्थ्य केंद्र, स्तरोन्नत पुस्तकालय, मल्टीपर्पस हॉल, वेंडिंग मशीन आदि सुविधाएं उपलब्ध हैं। कॉलेज में सोलर उपकरण, सीसीटीवी कैमरा, फोटोस्टेट मशीन, जल शोधक इन्वेर्टर्स उपलब्ध जैसी सुविधाएं करवाई जा रही हैं। रूसा से प्राप्त ग्रांट से शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षणिक संस्थानों के अंतर को पाटने में मदद मिली है। वर्तमान में प्रदेश में सरकारी और निजी क्षेत्र में शैक्षणिक संस्थानों का एक सुदृढ़ नेटवर्क उपलब्ध है। इस समय प्रदेश में राजकीय क्षेत्र में 6 विश्व-विद्यालय, 128 कॉलेज, 1963 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, 924 हाई, 2038 माध्यमिक स्कूल तथा 10721 प्राथमिक स्कूल है। इन संस्थानों के माध्यम से राज्य सरकार अब गुणवत्ता शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में वर्तमान प्रदेश सरकार ने गत तीन वर्षों के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य किया है तथा कई नई पहल की हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अतः ये गए महत्त्वपूर्ण कदमों के कारण प्रदेश को कई पुरस्कार हासिल हुए हैं। नई शिक्षा नीति-2020 को लागू करने वाला हिमाचल देश का पहला राज्य बना है। कोविड-19 महामारी के दौरान भी शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रदेश को देश भर में प्रथम पुरस्कार हासिल हुआ है। गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के साथ- साथ राज्य सरकार आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने पर भी विशेष ध्यान दे रही है।

उप संपादक, गिरिराज कार्यालय,
मो. 0 94183 21954

स्मार्ट क्लास रूम

गतिशील अर्थव्यवस्था का स्वर्णिम कृषि आधार

मोहित शर्मा

पचास वर्ष पूर्व जब हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्य बना तो पूरा प्रदेश अनंत खुशी की लहर में निमग्न था। ढोल, नगाड़ों और शहनाइयों के नाद से प्रदेश का कोना-कोना थिरक रहा था। हर घर, आँगन, बाजार और देवस्थल में पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति का जश्न होली और दीपावली की तरह ही मनाया जा रहा था। पूर्ण राज्यत्व के लिए वर्षों से चले आ रहे अथक प्रयास आखिरकार फलीभूत हो चुके थे और प्रदेश का हर नागरिक अपने-अपने अंदाज में इस ऐतिहासिक दिन को यादगार बना रहा था। इस उपलब्धि के बाद एक ओर जहाँ प्रदेश में खुशी की प्रचंड लहर थी तो दूसरी ओर प्रदेश का नेतृत्व व प्रदेशवासी भविष्य की चुनौतियों से भी भलीभाँति परिचित थे।

उस समय हिमाचल के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार ने हिमाचल के सामने खड़ी नयी चुनौतियों को समझते हुए कहा था की 'पूर्ण राज्यत्व की प्राप्ति के साथ कड़ी मेहनत का युग प्रारम्भ होता है'। उन्होंने प्रदेश के विकास के लिए विभिन्न प्रभावी कदम उठाये। इनमें प्रदेश की जलवायु और भौगोलिक स्थिति को समझते हुए मुख्यतः कृषि व कृषक उत्थान के लिए उठाये गए सराहनीय कदम शामिल हैं। सर्वविदित है कि असली हिमाचल गांव में बसता है और गांव की आर्थिकी के पहिये को मेहनतकश किसान खेती से चलाता है। अठारहवें राज्य के रूप में अस्तित्व में आने से पूर्व भी हिमाचल खेती पर ही निर्भर था। करीब 95 प्रतिशत आबादी गांव में बसती थी और इनमें से अधिकतर खेती-बाड़ी से जुड़ी थी लेकिन व्यावसायिक तौर पर खेती न के बराबर थी। मुख्यतः खेती अपने परिवार को पालने के लिए ही की जाती थी। फसलों के लिए पानी की जरूरत हेतु किसान वर्षा पर निर्भर था, अच्छी बारिश यानी ठीक फसल और अगर कम वर्षा हो या सूखा हो तो फसल बर्बाद। न तो जगह और मौसम के अनुसार अच्छी किस्म के बीज उपलब्ध थे और न ही वैज्ञानिक समझ और सुझाव। कृषि के यंत्रीकरण के हिसाब से भी प्रदेश अन्य राज्यों की तुलना में काफी पीछे था।

पिछले पचास वर्षों में सत्तासीन सरकारों ने प्रदेश में खेती व बागबानी को बढ़ावा दिया है जिसके चलते आज प्रदेश में कुल फसल उत्पादन 36,12,000 मीट्रिक टन और फल उत्पादन 8,45,422 मीट्रिक टन का आंकड़ा पार कर चुका है। वर्ष 1971 से तुलना करें तो पहले प्रदेश में कुल फसल उत्पादन 11,84,890 मीट्रिक टन था और फल उत्पादन 1,48,580 मीट्रिक टन था। योजनाबद्ध कृषि विकास के माध्यम से आज राज्य में खेती और बागबानी के क्षेत्रों में 1971 के मुकाबले उल्लेखनीय विकास देखने को मिला है। आज प्रदेश में 11,00,000 हेक्टेयर भूमि कृषि तथा बागबानी के अंतर्गत आती है। वर्ष 1971 में खाद्यान्नों के अंतर्गत 9,54,500 मीट्रिक टन का उत्पादन हुआ था तो आज प्रदेश में 16,92,440 मीट्रिक टन का उत्पादन प्रति वर्ष हो रहा है। इसी अवधि के लिए तिलहन के अंतर्गत उत्पादन 1,490 मीट्रिक टन से बढ़कर 6,057 मीट्रिक टन, दलहन के अंतर्गत उत्पादन 28,900 मीट्रिक टन से बढ़कर 53,610 मीट्रिक टन और बे-मौसमी व अधिक मूल्य वाली सब्जियों के अंतर्गत उत्पादन 2,00,000 मीट्रिक टन से बढ़कर 18,60,669 मीट्रिक टन हो गया है।

प्रदेश में सिंचित क्षेत्र पिछले पचास वर्षों में 90,000 हेक्टेयर से बढ़कर 1,14,000 हेक्टेयर हो गया है। पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के समय एक ओर जहाँ हम पूर्णतया वर्षा जल पर निर्भर थे तो आज स्थिति उलट है। आज प्रदेश सरकार द्वारा किसानों को सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध करवाने हेतु विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं जैसे कि जल से कृषि को बल योजना, सौर सिंचाई योजना और प्रवाह सिंचाई योजना।

प्रदेश में वर्ष 1971 में एक इंच भूमि भी पॉलीहाउस के अंतर्गत नहीं थी जबकि आज प्रदेश में 235.53 हेक्टेयर भूमि पर 17,000 से अधिक पॉलीहाउस स्थापित हैं।

आज उत्पादन बढ़ाने के लिए विश्व भर का कृषि उद्योग रासायनिक उर्वरकों का सहारा ले रहा है तो वहीं इससे मानव व

धरा के स्वास्थ्य को हो रहे नुकसान को समझते हुए हिमाचल सरकार ने प्रदेश को प्राकृतिक खेती का आदर्श राज्य बनाने का संकल्प लिया है। सरकार द्वारा सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के अंतर्गत प्रदेश को रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के उपयोग से मुक्त करने का लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश सरकार वर्ष 2022 तक राज्य के सभी 9.61 किसान परिवारों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने के लिए प्रयासरत है।

हिमाचल में हमेशा से ही सब्जी उत्पादन की अपार संभावनाएं रही हैं। हिमाचल में गैर मौसमी सब्जी उत्पादन होता है और यहाँ के उत्पाद की देशभर में काफी मांग रहती है। आज से पचास वर्ष पूर्व भी गैर मौसमी सब्जियों की प्रदेश व बाहरी राज्य में खूब मांग थी लेकिन न तो किसानों के पास उतनी अच्छी किस्म के बीज थे और न ही परिवहन सम्बन्धी सुविधाएं इतनी विकसित थीं। हिमाचल के पूर्ण राज्य के रूप में अस्तित्व में आने के पूर्व सभी सरकारों ने किसान-हितैषी योजनाओं के क्रियान्वयन तथा राज्य के कृषि सम्बन्धी शिक्षण संस्थानों, खास तौर पर चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, की मदद से कृषकों को विभिन्न अच्छी किस्मों के बीज उपलब्ध करवाए हैं और परिवहन व इससे सम्बन्धित सुविधाओं जैसे कि भण्डारण आदि का विकास किया है। इन प्रयासों के चलते आज हिमाचल में कई करोड़ों का सब्जी कारोबार होता है। जिस दृढ़ शक्ति के साथ वर्तमान सरकार कृषि क्षेत्र के निरंतर विकास में जुटी है उससे यह स्पष्ट है कि इससे आने वाले समय में भारतीय व विदेशी बाजारों में हिमाचल के उत्पादों को यथोचित स्थान मिलेगा और किसानों कि आर्थिकी में बढ़ोतरी होगी।

हिमाचल प्रदेश में घरेलू उपचार, दवा निर्माता संगठनों के उपयोग में आने वाले व अन्य उपयोगी औषधीय पौधों के उत्पादन की भी अपार संभावनाएं है। इनमें अश्वगंधा, कड़ू, शतावरी, घृतकुमारी, अतीत- पतीस, तुलसी, रसौंत, बनफशा, अदरक, पोदीना, हल्दी, धनिया, नीम व गिलोय आदि पौधे शामिल हैं। औषधीय पौधों के गुणों को ध्यान में रखते हुए आज प्रदेश में ऐसे पौधों को लगाने के लिए खूब बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि आने वाले समय में लोगों को आर्थिक फायदे के साथ साथ स्वस्थ्य लाभ मिल सके।

पिछले पचास वर्षों में हिमाचल ने कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास किया हैं। और इस अविस्मरणीय विकास यात्रा को भी सही दिशा में और अधिक गति प्रदान करने के लिए आज प्रदेश में अनेक महत्त्वाकांक्षी योजनाएं चलाई जा रही हैं। जैसे जंगली जानवरों व आवारा पशुओं की समस्या से निपटने के लिए मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना, प्राकृतिक आपदाओं से फसलों को हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना', फसल विविधीकरण योजना, राज्य कृषि यंत्रीकरण कार्यक्रम, मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना, कृषि से सम्पन्नता योजना, कृषि कोष योजना, राष्ट्रीय बांस मिशन, मिट्टी परीक्षण की योजनाएं, राष्ट्रीय सतत खेती मिशन, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अभियान, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान योजना आदि।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने वर्ष 2015 में संकल्प लिया था कि वर्ष 2022 तक देश व प्रदेश के किसानों कि आय को दोगुना किया जाएगा। प्रदेश सरकार द्वारा क्रियान्वित की जा रही ऊपर लिखित सभी योजनाएं मिलकर किसान कि आया को दोगुना करने के सरकार के लक्ष्य को पूर्ण करने कि ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हो रही है।

चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर

चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर की स्थापना 1 नवंबर, 1978 को हिमाचल सरकार द्वारा की गयी थी। स्थापना से अब तक विश्वविद्यालय द्वारा मानव संसाधन, विभिन्न किस्मों और प्रौद्योगिकियों का विकास कर इन्हें किसानों व बागबानों में वितरित किया गया है। आज इस विश्वविद्यालय के चार संघटक कॉलेज हैं। स्थापना से लेकर अब तक कुल 7,680 छात्र इस संस्थान से पढ़ाई पूर्ण कर चुके हैं जिनमें से 518 डॉक्टरेट के छात्र रहे हैं। विश्वविद्यालय द्वारा अब तक विभिन्न फसलों की 155 उन्नत किस्मों का विकास कर प्रदेश के कोने-कोने में खेती समुदायों (farming communities) को

वितरित किया गया है। विश्वविद्यालय लगभग 800 क्विंटल ब्रीडर के बीज और 1,000 क्विंटल अनाज, दालें, तिलहन, सब्जी व चारे कि फसलों आदि के फाउंडेशन बीज तैयार कर कृषि एवं बागबानी विभागों को देता है जो इसे प्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाते हैं। फसल और पशु उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा करीब 100 कृषि प्रौद्योगिकियों को फसल में सुधार, पशु प्रजनन, रोगों का मुकाबला करने जैसे क्षेत्रों में स्थापित किया गया है। उल्लेखनीय है कि किसानों की आय को 2022 तक दोगुना करने के भारत सरकार के सपने को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा कृषि आधारित मॉडल्स भी तैयार किए गए हैं।

बागबानी

पिछले पचास वर्षों के ऐतिहासिक सफर में बागबानी को हिमाचल प्रदेश की चहुंमुखी एवं आदर्श विकास यात्रा का मुख्य स्तंभ कहना यथार्थ ही होगा। कल्याणकारी नीतियों के चलते बागबानी क्षेत्र हिमाचलवासियों के लिए पर्याप्त पोषण के साथ-साथ आय का भी मुख्य स्रोत बना है। हिमाचल की भौगोलिक स्थिति, स्वच्छ जलवायु, शीतल वातावरण व मेहनतकश बागबान प्रदेश को बागबानी के लिए आकर्षक एवं माकूल बनाते हैं। बागबानी, जिसे औद्यानिकी के नाम से भी जाना जाता है, केवल फलों के उत्पादन तक ही सीमित नहीं बल्कि एक विस्तृत व्यवसाय है जिसके अंतर्गत सजावटी पौधों व फूल वाले पौधों व पेड़ों और मानव प्रयोग में आने वाले कुछ विशेष पौधों की बागबानी भी आती है। इसके अलावा बागबानी उत्पाद की संभल, विपणन, संवेष्टन व प्रसंस्करण भी इसके ही अंतर्गत आता है। वर्ष 1971 में राज्य के क्षेत्रफल का मात्र 44,329 हेक्टेयर ही बागबानी के अंतर्गत आता था जो आज बढ़कर 2,32,139 हेक्टेयर हो चुका है। फलोत्पादन भी 1,48,580 मीट्रिक टन से बढ़कर 8,45,422 मीट्रिक टन हो गया है। आज हिमाचल प्रदेश के सरकारी क्षेत्र में आठ फल विधायन केंद्र, छः फल पौध पोषण प्रयोगशाला, दो ड्राइंग एवं ग्राइंडिंग इकाइयां, पांच खुम्ब खाद इकाइयां, आठ पुष्प नर्सरियां, 11 टिश्यू कल्चर प्रयोगशालाएं, एक जैव नियंत्रण प्रयोगशाला, 67 सरकारी पंजीकृत फल पौधशालाएं, 472 निजी पंजीकृत फल पौधशालाएं, दो शहद प्रसंस्करण प्रयोगशालाएं, 94 फल संतति एवं प्रदर्शन उद्यान, 32 मौन पालन केंद्र, 23 पौध स्वास्थ्य केंद्र, 17 शीत भंडार केंद्र, 24 निजी क्षेत्र में फल प्रसंस्करण इकाइयां, 544 निजी क्षेत्र में खुम्ब खाद, बीज तथा खुम्ब उत्पादन इकाइयां और 10,507 केंचुआ खाद इकाइयां हैं।

आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व हिमाचल में सेब उत्पादन न के बराबर था और भारत की घरेलू मांग को पूरा करने के लिए जापान समेत दुनिया के अन्य देशों से सेब की खरीद की जाती थी। आज हिमाचल उच्च गुणवत्ता वाले सेबों के उत्पादन की बदौलत आर्थिकी व रोजगार के पैमाने पर एक समृद्ध राज्य है। आज हिमाचल का फल उद्योग सालाना 4,000 करोड़ से भी अधिक का कारोबार करता है जिसमें 85 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अकेले सेब के कारोबार का है। प्रदेश में फल उत्पादन के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र का लगभग 50 प्रतिशत हिस्सा सेब की बागबानी के लिए उपयोग में लाया जाता है। सेब की बागबानी पिछले पचास वर्षों में इससे जुड़े मेहनतकश बागबानों की जिंदगी में समृद्धि लेकर आयी है। अच्छे सेब उत्पादन के चलते हिमाचल के कुछ गांव, जैसे की कोटखाई का क्यारी और चौपाल का मड़ावग, एशिया के सबसे अमीर गांवों की सूची में शुमार हैं। इन गांवों की औसतन सालाना प्रति व्यक्ति आय 50 लाख से लेकर एक करोड़ रुपये के करीब है। हिमाचल के सेब की उच्च गुणवत्ता ने प्रदेश को विश्व के मानचित्र पर अलग पहचान दिलाई है। आज जब दुनिया में कहीं भी हिमाचल का नाम लिया जाता है तो यहाँ के सेब की चर्चा सर्वप्रथम होती है मानों सेब और हिमाचल पर्यायवाची ही हो।

भारत में सर्वप्रथम मशरूम की खेती 1960 के दशक में जिला सोलन में संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के

सलाहकार डॉ. ई.एफ.के मेनटल ने आरम्भ की। उनका बटन मशरूम उगाने का प्रयास जब सफल हुआ तो लोगों ने भी अपने अपने घरों में इसका उत्पादन लघु उद्योग के रूप में आरम्भ किया। धीरे-धीरे मशरूम उत्पादन को बढ़ावा मिलता रहा और सफेद बटन मशरूम कि पहली वाणिज्यिक इकाई जिला सोलन के कसौली में स्थापित की गयी। पटियाला के राजा ने 1970 के दशक में सोलन के समीप दोची और चायल में मशरूम की खेती को बड़े पैमाने पर आरम्भ किया। इसी दशक में खाद्य एवं कृषि संगठन ने भारत में डॉ. डब्लू ए हैज को मशरूम उत्पादन का विशेषज्ञ नियुक्त किया। उन्होंने कम लागत पर तथा कम अवधि में मशरूम उत्पादन के लिए खाद को तैयार करने पर विशेष बल दिया। बाद के वर्षों में मशरूम खाद उत्पादन हेतु वातानुकूलित इकाइयां, मशरूम अनुसंधान प्रयोगशालाएं और मशरूम बीज इकाइयां आदि स्थापित की गयी। जून 1983 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने सोलन में राष्ट्रीय मशरूम अनुसंधान केंद्र की स्थापना की। कुछ ही वर्षों में इस संस्थान ने राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय ख्याति हासिल की। इस संस्थान में मशरूम उत्पादन के साथ-साथ इसकी नयी प्रजातियों पर भी कार्य किया जाता है। इस संस्थान ने प्रदेश के ठंडे एवं गर्म इलाकों की भगौलिक परिस्थितियों के अनुरूप मशरूम कि प्रजातियां विकसित की हैं। हिमाचल में मशरूम उत्पादन के लिए विभिन्न सरकारों, संस्थानों एवं प्रदेशवासियों के निरंतर प्रयासों के चलते 10 सितम्बर 1998 को 'सोलन शहर को देश की पहली मशरूम सिटी' का खिताब मिला। हिमाचल का नेतृत्व करती आ रही गतिशील सरकारों के प्रयासों से आज हिमाचल देश भर में मशरूम उत्पादन में अव्वल राज्यों में से एक है।

डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय

डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय (डॉ. वाई. एस. परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री) की स्थापना 1 दिसंबर, 1985 को हुई थी। सोलन में वर्ष 1962 में हिमाचल प्रदेश कृषि कॉलेज व शोध संस्थान के रूप में सोलन में एक शैक्षणिक संस्था की शुरुआत हुई जो कि पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से सम्बन्ध रखता था। वर्ष 1970 में इसे हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के साथ सम्बद्ध किया गया और वर्ष 1971 में इसे कृषि परिसर बनाया गया। आगे चलकर वर्ष 1976 में इसे हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय का बागबानी परिसर बनाया गया और वर्ष 1978 में इसे हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर के साथ सम्बद्ध किया गया। अंततः एक दिसंबर, 1985 को इसे एक अलग पहचान मिली और आज इस विश्वविद्यालय को आधुनिक शिक्षा के नए आयामों को स्थापित करने और विश्वस्तरीय शोध गुणवत्ता के लिए न केवल भारत बल्कि एशिया और विश्व भर में जाना जाता है। आज इस विश्वविद्यालय के चार संघटक कॉलेज हैं जिनमें से दो बागबानी महाविद्यालय और वानिकी महाविद्यालय, इसके मुख्य परिसर नौणी, सोलन में है। जबकि बाकी दो बागबानी और वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर और थुनाग मंडी में है। इसके अलावा पांच क्षेत्रीय बागबानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र, 10 अनुसंधान उपकेंद्र और पांच कृषि विज्ञान केंद्र भी है।

उप संपादक, गिरिराज कार्यालय,
मो. 0 82191 29313

स्वरोजगार का जरिया बना मशरूम उत्पादन

प्रदेश की समृद्धि में सेब का योगदान

आरती हेटा

सेब ने हिमाचल प्रदेश को दुनियाभर में नई पहचान दिलाई है। इसका सारा श्रेय सेब क्रांति के अग्रदूत स्वर्गीय सत्यानंद स्टोक्स को जाता है। सत्यानंद स्टोक्स ने अमेरिका के फिलाडेल्फिया से सन् 1918 में सेब का एक पौधा हिमाचल लाया और कोटगढ़ में सेब की खेती आरंभ की थी। उस दौरान सत्यानंद स्टोक्स ने कोटगढ़ में अपने सगे-संबंधियों और आस-पड़ोस के लोगों को भी सेब उगाने के लिए प्रेरित किया। धीरे-धीरे सेब की खेती पूरे शिमला जिले और आज प्रदेश के 10 जिलों में खेती की जा रही। प्रदेश में आज हजारों बागबान सेब की खेती को अपना चुके हैं। वैसे तो सेब का पहला बागान कुल्लू के बन्दरोल में 1870 में अंग्रेजों ने लगाया था, लेकिन तब सेब की व्यावसायिक खेती शुरु नहीं हो पाई थी। सेब की व्यावसायिक खेती कोटगढ़ में सत्यानंद स्टोक्स द्वारा बगीचा लगाने के बाद ही शुरू हुई। वर्तमान में सेब हिमाचल प्रदेश की मुख्य नगदी फसल बनकर उभरा है। हिमाचल के सकल घरेलू उत्पाद में सेब अब 4200 करोड़ रुपए से अधिक का योगदान दे रहा है। एक वक्त था जब लाखों रुपए का सैंकड़ों पेटी सेब सड़कें न होने से बागीचों व गोदाम में ही सड़ जाता था, लेकिन अब गांव-गांव सड़कें पहुंच गई हैं। बागबानी के क्षेत्र में हुए वैज्ञानिक अनुसंधानों का भी बागबान भरपूर फायदा उठा रहे हैं।

अब हमीरपुर और ऊना जिला को छोड़कर अन्य सभी 10 जिलों में सेब उगाया जा रहा है। बीते कुछ सालों के दौरान कम ऊंचाई वाले इलाकों के लोगों ने भी सेब उत्पादन की दिशा में रुचि दिखाई है। यह वैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे सघन अनुंसधान और प्रगतिशील बागबानों के सफल प्रयोगों से सम्भव हुआ है। पूर्व में लोगों की यह अवधारणा थी कि सेब केवल उन्हीं ठंडे इलाकों में उगाया जा सकता है जहां बर्फ गिरती हो, लेकिन आज सेब बिलासपुर, कांगड़ा, मंडी जैसे गर्म जिलों में भी उगाया जाने लगा है। इन गर्म इलाकों में कम चिलिंग अवधि वाली किस्में लगाई जा रही हैं।

विपणन सुविधाओं को विस्तार देते हुए प्रदेश सरकार ने भी अब विभिन्न जगहों पर सेब मंडिया स्थापित की हैं। वर्ष 2000 तक या इससे पहले राज्य के अधिकतर बागबान सेब को बेचने के लिए दिल्ली, कलकता, चंडीगढ़, मुंबई इत्यादि मंडियों का रुख करते थे। तब प्रदेश में बहुत कम मंडियां थी या यहां की मंडियों में बहुत कम खरीददार पहुंचते थे। अब राज्य में 55 से ज्यादा मंडियां ए.पी.एम.सी. द्वारा अलग-अलग जिलों में खोल दी गई हैं। इससे बागबान सुबह मंडियों में आते हैं और शाम को घर वापसी करते हैं।

नए अनुसंधानों से न सिर्फ सेब की नई किस्मों को प्रदेश के बागबान उगा पा रहे हैं, बल्कि पैकिंग व ग्रेडिंग में भी नई तकनीक अपनाई जा रही है। गत्ते की पेटियां आने के बाद सेब की पैकिंग भी आसान हुई है। दो दशक पहले तक सेब को लकड़ी की पेटी में मंडियों में भेजा जाता था। यह काम भी चुनौतीपूर्ण था। गत्ते की पेटियां आने से सेब की पैकिंग आसान हो गई है।

नई तकनीक ने सेब की खेती को आसान बनाया है।

बागबानी में प्रदेश के बागबान अब वैज्ञानिक तकनीक का भरपूर प्रयोग करने लगे हैं। बागीचों में तौलिए बनाने से लेकर सेब की ग्रेडिंग-पैकिंग, दवाइयों का छिड़काव जैसे काम मशीनों द्वारा किया जाने लगा है। सेब की ग्रेडिंग-पैकिंग के लिए वैज्ञानिकों ने ऐसी मशीनें इजाद की हैं, जिससे न तो श्रमिकों की ज्यादा जरूरत रहती है और ग्रेडिंग-पैकिंग को भी आसान बना दिया है।

प्रदेश में एक दशक पहले तक हर साल ओलावृष्टि से करोड़ों का सेब बगीचों में ही बर्बाद हो जाता था, लेकिन बीते कुछ सालों में अधिकतर बागबानों ने एंटी हेल नेट लगा दिए है। एंटी हेल नेट लगाने पर सरकार भी बागबानों को अनुदान देती है।

सेब राज्य के तौर पर मशहूर हिमाचल को अब फल राज्य बनाने की तैयारी है। फसल विविधीकरण के लिए 6388 करोड़ की एच.पी. शिवा परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। इसका वित्त पोषण एशियन डिवेलपमेंट (एडीबी) बैंक कर रहा है। राज्य सरकार का मानना है कि यह परियोजना दुनियाभर में हिमाचल को फल राज्य के तौर पर नई पहचान दिलाएगी, क्योंकि हिमाचल की जलवायु विभिन्न फलों की खेती के लिए अनुकूल है।

राज्य में वर्तमान में 36 विभिन्न किस्मों के फल उगाए जा रहे हैं, लेकिन कुल फल क्षेत्र की 48.75 प्रतिशत (वर्ष 2018-19 के आंकड़े के मुताबिक) जमीन पर अकेले सेब ही उगाया जा रहा है। हिमाचल में 232139 हेक्टेयर में विभिन्न फल उगाए जा रहें हैं। इनमें सेब 113154 हेक्टेयर, ड्राई फ्रूट्स 10194 हेक्टेयर, खट्टे फल 24869 हेक्टेयर, दूसरे उप उष्णकटिबंधी फल 55508 हेक्टेयर भूमि में उगाए जा रहे हैं।

शिवा परियोजना फसल विविधिकरण के मकसद से लागू की गई है। इससे मैदानी जिला में संतरा, लीची, अमरूद, अनार, आम जैसे फलों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। चयनित क्लस्टरों के बागबानों को उन्नत किस्म का प्लांटिंग मटीरियल देना शुरू कर दिया है। इससे पहले जहां विभिन्न फलों की खेती की जानी है, वहां सिंचाई की व्यवस्था की जा रही है। इस प्रोजेक्ट में फल तैयार करने से लेकर उन्हें मंडियों तक पहुंचाने की संकल्पना की गई है। शिवा परियोजना चार अलग-अलग चरणों में पूरी की जाएगी। एडीबी द्वारा सैद्धांतिक तौर पर पहले से मंजूर इस परियोजना के पहले चरण में 1000 करोड़ को लेकर समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया है। यह केंद्र सरकार, राज्य सरकार और एडीबी के मध्य होगा।

इस परियोजना को मंडी, बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, सोलन, सिरमौर और कांगड़ा जिला के चयनित ब्लॉक में लागू किया जा रहा है। बागबानी विभाग द्वारा इसके लिए क्लस्टर बनाए जा रहे हैं। हिमाचल को इस प्रोजेक्ट के पहले चरण में 1000 करोड़ रुपए मिलेंगे। इसे सात जिलों के 28 ब्लाक में विभिन्न फलों की खेती पर खर्च किया जा रहा है।

बागबानी विभाग के मुताबिक परियोजना के तहत उन क्षेत्रों को विकसित करने को प्राथमिकता दी गई है,जहां अभी तक फल उत्पादन नहीं होता। इसके अतिरिक्त ऐसे स्थानों को भी परियोजना में शामिल किया गया है, जहां जंगली जानवरों से प्रभावित किसानों ने खेतीबाड़ी करना छोड़ दिया है, ताकि इन क्षेत्रों के लोगों को बागबानी से जोड़कर आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जा सके।

लॉकडाउन के दौरान उद्यान विभाग ने विभिन्न फलों के लिए पौधरोपण स्थल तैयार कर जुलाई व अगस्त माह में शिवा परियोजना के तहत विभिन्न प्रजातियों के फलदार पौधों का रोपण कर दिया है। परियोजना शुरू होने के बाद अब तक 170 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण कर दिया है।

हिमाचल में प्रति हेक्टेयर सेब उत्पादन और फूलों की खेती के प्रोत्साहन के मकसद से 1134 करोड़ की विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित बागबानी विकास परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। इसके तहत सेब बाहुल क्षेत्रों में बागबानी विभाग ने कलस्टर बना रखे है, जहां इटली और अमेरिका से आयातित सेब की उन्नत किस्मों की खेती शुरु कर दी गई है। इसके अलावा इस परियोजना से प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों में मंडियों का नेटवर्क बनाया जा रहा है। प्रदेश के कई इलाकों में सीए स्टोर (वातानुकुलित) और प्रोसेसिंग प्लांट बनाए जा रहे हैं।

गांव शडयाना, डाकघर ठियोग, तहसील ठियोग,
जिला शिमला, मो. 0 98170 06350

परियोजना को मंडी, बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, सोलन, सिरमौर और कांगड़ा जिला के चयनित ब्लॉक में लागू किया जा रहा है। बागबानी विभाग द्वारा इसके लिए क्लस्टर बनाए जा रहे हैं। हिमाचल को इस प्रोजेक्ट के पहले चरण में 1000 करोड़ रुपए मिलेंगे। इसे सात जिला के 28 ब्लाक में विभिन्न फलों की खेती पर खर्च किया जा रहा है। बागबानी विभाग के मुताबिक प्रोजैक्ट के तहत उन क्षेत्रों को विकसित करने को प्राथमिकता दी गई है ,जहां अभी तक फल उत्पादन नहीं होता। इसके अतिरिक्त ऐसे स्थानों को भी परियोजना में शामिल किया गया है, जहां जंगली जानवरों से प्रभावित किसानों ने खेतीबाड़ी करना छोड़ दिया है, ताकि इन क्षेत्रों के लोगों को बागबानी से जोड़कर आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जा सके।

विविध

हिमाचल प्रदेश ने विकास के नए शिखर हासिल किए हैं। प्रदेश के विकास पर केंद्रित कुछ अन्य विविध आलेख

- भानु प्रिया वर्मा
- डॉ. अदिति गुलेरी
- नरेंद्र शर्मा
- वंदना राणा
- रत्न चंद निर्झर

सुनहरे सफर में आकाशवाणी व दूरदर्शन

भानु प्रिया वर्मा

हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्य के 50 वर्ष पूरे हो चुके हैं जो हर हिमाचल वासी के लिए गौरव की बात है। 50 साल का यह सफर आसान नहीं था। पीछे मुड़कर देखें तो 50 साल बाद लगता है कि काफी कठिन दौर पार कर यहां तक हम सभी पहुंचे हैं और अभी यह सफर जारी रहेगा कई सदियों तक।

हिमाचल प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. वाईएस परमार का हिमाचल की कला संस्कृति से बेहद लगाव था और इसे अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने काफी प्रयत्न किए। इन्हीं प्रयत्नों में शामिल था एक प्रयास भारत सरकार द्वारा आकाशवाणी के शिमला केंद्र को स्वीकृति प्रदान करवाना। 16 जून 1955 आकाशवाणी के शुभारंभ की तिथि निश्चित की गई। इसका उद्घाटन तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री बीबी केसकर द्वारा किया गया और अध्यक्षता तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. वाई. एस. परमार ने की। शुरुआती दौर में शिमला स्टेशन का ट्रांसमीटर शार्टवेव था जिस कारण इसे ज्यादा दूर के इलाकों में नहीं सुना जा सकता था। धीरे-धीरे यह सफर 1966 में मीडियम वेव तक पहुंचा। यह वही साल था जब पंजाब के पुनर्गठन पर पंजाब से कांगड़ा नालागढ़, कुल्लू और होशियारपुर से ऊना आदि क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में शामिल किए गए। इसके साथ ही हिमाचल प्रदेश का भौगोलिक विस्तार होता गया और फिर यह सफर आ पहुंचा एफ एम तक, साल 2005 में जब आकाशवाणी शिमला के स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर माननीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री एस जयपाल रेड्डी के कर कमलों द्वारा तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह की उपस्थिति में एफएम स्टूडियो का उद्घाटन 9 जुलाई 2005 को किया गया। उसके बाद प्रसारण अधिक साफ सुना जाने लगा। अब एफएम शिमला 10 किलोवाट ट्रांसमीटर के साथ-साथ ऑनलाइन भी सुना जा सकता है। पहले जहां शिमला के आसपास तक ही प्रसारण सीमित था अब पूरे भारतवर्ष में यह सुना जा रहा है। ऑनलाइन रेडियो के जरिए मेलबर्न ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में भी श्रोता इसे सुन पा रहे हैं, प्रमाण है उनकी कार्यक्रमों के लिए एसएमएस या मेल आधारित कार्यक्रमों में भागीदारी या फिर लगातार आने वाली प्रतिक्रियाएं।

दूरदर्शन शिमला

अपने शुरुआती दौर में आकाशवाणी शिमला विधानसभा की धरातल मंजिल के आधे भाग में था। महासुवी, मण्डयाली, बिलासपुरी, और किन्नौरी बोलियों के कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते थे। पहले रिकॉर्डिंग की सुविधा नहीं थी सो कलाकार स्टूडियो से सजीव प्रसारण ही दिया करते थे। कलाकार स्टूडियो में आकर पहले ही तैयार होकर बैठ जाते
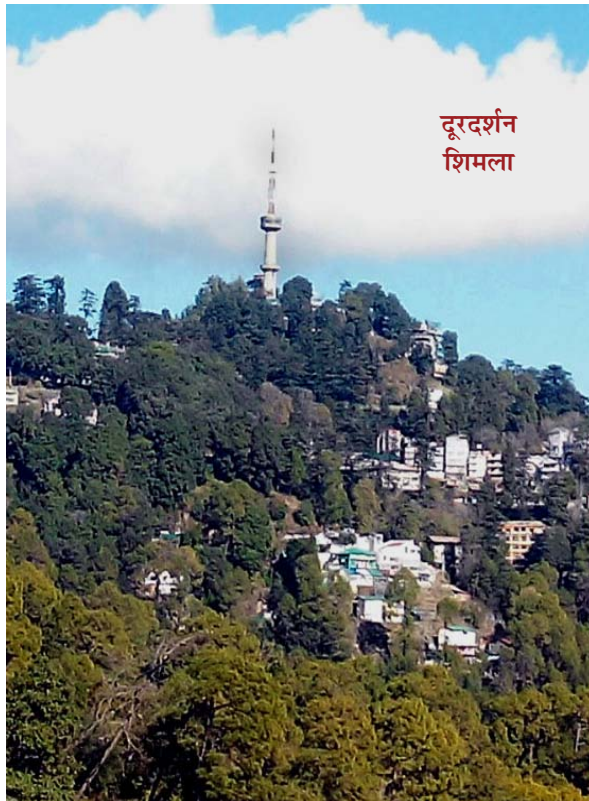
थे उन्हें जैसे ही इशारा मिलता था वैसे ही वह गाना शुरू कर दिया करते थे। यह काफी कठिन दौर था लेकिन फिर भी आकाशवाणी ने श्रोताओं तक समय-समय पर सही जानकारी और मनोरंजन पहुंचाने का सिलसिला जारी रखा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ढाई किलो वॉट से 10 किलोवाट तक का यह सफर बड़ा ही दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण रहा है। श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं का सफर पत्रों से होते हुए लाइव फोन इन, ईमेल और एसएमएस तक आ पहुंचा है। अब सरकार द्वारा चलाई जा रही तमाम योजनाओं और महत्त्वपूर्ण विषयों पर उनसे बातचीत का एक सशक्त माध्यम भी आकाशवाणी शिमला और दूरदर्शन केंद्र ही है। काफी हद तक तमाम कठिनाइयों के बाद भी 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' को यथार्थ किया आकाशवाणी शिमला ने और सत्यमेव जयते को दूरदर्शन केंद्र ने।

15 सितंबर 1959 को सार्वजनिक प्रसारण के तौर पर दूरदर्शन की स्थापना हुई। लोक प्रसारण होने के नाते सूचना संदेश व मनोरंजन के साथ-साथ दूरदर्शन ने राष्ट्र को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य किया है। हिमाचल प्रदेश में दूरदर्शन शिमला केंद्र वर्ष 1994 में स्थापित हुआ और आज तक जन-जन तक पहुंच कर ना सिर्फ उनकी समस्याओं का समाधान कर रहा है बल्कि जानकारियां भी पहुंचा रहा है।

संचार माध्यम के तौर पर हमेशा से ही रेडियो और टेलीविजन को सशक्त माध्यम माना जाता है। इससे जहां आसानी से महत्त्वपूर्ण जानकारियों का आदान-प्रदान होता है वहीं सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का भी प्रचार-प्रसार भलीभांति इन्हीं प्रसारण माध्यमों से होता है। हिमाचल में रेडियो और टेलीविजन का अब तक का सफर स्वर्णिम इतिहास लेकर आया है। यह संप्रेषण का ऐसा माध्यम है जिसकी भूमिका मुझे लगता है काफी महत्त्वपूर्ण और प्रशंसनीय है। प्रदेश में फलोद्यान में क्रांति लाने में आकाशवाणी शिमला और दूरदर्शन शिमला की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। आकाशवाणी शिमला से प्रसारित होने वाले 'सुनहरी किरणें' और 'कृषि जगत' कार्यक्रम जहां किसानों के लिए मार्गदर्शक का काम करते हैं, वहीं दूरदर्शन शिमला से कृषकों के लिए प्रसारित किया जाता है कार्यक्रम कृषि दर्शन जिसमें समय-समय पर विषय विशेषज्ञ आकर किसानों और बागवानों की समस्या का समाधान करते हैं साथ ही जरूरी योजनाओं को भी कृषकों और किसानों तक पहुंचाते हैं। इसी तरह हर आयु वर्ग और रुचि के अनुसार कार्यक्रमों का प्रसारण होता रहा है। फिर चाहे महिलाएं हो, बच्चे हो, बुजुर्ग हो, नौजवान हो, साहित्यकार हो या कारखाने में कार्य करने वाले कामगार हो हर आयु वर्ग और हर तबके के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन शुरू से ही किया जाता रहा है।

लोक संगीत की जितनी बड़ी आर्काइव्स आकाशवाणी के पास है उतनी कहीं नहीं है। संगीत के अनेक पक्षों जैसे लोक संगीत, सुगम संगीत तथा शास्त्रीय संगीत आदि के संरक्षण के लिए अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते रहे हैं। इसी तरह हर पक्ष के उत्थान के लिए रेडियो और टेलीविजन ने सशक्त भूमिका अदा की है, विभिन्न केंद्रों ने लोक संगीत और संगीत की विविध विधाओं में पारंगत अनेक कलाकारों को खोज कर केंद्रों में लाकर उनकी रिकॉर्डिंग कर एक सशक्त मंच उन्हें प्रदान किया है। पहले जब लोगों को आकाशवाणी शिमला के बारे में जानकारी नहीं थी तो आकाशवाणी ने उन तक पहुंच कर उनकी ओबी रिकॉर्डिंग कर न सिर्फ इस पहल को आगे बढ़ाया बल्कि हर चुनौती का सामना करते हुए उन्हें आगे आने का मौका भी दिया।

आज भी लोग आकाशवाणी शिमला के अनुसार अपने घड़ियों के सही समय की पुष्टि करते हैं। यह उनका विश्वास है जो आकाशवाणी शिमला और दूरदर्शन ने बरकरार रखा है। लोक प्रसारक के तौर पर भी रेडियो एक सशक्त माध्यम बना है। वहीं अगर टेलीविजन की बात करें तो दूरदर्शन direct-to-home यानी डीटीएच सेवा के जरिए हर उस जगह तक भी पहुंचा है जहां तक इसका प्रसारण संभव नहीं था। अब डीटीएच के बाद यूट्यूब के जरिए भी लाइव स्ट्रीमिंग या कार्यक्रमों का प्रसारण दूरदर्शन शिमला जो कि अब दूरदर्शन हिमाचल हो गया है, करता रहता है। अब दूरदर्शन हिमाचल बिल्कुल साफ अलग-अलग डिश टीवी डीटीएच के चैनल नंबर्स पर उपलब्ध है। यह एक खूबसूरत सफर है दूरदर्शन केंद्र शिमला से दूरदर्शन हिमाचल बनने तक का।

दूरदर्शन और आकाशवाणी शिमला एक सशक्त माध्यम है लोक प्रसारक है।

आकाशवाणी शिमला और दूरदर्शन हिमाचल ने स्थानीय कलाकारों को न सिर्फ मंच प्रदान किया है बल्कि उनकी प्रतिभाओं को भी संवारा है। साथ ही अपनी पहचान बनाने के अलावा क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान से लेकर लोक संस्कृति को सहेजने और संरक्षित रख विश्व पटल पर पहुंचाने का भी कार्य किया है। धीरे-धीरे तकनीक में विकास होने के साथ-साथ पहाड़ी इलाकों में होने वाली दिक्कतों को दरकिनार करते हुए अपना उद्देश्य पूर्ण करने में आकाशवाणी और दूरदर्शन पूर्णतः सफल हुए हैं। पहले जहां लोगों तक पहुंचना असंभव था वही आसानी से लोगों तक पहुंचा जा सकता है लोग अपनी मूल संस्कृति को करीब से जान पा रहे हैं। 12 जिलों की विभिन्न बोलियों के कार्यक्रम सूचना और प्रचार प्रसार में रेडियो टीवी की अहम भूमिका है। यह सब कड़ी मेहनत के बाद ही संभव होता है। रेडियो में आने वाले लोगों की टीम जनसाधारण के जागने से पहले और सोने के बाद तक कार्य करती रहती है जिसमें कार्यक्रम अधिकारी, इंजीनियर, ड्यूटी ऑफिसर, उद्घोषक, सुरक्षाकर्मी और ड्राइवर्स यह सभी वह लोग हैं जो विकट मौसमी परिस्थितियों में भी प्रसारण को सुचारू रूप से चलाने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं ताकि आम जनता का मनोरंजन तो होता ही रहे साथ ही जानकारियों का सिलसिला भी बरकरार रहे। आज भी लोग मौसम की जानकारी, हवाई उड़ानों और बाकी जानकारियों की प्रमाणिकता के लिए आकाशवाणी शिमला और दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले प्रादेशिक समाचारों या फिर कार्यक्रमों का इंतजार करते हैं।

रेडियो के बाद हिमाचल में दूरदर्शन का पदार्पण वर्ष 1995 में हुआ। दूरदर्शन के क्षेत्रीय केन्द्रों की विस्तार योजना एवं हिमाचल की लम्बित मांग के दृष्टिगत शिमला में 7 जून, 1995 को केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री कर्नल के.पी. सिंह देव ने मुख्य मंत्री श्री वीरभद्र सिंह व राज्यपाल श्री सुधाकर राव नाईक की उपस्थिति में दूरदर्शन केन्द्र शिमला का विधिवत उद्घाटन किया। 15 जून, 1995 से इस केन्द्र से औपचारिक रूप से प्रसारण आरम्भ हुआ। प्रारम्भ में स्थानीय कार्यक्रमों की अवधि मात्र आधे घण्टे रखी गई। 8 अक्तूबर, 2000 से स्थानीय कार्यक्रमों की प्रसारण अवधि दो घण्टे की गई। पहली नवम्बर, 2000 से केन्द्र से 15 मिनट का प्रादेशिक समाचार बुलेटिन आरम्भ हुआ। 15 अगस्त 2005 से पांच मिनट का एक अतिरिक्त समाचार बुलेटिन आरम्भ हुआ। 15 अगस्त 2005 से पांच मिनट का एक अतिरिक्त समाचार बुलेटिन आरम्भ हुआ। इससे पहले राज्य को दूरदर्शन के लिए जालंधर दूरदर्शन केन्द्र पर ही निर्भर रहना पड़ता था जिसकी पहुंच प्रदेश में बहुत कम थी। दूरदर्शन के कार्यक्रम राज्य में 70 प्रतिशत से अधिक की आबादी द्वारा देखे जा रहे हैं। दूरदर्शन का कृषि दर्शन लोकप्रिय कार्यक्रमों में से एक है तथा 12 स्थानीय बोलियों- सिरमौरी, कुल्लवी, मण्डयाली, किन्नौरी, लाहौली, स्पीति, ऊपरी तथा निचले महासुवी, बिलासपुरी, चम्बयाली, पंगवाली और कांगड़ी में कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। आकाशवाणी शिमला तथा दूरदर्शन केन्द्र शिमला, हिमाचल की शान व पहचान है। हिमाचल के विकास तथा उन्नति के कार्यक्रम को लोगों तक पहुंचाने में इनका बड़ा योगदान है। आज भी यह इसी गति से अपना योगदान दे रहे हैं। इंटरनेट के इस युग में इन प्रसारणों ने अभी भी अपनी विश्वसनीयता कायम रखी है। शिमला प्रदेश के दूरदराज क्षेत्रों में आज भी रेडियो तथा दूरदर्शन लोगों का साथी है।

वक्त बदला, हालात बदले और बदले हैं हिमाचल के विकास के नए आयाम भी। विकास का ये सफर यूं ही सदियों तक चलता रहे और हिमाचल प्रदेश बुलंदियों के आसमां को छूता रहे इसी कामना के साथ एक बार फिर हिमाचल के पूर्ण राज्यत्व के स्वर्ण जयंती के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

आकाशवाणी, शिमला-171 004, मो. 0 88943 10579

राज्य संग्रहालय

शिमला के चौड़ा मैदान स्थित पीटरहॉफ के पास ही राज्य संग्रहालय है। कलात्मक एवं पुरातात्त्विक महत्त्व की कलाकृतियों को संरक्षित करने और एक ही स्थल पर संजोने के उद्देश्य से 'हिमाचल राज्य संग्रहालय' वर्ष 1974 में स्थापित किया था। तभी से यह संग्रहालय समृद्धि पुरातात्त्विक धरोहर के बारे में जन-जन को शिक्षित कर रहा है। संग्रहालय में लगभग 9000 कलाकृतियां संग्रहित हैं।

हिमाचल पुरातत्व वीथी में राज्य के विविध भागों में पाई गई पत्थर की मूर्तियों का अद्भुत भण्डार है। काष्ठ कला वीथी में राज्य के प्राचीन मंदिरों और घरों से प्राप्त लकड़ी की नक्काशी प्रदर्शित की गई है। संग्रहालय की छाया चित्र वीथी में हिमाचल प्रदेश के महत्त्वपूर्ण स्मारकों के छायाचित्र देखे जा सकते हैं। सिक्कों और अभिलेखों की वीथी में प्रदेश के विविध भागों में खुदाई के दौरान मिले सिक्के काल क्रम की दृष्टि से प्रदर्शित है। अस्त्र-शस्त्र वीथी में 18 वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक क्षेत्रीय एंव राजसी शासकों द्वारा प्रयोग हथियार प्रदर्शित किए गए हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आजादी से पूर्व समय-समय पर शिमला आते रहे। उन्हीं की स्मृतियों को महात्मा गांधी वीथी में दर्शाया गया है। यह संग्रहालय युवाओं, बच्चों और भावी पीढ़ी के लिए अपनी जड़ों, मूल्यों और परम्पराओं से वाकिफ करवाने का जरिया बना है।

हिमाचल स्वर्ण जयंती की स्वर्णिम यात्रा

डॉ. अदिति गुलेरी

हिमाचल प्रदेश भारत का सबसे सुंदर पहाड़ी राज्य है। हिमाचल को ऋषियों की भूमि, तपोभूमि, देवभूमि भी कहा जाता है। घने जंगल, बर्फ से लदी चोटियां, बहते झरने, नदियां इसके विशेष आकर्षण हैं। सौंदर्य और पर्यटन स्थल हिमालय के वक्ष पर फैले इस राज्य में प्रकृति ने उन्मुक्त भाव से अपने सौंदर्य को चहुं ओर छिटकाया है। हिमाचल प्रदेश 15 अप्रैल, 1948 को अस्तित्व में आने के बाद 25 जनवरी, 1971 को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। इसकी उत्तरी में सीमा जम्मू कश्मीर, दक्षिण में पंजाब, और हरियाणा और उत्तर प्रदेश, पूर्व में तिब्बत से लगती हैं।

हिमाचल प्रदेश अपने प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक और संस्कृति के क्षेत्र में भी विकसित प्रदेश है। यहां पर आधुनिकता और फैशन ने अपना पूरा जाल नहीं बिछाया है क्योंकि यहां पर आज भी परंपराएं जीती-जागती, सांस लेती हैं। प्राचीन काल में हिमाचल प्रदेश एक पिछड़ा हुआ राज्य था जहां पर परिवहन, आवास, जल, शिक्षा, रोजगार की उचित व्यवस्था नहीं थी लेकिन धीरे-धीरे हिमाचल प्रदेश ने प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति के सोपानों को छूने के प्रयास किए हैं।

हिमाचल पेड़-पौधों और वनों की संपदा से भरपूर राज्य है। यहां के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है जिससे यहां की 69 प्रतिशत जनसंख्या को रोजगार मिलता है। यहां की जलवायु कृषि के लिए उचित परिस्थितियां मुहैया करवाती हैं। यहां पर सिंचाई और पीने के लिए भूमिगत जल का ही प्रयोग किया जाता है। हिमाचल प्रदेश में सेब, खुमानी, आड़ू आदि की बागबानी भी की जाती है। यहां का सेब आज अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी पैठ बना चुका है। यहां पर बहुत सी खनिजें भी पाई जाती हैं जिनमें मुख्य रूप से स्लेट, जिप्सम, डोलाबाईट, और पाईराईट सम्मिलित हैं। चट्टानी नमक की एकमात्र खान यहां पर है।

हिमाचल ने पचास वर्षों की यात्रा में औद्योगीकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रदूषण मुक्त वातावरण, बिजली की पर्याप्त आपूर्ति, शांतिपूर्ण माहौल और पारदर्शी प्रशासन राज्य की औद्योगिक नीति की विशेषता है। हिमाचली हथकरघा उद्योग भी अपनी पशमीना शॉलों के लिए देश-विदेश में प्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश ने राज्य को सूचना प्रौद्योगिकी के शिखर पर ले जाने के नैसकॉम के सहयोग से सूचना प्रौद्योगिकी विज़न 2010 तैयार किया।

हिमाचल प्रदेश में खासतौर से राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में आवाजाही का, उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकता सड़क ही मुख्य साधन हैं। उत्पादन क्षेत्रों और बाजार केंद्रों को जोड़ने वाली सड़कों के निर्माण के महत्त्व को समझते हुए हर पंचायत ने सड़क से जोड़ने का प्रयास किया गया। अटल टनल के निर्माण ने दुर्गम इलाके लाहौल स्पीति को भी राज्य के साथ बारह महीने के लिए जोड़ दिया है। हिमाचल के भीतर तीन हवाई अड्डे हैं। धर्मशाला का क्रिकेट स्टेडियम भी क्रिकेट के विश्व पटल पर आज स्थापित है। पूर्ण राज्यत्व की स्वर्णिम जयंती पर हिमाचल ने अपने पचास वर्ष की यात्रा में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन, पशु पालन, कृषि आदि विभागों में भी अपनी विकास की यात्रा को भरपूर गति प्रदान की है। समग्र विकास निष्पादन की दृष्टि से हिमाचल प्रदेश देश में तीसरा सर्वश्रेष्ठ राज्य है। आज इसी प्रदेश में उच्च शिक्षण संस्थान हैं। और चिकित्सा की सुविधाएं भी विश्व स्तरीय हैं। कोविड-19, कोरोना महामारी के समय में स्वास्थ्य विभाग ने दिन- रात एक कर प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती से पकड़े रखा।

हिमाचल प्रदेश की संस्कृति बहुत समृद्ध है और यह हिमाचली लोगों के जनजीवन का अटूट हिस्सा है। सांस्कृतिक परंपराएं, सारस्वत संस्कार, त्योहार, मेले, रीति-रिवाज, बोलियां आज भी हिमाचल के लोगों में जीवित हैं। त्योहारों के माध्यम से उनकी जीवन प्रणाली, उनके जीवन मूल्य, उनकी आस्थाएं और विश्वास प्रकट होते हैं। साहित्य किसी भी संस्कृति के अंग-संग चलता है। हिमाचल का साहित्य भी उतना ही पुरातन और सनातन है जितना कि हिमाचल और हिमाचली मानवीय जीवन।

हिमाचल प्रदेश की संस्कृति बहुत समृद्ध है और यह हिमाचली लोगों के जनजीवन का अटूट हिस्सा है। सांस्कृतिक परंपराएं, सारस्वत संस्कार, त्योहार, मेले, रीति-रिवाज, बोलियां आज भी हिमाचल के लोगों में जीवित हैं। त्योहारों के माध्यम से उनकी जीवन प्रणाली, उनके जीवन मूल्य, उनकी आस्थाएं और विश्वास प्रकट होते हैं। साहित्य किसी भी संस्कृति के अंग-संग चलता है। हिमाचल का साहित्य भी उतना ही पुरातन और सनातन है जितना कि हिमाचल और हिमाचली मानवीय जीवन। मौखिक परंपरा से चला आया

कविता

मेरी पहचान मेरा हिमाचल

वंदना राणा

सात-सुरों से सजती सरगम
इंद्रधनुष भी सात रंग से बनता
सुर-साज सात धुनों में थिरके जैसे
सतरंगी संस्कृति से मेरा हिमाचल सजता।

पर्वत-पर्वत गुलशन-गुलशन
शोभा बनी इसकी न्यारी
जहां जिधर से देखो-दिखती
छवि हिमाचल की प्यारी।

घूम-घूम कर जग देखा...।
मेरे हिमाचल सा देखा नहीं कोई
जो भी आता है यहां
जागे उसकी किस्मत सोई।

दूर क्षितिज के उस पार
ढलती सुंदर शाम सुहानी
रंग-बिरंग खग सुर से
सुरमय होती भोर नूरानी।

हिम के आंचल में बसता
कुदरत की गोद में पलता
छः ऋतुओं के हार पहनकर
चहूं दिशाओं में रमता।

कल-कल करती नदियां कहीं
झर-झर बहते हैं झरनें
सितारे भी उतरे यहां
वसुधा की गोद झरने...।

हरी-भरी वादियों में
हर दिल यहां खो जाता है
सुंदर सपनों के आगोश में
हर सैलानी सो जाता है।

पहाड़ों-मैदानों के कण-कण में
सोना किसान-बागबान उगाता है
गांव-गांव के घर-घर से यहां
देश की सेवा में जवान-जान लुटाता है।

घासनियों में घास काटती
ढाठू पहनें सिर पर चुनर ओढ़े गोरी
रीति-रिवाजों परंपराओं को निभाती
पहाड़ों की रानी और भी लगती प्यारी।

मेरी शान-मेरा मान
हिमाचल है मेरी पहचान
दुनिया के मानस पटल पर
छाया मेरा प्रदेस महान।

उन्नति के शिखरों को
आज मेरा हिमाचल चूमें
लोक राग रंग की धुन पर
जन-जन का मन झूमें।

ईश्वर करे! यह और बढ़े
आगे ही आगे बढ़ता जाए
खुशहाली और तरक्की का
दीप से दीप जलता जाए।

सैट नं. 3, टाईप-3, कैडल लॉज,
लौंगवुड, शिमला,
हिमाचल प्रदेश-171 001

हिमाचली साहित्य आज संग्रहों, पुस्तकों के रूप में सभी के समक्ष है। हिमाचली साहित्यकार, लोक कलाकार, गीतकार अपनी संस्कृति की धरोहर को, विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए सहेजने और प्रवाहित करने का महानतम कार्य कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर पहाड़ी चित्रकला के नमूने देखने को मिलते हैं जिनका राष्ट्र के इतिहास में उल्लेख है और चित्रकला में महत्त्वपूर्ण योगदान भी द्रष्टव्य है।

ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क को वर्ल्ड हेरिटेज़, साईट में सम्मिलित किया गया है। यहां पर एशिया का सबसे बड़ा स्केटिंग रिंक है। एशिया का सबसे ऊंचा ... ट्रैक भी है। यहां की रेलवे लाइन को विश्व धरोहर का दर्जा दिया गया है। हिमाचल प्रदेश देवभूमि के मंदिर अपनी नक्काशी, काष्ठ कला, के अद्‌भुत उदाहरण हैं। हिमाचल अपनी विरासतों को सहेजने में प्रयासरत है। भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल साहित्य अकादमी अपनी साहित्यिक संस्कृति को संरक्षित कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के विकास की यात्रा की गति अब रुकने वाली नहीं है। हिमाचल के भविष्य की यह स्वर्णिम भोर है जो वक्त की पदचाल पर अपनी किरणें आगे भी बिखेरेगी। आज संपूर्ण हिमाचल प्रदेश अपने गठन के पचास वर्ष की जयंती मना रहा है। हर हिमाचली के लिए ये गौरवमय क्षण हैं। हिमाचल प्रदेश का विकास अभी भी जारी है जिसमें प्राचीनता और नवीनता का सुखद संयोग देखने को मिलता है।

स्वतंत्र लेखक, नजदीक नाम आर्ट गैलरी
सिद्धबाड़ी, धर्मशाला, जिला कांगड़ा, हि. प्र.-176057,
मो. 0 98163 05643

अभूतपूर्व विकास के पांच दशक : किन्नौर

नरेंद्र शर्मा

जनजातीय किन्नौर जिला पहली मई, 1960 को अस्तित्व में आया। इससे पूर्व यह महासू जिले की एक तहसील चीनी के रूप में जाना जाता था। पहली मई, 1960 को समस्त चीनी तहसील तथा महासू जिला के रामपुर तहसील के 14 गांवों को मिलाकर किन्नौर जिला का गठन किया गया। जिला के गठन का मुख्य उद्देश्य कठिन भौगोलिक परिस्थितियों वाले इस सीमावर्ती व जनजातीय क्षेत्र के विकास में तेजी लाना था ताकि यहां के लोग प्रदेश के अन्य जिलों के साथ विकास के पथ पर अग्रसर हो सके।

25 जनवरी, 1971 को जब हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा प्राप्त हुआ तो उसके उपरान्त जिले के विकास को एक नई गति मिली। पिछले 50 वर्षों में जिले ने विकास के अनेक आयाम स्थापित किए हैं और आज यह जिला विकास के क्षेत्र में अग्रणी बन कर उभरा है। वर्ष 1971 में जिले का कुल क्षेत्रफल 6,520 वर्ग कि.मी था, जो समस्त प्रदेश का 11.05 प्रतिशत है। वर्ष 1971 में यहां की कुल आबादी 59,835 थी जबकि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की आबादी 84,121 है। यहां लिंग अनुपात वर्ष 1971 में 887 था, जबकि आज 819 (स्त्रियां प्रति 1000 पुरुष) है। 1971 में साक्षरता दर मात्र 27.70 प्रतिशत थी जो अब बढ़कर 80 प्रतिशत से अधिक हो गई है। जनसंख्या घनत्व वर्ष 1971 में 08 था जो आज बढ़कर 13 (प्रति व्यक्ति वर्ग कि.मी) है। जिले में 1971 में 77 आवासीय गांव थे, जो अब बढ़कर 241 हो गए हैं। इसके अलावा 419 गैर आवासीय गांव हैं। वर्ष 1971 में लोकतंत्र की सबसे निचली इकाई ग्राम पंचायतें जिले में मात्र 27 थीं, जो अब बढ़कर 73 हो गई हैं।

किन्नौर के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व बागबानी है। प्रदेश सरकार द्वारा किसानों व बागबानों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रहीं हैं जिसके सार्थक परिणाम सामने आए हैं। जिले में वर्ष 1971 में कुल 1,041 हेक्टेयर क्षेत्र में फलों का उत्पादन होता था जो अब बढ़कर 12,732 .16 हेक्टेयर हो गया है। जिले में जहां 1971 में फलों का उत्पादन मात्र 3,107 टन ही था जो अब बढ़कर 62,311.87 टन हो गया है। यहां से हर वर्ष 28 से 35 लाख तक सेब की पेटियां मंडियों में जा रही हैं। आज जिले के किसान बागबानी को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहें हैं, जिससे उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति में भी भारी बदलाव आया है। जिले में आज बागबान सेब की पुरानी नई स्पर किस्मों को उगाने में भी भारी रुचि दिखा रहे हैं, जिसके लिए प्रदेश सरकार के बागबानी विभाग व डॉ. वाई.एस. परमार बागबानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा हर प्रकार की सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। जिले में वर्ष 1971 में 11,054 हेक्टेयर क्षेत्र में कृषि की जाती थी, परंतु लोगों का बागबानी के प्रति बढ़ते रूझान के चलते जिले में कृषि क्षेत्र घटकर 9,615 हेक्टेयर क्षेत्र ही रह गया है।

कृषि व बागबानी के अलावा जिले के लोगों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन है। जिले में जहां वर्ष 1966 की पशुगणना के अनुसार 1,12,884 पशुधन था वो अब बढ़कर 1,25,857 हो गया है। इसमें भी अब लोगों का रुझान भेड़-बकरियों के स्थान पर उन्नत किस्म की गाय पालने की ओर बढ़ा है। आज शायद ही ऐसा कोई घर होगा जिस घर में उन्न्त किस्म की गाय न पाली गई हो, बहुत से लोग तो दूध व दूध से बने अन्य पदार्थों को बेचकर अपनी आर्थिकी सुदृढ़ कर रहें हैं। जिले में वर्ष 1971 में मात्र 9 पशु चिकित्सालय थे जो अब बढ़कर 21 हो गए हैं। इसी प्रकार पशु औषधालय जो 1971 में केवल 8 थे अब बढ़कर 38 हो गए हैं।

किन्नौर जिला में पिछले 50 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व विकास हुआ है। जिले में जहां 1971 में 79 प्राथमिक स्कूल थे अब बढ़कर 181 हो गए हैं। इसी प्रकार 1971 में जिले में 15 माध्यमिक विद्यालय व 8 उच्च पाठशालाएं थीं जो अब बढ़कर क्रमशः 34 व 20 हो गई हैं। इसके अलावा 32 वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाएं भी हैं। जिले के विद्यार्थियों को दसवीं व जमा-दो के बाद जहां उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए शिमला या रामपुर जाना पड़ता था अब प्रदेश सरकार द्वारा जिले में एक महाविद्यालय भी आरंभ किया गया है।

जिले में स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी पिछले 50 वर्षों में भारी बदलाव आया है। जिले में जहां वर्ष 1971 में कोई भी क्षेत्रीय चिकित्सालय नहीं था आज जिला के मुख्यालय रिकांगपिओ में एक क्षेत्रीय चिकित्सालय 24 घंटे रोगियों को अपनी सेवाएं दे रहा है। जिले के दूर-दराज क्षेत्र चांगों में आज सिविल नागरिक अस्पताल है। जिले में वर्ष 1971 में कोई भी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नहीं था। जिले के दूर-दराज क्षेत्रों पूह, सांगला, निचार तथा भावानगर में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर रहें हैं। जिले में वर्ष 1971 में मात्र 3 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र थे जो बढ़कर आज 23 हो गए हैं। इसके अलावा 34 उप-स्वास्थ्य केन्द्र भी जिले के विभिन्न हिस्सों में अपनी सेवाएं दे रहें हैं। जिले में आज एक आयुर्वेदिक अस्पताल है और 27 आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्र व एक होमियोपैथिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं।

जिले में वर्ष 1971 में मात्र 28 गांव विद्युतिकृत थे आज जिले के सभी घरों में बिजली उपलब्ध है। जिले में 1962 में चाबा से केवल एक 50 के.वी.ए ट्रांसफॉर्मर से विद्युत आपूर्ति होती थी। आज जिले में 430 ट्रांसफॉर्मर के माध्यम से विद्युत आपूर्ति की जा रही है। जिले के सबसे दूर-दराज क्षेत्र हंगरंग घाटी में भी 80 के दशक में विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित बनाई जा चुकी थी। जिले में आज लगभग 35,000 विद्युत उपभोक्ता हैं तथा 958.59 कि.मी. एच.टी लाइन तथा 1122.52 कि.मी. एल.टी लाइन बिछाई गई है।
पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों को क्षेत्र की भाग्य रेखा माना जाता है। सड़कें व यातायात के साधनों से क्षेत्र के विकास को नई गति मिलती है। प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व मिलने के उपरान्त समय-समय पर ही विभिन्न राज्य सरकारों ने सड़क निर्माण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इसी के परिणामस्वरूप आज जनजातीय जिला किन्नौर की सभी ग्राम पंचायतें सड़क मार्ग से जुड़ चुकी हैं। जिले में वर्ष 1971 में राष्ट्रीय उच्च मार्ग को छोड़कर केवल मात्र 112 कि.मी. लंबी सड़कें थीं और आज जिले में 826 कि.मी. लंबी सड़कें जिले की विभिन्न ग्राम पंचायतों को सड़कों से जोड़ रही हैं।

जिले में हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम का लोगों को यातायात सुविधा उपलब्ध करवाने में अहम भूमिका है। वर्ष 1974 से पूर्व हिमाचल सरकार ट्रांसपोर्ट (एचजीटी) के तहत जिले में मात्र 10 से 12 रूटों पर ही बसें चलती थी जो आज बढ़कर 54 रूटों पर चल रही हैं तथा आज रिकांगपिओ स्थित पथ परिवहन निगम के बेड़े में 88 बसें लोगों को यातायात सेवाएं प्रदान कर रही हैं।

प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा मिलने के उपरान्त जिले में पर्यटन की गतिविधियों को भी बढ़ावा मिला है। जिले में पर्यटन की आपार संभावनाओं को देखते हुए स्थानीय लोग भी पर्यटन से जुड़े हैं। जहां वर्ष 1971 में जिले में देशी व विदेशी पर्यटक नाम मात्र में ही आते थे और न ही जिले में पर्यटकों की सुविधा के लिए अधोसंरचना सुविधाएं उपलब्ध थीं। आज जिले में हर वर्ष हजारों की संख्या में पयर्टक आते हैं। वर्ष 2013 में जिले में 2,550 हजार देशी पर्यटक तथा 1,098 विदेशी पर्यटकों ने भ्रमण किया, जबकि वर्ष 2019 में 1,05,881 देशी पर्यटक और 5624 विदेशी पर्यटक किन्नौर जिला के भ्रमण पर आए हैं। आज जिले में पर्यटन निगम के होटल के अलावा निजी क्षेत्र में 103 होम-स्टे तथा 150 होटल पंजीकृत हैं।

पिछले 50 वर्षों में जिले के लोगों के जीवन स्तर में भी भारी बदलाव आया है। आज जिले के लोग अपने पारंपरिक वेश-भूषा, खान-पान के साथ-साथ आधुनिक पहरावे को भी अपना रहे हैं।

जिला लोक संपर्क अधिकारी, रिकांगपिओ,
जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश

जनजातीय इलाकों में विकास की चमकदार मंजिलें

रत्न चंद निर्झर

हिमाचल प्रदेश ने विभिन्न क्षेत्रों में पिछले पचास सालों में उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित कर देश के पर्वतीय राज्यों में अग्रणी स्थान बनाया है। राज्य के मैदानी इलाकों के साथ-साथ यहां के जनजातीय एवम दुर्गम क्षेत्रों ने भी बराबर कदमताल करते हुए अहम भूमिका निभाई है। सड़क, सुरंग निर्माण से जहां ये इलाके नजदीक आये हैं, वहीं इन अगम्य स्थलों की ओर देशी व विदेशी पर्यटकों की आवाजाही में वृद्धि हो रही है। आज ये वो इलाके नहीं रहे, जहाँ ये छः महीने तक पूरे विश्व से कटे रहते थे। मेरा यह सौभाग्य रहा कि मुझे अपने सेवाकाल के दौरान करीब सात साल यहाँ रहने व कबायली जनजीवन को नजदीक से देखने का अवसर मिला। साल 1983 में शिमला से मेरी सरकारी नौकरी का श्रीगणेश हुआ। जून 1984 में मैंने सरकार से निवेदन करके अपना तबादला जिला किन्नौर के करछम स्थान करवा लिया। यह स्टेशन शिमला से 200 किलोमीटर दूर सतलुज और बासपा नदी के संगम स्थल पर है। जिस दिन मैं यहा पहुंचा तो रात के करीब आठ बज चुके थे और बस मुझे एक किलोमीटर पीछे निर्जन स्थान पर उतार कर पीओ की ओर चली गई थी। जैसे तैसे अपनी घर गृहस्थी का सामन आई.टी.बी. पी. की एक छोटी सी पोस्ट पर रखवा कर रात के अन्धेरे में करछ्म जा पहुंचा।

उन दिनों हिमाचल पथ परिवहन निगम की गिनी चुनी बसें, चला करती थी। करछम एक छोटा सा कस्बा हुआ करता था। आठ दस छोटी बड़ी दुकानें, लोक निर्माण महकमे का डिविजन सब डिविजन आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी, पशु औषधालय, रेस्ट हाउस, आई. टी.बी.पी. की पोस्ट। सब पोस्ट ऑफिस व एक प्राइमरी स्कूल हुआ करता था। करछम के नदी के किनारे होने की वजह से यहां ज्यादा बर्फ नहीं गिरती थी परन्तु आस पास खूब बर्फ गिरा करती थी। कल्पा, रिकांग- पियो, सांगला, रकछम, छितकुल इत्यादि स्टेशन भारी बर्फबारी व ग्लेशियर से कट जाया करते थे। यहां आना जाना पैदल ही करना पड़ता था। बस सेवा सांगला रोड पर रकछम तक ही चला करती थी, छितकुल के लिए निर्माण कार्य चल रहा था, किल्बा रोड भी मेरे समय बना। 1986 तक मैं यहां पर रहा। 1985 के विधानसभा उपचुनाव मेरे समय हुए और पहली बार स्व. ठाकुरसेन नेगी को पराजय का मुंह देखना पड़ा। दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े में मेरा जो क्वाटर करछम बाजार के पास था वह रात आग के भेंट चढ़ गया। सारा घर गृहस्थी का सामान स्वाह हो गया, सिर्फ जान बची क्वाटर की छत उखाड़ कर। इस हादसे के बाद मेरा मन यहां से उचाट हो चला। अब मेरा मन चंबा की पांगी घाटी की ओर उड़ान भरने लगा। अपने कार्यालय के माध्यम से विभाग के उच्चाधिकारी को यहां से किलाड़ लोक निर्माण मंडल हेतु ट्रान्सफर की अर्जी दे डाली और यह अर्जी स्वीकार भी हो गई जुलाई महीने के आखिरी सप्ताह चम्बा से त्रेल्ला तक बस का सफर तय करने के बाद एक रात सतरूंडी के अस्थायी होटल में गुजारने के बाद दूसरे दिन अलसुबह चल कर 4315 मीटर ऊंचे साच पास पार करके शाम सात बजे के करीब किलाड़ जा पहुंचा। इस बीच मुझे एक बार हरिपुर धार से करछम होते हुए रिकांगपियो और सांगला जाने का मौका मिला तो मुझे पुराना करछम कस्बा देखने को न मिला उसके स्थान पर बिजली की रोशनी से जगमगाता नये स्वरूप में मिला। आँखें पुराने कस्बे को तलाशती रह गई, मेरी यादों का यह कस्बा बास्पा परियोजना और करछम प्रोजेक्ट्स से नई इबारत लिखता नजर आया।

1986 से 1988 तक किलाड़ में अपना सेवाकाल बिताया। यह समय पांगी के विकास का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है। 1986 में उस समय के मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने जिन योजनाओं के शिलान्यास पत्थर रखे उन योजनाओं का उन्होंने साल 1987 में उद्घाटन भी कर दिया, इस रिकॉर्ड अवधि में कार्य योजनाओं को पूरा करने का श्रेय पांगी के कर्मठ कप्तान आवासीय आयुक्त श्री सुभाष नेगी और उनकी टीम के अन्य अधिकारियों एस. डी. एम, श्री के. आर. भारती, तहसीलदार इन्दर भारद्वाज, नायब तहसीलदार प्रभात शर्मा व अन्य विभाग के प्रमुख अधिकारियों और कर्मचारियों को जाता है। निर्धारित समय में लक्ष्य प्राप्ति का एक घटक यह भी रहा की पांगी घाटी में पहली बार सिंगल लाइन प्रशासन प्रणाली प्रयोग में लाई गई थी जिसके ये सुखद परिणाम सामने आये। आवासीय आयुक्त को मुख्य सचिव के समान प्रशासनिक अनुमोदन एवम् वित्तीय स्वीकृति के अधिकार दिए गये थे और शिमला राजधानी आने-जाने की समस्या भी न रही थी। एक साल के भीतर ही कई सालों से अधर

में लटकी विकास योजनाओं, को पूरा किया गया। 25 किलोमीटर जीप योग्य सड़क का निर्माण, चन्द्रभागा नदी पर पहले पुल का निर्माण कार्य किलाड़ के लिये हुडान भटोरी से पेयजल योजना के अलावा कई गैर आवासीय इमारतों का निर्माण किया गया। ग्रैफ का उपमंडल कार्यालय खोला गया और इस विभाग द्वारा किलाड़ से संसारी नाला और किलाड़ से उदयपुर की तरफ सिद्ध मन्दिर तक मोटर योग्य सड़क एक साल की अवधि में बनाई गई, मोहतू नाले पर पुल बनाया गया। पांगी घाटी में एक नई सुबह का आगाज हो चुका था। इसी अवधि के दौरान मुझे फाइल टू फील्ड प्रोग्राम के तहत एस.डी. एम. के. आर. भारती जी के साथ एक हफ्ता करयुन, कुमार, साच-साहली, से चुनाला-हिल्लो टवान, चस्क, चस्क भटोरी, मिन्धल और फिन्द्पार जैसे ग्रामों में जाने का अवसर मिला और ग्रामीण लोगों के छोटे मोटे कार्यो का घर बैठे निदान होते देखने का मौका मिला।

वर्तमान में इस अहमद नगर प्रणाली का संशोधित संस्करण जनमंच कार्यक्रम में देखने को मिल रहा है... जब मैं पांगी किलाड़ में सेवारत था तो उन दिनों सारा खाने पीने का राशन, राशन कार्ड पर मिला करता था। छह महीने सर्दियों का स्टॉक सब को भरवा कर रखना पड़ता था। इसमें गेहूं चावल, नमक- दालें, पाम ऑयल, इत्यादि शामिल था। चार क्विंटल लकड़ी व निगम के डिपो जोकि माल्ह्त गांव में था, से 60 रुपये प्रति क्विंटल की दर से मिला करती थी। 20 रुपये ढुलाई के और 20 रुपये चिराई के देने पड़ते थे। गेहूं जोकि खच्चरों से साच पास, उदयपुर व जम्मू कश्मीर के रास्ते से आया करती थी... और शायद दो या तीन रुपये सब्सिडी के रेट पर उपभोक्ताओं की उपलब्ध करवाई जाती थी उसे पहले धोने के बाद धूप में सुखाया जाता था फिर घराट में पिसवाने के बाद उपयोग में लाया जाता था। सूखा दूध व दालें इत्यादि हिमाचल खाद्य आपूर्ति निगम की दूकान से मिलती था। हरी सब्जियों की तो शक्ल भी भूल चुके थे। बस सीजन के समय लोकल सब्जी व् मटर के दर्शन हुआ करते थे। उन दिनों मैंने स्थानीय लोगों को नमकीन चाय के साथ मंडे, स्थानीय अनाज की रोटी को खाते देखा है।

1990 के दशक में पांगी के लोगों की आर्थिकी इतनी सुदृढ़ नहीं थी, रोजगार के साधन कम थे और छः महीने तक इस घाटी का शेष विश्व से सम्पर्क कटा रहता था। धीरे-धीरे यहां भी विकास की गति ने रफ्तार पकड़ी। 1987, में जीप योग्य सड़क निर्माण होने पर हेलीकाप्टर द्वारा दो जीपें लाई गई जिनमें एक बिजली विभाग की थी और दूसरी जीप किलाड़ से बिंद्राबनी के मध्य यहां के निवासियों की सुविधा के लिए चलाई गई, चम्बा और किलाड़ आने-जाने वालो के लिए रास्ता सुगम हो गया। इसी साल दिल्ली की एक कम्पनी श्याम इलेक्ट्रॉनिक कम्युनिकेशन द्वारा सर्दियों के मौसम में डिश लगाकर दूरदर्शन की सुविधा उपलब्ध करवाई गई पांगी वासियों ने पहली बार जीप और टी. वी. के कार्यक्रमों को देखा। सर्दियों से जो पांगी घाटी काला पानी के अभिशाप की चादर ओढ़े हुई थी। वहाँ अब विकास की नई भोर का उजाला चहूँ ओर फैल रहा था। देश व प्रदेश के साथ यह वादी भी प्रगति की इन इबारत लिखने को अग्रसर थी। दो साल का समय कब बीत गया पता ही न चला, अब मेरा यहाँ से दाना पानी उठ चला था। नये स्थान की पंसद की अर्जी देकर मेरी परवाज शिमला के चौपाल की तरफ हो चली, दस महीने यहाँ बिताने के बाद पांच साल का समय हरिपुरधार सिरमौर में गुजारने के बाद फिर मेरे कदम हिमाचल के तीसरे धाम शीत मरुस्थल के नाम से चर्चित स्पीति सब डिविजन के काजा की और बढ़ चले। जानकारी मिली थी की यहाँ सबसे ज्यादा ठंड होती है और तापमान माइनस 35 से 40 डिग्री तक जा पहुंचता है। यहाँ मैं लगभग दस महीने अक्तूबर 1994 तक रहा। पारिवारिक परिस्थितियों की वजह से मुझे यह स्थान न चाहते हुए छोड़ना पड़ा, काजा में भी एकल प्रणाली थी।

यहाँ पर बिन्देश्वरी नेगी ए.डी.सी. और श्री एस, आर. ठाकुर एस.डी.एम. प्रशासनिक अधिकारी कमान सम्भाले हुए थे। काजा में गैस एजेंसी से गैस सुविधा होने से घरों में पारम्परिक चूल्हों के साथ साथ गैस पर प्रेशर कुकरों से सीटियों की आवाज सुनाई देती थी तो ऐसा लगता था की यहाँ भी नई सुबह दस्तक दे रही हो हुर्लिंग से आगे चंडीगढ़ तक ही रोड पक्का था उसके बाद सारा रोड कच्चा था ,बस सेवायें गिनी चुनी हुआ करती थी। इन सभी कबायली इलाकों में सड़क, बस सेवा, बिजली पानी की बेहतरीन सुविधाएं इन दिनों प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान की जा रही है। किलाड़ में सरकारी महाविद्यालय के साथ साथ शिक्षा सुविधाएं इन क्षेत्रों में प्रदान की जा रही है। शिमला जिला के डोडरा क्वार यानी चौथे धाम में भी मुझे 2015 से 2017 तक तीन साल बिताने का मौका मिला। यहाँ पर अन्य जनजातीय क्षेत्रों के मुकाबले प्रगति की कम रफ्तार देखने को मिली, अभी यहाँ बहुत कुछ शेष करने की आवश्यकता है। सरकार की ओर से हालांकि प्रचुर बजट दिया गया पर परिणाम संतोषजनक नहीं देखने को मिले। एक मात्र रोहडू चिड़गांव डोडरा क्वार सड़क के साथ क्वार में निर्माणाधीन लोक निर्माण विश्राम घर के साथ-साथ यहाँ पर कार्यरत कर्मचारयों के लिए आवासीय कमरों का निर्माण निहायत जरूरी है। प्रदेश सरकार हर वर्ष जनजातीय विकास योजना के तहत करोड़ों रुपए का बजट इन इलाकों में विभिन्न विकास कार्यों के लिए उपलब्ध करवा रही है जिससे पिछले पचास सालो की इस विकास यात्रा में यहाँ की बदलती तस्वीर नये आयाम स्थापित कर हिमाचल प्रदेश को सफलता के शिखरों की ओर ले जाने में अग्रसर है।

मकान नंबर 211, रौड़ा सेक्टर, बिलासपुर,
हिमाचल प्रदेश.- 174001, मो. 0 94597 73121

विद्यार्थियों की

विद्यार्थी हमारे देश का भविष्य हैं। परिस्थितियों को देखने का उनका अपना अलग नज़रिया है। हिमाचल के इस सफ़र को वे किस तरह देखते हैं, उन्हीं की कलम से...

- अस्तित्व शर्मा
- प्रीति
- तानिया चौधरी
- अलौकिक शर्मा
- रानी देवी
- ईशा
- तारुषी
- आस्था
- गीतांजलि

मेरी नज़र में हिमाचल

हिमाचल को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा 25 जनवरी, 1971 को मिला था। इस वर्ष 25 जनवरी 2021 को हम 50वां पूर्ण राज्यत्व वर्ष मना रहे हैं। इन 50 वर्षों में हिमाचल प्रदेश में बहुत प्रगति एवं विकास हुआ है। जब वर्ष 1971 में हमारे राज्य को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा मिला तो हिमाचल प्रदेश में बहुत कम सुविधाएं थीं। यातायात, संचार के साधन दूर- दराज के क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं थे। आम जनता के लिए ये साधन सुलभ नहीं थे। आज शिक्षा के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश ने बहुत प्रगति कर ली है। पहले विद्यालय गुरुकुल, आश्रम की भांति हुआ करते थे। विद्यार्थियों के बैठने के लिए चटाइयों का प्रबंध भी नहीं था। पढ़ाई का काम स्लेट पर किया जाता था। विद्यार्थियों के लिए भोजन की कोई व्यवस्था नहीं थी। पढ़ने के लिए किताबें भी एक दूसरे से मांग कर लेते थे। विद्यालय की ओर से किताबों की कोई व्यवस्था नहीं थी परंतु वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्रों के बैठने के लिए डेस्क की व्यवस्था है। कक्षा पहली से दसवीं तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क पुस्तकें सरकार द्वारा दी जाती है। कक्षा पहली से आठवीं तक मध्याह्न भोजन की उचित व्यवस्था है। सभी स्कूली विद्यार्थियों को मुफ्त में वर्दियां आवंटित की जाती हैं। कक्षा 9-12 तक स्मार्ट कक्षाएं शुरू की गई हैं जिसमें विद्यार्थी प्रोजेक्टर की सहायता से आधुनिक ढंग से शिक्षा ग्रहण करते हैं।

आज के समय में विद्यार्थी तनाव-रहित वातावरण में आधुनिक उपकरणों एवं तकनीक के साथ पढ़ाई करते हैं। हमने बड़े बुजुर्गों से सुना है कि पहले के समय में सड़कें, पक्के रास्ते नहीं होते थे, वाहनों की भी बड़ी कमी थी। लोग पगडंडी रास्तों पर सफ़र करते थे परंतु वर्तमान समय में सभी घरों तक पक्के रास्ते हैं। सड़कें पक्की एवं मजबूत हैं। गाड़ियों की कोई कमी नहीं है।

आजादी के समय हमारे पूर्वज कुओं एवं बावड़ियों से जल भरकर लाते थे परंतु आजकल हम सभी के घरों में नल लगे हैं तथा पेयजल की कोई दिक्कत नहीं है।

पहले अस्पताल दूर कहीं जाकर मिलते थे परंतु अब तकरीबन-तकरीबन सभी गांवों में प्राथमिक अस्पताल स्थापित हैं। बुजुर्गों, बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को ज्यादा दूर जाने की समस्या नहीं है।

कृषि क्षेत्र में आए आधुनिक उपकरणों ने कृषकों के जीवन को सरल बना दिया है। रोगियों के लिए एंबुलेंस एक फोन पर उपलब्ध हो जाती है। कहीं आग लगने पर फायर ब्रिगेड तुरंत पहुंच जाती है। इस प्रकार इन 50 वर्षों में लोगों का जीवन सरल, शांत एवं सुखमय हो गया है। इसी बीच हिमाचल प्रदेश एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल भी बन गया है। लोग देश-विदेश से कुल्लू-मनाली, शिमला, धर्मशाला, डलहौजी और बीड़-बीलिंग में घूमने आते हैं।

हिमाचल प्रदेश ने इन 50 वर्षों में दिन दोगुनी रात चौगुनी तरक्की की है। इस उन्नति का श्रेय यहां के कर्मठ लोगों एवं यहां की मेहनती सरकार को जाता है।

प्रीति
कक्षा दस जमा एक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छम्यार
तहसील बल्ह, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश-175 027

खास हैं हिमाचल के पचास : भविष्य एवं विकास

ऊंचे ऊंचे पर्वत, घने देवदार।
बहते मीठे झरने, गूंज रही नदियों की धार॥

उत्तर भारत के आंचल में स्थित छोटा-सा राज्य जिसका गठन 15 अप्रैल, 1948 को मुख्य आयुक्त के प्रांत के रूप में किया गया जो 25 जनवरी, 1950 को 'ग' श्रेणी का राज्य बनाया गया। सन् 1966 में पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों को इसमें सम्मिलित किया गया। दिसंबर, 18, 1970 को संसद ने हिमाचल प्रदेश अधिनियम पारित किया तथा 25 जनवरी, 1971 को भारत के अठारहवें पूर्ण राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। पहाड़ सी चुनौतियों के साथ हिमाचल ने चलना शुरू किया लेकिन रास्ते दुर्गम थे, प्रगति का कोई साधन नहीं था। बारह लाख जनसंख्या, 228 किलोमीटर सड़कें और 331 शिक्षण संस्थान थे। प्रत्येक हिमाचली के मन में यह स्वप्न था कि हम आगे बढ़ें लेकिन कैसे बढ़ें, यह सबसे बड़ी चुनौती थी। हर घर में बिजली, जल की सुविधा, हर गांव तक सड़क, हर बच्चे के लिए शिक्षा, प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वास्थ्य सुविधा जैसी चुनौतियों ने हिमाचल के जीवन को नए लक्ष्य दिए। प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार जी ने इन चुनौतियों के साथ विकास के कदम आगे बढ़ाए।

विकास के क्रम

हिमाचल में विकास का वाहन नए आयाम एवं नए दृष्टिकोण के साथ निरंतर गतिशील है। एक चक्र समाज है जो प्रेरक की भूमिका अभिनीत कर रहा है। द्वितीय चक्र सरकार जो नए हिमाचल के उत्थान के लिए प्रयासरत है, तृतीय चक्र उद्योग जो हिमाचल को प्रगति एवं रोजगार के नए आयाम उपलब्ध करवा रहा है, चतुर्थ चक्र ज्ञान का है जो हिमाचल को राष्ट्र का प्रथम साक्षर राज्य बनाने के क्रम पर है, पंचम चक्र चिकित्सा जो प्रत्येक नागरिक की स्वास्थ्य सुविधा हेतु तत्पर है तथा षष्ठ चक्र पर्यटन स्थल एवं देवभूमि की अलौकिक सुंदरता एवं महिमा जो संपूर्ण राष्ट्र ही नहीं, अपितु विश्वभर के नागरिकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

'आइए गाथा लिखते हैं सबके साथ ही
प्रगति के लिए उठते हर उस हाथ की।
सहज नदी बना स्वर्णिम इतिहास
चुनौतियों को लांघ किया अभूतपूर्व विकास॥'

औद्योगिक आयाम

किसी भी प्रांत के विकास में औद्योगिक क्रांति की अग्रिम भूमिका रहती है। इससे स्थानीय युवाओं को रोजगार के साधन उपलब्ध होते हैं। सन् 2003 से हिमाचल प्रदेश ने अपनी औद्योगिक इकाइयों को गतिमान रूप दिया जिसमें छोटे, मध्यम एवं बड़े उद्योगों का विस्तार किया गया। इसके लिए तकनीकी शिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई जहां से शिक्षित होकर युवा रोजगार के लिए सक्षम हो सकें। वर्तमान सरकार राज्य में प्रदूषण मुक्त, स्थानीय कच्चे माल पर आधारित एवं रोजगार की प्रबल पूर्ति वाले उद्योगों को प्राथमिकता दे रही है।

'आमंत्रण से निवेश' सरकार का औद्योगिक निवेश को आकर्षित करने की दिशा में हिमाचल ने नवंबर 2019 में 'राइजिंग हिमाचल प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर्ज मीट' का आयोजन किया। ग्लोबल परिप्रेक्ष्य में हिमाचल आज सशक्त होकर प्रगतिशील है क्योंकि हमने अपनी अर्थव्यवस्था की मौलिकता को क्षीण नहीं होने दिया।

शैक्षणिक आयाम

पूर्व राज्यत्व प्राप्ति के समय शिक्षा का प्रसार, समाज को जागरूक करने की चुनौती भी किसी पहाड़ से कम नहीं थी। तत्कालीन साक्षरता दर 31.71 प्रतिशत थी। शिक्षा के बिना कोई भी राज्य उन्नति नहीं कर सकता। शिक्षा समाज की मेरुरज्जु है जो समाज को अन्य तंत्रिकाओं से जोड़ती है। पिछले पचास वर्षों में राज्य ने विभिन्न विश्वविद्यालयों की स्थापना की जिससे आज हिमाचल के प्रत्येक घर का बच्चा शिक्षा ग्रहण कर रहा है। शिक्षा में कृषि, वानिकी, तकनीकी, बागबानी, आयुर्विज्ञान जैसे आयामों को विकसित किया गया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो हिमाचल की साक्षरता दर 86 प्रतिशत तक पहुंच गई है। इसी संदर्भ में प्रदेश सरकार ने 'अखंड शिक्षा ज्योति मेरे स्कूल से निकले

वर्ष 1971 तक हिमाचल में लेफ्टिनेंट गवर्नर

1. मेजर जनरल हिम्मत सिंह (सेवानिवृत्त)	1-3--1952 से 31-12-1954
2. राजा बजरंग बहादुर सिंह भंडारी	1-1-1955 से 13-8-1963
3. श्री भगवान सहाय आई.सी.एस. (सेवानिवृत्त)	14-8-1963 से 25-2-1966
4. श्री विश्वनाथन आई. सी. एस. (सेवानिवृत्त)	26-2-1966 से 6-5-1967
5. श्री ओम प्रकाश, चीफ ज्यूडिशियल कमीशनर (दोहरा कार्यभार)	7-5-1967 से 15-5-1967
6. लेफ्टिनेंट जनरल के. बहादुर सिंह (सेवानिवृत्त)	16-5-1967 से 24-1-1971

मोती' को कार्यान्वित किया।

सामाजिक आयाम

किसी भी राज्य को विकसित करने के लिए वहां की जनता का सामाजिक दृष्टिकोण सुदृढ़ होना नितांत अनिवार्य है। एक दूसरे के साथ जोड़ना, संस्कृति को बढ़ते क्रम में जीवन के साथ ले चलना, एक गांव को दूसरे गांव से, एक जिले को दूसरे जिले से जोड़ना भी सामाजिक आयाम का कार्य है। हिमाचल एक पहाड़ी एवं दुर्गम क्षेत्रीय राज्य था लेकिन आज प्रत्येक गांव तक सड़कों का जाल बिछा हुआ है जो पूरे हिमाचल को एकरूपता प्रदान करता है। 'अटल टनल' के सुचारू रूप से चलने पर हिमाचल का लाहौल-स्पीति जिला भी वर्षभर की गतिविधियों के लिए प्रदेश से जुड़ गया। जिंदगी, जनजीवन को नया आयाम मिला।

राह को राह से जोड़ेंगे
विकास की हर धारा को अपनी ओर मोड़ेंगे ॥

पर्यटन आयाम

पर्यटन उद्योग ने हिमाचल को विश्व में नई पहचान दी है। इसके विकास के लिए हिमाचल सरकार ने सड़कें, संचार, यातायात एवं स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई हैं। राज्य पर्यटन विकास निगम प्रदेश की आय में 10 प्रतिशत योगदान करता है। धार्मिक तीर्थस्थल, गर्म पानी के स्रोत, प्राकृतिक झीलें, ऐतिहासिक दुर्ग, ऋषि व्यास, लोमेश, पराशर, मारकंडेय, वशिष्ठ और परशुराम के निवास स्थल पर्यटकों को असीम आनंद एवं संतोष की अनुभूति प्रदान करते हैं।

स्वास्थ्य आयाम

किसी भी प्रदेश की प्रगति के लिए वहां के नागरिकों का स्वस्थ होना अति आवश्यक है। पिछले पचास वर्षों में प्रदेश विभिन्न बीमारियों से जूझता रहा जिसमें सरकार ने जन स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाने का भरसक प्रयत्न किया। एड्स, क्षयरोग, कोढ़ जैसे रोगों के उन्मूलन हेतु विभिन्न योजनाओं को आम जनता तक पहुंचाया। क्षय रोग उन्मूलन में भारत में हिमाचल प्रदेश का तीसरा स्थान है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कोरोना महामारी में भी स्वास्थ्य विभाग द्वारा निरंतर सेवाएं दी जा रही हैं। वर्तमान में प्रदेश में छः चिकित्सा महाविद्यालय और एक 'अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान' सुचारू रूप से क्रियान्वित है।

उपसंहार

हिमाचल भारत के उन राज्यों में से एक है जिसने तीव्रता से दुर्गम एवं पिछड़े क्षेत्रों में अभूतपूर्व विकास किया है। आज हिमाचल प्रति व्यक्ति आय के संबंध में भारत के प्रथम चार राज्यों में से एक है। कृषि एवं फल उत्पादन में हिमाचल भारत का अग्रणी राज्य है। यहां की विभिन्न वनस्पतियों से औषधियों का निर्माण होता है। हिमाचल विद्युत उत्पादन से उत्तर भारत में रोशनी कर रहा है। हिमाचल में विकास प्रगतिशील है। निकट भविष्य में रेलवे मार्ग से जुड़ कर यहां उद्योग, पर्यटन के विविध आयाम विकसित हो सकते हैं लेकिन हमें प्रगति के साथ प्रकृति का समन्वय स्थापित करना है क्योंकि हिमाचल का नैसर्गिक सौंदर्य ही हिमाचल की अस्मिता है। विकट परिस्थितियों में भी प्रदेश की प्रगति के लिए कार्य करना ही हिमाचल के समर्पित नागरिक का दायित्व है जिससे हिमाचल के पचास वर्षों के विकास का क्रम भविष्य में दिन दोगुना-रात चौगनी उन्नति करे।

किंचित न हो मन में संदेह,
न ही कोई खेद
दृढ़ संकल्प, समर्पण और श्रम से
होता है यह लक्ष्य भेद ॥

अस्तित्व शर्मा
कक्षा सातवीं,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय,
घुमारवीं, जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश-174021

प्रभावित करता हिमाचल का विकास

'आत्मनिर्भर हिमाचल का भ्रष्टाचार
से ना कोई नाता
50 वर्षों की मेहनत से
अपनी पहचान बनाता।'

हिमाचल प्रदेश भारत के उत्तर में स्थित एक राज्य है जिसकी राजधानी शिमला है। यह हिमालय के पहाड़ों से घिरा हुआ है और अपनी ठंडी जलवायु के लिए प्रसिद्ध है। शुरुआत में हिमाचल को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। हिमाचल को वर्ष 1971 में एक पूर्ण राज्य के रूप में पहचान मिली। आवास, सड़क, जल, सिंचाई एवं कृषि के क्षेत्र में राज्य ने विगत 50 वर्षों में अभूतपूर्व वृद्धि की है। केरल के बाद हिमाचल सबसे कम भ्रष्ट राज्यों में गिना जाता है। राज्य के लोगों की मेहनत और सरकार के प्रयासों से हिमाचल प्रदेश न केवल आत्मनिर्भर बन पाया है बल्कि अन्य राज्यों के विकास में भी योगदान दे रहा है।

पचास वर्ष विकास के

प्राचीन काल में हिमाचल एक पिछड़ा हुआ राज्य था जहां पर परिवहन, आवास, जल, शिक्षा आदि की उचित व्यवस्था नहीं थी। लेकिन इन पांच दशकों में हिमाचल प्रदेश ने बहुत प्रगति कर ली है। परिवहन के माध्यम से विकसित हुए तथा सड़कें भी चौड़ी हुई हैं। हिमाचल प्रदेश में बहुत सारे शिक्षण संस्थान हैं और बहुत से उद्योग स्थापित किए गए हैं। पहले हिमाचल में चिकित्सा की सुविधा न के बराबर थीं। समय के साथ-साथ यहां बहुत से अस्पताल बने हैं जिनसे लोगों का इलाज संभव हुआ।

हिमाचल के विकास का अंदाजा यहीं से हो जाता है कि वर्तमान में हिमाचल प्रदेश की साक्षरता दर 82.80 फीसदी से अधिक है। हिमाचल का प्रमुख व्यवसाय कृषि है जिससे यहां कि 69 प्रतिशत जनसंख्या को रोजगार मिलता है। हिमाचल में सेब, खुमानी, आड़ू आदि की बागबानी भी आय का प्रमुख साधन है। आज का हिमाचल पूर्ण रूप से विकसित और आत्मनिर्भर है।

हिमाचल की भविष्य योजनाएं

बीते 50 वर्षों में हिमाचल ने हर क्षेत्र में उन्नति कर ली है। शिक्षा, परिवहन, उद्योग, कृषि, पर्यटन जैसे अनेक क्षेत्रों में हिमाचल ने खुद को साबित किया है जिसे देख कर लगता है कि निश्चित तौर पर हिमाचल का औद्योगिक भविष्य उज्ज्वल है। विकास और युवा स्वांवलंबन जैसी योजनाएं शुरू की गई हैं ताकि प्रदेश के युवाओं का भविष्य उज्जवल बन सके। हिमाचल को फलों का कटोरा भी कहा जाता है क्योंकि यहां पर फलों की भरमार होती है। सरकार द्वारा भविष्य में इसे विश्व की फलवार बॉस्केट बनाने का सोच रही है। दिन-प्रति-दिन बढ़ती सुविधाओं के कारण भविष्य में हिमाचल पर्यटन के क्षेत्र में एक विशेष पहचान बनकर उभरेगा। इसके अलावा दो हजार से भी ज्यादा लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

निष्कर्ष

हिमाचल ने इन 50 सालों में अपनी मेहनत के दम पर विकसित राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाई है। हिमाचल में विकास यह क्रम अभी भी जारी है।

हिमाचल एवं युवा

"उत्तर में भारत की शान खूब बढ़ाता...
बर्फीले सुंदर पहाड़ों वाला हिमाचल कहलाता।"

हिमाचल प्रदेश भारत के उत्तर में स्थित बहुत सुंदर पहाड़ी राज्य है जिसकी राजधानी शिमला है। हिमाचल हिमालय के पहाड़ों से घिरा हुआ है और अपनी ठंडी जलवायु के लिए प्रसिद्ध है।

हिमाचल में युवाओं की संख्या

हिमाचल प्रदेश की कुल जनसंख्या में 35.25 प्रतिशत युवा हैं जो राष्ट्रीय स्तर पर 34.80 प्रतिशत से अधिक हैं। इससे स्पष्ट है कि युवा जनसंख्या की अगर बात की जाए तो हिमाचल की स्थिति अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर है। 1971 की जनगणना के अनुसार कुल युवा जनसंख्या 10.56 लाख से बढ़कर 2011 में 24.20 लाख हो गई है। 40 साल की इस अवधि में युवा आबादी में 129 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। जबकि इस अवधि में सामान्य जनसंख्या 85 प्रतिशत बढ़ी है।

हिमाचल में युवा साक्षरता दर

हिमाचल में साक्षरता दर में 50 सालों में दोगुनी बढ़ोतरी हुई है। अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग की रिपोर्ट 'हिमाचल प्रदेश में युवा-2018' के अनुसार वर्ष 1971 में हिमाचल में 15-34 आयु वर्ग की साक्षरता दर 46.8 फीसदी थी। वर्ष 2018 तक यह बढ़कर 95 फीसदी हो गई। रिपोर्ट के मुताबिक हिमाचल में स्नातक स्तर पर छात्रों का नामांकन सबसे अधिक 79.82 फीसदी है। युवा साक्षरता दर के यह आंकड़े लगातार बढ़ते ही जा रहे हैं।

हिमाचल में रोजगार हेतु सरकार के प्रयास

हिमाचल सरकार युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने हेतु भरपूर प्रयास कर रही है। सरकार प्रदेश में रोजगार के साधन बढ़ाने के लिए निवेशकों को आकर्षित कर रही है। जिससे प्रदेश का आर्थिक विकास होगा और साथ ही लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त होगा।

युवा स्वरोजगार बढ़ाने हेतु सरकार की योजनाएं

युवा स्वरोजगार को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम के अंतर्गत योजनाएं चलाई जा रही हैं जिसके तहत युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किए जा रहे हैं ताकि युवा उद्यमी बन सकें।

'हिमाचल के विकास का बस यही आधार
उद्यमी बने सभी युवा न रहे कोई बेरोजगार।'

इसके अलावा मुख्यमंत्री युवा स्वावलंबन योजना 2020 की शुरुआत की गई है। इस योजना के अनुसार बेरोजगार युवाओं को औद्योगिक इकाइयों में 40 लाख रुपये के निवेश पर मशीनरी पर 25 प्रतिशत की सबसिडी दी जा रही है। इसके अलावा सरकार युवाओं को सिर्फ 1 प्रतिशत दर पर किराए पर जमीन भी प्रदान करेगी।

निष्कर्ष : युवाओं के परिप्रेक्ष्य में अगर हिमाचल सरकार की बात की जाए तो बेरोजगारी की स्थिति से निपटने के लिए कारगर कदम उठा रही है। राज्य के अधिकतर युवा साक्षर हैं। इसलिए इनको प्रदेश के भीतर ही रोजगार उपलब्ध हो तो ये हिमाचल की आर्थिकी और विकास में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

तानिया चौधरी
कक्षा दसवीं
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला
घनियारा, धर्मशाला, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल

हिमाचल हमारा सबसे प्यारा
बड़ा सुन्दर इसका नज़ारा
नदियां और पहाड़ हैं इसकी शान
हरियाली भरा हिमाचल महान
है सबसे आगे सब आँखों का तारा
हिमाचल हमारा सबसे प्यारा
पहाड़ी झरने हैं हमको भाते
पहाड़ी हम बोलते पहाड़ी में गाते
हिमाचल तुझे दुनिया में चमकाएंगे
अलौकिक बच्चे तेरा मान बढ़ाएंगे

अलौकिक शर्मा
कक्षा-छठी
डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल
बिलासपुर, हि.प्र।

शिक्षा में अव्वल

हिमाचल शब्द संस्कृत के दो शब्दों हिम और अचल से बना है। हिमाचल प्रदेश का शाब्दिक अर्थ है बर्फीले पहाड़ों का प्रांत। चारों ओर हिमालय के पहाड़ों से घिरा हुआ यह एक बहुत ही सुंदर प्रदेश है। सांस्कृतिक और भौगोलिक रूप से हिमाचल प्रदेश हिमालय के पश्चिमी भाग में स्थित है।

हिमाचल प्रदेश को जब 25 जनवरी, 1971 को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ तो पहाड़ी राज्य होने के कारण इसे विकसित करने में अनेक चुनौतियां थीं। इस छोटे से प्रदेश ने चुनौतियों को पार करके आज हिमाचल के सबसे ऊंचे गांव किब्बर को भी सड़क मार्ग से जोड़ दिया है। इन्हीं सड़कों के दम पर विकास की बुनियाद रखी गई है।

आज प्रदेश में 15 हजार से ज्यादा शिक्षण संस्थान हैं जिनमें 10 लाख से अधिक छात्रों का भविष्य सुधारने के लिए 70 हजार से अधिक शिक्षक तैनात हैं। साक्षरता दर में हिमाचल भारत में दूसरे नंबर पर है।

देवी-देवताओं की यह भूमि एक रमणीय प्रदेश है। यहां अनेक पर्यटन स्थल हैं। दूर-दूर से लोग इन स्थलों पर घूमने के लिए आते हैं। अभी हाल ही में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अटल टनल का उद्घाटन किया। अटल टनल के बनने से प्रदेश के पर्यटन को भी पंख लगे हैं। इस प्रोजेक्ट से हिमाचल की अर्थव्यवस्था को सुधारने में भी बहुत मदद मिलेगी।

आज प्रदेश पूर्ण राज्यत्व की 50वीं वर्षगांठ मना रहा है। इन 50 वर्षों में प्रदेश में अनेक अस्पताल खोले गए। यहां तक कि उद्योगों में काम करने वाले कर्मियों की सुविधा के लिए ई.एस. आई. अस्पताल भी खोले गए हैं। अब हिमाचल का पहला अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान बिलासपुर जिले में शीघ्र ही खुलने जा रहा है।

हिमाचल की धरती पर पांच नदियां बहती हैं, जो बिजली उत्पादन में सहायक हैं, जिसे हिमाचल दूसरे राज्यों में पहुंचा रहा है। आज हर घर में नल है, बागबानी में भी हिमाचल अग्रणी है। यहां का सेब विश्वभर में प्रसिद्ध है।

पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने के बाद यद्यपि हिमाचल ने बहुत तरक्की की है, परंतु अभी भी चुनौतियां कम नहीं हुई हैं। एक छोटा राज्य होने के नाते केंद्र पर निर्भरता अधिक रहती है। प्रदेश को कमाई के लिए और संसाधन तलाशने के लिए हमारे राजनेताओं को और ध्यान देने की आवश्यकता है।

रानी देवी
कक्षा दसवीं ए
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बघेरी, तहसील नालागढ़,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के चीफ कमीश्नर
(1948 से 1971)

1. श्री एन.सी. मेहता	25-04-1948 से 09-01-1950
2. श्री ई. पेन्डरल मून	09-01-1950 से 29-03-1951
3. श्री भगवान सहाय	30-03-1951 से 19-02-1952
4. मेजर जनरल हिम्मत सिंह	21-03--1952 से 31-12-1954

कविता

मेरा हिमाचल

यह है मेरा प्यारा हिमाचल
बहुत सुंदर न्यारा हिमाचल
हरियाली हर ओर बसी है
सर्दी में रहती बर्फ की हलचल।

यहां किसान खेती हैं करते
भोले-भाले लोग यहां रहते
सुंदर-सुंदर फूल यहां खिलते
सेब आम के बाग हैं सजते।

धामें यहां की बहुत निराली
तरह-तरह का स्वाद दिलाने वाली
सड़कें यहां की टेढ़ी-मेढ़ी
रोमांच पाने आते यहां सभी।

गांव-गांव में स्कूल खुले हैं
हर जगह शिक्षा के मेले लगे हैं
दुनिया भर के पर्यटक यहां आते
खूबसूरती मन भर ले जाते।

यह है मेरा प्यारा हिमाचल
बहुत सुंदर यारा हिमाचल।

आस्था
कक्षा-7
मंगलम पब्लिक स्कूल महादेव
तहसील सुंदरनगर, जिला मंडी हिमाचल प्रदेश- 175018

विकास की बहती अविरल धारा

मैं हिमाचल हूं। 25 जनवरी, 1971 को पहाड़ सी चुनौतियों के बीच मेरा जन्म एक पूर्ण राज्य के रूप में हुआ। यह उस दिन की बात है जब आसमान से चांदी बरस रही थी मुझे बनाने की घोषणा भी ऐसी महिला प्रधानमंत्री ने की, जिसे देश ही नहीं दुनिया में भी अपने फैसलों के लिए जाना जाता था। जब चलना सीखा तो रास्ते नहीं थे, तरक्की के लिए कोई साधन नहीं था महज पहाड़ी होने के नाते हर हिमाचली में कुछ करने का जज्बा था। इसी के दम पर ऊंचाइयां हासिल करने का सफ़र शुरू किया।

छोटा राज्य होने के बावजूद चुनौतियों का पहाड़ पार किया लेकिन यहां के सियासतदानों को भी यकीन नहीं था कि 50 साल का होने पर मैं शिक्षा ही नहीं स्वास्थ्य के क्षेत्र में पहाड़ी ही नहीं बल्कि बड़े राज्यों के लिए आदर्श बनूंगा। हर गांव तक सड़क पहुंचाने का सपना तो मेरे लोगों की आंखों में था, लेकिन पूरा कैसे पढूंगा और कैसे बढूंगा, ये सोचना भी उस समय काफी कठिन था।

जब मैं बना तो मेरी साक्षरता दर 4.8 फीसद थी इसे 50 फीसद यानी आधे हिमाचल को पढ़ा लिखा बनाना भी चुनौती या समय के चक्र के साथ साक्षरता दर बढ़ती रही। बड़े राज्यों को शिक्षा के क्षेत्र में पछाड़ने के बाद आज 50 वर्ष का होने पर मैं साक्षरता दर में देश में दूसरे नंबर पर हूं। साक्षरता दर 82.80 फीसद से ज्यादा है, लेकिन मुझे पूरा पढ़ना है यानि साक्षरता दर को 100 फीसद पहुंचाना ही मेरा लक्ष्य है।

पहाड़ों को चीरते हुए नदियों के पानी दूसरे राज्य नहीं बल्कि देशों तक पहुंच जाता था। मेरे विकास में इसकी क्या भूमिका हो सकती है इस पर काफी मंथन के बाद बिजली प्रोजेक्ट लगाना शुरू किया है। देश का सबसे बड़ा बिजली प्रोजेक्ट नाथपा झाखड़ी एक समय हिमाचल में ही लगा था। 1500 मेगावाट क्षमता का प्रोजेक्ट आज भी देश के कई राज्यों को रोशन करता है। आज हिमाचल का हर गांव बिजली से जुड़ा है। समय के साथ पहाड़ी प्रदेश ने चुनौतियों को पार करने के लिए जब एक बार ठाना तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

यह हर पहाड़ी के जज्बे का ही कमाल है कि मेरे पास आज 38 हजार किलोमीटर सड़कों के दर पर ही विकास की बुनियाद रखी गई। कोई बच्चा जब दादा-दादी की अंगुली पकड़कर सड़क से गुजरता है तो इस बात का सुकून मिलता है कि मेरे गांव के भाग्य की रेखा बदल गई है। यह सही है कि विकास पढ़ाई के साथ आगे बढ़ेगा।

पूर्ण राज्यत्व का दर्जा मिलने के बाद मैंने कई क्षेत्रों में तरक्की की है, लेकिन मेरी चुनौतियां अब भी कम नहीं हुई है। 68 लाख की आबादी वाले पहाड़ी प्रदेश हिमाचल के सामने कर्ज से पार पाना बड़ी चुनौती बनी है। बेशक हर क्षेत्र में विकास की ब्यार बह रही हो लेकिन अपने खर्चों पर नियंत्रण करने के साथ ही आय के साधन बढ़ाने की जरूरत है।

तारुषी

कक्षा जमा एक, रोल. नं. 111, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला,
घन्यारा, धर्मशाला, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

इतिहास के पन्नों में हिमाचल

हिमाचल प्रदेश का इतिहास उतना ही प्राचीन है,जितना कि मानव अस्तित्व का अपना इतिहास है। हिमाचल प्रदेश का इतिहास हमें उस समय में ले जाता है जब सिन्धु घाटी सभ्यता विकसित हुई। सभ्यता के प्रमाण हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों में हुई खुदाई में प्राप्त सामग्रियों से मिलते हैं। प्रचीनकाल में इस प्रदेश के आदि निवासी दास, दस्यु और निषाद के नाम से जाने जाते थे। उन्नीसवीं शताब्दी में रणजीत सिंह ने इस क्षेत्र के अनेक भागों को अपने राज्य में मिला लिया। जब अंग्रेज यहां आए, तो उनहोंने गोरखा लोगों को पराजित करके कुछ राजाओं की रियासतों को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

हिमाचल प्रदेश को देव भूमि पुकारा जाता है। यहां के धार्मिक स्थल इसके गवाह हैं।

साधारणतया यह विश्वास किया जाता है कि इस प्रदेश के निवासियों ने समय-समय पर मध्य एशिया और भारतीय मैदानों पर निवास किया और वहीं से चलकर ये यहां पहुंचे। हिमाचल प्रदेश में प्रवेश करने वाली प्रथम, प्रजाति मंगोल और आर्यों द्वारा अनुसरित प्रोटो-ऑस्ट्रेलिसयन थे।

प्रदेश में रहने वाले दस्युओं और निषादों और उनके राजा शाम्वश जो 99 किले रखता था, के बारे में ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है।

समय ने भी हिमाचल प्रदेश में छोटे जनपद की स्थापना और गणतंत्र को देखा। उत्तरीय गंगेतिक मैदानों में गुप्तों की उन्नति के साथ उन्होंने अपनी स्वतंत्रता खो दी। गुप्तों के पतन के बाद, असंख्य छोटे राज्यों ने इस पहाड़ी राज्य पर शासन किया और इसके विभिन्न क्षेत्रों में अपनी शक्ति को स्थापित किया। कश्मीर के राजा शंकर वर्मा ने लगभग 883 ईसवी में हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों पर अपना प्रभाव जमाया।

यह प्रदेश 1009 ईसवी में महमूद गजनी के आक्रमण का साक्षी था। 1804 ईसा में महाराजा रणजीत सिंह, जिन्होंने यहां राजपूत शक्ति को नष्ट कर दिया। 1773 ईसवी में संसार चंद के अधीन राजपूतों ने इस प्रदेश को अपनाया।

लगभग पूर्व 19वीं शताब्दी ईसा में, ब्रिटिश ने अपने प्रभाव का प्रयोग किया और 1815-16 के गोरखा युद्ध के बाद शिमला के क्षेत्रों को अपने साम्राज्य में मिला दिया। अंग्रेजों ने गर्मियों में अत्यधिक गर्मी और उतरी मैदानों की धूल से स्वयं को बचाने के लिए इस प्रदेश में कई पहाड़ी स्टेशनों को स्थापित किया। शिमला भारत की गर्मी की राजधानी और आज भी कई पुराने घर और इमारतें अंग्रेजी शान की कहानी सुनाते हैं।

ईशा
कक्षा ग्यारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, घनियारा,
धर्मशाला, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

मेरा हिमाचल मेरी पहचान

हिमाचल प्रदेश भारत के उत्तर में स्थित बहुत सुंदर पहाड़ी राज्य है जिसकी राजधानी शिमला है। यह हिमालय के पहाड़ों से घिरा हुआ है और अपनी ठंडी जलवायु के लिए विश्व प्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश भारत की शान है। हिमाचल प्रदेश 25 जनवरी, 1971 को भारत के 18वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इससे पहले यह 1857 तक महाराणा रणजीत सिंह की देखरेख में पंजाब का एक हिस्सा था जिसपर बाद में अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया था, लेकिन आज़ादी के बाद 1950 में इसे केंद्र शासित राज्य घोषित किया गया। 1971 में इसे अलग राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। देश की आजादी के बाद हिमाचल प्रदेश एक पिछड़ा हुआ राज्य था। यहां पर परिवहन, आवास, जल, शिक्षा, रोजगार, कृषि आदि की व्यवस्था नहीं थी। लेकिन इन 50 सालों में हिमाचल प्रदेश ने बहुत प्रगति कर ली है। परिवहन के माध्यम भी विकसित हुए हैं तथा सड़कें भी चौड़ी हुई हैं। हिमाचल में बहुत सारे उच्च शिक्षण संस्थान हैं, बहुत से उद्योग स्थापित किए गए हैं। पहले हिमाचल में चिकित्सा की सुविधाएं नहीं थी लेकिन अब सारी सुविधाएं हैं। हिमाचल प्रदेश में बारहमासी नदियों रावी, चेनाव, सतलुज आदि हैं। हिमाचल इन नदियों से पनपी बिजली हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश को भी बेचता है जो कि इसकी आय का एक मुख्य स्रोत भी है। हिमाचल का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। यहां सेब खुमानी, आड़ू आदि की बागबानी भी आय का प्रमुख साधन है। आज का हिमाचल पूर्ण रूप से विकसित और आत्मनिर्भर है। बीते 50 वर्षों में हिमाचल ने हर क्षेत्र में उन्नति कर ली है। 'कोरोना महामारी' की विगत स्थिति में बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम में हिमाचल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिमाचल ने इन 50 वर्षों में अपनी मेहनत के दम पर विकसित राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाई है। हिमाचल का विकास अभी भी जारी है। इसका श्रेय यहां के ईमानदार सच्चे और मेहनती लोगों को जाता है। अंत में सभी को 25 जनवरी 'हिमाचल दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएं।

'जिम्मेदारी निभाने की अब बारी है
हिमाचल का विकास अभी भी जारी है...।"

गीतांजलि

कक्षा-11वीं, राजकीय वरिष्ठ माधयमिक विद्यालय, छम्यार
तहसील, बल्ह, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश-175 027

आखिरी पन्ना

तब और अब से कहीं दूर तलक एक अटल पहचान

कुमार भमौता

देश के स्वाधीन होने के केवल आठ महीने बाद यानी 15 अप्रैल, 1948 को हिमाचल अस्तित्व में आया। कुछ अधूरा था। खालीपन भी। ये भरपाई तब हुई, जब नवंबर, 1966 को अठारह साल उपरांत यह विशाल हिमाचल बना। और अगले पांच साल बाद ही इसको पूर्ण राज्यत्व का जामा 25 जनवरी, 1971 को मिल गया। वर्तमान में यह बारह जिलों का एक सुंदर भूखंड और भारतवर्ष के मुकुट का अठारहवां चमकता हुआ बेश कीमती रत्न है। और 25 जनवरी, 2021 आने तक यह अपने पूर्ण राज्यत्व के पचास वर्ष पूरे कर चुका है। यह सफर स्वर्णिम ही नहीं, गौरवपूर्ण भी है। हासिलों का हासिल है। यहां के कुशल, ईमानदार, दूरदर्शी नेतृत्व का बेहतरीन परिणाम है। निष्कपट परिश्रमी हिमाचल वासियों के परिश्रम और लगन का सुफल है। इस कम अवधि में हिमाचल ने बहुत कुछ हासिल किया है।

तब से अब तक के इस सफर पर गौर किया जाए, तो यह बात सुनिश्चित होती है कि हिमाचल आज एक आदर्श राज्य है। राज्यों की सूची में एक खास पहचान रखता है। एक अलग रुतबा भी है। इससे भी बढ़ कर यह बात जेहन में आती है कि काफी हद तक यह सुरक्षित प्रदेश है। यहां मन की शांति है। अध्यात्म के अनुकूल मौन स्थल हैं। बदलते मौसम की सुहानी खुशबू और रवानी भी।

इसके लिए तीन अक्तूबर, 2020 का दिन बहुत खास था जो एक ऐतिहासिक दिन बन गया। अटल सुरंग रोहतांग का आम आवाजाही के लिए खुल जाना। यह महज साढ़े नौ किलोमीटर लंबी सुरंग नहीं है। भविष्य में समय की बचत की एफडी भी है। भारत और हिमाचल के लिए बहुत पहले देखा गया किसी दिन की भोर का स्वप्न है, जिसे देश के तत्कालीन प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने देखा था। और इस दिन यह सपना हकीकत की दुनिया की जमीन पर अवतरित हुआ। रोहतांग दर्रा, जो पूर्व में सदियों तक अपने ऊंचे कद और बड़े आकार से भयभीत करता आया, आज सुरंग इसके सीने में से होकर आर-पार की संस्कृतियों की संवाहक बन गई है। छः से आठ महीनों तक रोहतांग के उस पार की दुनिया इस पार के जहान से कटी रहती थी। कैसा समय रहा होगा, कल्पना कीजिए, कैसे एक-एक दिन काटना भारी होता होगा। भारी बर्फ के बीच माइनस में जाता तापमान रूह तक को कंपाने के लिए काफी है। यह सुरंग सामरिक दृष्टि से भी भारत के लिए बड़ी भूमिका निभाने का एक महत्त्वपूर्ण जरिया बन गई है। सैलानियों के आकर्षण का बड़ा मकसद लिए यह सुरंग उनको लालायित करने लगी है।

शायद, यह सुरंग हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने के बाद दिली खुशी लेकर आई है। रोहतांग के आर-पार के लोग खुशी से नाचते-गाते नजर आए। इतनी ही खुशी का दिन, तब भी था, जब 25 जनवरी, 1971 को हिमाचल को पूर्ण राज्य का रुतबा मिला था। हिमपात के बीच लोगबाग झूमते गाते रहे। तब के मुख्य मंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार भी खुद को रोक नहीं पाए थे और लोगों की खुशी में शामिल होते हुए, नाटी लगाने लगे। यही नहीं, ये वर्तमान हिमाचल सरकार की स्वप्न परियोजना, पसंदीदा गंतव्य हिमाचल की सोच 'नई राहें नई मंजिलें' की ओर पर्यटकों, आगंतुकों को ले जाने का पुख्ता प्रमाण सिद्ध होगी। नई सैरगाहों, भीतरी क्षेत्रों तक यहां घूमने आने वालों के लिए खास सौगात से बिलकुल भी कमतर न होगी। इसी प्रकार, होम स्टे योजना भी एक बेहतर विकल्प सैलानियों को मुहैया करवाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने-ठहरने के लिए घर-जैसा माहौल मिलता है, उनके लिए, जो परिवार संग ग्रामीण परिवेश में रहने को लेकर वहां आते हैं। और कुछ दिन रुक कर अपने घर वापिस जाना चाहते हैं।

चेहरों पर मुस्कान है तो अभावों की खिंची लकीरें भी मिलीं। एक लंबा संघर्ष था। एक लंबी लड़ाई लड़ी गई अभावों, दुश्वारियों, लाचारियों के खिलाफ। एक विशाल और खूबसूरत हिमाचल सामने आया। तब मालूम हुआ हिमाचल की संस्कृति के अनेक रूप और रंग हैं जो इसकी विविधता की खासियतों के अर्थ बताते

हैं। बारह जिलों में सिमटे इस प्रदेश के सभी जिलों में संस्कृति अपने अलग रूप में निखर कर देखने-समझने वालों के सामने उद्घाटित होती दिखती है। खान-पान, रहन-सहन, पहरावा जुदा दिखता है मगर दिलों में अपनापन और एकता के सूत्र में अदृश्य रूप में विद्यमान होकर झलकती है। अगर कोई बाहरी व्यक्ति एक मंच पर इसकी विविधता को देख ले, तो दंग रह जाए। दांतों तले उंगलियां दबाता रह जाए। कह उठे, वाह! मजा आ गया। वक्त ने इसमें अपने नए रंग भी भरे हैं। अपने हिमाचल की समृद्ध लोक संस्कृति को देखते हुए किसी के ये शब्द बार-बार कानों में गूंजते हैं :--

'मनुष्य नहीं इन घरों में लोक गीत रहते हैं।
हंस कर मिलते हैं मिल कर हंसते हैं॥'

विकास एक सतत और लंबी प्रक्रिया है। समय की मांग करता है। मानव इतिहास इसका साक्षी है। हिमाचल के शुरुआती समय में रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरतें पूरा करना बड़ा मुद्दा रहा। उन दिनों कई अभावों के साथ-साथ स्वास्थ्य की देखभाल की ज्यादा चिंता थी। ढांचागत व्यवस्थाएं कम थीं। सड़कें भी लंबाई में कम थीं। साथ ही कच्ची भी थीं। प्रदेश में आय के साधन नाममात्र को थे। समय के साथ सब बदलता गया। विकसित हो गया। जो भी नेतृत्व यहां रहा, वह पूरी निष्ठा, ईमानदारी से इन कमियों और अभावों को मिटाने के लिए संकल्पबद्ध रहा। एक सुविकसित हिमाचल निर्माण में सर्वश्रेष्ठ कर दिखाया। सबकी मेहनत का यह परिणाम है, जहां आज हम हिमाचल को देखते हैं।

ये वादियां ये फिजाएं बुला रही हैं तुम्हें।
खामोशियों की सदाएं बुला रही हैं तुम्हें॥

पहले-पहल पर्यटन के नाम पर शिमला, मनाली, धर्मशाला, कसौली, खज्जियार आदि उंगलियों पर गिने जाने लायक पर्यटक स्थल थे लेकिन अब हिमाचल मात्र घूमने-फिरने, सैरपाटे की जगह ही नहीं रही है, बल्कि साहसिक पर्यटन का आनंद भी यहां लिया जा सकता है। पैराग्लाइडिंग के लिए बीड़ बीलिंग, बर्फ के खेल के लिए मनाली; जलक्रीड़ा के लिए पौंग बांध, गोबिंद सागर, कोल डैम जैसी मानव निर्मित झीलें विकसित की गई हैं। ये सब पचास सालों के दौरान पिछले कुछ सालों में ही संभव हुआ है। कुदरत द्वारा बख्शी गई प्राकृतिक झीलें मणिमहेश, डल्, रिवालसर, पराशर, कामरूनाग, चंद्रताल, रेणुकाजी आदि बहुत पहले से धार्मिक आस्था से जुड़ी मान्यताओं के साथ अपने शांत, निर्मल होने का परिचय देती हैं तो इस पावन धरा पर बहती नदियां इतनी ऊर्जा से भरी हुई हैं कि हिमाचल को सरप्लस ऊर्जा राज्य के रूप में अलग से पहचान दिला रही हैं। यहां उत्पादित बिजली यहां की जरूरतों को पूरा करते हुए, इसकी अन्य राज्यों को भी आपूर्ति करवाई जा रही है जिससे प्रदेश को आर्थिक संबलता मिल रही है।

पिछले पच्चीस-तीस सालों से सेब यहां की आर्थिकी को मजबूत आधार देता आया है। इसके साथ-साथ पारंपरिक खेती के अलावा नकदी-मौसमी फसलें, प्रदेशवासियों को स्वावलंबी बनाने के साथ-साथ औरों के लिए भी इनसे रोजगार के अवसर पैदा होने लगे हैं। सड़क निर्माण से अब पर्यटकों की भीतर के क्षेत्रों तक पहुंच आसान हुई है जिसके कारण वे इन क्षेत्रों के सौंदर्य का भी दीदार कर सकते हैं। सड़कें विकास की धुरी हैं। विकास का पहिया इनके इर्दगिर्द घूमता है। इन पचास वर्षों में हम थोड़ा अतीत की ओर नजर डालते हैं, तब मालूम होता है कि सड़क निर्माण ने प्रदेश के चहुंमुखी विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है। उन्नति और प्रगति को रफ्तार देने का काम किया है। गांव-गांव और हर इक कोने तक सड़क पर गाड़ी आती जाती दिख जाती है। इसके साथ ही इनके बनने से गांव और शहर में आवागमन आसान हुआ है। विद्यार्थियों को स्कूल, कॉलेज तक शिक्षा ग्रहण करना भी आसानी से सुलभ हुआ है। खास तौर से बच्चियां, जो बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़ देती थीं, अब पढ़-लिख कर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रही हैं। किसान-बागबान अपनी फसल और उपज को मंडियों तक पहुंचाने में कामयाब हो रहे हैं। हर जगह निर्माण कार्य भी आसान हुआ है। गांवों की तकदीर बदलने से वहां की तसवीर भी बदली है। सड़कों के बन जाने से स्वास्थ्य सुधार भी हुआ है। 108 एंबुलेंस सुविधा ने तो कमाल कर दिखाया है। कितने ही बीमार व्यक्तियों को उपचार समय पर मिलने से उनकी जान बचाने में मदद मिली है। घायलों को तुरंत फर्स्ट एड मिलने और अस्पताल तक ले जाने में सहायता और सुविधा है। इसी प्रकार 102 एंबुलेंस सेवा ने जच्चा-बच्चा को राहत दी है। ये दोनों ही सेवाएं सरकार द्वारा निःशुल्क उपलब्ध करवाई जा रही हैं। प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना ने सड़क निर्माण के अति महत् कार्य को अंजाम तक पहुंचाया है। गांव को खुशहाल बनाने में मनरेगा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। खासकर, स्थानीय ग्रामीण महिलाओं को घर के नजदीक ही रोजगार मिलने से, वे घर के कामों के साथ-साथ अपनी आजीविका

को बेहतर बना रही हैं। निस्संदेह, इससे उनका और उनके परिवार का जीवन स्तर भी बेहतर हुआ है। बीस-पच्चीस वर्ष पीछे लौटते हैं, जब कंप्यूटर का आना हुआ। इससे सारे काम-काज करने का तरीका ही बदल गया। टाइपराइटर बीते जमाने की बात हो गए। इंटरनेट के आने से अब ऑनलाईन पढ़ाई, बैंकिंग, अन्य सरकारी काम-काज होने लगा है। धीरे-धीरे लैंडलाईन की दुनिया भी बदल गई। हिमाचल विधान सभा की सारी कार्यवाही पेपरलैस प्रणाली पर आधारित हो गई है। यह एक बहुत बड़ा बदलाव है जिसने हमारे रहन-सहन, सोचने-समझने की शक्ति को भी प्रभावित किया है। यह अचंभे वाली बात नहीं होगी, अगर आने वाले कुछ समय में सब कुछ बिना कागज के ऑनलाईन सिस्टम आधारित हो जाए। इन सालों की अवधि ने हमारी रसोई को भी प्रभावित किया है। लकड़ी के चूल्हे भी शहरी क्षेत्रों में बीते दिनों की यादें भर रह गए हैं। गैस ने रसोई में अपना स्थायी ठिकाना बना लिया है। सर्दियों में शिमला जैसे ठंडे इलाकों में कोयले की अंगीठियां जला करती थीं। वे ही धीरे-धीरे बुझती चली गईं। लगभग पूरा हिमाचल अब धुआंरहित हो चुका है। कार्यालय, अस्पताल केंद्रीय तापन संयंत्रों से लैस होने लगे हैं। सरकार के ई-गवर्नेंस सेवा से बहुत से काम करवाने में सुविधा हुई है। आसानी से कई प्रमाण-पत्र ऑनलाईन जारी हो जाते हैं।

'आयुष्मान भारत' और 'हिमकेयर' स्वास्थ्य योजनाएं तो संजीवनी से कम नहीं हैं। गरीब और जरूरतमंद, जो कभी अपना उपचार करवाने की कल्पना तक नहीं कर सकते थे, अब इन योजनाओं से पांच लाख रुपये तक का इलाज बिना किसी दिक्कत से कहीं भी सरकार द्वारा सूचीबद्ध अस्पतालों में करवा सकते हैं। ऐसी सुविधा सरकार द्वारा सरकारी कर्मचारियों व उनके परिवारों को भी उपलब्ध करवाई जानी चाहिए जिससे कई तरह की कागजी कार्रवाई के साथ-साथ समय भी बचेगा।

वन धरती का शृंगार हैं। शुद्ध वातावरण के प्रहरी भी हैं। वनों से वायु है तो वायु से आयु भी है। वातावरण की शुद्धता इनकी निर्भरता से जुड़ी हुई है। इसलिए इनकी रक्षा से हमारी सुरक्षा जुड़ी हुई है। हिमाचल में ये शृंगार साधन हिमाचल की वन संपदा भी हैं। वनों के विस्तार के लिए हिमाचल में बरसों से वन महोत्सव जैसे अभियान हर वर्ष बड़े स्तर पर चलाए जाते हैं। जिसमें विद्यार्थियों से लेकर कई निजी और गैर सरकारी संगठन पौधरोपण और इनके संरक्षण के लिए अपना बहुमूल्य योगदान देते आए हैं। इससे पूर्व, इनके कटान पर प्रतिबंध भी लगाया गया था। तब से सेब और अन्य फलों और सब्जियों की पैकिंग गत्ते की पेटियों और प्लास्टिक के क्रेटों में होती है।

जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण अंतिम पड़ाव पर गर चेहरे पर मुस्कान हो। उदासियों की विदाई हो जाए, तो कहना ही क्या! यह मुस्कान लेकर आई है हिमाचल सरकार की सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना। सरकार इनका अपनों सा खयाल रखती है। वरिष्ठ जन सामाजिक सुरक्षा के रूप में पेंशन प्रदान करती आ रही है जो उनको अपनी तरह से जीवन जीने का आधार देती है। इसी प्रकार कई अन्य पेंशन योजनाएं भी हैं जो गरीब और बेसहारा एवं एकल महिलाओं के लिए सहारा दे रही हैं।

इस बीच, कुल्लू दशहरा, मंडी शिवरात्रि, लवी और रेणुका जी, सुजानपुर होली को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली। अंतर्राष्ट्रीय शिमला समर फेस्टीवल की अलग और विशेष पहचान है। देवताओं के नजराने में वृद्धि हुई है। जब ऊपर उल्लेखित मेलों में देव समागम होता है, तो अनुपम नजारा और अद्‌भुत ही दृश्य देखने को मिलता है। मानो सारा देवलोक उन दिनों धरती पर उतर आता है। प्रजा और देव एक साथ धरती पर विचरण करते हैं। यही अनुभूति होती है कि स्वर्ग लोक यहीं है। जब विशाल हिमाचल अस्तित्व में आया, तो वहां की संस्कृति भी साथ आई और साथ आए मां चामुंडा देवी, मां वज्रेश्वरी धाम, मां ज्वालामुखी, मां चिंतपूर्णी, मां नैना देवी आदि अनेक शक्तिपीठ। इनके साथ इन पवित्र स्थानों में आस्था रखने वाले देश के अन्य भागों से भी श्रद्धालुओं का आना-जाना। मंडी को छोटी काशी कहा जाता है जबकि मां भीमाकाली सराहन, मां बाला सुंदरी देवी के आस्था स्थल पहले से ही थे। समय में बदलाव के साथ इस प्रकार हिमाचल देवभूमि कहलाने लगा। कालांतर में इन शक्तिपीठों का सरकार द्वारा अधिग्रहण कर लेने पर, श्रद्धालुओं द्वारा दिए गए दान से गरीब बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का खर्चा, आसपास के इलाकों का विकास भी होने लगा। निर्धन बच्चियों की शादी-ब्याह भी करवाए जाने लगे। मंदिरों की देखरेख के लिए कर्मचारियों की तैनाती की गई।

पूर्ण राज्यत्व की 50 सालों की अवधि में एक और विकास की रूपरेखा देखने को मिलती है- महिलाओं का सरकारी सेवाओं में आना। और अब यह महिला जगत सरकारी सेवा में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। दूसरी ओर इनका लोकतंत्र की सबसे निचली पायदान पंचायतों से लेकर सबसे ऊपरली पायदान राज्यसभा तक की भागीदारी का सफर भी शुरू हुआ। जब नल घर आंगन तक आ पहुंचा, तो बावड़ियों, कुओं, प्राकृतिक जलस्रोतों, तालाबों से हमारा नाता टूटता गया। मगर पाइप से रसोई तक पहुंचे पानी से गृहिणियों के समय की बचत होने लगी। वे इस समय की बचत से दूसरे काम करने लगी हैं। प्रदेश की काया पलटने में उद्योग भी अपना योगदान दे रहे हैं। पूर्व में रोजगार का एकमात्र साधन सरकारी नौकरी तक सीमित था। लेकिन जब उद्योग जगत ने मैदानों को छोड़कर हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य में अपने कदम रखे, तो रोजगार के अनेक द्वार खुले। शहरों के अलावा गांव-गांव तक में बाहरी लोग काम-धंधे की तलाश में आ पहुंचे तो किराए पर अपने मकान देने से यहां के बाशिंदों की आय का एक और स्रोत खुल गया।

बड़े गर्व से सुनते आए कि हिमाचल के बेटे फौज में जाते हैं और देश की सेवा में तत्पर रहते हैं। 1965 और 1971 की लड़ाइयों में उन्होंने खूब बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया था। उससे पूर्व, स्वतंत्रता संग्राम में यहां के वीरों ने अपनी गौरव-गाथा लिखी। कारगिल युद्ध के दौरान हमारे वीर सपूतों ने अपनी जान की बाजी लगाकर देश की सरहदों की रक्षा की। उनकी बहादुरी की दास्तानें अखबारों, रेडियो, टीवी आदि पर पढ़ी-सुनी-देखी। उनके जज्बे को सलाम। इनकी ऐसी गौरव-गाथाओं के लिए अनेक जांबाज सपूतों को परमवीर चक्र तक से भी नवाजा जा चुका है। सच में हिमाचल वीरभूमि भी है, इसमें कतई संदेह की गुंजाइश ही नहीं है।

यह अवधि साहित्यिक गतिविधियों के लिए भी खास रही। हिमाचल की लोक संस्कृति के संवाहक सूचना एवं जन संपर्क विभाग के प्रकाशन हिमप्रस्थ और गिरिराज हैं। संयोग देखिए, हिमाचल के अस्तित्व के सात साल बाद, अप्रैल, 1955 में हिमप्रस्थ प्रकाशन में आया। तब से यह निरंतर हिमाचल की समृद्ध संस्कृति को लोगों, पाठकों तक उन्हीं की भाषा में पहुंचा रहा है। यह प्रदेश से बाहर भी इसका प्रसार-प्रचार करता है। नवांकुर, नव हस्ताक्षरों, नई कलमों को लेखन के लिए मंच प्रदान करता आ रहा है। जबकि गिरिराज हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने के सात साल बाद ही 2 अक्तूबर, 1978 से प्रकाशित हो रहा है। यह साप्ताहिक सरकार की लोकप्रिय, जनहित वाली नीतियों, उपलब्धियों और कार्यक्रमों को जन जन तक ले जाकर सरकार और जनता के बीच सेतु की भूमिका में है। हिमप्रस्थ ने कई उपयोगी एवं जानकारी पूर्ण विशेषांक निकाले हैं। दोनों प्रकाशनों को अब वक्त के साथ चलते हुए अपने को नए कंटेंट के साथ बहुरंगी स्वरूप में ले आना बेहतर रहेगा। इसी प्रकार कला एवं संस्कृति अकादमी और भाषा विभाग भी अपनी ऐसी भूमिकाओं को बखूबी निभा रहे हैं। इस दौरान दिव्य हिमाचल, पंजाब केसरी, दैनिक जागरण, आपका फैसला, हिमाचल दस्तक जैसे दैनिक समाचार पत्र भी हिमाचल की भूमि से भी अपने संस्करण निकाल रहे हैं। कई अन्य साप्ताहिक भी प्रकाश में आए। इस पचास सालों की यात्रा में आकाशवाणी की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण रही है। कई लोकप्रिय और गांव-देहात, जिलावार और लोकगीत आधारित कार्यक्रम लाजवाब रहे हैं। आज भी चाव से सुने जाते हैं। दूरदर्शन भी इस अवधि के बीच यहां आया और यहां के बारे बखूबी दुनिया को यहां की संस्कृति को सामने ला रहा है।

हमें इन पचास सालों में, पहली बार पिछले साल 2020 में एक अति गंभीर महामारी से दो-चार होना पड़ा। पूरी दुनिया इसकी चपेट में आ गई। दहशत के साए मौत बनकर हर वक्त मंडराते रहे। वर्तमान भारत सरकार और प्रदेश सरकार ने लोगों का हौसला डिगने नहीं दिया। समय-समय पर दिशा-निर्देश जारी किए। ऐहतियाती और आवश्यक कदम उठा कर इससे निपटने के लिए व्यापक प्रबंध किए। इस कोरोना नाम की नामुराद बीमारी ने दुनिया का पूरा साल ही बर्बाद कर रख दिया जिसकी भरपाई को काफी वक्त लग जाएगा फिर भी नए साल के पहले महीने में ही स्वदेशी वैक्सीन आ जाने से भय के माहौल से मुक्ति मिली है। और उम्मीदें फिर से जवां होने लगी हैं कि शीघ्र ही सब सामान्य होकर दुनिया, देश-प्रदेश की सभी गतिविधियां पटरी पर लौट आएंगी और जिंदगी की गाड़ी दौड़ने लगेगी। व्हाट्स ऐप पर दोस्त द्वारा भेजा गया यह संदेश अच्छा लगा। आप सबके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की शुभकामनाओं के साथ यह संदेश आप सबके लिए :--

ख्वाहिशें आप सभी की बस इतनी मुकम्मल हों।
हंसता हुआ सबका आज और कल भी हो ॥

हिम जिसका आंचल है। मणिमहेश, श्रीखंड, किन्नर कैलाश और चूड़ेश्वर महादेव का वरद् हस्त जिसके सिर पर सदैव रहा है, वह हिमाचल, हिमाचल है, कहीं दूसरा और नहीं। यह तब और अब से कहीं दूर तलक अपनी अलग पहचान की अटल इबारत लिख रहा है। आने वाले 2071 के 25 जनवरी तक की एक और स्वर्णिम यात्रा के लिए शुभकामनाएं। तब पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति को एक शताब्दी हो जाएगी। उस समय तक दुनिया में बहुत कुछ बदल जाएगा। भारत और हिमाचल और भी मजबूत होकर विश्व में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका में हों, ऐसी आकांक्षा आज से है। भारतवर्ष और हिमाचल की पहचान अमर रहे।

द्वारा भारद्वाज भवन, रामनगर, शिमला-171 004,
मो. 098162 85095

ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 64-65 मार्च-अप्रैल-मई 2021 अंक : 11/12/1

प्रधान सम्पादक
हरबंस सिंह ब्रसकोन

वरिष्ठ सम्पादक
वेद प्रकाश

सम्पादक
नर्बदा कंवर

सहायक सम्पादक
रीना नेगी

उप सम्पादक
विवेक शर्मा

कम्पोजिंग एवं पृष्ठ सज्जा : **अश्वनी**

सम्पादकीय कार्यालय : हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tell: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in/himprastha.asp

ज्ञान सागर

धैर्य और साहस से किसी भी विपत्ति का प्रतिकार किया जा सकता है।

- अज्ञात

भाषाओं का अनुवाद हो सकता है लेकिन भावनाओं का नहीं।

- अज्ञात

जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

- अज्ञात

इस अंक में

☞ हिमाचल दिवस पर मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर का आलेख — 5

इतिहास

☞ हिमाचल गठन की गाथा — डॉ. सत्या चौहान — 8
☞ प्रजामंडल आंदोलन — रमेश कुमार भाटिया — 11
☞ हिमाचल के नामकरण की कहानी — योगेश शर्मा — 14
☞ डॉ. परमार का सिरमौर : तब और अब — सिम्पल सकलानी — 15

विकास

☞ विकास के नए सोपान तय करता हिमाचल — वेद प्रकाश — 17

ऊर्जा

☞ विद्युत क्षमताओं के समुचित दोहन से बना देश का ऊर्जा राज्य — नर्बदा कंवर — 20
☞ भूरि सिंह जलविद्युत परियोजना का अनूठा इतिहास — नरेंद्र कुमार शर्मा — 22
☞ सौर ऊर्जा से जगमगाता हिमाचल — पन्ना लाल शर्मा — 23

साहसिक एवं धार्मिक पर्यटन

☞ अलौकिक सौंदर्य की पावन धरा — रीना नेगी — 25
☞ पैराग्लाइडिंग के रोमांच से पर्यटन को पंख — अजय पाराशर — 28
☞ हिमाचल में पहली बार स्नो फेस्टिवल विश्व पटल पर उकेरी लाहुली संस्कृति की झलक/ सैलानियों के आकर्षण का नया केंद्र — अजय बन्याल — 31, 34
☞ छोटी काशी का भव्य शिवधाम — सचिन संगर — 37
☞ धरती को सुंदर बनाने चला स्वच्छता का गुमनाम सिपाही — कुल राजीव पंत — 39
☞ उत्तरी भारत की अंजता : 'रॉक कट टेम्पल' मसरूर/ बाथू की लड़ी — सुरेश कौंडल — 40, 43

कृषि-बागबानी

☞ सरकार के सद्प्रयासों से किसानों की आय होगी दोगुनी — दिनेश कुमार — 46
☞ पेटेंट हुआ 'प्रेम' का परिश्रम — योग राज शर्मा — 49
☞ मिट्टी की सौंधी खुशबू — शीतल शर्मा — 52
☞ नकदी फसलों का सिरमौर — हेमंत नेगी — 53
☞ घुमारवीं की फिजा में चाय की खुशबू — रत्न चंद निर्झर — 56
☞ मशरूम उत्पादन में लिखी नई इबारत — योगेश — 58
☞ औषधीय मशरूम कॉर्डिसेप्स — अरुण डोगरा 'रीतू' — 61
☞ नल से हर घर पहुंचा स्वच्छ जल — अदिति चौहान — 63

औद्योगिक विकास

☞ **देश का उभरता औद्योगिक हब** चंद्रशेखर वर्मा 64
☞ **महिला उद्यमी ने दिखाई स्वरोजगार की राह** बलबीर भारद्वाज 67
☞ **युवाओं की रोल मॉडल जनजातीय उद्यमी महिलाएं** नरेंद्र शर्मा 69

परिवहन/शिक्षा/स्वास्थ्य/समाज कल्याण

☞ **यातायात सुविधाओं का बदलता स्वरूप** मोहित शर्मा 71
☞ **हिमाचल में उदीप्त शिक्षा की अखंड ज्योति** विवेक शर्मा 74
☞ **स्वस्थ हिमाचल निरोग समाज** लुभित सिंह 76
☞ **लोक कल्याण की धारा** सतपाल 78

विविध

☞ **भारतीय संस्कृति में बौद्ध कला** डॉ. तुलसी रमण 80
☞ **पहाड़ी संस्कृति के रंगोत्सव** डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित' 85
☞ 1857 **का शिमला,** अनु : रतन चंद रत्नेश 92

हमारे साहित्यकार

☞ **मानवीय संवेदनाओं का शब्द शिल्पी : सुदर्शन वशिष्ठ** डॉ. सुशील कुमार फुल्ल 108

लेख

☞ **हमारी प्राचीन नारी विषयक मान्यताएं** ओम प्रकाश शर्मा 102
☞ **स्नेह व शौर्य की परिचायक नारी** श्रुति नेगी 106
☞ **ग्राम्य जीवन और मैला आंचल** आकृति चंद्रा 114
☞ **हरनोट की कहानियों में व्यक्त श्रमिक स्त्री-जीवन** चैताली सिन्हा 119
☞ **आदिकवि महर्षि वाल्मीकि** डॉ. कौशल्या देवी 125

कविता/ग़ज़ल/अन्य

☞ **रंग व गीत** ललिता कश्यप 105
☞ **काव्य वर्षा की कविताएं** 107
☞ **बचपन की मेरी सुंदर दुनिया** कुलदीप कुमार अबोध 124
☞ **माह के कवि/ अमरजीत कौंके की कविताएं** 127
☞ **नवीन हलदूणवी के नवगीत** 148
☞ **डॉ. घमंडी लाल अग्रवाल की ग़ज़लें** 149
☞ **अंकुर** जय नारायण कश्यप 149
☞ **डॉ. आर. वासुदेव प्रशांत की कविताएं** 150
☞ **डॉ. अनीता शर्मा की कविताएं** 151
☞ **ज़िंदगी का किताब होना** स्वाति शर्मा 151
☞ **अनंत आलोक की ग़ज़लें** 152
☞ **द्रौपदी** संतोष गर्ग 152
☞ **सूर्यास्त** अंकुश शर्मा 153

अंक रेखांकन : सिद्धेश्वर

☞ **संगीता की क्षणिकाएं** 154
☞ **फूल और रूपसियां** डॉ. प्रत्यूष गुलेरी 155
☞ **अभिमन्यु राणा की कविताएं** 155
☞ **ठोर-ठिकाना** गोपाल शर्मा 159
☞ **कशमकश** राजेंद्र कुमारी 166

कहानी

☞ **पांच साल बड़ी पत्नी** ब्रह्म दत्त शर्मा 131
☞ **जादुई जंत्र** लेख राज चौहान 136
☞ **दरार** डॉ. अरविंद ठाकुर 143
☞ **एक उचक्के का रोमांच** अनुवाद : सुशांत सुप्रिय 145

व्यंग्य

☞ **हम लड़की वाले हैं** गिरीश पंकज 156

समालोचना/समीक्षा

☞ **दो काव्य संग्रहों की समीक्षा** रमेश चंद्र शर्मा 158
☞ **सामाजिक सरोकारों से ओतप्रोत कहानियां** हंसराज भारती 160
☞ **अंतिम राय का सच** डॉ. राहुल मिश्र 162
☞ **छोटी कहानियों का बड़ा संसार** राजेंद्र राजन 165

आखिरी पन्ना

☞ **ज़िंदगी की रिले रेस का अंतिम पड़ाव** अश्वनी कुमार 167

हिमाचल प्रदेश के इतिहास में पन्द्रह अप्रैल का दिन एक अविस्मरणीय दिन है। इसी दिन स्वाधीनता प्राप्ति के आठ माह बाद 15 अप्रैल, 1948 को इस पर्वतीय क्षेत्र की छोटी-बड़ी 30 रियासतों के विलय के परिणामस्वरूप हिमाचल प्रदेश अस्तित्व में आया। इस अवसर के मायने हिमाचल दिवस मनाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके साथ लोगों की भावनाएं, इच्छाएं और आकांक्षाओं को पूर्ण करने की प्रयत्नशीलता भी जुड़ी है। यह दिन हमें अपने वजूद का नये सिरे से अहसास करवाकर भविष्य को उन्नत और गौरवमय बनाने के संकल्प की याद दिलाता है। हिमाचल दिवस के इस ऐतिहासिक पल को हासिल करने में असंख्य प्रदेशवासियों ने एक लम्बा संघर्ष किया। उस समय इस प्रदेश की विकासात्मक स्थिति कैसी रही होगी, आज इसकी कल्पना करना भी कठिन है। हिमाचल भी अन्य पहाड़ी राज्यों की तरह गरीबी, पिछड़ेपन से जूझने के साथ-साथ आधारभूत संरचना तैयार करने की चुनौतियों का सामना कर रहा था। परन्तु यहां के भोले-भाले प्रदेशवासियों के पास धैर्य, ईमानदारी, कड़ी मेहनत और विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर के रूप में ऐसी शक्ति विद्यमान थी जिसके बलबूते आज यह प्रदेश पहाड़ी क्षेत्रों के विकास का आदर्श बनकर उभरा है। इसका श्रेय हिमाचल निर्माता तथा प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार को जाता है, जिन्होंने राज्य के शैशव काल में प्रदेश में विकास की ठोस नींव रखी। प्रदेश ने अपनी यात्रा लगभग नगण्य से शुरू की। 1971 में प्रदेश जब पूर्ण राज्य बना तो उस समय प्रदेश में केवल 10,617 कि.मी. लंबी सड़कें थीं और प्रदेश की साक्षरता दर 31.96 प्रतिशत थी। आज प्रदेश में सड़कों की लंबाई 38470 कि.मी. हो चुकी है और प्रदेश की 99 प्रतिशत पंचायतें सड़क से जुड़ चुकी हैं। प्रदेश की साक्षरता दर 82.80 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। विकास की इस यात्रा में वर्तमान प्रदेश सरकार के तीन वर्षों का कार्यकाल विशेष महत्त्व रखता है। इस दौरान सरकार ने नई योजनाएं शुरू की जिससे प्रदेश का समग्र व सन्तुलित विकास सुनिश्चित हुआ है। वर्तमान सरकार ने सत्ता संभालते ही विकासात्मक प्रयासों को मानवीय रूप देते हुए सामाजिक सेवा क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की। वर्तमान प्रदेश सरकार ने प्रदेश की बागडोर सम्भालते ही वृद्धजनों की सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्राप्त करने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया, जिससे प्रदेश के लाखों वृद्धजन लाभान्वित हुए हैं। सरकार द्वारा महिला सशक्तीकरण की दिशा में भी कई अहम कदम उठाए गए हैं। वरिष्ठ महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा पेंशन का दायरा बढ़ाने के उद्देश्य से एक नई योजना 'स्वर्ण जयन्ती नारी सम्बल योजना' शुरू की है। योजना के अन्तर्गत 65-69 वर्ष आयु वर्ग की सभी पात्र वरिष्ठ महिलाओं को बिना किसी आय सीमा के एक हजार रुपये प्रतिमाह की दर से सामाजिक सुरक्षा पेंशन का प्रावधान किया है। इस योजना से साठ हजार महिलाएं लाभान्वित होंगी। ग्रामीण महिलाओं के जीवन में सुखद बदलाव लाने में 'हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना' कारगर साबित हुई है। इसके अतिरिक्त सरकार ने अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग की बी.पी.एल. परिवार की बेटियों को विवाह के समय 'शगुन' योजना के तहत 31 हजार रुपये का अनुदान प्रदान करने का निर्णय लिया है। वर्तमान प्रदेश सरकार जन सेवा और जन-कल्याण के मूलमंत्र को समक्ष रखकर कार्य कर रही है। जनता से सीधा संवाद स्थापित कर जन शिकायतों का त्वरित निवारण करने में जनमंच सार्थक सिद्ध हुआ है। इसी प्रकार मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाइन-1100 पर भी जन शिकायतों का निवारण किया जा रहा है। लोगों को बेहतर व निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए 'आयुष्मान', 'हिमकेयर' व 'सहारा' जैसी महत्त्वाकांक्षी योजनाएं प्रदेश में चलाई जा रही है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि-बागबानी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। किसानों की आय को दोगुना करने के लिए राज्य में शून्य लागत खेती को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्राकृतिक खेती, खुशहाल किसान योजना, मुख्यमंत्री नूतन पॉलीहाऊस तथा एंटी-हेलनेट जैसी योजनाएं विशेष रूप से आरम्भ की गई है। राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कार्यान्वित की जा रही 'नई राहें-नई मंजिलें योजना' के तहत चांशल घाटी को स्कीइंग, जंजैहली को ईको-टूरिज्म, बीड़-विलिंग को पैराग्लाइडिंग तथा लारजी व पौंग डैम को वाटर स्पोर्ट्स के लिए विकसित किया जा रहा है। यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो आज यहां विकास के मायने पूरी तरह से बदल चुके हैं। सरकारी प्रयासों से लोगों के जीवन में खुशहाली आई है। प्रस्तुत अंक में वर्तमान प्रदेश सरकार के कार्यकाल में हुए विकास और यहां की समृद्ध संस्कृति पर केंद्रित विशेष सामग्री जुटाई गई है। हमारे इस प्रयास में लेखकीय सहयोगियों के योगदान का हम तहेदिल से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने सूचनाप्रद सामग्री उपलब्ध करवाकर इस अंक को रुचिकर बनाने में मदद की। आशा करते हैं पाठकों को भी हमारा यह उद्यम पसंद आएगा। आपके मूल्यवान सुझावों व प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

संपादक

आओ ! मिलकर कोरोना को हराएं

प्रदेशवासियो, आज पूरी दुनिया कोरोना महामारी के संक्रमण से जूझ रही है। हमारे देश में इसके संक्रमण की दूसरी लहर चरम पर है और हिमाचल भी इससे अछूता नहीं है। इसके संक्रमण की रोकथाम के लिए देश भर में 16 जनवरी 2021 से आरंभ कोविड टीकाकरण अभियान हिमाचल में भी युद्ध स्तर पर चल रहा है। राज्य में अब तक लगभग 22 लाख लोगों का टीकाकरण हो चुका है जो हमारी कुल आबादी का 31 प्रतिशत से अधिक है। टीकाकरण में हिमाचल देशभर में पहले स्थान पर है। 18 से 44 वर्ष आयु वर्ग के प्रदेशवासियों के लिए टीकाकरण अभियान आरंभ किया गया है। आप सभी से मेरा आग्रह है कि इस अभियान में अधिक से अधिक संख्या में पात्र लोग टीकाकरण करवाकर जागरूक नागरिक का फर्ज अदा करें। क्योंकि कोरोना से बचाव के लिए अभी तक एहतियात के अलावा टीकाकरण ही एक मात्र उपाय है जो हमें इसके संक्रमण से बचा सकता है। प्रदेश में कोरोना संक्रमण के हर रोज बढ़ते मामले हमारे लिए गंभीर चिंता का विषय है जिससे निपटने के लिए सरकार पूरी ताकत के साथ दिन रात जुटी हुई है। सरकार ने पूरे राज्य में 7 मई, 2021 से कोरोना कर्फ्यू लगाया है ताकि कोरोना की चेन को तोड़ा जा सके। हालांकि इसमें आप सब पूरा सहयोग दे रहे हैं लेकिन यह भी देखने में आ रहा है कि शादी-विवाह आदि समारोहों में पूरी एहतियात बरतने में अभी भी लोग गुरेज कर रहे हैं, जिसके कारण संक्रमण के मामलों में वृद्धि हो रही है। मेरी आप सब से अपील है कि हालात सामान्य होने तक ऐसे समारोहों को यथासंभव टालने का प्रयास करें। यदि बहुत अपरिहार्य हो तो निर्धारित संख्या से अधिक लोगों को आमंत्रित न करें। ऐसे आयोजनों में कोरोना बचाव के तय मानकों का पूरा पालन करते हुए चेहरे को मास्क से ढक कर उचित दूरी बनाए रखें और समय-समय पर हाथों को साबुन से धोएं या सेनेटाइज करते रहें। कोरोना का कोई भी लक्षण दिखने की स्थिति में तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य संस्थान में जाकर जांच करवाएं। ऐसा करने से आप अपने परिवार या आपके संपर्क में आने वाले अन्य किसी भी व्यक्ति को संक्रमित होने से बचा सकते हैं। अस्पतालों में कोविड मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इससे निपटने के लिए अस्पतालों में बिस्तर क्षमता को बढ़ाया जा रहा है। राज्य के मेकशिफ्ट अस्पतालों में 1100 बिस्तरों की बढ़ोतरी की जा रही है। सरकार ने अस्पतालों में कोविड मरीजों के लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति के लिए व्यापक प्रबंध किए है। प्रदेश के स्वास्थ्य संस्थानों में ऑक्सीजन की पर्याप्त आपूर्ति की जा रही है और जरूरत के हिसाब से ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित किए जा रहे हैं। अंत में एक बार फिर मैं प्रदेशवासियों से अपील करता हूं कि कोरोना कर्फ्यू का पालन करते हुए अपने-अपने घरों में सुरक्षित रहें। प्रदेश सरकार विशेषकर हमारे डाक्टर, नर्सें, पैरा मेडिकल स्टॉफ, सफाई कर्मचारी, पुलिस बल सहित अन्य कोरोना वारियर्स अपना जीवन जोखिम में डालकर दिन रात आपकी सेवा में कार्यरत है। सरकार के इन प्रयासों में सहयोग देकर अपनी जिम्मेवारी निभाएं।

कोरोना को हराने में इतना भर अपना योगदान दें
सरकार का सहयोग लें सरकार को सहयोग दें

जय राम ठाकुर, मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

74वें हिमाचल दिवस पर विशेष लेख

समग्र व सन्तुलित विकास के पथ पर अग्रसर हिमाचल

हिमाचल दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर का आलेख

पंद्रह अप्रैल हम सभी हिमाचलवासियों के लिए, एक ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय दिवस है। देश की आजादी के ठीक आठ माह बाद, सन् 1948 को, आज ही के दिन, हमारा यह खूबसूरत पहाड़ी प्रदेश, 30 छोटी-बड़ी पहाड़ी रियासतों को विलय कर केन्द्र शासित 'चीफ कमीशनरस प्रोविन्स' के रूप में अस्तित्व में आया। भारतीय सिविल सेवा के श्री एन.सी. मेहता को प्रदेश का प्रथम चीफ कमिश्नर और पैण्ड्रल मून को डिप्टी चीफ कमिश्नर नियुक्त किया गया।

शिमला हिल स्टेट्स की 26 रियासतों और ठकुराइयों को मिलाकर महासू जिला बनाया गया, जिसमें बाघल, बघाट, बलसन, रामपुर-बुशैहर, खनेटी, देलथ, बेजा, भज्जी, दरकोटी, धामी, जुब्बल, रावीं, ढाढी, क्योंथल, ठियोग, कोटी, घूण्ड, मधान, रतेश, कुम्हारसेन, कुनिहार, कुठाड़, मांगल, महलोग, शांगरी, थरोच रियासतें शामिल थी। मण्डी-सुकेत रियासतों का विलय कर मण्डी जिला बनाया गया। चम्बा व सिरमौर को अलग-अलग जिलों का दर्जा दिया गया। इन चारों जिलों में 23 तहसीलें बनाई गईं। प्रदेश का क्षेत्रफल 10,451 वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या 11.09 लाख थी। तत्पश्चात पहली जुलाई, 1954 को पार्ट 'सी' स्टेट बिलासपुर का हिमाचल में विलय किया गया। 1 नवम्बर, 1966 को पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल में मिलाया गया तथा प्रदेश का क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर हो गया। वर्तमान में भी यही क्षेत्रफल है तथा प्रदेश में 12 जिले व जनगणना 2011 के अनुसार प्रदेश की जनसंख्या 68.64 लाख हैं।

हिमाचल को एक अलग राज्य के रूप में स्थापित करने में तत्कालीन नेतृत्व के साथ-साथ प्रजामंडल आंदोलन के नायकों व आंदोलनकारियों और यहां की जागरूक जनता ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिमाचल प्रदेश के गौरवमयी इतिहास में धामी गोली कांड, सुकेत सत्याग्रह, पझौता आंदोलन का विशेष स्थान है। मैं इस अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को हिमाचल दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा प्रदेश व प्रदेशवासियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। मैं, 'हिमाचल दिवस' के अवसर पर हिमाचल निर्माता और प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार तथा उन सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस प्रदेश की अलग पहचान बनाने के लिए अपना योगदान दिया है। इस अवसर पर मैं, इस वीर भूमि के उन बहादुर सैनिकों को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है। मैं, इस प्रदेश के मेहनती, ईमानदार व शान्तिप्रिय लोगों का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके निरन्तर प्रयासों से हिमाचल प्रदेश ने देश-विदेश में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। यह हम सब जानते हैं कि इस प्रदेश ने, अस्तित्व में आने के उपरान्त लगभग शून्य से अपनी विकास यात्रा आरम्भ की थी। उस समय यहां साक्षरता दर मात्र 4.8 प्रतिशत थी। शैक्षणिक संस्थान केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित थे। स्वास्थ्य संस्थान केवल 88 ही थे। मात्र 288 किलोमीटर लम्बी सड़कें थीं, वह भी अधिकतर कच्ची। बिजली की सुविधा भी मात्र छः गांवों तक

सीमित थी। उस समय प्रति व्यक्ति आय भी 240 रुपये थी। वर्ष 1971 में जब यह प्रदेश एक पूर्ण राज्य बना, उस समय तक भी, यहां कोई विशेष विकास नहीं हो पाया था। वर्ष 1971 में प्रदेश में 10,617 किलोमीटर लम्बी सड़कें तथा साक्षरता दर 31.96 प्रतिशत थी। प्रदेश में 4,693 शैक्षणिक संस्थान तथा 587 स्वास्थ्य संस्थान थे। बिजली की सुविधा भी 3,249 गांवों में उपलब्ध थी। प्रति व्यक्ति आय भी मात्र 651 रुपये थी। आज हिमाचल की गिनती खुशहाल एवं प्रगतिशील राज्यों की श्रेणी में हो रही है। प्रदेश में सड़कों की लम्बाई बढ़कर 38,470 किलोमीटर हो चुकी है। 14,010 गांवों को सड़क सुविधा से जोड़ा जा चुका है। लगभग 99 प्रतिशत पंचायतें सड़कों से जुड़ चुकी हैं। शेष पंचायतों को शीघ्र सड़क से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। शिक्षण संस्थानों की संख्या भी बढ़कर 15,553 हो गई है तथा साक्षरता दर 82.80 पहुंच गई है। प्रदेश में 4,320 स्वास्थ्य संस्थानों का बड़ा नेटवर्क लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदान कर रहा है। आज प्रदेश के सभी गांवों में बिजली उपलब्ध है। यहां तक कि हिमाचल प्रदेश आज 'पावर सरप्लस राज्य' बन चुका है। प्रति व्यक्ति आय भी बढ़कर 1,90,407 रुपये हो गई है।

प्रदेश के गांवों-गांवों में सड़क सुविधा उपलब्ध करवाने में भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा आरम्भ महत्त्वाकांक्षी 'प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना' वरदान सिद्ध हुई है। अटल टनल, रोहतांग भी उनकी दूरदर्शी सोच की ही देन है, जिसका उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा तीन अक्तूबर, 2020 को किया गया। प्रदेश की इस विकास यात्रा में, वर्तमान प्रदेश सरकार के सेवाकाल के तीन वर्ष विशेष महत्त्व रखते हैं। सरकार ने अनेक नई योजनाएं आरम्भ की हैं जिनके परिणामस्वरूप प्रदेश ने विकास की नई बुलंदियां छुई हैं और प्रदेश का समग्र व सन्तुलित विकास सुनिश्चित हुआ है। हमारी सरकार यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मूलमंत्र 'सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास' को समक्ष रखकर कार्य कर रही है। प्रदेश को प्रगति के शिखर पर ले जाने के सपने को साकार करने में, प्रधानमंत्री जी का भरपूर सहयोग मिल रहा है, जिसके लिए मैं समस्त प्रदेशवासियों की ओर से उनका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

इन वर्षों में हमने अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर रखने के साथ-साथ आधुनिकीकरण को भी अपनाया है। हम 'डिजिटल इंटरफेस' तथा 'जवाबदेह प्रशासन' के माध्यम से, देश के दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सिद्धांत 'मिनीमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस' को कार्यान्वित कर रहे हैं।

27 दिसम्बर, 2017 को शपथ ग्रहण समारोह के उपरान्त पहले दिन ही प्रथम मंत्रिमण्डल की बैठक में वृद्धावस्था पेंशन पाने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया गया तथा कोई आय सीमा भी नहीं रखी गई। प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा पेंशन पर 642.58 करोड़ रुपये व्यय किए। प्रदेश सरकार द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन के 1,63,607 नए मामले स्वीकृत किए गए हैं। जनता से सीधा संवाद स्थापित करने तथा जन शिकायतों का त्वरित समाधान करने के लिए 3 जून, 2018 को आयोजित प्रथम जनमंच से अब तक सभी विधानसभा क्षेत्रों में 200 जनमंच आयोजित किए गए हैं, जिनमें 48,694 शिकायतें व मांगपत्र प्राप्त हुए। इन शिकायतों में से 91 प्रतिशत से भी अधिक शिकायतों का निपटारा किया जा चुका है। 16 सितम्बर, 2019 से आरम्भ मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाइन-1100 पर 1,51,83 से अधिक जन शिकायतें प्राप्त हुई हैं जिनमें से 1.20 लाख से अधिक का समाधान किया जा चुका है। प्रदेश में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत 1.36 लाख परिवारों को निःशुल्क गैस कनेक्शन प्रदान किए गए जिस पर 21.76 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। प्रदेश सरकार ने हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना आरम्भ की है। योजना के अन्तर्गत 2.91 लाख महिलाओं को निःशुल्क गैस कनेक्शन उपलब्ध करवाए जा चुके हैं। दिसम्बर, 2019 में प्रदेश को धुंआ मुक्त राज्य घोषित किया गया था। इस प्रकार की उपलब्धि प्राप्त करने वाला हिमाचल देशभर में पहला राज्य बन गया है। आयुष्मान भारत योजना के तहत प्रदेश में 3.34 लाख परिवारों ने गोल्डन कार्ड बनाए हैं। योजना के तहत 77,549 लाभार्थियों को लगभग 81 करोड़ रुपये की निःशुल्क इलाज की सुविधा प्रदान की गई है।

प्रथम जनवरी, 2019 से आरम्भ हिमकेयर योजना के तहत 4.61 लाख परिवार पंजीकृत हुए हैं तथा 1.25 लाख लाभार्थियों को 129.27 करोड़ रुपये के निःशुल्क इलाज की सुविधा प्रदान की जा चुकी है। सहारा योजना के अन्तर्गत गंभीर बीमारियों से पीड़ित आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों को सहायता राशि के रूप में 3000 रुपये प्रतिमाह दिए जा रहे हैं। योजना के अन्तर्गत 11,187 लाभार्थियों को 13 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की गई है।

प्रदेश के 18 से 45 वर्ष के युवाओं को स्वावलंबन से जीवनयापन करने के लिए आरंभ मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के तहत 60 लाख रुपये तक की परियोजना लागत पर पुरुषों को 25, महिलाओं को 30 तथा विधवाओं को 35 प्रतिशत का उपदान दिया जा रहा है। योजना के तहत 2,700 इकाइयां स्थापित की गई है, जिससे 8,500 लोगों को रोजगार मिला है। लगभग 70 करोड़ रुपये का उपदान प्रदान किया जा चुका है। मुख्यमंत्री स्टार्टअप योजना के तहत 100 लाभार्थियों को लगभग 1.70 करोड़ रुपये प्रदान किए गए है। योजना के तहत नए उद्यम वाले युवाओं को एक वर्ष के लिए 25,000 रुपये प्रतिमाह दिए जा रहे हैं। हिम स्टार्टअप योजना के तहत 10 करोड़ रुपये का वैंचर फंड स्थापित किया गया है। धर्मशाला में 7 व 8 नवम्बर, 2019 को आयोजित की गई ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट के दौरान 96,721 करोड़ रुपये निवेश के 703 समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुए। इस मीट में कुल 36 देशों के 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तत्पश्चात् 13,656 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का पहला ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह भी आयोजित किया जा चुका है। नई राहें-नई मंजिलें योजना के अन्तर्गत 150 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। योजना के तहत कांगड़ा जिला के बीड़-बिलिंग को पैराग्लाइडिंग गंतव्य, शिमला जिला की प्रसिद्ध चांशल घाटी को स्की गंतव्य जबकि जिला मण्डी के जंजैहली को ईको-पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा रहा है। योजना के तहत अब करगाणु-सेरजगास व नौहराधार-चूड़धार का भी विकास किया जा रहा है। योजना के तहत अटल टनल, रोहतांग के आसपास हेलीपेड सहित आवश्यक सुविधाएं विकसित की जा रही है। जिला मण्डी के कंगनीधार में 40 करोड़ रुपये की लागत से भव्य शिवधाम के प्रथम चरण का निर्माण कार्य किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत 4,417 मकान निर्मित किए गए जिस पर लगभग 60 करोड़ रुपये व्यय किए गए। प्रदेश में विभिन्न आवास योजनाओं के अन्तर्गत 10,000 नए आवासों का निर्माण किया जाएगा। मेधा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष 2019-20 में 182 पात्र विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है। प्रदेश को शिक्षा क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए अनेक राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुए। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट 2017-18 में प्रदेश को देशभर में प्रथम स्थान मिला। वर्ष 2019 में इंडिया टूडे द्वारा किए

गए सर्वेक्षण में प्रदेश को 'बेस्ट परफॉर्मिंग स्टेट आवार्ड' से नवाजा गया है। प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक के सभी विद्यार्थियों को मुफ्त पाठ्य पुस्तकें वितरित करने वाला हिमाचल प्रथम प्रदेश बना है। समग्र शिक्षा के तहत शिक्षकों को ऑनलाइन प्रशिक्षण एवं निगरानी के लिए वर्ष 2019 में प्रदेश को 'स्कॉच आर्डर ऑफ मेरिट' सम्मान प्राप्त हुआ है। सशक्त महिला योजना के तहत 4.22 करोड़ रुपये की राशि व्यय की जा चुकी है। मुख्यमंत्री दस्तकार सहायता योजना के तहत दस्तकारों को 30 हजार रुपये तक की कीमत के औजार 75 प्रतिशत अनुदान पर प्रदान किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ग्राम कौशल योजना के तहत प्रशिक्षक को 7500 रुपये तथा प्रशिक्षु को 3000 रुपये प्रतिमाह दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री रोशनी योजना के तहत 5,862 लाभार्थी बिजली के कनेक्शन प्राप्त कर चुके हैं। प्रदेश में 326.25 मेगावाट की क्षमता वाली विभिन्न परियोजनाएं शुरू की जा चुकी हैं और 162.29 मेगावाट की क्षमता वाली परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं। अगस्त, 2019 से आरम्भ जल जीवन मिशन के तहत प्रथम चरण में लगभग 2,900 करोड़ रुपये की लागत की 327 योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई है। इसके उपरान्त वित्त वर्ष 2019-20 के लिए 530 और वर्ष 2020-21 के लिए 696 योजनाएं स्वीकृत की गई हैं। लगभग 2.12 लाख घरों को नल से जल उपलब्ध करवाया जा चुका है। इस मिशन के तहत वर्ष 2024 तक देश के सभी ग्रामीण घरों को नल से स्वच्छ एवं पर्याप्त पेयजल उपलब्ध करवाने का लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश में यह लक्ष्य जुलाई, 2022 तक प्राप्त करने के प्रयास जारी है। आज प्रदेश में 38,470 किलोमीटर लम्बी सड़के तथा 2,226 पुल है। वर्ष 2020-21 में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 1,915 किलोमीटर लम्बी, 283 सड़कों का निर्माण किया गया जो पिछले सभी वर्षों में सर्वाधिक है। वर्ष 2020-21 में इस योजना के तहत सड़क निर्माण में लक्ष्य के उपलिब्ध प्रतिशत में प्रदेश को पहला स्थान प्राप्त हुआ है जबकि सड़क निर्माण में हिमाचल दूसरे स्थान पर है। जिला मण्डी को सबसे अधिक नई सड़कों के निर्माण में देश के सभी जिलों में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। गत् तीन वर्षो में योजना के तहत 4,468 किलोमीटर सड़कों का कार्य पूर्ण किया गया जिस पर 2,500 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अटल टनल, रोहतांग का निर्माण देश व प्रदेश के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह टनल पूरे साल जनजातीय क्षेत्र लाहौल-स्पीति तथा लेह के लिए सड़क सुविधा उपलब्ध करवाएगी। प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान के

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर रखने के साथ-साथ आधुनिकीकरण को भी अपनाया है। हम 'डिजिटल इंटरफेस' तथा 'जवाबदेह प्रशासन' के माध्यम से, देश के दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सिद्धांत 'मिनीमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस' को कार्यान्वित कर रहे हैं।

तहत 5,595 हेक्टेयर क्षेत्र को लाया गया है तथा लगभग 1 लाख किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है। मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना के तहत सोलर व कांटेदार तार की बाड़बन्दी से 3,873 किसानों को 105 करोड़ रुपये के लाभ प्रदान किए गए। बागवानी को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। इस समय फलों का उत्पादन 2.33 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में किया जा रहा है। फलों का उत्पादन बढ़कर 8.45 लाख मीट्रिक टन हो गया। प्रदेश में 1134 करोड़ रुपये की हिमाचल प्रदेश बागवानी विकास परियोजना तथा 1000 करोड़ रुपये की एच.पी. शिवा परियोजना चलाई जा रही है। हिमाचल पुष्प क्रांति योजना के तहत 1,134 पुष्प उत्पादकों को 23.60 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है। गत् एक वर्ष से पूरी दुनिया कोविड-19 महामारी से जूझ रही है और हमारा प्रदेश भी इससे अछूता नहीं है। कोविड-19 की चुनौतियों के बावजूद सरकार ने आपके सहयोग से मूलभूत सुविधाओं को सुचारू रूप से संचालित कर प्रदेश की आर्थिकी को पुनः पटरी पर लाने की कोशिश की। प्रदेश में एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान के अन्तर्गत 70 लाख लोगों की घर-द्वार पर स्वास्थ्य जानकारी प्राप्त की गई। सरकार द्वारा लॉकडाउन के कारण दूसरे राज्यों में फंसे हिमाचल के 2.50 लाख लोगों को प्रदेश वापिस लाया गया। कोविड-19 महामारी के दृष्टिगत प्रदेश सरकार ने ई-संजीवनी ओपीडी आरम्भ की जिसके अन्तर्गत प्रदेश के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों के 16 डॉक्टरों की टीम मरीजों को निःशुल्क ऑनलाईन चिकित्सा परामर्श प्रदान कर रही है। हमें इस बात पर गर्व है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मजबूत नेतृत्व में कोरोना महामारी की चुनौती का सामना करते हुए आप सभी प्रदेशवासियों के सहयोग से इसके संक्रमण को रोकने में हम काफी हद तक सफल हुए हैं। अब हमारे वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों से वैक्सीन आ चुकी है, जिससे इस वायरस से सहमी जनता को बड़ी राहत मिली है। हमें वैक्सीन लगाने के अभियान में तो शामिल होना ही है, साथ में 'दवाई भी-कड़ाई भी' के मंत्र को अपनाना है और किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरतनी है। कोरोना पुनः बड़ी तेजी से अपने पांव पसार रहा है। हमें और भी सजग व सतर्क रहना होगा और एक जिम्मेवार नागरिक की भूमिका निभानी होगी। आइए! इस अवसर पर हम सब प्रण लें कि हम अपने प्रदेश को एक 'जीवंत एवं आत्मनिर्भर' हिमाचल बनाने और इसे प्रगति के शिखर पर ले जाने में अपना भरपूर योगदान देंगे।

जय हिन्द-जय हिमाचल!

इतिहास

हिमाचल गठन की गाथा

◆ डॉ. सत्या चौहान

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण भारत में संघर्ष चरम सीमा पर था। पहाड़ी क्षेत्रों में भी स्वाधीनता की ज्योति 'प्रजामण्डल आंदोलन' के माध्यम से जगी। प्रजामण्डल का सम्बन्ध किसानों से था जिन्होंने रियासती शासन के विरुद्ध अपने-अपने ढंग से संघर्ष किया। 1939 में लुधियाना में 'ऑल इंडिया स्टेट पीपुल्स कांग्रेस' का अधिवेशन हुआ जिसमें पहाड़ी राज्यों में प्रजामण्डल बनाने और इन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने का निर्णय लिया गया। भारत के सभी जनपदों में आंदोलन चलाने के लिए कांग्रेस के सहयोगी संगठन, से भी राज्य परिषद के माध्यम से प्रजामण्डलों के कार्य तेज करने का आह्वान किया और पट्टाभि सीतारमैया को इस कार्य का जिम्मा सौंपा गया।

सीतारमैया की सूझ-बूझ तथा कार्यकुशलता तथा सहयोगी संगठन के माध्यम से हिमाचल प्रदेश की 36 रियासतों में आजादी के कार्यकर्ताओं का संगठन प्रजामण्डल के माध्यम से जोर पकड़ता गया। इसी कड़ी में 13 जुलाई, 1937 के धामी प्रेम प्रचारिणी सभा की बैठक में सभा का नाम बदल कर धामी प्रजामण्डल की नींव रखी गई। इस बैठक में मण्डल ने एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें पूर्ण जिम्मेदार सरकार, नागरिक स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति का अधिकार, माल में पचास प्रतिशत कटौती, बेगार प्रथा का उन्मूलन, जब्त की गई भूमि की वापसी तथा प्रजामण्डल को मान्यता आदि मांगें राजा के समक्ष रखने का निर्णय लिया गया। प्रजामण्डल ने ऐसी मांगों को लेकर प्रस्ताव लाया जो राजनीतिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। राज्य के अन्दर लम्बे समय से भूमि से जुड़ी मांगों को लेकर तनाव बना हुआ था। पिछले तीन वर्षों से लगातार किसानों की फसलें खराब हो रही थी और राजा इन करों में छूट देने को तैयार नहीं था।

शिमला ब्रिटिश हुकूमत की राजधानी होने के कारण यहां बड़े-बड़े नेताओं का आना-जाना लगा रहा था। जिस कारण पहाड़ी लोगों में भी समूचे राष्ट्र के साथ आजादी प्राप्त करने की इच्छा प्रबल होती गई। परन्तु राज्य के शासन के ढांचे में लोगों की भागीदारी का कोई ऐसा साधन नहीं था जिसके माध्यम से आमजन अपने प्रतिनिधियों के द्वारा जनतांत्रिक तरीके से अपनी कठिनाइयों तथा अपेक्षाओं को राजा तक पहुंचाते। कुछ रियासतों में जनता द्वारा विरोध का एक माध्यम दूम्ह था। दूम्ह संगठित करने की मिसालें बुशहर और मण्डी रियासतों में मिलती है। दुम्ह जन-विचारों को सामूहिक रूप से अभिव्यक्त करने का अनूठा तरीका था। दूम्ह में शामिल होने वालों को कई प्रकार से दंडित किया जाता था। यहां तक कि फसलें भी जलाई जाती थी।

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में इन रियासतों में गैर-राजनीतिक संगठन बने जिनमें चम्बा सेवक संघ, धामी प्रेम प्रचारिणी सभा तथा बुशहर सेवा मण्डल प्रमुख थे। शुरुआती दौर में ये सब संगठन सामाजिक संस्थाएं थी परन्तु 1931 के आस-पास यह संस्थाएं सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के अलावा राजनीतिक एवं जनतांत्रिक चेतना की प्रेरणा स्रोत बन गई और आगे चलकर यही संगठन प्रजामण्डल बने। इस तरह रियासतों में जनतांत्रिक चेतना को एक संगठनात्मक रूप मिला। राजनीतिक एवं जनतांत्रिक चेतना के इस प्रकार फैलने पर के. सी. रेने ने 'दि ट्रिब्यून' में एक टिप्पणी की थी 'जनवादी विचार विशालकाय बैरियर को पार करके शिमला की पहाड़ियों तक पहुंच चुके हैं, जिन्हें एक आंधी की तरह दबाने की भरपूर कोशिश की गई। इसकी चिंगारी धीरे-धीरे सारी पहाड़ी रियासतों में ज्वाला बन कर पहुंच गई'। जनतांत्रिक चेतना का रूप वास्तव में सामंतवाद विरोधी था क्योंकि प्रजामण्डल की बुनियादी मांगों में भूमि के लगान तथा बेगार के खात्मे की मांग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थी।

पहाड़ी जनता की अपने को संगठित करने की इच्छा बहुत प्रबल थी जो उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं आम रहन-सहन की कठिनाइयों की प्रतिक्रिया थी। राज्य प्रशासन की बर्बरता, अधिकारियों के कठोर बर्ताव, लगानों एवं करों के बोझ से तंग आई जनता को एक संगठनात्मक ढांचे की प्रबल आवश्यकता थी जो प्रजामण्डल के रूप में उनके सामने आई। कर लगानों में कटौती तथा फसलों के खराब होने की स्थिति में इनकी माफी प्रजामण्डलों की मुख्य मांगों में रही। इसके अलावा भी राज्यों में अनगिनत कर लगाए गए थे। इनमें घासनियों चरागाहों, पनचक्की, राजा के परिवार के जीवन-मरण पर कर आदि असंख्य करों की मार आम जनता झेल रही थी। बेगार तथा बेठ की समस्या को लेकर प्रजामण्डलों को लोकप्रियता मिली। जो इन संगठनों के आंदोलन का बिन्दु बन गई। 1940 के दशक में इन मांगों को लेकर बहुत से

छुटपुट तथा ऐतिहासिक आंदोलन लड़े गए।

पहाड़ी रियासतों का राजनीतिक पिछड़ापन और इन रियासतों में लोकप्रिय आंदोलनों की कमी इस बात से स्पष्ट होती है कि 1929 के आल इण्डिया स्टेट पीपल्स कॉन्फ्रेंस (ए.आई.एस.पी.सी.) के बम्बई अधिवेशन में यहां से किसी भी कार्यकर्ता ने भाग नहीं लिया हालांकि 1939 के लुधियाना अधिवेशन में श्री पद्मदेव व दूसरे कुछ साथियों ने जरूर हिस्सा लिया था। ए.आई.एस.पी.सी. से सीधी मदद न मिलने के कारण भी प्रजामण्डल का विकास नहीं हो पाया। दिल्ली में कार्यरत हिमालयन स्टेट्स पीुल्स कांफ्रेंस के प्रयासों से ही प्रजामण्डलों का ए.आई.एस.वी.सी. से मान्यता कराई गई। शिमला और पंजाब हिल स्टेट्स में प्रजामण्डलों का विकास इस शताब्दी के तीसरे दशक के अंत में शुरू हुआ। सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर यहां विभिन्न क्रांतियां हुई जिनमें इस प्रदेश की छोटी-छोटी रियासतों में बंटे पहाड़ी लोग शामिल हुए लेकिन हिमाचल के इतिहास में सबसे चर्चित घटना धामी गोलीकांड रही। सन् 1948 के आरम्भ में पहाड़ी रियासतों में जारी स्वाधीनता संघर्ष चरम सीमा तक पहुंच गया था। प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम की इस लहर में प्रजामण्डल आंदोलनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। शिमला इन मण्डलों के कार्यकलापों का केन्द्र बना। प्रजामण्डल गतिविधियों ने पहाड़ी रियासतों के एकीकरण के कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

राज्य में कार्यरत विभिन्न प्रजामण्डलों के कामों का समन्वय करने के लिए हिमाचल हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल का गठन किया गया। इस रीजनल कौंसिल में पंडित पद्मदेव, शिवानंद रमोल, पूर्णानन्द, सत्यदेव बुशहरी, डॉ. यशवंत सिंह परमार, खुदो राम चन्देल, दौलतराम सांख्यान और मनसा राम जैसे लोग थे जिन्होंने स्वतंत्र पहाड़ी राज्य स्थापित करने का बीड़ा उठाया। छोटी-छोटी रियासतों में बने प्रजामण्डलों को इकट्ठा कर हिमालय रियासती प्रजामण्डल की स्थापना की गई। इसी दौरान कुनिहार, चम्बा, मण्डी, सुकेत, सिरमौर, बुशहर, बिलासपुर तथा अन्य छोटी-छोटी रियासतों में भी प्रजामण्डल संगठित किए गए। इन संगठनों को क्रियाशील बनाने में 1946 की ए.आई.एस.पी.सी. की उदयपुर कांफ्रेंस महत्त्वपूर्ण रही। उसके बाद मण्डी में एक बैठक हुई जिसमें हिमालय हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल की स्थापना की गई। यह बैठक महत्त्वपूर्ण साबित हुई, क्योंकि इससे प्रजामण्डलों के एकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई जो हिमाचल के गठन के लिए महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

1940 के दशक में प्रजामण्डल की मांगों में एक स्पष्ट सा बदलाव आया। बेगार, लगान अथवा अन्य करों को समाप्त करने की मांग रखकर हर रियासत में जिम्मेवार सरकार की स्थापना पर जोर दिया गया। वैसे तो राज्य प्रशासन को लोकतांत्रिक बनाने के लिए तथा प्रजा के चुने हुए नुमाइन्दों की सरकार के लिए चम्बा प्रजामण्डल, हिमालयन रियासती प्रजामण्डल तथा अन्य संगठनों ने 1938 में भी की थी पर 1945-46 में यह मांग काफी जोर पकड़ गई थी। मण्डी में प्रशासन में जायदाद के आधार पर नामांकन किए जाते थे। पर प्रजामण्डल के हस्तक्षेप पर जनता की भागीदार की मांग मानी गई और एक मंत्रालय गठित किया गया।

सिरमौर में भी पझौता आन्दोलन के पश्चात राज्य परिषद बनाई गई थी। देश के आजाद होने के बावजूद अधिकांश रियासतों की जनता को लोकतांत्रिक अधिकार हासिल नहीं हो पाए। 1947 में यह मांग जोर शोर से उठाई गई। डॉ. यशवंत सिंह परमार व श्री पद्मदेव की हिमालयन हिल स्टेट्स सब रीजनल कौंसिल ने 11 अक्तूबर, 1947 को सिरमौर व सुकेत की रियासतों में जिम्मेदार सरकार गठित करने की मांग दोहराई। प्रजामण्डल के नेता पहाड़ी रियासतों को मिलाकर एक पहाड़ी प्रांत बनाने के हक में थे।

इसी के दृष्टिगत 4 जनवरी, 1948 को शिमला में एक कांफ्रेंस का आयोजन किया गया जिसमें पहाड़ी रियासतों के नेताओं ने हिस्सा लिया। इस कांफ्रेंस में 'हिमालयन प्रांत' बनाने के पक्ष में प्रस्ताव पारित हुआ। इसके उपरान्त 13 जनवरी, 1948 में दूसरी कांफ्रेंस कोटगढ़ व तीसरी रामपुर में हुई जिसमें हिमालयन प्रांत के गठन पर जोर दिया गया।

25 जनवरी, 1948 को शिमला के गंज मैदान में एक विशाल जनसभा हुई। इसमें प्रजामंडल के कई नेताओं ने भाग लिया। डॉ. परमार ने इस जनसभा की अध्यक्षता की और उन्होंने पहाड़ी रियासतों के भारत संघ में विलय पर जोर दिया। साथ में 'हिमालय प्रांत' का प्रस्ताव भी पारित हुआ। पं. पद्मदेव व अन्य प्रजा मंडलियों ने डॉ. परमार के प्रस्तावों का समर्थन किया। परन्तु पहाड़ी रियासतों के भीतर और बाहर आंदोलनकारी नेताओं में रियासतों के भविष्य के बारे में काफी मतभेद बना रहा।

पंजाब के नेता सब पहाड़ी रियासतों को पंजाब में मिलाकर 'महापंजाब' प्रांत बनाने के हक में थे। उधर उत्तर प्रदेश के नेतागण टिहरी-गढ़वाल सिरमौर के साथ शिमला की पहाड़ी रियासतों को उत्तर प्रदेश में मिलाने के हक में थे जबकि महाराजा के समर्थक नालागढ़, क्योंथल, सिरमौर, चम्बा व शिमला हिल्स की रियासतों को मिलाकर कोहीस्तान बनाना चाहते थे। दूसरी ओर केन्द्रीय सरकार भी छोटे प्रांत बनाने के हक में नहीं थी। इधर पहाड़ी रियासतों के नेता भी दो धड़ों में बंट चुके थे, जिस वजह से हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल कमजोर पड़ गई। ये दोनों धड़े मिनिस्ट्री ऑफ स्टेट्स के अधिकारियों से अलग-अलग मिलते रहे।

अखिल भारतीय लोक राज्य परिषद् की प्रथम मार्च, 1948 को पटियाला में हुई कांफ्रेंस में डॉ. परमार और दौलत राम सांख्यान परिषद के अध्यक्ष पट्टाभि सीतारमैया से मिले। इसके पश्चात वे दिल्ली में 'मिनिस्ट्री ऑफ स्टेट्स' के अधिकारियों से मिले।

अधिकारियों ने दिल्ली में ही शिमला व पंजाब हिल स्टेट्स के शासकों की बैठक बुलाई। इस बैठक में मिनिस्ट्री ने पहाड़ी रियासतों के शासकों से बिना शर्त 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर करने की अपील की परन्तु बघाट रियासत के राजा दुर्गा सिंह ने सोलन सभा के प्रस्ताव के अनुसार पहाड़ी रियासतों के एक अलग प्रांत 'हिमाचल प्रदेश' में सामूहिक विलय का आग्रह किया। परन्तु मिनिस्ट्री के सचिव सी.सी. देसाई ने इसका विरोध किया।

इस पर पहाड़ी शासकों ने बैठक छोड़ दी और भागमल-बुशहरी धड़े के नेता सरदार पटेल से मिले। उन्होंने पटेल के सामने सोलन सभा का प्रस्ताव पेश किया और काफी विचार-विमर्श के पश्चात यह निर्णय लिया कि पहाड़ी रियासतों का क्षेत्र 'हिमाचल प्रदेश' के नाम से केन्द्र के अधीन होगा। उसके पश्चात् 8 मार्च, 1948 को केन्द्रीय सरकार की ओर से 27 पहाड़ी रियासतों के विलय से 'हिमाचल प्रदेश' के गठन की प्रक्रिया शुरू हुई। अंततः 15 अप्रैल, 1948 को पहाड़ी क्षेत्र की 30 छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर एक पहाड़ी प्रांत हिमाचल प्रदेश की विधिवत स्थापना की गई और इसे केन्द्र शासित 'चीफ कमीश्नर्ज प्रोविंस' का दर्जा दिया गया। परन्तु लोकप्रिय सरकार न होने से पहाड़ी नेताओं और प्रजा का 'स्वराज' का सपना पूरा नहीं हुआ। सारे प्रदेश में चीफ कमीश्नर विरोधी जुलूस हुए। इस दौरान डॉ. परमार शीर्ष कांग्रेसी नेता बनकर उभरे। उनके नेतृत्व में प्रदेश कांग्रेस ने लोकप्रिय सरकार के लिए केन्द्र सरकार से संवैधानिक संघर्ष किया। अंततः केन्द्र सरकार ने हिमाचल को 'पार्ट सी स्टेट' का दर्जा देकर विधान मंडल की व्यवस्था की। डॉ. परमार 1952 से 1956 तक मुख्यमंत्री रहे परन्तु उन्होंने विशाल हिमाचल के लिए संघर्ष जारी रखा। हिमाचल के अस्तित्व पर अभी भी खतरा बना हुआ था, क्योंकि 'राज्य पुनर्गठन आयोग' ने हिमाचल को पंजाब में विलय करने की सिफारिश की थी। कई महीनों के वाद-विवाद के बाद केन्द्र ने हिमाचल को अलग भौगोलिक इकाई रखने का आश्वासन दिया। इस आश्वासन को पूरा करने के लिए हिमाचल प्रदेश को लोकप्रिय सरकार का बलिदान देना पड़ा और हिमाचल का पार्ट-सी-स्टेट का दर्जा घटाकर 'यूनियन टेरीटरी' कर दिया गया। एक नवम्बर, 1956 को उप- राज्यपाल ने हिमाचल प्रदेश का शासन संभाल लिया। हिमाचल के नेताओं और स्थानीय जनता को प्रदेश के भौगोलिक अस्तित्व के बचाव और विस्तार व लोकप्रिय सरकार की बहाली के लिए पुनः संघर्ष करना पड़ा। इस संघर्ष में सभी दल इकट्ठे हो गए और एक सर्वदलीय समिति का गठन किया गया जिसका नाम 'विशाल हिमाचल समिति' रखा गया। दिसम्बर, 1959 में हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने डॉ. परमार के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल दिल्ली भेजा।

डॉ. परमार ने प्रभावशाली ढंग से हिमाचल में लोकतांत्रिक सरकार की मांग की। इन प्रयासों से विशाल हिमाचल तो नहीं बन पाया, परन्तु 1961 के अंत तक हिमाचल को विधान सभा मिलने की उम्मीद बढ़ने लगी। 1962 के आम चुनाव में कांग्रेस विजयी रही और काफी संघर्षों के उपरान्त 1 जुलाई, 1963 को हिमाचल को लोकप्रिय सरकार की प्राप्ति हुई और टेरीटोरियल काउंसिल को विधान सभा में बदल दिया गया। उसके उपरान्त पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों के नेताओं ने मिलकर विशाल हिमाचल का प्रचार प्रारम्भ किया और अंततः विशाल हिमाचल का सपना 1 नवम्बर, 1966 को तब साकार हुआ जब केन्द्रीय सरकार ने कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल- स्पीति, शिमला, ऊना, नालागढ़, डलहौजी, बकलोह आदि पहाड़ी रियासतों को हिमाचल प्रदेश में मिला दिया। फरवरी, 1967 में हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने का वायदा किया और 24 जनवरी, 1968 को प्रदेश विधान सभा में सर्वसम्मति से पूर्ण राज्य प्रदान करने का प्रस्ताव पारित किया गया। परिणामस्वरूप 31 जुलाई, 1970 को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने संसद में हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की घोषणा की और दिसम्बर, 1970 में संसद में स्टेट ऑफ हिमाचल प्रदेश एक्ट पास हुआ।

आज हम डॉ. परमार सहित सभी नेताओं के कड़े संघर्षों व प्रयत्नों को भुला नहीं सकते, जिनकी बदौलत आज हिमाचल विकास पथ पर निरंतर अग्रसर हो रहा है। हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने के लिए एक लंबा लेकिन अहिंसक संघर्ष चला जबकि देश के अन्य हिस्सों में ऐसी किसी भी मांग तथा उसकी पूर्ति के साथ व्यापक हिंसा जुड़ी रहती है। यह निःसंदेह एक स्वर्णिम संघर्ष था।

प्रदेशवासियों का पूर्ण राज्यत्व का सपना तब साकार हुआ जब 25 जनवरी, 1971 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने स्वयं शिमला आकर यहां के ऐतिहासिक रिज मैदान पर भारी बर्फबारी के बीच हजारों की संख्या में उपस्थित हिमाचलवासियों के समक्ष हिमाचल प्रदेश को भारत के अठारहवें पूर्ण राज्य के रूप में उद्घाटन किया। आज हम डॉ. परमार सहित सभी नेताओं के कड़े संघर्षों व प्रयत्नों को भुला नहीं सकते, जिनकी बदौलत हिमाचल आज विकास पथ पर निरंतर अग्रसर हो रहा है। हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने के लिए एक लंबा लेकिन अहिंसक संघर्ष चला जबकि देश के अन्य हिस्सों में ऐसी किसी भी मांग तथा उसकी पूर्ति के साथ व्यापक हिंसा जुड़ी रहती है। यह निःसंदेह एक स्वर्णिम संघर्ष था।

एसोसिएट प्रोफेसर द्वारा नर्बदा कंवर, संपादक गिरिराज साप्ताहिक, शिमला-171 005

प्रजामंडल आंदोलनों ने रखी पहाड़ी रियासतों के एकीकरण की नींव

◆ रमेश कुमार भाटिया

देश में आजादी से ठीक पहले भारतवर्ष के अधिकतर भू-भाग पर भले ही अंग्रेजों का शासन था, लेकिन पूरा राष्ट्र छोटी बड़ी रियासतों में बंटा होने के कारण यहां अंग्रेजी हुकूमत के साथ साथ स्थानीय राजाओं महाराजाओं का समानांतर शासन चलता था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश के बड़े एवं मुख्य शहरों और नगरों में आजादी की लहर चलने के बाद इन रियासतों के लोगों में भी स्वतंत्रता और सामाजिक-आर्थिक सुधारों के प्रति जागृति पैदा हो रही थी। देश के छोटे-छोटे भू भागों में विभक्त इन रियासतों को राष्ट्र की भावना से पृथक नहीं रखा जा सकता था। इन्हें भी राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक स्वतंत्रता की उतनी ही जरूरत थी जितनी देश के किसी अन्य भाग को।

इसी मूल भावना के साथ 17 दिसंबर 1927 को मुंबई में अखिल भारतीय रियासती प्रजापरिषद का गठन किया गया और इसी वर्ष इसका अधिवेशन बुलाया गया। देश के विभिन्न भागों में चल रहे असहयोग आंदोलन तथा सत्याग्रह की सफलता ने रियासती प्रजा में इन आंदोलनों के प्रति जागरूकता पैदा करने का काम किया। जगह जगह रियासती प्रजामण्डल की स्थापना और जन सभाएं होने लगीं। इससे रियासती राजाओं का शासनतंत्र तिलमिला उठा और इन आंदोलनों पर नाना प्रकार की पाबंदियां लगाने का सिलसिला आरंभ हुआ। इस पहाड़ी क्षेत्र में लंबे समय तक चले प्रजा मंडल आंदोलनों ने पहाड़ी रियासतों के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अखिल भारतीय रियासती प्रजापरिषद के प्रस्तावों से प्रभावित होकर सिरमौर में हिमाचल का पहला 'प्रजामण्डल' का गठन किया गया था और पं राजेन्द्र दत्त इसके संस्थापक थे। उन्होंने नाहन के स्थान पर पांवटा में इसका कार्यालय स्थापित किया। चौधरी शेर जंग, मास्टर चतर सिंह, सालिग राम, कुन्दन लाल तथा अजायब सिंह ने इसमें सक्रिय भाग लिया। 12 अक्तूबर 1930 को पंजाब तथा पहाड़ी रियासती प्रजा का प्रथम सम्मेलन लुधियाना में हुआ जिसमें पांवटा से सरदार भगत सिंह तथा दो अन्य लोगों ने सिरमौर रियासत का प्रतिनिधित्व किया। इसी दौरान सिरमौर रियासत के पं. शिवानंद रमौल ने दिल्ली स्थित सिरमौरी एसोसिएशन के सदस्य के रूप में अपना आंदोलनकारी जीवन आरंभ किया। रियासत के भीतर राजेंद्र दत्त इसका संचालन करते रहे। वर्ष 1934 में सिरमौर में कुछ और लोगों ने भी एक अन्य सिरमौर प्रजामण्डल की स्थापना की। इस दौरान अन्य पहाड़ी रियासतों में भी इस प्रकार के आंदोलन चलने लगे। मार्च 1936 में चम्बा रियासत में कुछ लोगों ने चम्बा सेवक संघ नामक संस्था का गठन किया।

पहाड़ी रियासतों में सिरमौर के बाद मण्डी दूसरी रियासत थी जहां दूसरा प्रजामण्डल स्थापित किया गया। स्वामी पूर्णानंद इसके अध्यक्ष नियुक्त किए गए। राम चन्द्र मल्होत्रा बलदेव राम, हरसुख राय, सुंदर लाल और मोती राम इसके अन्य सदस्य थे। रियासत के लोगों में प्रजामण्डल गतिविधियों के प्रभाव को देखते हुए रियासत के राजा ने इनकी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया।

इसके बाद वर्ष 1937 में धामी रियासत में 'प्रेम प्रचारिणी सभा' का गठन किया गया। बाबा नारायण दास को इसका अध्यक्ष तथा पण्डित सीताराम को मंत्री बनाया गया। आरंभ में इसका उद्देश्य लोगों में जागरूकता एवं सामाजिक आर्थिक सुधार लाना था परंतु बाद में यह संस्था राजनैतिक आंदोलन में भी भाग लेने लगी।

हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलनों को उस समय नया जीवन मिला जब 15 व 16 फरवरी 1939 को लुधियाना में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में 'ऑल इण्डिया स्टेट्स पीपल्स कान्फ्रेंस के अधिवेशन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में पं नेहरू ने रियासतों में प्रजामण्डलों की स्थापना पर जोर दिया। उनका मानना था कि छोटी रियासतें मिलकर शक्तिशाली संगठन बना सकती हैं। इस अधिवेशन में शिमला पहाड़ी रियासत से पं. पद्मदेव, भागमल सौहटा, मण्डी से स्वामी पूर्णानंद, सिरमौर से ठाकुर हितेंद्र सिंह, बिलासपुर से सदाराम चन्देल, चम्बा से विद्यासागर, पं. विद्याधर, गुलाम रसूल और पृथ्वी सिंह कटोच ने भाग लिया। 11 अगस्त 1938 को जीवणु राम चौहान की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में 'बाघल प्रजा मण्डल' की स्थापना की गई। मनसा राम चौहान को प्रजा मण्डल का मंत्री बनाया गया। इन प्रजा मण्डल आंदोलनों में लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने पर जोर दिया गया। तत्पश्चात इसी

भावना को आगे बढ़ाते हुए पं भास्करानंद ने भज्जी, सूरतराम प्रकाश ने ठियोग तथा भागमल सौहटा ने जुब्बल में प्रजा मण्डलों का गठन किया। इसी प्रकार कोटी, कुम्हारसेन और बुशहर रियासतों में भी प्रजा मण्डलों के गठन का कार्य तेज हुआ।

रियासतों में प्रजा मण्डलों की बढ़ती गतिविधियों को देखते हुए पहाड़ी रियासतों के राजाओं-राणाओं को अपने अधिकारों की चिंता सताने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि जून 1939 के पहले सप्ताह में शिमला में राजाओं और राणाओं का अधिवेशन बुलाया गया जिसमें प्रजामण्डल गतिविधियों से निपटने पर विचार विमर्श किया गया।

पहाड़ी क्षेत्रों में प्रजामण्डल आंदोलनों का सिलसिला धीरे-धीरे यहां के समस्त भू-भाग में फैलने लगा। प्रथम जून 1939 को शिमला हिल स्टेट्स की रियासतों की प्रजा के लोक प्रतिनिधियों द्वारा शिमला में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें प्रजामण्डल आंदोलन को राजकीय स्तर पर दबाने की गुप्त गतिविधियों पर चर्चा की गई। इन प्रतिनिधियों ने लुधियाना सम्मेलन की भावना के अनुरूप विभिन्न संस्थाओं को मिलाकर उसका नाम 'शिमला हिल स्टेट्स और रियासती प्रजामण्डल रखा।

प्रजामण्डल के गठन में बुशहर के पं पद्मदेव और जुब्बल के भागमल सौहटा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जिन्हें इस संस्था का क्रमशः प्रधान और महामंत्री नियुक्त किया गया। इसके पश्चात जुलाई 1939 को शिमला की पहाड़ी रियासतों में प्रजामण्डल अभियान फिर जोर पकड़ने लगा। भागमल सौहटा, हीरा सिंह पाल तथा देव सुमन ने महलोग रियासत में 'प्रजामण्डल महलोग' की स्थापना की।

कुनिहार रियासत में 8 जुलाई 1939 को कांशी राम सहित कई लोगों को प्रजामण्डल का सदस्य बनाया गया और अगले ही दिन 9 जुलाई को कुनिहार रियासत के दरबार में राणा हरदेव सिंह की अध्यक्षता में 'कुनिहार प्रजामण्डल' की विधिवत स्थापना की गई। सभा में भागमल सौहटा और देव सुमन भी उपस्थित रहे। पहाड़ी रियासतों में कुनिहार के राणा ही एक मात्र ऐसे शासक थे जिन्होंने अपनी प्रजा की लोकतांत्रिक मांग को शांतिपूर्ण तरीके से मान लिया था। इस प्रकार बाबू कांशी राम को कुनिहार प्रजामण्डल का संरक्षक नियुक्त किया गया। इन प्रयासों से प्रजामण्डल आंदोलनकारियों के हौसले बुलंद होने लगे।

धामी रियासत में वर्ष 1937 में बाबा नारायण दास की अध्यक्षता में 'प्रेम प्रचारिणी सभा' का गठन पहले ही किया जा चुका था। शिमला पहाड़ी रियासतों में प्रजामण्डलों की सफलता के बाद 'प्रेम प्रचारिणी सभा' ने रियासती प्रजामण्डल शिमला में शामिल होने की योजना बनाई। 13 जुलाई 1939 को भागमल सौहटा की अध्यक्षता में शिमला के कुसुम्पटी के निकट कमाहली में शिमला पहाड़ी रियासतों के प्रजामण्डलों की एक बैठक आयोजित हुई जिसमें प्रेम प्रचारिणी सभा को धामी प्रजामण्डल में परिवर्तित कर दिया गया। पं. सीताराम को इस संगठन का प्रधान नियुक्त किया गया। प्रजामण्डल की ओर से रियासत में बेगार प्रथा समाप्त करने भू लगान कम करने तथा नागरिक अधिकारों की स्वतंत्रता सहित विभिन्न मांगों का एक प्रस्ताव पारित कर धामी के राणा को भेजने का निर्णय लिया गया। इस मांग पत्र का शासन की ओर से कोई जवाब न मिलने पर 16 जुलाई 1939 को सात प्रतिनिधियों के एक शिष्टमण्डल को हलोग भेजकर राणा से मिलने का निर्णय भी लिया गया। राणा ने इस मांग पत्र को अपना अपमान मान लिया और प्रजामण्डल की मांगों को स्वीकार करने से मना कर दिया। 16 जुलाई को निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हिमालय रियासत प्रजामण्डल शिमला तथा धामी प्रजामण्डल के सदस्यों का एक शिष्टमण्डल भागमल सौहटा के नेतृत्व में धामी के राणा से हलोग के लिए रवाना हुआ।

धामी गोलीकांड : धामी के राणा दलीप सिंह से मिलने वाले शिष्टमण्डल में सर्वश्री भागमल सौहटा, हीरा सिंह पाल, मनसा राम चौहान, पं. सीताराम, बाबू नारायण दास, भगतराम और गौरी सिंह शामिल थे। भागमल सौहटा और उनके साथी जब धामी सीमा के पास पहुंचे तो रियासती पुलिस ने भागमल सौहटा को हिरासत में ले लिया। उनका कौमी झण्डा फाड़ दिया। इस पर शिष्टमण्डल के सदस्यों ने नारे लगाने शुरू कर दिए। इस घटनाक्रम से लोगों में रोष फैल गया। नारे लगाती भीड़ राणा के निवास पर पहुंच गई। हलोग तक पहुंचते पहुंचते जलूस में 1000 से 1500 लोग जुट चुके थे। इस पर राणा ने भयभीत होकर भीड़ को तितर-बितर करने के लिए गोली बारी शुरू कर दी। इससे वहां अफरा-तफरी का माहौल बन गया। बहुत सारे लोग बुरी तरह घायल हो गए और दो लोगों की गोली लगने से मौत हो गई। आंदोलनकारी नेताओं को जेलों में बंद कर दिया गया और भागमल सौहटा को गिरफ्तार कर अंबाला जेल भेज दिया गया। पहाड़ी रियासत की इस भयावह घटना से महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। गांधी जी ने हरिजन पत्रिका में इस घटना पर लेख लिखा।

नेहरू ने अम्बाला के एक कांग्रेस कार्यकर्ता लाला दुनीचंद को इस घटना की छानबीन करके इसकी रिपोर्ट देने को कहा। उन्होंने स्वयं भी इस घटना के बारे में लिखा।

धामी गोलीकाण्ड की घटना के बाद पहाड़ी रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन ने जोर पकड़ा। भिन्न भिन्न स्थानों पर होने वाले आंदोलनों मे तालमेल बनाने के लिए यहां दिसम्बर 1939 को हिमालयन रियासती प्रजामंडल आंदोलन को संगठित किया गया।

पहाड़ी रियासतों में चल रहे आंदोलनों का यही दौर था जब सिरमौर रियासत में भी प्रजामण्डल की गतिविधियों ने जोर पकड़ा। रियासत में चौधरी शेरजंग, डॉ देवेन्द्र सिंह और शिवानंद रमौल

सरीखे नेता इस आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्ता बन कर उभरे। रियासती शासन और इसके मोहतबरों ने आम जन को आतंकित करने के उदेद्र्श्य से डॉ देवेन्द्र सिंह, हरिचन्द पाधा, आत्माराम, इन्द्र नारायण और उनके सहयोगियों के विरुद्ध मुकद्दमें दर्ज कर दिये। उन पर रियासत के राजा को जान से मारनें और उन्हें शारीरिक हानि पहुंचाने के आरोप थोपे गए। इस दौरान यशवंत सिंह परमार सिरमौर रियासत के डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज के ओहदे पर तैनात थे। डॉ परमार ने इस केस से सम्बधित अपना अहम फैसला प्रजामण्डल के पक्ष में सुनाया और इन नेताओं पर राजा को जान से मारने की कोशिश के आरोप झूठे साबित हो गए। इस मामले को लेकर सिरमौर के राजा राजेन्द्र प्रकाश के साथ डॉ. परमार के राजनैतिक मतभेद उभरकर सामने आए और इसका नतीजा यह हुआ कि उन्होंने वर्ष 1941 में डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज की नौकरी से इस्तीफा दे दिया। इस घटनाक्रम के बाद राजा ने डॉ. परमार को रियासत से बाहर निकाल दिया। इसके उपरांत डॉ. परमार घर छोड़कर दिल्ली आ गए और 1943 से 1946 तक वहीं रह कर सिरमौर के लोगों को न केवल संगठित किया बल्कि उन्हें लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूक करने और संघर्ष के लिए तैयार किया।

चम्बा रियासत में वर्ष 1936 में कुछ लोगों ने मिलकर 'चम्बा सेवक संघ' नामक एक संस्था का गठन किया था। लेकिन कुछ अरसे बाद यह संस्था एक राजनैतिक इकाई में तबदील हो गई। इसके बाद रियासत में प्रजामण्डल की गतिविधियां जोर पकड़ने लगी। चम्बा में प्रजामण्डल की मांग करनी शुरु कर दी थी कि रियासत में लोकप्रिय सरकार बननी चाहिए। प्रजामण्डल का आरोप था कि रियासत के दीवान ने सारे अख्तियार और अधिकार अपने पास ले रखे है और प्रजा के प्रति उसका रवैया अन्यायपूर्ण है। प्रजामण्डल के सदस्य रियासत के दीवान को बदलने की मांग कर रहे थे। इस आंदोलन के जोर पकड़ने के परिणामस्वरूप प्रजामण्डल के कई सदस्यों को पकड़ा गया। राष्ट्रीय नेतृत्व में इसकी खबर पहुंचने पर गांधी जी ने स्वयं चम्बा वासियों को अहिंसा से अपना आंदोलन चलाने की बात कही। उस समय यह आंदोलन कुछ समाचार पत्रों की सुर्खियां भी बना।

हालांकि रियासत में प्रजामण्डल की गतिविधियां पहले ही शुरू हो चुकी थीं लेकिन बुशहर प्रजामण्डल 1945 में पुनः सक्रिय हुआ। रियासत में इस आंदोलन को तेज करने के लिए बुशहर सुधार सम्मेलन, बुशहर प्रेम सभा, और सेवक मण्डल दिल्ली जैसी अन्य संस्थाओं ने भी बुशहर के लोगों को संगठित रूप से एक मंच पर लाने का प्रयास किया। प्रजामण्डल आंदोलन में पंडित पद्मदेव पंडित घनश्याम, सत्यदेव बुशहरी तथा ठाकुर सेन नेगी भी सक्रिय रूप में शामिल हुए। प्रजामण्डल की इन गतिविधियों से प्रेरित होकर साथ लगते जुब्बल, बिलासपुर और अन्य क्षेत्रों के लोगों ने भी इस आंदोलन को प्रभावी बनाने का कार्य किया।

इस प्रकार प्रजामण्डल की गतिविधियों ने पहाड़ी रियासतों के आमजन में जागृति लाने का कार्य किया जिसमें उन्हें महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल जैसे राष्ट्रीय जन नेताओं का भी भरपूर समर्थन मिला।

प्रवक्ता इतिहास, वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला खेड़ा,
तहसील नालागढ़, जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश-174 101

डॉ. परमार उस समय सिरमौर रियासत के डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज के ओहदे पर तैनात थे। उन्होंने इस केस से सम्बंधित अपना अहम फैसला प्रजामण्डल के पक्ष में सुनाया और इन नेताओं पर राजा को जान से मारने की कोशिश के आरोप झूठे साबित हो गए। इस मामले को लेकर सिरमौर के राजा राजेन्द्र प्रकाश के साथ डॉ. परमार के राजनैतिक मतभेद उभरकर सामने आए और इसका नतीजा यह हुआ कि उन्होंने वर्ष 1941 में डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज की नौकरी से इस्तीफा दे दिया। इस घटनाक्रम के बाद राजा ने डॉ. परमार को रियासत से बाहर निकाल दिया। इसके उपरांत डॉ. परमार घर छोड़कर दिल्ली आ गए और 1943 से 1946 तक वहीं रह कर सिरमौर के लोगों को न केवल संगठित किया बल्कि उन्हें लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूक करने और संघर्ष के लिए तैयार किया।

संदर्भ सूची

1. हिमाचल प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास 1992 पृष्ठ 104

2 Selected works of Jawahar Lal Nehru, vol- X N- Delhi 1977 page-418

3. मल्होत्रा चमन लाल, हिमाचल का क्रांतिकारी इतिहास, शिमला, 1990 पृष्ठ 108-09

4. Kanwar, Pamela, Imperial Shimla, Delhi, 1990- Page 230

5 Selected works of Jawahar Lal Nehru, vol- X N- Delhi 1977 page-531

6 Sharna Ranbir Party Politics in Himalayan state, Delhi 1977 page 32

सोलन से शुरू हुई हिमाचल के नामकरण की कहानी

◆ योगेश शर्मा

दुनिया के नक्शे पर अपनी पहचान बना चुके हिमाचल प्रदेश का नामकरण 73 साल पहले हुआ था। दरअसल 1948 में 28 रियासतों के राजाओं ने प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री डॉ. वाई एस परमार की मौजूदगी में अपनी राज गद्दी छोड़ सरकार से हाथ मिला लिया था। हिमाचल प्रदेश के नामकरण से जुड़े ऐतिहासिक लम्हों की गवाही सोलन शहर की एक इमारत आज भी देती है। शाही रजवाड़ा शैली का बना यह भवन आज भी अपने आप में एक ऐतिहासिक धरोहर होने का एहसास दिलाता है, उस समय यह भवन बघाट रियासत के 77वें राजा दुर्गा सिंह का दरबार हुआ करता था, जहां कभी बघाट रियासत के राजा का दरबार सजता था।

आज भी ये गेट उस राजसी ठाठ-बाठ की गवाही देता है। कलाकृतियों से सजे इस मुख्य द्वार के बाहर खड़े दरबान बघाट रियासत के राजाओं का स्वागत किया करते थे। ठीक 73 साल पहले 28 जनवरी 1948 को इसी भवन के दरबारी हॉल में एक साथ 28 रियासतों के राजाओं के बीच एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में हिमाचल प्रदेश के 28 रियासतों के राजाओं ने एकजुट होकर तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार की मौजूदगी में अपनी सत्ता को छोड़ने का ऐलान किया। जहां एक ओर आजादी के बाद का भारत विश्व मानचित्र पर अपनी नई पहचान बना रहा था, इसी बीच सोलन बघाट रियासत के दरबारी भवन की दीवारों के बीच प्रदेश के नाम को लेकर 28 रियासतों के राजा और प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री डॉ. वाई. एस. परमार के बीच प्रदेश के नाम को लेकर विचार-विमर्श हो रहा था। दरअसल, डॉ. परमार चाहते थे कि उत्तराखंड राज्य का जौनसर बाबर क्षेत्र भी हिमाचल में मिले और इसका नाम 'हिमालयन एस्टेट' रखा जाए, लेकिन बैठक में मौजूद 28 राजाओं के बीच डॉ. परमार को किसी का साथ नहीं मिला और देवभूमि का कागजी नाम 'हिमाचल प्रदेश' रखने पर सहमति बनी जिसके बाद एक प्रस्ताव पारित कर तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को मंजूरी के लिए भेजा गया। सरदार पटेल ने इस प्रस्ताव पर मोहर लगाकर हिमाचल का नाम घोषित किया और आज ये नाम इस पहाड़ी राज्य की पहचान है। आजादी के 7 दशक बाद भी ऐतिहासिक धरोहर के दरबारी हॉल में आज भी कुछ चीजों में उस समय की झलकियां देखने को मिलती हैं। दरबारी द्वार और उस पर की गई नक्काशी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। वहीं, दरबारी हॉल में उस समय की तीन कुर्सियां आज भी मौजूद हैं, लेकिन पर्याप्त रखरखाव ना होने के कारण इतिहास की गवाह इन कुर्सियों की हालत भी बद से बदतर हो चली है। कुर्सियों को लकड़ी ठोककर जुगाड़ के सहारे रखा गया है। आज हिमाचल प्रदेश के पूर्ण राजयत्व दिवस के 50 साल पूरे कर रहा है। ऐसे में प्रगतिशील हिमाचल के नामकरण की कहानी सोलन से शुरू होती है।

हिमाचल प्रदेश के नामकरण से जुड़ी सोलन शहर की एक इमारत आज भी ऐतिहासिक लम्हों की गवाही देती है।

डॉ. परमार का सिरमौर तब और अब

◆ सिम्पल सकलानी

हिमाचल प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार हिमाचल निर्माता के रूप में प्रसिद्ध हैं। वह शानदार व्यक्तित्व के धनी थे और उनकी वाणी बेहद मधुर थी। आज भी लोग उन्हें प्रथम मुख्यमंत्री कम और हिमाचल निर्माता के तौर पर ज्यादा जानते हैं और उनका आदर करते हैं। डॉ. परमार का जन्म 4 अगस्त 1906 को ग्राम चनहालग तहसील पच्छाद जिला सिरमौर में हुआ। 1952 से 1956 तक प्रथम मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश, 1957 में सांसद व 1963 से 1977 तक दूसरी बार मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश को अपनी सेवाएं दी।

15 अप्रैल 1948 को हिमाचल प्रदेश का गठन होते ही सिरमौर में राजतन्त्र खत्म हो गया तथा इसे एक नया जिला बनाया गया। पहाड़ी क्षेत्र की 30 छोटी-बड़ी रियासतों को इकट्ठा करके हिमाचल विधिवत अस्तित्व में आया जिसे केंद्र शासित चीफ कमिशनर्ज प्रान्त का दर्जा दिया गया। तभी 1954 में राज्य पुर्नगठन द्वारा हिमाचल को पंजाब में विलय करने की सिफारिश की चर्चा चली। पहाड़ों में रहने वाले लोगों का रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, संस्कृति कुछ भी पंजाब से मेल नहीं खाता। अगर यह विलय हो जाता तो डॉ. परमार और उनके साथियों द्वारा किया परिश्रम बर्बाद हो जाता। डॉ. परमार ने पुनर्गठन आयोग के अध्यक्ष डॉ. फजल अली साहिब को इस बात के लिए मना लिया की हिमाचल प्रदेश को विकास की मिसाल बनने के लिए पंजाब से अलग रहना जरूरी है। इसी मकसद से डॉ. परमार ने अपना मुख्यमंत्री पद का त्याग करना उचित समझा ताकि प्रदेश केंद्र शासित बना रहे। जुलाई 1963 में हिमाचल विधान सभा का पुनर्गठन हुआ तो उनकी अपार सेवाओं, परिश्रम तथा उनके निर्देशन में प्रदेश के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें दोबारा मुख्यमंत्री चुना गया। डॉ. परमार ने जहाँ प्रदेश में कृषि, बागबानी, बिजली उत्पादन, उद्योगों, खेल गतिविधियों को बढ़ावा दिया, वहीं उन्होंने शिक्षा तथा सड़कों के विस्तार के लिए अथक प्रयास किए।

उन्होंने हिमाचल प्रदेश के लोगों को शान और स्वाभिमान से जीने की राह दिखाई। उन्होंने पहाड़ी जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं छोड़ा था जहाँ कुछ नया न किया हो। वह कहा करते थे कि सड़कें प्रदेश की भाग्य रेखाएं हैं। उनकी सोच पहाड़ों पर सड़क की अनन्त रेखाएं बिछाने की थी। हिमाचल प्रदेश बनने के बाद जब वह मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए तभी से प्रदेश को सजाने संवारने में जुट गए। राज्य में सड़कों और बिजली वितरण का जो जाल बिछा था वो उन्ही की दूरदृष्टि का नतीजा है। एक ओर वह पहाड़ों पर विभागीय अधिकारीयों को लेकर सड़क की रेखाएं निर्धारित करते थे और दूसरी ओर वहां के लोगों में पहाड़ों पर जीवन जीने का आत्मविश्वास भी जागता था।

पिछले 50 वर्षो में पूरे प्रदेश में सडकों का जाल बिछा है। जहां तक डॉ. परमार के सिरमौर जिला का प्रश्न है तो जिला में 1971 के दौरान कच्ची सड़कों की लम्बाई 650 किलोमीटर और पक्की सड़कों की लम्बाई 250 किलोमीटर थी, वहीं जनवरी 2021 तक कच्ची सड़कों की लम्बाई 1285 किलोमीटर और पक्की सड़कों की लम्बाई 1885 किलोमीटर है। जिला सिरमौर में 1971 के दौरान केवल 3 बड़े पुल थे लेकिन 2021 में इनकी गिनती 80 तक पहुंच गई है। आज सिरमौर में बिजली के कुल 161085 उपभोगता हैं तथा जिला में 33 केवी एचटी लाइन की लम्बाई 333.156 किलोमीटर है जबकि 11 केवी एचटी लाइन की लम्बाई 2657.857 किलोमीटर है। इसी प्रकार, एलटी लाइन की लम्बाई 5597.452 किलोमीटर है।

खेती और बागबानी के क्षेत्र में आई आधुनिकता की वजह से पैदावार में बढ़ोतरी हुई है। कृषि के क्षेत्र में भी पूरे प्रदेश में भरपूर विकास हुआ है। सिरमौर की बात करें तो 1971 के दौर में जिला में सब्जियों की खेती का क्षेत्र 1000 हेक्टेयर था जो अब 15148 हेक्टेयर है। इसी प्रकार, कुल फसल उत्पादन भी 75300 मीट्रिक टन से बढ़कर 417171 मीट्रिक टन तक पहुँच गया है। औसत फसल उत्पादकता भी 11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 54 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो चुकी है। बागवानी के क्षेत्र में भी सिरमौर बहुत आगे आया है। 50 वर्ष पहले जिला में बागबानी के तहत बहुत कम क्षेत्र था लेकिन आज तकरीबन 6351.38 हेक्टेयर क्षेत्र

बागबानी के तहत है जिसमें लगभग 5808 मीट्रिक टन का उत्पादन होता है। सिरमौर में हमेशा से ही पीने के पानी की परेशानी का लोगों ने सामना किया था लेकिन आज जिला में 1250 पेयजल योजनाओं का निर्माण किया गया है जिससे 975 गांवों की 4459 बस्तियों के 84569 घरों को स्वच्छ पेयजल प्रदान किया जा रहा है जिससे कुल 600932 जनसंख्या लाभान्वित हो रही है। सिरमौर हिमाचल प्रदेश में दूसरा सबसे बड़ा औद्योगिक जिला है। सिरमौर में सर्वप्रथम 1875 ई में तत्कालीन राजा शमशेर सिंह ने नाहन फाउंडरी की स्थापना की थी। 1971 के दौरान नाहन फॉउंडरी अर्धसरकारी इकाई थी जिसमें लगभग 1000 लोग महाप्रबंधक की निगरानी में कार्य कर रहे थे। अक्टूबर 1988 में नाहन फॉउंडरी प्रदेश सरकार के अधीन आ गई और सभी कर्मियों का समावेश लोक निर्माण विभाग में हुआ। 1949 में नाहन में बिरोजा फैक्ट्री की शुरुआत हुई थी तथा पहली अप्रैल 1974 को फैक्ट्री की कमान हिमाचल प्रदेश राज्य वन निगम के हाथों में चली गई थी। नाहन के बनोग में 60 बीघा क्षेत्र में फैली बिरोजा फैक्ट्री में आधुनिकता के इस दौर में 47 कर्मी कार्यरत हैं जबकि 1974 के दौरान 132 कर्मी कार्यरत थे। वर्तमान में नाहन, काला अम्ब और पांवटा साहिब में औद्योगिक क्षेत्र स्थापित हैं। 31 मार्च 2011 में सिरमौर जिला में 442 कारखाने थे, जिनमें 33884 कर्मचारी कार्यरत थे। आज सिरमौर में 1245 सूक्षम, छोटे, मध्यम और बड़े उद्योग हैं जिनमें 4000 करोड़ का पूंजीगत निवेश है और 27422 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार हासिल है।

1971 में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा बुढ़ापा पेंशन 25 रुपये प्रति माह दी जा रही थी। समय के साथ बदलाव आता गया और आज बुढ़ापा पेंशन 1500 रुपये प्रति माह दी जा रही है। सिरमौर में 38097 लोगों को विभिन्न श्रेणियों में सामाजिक सुरक्षा पेंशन दी जा रही है। डॉ. परमार ने वन संरक्षण की दिशा में भी कारगर कदम उठाये थे। उनके इन्ही कदमों की वजह से आज सिरमौर का कुल वन आवरण 49.23 प्रतिशत है जोकि बाकी जिलों में सबसे अधिक है। वातावरण की शुद्धि और हरियाली को बढ़ावा देने के लिए सिरमौर में पंचवटी पार्क स्थापित किये जा रहे हैं। पौधरोपण के साथ लोगों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए हाल ही में नींबू के एक लाख पौधे नाहन विधानसभा क्षेत्र में रोपित किये गए। इसके साथ ही प्रमुख पर्यावरणविद किंकरी देवी, जिन्होंने अकेले ही पर्यावरण की सुरक्षा के लिए माइनिंग माफिया से लड़ाई लड़ी थी, उनके नाम पर एक पार्क संगड़ाह के मढोली गांव में बनाया जा रहा है। आज सिरमौर ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। पिछले तीन सालों में सिरमौर को राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार हासिल हुए हैं। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं कार्यक्रम के तहत उत्कृष्ट कार्य करने, पॉलीब्रिक्स के माध्यम से प्लास्टिक कचरा प्रबंधन, मनरेगा के तहत जल संग्रहण में उत्कृष्ट कार्य करने, किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत शिकायत निवारण के अतिरिक्त प्रधानमंत्री कार्यालय में बन रही कॉफी टेबल बुक में पॉलीब्रिक्स को स्थान मिलने से सिरमौर को राष्ट्रीय स्तर पर अलग पहचान मिली है।

जिला लोक सम्पर्क अधिकारी, सिरमौर स्थित नाहन

मो. 0 98884 36024

विकास

विकास के नए सोपान तय करता हिमाचल

◆ वेद प्रकाश

आई.जी.एम.सी. शिमला
नया ओ.पी.डी. ब्लॉक

इस वर्ष हिमाचल दिवस का पावन अवसर एक ऐसे समय में आया है जब पूरा प्रदेश, पूर्ण राज्यत्व स्वर्ण जयंती को हर्षोल्लास के साथ मना रहा है। स्वर्ण जयंती आयोजनों के उत्साह के बीच हिमाचल दिवस की उमंग, निःसंदेह हर हिमाचलवासी के जीवन में नव स्फूर्ति और नव ऊर्जा का संचरण करती है। करीब सात दशक पूर्व 15 अप्रैल 1948 के ऐतिहासिक दिन 30 छोटी बडी रियासतों के विलय से हिमाचल प्रदेश चीफ कमिश्नर प्रोविन्स के रूप में अस्तित्व में आया। तदोपरांत इसने अपने अस्तित्व से लेकर वर्तमान मुकाम हासिल करने तक कड़ा संघर्ष किया। प्रदेश ने इस अवधि के दौरान विकास के नए सोपान पार करते हुए देश के समक्ष पर्वतीय क्षेत्रों के विकास का अदर्श प्रस्तुत किया है। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में वर्तमान प्रदेश सरकार ने राज्य में अपने गत सवा तीन साल के शासनकाल में दूरदर्शी नीतियों एवं जन कल्याणकारी कार्यक्रमों के माध्यम से हिमाचल को विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। हालांकि इस अवधि में से एक साल तो विश्व में इस सदी की सबसे बड़ी कोरोना महामारी से जुझने में व्यतीत हो गया, लेकिन सरकार को जितना भी समय मिला उस अवधि में कोरोना की तमाम बाधाओं के बावजूद विकास प्रक्रिया को किसी भी स्तर पर प्रभावित नहीं होने दिया। प्रदेश में मौजूद स्वास्थ्य के सुदृढ़ नेटवर्क के बलबूते आज हम कोरानाकाल जैसे मुश्किल समय में भी घर घर जाकर कोरोना मामलों का पता लगाने के साथ साथ लोगों की स्वास्थ्य जानकारी में जुटाने में सक्षम है। पहले 'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' फिर 'मुख्य मंत्री हिम सुरक्षा' अभियान के दौरान सरकार ने यह कर दिखाया है। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में अन्य एहतियाती उपायों के साथ-साथ अब हमारे पास टीकाकरण एक ऐसा प्रमुख उपाय है जिससे हम कोविड की जंग को जीत सकते हैं। प्रदेश भर में 16 जनवरी, 2021 से व्यापक टीकाकरण अभियान शुरू किया गया जिसके तहत लाखों लोगों को टीका लगाया जा चुका है। प्रदेश के सभी वयस्कों का टीकाकरण मई माह से किया जा रहा है। मई 2021 से अब प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते हुए इस अवधि में 'हिमकेयर योजना', 'सहारा योजना', 'अटल आशीर्वाद योजना', 'मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोष', 'मुख्यमंत्री निरोग योजना', 'मुख्यमंत्री निशुल्क दवाई योजना' तथा 'टेलिमेडिसन सुविधा' जैसी नई योजनाएं आरंभ की गई। स्कूली बच्चों में दृष्टि दोष की समस्या के निवारण के लिए इस वर्ष एक नई 'मिशन दृष्टि' योजना आरंभ की गई है जिसके तहत बच्चों की आंखों की जांच एवं निःशुल्क चश्मा प्रदान किया जाएगा। केन्द्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना में कवर न होने वाले गरीब लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रदेश में चलाई जा रही हिमकेयर योजना के तहत पंजीकृत लोंगों की संख्या 4.63 लाख है और प्रदेश में अब तक 1.33 लाख लाभार्थियों को 131 करोड़ रुपये की निशुल्क स्वास्थ्य सुविधाओं से लाभान्वित किया गया। सहारा योजना के तहत लगभग 12 हजार लाभार्थियों को 21 करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई है। अब प्रदेश के युवाओं को चिकित्सा शिक्षा के लिए अन्य राज्यों में नहीं जाना पडता। प्रदेश में सरकारी क्षेत्र के छः मेडिकल कॉलेजों तथा एक निजी क्षेत्र के मेडिकल कॉलेज से हर

वर्ष सैकड़ों युवा डॉक्टर बन कर निकल रहे हैं जिससे प्रदेश के स्वास्थ्य संस्थानों में डॉक्टरों के रिक्त पड़े पदों को भरने में सहायता मिली है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स) कोठीपुरा, बिलासपुर तथा पीजीआई सेटेलाइट सैंटर ऊना जैसे विश्व स्तरीय संस्थान लोगों को घरद्वार के नजदीक स्वास्थ्य की विशेषज्ञ एवं सुपर स्पेशियलिटी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इस समय के किसी भी बड़े सरकारी अस्पताल में पैट स्कैन की सुविधा उपलब्ध नहीं है। इस कमी को दूर करने के लिए आईजीएमसी अस्पताल शिमला में पैट स्कैन मशीन स्थापित की जा रही है। इसके अलावा टांडा मेडिकल कालेज में सीटी स्कैन व एमआरआई मशीनें तथा हमीरपुर व नाहन मेडिकल कॉलेजों में सीटी स्कैन मशीनें लगाई जा रही हैं। प्रदेश सरकार ने वर्ष 2021-22 के बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए 3016 करोड़ रुपये का प्रावधान कर लोगों को घरद्वार पर स्वास्थ्य सुविधाओं को मुहैया करवाने की दिशा में कदम आगे बढ़ाए हैं। हिमाचल प्रदेश एक ऐसा पहाड़ी राज्य है जिसकी गणना शिक्षा के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में होती है। साक्षरता में केरल के बाद हिमाचल का स्थान आता है। शिक्षा के निरंतर सुदृढ़ होते नेटवर्क का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि राज्य में शिक्षण संस्थानों की संख्या वर्ष 1971 में 4963 से बढ़कर आज 15,553 तक पहुंच गई है और साक्षरता दर 31.3 प्रतिशत से बढ़ कर 82.80 प्रतिशत तक पहुंच गई है। प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में गत सवा तीन वर्षों में अभूतपूर्व विकास हुआ है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति-2020 को राज्य में लागू किया गया है, जिसे देशभर में सर्वप्रथम लागू करने में हिमाचल ने पहल की है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आज राज्य में विश्व स्तरीय संस्थानों का सुदृढ़ नेटवर्क मौजूद हैं। आई. आई. आई. टी. ऊना, आई. आई. टी. मण्डी, आई आई एम धौलाकुंआ, सेंट्रल युनिवर्सिटी धर्मशाला जैसे स्तरीय शिक्षण संस्थान आज विद्यार्थियों को राज्य के भीतर ही स्तरीय उच्च शिक्षण सुविधांए प्रदान कर रहे हैं। प्रदेश सरकार ने शिक्षा क्षेत्र के लिए वर्ष 2021-22 के बजट में 8024 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है।

प्रदेश सरकार ने राज्य में महिला सशक्तीकरण की दिशा में अनेक कारगर कदम उठाए हैं। इसी कड़ी में प्रदेश में कार्यान्वित की जा रही 'गृहिणी सुविधा योजना' के तहत अब तक 2.92 लाख पात्र परिवारों को निशुल्क गैस कुनेक्शन वितरित किए जा चुके हैं। वर्ष 2021-22 के दौरान भी इस योजना के तहत पात्र परिवारों को गैस कुनेक्शन तथा मुफ्त रिफिल की सुविधा को जारी रखा जाएगा और इसके लिए 20 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। हिमाचल अब देश का पहला ऐसा राज्य है जहां शतप्रतिशत परिवारों के पास गैस कुनेक्शन हैं और गृहिणियो की रसोई को धुआंमुक्त बनाने वाला भी प्रथम राज्य है। वर्ष 2021-22 के बजट में बेटियों के लिए आरंभ की गई 'शगुन' नामक नई योजना के दायरे को बढ़ाते हुए इसके अन्तर्गत अनुसूचित जाति, जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के साथ साथ सामान्य वर्ग के बी. पी. एल. परिवारों की बेटियों को भी विवाह के समय 31 हजार रुपये का अनुदान दिया जाएगा। प्रदेश में वरिष्ठ महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा का दायरा बढ़ाने के उद्देश्य से 'स्वर्ण जयंती नारी संबल योजना' आरंभ की गई है जिसके तहत 65 से 69 वर्ष तक आयु की सभी पात्र महिलाओं को एक हजार रुपये प्रति माह की दर से पैंशन दी जाएगी। कामकाजी महिलाओं के बच्चों को डे केयर सुविधा देने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व जन भागीदारी से जिला मुख्यालय पर क्रैच सुविधाओं को प्रोत्साहित किया जाएगा। पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों को विकास की भाग्य रेखाएं कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश एक ऐसा पहाड़ी राज्य है जहां लोगों को हवाई एवं रेल नेटवर्क के अभाव में यातायात के लिए सड़कों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। विगत कई दशकों से राज्य ने सड़क निमार्ण के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। प्रदेश में वर्ष 1948 में 288 किलोमीटर सड़कों के मुकाबले आज सड़कों की लंबाई बढ़कर 38470 किलोमीटर हो गई है। 97 प्रतिशत से भी अधिक पंचायतें सड़कों से जुड़ चुकी हैं। शेष पंचायतों को शीघ्र ही सड़क से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रदेश के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना वरदान साबित हुई है जिसके माध्यम से इस पहाड़ी राज्य में सड़क नेटवर्क को विस्तार देने में सफलता मिली है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेजी द्वारा आरंभ इस महत्त्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत अब तक राज्य में 5378 करोड़ रुपये की लागत से 2896 सड़क कार्यो के माध्यम से 17716 किलोमीटर लंबी सड़कों का निमार्ण किया गया है। प्रदेश के जन जातीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ने के लिए सड़कों के साथ साथ सुंरगों के निमार्ण को प्राथमिकता के आघार पर पूरा किया जा रहा है। देश के लिए सामरिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण अटल टनल रोहतांग 3 अक्तूबर, 2020 को राष्ट्र को समर्पित हो जाने से लाहौल-स्पीति के लोगों के आर्थिक परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव आएगा।

वर्तमान प्रदेश सरकार ने राज्य में औद्योगिक व्यवसाय में सुगमता लाने के प्रयासों के तहत विभिन्न प्रक्रियाओं को सरल बनाया है। विभिन्न विभागों की सेवाओं को ऑनलाइन किया गया है। प्रदेश सरकार के सार्थक प्रयासों से दवाई उद्योग में एशिया का हब बन कर उभरा है। आज जब कोरोना काल में पूरे विश्व में दवाइयों की जरूरत थी तो उसे हिमाचल के दवाई उद्योग ने पूरा किया। आज प्रदेश में हजारों औद्योगिक इकाइयां कार्य कर रही हैं जिनमें भारी निवेश के साथ लाखों बेरोजगार युवाओं को रोजगार मिल रहा है। प्रदेश में औद्यगिक विकास के क्षेत्र में वर्तमान प्रदेश का अहम योगदान रहा है। इस दिशा में प्रदेश सरकार के सार्थक प्रयासों का ही परिणाम है कि धर्मशाला ग्लोबल इन्वेस्टर मीट में

96,720 करोड़ रुपये निवेश के 703 एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किए गए। इस आयोजन के मात्र एक महीनों के उपरांत ही 13,656 करोड़ रुपये के 204 समझौता ज्ञापनों के ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह का सफल आयोजन कर हिमाचल में ग्लोबल निवेश के द्वार खोले है। इस कड़ी में दूसरा ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह भी शीघ्र आयोजित किया जा रहा है। प्रदेश सरकार द्वारा राज्य के औद्योगिक क्षेत्र में युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर सृजित करने के लिए कार्यान्वित की जा रही 'मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना' के तहत अब तक विभिन्न बैंकों ने तीन हजार ऋण मामले स्वीकृत किए हैं। इससे लगभग दस हजार रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं। सरकार ने इस योजना के तहत परियोजना लागत की वर्तमान में 60 लाख की सीमा को बढ़ाकर एक करोड़ रुपये तथा अनुदान सीमा को बढ़ाकर 60 लाख रुपये किया गया है।

हिमाचल आज एक आग्रणी जलविद्युत उत्पादक राज्य है और यहां बहने वाली सदाबहार नदियों में 27 हजार मेगावाट से भी अधिक जल विद्युत उत्पादन क्षमता मौजूद है जिसमें से अभी तक 10756 मेगावाट क्षमता का दोहन किया जा चुका है। हिमाचल को गत तीन वर्षों में 3153.35 करोड़ रुपये का राजस्व जल विद्युत परियोजनाओं से मिलने वाली मुफ्त और इक्वटी पावर बेच कर प्राप्त हुआ है, जिससे प्रदेश की आर्थिकी मजबूत हुई है।

प्रदेश के लिए यह खुशी की बात है कि केन्द्र सरकार ने राज्य की समस्त जलविद्युत परियोजनाओं को नवीकरणीय ऊर्जा की श्रेणी में शामिल कर लिया है। प्रदेश सरकार के ऊर्जा दृष्टि पत्र में वर्ष 2030 तक दस हजार मेगावाट अतिरिक्त विद्युत क्षमता का दोहन नवीकरणीय ऊर्जा के रूप में करने का लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश में सौर ऊर्जा के समुचित दोहन उपायों के तहत सौर ऊर्जा रूफ टॉप संयंत्र स्थापित किए जा रहे है। सरकार ने राज्य के सभी चिकित्सा एवं शिक्षा संस्थानों में चरणबद्ध तरीके से ग्रिड से जुड़े रूफ टॉप सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने का निर्णय लिया है।

प्रदेश सरकार लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए जनमंच कार्यक्रम के माध्यम से उनके घर द्वार पहुंची है। कोरोना काल में लॉकडाऊन के दौरान कुछ समय के लिए बन्द रहने के बावजूद यह कार्यक्रम आज भी लोगों में बेहद सफल एवं लोकप्रिय है। अब तक आयोजित कुल 211 कार्यक्रमों में सुनवाई हेतु प्राप्त कुल 51232 शिकायतों में से अब तक 47 हजार से भी अधिक का समाधान किया जा चुका है। यही नहीं जो लोग शिकायत निवारण के लिए जनमंच में नहीं आ सकते, उनके लिए सरकार ने मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हैल्पलाहन 1100 आरंभ की है जिसमें अब तक प्राप्त 1.68 लाख शिकायतों में से 1.08 लाख का निवारण किया है। हिमाचल एक कृषि प्रधान राज्य है। कोरोनाकाल में कृषि ही एक ऐसा क्षेत्र था जिसने हमारी अर्थव्यवस्था को सहारा दिया। आज प्रदेश में 9.55 लाख हेक्टेयर में कृषि की जा रही है और खाद्यान्न उत्पादन 16.36 लाख मीट्रिक टन (वर्ष 2019-20) तक पहुंच गया है। प्रदेश के पांच जिलों में जापान की सहायता से चलाई जा रही जायका परियोजना के पहले चरण की सफलता को देखते हुए इसके दूसरे चरण को वर्ष 2021-22 के दौरान सभी बारह जिलों में चलाया जाएगा। लगाभग 1055 करोड़ रुपये की इस परियोजना के तहत फसल विविधि ाकरण और वैल्यू एडिशिन के माध्यम से किसानों की आमदनी को दोगुना करने के लिए कृषक विकास संघों से जुड़े किसानों को प्रशिक्षण तथा मंडियों का आधुनिकीकरण किया जाएगा। प्रदेश में सफलतापूर्वक चलाई जा रही 'प्राकृतिक खेती- खुशहाल किसान' योजना के तहत सुभाष पालेकर प्राकृतिक कृषि के उत्साहवर्धक परिणाम देखने को मिले हैं। प्रदेश में इस पद्धति को अभी तक 105218 किसान अपना चुके हैं और इस वर्ष पच्चास हजार नये किसान परिवारों को इसके साथ जोड़ा जाएगा। इस योजना के लिए इस वर्ष 20 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। पहाड़ी कृषि पद्धति के परम्परागत बीजों के संरक्षण हेतु नई 'स्वर्ण जयंती परम्परागत बीज संरक्षण एवं संवर्धन योजना' आरंभ की जा रही है। इसके तहत पहाड़ी दालों, पारम्परिक अनाजों और बेमौसमी फसलों के लिए बीज बाजार तक एक व्यापक कार्य योजना तैयार की जाएगी। इसके अलावा किसानों को उनकी फसल उपज के विपणन हेतु मंडियों के विस्तार और आधुनिकीकारण के लिए 200 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। हिमाचल प्रदेश को आज सेब राज्य के रूप में जाना जाता है। सरकार द्वारा अब इसे देशभर में फल राज्य के रूप में विकसित करने की दिशा में कारगर प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए प्रदेश के बागवानों को विभिन्न प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप आज यहाँ 2,32,139 हेक्टेयर क्षेत्र में बागवानी की जा रही है और प्रति वर्ष लगभग 8.45 लाख मीट्रिक टन फलों का उत्पादन हो रहा है। बागबानों को उत्तम किस्म के उच्च घनत्व वाले पौधे उपदान पर देने के लिए स्वर्ण जयंती समृद्ध बागबान योजना आरंभ की जा रही है। लगभग एक हजार करोड़ रुपये की विश्व बैंक पोषित बागबानी विकास परियोजना के तहत इस वर्ष पांच लाख पौधों का आयात, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी में 'जेने रिपोजटरी' की स्थापना तथा जरोल-टिक्कर, रोहडू, ओडी, पतली कूहल व टुटूपानी में सी ए स्टोर व पैक हाऊस का निर्माण किया जाएगा। कृषि एवं बागबानी के क्षेत्र में सरकार द्वारा किए जा रहे इन कारगर प्रयासों से प्रदेश में किसानों की आमदनी को दोगुना करने के प्रयासों को बल मिलेगा। प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में लोगों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान एवं जन कल्याण की दिशा में किए जा रहे कारगर प्रयासों के परिणामस्वरूप आज यह पहाड़ी प्रदेश विकास के हर क्षेत्र में नए सोपान तय कर रहा है।

विद्युत क्षमताओं के समुचित दोहन से बना देश का ऊर्जा राज्य

◆ नर्बदा कंवर

हिमाचल प्रदेश प्राकृतिक संसाधन से भरपूर राज्य है। प्रदेश की पांच सदाबहार नदियों में 27,436 मेगावाट जल विद्युत दोहन की क्षमता विद्यमान है। देश की तीन अग्रणी ऊर्जा एजेंसियां एस.जे.वी.एन.एल, एनटीपीसी, एनएचपीसी राज्य में पनबिजली का दोहन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सरकार इस क्षेत्र के महत्त्व को भली भांति समझती है। हिमाचल न केवल अपने राज्य की विद्युत आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि पड़ोसी राज्य की विद्युत आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर रहा है, जो प्रदेश के लिए राजस्व प्राप्ति का मुख्य साधन भी है।

यदि हम प्रदेश के विद्युत इतिहास पर नजर डालें तो ज्ञात होता है कि हिमाचल में वर्ष 1948 के दौरान बिजली की आपूर्ति केवल तत्कालीन रियायतों की राजधानियों में ही थी और उस समय कनेक्टेड लोड 500 के.वी. से भी कम था। लोक निर्माण विभाग के तहत अगस्त, 1953 में पहला विद्युत डिविजन बनाया गया था। इसके उपरान्त अप्रैल, 1964 में एम.पी.पी. और ऊर्जा का एक विभाग बनाया गया। हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड का गठन सितम्बर, 1971 को विद्युत आपूर्ति अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार किया गया और इसे हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटेड के रूप में पुनर्गठित किया गया। हिमाचल प्रदेश का पूर्णरूप से विद्युतिकरण वर्ष 1988 में हुआ जो ऊर्जा क्षेत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है।

आर्थिक उन्नति के लिए निवेश एक बुनियादी कारक माना जाता है। किसी भी राष्ट्र का अर्थ प्रबन्धन इस पर निर्भर करता है। आज पूरा संसार एक वैश्विक गांव में बदल चुका है जहां सभी देश विकास के लिए किसी न किसी रूप में एक दूसरे पर निर्भर है। आर्थिक उन्नति के लिए प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से देशी व विदेशी निवेशकों पर हमेशा निर्भरता रहती है। जिसके लिए हर राज्य अपनी जरूरतों के अनुसार नीतियां एवं कार्यक्रम बनाता है। हिमाचल प्रदेश एक छोटा राज्य होने के बावजूद विद्युत, पर्यटन, उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी सेवा क्षेत्र, खाद्य प्रसंस्करण, फार्मा जैसे क्षेत्रों में निवेश की अपार संभावनाएं हैं। प्रदेश सरकार राज्य में उद्यमियों को इन क्षेत्रों में अपनी इकाइयां स्थापित करने के लिए हरसंभव सहायता प्रदान कर रही है।

प्रदेश में जल विद्युत परियोजनाओं को अधिक से अधिक स्थापित करने के लिए तथा निवेशकों को इस क्षेत्र में आकर्षित करने के लिए नीतियों व नियमों का सरलीकरण इस बात का द्योतक है। आबंटित परियोजनाओं के लिए 12 वर्षों की अवधि के लिए नि:शुल्क पॉवर रॉयल्टी दी जा रही है साथ ही अपफ्रंट प्रीमियम तथा केपेसिटी एडिशन चार्जिज में भी कमी की गई है जिससे प्रदेश में हाइड्रो क्षेत्र में सतत विकास में सहायता मिलेगी।

जल विद्युत पर अधिक लागत के कारण निवेशक प्रदेश में आने के लिए हिचकिचा रहे थे परन्तु केन्द्र व राज्य सरकार की ओर से नई जलविद्युत नीति में सार्थक परिवर्तन करने से निवेशकों के हितों का ध्यान रखा गया। निवेशकों को कई तरह की रियायतें देने का निर्णय लिया गया। सरकार ने ऊर्जा उत्पादकों को राहत देते हुए लोकल एरिया डिवेल्पमेंट आथॉरिटी (लाडा) फंड को प्रोजेक्ट रिपोर्ट में न जोड़ने का फैसला लिया है। अब यह फंड कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (सी.एस.आर.) के माध्यम से किया जायेगा। पहले ऊर्जा उत्पादकों को लाडा फंड के तहत परियोजना की लागत का 1.5 प्रतिशत देना पड़ता था। नवम्बर, 2020 में सरकार ने परियोजना निर्माणकर्ताओं को एक मुश्त रियायत प्रदान करने का फैसला लिया था ताकि लम्बित पड़ी जल विद्युत परियोजनाओं को शीघ्र कार्यान्वित किया जा सके।

प्रदेश में निवेश बढ़े इसके लिए केन्द्र सरकार ने प्रोजेक्ट लगाने के लिए 40 हेक्टेयर तक की वन स्वीकृतियां क्षेत्रीय कार्यालय के माध्यम से ही मंजूर करने का निर्णय लिया है। हाइड्रो पावर को रिनुएबल एनर्जी घोषित किया गया है जिससे अब ऊर्जा उत्पादकों को बैंकों से 12 की जगह 20 सालों के लिए ऋण मिल सकेगा। प्रदेश की समस्त पनविद्युत परियोजनाओं को नवीकरणीय ऊर्जा की श्रेणी में शामिल किया गया है।

प्रदेश के दुर्गम क्षेत्रों में बिजली की समस्या का समाधान करने के लिए सरकार सौर ऊर्जा को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दे रही है, जिसके लिए विभिन्न योजनाएं कार्यान्वित की जा रही है। केन्द्र सरकार द्वारा 99533 मेगावाट नवीकरण सौर ऊर्जा दोहन का लक्ष्य

निर्धारित किया गया है जिसमें राज्य को 2022 तक 776 मेगावाट सौर ऊर्जा दोहन का लक्ष्य हासिल करना है। प्रदेश सरकार ने राज्य में विद्यमान सौर ऊर्जा क्षमता के समुचित दोहन के लिए 'हिमाचल प्रदेश सौर ऊर्जा नीति-2016' लागू की है। राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थापन के अनुसार प्रदेश में 34 गीगावाट से भी अधिक सौर ऊर्जा क्षमता विद्यमान है। और सरकार ने वर्ष 2022 तक 700 मेगावाट से अधिक सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। प्रदेश में उपलब्ध सौर ऊर्जा क्षमता के दोहन के लिए प्रदेश में बड़े पैमाने पर निवेश किया जा रहा है।

सौर संयंत्रों को स्थापित करने के लिए कांगड़ा व ऊना जिलों में भूमि का चयन किया जा चुका है। प्रदेश के 250 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादित करने के लिए 1600 करोड़ रुपये तथा राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप 700 मेगावाट सौर ऊर्जा का लक्ष्य हासिल करने के लिए 5000 करोड़ रुपये के निवेश की आवश्यकता है। इतने बड़े निवेश के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी बहुत आवश्यक है। इसलिए प्रदेश में सरकारी भूमि पर सोलर पार्क स्थापित करने को प्राथमिकता दी जाएगी।

हिमाचल प्रदेश में वांगतू से काजा सब स्टेशन तक सौर ऊर्जा पहुंचाने की राह साफ हो गई है। हाल ही में वर्ल्ड बैंक की प्री फिजिबिलिटी रिपोर्ट में 880 मेगावाट के सोलर पार्क को हरी झंडी मिल गई है। ट्रांसमिशन लाइन निकालने के लिए टेक्निकल फिजिबिलिटी को भी सैद्धांतिक मंजूरी मिल गई है। इस कार्य पर 1100 करोड़ से अधिक खर्च होगा। इसका निर्माण एस. जे. वी. एन. एल. करेगा। सोलर पार्क के लिए जमीन कम होने से इसकी क्षमता 120 मेगावाट घटी है। पहले एक हजार मेगावाट का पार्क बनाया जाना प्रस्तावित था। सोलर पार्क के लिए बनाई जा रही ट्रांसमिशन लाइन में जंगी थोपन जल विद्युत परियोजना को भी साथ जोड़ा जाएगा। इससे पहले एसजेवीएनएल ने रामपुर में सबसे बड़ा सौर ऊर्जा पार्क स्थापित किया था।

हिमाचल में हिम ऊर्जा विभाग के माध्यम से 66 सरकारी भवनों की छतों पर सोलर प्लांट स्थापित किए जा चुके हैं। प्रदेश में रूफटॉप सोलर पीवी (यू.एस.आर.टी.पी.वी.) के प्रसंस्करण के लिए ऑनलाइन पोर्टल शुरू किया गया है, जो उपभोक्ताओं को रूफटॉप सौर प्रणाली के लिए ऑनलाइन आवेदन करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। इच्छुक हितधारक इस पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन भी कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त नई सौर ऊर्जा नीति के तहत राज्य बिजली बोर्ड के उपभोक्ता भी अपने परिसरों एवं भवनों की छतों पर 1 किलोवाट से 5 मेगावाट तक सोलर पीवी प्लांट स्थापित कर सकेंगे। राज्य विद्युत बोर्ड उपभोक्ताओं से इसे 5 रुपये प्रति यूनिट की दर से खरीदेगा जिससे इस क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा मिलेगा। राज्य सरकार 500 किलोवॉट से 5 मेगावाट क्षमता तक के सोलर प्लांट स्थापित करने के लिए बेरोजगार युवाओं और किसानों को प्रोत्साहित कर रही है।

भारत सरकार की सोलर पार्क योजना के तहत प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर 50 मेगावाट से 100 मेगावाट क्षमता के माध्यम से सोलर पार्क स्थापित किए जा रहे हैं। इसके लिए सरकार इण्डस्ट्रियल इस्टेट की तर्ज पर सौर ऊर्जा पार्क की स्थापना के लिए भूमि बैंकों का सृजन करेगी। सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने वाले उद्यमियों के लिए 70 प्रतिशत रोजगार स्थानीय हिमाचल वासियों को देना अनिवार्य होगा। इसके अतिरिक्त बीबीएमबी भी जल्द ही 107 मेगावाट का अतिरिक्त ऊर्जा उत्पादन शुरू करेगा। 40 सोलर रूफटॉप पावर प्लांट तैयार कर दिये गये हैं तथा 20 पर कार्य जारी है। ऊर्जा क्षेत्र में आये बदलाओं के दृष्टिगत तथा इस क्षेत्र की समस्याओं के निदान के लिए सरकार जल्द ही 'स्वर्ण जयन्ती ऊर्जा नीति' बनाएगी, जिसमें हाईब्रिड पॉवर प्रोजेक्टस भी शामिल होंगे। सरकार ऊर्जा दृष्टि पत्र-2030 भी प्रस्तुत करेगी, जिसमें 2030 तक 10 हजार मेगावाट अतिरिक्त क्षमता के दोहन का लक्ष्य रखा गया है।

कोल डैम

जलविद्युत

भूरि सिंह जलविद्युत परियोजना का अनूठा इतिहास

◆ नरेंद्र कुमार शर्मा

हमारा हिमाचल प्रदेश विविधताओं और सुन्दरता से भरा पड़ा है। यहां की नदियां, पहाड़, मैदान, झरने और जंगल इसकी सुन्दरता को चार चांद लगाते हैं। यहां पानी प्रचुर मात्रा में है। यह हिमाचल को भगवान की ऐसी देन है जिससे हिमाचल वासी अपनी प्यास बुझाने व सिंचाई करने के साथ-साथ बिजली तैयार करते हैं। यहां पर बिजली बनाने का इतिहास 113 वर्ष पुराना है जिसका अनूठा उदाहरण भूरीसिंह जल विद्युत परियोजना है। सन 1908 में हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले के तत्कालीन शासक भूरि सिंह ने हाइड्रो पावर हाउस (35 किलोवाट-डीसी) का निर्माण करवाकर चम्बा का नाम रोशन किया। भूरी सिंह जलविद्युत परियोजना के सुचना पट्ट में इस परियोजना की जानकारी दी गई है। हांलाकि कई जगहों पर इस चीज का उल्लेख भी है कि एशिया में सबसे पहले बिजली हिमाचल प्रदेश के चम्बा में आई थी लेकिन इसके पुख्ता प्रमाण नहीं है। इसकी स्थापना के बाद से ही पावरहाउस में बिजली उत्पादन का सिलसिला जारी है। पावरहाउस में उत्पादित बिजली की आपूर्ति शहर के विभिन्न हिस्सों में की जाती है। वर्तमान में बिजली बोर्ड ने इस पावरहाउस को आउटसोर्स कर निजी हाथों में सौंप दिया है। फिर भी उत्पादित बिजली की खरीद फरोख्त बोर्ड के माध्यम से होती है। इस पावरहाउस में रोजाना 6000 यूनिट विद्युत उत्पादन होता है। उस वक्त पावरहाउस को बनाने में 2.75 लाख रुपये खर्च आया था। 1938 तक इस स्टेशन की क्षमता 35 किलोवाट-डीसी यानि लगभग 47 ब्रेक हाउस पावर थी। एक और रोचक बात यह है कि वर्तमान में बना भूरीसिंह पावरहाउस शुरू में यहां से करीब 125 किलोमीटर दूरी पर बनाया गया था। जिसे वर्ष 1938 में तत्कालीन शासक राजा शाम सिंह ने यहां शिफ्ट किया था। वर्ष 1938 में इस स्टेशन की क्षमता 100 किलोवाट डीसी और बढ़ा दी गई । 1958 में 100 किलोवाट (एसी) का एक और सेट लगाया गया। इसकी कुल क्षमता 250 किलोवाट हो गई। उस वक्त चम्बा से स्टेट इंजीनियर गुरुदिता राज महाजन इस पावरहाउस की देखरेख करते रहे। उन्होने अपने आफिस के दस्तावेजों में इस बात का जिक्र किया है कि जब वे चम्बा में मैट्रिक के पेपर की तैयारी कर रहे थे तो बिजली की रोशनी में पढ़ाई की और किसी काम से लाहौर गये तो कैरोसीन तेल के दिये की रोशनी में काम करना पड़ा। वर्ष 1985 में चम्बा के स्टेट इंजीनियर गुरुदिता राज महाजन के बेटे और एच पी एस सी बी के चौयरमैन कैलाश चन्द महाजन ने 50 लाख खर्च कर इसकी क्षमता 250 किलोवाट और बढ़ाई जो कि कुल 450 किलोवाट हो गई। वर्तमान में इसकी क्षमता 450 किलोवाट है। भूरीसिंह पावरहाउस साल नदी के किनारे पर बना है। यह नदी रावी में मिलती है। कई जगह इस बात का भी जिक्र है कि चम्बा में बिजली आने के कई साल बाद लाहौर में बिजली आई थी। इतने वर्ष पहले इस परियोजना का निर्माण अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है। यही कारण है कि आज हिमाचल प्रदेश बिजली निर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ दूसरे राज्यों को भी बिजली बेचता है। यह हमारी कमाई का मुख्य साधन है।

गांव भुजड़ू, तहसील जोगिन्द्र नगर, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश-175015, मो. 0 62834-20918

सौर ऊर्जा से जगमगाता हिमाचल

◆ पन्ना लाल शर्मा

ऊर्जा मानव जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। आर्थिक उत्थान में भी ऊर्जा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। परम्परागत ऊर्जा स्रोतों में प्रतिदिन हो रहे क्षय तथा पर्यावरण प्रदूषण को रोकने हेतु नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का दोहन अनिवार्य हो गया है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 1984-85 में भारत सरकार के सहयोग से प्रदेश मे एकीकृत ग्रामीण ऊर्जा कार्यक्रम चलाया गया।

तत्पश्चात इस कार्यक्रम को बढ़ावा देने तथा आम जनता में इसके प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्‌देश्य से 18 मार्च, 1989 को हिमऊर्जा का गठन किया गया , जिसका उद्‌देश्य प्रदेश में ऊर्जा की आपूर्ति, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से पूरा करने के लिए योजना बनाना और कार्यान्वित करना है, जिससे पारम्परिक स्रोतों पर ऊर्जा के लिए निर्भरता कम हो, पर्यावरण स्वच्छ रहे तथा ग्रामीणों के जीवन स्तर में बेहतरी आए।

हिमऊर्जा द्वारा अपनी यात्रा आम जनता को ऊर्जा दक्ष संयंत्रों तथा सौर ऊर्जा पर आधारित संयंत्र/उपकरण के वितरण से आरंभ की गई थी। तत्पश्चात् वर्ष 1995 में हिमऊर्जा को निजी क्षेत्र की भागीदारी से लघु जल विद्युत परियोजनाओं के कार्यन्वयन का कार्य भी सौंपा गया। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी हिमऊर्जा अपना वर्चस्व बनाए हुए है। यह अभिकरण वर्तमान में राज्य में लघु जल विद्युत परियोजनाओं और सौर ऊर्जा के साथ-साथ वैकल्पिक ऊर्जा के अन्य संसाधनों के दोहन से भी जुड़ा है। आरंभ से ही इस अभिकरण ने विद्युत रहित गाँवों और आम जनता पर ध्यान रखा और उन स्थानों को प्राथमिकता दी गई, जहां लोग वर्ष के अधिकतर महीनों में भारी बर्फबारी के कारण रोशनी व अन्य मुख्य साधनों से वंचित रहते हैं।

जनजातीय जिला किन्नौर के कुन्नू और चारंग गांवों का सौर ऊर्जा से विद्युतीकरण

जनजातीय जिला 'किन्नौर' के कुन्नू और चारंग गांव राष्ट्रीय उच्च मार्ग 205 (जंगी) से लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। वर्ष 2015 से पूर्व इन गांवों तक पहुंचने के लिए राष्ट्रीय उच्चमार्ग 205 (जंगी) से ठंगी तक वाहन योग्य मार्ग तथा ठंगी गाँव से 35 कि.मी. का सफर पैदल तय करना पड़ता था। 'शीत ऋतु' में भारी बर्फबारी के कारण सड़क मार्ग अवरुद्ध हो जाने के कारण जंगी से ही पैदल यात्रा करनी पड़ती थी। इन गांवों में 95 परिवार की जनसंख्या लगभग 455 है। वर्ष 1988 व 1989 में इन दोनों गांवों के प्रत्येक परिवार को सौर घरेलू रोशनी प्रदान की गई, जिसमें 2-3 बल्ब की सुविधा थी। गांवों की गलियों में सौर गली रोशनियां स्थापित की गई तथा लोगों के मनोरंजन हेतु सामुदायिक 'दूरदर्शन' भी प्रदान किया गया।

यद्यपि ये गांवों अब सड़क सुविधा से जुड़ गए हैं तथा परम्परागत बिजली भी पहुंच गई है लेकिन अब भी भारी बर्फबारी के कारण ये गांव 5-6 महीनों तक प्रदेश और देश के अन्य क्षेत्रों से कटे रहते हैं, ऐसी परिस्थितियों में इन लोगों के लिए रोशनी का मुख्य साधन 'सौर ऊर्जा' है। इन गांवों में स्वच्छ एवम् हरित ऊर्जा की पूर्ति सुनिश्चित् करने हेतु हि. प्र. सरकार द्वारा वर्ष 2019-20 में हर घर को एक किलोवाट के ऑफ ग्रिड सौर संयंत्र प्रदान किए गए। ये सभी संयंत्र सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं। इन संयंत्रों की स्थापना से यहां की जनता बहुत प्रसन्न हैं।

5 मेगावाट तक क्षमता की लघु जलविद्युत परियोजनाओं का कार्यान्वयन :

वर्ष 1995 में हिमऊर्जा को निजी क्षेत्र की भागीदारी से लघु जल विद्युत परियोजनाओं के कार्यन्वयन का कार्य भी सौंपा गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न निजी निवेशकों को 5 मेगावाट तक की कुल 742 लघु जल विद्युत परियोजनाएं (1781 मेगावाट) आबंटित की जा चुकी है जिनमें से 88 परियोजनाएं (326.25 मेगावाट) में उत्पादन आरंभ हो चुका है

जनजातीय क्षेत्र पांगी घाटी में ऑफ ग्रिड सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना :

जनजातीय क्षेत्र 'पांगी घाटी' सर्दियों में भारी बर्फबारी के कारण लगभग 6 महीने बंद रहती है और विद्युत लाईनें भी बाधित रहती हैं। वर्ष 1997 व 1998 में हिम ऊर्जा द्वारा इस क्षेत्र की ऊर्जा मांग पूरी करने हेतु पोर्टेबल हाईडल जनरेटर सैट स्थापित किए गए। तत्पश्चात वर्ष 2000 व 2004 तथा वर्ष 2010 में सूक्ष्म जल विद्युत परियोजनाएं स्थापित की गई।

बिजली की समस्या से निजात पाने हेतु वर्ष 2020-21 के

बजट में प्रदेश सरकार द्वारा इस घाटी के 1000 बी.पी.एल. परिवारों को 250 वॉट (प्रत्येक) के ऑफ ग्रिड सौर ऊर्जा संयंत्र प्रदान करने का निर्णय लिया गया। बजट में की गई घोषणा के अनुरूप पांगी में 1000 सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर दिए गए हैं, जो सुचारू रूप से चल रहे हैं। एक संयंत्र से एक एल.ई.डी. टीवी और 5-6 एल.ई.डी. लाईटें चल रही हैं। मोबाईल चार्ज की सुविधा भी उपलब्ध हो रही है। इन संयंत्रों के लगने से लोग बहुत प्रसन्न हैं। प्रदेश सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष में पांगी तथा लाहौल के 1500 बी.पी.एल. परिवारों को 250 वॉट (प्रत्येक) के ऑफ ग्रिड सौर ऊर्जा संयंत्र प्रदान करने का निर्णय लिया।

ग्रिड कनेक्टेड़ रूफटॉप प्रोग्राम :

नवीन व नवीनकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस कार्यक्रम का प्रथम चरण वर्ष 2017 तथा द्वितीय चरण 2019 मे शुरू किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हर घर को बिजली घर बनाना तथा बिजली बिलों में कटौती करना है।

प्रथम चरण के अंतर्गत हि.प्र. को 8 मेगावाट का लक्ष्य आबंटित किया गया था जिसके अंर्तगत घरेलू उपभोक्ताओं के भवनों, सामाजिक क्षेत्र के भवनों तथा संस्थाओं (जो सोसायटी एक्ट व ट्रस्ट एक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत की गई हैं), पर इस प्रकार के संयंत्रों की 10.165 मेगावाट क्षमता स्थापित की गई, जिन पर केन्द्रीय अनुदान 70 प्रतिशत तथा हि. प्र. सरकार द्वारा 4000 रुपये प्रति किलोवाट उपदान दिया गया। सरकारी भवनों की छतों पर भी 2.00 मेगावाट के यह संयंत्र स्थापित किए गए जिन पर भारत सरकार द्वारा 60 प्रतिशत अनुदान दिया गया। शिमला शहर के सरकारी भवनों के छतों पर 2.50 मेगावाट की क्षमता के यह संयंत्र स्थापित किए गए हैं।

एक किलोवाट के संयंत्र से एक वर्ष में लगभग 1500 यूनिट बिजली उत्पन्न होती है, जिससे जहां उपभोक्ता बिजली के भारी-भरकम बिल से निजात पाने में सफल हुए हैं वहीं मांग से अधिक बिजली पैदा होने पर इसे हिमाचल प्रदेश स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड लिमिटेड के ग्रिड में पहुंचा कर अतिरिक्त आय भी प्राप्त करने में कामयाब रहे हैं।

द्वितीय चरण के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा हिमाचल प्रदेश को 15 मेगावाट का लक्ष्य आबंटित किया है। प्रति किलोवाट कीमत 42,000 रुपये से शुरू होती है और 500 किलोवाट तक की क्षमता के लिए 35,000 रुपये प्रति किलोवाट है। भारत सरकार के नवीन व नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा इन संयंत्रों पर 3 किलोवाट तक 40 प्रतिशत तथा 3 किलोवाट से उपर 10 कि.वाट तक के संयंत्रों पर 20 प्रतिशत वित्तीय सहायता घरेलू उपभोक्ताओं को देय होगी। हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा घरेलू उपभोक्ताओं को 4,000 रुपये प्रति किलोवाट का उपदान प्रदान किया जाएगा।

हिमऊर्जा के गठन के बाद 31 जनवरी, 2021 तक प्रदेश में 20,30,000 लीटर क्षमता के सौर जलतापीय संयंत्र स्थापित कर दिए गए हैं। 21,035.82 किलोवाट क्षमता के ग्रिड कनेक्टेड सोलर रूफटॉप पावर प्लांट तथा 3204.45 किलोवाट क्षमता के ऑफ ग्रिड़ सोलर पावर प्लांट स्थापित कर दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त 1,66,122 सोलर गली रोशनियां, 27,713 सोलर घरेलू रोशनियां तथा 69,935 सोलर लालटेन विभिन्न क्षेत्रों में वितरित किए गए हैं।

सेट नं, 12 टाईप 3 गर्वन्मेंट क्वार्टर परिमहल,
कसुम्पटी, शिमला-171009

पर्यटन

अलौकिक सौंदर्य की पावन धरा हिमाचल

◆ रीना नेगी

यशस्वी मनु की कर्म स्थली, पाण्डवों की अज्ञातवास भूमि, महाबली भीम की प्रणयस्थली महाभारत के योद्धा घटोत्कच की जन्म भूमि, पुराणों के रचयिता महर्षि वेदव्यास की तपस्थली रही हिमाचल की धरा का जर्रा-जर्रा सदियों से सैलानियों को आमंत्रण देता रहा है। यहां की बेपनाह हरियाली, शीतल बयार, हिमच्छादित पर्वतमालाएं, ढलानों पर बने क्यारीनुमा खेतों का जब हमारे चक्षु साक्षात्कार करते हैं तो सचमुच प्राकृतिक की यह विविध शृंगार रचना हमारे मनोजगत को उल्लास से सराबोर कर देती है। नम्रता, शांतिप्रियता, अतिथि सत्कार ईमानदारी की जीती जागती तस्वीर हर किसी को स्वयं ही प्रभावित करती है। यहां का अनुकूल वातावरण रंगीन और उत्कृष्ट कला संस्कृति, सामाजिक परिवेश और परम्पराओं के वशीभूत होकर सैलानी स्वयं ही इस देव धरा का रुख करते हैं।

गर्मियों में जब लू के थपेड़े शरीर को झुलसाते हैं तो हिमाचल की शीतल वायु सैलानियों को गुदगुदाती है। सर्दियों में जब सैलानी आसमान से गिरती बर्फ के फाहों के साथ अठखेलियां करते हैं तो यह स्मृति उनके जीवन की अमिट स्मृति बन जाती है। यहां शिमला, कुल्लू मनाली, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पालमपुर इत्यादि प्रमुख पर्यटक स्थल है। जहां पर्यटक कुछ दिन ठहर कर यहां की शीतल बयार व बेपनाह हरियाली के सान्निध्य में रह कर तनावमुक्त और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है। सौंदर्य और पर्यटन की दृष्टि से मनाली को हिमाचल का स्वर्ग कहा जा सकता है। कुल्लू से मनाली तक के मार्ग में सीढ़ीनुमा खेत सेब के बगीचे, आकाश को छूते घने देवदार के जंगल सैलानियों को मन्त्रमुग्ध करते हैं। असंख्य दुधिया झरने, छोटी-छोटी नदियां जब बड़ी-बड़ी शिलाओं के बीच से बह कर ब्यास में लीन होती है तो हृदय खुद-ब-खुद आनंद से रोमांचित हो उठता है। 1350 फुट ऊंचे रोहतांग दर्रे पर असंख्य रंग-बिरंगे पुष्प आप का स्वागत करते हैं।

दर्रे पर गर्मियों में भेड़ों के झुंड और गद्दियों के मनमोहक लोक गीत और बांसुरी की धुन एक अल्हादकारी परिदृश्य का सृजन करते हैं। जड़ी बुटियों के अथाह भण्डार, पत्थरों और शिलाओं पर कुरेदे (ओम मानी पदमे हुम) के अंकित शब्दों के उच्चारण मात्र से समस्त पाप एवं भय का निवारण हो जाता है। शिमला की खूबसूरती को भी शब्दों में ब्यां करना कठिन है। इसके सौंदर्य का रसापान तो यहां आकर ही किया जा सकता है। यहां की ताजी और प्रदूषण रहित हवा, शीतल व शांत वातावरण देवदार और बुरांस के घने जंगलों में लिपटा शिमला आज विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहां के बेहद सुन्दर दृश्य, शांत और शीतल परिवेश के कारण ही अंग्रेजों ने इसे अपनी ग्रीष्म कालीन राजधानी बनाया था। यहां आकर आप किसी भी वृक्ष की छांव तले बैठ कर कुछ समय विश्राम कर अपनी थकान मिटा सकते हैं। यहां के रिज मैदान और मालरोड पर शिमला का दिल धड़कता है। रिज के दोनों ओर बने बेंचों पर बैठ कर आप देश विदेश से आये लोगों, बच्चों, बड़े-बूढ़ों की टोलियां और बन्दरों को अठखेलियां करते हुए देख सकते हैं। यहीं से आप शिमला शहर का विहंगम दृश्य का अवलोकन, घुड़सवारी और हिमाचली वेश-भूषा में फोटो खिंचवाकर हमेशा के लिए इन स्मृतियों को अपने जहन में कैद कर सकते हैं। शिमला का लक्कड़ बाजार लकड़ी की बनी कलात्मक वस्तुओं और उन पर की गई चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध है। इसी मालरोड पर स्थित है विश्व प्रसिद्ध गेयटी थियेटर जो सबसे पुराने नाटक घरों में सब से पुराना है। शिमला आगमन पर यदि आपने जाखू स्थित हनुमान जी के दर्शन नहीं किए तो समझो आपका यहां आना विफल रहा। शिमला से ही लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर चायल है। विश्व का सबसे ऊंचा क्रिकेट मैदान यहीं स्थित है। यहां पर पर्यटन निगम के आलीशान होटल में आप जल-पान का लुत्फ उठा सकते है। हिमाचल की प्रकृति भी खिलाड़ियों के लिए वरदान है। यहां की ऊंची नीची घाटियां हेंगग्लाइडिंग व पैराग्लाइडिंग खिलाड़ियों के लिए उपयुक्त है। जिला कांगड़ा में बिलिंग घाटी, बिलासपुर में बंदलाधार, कुल्लू जिला में सोलंग घाटी इन आकाशीय खेलों के लिए प्राकृतिक मंच है। कुफरी, नारकण्डा तथा सोलंग नाला की ढलानों पर जमी बर्फ स्कीइंग खेल के लिए चर्चित है। सर्दियों में बर्फ गिरते ही खिलाड़ी इन स्थानों पर स्कीइंग का मजा लेने पहुंच जाते हैं। सर्दियों में बम्बई के फिल्म निर्माता भी बर्फ के दृश्य को दर्शाने के लिए हिमाचल की हसीन वादियों में अपना डेरा डाले रहते हैं। प्रदेश की

बीड़ बिलिंग

नदियों में वर्ष भर बहता पानी रिवर राफटिंग के प्रेमियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना रहता है। यदि आपको ट्रेकिंग का शौक है तो चढ़ाई-उतराई नुमा सकरे पथरीले पर्वतीय रास्तों पर मीलों पैदल चलकर पहाड़ पर रात गुजार कर जीवन का अनोखा अनुभव ग्रहण कर सकते हैं। हिमाचल में बर्फीले पानी के चश्मों को छूते ही शरीर में कंपकंपी होने लगती है तो वहीं दूसरी ओर मणिकरण, मनाली और तत्तापानी में खौलते गर्म पानी के चश्में किसी अजूबे से कम नहीं हैं। आप इनमें खाना भी पका सकते हैं। गंधक युक्त यह जल चर्म रोगों के निवारण के लिए एक अचूक औषधि है।

कांगड़ा किला, सुजानपुर टीहरा के महल, पदम पैलेस रामपुर, शिमला का वायस रीगल लॉज, नग्गर का नग्गर कैसल, रोरिक आर्ट गैलरी, पालमपुर के अन्द्रेटा में स्थापित प्रख्यात चित्रकार शोभासिंह की आर्ट गैलरी तथा विभिन्न शैलियों में निर्मित विरासती भवन ऐसे आकर्षण के स्थल हैं, जो पर्यटकों को ताउम्र स्मरण रहते हैं। मानव सभ्यता को करीब से देखने परखने के लिए नाहन स्थित शिवालिक फॉसिल पार्क अपनी ही तरह का एकमात्र जीवाश्म पार्क है। नौका बिहार का आनंद उठाने के लिए सिरमौर में स्थित रेणुका झील, पौंग डेम, गोविन्दसागर और साहसिक पर्यटक में ट्रेकिंग यात्राएं शामिल हैं। मनाली, धर्मशाला, नारकण्डा, चम्बा और कुल्लू के कई स्थानों पर ट्रेकिंग की जा सकती है। गोल्फ के लिए नालदेहरा जैसा विश्वविख्यात गोल्फ कोर्स है अर्थात् जिसका जैसा मन हो उसी के अनुसार प्रकृति, मौसम और सुविधा ईश्वर ने यहां परोसी है। हिमाचल प्रदेश में बौद्ध धर्म की जड़ें काफी गहरी और पुरानी है। अवतारी लामाओं द्वारा बनाए गए मंदिर एवं गोम्पा हिमाच्छादित किन्नर प्रदेश का गौरव स्पिति में स्थित ताबो मठ को हिमाचल की अजन्ता का खिताब प्राप्त है। वहीं 'की' 'गोम्पा', लाहुल केलंग रिवालसर इत्यादि बौद्ध धार्मिक स्थलों के बाद मैकलोडगंज जो 'मिनी लहासा' के नाम से प्रसिद्ध है। तिब्बती धार्मिक गुरु दलाई लामा के पावन निवास के कारण विश्वविख्यात है। धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से भ्रमण करने के लिए यहां अदृश्य मन्दिर, शक्तिपीठ और तीर्थ है इनमें कई मेले और त्योहार भी है जो लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। रामपुर का लवी, कुल्लू का दशहरा, मण्डी की शिवरात्रि विश्वविख्यात है। उसी प्रकार शिमला का गीष्मोत्सव, रेणुका जी का मेला, बिलासपुर की नलवाड़ी, किन्नौर का जनजातीय उत्सव, सुजानपुर की होली विश्वविख्यात है। इसके साथ तत्तापानी, मणीकरण, मारकण्डेय, कालेश्वर,

ज्वालामुखी, चिन्तपूर्णी, चामुण्डा, बैजनाथ, श्री नैनादेवी, श्री रेणुका जी इत्यादि प्राचीन तीर्थ माने जाते हैं। प्रदेश का लोक जीवन एवं लोक कलाओं का आकर्षण भी पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है। मेले व त्योहार इत्यादि के अवसर पर पर्यटक यहां लोक कलाओं, वेशभूषा, ऊनी वस्त्रों अनुपम सौंदर्य से परिपूर्ण पहाड़ी चित्रकला एवं हिमाचली संस्कृति से प्रभावित सजावटी वस्तुओं का अवलोकन कर खरीददारी के उद्देश्य से भी आते हैं। ऊनी वस्त्र, पट्टू, शाल, कम्बल, किन्नौरी और कुल्लूवी टोपियां, चम्बा रुमाल, चम्बा चप्पल, ऊन के जूते, सूखे मेवे कई प्रकार की दुर्लभ वस्तुएं पर्यटकों को लुभाती है। आज हिमाचल के कुल्लू और किन्नौर की टोपी और शाल ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है। किन्नौर और कुल्लू की टोपी और शाल गरिमापूर्ण समारोह और गौरवपूर्ण पुरस्कारों के रूप में भेंट किये जाने की प्रथा है। बाबा भलकू के दिमाग की खोज शिमला कालका रेल मार्ग आज न केवल भारत में बल्कि विश्व में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। दो फुट छः इंच (762 एम.एम.) की छोटी लाईन का शिमला- कालका मार्ग 2 नम्बर 1903 को खोला गया। 96 कि. मी. लम्बा घुमावदार रेल पथ से गुजरती रेल धर्मपुर से अपनी चढ़ाई शुरू करती है। इस मार्ग पर सबसे बड़ा आश्चर्य सुरंग निकाल कर रेल लाईन बिछाना है। इस लाइन पर कुल 103 सुरंगें हैं, लेकिन 46 नम्बर सुरंग अपने अस्तित्व में न रहने के परिणामस्वरूप अब 102 सुरंगें रही है। एक पर्यटक के लिए केवल प्राकृतिक सम्पदा ही काफी नहीं होती है। वह उसका भरपूर आनन्द तभी उठा सकता है जब उसे अपनी आशा के अनुरूप आवास, जलपान, वाहनों के लिए पार्किंग और मनोरंजन के लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध होने के साथ वह अपने को सुरक्षित महसूस करता है। जिसके लिए हिमाचल सरकार भरसक प्रयास कर रही है। सरकार के सघन प्रयास रहे हैं कि वे योजनाबद्ध तरीके से पर्यटन स्थलों के नवीनीकरण, अतिरिक्त पार्किंग सुविधाएं, सड़कों को बेहतर बनाना, हवाई सेवाएं, संचार प्रणाली, पेयजल और सेनीटेशन सुविधाओं को बेहतर बना कर पर्यटन क्षेत्र में क्रांति का सूत्रपात कर रहे हैं। अधिक से अधिक पर्यटक प्रदेश में आये इसके लिए कई कार्यक्रम जैसे पैकेज टूअर का आयोजन, उनकी सुविधा के लिए प्रदेश के भीतर परवाणु, शिमला, डलहौजी, कुल्लू मनाली इत्यादि पर्यटक परिसरों में विपणन और सूचना केन्द्र स्थापित किए गए हैं। प्रदेश की राजधानी शिमला में केन्द्रीय आरक्षण कार्यालय स्थापित किया गया है। ताकि देश या विदेश कहीं से भी पर्यटक तत्काल प्रदेश के किसी भी होटल में आरक्षण करवा सके। प्रदेश से बाहर कई अन्य बड़े शहरों में पर्यटन सूचना केन्द्र खोले गए है। पर्यटन विकास हेतु हिमाचल सरकार द्वारा मास्टर प्लान बनाया गया है जिसका मूल उद्देश्य प्रदेश में रोजगार की संभावनाओं को बढ़ावा देना है। प्रदेश को सामाजिक और औद्योगिक दृष्टि से विकसित करना, नए क्षेत्रों का चयन और विकास, पर्यटन में पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा अधिक संख्या में देश व विदेश से पर्यटकों को प्रदेश में लाना शामिल है। इसलिए प्रदेश सरकार जहां पर्यटन विकास के लिए वृहद् योजनाओं का निर्माण कर रही है वहीं निजी क्षेत्रों में भी पर्यटन विकास के लिए महत्त्वपूर्ण सुविधाएं भी प्रदान कर रही है। कौशल विकास निगम और पर्यटन विभाग द्वारा होटल प्रबन्धन के क्षेत्र में युवाओं को टूरिस्ट गाइड, होटल रसोई संचालन, खाद्य एवं पेय पदार्थ प्रबन्धन, होटल आवास प्रबन्धन इत्यादि क्षेत्रों में निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अटल बिहारी वाजपेयी पर्वतारोहण एवं सम्बद्ध खेल संस्थान मनाली के माध्यम से साहसिक खेलों, ट्रैकिंग गाइड एवं पैराग्लाईडिंग के क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया जाएगा। अटल टनल रोहतांग के खुलने से कुल्लू और लाहौल-स्पिति जिलों में पर्यटकों की आवाजाही में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है। सिसू से केलंग के बीच पर्यटकों के ठहरने और खाने पीने की व्यवस्था का उचित ध्यान रखा जा रहा है। स्थानीय लोगों को सरकार की होम-स्टे योजना का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। जिससे उनकी आर्थिकी सुदृढ़ होगी और पर्यटकों को स्थानीय क्षेत्रों की समृद्ध और अनूठी संस्कृति व जीवन शैली की झलक देखने को मिलेगी। पौंग बांध प्रदेश का प्रमुख पर्यटक स्थल है। इसे विकसित करने के लिए 7.98 करोड़ रुपये व्यय किये जा रहे हैं। हिमाचल प्रदेश भारत का सबसे पसंदीदा गंतव्य बने इसके लिए शिमला के कुफरी में भारत का पहला स्की पार्क विकसित करने के लिए नागसन्ज डेवेलपर और सरकार के मध्य समझौता हुआ है। यह परियोजना कुफरी में 250 करोड़ रुपये की लागत से 5.04 एकड़ भूमि पर विकसित की जाएगी। प्रदेश सरकार 'नई राहें नई मंजिलें' योजना के तहत पर्यटन की दृष्टि से कम विकसित पर्यटन स्थलों को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। ग्रामीण पर्यटन को बल देने के लिए प्रदेश को पर्यटक आकर्षण हब के रूप में विकसित किया जाएगा। चुनी हुई सड़कों को व्यवस्थित तथा चरणबद्ध तरीके से पर्यटन सड़क के रूप में विकसित किया जाएगा। प्रदेश में एच.पी.टी.डी.सी. के एक होटल में आयुर्वेदिक वेलनस केन्द्र तथा एक होटल को 'डेस्टिनेशन वेडिंग लोकेशन' के रूप में विकसित किया जाएगा। पर्यटन के लिए नए आकर्षण तैयार करने के लिए मण्डी में 'शिव धाम' पर्यटन स्थल स्थापित करने की घोषणा की गई है जिसमें बारह ज्योतिर्लिंग, प्रशासनिक भवन, सड़क, पार्किंग का निर्माण किया जाएगा। होम स्टे इकाईयों को प्रचार प्रसार और ऑनलाइन बुकिंग सुविधा के लिए एच.पी.टी. डी.सी. तथा पर्यटन विभाग की बेबसाइट से जोड़ा जाएगा। सार यह है कि प्रकृति ने बेपनाह सौंदर्य यहां लुटाया है, वहीं प्रदेश सरकार इसे सहेजने-संवारने में पूरी तत्परता से तल्लीन है।

सहायक संपादक, हिमप्रस्थ, मो. 94180 63145

साहसिक पर्यटन

पैराग्लाइडिंग के रोमांच से पर्यटन को पंख

◆ अजय पाराशर

पैराग्लाइडिंग, संभवतः आजाद पंछी की तरह खुले गगन में पंख फैलाए, दाएं-बाएं कलाबाजियाँ खाते, ऊपर-नीचे गोते लगाते और हरे-भरे पर्वतों और सुन्दर गाँवों के ऊपर चक्कर काटते हुए आसमान से बातें करने का बेहतरीन जरिया है। इसमें कोई दो राय नहीं कि पैराग्लाइडिंग रोमांचक तथा मनोरंजक होने के साथ-साथ बेहद साहसिक एवं जोखिमपूर्ण गतिविधि है। लेकिन अगर इसे संयमित एवं अनुशासित होकर सुयोग्य प्रशिक्षक की देखरेख में संचालित किया जाए तो यह गतिविधि बेहद रोमांचपूर्ण सिद्ध होती है। मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर के नेतृत्व में हिमाचल सरकार ने प्रदेश में राज्य के ऐसे अनछुए भागों में पयर्टन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 'नई मंजिल नई राहें' योजना आरंभ की है, जहाँ पयर्टन की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। फिलहाल इस योजना के लिए 50 करोड़ रुपये के बजट का प्रावधान किया गया है। उम्मीद है कि साहसिक खेलों को बढ़ावा देने के अलावा यह नया प्रयास न केवल राज्य की आर्थिकी को सुदृढ़ करेगा बल्कि रोजगार के अवसर पैदा करने के साथ पयर्टकों को भारी संख्या में आकर्षित करने में सफल रहेगा। बीड़-बिलिंग में पैराग्लाइडिंग, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन, मंडी जिला की अब तक अपेक्षाकृत कम पहचान वाली जंजैहली घाटी का ग्राम्य जीवन और शिमला जिला की चांशल घाटी में पसरा प्राकृतिक सौन्दर्य और स्कीइंग गतिविधियाँ पर्यटकों को लुभाने में सहायक सिद्ध होंगी। इसके अलावा पयर्टकों को आकर्षित करने के लिए कांगड़ा जिला की 'महाराणा प्रताप सागर' झील और कुल्लू जिला के लारजी बाँध के जलाशय में हॉऊसबोट रिहायश, शिकारा राइड्स, कैंपिंग और जलक्रीड़ा गतिविधियों को शामिल किया जा रहा है।

जहाँ तक बीड़-बिलिंग में साहसिक और रोमांचपूर्ण पैराग्लाइडिंग के अलावा अन्य गतिविधियों का सवाल है, यहाँ आने वाले पयर्टकों के लिए साहसिक और रोमांचपूर्ण पयर्टन के

अतिरिक्त बौद्ध और हिन्दू धार्मिक स्थल, ट्रैकिंग रूट्स तथा प्रकृति प्रेमियों के लिए कई आकर्षण मौजूद हैं। बिलिंग की भौगोलिक स्थितियाँ, पैराग्लाइडिंग के लिए बेहद अनुकूल हैं। बीड़, हिमालय पर्वत शृंखला की धौलाधार श्रेणी की तलहटी में अवस्थित बेहद सुन्दर गाँव है, जो पश्चिमी सीमा में निचले हिमालय का हिस्सा है। अब यह गाँव कस्बे के रूप में विकसित होता जा रहा है। धौलाधार पर्वत शृंखला की खासयित है, यहाँ पहाड़ों की ऊंचाई एकाएक तेजी से बढ़ने लगती है। बीड़ की ऊंचाई समुद्र तल से 1,350 मीटर है। यहाँ से 16 किमी की दूर पैराग्लाइडिंग टेक-ऑफ बिलिंग 2,430 मीटर जाती है। बौद्ध मठों के अतिरिक्त महात्मा शेष राम तथा स्वामी विशुद्धानन्द आश्रम, विभिन्न धर्मों के ध्यान एवं चिन्तन प्रेमियों को शांत एवं सुरम्य वातावरण उपलब्ध करवाते हैं। इसके अलावा बीड़ घाटी, अपनी जैविक चाय के लिए भी विख्यात है। बीड़ में वर्ष 2013 में प्री पैराग्लाइडिंग वर्ल्ड कप और 2015 में पैराग्लाइडिंग वर्ल्ड कप आयोजित किए जा चुके हैं।

कभी पाल वंश के बंगाहल राज्य की राजधानी के रूप में स्थापित बीड़, धर्मशाला के उत्तर में स्थित है। बिलिंग का नाम एक स्कॉटिश अधिकारी, कैप्टन बिलिंग के नाम पर रखा गया है। मौसम अनुकूल होने पर बीड़ घाटी उत्तुंग एवं क्रॉस कंट्री पैराग्लाइडिंग के लिए जीवटधारियों को 200 किमी तक उड़ान के अवसर प्रदान करती है। लेकिन मौसम खराब होने पर भी 20 से 30 कि.मी. तक ही उड़ान भरी जा सकती है। आदर्श परिस्थितियों में, बिलिंग से मनाली या बिलिंग से धर्मशाला तक पैराग्लाइडिंग संभव है। हिमाचल प्रदेश पर्यटन और नागरिक उड्डयन विभाग लगभग हर वर्ष अक्तूबर में वार्षिक पैराग्लाइडिंग प्रतियोगिता आयोजित करता है। यहाँ का मौसम, धर्मशाला और मैकलॉडगंज से काफी मिलता-जुलता है। यहाँ पहुँचने के लिए दिल्ली से बैजनाथ तक बस, रेलगाड़ी से पठानकोट-ऐहजू या ऊना-अंब से बीड़ और हवाई जहाज से गग्गल तक होते हुए बीड़ पहुँचा जा सकता है। सड़क मार्ग से मनाली, धर्मशाला और मैकलॉडगंज से जुड़ा हुआ है। धर्मशाला से बीड़, अपनी गाड़ी में तीन और बस में पाँच घंटे में पहुँचा जा सकता है।

बीड़-बिलिंग में पैराग्लाइडिंग अपनी भौगोलिक परिस्थितियों, मौसम और कम खर्चीली होने के कारण देशी एवं विदेशी पयर्टकों को आरंभ से ही लुभाती आ रही है। यूँ तो पैराग्लाइडिंग के लिए हिमाचल प्रदेश में और भी कई स्थान हैं लेकिन बीड़-बिलिंग घाटी पैराग्लाइडिंग और हैंग-ग्लाइडिंग के लिए अपना अलग स्थान रखती है। यहाँ का मौसम पैराग्लाइडर को सही ऊँचाई, लंबी दूरी और उचित ऊष्मा (थर्मल) प्रदान करता है। बीड़-बिलिंग को अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण दुनिया में पैराग्लाइडिंग की बेहद खूबसूरत साइट्स में से एक के रूप में जाना जाता है। यहाँ पैराग्लाइडिंग हिमालय शृंखला की तलहटी में स्थित, लगभग 6,000 मीटर तक बढ़ती बर्फीली चोटियों की पृष्ठभूमि में सैकड़ों किलोमीटर तक संभावित आसमानी नौकायन उपलब्ध है। यह स्थल एक अजब चित्रमाला प्रस्तुत करता है जो पैराग्लाइडर को बिलिंग से धौलाधार पर्वतमाला के दर्शन करवाता हुआ 30 किलोमीटर दूर पालमपुर और 65 किलोमीटर दूर धर्मशाला तक रोमांचित करता है। पूर्व में 65 किमी की दूरी मंडी तक ले जाती है। सुनसान घाटियों से उत्तर की ओर बढ़ते हुए यह 110 किलोमीटर तक मनाली की ओर ले जाती है। पैराग्लाइडिंग टेक-ऑफ साइट, बिलिंग बिना किसी समस्या के उड़ान में मदद करता है। इसके अलावा बिलिंग से मीलों दूर तक फैली नयनाभिराम हरियाली की चादर देखते ही बनती है।

विशेषज्ञों के मुताबिक टेक ऑफ के लिए पैराग्लाइडर्स को मखमली हवा की दरकार होती है। बिलिंग में हवा बेहद अनुकूल होने के चलते पायलट को उड़ान भरने में कोई दिककत नहीं आती। इसके अतिरिक्त बीड़ स्थित लैंडिग साइट में दूर तक फैले सीढ़ीनुमा खेतों में कोई अवरोध न होने के कारण दुर्घटनाओं की संभावना नगण्य हो जाती है। बेहतरीन मौसमीय स्थितियों की उपलब्धता बीड़ को शेष स्थानों के मुकाबले श्रेष्ठता प्रदान करती हैं। मई-जून के दौरान छः से 12 मीटर प्रति सैकेंड का थर्मल पैराग्लाइडर्स को 5,000 मीटर तक उड़ान भरने में मदद करता है। बसंत के मौसम में भी पैराग्लाइडर्स चार से आठ मीटर तक थर्मल हासिल कर सकते हैं। प्रायः पाँच मीटर तक हासिल होने वाला औसत थर्मल बीड़ को दुनिया की श्रेष्ठ पैराग्लाइडिंग साइट्स में शुमार होने में मदद करता है। बीड़-बिलिंग में उपलब्ध 4000 मीटर से 6000 मीटर का बादल बेस अर्थात् जमीन से बादलों की औसत ऊँचाई पैराग्लाइडर्स को ऊँची उड़ान भरने का मौका मुहैया करवाता है।

बीड़ में सोलो (एकल अर्थात् व्यावसायिक) और टेंडम (पायलट संचालित एवं निर्देशित) दोनों तरह की उड़ानें संभव और उपलब्ध हैं। सोलो उड़ान में प्रशिक्षित पायलट अकेले उड़ान भरते हैं जबकि टेंडम उड़ान में कोई भी शौकिया या साहसिक गतिविधि प्रेमी प्रशिक्षित पायलट के साथ उसके ग्लाइडर में अपने आपको महफूज करने के बाद हवा में उड़ने का रोमांच हासिल कर सकता है। हिमाचल प्रदेश पर्यटन विभाग बीड़ एवं धर्मशाला (ढेलू) में उन व्यक्तियों के लिए पैराग्लाइडिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जो साहसिक खेलों या गतिविधियों में दिलचस्पी रखते हैं। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम दो सप्ताह तक चलता है। पैराग्लाइडिंग को बढ़ावा देने के लिए बीड़ में एअरो स्पोर्ट्स केन्द्र भी स्थापित किए गए हैं। हालाँकि उड़ान भरने के लिए कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं है लेकिन 18 साल से कम बच्चों को अभिभावकों के बिना उड़ान की अनुमति नहीं है। किसी भी शौकिया या व्यावसायिक पैराग्लाइडर्स को उड़ते समय मानसिक रूप से संतुलित होने की

आवश्यता होती है। उड़ान भरने से पूर्व अधिक भोजन एवं पेय से बचना चाहिए और बिना प्रशिक्षण या प्रशिक्षित पायलट के उड़ान नहीं भरनी चाहिए। व्यक्ति का भार 120 किलोग्राम से अधिक नहीं होना चाहिए।

अप्रैल से जून तक गर्मी का मौसम और प्राकृतिक सौन्दर्य इस सुन्दर स्थान को स्वर्ग में परिवर्तित कर देता है। दुनिया भर से आए पयर्टकों के लिए समय पैराग्लाइडिंग के लिए बेहद अनुकूल माना जाता है। अक्तूबर में, जब यूरोप में मौसम पैराग्लाइडिंग के अनुकूल नहीं रहता, तब भी बीड़ पैराग्लाइडर्स को अनुकूल मौसम एवं ऐसी ऊष्मा प्रदान करता है, जिसमें काफी दूरी तक उड़ान भरना आसान हो जाता है। बिलिंग टेक ऑफ साइट धौलाधार पर्वत श्रृंखला का आकर्षक 360 डिग्री दृश्य प्रस्तुत करती है। इसका पहला नयनाभिराम अवलोकन पयर्टक को साँस रुकने की हद तक रोमांचित कर देता है। मॉनसून को छोड़कर, जब भारी बारिश होने के कारण पैराग्लाइडिंग पर रोक लगा दी जाती है, हवा में कभी भी उड़ान भरी जा सकती है। लघु पैराग्लाइडिंग सत्र मध य सितंबर, अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर, जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून और मध्य जुलाई के महीनों में आयोजित किए जाते हैं। लघु पैराग्लाइडिंग सत्र में केवल लाँचिंग साइट से उड़ान और लैंडिंग साइट पर सीधे लैंडिंग होती है। इसमें एयर टाइम केवल 10 से 15 मिनट का होता है और पैराग्लाइडिंग सत्र की अवधि 15 से 30 मिनट तक की होती है। सामान्य पैराग्लाइडिंग सत्र अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर, जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई और जून के महीनों में आयोजित होते हैं।

अधिकांश पर्यटक 15 से 30 मिनट पैराग्लाइडिंग सत्र चुनते हैं। हवा में उड़ने के एक अनुभव से गुजरने के लिए पैराग्लाइडिंग का यह सबसे बेहतर विकल्प माना जाता है। मध्यम पैराग्लाइडिंग सत्र मध्य अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर, जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई तथा मध्य जून में आयोजित किए जाते हैं और इनकी अवधि 30 से 45 मिनट तक होती है। विस्तारित पैराग्लाइडिंग सत्र की अवधि 45 से 60 मिनट तक होती है। क्रॉस कंट्री पैराग्लाइडिंग सत्र मध्य अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर, जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मध्य मई और मौसम साफ होने पर किसी भी दिन आयोजित किए जा सकते हैं और इनकी अवधि 60 से 120 मिनट तक होती है। फ्लाइंग क्रॉस कंट्री केवल अनुभवी पायलटों के साथ आयोजित की जाती है। ऐसी उड़ान केवल अनुकूल मौसम में आयोजित की जाती है क्योंकि इसे पालमपुर और वापिस आने तक बढ़ाया जाता है। पैराग्लाइडिंग क्रॉस कंट्री फ्लाइट का समय टेक-ऑफ से लैंडिंग के मध्य हवा में 60 से 120 मिनट तक होता है। मध्य अक्टूबर से लेकर मध्य दिसंबर तक और मध्य फरवरी से मध्य अप्रैल या मई तक का समय इसके लिए अनुकूल माना जाता है।

विशेषज्ञों के अनुसार पैराग्लाइडिंग के लिए सर्वोत्तम समय अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से आरंभ होकर दिसंबर माह के मध्य तक है। अक्तूबर और नवंबर के महीनों को भी पैराग्लाइडिंग के लिए उत्तम माना जाता है। इन महीनों के दौरान हवा लगभग हर दिन बदली हुई और थोड़ी गर्म रहती है, जो सामान्य उड़ान के लिए अच्छी मानी जाती है। इसी अवधि में पैराग्लाइडिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। पैराग्लाइडिंग के लिए दूसरी बेहतर अच्छी अवधि मार्च के आरंभ से लेकर जून तक मानी गई है। यह अवधि बीड़-बिलिंग में पैराग्लाइडिंग के लिए सबसे लंबी अवधि है और क्रॉस कंट्री फ्लाइंग के लिए बेहतर मानी गई है क्योंकि इस दौरान अनुकूल ऊष्मा मिलती है। लेकिन दिन के समय हवा काफी तेज होती है और इस दौरान कई बार गरज के साथ बौछारें पड़ जाती हैं। दिसंबर एवं जनवरी के मध्य से फरवरी के मध्य तक का समय पैराग्लाइडिंग के लिए मान्य हैं, लेकिन इस दौरान उड़ानें कम रहती हैं क्योंकि ठंडी हवा और तापमान पैराग्लाइडर को ऊंची या लंबी अवधि के उड़ान भरने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता।

हालाँकि उड़ान भरने के लिए कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं है लेकिन 18 साल से कम बच्चों को अभिभावकों के बिना उड़ान की अनुमति नहीं है। किसी भी शौकिया या व्यावसायिक पैराग्लाइडर्स को उड़ते समय मानसिक रूप से संतुलित होने की विशेष आवश्यक्ता होती है। उड़ान भरने से पूर्व भोजन एवं पेय संतुलित मात्रा में लिए जाने चाहिए और बिना प्रशिक्षण या प्रशिक्षित पायलट के उड़ान नहीं भरनी चाहिए। इसके अलावा पर्यटक बीड़ से अर्ध-जनजातीय जीवन का अनुभव लेने के लिए राजगुँधा गाँव तक ट्रैकिंग, 11,500 फुट की ऊँचाई पर स्थित हनुमानगढ़ डे हाइक, पर्वतीय बाइकिंग, भट्टू स्थित पालपंग शेराब्लिंग मठ, संसाल स्थित मुकुटनाथ मन्दिर, बैजनाथ में नवीं शताब्दी में निर्मित शिव मन्दिर, तत्तापानी (तत्तानी) स्थित गर्म पानी के चश्मे, बड़ा भंगाल घाटी ट्रेक, बरोट में ट्राउट फिशिंग तथा चाय के बागानों का आनन्द ले सकते हैं।

बीड़-बिलिंग के अलावा मनाली के पास रोहतांग दर्रे की समुद्र तल से ऊँचाई 3978 मीटर, रोहतांग दर्रे से नीचे कोठी 2500 मीटर, कुल्लू के पास बिजली महादेव में 2460 मीटर और बिलासपुर में बंदला धार 2600 मीटर भी साहसिक खेलों के प्रेमियों को ऊंचाई पर खड़े होकर आकाश से रू-ब-रू होने तथा बंजी डोरियों के साथ हवा में कूदने के लिए मौके प्रदान करती हैं।

कांगड़ा जिला में हिमाचल प्रदेश पर्यटन विभाग के साथ करीब 189 पर्यटन गाइड, 357 ट्रेवल एजेंसी, 147 रेस्टोरेंट और 340 होम स्टे पंजीकृत हैं। पैराग्लाइडिंग गतिविधियों एवं साहसिक खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए विभाग विशेष ध्यान दे रहा है। वर्तमान में विभाग के साथ 297 पैराग्लाइडर्स पंजीकृत हैं।

उप निदेशक, सूचना एवं जन संपर्क विभाग,
धर्मशाला जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

शीत मरुस्थल का पहला स्नो फेस्टिवल विश्व पटल पर दिखी लाहुली संस्कृति की झलक

बर्फ से बना रेस्तरां रहा सैलानियों के आकर्षण का केंद्र

◆ अजय बान्याल

जनजातीय क्षेत्र लाहुल स्पीति की संस्कृति सदियों पुरानी है। इस क्षेत्र की कई ऐसी परम्पराएं है जो विलुप्त हो गई जबकि कई विलुप्त होने की कगार पर पहुंच चुकी हैं। लेकिन जनजातीय जिले में पहली बार आयोजित स्नो फेस्टिवल ने कबाइली क्षेत्र के रीति-रिवाज एवं संस्कृति को पुनर्जीवित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है जिसकी तारीफ हर कोने में हुई। लाहुल स्पीति में आयोजित स्नो फेस्टिवल की धूम पूरे जिले में देखने को मिली। इस फेस्टिवल से यहां की संस्कृति देश भर में पहली बार प्रचारित हो रही है। जब सर्दियों के मौसम में लाहुल स्पीति बर्फ से कई महीनों तक ढका रहता था। लोग अपने घरों से बाहर नहीं निकल पाते थे। अक्सर अपने घरों में ही कैद रह जाते, तो ऐसे में हर गांव, घाटी में अपने-अपने त्योहार और संस्कृति से जुड़ी गतिविधियां होती थी ताकि सर्दियों का समय आसानी से गुजर जाए लेकिन समय के साथ-साथ कई त्योहार, लोक नृत्य, रीति-रिवाज, परम्पराएं सिमट कर रह गईं हैं। कई ऐतिहासिक परम्पराएं विलुप्त होने की कगार पर पहुंच चुकी हैं। लाहुल-स्पीति की संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए स्नो फेस्टिवल का आयोजन पहली बार इस वर्ष किया गया। इस स्नो फेस्टिवल का आरंभ 14 जनवरी 2021 को घाटी के पहले पारम्परिक त्योहार से शुरू हुआ था, जिसे आधिकारिक रूप से 25 जनवरी को हिमाचल प्रदेश के पूर्ण राज्यत्व की स्वर्ण जयंती के अवसर पर तकनीकी शिक्षा एवं जनजातीय विकास मंत्री डॉ. रामलाल मारकंडा द्वारा शुभारंभ किया गया। 75 दिन तक मनाए गए इस उत्सव को दुनिया के सबसे लंबे महोत्सव का गौरव प्राप्त हुआ है। इस उत्सव को विश्व मानचित्र पर लाने में और यहां की समृद्ध एवं विविध सांस्कृतिक परंपराओं व पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने में अटल टनल ने अहम भूमिका निभाई है। इस सुरंग ने जहां घाटी को पूरे विश्व से जोड़ दिया है वहीं इसके द्वारा अब सांस्कृतिक आदान प्रदान के रास्ते भी खुल गए हैं। सर्दियों में किस तरह की वेशभूषा, रहन-सहन परम्पराएं होती थी, पर्यटक अब भी स्नो फेस्टिवल के माध्यम से देख पा रहे हैं। पर्यटकों ने इस फेस्टिवल को काफी पंसद किया। इस फेस्टिवल में तीरदांजी, छोलो खेल, रस्साकसी, बुनाई प्रतियोगिता, फोटोग्राफी, फूड फेस्टिवल, स्कीइंग, म्यूजिकल चेयर, स्नो प्रिंस और स्नो प्रिसेंस आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। स्नो फेस्टिवल को लोगों का लोगों के लिए और स्थानीय लोगों के द्वारा आयोजित किए जाने वाला आयोजन माना जा रहा है। यह फेस्टिवल यहां की संस्कृति को सहेजने का एक अनूठा प्रयास है। यहां के बुजुर्ग इस आयासेजन से सबसे अधिक खुश है। लाहुल स्पीति में जनसहयोग से कार्यों को चलाने के लिए लाहौल एनवायरन्मेंट, हेरिटेज, कंजर्वेशन एंड ब्यूटीफिकेशनस सोसाइटी का गठन किया जाएगा जो भविष्य में स्नो फेस्टिवल सहित पर्यावरण, स्वच्छता, डोर-टू-डोर कूड़ा एकत्रीकरण, वृक्षारोपण, सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण आदि के क्षेत्रों में कार्य करेगी। स्नो फेस्टिवल का आयोजन पूर्ण रूप से जिला प्रशासन की ओर से आयोजित किया गया। इस फेस्टिवल को गवर्नेंस की श्रेणी में स्कॉच अवार्ड में सिल्वर मेडल प्राप्त हुआ है। स्नो फेस्टिवल में धर्मगुरु श्रीश्री रवि शंकर ने हिस्सा लेकर इसकी शोभा बढ़ाई।

भाईचारे की मिसाल

स्नो फेस्टिवल में बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी ने एकजुट होकर बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बुजुर्ग लोग अपनी परम्पराओं, रीति रिवाजों के बारे में बच्चों, युवा पीढ़ी को सिखा रहे हैं। हर गांव में फेस्टिवल का आयोजन हो रहा है। जैसे कई दशक पहले गांव वाले हर काम एक जुट होकर करते थे। युवक मंडल, महिला मंडल और एनजीओ, फेस्टिवल में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

सभी की सहभागिता

इस महोत्सव में स्थानीय लोगों द्वारा बनाई गई बर्फ की कलाकृतियां स्नो लेपर्ड, आईबेक्स, हाथी, बैल, टेबल, कुर्सियां, बैंच, गेट आदि प्रदर्शित की गई है। इग्लू भी स्नो फेस्टिवल में तैयार किए

गए। लाहुल में बर्फ से बना रेंस्टोरेंट आकर्षण का केंद्र रहा है। **की गोम्पा** की कलाकृति काजा में बनाई गई थी। ये कलाकृतियां आकर्षण का केंद्र रही है।

पुनर्जीवित हुए सदियों पुराने त्योहार

इस बार शंगजातर त्योहार लगभग 90 वर्ष बाद मनाया गया है। स्नो फेस्टिवल के चलते शंशा गांव के लोगों ने इस उत्सव को फिर से मनाने की परम्परा शुरू की है। राइंक जातर 70 वर्ष बाद मनाई गई। कीर्तिंग गांव में राइंक जातर को मनाया जाता था। गांव के बुजुर्ग बीर सिंह के अनुसार यह जातर घुड़सवारी के लिए प्रसिद्ध थी।

योर उत्सव

आदि पर्व योर उत्सव वाम तट पर बसे सभी गांव में सदियों से मनाया जाता रहा है। लेकिन आज ये पर्व कुछ ही गांव तक सिमट कर रह गया है। योर उत्सव की विशेषता है कि इसमें बर्फ का 8 फीट ऊंचा शिवलिंग बनाया जाता है, और पारम्परिक वेशभूषा में मुखौटा पहनकर प्रकृति की पूजा की जाती है। इलाके में अच्छी फसल व खुशहाली की कामना की जाती है। योर उत्सव शिव की पूजा से सम्बंधित है। वही लोगों का कहना कि योर उत्सव सदियों से मनाते आ रहे है। बीच में कुछ साल पहले योर उत्सव को मनाना बन्द किया तो प्रकृति के प्रकोप से ग्लेशियर गिरने से गांव के कई घर दब गए। फिर लोग देव दोष के प्रकोप से छुटकारा पाने के लिये हर साल योर उत्सव मनाते आ रहे हैं।

'गमत्सा' उत्सव

लुप्त हो रही सांस्कृतिक विधाओं में से एक 'गमत्सा' उत्सव 40 साल बाद लोअर केलांग में मनाया गया। इस उत्सव का आगाज इष्ट देयूला की पूजा अर्चना कर तीरंदाजी से शुरू होता है। यह उत्सव सर्दियों की कैद से मुक्ति का संदेश देता है। उदन उत्सव लोहड़ी के दौरान देवालय के बंद होने पर मनाया जाता है। इसमें सभी ग्राम देवता चले जाते है जोकि फिर तीन महीने बाद वापिस आते हैं। देवताओं के वापिस आने की खुशी में यह उत्सव आयोजित किया जाता है। हालडा उत्सव का आयोजन भूत प्रेत को भगाने के लिए किया जाता है। इस दौरान मशालें जलाकर लोग भूत प्रेतों को भगाते हैं।

लमोई उत्सव

गोंदला में लमोई का उत्सव मनाया जाता है। इसमें स्थानीय देवता की पूजा अर्चना की जाती है और सुख शांति की प्रार्थना की जाती है।

लामा छोदपा

यह उत्सव लाहुल के बिलिंग गांव में चार दिन तक मनाया जाता है जिसमें आने वाले साल में सभी की सुख समृद्धि के लिए लामाओं द्वारा पूजा-अर्चना की जाती है। इसमें लोग हर दिन पूजा पाठ एकजुट होकर करते है। खाना-पीना एक साथ करते है।

पत्थर के बर्तन

लाहुल-स्पीति में कई दशकों से पत्थर के बर्तन रसोई में इस्तेमाल होते थे। लेकिन आधुनिक बर्तनों के बढ़ते प्रचलन से पत्थर के बर्तनों का इस्तेमाल कम होने लगा है। लेकिन आज भी कई गांवों में पत्थर के बर्तनों में खाना बनाया जाता है। इनमें थुपका, दाल, चावल और सूप मुख्य तौर पर बनाए जाते है। इन पत्थर के बर्तनों की खासियत यह है कि माईनस डिग्री में तापमान होने के बावजूद इनमें पांच से छह घंटे तक खाना गर्म रहता है। इन पत्थर के बर्तनों की प्रदर्शनी स्नो फेस्टिवल में आकर्षण का केंद्र रही है।

लोक नृत्य

दारचा क्षेत्र का सेलु नृत्य पुनः जीवित हो रहा है। सेलु नृत्य जोकि तोद घाटी में कभी ब्याह शादियों की शान होता था जिसमें केवल बुजुर्ग महिलाएं और पुरुष ही नृत्य करते हैं। इस नृत्य को करने से पहले महिलाएं जौ से तैयार स्थानीय पेय का सेवन करती हैं। स्पीति में घर नृत्य, शोना नृत्य, टशी नृत्य मुख्य तौर पर किए

जाते है। घर नृत्य में दोनों महिला पुरुष नृत्य करते हैं। हर त्योहार की शुरुआत इसी त्योहार से होती है। जबकि टशी नृत्य केवल महिलाओं द्वारा पेश किया जाता है। सभी नृत्य पारम्परिक वाद्य यंत्रों की धुनों पर होते है। नृत्य करते हुए एक साथ गीत भी गाए जाते हैं।

बुचेन नृत्य

बुचेन नृत्य खासकर लामा करते हैं। शरद ऋतु में, धार्मिक गुरु, दोनों पुरुष और महिला, स्थानीय बौद्ध परिवारों द्वारा धार्मिक शास्त्रों का जाप करने और अनुष्ठान करवाने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं। वे सांस्कृतिक रूप से तिब्बती, पिन घाटी में रहते हैं। इस नृत्य में प्रार्थनाओं, गीतों, चमत्कार नाटकों और पत्थर तोड़ने वाले करतबों का मिश्रण होता है।

छम नृत्य

ये नृत्य मोनेस्ट्री में लामाओं की ओर से किया जाता है। स्पीति की हर मोनेस्ट्री में अलग-अलग तारीख को ये नृत्य साल में पेश होता है। बौद्ध धर्म में इस नृत्य का काफी महत्त्व है।

हिम संवाद का आयोजन

स्नो फेस्टिवल में हिम संवाद गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें लाहौल में पर्यटन के विभिन्न विषयों, संभावनाओं, संस्कृति, रोजगार, अर्थव्यवस्था व सामुदायिक पर्यटन जैसे मुद्दों की चुनौतियों का समाधान करने पर चर्चा की गई। इसमें बुद्धिजीवियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

जिलाधीश पंकज राय का कहना है कि सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने में स्नो फेस्टिवल बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कई त्योहार और परम्पराएं आज कई गांवों तक सिमट कर रह गई। फेस्टिवल ने इन त्योहारों और परम्पराओं को प्रचारित-प्रसारित करने का कार्य किया जा रहा है ताकि इन्हें आने वाली पीढ़ी तक सहेज कर रखा जा सके। स्नो फेस्टिवल करवाने के पीछे हमारा प्रशासन का ध्येय लुप्त हो रही परम्पराओं को जीवित रखने का है। इसमें स्थानीय लोगों की सहभागिता से हर त्योहार को परंपरागत तरीके से मनाया जा रहा है। स्नो फेस्टिवल से यहां की संस्कृति व व्यंजनों को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। वहीं पर्यटकों को आकर्षित करने में यह फेस्टिवल कामयाब रहा है। स्नो-फेस्टिवल से जहां लाहुल स्पीति के लोगों में उत्साह है, वहीं मीडिया एवं सोशल मीडिया से इसका नजारा देश-विदेश तक लोगों को देखने को मिल रहा है। आज तक यहाँ की संस्कृति को इतनी पहचान एवं महत्व पहले कभी नहीं मिला।

पारम्परिक व्यंजन

पारम्परिक व्यंजन चिचोकमा, फेमाबंग, फेमर, छलमा, छांग, शुनाली, डेढ़भोग, धेर, कुंशगी, पिंगरी, छलमा मोमो, बक चेलभिरक, थुपका सूप, शापचेज, जूलोग, कमशा, खुरह, भरमाह, डेढसिंल, फिंगटुक, अरक, संम्पा, साजंग, घचोल सत्तू चिलड़ा, मन्ना, सिडडू, मारछू, नमकीन चाय, मर्चु आदि प्रमुख व्यंजन है।

दाछंग उत्सव

नए साल के उपलक्ष्य में स्पीति में लोग दाछंग उत्सव मनाते है। इस उत्सव में तीरंदाजी की जाती है। मान्यता है कि तीर छोड़ने से भूत प्रेम व नकारात्मक शक्तियां भाग जाती हैं।

डला उत्सव

यह उत्सव जमलू देवता के हंसा गांव में आने पर मनाया जाता हैं। जब असुर और देव लोक में युद्ध हुआ था तो उस दौरान जितने खून के छींटे पड़ते थे उतने ही असुर और पैदा होते थे। फिर इंद्र देव हारने की कगार पर पहुंच गए। इसके बाद जमलू देवता को बुलाया गया। जमलू देवता के पास जो हथियार थे वो समुद्र मंथन से मिले थे। जमलू देवता अपने तीर से असुरों का सिर काटते थे जोकि समुद्र में गिरता था। इस वजह से वहां पर नए असुर पैदा ही नहीं हुए। इसके बाद देवता जीत गए थे। इस मौके पर छोटी बच्चियों और ज्ञालसन गांव के तीन छोटे लड़कों को चिड़ी दी जाती है।

तेशु मेला

तेशू मेला ताबो और माने मठों में मनाया जाता है। यह त्योहार ग्रामीणों के मध्य बेहतर संबंध बनाने और कई महीनों के सर्दियों के मौसम और सीमित आवाजाही के बाद पड़ोसी गाँवों और बस्तियों को फिर से जोड़ने का काम करता है। गर्मियों के अंत का संकेत देते हुए, यह मेला इस अवधि के दौरान सबसे प्रतिष्ठित समारोहों में से एक है। लामा (कलाकार) छम नृत्य (मौत का नृत्य) में रंगीन वेशभूषा में हिस्सा लेते हैं।

लदारचा उत्सव

वर्ष का सबसे प्रसिद्ध त्योहार, लदारचा भी अनिवार्य रूप से तिब्बत और भारत के बीच व्यापार संबंध को मजबूत करने में मदद करता है। इस मेले को 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान अस्थायी रूप से समाप्त कर दिया गया था। हालाँकि, इसे 1980 में फिर से शुरू किया गया था। यह त्योहार आमतौर पर अगस्त में स्पीति के किब्बर मैदान में मनाया जाता था। यहां, व्यापारी अपनी उपज और कलाकृतियों को बेचने के लिए लद्दाख, रामपुर, बुशहर सहित अन्य पहाड़ी क्षेत्रों से आते हैं। तिब्बत के साथ व्यापार बंद होने से लदारचा मेले का नया स्थान काजा है। किन्नौर, लद्दाख और निश्चित रूप से स्पीति के आस-पास के क्षेत्रों की संस्कृतियों का संगम यह मेला बिक्री और विनिमय के लिए प्रसिद्ध है। अटल टनल रोहतांग के बनने से जिला प्रशासन की ओर से स्नो फेस्टिवल के आयोजन की यह पहल निश्चित तौर से सराहनीय है। इससे आने वाली नई पीढ़ी को अपनी पुरातन संस्कृति को जानने-समझने का मौका मिल सकेगा।

000

लेख

सैलानियों के आकर्षण का नया केंद्र : अटल टनल रोहतांग

◆ अजय बनयाल

प्रदेश के लाहुल स्पीति की पहचान अब तक एक ऐसे जिले के रूप में थी जो बर्फबारी के दौरान अकसर पांच से छः महीनों तक शेष भारत से कटा रहता था। लेकिन अटल सुरंग बनने के बाद लाहुल स्पीति जिले का जनजीवन अब सामान्य हो गया है। इस बार सर्दियों में यहां हजारों पर्यटक घूमने पहुंचे। लाहुल स्पीति में होने वाले विकास कार्यों को तीव्रता प्रदान करने में अटल सुरंग अहम भूमिका प्रदान कर रही है। इस बार लाहुल स्पीति के लोग बर्फबारी के बावजूद देश के अन्य हिस्सों से जुड़े रहे। पिछले कई सालों की तुलना में इस बार अधिक पयर्टक पहुंच रहे हैं। लाहुल स्पीति के स्थानीय निवासी इस टनल के बनने से खुश हैं। क्योंकि इसके बनने से उनके व्यक्तिगत जीवन में आए बदलाव से समाज को नई दिशा मिल रही है। पर्यटकों के आने से यहां के लोगों ने स्वरोजगार पर बल देना शुरू कर दिया है। सैंकड़ों की तादाद में होम स्टे खुल रहे है जिससे लोगों की आर्थिकी मजबूत होगी। अब लाहुल स्पीति आत्मनिर्भर बनता जा रहा है। जनजातीय विकास मंत्री डॉ. राम लाल मारकंडा के अनुसार लाहुल स्पीति को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में मददगार साबित हो रही है। आज सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव हो रहा है। अब लाहुल स्पीति भी देश के अन्य जिलों की तरह ही साल भर जुड़ा रहेगा। यहां पर पर्यटकों की आमद कई गुणा बढ़ गई है जिससे स्थानीय लोगों को अतिरिक्त आय अर्जित करने में सहायता मिलेगी और इसके साथ ही स्वरोजगार के भी अधिक अवसर पैदा हो रहे हैं।

कृषि को नई दिशा

इससे पहले यह जनजातीय जिला छः से सात महीनों तक बर्फ की आगोश में समाया रहता था। यहां के लोगों के आय का मुख्य स्रोत कृषि है। लेकिन तैयार फसल को मंडियों तक पहुंचाने में हर साल किसानों को काफी दिक्कत होती थी। किसानों का मानना है कि अब केवल फसल को मंडी तक पहुंचाने के लिए ही नहीं बल्कि फसल बीजाई से लेकर फसल तैयार होने तक आलू और मटर की खेती को व्यापक स्तर पर बढ़ावा मिलेगा। इसके साथ जौ की पैदावार भी काफी अच्छी होती है। मगर सुरंग बनने

से पहले किसान खेतों में ही अपनी फसल आढ़तियों को बेचने पर मजबूर हो जाते थे कि क्योंकि यातायात की सुविधा संतोषजनक नहीं थी। लेकिन इस बार किसानों का मानना है कि अब स्वयं ही मंडियों में फसल बेचकर आएंगे ताकि अच्छे दाम प्राप्त होंगे। स्पीति मटर की खेती के लिए देशभर में चर्चित है। जिसकी देश भर में काफी मांग होती है। लेकिन यातायात की व्यवस्था पर्याप्त न होने के कारण किसानों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता था। लेकिन इस बार स्पीति के किसानों के चेहरे पर मुस्कान है। कृषि को नई बुलंदियों पर ले जाने में अटल सुरंग काफी मददगार साबित हो रही है।

सामाजिक आर्थिक जीवन में आएगा सुधार

सुरंग निर्माण के उपरांत इसके क्रियाशील होने से लाहुल-स्पीति के लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। लोगों के रहन सहन से लेकर सामाजिक गतिविधियों में बदलाव आ रहे हैं। इस बार सर्दियों में लोग अपने कार्यों के सिलसिले में प्रदेश ही नहीं बल्कि देश के अन्य हिस्सों में जाते रहे। अन्यथा सर्दियों में घरों से लोग कम ही निकलते थे। लाहुल स्पीति में अब हर सुविधा आसानी से पहुंच रही है। यहां बढ़ रही पयर्टन गतिविधियों से सामाजिक गतिविधियों में बदलाव हो रहा है और पर्यटकों के आने से यहां पर रोजगार पैदा हो रहे हैं। पयर्टकों से मेल-जोल से लोग नई-नई चीजें सीख रहे है।

ऐसे में पयर्टन उद्योग से जुड़े लोग काफी खुश हैं। कोरोना महामारी के बावजूद भी यहां पर्यटन से जुड़ी गतिविधियां दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। लाहुल स्पीति को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयासों को ये सुरंग सही दिशा दे रही है। हर गांव तक हर सुविधा पहुंच रही है। इससे हर गांव में एक सकारात्मक उर्जा का संचार हो रहा है।

विश्व पटल पर जनजातीय संस्कृति की पहचान

यहां की संस्कृति सदियों पुरानी है। जनजातीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन में अटल सुरंग सकारात्मक भूमिका निभा रही है। पर्यटक यहां की संस्कृति को देखने के लिए गांवों की ओर रुख कर रहे है। यहां के पारम्परिक व्यंजन, पहनावा, नृत्य, देवीय परंपरा आदि से जुड़ी गतिविधियां पर्यटकों को काफी पसंद आ रही है। ऐसे में युवा अपनी संस्कृति को रोजगार से जोड़ते हुए विलुप्त होने की कगार पर पहुंची परम्पराओं को पुनः सीख रहे हैं। स्नो फेस्टिवल इसी कड़ी में काफी अच्छी भूमिका निभा रहा है।

बदलता पर्यटन उद्योग

लाहुल स्पीति में कृषि के बाद सबसे बड़ा उद्योग है पर्यटन। अब हजारों होम स्टे लाहुल स्पीति में खुलने शुरू हो चुके हैं। सैंकड़ों की तादाद में होटल, रेस्टोरेंट पर्यटकों से गुलजार हो रहे हैं। यहां के लोगों का मानना है कि सुरंग के बनने से पर्यटकों का आवागमन बढ़ रहा है। ऐसे में यहां पर अधिक से अधिक होम स्टे, होटल, टूरिस्ट गाईड आदि पर्यटन से जुड़ने से रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। कई युवा अब निजी कंपनियों की जॉब छोड़कर पर्यटन क्षेत्र में स्वरोजगार शुरू कर चुके हैं। लाहुल स्पीति में देश ही नहीं बल्कि विश्वभर के पर्यटक हर साल घूमने आते है। यहां पर ऐतिहासिक महत्त्व से जुड़े कई पर्यटन स्थल है, जिन्हें निहारने के लिए विश्व भर के पर्यटक उत्सुक रहते है। पर्यटन क्षेत्र से जुड़े कारोबारियों का कहना है कि अब उनकी आय बढ़ रही है। यहां कारोबार की कोई कमी नहीं है। लाहुल स्पीति अब साल भर खुला रहने से पर्यटक

टनल की विशेषताएं

- 46 किलोमीटर कम हुई मनाली और लेह के बीच दूरी
- लाहौल स्पीति और लेह-लद्दाख के बीच हर मौसम में आवागमन सुचारू
- हर 60 मीटर पर एक अग्नि शामक
- हर 150 मीटर पर टेलीफोन सुविधा
- हर 250 मीटर पर सी.सी.टी.वी. कैमरे प्रसारण प्रणाली। हादसों का स्वतः पता लगाने की तकनीक से लैस हैं कैमरे।
- हर 500 मीटर पर आपातकालीन निकास सुविधा
- हर एक किलोमीटर में हवा की गुणवत्ता निगरानी
- हर 2.2 किलोमीटर की दूरी पर मोड़
- यह 10.5. मीटर चौड़ी सिंगल ट्यूब बाय-लेन टनल

भी साल भर आ रहे है। अब लाहुल स्पीति पर्यटकों की पहली पसंद बनती जा रही है। सरकार की ओर से अधिक से अधिक सुविधाएं पर्यटन कारोबारियों को दी जा रही हैं।

विकासात्मक गतिविधियों को नई दिशा

इस सुरंग के यातायात के लिए खुल जाने से प्रदेश सरकार की ओर से जिले में किए जा रहे विकासात्मक कार्यों को भी गति मिल रही है। अब हर सामान की नियमित आपूर्ति पूरे जिले में सुचारू रूप से हो पा रही है। अन्यथा जिले में सामान पहुंचाना काफी चुनौतीपूर्ण रहता था। भवन निर्माण कार्यों में लेबर भी अब आसानी से यहां पहुंच पा रही है। ऐसे में सरकार के विकासात्मक कार्यों को निर्धारित समय में पूरा करने में सफलता मिल रही है।

अटल सुरंग ऐतिहासिक कदम

अटल टनल आज दुनिया की तीन हजार मीटर ऊंचाई पर बनी सबसे लंबी हाईवे सुरंग है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण इस टनल का लोकापर्ण गत वर्ष किया। इस टनल के खुलने से मनाली और लेह के बीच की दूरी 46 किलोमीटर कम हो गई है। 9.02 किलोमीटर लंबी सुंरग साल भर लाहुल स्पीति को मनाली से जोड़े हुए है। सुरंग को हिमालय के पीर पंजाल पर्वत शृंखलाओं के बीच अत्याधुनिक विशिष्टताओं के साथ समुद्र तल से करीब तीन हजार मीटर की ऊंचाई पर बनाया गया है। अटल सुरंग का दक्षिणी पोर्टल मनाली से 25 किमी दूरी पर जबकि उतरी पोर्टल लाहुल घाटी के तेलिंग, सीसू गांव के नजदीक है। घोड़े की नाल के आकार वाली यह दो लेन सुरंग आठ मीटर चौड़ी और 5.525 मीटर उंची है। अटल सुरंग की नींव 26 मई 2002 को रखी गई थी। दिसंबर 2019 में केंद्र सरकार ने पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के सम्मान में इसका नाम अटल सुरंग रखने का फैसला किया। इसमें रोजाना 3000 कार, 1500 ट्रक आ सकते है। इस टनल को बनाने का ऐतिहासिक निर्णय पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में 3 जून 2000 को लिया गया। इस टनल को सीमा सड़क संगठन के बनाया।

पर्यर्टकों के लिए आकर्षण केंद्र स्नो फेस्टिल

लाहुल स्पीति की विलुप्त होती संस्कृति को 'स्नो फेस्टिवल' ने पुनर्जीवित करने में अहम भूमिका अदा की है। जनजातीय क्षेत्र की संस्कृति को पूरा विश्व निहारना और जानना चाहता है। स्नो फेस्टिवल विशुद्ध रूप से लाहुल स्पीति की संस्कृति, गीत-संगीत, रहन सहन, लोक नृत्य, उत्सव पर आधारित है। इसमें आधुनिक रूप का इस्तेमाल न के बराबर है। पर्यटकों को यहां की संस्कृति काफी पसंद आई। पहले बर्फबारी के दिनों में पर्यटक लाहुल स्पीति पहुंचने में परहेज करते थे लेकिन इस बार सर्दियों में भी स्नो फेस्टिवल ने बड़ी संख्या में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। फेस्टिवल, पर्यटन के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा।

सहायक लोक संपर्क अधिकारी काजा,
जिला लाहौल स्पीति, हिमाचल प्रदेश

छोटी काशी मंडी में भव्य दिव्य शिवधाम

◆ सचिन संगर

छोटी काशी मंडी में बनने वाला शिवधाम भव्यता और दिव्यता में किसी अजूबे से कम नहीं होगा। मंडी के कांगणीधार में साढ़े नौ हेक्टेयर क्षेत्र में बनने वाला उत्तर भारत का यह पहला ऐसा धार्मिक पर्यटन स्थल होगा जो बाहर से आने वाले पर्यटकों के अलावा स्थानीय लोगों के आकर्षण का केंद्र भी होगा।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने शिवधाम की सौगात देकर छोटी काशी मंडी को धार्मिक पर्यटन के आकर्षण का केंद्र बनाने का सपना साकार किया है। इस अनूठी परियोजना से देश-दुनिया में मंडी धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन मानचित्र पर मजबूती से उभरेगा। शिवधाम से दुनिया भर के पर्यटकों के लिए मंडी में पर्यटन गंतव्य का नया स्वरूप देखने को मिलेगा।

मंडी में शिवधाम से विकास को नए आयाम मिलेंगे। इस परियोजना से लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर बनेंगे।

मुख्यमंत्री ने इस ड्रीम प्रोजेक्ट शिवधाम का 27 फरवरी, 2021 को मंडी में शिलान्यास किया। शिवधाम पर करीब 150 करोड़ की धनराशि को खर्च की जाएगी। राज्य सरकार ने पहले चरण के कार्य के लिए 40 करोड़ के बजट का प्रावधान भी कर दिया है।

बेजोड़ होगा शिवधाम का स्वरूप

इसमें प्रवेश के लिए कैलाश द्वार होगा। यहां श्रीगणेश मंडल के भी दर्शन होंगे, जिसमें भगवान गणेश की भव्य प्रतिमा स्थापित होगी। इसके अलावा गंगा कुंड होगा, शिव वंदना के नाम से ओरिएंटेशन सेंटर होगा। रुद्रा मंडल और डमरू मंडल होगा, जहां भगवान शिव के डमरू के दर्शन और डमरू मंडल के पास खाने पीने की वस्तुएं भी मिलेंगी। मान सरोवर कुंड, मोक्षपथ, विल्वपत्र कुंड, शिवस्मृति म्यूजियम तथा एक बड़ा शिवलिंग भी स्थापित होगा जिसे चंडीगढ़-मनाली राष्ट्रीय राजमार्ग से ही पर्यटक दूर से देख कर आकर्षित होंगे।

वहीं शिवधाम में भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन भी करवाए जाएंगे और भगवान शिव के साथ माता पार्वती, कार्तिकेय और गणेश भगवान की प्रतिमाएं भी होंगी। इसके अलावा यहां हर्बल गार्डन, नक्षत्र वाटिका, ऐम्फी थियेटर होगा।

और सैंकड़ों गाड़ियों के लिए पार्किंग सुविधा होगी।

भोले की नगरी में शिवधाम की सार्थकता

शैवमत से प्रभावित इस पहाड़ी रियासत की आधुनिक राजधानी की स्थापना बाबा भूतनाथ के मंदिर के निर्माण के साथ ही हुई है। इसके अलावा शिव नगरी मंडी में त्रिलोकीनाथ, महामृत्युंजय, पंचवक्त, अर्धनारीश्वर, नीलकंठ, शिवशंभू महादेव, एकादश रुद्र महादेव, रुद्र महादेव आदि अनेक शिव मंदिर हैं, जो बाबा भूतनाथ की नगरी को छोटीकाशी के रूप में पहचान दिलाते हैं। अब 12 ज्योतिर्लिंगों वाले शिवधाम की स्थापना से छोटी काशी पर्यटन के मानचित्र पर नए आयाम स्थापित करेगी।

इतिहास की करवटें

हिमाचल प्रदेश को शिवभूमि के रूप में भी जाना जाता है। शिव को यहां का जनमानस लोक रूप में पूजता है। ब्यास नदी के तट पर बसी बाबा भूतनाथ की नगरी मंडी जो छोटीकाशी के रूप में विख्यात है, शैवमत से प्रभावित रही है। मंडी रियासत का इतिहास सुकेत रियासत की सातवीं पीढ़ी से प्रारंभ होता है। जब सुकेत के राजा साहूसेन के छोटे भाई बाहूसेन ने अपने भाई से रूष्ट होकर कुछ विश्वास पात्र सैनिकों को साथ लेकर लोहारा जो तत्कालीन सुकेत रियासत की राजधानी थी, छोड़कर बल्ह के ही हाट में अपनी राजधानी बसाई थी। इसी के साथ मंडी रियासत की स्थापना हुई थी। बाहूसेन ने ही हाटेश्वरी माता के मंदिर की स्थापना की थी। इसके पश्चात बाहूसने मंगलौर में जा बसा था। 1280 ई.में बाणसेन ने भ्यूली में मंडी रियासत की राजधानी स्थापित की। जो बटोहली होते हुए 1527 ई.में अजबर सेन ने बाबा भूतनाथ के मंदिर के साथ ही आधुनिक मंडी शहर की स्थापना की थी।

मनभावन मंडी

हिमाचल प्रदेश के हृदय स्थल में बसा मंडी नगर....अनुपम सौंदर्य, ऐतिहासिक, पुरातात्विक विरासत एवं समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को अपने में समेटे हुए है। ब्यास नदी के तट पर बसे होने और शिव मंदिरों की अधिकता एवं घाटों की बनावट के चलते मंडी को छोटी काशी के नाम भी जाना जाने लगा है। ब्यास नदी के तट पर बसा मंडी नदी घाटी सभ्यता का उत्कृष्ट उदाहरण है। बाबा भूतनाथ की यह नगरी शिव धाम होने की वजह से ही हिमाचल की छोटी काशी कहलाती है। मंडी शहर अतीत में तिब्बत, लद्दाख व यारकंद के व्यापार का प्रमुख पड़ाव रहा है। व्यापारिक केंद्र होने की वजह से भी मांडव्य नगरी मंडी के रूप में मशहूर हुई। ऐतिहासिक सिल्क रूट यारकंद से होशियारपुर का पड़ाव भी मंडी ही रहा है। मांडव्य नगरी ने जहां इतिहास की करवटों की पदचाप सुनी है वहीं यहां के गौरवशाली इतिहास को भी अपनी आंखों से बनते हुए देखा है।

जिला लोक संपर्क अधिकारी, मंडी, हिमाचल प्रदेश

मण्डी शहर का विहंगम दृश्य

धरती को सुंदर बनाने चला स्वच्छता का गुमनाम सिपाही : हेमराज

वह चुपचाप रहता है। उसका कोई दोस्त नहीं। वह किसी से बोलता नहीं और मैंने किसी को उससे बोलते हुए भी नहीं देखा। चलते हुए उसकी नजरें सड़क पर गड़ी रहती हैं। सड़क पर फैला कूड़ा उसे परेशान करता है और घर से निकलते ही वह चुपचाप सफाई अभियान में जुट जाता है। वह कूड़े को धीरे-धीरे ठोकरें मार किनारे लगाता है। पर खाने-पीने की कुछ छोटी-छोटी ढीठ पन्नियां जमीन से चिपकी रहती हैं। इन पन्नियों के ठोकर से ना निकलने पर वह उन्हें हाथ से निकाल कर इकट्ठा कर लेता है। इकट्ठे किए कूड़े से धीरे-धीरे उसके हाथ भर जाते हैं। इस कूड़े को ठिकाने लगा वह फिर कूड़ा उठाने के काम में जुट जाता है। उसका यह काम घंटों चलता रहता है। यह काम करते हुए उसे किसी से कोई शिकायत नहीं, अफसोस नहीं, बस एक लगन है जैसे वह अपने घर का आंगन साफ कर रहा है। वह न तो कोई सरकारी कर्मचारी है और न ही स्वच्छता अभियान से जुड़ी किसी संस्था का सदस्य। इस दीवाने शख्स का नाम है हेमराज। वह हिमाचल प्रदेश के सोलन शहर में रहता है। उसका कार्यक्षेत्र शहर का चौक, गंज, लोअर और अप्पर बाजार है। ये न समझें हेमराज आजीविका के लिए कोई काम नहीं करता। वह प्रतिदिन सुबह नियत समय पर घर से अपने काम के लिए निकलता है। सफाई करते-करते बाज़ार पहुंचता है। वहां किसी दुकान के आगे सड़क पर गत्ते का एक टुकड़ा बिछा उस पर अपना सामान सजा देता है। उसे उंकड़ूं बैठने और अपना सामान लगाने के लिए बस डेढ़-दो फुट जगह चाहिए। उसके बेचने वाले सामान में किसी दिन जुराबें, किसी दिन मास्क या मिट्‌टी के बने झावां, गुल्लक आदि शामिल होते हैं। उसके पास बिकने वाले सामान पर कभी सेल नहीं लगती। कोई डिस्काउंट नहीं होता। खरीददारी पर कोई लॉटरी नहीं जिसमें कार, स्कूटर, टी.वी. आदि निकले। वैसे तो उसका क्या माल, क्या कीमत और क्या मुनाफा! मैंने उसे जब पहली दफा देख तो वह मिट्‌टी की बनी गुल्लकें बेच रहा था। उसके गत्ते के डिब्बे में छः गुल्लकें रखी थीं और चार-छः साथ रखी बोरी में। यही गुल्लकें आज वह बेचने के लिए लाया है। इसमें वह क्या मुनाफा कमाएगा, अंदाजा लगाया जा सकता है। कुम्हार की पूरी आर्थिकी इन्हीं मिट्‌टी के खिलौनों और बर्तनों पर टिकी होती है। मिट्‌टी की सौंधी खुशबू और रंग इनमें रचे-बसे होते हैं। जैसे-जैसे विकास का पहिया घूमता गया ग्रामीण श्रमजीवी शिल्पकारों का हुनर धुंधला पड़ता गया। इस सामान का दाम बढ़ता है तो नाममात्र को। इसके निर्माण में लगे श्रम का दाम तो कभी जुड़ा ही नहीं। हां, खिलौनों तथा अन्य सामान के खरीददारों की संख्या पिछले कुछ दशकों में तेजी से गिरी है। कुम्हार का चाक जो लगातार घूमता रहता था अब कई-कई दिनों तक थमा रहता है। इसका मुख्य कारण चीन तथा अन्य देशों में बने रंग-बिरंगे सस्ते खिलौनों तथा अन्य सामान का बाजारों में आसानी से आना है। हमारे देश में अमीरों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। समय-समय पर दुनिया के सबसे अधिक अमीरों की निकलने वाली सूची में देश के 10-12 धनाढ्यों का नाम हमेशा दर्ज रहता है। पर धनाढ्यों की इस दुनिया में हेमराज तथा कुम्हार की दुनिया को कुछ लेना-देना नहीं। खैर, हेमराज के सिर पर जब तक भगवान का हाथ है उसे कोई चिंता नहीं। उसे तो बस बाजार में किनारे पर बैठने के लिए सिर्फ डेढ़-दो फुट जगह चाहिए जहां पर वह अपनी छोटी-सी दुकान लगा सके। जैसे ही सामान बिका या उसे लगा कि अब सामान समेटने का समय हो गया है, वह उठ जाता है। अपना सामान एक थैले में रख आस-पास की किसी दुकान के अंदर किसी कोने में रख आता है। आते हुए दुकान के फर्श पर बिखर कूड़ा उठाना वह नहीं भूलता। अब वह फिर सड़क पर होता है- धीरे-धीरे ठोकर से कूड़े को किनारे लगाता, उठाता आगे बढ़ता हुआ। धरती को बेहतर और सुंदर बनाने के प्रयास में ईमानदारी और खामोशी से जुटे हेमराज को सलाम।

कुल राजीव पंत

सत्यकुल, नजदीक दयानंद स्कूल, सन्नी साइड, सोलन, जिला सोलन,
हिमाचल प्रदेश-173 212, मो. 0 85804 49989

उत्तरी भारत का अजंता 'रॉक कट टेम्पल' मसरूर

◆ सुरेश कौंडल

एक छोटा-सा समृद्ध प्रदेश हिमाचल प्रदेश उत्तर भारत में हिमालय की गोद में बसा हुआ है जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य और अलौकिकता के लिए जगत प्रसिद्ध है। इस पावन धरती हिमाचल को देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है और कहा जाता है कि इस पर देवी-देवताओं की विशेष कृपा है। देवी देवताओं के प्रति अटूट श्रद्धा होने के कारण पूरे प्रदेश में विभिन्न शैलियों में निर्मित प्राचीन मंदिर विद्यमान हैं जो प्रस्तर और काष्ठ के बने हुए हैं। मंदिरों की कारीगरी देख कर प्रदेश की समृद्ध संस्कृति और उसकी भव्यता का अनुमान लगाया जा सकता है। यही समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और धर्मिक परंपराएं हिमाचल की पुण्य धरा को विश्वभर में अद्वितीय बनाती है।

निर्माण कला का अद्भुत नमूना रॉक कट मंदिर मसरूर

आइए आज आपको ले चलते हैं एक अद्भुत मन्दिर में जो अपने आप में बेजोड़ कला का एक नमूना है। जी हां, हम बात करने जा रहे हैं कि हिमाचल का अजंता 'रॉक कट टेम्पल' मसरूर के बारे में। जिला काँगड़ा के नगरोटा सूरियां कस्बा से महज 9 किलोमीटर की दूरी पर बसे गांव मसरूर में स्थित ये अद्भुत कलाकृति एक अलौकिक सांस्कृतिक धरोहर है। यहां बस या निजी वाहन द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है। घुमावदार सड़क मार्ग से हरे भरे जंगल को पार करते हुए जैसे ही आप गांव मसरूर में उतरते हैं, वहां इस अदभुत धरोहर की प्रथम झलक का एक सुखद आश्चर्य आपका स्वागत करता है जो आगंतुक को मनोरम और रोमांचकारी अनुभव का अहसास कराता है।

हिंदू मंदिरों का समूह मसरूर

समुद्रतल से लगभग 2500 फुट की ऊंचाई पर चट्टानी पहाड़ी पर स्थित ये मानव निर्मित रॉक कट टैम्पल जिसका अर्थ है पत्थर तराश कर बनाया गया मंदिर। पत्थर तराश कर बनाई गई यह अद्भुत कलाकृति वास्तव में मंदिरों का एक संकुल है जो कि उत्तर पूर्व दिशा में धौलाधार पर्वत की ओर मुख करके सदियों से आस्था का मुख्य केंद्र बनी हुई है। धौलाधार पर्वत और ब्यास नदी के परिदृश्य में स्थित, यह मंदिर एक सुरम्य पहाड़ी के उच्चतम बिंदू पर स्थित है, जहां से धौलाधार पर्वत की हिमाच्छादित चोटियां

स्पष्ट नजर आती हैं। पूरा दृश्य ऐसा लगता है कि मानो किसी कलाकार ने एक बेहतरीन कृति सजा कर रख दी हो।

एक प्रस्तर को काट कर बनाए 16 शिखर

उन्नीस शिखर मंदिरों वाली यह अद्‌भुत संरचना जिसमें सोलह शिखर एक ही प्रस्तर को तराश कर बनाये गए हैं। शेष दो शिखर इसके दोनों ओर स्वतंत्र खड़े हैं। एक बड़ी चट्टान निर्मित पहाड़ को काट कर गुफानुमा मन्दिर के मुख्य भाग में भगवान राम, लक्ष्मण और माता सीता की काले पत्थर की मूर्तियां हैं, जो मुख्य मंडप में स्थापित हैं। मुख्य मंदिर में पहले शिवलिंग हुआ करता था। राम और सीता की मूर्तियों को वहां संभवतः 1905 के भूकंप के बाद स्थापित किया गया होगा। मंदिर के सामने एक बड़ा मंडप था और बड़े-बड़े स्तम्भ थे जो सम्भवतः भूकम्प के कारण नष्ट हो चुके हैं, हालांकि छत पर जाने की सीढ़ियां दोनों तरफ अभी भी देखी जा सकती हैं।
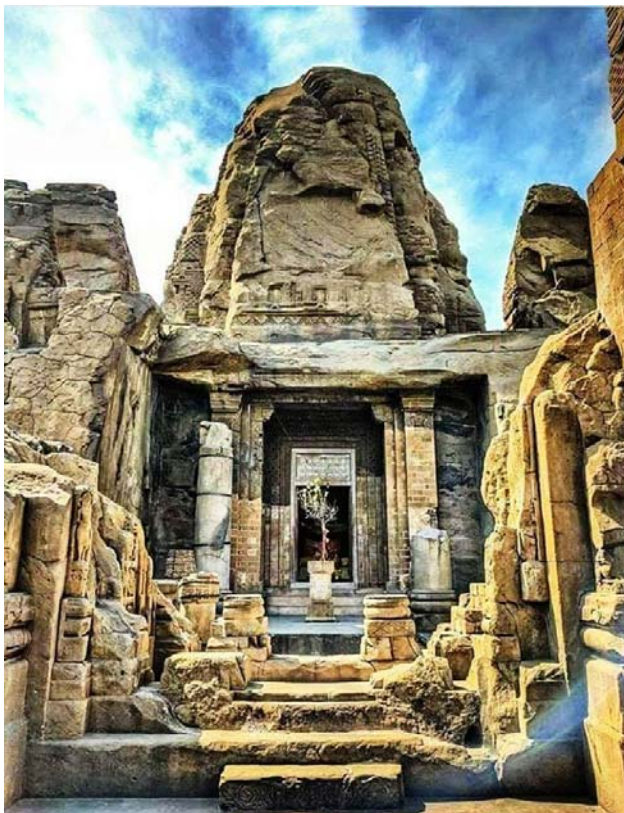
ठाकुरद्वारा भी कहा जाता है

मुख्य मंदिर के आसपास दुर्गा, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य और अन्य देवी-देवताओं के मंदिरों के अवशेष हैं। मंदिर के दूसरी ओर एक आयताकार मंडप है, जिसमें चार विशाल स्तंभ तथा सामने की ओर एक मुखमंडप है। पूर्णतया सनातन धर्म से ओत-प्रोत इस मंदिर को 'ठाकुरद्वारा' भी कहा जाता है। मन्दिर द्वार पर उत्कीर्ण शैव आकृतियों से प्रतीत होता है ये मंदिर भगवान शिव को समर्पित रहा होगा।

माना जाता है भारतीय आर्यन वास्तुकला की नगारा शैली में नौवीं शताब्दी में बने इस मंदिर को चट्टान के एक बड़े ठोस टुकड़े का उपयोग करके बनाया गया है, ये शैली आठवीं और नौवीं शताब्दी में मध्य भारत में प्रचलित थी। इसकी स्थापत्य शैली के कारण, इसे अजंता-एलोरा गुफा मंदिर की याद ताजा करने वाला कहा जाता है। मध्यप्रदेश के मन्दसौर में स्थित धर्मराजेश्वर मंदिर भी इसी शैली से निर्मित मंदिरों का उदाहरण है।

किसने, कब किया मंदिर का निर्माण

इसे किसने कब और क्यों बनाया? ये आज भी एक बहुत बड़ा रहस्य है, इसका कोई प्रमाणिक साक्ष्य नहीं है, परंतु एक लोकप्रिय पौराणिक कथा के अनुसार महाभारत काल में पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान इसी जगह पर निवास किया था और उन्होंने ही इस मंदिर का निर्माण किया। चूंकि यह एक उनका गुप्त निर्वासन स्थल था इसलिए वे अपनी पहचान उजागर होने से पहले ही यह जगह छोड़ कहीं और पलायन कर गए । कहा जाता है कि मंदिर का जो एक अधूरा भाग है उसके पीछे भी यही एक ठोस कारण मौजूद है। मंदिर के पहाड़ी के ढलान पर जंगली क्षेत्र में फैले हुए विशाल निर्माण एवं वास्तु अवशेषों के आधार पर ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि प्राचीन समय में मसरूर मंदिर के आसपास एक नगर रहा होगा जो शायद भौगोलिक परिस्थितियों के कारण दुनिया की नजर से अछूता रहा।

कभी खुशहाल रहा है यह क्षेत्र

लिव हिस्ट्री डॉट कॉम में छपे शोधपत्र के अनुसार प्राचीन समय में यह क्षेत्र त्रिगर्त या जालंधर साम्राज का हिस्सा हुआ करता था। इसका जिक्र महाभारत और पांचवीं सदी के व्याकरण संबंधी पाणिनी ग्रंथों में मिलता है। ये क्षेत्र ऐसे मार्ग पर पड़ता है जो मध्य एशिया, कश्मीर और पंजाब को तिब्बत से जोड़ता है। इस तरह व्यापार के मामले में इसका बहुत महत्त्व है और इसीलिये ये क्षेत्र समृद्ध और खुशहाल है। चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेनसांग (635 ई. पू.) में कुल्लु जाते समय यहां आया था और उसने इस क्षेत्र की समृद्धि के बारे में भी लिखा है। बहुत संभव है कि मसरूर मंदिर या तो अमीर व्यापारियों ने या फिर कांगड़ा के राजाओं ने बनवाए होंगे। उस समय किसी वित्तीय सहायता के बिना इतने भव्य मंदिर बनवाना संभव नहीं था। सदियों तक ये मंदिर जंगलों में छुपे रहे और बाहर के लोगों को इनके बारे में पता ही नहीं था।

अंग्रेज अफसर ने खोजा मसरूर मंदिर

सन 1835 में ऑस्ट्रिया के खोजकर्ता बैरन चार्ल्स हूगल ने कांगड़ा के एक ऐसे मंदिर का जिक्र किया है, जो उनके अनुसार एलोरा के मंदिरों से काफी मेल खाता था। यूरोप के एक अन्य यात्री ने भी 1875 में एक मंदिर का जिक्र किया है, लेकिन अंग्रेज अधिकारियों ने इस पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। कालांतर में

सर्वप्रथम एक अंग्रेज अधिकारी एच एल शटलबर्थ द्वारा इसे खोजा गया और दुनिया की नजर में लाया गया। हेनरी शटलबर्थ मसरूर मंदिर आया था और उसने इसके बारे में भारतीय पुरातत्व विभाग के अंग्रेज अधिकारी हेरोल्ड हारग्रीव्ज को बताया था। हारग्रीव्ज ने इन मंदिरों का अध्ययन किया और सन 1915 में उसने इन मंदिरों पर एक किताब लिखी। किताब के प्रकाशन के फौरन बाद इन मंदिरों को भारतीय पुरातत्व विभाग का संरक्षण मिल गया जो आज भी जारी है।

मंदिर की अद्भुत संरचना

मन्दिर की संरचना बहुत अद्भुत है। एक बड़ी चट्टान को काट कर इन मंदिरों के संकुल को इस अद्भुत ढंग से काट कर बनाया गया कि जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। मन्दिर निर्माण में किसी प्रकार के सीमेंट,धातु, ईंट, गारा या अन्य भवन निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का इस्तेमाल नहीं किया गया है। चट्टान काट कर ही गर्भ गृह, मूर्तियां,सीढ़ियां और दरवाजे बनाए गये हैं। चट्टान काट कर जो सीढ़ी बनाई गई है, वो आपको मंदिर की छत पर ले जाती है और वहां से पूरा गांव एवं धौलाधार पर्वत श्रृंखला की हिममंडित चोटियां कुछ अलग ही नजर आती हैं। मन्दिर द्वार पर नक्काशीकृत काष्ठ के विशाल किवाड़ लगाए गए हैं।

मंदिर परिसर में जलाशय

मंदिर के बिल्कुल सम्मुख प्रांगण में स्थित एक प्राकृतिक जलाशय जो मंदिर की खूबसूरती में चार चांद लगा देता है। कहा जाता है कि इस जलाशय को पांडवों ने ही अपनी पत्नी द्रौपदी के लिए बनवाया था। इस भव्य मंदिर के कुछ हिस्से का प्रतिबिंब जब इस जलाशय से दिखता है तो वह इस मंदिर की आभा को चार चांद लगा देता है। हालांकि यह शैली पश्चिम और दक्षिण भारत के कई प्राचीन मंदिरों में देखने को मिल जाती है, पर भारत के उत्तरी भाग में यह एक मंदिर अपने आप में ही अनूठा है।

मंदिर की दीवारों पर की गई बारीक नक्काशी मन्दिर की अलौकिकता और उस समय की वास्तुकला, मूर्तिकला की दक्षता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मंदिर परिसर में जगह जगह की गई बारीक नक्काशी इतिहास में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह मंदिर एक आदर्श स्थल है जहां पूरे साल कभी भी आया जा सकता है।

पर्यटन की अपार संभावनाएं

इस पवित्र स्थल का ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व होने के कारण यहां दार्शनिकों, पर्यटकों, कला पारखियों के साथ धर्मावलम्बियों की भीड़ देखने मिलती है। ये स्थान पूरी तरह से पुरातत्व विभाग की देख रेख में है जो समय समय पर इसका जीर्णोद्धार करता रहता है। यहां किसी प्रकार का दान पात्र नहीं रखा गया और न ही अन्य प्रकार का चढ़ावा चढ़ाया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस अलौकिक मन्दिर की पहचान होने के बावजूद अभी तक इस क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। पर्यटन के क्षेत्र में अपार सम्भावनाओं को संजोये ये अद्भुत कलाकृति वर्षों से सरकार की ओर से बेहतरीन बुनियादी सुविधाओं की बाट जोह रही है।

हालांकि स्थानीय लोगों ने कुछ छोटे छोटे होटल और रेस्तरां खोल कर इन घनी और सुन्दर वादियों में पर्यटकों को कुछ सुविधाएं देने की कोशिश की है परन्तु ये भी अपर्याप्त हैं। जिला काँगड़ा के इस रोमांचकारी पर्यटन स्थल को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है ताकि ये अनमोल विरासत दुनिया के नक्शे पर प्रकाशमान हो सके।
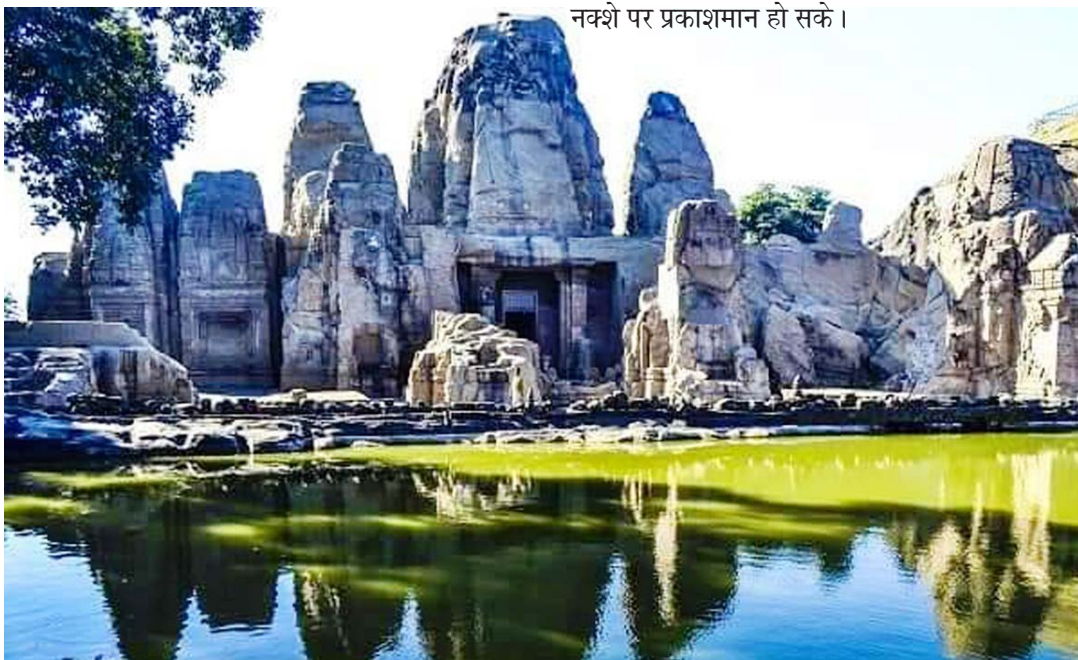
अद्भुत नजारों की कड़ी 'बाथू की लड़ी'

मंदिर के आसपास का नज़ारा बेहद मनोरम है, जिसकी ओर कोई भी आकर्षित हो जाये। चारों तरफ पानी और बीच में मन्दिरों का समूह बेहद ही खूबसूरत नज़र आता है। मन्दिर स्थल से आकर्षित करती धौलाधार श्रृंखला का अद्भुत नज़ारा देखते ही बनता है।

अमूल्य सांस्कृतिक विरासत संजोए देवभूमि हिमाचल प्रदेश हजारों छोटे-बड़े मंदिरों की धरती है। माता ज्वाला जी, चिंतपूर्णी, त्रिलोकीनाथ, भीमाकाली, नयनादेवी आदि अनेकों ऐसे मन्दिर हैं जिनका वैभव चारों दिशाओं में फैला है। आज मैं आपको एक ऐसे अनूठे मन्दिर के बारे में बताने जा रहा हूं जो अपने आपमें किसी अजूबे से कम नहीं। क्या आपने ऐसे मन्दिर के बारे में कभी सुना है जो आठ महीने तक पानी के अंदर रहता है और सिर्फ चार महीने के लिए ही भक्तों को दर्शन देता हो।

हालांकि ये कोई दैवीय चमत्कार तो नहीं पर परिस्थितिवश कई दशकों से ये मंदिर पानी के अंदर रह रहा है, लेकिन पानी के अंदर रहने के बावजूद इस मंदिर को कोई नुकसान नहीं होता है। इस मंदिर को बाथू मन्दिर के नाम से जाना जाता है और स्थानीय भाषा में 'बाथू की लड़ी' के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर की इमारत में लगे पत्थर को बाथू का पत्थर कहा जाता है। बाथू मन्दिर परिसर में मुख्य मन्दिर के अलावा अन्य आठ छोटे मंदिर भी हैं, जिन्हें दूर से देखने पर एक माला में पिरोया हुआ सा प्रतीत होता है। इसीलिए इस खूबसूरत मंदिर को बाथू की लड़ी (माला) कहा जाता है। इन मन्दिरों में शेष नाग, विष्णु भगवान की मूर्तियां स्थापित है और बीच में एक मुख्य मंदिर है जो भगवान शिव को समर्पित है। हालांकि इस बात का पक्का प्रमाण नहीं है कि मुख्य मन्दिर एक शिव मंदिर है। कुछ लोग इसे भगवान विष्णु को समर्पित मानते हैं परतुं मन्दिर की शैली और बनावट को देखते इसे शिवमंदिर माना गया है। कुछ वर्ष पूर्व स्थानीय लोगों ने मिल कर मन्दिर में पुनः एक शिवलिंग की स्थापना भी की है। मन्दिर में इस्तेमाल किये गए पत्थर, शिलाओं पर भगवान, विष्णु, शेष नाग और देवियों इत्यादि की कलाकृतियां उकेरी हुई मिलती हैं। ऐसा माना जाता है कि बाथू मंदिर की स्थापना छठी शताब्दी में गुलेरिया साम्राज्य के समय की गई थी। हालांकि इस मंदिर के निर्माण के पीछे कई किंवदंतियां प्रचलित हैं। कुछ लोग इसे पांडवों द्वारा अज्ञातवास के दौरान बनाया गया मानते हैं। कहा जाता है कि स्वयं पांडवों ने इसका निर्माण किया था। उन्होंने अपने अज्ञातवास के दौरान शिवलिंग की स्थापना की थी। उन्होंने इस मंदिर के साथ स्तंभ की अनुकृति जैसा भवन बनाकर स्वर्ग तक जाने के लिए पृथ्वी से सीढ़ियां भी बनाई थीं जिनका निर्माण उन्हें एक रात में करना था। एक रात में स्वर्ग के लिए सीढ़ियां बनाना कोई आसान कार्य नहीं था, इसके लिए उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण से मदद की गुहार लगाई फलस्वरूप भगवान श्रीकृष्ण ने छः महीने की एक रात कर दी। लेकिन छः महीने की रात में स्वर्ग की सीढ़ियां

बनकर तैयार ना हो सकी, सिर्फ ढाई सीढ़ियों से उनका कार्य अधूरा रह गया था और सुबह हो गई। आज भी इस मंदिर में स्वर्ग की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ नजर आती हैं वर्तमान समय में इस मंदिर में स्वर्ग की चालीस सीढियां मौजूद हैं जिन्हें लोग आस्था के साथ पूजते हैं। यहां से कुछ दूरी पर एक पत्थर मौजूद है, जिसे भीम द्वारा फेंका गया माना जाता है। कहा जाता है कि कंकड़ मारने से इस पत्थर में खून निकलता है। इस मंदिर के बारे में ऐसे कई सारे राज यहां दफन हैं।

जिस जगह ये मंदिर स्थित है वह जगह हल्दून घाटी के नाम से जानी जाती थी। धौलाधार की तलहटी में बसी ये घाटी प्राकृतिक सुंदरता से लबरेज थी। नैसर्गिक नजारों से भरपूर हल्दून घाटी हिमाचल की सबसे उपजाऊ घाटियों में से एक थी। जिसमें एक समृद्ध संस्कृति निवास करती थी। रेल यातायात से सम्पन्न ये घाटी व्यापार और वाणिज्य का केंद्र थी। वर्तमान रेलमार्ग किसी समय में ज्वाली से हल्दून घाटी वाया राजपुरा-अनूर-जगतपुर -मंगवाल-गुलेर से होकर गुजरता था। एक ओर देहरी खड्ड ,गज्ज खड्ड, बनेर खड्ड का मुहाना और दूसरी और व्यास नदी के मुहाने के मध्य बसी इस बहुत ही उपजाऊ घाटी के लोग बहुत समृद्ध थे। वहीं राजपुरा और जगतपुर के बीच ही कहीं ये मंदिर स्थित था। किंतु सन 1970 में व्यास नदी पर पौंग बांध के निर्माण के चलते सारी हल्दून घाटी जलमग्न हो गई। वहां के लोगों को विस्थापन का दंश झेलना पड़ा। और पीछे रह गया बाथू का मंदिर अकेला अड़िग। पौंग बांध निर्माण के कारण बने जलाशय एवं सरकारी उपेक्षा और स्थानीय लोगों की अनदेखी के कारण यह प्राचीनतम मंदिर लुप्तप्रायः होने की कगार पर पहुंच गया। बरसात के दिनों में पौंग बांध का जलस्तर बढ़ने से ये मंदिर जल समाधि ले लेता है और आठ महीने पानी में रहने के पश्चात फरवरी माह के अंत तक जलस्तर घटने पर पानी से बाहर आ जाता है।

हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा जिले की तहसील जवाली के अंतर्गत आने वाले इस मंदिर तक सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है। तहसील मुख्यालय जवाली से लगभग 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस मन्दिर तक कार द्वारा वाया केहरियाँ-ढन-चलवाड़ा - गुगलाड़ा सम्पर्क मार्ग से होकर पहुंचा जा सकता है। ज्वाली से बाथू की लड़ी पहुंचने के दो रास्ते हैं, एक बिलकुल सीधा रास्ता है, जिससे आप बाथू तक आधे घंटे में पहुंच सकते हैं, और वहीं दूसरे रास्ते से आपको इस मंदिर तक पहुँचने में करीबन 40 मिनट का वक्त लगेगा। गुगलाड़ा नामक स्थान पर पहुंचने पर बस योग्य मार्ग समाप्त हो जाता है फिर एक सीधे कच्चे मार्ग से मन्दिर की ओर का सफर कार या टैक्सी में तय करना पड़ता है वास्तव में वो कभी रेलमार्ग हुआ करता था। पुराने रेलवे स्टेशनों और पुलियों के अवशेष आज भी जहां तहां उस मार्ग पर बिखरे मिल जाते हैं। रास्ते में बांसों का जंगल, जो कि हाल ही में वन विभाग द्वारा प्रवासी पक्षियों को शरण देने के उद्देश्य से लगाया गया है, इस राह की सुंदरता को चार चांद लगा देता है। जैसे ही जंगल का रास्ता समाप्त होता है और सामने नज़र आता है पौंग बांध जलाशय का विहंगम दृश्य और एक खुला हरा भरा मैदान। जलाशय से आने वाली ठंडी पवन बरबस ही मन को रोचित कर देती हैं।

मुख्य सड़क से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी तय करने के पश्चात मन्दिर तक पहुंचा जा सकता है। ये सारा इलाका भारत सरकार द्वारा प्रवासी पक्षियों के आश्रय के लिए पक्षी अभयारण्य या आर्द्र भूमि (Wetland) के रूप में संरक्षित है जिसमें किसी भी तरह का भवन निर्माण वर्जित है। पक्षियों पर अध्ययन के लिए आने वाले छात्रों , वैज्ञानिकों या प्रकृति प्रेमियों के ये लिए सबसे उत्तम जगह है। विदेशी सैलानियों का यहां आना जाना लगा रहता

है। खुले मैदान को पार कर के जलाशय के तट पर पहुंच कर वहां का नज़ारा देखते ही बनता है। जलाशय में उठने वाली लहरें समुद्र तट जैसा रोमांच अनुभव करवाती हैं। वर्तमान समय में पिकनिक मनाने वालों के लिए ये आदर्श गंतव्य बन कर उभरा है इसलिए आज कल स्थानीय लोग इस जगह को मिनी गोवा की संज्ञा देते हैं। चारों ओर पानी से घिरे टापू पर स्थित बाथू के मंदिर का प्रतिबिम्ब जब जलाशय में पड़ता है तो इसकी आभा को चार चांद लगा देता है। मन्दिर वाले टापू पर नाव द्वारा पहुंचा जा सकता है और वो भी तब जब पानी का स्तर नीचे हो। कभी-कभी जलस्तर इतना कम हो जाता है कि मंदिर तक भू-मार्ग सामने आ जाता है। तब गाड़ियां मन्दिर द्वार तक पहुंच जाती हैं।

गत वर्षों में सरकार द्वारा पर्यटकों के मनोरंजन के लिए कुछ खास प्रबंध किये गए हैं। पौंग झील में मोटर बोट, स्टीमर और नावों का विशेष प्रबंध किया है ताकि पर्यटक बोटिंग का आनंद ले सकें। कुछ स्थानीय दुकानदारों द्वारा कुछ अस्थायी दुकानें भी लगाई गई हैं। फरवरी से जून मध्य तक प्रतिदिन हजारों लोग बाथू की लड़ी मन्दिर के मनोरम नजारों का एहसास करने आते हैं।

अप्रैल से जून के महीनों में इस मंदिर के दर्शन के लिए उत्तम हैं। शेष आठ महीने तक ये मंदिर पानी में जलमग्न रहता है, तो उस दौरान इस मंदिर का ऊपरी हिस्सा ही दिखाई देता है। इस मंदिर के आसपास कुछ छोटे-छोटे टापू बने हुए हैं, इनमें से एक पर्यटन की दृष्टि से प्रसिद्ध है जिसे रेनसर के नाम से जाना जाता है, इसमें रेनसर के फारेस्ट विभाग के कुछ रिजोर्ट्स हैं जहां पर्यटकों के रुकने और रहने की उचित व्यवस्था है। इस रिजॉर्ट पर नाव के माध्यम से पहुंच जा सकता है। अन्य विकल्प निकटतम कस्बा जवाली है जहां रहने के लिए विश्राम गृह और होटल हर समय उपलब्ध होते हैं।

मंदिर के आसपास का नज़ारा बेहद मनोरम है, जिसकी ओर कोई भी आकर्षित हो जाये। चारों तरफ पानी और बीच मन्दिरों का समूह बेहद ही खूबसूरत नजर आता है। मन्दिर स्थल से हिमालय की धौलाधार शृंखला का अद्‌भुत नज़ारा देखने को मिलता है। जब कभी भी आप कांगड़ा आयें तो इस प्राचीन मंदिर को देखने के लिए जरूर जाएं। परतुं कुछ बातों का खयाल अवश्य रखें। एक तो जलाशय में नहाने न उतरें क्योंकि पानी बहुत ही गहरा है दूसरा अपने साथ खानपान का सामान लाएं। पर वहां पर कचरा छोड़ कर ना आयें। कुछ असामाजिक तत्त्व खाने पीने के पश्चात कांच के गिलास और बोतलें तोड़ जाते हैं जो कि किसी भी सभ्य समाज के लिए बहुत शर्मनाक प्रतीत होता है। हम सब को ऐसी पवित्र जगहों की सुंदरता और मर्यादा का सम्मान करना चाहिए। इस स्थान की लोकप्रियता में दिनोंदिन बढ़ोतरी हो रही है। सरकार से भी निवेदन रहेगा कि बाथू की लड़ी एक बहुत रमणीय स्थल है जहां विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। बाथु की लड़ी में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। प्रतिदिन लोग हजारों की तादाद में यहां जाते हैं। देखा जा रहा कि लोग बिना किसी सुरक्षा उपकरणों के झील के पानी में नहाने उतर जाते हैं। लोगों में वहां स्थित लगभग 50 मीटर ऊंची मीनार पर चढ़ कर फोटों खिंचवाने का जनून आये दिन किसी हादसे को न्योता देता रहता है। सरकार को इस बारे कड़ा संज्ञान लेना चाहिए तथा पर्यटकों की सुरक्षा एवं भौतिक सुविधाओं का इंतजाम करना चाहिए ताकि इस स्थान की लोकप्रियता को देखते हुए इसे एक आदर्श पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सके।

सुपुत्र कैप्टन हाकम सिंह, गांव धान, डाकघर मटलैहड़,
तहसील जवाली, जिला काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश-176 023
मो. 0 98051 40064

कृषि-बागबानी
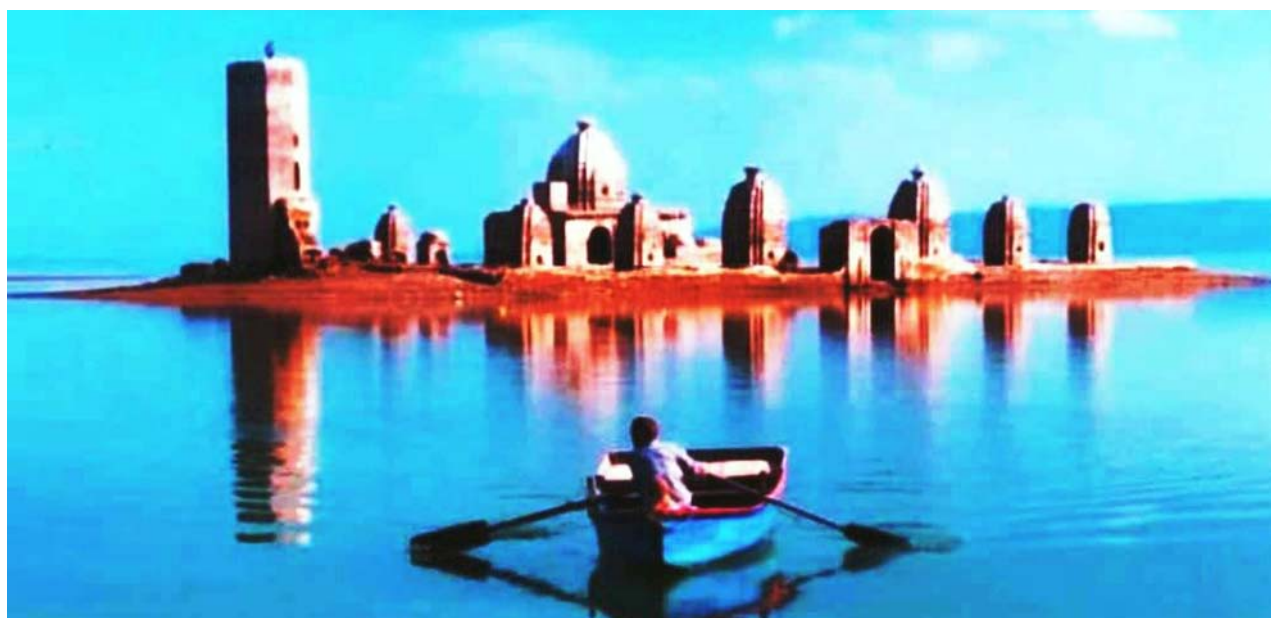
सरकार के सद्प्रयासों से किसानों की आय होगी दोगुनी

◆ दिनेश कुमार

प्रदेश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि व सम्बद्ध क्षेत्रों का लगभग 12.73 प्रतिशत योगदान है। इस समय प्रदेश में 5.42 लाख हेक्टेयर भूमि पर काश्त होती है। लगभग 62 प्रतिशत लोग सीधे तौर पर कृषि कार्यों पर निर्भर हैं। वर्तमान प्रदेश सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने के उद्देश्य से कई सिंचाई सुविधाओं के विस्तार व कृषि गतिविधियों में विविधता लाने के लिए अनेक नई योजनाएं आरंभ की हैं।

खेती और खाद्य उत्पादन के मामले में हिमाचल निरंतर अग्रसर है। आनाज, फल व सब्जियों का यहां रिकार्ड उत्पादन हो रहा है। दुग्ध उत्पादन में भी दिन प्रतिदिन बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। गैर मौसमी सब्जियों व सेब उत्पादन के मामले में हिमाचल विश्व मानचित्र पर अपनी अलग पहचान बनाने में कामयाब हुआ है। इन सबके बावजूद खाद्य सुरक्षा संचालित करने वाले किसानों की कम आमदनी व लाभप्रदता की क्षीण स्थिति के कारण वे जोखिमपूर्ण आजीविका कमाने पर मजबूर हैं। किसानों को ऐसी दयनीय स्थिति से उबारने व उनकी आय को दोगुना करने के लिए सरकार ने ठोस रूपरेखा तैयार की है। इसके लिए नवीन योजनाएं आरंभ की गई हैं। साथ ही किसानों को विपणन की आधुनिक सुविधाएं मुहैया करवाने की कवायद भी आरंभ की है। इन योजनाओं का प्रदेश के किसान भरपूर लाभ भी उठा रहे हैं। हिमाचल में कृषि क्षेत्र में हुई प्रगति का अंदाजा प्रदेश को कृषि क्षेत्र में मिले अनेक पुरस्कारों से सहज ही लगाया जा सकता है। कृषि के साथ-साथ बागबानी का दायरा भी प्रदेश में लगातार बढ़ रहा है। हालांकि वैश्विक महामारी कोरोना के कारण प्रदेश में भी हर क्षेत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ा है और खेती-किसानी भी इससे अछूता नहीं रहा हैं, बावजूद इसके प्रदेश के मेहनतकश किसानों ने अर्थव्यवस्था को बल दिया और आम उपभोक्ताओं को खाद्यान्न की कोई कमी नहीं आने दी।

किसानों-बागबानों की आय में वृद्धि के लिए

कृषि-बागबानी उत्पादन में बढ़ोतरी होना अनिवार्य है। उत्पादन में वृद्धि के लिए पर्याप्त सिंचाई सुविधाओं का होना आवश्यक है। इसलिए सरकार ने हर खेत को सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए 'जल से कृषि को बल', 'बहाव सिंचाई योजना' व 'सौर सिंचाई योजना' आरंभ की है। इन योजनाओं का प्रदेश के किसान भरपूर लाभ उठा रहे हैं। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा कृषकों को सिंचाई के लिए बिजली की दर को भी एक रुपये प्रति यूनिट से घटाकर 75 पैसे प्रति यूनिट किया है जिससे प्रदेश के लाखों किसान लाभान्वित हो रहे हैं। सृजित सिंचाई क्षमता का उपयुक्त प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने 'हिमकैड' योजना प्रारम्भ की है। इस योजना में 15,242 हेक्टेयर क्षेत्र को कमांद क्षेत्र विकास के तहत लाया जा चुका है। वर्ष 2021-22 में इस योजना पर 83 करोड़ रुपये की सहायता से 4,000 हेक्टेयर क्षेत्र को सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी।

प्रदेश के पांच जिलों में जापान की सहायता से चलाई जा रही जाइका परियोजना के पहले चरण की सफलता को देखते हुए इसके दूसरे चरण को सभी बारह जिलों में चलाया जाना प्रस्तावित है। 1,055 करोड़ रुपये की इस परियोजना को इसी वित्त वर्ष में आरंभ किया जाना प्रस्तावित है। इसके लिए सभी औपचारिकताएं पूर्ण की जा चुकी हैं। फसल विविधिकरण के माध्यम से किसानों की आय में वृद्धि के उद्देश्य से इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु प्रारम्भिक गतिविधियां की जाएंगी जिनमें मुख्यतः कृषक विकास संघों से जुड़े किसानों को प्रशिक्षण, प्रदेश की मंडियों का आधुनिकीकरण इत्यादि सम्मिलित हैं।

प्रदेश में सफलतापूर्वक चलाई जा रही 'प्राकृतिक खेती-खुशहाल किसान' योजना के अन्तर्गत 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक कृषि' के सकारात्मक और उत्साहवर्धक परिणाम सामने आने लगे हैं। प्रदेश में अभी तक इस पद्धति को 1,05,218 किसानों ने अपनाया है। आगामी वर्ष में 50 हजार नये किसान परिवारों को इस योजना से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त एक लाख किसान परिवारों को इस योजना के प्रति जागरूक किया जाएगा। प्राकृतिक उत्पादों को बाजार में अलग पहचान मिले, इसके लिए इस पद्धति से जुड़े किसानों का पंजीकरण और प्रमाणीकरण किया जाएगा और उनके उत्पादों की ब्रांडिंग भी की जाएगी। इस योजना के कार्यान्वयन के लिए सरकार ने चालू वित्त वर्ष में 20 करोड़ का बजट प्रावधान किया है। सरकार ने परम्परागत बीजों के संरक्षण और संवर्धन हेतु नई "स्वर्ण जयंती परम्परागत बीज संरक्षण एवं संवर्धन योजना" आरंभ करने का भी निर्णय लिया है। इसके तहत पहाड़ी दालों,

परम्परागत अनाजों और बेमौसमी फसलों के लिए बीज से बाजार तक की एक समग्र कार्य योजना बनाई जाएगी। स्वयं सहायता समूहों, किसान समूहों एवं किसान उत्पादक संगठनों को इस योजना में शामिल किया जाएगा। इसके अनुरूप प्रदेश में कृषि तथा बागबानी विश्वविद्यालयों में अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए दोनों विश्वविद्यालयों के लिए 5 करोड़ रुपये का अनुसंधान कोष स्थापित किया जाएगा।

प्रदेश के किसानों अथवा उत्पादकों को उनकी उपज के विपणन हेतु समुचित सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए 63 मंडियां सुचारू रूप से कार्य कर रही हैं। प्रदेश में 3 नई मंडियों - मेंहदली और शिलारू, जिला शिमला तथा बन्दरोल, जिला कुल्लू के निर्माण तथा 20 वर्तमान मंडियों के विस्तार या आधुनिकीकरण कार्य को इसी वित वर्ष में पूर्ण किया जाएगा। इसके लिए 200 करोड़ रुपये व्यय किये जाएंगे। प्रदेश की वर्तमान 19 मंडियों के अतिरिक्त 10 मंडियों को ई-नाम व्यवस्था से जोड़ने की चल रही प्रक्रिया को पूरा किया जाएगा। फूलों के व्यापार को हिमाचल प्रदेश कृषि, बागबानी उत्पादन विपणन अधिनियम 2005 के अधीन लाने की भी योजना है। 'हिमाचल पुष्प क्रान्ति योजना' के तहत फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए 11 करोड़ रुपये के प्रावधान से लगभग एक लाख वर्गमीटर क्षेत्र में हरित गृहों की स्थापना की जाएगी। प्रदेश में जंगली जानवरों द्वारा फसलों को तबाह करने के मामले दिनों दिन बढ़ते जा रहे हैं। इस समस्या से चिंतित सरकार किसानों की फसलों को बन्दरों, जंगली जानवरों व आवारा पशुओं से बचाने के लिए 'मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना' के तहत सामूहिक तौर पर सोलर बाड़ लगाने के लिए 85 प्रतिशत उपदान प्रदान कर रही है। इसके साथ-साथ कृषि से सम्बन्धित अन्य क्षेत्रों जैसे फूलों की खेती, मौन पालन, मत्स्य पालन, डेयरी पालन जैसी गतिविधियों को विस्तार देकर भी किसानों की आय को दोगुना करने के लिए सरकार प्रयासरत है। लगातार हो रहे नवीन कृषि अनुसंधानों व खोजों के कारण खेती किसानी का आधुनिकीकरण हो रहा है। कृषि का यन्त्रीकरण समय की मांग बन गई है। लेकिन ऊँचे दामों के कारण बहुत से कृषक ट्रैक्टर, पॉवर वीडर, पॉवर टिल्लर जैसे उपकरण नहीं खरीद पा रहे हैं। इसके लिए प्रदेश में 'कृषि उपकरण सुविधा केन्द्र' स्थापित करने का निर्णय लिया है जिनमें किसान- बागबान किराए पर उपकरण प्राप्त कर सकेंगे। इन केन्द्रों की स्थापना के लिए प्रदेश के किसानों एवं युवा उद्यमियों को 25 लाख रुपये की राशि तक की मशीनरी की खरीद पर सरकार 40 प्रतिशत उपदान प्रदान कर रही है। उत्पादन लागत कम करने के उपायों के तहत सभी कृषकों को जमीन के पोषकों के संतुलित उपयोग के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के अंतर्गत लाया जा रहा है। प्रदेश सरकार द्वारा किसानों को उच्च उत्पादकता वाला बीज वितरित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना : प्रदेश में जंगली जानवरों व आवारा पशुओं की समस्या से निपटने के लिए आरंभ मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना किसानों के लिए वरदान सिद्ध हुई है। अब तक लगभग 26 हजार किसानों ने सोलर फैंसिंग व कांटेदार तार द्वारा बाड़बन्दी करके अपनी फसलों का संरक्षण सुनिश्चित किया है। इस योजना पर 80.36 करोड़ रुपये व्यय किए जा चुके हैं। इस वर्ष के लिए 40 करोड़ व्यय करने का प्रावधान किया गया है। योजना के तहत सोलर बाड़बन्दी के लिए 80 प्रतिशत व किसान समूह आधारित बाड़बन्दी के लिए 85 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है। योजना के तहत अब कांटेदार व चेन लिंक बाड़बन्दी को भी इस योजना में शामिल किया गया है, जिस पर 50 प्रतिशत का उपदान दिया जा रहा है। कम्पोजिट बाड़बन्दी पर यह उपदान 70 प्रतिशत है।

प्राकृतिक खेती-खुशहाल किसान : इस योजना का मूल उद्देश्य रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के उपयोग को समाप्त करके प्राकृतिक रूप से उपलब्ध वैकल्पिक संसाधनों को अपनाना है ताकि खेती करने की लागत को कम किया जा सके, साथ ही नागरिकों को पौष्टिक व रसायन-मुक्त फल-सब्जियां भी उपलब्ध

ा हो सकें। प्रदेश में वर्ष 2022 तक सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को प्राकृतिक खेती के तहत लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस योजना के प्रभावशाली कार्यान्वयन के लिए मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय निगरानी समिति गठित की गई है तथा कृषि निदेशालय में इसके लिए अलग से 'विंग' स्थापित किया गया है। 25 करोड़ रुपये के प्रावधान के साथ आरंभ इस योजना के लिए इस वर्ष भी 25 करोड़ रुपये के व्यय का प्रावधान किया गया है। अब तक प्रदेश के 74 हजार से भी अधिक किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपना लिया है, जिससे 3556 हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक पद्धति से खेती-बाड़ी होने लगी है। 77 हजार से ज्यादा किसानों को इस पद्धति को अपनाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए देसी नस्ल की गाय होना आवश्यक है। इस नस्ल की गाय के पालन को बढ़ावा देने के लिए इसकी खरीद पर 50 प्रतिशत उपदान प्रदान किया जा रहा है, जिसकी अधिकतम राशि सीमा 25 हजार रुपये है। गाय की परिवहन व्यवस्था के लिए 5 हजार रुपये अलग से देने का प्रावधान किया गया है। योजना के तहत गौशालाओं को पक्का करने तथा गौमूत्र व गोबर एकत्रित करने के लिए गौशाला में आवश्यक बदलाव के लिए 80 प्रतिशत तक का उपदान दिया जा रहा है, इसके लिए अधिकतम राशि 8 हजार रुपये निर्धारित की गई है। अब तक लगभग 1600 परिवार अपनी गौशालाओं में बदलाव कार्य कर चुके हैं। प्राकृतिक खेती में प्रयोग होने वाले आदान बनाने के लिए प्रयोग में आने वाले ड्रमों पर 75 प्रतिशत का उपदान दिया जा रहा है। यह सुविधा 750 रुपये प्रति ड्रम है तथा प्रति परिवार केवल तीन ड्रम खरीदने तक ही यह सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक गांव के आदानों की आपूर्ति के लिए प्राकृतिक खेती संसाधन भण्डार के निर्माण के लिए 10 हजार रुपये तक की सहायता प्रदान की जा रही है। अब तक ग्रामीण, 488 संसाधन भण्डार बना चुके हैं। 'मिशन मोड' पर चल रहे इन प्रयासों के कारण शीघ्र ही यह प्रदेश प्राकृतिक खेती राज्य के रूप में भी अपनी पहचान बना लेगा।

मुख्यमंत्री नूतन पॉलीहाउस योजना : प्रदेश में संरक्षित खेती को बढ़ावा देने के लिए 150 करोड़ रुपये की मुख्यमंत्री नूतन पॉलीहाउस परियोजना आरंभ की है जिसके तहत 5 हजार पॉलीहाउस बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस परियोजना को दो चरणों में कार्यान्वित किया जा रहा है। वर्ष 2022-23 तक तीन वर्ष का प्रथम चरण होगा, जिसमें 2522 पॉलीहाउस बनाए जाएंगे तथा इस पर 78.57 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। इस वर्ष इस योजना पर 20 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे तथा 500 पॉलीहाउस बनाने का लक्ष्य है। नाबार्ड के सहयोग से चलाई जा रही योजना के तहत किसानों को पॉलीहाउस बनाने तथा इसके अन्दर सूक्ष्म सिंचाई सुविधा सृजित करने पर 85 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है। इसी प्रकार, मुख्यमंत्री ग्रीनहाउस नवीकरण योजना के तहत 5 वर्ष के बाद अथवा प्राकृतिक आपदा से क्षतिग्रस्त होने पर पॉलीशीट को बदलने पर 70 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है।

कृषि यंत्रीकरण कार्यक्रम : पहाड़ी क्षेत्रों में खेती के मशीनीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य कृषि यंत्रीकरण योजना आरंभ की गई है जिसके तहत किसानों को बड़े स्तर पर ट्रैक्टर, पावर टिलर व पावर वीडर खरीदने पर 50 प्रतिशत का उपदान दिया जा रहा है। अब तक इस योजना पर 40 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं तथा प्रदेश के एक लाख से अधिक किसानों ने इस योजना का लाभ उठाया है।

कृषि सिंचाई योजनाएं : प्रदेश में 'हर खेत को पानी' पहुंचाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना को बड़े प्रभावी ढंग से लागू किया जा रहा है। वर्तमान प्रदेश सरकार के कार्यकाल में इस योजना पर 26.22 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं जिससे 884.47 हेक्टेयर क्षेत्र में नई सिंचाई सुविधाओं का सृजन हुआ है। इस योजना से 3230 किसान लाभान्वित हुए हैं।

सौर सिंचाई योजना के तहत लगभग 1200 सोलर पम्प स्थापित किए जा चुके हैं जिसके लिए सरकार छोटे किसानों को 90 प्रतिशत तक उपदान दे रही है। कम से कम पांच किसान समूह द्वारा सोलर पम्पिंग मशीनरी लगाने हेतु शत-प्रतिशत व्यय सरकार वहन कर रही है। सूक्ष्म सिंचाई योजना जैसे ड्रिप व स्प्रिंकलर सिंचाई सुविधाएं सृजित करने पर 80 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है। अब तक इस योजना पर 37.22 करोड़ खर्च करके 6,209 हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र को सिंचाई सुविधाएं बढ़ाई गई हैं। इससे लगभग 14 हजार किसान लाभान्वित हुए हैं।

प्रदेश में उपयुक्त स्थलों पर चैकडैम व तालाब बनाने के लिए जल से कृषि को बल योजना आरंभ की गई है जिसके तहत सामुदायिक स्तर पर कार्य करने का शत-प्रतिशत व्यय सरकार वहन कर रही है। अब तक इस योजना पर 47.70 करोड़ रुपये व्यय किए जा चुके हैं तथा 209 हेक्टेयर क्षेत्र में नई सिंचाई व्यवस्था की गई है जिससे 835 किसान लाभान्वित हुए हैं।

इसी प्रकार, प्रवाह सिंचाई योजना के तहत कूहलों के सामुदायिक स्तर पर निर्माण शत-प्रतिशत व्यय सरकार द्वारा किया जा रहा है जबकि व्यक्तिगत स्तर पर बोरवैल व उथले कुओं के निर्माण पर 50 प्रतिशत की सहायता प्रदान की जा रही है। इस योजना के तहत अब तक लगभग 45 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं। 1300 हेक्टेयर में सिंचाई सुनिश्चित हुई है और इससे 2228 किसान लाभान्वित हुए हैं।

गांव नलावन डाकघर चलाहल, धामी,
जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश-171 103

पेटेंट हुआ 'प्रेम' का परिश्रम
सेब की नई वैरायटी ईजाद कर रचा इतिहास

◆ योग राज शर्मा

गर हौंसले बुलंद हो तो मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसानी से हो जाता है। किसी भी मुश्किल कार्य को अंजाम तक पहुंचाने के बस चाहिए होता है जज्बा व धैर्य। यदि यह आपके पास है तो सफलता अवश्य ही आपके कदम चूमती है। कठिन परिश्रम, जज्बे व धैर्य की ऐसी ही एक कहानी है प्रदेश की राजधानी शिमला से 60 किलोमीटर दूर कोटखाई क्षेत्र के प्रगतिशील बागबान प्रेम चौहान की जिन्होंने अपने बल बूते वो कर दिखाया है जिसे सालों की कड़ी मेहनत व विकसित आधारभूत ढांचे के बावजूद बड़े से बड़े वैज्ञानिक भी नहीं कर पाए। अपनी मेहनत के दम पर इस बागबान ने सेब की एक नई किस्म विकसित करने में कामयाबी हासिल की है। उसके शोध कार्य को प्रदेश ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है और भारत सरकार ने भी प्रेम चौहान के इस कार्य को मान्यता प्रदान कर दी है। यह उनकी दो दशकों की कड़ी मेहनत की ही परिणति है कि आज उनके नाम पर मान्यता और पंजीकरण संभव हो पाया है। वह बताते हैं कि "पेटेंट प्राप्त करने की प्रक्रिया 2016 में शुरू हो गई थी और मुझे इस कार्य के लिए अपने नाम के पंजीकृत होने पर पूर्ण विश्वास था। और अंत में ऐसा हुआ भी। चौहान द्वारा अपने दम पर हासिल की गई इस असाधारण उपलब्धि ने सभी को प्रभावित किया है। उनका मानना है कि उन्होंने जो वैरायटी विकसित की है। उससे तैयार होने वाले सेब के फल उच्च गुणवत्ता और लंबी शैल्फ लाइफ वाले हैं।

चौहान पिछले दो दशकों से सेब की खेती कर रहे हैं, इस व्यवसाय में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ नई वैरायटी को विकसित कर उन्होंने अन्य बागबानों से अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उनका कहना है कि "मैंने जो किस्म विकसित की है, वह रेड डिलिशस का म्यूटेशन है। यह अच्छे आकार के साथ एक उच्च गुणवत्ता की सेब की किस्म है और इसका एक लंबा शेल्फ जीवन है। यह दुनिया में कहीं भी मिलने वाली सर्वोत्तम किस्मों में से एक है। उन्होंने इसे 'एप्स' नाम दिया है।"

चौहान का मानना है कि यदि उनके द्वारा विकसित पौध को बड़े पैमाने पर तैयार किया जाता है, तो रोपण सामग्री के लिए अमेरिका और अन्य देशों पर हमारी निर्भरता खत्म हो सकती है। साथ ही यह अन्य बागबानों को भी अपने बागों में नई और बेहतर किस्मों के विकास के लिए प्रोत्साहित करेगा।

आज जरूरत चौहान के कार्य को स्वीकार और प्रोत्साहित करने की है। सब कुछ आयात करने के बजाय सेब की नई किस्म

विकसित करने के अलावा, चौहान ने सेब उगाने की विधि में क्रांति ला दी है। नैनो तकनीक का उपयोग करते हुए, उन्होंने सिर्फ एक बीघा में 1,000 सेब के पेड़ लगाने की योजना तैयार की है। पुरानी किस्मों को एक बीघा में लगभग 25-35 पारंपरिक पेड़ लगा सकते हैं। उन्होंने पेड़ को बिना किसी शाखा के एक ही तने में कम किया है। उनके द्वारा विकसित यह किस्म उपज गुणवत्ता के साथ-साथ मात्रा के मामले में भी विश्वस्तरीय है। प्रदेश के ज्यादातर किसानों की तरह उनके पास भी बहुत कम जमीन है। इसलिए उपज और गुणवत्ता को बढ़ाना ही एकमात्र विकल्प है। उनका कहना है कि इस तकनीक से सभी बागबानों को अपना उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी। प्रदेश के बागबानों को इस वैरायटी की मांग को पूरा करने के लिए वह धीरे- धीरे बड-बैंक तैयार कर रहे हैं।

हालांकि सेब की बागबानी से प्रदेश के लाखों बागबान जुड़े हैं और सेब उत्पादन को बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहे है। लेकिन प्रेम चौहान की तरह लीक से हटकर कार्य करने वाले बागबान बिरले ही हैं। प्रदेश सरकार ने भी प्रदेश के बागबानों की सुविधा के लिए अनेकों ऐसी योजनाएं आरंभ की हैं जिनका लाभ उठाकर बागबानों की आर्थिकी में व्यापक सुधार भी आया है। वितीय वर्ष 2021-22 के बजट में बागबानों को उचित दाम पर उत्तम किस्मों के पौधे उपदान पर उपलब्ध करवाने के लिए नई "स्वर्ण जयन्ती समृद्ध बागबान" योजना आरंभ करने की भी सरकार ने घोषणा की है। साथ ही सरकार ने कृषि उत्पाद संरक्षण (एंटी हेलनेट) योजना' के अन्तर्गत 2021-22 में भी किसानों और बागबानों को हेलनेट के लिए उपदान जारी रखने का निर्णय लिया है। सरकार द्वारा इस योजना के दायरे को भी बढ़ाया जा रहा है। ओला अवरोधक जालियों की स्थापना करके 1.59 करोड़ वर्ग मीटर क्षेत्र को इसके अंतर्गत लाया गया है, जिससे 6856 बागबान लाभान्वित हुए हैं।

सेब राज्य के तौर पर मशहूर हिमाचल को अब फल राज्य बनाने की तैयारी है। फसल विविधीकरण के लिए 6388 करोड़ की एच.पी. शिवा परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। इसका वित्त पोषण एशियन डिवेलपमेंट (एडीबी) बैंक कर रहा है। राज्य सरकार का मानना है कि यह परियोजना दुनियाभर में हिमाचल को फल राज्य के तौर पर नई पहचान दिलाएगी, क्योंकि हिमाचल की जलवायु विभिन्न फलों की खेती के लिए अनुकूल है।

शिवा परियोजना के तहत प्रदेश के मैदानी जिलों में संतरा, लीची, अमरूद, अनार, आम जैसे फलों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। चयनित ब्लाकों के बागबानों को उन्नत किस्म का प्लांटिंग मैटीरियल देना शुरू कर दिया है। इससे पहले जहां विभिन्न फलों की खेती की जानी है, वहां सिंचाई की व्यवस्था की जा रही है। इस प्रोजेक्ट में फल तैयार करने से लेकर उन्हें मंडियों तक पहुंचाने की संकल्पना की गई है। शिवा परियोजना चार अलग-अलग चरणों में पूरी की जाएगी। एडीबी द्वारा सैद्धांतिक तौर पर पहले से मंजूर इस परियोजना के पहले चरण में 1000 करोड़ रुपये को लेकर केंद्र सरकार, राज्य सरकार और एडीबी के मध्य समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हो गया है। वर्ष 2021-22 के वार्षिक बजट में भी राज्य सरकार ने इसका उल्लेख किया है। इस परियोजना को मंडी, बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, सोलन, सिरमौर और कांगड़ा जिले के चयनित ब्लॉकों में लागू किया जा रहा है। बागबानी विभाग द्वारा इसके लिए क्लस्टर बनाए जा रहे है। इस परियोजना के तहत पहले चरण में प्रदेश को 1000 करोड़ रुपये मिलेंगे। इसे सात जिलों के 28 ब्लॉकों में विभिन्न फलों की खेती पर खर्च किया जाएगा। प्रोजेक्ट के तहत उन क्षेत्रों को विकसित करने को प्राथमिकता दी गई है, जहां अभी तक फल उत्पादन नहीं

होता। इसके अतिरिक्त ऐसे स्थानों को भी परियोजना में शामिल किया गया है, जहां जंगली जानवरों से प्रभावित किसानों ने खेतीबाड़ी करना छोड़ दिया है, ताकि इन क्षेत्रों के लोगों को बागबानी से जोड़कर आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जा सके।

लॉकडाउन के दौरान उद्यान विभाग ने विभिन्न फलों के लिए पौधरोपण स्थल तैयार कर जुलाई व अगस्त माह में शिवा परियोजना के तहत विभिन्न प्रजातियों के फलदार पौधों का रोपण कार्य कर दिया है।

हिमाचल बागबानी विकास योजना : प्रदेश में बागबानी विकास के लिए कार्यान्वित की जा रही 1134 करोड़ रुपये की सात वर्षीय विश्व बैंक पोषित हिमाचल प्रदेश बागवानी विकास परियोजना के तहत अब तक बागबानों के 375 समूह (क्लस्टर) गठित किए गए हैं तथा न्यूजीलैंड से आए बागबानी विशेषज्ञों द्वारा 15,000 बागबानों तथा 600 विभागीय अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है ताकि प्रदेश में फलों की उच्च उत्पादकता व गुणवत्ता को बढ़ावा दिया जा सके।

हिमाचल में प्रति हेक्टेयर सेब उत्पादन और फूलों की खेती के प्रोत्साहन के मकसद से 1134 करोड़ की विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित बागबानी विकास परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। इसके तहत सेब बहुल क्षेत्रों में बागबानी विभाग ने कलस्टर बनाए है, जहां इटली और अमेरिका से आयातित सेब की उन्नत किस्मों की खेती शुरू कर दी गई है। इसके अलावा इस परियोजना से प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों में मंडियों का नेटवर्क बनाया जा रहा है। प्रदेश के कई इलाकों में सीए स्टोर और प्रोसेसिंग प्लांट बनाए जा रहे है।

लगभग 1,000 (एक हजार) करोड़ रुपये की विश्व बैंक पोषित बागबानी विकास परियोजना के अन्तर्गत 2021-22 में प्रदेश में पाँच लाख पौधों का आयात, दो सौ जल उपभोक्ता संगठनों के माध्यम से 8 हजार हेक्टेयर पर सिंचाई सम्बन्धित कार्य किया जा रहा है। डा. वाईएस परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी सोलन में जीन भंडार की स्थापना की गई है। जरोल- टिक्कर, रोहड़ू, ओडी, पतली- कूहल तथा टुटूपानी में शीत भंडारण व पैक हाउस का निर्माण कार्य पूरा करना तथा शिमला स्थित पराला सेब जूस कंसेन्ट्रेट प्लांट की स्थापना जैसी गतिविधियों को किया जाएगा। इसके साथ ही सब-ट्रॉपिकल क्षेत्रों में बागबानी को बढ़ावा देने के लिए एशियन डिवेलेपमेंट बैंक की सहायता से लगभग 10 मिलियन अमेरिकी डॉलर की पायलट योजना के कार्यान्वयन को गति दी जाएगी।

इसके अलावा सरकार ने प्रदेश के बागबानों को उचित दाम पर उत्तम किस्म के उच्च घनत्व वाले पौधे उपदान पर उपलब्ध करवाने के लिए नई 'स्वर्ण जयन्ती समृद्ध बागवान' योजना आरम्भ करने का भी सरकार ने निर्णय लिया है। वर्ष 2021-22 के दौरान 'हिमाचल पुष्प क्रांति योजना' के तहत फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए 11 करोड़ रुपये के प्रावधान से लगभग एक लाख वर्गमीटर क्षेत्र में हरित गृहों की स्थापना की जाएगी।

'कृषि उत्पाद संरक्षण (एंटी हेलनेट) योजना' के अन्तर्गत 2021-22 में भी किसानों और बागबानों को हेलनेट के लिए उपदान प्रदान किया जाएगा। यह योजना अत्यन्त लोकप्रिय है। पिछले तीन वर्षों में सरकार द्वारा इस योजना के दायरे को बढ़ाया गया है। आगामी वर्ष के दौरान इसके लिए 60 करोड़ रुपये व्यय किये जाएंगे जो कि 2020-21 से 10 करोड़ रुपये अधिक हैं।

प्रदेश में बीते एक दशक के दौरान फ्लोरीकल्चर, मशरूम और शहद उत्पादन भी बढ़ा है। 2018-19 में फूलों की 17.693 करोड़ कलियां (कट फ्लावर) किसानों ने बाहरी प्रदेशों को भेजी है। इनकी कीमत 91.17 करोड़ रुपये आंकी गई है। इसी तरह 31.83 करोड़ रुपये कीमत का 1591.3 मीट्रिक टन शहद और 3313.68 करोड़ रुपये के 14206.70 मीट्रिक टन मशरूम की बिक्री की गई।

प्रदेश में मधुमक्खी पालन गतिविधियों को मजबूत करने के लिए एवम् मधुमक्खी पालकों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य दिलवाने के उद्देश्य से 'राज्य मधुमक्खी बोर्ड' के गठन के लिए नए बजट में घोषणा की है। प्रदेश सरकार द्वारा बागबानी क्षेत्र के लिए वर्ष 2021-22 में 543 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

उप संपादक, गिरिराज, शिमला,
मो. 94181 72686

कृषि-बागबानी

मिट्टी की सौंधी खुशबू फिर खींच लाई गांव की ओर

◆ शीतल शर्मा

उसके पास अच्छी खासी शिक्षा भी है और तकनीकी ज्ञान में भी वह पारंगत है, सरकारी व निजी दोनों क्षेत्रों में नौकरी के भी कई प्रस्ताव मिले। बिजनेस में भी हाथ आजमाए लेकिन अपने गांव की मिट्टी की सौंधी खुशबू ने उसे ऐसा आकर्षित किया कि आज उसकी गिनती प्रदेश के प्रगतिशील किसानों में होती है। जी हां बात हो रही है शिमला ग्रामीण की ग्राम पंचायत थाची के तहत नलावण गांव के किसान दिनेश कुमार की जिसने आधुनिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए खेती बाड़ी के कार्य को लीक से हटकर किया है। यह उसकी मेहनत का ही परिणाम है कि आज वह सालाना पांच से छः लाख रुपये कमा रहा है। सरकार द्वारा आरंभ की गई योजनाओं का लाभ उठाते हुए दिनेश ने अपनी आर्थिकी को मजबूत कर एक नया आयाम हासिल किया है।

यूं तो दिनेश कुमार कृषक परिवार से ही संबंध रखते हैं। 12वीं तक की शिक्षा गांव से ग्रहण करने के उपरांत औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान शिमला से इलेक्ट्रॉनिक्स में दो वर्षीय डिप्लोमा हासिल किया। अपने तकनीकी ज्ञान में और निखार लाने के लिए चंडीगढ का रुख किया। उसके बाद चंडीगढ़ में ही एक फर्म में नौकरी मिल गई लेकिन नौकरी रास नहीं आई और इलेक्ट्रॉनिक्स से संबंधित कार्य करना आरंभ कर दिया। तकरीबन तीन वर्षों तक यही कार्य किया। चयन आयोग से सरकारी महकमे में मैकेनिक के पद लिखित परीक्षा भी उत्तीर्ण की लेकिन नियुक्ति नहीं मिल पाई। उसके बाद सीधे अपने गांव का रुख किया और सरकार द्वारा आरंभ की गई संरक्षित खेती की ओर अपने कदम बढ़ा दिए। सबसे पहले खेत तैयार कर उसमें पांच-पांच सौ वर्ग मीटर के दो पॉलीहाउस सरकारी सहायता से लगवाए। पानी की व्यवस्था के लिए बोरवैल खुदवाया। उसके बाद लाल-पीली शिमला मिर्च की खेती पॉलीहाउस में खेती आरंभ कर दी। धीरे-धीरे पुष्प उत्पादन की ओर कदम बढ़ा दिए और साथ में पांच सौ वर्ग मीटर के एक अन्य पॉलीहाउस के निर्माण की अर्जी कृषि विभाग के समक्ष प्रस्तुत कर दी। विभाग ने भी भरपूर मदद करते हुए दिनेश कुमार को तीसरे पॉलीहाउस के निर्माण को स्वीकृति प्रदान कर दी। अब दिनेश कुमार इन तीनों पॉलीहाउस में फूलों की खेती कर रहे हैं। लेकिन बीते वर्ष आए कोरोना ने उनकी फूलों की खेती को पूरी तरह चौपट कर दिया। लेकिन अब वह शिमला मिर्च उगा रहे हैं। दिनेश कुमार स्वयं तो खेती कार्य में जुटे ही हैं साथ ही वे अन्य युवाओं को भी प्रेरणा प्रदान कर उन्हें भी नौकरी के पीछे भागने के बजाय खेती में ही अपना भविष्य तलाशने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। दिनेश कुमार का कहना है कि देश को कृषि की जरूरत है और लोगों को जिंदा रहने के लिए तो खाद्यान्न की ही जरूरत है। ऐसे में कृषि व्यवसाय को सुदृढ़ करना किसानों व सरकार दोनों की सामूहिक जिम्मेवारी है। सरकारी डिपुओं से अगर कभी राशन मिलना बंद हो जाए तो ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा दिक्कत होगी। वे यह भी मानते हैं कि किसानों को अपने उत्पाद बेचने लिए विपणन की समस्या भी आ रही है और बाजारी शक्तियां इस कदर हावी हैं कि न तो किसानों को उसके उत्पाद के अच्छे दाम मिल रहे हैं और उपभोक्ता भी ज्यादा दाम वसूली से पिस रहे हैं। इस दिशा में सरकार को कार्य करने की आवश्यकता है। युवाओं के लिए वे एक ही संदेश देते हैं कि सरकारी व निजी कंपनी की नौकरी के बजाय, वे अपने पुश्तैनी कृषि व संबंधित काम की तरफ ध्यान दें तो देश से बेरोजगारी की समस्या स्वतः ही समाप्त हो जाएगी और यही सच्ची देश सेवा भी होगी। इसी से देश सही मायनों में समृद्धि की ओर बढ़ेगा। ऐसा नहीं है कि शिमला ग्रामीण के नलावण गांव के निवासी दिनेश कुमार ही सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर सब्जी उत्पादन कर रहे हैं। प्रदेश भर में हजारों की तादाद में ऐसे किसान हैं जिन्होंने सरकार की ओर से चलाई गई कृषि व सिंचाई योजनाओं का लाभ उठाया है और आज उनकी आमदनी में सम्मानजनक बढ़ोतरी हुई है और वे भी प्रदेश के युवाओं के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं हैं।

उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार ने कृषि आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए अनेक योजनाएं आरंभ की हैं। इन योजनाओं में जहां राज्य में संरक्षित खेती के तहत पॉलीहाउस निर्माण को प्राथमिकता प्रदान करते हुए सरकारी प्रयासों से कृषि क्षेत्र का लगातार विस्तार हो रहा है बल्कि कृषि व अन्य संबद्ध गतिविधियों का सकल घरेलू उत्पाद में 30 प्रतिशत योगदान है और यह क्षेत्र सीधे तौर 71 प्रतिशत लोगों को रोजगार उपलब्ध करवा रहा है।

द्वारा योग राज शर्मा, उप संपादक, गिरिराज कार्यालय, शिमला

अदरक व लहसुन नकदी फसलों का सिरमौर

◆ हेमंत नेगी

हिमाचल प्रदेश के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है और प्रदेश की अर्थव्यवस्था में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। हिमाचल प्रदेश देश का अकेला ऐसा राज्य है जिसकी 2011 की जनगणना के अनुसार 89.96 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। इसलिए कृषि व बागबानी पर प्रदेश के लोगों की निर्भरता अधिक है और कृषि से राज्य के कुल कामगारों में से लगभग 70 प्रतिशत को रोजगार उपलब्ध होता है। कृषि राज्य आय (जी.एस.डी.पी.) का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। प्रदेश के कुल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 13.62 प्रतिशत कृषि तथा इससे सम्बन्धित क्षेत्रों से प्राप्त होता है।

जिला सिरमौर की भी अधिकतम जनसंख्या कृषि व बागबानी पर निर्भर करती है। जिला का भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 224759 हेक्टेयर है जिसमें से खेती योग्य भूमि 75914 हेक्टेयर है। सिरमौर कृषि व बागबानी के लिए उपयुक्त जलवायु के अनुसार चार भागो में विभाजित है जिसमें निचले पर्वतीय क्षेत्र जो 1250 मीटर तक ऊंचाई की श्रेणी में आते हैं। इसके बाद मध्य पर्वतीय क्षेत्र जिनकी ऊंचाई 1251 मीटर से 1800 मीटर तक की श्रेणी में आते है। ऊंचे मध्य पर्वतीय क्षेत्र जिनकी ऊंचाई 1801 से 2300 मीटर तक की श्रेणी में आते है। उंचे पर्वतीय क्षेत्र जिनकी ऊंचाई 2301 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्र इस श्रेणी मे आते है। जिला सिरमौर के किसानों की आर्थिकी मुख्यतः अदरक, लहसुन, मटर, आडू पर आधारित है। पिछले 50 वर्षों के दौरान जिला में खेती और बागबानी के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ है, जिससे सिरमौर को राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान मिली है।

अदरक की फसल

अदरक सिरमौर जिला की सर्वाधिक नकदी फसल है। सिरमौर में अदरक की फसल जहां सन् 1970-71 में 1300 हेक्टेयर में पैदावार की जाती थी और कुल उत्पादन 500 मीट्रिक टन के आसपास था वहीं अदरक की बढ़ती मांग तथा हिमाचल सरकार के अथक प्रयास और यहां के मेहनतकश किसानों के कारण आज सिरमौर में लगभग 1480 हेक्टयर क्षेत्र अदरक की खेती के अंतर्गत आता है, जिसमें 16650 मीट्रिक टन अदरक की पैदावार हो रही है। अदरक की खेती लगभग 6,000 परिवारों द्वारा अपनाई गई है तथा जिला के छोटे एवं मंझौले किसानों के आर्थिक स्वावलम्बन में अदरक एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। सिरमौर जिला में अदरक की खेती नाहन, पांवटा साहिब, पच्छाद, राजगढ़, संगड़ाह व शिलाई जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में की जाती है। सिरमौर के पांवटा साहिब तथा संगड़ाह क्षेत्रों में कुल उत्पादन का

55 प्रतिशत उत्पादन रिकॉर्ड दर्ज किया जाता है। हिमाचल सरकार ने आगामी पांच वर्षो में जिला में अदरक उत्पादन को दुगना करने का लक्ष्य रखा है। अदरक उत्पादन की कृषि लागत 3,60,620 प्रति हेक्टेयर दर्ज की जाती है जबकि प्रति हेक्टेयर उत्पादन से किसानों को 7,06,880 रुपये प्रति हेक्टेयर की आमदनी मिलती है।

जिला सिरमौर में मुख्यतः अदरक की हिमगिरी व देसी प्रजाति उगाई जाती है। हिमाचल सरकार द्वारा अदरक की फसल को अधिक प्रोत्साहन देने के लिये गत वर्षो के दौरान अदरक बीज पर 1600 रुपये प्रति क्विंटल की सबसिडी प्रदान की जा रही है तथा इसके अतिरिक्त किसानों को नवीनतम तकनीक, उच्च गुणवत्ता के बीज तथा नई कृषि प्रजातियों के प्रति जागरुक एवं प्रशिक्षित करने के लिए अनेक कार्यशालाएं तथा प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

अदरक की फसल समुद्रतल से 1500 मीटर ऊंचाई पर गर्म तथा आर्द्रता भरे मौसम में उगाई जाती है। इस समय अदरक में सड़न का रोग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, मार्किटिंग अदरक उत्पादकों की मुख्य समस्याएं है जिन्हें सरकार प्राथमिकता के आधार पर सुलझाने का प्रयास कर रही है। सरकार ने जिला में अदरक प्रोसैसिंग की विभिन्न लघु कुटीर इकाइयां स्थापित करने का प्रयास किया है ताकि दूसरे राज्यों को तैयार उत्पाद बेचे जा सकें। कोरोना महामारी में अदरक को शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का स्वास्थ्य विकल्प माना गया जिसकी वजह से पिछले वर्ष से अदरक की खपत में वृद्धि दर्ज की गई है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए अदरक को पकवानों में, रसोई के अतिरिक्त काढ़ा, जूस, सूप तथा रस आदि के तौर पर भी बड़े पैमाने पर प्रयोग में लाया जाता है।

सिरमौर में इस समय किसान अदरक को स्थानीय मंडी में खाद्यान्न के तौर पर बेचते हैं जबकि अदरक का बीज पड़ोसी राज्यों उतराखंड व हरियाणा के किसानों को बेचा जाता है। हिमाचल में पैदा होने वाले उच्च गुणवत्ता के अदरक की मांग महानगरों में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हिमाचल सरकार का प्रयास है कि सिरमौरी अदरक को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के मदरडेयरी बूथों के अतिरिक्त चेन्नई, हैदराबाद, मुंबई तथा कोलकाता जैसे महानगरों में भी बेचने के प्रयास किए जा रहे है। जिला सिरमौर में उत्पादित अदरक से बनी सौंठ की खुशबू दिल्ली में सबसे बेहतर पाई गई है। अदरक का इस्तेमाल कई प्रकार की दवाइयां बनाने में किया जाता है।

केंद्र सरकार द्वारा प्रत्येक जिले के विशिष्ट खाद्यान्न उत्पादकों को प्रोत्साहन प्रदान करने की नीति के अंतर्गत सिरमौर जिला में अदरक उत्पादन को प्रोत्साहन प्रदान करने की महत्त्वाकांक्षी योजना शुरू की गई है। सिरमौर जिला में हिमाचल प्रदेश में सर्वाधिक अदरक उत्पादन किया जाता है तथा इस योजना से सिरमौर के अदरक उत्पादकों द्वारा बीजी जा रही हिमगिरी तथा अन्य देसी प्रजातियों को विशेष रुप से बढ़ावा मिलेगा।

अदरक को भारतीय व्यंजनों में स्वाद बढ़ाने तथा स्वास्थ्यवर्धक के तौर पर सदियों से रसोई में प्रयोग किया जा रहा है। अदरक उत्पादक अपनी फसल को बड़े पैमाने पर उगाने, उत्पाद के आकर्षक मूल्यों, तथा अदरक पर आधारित उद्योगों की स्थापना के लिए भारत सरकार की आत्मनिर्भर योजना में आशा की नई किरण देख रहे हैं।

लहसुन की खेती

सिरमौर में लहसुन का घरेलू उत्पादन पहले घरेलू इस्तेमाल के लिए ही किया जाता था। मगर 1985 में सोलन के नौणी में डॉ. वाई. एस. परमार विश्वविद्यालय के निर्माण के बाद आसपास के क्षेत्रों में व्यावसायिक कृषि उत्पादन में तेजी आई जिसके चलते सिरमौर में लहसुन की खेती को व्यावसायिक रूप से अपनाया गया। लहसुन का उत्पाद व्यावासायिक रूप से वर्ष-2005 के बाद शुरू हुआ और आज जिला में लहसुन की फसल लगभग 3734 हेक्टेयर भूमि में पैदावार की जाती है और कुल 57205 मीट्रिक टन फसल का उत्पादन किया जाता है जोकि जिला सिरमौर के लगभग 15000 से अधिक किसान परिवारों की मुख्य आर्थिकी का साधन है।

प्रदेश सरकार द्वारा हाल ही में लहसुन की खेती करने वाले किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए **'एक जिला एक उत्पाद योजना'** में शामिल किया गया है जोकि आगामी समय में जिला सिरमौर के किसानों के लिए वरदान साबित होगी। गत दो वर्षों के दौरान जिला सिरमौर में उत्पादित लहसुन की फसल को दक्षिण भारत के राज्यों में अधिक मांग के चलते 150 रुपये प्रति किलोग्राम से भी अधिक दाम प्राप्त हुए है।

सिरमौर के संगड़ाह, राजगढ़ व शिलाई क्षेत्रों में कुल उत्पादन का 75 प्रतिशत इन क्षेत्रों में किया जाता है। लहसुन का इस्तेमाल न सिर्फ खाने में किया जाता है बल्कि कई प्रकार की औषधियों को तैयार करने में भी किया जाता है।

मटर की खेती

सिरमौर में मटर की फसल भी प्रमुख व्यावसायिक फसलों में एक है। यह फसल जिला के लगभग 10000 से अधिक परिवारों की आर्थिकी से जुड़ी है। सिरमौर में 1970 व 80 के दशक में जहां मटर का उत्पादन न के बराबर था वहीं आज जिला में कुल कृषि भूमि के 1809 हेक्टेयर क्षेत्र में मटर की खेती की जाती है और 20894 मीट्रिक टन उत्पादन किया जाता है। मटर के कुल उत्पादन का 90 प्रतिशत उत्पादन केवल राजगढ़, पच्छाद व संगड़ाह क्षेत्रों में किया जाता है। सिरमौर में मुख्यतः मटर की आजाद पी-1 व अरकल किस्में बोई जाती है।

सरकार द्वारा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अतंर्गत मटर के बीज पर कृषि विकास के माध्यम से अनुदान दिया जाता है और हिमाचल सरकार लहसुन की फसल की खेती के लिए किसान जागरूकता शिविरों का आयोजन कर किसानों को इस कृषि से जुड़ने को प्रेरित कर रही है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अतंर्गत मटर के उत्पादन पर सरकार 50 प्रतिशत अनुदान देती है।

आड़ू की बागबानी

जिला सिरमौर का राजगढ़ क्षेत्र पिच वैली के नाम से जाना जाता है। यहां जुलाई एलबर्टा, रैड हैवन व सन हैवन किस्मों के आड़ू का उत्पादन किया जाता है। आड़ू फल के उत्पादन के लिये समुद्रतल से 1000 मी. की ऊंचाई से लेकर 1600 मी. तक की ऊंचाई का क्षेत्र उपयुक्त है। आड़ू कई तरह की मिट्टी में उगाया जा सकता है परन्तु हल्की रेतीली दोमट मिट्टी इसके लिए उपयुक्त है। जिला का राजगढ क्षेत्र इस लिहाज से अधिक उपायोगी सिद्ध हुआ है।

वर्ष 1971-72 में जहां आड़ू के अंतर्गत कुल 200 हेक्टेयर क्षेत्रफल भूमि में उत्पादन किया जाता था वहीं वर्तमान में (2020-21) तक आड़ू के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल 4125 हेक्टेयर लाया जा चुका है जिसके अतंर्गत 12018 टन आड़ू उत्पादन किया जा रहा है। सिरमौर के लगभग 1300 बागवान परिवार आड़ू की बागवानी से सीधे तौर पर जुड़े है जोकि उनकी आर्थिकी का मुख्य साधन है। सिरमौर जिला में विकास खंड राजगढ़, संगड़ाह व पच्छाद के निचले क्षेत्र में उपयुक्त जलवायु एवम् दोमट मिट्टी होने के कारण अच्छी गुणवत्ता वाले आड़ू का उत्पादन किया जाता है।

आड़ू की बागबानी को प्रोत्साहित करने के लिये सरकार द्वारा आड़ू के क्षेत्र विस्तार के लिए प्रति हेक्टेयर 30000 रुपये तीन किस्तों में 60:20:20 के अनुपात से दी जा रही है। इसके अतिरिक्त, जिला के किसानो के बगीचे में सुचारू रूप से सिंचाई के लिए सरकार द्वारा आरसीसी टैंक व पोली लाईन टैंक बनाने के लिए 50 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अतंर्गत बगीचों में ड्रिप सिंचाई प्रणाली को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा 80 प्रतिशत का अनुदान दिया जा रहा है। इसी प्रकार, बागबानों को बागबानी उपकरण खरीद के लिये 50 प्रतिशत का अनुदान सरकार दे रही है। बगीचों में कीट नाशक व फफूंदी नाशक स्प्रे के लिए स्प्रे पंप व पावर स्प्रैयर लेने पर भी सरकार 50 प्रतिशत तक अनुदान दे रही है।

सिरमौर में कृषि मण्डियों की स्थिति

सिरमौर में जहां वर्ष 1970-71 के दौरान कृषि मण्डी न के बराबर थी वहीं बीते वर्षों में प्रदेश सरकार ने पांवटा साहिब, नाहन, सराहां, बागथन, खैरी, राजगढ़, ददाहु, सतौन व भंगानी में 9 कृषि मण्डियों का निर्माण किया है। प्रदेश सरकार ने जिला के कोने-कोने में कृषि मण्डियों की सुविधा दी है जिससे यहां के किसानों को अपनी फसलों को बेचने के लिए अन्य प्रदेशों में नहीं जाना पड़ता और इससे इन किसानों की आर्थिकी अधिक सुदृढ़ हुई है।

सहायक लोक सम्पर्क अधिकारी, नाहन,
जिला सिरमौर, मो. 0 70181 48664

घुमारवीं की फिजां में चंदन के साथ चाय की खुशबू

◆ रत्न चंद निर्झर

कांगड़ा जिले की धौलाधार वादियों से होते हुए अब बिलासपुर जिला के घुमारवीं क्षेत्र में भी चाय की खुशबू फिजां में बिखरने जा रही है और इस खुशबू को बिखेरने के लिए पूरी तन्मयता और उत्साह के साथ जुटे हैं, कुठेड़ा से पांच-छः किलोमीटर दूर धारवाड़ा के समीपवर्ती गांव बेकल के युवा जितिन ठाकुर। आसपास की पंचायतों के बेरोजगार युवकों के लिए प्रेरणास्रोत बन रहे इस युवा की आँखों में स्वावलम्बन की एक नई परिभाषा गढ़ने के दृढ़ संकल्पों के सपनों का विशाल संसार देखा जा सकता है, ऐसे ही उत्साह और उर्जा से भरे युवाओं के लिए हिंदी के सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार स्व. दुष्यंत ने लिखा है "कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो"।

बेकल गांव में श्री सुखदेव के एक इकलौते पुत्र जितिन की आँखों में भी उच्च शिक्षा के बाद सरकारी या किसी बड़ी कम्पनी में नौकरी कर माता-पिता के सपनों को साकार कर सहारा बनने का था। लेकिन अपने आस-पास के क्षेत्रों में कुछ युवाओं को अपना कार्य आरंभ करते देखा, जैसे बिलासपुर के घुमारवीं उपमंडल में जहाँ हरिमन ने गर्म इलाके में सेब का उत्पादन कर सबका ध्यान अपनी और आकर्षित किया और देश भर में अपने सेब की किस्म से पहचान बनाई, वहीं इसी इलाके के डाक्टर विक्रम ने कॉफी की खेती करके हिमाचल प्रदेश में भी कॉफी की खेती सम्भावना को बल दिया। इस तरह के प्रयासों ने इस युवा के मन में भी कुछ नया कर दिखाने के सपनों को जन्म दिया। बिलासपुर में यूँ तो सफेद चन्दन की खेती के प्रयास पहले से जारी थे , इस उत्साही युवक के मन में भी अपने गांव की पैतृक बंजर भूमि में चन्दन की खेती करने का सपना जागृत हुआ, प्राथमिक पढ़ाई गांव में करने के बाद कुठेड़ा के सीनियर सेकंडरी स्कूल से जमा दो करने के बाद स्वामी विवेकानन्द

महाविद्यालय घुमारवीं से स्नातक करने के बाद जम्मू से सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में चार साल की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद कुछ अरसा तक इंदौर की एक इलेक्ट्रॉनिक कम्पनी में काम करने के बाद दिल्ली आ गये और वहाँ सवा साल कार्य किया। यहाँ उन्होंने कम आमदनी में किफायत के साथ सीमित आय में गुजारा करने का सबक सीखा। इस बीच उनके पिता जी ने सरकारी नौकरी छोड़ कर गांव में हार्डवेयर और बिल्डिंग मेटिरियल की दुकान खोल ली। पिता की दुकान में हाथ बंटाने के लिए वे भी दिल्ली की प्राइवेट नौकरी छोड़ कर गांव आ गये, इस सिलसिले में इन्हें प्रदेश के अन्य भागों में भी जाने का मौका मिला। इस बीच एक मित्र के परामर्श पर पत्रकारिता शुरू कर दी। कुछ समय टोटल टी. वी. में काम करने के बाद इंडिया टी.वी. ज्वाइन कर लिया और वहाँ कार्य करते हुए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन दिखाकर स्टेट रिपोर्टर का दर्जा हासिल किया। आजकल इसी पद पर खेतीबाड़ी के साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अपनी पैठ बनाये हुए हैं। साल 2005 में जब वे दिल्ली से गांव में आये तो पिता के कारोबार में हाथ बंटाते हुए अक्सर इनके मन में यह विचार कौंधता रहता था कि ऐसा क्या किया जाए जो लीक से हट कर हो गांव के पढ़े लिखे और डिग्री एवम डिप्लोमा धारक युवाओं को जब वे हिमाचल या प्रदेश से बाहर न्यूनतम वेतन में निजी कम्पनियों में मजबूरी में कार्य करते हुए देखते थे तो वह इस विवशता पर बड़ी पीड़ा महसूस करते। उनके मन में अकसर ये प्रश्न बार बार उठते कि कैसे इन युवाओं को राह दिखाई जाए ताकि ये घर से दूर रहने और कम सैलरी पर काम करने के लिए विवश न हों... इन्हीं उद्देश्यों को मद्देनजर रखते हुए जितिन ने पहले अपने आप कुछ कर दिखाने का बीड़ा उठाया। सोलन के एक वैज्ञानिक की सलाह मिली कि नौजवान अपने गांव में सफेद चन्दन की खेती क्यों नहीं करता दस बारह साल के बाद इतनी आमदनी होगी कि वह तुम्हारी मासिक पेंशन बन जायेगी। इस

वैज्ञानिक की बात उनके दिमाग में बैठ गई। सोलन से वापिस घर लौटने के बाद हमीरपुर की एक सरकारी नर्सरी से चन्दन के कुछ पौधे लाये और उन्हें नाले के साथ लगती जमीन जोकि खाली पड़ी थी वहाँ रोपित कर दिया, नर्सरी से लाये गये पौधे पूरी तरह से तैयार नहीं थे, और न ही विभाग से कोई सही मार्गदर्शन मिला था। नतीजा यह निकला कि सारे के सारे लाये गये पौधे पूरी तरह से गर्मियों में सूख गये। सारी मेहनत पर पानी फिर गया। हताश व निराश इस युवा ने अपना हौंसला फिर से जुटाया और दोबारा कमर कस ली अगले सफर की तरफ। इस बार नेट और गूगल से जानकारी हासिल की, कुछ माहिर लोगों से चन्दन की खेती के बारे में और जानकारी हासिल की, इस बार इन्होंने कर्नाटक के मैसूर से चन्दन के 250 पौधे मंगवाए और इन्हें पहले अपने घर में अच्छी तरह से सर्द और गर्म तापमान के बीच में रख कर पूरी तरह से तैयार किया और फिर इन्हें रोपित किया। इस बार इन्हें उम्मीद के मुताबिक परिणाम मिले। केवल10 प्रतिशत पौधे ही क्षतिग्रस्त हुए। वन व राजस्व विभाग में बाकायदा अपनी इस चन्दन की नर्सरी को पंजीकृत करवाया। 12 साल के बाद इनके चन्दन बाग के चन्दन की महक वातावरण में बिखारेगी। इनके कथनानुसार चन्दन के पेड़ की जड़े दो साल बाद विस्तार पाती हैं। जितिन ने अपने यहाँ कुछ पौधे लाल चन्दन के भी प्रयोग के तौर लगाये हैं। यदि इनका यह प्रयोग सफल रहा तो शायद उत्तरी भारत में लाल चन्दन का पहला सार्थक सफल प्रयास होगा।

चन्दन की खेती में सफलता से प्रफुल्लित जितिन ने इसके बाद चाय की खेती की ओर कदम बढ़ाया। इन्होंने पहले अपनी जमीन के साथ नाली के बगल में जो 12 बीघे जमीन का रकबा था, जहाँ पर बेशुमार झाड़ियों का अम्बार था, उन्हें काट व जला कर चाय की खेती के लिए तैयार किया। चाय की खेती के बाबत इन्टरनेट व अन्य स्रोतों से जानकारी हासिल की पालमपुर के होल्टा में भारतीय चाय बोर्ड के अधिकारियों व वैज्ञानिकों से सम्पर्क साधा और उनसे अपने गांव में चाय की खेती करने की इच्छा जाहिर की। 2017 में इन्होंने ताइवान से डेढ़ किलो चाय के बीज आयात किये और इन बीजों को अच्छी तरह से उपचारित कर इसकी तीन सौ पौध तैयार की और कुछ महीने तक घर में देखभाल करते रहे। इस बार उनका चन्दन की खेती में जो अनुभव था, वो काम आया इन 300 पौधों को साल 2020 में रोपित करने में। इसी मध्य चाय खेती के जाने-माने वैज्ञानिक डॉ. अनुपम दास ने भी यहाँ आकर इनके इस बगीचे को देखा और इनके इस प्रयास की सराहना की और इन्हें टी बोर्ड ऑफ इंडिया की ओर से भरपूर सहयोग व मार्गदर्शन देने का आश्वासन दिया है। जितिन ने बताया कि वे निकट भविष्य में इस 25 बीघे के रकबे में 25000 चाय के पौधे रोपित करने की योजना है। और उनकी इस बगीचे में इस साल जुलाई तक चाय के पौधे पूरी तरह से विकसित होकर टी बुश के रूप में आ जायेंगे व इसी साल चाय उत्पादन शुरू हो जाएगा। यहाँ पर चाय का उत्पादन शुरू हो जाने के बाद भारतीय चाय बोर्ड से लाइसेंस प्राप्त होने पर प्रोसेसिंग प्लांट स्थापित किया जाएगा और उत्पादित चाय को स्थानीय मार्किट में बेचा जाएगा। उनके इस चाय बागान में जहाँ एक और स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा, वहीं यह आस-पास के नौजवान बेरोजगार युवकों के लिए भी रोजगार के नये अवसर खोलने का रास्ता प्रशस्त करेगा। उनके इस बागान में असम की एस. 569, दार्जलिंग की टी. वी. 2526 एवम ग्रीन टीकी किस्म Camellia sinemsisleaves की प्रजातियां लगाई गई हैं। जितिन ने बताया कि चाय की चार किस्में बाजार में उपलब्ध है जिनमें ब्लैक टी के अलावा ग्रीन टी सफेद चाय के अलावा oolong टी शामिल है। वह दिन दूर नहीं जब बिलासपुर जिला के इस उत्साही युवा की चाय उत्पादन का यह प्रयास अपनी महक व खुशबू के साथ हिमाचल प्रदेश में चाय की खेती विस्तार व लोकप्रियता में बढ़ावा देने में नया अध्याय लिखेगा। जितिन ने चाय के साथ-साथ अपने इस भूखंड में अमरूद, दाल चीनी, ड्रैगन फ्रूट, वाटर एप्पल, ऐवाकोंडा अमेरिका मांडू और बेर के पौधे भी प्रयोग के तौर पर सफलतापूर्वक उगाये गए हैं। जितिन की इस सफलता को देख कर आस-पास के युवा भी समय-समय पर इनके पास आकर परामर्श लेते हैं और अपने घरों के आसपास की भूमि में कुछ नया कर दिखाने का जज्बा दिखा रहे हैं। इन्हें भी यह उत्साही युवक मार्गदर्शन देकर विकास की नई डगर पर चलने को प्रेरित कर रहा है

मकान नम्बर 211, रोड़ा सेक्टर दो
बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश 174001
मोबाइल नम्बर 9459773121

मशरूम उत्पादन में सोलन ने लिखी नई इबारत

◆ योगेश

- **खुंब उत्पादन बढ़ाने में मददगार मशरूम अनुसंधान निदेशालय सोलन द्वारा विकसित मशरूम की नवीन प्रजातियां**
- **औषधीय व पोषक तत्त्वों से भरपूर मशरूम की खेती युवाओं के लिए बनी आमदनी का जरिया**

देश को मशरूम का स्वाद चखाने का श्रेय हिमाचल प्रदेश के सोलन शहर को जाता है। इसी शहर में मशरूम की दर्जनों किस्मों की खोज की गई। यह मुमकिन हुआ है मशरूम अनुसंधान निदेशालय सोलन के अथक प्रयासों से।

सोलन में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीआर) ने 1961 में मशरूम पर काम करना शुरू किया था। पहले छोटे स्तर पर बटन मशरूम का उत्पादन किया गया। इसके बाद 1970 में चंबाघाट में मशरूम पर रिसर्च शुरू हुई। 1983 में सोलन में खुम्ब अनुसंधान केंद्र की स्थापना हुई। 10 सितंबर, 1997 को सोलन को मशरूम सिटी ऑफ इंडिया के खिताब से नवाजा गया।

30 प्रजातियों को ईजाद कर चुका है केंद्र

2008 में इसे खुम्ब अनुसंधान निदेशालय(DMR) का दर्जा मिला। देश का एकमात्र खुम्ब अनुसंधान निदेशालय पिछले 6 दशकों के सफर में डीएमआर(मशरूम अनुसंधान निदेशालय) मशरूम की 30 प्रजातियों को ईजाद कर चुका है। आज भी यहां मशरूम की दर्जनों प्रजातियों पर रिसर्च का काम जारी है। यहां मशरूम की ऐसी किस्में तैयार की जा रही हैं, जो 12 डिग्री से 32 डिग्री तापमान में उगाई जा सकती हैं।

इन बीमारियों से लड़ता है मशरूम

मशरूम में कुपोषण, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, शुगर विटामिन,

कैंसर जैसी बीमारी से लड़ने की क्षमता होती है। इनमें गनोडरमा, कोर्डिसेप्स, शिटाके मशरूम कई गंभीर रोगों को दूर करने में लाभदायक सिद्ध हो रही हैं।

औषधीय उपयोग वाली प्रजातियां

औषधि प्रयोग में कामयाब मशरूम की कई प्रजातियां यहां विकसित और ईजाद की गई हैं। खुम्ब अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. वीपी शर्मा बताते हैं कि, पिछले पांच से 10 सालों में जिस तरह से मशरूम के क्षेत्र में खुम्ब अनुसंधान के वैज्ञानिकों ने जो काम किया वह काबिले तारीफ है। अब तक औषधीय प्रयोग के लिए 8 से 10 मशरूम की प्रजातियां यहां ईजाद हो चुकी है।

कोर्डिसेप्स मिलटेरियस मशरूम

कोर्डिसेप्स मिलटेरियस मशरूम शारीरिक क्षमता को बढ़ाने में कारगर सिद्ध है। यह मशरूम बाजार में करीब ढाई से तीन लाख रुपये प्रति किलो बिकता है। इस मशरूम के मानव शरीर के लिए कई फायदे हैं। आज के समय में कई लोग कैंसर, किडनी, फेफड़े की बीमारियों से जूझ रहे हैं। यह मशरूम ऐसे लोगों के लिए संजीवनी बूटी से कम नहीं है।

कॉर्डीसेप्स मिलटेरियस मशरूम खासतौर से थकान मिटाने और इम्यून सिस्टम को मजबूत करने के लिए भी जाना जाता है। यह मशरूम महिलाओं में कैल्शियम की कमी को दूर करने के लिए भी फायदेमंद है।

गैनोडर्मा लूसीडम

बात अगर गैनोडमा लूसीडम मशरूम प्रजाति की जाए तो इस मशरूम की बाजार में ज्यादातर मांग रहती है। इस प्रजाति का प्रयोग दवाइयों के रूप में ज्यादा किया जाता है। बाजार में गैनोडर्मा कैप्सूल, गैनोडर्मा कॉफी और गैनोडर्मा टी जैसे प्रोडक्ट उपलब्ध हैं। गैनोडर्मा मशरूम खाने में कड़वा होता है, जिस कारण इसका उपयोग कैप्सूल के तौर पर किया जाता है।

बाजार में इसकी कीमत आठ हजार से नौ हजार रुपये प्रति किलो तक आंकी जाती है। गैनोडर्मा लूसीडम मशरूम की यह प्रजाति कैंसर और एड्स जैसी बीमारियों से निजात पाने के लिए फायदेमंद मानी जाती है। वहीं, यह मशरूम शरीर के इम्यून सिस्टम को भी सही रखने में सक्षम है।

हिरेशियम मशरूम

हिरेशियम मशरूम की प्रजाति को कोरल मशरूम के नाम से भी जाना जाता है। इसे ईजाद करने में खुम्ब अनुसंधान केंद्र को करीब 3 साल तक मेहनत करनी पड़ी। इसमें हीरेशियम की अधिक मात्रा पाए जाने के साथ-साथ यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को ठीक रखने और याद्दाश्त बढ़ाने में उपयोगी माना जाता है।

शिटाके मशरूम

कैंसर से लड़ने के लिए जापान की अप्रूवड़ ड्रग लेन्टाइनन के मुख्य स्रोत और औषधीय गुणों से भरपूर शिटाके-388 एस मशरूम को घर मे ही 45 दिनों में उगाया जा सकता है। पेड़ के बुरादे से तैयार छोटे बैग्स में इस मशरूम को तैयार किया जाता है, जबकि पारम्परिक और अन्य विधियों से इस मशरूम को उगाने में 90 दिन लगते हैं। यह मशरूम एंटी ऑक्सीडेंट, एंटी ऐजिंग के गुणों के साथ साथ विटामिन डी का भी अच्छा स्त्रोत है. बाजार में इसकी कीमत 500 रुपये किलो है।

ढींगरी मशरूम

ढींगरी मशरूम स्वादिष्ट, सुगन्धित, मुलायम और पोषक तत्वों से भरपूर होता है। किसान आसानी से मशरूम की इस किस्म को लगाकर अच्छी खासी आमदनी कमा सकते हैं।

देश में 27 भाषाओं में जानकारी देता है केंद्र

किसानों को मशरूम के बारे में जानकारी देने के लिए खुम्ब अनुसंधान निदेशालय सोलन रोजाना देशभर में स्थापित 37 केंद्रों के माध्यम से 27 राज्यों की 27 भाषाओं में किसानों को मशरूम उत्पादन की जानकारी देता है। 27 राज्यों में अनुसंधान निदेशालय सोलन की विकसित तकनीकों का परीक्षण व अन्य कामों के लिए 23 समन्यवक और 19 सहकारी केंद्र हैं।

सालाना 2 लाख टन मशरूम का उत्पादन

आज देश भर में प्रतिवर्ष एक लाख 90 हजार टन मशरूम का उत्पादन हो रहा है। जिसमें से हिमाचल में ही 15 हजार टन मशरूम का उत्पादन हो रहा है। आज देश भर में हर साल करीब दो हजार करोड़ का कारोबार होता है। खुम्ब अनुसन्धान निदेशालय के निदेशक डॉ. वीपी शर्मा बताते हैं कि देशभर में

करीब 3 लाख किसान मशरूम की खेती करते हैं। सालाना 2 लाख टन मशरूम का उत्पादन किया जाता है। जिसमें से 74 प्रतिशत व्हाइट बटन मशरूम, 12 प्रतिशत ढींगरी मशरूम, 12 प्रतिशत पेडिस्ट्रा मशरूम और बाकी का 2 प्रतिशत मिल्की और शिटाके मशरूम का उत्पादन होता है।

छह दशकों में 20 गुणा बढ़ा उत्पादन

वहीं, अगर भारत में मशरूम उत्पादन के इतिहास पर नजर डाली जाए तो 1962 से अब तक देश में मशरूम का उत्पादन 20 गुणा बढ़ चुका है। खासकर बीते 22 सालों से करीब 5 गुणा उत्पादन बढ़ा है। 1997 में मशरूम का उत्पादन 40 हजार टन था जो आज बढ़कर 2.25 लाख टन हो चुका है।

मशरूम की खेती कर किसान कमा सकते करोड़ों

मशरूम उत्पादन के लिए न तो जमीन की जरूरत पड़ती है और ना ही विशेष सामान की. पराली जैसे वेस्ट में भी इसे उगाया जा सकता है। छोटे कमरे में किसान इसकी खेती कर सकते हैं। हिमाचल के किसान भी इसे आय का साधन बना रहे हैं। 'एक सर्वे के अनुसार अगर एक हेक्टेयर जमीन में धान और गेहूं लगता है, तो प्रतिवर्ष किसान को 50 हजार रुपये की कमाई होती है। वहीं ,एक हेक्टेयर भूमि पर यदि मशरूम लगाया जाए तो किसान करीब एक करोड़ तक की आमदनी हो सकती है।'

60 सालों का सफर गौरवमयी

खुम्ब अनुसंधान निदेशालय का 60 साल का सफर गौरवमय रहा है। यहां हो रहे अनुसंधान और किसानों को दी जा रही जानकारियां किसानों के लिए लाभदायक सिद्ध हो रही हैं। इसी संस्थान की बदौलत भारत मशरूम उत्पादन में नई इबारत लिख रहा है चीन और यूरोपीय देशों को पटखनी दे रहा है।

VPO Chhausha, Tehsil & Kandaghat, Distt Solan, Himachal Pradesh- 173234

सोलन शहर का दृश्य

औषधीय मशरूम कॉर्डिसेप्स का व्यवसाय बनाएगा आत्मनिर्भर

◆ अरुण डोगरा 'रीतू'

- बिना खेत के एक कमरे में शुरू कर सकते हैं इस व्यवसाय को
- सालाना 6 लाख रुपये कमा सकते हैं इस व्यवसाय से
- कहलूर बायो साइसिज एंड रिसर्च सेंटर घुमारवीं में प्रशिक्षण सुविधा

अब हिमाचल के लोग थोड़ी सी लागत सी अच्छी आमदनी कमा सकते हैं जिसके लिए न तो खेतों की आवश्यकता है और न ही ग्रीन हाउस और अधिक मजदूरों की जरूरत मात्र एक या दो व्यक्ति मामूली कार्य कर इस व्यवसाय को कर सकता है। यह व्यवसाय मात्र एक कमरे में हो सकता है जिससे साल में कम से कम 6 लाख रुपये की आमदनी कमाई जा सकती है ।

प्रधानमंत्री के आत्म निर्भर भारत का सपना होगा साकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्म निर्भर भारत के सपने को साकार करने में यह व्यवसाय काफी कारगर सिद्ध होगा । कहलूर बायो साइसिज एंड रिसर्च सेंटर घुमारवीं के वैज्ञानिकों ने अपनी निजी लैब में औषधीय मशरूम तैयार कर दी है और अब वह अन्य लोगो को भी इस बारे में प्रशिक्षण दे रहे हैं ताकि लोग इस व्यवसाय को अपना कर आत्म निर्भर बन सके ।

10 गुना 10 के कमरे में मात्र तीन लाख से शुरू हो जाएगा उत्पादन

कहलूर बायो साइसिज एंड रिसर्च सेंटर घुमारवीं के वैज्ञानिक डॉ. अमित ठाकुर ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि औषधीय मशरूम का यदि कोई व्यक्ति व्यवसाय करना चाहता है तो वह इस औषधीय मशरूम को अपने एक कमरे में तैयार कर सकता है इसके लिए न तो खेत की आवश्यकता है न किसी ग्रीन हाउस की न मजदूरों की। मात्र एक या दो लोग अपने छोटे से कमरे में इसका उत्पादन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि यदि कोई व्यक्ति अपने 10 गुना 10 के कमरे में इसका उत्पादन करना चाहता है तो उसे मात्र तीन लाख रुपये खर्च करने पड़ेंगे जिसमें उसकी मशीन और बीज इत्यादि सब कुछ आ जायेगा मात्र तीन महीने में उसकी औषधीय मशरूम तैयार हो जाएगी और तीन माह बाद इस औषधीय मशरूम की कीमत बायो एक्टिव कंपोनेंट के आधार पर करीब एक से दो लाख रुपये प्रति किलो के हिसाब से मिलेगी। इस तरह वह साल भर इस कारोबार को छोटे से स्तर पर करके साल के कम से कम 6 लाख रुपये कमा सकता है। अगर उसकी औषधीय मशरूम की गुणवत्ता अधिक होती है तो उसे इसका मूल्य भी ज्यादा मिलेगा। उन्होंने बताया कि यह औषधीय मशरूम फार्मासुटिक्ल कम्पनी वालो के अलावा कई अन्य कंपनी खरीद रही है ।

घुमारवीं में लेना होगा मात्र चार दिन का प्रशिक्षण

इसके लिए मात्र चार दिन का प्रशिक्षण लेना होगा जिस का सारा व्यय प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले को देना होगा और रहने व खाने का प्रबंध भी अपना ही करना होगा। जो कहलूर बायो साइसिज एंड रिसर्च सेंटर घुमारवीं में होगी जिसके बाद आप इस व्यवसाय को बिना किसी की मदद से कर सकते हो। कहलूर बायो साइसिज एंड रिसर्च सेंटर घुमारवीं प्रशिक्षण के दौरान सारी जानकारी उपलब्ध करवाएगा कि कहां से इसको तैयार करने की मशीन आएगी। कैसे इसे तैयार किया जायेगा और कहां इसे बेचा जायेगा और कैसे इसकी

गुणवत्ता को बढ़ाया जायेगा। यह सारी जानकारी मात्र चार दिन के प्रशिक्षण में दी जाएगी। डा. विकेश कुमार व डा. अमित कुमार ने बताया कि लोग इस व्यवसाय को अपना कर आतम निर्भर बन सकते है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्म निर्भर भारत के सपने को यह साकार करेगा।

औषधीय मशरूम कॉर्डिसेप्स भोजन और पारंपरिक चिकित्सा का मूल्यवान स्रोत

डा. अमित ठाकुर ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि औषधीय मशरूम कॉर्डिसेप्स भोजन और पारंपरिक चिकित्सा के मूल्यवान स्रोत हैं और इनका उपयोग वैकल्पिक दवाओं के रूप में किया जा रहा है। वे विभिन्न जैव सक्रिय घटकों के समृद्ध स्रोत हैं जिनके कई स्वास्थ्य लाभ हैं। एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली, अधिक ऊर्जा और बेहतर सहनशक्ति वर्तमान परिस्थितियों की मांग है। औषधीय मशरूम लोगों के स्वास्थ्य मानक को बढ़ाने में मदद करता है। स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले लाभों की अपनी विस्तृत शृंखला के कारण कॉर्डिसेप्स 'महंगा मशरूम' है। हम कुछ खाद्य सामग्री के बारे में जानते हैं जैसे कि काली मिर्च या हर घर में पाया जाने वाला हिंग सोना जितना महंगा है। हिमाचल प्रदेश में सेब सहित कृषि उत्पादों की विविधता है और उनमें से कई आय का एक प्रमुख स्रोत हैं। पूरे विश्व में कश्मीरी केसर या प्रीमियम गुणवत्ता वाले दार्जिलिंग चाय जैसे लग्जरी खाद्य पदार्थ मांगे जाते हैं। ऐसी ही कॉर्डिसेप्स मशरूम के पास सबसे मूल्यवान नकदी फसल में से एक बनने की बहुत बड़ी क्षमता है। कई अध्ययनों के अनुसार पता चला है कि कॉर्डिसेप्स मशरूम थकान को कम करती है और शरीर की सहनशक्ति को बढ़ाती हैं। यह एटीपी स्तर और एंटीऑक्सिडेंट एंजाइम गतिविधि को बढ़ाकर मांसपेशियों की शक्ति को बढ़ाता है। यह मांसपेशियों में लैक्टिक एसिड के स्तर को भी कम करता है। कई शोधों ने यह भी प्रदर्शित किया कि यह मशरूम मांसपेशियों को नियंत्रित करने वाले मार्गों को सक्रिय करके मांसपेशियों से ग्लूकोज को बढ़ाता है। इसके अलावा यह मशरूम एटीपी ऊर्जा अणुओं को बढ़ाता है और शरीर की एंटीऑक्सिडेंट रक्षा को बढ़ाकर मुक्त कणों को हटाता है। यह कैंसर को दूर करने में भी काम करता है।

रक्त और यकृत ग्लाइकोजन स्तरों में इंसुलिन की उपलब्धता को भी बढ़ाता है यह मशरूम

यह मशरूम रक्त और यकृत ग्लाइकोजन स्तरों में इंसुलिन की उपलब्धता को भी बढ़ाता है। यह रक्त प्रवाह और टेस्टोस्टेरोन के स्तर को बढ़ाकर व्यायाम के दौरान हृदय की कार्यक्षमता को बढ़ाता है। इस प्रकार यह थकान को कम करता है और शरीर की शक्ति बढ़ाता है। कैंसर की रोकथाम और उपचार में इसके व्यापक अनुप्रयोगों के कारण, दुनिया भर में पूरक और वैकल्पिक चिकित्सा में सार्वजनिक रुचि बढ़ गई है।

कॉर्डिसेपिन कई तरीकों से एक मजबूत एंटीकैंसर एजेंट के रूप में सामने आया

कैंसर मानव स्वास्थ्य के लिए एक वैश्विक चुनौती है। कॉर्डिसेप्स में पाया जाने वाला कॉर्डिसेपिन कई तरीकों से एक मजबूत एंटीकैंसर एजेंट के रूप में सामने आया है। कई अध्ययनों से पता चलता है कि कॉर्डिसेपिन मानव कैंसर कोशिकाओं के एपोप्टोसिस को प्रेरित करता है। कई शोधों के अनुसार कॉर्डिसेप्सिन को व्यापक रूप से एंटीट्यूमर एजेंट के रूप में उपयोग किया जाता है, जिसमें एंटी-मेटास्टेटिक और एंटीप्रोलिफेरेटिव प्रभाव के साथ-साथ एपोप्टोसिस को उत्प्रेरण के लिए पाया गया है। कॉर्डिसेपिन ट्यूमर के विकास और मेटास्टेसिस से संबंधित सिग्नलिंग मार्ग को नियंत्रित करता है। इसलिए ट्यूमर को लक्षित करने वाले एंटीकैंसर ड्रग्स के विकास के लिए कॉर्डिसेप्स फायदेमंद हो सकते हैं।

तापमान कितना होना चाहिए

इसकी खेती बंद कमरे में होगी और तापमान 25 डिग्री सेल्सियस तक मेंटेन रखना पड़ेगा उसके ऊपर अगर तापमान जाता है तो कमरे में एसी लगाना पड़ेगा। हिमाचल प्रदेश के नालागढ़ और कांगड़ा में यह प्रयोग किया जा रहा है। इसके अलावा हिमाचल के बाहर भी अन्य राज्यों में इस संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त करके गए युवा यह कार्य कर रहे हैं।

कहां से लें प्रशिक्षण

कैहलूर बायो साइंसेज एंड रिसर्च सेंटर कोर्ट रोड घुमारवीं में स्थित है और डा. विकेश कुमार व डॉ. अमित कुमार वहां पर बैच वाइज इसका प्रशिक्षण देते हैं उनसे 7018212663 पर संपर्क किया जा सकता है।

पत्रकार, 71, इंडस्ट्रियल एरिया, बिलासपुर, जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश-174 001, मो. 0 70182 00490

नल से हर घर पहुंचा स्वच्छ जल

◆ अदिति चौहान

जल पृथ्वी पर उपलब्ध एक बहुमूल्य संसाधन है जिसके बगैर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वैसे तो हमारी धरती का लगभग तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है, लेकिन इसमें से 97 प्रतिशत पानी खारा है जो पीने योग्य नहीं है, पीने योग्य पानी की मात्रा केवल तीन प्रतिशत ही है और इसमें भी दो प्रतिशत पानी ग्लेशियर एवं बर्फ के रूप में है। इस प्रकार सही मायनों में मात्र एक प्रतिशत पानी ही मानव के उपयोग हेतु सहजता से उपलब्ध है, जिसका हर संभव संरक्षण किया जाना अति आवश्यक है। शायद इसीलिए कहते हैं कि- जल है तो कल है, जल ही जीवन है। बावजूद इसके हम इसकी अहमीयत को नजरअंदाज कर रहे हैं।

भारत सरकार ने इसी मूल भावना के साथ जल जीवन मिशन आरंभ किया है। जल जीवन मिशन की घोषणा अगस्त 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी। इस मिशन का प्रमुख उद्देश्य सभी ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करना है। इस मिशन के तहत कृषि में पुनः उपयोग के लिये वर्षा जल संचयन, भू-जल पुनर्भरण और घरेलू अपशिष्ट जल के प्रबंधन हेतु स्थानीय बुनियादी ढाँचे के निर्माण पर भी ध्यान दिया जाएगा। लगातार गिरता भू-जल और जल स्रोतों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव जल संरक्षण में कुछ अन्य चुनौतियाँ हैं, ऐसे में पीने योग्य पानी की मांग और पूर्ति के मध्य संतुलन स्थापित करना केन्द्र और राज्य सरकारों के लिये एक बड़ी चुनौती है। जल-संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही है।

प्रदेश के सभी गांवों और बस्तियों को नल के माध्यम से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए भारत सरकार के महत्त्वाकांक्षी जल जीवन मिशन को पूरे राज्य में प्रभावी तरीके से कार्यान्वित किया जा रहा है। देशभर में 3.5 लाख करोड़ रुपये की लागत से चलाए जा रहे इस मिशन के तहत वर्ष 2024 तक सभी ग्रामीण घरों को नल से स्वच्छ एवं पर्याप्त पेयजल उपलब्ध करवाने का लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश सरकार राज्य में यह लक्ष्य जुलाई, 2022 तक प्राप्त करने की दिशा में प्रयासरत है। इस मिशन के तहत प्रदेश के 17,03,626 घरों में से लगभग 13 लाख घरों को घरेलू नल कुनेक्शन अब तक उपलब्ध करवाये गए हैं। प्रदेश सरकार ने वर्ष 2021-22 के दौरान इस मिशन के अन्तर्गत 3 लाख और घरों को नल कुनेक्शन उपलब्ध करवाने का लक्ष्य रखा निर्धारित किया है।

प्रदेश के किन्नौर, लाहौल स्पीति और ऊना सहित तीन ज़िलों के सभी घरों में गत वित्त वर्ष के दौरान नल कुनेक्शन उपलब्ध करवाए जा चुके हैं जबकि वर्ष 2021-22 में प्रदेश के सोलन, हमीरपुर तथा बिलासपुर जिलों में भी शत्-प्रतिशत घरेलू नल कुनेक्शन उपलब्ध करवाने का लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश में आँशिक रूप से कवर ऐसी ग्रामीण बस्तियां, जहाँ प्रति व्यक्ति 55 लीटर प्रतिदिन से कम पेयजल उपलब्ध करवाया जा रहा है, को पेयजल सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए 740 करोड़ रुपये का प्रस्ताव एन डी बी द्वारा फण्डिंग हेतु भेजा गया है। स्वीकृति प्राप्त होने के उपरान्त 24 पेयजल योजनाओं का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जाएगा जिनसे 3,154 बस्तियां लाभान्वित होंगी। इसके अलावा 187 पेयजल योजनाओं के लिए 903 करोड़ रुपये के प्रस्ताव को एशियन डिवेलप्मैंट बैंक द्वारा अन्तिम रूप दे दिया गया है, जिससे लगभग 77 हज़ार घर लाभान्वित होंगे। सभी औपचारिकताएं पूर्ण होने के बाद इन योजनाओं का निर्माण शीघ्र प्रारम्भ किया जाएगा।

प्रदेश सरकार ने विभिन्न उठाऊ पेयजल एवम् सिंचाई परियोजनाओं के संचालन हेतु बिजली भुगतान के लिए वर्तमान वित्त वर्ष में 604 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इस व्यय को कम करने के लिए पांवटा साहिब क्षेत्र में प्रायोगिक आधार पर सौर ऊर्जा आधारित पेयजल योजना का निर्माण इसी वित्त वर्ष में किया जाएगा। इसके अतिरिक्त 10 ऐसी परियोजनाएं चिन्हित की जाएंगी जहाँ बिजली की अत्यधिक खपत हो तथा वहाँ पम्पों को सौर ऊर्जा से चलाया जा सके। स्वच्छ पेयजल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए लोगों को जल परीक्षण प्रयोगशालाओं में नाममात्र शुल्क पर पेयजल के नमूनों की जाँच की सुविधा में विस्तार किया जा रहा है जिसके लिए प्रदेश में 9 नई जल परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित की जाएंगी। पानी के बिलों के ऑनलाईन भुगतान तथा नए कुनेक्शन के लिए ऑनलाईन आवेदन हेतु मोबाइल एप उपलब्ध करवाया जाएगा।

प्रदेश में अगस्त, 2019 से आरम्भ जल जीवन मिशन के तहत प्रथम चरण में 2896.54 करोड़ रुपये की लागत की 327 परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई है। वित्त वर्ष 2019-20 के लिए 530 तथा वित्त वर्ष 2020-21 के लिए 696 परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं। प्रदेश में गांवों के अतिरिक्त कुल 55280 बस्तियां भी हैं, जिनमें से 31399 बस्तियों को पेयजल की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है। गत तीन वर्षों में 1083 बस्तियों को यह सुविधा प्रदान की गई।

देश का उभरता औद्योगिक हब

◆ चंद्रशेखर वर्मा

वर्तमान राज्य सरकार ने सत्ता संभालने के बाद गत तीन वर्षों में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए अभूतपूर्व कदम उठाये हैं। राज्य में निवेश आकर्षित करने के लिए सरकार नें जहाँ एक ओर निवेश के नये द्वार खोले हैं वहीं दूसरी ओर राज्य सरकार और केंद्र सरकार की योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन भी सुनिश्चित किया गया है। इन योजनाओं के लागू होने से जहाँ निवेश के नये द्वार खुले हैं वहीं युवाओं को स्वरोजगार भी मिला है। औद्योगिक निवेश के माध्यम से प्रदेश की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में मदद मिली और रोजगार सृजन के प्रयासों को भी बल मिला है। ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस में आज प्रदेश ने देश भर में सातवां स्थान हासिल किया है तथा सुधारों के सन्दर्भ में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर देश में प्रथम स्थान हासिल किया है। हिमाचल प्रदेश आज एशिया का सबसे बड़ा फार्मा हब बन कर उभरा है। सीमेंट निर्माण हब के रूप में भी प्रदेश नें अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। टेक्सटाइल पार्कों के निर्माण के माध्यम से भी राज्य औद्योगिक विकास के पथ पर आगे बढ़ा है।

राज्य के युवाओं को स्वावलम्बन से जीवनयापन करने के लिए राज्य सरकार द्वारा आरम्भ की गई मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना कारगर साबित हुई है। योजना के तहत 60 लाख रुपये की परियोजना लागत पर 25 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है। महिलाओं को 30 प्रतिशत का उपदान प्रदान किया जा रहा है। इस योजना के तहत 40 लाख तक के ऋण पर तीन वर्ष के लिए 5 प्रतिशत उपदान की सुविधा भी दी जा रही है। राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना के तहत 936 इकाइयां स्थापित की गयी है जिनमें 3217 व्यक्तिओं को रोजगार प्राप्त हुआ है। अब तक 47 करोड़ रुपये का उपदान इसके तहत दिया जा चुका है। राज्य सरकार द्वारा आरम्भ की गयी मुख्यमंत्री स्टार्टअप योजना के तहत लगभग 1.70 करोड़ रुपये व्यय किए

गये जिसे 100 लाभार्थियों को लाभ मिला है। इस कार्यक्रम के तहत नये उद्यम स्थापित करने वाले युवाओं को एक वर्ष के लिए 25 हजार रुपये प्रतिमाह प्रदान किये जा रहे है। इसके अतिरिक्त नये उद्यम के कार्यान्वयन और मार्केटिंग के लिए अधिकतम 10 लाख रुपये की सहायता प्रदान की जा रही है। इन्क्यूबेशन केंद्रों को तीन वर्षों के लिए 30 लाख रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

मुख्यमंत्री स्टार्टअप योजना के अंतर्गत अभी तक इन्क्यूबेशन केंद्रों द्वारा 132 स्टार्टअप चयनित किये गये है जबकि 30 स्टार्टअप तैयार कर लिए गए है। हिम स्टार्टअप योजना के तहत 10 करोड़ रुपये का वेंचर फण्ड स्थापित किया गया है। मुख्यमंत्री स्टार्टअप योजना के तहत लगभग 1.70 करोड़ रुपये व्यय किये गए है जिससे 100 लाभार्थियों को लाभ मिला है। स्टेट मिशन ऑन फूड प्रोसेसिंग के तहत 72 परियोजनायें स्वीकृत की गयी है तथा 20.95 करोड़ रुपये की अनुदान सहायता प्रदान की गयी है। रेशम बीज की राज्य मे खपत के अनुसार 16 नये चौकी कीट पालन केंद्र भवन बनाये जा रहे है जिस पर 5.50 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे है। प्रदेश सरकार व भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित योजनाओं को ग्रामीण स्तर पर सही तरह से क्रियान्वयन हेतु प्रचार प्रसार किया गया जिसके अंतर्गत 2016-17 से 2019-20 द्वारा 2000 अनुसूचित जाती के परिवारों तथा टी एस पी परियोजना द्वारा अनुसूचित जनजाती के 500 परिवारों पर 27.06 करोड़ रुपये खर्च किये गए।

प्रदेश सरकार द्वारा आरम्भ की गई राज्य स्तरीय रेशम उद्यमिता विकास एवं नवोन्मेष केंद्र बाली चौकी जिला मंडी हिमाचल प्रदेश की स्थापना की गयी है जिस पर 4.94 करोड रुपये खर्च किये गए है तथा इस संस्थान में रेशम को ऊन और पश्मीना के साथ मिश्रित कर हिमाचल ब्रांड को प्रोन्नत करने हेतु संस्थान में 140 बुनकरों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

प्रदेश में उच्च प्रजाति का रेशम बीज तैयार करने हेतु बीज उत्पादन केंद्र थुनाग की स्थापना की गयी है जिस पर 119 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे है। राज्य सरकार द्वारा किसानों को रेशम कीट पालन की ओर आकर्षित करने हेतु ग्राम स्तर पर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए 42 एक दिवसीय जागरूकता शिविरों के माध्यम से 14296 किसानों को लाभान्वित किया गया है। शहतूत की उन्नत प्रजाति के पौधों को प्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने एवं प्रशिक्षण प्रदान कर ने हेतु 75 बीघा जमीन में वैज्ञानिक तकनीक द्वारा रज्य शहतूत उत्पादन, प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण केंद्र नालागढ़ की स्थापना की गई है। प्रधानमन्त्री रोजगार सृजन के अंतर्गत 3,219 युवाओं को विभिन्न बैंको के माध्यम से ऋण प्रदान कर स्वरोजगार प्राप्त करने हेतु सहायता प्रदान की गई है।

प्रदेश सरकार ने हिमाचल प्रदेश गौण खनिज (रियायतें) और खनिज (अवैध खनन, उसके परिवहन और भण्डारण के निवारण) नियम, 2015 के नियमों में बहुत से नये प्रावधान किये गए है जिससे एक ओर अवैध खनन में संलिप्त दोषियों को सजा देने के प्रावधानों को और अधिक कठोर किया गया है, वहीं दूसरी और इसी क्षेत्र में कानूनी रियायतें प्रदान करने के लिये नियमों का सरलीकरण किया गया है।

प्रदेश में खनन पट्टा प्राप्त करने के लिए आवेदक के पास अनुमोदन प्रमाण पत्र की अनिवार्यता शर्त को हटा दिया गया है। अब नियमों में संशोधन करके 5 हेक्टेयर से कम आवेदित क्षेत्र का निरीक्षण केवल खनन अधिकारी द्वारा ही किये जाने का प्रावधान किया गया है। संशोधित नियमों के अनुसार 5 वर्ष की अवधि के बाद पट्टे का निरीक्षण मिट्टी के बजाय केवल भू विज्ञानी/ सहायक भू-विज्ञानी द्वारा किया जाएगा एवं सम्बंधित अधिकारी की सिफारिश के आधार पर राज्य भूविज्ञानी द्वारा खनन पट्टे में काम करने की अनुमति प्रदान की जा रही है । खनन पट्टों के नवीनीकरण सम्बंधित अनुमति अब सरकार के बजाय निदेशक स्तर पर ही प्रदान की जाएगी। साथ ही खनन पट्टे के नवीनीकरण की अवधि भी अधिकतम 10 वर्ष कर दी गई है।

संशोधित नियमों में सरकार द्वारा प्रावधान किया गया है कि विभिन्न विकासात्मक कार्यों जैसे कि सड़क निर्माण, सुरंग निर्माण, पनबिजली परियाजनाओं के निर्माण के दौरान निकाले गए अवशिष्ट खनिजों को सम्बंधित ठेकेदार अपने स्टोन क्रशर इकाइयां में प्रयुक्त कर सकेंगे। सरकारी भूमि में नवीनीकरण एवं हाइडल परियोजनाओं को छोड़ कर खनन सम्बन्धी रियायतें केवल नीलामी / निविदा की प्रक्रिया द्वारा ही प्रदान की जाएगी।

अब तक लगभग 221 खनन पट्टों को खुली बोली द्वारा नीलाम किया जा चुका है। इन खनन पट्टों में से 170 खनन पट्टे वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान ही खुली बोली के द्वारा प्रदान किये गए है। बड़ी विद्युत परियोजनाओं, सड़कों और सुरंगों आदि के प्रयोजन के लिए स्थापित किये जाने वाले स्टोन क्रशरों के लिए खनन पट्टे प्राप्त करने की अनिवार्यता वर्तमान राज्य सरकार ने समाप्त कर दी है। सरकार द्वारा स्टोन क्रशरों की स्थापना के लिए प्रदान की जाने वाली स्थायी पंजीकरण का कार्यकाल 2 वर्ष से बढ़ाकर 3 वर्ष कर दिया गया है। खनिजों के अवैध खनन, परिवहन / भण्डारण में संलिप्त दोषियों को अब दो साल की सजा व 50,000 रुपये तक का जुर्माना या दोनों सजाओं का प्रावधान किया गया है।

सरकार द्वारा खनन पट्टे के आवेदन एवं खनिजों के आवागमन के लिए तथा पारगमन पास जारी करने की प्रक्रिया ऑनलाइन पोर्टल के माद्यम से उपलब्ध कराई गई है। वर्तमान राज्य सरकार द्वारा क्लस्टर विकास के प्रस्ताव भारत सरकार को

भेजे गये तथा भारत सरकार द्वारा राज्य के लिए पहली बार विभिन्न कलस्टरों कॉम सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की गई है। इन कलस्टरों में टाहलीवाल जनरल इंजीनियरिंग कलस्टर, जिला ऊना के अंतर्गत आधुनिक मशीनरी के साथ मिनी टूल रूम, परीक्षण प्रयोगशाला शिक्षण केंद्र सुविधाएँ शामिल है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र सेक्टर दो परवाणू में मौजूदा सड़कों और ड्रेनेज सिस्टम आदि के विकास के लिए 1049 लाख रुपये की कुल प्रबंधन परियोजना लगत की परियोजना को भी मंजूरी प्रदान की गयी है।

राज्य में अधिक निवेश आकर्षित करने के लिए हिमाचल प्रदेश औद्योगिक निवेश नीति 2019 तैयार की गयी थी जिसके तहत औद्योगिक उद्यमों को आकर्षक प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए प्रावधान किये गए है। राज्य सरकार द्वारा इस नीति को 16/08/2019 को अधिसूचित किया गया है। निवेशकों की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए परियोजनाओं की मंजूरी/अनुमति के लिए ऑनलाइन प्रणाली विकसित की गई है। भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2019 में हिमाचल पैविलियन में राज्य के थीम और शो-केसिंग के लिए पहली बार राज्य को दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ है। औद्योगिक क्षेत्रों और संभावित औद्योगिक क्षेत्रों में विभिन्न कार्यों की पूर्ति के लिए 21187 करोड़ रुपये की राशि को स्वीकृति दी गई है। हिमाचल प्रदेश औद्योगिक नीति 2019 में हथकरघा एवं हस्तशिल्प क्षेत्र के विकास के लिए विशेष प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। इसके तहत प्रदेश के हथकरघा एवं हस्तशिल्प उद्यमों को कच्चा माल खरीदने पर 10 प्रतिशत की दर से दी गई राशि को प्रतिपूर्ति वूलमार्क हथकरघा मार्क व इंडिया हैंडलूम ब्रांड जैसे गुणवत्ता मार्क प्राप्त करने के लिए वित्तीय सहायता, विभिन्न प्रदर्शनियों में अपने उत्पादों की बिक्री के लिए स्टॉल के किराये के रूप में दिया जाने वाला प्रोत्साहन तथा राज्य में स्टेट ऑफ दा आर्ट डिजाइन डेवलपमेंट- कम- एग्जीबिशन सेंटर स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान किये जाने का प्रावधान है। राज्य सरकार द्वारा धर्मशाला में आयोजित किये गये ग्लोबल इन्वेस्टर मीट में 96 हजार करोड़ रुपये के 703 समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किये गए। ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट के बाद 236 परियोजनाओं की ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह आयोजित किया गया। शीघ्र ही दूसरा ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह भी प्रस्तावित है। औद्योगिक विकास को रफ्तार प्रदान करने के लिए राज्य सरकार द्वारा 5800 एकड़ भूमि का लैंड बैंक तैयार किया गया है। इतना ही नहीं ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में राज्य को वर्ष 2020 में देशभर में 7वां स्थान हासिल हुआ है। ऊना में 1405 एकड़ भूमि पर बल्क ड्रग पार्क भी प्रस्तावित है। इस पार्क के बनने के उपरांत 8000 करोड़ रुपये का निवेश होगा तथा इससे 16 हजार व्यक्तियों को रोजगार प्राप्ति की संभावना है। सोलन जिला के नालागढ़ में 265 एकड़ भूमि पर मेडिकल डिवाइसिस पार्क भी प्रस्तावित है। इसके निर्माण के बाद 3000 करोड़ रुपये का निवेश होगा और 7000 व्यक्तियों को रोजगार मिलना संभावित है।

इसके अतिरिक्त नालागढ़ में 100 एकड़ भूमि पर प्लास्टिक पार्क प्रस्तावित है। इसके तहत 85 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित है। आत्मनिर्भर भारत के तहत सोलन जिला के नालागढ़ में लगभग 200 एकड़ भूमि पर 140 करोड़ रुपये की लागत से इलेक्ट्रॉनिक कलस्टर विकसित किया जाएगा। प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2017 में आरम्भ की गई मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना के तहत बैंकों द्वारा 2600 प्रकरण स्वीकृत किये गये है। इसके तहत 9000 युवाओं को रोजगार मिलना संभावित है।

उप संपादक, गिरिराज कार्यालय, शिमला-171 005

सफलता की कहानी/मुख्यमंत्री स्वालंबन योजना

महिला उद्यमी राजेंद्र कौर ने युवाओं को दिखाई स्वरोजगार की राह

◆ बलबीर भारद्वाज

बेरोजगारी की चुनौती से निपटने के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने तथा घर द्वार पर ही रोजगार व स्वरोजगार उपलब्ध करवाने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इसी कड़ी में आरंभ की गई मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना नालागढ़ उपमंडल के युवाओं के लिए वरदान साबित हो रही है। योजना के माध्यम से अपने ही गांव में कारखाना स्थापित कर इस क्षेत्र की पंचायत खेड़ा के गांव डाडी कनियां निवासी राजेंद्र कौर पत्नी रवि कांत ने क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं के लिए स्वरोजगार की न केवल मिसाल पेश की है बल्कि स्थानीय युवाओं को रोजगार का अवसर भी प्रदान किया है। वर्ष 2016 में एमबीए की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात राजेंद्र कौर ने स्वरोजगार को आय के साधन के रूप में अपनाने का निर्णय लिया। पढ़ाई पूरी होने के कुछ माह के पश्चात ही वर्ष 2017 में राजेंद्र कौर की ग्राम पंचायत खेड़ा के गांव डाडी कनियां निवासी रवि कांत से शादी हुई। विवाह के पश्चात भी राजेंद्र कौर अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के बलबूते कोई ऐसा कारोवार करना चाहती थी जिसे खुद के लिए रोजगार का साधन अपनाए जाने के साथ-साथ आसपास के क्षेत्र में अन्य लोगों को भी रोजगार प्रदान किया जा सके। लेकिन उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी स्वरोजगार स्थापित करने के लिए निवेश की राशि को जुटाना। इसी दौरान वर्ष 2018 में उन्हें हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए आरंभ की गई मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। राजेंद्र कौर ने वर्ष 2018 की अंतिम तिमाही में मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी हासिल की तथा योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए विस्तृत कार्य योजना पर कार्य करना शुरू कर दिया। वर्ष 2019 की प्रथम तिमाही में उद्योग विभाग की एकल खिड़की प्रणाली के माध्यम से योजना की स्वीकृति प्राप्त होने के पश्चात योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए राजेंद्र कौर ने गांव में ही कारखाना स्थापित करने के लिए एक स्थानीय व्यक्ति से 10 वर्ष की अवधि के लिए जमीन लीज पर ली। जिस पर भवन निर्मित करने के पश्चात वर्ष 2019 की अंतिम तिमाही में कांटा तार, चैन लिंक जाली तथा कीलों के निर्माण से संबंधित दक्ष वायर फेंसिंग नामक कारखाना शुरू किया। वर्तमान में राजेंद्र कौर के कारखाने में पांच लोग कार्य कर रहे हैं जिसमें उनके पति रवि कांत भी शामिल हैं। राजेंद्र कौर ने बताया कि उनके पति रवि कांत पेशे से मैकेनिकल इंजीनियर हैं तथा उनके व्यवसाय में महत्वपूर्ण सहयोग कर रहे हैं।

योजना की सहायता से स्वरोजगार इकाई स्थापित कर डाडी कनियां निवासी राजेंद्र कौर बनीं क्षेत्र के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत

रविकांत ने इससे पहले औद्योगिक क्षेत्र बीबीएन में 6 वर्ष तक मैकेनिकल इंजीनियर की नौकरी की है।

राजेंद्र कौर के मुताबिक उनके दक्ष वायर फैंसिंग नामक कारखाना में सालाना औसतन उत्पादन मांगानुसार लगभग 75 से 80 लाख रुपए हो रहा है तथा बनाए गए उत्पाद क्षेत्र में हार्डवेयर दुकानों, शिक्षण संस्थानों, वन विभाग तथा अन्य स्थानीय ग्राहकों द्वारा सीधे खरीदे जा रहे हैं। कारखाने का मासिक खर्चा लगभग 70 हजार है जिसमें कामगारों के वेतन, ऋण की किस्त तथा अन्य खर्चे शामिल हैं। वर्ष 2020 में कोरोना अवधि की मंदी के बावजूद भी दक्ष फेंसिंग कारखाना आज बैंक ऋण की किस्त, कामगारों का वेतन तथा अन्य खर्चे निकाल कर लाभ अर्जित कर रहा हैं। अपने इस कारोबार की सफलता से उत्साहित राजेंद्र कौर ने प्रदेश के युवाओं का आह्वान किया है कि वे अपने गांव से दूर जाकर रोजगार ढूंढने की बजाय मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना की सहायता से अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं तथा स्थानीय उत्पादों पर आधारित लघु उद्योग लगाएं, जिससे न केवल उन्हें स्वयं रोजगार प्राप्त होगा बल्कि उनके द्वारा स्थापित स्वरोजगार इकाई में अन्य स्थानीय व्यक्तियों को भी घर द्वार पर ही रोजगार का लाभ प्राप्त होगा।

राजेंद्र कौर द्वारा स्थापित दक्ष वायर फेंसिंग कारखाने की कुल लागत 45 लाख रुपये है जिसमें लगभग 25 लाख रुपये सरकार की स्वीकृति के पश्चात यूको बैंक नालागढ़ से ऋण लिया गया है जबकि 20 लाख रुपये उन्होंने अपनी ओर से खर्च किए। उन्होंने बताया कि लिए गए ऋण पर प्रदेश सरकार की ओर से 30 प्रतिशत अनुदान मिला है जबकि 3 वर्ष के लिए 5 प्रतिशत ऋण अनुदान भी सरकार द्वारा दिया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के युवाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए अनेक सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं तथा इस दिशा में मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना नालागढ़ उपमंडल में स्वरोजगार की दृष्टि से वरदान सिद्ध हो रही है।

इसके अलावा हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा बीबीएन क्षेत्र में मेडिकल डिवाइस पार्क, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा इलेक्ट्रिकल उपकरण पार्क तथा प्लास्टिक उत्पाद पार्क स्थापित करने के लिए केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजे गए हैं जिन्हें मूर्त रूप देने के पश्चात इस क्षेत्र में न केवल करोड़ों रुपये का निवेश होगा बल्कि हजारों की संख्या में लोगों को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से रोजगार भी मिलेगा।

किसानों का मददगार कंडाघाट कृषि विज्ञान केंद्र

कंडाघाट कृषि विज्ञान केंद्र ने सेब की ऐसी नई प्रजातियों को तैयार किया है जो प्रदेश के मध्यम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सेब उत्पादन को बढ़ावा देगा। कृषि विज्ञान केंद्र ने वर्ष 2009 में सेब की अर्ली रेड वन, स्काटलैंट स्पर-दो, गेल गाला, गिब्सन गोल्डन, अपरिगन स्पर गोल्डन डिलिशियस तथा ग्रेनी स्मीथ प्रजातियां को बागबानी विभाग से प्राप्त कर तैयार किया। इन प्रजातियों से फसल 2011 में आनी आरंभ हुई। इन प्रजातियों पर हुए अनुसंधान से अर्ली रेड वन, स्काटलैट स्पर दो तथा गेलगाला तैयार की गई। इन नई सेब की प्रजातियों को सोलन जिले से चायल, माही, बाशा, कसौली क्षेत्र तथा शिमला तथा कुल्लू जिले में कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयोगी पाया गया है।

इन नई प्रजातियों को कंडाघाट में गांवों में प्रायोगिक आधार पर लगाया गया, जिसके अच्छे परिणाम आए हैं। कंडाघाट कृषि विज्ञान केंद्र में वर्ष 2016-17 में 25-30 किलों उत्पादन एक पेड़ से प्राप्त हुआ है। केंद्र ने वर्ष 2015 में सुपर चीफ, जैरोमाइन तथा रेड वालक्स प्रजातियां भी मध्यम क्षेत्र के लिए तैयार की है। केंद्र बागबानों को सेब पौध उपलब्ध करवा रही है।

गुठली वाले फलों के केंद्र की स्थापना

हिमाचल प्रदेश की कल्पना से बहुत समय पूर्व जब भारत में पंजाब का विभाजन नहीं हुआ था, अर्थात् 1947 से पूर्व कंडाघाट, महाराज पटियाला की रियासत का भाग होता था, उस समय यहां पर गुठली वाले फल यथा आड़ू, खुमानी, प्लम के लिए एक अनुसंधान केंद्र की स्थापना की गई थी। आज उस स्थान पर डॉ. यशवंत सिंह परमार बागबानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय का अनुंसधान केंद्र है। इसका अनुमोदन एक अंग्रेज बागबान ने किया था तथा डॉ. के. कृपाल सिंह को यहां का इन्चार्ज बनाया था। विदेश से प्रजातियां आयात कर यहां पर रोपित की गई और उनकी उत्पादन क्षमता अच्छी देखकर आस-पास के लोगों ने रुचि दिखाई जिसके परिणामस्वरूप आज यहां के सैंटारोज़ा प्लम और जुलाई एलवर्टा आड़ू प्रसिद्ध हैं। जापान से आयातित शिमू किस्म भी लोकप्रिय हो गई है।

सफलता की कहानी

किन्नौर के युवाओं की रोल मॉडल जनजातीय उद्यमी महिलाएं चेतना किरण आरती

◆ नरेंद्र शर्मा

युवा देश का भविष्य होते हैं। इसलिए सभी कल्याणकारी सरकारें युवाओं को आत्म-निर्भर बनाने के लिए हर संभव प्रयास करती हैं तथा उनके समग्र विकास के दृष्टिगत समय-समय पर अनेक योजनाओं व कार्यक्रमों को भी आरंभ करती हैं। यदि जनसंख्या के हिसाब से देखें तो आज देश व प्रदेश में युवक व युवतियों की जनसंख्या लगभग बराबर है। इसीलिए कोई भी समाज तब तक समुचित रूप से विकसित नहीं हो सकता जब तक वहां की युवा महिला शक्ति भी आर्थिक व सामाजिक रूप से सुदृढ़ हों।

इसी दिशा में केन्द्र व प्रदेश सरकार द्वारा युवाओं को स्वरोजगार व रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए अनेक योजनाएं आरंभ की गई हैं। इन्हीं में एक महत्त्वाकांक्षी योजना 'मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना' जो प्रदेश सरकार द्वारा आरंभ की गई है और इसी तरह की एक योजना 'प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना' केन्द्र सरकार द्वारा आरंभ की गई है। इन दोनों योजनाओं का मुख्य उद्देश्य युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करना है ताकि वे अपनी लघु ओद्यौगिक इकाइयां स्थापित कर जहां स्वयं आत्म-निर्भर बनें वहीं अपने आस-पास के युवाओं को भी रोजगार उपलब्ध करवा सकें।

किन्नौर जिला में केन्द्र व प्रदेश सरकार द्वारा आरंभ की गई ये दोनों योजनाएं जनजातीय युवक व युवतियों के लिए वरदान साबित हो रही हैं। ये दोनों योजनाएं जिले के युवाओं विशेषकर युवा महिलाओं में काफी लोकप्रिय हैं। जिले में प्रधानमंत्री स्वरोजगार योजना व मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के तहत पिछले तीन वर्षों में युवाओं द्वारा अनेकों लघु ओद्यौगिक इकाइयां स्थापित की गई जिनमें महिलाएं भी अग्रणी भूमिका निभा रहीं है जिससे न केवल ये महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त व आत्म-निर्भर हुई हैं बल्कि वे परिवार के अन्य सदस्यों को भी आर्थिक संबल प्रदान कर रहीं हैं।

जिले में महिला उद्यमियों द्वारा अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार लघु इकाइयां लगाई जा रहीं हैं जिनमें परम्परागत खड्डी से लेकर साइबर कैफे, कम्प्यूटर सेंटर, आटा-चक्की, कोहलू, ब्यूटी पार्लर, रेडी-मेड कपड़ों की दुकानें, ऑफ-सेट प्रिंटिंग प्रैस, फ्लैक्स प्रिंटिंग एंड डिजाइनिंग, डेन्टल क्लीनिक व होम-स्टे आदि शामिल हैं।

जिले में गत तीन वर्षों के दौरान मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के तहत विभिन्न लघु इकाइयों को लगाने के लिए युवा उद्यमियों को लगभग एक करोड़ 80 लाख रुपये से अधिक का उपदान दिया गया जबकि गत वित्त वर्ष में योजना के तहत जिले के 57 युवाओं को एक करोड़ 20 लाख 46 हजार रुपये का उपदान दिया गया। इनमें जिले की 11 महिला उद्यमी भी शामिल हैं जो जिले के युवाओं के लिए रोल-मॉडल बन रही हैं।

इन महिलाओं द्वारा लगाई गई विभिन्न इकाइयां न केवल इन्हें स्वरोजगार प्रदान कर रहीं हैं बल्कि अन्यों को भी रोजगार देने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। इन महिलाओं द्वारा अपने घर या घर के निकट ही विभिन्न इकाइयां स्थापित की गई हैं जहां वे अपने घर का दैनिक कार्य करने के साथ-साथ अपनी आर्थिकी सुदृढ़ करने के लिए अपनी इकाइयों में भी कार्य कर रही हैं।

जिले में इसी प्रकार गत तीन वर्षों में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना के तहत 44 युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में अपनी इकाइयां स्थापित करने के लिए 94 लाख 32 हजार रुपये का उपदान दिया गया जिनमें 13 युवा महिला शामिल हैं जिन्होंने टेलरिंग, निटिंग, डेन्टल क्लीनिक, साईबर कैफे, वी-कीपिंग व रेस्तरां की इकाइयां स्थापित कर पुरुष प्रधान समाज में अपनी अलग पहचान बनाई है।

प्रदेश सरकार द्वारा आरंभ की गई मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना का लाभ ऐसा कोई भी युवा या युवती जिसकी आयु 18 वर्ष से 45 वर्ष के बीच है उठा सकता है। योजना के तहत 60 लाख रुपये की परियोजना लागत पर 25 प्रतिशत का निवेश उपदान दिया जाता है जबकि महिलाओं को 30 प्रतिशत उपदान का प्रावधान किया गया है। विधवा महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत उपदान का प्रावधान है। 40 लाख रुपये के ऋण पर 5 प्रतिशत के उपदान की सुविधा भी दी जा रही है।

जिले में इन दोनों योजनाओं के माध्यम से जिले के पारम्परिक व्यवसाय हथकरघा को सर्वाधिक बढ़ावा मिला है।

आज जिले की महिलाएं इस योजना के तहत लाभ उठा कर पारम्परिक खड्डियों के स्थान पर आधुनिक खड्डिया लगा रहीं हैं जिससे जहां उन द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है वहीं उनके द्वारा तैयार किए गए उत्पादों का अच्छा मूल्य भी प्राप्त हो रहा है। मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के तहत पांगी गांव की चेतना द्वारा जिला मुख्यालय रिकांगपिओ में फ्लैक्स प्रिटिंग एंड डिजाइनिंग इकाई स्थापित की गई है। स्नातक तक पढ़ाई पूरी करने के उपरान्त चेतना ने सरकारी नौकरी के स्थान पर स्वरोजगार को तरजीह दी तथा अपना काम धंधा शुरू कर औरों को भी रोजगार प्रदान कर रही हैं। चेतना नेगी ने मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के तहत 10 लाख रुपये की मदद से रिकांग पिओ में 'चेतना फ्लैक्स प्रिटिंग एंड डिजाइनिंग' इकाई स्थापित की है। जिले में अपनी तरह की यह पहली इकाई है। इससे पहले फ्लैक्स प्रिटिंग के लिए जिले के लोगों को जिले के बाहर शिमला या सोलन जाना पड़ता था। उन्होंने अपनी इकाई में 5 लोगों को सीधे तौर पर रोजगार भी उपलब्ध करवाया है।

चेतना का कहना है कि उन्होंने बचपन से ही सरकारी नौकरी के बजाए अपना छोटा-मोटा उद्योग लगाने का सपना देखा था। उन्हें प्रदेश सरकार द्वारा आरंभ की गई मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना का जब पता चला तो उन्हें अपना बचपन का सपना पूरा करने की उम्मीद जगी और वे रिकांगपिओ स्थित जिला उद्योग केन्द्र पर पहुंची और योजना की विस्तृत जानकारी ली। जिला प्रबंधक द्वारा उन्हें जानकारी देने के उपरान्त उन्होंने उद्यम लगाने के लिए 10 लाख रुपये का ऋण लिया जिस पर उन्हें 30 प्रतिशत का अनुदान भी मिला। जिले में इस तरह की कोई इकाई न होने के कारण धीरे-धीरे उनके काम ने रफ्तार पकड़ी और आज उनके पास न केवल किन्नौर जिला बल्कि स्पीति क्षेत्र से भी फ्लैक्स प्रिटिंग का काम आ रहा है। आज अपनी मेहनत व सरकार की सहायता से वे जहां स्वयं आत्म-निर्भर हैं वहीं अन्य को रोजगार देने में भी सहायक सिद्ध हुई है।

इसी प्रकार जिले के मोरंग तहसील के दूर-दराज गांव ठंगी की किरण कुमारी के लिए भी मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना वरदान साबित हुई है। वो जहां आत्म-निर्भर बनकर सफलता के पथ पर अग्रसर है वहीं अन्य को भी रोजगार प्रदान कर रहीं हैं। किरण का कहना है कि उनकी पंचायत ठंगी में सेब की ग्रेडिंग व पैकिंग की कोई इकाई न होने के कारण क्षेत्र के बागबानों को लगभग 20 कि. मी. दूर मोरंग या फिर जिला मुख्यालय स्थित ग्रेडिंग-पैकिंग इकाइयों में सेब ले जाने पड़ते थे या फिर स्वयं ही सेब की ग्रेडिंग-पैकिंग करनी पड़ती थी जिससे उन्हें अधिक समय लगता था। उन्हें जब प्रदेश सरकार की मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना का पता चला तो वे जिला मुख्यालय में उद्योग विभाग के अधिकारियों से मिली व योजना की जानकारी हासिल कर उन्होंने आवेदन किया।

जिला स्तरीय समिति की अनुशंसा के उपरान्त इकाई लगाने के लिए 5 लाख रुपये का ऋण मिला जिससे उन्होंने जरूरी मशीनें खरीदीं और आज इस इकाई के लगने से न केवल ठंगी गांव के बागवानों बल्कि पंचायत के बागवानों को भी घर-द्वार के निकट सेब की ग्रेडिंग व पैकिंग की सुविधा उपलब्ध हो रही है। यही नहीं गांव के 4 युवाओं को भी लगभग 3-4 महीने रोजगार प्राप्त हो रहा है। किरण का कहना है कि मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना से उनका स्वरोजगार का सपना पूरा हुआ है। उन्होंने कहा कि यह योजना स्वरोजगार आरंभ करने की चाह रखने वालों के लिए वरदान है।

जिले की रोघी गांव की 35 वर्षीय आरती नेगी ने भी कभी होम-स्टे स्थापित करने का सपना देखा था जिसे पूरा किया प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना ने। उनका कहना है कि युवाओं को स्वरोजगार व आत्म-निर्भर बनाने के सपनों को पूरा करने के लिए केन्द्र सरकार की महत्त्वाकांक्षी प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि रोघी गांव प्रसिद्ध पर्यटन स्थल कल्पा के साथ लगता है तथा कल्पा आने वाले पर्यटक इस गांव का भ्रमण अवश्य ही करते हैं और अधिकतर पर्यटकों की इच्छा रहती थी कि वे इस गांव में ठहरकर जिले की गगनचुंबी चोटियों का अवलोकन करें, परंतु गांव में पर्यटकों के ठहरने के लिए ऐसी कोई भी सुविधा नहीं थी।

आरती हमेशा सोचती रहती थी कि उसका घर भी किसी तरह होम-स्टे में तबदील हो, परंतु पैसे की कमी के चलते वह ऐसा करने में असमर्थ थी। उन्हें जब केन्द्र सरकार की प्रधानमंत्री स्वरोजगार योजना का पता चला तो उन्हें उम्मीद जगी कि यह योजना उनका सपना पूरा कर सकती है। वह उद्योग विभाग के अधिकारियों से मिली तथा होम-स्टे स्थापित करने की अपनी योजना से उन्हें अवगत करवाया। विभाग के अधिकारियों द्वारा उनका प्रस्ताव जिला स्तरीय अनुशंसा के लिए भेजा गया जिसने उनके होम-स्टे स्थापित करने की योजना पर मोहर लगाई तथा 10 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत किया जिस पर उन्हें 35 प्रतिशत का अनुदान भी दिया गया।

आज जहां आरती का होम-स्टे का सपना पूरा हुआ वहीं वह एक व्यक्ति को रोजगार भी प्रदान कर रहीं हैं। उनका कहना है कि सीजन के दौरान उनका होम-स्टे पर्यटकों से भरा रहता है। पर्यटक होम-स्टे में जिले के परम्परागत व्यजन पसंद करते हैं। उनका कहना है कि कोरोना महामारी का उनके व्यवसाय पर भी बुरा असर पड़ा है पर उन्हें उम्मीद है कि जैसे ही यह महामारी समाप्त होगी तो पहले की तरह उनके होम-स्टे में रौनक बढ़ जाएगी। उनका कहना है कि गांव के कई अन्य युवा भी अब होम-स्टे स्थापित करने के लिए आगे आ रहें हैं।

जिला लोक संपर्क अधिकारी,
किन्नौर स्थित रिकांगपिओ, हिमाचल प्रदेश

परिवहन सेवाएं

यातायात सुविधाओं का बदलता स्वरूप

◆ मोहित शर्मा

किसी भी राज्य व उसके नागरिकों की तरक्की के लिए परिवहन क्षेत्र का विकसित होना बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। संपर्क मार्गों की एहमियत और भी बढ़ जाती है जब बात हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य की हो क्योंकि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण चट्टानों को काटते हुए सड़कों का निर्माण करना चुनौतीपूर्ण होता है। संपर्क मार्गों के निर्माण व उनके रख रखाव से राज्य की आर्थिकी सीधे तौर पर जुड़ी होती है। हिमाचल की बात करें तो पर्यटन, खेती व बागबानी मिलाकर प्रदेश के सकल घरेलू उत्पाद का दो तिहाई से भी बड़ा हिस्सा है। और इन क्षेत्रों की तरक्की सीधे-सीधे परिवहन सुविधाओं से जुड़ी हुई है।

पंद्रह अप्रैल, 1948 को हिमाचल अस्तित्व में आया। फिर कड़े संघर्ष व लम्बे इंतजार के बाद आखिरकार 25, जनवरी, 1971 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। देश के अठारहवें राज्य के रूप में अपनी विकास यात्रा शुरू करने के समय हिमाचल में मात्र 7,370 किलोमीटर ही वाहन योग्य सड़कें थीं, एक भी राष्ट्रीय राजमार्ग नहीं था तथा रेलमार्ग भी नाममात्र ही थे। यहाँ हवाईमार्ग व जलमार्ग सुविधाओं की तो किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। ऐसा इसलिए भी कि उस वक्त की जरूरतें और संसाधन आज जैसे नहीं थे। बदलते समय और लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए धीरे-धीरे परिवहन सुविधाओं का विस्तार होता चला गया और आज हिमाचल का हर एक क्षेत्र आपस में सड़क नेटवर्क से जुड़ा है और साथ ही हवाई, रेल व जल मार्गों का भी तेजी से विकास हो रहा है। आज प्रदेश में कुल वाहन योग्य सड़कों की लम्बाई 38,470 किलोमीटर है जिनमें से लगभग 30,000 किलोमीटर पक्की सड़कें है। इसमें से 2,592 किलोमीटर के 19 राष्ट्रीय उच्चमार्ग और 785 किलोमीटर लम्बे फोरलेन है। वर्तमान में 2,199 पुल प्रदेश में यातायात को संचालित कर रहे हैं। हवाई सेवा की बात करें तो प्रदेश में तीन हवाई अड्डे क्रियाशील है - जुब्बड़हट्टी (शिमला), भुंतर (कुल्लू) और गग्गल (काँगड़ा)। प्रदेश में कालका-शिमला, पठानकोट-जोगिन्दरनगर व अम्ब-ऊना-नंगल रेल सेवाएं उपलब्ध है।

हिमाचल में सड़क सेवा विस्तार में क्रांति लाने का श्रेय पूर्व

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को जाता है। भारत रत्न वाजपेयी जी ने सर्वप्रथम हिमाचल की तरक्की हेतु व अन्य राज्यों की तरह ही प्रदेश को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का सपना देखा। यहाँ के नागरिकों की मूलभूत जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने 'प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना' के तहत प्रदेश में सड़कों का जाल बिछा दिया। उनके द्वारा 25, दिसंबर 2000 को शुरू की गयी प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से लाभान्वित होकर प्रदेश में 2,896 सड़क कार्यों के तहत 17,716 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया जा चुका है। इस योजना के सफल कार्यान्वयन से आज प्रदेश के 10,488 गांव और 3,162 पंचायतें सड़क सुविधा का लाभ उठा रही हैं।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के कुशल नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश ने पिछले तीन वर्षों में हिमाचल को हर क्षेत्र में अग्रणी व आदर्श राज्य के रूप में स्थापित किया है। उन्हीं के प्रगतिशील निर्णयों का प्रतिफल है कि आज हिमाचल की परिवहन सम्बन्धी सुविधाएं प्रदेश के समावेशी विकास का प्रतीक बन कर उभरी हैं। वर्ष 2020 में प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के सफल कार्यान्वयन में मण्डी जिला देश के 30 प्रमुख जिलों में शीर्ष पर रहा राज्यों की श्रेणी में तथा हिमाचल प्रदेश दूसरे स्थान पर रहा। चम्बा, शिमला, काँगड़ा, ऊना, सिरमौर, हिमाचल व सोलन जिलों ने भी शीर्ष 30 में स्थान पाया। वर्तमान में हिमाचल में प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत 787 स्वीकृत कार्य प्रगति पर हैं जिनकी कुल लम्बाई 4,143 किलोमीटर है। विकास और पर्यावरण में संतुलन बनाये रखने के लिए भी सरकार प्रतिबद्ध है जिसके चलते पुरानी बसों को नयी इलेक्ट्रिक बसों से बदलने की प्रक्रिया प्रगति पर है। नीति आयोग द्वारा हिमाचल को 'इलेक्ट्रिक वाहन नीति' बनाने के लिए light house state के रूप में चयनित किया गया है। प्रदेश सरकार द्वारा स्मार्ट सिटी योजना के तहत क्षेत्रीय कार्यशाला, शिमला के ढली व लक्कड़ बाजार बस अड्डे को विकसित किया जा रहा है।

सरकार लगभग 95 प्रतिशत के करीब पंचायतों को सड़क से जोड़ चुकी है। सरकार द्वारा वर्ष 2020-21 में 29 पंचायतों को सड़क से जोड़ा गया है, 33 पंचायतों में कार्य प्रगति पर है व 15 पंचायतों को जीप योग्य सड़क से जोड़ा जा चुका है। शेष बची पंचायतों को शीघ्र सड़क सुविधाओं से जोड़ने के लिए सरकार कृतसंकल्प है। वतमान में प्रदेश में 785 किलोमीटर लम्बे पांच राष्ट्रीय उच्चमार्गों के चार लेनिंग का कार्य प्रगति पर है। कीरतपुर-नेरचौक व टकोली-कुल्लू राष्ट्रीय उच्च मार्गों की चार लेनिंग का कार्य भी इस वित्त वर्ष पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर्ष 2022 तक सरकार 650 किलोमीटर सड़कों का डबल लेन में उन्नयन व 80 पुलों के निर्माण के लक्ष्य को हासिल करने के लिए भी प्रतिबद्ध है।

वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान प्रदेश

रेल सेवाओं का विस्तार

चंडीगढ़-बद्दी रेल सम्पर्क औद्योगिक दृष्टि से हिमाचल के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस रेल लाईन के लिए भूमि अधिग्रहण का कार्य मार्च 2022 तक पूरा करने का लक्ष्य है। इसके अलावा सरकार द्वारा मार्च 2022 तक अन्तिम 20 किलोमीटर पर भानुपल्ली-बिलासपुर रेल लाईन का भूमि अधिग्रहण भी पूरा किया जाएगा। इसके प्रथम बीस किलोमीटर में सात सुरंगों और अठारह पुलों पर काम शुरू कर दिया गया है। वर्ष 2021-22 में रेल लाईन निर्माण हेतु 200 करोड़ रुपये व्यय किये जाएंगे।

जलमार्गों की नयी शुरुआत

हिमाचल सरकार जल मार्ग परिवहन सुविधाओं के विकास हेतु प्रतिबद्ध है। सतलुज नदी में कसोल (बिलासपुर) व तत्तापानी के मध्य कोल डैम में जल परिवहन सेवाएं हाल ही में शुरू की गई हैं। ब्यास, चिनाब, रावी और सतलुज नदियों एवं विभिन्न जलाशयों में यात्रियों एवं मालभार परिवहन की संभावनाओं को तलाशा जाएगा।

रज्जु मार्गों से कम होंगी दूरियां

प्रदेश में रज्जू मार्गों के निर्माण के लिए वर्ष 2021-22 में 25 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। बगलामुखी रज्जू मार्ग के निर्माण के लिए प्रारम्भ की गईं प्रक्रियाओं के शीघ्र निपटान हेतु सरकार कृतसंकल्प है। प्रदेश का रज्जु मार्ग विकास निगम दुर्गम क्षेत्रों में यात्रियों और सामग्री के लिए कम्पोजिट रोप-वे निर्माण पर तेजी से काम करेगा। धर्मशाला से मैक्लोडगंज, श्री आनंदपुर साहिब से श्री नैना देवी जी, आदि हिमानी से चामुंडा जी, भुंतर से बिजली महादेव रज्जुमार्ग निर्माणाधीन है।

हवाई सेवाओं का सुदृढ़ीकरण

प्रदेश को भारत के नागरिक उड्डयन मानचित्र पर उचित पहचान दिलाने के लिए हिमाचल सरकार निरन्तर प्रयत्नशील है। इस उद्देश्य हेतु मंडी हवाई अड्डे के निर्माण और काँगड़ा, कुल्लू व शिमला हवाई अड्डों के विस्तारीकरण के लिए समस्त आवश्यक कदम उठाये जा रहे है। इन परियोजनाओं के महत्त्व को देखते हुए वर्ष 2021-22 में 1,016 करोड़ रुपये व्यय किये जाने है। पहले से विद्यमान हवाई पट्टिओं के विस्तार के साथ-साथ नयी छोटी हवाई पट्टिओं का निर्माण किया जा रहा है। प्रदेश में 22 नए हेलिपैड भी बनाये जा रहे हैं। उड़ान योजना के तहत प्रदेशवासी व दूसरे राज्यों से आये पर्यटक हेलिटैक्सी सेवाओं का भी लाभ उठा रहे हैं।

में हवाई व जल मार्गों का विकास हुआ है। उड़ान योजना के तहत प्रदेशवासियों व पर्यटकों की सुविधा के लिए हेलिटेक्सी सेवाओं की शुरुआत की गयी है। वर्तमान में इन सेवाओं का लाभ शिमला-चंडीगढ़-शिमला, शिमला- कुल्लू-शिमला व शिमला-धर्मशाला-शिमला जाने वाले लोग उठा सकते है। उड़ान-2 के तहत प्रदेश में मंडी के कांगनीधार व कुल्लू के सासे हेलिपैड तथा शिमला के रामपुर हेलिपैड को हेलीपोर्ट के रूप में विकसित किया जा रहा है। प्रदेश में उच्च श्रेणी पर्यटकों, विशेषकर फिल्म निर्माताओं व सिने जगत की अन्य हस्तियों, को आकर्षित करने के लिए एयर कनेक्टिविटी के विस्तार को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। राज्य में पहले से विद्यमान हवाई पट्टिओं का विस्तार किया जा रहा है तथा नयी छोटी हवाई पट्टिओं का निर्माण किया जा रहा है। इस समय प्रदेश में 22 नए हेलिपैड बनाये जा रहे हैं। प्रदेश के जिला मण्डी की बल्ह घाटी के नागचला में अंतरराष्ट्रीय स्तर के ग्रीन फील्ड हवाई अड्डे की स्थापना की प्रक्रिया जारी है। प्रदेश सरकार साहसिक जल क्रीड़ाओं और जल मार्गों से यातायात को संचालित करने व बढ़ावा देने हेतु ऐसे मार्गों का भी विकास कर रही है। वर्तमान में सरकार मण्डी के तत्तापानी से सलापड़ तथा पौंग झील पर यातायात व साहसिक गतिविधियां आरम्भ करने के लिए योजना पर काम कर रही है। प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा रोपवे निर्माण को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। इस क्षेत्र में निवेशकों को विशेष छूट व सुविधाएं प्रदान की जा रही है। वर्तमान में प्रदेश में 150 करोड़ की लगत की धर्मशाला-मैक्लोडगंज रज्जुमार्ग का कार्य प्रगति पर है जिसे वर्ष 2022 के मई माह तक पर्यटकों के लिए आरम्भ किया जाएगा। इसके अलावा श्री आनंदपुर साहिब से श्री नैना देवी जी, आदि हिमानी से चामुंडा जी, भुंतर से बिजली महादेव रज्जुमार्गों का कार्य भी प्रगति पर है।

परिवहन विकास के लिए आधुनिक इंजीनियरिंग के प्रयोग में भी हिमाचल नित नए आयाम हासिल कर रहा है। इसका बड़ा उदाहरण है 'अटल टनल रोहतांग' जिसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 3 अक्टूबर, 2020 को देश को समर्पित किया। मनाली को लेह से जोड़ती, हर मौसम में बहाल रहने वाली यह टनल 10,040 फीट की ऊंचाई पर बानी दुनिया की सबसे लम्बी टनल है। इसकी लम्बाई 9.02 किलोमीटर है। विश्व-स्तरीय आधुनिक सुविधाओं से लैस अटल टनल के निर्माण से लाहौल घाटी जाने वाले आमजन को वर्षभर के लिए बिना रुकावट आवागमन की सुविधाएं मिल रही है और साथ ही मनाली से लेह की दूरी भी 46 किलोमीटर कम हुई है।

हिमालय की गोद में बसा हिमाचल प्रदेश नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण और आत्म शान्ति का पर्याय है, जिस कारण यहाँ हर साल प्रदेश की आबादी से लगभग तीन गुना ज्यादा पर्यटक आते है। इसके अलावा देवभूमि की शुद्ध जलवायु, खनिज भंडार से समृद्ध मृदा इसके कृषि एवं बागबानी उत्पादों को देश व विदेश के बाजारों में एक अलग पहचान दिलाते है। आज इन क्षेत्रों में हिमाचल की अभूतपूर्व उपलब्धियों का श्रेय यहाँ की विश्वस्तरीय परिवहन सुविधाओं को जाता है।

उप संपादक, गिरिराज साप्ताहिक, मो. 89882 67798

शिक्षा

हिमाचल में उद्दीप्त शिक्षा की अखंड ज्योति

◆ विवेक शर्मा

कल्याणकारी राज्य का प्रतिबिम्ब शिक्षित समाज के रूप में नजर आता है। शिक्षा की ज्योति से न केवल हमें ज्ञान प्राप्त होता है अपितु यह हमारे लिए सफलता के नए द्वार खोलने का कार्य भी करती है। सभ्य समाज का निर्माण भी शिक्षा के द्वारा ही संभव है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत को अनेक परिवर्तनों का सामना करना पड़ा। स्वाधीन भारत ने गत सात दशकों में अनेक मुकाम हासिल किए हैं। 15 अप्रैल 1948 के ऐतिहासिक दिन चीफ कमिशनर्स प्रोविंस के रूप में अस्तित्व में आने के बाद हिमाचल प्रगति पथ पर अग्रसर हुआ। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के चलते इस अंचल में सुख सुविधाएं तो दूर बल्कि यह गरीबी, पिछड़ेपन का ही पर्याय था।

इन चुनौतियों का सामना करते हुए इस प्रदेश ने उत्तरोत्तर प्रतिभावान एवं दूरदर्शी नेतृत्व के मार्गदर्शन में अपनी विकास यात्रा आरंभ की। सभ्य समाज की मूल आवश्यकता शिक्षा के प्रसार से हिमाचल में प्रगति का ऐसा सूत्रपात हुआ जिसका आज देश के बड़े राज्य भी अनुसरण करने लगे हैं। अपने गठन के उपरांत हिमाचल ने शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता श्रेणी में रखा। आज मुख्य रूप से दुर्गम व जनजातीय क्षेत्र वाले इस पहाड़ी प्रदेश ने शैक्षणिक सुविधाओं के विस्तार और इसे सर्वसुलभ बनाने में अभूतपूर्व प्रगति की है।

हिमाचल निर्माता डॉ. यशवंत सिंह परमार सहित प्रदेश के ईमानदार एवं मेहनतकश लोगों की मेहनत आज रंग ला रही है जिनकी दूरदर्शी सोच का परिणाम है कि आज प्रदेश ने शिक्षा के क्षेत्र में बड़े राज्यों के समकक्ष खड़े हो कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। प्रदेश सरकार ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए राज्य में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सर्वप्रथम लागू कर देश भर में पहल की है।

वर्तमान में राज्य में लगभग 15553 शैक्षणिक संस्थानों का एक मजबूत नेटवर्क है जिसके माध्यम से प्रदेश के नौनिहाल शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हुए विस्तार की बात की जाए तो आज 82.80 प्रतिशत साक्षरता दर के साथ हिमाचल शीर्ष राज्यों की श्रेणी में शामिल है। हिमाचल में साक्षरता दर का राष्ट्रीय औसत से अधिक होना इस बात का एक बड़ा प्रमाण है कि पर्वतीय राज्य होने के बावजूद इसने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। इस वित्त वर्ष में भी हिमाचल सरकार ने शिक्षा के लिए 8024 करोड़ रुपये का प्रावधान कर इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र को अपनी प्राथमिकता सूची में बरकरार रखा है। इसके अतिरिक्त राज्य में शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए सरकार ने स्वर्ण जयंती सुपर 100 योजना, अखण्ड शिक्षा ज्योति-मेरे स्कूल से निकले मोती, अटल आदर्श विद्या केंद्र, अटल स्कूल वर्दी योजना, मेधा प्रोत्साहन योजना, अटल निर्मल जल योजना, स्वर्ण जयंती उत्कृष्ट विद्यालय योजना, टॉप-100 छात्रवृत्ति योजना जैसी अनेक योजनाएं आरम्भ की हैं जिनका प्रमुख लक्ष्य शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों को बेहतर से बेहतर शिक्षा प्रदान करना और उत्तम मानव संसाधन तैयार करना है।

प्रदेश में स्थापित आई.आई.टी., आई.आई.एम, एन.आई.टी, ऐम्स जैसे श्रेष्ठ प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में युवाओं को प्रदेश में ही विश्व स्तरीय शिक्षण सुविधाएं मुहैया करवाई जा रही हैं। आज प्रदेश में तकनीक पर आधारित पठन-पाठन तथा नवाचार प्रयासों से शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया है। अब प्रदेश के विद्यालयों में स्मार्ट क्लास, के माध्यम से अत्याधुनिक शिक्षण पद्धतियों को अपना कर विद्यार्थियों को भविष्य के अनुकूल पाठ्यक्रम में दीक्षित किया जा रहा है। वैश्विक महामारी के इस दौर में भी विद्यार्थियों को घर के सुरक्षित माहौल में ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने की सफल पहल सराहनीय है जिसका श्रेय प्रदेश के दूरदर्शी मुख्यमंत्री को जाता है जिन्होंने हर घर को पाठशाला बना कर कोरोना काल में भी पढ़ाई को प्रभावित नहीं होने दिया। यह भी सुनिश्चित किया कि इस कठिन दौर में भी सामान्य सत्र

के समान ही अध्यापन कार्य सुचारू रूप से चलता रहे। गुणात्मक शिक्षा को सर्वसुलभ करने के लिए प्रदेश सरकार ने अध्यापकों को नवीन अध्यापन विधियों से अवगत करवाने के लिए नवीन प्रयास किए। प्रदेश की शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने तथा इसकी गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्यों के दृष्टिगत् 'हिम दर्पण शिक्षा एकीकृत पोर्टल' स्थापित किया जा रहा है। मोबाईल ऐप की सहायता से भी इस पोर्टल पर अध्यापन एवं कार्मिक मामलों से संबंधित सूचना अपलोड की जा सकेगी। हिमाचल में आज माध्यमिक स्कूलों के सभी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ पौष्टिक आहार भी दिया जा रहा है। इसके लिए सरकार ने मिड डे मील (मध्याह्न) भोजन योजना के कार्यान्वयन से दोनों समस्याओं पर काबू पाने में सफलता प्राप्त की है।

प्रदेश में सामान्य शिक्षा के साथ-साथ हिमाचल सरकार 'राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान' के तहत माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा लागू कर रही है। वर्तमान में 953 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में 15 विषयों में एक लाख से ज्यादा छात्रों को ऑटोमोबाइल, स्वास्थ्य सेवा, खुदरा, सुरक्षा, पर्यटन, कृषि, दूरसंचार, मीडिया, मनोरंजन, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लम्बिंग, टेलरिंग आदि क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जा रही है।

प्रदेश के हर 1.5 किलोमीटर पर प्राथमिक तथा हर 3 किलोमीटर की दूरी पर माध्यमिक विद्यालयों के माध्यम से हर बच्चे को शिक्षा सुनिश्चित की जा रही है। हिमाचल में आज छः विश्वविद्यालय, 128 महाविद्यालय, 1963 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, 924 उच्च , 2038 माध्यमिक तथा 10721 प्राथमिक विद्यालयों के सुदृढ़ नेटवर्क के माध्यम से स्तरीय शिक्षा प्रदान की जा रही है।

उप संपादक, गिरिराज,
मो. 98171 14806

उच्चतर शिक्षा क्षेत्र में व्यापक उन्नति

हिमाचल प्रदेश ने उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यापक उन्नति की हैं। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के रूप में राज्य का पहला विश्वविद्यालय 22 जुलाई, 1970 को स्थापित किया गया, जिससे राज्य के छात्रों को प्रदेश में ही उच्च शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला। आज, देश-विदेश के लगभग 8,000 छात्र इस विश्वविद्यालय के 13 संकायों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में 39 विभाग, 15 शोध केंद्र, 3 संस्थान और 5 एक्टिव चेयर्स हैं। प्रदेश भर में निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना से उच्च शिक्षा को प्रोत्साहन मिला है। मई 1966 से पालमपुर चल रहे कृषि महाविद्यालय को पहली नवम्बर, 1978 में चौधरी सरवण कुमार हिमाचल कृषि विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया गया। साल 1985 में नौणी में डॉ. यशवन्त सिंह परमार बागवानी एवं औद्यानिकी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मण्डी की स्थापना के साथ राज्य ने तकनीकी और प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति की है। आई. आई.टी. के अलावा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हमीरपुर, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, ऊना और हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय हमीरपुर तथा इससे सम्बद्ध कॉलेज गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। भारतीय प्रबंधन संस्थान, सिरमौर हिमाचल प्रदेश में उत्कृष्ट प्रबंधन शिक्षा का प्रमाण है।

स्वास्थ्य

स्वस्थ हिमाचल निरोग समाज

◆ लुभित सिंह

मनुष्य के लिए स्वस्थ रहना जीवन का सबसे बड़ा सुख है। यानी पहला सुख निरोगी काया। कोई आदमी अपने जीवन का पूरा आनन्द तभी उठा सकता है, जब वह शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी शारीरिक स्वास्थ्य अनिवार्य है। 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम' अर्थात यह शरीर ही धर्म का श्रेष्ठ साधन है। यदि हम धर्म में विश्वास रखते हैं और स्वयं को धार्मिक कहते हैं, तो अपने शरीर को स्वस्थ रखना हमारा पहला कर्तव्य है। यदि शरीर स्वस्थ नहीं है, तो जीवन नीरस हो जाता है।

हिमाचल प्रदेश सरकार स्वस्थ समाज की इसी मूल भावना को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में स्वास्थ्य क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर रही है। प्रदेश सरकार ने वर्ष 2021-22 के बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए 3016 करोड़ रुपये का प्रावधान कर इस क्षेत्र को सुदृढ़ करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को आगे बढ़ाया है। प्रदेश में मौजूद स्वास्थ्य के सुदृढ़ नेटवर्क के बलबूते आज यह हमारा प्रदेश कोरानाकाल जैसे मुश्किल समय में भी लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में सराहनीय कार्य कर रहा है। प्रदेश में कोरोनाकाल के दौरान कोविड मामलों का घर घर जाकर पता लगाने के साथ साथ लोगों की स्वास्थ्य जानकारी सफलतापूर्वक जुटाने में अहम भूमिका निभा रही है। पहले 'एक्टिव केस फाइंडिंग अभियान' फिर 'मुख्य मंत्री हिम सुरक्षा' अभियान के दौरान सरकार ने यह कार्य बखूबी करके दिखाया है। प्रदेश में 16 जनवरी, 2021 से आरंभ कोविड टीकाकरण अभियान के तहत 45 से अधिक आयु के सभी को टीका लगाया जा रहा है। प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते हुए गत तीन वर्षों के दौरान 'हिमकेयर योजना', 'सहारा योजना', 'अटल आशीर्वाद योजना', 'मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोष', 'मुख्यमंत्री निरोग योजना', 'मुख्यमंत्री निःशुल्क दवाई योजना' तथा 'टेलिमेडिसन सुविधा' जैसी नई योजनाओं के माध्यम से लोगों को बेहतर सुविधाएं प्रदान की गई। आयुष्मान भारत, हिम केयर, मुख्यमन्त्री चिकित्सा सहायता कोश, निःशुल्क दवाइयां, सहारा योजना, सम्मान योजना, निक्षय पोषण योजना सहित अन्य कल्याणकारी योजनाओं के लिए वर्ष 2021-22 में 250 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

बच्चों में दृष्टि दोष और अन्धापन स्वास्थ्य सेवा नीति निर्माताओं के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। इन बच्चों को बाल्यवस्था में दृष्टि सुधार की आवश्यकता होती है। कक्षा छः से दसवीं तक के सभी सरकारी स्कूलों के बच्चों की आँखों की जाँच एवं निःशुल्क चश्मा प्रदान करने के लिए 'मिशन दृष्टि' आरम्भ की गई है। हिमाचल प्रदेश पूर्ण टीकाकरण कवरेज में देश में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला राज्य बना है। प्रदेश में मातृ एवं बाल देखभाल सुविधाओं को एकीकृत रूप में प्रदान किया जाएगा। सभी स्वास्थ्य उप-केन्द्रों और राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम टीमों को डिजिटल हीमोग्लोबिन मीटर उपलब्ध करवाए जाएंगे जो एनीमिया का समय पर पता लगाने और सुधारात्मक उपाय करने के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। पाँच वर्ष से कम आयु वर्ग में निमोनिया मृत्यु का एक मुख्य कारण है। प्रदेश सरकार ने निमोनिया के कारण मृत्यु दर को कम करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। इसी उद्देश्य से सार्वभौमिक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के अन्तर्गत स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों में ऑक्सीमीटर के माध्यम से निमोनिया की स्क्रीनिंग की जाएगी। प्रथम चरण में यह जिला चम्बा और मण्डी में शुरू की जाएगी और परिणाम के आधार पर इसका विस्तार किया जाएगा।

केन्द्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना में कवर न होने वाले गरीब लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रदेश में चलाई जा रही हिमकेयर योजना के तहत पंजीकृत लोगों की संख्या

4.63 लाख है और प्रदेश में अब तक 1.33 लाख लाभार्थियों को 131 करोड़ रुपये की निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधाओं से लाभान्वित किया गया। सहारा योजना के तहत लगभग 12 हजार लाभार्थियों को 21 करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई है। 2021-22 में 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी 'हिमकेयर' के लाभार्थियों तथा सभी अनाथ बच्चों, जो कि बाल आश्रमों में रह रहे हैं, को हिम केयर योजना में, बिना अंशदान दिये, शामिल किये जाएंगे।

प्रदेश में गत तीन वर्षों में स्वास्थ्य सेवाओं के आधारभूत ढांचे को मजबूत करने के साथ-साथ मेडिकल चिकित्सा के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व विस्तार किया गया है। आईजीएमसी शिमला सहित टाण्डा, नाहन, हमीरपुर, चम्बा और नेरचौक मेडिकल कॉलेजों तथा दन्त चिकित्सा कॉलेज शिमला के आधारभूत ढाँचे और इनमें समुचित सेवाओं पर 2020-21 में 772 करोड़ रुपये खर्च किए गए। पिछले तीन वर्षों में इसमें 28 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। प्रदेश सरकार के इन प्रयासों का यह हुआ कि अब प्रदेश के युवाओं को चिकित्सा शिक्षा के लिए अन्य राज्यों में नहीं जाना पड़ता। प्रदेश में सरकारी क्षेत्र के छः मेडिकल कॉलेजों तथा निजी क्षेत्र के एक मेडिकल कॉलेज से हर वर्ष सैकड़ों युवा एम.बी.बी.एस. की डिग्रियां प्राप्त कर निकल रहे हैं। इससे प्रदेश के स्वास्थ्य संस्थानों में डॉक्टरों के रिक्त पड़े पदों को भरने में सहायता मिल रही है।

इसके अलावा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स) कोठीपुरा, बिलासपुर तथा पीजीआई सेटेलाइट सैंटर ऊना जैसे विश्व स्तरीय संस्थान लोगों को घरद्वार के नजदीक स्वास्थ्य की विशेषज्ञ एवं सुपर स्पेशियलिटी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इस समय के किसी भी बड़े सरकारी अस्पताल में पैट स्कैन की सुविधा उपलब्ध नहीं है। इस कमी को दूर करने के लिए आईजीएमसी अस्पताल शिमला में पैट स्कैन मशीन स्थापित की जाएगी। इसके अलावा टांडा मेडिकल कालेज में सीटी स्कैन व एमआरआई मशीनें तथा हमीरपुर व नाहन मेडिकल कॉलेजों में सीटी स्कैन मशीनें लगाई जा रही हैं। मेडिकल चिकित्सा के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे मेडिकल विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदेश में सेवायें दे रहे पी.जी.विद्यार्थी, जूनियर और सीनियर रेजिडेंट तथा डी.एम. विद्यार्थियों के मानदेय में पाँच-पाँच हजार रुपये प्रतिमाह वृद्धि की गई है।

प्रदेश सरकार बच्चों की स्वास्थ्य देखभाल की दिशा में भी कारगर कदम उठा रही है। हाल ही में हुए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 की ताजा रिपोर्ट पर प्रदेश सरकार उचित कदम उठा कर रही है। बच्चों में कम वजन, ठिगनेपन, कुपोषण एवं अनीमिया जैसी स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न विभागों की भागीदारी से एक एकीकृत पहल की आवश्यकता है। प्रदेश सरकार इसके लिए वर्तमान वित्त वर्ष में नीति आयोग की भागीदारी से एक अध्ययन करवाएगी जिसके आधार पर इस समस्या के निदान के लिए एक कार्य योजना तैयार की जाएगी।

वर्तमान में राज्य के किसी भी स्वास्थ्य संस्थान में पैट स्कैन की सुविधा उपलब्ध नहीं है जिसके कारण कैंसर के मरीज पड़ोसी राज्यों में जाने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए पैट स्कैन की सुविधा आई.जी.एम.सी. शिमला में स्थापित की जाएगी। साथ ही टांडा मेडिकल कॉलेज में सी.टी. स्कैन तथा एम.आर.आई मशीनें, और हमीरपुर व नाहन मेडिकल कॉलेज में सी.टी. स्कैन मशीनें स्थापित की जाएंगी। इसके लिए 70 करोड़ रुपये व्यय करने का प्रस्ताव किया गया है।

प्रदेश सरकार एम्स बिलासपुर और पी.जी.आई.सेटेलाइट ऊना जैसी शीर्ष स्वास्थ्य संस्थाओं से राज्य में विशेषज्ञ एवं सुपर स्पैशलिटी स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण में सहाता मिली है। शिमला के चमयाना में 278 करोड़ रुपये की लागत से बन रहे सुपर स्पैशलिटी अस्पताल को वर्ष 2021-22 के दौरान लोगों को समर्पित कर दिया जाएगा। इसी के साथ इन्दिरा गान्धी मेडिकल कॉलेज, शिमला में 103 करोड़ रुपये की लागत से बन रहे न्यू ओ.पी.डी.ब्लॉक एवम् लगभग 25 करोड़ रुपये की लागत से तैयार होने वाले ट्रॉमा सेंटर को भी इसी वर्ष क्रियाशील कर दिया जाएगा। टांडा मेडिकल कॉलेज के सुपर स्पैशलिटी वार्ड को भी सुदृढ़ किया जाएगा। कोरोना के दौरान आशा वर्कर ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। प्रदेश सरकार द्वारा दिये जाने वाले मानदेय में राज्य अंशदान को 750 रुपये प्रतिमाह बढ़ाया गया है। गर्भवती महिलाओं को प्रधानमन्त्री सुरक्षित मातृत्व अभियान क्लिनिकों तक तीसरी निर्धारित प्रसव पूर्व जाँच के लिए ले जाने पर आशा वर्कर को अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। इसके लिए 2 करोड़ रुपये व्यय किये जाएंगे। प्रदेश में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश सरकार ने वर्ष 2021-22 में 143 'आयुष वैलनैस सेंटर' स्थापित करने का निर्णय लिया है। योग को बढ़ावा देने के लिए आयुष विभाग प्रशिक्षित योग मार्गदर्शकों का समूह तैयार करेगा जो निजी क्षेत्र में सेवायें देने के लिए उपलब्ध होंगे।

उप संपादक, मो. 98880 33796

सामाजिक सरोकारों से बही लोक कल्याण की धारा

◆ सतपाल

हर मुख पर जीवन आशा हो, सबका भाग्य संवरे और जन-जन का मन हर्षाए, इसी के लिए अब नई चेतनाएं और नव सम्भावनाएं आज हमारे सम्मुख हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में समाज कल्याण अब एक वृहदतर स्वरूप में लोक कल्याण के रूप में प्रस्तुत है। अब समाज विशेष की अपेक्षा ''सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'' की अवधारणा एक सुदृढ़ पक्ष के रूप में हम सबके समक्ष है। इसमें सभी के मंगल की कामना-सम्भावना-संकल्पना निहित है।

प्रदेश में हम राजकीय प्रयासों और आमजन सहयोग के बूते इस दिशा में बहुत आगे बढ़े हैं। यहां नवजात से लेकर वृद्ध तक व हर वर्ग का समग्र विकास उत्थान सुनिश्चित हो रहा है। प्रदेश में इस 'हेतु' को किसी एक विशेष योजना अथवा कार्यक्रम से नहीं बल्कि अनेक सर्वहितकारी प्रयासों एवं संकल्पों से साधा जा रहा है। इससे सब का विकास और उत्थान संभव हो रहा है और सब सुखमय जीवन धारा में शामिल हो रहे हैं।

सामाजिक सुरक्षा का प्रदेश में विस्तार हुआ है और वर्तमान में 5 लाख 77 हजार लोगों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान की जा रही है। इनमें वृद्धजन, विधवा, दिव्यांगजन, ट्रासजेंडर व कुष्ठ रोगी शामिल हैं। इस समय प्रदेश में 70 वर्ष से अधिक आयु के तीन लाख 90 हजार से भी अधिक वृद्धजन 1500 रुपये प्रतिमाह पेंशन प्राप्त कर रहे हैं।

विधवा महिलाओं को 1000 रुपये प्रतिमाह पेंशन प्रदान की जा रही है ताकि उनका जीवन आसानी से चल सके । परित्यक्त एवं किन्हीं अन्य कारणों से अकेले जीवन बसर कर रही महिलाओं को भी एकल नारी पेंशन योजना के तहत इसी तरह के लाभ प्रदान किए जा रहे हैं।

दिव्यांग व्यक्तियों को 40 से 49 प्रतिशत विकलांगता पर एक हजार व इससे अधिक विकलांगता पर 1500 रुपये प्रतिमाह पेंशन दी जा रही है। ट्रासजेंडर व कुष्ठ रोगियों को 850 रुपये गुजर-बसर के लिए भत्ते के रूप में प्रदान किए जा रहे हैं।

प्रदेश में विधवा व एकल नारी पेंशन योजना के तहत 1.20 लाख से भी अधिक महिलाएं यह पेंशन प्राप्त कर रही हैं जबकि 63,498 दिव्यांग उक्त लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

इस वित्तीय वर्ष से सरकार ने स्वर्ण जयन्ती नारी संबल योजना शुरू की है। इसके तहत 65 वर्ष से 69 वर्ष की पात्र महिलाएं 1000 रुपये प्रति माह पेंशन लाभ प्राप्त कर सकेंगी, इसके लिए 53 करोड़ रुपये का बजटीय प्रावधान है और 60 हजार से भी अधिक पात्र महिलाओं को लाभ मिलेगा।

इस वित्तीय वर्ष में उक्त पेंशन योजनाओं के तहत 40 हजार अतिरिक्त लोगों को पेंशन लाभ प्रदान करने का सरकार का संकल्प है और इस पर 60 करोड़ अतिरिक्त व्यय होंगे। यह पेंशन योजनाएं लाभार्थियों के जीवन यापन का सहारा बनी हैं और जन-जन का दुःख दर्द समझने के लिए सरकार के प्रयासों के प्रति इन का भरोसा जगा है।

जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए अन्तरजातीय विवाहों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है जिससे सामाजिक बदलाव को दिशा मिले और विकृत कुण्ठाओं एवं रूढ़ियों से मुक्त समाज का निर्माण हो। अन्तरजातीय विवाह पर सरकार नव दम्पतियों को 50 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान करती है।

जातीय अन्तर वाले नवदम्पतियों को यह आर्थिक प्रोत्साहन मदद उनके आगे के जीवन को सरल-सरस बनाती है। जातीय दंश से राहत मिलती है। इसी तरह दिव्यांग जन विवाह के लिए भी पुरस्कार योजना है। सामान्य व्यक्ति को दिव्यांग महिला या पुरुष से 40 से 74 प्रतिशत दिव्यांगता तक 25 हजार और इससे अधिक दिव्यांगता पर 50 हजार रुपये की विवाह प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। इससे दिव्यांगजनों में सौहार्द बढ़ता है, उन्हें भी वैवाहिक जीवन जीने का सुख मिलता है।

'सब का अपना घर हो' को साकार रूप देने के लिए प्रदेश में गत वित्तीय वर्ष से आरम्भ स्वर्ण जयन्ती आश्रय योजना के तहत इस वित्तीय वर्ष में पात्र 12 हजार लाभार्थियों को मूल भूत सुविधाओं से परिपूर्ण आवास प्रदान किए जाएंगे। वर्ष 2021-22 में इस योजना के तहत 180 करोड़ रुपये के व्यय का प्रस्ताव है। यह राशि पिछले वित्त वर्ष से 20 करोड़ रुपये अधिक है।

यह योजना 'प्रधान मन्त्री आवास योजना' व मुख्यमंत्री आवास योजना' का समेकित रूप है जिस के तहत बी.पी.एल.के

तहत अनुसूचित जाति एवं जनजाति व पिछड़ा वर्ग के पात्र लोगों व विधवाओं और दिव्यांगजनों को गृह निर्माण हेतु 1.50 लाख व आवास मरम्मत के लिए 35 हजार रुपये प्रदान किए जाते हैं। इस योजना से गरीबी रेखा के नीचे जीवन जी रहे लोगों का 'घर का सपना' पूर्ण रूप ले रहा है।

वृह्द लोक कल्याण : पूर्व उल्लेखित समाज कल्याण योजनाओं से आगे बढ़ें तो अब प्रदेश में अनेक ऐसी योजनाएं व कार्यक्रम संचालित हैं जिन के माध्यम से प्रदेश का जन मानस स्वतः लोक कल्याण की अनुभूतियों का आलिंग्न महसूस कर रहा है। इन से सर्वजन सुखद भविष्य की ओर आगे बढ़ रहा है।

'हिमाचल गृहिणी सुविधा' के तहत महिलाओं को चूल्हे के धुएं से छुटकारा दिलाने के लिए निःशुल्क गैस कुनेक्शन दिए जा रहे हैं। अब तक 2.92 लाख महिलाएं इस सुविधा से लाभान्वित हुई हैं। इस वित्तीय वर्ष में उक्त सुविधार्थ 20 करोड़ रुपये का बजटीय प्रावधान है। आम महिलाओं को सरकार का यह एक ऐसा उपहार है जो उनकी दैनिक दिनचर्या से सीधा जुड़ा है।

मुख्यमन्त्री 'शगुन' योजना में अनुसूचित जाति एवं जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग की कन्याओं के विवाह पर 31 हजार 'शगुन' स्वरूप भेंट किया जाता है। इस वर्ष 'शगुन' के लिए 50 करोड़ का प्रावधान है।

'अटल आशीर्वाद' के अन्तर्गत अस्पताल में जन्में नवजात शिशुओं को 1200 रुपये की 'आगंतुक किट' प्रदान की जा रही है। इसके तहत शिशुओं एवं माताओं को उपयोगी क्रीम-पाउडर जैसी वस्तुएं दी जाती हैं। अब तक एक लाख 24 हजार से भी अधिक यह लाभ दिए गए हैं।

'बेटी है अनमोल' से बच्चियों के प्रति नकारात्मक सोच को समाज 'इतिश्री' कह रहा है। इसके तहत गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों की बेटियों के नाम बैंक या डाकघर में 12 हजार जमा किए जाते हैं जिसे वे 18 वर्ष की आयु पूरी होने पर निकाल सकती हैं। यह उनके भविष्य को संवारने का एक सफल राजकीय प्रयास है।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'पंचवटी' है। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठजनों के लिए पार्क और बागीचे विकसित हो रहे हैं। यह योजना 'मनरेगा' के तहत संचालित है। इससे वृद्धों के साथ निःसंदेह अन्य ग्रामीण भी लाभ उठाएंगे ही। फुर्सत के पलों के लिए यह उत्तम है। 'सहारा' में आर्थिक तौर पर कमजोर मरीजों को 3000 रुपये की सहायता राशि दी जा रही है। यह उनके जीवन की संजीवनी बनी है। उन्हें सहारा मिला है।

प्रदेश में 'मुख्यमन्त्री स्वावलम्बन योजना' काफी लोकप्रिय हो रही है। इसके तहत 18 वर्ष से 45 वर्ष की आयु के युवाओं को जिम से लेकर होटल व रेस्तरां इत्यादि कार्यों के लिए 60 लाख की परियोजना लागत पर 25 प्रतिशत का निवेश उपदान उपलब्ध है। महिलाओं के लिए यह उपदान 30 प्रतिशत है। इससे युवा अपना काम धन्धा शुरू कर नौकरी की अपेक्षा स्वरोजगार की तरफ मुड़ रहे हैं। सफलता की कहानियां भी लिख रहे हैं।

युवाओं को स्वरोजगार के लिए ''स्टार्ट अप'' भी है। इसके तहत बैंचर फंड स्थापित है। युवा इससे भरपूर लाभ उठा रहे हैं। अपना धंधा जमाकर वह आत्म निर्भर हो रहे हैं।

''प्राकृतिक खेती-खुशहाल किसान'' के तहत कृषकों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से प्रदेश के सभी किसान परिवारों को वर्ष 2022 तक प्राकृतिक खेती के तहत लाने का लक्ष्य है। अभी तक प्रदेश में 99 हजार से भी ज्यादा किसान प्राकृतिक खेती की ओर उन्मुख हुए हैं।

लोक हित में इसी तरह की अन्य अनेक योजनाएं हैं जिनसे आम से खास सब लाभान्वित हो रहे हैं। प्रदेश खुशहाल हो रहा है। इस पर्वतांचल का ज़र्रा-ज़र्रा महक-सुगंध बिखेर रहा है। यह हिमाचल का समाज कल्याण से लोक कल्याण की ओर उन्मुख होना है।

सहायक संपादक, गिरिराज साप्ताहिक,
शिमला-171 005, मो. 82192 12907

संस्कृति

भारतीय संस्कृति में बौद्ध कला का योगदान

◆ डॉ. तुलसी रमण

आदिम जीवन से लेकर संघर्ष करते हुए मनुष्य ने श्रेष्ठ संस्कार के रूप में जो सौंदर्यबोध पाया है, उसका समावेश 'कला' शब्द में है। चित्र, मूर्ति, वास्तु आदि कलाएं मानव की सतत विकासोन्मुख कला चेतना को व्यक्त करती हैं। ये कलाएं मनुष्य के भाव लोक को तरल और सुन्दर बनाती हैं। आनंद भावपूर्ण और मूर्तरूप होने के कारण कलाएं ग्रहण करने में सरल सार्वजनीन हैं। कहा जा सकता है कि मानव के द्वारा कला की प्रतिष्ठा हुई और कला के द्वारा मानव ने आत्मानुभूति और आत्म गौरव प्राप्त किया। इस तरह कला और मनुष्य का सम्बंध अटूट है।

नृ-विज्ञान के अनुसार 'संस्कृति' समस्त सीखे हुए व्यवहार अथवा उस अनुभाव का नाम है जो सामाजिक परम्परा से प्राप्त होती है। यह उन गुणों का समवाय है जो व्यक्तित्व को परिष्कृत और समृद्ध बनाते हैं। कलात्मक सर्जन की जो क्रियाएं मनुष्य जीवन को समृद्ध करती हैं वे संस्कृति में समाहित होती है। इस दृष्टि से विभिन्न शास्त्रों व दर्शन आदि का चिंतन रचनात्मक साहित्य तथा चित्र, मूर्ति व वास्तु जैसी कलाएं संस्कृति के अन्तर्गत आती है। भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता इसकी समन्वय भावना है। इसका सबसे उदात रूप संस्कृत महाकाव्यों, महान नाटकों, बौद्ध धर्म की शिक्षाओं तथा विभिन्न कला-रूपों में प्रतिफलित हुआ है।

भारतीय कला ने प्रायः धार्मिक उद्देश्यों को पूरा करने में अपना योग दिया है और धर्म तथा राजाश्रय के माध्यम से कला को व्यापक प्रसार मिला है। इस तरह धर्म और कला का सम्बंध बना रहा है। इसके साथ ही कला ने प्रकृति और जीवन को सजीवता के साथ समेटा है और इससे कला में पूर्णतया ऐंद्रिक आयाम जुड़े हैं। वास्तव में कला शुद्ध रूप से जीवन है और यह जीवन के लिए है। कलाएं अपने तरीके से मनुष्य जीवन की आवश्यकता की पूर्ति करती हैं। कहा गया है कि 'कला मात्र मनुष्य जीवन के मनोमय कोष का भोजन है, अंग है और इसीलिए यह मूलतः धार्मिक है। यहां धार्मिक का अर्थ किसी विशेष विश्वास से जुड़ा होना नहीं है, बल्कि जीवन के ऊंचे उठने के कार्य से जुड़ा होना है।'[1]

वास्तव में भारतीय कल्पना में धर्म, जीवन और स्वप्न परस्पर जुड़े हैं और इन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।धर्म और कला का संबन्ध वैश्विक स्तर पर परंपरा से रहा है। योरोपीय कला का इतिहास ग्रीक और रोमन धार्मिक शिल्प की परम्परा से आरम्भ होता है। क्लासीकल या शास्त्रीय कला बहुत कुछ ईसाई धर्म की छत्रछाया में विकसित हुई। एक दृष्टि से कला और कलाकार दोनों धार्मिक प्रचार के साधन बनते रहे हैं। शुद्ध

कलावादी दृष्टि का परंपरा में भले ही अभाव रहा हो। लेकिन प्रचार और उपदेश के उद्देश्य से प्रचलित उस कला में भी कई तरह की कल्पनाओं और भावनाओं के चित्रण के लिए छूट रहती थी, क्योंकि इसके बिना कला की गति आगे नहीं बढ़ सकती। इसीलिए धार्मिक आस्था वाले कलाकार बिना किसी बाहरी नियंत्रण के आत्म प्रेरणा से कला सर्जन करते थे।

बौद्ध धर्म के प्रश्रय और परिवेश में परंपरा से चली आ रही कला को लेकर प्रख्यात बौद्ध विद्वानों-समदोङ रिनपोछे और प्रो. कृष्णनाथ के मध्य एक रोचक संवाद बौद्ध निबंधावली (सं. कृष्णनाथ) में बौद्ध साधना कला, साधना और संस्कृति के अंतःसम्बंध' शीर्षक से है। प्रो. कृष्णनाथ वह मंतव्य सामने रखते हैं जिसके अनुसार 'बुद्ध की मूर्ति से पहले प्रतीक बने'। इसके प्रत्युत्तर में समदोङ रिनपोछे कहते हैं कि यह पुरातत्व वालो की मान्यता है। बौद्ध परम्परा में शाक्य मुनि के जीवन काल में ही बुद्ध के चित्र रचे जाने के दृष्टांत हैं। इस प्रसंग में रिनपोछे तीन घटनाओं का उल्लेख करते हैं।

पहली, जब कौशीबो के राजा उदयन के मगध के राजा बिम्बिसार को एक ऐसी अमूल्य भेंट भेजी, जिसके सामने मगध का सारा खजाना भी कम पड़ता था। इसलिए बदले में बुद्ध का चित्र देने का निर्णय लिया गया। पर समस्या थी कि बुद्ध के तेज के आगे चित्रांकन करने को नजर नहीं टिकती थी। तब बुद्ध ने स्वयं सुझाया कि सुबह की किरण निकलते वह स्वयं दरवाजे पर खड़े होंगे, पीछे दीवार पर चित्रांकन के लिए कपड़ा टांग दिया जाए। वही चित्र धूमधाम से कौशांबी के राजा को भेजा गया था।

दूसरी घटना, उस समय की है जब शाक्य मुनि के जीवन काल में बुद्ध के होने की प्रसिद्धि हुई तो सिंहल राजकुमारी को बुद्ध की छवि के प्रति जिज्ञासा हुई। इसके शासन के लिए भी बुद्ध का चित्र बनाया गया था।

तीसरी घटना, उस समय की बात है जब बुद्ध एक वर्ष के लिए तुषित लोक गए तो जेतवन बिहार उनके बिना सूना हो गया। तब बुद्ध की अनुज्ञा से ही चंदन की एक मूर्ति बनाकर गंध कुटि में रख दी गई। ह्वेन सांग के यात्रा वृतांत में उस मूर्ति का उल्लेख है।

अब प्रो. कृष्णनाथ् का प्रश्न है कि कलाकृति के लिए मात्र एकांत साधना काफी है। या संस्कृति भी जरूरी है?

संवाद को आगे बढ़ाते हुए रिनपोछे कहते हैं कि कला-कृतियों के होने से पहले, कुछ ध्यान भावना करने वाले भिक्षु, उपासक- उपासिका जरूरी हैं, जो विश्वास व दार्शिनिक मत सहित पूजा पाठ, कर्मकांड करते हों, अथात् साधना तो प्रथम है ही, एक संस्कृति भी जरूरी है, ध्यान-भावना, उपासना की तभी कला पल्लवित होती है, अन्यथा यह एकांत साधक के चित्र में उठकर वही लय हो जाएगी।

'बौद्ध मूर्तिकला का विकास ईसाई मूर्तिकला से किस अर्थ में भिन्न है?' प्रो. कृष्णनाथ की इस जिज्ञासा की पूर्ति के लिए रिनपोछे बताते हैं कि जब ईसाई धर्म आया तो संसार भारतीय बौद्ध और ग्रीक, रोमन मूर्तियों से भरा-पूरा था। ईसाई मूर्तिकला शून्य में विकसित नहीं हुई।'[2]

अब प्रो. कृष्णनाथ के सामने आधुनिक कला दृष्टि और बौद्ध कला के बीच का भेद उभर आता है। आज कला की स्वाधीनता का प्रश्न बराबर उठाया जाता है। अशोक वाजपेयी लिखते हैं कि असल में साहित्य और कलाएं मनुष्य की स्थायी गोधूलि है, जहां कुछ भी साफ-साफ नहीं दिख रहा पड़ता, पर जिसमें रह कर ही मनुष्य की, उसके संसार और लोक की, परम वेधयता चरितार्थ होती है। जो लोग उसे सर्वथा स्पष्ट बना देना चाहते हैं, वह उसे साहित्य और कला न रहने देकर दर्शन, विचार, धर्म, राजनीति आदि का संस्करण बना देना चाहते हैं।[3]

कला की स्वतंत्रता के इस विचार क्रम में ही प्रो. कृष्णनाथ उपरोक्त संवाद के अंतिम चरण में कहते हैं- आधुनिक दृष्टि से परंपरागत चित्र के लक्षण, रंग, रूप, रेखा एक कैद है। इनसे पूजा तो हो सकती है, कला नहीं। यह तो जैसे रूढ़, जड़ हो गई है। इसकी यांत्रिक पुनरावृति भर होती है। सो भी हो। किन्तु आधुनिक अमूर्त कला ने रूप, रूपकारों को तोड़ा है। सीधे सम्प्रेषण की चेष्टा की है। इसमे निज की भावना भाषा प्रतिभा की अभिव्यक्ति है। सिर्फ परम्परा की नहीं। इस प्रकार की बौद्ध कला तो हो सकती है। पूजा न हो।' इस संवाद का समापन रिनपोछे अपने विचार के इस सूत्र वाक्य से करते हैं- 'प्रश्न है : कला साधना के लिए या कला, कला के लिए?"[4]

कला को लेकर यह बहस लंबे समय से चली आ रही हे कि 'कला, कला के लिए ? या कला समाज के लिए?' रिनपोछे के इस सूत्र वाक्य में समाज की जगह 'साधना' ने ले ली है। यह साधना ही पारंपरिक बौद्ध कला का प्रमुख प्रयोजन रहा है। इस कला की परंपरा साधना-परंपरा से अविभाज्य है। इसलिए भारतीय संस्कृति में बौद्ध कला के योगदान को इसी नजरिये से पड़ताल करना उचित प्रतीत होता है। लेकिन इस कला से मनुष्य जीवन के लिए सौंदर्य बोध के जो गवाक्ष खुलते हैं, बुद्ध की प्रतिमाओं की परिधि में शांत तेजस् का जो वातावरण बनता है, वह सीधे तौर पर मनुष्य को प्रभावित करता है। यह भी इस कला का प्रताप और इसका वैभव है।

पुराविद रोलंड का मानना है कि परवर्ती भारतीय धर्म और लिपि के समान, कला की परंपरा का मूल उद्गम भी सिन्धु सभ्यता से ही मानना चाहिए। सिन्धु घाटी की सभ्यता में शिल्प कला के जो साक्ष्य उपलब्ध हुए थे, वैदिक काल में वह परम्परा विच्छिन्त रही, क्योंकि सिन्धु में नागा सभ्यता थी, जबकि वैदिक सभ्यता ग्रामों और आश्रमों की थी। ई. पू. छठी शताब्दी के मौर्य काल में

कला पौषक सामाजिक वर्ग का उदय, कारीगरी का विकास और धार्मिक प्रेरणा-ये तीन तरह के कारण कला के पक्ष में रहे। विभिन्न परिस्थितियों शिल्पगत श्रेणियों का विकास होने से शिल्पियों को संगठित होकर प्रशिक्षण की परंपरा मिली तो इससे कला में निपुणता बढ़ी। इस तरह अशोक के समय में बौद्ध कला का पुनर्जन्म हुआ। धनिकों और शासन के प्रश्रय से वास्तुकला और शिल्पों का उन्नयन हुआ। बिहार समृद्ध होने लगे और फिर वे कला पोषक भी हुए। इसी के साथ कला धर्म-प्रचार का माध्यम हुई। गोविन्द चन्द्र पांडे के अनुसार 'कला और धर्म का यह समन्वय एक विशाल आध्यात्मिक क्रांति का द्योतक था। संक्षेप में इस क्रांति का अर्थ था मनुष्य और देवता का समुपदर्पण'।[5]

मौर्य काल में सभ्यता की बहुमुखी उन्नति हई है। ईरान, यूनान और भारतीय संस्कृतियों में इस कदर आदान-प्रदान हुआ है कि यह इन संस्कृतियों का सम्मिलित काल भी माना गया। वाह्लीक, कपिशा और गंधार का भू-भाग मौर्य साम्राज्य में विशेष महत्व का क्षेत्र हो गया, क्योंकि उक्त तीनों संस्कृतियों के आपसी समझौते उसी भूमि पर हुए। उस काल में मौर्य कला के प्रारंभिक विषय बिहार और स्तूप थे। विनय में बिहार, अर्धयोग, प्रासाद, हर्म्य तथा गुहा इन पांच शयनासनों का उल्लेख मिलता है। विहार भिक्षुओं के आवास गृह थे और गुहावास एकांतचर्ण के लिए थे। स्तूप परिनिवृत तथागत का प्रतीक माना गया है। चिता की अवशिष्ट वस्तु पर निर्मित स्मारक चैत्य कहलाता है। मौर्य कला के उपलब्ध साक्ष्यों में अशोक के स्तंभ प्रमुख हैं। पैंतीस फुट और उससे भी ऊंचे इन स्तम्भों को एक पत्थर से काटकर बनाया गया है। चुनार के पत्थर पर शीशे जैसी चमक पैदा करना आज मशीनों के रहते भी कठिन प्रतीत होता है। ये स्तम्भ प्रयाग, दिल्ली, सारनाथ आदि अनेक स्थानों पर पाये गये हैं। इन सबमें सारनाथ का स्तंभ विशेष उल्लेखनीय है। इसके शीर्ष का शिल्प अद्वितीय है। सबसे ऊपर पीठ सटाकर उकड़ बैठे चार बबर केसरी सिंह हैं। सिंहों की ये चारों मूर्तियां पृष्ठतः जुड़ी हुई है। इनके ऊपर अशोक का धर्मचक्र था। नीचे मंडलाकार चौकी पर चार धर्मचक्र और चार पशु उकेरे गए थे। अब धर्मचक्र प्रवर्तन के इस स्मारक का स्तंभ ही खड़ा है। इसके शेष खंड संग्राहलय में संरक्षित हैं। धार्मिक स्थापत्य और मूर्ति कला का ऐसा कलात्मक समन्वय अन्यत्र उपलब्ध नहीं हुआ है। इसी स्तंभ से अपराजित शक्ति की प्रतीक चार सिंहों की मूर्ति को भारत गणतंत्र के राज्य चिह्न के रूप में लिया गया और अशोक का धर्मचक्र हमारे तिरंगे राष्ट्रीय ध्वज के मध्य में है।

अशोक ने बुद्ध के जीवन और उनके उपदेशों से जुड़े असंख्य स्थानों पर स्तंभ स्थापित किए, इसीलिए बौद्ध किंवदंती है कि सम्राट अशोक ने 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया था। ऐसे प्राचीनतम स्तूपों में सांची और भरहुत के अद्भुत उदाहरण उपलब्ध हुए हैं। इन स्तूपों के परिसर में चहार दीवारी यानि वेदिका का सुनियोजित निर्माण हुआ है। इस वेदिका पर चार दिशाओं में बने चार विशाल द्वार हैं, जो शिल्प कला की दृष्टि से अनुपम है। इन तोरणों पर भारतीय जीवन का सजीव चित्रण पाया जाता है।

यर्थात् रूपीकन इस स्तूप कला की विशेषता है। प्राकृत जीवन का चित्रण परिष्कृत गढ़न से हुआ है और प्रकृति के साथ इस गहरी संवेदना में अध्यात्म का समन्वय है। कुमारस्वामी ने सांची के स्तूप की कला को 'पौधों की शैली' कहा है और रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सांची की कला में अभिव्यक्त भावना की तुलना कालिदास की कविता से की है। 'भरहुत और सांची, कौशांबी से विदिशा के मार्ग पर पड़ते हैं। यहां की कला का विस्तार और विकास अमरावती और अजंता में माना जाता है। अजंता की चित्रकला इसी मूर्ति विधान की परंपरा का रूपांतरित परिणाम एवं उत्कर्ष माना गया है। शिला का उत्खनन करके निर्मित वास्तु अशोक कालीन मगध में सर्वप्रथम देखने को मिला है। पश्चिमी घाट में भाजा, पितलखोरा, अजंता, कोन्डाने एवं जुन्नर की चैत्य गुफाएं प्राचीनतर

हैं और उसके बाद वेडसा, नासिक और कार्ली की आती है। पूजार्थक स्तूप यानि चैत्य दीर्घ गुहा के आकार में ध्यानादि के लिए निर्मित किए जाते थे। इन चैत्यों में बौद्ध कला का उत्कर्ष दर्शनीय है। ई. पू. दूसरी शताब्दी से तीसरी शताब्दी तक कृष्णा और गुन्टूर जिलों में बौद्ध धर्म की समृद्धि के प्रमाण मिले हैं। इनमें अमरावती, नागार्जुन कोंडा, जग्गयपेट तथा श्रीपर्वत बौद्ध धर्म के प्रधान केन्द्र रहे हैं।

कुषाण काल की शिल्प कला का केन्द्र मथुरा में था। वहां से उसकी प्रेरणा श्रावस्ती, सारनाथ, कौशांवी, सांची आदि स्थानों तक फैली। लगभग उसी समय गंधार कला शैली का विकास उस भूमि पर हुआ जहां शक, यवन, ईरानी आदि कलाओं का सम्मिलन भारतीय संस्कृति के साथ हुआ था। वासुदेव शरण अग्रवाल ने भारत के प्रत्यंत प्रदेश में जन्मी इस कला शैली को भारतीय और विदेशी शैलियों के मध्य हुई सगाई की उपज माना है। प्रथम शताब्दी ईस्वी से लेकर करीब छः-सात सौ वर्षों तक गंधार शैली में काम होता रहा। इसमें युनानी शिल्प कला का विशेष प्रभाव है। गंधार यवनों का प्रमुख केन्द्र था। वहां की कला में यवन शिल्प और बौद्ध आदर्श के समन्वय से एक विशिष्ट 'गंधार कला' का उद्‌गम हुआ। गंधार कला में यवन कारीगरी का हाथ था, जबकि इसके पोषक शक और कुषाण प्रतीत होते हैं। बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध समर्थक कनिष्क के काल में कुषाण साम्राज्य मध्य एशिया से पूर्वी भारत तक विस्तार में था। गंधार कला का यह स्वर्ण काल माना जाता है।

अफगानिस्तान में प्रसिद्ध रेशम मार्ग पर 8200 फुट की ऊंचाई पर स्थित बामियान बौद्ध धर्म, दर्शन व कला का सम्पन्न केन्द्र था। वहां शैल पार्श्व पर एक मील की लम्बाई में बिहार और चैत्य उत्खात हैं। इस वास्तु प्रस्तार के दोनों ओर बुद्ध की दो विशालकाय मूर्तियां थीं। पूर्व की ओर115 फुट ऊंची तथा पश्चिम की ओर 174 फुट ऊंची यह मूर्तियां बौद्ध कला के विश्व विख्यात उदाहरण के रूप में थीं। इन्हें तीसरी से पांचवी शताब्दी के मध्य रखा गया है। बामियान यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल माना गया है। लेकिन सन् 2001 में अफगानिस्तान के जिहादी संगठन तालिबान के नेता मुल्ला मुहम्मद उमर के कहने पर इन विशाल मूर्तियों को डायनामाइट से उड़ा दिया गया। बामियान में तीन शैलियों के चित्र भी मिलें हैं- सासानी, भारतीय और मध्य एशियाई। भारतीय शैली पर अजंता की गुप्तकालीन चित्रकला का प्रभाव देखा गया है। गंधार कला यथार्थ अंकन प्रधान रही है, आध्यात्मिक भावना जगाने में वहां की मूर्तियां सफल नहीं मानी गई।

भारतीय कला-संस्कृति ने लगभग चौथी शताब्दी के आरम्भ में स्वर्ण युग में प्रवेश किया। कुषाण काल की संस्कार व परिमार्जन की धारा गुप्तकाल में परिपक्व हुई। तब सभी कला शिल्पों और साहित्य की विधाओं में अद्‌भुत सौंदर्य की सृष्टि हुई थी। गुप्त काल में चित्र, संगीत और नृत्य नागरिकों की शिक्षा और संस्कृति के अभिन्न अंग हो गये थे। अजंता के भित्ति-चित्रों में चित्रित पदम्पाणि अवलोकितेश्वर, सारनाथ में धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में अंकित भगवान बुद्ध, मथुरा में स्थापित बुद्ध-ये सब कलात्मक सौंदर्य की दृष्टि से उत्कृष्ट उदाहरण है। गुप्तकालीन चित्रकला की महान उपलब्धि अजंता की गुफाएं हैं। रंग, रेखा और भाव की दृष्टि से ये महान चित्रकारों की कृतियां हैं। इस कला ने समस्त एशिया महाद्वीप की कला को प्रभावित किया है। बौद्ध चित्रकला के लिए अजंता शाश्वत प्रेरणा मानी गई है। मध्य एशिया दंतान, उलिक, किजिल, मिरान और तनुह्वंग तक इसके प्रभाव का विस्तार पाया गया है। जापान के भित्ति चित्रों तक भी अजंता के चित्रांकन परम्परा की पहुंच देखी गई है। हिमाचल प्रदेश के सीमांत क्षेत्रों स्पीति का ताबो बिहार 'हिमालय की अजंता' के नाम से चर्चित हुआ है। इसमें चित्र, मृणमूर्ति, काष्ठ कला वास्तु आदि का अनूठा समन्वय है।

गुप्तकाल में मथुरा का कुषाण कालीन महत्व कम नहीं हुआ। वहां के शिल्प-अवशेषों को देखते हुए जान पड़ता है कि कला का जो स्वर्ण काल 5वीं से 7वीं शताब्दी के मध्य माना जाता है, उसमें मथुरा की बौद्ध प्रतिमाओं का विशेष स्थान रहा है। उत्तरायण में मथुरा को बौद्ध कला का प्रमुख केन्द्र माना गया है। यहां की मूर्तियों का गंधार कला की प्रतिमाओं से भी सम्बन्ध माना गया है।

मथुरा से प्राप्त बुद्ध की अभय मुद्रा में खड़ी मूर्ति इस शैली का उदाहरण है जो अब इंडियन म्यूजियम कोलकाता में है। प्राचीन भारतीय कला में अमरावती की कला भी प्रसिद्ध रही है। आज के आंध्र प्रदेश में स्थित अमरावती की कला कृष्णा व गोदावरी नदियों के किनारे विकसित हुई है। अमरावती स्तूप में बुद्ध के जीवन तथा जातक कथाओं को अंकित किया गया है। यहां की मूर्ति कला धार्मिक तत्वों के समावेश के साथ लोकोन्मुखी हुई है। अमरावती की मूर्तिकला का प्रादुर्भाव द्वितीय शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सातवाहन काल में हुआ था। सौंदर्य की दृष्टि से इस कला की मूर्तियां श्रेष्ठ हैं।

कला सम्बन्धी इस अध्ययन के बीच यह बात ध्यान में आती है कि बौद्ध परम्परा में कलाओं का जैसा और जितना उपयोग किया गया है, शायद ही किसी अन्य धर्म में ऐसा हुआ हो। यहां कला जैसे जीवन शैली में समा गई है। कलाओं के माध्यम से बौद्ध अभिप्राय और संदेश की अभिव्यक्ति सर्वाधिक प्रभावी दिखाई देती है। स्थापत्य कला में स्तूप, चैत्य, विहार, गुहा और तोरण जैसे साधना स्थल और स्मारक कला के भंडार हैं, जो सौंदर्य बोधी से लेकर आस्थावान जन साधारण तक को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। चित्रकला में शृंखलाबद्ध भित्ति चित्र थंका यानि पटचित्र से

लेकर लघुचित्र तक कितनी ही कला विधाएं हैं। जिनमें बौद्ध विषयक चित्रण होता रहा है। कथाचित्र अपने में एक महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय विधा है। बौद्ध तंत्र साधना में भी चित्रांकन का उपयोग होता है। तंत्र कला में वास्तु शिल्पीय तथा ज्यामितिक आकारों के अलावा स्त्री-पुरुष के सूक्ष्म मिथुन-चित्रों का भी समावेश होता है। इससे आधुनिक चित्रकार भी प्रभावित हुए हैं। इस तरह पारंपरिक चित्रांकन का प्रभाव आधुनिक कला पर भी लक्षित होता है।

प्रस्तर, धातु, मृण और काष्ठ की जीवंत बौद्ध मूर्तियां हैं। फिर बहुविध काष्ठ कला का अलग विस्तार है। पूजा पात्र व अन्य साधना उपकरण, वाद्य यन्त्र, वेशभूषा और गृह सज्जा से लेकर ग्रंथों की आवरण सज्जा तक विभिन्न आयामों में बौद्ध कला की अलग पहचान दृष्टिगोचर होती है। क्रॉकरी आदि वस्तुओं में भी बौद्ध कला की विशेष झलक मिलती है। बुच्छेन नाट्य और छम नृत्य जैसी बौद्ध निष्पादन कलाओं में भी ललित कलाओं का उपयोग होता है। इस तरह बौद्ध कलाएं सहयोजित रूप में जनजीवन के अंग-संग चलती है।

इस तमाम बौद्ध कला संपदा और जीवन से इसके जुड़ाव को देखते हुए प्रतीत होता है कि बौद्ध धर्म के साथ कलाओं का एक निरंतर सिलसिला प्रारंभ से लेकर आज तक चला आया है। अपने उत्कर्ष काल में बौद्ध धर्म एशिया के विभिन्न देशों में फैलाता चला गया था। विशाल हिमालयी क्षेत्र में बौद्ध छाता आज भी तना हुआ है। अब भी दुनिया के विस्तार मे इस धर्म के अनुयायी बनते जा रहे हैं। उन सब को बौद्ध कलाएं आकर्षित करती हैं। बल्कि कई बार तो ये बहुविध कलाएं ही सौंदर्यबोधी लोगों को बौद्ध धर्म और दर्शन के निकट ले आती है।

प्रो. जगन्नाथ उपाध्याय कहते हैं- ''भक्ति ज्ञान और कर्म भारतीय संस्कृति के तीन प्रवाह माने जाते हैं। इनके विकास में बौद्धों ने अपना अमूल्य योग दिया है। इसी प्रेरणा से बौद्धों ने बड़े-बड़े काव्य रचे, ग्रंथ लिखे, कथाएं कहीं और मूर्तिकला, वास्तुकला आदि का विकास किया। भगवान बुद्ध की मूर्ति पर जो शांति झलक रही हैं, उसमें सारी आध्यात्मिकता झलकती है।... तिब्बत, चीन और जापान आदि के चित्रों में किस प्रकार आध्यात्मिकता उभारी गई है; यह है भारतीय संस्कृति, जिसे संजोकर रखना है।''

दयार, दुर्गा कॉलोनी ढली, शिमला-171012
मो : 0 94180 86986

संदर्भ :

1. भारतीय कला दृष्टि : सं. सच्चिदानंद वात्स्यायन, कुमारस्वामी का भारत चिंतन : विद्यानिवास मित्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 40
2. बौद्ध निबंधावली : कृष्णनाथ, वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली, पृ. 153
3. समय के बाहर : अशोक वाजपेयी, वाग्यदेवी प्रकाशन, बिकानेर, पृ. 18
4. बौद्ध निबंधावली : कृष्णनाथ, उपरोक्त पृ. 154
5. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास डॉ. गोविन्द चन्द्र पांडे, उ. प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पृ. 164
6. वही पृ. 165
7. बौद्ध मनीषा : सं. प्रो. रामशंकर त्रिपाठी,भारतीय संस्कृति को बौद्ध देनः प्रो. जगन्नाथ उपाध्याय, केन्द्रीय बौद्ध संस्थान, लेह, पृ. 198

आलेख

पहाड़ी संस्कृति के रंगोत्सव

◆ डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित'

धौलाधार का ऊंचा-नीचा, सपाट-ढलवां तराई वाला आंचल अत्यंत मनोहारी है। टेढ़े-मेढ़े रास्ते, सर्पीली पगडंडियां, गहरी मोड़दार खड्डें (नदियां), नाले, सपाट-ढलवां खेत- खलिहान, चाय के बाग उनकी हत्थेलियों पर तैरती पत्तियां, चाय पत्ति तोड़ती पहाड़ने, धान मींजती कृषक महिलाएं, कुओं-बाबलियों पर होते, हास-परिहास, वृक्ष- तम्बुओं की ओट में आंख मिचौली करते खपरैल-पहाड़ी शैली के घर बड़े प्यार लगते हैं। उत्तर में स्थित धौलाधार के मनोहर दृश्य और दूर तक जाती इसकी दृश्यावलियों से प्रभावित होकर कांगड़ा जिला गेजटीयर में प्रथम ब्रिटिश अधिकारी के शब्द दर्ज हैं - "No Scenery in my opinion presents such a sublime contrast throught out the World" अर्थात् विश्वभर में ऐसा मनोहारी चित्ताकर्षक दृश्य अन्यत्र दुर्लभ है। इस घाटी में हर ऋतु क्रम अपना अद्वितीय परिवर्तन व सौंदर्य लेकर आती हैं जो यहां के लोकजीवन में मंगल पर्व, तीज-त्योहार, छिंज-मेलों संबंधी रंग, रस व माधुर्य के अनेक अवसर जुटाती हैं।

जब फागुनाई हवा चलने लगती है तो मन में अनायास कुछ होने लगता हैं। फागुन की रसवन्ती हवाएं गांव-घाटी को सम्मोहित करने लगती है। गांव-कस्बों के मार्ग में यौवन थिरकने लगता है। चारों ओर बसंत आभा निखरने लगती है। हवा में तैरते, दूर-पास से आते लोकगीत, रसवंती हवाओं के सहयोग पाकर और भी मतवाला बना देते हैं। इसी ऋतु सौंदर्य में अपने विविध रंग-रस बिखेरने आते होली पर्व की प्रतीक्षा मन को आकुल-व्याकुल करने लगती हैं। सूखे, घुले रंगों को परस्पर उंडेलने-बिखेरने-तैरने को उतावले लगने लगते हैं। चौतरफा बिखरती बसंती आभा, रंग-बिरंगे फूल, धरा-सौंदर्य को मदमस्त बनाते हैं। रंगों का त्योहार होली ही इस ऋतु का प्रमुख त्योहार हैं। रंगों और फाग-गुलाल का यह पर्व शर्द ऋतु में दुबके बैठे यौवन को उन्मुक्तता प्रदान करता हैं। इस पर्व के साथ मदनोत्सव की परंपरा भी जुड़ी है। होलिका दहन को काम-दहन का भी प्रतीक माना गया है। इस ऋतु में शीलता के स्थान पर अश्लीलता, अल्हड़पन अन्तर्चेतना की धारा से युक्त होकर प्रकट होने लगता है। यहां प्रस्तुत हैं होली के कुछ रंग जिनकी परंपरा इस जनपद में आज भी परंपरित है -

पहला रंग - दंदोच्छ पूजन :

जब घर में मां थी तो कहती - 'बेटा! कामल (वृक्ष) की दो - चार डालियां काट ले आ। सूर्य डूब जाएगा तो ...।' वह कहती, सूर्यास्त के पश्चात किसी वृक्ष को काटना, फल-फूल तोड़ना यहां तक साग-सब्जी कुछ भी तोड़ना पाप भी तो है। मैं कामल की डालियां लाता। मां के संकेतानुसार गुलियां और डण्डे बना देता। वह बार-बार कहतीं-पांच डण्डू और तेरह-तेरह गुलियां बनाना। यानि परिवार में जितने पुत्र हो उतने डण्डू और प्रत्येक के साथ तेरह गुलियां। पुत्रियां ही तो एक डण्डू के साथ छः-छः गुलियां बांधते हैं। ऐसा समझाती-बताती।

दूसरे दिन सुबह से मां बड़ी व्यस्त होती। कभी भीतर, कभी बाहर। मुझे रहस्य तब मिलता जब गांव की सुहागनें 'दंदोच्छ' पूजने चलती। 'दंदोच्छ' कुल-वृद्धि की प्रतीक हैं अतः उसकी पूजा-परसना, मनौतियां सब कुछ होनी ही चाहियें अन्यथा वंश विकास रुक सकता हैं। सुहागी वस्त्रा-भूषणों में सजी-संवरी स्त्रियां गोटा किनारी जड़े लाल सालू ओढ़े एक हाथ में खारी (बांस का बना पात्र) और दूसरे में गड़वे(जल पात्र) लिये दंदोच्छ पूजने चलतीं। खारी में धूप, दीप, कुमकुम, रंग, दूर्वा-फल, मीठे पकवान तथा भिगोये चने सजते। गड़वें में रंग-बिरंगा जल। गांव में घरों से दंदोच्छ पूजा को निकलती सुहागिने एक गीत इस परम्परा-प्रारम्भ में यूं गुनगुनाने लगतीं - जो ग्राम वधुओं के होली पूजने की प्रस्थान यात्रा की सूचना यूं देता है -

आओ ! आओ ! पिया जी !
दंदोच्छी पूजण जाणा,
रंग लाओ पिया जी,
दंदोच्छी पूजण जाणा
फुहल खिड़दे सारें बंसती, पियाजी !
होलिया पूजण जाणा !
पैंछी बोलदे अगण-द्वारे पियाजी !
होलिया पूजण जाणा !
बणां-बाड़ियां माता दंदोच्छ खिले
असां, दंदोच्छी पूजण जाणा।
असां पूजणी, रंग चढ़ाणा पियाजी !
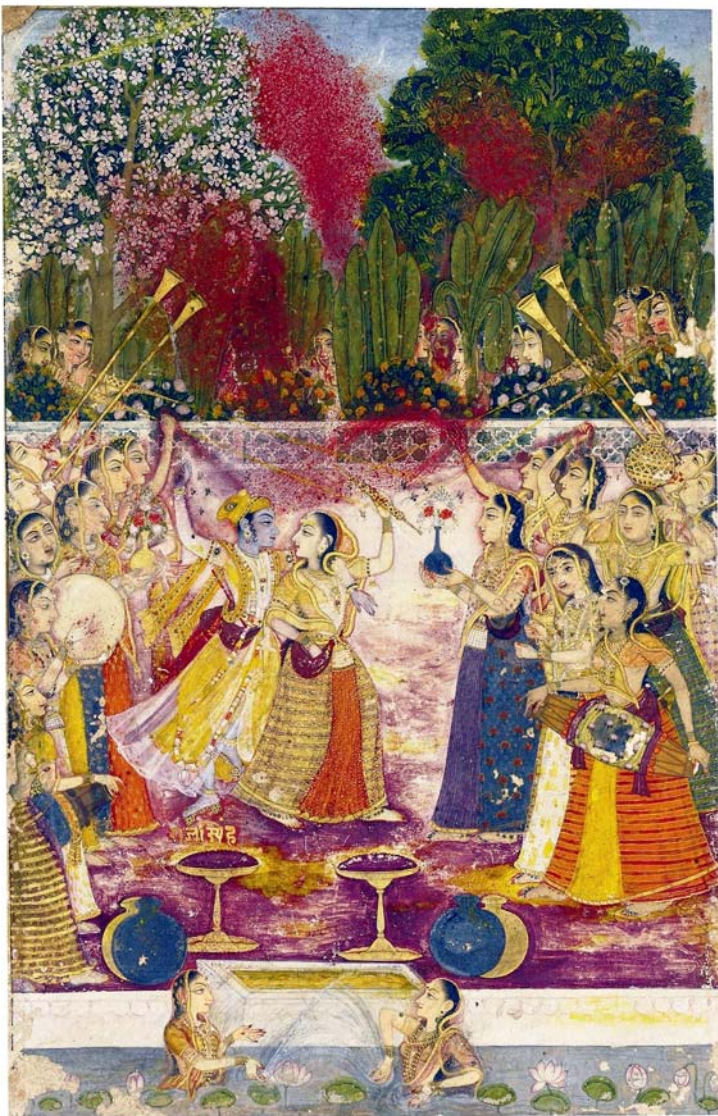
फूले बसन्त पिया घर नाहीं
मैं किस संग खेलांगी होली।
पहला बसन्त सदा सिब कहिये
पारवतिया रंग ला लै
अज, पिया अपणे को मना लै।
होर बसन्त श्री कृष्ण कहिये
रुकमणिया रंग ला लै
अज, पिया अपणे को मना लै।

बसन्त झूम रहा हैं। दिशाएं गा रही हैं। परन्तु प्रियतम घर नहीं, होली खेलूं तो किसके साथ। मैं शिव, कृष्ण तथा गणेश का स्मरण करती पार्वती, रुक्मिणी, रिद्धि-सिद्धि बनी रंग खेलूं भी तो किससे? मैं उन्हें आज मनाऊं भी तो कैसे? प्रवास की घड़ियां कितनी लम्बी, कितनी विकट। परन्तु जीविका का प्रश्न भी तो बड़ा विकट है, निर्दयी हैं। प्यार और संयोग के कोमल तन्तुओं की उसके आगे कब चलती है। प्रवासी पति की प्रतीक्षा में जीती, मर्यादाएं निभाती, सुक्खणे-मनौतियां करती लोकनारी अपने भविष्य के प्रति कितनी सजग, कितनी उन्मुख हैं, ये पर्व त्योहार गवाही देते हैं। बाग-बगीचे में उगे 'दंदोच्छ' पौधे को बड़ी श्रद्धा से पूजा-परसा जाता है। वे उस पर लाल, पीला रंग उड़ेलती, कुमकुम, अक्षत, डोरी, टल्लू , पकवान, चने-गुड़ चढ़ाकर परस्पर होली खेलती हैं और सुनाई देता है एक गीत -

इसी प्रकार एक और गीत

असां, होलियां पूजण जाणा ।।

तथा-

फगणे दी रुत आई वे कृष्णा,
फुहलां दी रुत आई वेऽ
रंगा दी रुत आई वे राधे,
होलियां दी रुत आई वेऽ
रलि मिली सखियां होली खेलण,
राधा कैंह सरमाई वेऽ
रंगा दी रुत आई वे राधे,
होलियां दी रुत आई वेऽ
रली-मिली सखियां होली खेलण,
राधा कैंह सरमाई वेऽ।।

तभी किसी ने यह स्वर उठाया---

चैत्र महीने फूले बसन्त, सब सईयां खेलण होली
मेरे लाला, सब सईयां खेलण होली।
कहां से आये कान्ह-कन्हैया, कहां से आयी राधा प्यारी ?
बागा ते आये मेरे कान्ह कन्हैया, महलां ते आई राधा प्यारी।
हुण असां खेलिये होली वे राधा।
हुण असां खेलिये होली ऽऽ।
भरी पिचकारी मेरे मुख पर मारी ,
बेसर भिजी गई सारी, वे राधा! हुण असां खेलिये होली ऽऽ।।
भरया गड्डुआ सिरे पर मारा, मुकुट तां भिजी गया सारा ,
वे राधा, हुण असां खेलिये होली ऽऽऽ।
ऐह बेला अज मसें कि आई वे राधा !
अज खेलो होली ! होली !!

चारों और बसन्त फूल रहा हैं। सभी सखियां होली खेल रही, प्रियतम घर हैं। लोकनारी के मन में कृष्ण तथा राधा के आने की सुन्दर तथा सजीव कल्पनाएं उभरती हैं। वे स्वयं में राधा-कृष्ण के प्रेमभाव का आरोपण करती रहती हैं कि बाग से कृष्ण निकले और महल से राधा और दोनों होली खेलने लगे। होली खेलते-खेलते कृष्ण ने रंग भरी पिचकारी सीधी उसके मुंह पर दे मारी। हाय ! उसकी तो बेसर भी भीग गई। अच्छा ऐसा है तो लो? राधा ने भी रंग भरा गड़वा कृष्ण के सिर पर उंडेल दिया। ओह ! उनका तो मुकुट भी भीग गया, भीगने दो, आज होली ही तो है। ये बेला कभी-कभार ही तो आती हैं। अतः खूब खेलो, होली खूब खेलो। इस समय महिलाओं के चेहरे का स्वाभाविक हर्ष और चुहलपन का भाव दर्शनीय होता हैं। विविध रंगों से विचित्र चेहरों को परस्पर देखती, हास्य-व्यंग्य विनोद करती नहीं थकतीं। यही तो हैं होली का उन्माद और उनके मन का उल्लास जो आज के दिन ही देखने को मिलता है।

इसी गीत के भावावेश में स्त्रियां परस्पर रंग उंडेलती होली खेलती हैं। हास-परिहास का अनूठा दृश्य देखते बनता है। इसी बीच कोई सजब्याहिता गुनगुनाती है ---

होली खेलदे, रंगीले मेरे श्याम जी,
होली खेलदे।
रंग खेलदे, मने दे मेरे श्याम जी,
होली खेलदे।
भरी पिचकारी मेरे, मुखे पर मारी
मैं तो भिजी सारी श्याम जी,
होली खेलदे।
रोज तां श्याम मेरे, लुकी छुपी औंदे,
वास्ते पांदी मैं, कच्छ नी बौंहदे,
अज हस्सी-हस्सी रंग मलैं श्याम जी,
होली खेलदे।
माता जसोदा दिखी वलि-बलि जावै,
गोपियां संग कान्हा रंग उड़ावे,
लीला रचाएं मेरे श्याम जी।
होली खेलदे ।।

तभी किसी ने यह स्वर उठाया---

रंगी दे चुनरया लाल, रंगी दे लाल
मेरे पिया से रंगाई मंगी लै लाल।
जो मेरे पिया रंगाई न देवे
मेरा जोवण गहणा रखी लै लाल।
रंगी दे चुनरिया लाल।।
मेरी चुनरियां पिया की पगरिया
दोनों बसन्ती रंगी दे लाल।
रंगी दे चुनरियां लाल।।

नायिका का सालू को रंगने का आग्रह कितना स्वाभाविक, कितना ढीठ है। वह तो सालू रंगाना चाहती हैं, किसी भी मूल्य पर। यदि उसका प्रियतम रंगाई देने में आनाकानी करता हैं तो वह यौवन को गहनें (गिरवी) रखने पर राजी है परन्तु उसे किसी भी कीमत पर सालू जरूर रंगाना है। उसका स्नेह व चाव कितना निर्लज्ज हैं। कहती हैं उसका सालू और प्रियतम की पगड़ी दोनों को बसन्ती रंग दे। वे इस गीत में छुपे प्रणय भावों में डुबकियां लगा ही रही हैं कि किसी ने अनायास यह गीत छेड़ दिया पूजा समाप्त हुई, परस्पर रंग मलने का चाव पूरा हुआ तो सभी अपना-अपना सामान बटोरती यह गीत गाती घर की ओर चलने लगी --

जे मैं पूजी चलियां, ससु नुहां दोआं
जे मैं पूजी चलिया दराणियां, जठाणियां दोआं
बे रोले वालियां बंगां लई बणजारा आया
तिन्ना ससू सुहागणी चूड़ा चढ़ाया
तिन्ना नणदा लड़ीकियां घरे च झगड़ा पाया
नणदे गाल देआं गाल
मैं घुमाइ, मेरियें नणदे।

हास्य और व्यंग्य-विनोदी स्वभाव लोकनारी का आभूषण है। उसके जीवन की संजीवनी है। बड़े से बड़े दुख तथा अभाव को वह व्यंग्य-विनोद के सहारे सहजता से काट लेती है। यदि उस पर प्रसन्न हो कर कभी-कभार भूल-चूक से सास कांच की बंगें भी मोल ले देती हैं तो भी उसकी नंनद की छाती पर सांप लौटने लगता है। लोक-लाज की धनी बहु इतना ही कहती हैं --हे नंनद ! मैं तुझ पर बलिहारी जाती हूं। इन्हें भी तू ही ले,ले। गीत के ये बोल धीरे-धीरे पगडंडियों से सरकते आंगन में सिमटते अलग-अलग कार्यों में लुप्त हो गए। परन्तु एक स्वर सर्वत्र गूंजता रहा --

फूले बसन्त पिया घर नाहीं
मैं किस संग खेंलांगी होली ?
मैं किस संग खेंलांगी होली ऽऽ।

दूसरा रंग

सन् 1970 के आसपास में नगरोटा बगवां में जोगू झींर से मिला था। वहां घनी बस्ती है झींरों की। कांगड़ा के अनेक कस्बों और राज प्रासादों के निकट में आज भी झीरों की बस्तियां मिलती हैं। जहां मछली पकड़ना, घराट फेरना इनके अजीविका के साधन रहे वहां होली गाना भी इनकी परंपरा रही हैं। सुजानपुर, कांगड़ा, आलमपुर, नगरोटा, पपरोला, पालमपुर, नूरपुर आदि नगरों एवं कस्बों में ऐसी परंपराएं थीं। दोपहर ढले कहीं दूर ढौरू (तबले) की गूंज सुनाई देती। वह धीरे-धीरे सरकती द्वार-दर-द्वार घूमती आंगन

में आ पहुंचती। ये तो कहीं झीर होलियां गाते चले हैं। परम्परा के निर्वाह में कितनी उत्सुकता, कितना चाव, कितनी लगन। दो-चार बूढ़े, तीन युवक। कुछ सादे, कुछ स्वांग रचे होते। बड़ी मस्ती में अजीब-सी धुन लिए मेरी ओर देखते-मुस्कुराते खांसने लगे। तभी बूढ़े ने 'ढोरू' पर थाप दी और सभी झूमने लगे --

सिमरो गनेस मेरी सारदा माया
पहले सिमरी आप ब्रह्म ने मात लोक विच आके,
ऐसा सिमरण उसने किता चारयो वेद बणाये।
फिरी सिमरी सदा सिवां ने
बिच मड़िया च जाई के
ऐसा सिमरण उसने कीता जटां च गंगा बगाई ।।

वे कहते थे, किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व गणेश-वन्दना करनी चाहिये। यह शुभ तथा समृद्धि के देवता हैं। ऐसी हमारी सांस्कृतिक परम्परा भी तो है। तभी तबले पर तड़ातड़ 'धिक्-तां, धिक्-तां ' गूंजी और गांव भर में फैल गई होली --

मुझ को सांवरे ने गारी दई
दई मैं तो कुछ न कही ! ! !
आप श्री कृष्ण पार उतर गये
दिखदी मैं दिखदी रही।
रही, मैं तो कुछ न कही।
आर गोकलिया, पार मथुरिया
बीच में जमना बही
बही, मैं तां कुछ न कही।

मैंने तो कुछ कहा नहीं फिर सांवरे श्री कृष्ण ने मुझे गालियां क्यों दीं ? वे रूठ कर स्वयं तो पार उतर गए, मैं राह देखती रही। वे रूठे क्यों भला, मैंने तो कुछ नहीं कहा। इस पार गोकुल, उस पार मथुरा, बीच में यमुना बह रही है। मैंने तो कुछ भी नहीं कहा। यौवन के उल्लासमय क्षणों में हास-परिहास, मनमुटाव, रूठना-मनाना न होगा तो फिर कब संभव हैं ? हो भी क्यों न ! ऋतु भी तो ऐसी ही हैं। वृक्ष, लता, फूल, पक्षी सभी तो यही कह रहे हैं --

सुहागण ! पिया अपणे को,मना ले।
अंबुआ की डाली कोयल बोले
बण में बोले काले मोर
सुहागण ! पिया, अपणे को मना ले, मना ले।
समझा ले, सुहागण ! पिया अपणे को, मना ले।
अम्बुआ भी झूले, कुसुम्बा भी फूले
बन में फूले बनकाई,
सुहागण, पिया अपणे को मना ले।

कितना सीधा सम्बोधन हैं इस होली में। कितनी मस्ती हैं शब्द-शब्द में। और किस तन्मयता से 'झीर' गायक मंडली ताल एवं आंगिक अभिनय से इसे प्रस्तुत करती हैं। चारों ओर उमड़ा श्रोता समूह मंत्र-मुग्ध सा प्रतीत होता हैं। ऐसा भी क्या है इन गीतों में ? वही तो है इनकी लयात्मकता और भाव प्रवणता। दोनों मिल कर श्रोता को सम्मोहित कर लेते हैं। इसी क्रम में एक और होली गीत जिसका भाव हैं - राधा श्री कृष्ण से पूछती हैं कि आपके हाथों, कपड़ों आदि पर रंग कहां कैसे लगा -

हंसी-हंसी पूछदी राधिका जी, हथ कुथु रंगाये ओ।
फोगण महीने दिया होलियां जी, असां होलियां खेलियां।।
जमना किनारे कोई सखियां जी, सौगी खेलन होलियां ।
हंसी-हंसी कृष्ण बोलदे जी, हथ ओथु रंगाये ओ !!1!!
हंसी-हंसी पूछदी राधिका जी, कपड़े कुथु रंगाये ओ।।
फौगण महीने दियां होलियां जी, असां होलियां खेलियां।
जमना किनारे कोई सखियां जी, सौगी खेलन होलियां ।।
हंसी-हंसी कृष्ण बोलदे जी, कपड़े ओथु रंगाये ओ !!2!!
रोई-रोई पूछदी राधिका जी, डोला किसे दा आया।
फौगण महीने दिया होलियां जी, असां होलियां खेलियां।।
जमना किनारे कोई सखियां जी, सोगी खेलन होलियां ।
हंसी-हंसी कृष्ण बोलदे जी, डोला सोकणी दा आएआ!!3!!
रोई-रोई पूछदी राधिका जी, सोकण कजो ब्याई ओ।
हंसी-हंसी कृष्ण बोलदे जी, असां होलियां खेलियां।।
फौगण महीने दिया होलियां जी, असां होलियां खेलियां।
जमना किनारे कोई सखियां जी, सौगी खेलन होलियां ।।
हंसी-हंसी कृष्ण बोलदे जी, राधे दिल न तोड़ेयां ।
फौगण महीने दिया होलियां जी, असां होलियां खेलियां!!4!!

मां ने छाबड़ी (बांस का बना पात्र) में धान भर कर उन्हें भेंट किए। मुखिया ने नसरां (भेंट) में चावल मांगे और मुझे होली की 'नसाणी' देने का संकेत किया। शायद किसी वस्त्र को पाना अभीष्ट था। अवसर पर उन्हें इसी अन्न, नया वस्त्र भेंट करना लोक में सामाजिक प्रथा रही हैं। मैंने अपनी नई सिली पैंट निकाली तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। इसी क्रम में होली का पहले दिन का दूसरा रंग समाप्त हुआ। रात को जब सोया तो वही गीत बार-बार कानों में गूंजता रहा --

सुहागण पिया अपणे को मना ले।
समझा ले, पिया अपणे को मना ले।।

तीसरा रंग

अभी दिन चढ़ा नहीं था। महसूस हुआ किसी ने गाल पर हाथ फेरा हो। साथ ही कुछ तरलता की अनभूति। ऐसा क्या होगा? ओढ़नी सरकाई। आंख मलता उठा। सामने मुंह सरोखी करता ड्रैसिंग टेबल। यह क्या ! चेहरे पर लाल-पीली रेखायें, कुछ जामनी धब्बे। तभी, द्वार की ओट लिए खड़ी भाभी की स्मित भरी छाया दिखाई दी। मैं समझ गया। आज तो बड़ी होली हैं। तभी भाभी ने पहल की। गांव के पंडित जी के घर बड़ी चहल-पहल थी।

छोटे-बड़े उन्हीं के यहां जा रहे थे। पता किया तो मां ने बताया, वे होली बांध रहे हैं। तभी भाभी ने चुटकी लेते व्यंग्य कसा, अगले वर्ष तुम्हारा विवाह हो जाएगा तब हम होली बांधेंगे। मां ने इसका समर्थन किया। मैं लज्जाकर भाभी को घूरता। परन्तु तब वह नामालूम क्या कह कर मुझे असमर्थ कर गई। अभी दस बजे होंगे। उनके घर ढोल बजने लगा। होली का झंडा उठाए गांव के सारे युवक पिचकारियां लिए उनके आंगन में जा पहुंचे। होली का झंडा बंधा था। नाई ने नरसिंगा पूरा, ढोली ने ढोल, शहनाई की गूंज के साथ होली ! होली ! होली! आंगन द्वार में विभिन्न रंग बिखरते, घूमने-फिरने लगे। सभी की पहचान लुप्त। वहां से होली शिव मन्दिर में आ गयी। पहले आरती, फिर वहीं होली! होली! का स्वर। तत्पश्चात होली गांव में आंगन-दर-आंगन घूमी। चारों ओर हो-हल्ला। पकड़ो, मलो, रंग फैंको, पानी उंडेलो। सायं ढली, पिचकारियां चौगान में रख दीं। सभी पनिहारों, कुओं, बावलियों पर नहाते मचलने लगे।

पूर्णिमा उदय पर होली जलाने का उपक्रम होने लगा। हर घर से इकट्ठी की पतली लकड़िया-घास। दान रूप में एकत्रित धन से कढ़ाह-प्रसाद बना। फिर वही हो-हुल्लड़। घास और लकड़ियों के घेरे में होली का झंडा गाड़ा गया। समय आने पर होली की पूजा हुई। तड़-तड़ करती होली जलने लगी। यह क्या? कैसा शोर? कोई झण्डे से बंधे नारियल तथा सवा रूपया ले भागा। कमाल कर दिया उसने। बड़ा भाग्यशाली हैं वह। जलती होली की उठती लपटों में कूद कर झंडा उड़ा ले जाना बड़े जोखिम का खेल हैं। परन्तु बिसना हर साल बाजी मार जाता हैं। एकत्रित लोगों में कड़ाह बांटा गया। हंसते, झूमते, नाचते किलकारियां मारते सब घर लौटे। सभी होली की अधजली लकड़ियां (म्यालु) उठाए थे। पंडित जी ने बताया, इन लकड़ियों को घर में रखने से या द्वार पर लटकाने से भूत-प्रेत, जादू-टोने का भय जाता रहता हैं।

चौथा रंग

मैं बीस वर्ष पूर्व बहन कृष्णा के घर नगरी-पालमपुर गया था। होली के दिन थे। चारों ओर अद्‌भुत-सा बांकपन था। जड़-चेतन में नयी स्फूर्ति नया चाव। उन्होंने बताया, होली के मेले लगे हैं। सायं 4 बजे यहां भी झांकी निकलेगी। बहनोई भवानी प्रसाद जी ने बताया यहां जो स्वांग बनाता हैं वह भरमौर का हैं। मुख सज्जा तो कमाल की करता हैं। मैं उत्सुकता से वहां गया और तीन चार फोटो लिए। पपरोला, पालमपुर, भवराना, जयसिंहपुर, लम्बा-गांव तथा सुजानपुर टीहरा में होली के मेले अपना विशेष आकर्षण रखते हैं। सुजानपुर टीहरा में तो महाराजा संसार चन्द चौगान में आकर लोगों से होली खेला करते, ऐसा मुझे वर्ष 1971 में सुजानपुर निवासी भू देव शास्त्री तथा डॉ. श्याम लाल डोगरा ने बताया था। होली-उत्सव के ही दिन थे। वहां इस अवसर पर मुशायरा था। उसी में गया था तब अपने कवि मित्रों के साथ। प्रदेश के भाषा- संस्कृति मंत्री श्री लाल चंद प्रार्थी मुख्य अतिथि थे। दो दिन देखा था होली मेला सुजानपुर के ऐतिहासिक मैदान में। हिमाचल प्रदेश में होली के मेले उपर्युक्त स्थानों के ही महत्व रखते हैं। देवी-देवताओं को डोली में सजाकर बाजारों की परिक्रमा करवा कर, चौगानों में लोक गायकों के सुरीले कण्ठों से समवेत भाख (लय) में होली के मनोरम लुभावने गीत मुखर होने लगते हैं। कभी-कभी नृत्य व गायन की मस्ती का आलम भी देखने को मिलता हैं। स्वांगों के डोलों को लोक-दर्शन हेतु चौगान के किनारे रखा जाता हैं। घुग्घर तथा (पालमपुर) की होलियों में देवी-देवताओं की पालकियों (डोलों) को साज-सज्जा तथा शोभा यात्रा देखते ही बनती हैं। अब तो इन में प्रतियोगी भाव आ गया हैं। लोक-नारी पालकियों (डोलों) में सजे देवी-देवता रूपों को धारण किए बालक-बालिकाओं में सच्चे स्वरूप का आरोपण करती दर्शन कर धन्य हुई अन्न, धन, फल आदि भेंट करती हैं। मत्था टेकती हैं।

सारी पलम घाटी गीतों से गूंजने लगती हैं। कहीं दूर से आता बासुंरी का सुरीला स्वर मन को कचोटता चला जाता हैं। समूचा लोक मौज-मस्ती में डूबा घर लौट रहा हैं। एक गीत दूर-पार गलियारों में गूंज रहा हैं --

हवा झुलदी ओ भाईया हवा झुलदी
होलि़या दे मेले जो हवा झुलदी।
ओ फुली सरसों ओ भाईया ! फुली सरसों।
होलि़यां दे मेले जो जाणा परसों।
सिरे सलुआ ओ मुईए ! सिरे सलुआं
होलियां दे मेले च
खाणा हलुआ।

बड़ी हवा झूल रही हैं। होली के मेले क्या लगे, हवा ने तंग कर रखा हैं। खेतों में सरसों फूल रही हैं। परसों मेले जरूर जाना हैं। गोरी के सिर पर सालू सज रहा हैं। हम दोनों मेले में हलुआ खायेंगे। ऐसा हो भी क्यों न। वातावरण ही कुछ ऐसा हैं। आम, कुसुम्बा, बनकाई सब फूल रहे हैं। आम्र-कुंजो में कोयल गा रही हैं। वन में काले मोर झूमते नाच रहे हैं। जब घर पहुंचा तो मां ने बताया-लच्छा महाशा (डूमणा) आया था। साथ उसका लड़का भी था। होलियां सुनाने आए थे। मन में बड़ा पश्चाताप हुआ। एक सुहाना संयोग टल गया। मां ने उदास देखा तो उनकी होली गुनगुनाने लगी --

सुहागण पिया अपणे को मना ले!
अम्बुआ जे फूले, कुसुम्बा जे फूले,
बन में फूले बनकाई
अम्ब की डाली कोयल बोले,
बन में फूले बनकाई
अम्ब की डाली कोयल बोले,
बन में बोले काले मोर।

सुहागण ! पिया अपणे को मना लै
समझा लै, पिया अपणे को मना लै ।
भरी पिचकारी मोरे अंग पै मारी,
अंगियां तो भिजी गई सारी ।
अंगिया के बदले अंगिया सिला दूं
लाख टका गुनाहगारी,
सुहागण पिया अपणे को मना लै ।

नायक ने पिचकारी मारी । सारी चोली भीग गई । रंग-बरंग हो गई । बड़ी खीझ हुई । नायक ने विन्रमता से कहा -- 'इतना भी क्या गुस्सा ? मैं अंगिया के बदले अंगिया सिला दूंगा और जो गुनाह हुआ हैं उसका जुर्माना लाख टका । बस । परन्तु यह क्या ? वह ऐसा कह कर मनाते स्वयं ही रूठ गये । कितना विचित्र, कितना महत्वपूर्ण । ऐसा क्यों ? नायिका सखी-सहेलियों को बुलाती यमुना किनारे जा कर रूठे नायक (कृष्ण) को मनाने का आग्रह यूं करती हैं --

जमना कण्ढे जाईये नी,
रूठड़ा श्याम मनाईये नी,
सखियो ! चला सारियो नी,
भैणो ! चला सारियो नी,
उसदी शान नराली, मूंहडे कमली काली,
श्याम दे दर्शन पायो नी, रूठड़ा श्याम मनाईयेनी ।
उसदी नराली माया, स्हाढ़े ते जादू पाया,
रंग ते रंग बरसायो नी, रूठड़ा मनायो नी ।

श्याम, मेरे कृष्ण, रूठ गए हैं । वे यमुना किनारे गौएं चराने का बहाना ढूंढ बैठे हैं । कैसे मनाऊं ? सहेलियों को ले जा कर वह अपने पक्ष को सबल तथा सार्थक करना चाहती हैं । उन्हें ले जाने का भी उसने कितना सार्थक बहाना ढूंढा हैं । वह कहती हैं --

चलो ! चलो ! यमुना किनारे श्री कृष्ण (नायक) बांसुरी बजाते निराली शोभा को प्राप्त हैं । गौएं चर रही हैं । उनके कन्धे पर काली कंबली सजी हैं । ऐसा मनोहारी दर्शन-लाभ कब और कहां हो सकता हैं । उसने तो हम पर जादुई प्रभाव डाला हैं ।

रंग विश्लेषण

होली के ये चार रंग स्थानीय लोकमानस के चार चित्र उभारते हैं । पहला चित्र कांगड़ा लोकनारी का बहुपक्षीय प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता हैं । स्थानीय लोकनारी के मोटे तौर पर तीन वर्ग मानता हूं-- उच्च वर्गीय, मध्यम वर्गीय तथा अनुसूचित वर्गीय । ये गीत (जो दिए गए हैं) उच्च वर्गीय ब्राह्मण परिवारों में परम्परित हैं । वैदिक परम्पराएं अधिकतर इसी वर्ग में परम्परित हैं । इन गीतों का विषय कृष्ण-लीला हैं । यहां के लोकनायक तथा नायिका स्वयं को कृष्ण- राधा रूप ही मानते हैं । इस भाव को लोक ने स्वीकृति तथा प्रतिष्ठा भी दी हैं । इनकी भाषा ब्रज के बहुत करीब हैं । ब्रज होली गीतों को सुन-सुन कर ही इन गीतों की रचना हुई लगती हैं । वैसे भी लोक किसी भाषा को ग्रहण करने, प्रयोग में लाने के प्रति चेतनशील या संवेदनशील नहीं मिलता । वह अपने सहज स्वभाव से ही अपनाता रहता हैं उसे जो उसको प्रिय लगता हैं । इनकी संगीत माधुरी शास्त्रीय संगीत के करीब होने पर भी लोक प्रभाव रखती हैं जिससे पृथकता स्वतः सिद्ध होती हैं । होली पूजने, दंदोच्छ - जातरा पर जाती स्त्रियां जब समवेत स्वर में इन गीतों को गाती हैं तो सचमुच मन बंधा-सा उस ओर सरकने लगता हैं ।

ये 'रंग' अपनी अलग विशेषता रखता हैं क्योंकि इस परम्परा तथा गीत शैली को अपनाने में अन्य वर्ग उदासीन रहे हैं, अबोध रहे हैं । अतः ये इन्हीं की सम्पत्ति हैं । इनमें स्थानीय वेश-भूषा, आभूषण-प्रियता, विश्वास, परम्परा, त्योहारों की आनुष्ठानिक चेतना, सुहाग-प्रतीकों तथा पति वियोग संवेदना के सहज तथा

मनोहर दृश्य एवं अवसर प्राप्त होते हैं।

'दूसरा रंग' झीर जातीय लोकगायकों का परिचय देता हैं। झीरों में यह प्रथा कब से, कितने चाव तथा रंग रस से परम्परित रही हैं, समूचा लोक उनकी होलियां सुनने को कितना बेताब रहा करता हैं, उन्हें अपनी विरासत पर कितना गर्व होता हैं, ये गीत, इनकी शैली तथा इनके गाने-बजाने के तौर-तरीके बताते हैं। परन्तु काल प्रवाह में इस रंग का रंग बदलता जा रहा हैं। आज के सन्दर्भ में यह परम्परा अर्थहीन तथा पहचान एवं मूल्यांकन की तरस लिये गलियारों में भटक रही हैं। कल के परम्परित सम्मानित गायक जो धर्म सम्बद्ध एवं परंपरा सम्मत थे -- आज मंगते बन गए हैं। समाज के बदलते मूल्य परम्परा का किस कदर गला घोटे रहे हैं -- नगरोटा बगवां निवासी जोग झीर ने वर्ष 1977 में इस प्रसंग में हुई बातचीत के मध्य बड़ी निर्भीकता से बताया था। वह सच भी तो कहता था। अनपढ़ ग्रामीण परम्परित कार्य (घराट चलाना) करता जोगू झीवर होली गीतों, पुराण कथाओं, राम-कृष्ण सम्बन्धी लोककाव्यों का खजाना रहा हैं। मैं उसकी स्मरण शक्ति और शास्त्रीय संगीत की छाया लिए होली गायन को सुनकर चकित था। उससे सुनकर मुझे ऐसा लगा, इन गीतों का विषय तथा शैली पौराणिक तथा कृष्ण सम्बन्धी होने पर भी जातिगत चिन्तन तथा अभिव्यक्ति के व्यापक व्यवहार लिए हैं। इन्हीं आधारों पर इनके गीत अन्य होली गीतों से पृथक मालूम देते हैं और सुनने तथा समझने के अलग आयाम रखते हैं। परन्तु खेद हैं किसी प्रश्रय के बिना उससे इस परंपरा को पूरी तरह संभाला नहीं गया। मैं जब दूसरी बार उसका पता करता वहां गया तो बताया वह तो समा गया हैं। मैं अत्यंत संवेदित हुआ। होली गायन की स्वस्थ परंपरा का अंत हो गया।।

तीसरा रंग छिंज-मेलों तथा देवी-देवताओं की पालकियां सम्बन्धी हैं। यह रंग 'स्थानीय लोक' की कला-अभिरुचि, प्रसाधन- चाव, गीत- संगीत तथा नृत्यादि की झलक प्रस्तुत करता हैं। लोकनारी ईश्वरीय रूपों के प्रति कितनी निष्ठावान हैं। इस प्रश्न को सुलझाते कई अवसर मिलते हैं। इस में कशीदाकारी, कुम्हारों के बर्तनों सम्बन्धी कला-रूपीं, खेल-तमाशों आदि को देखने के भी संयोग बनते हैं। दूर-पार की रिश्तेदारियों को भी किसी केन्द्रित स्थान पर मिल बैठने, सुख-आनंद लेने-देने का अवसर मिलता हैं। इस संयोग पर सुने जाने वाले गीत मध्यम तथा निम्नवर्गीय चिन्तन-धारा का संकेत तथा शैली-बोध देते हैं। इन में मन के भावों को सीधे कहने का रिवाज मिलता हैं। जीवन में खाना-पीना और मौज-मस्ती करना भी इन गीतों का एक विषय हैं। ऐसे गीत झिंझोटी रूप में गाये जाते हैं। ये लम्बें सुर के गीत हैं जिन्हें गायक एक हाथ कान पर रख कर ऊंचे व लम्बे सुरों में गाता हैं।

चौथा रंग यद्यपि महाशों द्वारा बिखेरा जाता हैं तो भी उस का स्वरूप उच्च वर्गीय हैं। मुझे मझरैना निवासी मल्हा तथा लच्छो शहनाई से कुछ होली गीत सुनने का अवसर मिला हैं। उनकी गायन-श्रद्धा अच्छे घुटे गायकों-सी लगी। मुझे ऐसा लगा ये लोग कभी-कभार अच्छे गायकों की संगत करते रहे अथवा सुनते रहे हैं। स्वरों का आरोह-अवरोह पूर्णतया शास्त्रीय। परन्तु इन पर भी आंचलिकता (भाषा तथा संगीत में) का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता हैं। ढोलरूओं में भी होलियां गाते हैं लोक गायक।

पांचवां रंग

कांगड़ा चित्रकला में होली चित्रांकन

पद्म श्री विजय शर्मा के अनुसार -

कांगड़ा कलम की संज्ञा से जगत प्रसिद्ध कांगड़ा में भी होली के दृश्यों में कृष्ण को राधा और गोपियों संग होली खेलते उल्लेखित किया गया हैं। इस कला में होली के दृश्यों की छटा देखते बनती हैं। रंगों की पिचकारियों और चारों ओर उड़ते गुलाल से इन चित्रों में इन्द्रधनुषी परिवेश चित्रित हुआ हैं। कांगड़ा शैली का ऐसा ही चित्र दर्शनीय उदाहरण हैं - जहां कृष्ण राधा और गोपियों सहित रात्रि में होली खेलने में मग्न हैं। गोप बालकों की टोली भी पूरी मस्ती में व्यस्त हैं। चित्रकार ने गहरे नीले आकाश में पूर्णिमा का चांद जानबूझकर बनाया हैं, क्योंकि होली के उत्सव को पूनम की रात होती हैं। रमणीय गोपियों की मुखाकृतियों के अंकन में कांगड़ा कलम अपने यौवन पर पहुंची प्रतीत होती हैं। (संदर्भ पुस्तक - कांगड़ा की चित्रांकन परम्परा : विजय शर्मा, पृष्ठ-110)

कांगड़ा में होली के ये पांच रंग लोकमानस की चार मनोभूतियां प्रस्तुत करते हैं। ये सभी रंग मिलकर होली उत्सव को सजाने-संवारने, सरस तथा मधुर बनाने में पूर्ण योगदान देते हैं। यदि पहला रंग होली की पूर्वपीठिका हैं तो शहनाई वादकों द्वारा गाई जाने वाली होलियां उत्तरपीठिका। मध्य के दोनों रंग उनकों सशक्त तथा संवेदनशील बनाते हैं। परंतु अब धीरे-धीरे औपचारिक होती जा रही हैं ये परंपरायें जिसका मुख्य कारण महिलाओं की दैनिक जीवन में बढ़ती व्यस्तताएं भी हैं जिसके रहते चाहने पर भी समय नहीं दे पा रही। इसी कारण लड़कियों, सजव्याहता बहुओं की ऐसी पूजन व गायन परंपराओं के निर्वाह में सहभागिता कम होने से इस परंपरा का हस्तांतरण संभव नहीं हो रहा। कांगड़ा लोक साहित्य परिषद् ने संगीत नाटक अकादमी दिल्ली के आर्थिक सहयोग से कांगड़ा जनपदीय होली लोक गायन परंपरा का वीडियो दस्तावेजीकरण करके (वर्ष 2019-2020) इस धरोहर को सहेजने का प्रयास किया हैं। यदि ऐसे प्रयास प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी इस परंपरा को सहेजने- संरक्षित करने हेतु किए जाएं तो निश्चित रूप से इस वाचिक संगीत परंपरा का संरक्षण संभव होगा।

राजमंदिर परिसर नेरटी, पो. ओ. नेरटी, जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश-176208, मो. 94181-30860

रवींद्र (नाथ टैगोर के पिता देवेंद्र) नाथ ठाकुर का 125 वर्ष पूर्व का यात्रा वृत्तांत

'1857 का शिमला'

◆ **मूल बांगला से अनुवाद : रतन चंद 'रत्नेश'**

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर के पिता महर्षि देवेंद्रनाथ ठाकुर (1817-1905) एक महान चिंतक, हिंदू दर्शनशास्त्री, अध्यात्मवादी और समाज-सुधारक थे। उन्होंने एक आत्मकथा लिखी थी जिसमें 1857 के दौरान उनके शिमला-भ्रमण का भी जिक्र है। इस पुस्तक के प्रकाशन का स्वात्वाधिकार वे प्रियनाथ शास्त्री को दे गए थे। प्रियनाथ की मृत्यु के बाद उनके दामाद सुरेंद्रनाथ ठाकुर ने यह स्वात्वाधिकार विश्वभारती को दे दिया था। वहां से सतीशचंद्र चक्रवर्ती के संपादन में इसका प्रकाशन मूल बांग्ला में 'श्रीमन्महर्षि देवेंद्रनाथ ठाकुरेर आत्मजीवनी' के नाम से आज से लगभग 125 वर्ष पूर्व हुआ था।
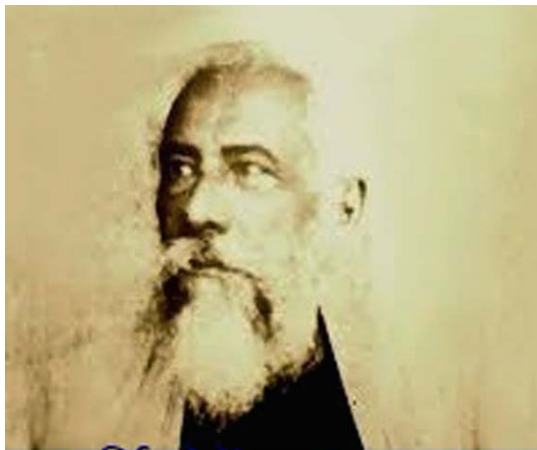
20 अप्रैल 1857 को अमृतसर में लगभग एक माह गुजारने के बाद 23 अप्रैल को वे कालका पहुंचे थे। यहां 27 अप्रैल से उनकी शिमला-यात्रा आरंभ हुई और वे 28 अप्रैल को शिमला पहुंचे। यहां एक साल से भी अधिक समय रहने के बाद 16 अक्तूबर 1858 शनिवार विजयदशमी के दिन कोलकाता वापिस चले गए थे। उक्त पुस्तक के उस भाग का मूल बांग्ला से अनुवाद यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। इस आत्मकथा में तात्कालिक शिमला के कई रोचक प्रसंग उद्धृत हैं।

बैशाख का महीना आ गया। सूर्य की तपन का अहसास होने लगा। मैं दुमंजिले में रहता था। सो घर के प्रथम तल में आ गया। दो दिन बाद वहां भी सूर्य का ताप प्रवेश कर गया। मैंने मकान-मालिक से कहा, 'मैं अब यहां रह नहीं सकता। गर्मी क्रमशः बढ़ती चली जा रही है। अब मैं यहां से चला जाऊंगा।' उन्होंने कहा, 'नीचे तहखाना है। गर्मियों में वहां बहुत आराम रहता है।' मुझे अब तक पता नहीं था कि यहां मिट्टी के नीचे भी एक कमरा है। वे मुझे वहां ले गए। वहां ऊपर की तरह एक कमरा बना हुआ था। बगल से प्रकाश और हवा भी आ रही थी। वह कमरा अत्यंत शीतल था परंतु मेरा वहां रहना नहीं हो पाया। मिट्टी के अंदर बंदी की तरह मैं रह नहीं सकता। मुझे चाहिए मुक्त वायु, प्रमुक्त कमरा। तब मुझे एक सरदारजी ने परामर्श दिया, 'तो फिर शिमला की पहाड़ियों की ओर चले जाइए, वहां अत्यंत शीतल स्थान हैं।' मैंने उसे मनोनुकूल समझा और 1797 शक के 9 बैशाख (20 अप्रैल 1857) को शिमला की ओर प्रस्थान कर गया।

पंजाब छोड़ने के बाद तीन दिनों की राह चलकर 12 बैशाख को कालका नाम की उपत्यका पर आ पहुंचा। देखा कि सामने पर्वत रास्ता रोके खड़ा है। मेरे लिए अत्यंत मधुर मनोहर दृश्य के पन्ने खुलते चले गए। मैं आनंदित होकर सोचने लगा, 'कल मैं इस पर चढ़ूंगा। धरती छोड़कर स्वर्ग की पहली सीढ़ी पर आरोहण करूंगा।' इसी आनंद में वह रात गुजरी। सुख की नींद सोया, राह की सारी थकान उतर गई।

परंतु बैशाख का आधा महीना गुजर गया। मैं 16 बैशाख की प्रातः एक बहंगी लेकर पर्वतीय पथ पर घूमता हुआ अपनी चढ़ाई चढ़ने लगा। जितना ऊंचा चढ़ता गया, उतना ही मेरा मन भी ऊंचा होता चला गया। चढ़ते-चढ़ते देखा कि मैं जितना चढ़ रहा हूं, मुझे उतना ही नीचे उतारा जा रहा है। मैं क्रमशः ऊपर की ओर चढ़ना चाहता था और ये बहंगी-वाहक मुझे नीचे की ओर ले जा रहे थे। अंततः मैं एक खड्ड के किनारे पहुंच गया। सामने एक और ऊंचा पर्वत था। उसी के पांव के पास यह छोटी नदी थी। अभी दिन का दूसरा प्रहर था। उस समय की प्रखर धूप ने नीचे के पहाड़ को तपा कर मुझे अत्यंत पीड़ा पहुंचायी। समतल भूमि का उत्ताप हालांकि सहनीय है, मेरे लिए यह तपन असहनीय थी। यहां एक छोटी-सी किरयाने की दुकान थी जिसमें बेचने के लिए मकई के भूने दाने

रखे हुए थे। मुझे लगा, इस धूप में मकई के दाने अपने आप ही खिल्लों में बदल गए हैं। उस नदी के किनारे हमारा भोजन और खान-पान हुआ। हम नदी पार कर फिर से सामने के पर्वत पर चढ़ने लगे तथा एक शीतल स्थान पर जा पहुंचे। हरिपुर नाम की इस जगह पर रात गुजारी।

दूसरे दिन प्रातः फिर से रवाना हुआ और मध्याह्न में एक पेड़ के नीचे बैठ भोजन कर संध्या समय शिमला के बाजार तक जा पहुंचा। मेरी बहंगी बाजार में ही रही। दुकानदार हमारी ओर अवाक होकर देखते रहे। मैं बहंगी से उठकर दुकान में उनकी वस्तुएं देखने लगा। मेरा साथी किशोरी नाथ चटर्जी रहने की जगह ढूंढने चला गया और उसी बाजार में एक स्थान का चुनाव कर वह शीघ्र ही मुझे वहां ले गया। वहीं हमने एक वर्ष गुजार दिया।

वहां कई बंगाली कार्यरत थे। उनमें से कुछ मुझसे मिलने भी आए। प्यारीमोहन बड़ुआ अक्सर मेरा हालचाल पूछने आ जाते। वे वहां पर अंग्रेजों की एक दुकान में काम करते थे। उन्होंने एक दिन मुझसे कहा कि यहां पर एक अत्यंत सुंदर जलप्रपात है। यदि आप जाना चाहें तो मैं आपके साथ चल सकता हूं। मैं उनके साथ खड्ड में उतरकर वह जलप्रपात देखने गया। खड्ड के नीचे जाते हुए देखा कि कहीं-कहीं लोगों की बस्ती है और उसके पास ही हरे-भरे खेत हैं। कहीं गाय-भैंसे चर रहीं हैं तो कहीं पहाड़ी औरतें धान फटक रही हैं। मुझे यह देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ। यहां भी हमारे प्रदेश की तरह गांव और खेत हैं, यह मुझे पहली बार ज्ञात हुआ। इस तरह देखते-देखते खड्ड के बिलकुल निचले स्थान पर पहुंचकर हम बहंगी से उतरे। आगे अब बहंगी के जाने लायक राह नहीं थी। हम पहाड़ी लाठी पकड़कर धीरे-धीरे उस जलप्रपात के समीप शिला तट पर जा उपस्थित हुए। यहां पर तीन सौ हाथ ऊपर से जलधारा का प्रवाह हो रहा था तथा पत्थरों पर प्रतिघात पाकर फेनिल आकार ले रहा था। उसका स्रोत पूरी वेग से नीचे की ओर प्रवाहमान था। मैं एक पत्थर पर बैठकर यह जलक्रीड़ा देखने लगा। उस जलप्रपात से छिटकते शीतल कण मेरे पसीने से हुए तरबतर शरीर को इस कदर ठंडक पहुंचाने लगे कि मेरी आंखों के सामने अंधेरा-सा छा गया। मैं धीरे-धीरे उस प्रस्तर-शिला पर अचेत होकर लेट गया। कुछ क्षण बाद मेरी चेतना लौटी तो मैंने पलकें झपकायीं। देखा कि मेरे साथी प्यारीमोहन का मुंह बिलकुल शुष्क हुआ पड़ा है। वे विषन्न मन से किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर मेरी ओर देखे जा रहे हैं। मैंने यों ही उनकी व अपनी दशा का स्मरण किया और उनमें साहस जुटाने के उद्देश्य से हंस पड़ा। इस प्रकार जलप्रपात के दर्शन कर मैं अपने ठीये पर लौट आया।

उसके अगले रविवार फिर से हम कुछ लोग उस जलप्रपात के किनारे वनभोज के लिए गए। मैं वहां जाकर जलप्रपात में प्रवेश कर गया। मेरे माथे पर तीन सौ हाथ ऊंचाई से जलधारा गिरने लगी। मैं पांच मिनट तक वहां खड़ा रहा। वह हिम जलकण मेरे हर रोमकूप को छेदकर शरीर के अंदर प्रवेश कर गया। कुछ देर बाद मैं बाहर आया जो मुझे नहीं भाया और मैं फिर से उसके नीचे चला गया। इस तरह जलप्रपात की धारा में मेरा स्नान संपन्न हुआ। हम सब पर्वतीय वन में आनंदमग्न हो वनभोज का लुत्फ उठाकर संध्या को अपने ठिकाने पर लौट आए। मेरी बांयी आंख में तनिक पीड़ा उभरी। दूसरे दिन सुबह देखा कि वह आरक्त होकर फूल गई है। अतः मैंने उपवास कर अपने चक्षुरोग को आराम पहुंचाया।

तीसरे ज्येष्ठ को उस रोग के उपशमन के पश्चात् स्वस्थता की हिल्लोर में मेरा मन मयूर नाच उठा। मैं मुक्तद्वार घर के बीच टहलते-टहलते ही सोच रहा था कि इस शिमला के घर में मैं आजीवन सुख से व्यतीत कर सकता हूं। इसी समय मैंने अपने कमरे के नीचे देखा कि रास्ते पर कई लोग दौड़े चले जा रहे हैं। मैंने उनसे पूछा, 'क्या हुआ? आप लोग भाग क्यों रहे हैं?' बिना इसका उत्तर दिए उनमें से एक ने मुझे इशारे से कहा, 'भागो-भागो।' पूछा, 'क्यों भागूं? परंतु मेरी कौन सुने? सब मानो अपनी जान बचाकर भाग रहे हों। कुछ समझ न पा मैं प्यारी बाबू से इसका सबब जानने के लिए चल पड़ा। जाकर देखा तो वे महाशय दीवार का चूना लेकर मस्तक पर लम्बा तिलक धारण किए हुए हैं। गले से जनेउ निकालकर कान पर डाल रखा है। आंखे लाल और मुख मलिन। मुझे देखते ही बोल पड़े, 'गोरखा ब्राह्मणों का बहुत सम्मान करते हैं।' मैंने जानना चाहा, 'आखिर बात क्या है?' वे बोले, 'गोरखा सेना शिमला को लूटने आ रही है। मैंने निर्णय लिया है कि खड्ड की ओर जाकर छिप जाऊंगा। प्रत्युत्तर में मैंने कहा, 'तो फिर मैं भी आपके साथ ही चलूंगा।' यह सुनकर उनका चेहरा उतर गया। उनकी इच्छा अकेले ही खड्ड के पास जाकर छुपने की थी। दो लोगों के एक साथ जाने पर पहाड़ियों में लालच उत्पन्न होगा और फिर उनका बचना मुश्किल हो जाएगा। उनकी मनोवृत्ति को भांपते हुए मैंने उन्हें तसल्ली दी, 'नहीं, मैं खड्ड की ओर नहीं जाऊंगा।'

मैं अपने कमरे में लौट आया। आकर देखा तो वहां ताला जड़ा हुआ था। कमरे में न जा पाने के कारण मैं वहीं रास्ते पर इधर-उधर टहलने लगा। कुछ ही देर बाद किशोर ने आकर कहा, 'रुपयों की थैली मैंने चूल्हे के पास मिट्टी में दबाकर उस पर लकड़ियां रख दी हैं और गोरखे नौकर को घर के अंदर बंद कर दिया है। गोरखा सैनिक गोरखे को देखकर उसे कुछ नहीं कहेंगे।' मैंने कहा, 'सो तो ठीक है परंतु तुमने अपने प्राण बचाने के लिए क्या जुगत भिड़ायी है।' उसने कहा, 'रास्ते के किनारे जो नाला है, गोरखों के आने पर मैं वहां जाकर छुप जाऊंगा। मुझे कोई देख नहीं पाएगा।' क्या गोरखे सचमुच आ रहे हैं, यह जानने के लिए मैं एक ऊंचे स्थान पर जाकर देखने लगा। वहां से मुझे कुछ नहीं दिखा सिवाय एक सूचना के कि जब गोरखे शिमला पर आक्रमण करने आएंगे तो उन्हें इसकी सूचना तोप दाग कर दी जाएगी। फिर मैंने देखा कि कुछ ही देर बाद एक भयानक तोप की गर्जना हुई। मैं

विवश होकर अपने आप को ईश्वर के हवाले कर वहीं चहलकदमी करने लगा। धीरे-धीरे रात भी उतर आई परंतु कहीं किसी प्रकार का उपद्रव नहीं हुआ। अंततः मैं कमरे के अंदर गया और निश्चिंत होकर सो गया। सुबह नींद टूटने पर देखा, मैं जीवित हूं। गोरखों ने कोई आक्रमण नहीं किया। बाहर जाकर देखा कि गर्वमेंट ट्रेजरी आदि सभी कार्यालयों एवं रास्ते पर बंदूकधारी गोरखों का पहरा है।

प्रथम ज्येष्ठ को शिमला में खबर पहुंची कि सिपाहियों के विद्रोह के चलते दिल्ली व मेरठ में एक जघन्य हत्याकांड हो चुका है। दूसरे ज्येष्ठ को कमांडर-इन-चीफ जनरल एन्सन दाढ़ी बनाकर एक थके हुए घोड़े पर सवार होकर नीचे की ओर चले गए। शिमला के एक अति निकटवर्ती स्थान पर गोरखा सैनिकों का एक दल मौजूद था। जाते समय वे गोरखा सैन्यदल के कप्तान को हुक्म दे गए कि सैनिकों को निरस्त्र कर दिया जाए। गोरखे निर्दोष हैं, उनका सिपाही-विद्रोह से कुछ लेना-देना नहीं है। साहबों को ऐसा लगा कि काले सिपाही सब एक से हैं। बुद्धि-दोष के कारण गोरखाओं को निरस्त्र करने का हुक्म हुआ। कप्तान ने जैसे ही गोरखाओं को अपना हथियार रखने के लिए कहा, उन्होंने अपने आपको अपमानित और लांछित अनुभव किया। उन्होंने सोचा कि पहले उन्हें निरस्त्र किया जाएगा और फिर गोली से उड़ा दिया जाएगा। इस कारण वे अपनी जान बचाने के लिए एकमत हो गए। उन्होंने कप्तान का हुक्म नहीं माना और बंदूक नहीं छोड़ी बल्कि उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों को बांध दिया और तीसरे ज्येष्ठ को शिमला पर आक्रमण के लिए चल पड़े।

इस संवाद पर शिमला के बंगाली अपने और अपने परिवार के प्रति उत्कंठित और भयातुर हो पलायन करने लगे। यहां के मुसलमानों ने सोचा कि उनका राज्य उन्हें फिर से मिल गया है। एक दीर्घकाय बढ़ी सफेद दाढ़ीवाला ईरानी कहीं से आकर मुझे संतुष्ट करने के उद्देश्य से कहने लगा, 'मुसलमानों को हराम खिलाया, हिंदुओं को गाय खिलाया। अब इन फिरंगियों को देख लेंगे।' एक बंगाली सज्जन ने मेरे पास आकर कहा, 'आप अपने घर पर शांति से बैठे थे, कहां इस उपद्रव में चले आए? हमने आज तक ऐसा उपद्रव यहां नहीं देखा था।' मैंने कहा, 'मैं अकेला हूं, मुझे भला किस बात की चिंता? परंतु यहां जो लोग परिवार सहित रह रहे हैं, मुझे उनकी चिंता है। वे विपत्ति में पड़ सकते हैं।'

सभी अंग्रेज साहबान शिमला की सुरक्षा के लिए एकत्र हो बंदूकें थामे एक ऊंची पहाड़ी को घेरकर अपनी-अपनी बीवियों के साथ बैठे रहे। शिमला की रक्षा तो उन्होंने क्या करनी थी, वहां वे मद्यपान में मस्त हो आमोद-प्रमोद व कोलाहल में निमग्न हो गए।

तब के कमिश्नर सुधीर तथा कार्यकुशल लॉर्ड हे ने ही शिमला को बचाया था। जब गोरखा सैनिकों के शिमला में आने की सूचना तोप द्वारा दी गई, तब वे प्राणों का भय त्याग कर महावतविहिन मत्त हाथियों की तरह सैन्यदल के सम्मुख माथे का टोप उतारकर सलामी की मुद्रा में जा उपस्थित हुए और सविनय आश्वासित कर उन्हें शिमला में आकर विश्वसनीय बनकर ट्रेजरी आदि की रक्षा का भार सौंप दिया।

इससे वहां के साहबों ने लॉर्ड हे के प्रति आक्रोश प्रकट किया कि उन्होंने बिना सोचे-विचारे यह निर्णय लिया है जो घातक सिद्ध होगा। उन्होंने हमारा धन, प्राण, मान सब कुछ विद्रोही शत्रुओं के हाथों सौंप दिया है। उनके प्रति नम्रता दिखाकर अंग्रेजों को कलंकित किया। वे यदि यह भार हमें देते तो हम गोरखों को यहां से खदेड़ देते। मुझे एक बंगाली ने आकर कहा, 'महाशय, हालांकि गोरखाओं को सारे अधिकार मिल गए हैं परंतु अब भी उनका क्रोध कम नहीं हुआ है। वे अंग्रेजों को बहुत गरिया रहे हैं।' मैंने कहा, 'उनका कोई रक्षक नहीं, कप्तानहीन सेना है। अभी बकने दें, बाद में स्वयं शांत हो जाएंगे।'

परंतु अंग्रेज बुरी तरह भयभीत हो उठे थे। निराशा में उन्होंने निर्णय लिया कि गोरखाओं ने जब शिमला पर अधिकार कर ही लिया है तो प्राण बचाने के लिए पलायन ही एकमात्र उपाय है। अतः वे शिमला से भागने लगे। दोपहर को देखा कि पालकी नहीं, बहंगी नहीं, घोड़ा और सहायक तक नहीं, कई मेमें खड्ड की ओर भागी चली जा रही हैं। कौन किसकी परवाह करे, किसके बारे में सोचे, सब अपने प्राणों के लिए चिंतित थे। अब सांझ की शिमला जनशून्य होने लगी। जो शिमला लोगों के कोलाहल से भरा रहता था, वह आज निःशब्द, निस्तब्ध था। केवल कौओं की कांव-कांव शिमला के विशाल आसमान को ध्वनित कर रही थीं।

जब शिमला पूर्णतः लोगों से वंचित हो गया तो मुझे भी विवश होकर शिमला छोड़ना पड़ा। यद्यपि गोरखा कोई अत्याचार नहीं करते, तथापि खड्ड के जरिये पहाड़ी पर लूटपाट कर सकते हैं। आज सामान उठाने वाले मजदूर भी नहीं मिल रहे थे। किसी प्रकार की सवारी न मिलने पर यहां से पैदल ही जाना होगा, यह जानते हुए भी मैं तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उसी समय लाल आंखों वाले एक दीर्घ कृष्ण पुरुष ने मुझसे आकर पूछा, 'आपको कुली चाहिए क्या?' मेरे हां कहने पर उसने कहा कि वह प्रबंध कर देगा परंतु इसके एवज में मुझे उसे बख्शीश देनी पड़ेगी। मैं इसके लिए राज़ी हो गया। उसके जाने पर मैंने एक बहंगी का इंतजाम कर लिया।

रात के भोजन के बाद मैं उद्विग्न चित्त सो गया। दूसरा प्रहर होगा कि तभी दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो की आवाज के साथ दरवाजे को कोई धक्का देने लगा। कोलाहल-सा मच गया। मेरा हृदय कांप उठा। मैं बुरी तरह डर गया कि अब गोरखों के हाथों मेरी खैर नहीं। मैंने डरते-डरते दरवाजा खोला तो देखा कि वही दीर्घाकार काले रंग का व्यक्ति बीसेक कुलियों के साथ हाजिर था। मुझे प्राणों के त्रास से मुक्ति मिली। वे ही रक्षक बनकर सारी रात

मेरे कमरे में सोये रहे। मेरे प्रति जो ईश्वरीय करूणा थी, वह यक-ब-यक प्रकाशमान हो उठी।

सुबह होने पर मैं शिमला छोड़ने की तैयारी में जुट गया। कुली कहने लगे कि यदि उन्हें पेशगी नहीं दी जाएगी तो वे नहीं जाएंगे। मैंने पैसों के लिए किशोरी को आवाज दी परंतु वह वहां था ही नहीं। उसके पास ही खर्च के पैसे थे और मेरे पास रुपयों से भरा एक बक्सा था। सोच रहा था, इतने सारे रुपए कुलियों की निगाहों में न आ पाएं। किशोरी वहां था नहीं और कुली बिना पैसों के चलने को कतई राजी नहीं थे। अंत में कोई उपाय न सूझने पर मुझे उनके सामने ही रुपयों का बक्सा खोलना पड़ा और प्रत्येक कुली को तीन-तीन रुपए दिए और उनके उस सरदार की हथेली पर बख्शीश के पांच रुपए रखे। ठीक उसी समय किशोरी भी वहां आ उपस्थित हुआ। उससे पूछा कि इस संकट की घड़ी में तुम कहां चले गए थे? उसने बताया कि एक दर्जी उससे सिलाई के चार आने अधिक मांग रहा था, उसी को चुकाने में देर हो गई।

अब मैं उस बहंगी पर सवार होकर डगशाई नामक एक पर्वत की ओर चल पड़ा। सारा दिन चलने के बाद कुलियों ने मुझे एक जलस्रोत के समीप उतारा और पानी पीने बैठ गए। वे परस्पर बातचीत और हास-परिहास करते रहे और उनकी बातों को न समझ पा मैं यह सोचने लगा कि शायद ये मुझे मारकर मेरा धन लूटने के बारे में बातें कर रहे हैं। वे यदि इस जनशून्य वन में मुझे मारकर खड्ड में फेंक देंगे तो किसी को कुछ पता भी नहीं चल पाएगा। हालांकि यह मेरे मन का एक व्यर्थ का आतंक था। वे जलपान कर पूर्ववत् सबल हुए और मुझे रात के दूसरे प्रहर तक एक बाजार तक पहुंचा दिया।

वहां रात बिताकर सुबह उठे तो देखा कि मेरी जेब से पैसे निकलकर बिस्तर पर इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। उन कुलियों ने वह सारा समेटकर मुझे सौंप दिया। इससे उन पर मेरा विश्वास बढ़ गया। हम फिर से चल पड़े और मध्याह्न को डगशाई जा पहुंचे। वे मुझे एक झोपड़ी के सामने उतारकर चले गए। किशोरी संध्या समय मेरे पास पहुंचा। खड्ड की धार पर एक ग्वाले के घर के ऊपर एक टूटा हुआ कमरा रहने के लिए मिला और सोने के लिए एक रस्सी की बुनी खाट। किसी तरह रात बीती।

दूसरे दिन प्रातः उठकर मैं पर्वत के शिखर पर पहुंच गया। देखा कि वहां शराब की खाली पेटियां रखकर गोरे सैनिक एक चक्राकार किले का निर्माण कर रहे हैं। उसके बीच एक पताका लहरा रहा था। उसके नीचे एक गोरा एक खुली तलवार लिए खड़ा था। मैं धीरे-धीरे उन पेटियों को लांघकर उस किले में प्रवेश कर गया और अत्यंत डरा हुआ उस गोरे के पास चला गया। ऐसा लग रहा था कि वह मुझ पर तलवार का वार कर देगा परंतु उसने अत्यंत मलिन व विषन्न भाव से मुझसे पूछा, 'क्या गोरखे इधर की ओर आ रहे हैं?' मैंने उसे आश्वस्त किया कि वे अभी इधर नहीं आ रहे हैं। मैं वहां से बाहर आ गया और तलाशने पर एक छोटी-सी गुफा मिली। वहीं जाकर बैठा रहा। शाम हुई तो पर्वत से उतर आया और उसी कमरे में जाकर सो गया। उस रात हल्की वर्षा हुई और घर का घरत्व नहीं रहा। टूटी छत से पानी की बूंदें टपकने लगीं। कुछ इसी तरह मेरे उस वनवास के दिन-रात गुजरे।

काबुल की लड़ाई से लौटे घोष और बसु नाम के दो बंगाली सज्जन डगशाई के डाकघर में कार्यरत थे। वे मुझसे मिलने आए। बसु ने कहा, 'मैं काबुल की लड़ाई से बुरी तरह बचकर आ पाया। भागकर आते समय राह में एक सुनसान कमरा देख मैं उसमें प्रवेश कर गया और एक मचान पर छुपकर बैठा रहा। वहां काबुलीवाले मुझे देख लेते तो क्या आज मैं जीवित रह पाता? कई कष्टों को झेलता बचकर आया और अब यहां फिर एक और आफत आन खड़ी हुई है।'

मैं वहां जब तक रहा, प्रतिदिन घोषबाबू मेरी खबर लेते रहे। मैंने एक दिन उनसे पूछा, 'घोषबाबू, आज का समाचार क्या है?' बोले,' आज अच्छी खबर नहीं है। आज जालंधर से विद्रोहियों का हुजूम आ रहा है।' घोषबाबू से मुझे कभी कोई अच्छी खबर नहीं मिलती थी। वे हर दिन मुंह लटकाए मेरे पास आते। मैंने इसी तरह अत्यंत कष्ट में ग्यारह दिन बिता दिए।

फिर समाचार मिला कि शिमला निर्विघ्न हो चुका है। अब कोई डर नहीं। मैं पुनः शिमला जाने का प्रबंध करने लगा। कुलियों की खोजखबर ली परंतु वहां कोई नहीं मिला। उपद्रव होने के डर से वे सब वहां से भाग गए थे। अंततः एक घोड़ा मिला। उसी पर सवार होकर दोपहर बाद चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर रात एक अड्डे पर गुजारी। दूसरे दिन फिर से चल पड़ा। किशोरी मेरे साथ नहीं था। उस आवरणहीन पर्वत पर तब ज्येष्ठ माह की धूप की तपन अत्यंत प्रखर हो चुकी थी। तनिक छांह के लिए मैं लालायित हो उठा परंतु ऐसा एक भी वृक्ष नहीं मिल पाया जो मुझे छाया प्रदान कर सके। प्यास से गला सूखा जा रहा था। साथ कोई था नहीं जो घोड़े को कुछ देर तक पकड़े रहे। उसी हालत में मध्याह्न तक चलने पर मुझे एक बंगला दिखा। घोड़े को एक स्थान पर बांधकर मैं विश्राम के लिए वहां चला गया। मुझे पानी चाहिए था। दैवयोग से उस बंगले में पलायन कर आई एक मेम मौजूद थी। समदुःख से दुखी होकर उसने मेरे लिए मक्खन, गर्म आलू और पानी भेजा। मैंने वह खाकर अपनी भूख-प्यास मिटायी। इस तरह मेरी जान में जान आई। शाम को शिमला पहुंचा। उसी पहले वाले घर के दरवाजे पर खड़े होकर मैंने हांक लगायी, 'किशोरी, तुम यहीं हो क्या?' सौभाग्य से थोड़ी ही देर में किशोरी ने आकर दरवाजा खोला। मैं डगशाई से 18 ज्येष्ठ (30 मई 1857) को शिमला लौट आया।

एक दिन मैंने किशोरी नाथ चटर्जी से कहा, 'मैं इसी हफ्ते उत्तर की ओर की ऊंची-ऊंची पहाड़ियों पर भ्रमण के लिए

निकलूंगा। तुम्हें मेरे साथ चलना है। मेरे लिए एक बहंगी और अपने लिए एक घोड़े का प्रबंध कर लो।' 'जो आज्ञा' कहकर वह वहां से चला गया। 25 ज्येष्ठ (6 जून 1857) को शिमला से इस यात्रा का दिन निश्चित हुआ। उस दिन मैं अलसुबह जाने के लिए प्रस्तुत हुआ और मेरी बहंगी भी आ गई। भारवाहक भी सभी पूरी तरह तैयार थे। मैंने किशोरी से पूछा, 'तुम्हारा घोड़ा कहां है?' 'बस आने ही वाला है।' कहकर वह रास्ते की ओर देखने लगा। घंटा भर समय बीत गया परंतु घोड़ा नहीं आया। मेरे जाने की यह बाधा और विलंब मुझसे सहन नहीं हो पा रही थी। मैं समझ गया कि अधिक ठंड के चलते किशोरी मेरे साथ जाने के लिए तैयार नहीं है। मैंने कहा, 'क्या तुम यह सोच रहे हो कि मेरे साथ नहीं चलोगे तो मैं अकेले नहीं जा पाऊंगा? मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं। तुम यहीं रहो और तुम्हारे पास जो पिटारे और बक्से की चाबियां हैं, उन्हें मेरे हवाले कर दो।' मैं उससे चाबियां लेकर अपनी बहंगी में बैठ गया। भारवाहक मुझे लेकर चल पड़े। किशोरी अवाक वहां खड़ा मुझे देखता रहा।

मैं आनंद, उत्साह से बाजार देखता हुआ शिमला छोड़ आया। दो घंटे चलकर एक पर्वत पर जाकर देखा, उस पार दूसरे पर्वत पर जाने का पुल टूटा पड़ा है और आगे जाने की कोई राह नहीं है। कुलियों ने बहंगी रख दी। तो क्या अब मुझे यहां से लौटना पड़ेगा? उन्होंने कहा, 'इस टूटे पुल के कार्निश से होकर एक-एक कर पुल को पार किया जा सकता है। आप जाएं, हम खाली बहंगी लेकर खड्ड से होकर उस पार जाकर आपको फिर से बिठा लेंगे।' उन दिनों अपने मन के वेगानुसार साहस कर मैंने ऐसा ही करने की ठानी। कार्निश पर सिर्फ एक ही पांव धरने लायक जगह थी। हाथ से पकड़ने के लिए किसी ओर और कोई सहारा नहीं था और नीचे एक भयानक खड्ड थी। ईश्वर की कृपा से मैं उसे निर्विघ्न पार कर गया। प्रभु-कृपा सचमुच ही 'पंगुर्लंघयते गिरिंग' (श्रीमद्भागवत के एक श्लोक का उद्धरण), मेरे भ्रमण का संकल्प व्यर्थ नहीं गया।

वहां से क्रमशः पर्वत शिखर पर चढ़ता चला गया। वह पर्वत एक प्राचीर की भांति सीधा होकर इतना ऊंचा हो गया है कि वहां से नीचे खड्ड के चीड़ के दरख्त भी घास की तरह नजर आने लगे। समीप ही एक गांव था। वहां से कई कुत्ते भौंकते हुए आए। सीधा खड़ा पर्वत, नीचे विषम खड्ड और ऊपर कुत्ते। डरते-डरते इस संकटमय पथ को छोड़ दूसरी ओर चल पड़ा। दोपहर बाद एक निर्जन सराय पाकर उस दिन के लिए वहीं ठहर गया।

मेरे साथ मेरा भोजन पकाने वाला कोई नहीं था। कुलियों ने कहा, 'हमलोगों की रोटी बड़ी मीठी है। आप ले सकते हैं।' मैंने उनसे मकई-जौ मिश्रित वह रोटी ली और खाकर तृप्त हुआ। वह दिन मैंने वहीं बिताया और यह मेरे लिए यथेष्ट था। 'रूखा-सूखा गम का टुकड़ा, लोना और अलोना क्या? सिर दिया तो अब रोना क्या?' कुछ देर बाद पास के गांव से कई पहाड़ी मेरे पास आए और नाना प्रकार से अंग संचालन करते हुए नृत्य करने लगे। इनमें से एक को गौर से देखा तो उसकी नाक नहीं थी और मुंह भी चपटा था। मैंने उससे पूछा, 'यह तुम्हारे चेहरे को क्या हुआ है?' उसने कहा, 'मेरे चेहरे पर एक भालू ने पंजा मारा था।' मेरे सामने का एक रास्ता दिखाते हुए वह बोला, 'इसी रास्ते से वह भालू आया था। उसे भगाने के चक्कर में मैंने अपनी नाक गंवा दी।' उन्होंने कई तरह के नृत्य का प्रदर्शन कर मेरा मनोरंजन किया। मैं उन पहाड़ियों का सरल प्रेम देखकर अत्यंत अभिभूत हुआ।

दूसरे दिन प्रातःकाल के समय उस स्थान का त्याग कर अपराह्न को मैं एक पर्वत शिखर पर जा पहुंचा। वहां गांव के कई लोग आकर मुझे घेर कर बैठ गए। उन्होंने कहा, 'हम यहां बड़े कष्ट में रहते हैं। बर्फबारी के समय घुटने तक बर्फ तोड़कर चलना पड़ता है। खेती के समय सुअर और भालू आकर सारा खेत नष्ट कर डालते हैं। रात को मचान पर रहकर हम अपने खेतों की रक्षा करते हैं।' उसी पर्वत के नीचे उनका गांव था। उन्होंने मुझसे कहा, 'आप हमारे गांव चलें। वहां हमारे घर में सुख से रह पाएंगे। यहां रहने पर आपको कष्ट होगा।' परंतु मैं उस शाम उनके गांव नहीं गया। वहां पगडंडी से होकर चढ़ना-उतरना बड़ा कष्टकर था। जाने के लिए उत्साहित था पर इस दुर्गम पथ के कारण उनके गांव नहीं जा पाया।

उनके यहां स्त्रियों की संख्या बहुत कम है। पांडवों की तरह सभी भाई मिलकर एक स्त्री से विवाह करते हैं। उस स्त्री की संतान सभी भाइयों को पिता कहती है।

मैं उस दिन उस चोटी पर रहकर दूसरे दिन सुबह वहां से चला गया। दोपहर तक चलकर कुलियों ने बहंगी रखी और कहने लगे, 'आगे राह टूटी पड़ी है। अब बहंगी आगे नहीं जा सकती।' अब क्या करूं? चढ़ाई का मार्ग था और कोई पगडंडी भी नहीं थी। टूटी राह, ऊपर की ओर सिर्फ पत्थरों का ढेर। यह पथ-संकट देखने के बावजूद मुझे लौटने की इच्छा नहीं थी। मैं उस टूटी राह पर पत्थर के ऊपर से धीरे-धीरे चढ़ने लगा। एक कुली पीछे से मेरी कमर थामे मुझे सहारा देता रहा। तीन घंटों तक इसी तरह चलते-चलते उस टूटी सड़क को पार कर गया। शिखर चढ़ने पर एक घर दिखा। उस घर में एक खाट थी। मैं वहां जाते ही लेट गया। वाहक गांव में जाकर मेरे लिए एक कटोरी दूध ले आया परंतु इस परिश्रम में मेरी भूख समाप्त हो गई थी। मैं वह दूध पी न सका। उस खाट पर जिस तरह पड़ा था, उसी तरह सारी रात गुजार दी। एक बार भी नहीं उठा।

सुबह शरीर में तनिक बल का संचार हुआ। वाहकों ने फिर से एक कटोरी दूध लाकर मुझे दिया। मैं वह पीकर उस स्थान से रवाना हुआ और ऊपर चढ़कर उस दिन नारकंडा जा पहुंचा। यह अत्यंत ऊंचा शिखर था। यहां मुझे ठंड का अहसास कुछ अधिक हुआ।

दूसरे दिन (11 जून 1857) प्रातःकाल दूध पीकर पैदल ही चल पड़ा। कुछ दूर एक निविड़ वन में पहुंचा क्योंकि वह राह उस वन से ही होकर गुजर रही थी। बीच-बीच में उस वन को भेदकर धूप की किरणें बिखर कर पथ पर गिर रही थीं। उससे वन की शोभा और अधिक बढ़ रही थी। जाते-जाते देखा कि वन के स्थान-स्थान पर कई समय से बड़े-बड़े वृक्ष अपनी जड़ों समेत उखड़कर धाराशायी पड़े हैं। कई नये-पुराने वृक्ष भी दावानल से दग्ध ा होकर असमय ही दुर्दशा को प्राप्त हो गए हैं।

बहुत देर चलने के बाद बहंगी में सवार हुआ और क्रमशः और भी अधिक गहन वन में प्रवेश कर गया। पर्वत पर आरोहण करते हुए उसके बीच दृष्टिपात करने पर केवल हरिद्वर्ण घन पल्लवावृत वृहद वृक्ष दिख रहे थे। उनमें न कोई पुष्प था और न कोई फल। सिर्फ चीड़ नामक वृक्ष पर हरे रंग का एक प्रकार का फल दिखता था। उसे तो पक्षी भी नहीं खाते। परंतु पर्वत की गोद में विविध प्रकार के तृण-ताल आदि पैदा होते हैं, उसकी शोभा ही अपरम्पार है। उनसे न जाने कितने प्रकार के फूल प्रस्फुटित हुए हैं, उनकी गणना सहज नहीं की जा सकती। श्वेतवर्ण, रक्त, पीत, नील, स्वर्ण सभी वर्ण के पुष्प यहां-वहां नैनों को आकर्षित कर रहे हैं। इन सभी पुष्पों का सौंदर्य और लावण्य अपनी निष्कलंक पवित्रता लिए उस परम पवित्र पुरुष के हाथों के चिह्न की मौजूदगी दर्शाता है। हालांकि इनका जैसा रूप है, वैसी सुगंध नहीं परंतु अन्य एक प्रकार का सफेद रंग के गुलाब के फूलों का गुच्छा वन-वनान्तर में प्रस्फुटित हो संपूर्ण परिवेश को महका रहा था। यह सफेद गुलाब चार पंखुड़ियों का एक स्तवक मात्र था। जगह-जगह चमेली भी सुगंध बिखेर रही थी। बीच-बीच में क्षुद्र स्ट्रावेरी फल खंडित रक्तवर्ण उत्पल की तरह दीप्तमान थे। मेरे साथ के एक कुली ने एक वनलता उसकी पुष्पित शाखा सहित मेरे हाथों में थमायी। ऐसी सुन्दर पुष्पलता इससे पहले मैंने कभी नहीं देखी थी। मेरी आंखें खुली की खुली रह गई, मेरा हृदय प्रफुल्लित हो उठा। मैंने देखा कि इस उपवन में छोटे-छोटे सफेद फूलों पर अखिल माता का स्पर्श है। इस वन में किसे इन पुष्पों की सुगंध प्राप्त होगी? कौन है जो उनका सौंदर्य निहारेगा तथापि उन्होंने कितने जतन, स्नेह से उन्हें सुगंध प्रदान कर लावण्य सौंप ओस से नहाकर लताओं में सजा रखा है। उनकी करूणा और स्नेह मेरी अंतरात्मा को रोमांचित कर गई। हे नाथ! जब इन छोटे-छोटे फूलों पर तुम्हारी इतनी करूणा है तो फिर हम लोगों पर न जाने कितनी करूणा होगी? तुम्हारी करूणा मेरे मन-प्राण से कभी नहीं बिसुर पाएगी। यह मेरे हृदय में इस कदर बिंधी है कि यदि मेरा मस्तक भी चला जाय फिर भी प्राणों से तुम्हारी करूणा नहीं जाएगी।

हर्गिज मृ मेहरे तो अज लवहे दिल व जां न रजूद।
आंचूनां मेहरे तो अर्म्ददिल-ओ-जां जाए गिरिफ्त
के गर अम सर वे-रब्द, मेहरे तो अज जां न-रजूद
(दीवाने-हाफिज)

राह में हाफिज की यह नज़्म उच्च स्वर में गुनगुनाता उपरवाले की करूणा रस में निमग्न हो सूर्यास्त से कुछ पहले सायंकाल को सुंग्री नामक पर्वत शिखर पर जा पहुंचा। दिन कब का ढल चुका था, इसका अहसास ही नहीं हुआ। इस ऊंचे शिखर पर एक दूसरे के सामने खड़ी दो पर्वत श्रृंखलाओं की शोभा देखकर रोमांचित हो उठा। इन श्रेणीद्वय के मध्य में किसी पर्वत पर घना वन, रीछ आदि हिंसक पशुओं का वास है तो कहीं वह आपादमस्तक पके खेतों से सुनहला था। उन्हीं में अवस्थित गांवों में दस-बारह के करीब घरों का समूह सूर्य की किरणों से दैदीप्तमान थे। इनमें से कोई पर्वत आपादमस्तक क्षूद्र-क्षूद्र तृणों से आभूषित था तो कोई बिल्कुल तृणरहित होकर अपने निकटस्थ वनाकीर्ण पर्वत की शोभा बढ़ा रहा था। हर पर्वत ही अपनी उच्चता की गरिमा से स्तब्ध हुआ पीछे की ओर टेक लगाए हुए है। किसी को कोई शंका नहीं परंतु उनके आश्रित पथिक राज-भृत्य की भांति सर्वदा सशंकित - एक बार पदस्खलन हो जाए तो फिर बचने की कोई गुंजाइश नहीं। सूर्यास्त हुआ। धीरे-धीरे अंधेरे का साम्राज्य फैलता चला गया। मैं इस समय भी पर्वत पर एकांत बैठा हुआ हूं। दूर से पर्वत पर जगह-जगह केवल दीयों का प्रकाश मानव-बस्ती होने की गवाही दे रहा था।

दूसरे दिन प्रातः उस पर्वत श्रेणी के बीचोबीच जो पर्वत फैला था, उस पर ही पैदल आगे बढ़ने लगा। पर्वतारोहण पर जैसा कष्ट है, अवरोहण उतना ही सहज है। इस पर्वत पर सिर्फ चीड़ जातीय वन थे। इसे वन कहना उचित नहीं होगा, यह किसी उद्यान से भी अधिक आकर्षक है। चीड़ जातीय वृक्ष देवदार की तरह ऋजु और दीर्घ हैं। उनकी सभी शाखाएं उनके अगले भाग तक को घेरे हुए हैं तथा झाउ के पौधे की भांति हैं, हालांकि सूची-प्रमाण दीर्घमात्र, घनपत्र उनके आभूषण हैं। वृहद पक्षी के पंखों की भांति फैली और घने पत्रावृत्त शाखा सभी शीत .ऋतु में बहुत सारा बर्फ का भार वहन कर लेती है। फिर भी इसके पत्ते सभी उस बर्फ द्वारा जीर्ण-शीर्ण न होकर और भी तेजोमय हो जाते हैं। कभी भी अपनी हरियाली नहीं खोते हैं। यह क्या आश्चर्यजनक नहीं? ईश्वर का कौन-सा कार्य आश्चर्य से परिपूर्ण नहीं है? इस पर्वत के नीचे से लेकर शिखर तक ये वृक्ष सभी सैन्यदलों की भांति श्रेणीबद्ध हो विनीतभाव से खड़े हैं। इस दृश्य का महत्त्व और सौंदर्य क्या मनुष्यों द्वारा निर्मित किसी उद्यान में देखा जा सकता है भला? इन चीड़ जातीय वृक्षों पर कोई पुष्प नहीं होता। यह वनस्पति है और इसका फल भी अत्यंत निकृष्ट है फिर भी यह हमारे लिए अत्यंत लाभदायक है। इनसे हमें पूजा-सामग्री और तारपीन प्राप्त होता है।

बहुत दूर तक चलने के बाद मैं बहंगी पर सवार हुआ। राह में स्नान के लिए एक उपयुक्त स्थान मिलने पर उस तुषार परिणत हिमजल से स्नान कर नई स्फूर्ति के साथ ब्रह्म की उपासना कर

पवित्र हुआ। रास्ते में भेड़-बकरियों का एक समूह जा रहा था। मेरा वाहक एक दूधारी बकरी पकड़कर मेरे पास लाकर बोला कि यह दूध देने वाली है। मैंने उससे लगभग पाव भर दूध प्राप्त किया। उपासना के बाद मुझे राह में दूध मिलने पर आश्चर्य हुआ तथा करूणामय ईश्वर के प्रति नतमस्तक हो उसका पान किया। 'सभनां जीआ का तुम दाता, सो मैं बिसर न जाईं (जपुजी साहिब)। फिर पैदल आगे बढ़ गया। वन के अंतिम सिरे पर एक गांव तक जा पहुंचा। एक बार फिर से वहां पर पके जौ आदि के खेत देखकर मन प्रसन्न हुआ। बीच-बीच में अफीम के भी खेत थे। एक खेत में स्त्रियां प्रसन्नचित्त मुद्रा में फसल काट रही थीं और अन्य एक में किसान भावी फल की प्रत्याशा में हल चला रहे थे।

धूप के कारण पुनः बहंगी पर सवार होकर दोपहर को बोआली नामक पर्वत पर जा पहुंचा। सुंग्री से यह बहुत नीचे था। इस पर्वत के तल पर शतद्रु नदी बह रही है। बोआली पर्वत शिखर से शतद्रु नदी मात्र दो हाथ की दूरी पर प्रतीत हो रही थी तथा वह चांदी के पात्र की भांति सूर्य के किरण में चमचमा रहा था। इस शतद्रु नदी के तट पर रामपुर नाम का जो नगर है, वह यहां अत्यंत प्रसिद्ध है। इस कारण इन सभी पर्वतों का अधिकार जिस राजा के अधीन है, रामपुर उसकी राजधानी है। रामपुर जिस पर्वत पर अवस्थित है, वह इसके समीप ही दिखता है हालांकि यहां से जाने के लिए नीचे की ओर की कई सड़कों से होकर जाना पड़ता है। इस राजा की उम्र पच्चीस वर्ष की होगी और उन्हें अंग्रेजी भाषा का भी अल्पाधिक ज्ञानी है। शतद्रु नदी इस रामपुर से होकर भज्जी के राणा की राजधानी सोहिनी होकर नीचे की ओर बिलासपुर में जाकर पर्वत त्याग कर पंजाब में बहती है।

गतकाल सुंग्री होकर क्रमशः अवरोहण कर बोआली तक पहुंचा था। अभी (13 जून 1857) प्रातःकाल को यहां से उतरकर अपराह्न को नगरी नदी के तट पर पहुंचा। यह महावेगवती स्रोतस्वति स्वीय गर्भस्थ वृहद हाथियों के समान प्रस्तर खंड पर आघात पाकर शेषान्विता व फेनिल होकर गहन गर्जन करती सर्वनियंता के शासन से समुद्र समागम के लिए बही जा रही है। इसके दोनों तट से होकर दो पर्वत विशाल प्राचीर की भांति बहुत ऊंचाई तक एक समान उठकर बाद में पीछे की ओर टिके हुए हैं। धूप की किरणें अधिक समय तक यहां नहीं टिकतीं। इस नदी पर एक सुंदर पुल झूल रहा था। मैं उससे होकर नदी के पार गया और एक स्वच्छ-सुंदर बंगले में जाकर विश्राम किया। इस उपत्यका की भूमि अति रमणीय व विरल है। इसके दस कोस तक कोई जनमानस नहीं। यहां तक कि एक गांव भी नहीं। अपनी पत्नी व दो पुत्रों के साथ सिर्फ एक व्यक्ति यहां बने एक कमरे में रहता है और उसे कमरा कहना भी उचित नहीं होगा बल्कि एक पर्वत की गुफा-सी है। उसी में भोजन पकाते और रहते हैं। मैंने देखा वह औरत अपने शिशु को पीठ पर बांधे आह्लादित हो नृत्य कर रही है। उसका दूसरा पुत्र पहाड़ी पर चढ़ा हंसता हुआ दौड़ रहा है और उसके पिता एक छोटी-सी क्यारी में आलू की बुआई कर रहे हैं। यहां पर ईश्वर ने उनके लिए सुख का कोई अभाव नहीं रहने दिया है। राजा के आसन पर बैठकर राजाओं जैसी ऐसी सुख-शांति दुर्लभ है।

मैं सायंकाल को इस नदी के सौंदर्य से मोहित होकर अकेले ही उसके तट पर विचरण कर रहा था कि अचानक ऊपर देखा तो 'पर्वतो वह्निमान' - पर्वत पर दीपमाला शोभायमान है। सायंकाल का अवसान होकर रात्रि जितनी बढ़ती गई, वह अग्नि भी क्रमशः बढ़ती चली गई। ऊपर से अग्निवाण की तरह नक्षत्र वेग से सैकड़ों-हजारों स्फूलिंग गिरकर नदी तट तक निम्नस्थ सभी वृक्षों पर आक्रमण शुरू हुआ। धीरे-धीरे एक-एक समुदाय के वृक्षों ने अपनी प्राकृतिक रूप का परित्याग कर अग्निरूप धारण कर लिया तथा घनघोर अंधकार से परिपूर्ण उस स्थान से दूर चला गया। अग्नि के इस अपरूप छटा को देखते-देखते उस अग्नि देवता की महिमा का अनुभव करने लगा। मैं पहले यहां के अनेक वनों में दावानल के चिह्न से दग्ध वृक्षों को देख चुका हूं और रात में दूरस्थ पर्वत के प्रज्वलित अग्नि की शोभा भी देखी है परंतु यहां दावानल की उत्पत्ति, व्याप्ति, उन्नति, निवृत्ति को प्रत्यक्ष देख अत्यंत आह्लादित हुआ। सारी रात यह दावानल जलता रहा। रात को जब मेरी निद्रा भंग हुई, तब तक वह प्रकाश मुझे दिखाई देता रहा। प्रातःकाल उठकर देखा कि कई दग्ध देवदारों से होकर धूप निर्गत हो रही है तथा उत्सव-रजनी की प्रभातकाल की बची हुई दीपालोकों की तरह, बीच-बीच में सर्वभूक लोलुप अग्नि म्लान व अवसन्न होकर जलती दिख रही है।

मैंने उस नदी में जाकर स्नान किया। घड़े से माथे पर पानी उड़ेलता रहा। वह जल इस कदर हिमानी था कि लगा जैसे मस्तिष्क जम गया हो। स्नान और उपासना के बाद थोड़ा-सा दूध पीकर यहां से प्रस्थान किया।

शिमला लौटने पर किशोरी ने मुझे बताया कि वह अगले दिन पर्वत से उतरकर ज्वालामुखी की ओर चला गया था। ज्वालामुखी की अग्नि और ज्येष्ठ माह की धूप की ताप से उसका शरीर दग्ध हो उठा। इसी कारण अपना काला मुंह लिए फिर से यहां लौट आया है। जैसा कर्म किया था, तदानुसार उसका फल मिला। वह अपने आपको बड़ा दोषी और अपराधी समझ रहा था। कहने लगा, मुझे आशा नहीं थी कि अब आप मुझे अपने पास रखेंगे। मैंने हंसकर कहा, तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं। मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है। तुम जैसे पहले मेरे पास थे, वैसे ही रहो। उसने कहा, मैंने नीचे जाते समय यहां एक नौकर घर पर रखा था। आकर देखा तो वह भाग गया है। दरवाजे सारे बंद थे। मैंने दरवाजा खोलकर अंदर देखा कि मेरे कपड़े तथा बक्से-पिटारे सभी मौजूद हैं। वह कुछ भी अपने साथ नहीं लेकर गया है। मैं तीन दिन पहले ही यहां आया

हूं। उसकी बातें सुनकर मैं चौंक उठा। यदि मैं तीन दिन पहले ही यहां आ जाता तो मुझे एक धर्मसंकट में पड़ना पड़ता।

इन बीस दिनों तक पर्वत भ्रमण के दौरान ईश्वर ने मेरे शरीर को कई विपदाओं से बचाए रखा। मेरे मन को धैर्य और सहिष्णुता, विवेक व वैराग्य की कई ऊंची शिक्षाएं प्रदान कीं। उनके सहवास-सुख ने मेरी आत्मा को कितना पवित्र और उन्नत किया, इसके लिए अत्यंत कृतज्ञ था। मैं उन्हें भक्तिपूर्ण प्रणाम कर कमरे में जाकर उनका प्रेमगान करने लगा।

अब हिमालय में वर्षा ऋतु का श्रीगणेश हुआ। ईश्वरीय जलयंत्र दिवारात्रि चलायमान हुआ। चिरकाल से मेघों को आसमान में मंडराते देखा है। अब देख रहा हूं कि अधस्तन पर्वतों के पादमूल से होकर श्वेत वाष्पमय मेघ उठने लगे हैं। यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। धीरे-धीरे उन्होंने पर्वत शिखरों तक को आच्छादित कर डाला। मैं बिल्कुल मेघों के मध्य प्रविष्ट हो ऋषि-कल्पित इंद्र के राजत्व को प्रत्यक्ष देख पाया। कुछ ही देर में वर्षा हुई और आसमान मेघरहित हो गया। फिर से पर्वतों से रूई के फाहों की भांति बादलों ने आकर सारा कुछ ढक लिया। उसके बाद वर्षा और फिर सूर्य का प्रकाश जगमगा उठा। इसी प्रकार ईश्वर का जलयंत्र दिन-रात कार्य करता रहा। श्रावण माह की घोर वर्षा में शायद एक पखवाड़ा गुजर गया। सूर्य से मुलाकात नहीं हो पायी । तब बादलों का ऐसा आवरण चढ़ा हुआ था, मानो दस हाथ की दूरी पर कोई सृष्टि न हो। मैं हूं और मेरे साथ केवल ईश्वर। तब सहज ही मेरा मन संसार से विरक्त हुआ, मेरी आत्मा समाहित हो परमात्मा में लीन हुई। भाद्र माह में हिमालय के जटाजूट में जल कल्लोल का विषम कोलाहल, उसके प्रस्रवण सभी परिपुष्ट, सभी निर्झर प्रमुक्त और सभी पथ दुर्गम।

यहां आश्विन के महीने में शरदकाल उस कदर विकसित नहीं था। कार्तिक के महीने से ही शीतल वायु अनावृत देह को शीतलता का अहसास कराने लगी थी। अगहन माह का आधा बीतते ही एक सुबह नींद टूटने पर बाहर आकर उत्फुल्ल नेत्रों से देखा कि पर्वत तल से लेकर शिखर तक बर्फ की चादर पसर गई है। गिरिराज शुभ्र रजत वस्त्र धारण कर चुके हैं। बर्फ में शीतल वायु को सांसों में समेटने का यह मेरा पहला अवसर था।

ज्यों-ज्यों दिन गुजरते गए, ठंड तदानुरूप बढ़ती चली गई। एक दिन देखा कि कृष्णवर्ण मेघ से होकर धूनी हुई रूई सदृश बर्फ गिर रही है। जमी हुई बर्फ देखकर पहले यह समझता था कि यहां भी बर्फ पत्थर की तरह भारी और बज्र समान होगी परंतु आज देख रहा हूं कि वह रूई की मानिंद पतली और हल्की है। वस्त्र झाड़ते ही रूई गिर पड़ती है और जैसी सूखी रहती है, उसी तरह रह जाती है।

पौष माह (दिसंबर 1857- जनवरी 1858) की एक सुबह उठकर देखा कि दो-तीन हाथ बर्फ गिरी है और सभी सड़कें अवरूद्ध हो गई हैं। मजदूरों ने आकर उसे हटाकर पथमुक्त किया। तब कहीं जाकर लोगों की आवाजाही शुरू हो पायी। मैं कौतूहलवश उसी बर्फीले पथ पर चल पड़ा। इस तरह मेरी सुबह की सैर बंद नहीं हो पायी। स्फूर्ति और आनंद से भरा मैं इतनी दूर तक इतनी तेज गति से निकल गया कि उस शीतकाल में भी बर्फ के बीचोबीच मुझे गर्मी का अहसास होने लगा और भीतरी अंगवस्त्र पसीने से तरबतर हो गए। उन दिनों मेरे शरीर में शक्ति और स्वास्थ्य के होने का यह पुष्ट प्रमाण था।

माघ माह के अंत में मैं बैठा ब्रह्मचिंतन में निमग्न था कि उन्हीं दिनों एक संभ्रांत व्यक्ति मेरे पास आए। उनके दोनों हाथों में सोने के कड़े थे। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं भज्जी के राणा के मंत्री का वजीर हूं। राणा साहब ने मुझे आपको आमंत्रित करने के लिए भेजा है। उनकी इच्छा है कि वे आपसे मुलाकात करें। भज्जी यहां से अधिक दूर नहीं है और आपको वहां जाने में किसी प्रकार का कष्ट न हो, इसकी मैं समुचित व्यवस्था करूंगा। मैंने निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वहां जाने का दिन निश्चित हुआ।

उस निर्दिष्ट दिन को वजीर आकर मुझे अपने साथ ले गए। वे एक घोड़े पर थे और मैं बहंगी पर। शिमला से नीचे की उपत्यका पर हम उतरते चले गए परंतु यह उतराव थम नहीं रहा था। जितना नीचे की ओर जा रहे थे, उतना ही नीचे चलते गए। उसके बाद जब नदी के तट पर आए तब समझ में आया कि अब और उतराई नहीं है। इस शतद्रु नदी के तट पर राणा की राजधानी सोहनी नगरी शोभायमान थी। संध्या के अंधेरे तक हम वहां पहुंच गए।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैं राजभवन में प्रवेश हुआ। वहां के लोग सर्वप्रथम मुझे राजगुरु के आश्रम में ले गए। द्वार पर पहुंचते ही राजगुरु सुखानंद नाथ ने आकर मेरा आलिंगन किया और दूसरी मंजिल पर मुझे ले जाकर अपने पास बिठाया। ये मेरे दिल्ली के पूर्व परिचित सुखानंद नाथ जी थे। ये अपने गुरु हरिहरानंद तीर्थस्वामी के साथ राममोहन राय के बगीचे में रहते थे। ये तांत्रिक ब्रह्मज्ञानी हैं। इनका मत है कि महानिर्वाण तंत्र अद्वैत मत है। मैं शिमला में हूं, यह जानकारी मिलने पर इन्होंने ही राणा से कहकर मुझे बुलावा भेजा था। उनकी यह इच्छा थी कि वे मेरे साथ खान-पान का एक महोत्सव करेंगे। परस्पर सद्भाव व सुहृदभाव का बंधन बंधेगा। वे नहीं जानते थे कि मैं मद्यपान नहीं करता और मेरे मतानुसार मद्यपान धर्मविरुद्ध है। 'मद्यमदेयम्पेयम् ग्राह्यम्'- मद्य किसी को न दें, मद्यपान न करें। एक बार भी इसका स्पर्श न करें। उनके साथ मद्यपान में सहयोग न देने पर उन सबका आमोद-प्रमोद खंडित हुआ। वे अत्यंत दुखी और विषन्न हुए तथा मेरे आहार का अलग प्रबंध करने के लिए यह भार किशोरी को सौंपा।

मद्यनिषेध पर मैंने कठोपनिषद का जो श्लोक उन्हें सुनाया था, उस पर उन्होंने अत्यंत असंतोष प्रदर्शित किया। उन्होंने मुझसे

कहा, यह वृत्तियां शंकराचार्य के भाष्यसम्मत नहीं हैं। अतएव ये हमारे लिए स्वीकार्य नहीं हैं। उन्होंने ब्रह्मधर्म का हिंदी में अनुवाद किया है, यह मुझे दिखाया तथा उसे मुद्रित करने के लिए मुझसे अनुरोध किया। उस दिन उनसे विदा लेते समय वे मेरे साथ-साथ नीचे आए तथा नीचले तल के एक कमरे को देखने के लिए मुझसे आग्रह किया। मैंने उस कमरे में जाकर देखा कि सामने की दीवार पर एक सुंदर पट झूल रहा है। उसके मध्य भाग पर 'ऊँ तत्सत्' बड़े से देवनागरी स्वर्णाक्षरों में लिखित है। सुखानंद नाथ अत्यंत भक्तिपूर्ण भाव से उस कमरे में आए। उन्होंने फिर कहा, जैसे कलकत्ते में कालीघाट है, उसी तरह हमने यहां नदी तट पर एक कालीघाट बनवाया है। मैंने उनसे स्पष्ट कहा कि मैं वह देखने नहीं जा सकता।

उनसे विदा लेकर मैं राणा से मिलने चला गया। एक बड़े से दालान में चौकी सजा रखी थी। सभासदों सहित मेरी अभ्यर्थना कर उन्होंने मुझे एक चौकी पर बिठाया तथा वहां उपस्थित सभी लोग अलग-अलग चौकियों पर विराजमान हो गए। कुछ ही क्षण में कुमार-सदृश राजकुमार ने आकर सभा की गरिमा बढ़ायी। राणा साहब ने मुझसे कहा कि कुमार संस्कृत पढ़ते हैं। आप इनकी कुछ परीक्षा लीजिए। यह सुनकर कुमार बोले, मैंने सारा व्याकरण पढ़ लिया है। इस पर मैंने कहा, अच्छा कहो तो, गंगा उदकंगा- इसकी संधि क्या होगी? उन्होंने शीघ्रता से कहा- गंगोदकंगा। राणा के पास से अपने रहवास में आकर मैंने स्नानाहार किया।

उसके अगले दिन प्रातः शतद्रु नदी के तट पर भ्रमण के लिए मैं अकेला ही गया। कृष्णनगर की जलंगी नदी की तरह यहां शतद्रु की प्रशस्तता है। उसका जल समुद्र के जल की तरह नीला, उज्ज्वल तथा स्वच्छ है। यहां की शतद्रु नदी की उपमा बाल्मिकी कवि की तमसा नदी-सी है, 'सज्जनानां यथा मनः।' मैं चर्म-मशक पर सवार होकर इस नदी के पार भी गया था। उसके जलमध्य में वृहदाकार पत्थरों के होने के कारण काठ की नाव चल नहीं सकती। मशक के अलावा पार जाने का और कोई साधन नहीं। पार होने पर उसके तट के जल मुंगेर के सीताकुंड के जल की भांति उत्तप्त दिखे। विशेष आश्चर्य यह है कि वर्षाकाल में जैसे नदी क्रमशः वृद्धि पाकर अपना आयतन प्रशस्त करती रहती है और उस उत्तप्त जल का स्थान अधिग्रहण करती रहती है, वह उत्तप्त जल ही उसके बगल से होकर अग्रसर होता रहता है। तट का जल जहां रहता है, वहीं पर वह उत्तप्त होता है। देखा कि वहां पर कई पीड़ित व्यक्ति स्नान के लिए आए हुए हैं। कहते हैं कि यहां पर स्नान करने से कई प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

मुख्यतः राजा फिर राणा और इसके बाद ठाकुर व अंत में जमींदार इन पर्वतीय भूमियों के अधिकारी होते हैं। यहां के जमींदार ही स्वयं कृषक हैं। हिंदुस्तान के जमींदारों की यही दशा है। पर्वतों पर राजा और राणाओं की क्षमता अधिक है। ये ही प्रजाओं पर शासन करते हैं। राजा व राणाओं के विवाह के समय सखियों सहित कन्यादान होता है। रानी का गर्भस्थ पुत्र राजा या राणा होता है। सखी के गर्भ का पुत्र राजपरिवार में रहकर ताउम्र अन्न का अधिकारी होता है। सखी के गर्भ से उत्पन्न हुई कन्या राजकन्या की सखी के रूप में जानी जाती है तथा उस राजकन्या का पति के हाथों उसका जीवन और यौवन समर्पित होता है। कैसा अनर्थ है? राजा और राणा की रानियां भी कई होती हैं। अतः सखियां भी ढेर सारी होती हैं। एक पति की मृत्यु होने पर ये सभी बंदी की तरह कारागार में बंद रहकर ताउम्र रोदन करती रहती हैं। इससे परित्राण का और उपाय नहीं।

मैं सप्ताह भर वहां रहा। फिर राणा और राजगुरु से विदा लेकर शिमला की ओर चढ़ाई करने लगा। राह में आते-आते एक वन में प्रवेश हुआ। देखा कि मृगयाशील एक राजकुमार रत्न-कुंडल, हीरे की कंठी, मोतियों की माला और दिव्य वज्र धारण किए वन-वनांतर विचरण कर रहे हैं। सूर्य की आभा में उनका वह नवीन मुखमंडल दीप्त होकर अतीव शोभा धारण किए हुए है। मुझे वे वनदेवता के समान लगे। अभी उसे देख ही रहा था कि वे गहन वन में विलीन हो गए। उसके बाद मैं अत्यंत कष्ट में एक टूटे हुए संकीर्ण पथ पर चढ़ता हुआ बिना किसी रुकावट के शिमला में जा उपस्थित हुआ।

शिमला के ऊपरी पथ पर देखता हूं कि उस फाल्गुन माह में उसी कदर बर्फ पड़ी हुई है। वृक्षलता सभी शुष्क और नीरस हैं। बांस के असार कंचित की तरह हवा में झनझना रहे हैं। चैत्र का महीना भी अंततः समाप्त हुआ। फूलों से सारी धरती मनोरम उद्यान में परिणत हो गई। नये वर्ष को पुनः देखा। पिछले वर्ष बैशाख के महीने में पहली बार जिस घर में रहने आया था, वहां एक वर्ष गुजर गया।

अब मैं बाजार वाले कमरे को छोड़कर पर्वत पर एक सुरम्य निर्जन स्थान पर एक बंगले में आ गया। यह जगह मुझे बहुत पसंद आई। उस शिखर पर सिर्फ एक ही वृक्ष था, वही मेरे एकांत का मित्र बना। इस बैशाख के महीने में मध्याह्न के आहार के बाद मैं सभी खाली पड़े घरों के बगीचों में मदमस्त घूमता रहता। बैशाख (अप्रैल 1858) की दोपहर की धूप में पशम का चोगा पहने घूम रहा हूं, इसका रहस्य मेरे स्वदेशी बंगाल के लोग क्या समझ पाएंगे?

कभी-कभी मैं किसी निर्जन पर्वत के बगल में स्थित चट्टान पर बैठकर ध्यानमग्न होकर एक प्रहर बिता देता। एक दिन घूमते-घूमते देखा कि एक वनाकीर्ण पर्वत के बीच से होकर एक राह गुजर रही है। मैं यों ही मन के वशीभूत उस राह पर चल पड़ा। उस समय दिन के चार बज रहे थे। मैंने अन्यमनस्क हो उस राह पर जो चलना आरंभ किया कि उसका अंत होने का नाम ही नहीं ले रहा था। पदक्षेप पर पदक्षेप हो रहा है, मुझे इसका भान तक न हुआ। मैं कहां जा रहा हूं, कितनी दूर आ चुका हूं, कितनी दूर

जाऊंगा, उसकी कोई परिकल्पना नहीं थी। कुछ देर बाद एक पथिक दिखा। वह मुझसे विपरित दिशा में चला गया। इससे मेरा ध्यान भंग हुआ और मुझमें संज्ञा लौटी। मैंने देखा कि तब तक संध्या हो चुकी थी, सूर्यास्त हो चुका था। मुझे तो फिर उतना ही लौटना था। मैं द्रुतगति से लौट चला। रात ने भी उसी द्रुतवेग से आकर मुझे अपने आगोश में ले लिया। गिरि, वन, कानन सब अंधेरे में डूबते चले गए। उस अंधकार में दीप की तरह आधा चांद मेरे साथ-साथ चलता रहा। कहीं से कोई शब्द सुनाई नहीं दे रहा था, सिर्फ पदचाप से पथ के सूखे पत्ते खड़खड़ा रहे थे। भय के साथ-साथ मेरे मन में एक गंभीर भाव ने जन्म लिया। रोमांचित देह के साथ उस वन में ईश्वर की आंखें दिखाई दीं - मुझ पर उनकी अनिमेष दृष्टि है। वे आंखें हीं उस संकट की घड़ी में मेरा पथप्रदर्शक बनीं। कई तरह के भय से आक्रांत रात आठ बजे के लगभग मैं अपने ठिकाने पर लौट आया। उनकी (परमात्मा) यह दृष्टि चिरकाल के लिए मेरे मन में बिंध गई। जब भी कभी किसी संकट में पड़ता हूं, तभी वह दृष्टि मुझे नजर आती है।

फिर से सावन-भादों के बादल मंडराने लगे और गहन धारा ने पर्वत का समाकुल कर लिया। उस अक्षय पुरुष के शासन में पक्ष, माह, ऋतु, संवत्सर घूम रहे हैं। उसके शासन का अतिक्रमण कोई भी नहीं कर सकता। ऐसे समय में मैं कंदराओं में नदी की बहती धारा के नवीनतम विचित्र शोभा देखता विचरण करता रहा। इस वर्षा ऋतु में यहां नदी की वेग में बड़ी-बड़ी चट्टानों के टुकड़े प्रवाहित होते चले जाते हैं। कोई भी इस प्रमत्त गति को रोक नहीं सकता। जो उसे रोकना चाहता है, नदी उसे तेज गति से दूर फेंक देती है।

एक दिन आश्विन के महीने में खड्ड में उतरकर एक नदी के पुल पर खड़ा मैं उसके स्रोत के अप्रतिहत गति व उल्लासमयी भंगिमा को देखते-देखते आश्चर्यचकित होकर रह गया। अहा! यहां यह नदी कितनी निर्मल व शुभ्र है। इसका जल क्या ही स्वाभाविक पवित्र और शीतल है। तो फिर क्यों यह अपनी पवित्रता त्यागने के लिए नीचे की ओर दौड़ी चली जा रही है? यह जितना नीचे जाएगी, उतना ही मलिन व कलुषित होती चली जाएगी। फिर क्यों वह उस ओर प्रबल वेग से बढ़ी जा रही है? उस सर्वनियंता के शासन में पृथ्वी की कीचड़ में मलिन होकर भी सारी पृथ्वी की उर्वरा और शस्यश्यामला करने के लिए उद्धत भाव का परित्याग कर इसे अधोगामी बनना ही पड़ेगा। कुछ ऐसा ही सोच रहा था कि उसी समय अचानक मैंने अपने अंतर्यामी पुरुष की गंभीर वाणी सुनी - तुम यह उद्धत भाव त्याग कर इस नदी की तरह निम्नगामी बनो। तुमने यहां जिस सत्य को जाना, जिस निष्ठा का पाठ सीखा। जाओ, अब पृथ्वी पर जाकर उसका प्रचार करो।

मैं चौंक उठा। तो क्या अब मुझे इस पुण्यभूमि हिमालय से लौट जाना होगा? मुझमें तो यह भावना कदापि नहीं थी। कितनी कठोरता स्वीकार कर संसार से विरक्त हुआ हूं। फिर से उसी संसार में जाकर क्या संसारियों के साथ रहना पड़ेगा? मेरे मन की गति शिथिल होती चली गई। संसार याद आया। ऐसा लगा, मुझे फिर से लौटकर अपने घर जाना होगा। संसार के कोलाहल से कान पक जाएंगे, इस सोच से मेरा हृदय बैठने लगा। म्लानभाव से अपने ठीये पर लौट आया। उस रात मेरे मुख से कोई भी गीत उच्चारित नहीं हुआ। व्याकुल हृदयसहित सो गया। नींद भी कहां अच्छी आई?

अभी सुबह हुई भी नहीं कि नींद में विघ्न पड़ा। देखा कि हृदय कांप रहा है, धड़कन बढ़ी हुई है। मेरे शरीर की ऐसी दशा पहले कभी नहीं हुई थी। डर गया कि कहीं किसी गंभीर रोग से आक्रांत तो नहीं हो गया? टहलने चला जाऊं तो शायद ठीक हो जाय, यह सोचकर बाहर निकल पड़ा। बहुत दूर निकल गया और जब सूर्योदय हुआ तो अपने ठिकाने पर लौट आया। इससे भी मेरे हृदय की धड़कन कम न हो पायी। तब किशोरी को आवाज दी और कहा, 'मेरा अब और शिमला में रहना संभव नहीं हो पाएगा। बहंगी का प्रबंध करो। यह कहने पर देखा कि हृदय धीरे-धीरे सामान्य होने लगा है। तो क्या यही मेरी दवा थी? मैं उस दिन घर जाने के लिए अपना सामान समेटता रहा और दूसरी तैयारियां भी करता रहा। इसी से मुझे आराम मिला। देखा कि मेरे हृदय की धड़कन अब पूरी तरह सामान्य हो गई है यानी कि ईश्वर का आदेश है कि घर लौट जाऊं। उस आदेश का उल्लंघन क्या मनुष्य के लिए संभव है?

रतन चंद 'रत्नेश', कोठी नं. 213-ओ, विक्टोरिया एन्क्लेव, भबात रोड, जीरकपुर-140603 (पंजाब), मोबाइल- 9417573357

अहा! यहां यह नदी कितनी निर्मल व शुभ्र है। इसका जल क्या ही स्वाभाविक पवित्र और शीतल है। तो फिर क्यों यह अपनी पवित्रता त्यागने के लिए नीचे की ओर दौड़ी चली जा रही है? यह जितना नीचे जाएगी, उतना ही मलिन व कलुषित होती चली जाएगी। फिर क्यों वह उस ओर प्रबल वेग से बढ़ी जा रही है? उस सर्वनियंता के शासन में पृथ्वी की कीचड़ में मलिन होकर भी सारी पृथ्वी की उर्वरा और शस्यश्यामला करने के लिए उद्धत भाव का परित्याग कर इसे अधोगामी बनना ही पड़ेगा। कुछ ऐसा ही सोच रहा था कि उसी समय अचानक मैंने अपने अंतर्यामी पुरुष की गंभीर वाणी सुनी - तुम यह उद्धत भाव त्याग कर इस नदी की तरह निम्नगामी बनो। तुमने यहां जिस सत्य को जाना, जिस निष्ठा का पाठ सीखा। जाओ, अब पृथ्वी पर जाकर उसका प्रचार करो।

आलेख

प्राचीन नारी विषयक हमारी मान्यताएं

◆ ओम प्रकाश शर्मा

हमारे समाज में सुप्रतिष्ठित व्यक्ति किसी सामूहिक कार्य या उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक साथ मिलकर राग द्वेष रहित विचार करते रहे हैं। जब उनके वे सुविचारित कार्य/ उद्देश्य समाज में स्वीकृत सुप्रतिष्ठित हो जाते हैं और वे पीढ़ी दर हस्तांतरित होने लगते है तब वे मान्यता या प्रथा का रूप ले लेते है जिन्हें आम भाषा रीति- रिवाज, देशाचार यह जनरीति भी कहा जाता है। इनको स्वेच्छा से नहीं बनाया जाता अपितु इसका आधार समाज है सामाजिक समूह में ही समय और परिस्थिति के साथ साथ इनका उद्‌भव होता है। परिस्थितियाँ बदलने पर इन पर पुनः सुविचार होना चाहिए व नव परिवर्तन के साथ परिवर्तन होने चाहिए। अन्यथा यह रुढ़िवादिता का रूप ले लेती है और समाज में भीतर ही भीतर इनके विरुद्ध सुगबुगाहट होने लगती है। ऐसी ही कुछ मान्यताए नारी विषयक भी है। जिन्हें आज नारी वर्ग नकारने लगा है। वे उन मान्यताओं की उत्पत्ति के समय की परिस्थितियों पर विचार किए बिना उनके प्रचलन के पीछे पुरुष की नारी के प्रति दुर्भावनाओं को मानने लगी है। वे उसके लिए पुरुष समुदाय को दोषी करार देते हुए उसे शोषक का दर्जा दे देती है। जबकि इसके लिए सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन उत्तरदायी है। पुरातन काल से हमारा देश कृषि प्रधान देश रहा है। लोगों की धर्म के प्रति आस्था थी और लोग अपने वचनों का पालन करते थे। राजा दशरथ ने केकई के दिए वचनों का पालन किया। राम ने माँ केकई को दिए गए वचनों के अनुसार चौदह साल वनवास भोगा। देवदत ने अपने पिता की गलत आकांक्षा की पूर्ती के लिए दिए गए वचन का पालन किया और आजीवन विवाह नहीं किया और फिर भीष्म कहलाए। वास्तव में वह काल ही ऐसा था। जब सभी सामाजिक कार्य आस्था और विश्वास पर चलते थे, हमारी सामाजिक व्यवस्था धर्म से संचालित होती थी। उस समय नारी का दर्जा पुरुष के सामान था और जो भी नियम बनाए जाते थे उसमें नारी के अधिकारों और सुखों का विशेष ध्यान रखा जाता था। हमारा समाज पुरुष प्रधान रहा है इसलिए नारी के साथ अन्याय न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाता था। तभी कहा भी जाता है 'यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' और सही भी है।

उस काल में महिलाओं के सम्मान में कमी नहीं आने दी जाती थी। कन्या से लेकर वृद्धा तक के हितों का हमारे मनीषियों ने ध्यान रखा। पुरुष पर परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने का बोझ होता था। इसलिए माताएँ बेटे के लालन पालन की ओर विशेष ध्यान दे सकती थी इसलिए समाज में कन्या के साथ अन्याय न हो समाज शास्त्रियों ने उसे को देवी का स्थान दिया और उसकी समय समय पर पूजा करना, उसे भोजन के साथ साथ वस्त्र और धन का दान करने का भी प्रावधान किया गया था। बेटी विवाह के बाद अपनी ससुराल चली जाती है इस लिए उसकी जरूरत का सामान उसे दहेज के रूप में देने का विधान भी था। कारण पुत्री भी उसी परिवार का हिस्सा थी और विवाह के बाद पुत्र उनकी जायदाद का भोग करते थे इसलिए पुत्री को देने के लिए यह व्यवस्था की गयी थी।

बेटी ससुराल में जाकर खुश रहे इसलिए विवाह के समय अग्नि के साथ फेरों को लेकर वर से सात वचन लेने का विधान रखा गया था। उस समय लोग वचनों को पूरा भी करते थे आज भी ये फेरे उसी प्रकार लिए जाते है। आज भी हिंन्दू विवाह में विवाह के समय होने वाली वधू के संग वर सात फेरे लेता है जिसके द्वारा कन्या अग्नि को साक्षी मान उसकी वामांगिनी बनने से पूर्व सात वचन मांगती उस अवसर पर इन फेरों का महत्त्व भी पुरोहित द्वारा बताया जाता है। वर्तमान में इन वचनों का न पालन किया जाता है न ही पत्नी अपने वचनों का पालन करने के लिए पति को बाध्य करती है। यदि आज भी वैवाहिक जीवन में उन वचनों का पालन किया जाए तो पति पत्नी के मध्य विवाद हो ही नहीं सकता।

पहला वचन

तीर्थ तोतोद्यापन यज्ञकर्म मय सहैव प्रियवयं कुर्याः।
वामांगमयामी तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं प्रथम।

इसमें कन्या वर से वचन लेती है कि यदि आप कभी तीर्थ यात्रा पर जाओ तो मुझे भी अपने साथ लें जाने व व्रत उपवास या धार्मिक अनुष्ठान करते समय आज की तरह अपनी बायीं ओर स्थान देने का यदि वचन देते हो तो मैं आपके वामांग में आने का वचन देती हूँ।

पूज्यो यथा स्व पितरो ममापि, तथेसभक्तो निजकमरू कुर्या ।

वामांगमयामी तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं द्वितीयम !

जिस प्रकार आप अपने माता-पिता का सम्मान करते हो यदि उसी प्रकार आप मेरे माता पिता का सम्मान करने तथा कुटुंब की मर्यादानुसार धर्मानुष्ठान करते हुए ईश्वर भक्त बने रहने का वचन देते हो तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ।

जीवनं अवस्थात्रये पाल्नाम कुर्याः।
वामांगमयामी तदा त्वदीयं ब्रविती वाक्यम प्रथमम कुमारी।

तीसरा वचन माँगते हुए वह कहती है- आप मुझे वचन दें कि आप जीवन की तीनों अवस्थाओं युवा, वृद्धा और प्रौढ़ा में मेरा पालन करते रहेंगे तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ।

कुटुंबसम्पालन सर्वकार्य कार्टू प्रतिज्ञाम यदि कतं कुर्याः।
वामांगमयामी तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं चतुर्थः।

कन्या चौथा वचन माँगते हुए कहती है कि अब तक आप घर परिवार की चिंता से मुक्त थे, अब जब आप विवाह के बंधन में बंधने जा रहे है तो भविष्य में परिवार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति का दायित्व आपके कंधे पर होगा यदि आप इस भार को वहन करने का वचन दें तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ।

स्वसद्यकार्ये व्यवहार कर्मण्ये व्यये ममापि मंत्रत्रेया।
वामांगमयामी तदा त्वदीयं ब्रूते वचरू पंच मन्त्र कन्या।

पाँचवें वचन के रूप में कन्या कहती है कि अपने घर के कार्यों में लेनदेन अथवा कोई अन्य खर्च करते समय आप मुझसे राय लेगे यदि आप ऐसा वचन दें मैं आपके वामांग में बैठना स्वीकार करती हूँ।

न मेपमानमं सविधे सखिना धुतं न व दुर्व्यसनम भंजश्वेत।
वामांगमयामी तदा त्वदीयं ब्रवीति कन्या वचनं षष्ठा।

छठा वचन के रूप में कन्या कहती है कि यदि मैं अपनी सखियों या अन्य लोगों के बीच बैठी होऊँ वहाँ आप मेरा अपमान नहीं करोगे तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ।

पर्स्त्रीय मातु सामान समीक्ष्य स्नेहम सदा चेन्यामि कांत कुर्या ः
वामांगमयामी तदा त्वदीयं ब्रूते वचः सप्त्मंत्रम कन्या।

सातवें और अंतिम वचन माँगते हुए कन्या कहती है की आप पराई स्त्री को माता के सामान समझेंगे और पति-पत्नी के आपसी प्रेम के मध्य किसी को भी अपना भागीदार नहीं बनाएँगे तो मैं आपके वामांग में आना स्वीकार करती हूँ।

वर द्वारा ये सातों प्रतिज्ञाएं स्वीकार की जाती है। इसके साथ ही कन्या भी सात वचन वर को देती है जो लिए गए वचनों के पूरक ही होते है।

इन शर्तों के साथ सात फेरों की प्रथा आज भी विद्यमान है जिसमें उपर्युक्त वचनों के साथ आज भी जीवन भर साथ रहने की प्रतिज्ञा ली जाती है लेकिन इन तो नारी ही लिए गए वचनों के प्रति सजग है और न ही इन वचनों का पालन करने वाले पुरुष ही आज विद्यमान हैं। इसका मूल कारण परिस्थितियों में समय समय पर होने वाले परिवर्तन ही है। परिस्थितियां चाहे वे सामाजिक-आर्थिक या राजनैतिक कोई भी क्यों न हों तब और आज में आमूलचूल परिवर्तन है। उस समय नैतिक आचरण उच्च कोटि का था। बड़ों की बातों को मान दिया जाता था। लोग धर्मभीरू थे। और तत्कालीन मान्यताओं का पूरा पालन करते थे। यदि कोई सामाजिक नियमों की अवहेलना करता था तो उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था। आधुनिक शिक्षा के प्रसार के साथ लोग अध्यात्म के स्थान पर धन और विज्ञान पर अधिक विश्वास करने लगे हैं। आज वचनों विश्वासों आदि का महत्त्व गौण हो गया है। अब अध्यात्म के स्थान पर धन का वर्चस्व बढ़ गया, उसके बाद ये सामाजिक विकृतियाँ आनी शुरू हो गई। मानव चरित्र का हनन हुआ है। आज फेरों के साथ इन शर्तों का दोहराया जाना और वर वधु द्वारा इस का पालन न किए जाने के कारण यह सब हास्यास्पद सा लगने लगा है

वास्तव में वह काल ही ऐसा था। जब सभी सामाजिक कार्य आस्था और विश्वास पर चलते थे, हमारी सामाजिक व्यवस्था धर्म से संचालित होती थी। उस समय नारी का दर्जा पुरुष के सामान था और जो भी नियम बनाए जाते थे उसमें नारी के अधिकारों और सुखों का विशेष ध्यान रखा जाता था। हमारा समाज पुरुष प्रधान रहा है इसलिए नारी के साथ अन्याय न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाता था। तभी कहा भी जाता है, 'यत्र नार्यस्तु पुजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' और सही भी है। उस काल में महिलाओं के सम्मान में कमी नहीं आने दी जाती थी। कन्या से लेकर वृद्धा तक के हितों का हमारे मनीषियों ने ध्यान रखा। पुरुष पर परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने का बोझ होता था।

नारी को प्रतिदिन जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ता है, इससे भी हमारे ऋषि मुनि अनभिज्ञ नहीं थे। उन्होंने नारी की समस्याओं के समाधान के प्रयास किए। उन्हें अपने नाम की लालसा नहीं होती थी, वे तो अपने आपको समाज का सुधार करने में विश्वास रखते थे। वे जिस भी कार्य तत्कालीन या भावी समाज के लिए उपयोगी समझते थे उसे धर्म से जोड़ दिया करते थे। पुरुष और नारी के शारीरिक विन्यास और उसमें होने वाली प्रक्रियाओं में अंतर है। बाहर के कार्य करने और परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तरदायित्व पुरुष ने स्वयं अपने लिए चुना था यौवनावस्था आने के साथ नारी को मासिक धर्म से

गुजरना पड़ता है जो एक सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया है। गर्भवती होने या रजोनिवृत्ति से पूर्व इसका अनियमित आना या रुकना कई समस्याएँ उत्पन्न करता है। उस काल में नारी को शारीरिक कमजोरी का आभास होता है इस कारण हमारे मनीषियों ने उसे इस काल में थोड़ा आराम देने के लिए कुछ नियम बनाए और उसे धर्म के साथ भी जोड़ दिया जिससे लोग उन नियमों का उल्लंघन न कर सके। उस काल में संयुक्त परिवार में रसोई में चौके का काम सब से कठिन था। स्त्रियों को प्रातः सबसे पहले उठकर चौका लगा भोजन बनाना और रात्रि को सब को भोजन खिला कर सबसे बाद में सोना। इसलिए नियम बनाया गया कि रजस्वला होने के बाद स्त्री तीन चार दिन तक चौके से बाहर रहेगी अर्थात उससे किसी प्रकार का रसोई का कार्य नहीं करवाया जाएगा। यह उसका शुद्धि का समय है उस समय वह देवी स्वरूपा है इसलिए देवी पूजा नहीं करती इसलिए वह भी पूजा नहीं करेगी। लेकिन इस समय में उसके हिस्से के कार्य को अन्य लोग करके उसको सम्मान देंगे। इसलिए इन दिनों खेतीबाडी के कामों से आराम दिया जाता था। उस समय की महिलाओं और आज की ग्रामीण महिलाएँ इन पाबंदियों को सहज स्वीकार करती रही हैं। हमारे गाँवों में आज भी महिलाएँ इसे सहज स्वीकार करती हैं। ऐसे समय में यदि कोई अतिथि आ जाए और घर पर कोई न हो तो वह बड़ी सहजता से कह देती है कि मैं तो बर्तन नहीं छू सकती नहीं तो चाय पानी देती। यदि कोई कहता भी है कि आपको इस तरह अलग सा रहना बुरा नहीं लगता तो वे बड़े आराम से कह देती हैं कि इसमें शर्म या बुरा लगने की क्या बात है। इससे कम से कम तीन चार दिन आराम तो मिल जाता है। ये महिलाएँ नियमपूर्वक इसका पालन करती हैं और कहीं गलती से इसमें त्रुटि हो जाए तो उसके निवारण के लिए ऋषि पंचमी का व्रत भी रखती है ताकि वह उस पाप से मुक्त हो सके। जब उनकी मासिक धर्म की यह प्रक्रिया पूर्णतः बंद हो जाती है तो वे उसका उद्यापन करवाती हैं।

प्राचीन समय में औपचारिक रूप से नारी शिक्षा न के बराबर थी। अनौपचारिक रूप से घर पर ही नारी शिक्षा ग्रहण करती थी। उसकी शिक्षिका तो उसकी माँ व घर की बजुर्ग स्त्रियां होती थी जो उसे आगामी जीवन जीने के लिए तैयार करतीं थीं। उसे नारी की शिक्षा नारी ही देती थी। इसलिए प्रारम्भ से ही हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहती थी। किस समय किस को किस प्रकार की कठिनाई आए तो उसका समाधान वे ही निकालती थी।

उस समय की परिस्थितियाँ भी वैसी ही थी। पानी दूर से उठाकर लाना पड़ता था आज की तरह घर घर में नल की सुविधा न थी। वस्त्र धोने के लिए साबुन सर्फ आदि कहाँ होता था। हमने सिर के बाल धोने के लिए उस समय कपड़े को धोने का साबुन इस्तेमाल करते देखा है। यदि अधिक वस्त्र धोने हों तो उन्हें पानी के नजदीक ले जाया जाता था वही आग जला कर पानी गर्म कर उसमें राख उबाल उसके पानी से कपड़े धोए जाते थे। गर्म कपड़े के लिए रीठों को उबाल कर उससे धोया जाता था और सुखा कर ही घर लाया जाता था। दिन में बार बार स्नान करना मुश्किल था। वस्त्रों का अभाव था हाथ से कात कर जुलाहे वस्त्र बुनते थे। पुरुष भी कोपीन पहन कर अधोवस्त्र से अपना तन ढांपने को विवश थे जैसा कि आपने महात्मा गांधी को उनके कई चित्रों में देखा होगा। वस्त्रों की कमी थी। पुराने कपड़ों को पैबंद लगा कर पहना जाता था और उनके फट जाने पर उनसे खिन्दोले तैयार किए जाते थे। ऐसे अवस्था में महिला को अपने आप को स्वच्छ रखना भी कठिन था। इसलिए शायद स्वच्छता की दृष्टि से यह व्यवस्था की गयी थी।

गोशाला को बहुत पवित्र माना जाता था, गोमूत्र के कारण वैसे स्थान पर संक्रमण का डर नहीं रहता था और वो गर्म भी होते थे इसलिए महिला स्वयं वहां रहना पसंद करती थी। यहाँ तक प्रसव के लिए गोशाला के कक्ष जिसे खाली कर गोबर, चीकनी मिट्टी से लिपाई कर साफ किया जाता था सबसे श्रेष्ठ स्थान माना जाता था, और ग्यारहवें दिन शुद्धि के बाद उसे गृह में प्रवेश करवाया जाता था। उस समय प्रसव घर पर ही होते थे चिकित्सीय व्यवस्था कम थी फिर गाँव की बड़ी बूढ़ी जानकार स्त्रियां जिन्हें दाई कहा जाता था सामान्य प्रसव करवाती थीं। इसमें नारी को प्रताड़ित करने या अछूत मानने जैसी कोई बात नहीं अपितु उनकी सुरक्षा को दृष्टिगत रख कर ऐसा किया जाता था। नारी को ये सब बातें स्वयं स्वीकार्य थी। अविवाहित महिला को इससे अलग रखा गया था क्योंकि माताएँ व घर की बुजुर्ग महिला अपनी बेटियों का ध्यान स्वयं रखती थी और उन्हें ऐसे कार्यों से दूर रखती थीं यह उनकी आगामी जीवन के लिए प्रशिक्षण काल ही समझना चाहिए। उस समय चिकित्सा व्यवस्था भी कम थी। घरेलू दवाइयों में अजवायन, मेथी, हल्दी आदि आम थी जिन्हें संक्रमण से बचाव के लिए घी में भून कर दिया जाता था। यह व्यवस्था हमारे ग्रामीण समाज में निरंतर जारी रही और कई स्थानों पर अब भी जारी है।

समय करवट लेता है उसके साथ परिस्थितियाँ बदल जाती है और उसके साथ ही हमारी प्रथाओं मान्यताओं आदि में परिवर्तन आना चाहिए पर ऐसा हुआ नहीं। विदेशी आक्रान्ताओं के आने से यहाँ का सामाजिक ढांचा बिखर गया। नारी की सुरक्षा के लिए बाल विवाह जैसी प्रथाएं शुरू हुई। महिलाओं ने अपनी सुरक्षा के लिए अपने आपको अग्नि के हवाले करना शुरू कर दिया। कालान्तर में इन प्रथाओं ने घृणित रूप धारण कर कुप्रथाओं का रूप ले लिया जो मानव समाज के लिए कलंक बन गयी।

उस समय हमारी ग्रामीण संस्कृति थी। गाँवों की अधितर आवश्यकताएं गाँव में ही पूरी हो जाती थी। सभी वर्गों के लोग अपने अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए एक दूसरे का सहयोग करते थे। परिवार के साथ-साथ पशु-पक्षियों तक का ध्यान रखते

थे। पहली रोटी गाय को और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए पकाई जाती थी। भोजन में कौवे और मछली तक का भाग रखा जाता था। लेकिन धीरे धीरे परिस्थितियां बदलती चली गईं। और साथ ही साथ लोगों के विचारों में भी परिवर्तन आना शुरू हो गया। अनेक आक्रांताओ ने देश पर आक्रमण किए। राजधानियों और बड़े शहरों पर उनका अधिक प्रभाव पड़ा। लेकिन हमारे अधिकाँश गाँव उससे अप्रभावित रहे। यही कारण है कि हमारा ग्रामीण समाज उसे अपना धर्म मान कर उन परम्पराओं का निर्वहन कर रहा है। औद्योगिक क्रान्ति के बाद शहरीकरण को बढ़ावा मिला। कारखानों में नौकरी से अच्छी आय होने के लालच में अंग्रेजों ने अपनी आवश्यकता के लिए पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार किया। हमारी शिक्षा की भाषा को बदल दिया और हम सारे पाश्चात्य रंग में रंगने लगे। आजादी के बाद महिला शिक्षा पर अधिक बल दिया जिसके परिणाम स्वरूप महिला हर क्षेत्र में आगे है। आज हमारी संस्कृति दो भागों में बंट कर रह गयी है एक ग्रामीण संस्कृति और दूसरी शहरी संस्कृति। गाँवों में थोड़े से परिवर्तनों के साथ प्राचीन परम्पराओं को सही माना जा रहा है वहीं शहरों में इसके विरोधी तेवर नजर आ रहे है। इसे प्रत्यक्ष में देखा जा सकता है। जहाँ हमारी दादी का घूँघट नाक से नीचे रहता था, माँ की चुनरी सर पर रहती थी वही पत्नी का दुपट्टा गले में झूलने लगा है और अब बेटी के गले से दुपट्टा गायब है। अब वह समय और परिस्थिति के अनुसार जीन और टॉप पहनने लगी है।

वास्तव में किसी प्रथा का आरम्भ तत्कालीन परिस्थितियों के कारण होता है। यदि वे परिस्थितियों को ध्यान से देखें तो उन्हें पता चलेगा कि जिसकी वे आलोचना कर रहीं हैं वे उन्ही के हित में बनाई गईं थी। जिस प्रकार समय के साथ साथ बर्तन घिस जाता है और उसकी चमक मंद पड़ जाती है उसी प्रकार ये प्रथाएं और मान्यताएं भी अपना महत्त्व खो रही है इनमें सुधार की आवश्यकता है जिससे इनमें निहित उद्देश्य तो बरकरार रहे परन्तु उनके व्यवहारिक पक्ष में वांछित परिवर्तन लाए जा सकें।

खुराना कॉटेज, परीमहल, कसुम्पटी,
शिमला-171009

कविता व गीत

ललिता कश्यप

रंग

ओढ़े पितांबर धरा
खिल उठी यौवनाई
लाल पलाश गुलाब
झूमती अंबराई।

हरे वर्ण पर्ण झूमे
तरुवर बेला छाई
रंग बिरंगे खग
लालिमा अंबर छाई।

सुनहरी दामिनी ले
मेघा नभ पर छाई
बरस भूमि पर
धानी चुनरिया ओढ़ाई

लाल, हरा, नीला ,पीला।
बिखरा रंग घनेरा
सांझ हुई श्याम
गुलाबी हुआ सवेरा।

गीत

नूर हो तुम, नूरानी हूं मैं
तुम बाग हो, मैं हूं बहार
मिलजुल खेले हम पवन से
चांद के उस पार।

मेरी प्रीत को झूठ न समझो
रीत का है यह परचम
मेरे तन के हर एक रोम में
बस गए हो हमदम
प्रीत के पथ पर दौड़ते आओ
हो करके बेकरार, हो हो
हो करके बेकरार।
मिलजुल खेले हम पवन से
चांद के उस पार।

राग सुहाना पवन सुनाएं
खिल उठी अंबराई
प्रेम में मन की पायल छनकी
पायल छनकी छनन छनन
मन की वीणा बज आई
रे बीणा बज आई
राह तकते नैना हारे
हो करके बेकरार, हो ओओ
हो करके बेकरार।
मिलजुल खेले हम पवन से
चांद के उस पार।
नूर हो तुम, नूरानी हूं मैं
तुम बाग हो मैं हूं बहार ।

पत्नी डॉ. डी. आर. कश्यप
गांव सायर डाकघर डोभा
जिला बिलासपुर,
हिमाचल प्रदेश-174 001

महिला सशक्तीकरण

स्नेह व शौर्य की परिचायक नारी

◆ श्रुति नेगी

अपने अद्‌भुत साहस, अथक परिश्रम तथा बुद्धिमत्ता से विश्व पटल पर स्वयं सफलता के उच्चतम शिखर को छूने की अपार क्षमता लिए आज महिलाएं समाज के लिए प्रेरणास्रोत बन गई है। विपरीत परिस्थितियों और विरोध का सामना करते हुए उन्होंने न केवल अपनी गरिमा की रक्षा की बल्कि अपने परिवार, समाज और राष्ट्र को भी एक नई पहचान दी। सृजन की शक्ति नारी कभी अपनों के लिए तो कभी बाहर निकल कर बेसहारों का सहारा बनी। नारी के इस सामर्थ्य को सम्मानित करने के लिए पूरे विश्व में आठ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है।

आधुनिक भारत की महिलाओं ने भी स्वावलंबन एवं सशक्तीकरण की ओर अपने कदम तेजी से बढ़ाने शुरू किए जिससे उनकी स्थिति तो बदली ही और सामाजिक दृष्टिकोण में भी सुधार आया। आज देश में बहुत सी ऐसी महिलाएं हैं जो हमारे लिए रोल मॉडल हैं। जिन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित कर दुनिया को चकित कर दिया। इंदिरा प्रियदर्शिनी ने देश को कुशल नेतृत्व प्रदान करके, प्रथम आई.पी.एस. अधिकारी किरण बेदी, ने कठोर प्रशासकीय दायित्व का कुशल निर्वहन करके मदर टेरेसा ने अनाथों को गले लगाकर तो कल्पना चावल और सुनीता विलियम्स ने आकाश की ऊंचाइयों को छूकर नारी सामर्थ्य का अभिनव परिचय प्रस्तुत किया। ये सभी आज हमारे लिए आदर्श स्वरूप हैं।

खेल जगत में मेरीकॉम, गीता फोगाट, पीवी सिधु, सानिया मिर्ज़ा, सायाना नेहवाल, साक्षी मलिक, मिताली राज जैसी महिलाएं हमारे देश की गौरवपूर्ण पहचान हैं तो वहीं प्रियंका चोपड़ा, ऐश्वर्य राय, सुष्मिता सेन, लारा दत्ता, मानुषी छिल्लर जैसी महिलाओं ने सौंदर्य प्रतियोगिता जीतकर अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का नाम रोशन किया।

जब महिलाएं ध्वजावाहक बनकर कुछ विशिष्ट कर दिखाती हैं तो अवश्य ही यह गौरव व हर्ष का विषय बनता है। बागपत के जौहड़ी गांव की चंद्रो तोमर और प्रकाशी तोमर ने भी उम्र की उस दहलीज पर उपलब्धियां हासिल कीं जो दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। 'शूटर दादी' या रिवाल्वर दादी' के नाम से मशहूर चंद्रो तोमर ने न केवल खुद खूटिंग में जोरदार हाथ आजमाया बल्कि अपनी 80 पार देवरानी प्रकाशी को भी इस क्षेत्र में लाईं।

इतिहास में पहली बार हिमाचल की चंबा के सुरगणी की अनिता कुमारी और ऊना के लठियाणी गांव की अंजु बाला दो पुलिस महिला कर्मी 'उस्ताद' यानी पुलिस सिस्टम में प्रशिक्षण देने वाले को उस्ताद कहा जाता है, बनकर पुरुष व महिला कांस्टेबलों को प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं। देश-दुनिया में यह तमगा आज तक सिर्फ पुरुष पुलिस कर्मियों को ही हासिल था। हिमाचल की बेटियों ने भी ऐसे कई क्षेत्रों में पदार्पण किया है जहां पहुंचना अपने आपने गौरव की बात है। सोलन की अंतरराष्ट्रीय धावक कल्पना परमार लंबी दूरी की दौड़ में हिमाचल का नाम रोशन किया है। इन्होंने 2016 में ऑस्ट्रेलिया के पर्थ में हुई वर्ल्ड मास्टर एथलेटिक्स में शामिल होकर एशिया का प्रतिनिधित्व किया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली यह प्रदेश की एकमात्र महिला थी। बात चाहे खेती की हो या फिर नौकरी पेशा की, यहां की महिलाओं ने हर क्षेत्र में नाम हासिल किया जिसके लिए उनकी सेवाओं को हमेशा याद किया जाएगा। प्रशासनिक सेवाओं में कंचन चौधरी भट्टाचार्य जो शिमला की रहने वाली थीं, हिमाचल कॉडर की पहली आई.पी.एस. अधिकारी थीं। शिमला की प्रिया झिंगन को पहली महिला आर्मी ऑफिसर बनने का गौरव प्राप्त है।

आधुनिक भारत की महिलाओं ने भी स्वावलंबन एवं सशक्तीकरण की ओर अपने कदम तेजी से बढ़ाने शुरू किए और उनकी स्थिति बदली और सामाजिक दृष्टिकोण में भी सुधार आया। आज देश में बहुत सी ऐसी महिलाएं हैं जो हमारे लिए रोल मॉडल हैं। जिन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित कर दुनिया को चकित कर दिया।

हिमाचल कॉडर की पहली महिला आई.ए.एस. अधिकारी की बात करें तो वह वर्ष 1965 कॉडर की अधिकारी सीपी सुजाया थीं और हिमाचल प्रशासनिक सेवा (एच.ए.एस.) कॉडर में विमला भगत पहली अधिकारी थीं, जो प्रदेश में कई अहम पदों पर विराजमान रही थीं। सरला शर्मा को पहली विधायक के रूप में जाना जाता है। इनका संबंध कांग्रेस

काव्य वर्षा की कविताएं

बाहर देखना चाहती हूं

उस रेंगती नदिया के कदम
देखना चाहती हूँ
उस रोते अंबर की सूजी आँखों को
सेकना चाहती हूँ
क्यों घूट रहा,
ये मोन, देखना चाहती हूँ
बस एक बार,
मैं बाहर देखना चाहती हूँ ॥

उन दौड़ते पर्वतों को,
ढेहरा, देखना चाहती हूँ
क्यों तप रही है धरती
नब्ज़, देखना चाहती हूँ,
इस कुदरत की
तड़प देखना चाहती हूँ
बस एक बार,
मैं बाहर देखना चाहती हूँ ॥

उस लंगड़ाती हवा के
टूटे पर देखना चाहती हूँ
कौन खा गया जंगल,
राक्षस, देखना चाहती हूँ
छोटे परिंदों के, बड़े, घर
देखना चाहती हूँ
बस एक बार
मैं बाहर देखना चाहती हूँ ॥

उस सूरज की, मुस्कुराती
किरण, देखना चाहती हूँ
क्यों रहता है, उदास
चाँद का मन
देखना चाहती हूँ,
प्यासे झरने की रुदन,
देखना चाहती हूँ
बस एक बार
मैं बाहर देखना चाहती हूँ ॥

एक रोशनदान ज़रूरी है

एक नाम, एक सम्मान,
होना जरूरी है।

और ज़िंदा रहने के लिए ,
तुझमें जान होना जरूरी है।

यूं बातों में ही ना कोई
भी गिरा दे पँख तेरे,
इस शहर में, तेरी अपनी
पहचान होना ज़रूरी है।

जो सदियों से बंद हैं,
अंधेरों में, उस सोच में
एक रोशनदान होना जरूरी हैं।

वो कह रहे थे जो नुक्स है,
तेरे आईने में,
उन चेहरों में एक
इन्सान होना जरूरी है।

मैं नहीं भटकती,
आवारा कश्तियों की मानिंद ,

गर भटकूं, तो मुझमे भी,
एक मयान होना ज़रूरी हैं ॥

गांव व डाकघर दरकाटी, तहसील जवाली,
जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-176 023

पार्टी से था। इसी प्रकार विधान सभा में महिला नेत्रियों की बात की जाए तो विद्या स्टोक्स पहली महिला हैं जो विधान सभा के अध्यक्ष पद पर रहीं। ऐसी कई महिलाएं हैं जिन्होंने शिखर को छू कर इतिहास में अपना नाम दर्ज करवाया है। नाविका प्रतिभा जम्वाल ने दुनिया की पहली ऐसी सागर परिक्रमा में भाग लिया था जिसमें केवल महिला अधिकारी को ही शामिल किया गया था। भारतीय नौसेना में ले. कमांडर कुल्लू के मौहल की इस बेटी ने लगातार 254 दिनों तक समंदर में ही रहने का रिकार्ड अपने नाम किया। शिमला की रहने वाली सीमा ठाकुर प्रदेश में सरकारी बसों में पहली महिला ड्राइवर हैं। पालमपुर की किरण ने भी पिता को जीप चलाते देख रेलगाड़ी चलाने का स्वप्न देख लिया। कानपुर में रेलगाड़ी चलाने का प्रशिक्षण लेकर हिमाचल की पहली रेलगाड़ी चालक हैं। जिला हमीरपुर के सुजानपुर की 82 वर्षीय लाजवंती देवी प्रदेश की पहली एल.आई.सी. महिला एजेंट हैं। वर्ष 1960 में उन्होंने उस वक्त एल. आई.सी. के साथ अपना सफर शुरू किया जब महिलाएं खुद को घूंघट में छुपाने के लिए मजबूर थीं। लेकिन आज महिलाओं की न सिर्फ स्थिति बदली है, बल्कि उनके प्रति समाज का दृष्टिकोण भी बदला है। देश में बहुत सी ऐसी महिलाएं हैं जो अन्य के लिए रोल मॉडल हैं। बालाकोट ऑपरेशन के समय विंग कमांडर अभिनंदन की आंख-कान, स्क्वाड्रन लीडर मिली ही थी। युद्ध सेवा मेडल से नवाजी गई मिली पूरी दक्षता से अपने काम को अंजाम देती है। विंग कमांडर आशा माइक्रोलाइट एयर क्राफ्ट से डाइव लगाने वाली पहली महिला देश और दुनिया को गौरवान्वित करती है महिलाओं को यदि पति, बच्चों का प्रेम प्रोत्साहन के रूप में मिलता है, तो उनमें आगे बढ़ने के जज्बे को कोई पूर्ण विराम नहीं लगा सकता है। आज हमें इस पावन अवसर पर उन महान व्यक्तियों का भी तहेदिल से शुक्रिया करना चाहिए जो इस बदलाव के वाहक बनें, जिन्होंने महिलाओं की हिम्मत को अपना संबल दिया। उनके रास्तों को रोशन कर अबला से सबला बनाया।

मार्फत रीना नेगी, गिरिराज कार्यालय, शिमला-171005

हमारे साहित्यकार

मानवीय संवेदनाओं का शब्दशिल्पी : सुदर्शन वशिष्ठ

◆ डॉ. सुशील कुमार फुल्ल

सुदर्शन वशिष्ठ एक ऐसे मसिजीवी का नाम है, जो सर्वतोमुखी प्रतिभा का धनी है और जिसकी कलम पर सरस्वती का वास है। कथाकार, लघु कथाकार, बाल कथाकार, कवि, व्यंग्यकार, नाटककार, निबंधकार होने के साथ-साथ संस्कृति लेखन में इन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई है लेकिन व्यक्तिगत तौर पर मुझे हर विधा में उनका कहानीकार ही विद्यमान लगता है ठीक उसी प्रकार जैसे चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कुछ भी लिखें झलक उन की रचनाओं में कहानीकार की ही रहती है। वशिष्ठ ने अब तक एक सौ पच्चीस से अधिक पुस्तकों का लेखन व संपादन किया है और अपनी रचनात्मक ऊर्जा को निरन्तर गतिशील रखा है।

सदा मुसकान बिखेरते, हंसमुख और खिले-खिले व्यक्तित्व के स्वामी सुदर्शन वशिष्ठ गत पचपन वर्षों से लेखन में सक्रिय हैं।

मैं हमेशा कहता हूं, शब्दों का जादूगर होने के साथ वशिष्ठ प्रकाशकों का जादूगर भी है। जब पूछें तो जवाब मिलता है, नहीं कुछ नहीं आ रहा और अचानक कोई न कोई किताब आ जाती है। अभी कोरोना काल में 'हिमाचल का प्रतिनिधि व्यंग्य' अचानक छप कर आ गई तो आश्चर्य हुआ।

वशिष्ठ ने कई विधाओं में अपनी पैठ बनाई है। यूं तो सातवें दशक से ही इन्होंने लेखन में अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी थी किंतु आठवें दशक में धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी और सारिका जैसी देश की शीर्षस्थ पत्रिकाओं के माध्यम से वशिष्ठ ने एक कहानीकार और संस्कृति लेखक के तौर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

24 सितम्बर 1949 को पालमपुर के गांव में जन्मे वशिष्ठ का लालन पालन नाना के घर पालमपुर के समीप अरला गांव में हुआ जो पहले मारण्डा में रहते थे। पंडित जी शुरू से ही मेधावी छात्र थे और मैट्रिक इन्होंने सरकारी स्कूल पालमपुर से प्रथम श्रेणी में पास की।

मात्र सात दिन की अल्पायु में मातृसुख से वंचित होने के कारण बाल्यकाल अभावों के बीच गुजरा और विभिन्न कारणों से सातवीं तक सेंटपॉलज हाई स्कूल पालमपुर, आठवीं धर्मशाला से और मेट्रिक फिर पालमपुर से उत्तीर्ण की। मेट्रिक के बाद ये नाना का घर छोड़ पिता के पास शिमला आ गए जो बिशॉप कॉटन स्कूल में अध्यापक थे। एस.डी.बी. कॉलेज शिमला से बी.ए. और हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. से किया। अपरिहार्य कारणों से एक स्थान में शिक्षा न पाने बारे वशिष्ठ का मानना है विभिन्न संस्थानों से शिक्षा पाने और अलग अलग जगह रहने से इनके अनुभव क्षेत्र में विस्तार हुआ।

सन् 1971-72 के अंतिम बैच में धर्मशाला से बी.एड. किया तो इस के बाद इस क्षेत्र में नौकरी के अवसर भी बंद हो गए। अतः दो तीन साल बेकारी के बाद 1975 में तीन साल बी.सी. पब्लिक स्कूल जुब्बल में अध्यापन किया। नवम्बर 1977 में हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के माध्यम से मैरिट में प्रथम स्थान पर जिला भाषा अधिकारी के पद पर नियुक्ति मिली। कुल्लू तथा मण्डी में जिला भाषा अधिकारी के पद पर कार्य करने के बाद सहायक निदेशक(प्रकाशन) हुए और सन् 1986 में उपनिदेशक(भाषा) बनने पर सोलह साल तक 'क्रोनिकल' उपनिदेशक रहे। यूं तो निदेशकों के घूमते फिरते रहने से कार्यालय का सारा काम यही सम्भालते देखे गए किंतु चार बार निदेशक भाषा-संस्कृति विभाग का कार्यभार भी रहा। सन् 1982 से 1999 तक सचिव अकादमी के पद पर प्रतिनियुक्ति के साथ तथा 2003 से 2007 तक सचिव का अतिरिक्त कार्यभार सम्भालने के साथ सेवानिवृत्ति के उपरांत एक वर्ष अकादमी के उपाध्यक्ष भी रहे।

भाषा-संस्कृति विभाग तथा अकादमी में, साहित्य व संस्कृति में इन द्वारा दी गई सेवाएं लम्बे समय तक याद रखी जाएंगी। इन संस्थानों में रहते हुए वशिष्ठ ने सत्तर से अधिक पुस्तकों का संपादन संयोजन किया।

कथाकार वशिष्ठ

वशिष्ठ एक सुलझे और मंजे हुए कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। वे मूलतः कथाकार हैं अतः पहले कहानी पर ही बात हो जानी चाहिए। वशिष्ठ के कथाकार को देखें तो उसका क्रमिक

विकास हुआ है। सौ से अधिक कहानियों के लेखक वशिष्ठ की पहचान धर्मयुग में निरंतर कहानियों के प्रकाशन से बनी।

वशिष्ठ सहज कहानी का जटिल कथाकार है। कथा बहुत ही सरल और सहज लगती है किंतु यह बेहद जटिलताओं और पेचीदगियों से भरी हुई होती है। एक कथा कई अर्थों में खुलती है और अनेकानेक आयाम प्रस्तुत करती हुई आगे बढ़ती है। कथा के अनखुले, अनबूझे अंत पाठकों को अपने अपने ढंग से सोचने पर विवश करते हैं। बहुत से पात्रों का अधूरा परिचय दिया जाता है या मात्र इंगित कर ही छोड़ दिया जाता है। अतः एक बार पढ़ने से इसे ग्रहण नहीं किया जा सकता। बार बार पढ़ने से अलग अलग अर्थ प्रस्तुत होते हैं। बहुत से पात्र मनोवैज्ञानिक बोध लिए होते हैं अतः उन्हें साधारण ढंग से समझ पाना आसान नहीं रहता। ऐसे जटिल पात्रों में 'संता पुराण' की बंतो, 'सालिगराम की चिट्ठी' का 'सालिगराम', 'गन्धर्व' की सुकन्या, 'हदे निगाह तक' का बेटा, 'वायरस' का बूढ़ा कुछ उदाहरण हैं।

गुलेरी, यशपाल, मोहन राकेश और निर्मल वर्मा चारों कथाकारों का शिल्प इनमें देखने को मिलता है। इनका कहानी जगत गांव कस्बे से लेकर शहर तक, घर, दफतर और राजनीति तक फैला हुआ है। मानवीय संवेदना, आपसी सम्बन्धों की टूटन, गांव से पलायन, शहर की विवशता आदि अनेक पहलू लिए हुए है।

धर्मयुग में छपी इनकी कहानी 'घर बोला'' को मैं इनकी एक अद्वितीय कहानी मानता हूं हालांकि धर्मयुग (22-29 जून 1980) में आई इनकी पहली कहानी 'सेमल के फूल' के बाद बाद और भी कई कहानियां निरंतर आती रहीं। साप्ताहिक हिन्दुस्तान की 'माणस गन्ध' या ज्ञानोदय की 'बिरादरी बाहर' हो या वागर्थ की 'कोट' समकालीन भारतीय साहित्य की 'मां और मोबाइल' कथादेश की 'दादा का प्रेत', कादम्बिनी की 'क्या ओए!' नवनीत की 'वसुधा की डायरी', साक्षात्कार की 'चंदन विष' हो, कथादेश की 'सालिगराम की चिट्ठी' या हंस की 'हदे निगाह तक' सभी कहानियां कथाकार की गहन अनुभूतियों और गहरी पैठ का परिचय देती हैं। कुछ दिन पहले विपाशा में 'चतुर्भुज' और पाखी में 'मंगू मदारी(किडनेप केस) भी विशिष्ट कहानियां है।

सरल सहज किंतु भीतर ही भीतर मार करती हुई, बाहर से शांत, भीतर से ज्वार, पात्रों को परत दर परत खोल कर एक रहस्यमय अंत में छोड़ देना, साधारण घटनाओं में भी विलक्षण उद्घाटन इनकी कहानियों की विशेषताएं है। खासकर कहानियों के अंत खुले छोड़ दिए जाते हैं जो पाठक को अपने अपने ढंग से सोचने पर मजबूर करते हैं। मानवीय संवेदना, सम्बन्धों की गरमाहट और टूटन, समाज की विद्रूपदाएं और राजनैतिक प्रपंच सब इनकी कहानियों में मिलता है। विषयों की विविधता एक और खूबी है।

इनकी पहली कहानी ''बिकने से पहले'' 1969 में छपी जब ये बी.ए. (द्वितीय वर्ष) के छात्र थे। यह कहानी एक यथार्थवादी कहानी थी जिसमें इन्होंने अपने पालमपुर के तीन दोस्तों पर वास्तविक काम और नाम रख कर कथा बुनी। सन् 1972-73 तक इनकी कहानियां देश की उस समय निकलने वाली लघुपत्रिकाओं : कोशा, विवेक विकास, युवक, युगमराल, एकांत आदि से छपने लगीं थीं।

लेखक के अनुसार पहली बार कविताओं में संसदीय परिषद् की पत्रिका ''देवनागर'' में छपी कविता के बारह रुपये का मनीऑर्डर आया। 1972 में कादम्बिनी में ''ब्राह्मत्व एक उपाधि : जाति नहीं'' विशिष्ट रचनाओं में प्रथम स्थान पर छपी जिसके चार सौ रुपये पारिश्रमिक मिला। 'सरकारी पैसा' कहानी योजना में छपी जिसका पहली बार सौ रुपये पारिश्रमिक मिला।

वशिष्ठ के दस कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है। पहला संग्रह ''अंतरालों में घटता समय'' सन् 1979 में शारदा प्रकाशन दिल्ली से छपा जो विशेष चर्चित रहा। इसके बाद सेमल के फूल(1985), पिंजरा(1986), हरे हरे पत्तों का घर(1991), पहाड़ देखता है (1995), संता पुराण नाम से दूसरा संस्करण (1998), कतरनें (2000), पहाड़ पर कटहल (2003), वसीयत(2006), नेत्रदान(2014), कथा कहती कहानियां(ई-बुक 2019)।

''नेत्रदान'' इनकी उन्नीस कहानियों का संकलन है जिसकी भूमिका आकर्षित करती है। कथाकार ने इसे रिटायरमेंट के बाद कथा जगत में अपनी वापसी माना है।

कथा चयन में गेट संस्कृति(1988), विशिष्ट कहानियां(1998), माणस गन्ध (1998), इकतीस कहानियां (2014), सम्पूर्ण कहानियां (2016), और मेरी प्रिय कहानियां (2019) आई हैं।

कहानी संग्रहों का संपादन कर इन्होंने कई कथाकारों को साहित्य जगत में प्रस्तुत किया है। खुलते अमलतास(1983), घाटियों की गन्ध(1985), काले हाथ और लपटें (1985), दो उंगलियां और दुष्चक्र (1985), पहाड़ गाथा(2016) महत्वपूर्ण संपादित संग्रह हैं जिनकी देश में पर्याप्त चर्चा हुई। साहित्य अकादमी द्वारा प्रायोजित 'पहाड़ गाथा' का वर्ल्ड बुक फेयर 2018 में विमोचन हुआ। चार सौ अस्सी पृष्ठीय इस बृहत पुस्तक में हिमाचल समेत पहाड़ के कथाकारों द्वारा लिखित या पहाड़ पर लिखी गई ब्यालीस कहानियां संकलित हैं।

संपादित संग्रहों में 'दो उंगलियां और दुष्चक्र' तथा 'पहाड़ गाथा' की भूमिकाएं पढ़ने योग्य हैं।

वशिष्ठ के कथाकर्म को अलग अलग कहानी संकलनों पर चर्चा के बजाय भावना प्रकाशन द्वारा 2016 में प्रकाशित पांच सौ छत्तीस पृष्ठीय 'संपूर्ण कहानियां' से कथाकार की कथायात्रा का लेखाजोखा जांचा जा सकता है। संकलन में इकहत्तर कहानियां हैं।
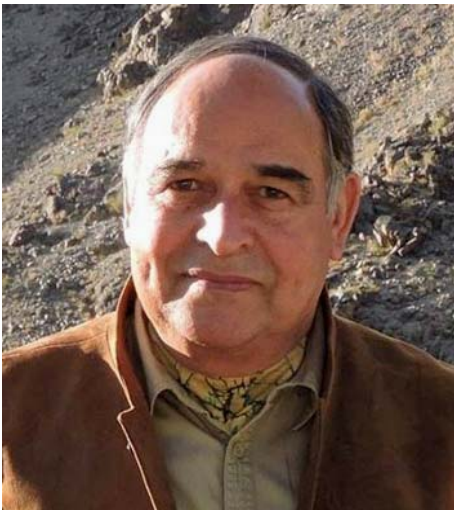
ख्यात कथाकार को सम्मान

वशिष्ठ के प्रथम उपन्यास 'आतंक' को 1976 में जम्मू-कश्मीर अकादमी से और 1983 में प्रथम बार हिमाचल अकादमी द्वारा दिए जाने वाले सम्मानों से नवाजा गया। 1988 में 'नदी और रेत' नाटक (पाण्डुलिपि) साहित्य कला परिषद् दिल्ली (दिल्ली प्रशासन) से पुरस्कृत। 'जो देख रहा हूं' काव्य संकलन के लिए हिमाचल अकादमी से कविता पुरस्कार : 2007।

इसके अलावा अनेक सांस्कृतिक संस्थाओं ''हिमाचल आर्ट एण्ड कल्चर सोसाईटी, मण्डी (1982), ऑल इण्डिया आर्टिस्ट एसोशिएशन द्वारा पीपुल्ज एवार्ड 1986, हिमोत्कर्ष ऊना द्वारा श्रेष्ठ साहित्यकार पुरस्कार :1997, हिम कला संगम बिलासपुर द्वारा सम्मान (1997), हिम साहित्य परिषद् मण्डी द्वारा 'राज्य स्तरीय साहित्य सम्मान : 1998, नवांकुर कला केन्द्र नाहन द्वारा साहित्य के लिए पुरस्कृत(1995), कहानी लेखन महाविद्यालय अंबाला द्वारा सम्मान(1995), साहित्य कला परिषद् कुल्लू द्वारा व्यास की धरा पुस्तक के लिए सम्मान(1999), हिमाचल प्रदेश सिरमौर कला संगम द्वारा साहित्य के लिए डॉ. परमार सम्मान(2006), तुलसी अकादमी भोपाल से 2015 में सम्मान, व्यंग्य के लिए 'व्यंग्य यात्रा सम्मान(2015), अमर उजाला हिमाचल गौरव सम्मान(2017)। 2017 में हिमाचल अकादमी द्वारा साहित्य के लिए सर्वोच्च शिखर सम्मान भी इन्हें प्रदान किया गया। साहित्य अकादमी दिल्ली, दुष्यंत कुमार पांडुलिपि संग्रहालय भोपाल के पूर्व सदस्य रहे।

राष्ट्रीय इतिहास अनुसंधान परिषद् भारत सरकार के पूर्व फैलो तथा संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार के पूर्व सीनीयर फैलो। वर्तमान में सलाहकार समिति आकाशवाणी, सदस्य हिमाचल राज्य संग्रहालय सोसाइटी तथा, विद्याश्री न्यास भोपाल।

संकलन के ''प्रकाशकीय' में लिखा है :

''गत पैंतालीस बरसों से लगातार कहानी लेखन में सक्रिय वशिष्ठ ने एक लम्बा सफर तय किया है। अतिसंवेदनशील मानवीय मूल्यों की कोमल छुअन, घर और गांव का मोहपाश, शहर और गांव के बीच आकर्षण और बढ़ता हुआ विकर्षण, घर परिवार से दफतर तक का संसार, निर्मम सरकारी तन्त्र, राजनीति की विभिषिका, सब इनकी कहानियों में देखने को मिलता है। सम्बन्धों की रेशमी डोरियों से लेकर गहन और जटिल मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों तक कथाकार ने एक यथार्थवादी किंतु अद्‌भुत और रोमांचक संसार का निर्माण किया है। वरिष्ठ कथाकार वशिष्ठ का कथा संसार उनके लेखन की तरह बहुआयामी विविधताओं से भरा हुआ है। यह किसी सीमित दायरे में बन्ध कर नहीं रहता। वे कहानी, उपन्यास, कविता, व्यंग्य, निबन्ध, सांस्कृतिक लेख आदि कई विधाओं में एक साथ लिखते हैं। इसी तरह उनकी कहानियों की भावभूमि और जमीन अलग अलग रही है। वशिष्ठ की कहानियां बोलती है, कहानीकार नहीं। कहानी में कहानीकार होते हुए भी नहीं होता। परिवेश और परिस्थितियों के अनुरूप संवेदना, कोमलता, सादगी के साथ ताजगी, धारदार व्यंग्य के साथ एक तीखापन इनकी कहानियों में दिखलाई पड़ता है।''

संकलन की समीक्षा कथादेश, समकालीन भारतीय साहित्य, इन्द्रप्रस्थ भारती, गिरिराज, हिमप्रस्थ, विपाशा, समहुत, दस्तावेज आदि में छपी।

दस्तावेज में माधव कौशिक की समीक्षा के कुछ अंश

''कुछेक छोटी कहानियां बहुत ही मारक हैं। इनमें ''पहाड़ पर कटहल'', ''सेहरा नहीं देखते'', ''आवाज का सहारा'', ''ड्राई एरिया'', ''हंसना मना है'', ''सोच का शाप'' हैं जो कम से कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात कहती हैं। कथा की कसावट और शब्दों की मितव्ययता देखनी हो तो इन कहानियों को अवश्य पढ़ें।

''देवता नहीं है'' एक छोटी मगर सशक्त रचना है। पर्वतीय संस्कृति के देव दरबार में अपराधी न्यायालय से तो छूट सकता है, देवन्याय से नहीं। देवता का बजंतरी चेपाराम देवता से अपनी बेटी की मौत या हत्या का न्याय मांगता है। ठाकुर के घर से वापिस न लौटने पर उसकी बेटी की लाश व्यास के किनारे मिली थी। चेपाराम को अछूत होने के कारण देवता के करीब आने का अधिकार नहीं है तो वह दूर खड़ा हो देवता से लड़ाई कर न्याय मांगता है। अंततः वह अपने मेमने का सिर धड़ से अलग कर उसका गर्म गर्म कलेजा देवता के सामने पत्थर पर रख देता है। देवता का गूर उसके प्रश्नों के उत्तर में थर थर कांपता है, उसके मुंह से झाग निकलता है मगर वह कुछ बोल नहीं पाता। कहानी में देव उत्सव पर गूरों की खेल तथा प्रश्नोत्तरी के माध्यम से एक अजब वातावरण तैयार किया गया है जिसमें चेपाराम की देह भी गूरों की भान्ति थर थर कांपती है और देवता

पाराशर का रथ झन् झन् बज उठता है। चेपाराम एक ऐसा चरित्र है जो मन में देर तक कौंधता रहता है।''

इन पंक्तियों के लेखक द्वारा विपाशा में छपी समीक्षा के अंश द्रष्टव्य हैं :

''व्यंग्य वशिष्ठ का एक मारक औजार रहा है। 'अथ श्रीसचिवालय कथा' पूरी तरह एक व्यंग्य कथा है। इसमें जिस तरह सचिवालय के विभिन्न चरित्र प्रस्तुत किए गए हैं, वह अद्भुत है। 'हंसना मना है', 'सालिगराम की चिट्ठी' और 'नेत्रदान' गहरे व्यंग्य के साथ कथ्य को कहती हैं। सालिगराम का प्रधान मन्त्री को चिट्ठी लिखना और जगह जगह भाषण देना एक विक्षिप्त व्यक्ति का प्रलाप न हो कर आज की हकीकत को दिखाता है। इसी तरह आंखों का दान करने की चाह के बहाने जीवन की विषमताओं और जटिलताओं का बखान कहानी को मारक बनाता है।

दो कहानियां, जिन्हें उल्लेख किए बिना छोड़ा नहीं जा सकता, 'हदे निगाह तक' और 'मां और मोबाइल' हैं। पहली कहानी में आज के युवकों में जो एक बेचैनी है, जिस मानसिक ऊहापोह से वे गुजर रहे हैं, उसका मार्मिक वर्णन है। अपने अभीष्ट को न पा सकने पर एक मानसिक विषाद से गुजरते हुए वे खुद तो जीवन से विमुख हो जाते हैं मगर उनके अभिभावकों पर क्या गुजरती है, इसका अंदाजा उन्हें नहीं रहता। लाल आंखों वाले साधुओं का जमावड़ा, मॉरचुरी में बूढ़े का दृश्य और अंत में खोए हुए बेटे के आने की पदचाप जैसे कुछ ऐसे दृश्य हैं जो मन को झकझोर देते हैं। इसी तरह दूसरी कहानी में विकल और उसके साथी युवाओं की विकलता, उनके प्रति समाज की उपेक्षा और शंका आज के असुरक्षा के वातावरण को दर्शाती है। तो दूसरी ओर उसके पिता की वर्तमान मनोदशा, मां के अतीत की पीड़ा उसे निरंतर चैन नहीं करने देते। मां का स्मरण एक हृदयग्राही दुर्घटना के रूप में सामने आता है जब वह तपेदिक के रोग से तप कर इतना उपेक्षित जीवन जीती है कि मरने पर उसके धुएं से भी लोग दूर भागते हैं।''

रचनावली की तरह समग्र कहानियों का एक अपना महत्व होता है। कथाकार की सम्पूर्ण यात्रा जानने के लिए ऐसे संकलन महत्वपूर्ण हैं।

वशिष्ठ की कहानियों के पाठ चण्डीगढ़, दिल्ली, भोपाल, लखनऊ से ले कर गोवाहाटी और अण्डेमान निकोबार तक हुए।

वशिष्ठ एक मंजा हुआ कहानीकार है जो बुनावट और बनावट का विलक्षण घालमेल कर के पाठकों को सममोहित कर लेता है और सम्पादकों तथा आलोचकों को वशीभूत ।

लघुकथाकार

वशिष्ठ की प्रथम लघुकथा ''ऋण का धंधा'' सारिका में छपी जिससे इन्हें प्रेरणा मिली। नवभारत टाइम्ज, हिन्दुस्तान, दैनिक ट्रिब्यून, अमर उजाला आदि पत्र पत्रिकाओं में लघुकथाएं काफी समय तक आती रहीं। एक लघुकथा संग्रह ''पहाड़ पर कटहल'' भी 2003 में छपा। संग्रह की भूमिका में बलराम ने लिखा है :

''.....लेकिन सुदर्शन वशिष्ठ हिन्दी लघुकथा के गुलेरी हैं, जिन्होंने 'अकेला ईमानदार', 'रामलीला', 'धंधा', 'हंसना मना है' तथा 'पहाड़ पर कटहल' जैसी गिनी चुनी लघुकथाएं लिखी हैं। पर चर्चित लघुकथा लेखकों में सब पर भारी पड़ते हैं।.....'पहाड़ पर कटहल' के मुकाबले में रखने लायक शायद राजेन्द्र यादव की 'हनीमून' और चित्रा मुद्गल की 'रिश्ता' ही हैं या फिर बेनीपुरी की 'घासवाली' या गोस्वामी की 'विमाता' आदि कुछ गिनी चुनी लघुकथाएं ही इस कोटि में रखी जा सकती हैं।.....हिन्दी लघुकथा को एक विशिष्टता प्रेमचंद सौंपते हैं तो दूसरी राजेन्द्र यादव, तीसरी सुदर्शन वशिष्ठ तो चौथी चित्रा मुद्गल और पांचवीं विष्णु नागर तथा छठी एन.उन्नी।"

'विश्व लघुकथा कोष' तथा राष्ट्रीय स्तर के अनेक संग्रहों में वशिष्ठ की लघुकथाएं शामिल की गईं।

डिक पल्लकर **(Lodewijk Brunt Dick Plukker)** द्वारा संपादित 2013 में एमरस्टडेम **(Amsterdam)** से प्रकाशित राष्ट्रीय लघुकथा संकलन में स्थान मिला। इस संकलन में पृथ्वीराज अरोड़ा, बलराम, कमल चोपड़ा, असगर वजाहत, हसन जमाल आदि के साथ इनकी छः लघुकथाएं शामिल हुईं। बलराम 2019 में संपादित राजकमल द्वारा प्रकाशित 'छोटा बड़ी कथाएं' तथा 'लघुकथा लहरी' में वशिष्ठ की कथाएं शामिल की गईं जो कर्नाटक में पाठ्यक्रम में लगी हैं।

उपन्यासकार वशिष्ठ

उपन्यासकार के अनुसार उनके नाना महाभारत कथाएं गांव वालों को रोज रात को अलाव के आगे सुनाते थे जबकि उन दिनों महाभारत को घर में रखना बुरा माना जाता था। इससे उन्हें इस ग्रंथ के प्रति मोह जागा और बचपन में ही सारा महाभारत कई बार पढ़ लिया। फलतः इनकी प्रारम्भिक रचनाओं : 'आतंक' उपन्यास, 'ब्राह्मणत्व एक उपाधि : जाति नहीं'' शोध, ''नदी और रेत नाटक'' तथा कई लेखों में इसका प्रभाव देखा जा सकता है। प्रथम संग्रह की कविताओं में भी पौराणिक संदर्भ देखे जा सकते हैं।

महाभारत की पृष्ठभूमि पर आधारित पहला उपन्यास 1973 में जम्मू अकादमी से संस्तुत हुआ और प्रकाशनार्थ अनुदान मिला।। इसका प्रकाशन 1976 में हुआ और इसके बाद में अलग अलग प्रकाशकों से लगातार तीन संस्करण प्रकाशित हुए। हिमाचल अकादमी द्वारा पहली बार 1983 में दिए गए पुरस्कारों में इस उपन्यास को पुरस्कृत किया किया गया।

दूसरा उपन्यास ''सुबह की नींद'' 1988 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास एक पब्लिक स्कूल की पृष्ठभूमि पर है जिसमें आकर्षक ढंग से छद्म पब्लिक स्कूलों का पर्दाफाश किया गया है।

उपन्यासों की समीक्षाएं सारिका, नवभारत टाइम्ज,

हिन्दुस्तान, दैनिक ट्रिब्यून, सोमसी, गिरिराज, हिमप्रस्थ आदि पत्र पत्रिकाओं में छपीं।

कविता

जैसा कि माना जाता है, हर लेखक अपना लेखन कविता से प्रारम्भ करता है तो वशिष्ठ ने भी शुरू में कविताएं लिखीं और इनका पहला काव्य संकलन ''युग परिवर्तन' शारदा प्रकाशन दिल्ली से 1982 में प्रकाशित हुआ।

इस संकलन के बाद पन्द्रह साल तक कोई कविता संकलन नहीं आया। इस बारे में वशिष्ठ का कहना है कि इतने वर्षों तक कोई कविता आई ही नहीं। यह भी सम्भव है कि उन पर कहानीकार हावी रहा हो, अतः कविता नहीं आ पाई।

लगभग पन्द्रह वर्ष के बाद दूसरा संकलन ''अनकहा'' 1997 में प्रकाशित हुआ।

इसके बाद 2004 में ''जो देखता हूं' और 2007 में ''सिंदूरी सांझ और खामोश आदमी'' प्रकाशित हुआ। मातृभारती अहमदाबाद से एक ई-बुक ''औरतें'' शीर्षक से भी जारी हुई।

''जो देख रहा हूं'' पर हिमाचल अकादमी द्वारा 2007 में पुरस्कार भी दिया गया।

जहां पहले संकलन में पौराणिक परिवेश और संदर्भों की कविताएं थीं वहां बाद की कविताओं में व्यंग्य की धार तेज होती गई। वशिष्ठ ने आदमी, औरत, अफसर, बाबू और सत्ता पर अनेक कविताएं लिखीं। शब्दों की कंजूसी, गागर में सागर भरने की कोशिश और व्यंग की मार इनकी कविताओं का मुख्य स्वर रहा है। इनकी छोटी कविताएं दूर तक मार करती हैं यथा :

बौने भोज वृक्ष
और बौने होते जाते ऊंचाई के साथ
ऊंचाई पर बौना हो कर जीना भी
कद्दावर होना है।

आदमी श्रृंखला की एक कविता का अंश प्रस्तुत है :

सरकार में आते ही
बन जाता बेवकूफ
चाहे हो कितना चुस्त चुलबुला
पृथ्वी मापने वाला दो पैरों से
आसमान में छेद करने वाला दो हाथों से
धीरे धीरे हो जाता सुस्त नकारा निखट्टू।

इन काव्य संकलनों की समीक्षाएं समय समय पर समकालीन भारतीय साहित्य, कथादेश, नवभारत टाइम्ज, दैनिक ट्रिब्यून, विपाशा, हिमप्रस्थ, गिरिराज आदि में छपती रहीं। इनकी कविताओं को ''गहरी संवेदनाओं के काव्यानुभव'', ''नयी जमीन तलाशती कविताएं'', ''अछूते विषयों को छुआ कवि ने'' जैसे शीर्षकों से व्याख्यायित किया गया।

वशिष्ठ का पांचवां काव्य संकलन ई-बुक के रूप में ''औरतें'' शीर्षक से मातृभारती अहमदाबाद से निकला जिसकी कविताओं को हजारों पाठकों द्वारा पढ़ा और सराहा गया।

नाटक

सर्वप्रथम वशिष्ठ ने महाभारत के सन्तसुजातीय का काव्यानुवाद किया जिसे आगरा से छपने वाले 'युवक' ने 1975 में अपने पूरे अंक के एक सौ आठ पृष्ठों में केवल यह नाटक ही दिया। हालांकि यह मंचित करने वाला नाटक नहीं है, किंतु अपने उपदेशात्मक कथ्य के कारण महत्वपूर्ण है।

वशिष्ठ का पहले सम्पूर्ण नाटक ''नदी और रेत'' की पाण्डुलिपि साहित्य कला परिषद् दिल्ली से ''अखिल भारतीय नाटक लेखन प्रतियोगिता : 1987-88'' में पुरस्कृत हुई। इस नाटक के तीन संस्करण हिमाचल पुस्तक भण्डार दिल्ली से छपे।

व्यास के जीवन पर आधारित इस गीति नाटिका के जयपुर, दिल्ली, शिमला, कुल्लू में शो हुए। एक नाटिका ''अभिषेक' आकाशवाणी शिमला से प्रसारित हुई।

''वसुधा की डायरी'' नाटक एक बेटी के संघर्ष और बलिदान पर आधारित है जो कविता में लिखा गया है। इस नाटक को शिमला, कुल्लू में मंचित किया गया।

इनकी दो नाटक पुस्तकें ''नदी और रेत'' तथा ''तीन नाटिकाएं' प्रकाशित हुईं।

व्यंग्यकार

जहां तक व्यंग्य की बात है वशिष्ठ के व्यंग्य लगभग 1972 से सरिता, जाह्नवी में व्यंग्य छपने शुरू हुए। फिर दैनिक ट्रिब्यून, दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, हिन्दुस्तान,जैसे पत्रों में बराबर छपते रहे। दैनिक भास्कर चण्डीगढ़ से व्यंग्य धारावाहिक रूप से साप्ताहिक फीचर के रूप में आते रहे। सरिता और जाह्नवी के बाद आउटलुक, साहित्य अमृत, साक्षात्कार, मधुमति, इन्द्रप्रस्थ भारती, व्यंग्य यात्रा आदि पत्रिकाओं मे व्यंग्य रचनाएं बराबर छपती रहीं।

दो व्यंग्य पुस्तकें ''संत होने से पहले'' 2007 में, ''बेहतरीन व्यंग्य'' 2019 में प्रकाशित हुईं। और ''बाथरूम में हाथी'' 2020 में प्रकाशित हुए।

''सन्त होने से पहले'' व्यंग्य संग्रह का साहित्य जगत में व्यापक स्वागत हुआ। इस संग्रह में अट्ठाईस व्यंग्य रचनाएं संग्रहित हैं। किताबगंज प्रकाशन सवाई माधोपुर राजस्थान से प्रकाशित ''बेहतरीन व्यंग्य'' का संपादन प्रमोद सागर ने किया और यह विशेष चर्चित रहा। इस संकलन में इकतालीस चुनींदा व्यंग्य हैं।

हाल ही में ''आयो हिन्दी का त्यौहार'' नाम से व्यंग्य की ई-बुक मातृभारती अहमदाबाद गुजरात से आई है जिसमें ताजा दस व्यंग्य रचनाएं शामिल हैं।

राष्ट्रीय स्तर के कई व्यंग्य सम्मेलनों में भाग के साथ साथ इन्हें 2015 में 'व्यंग्य यात्रा' सम्मान भी मिला।

संस्कृतिकर्मी

संस्कृति लेखन में वशिष्ठ की विशेषता यह रही है कि इन्होंने 'आंखिन देखी' पर बल दिया और सभी लेख आंखों देखी के आधार पर लिखे। संस्कृति पर अपनी प्रथम पुस्तक ''व्यास की धरा'' की भूमिका (जो एक बेहतरीन भूमिका है) में लेखक लिखता है :

'संस्कृति की खोज पुस्तकालयों में बैठकर नहीं होती। पन्द्रह किताबें खोलकर उनसे नए विषय का संधान, संस्कृति पर अनुसंधान नहीं है। संस्कृति पुस्तकालयों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं में नहीं, अपने मूल रूप में सजी-संवरी यह ग्राम-बस्तियों में मिलती हैं।'

हिमाचल की संस्कृति बारे लिखने की प्रेरणा इन्हें कुल्लू में मिली। वहां की देवपरंपरा के कई अनूठे उत्सवों में जाना हुआ। उस समय हिमाचल से दैनिक ट्रिब्यून लोकप्रिय अखबार थी। इसमें कई मेले उत्सवों के आंखों देखे विवरण लगातार छपे। कुल्लू में ही पहली बार यहां के एकमात्र लोकतन्त्र 'मलाणा' के विषय में पहली बार धर्मयुग में सेंटरल पेज में सचित्र लेख आया। इसके बाद निरमण्ड भुण्डा आदि पर लेख छपे। साप्ताहिक हिन्दुस्तान में कुल्लू दशहरा पर विवरण आया। कुल्लू रहते हुए ही संस्कृति पर पहली पुस्तक 'व्यास की धरा' लिखी जो किताबघर प्रकाशन ने सन् 1984 में छपी। इसके बाद चंबा-पांगी यात्रा, किन्नौर व स्पिति पर यात्रा पर पुस्तकें आई।

हिमाचल की संस्कृति पर वशिष्ठ के लेख धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, गगनांचल, संस्कृति से लेकर नवभारत टाईम्ज, दैनिक ट्रिब्यून आदि अनेक पत्रों में छपते रहे हैं। किताबघर प्रकाशन की शृंखला से पहले इनकी निम्न लगभग बीस पुस्तकें संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर चुकी थीं :

व्यास की धरा (1984), कैलास पर चांदनी(1993), पर्वत से पर्वत तक(1996), रंग बदलते पर्वत(1996), हिमाचल (1997), पर्वत मन्थन (1997), ब्राह्मणत्वः एक उपाधि, जाति नहीं (1980), पुराण गाथा (2002), हिमालय में देव संस्कृति(2006), हिमाचल प्रदेश के सांस्कृतिक स्थल(2006), स्वाधीनता संग्राम और हिमाचल(2007), पहाड़ी चित्रकला एवं वास्तुकला(2010), हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक संपदा(2010), हिमाचली लोक कथाएं : चयन(2013), हिमाचली लोक कथाएं(2015), हिमालय की सांस्कृतिक संपदा : जनजातीय(2016), पर्वतीय संस्कृति में शिव शक्ति (2018), भूले बिसरे नगर : चंबा(2018)।

इन्होंने संस्कृति के अलावा इतिहास, कला एवं वास्तुकला, पौराणिक शोध और पौराणिक गाथाओं पर भी काम किया।

लेखक का मानना है, भाषा-संस्कृति विभाग में कार्यरत होना संस्कृति लेखन व शोध में एक वरदान साबित हुआ।

हिमाचल की संस्कृति को उजागर करता सब से महत्वपूर्ण काम किताबघर प्रकाशन से ''हिमालय गाथा'' नाम से सात खण्डों में पुस्तक माला का आना है जिसका देश भर में स्वागत हुआ।

पहली पुस्तक ''देव परंपरा'' की भूमिका में लेखक ने लिखा है :

''बहुत गहरा है संस्कृति का सागर। जितना इसमें डूबते जाओ, गहराई उतनी ही बढ़ती जाती है। गहराई में जो सीप-मोती हैं, वे कभी हाथ लगते हैं, कभी नहीं। सतह के नीच जो विचित्र संसार है, वह डूब कर, आंखें खुली रखने पर ही देखा जा सकता है। संस्कृति की खोज में 'जिन ढूंढा तिन पाईया' वाली बात चरितार्थ होती है।''

किताब घर प्रकाशन से हिमालय गाथा नाम से हिमाचल सन्दर्भ कोष सात खण्डों में देव परंपरा(2007), पर्व उत्सव (2007), जनजातीय संस्कृति (2008), समाज संस्कृति (2010), लोक वार्ता (2010), इतिहास (2012), लोकगीत (2020) प्रकाशित हुए और संस्कृति और साहित्य जगत में सराहे गए।

वशिष्ठ यह भी स्वीकारते हैं कि जो लिखा गया, वह बहुत कम है। लिखती बार, यह भी रह गया, वह भी रह गया, की व्याकुलता बनी रहती है।

साहित्य अकादमी, दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, सी. सी.आर.टी. तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा विशेष परियोजनाओं के अन्तर्गत प्रकाशित इन की किताबों की खूब सराहना हुई।

वशिष्ठ के लेखन की एक और खासियत है कि उन्होंने अपने लेखन में निरंतरता बनाए रखी। लेखन की सामयिक और आधुनिक तकनीक से जुड़े रहे और आज भी उतना ही लिख रहे हैं जितना आज से पचास साल पहले लिखते थे। वशिष्ठ एक ऐसा प्रिय जीव है, जो अपने व्यवहार की शालीनता, प्रस्तुति की चतुराई और समयानुकूलता की गहराई से सबको भांप लेता है और फिर उन्हें अपनी मुटठी में बांध लेता है। मधुर मुस्कानी प्रिय पंडित जी शतायु हों और एक सौ पच्चीस किताबें और लिख दें यही कामना है।

पुष्पांजलि राजपुर, पालमपुर, जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश -176067

आलेख

ग्राम्य जीवन और 'मैला आंचल'

◆ आकृति चंद्रा

फणीश्वरनाथ 'रेणु' नई कहानी आन्दोलन के उन कथाकारों में से एक हैं जिन्होंने देश की आजादी के बाद बदलते हुए ग्राम जीवन को अपने उपन्यासों और कहानियों में यथार्थ ढंग से चित्रित किया है। हिन्दी कथा साहित्य में रेणु के आगमन के साथ ही 'आंचलिक आन्दोलन' ने भी जोर पकड़ा। हिन्दी के अनेक आलोचकों ने हिन्दी कथा साहित्य में 'आंचलिक आन्दोलन' के उभार का श्रेय रेणु को ही दिया है। इस लिहाज से वे एक तरह से आंचलिक कथाकार कहे जाते हैं। बहरहाल, फणीश्वरनाथ 'रेणु' का बहुचर्चित उपन्यास 'मैला आंचल' सन् 1954 में प्रकाशित हुआ। इसके केन्द्र में है- बिहार के पूर्णिया जिला का 'मेरीगंज' गांव। यूं तो 'मैला आंचल' एक आंचल विशेष की कथा कहता है, पर इस उपन्यास में जिस तरह का ग्रामीण समाज का चित्र खींचा गया है, उसे देखकर ऐसा लगता है कि यह सिर्फ मेरीगंज की कथा नहीं है, बल्कि पूरे उत्तर भारतीय गांव की कथा है। 'मैला आंचल' के संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है- ''मैला आंचल' सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र के ग्रामीण जातीय जीवन का अंकन करता है।''[1]

ग्रामीण जीवन की अपनी विशेषताएं होती हैं। इसमें समरसता, जातिगत भेदभाव, धर्माडम्बर, ईर्ष्या-प्रेम आदि इतने संश्लिष्ट रूप से आपस में गुंथे हुए होते हैं कि इन्हें आसानी से नहीं पहचाना जा सकता। जब तक कि ग्रामीण समाज में कोई बड़ा परिवर्तन न हो। क्योंकि ये सारी चीजें परम्परा से चली आ रही होती हैं। रेणु ने अपने इसी उपन्यास की भूमिका में लिखा है- ''इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी, गुलाब भी, कीचड़ भी, चन्दन भी है, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी है...''[2]

उपन्यास 'मैला आंचल' सन् 1942 से 1953 के दौरान देश में घटी राजनैतिक और सामाजिक घटनाओं को लेकर बुना गया है। कमला नदी के किनारे जीता हुआ एक गांव 'मेरीगंज' की सच्ची तस्वीर 'मैला आंचल' उपन्यास में प्रत्येक स्तरों पर देखी जा सकती है, चाहे वह राजनैतिक हो, सामाजिक हो, आर्थिक हो या फिर सांस्कृतिक! सन् 1954 में प्रकाशित यह उपन्यास तत्कालीन भारतीय ग्रामीण परिवेश को संवेदनापूर्ण यथार्थ ढंग से अभिव्यक्त करता है। 'मैला आंचल' में व्यक्त मेरीगंज गांव उपन्यास के एक किरदार के रूप में उभरा है। और वह अपने आस-पास की राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों और हलचलों से प्रभावित होता है। लेकिन उपन्यास के उस गांव (मेरीगंज) की विडम्बना यह है कि वह अपनी पुरानी परम्परागत अप्रासंगिक सामाजिक और सांस्कृतिक अवधारणाओं व मान्यताओं को छोड़ना नहीं चाहता, जबकि तथाकथित नई व्यवस्था और मान्यता उसमें समाहित पुरानी अवधारणाओं और व्यवस्थाओं को यथावत् बनाए रखने का विरोध करती हैं।

हमारे ग्रामीण समाज में बहुत सारी सूचनाएं अफवाहों के रूप में आती हैं जिनका कोई प्रमाण नहीं होता है। रेणु के 'मेरीगंज' में भी अनेक खबरें अफवाहों के रूप में आती हैं जिनसे वहां का जन-जीवन प्रभावित होता है और तरह-तरह की शंकाएं-कल्पनाएं करता है। एक उदाहरण देखिए- ''मोगलाही टीशन पर गोरा सिपाही एक मोदी की बेटी को उठाकर ले गए। इसी को लेकर सिख और गोरे सिपाहियों में लड़ाई हो गई, गोली चल गई। ढोल बाजा में पूरे गांव को घेर कर आग लगा दी गई, एक भी बच्चा बच कर नहीं निकल सका। मुसहरू के ससुर ने अपनी आंखों से देखा था-ठीक आग में भूनी गई मछलियों की तरह लोगों की लाशें महीनों पड़ी रहीं।''[3] यदि हम उपर्युक्त पंक्तियों को देखें और तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं की पड़ताल करें, तो पता चलता है कि उस क्षेत्र में ऐसी कोई घटना का प्रमाण नहीं है। गौरतलब है कि उपन्यास में वर्णित इस घटना को स्वयं उपन्यासकार ने भी इतिहास सम्मत नहीं माना है। स्वयं उपन्यासकार के शब्दों में- ''यद्यपि 1942 के जन- आंदोलन के समय इस गांव में न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ था और न ही आन्दोलन की लहर इस गांव तक पहुंच पाई थी।''[4]

भारतीय ग्रामीण समाज के सन्दर्भ में एक बात यह भी है कि गांवों में छोटी-सी बात का बतंगड़ या अफवाहों को सच मान लिया जाता है। रेणु ने अपने उपन्यास 'मैला आंचल' में इसका जीवंत चित्रण किया है। उपन्यास 'मैला आंचल' में एक स्त्री पात्र कमली है। उसकी शादी कई बार तय होकर टूट चुकी है। गांव के लोग कमली के इस शादी वाले प्रसंग को लेकर अफवाह फैलाते हैं कि कमला मैया नहीं चाहती कि कमली की शादी हो। इसलिए कि कमला मैया भी कुमारी (कुंवारी) थी। मेरीगंज वालों की इसी बात या अफवाह का कमली के मन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और वह डरने लगती है। गांव वाले कमली के इस डर को मिरगी की बीमारी का नाम देते हैं। इसके बाद कमली और डरने लगती है और स्वयं को बीमार महसूस करती है। एक वक्त के बाद अफवाह ही उसकी जिन्दगी का एक हिस्सा बन जाता है। वह न तो किसी से बात करती है और न ही अपने घर से बाहर कहीं

जाती है। वह अक्सर अकेली रहती है, जबकि वह एक होनहार, कुशल स्त्री है। वह साहित्य पढ़ती है। उसको किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं है, लेकिन गांव वालों की अफवाहों की वजह से वह बीमार बना दी गई।

बहरहाल, भारतीय ग्रामीण समाज में रोक-टोक, टोना-टोटका और डायन जैसी बातों को सच मानने की परम्परा रही है। ग्रामीण समाज में अन्य खबरों की तरह इनका भी अस्तित्व अफवाहों के आधार पर ही टिका होता है। हालांकि भारतीय ग्रामीण समाज में अब इस तरह की मान्यताएं खत्म हो गई हैं, लेकिन अब भी कभी-कभार इस तरह की खबरें हमें सुनाई दे जाती हैं। रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' में एक स्त्री पात्र है। वह देखने में सुन्दर भी है, लेकिन उसे गांव वाले डायन समझते और मानते हैं। उस स्त्री का एक नवासा है-गणेश। उसे भी गांव के लोग 'डायन का नाती' के सम्बोधन से पुकारते हैं और उसे अपने साथ खेलने नहीं देते। उस स्त्री को डायन मानने का कारण यह है कि उसके परिवार का कोई भी सदस्य जीवित नहीं है, सिवाय नवासे (गणेश) के! उस स्त्री के बारे में गांव में एक अफवाह है कि जितिया परब (जीताष्टमी पर्व-पुत्रों के लिए रखा जाने वाला व्रत) की रात में कितनी बार लोगों ने उसको कोठी के जंगल के पास गोद में बच्चा लेकर नंगा नाचते हुए देखा है। यह एक सच्चाई है कि अफवाह से अन्धविश्वास का जन्म होता है। गौरतलब है कि भारतीय ग्रामीण समाज में अन्धविश्वास की जड़ें गहराई तक फैली हुई हैं और 'मैला आंचल' उपन्यास के पात्र जोतखी काका जैसे लोग हमारे समाज में अन्धविश्वासों को और मजबूती प्रदान करते हैं। उपन्यास में लेखक ने दिखाया है कि किस तरह से ब्राह्मण टोली के जोतखी काका अन्धविश्वास की इन विषैली जड़ों को फैलाते हैं। मेरीगंज में राजपूतों और कायस्थों का पुश्तैनी बैर-भाव है। जोतखी काका हमेशा तीसरी शक्ति का कुकर्तव्य पूरा करते हैं। उनके साथ मिलकर ब्राह्मण टोली के पण्डित कायस्थों और अन्य जातियों के खिलाफ राजपूतों को भड़काते हैं।

इसी उपन्यास में जोतखी काका से जुड़ा हुआ एक और प्रसंग है। वह यह है कि जोतखी काका गांव में लोगों के इलाज के लिए अस्पताल और वैज्ञानिक उपचार साधनों का विरोध करते हैं क्योंकि इन सबसे उनके निजी हितों को ठेस पहुंचती है। उनका कहना है कि- ''डॉक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं। सूई भोंक कर देह में जहर दे देते हैं, आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है, हैजा के समय कुओं में दवा डाल देते हैं। गांव का गांव हैजा से समाप्त हो जाता है। काला बुखार का नाम पहले कभी लोगों ने सुना था? पूरब मुलुक कामरू-कीमच्छा हासाम से काला बुखार वालों का लहू शीशी में बंद करके यही लोग ले आये थे। आजकल घर-घर में काला बुखार फैल गया है।... इसके अलावा बिलैती दवा में गाय का खून मिला रहता है।''[5]

रेणु के 'मैला आंचल' उपन्यास का एक पात्र डॉक्टर प्रशांत है। वह शहर से मेरीगंज गांव के लोगों का इलाज करने के लिए आया है। लेकिन जोतखी काका उसे जर्मनी का सी.आई.डी. और कम्युनिस्ट बताकर उसका विरोध करते हैं। वे खुद अपनी पत्नी के पेट का ऑपरेशन नहीं करने देते। वे कह उठते हैं- 'शिव हो! शिव हो! पराई स्त्री को बेपर्दा करने की बात कैसे उसके मुंह से निकली?' इतना ही नहीं, उपन्यास में चित्रित जोतखी काका नामक पात्र टोने-टोटके तथा ओझाई का भी समर्थन करता है। उपन्यास के एक अन्य पात्र हीरू के हंसते-खेलते बेटे की अचानक ही मौत हो जाती है, इतना सुनते ही वे बोल पड़ते हैं- 'यह डायन का कारनामा है।' इसका परिणाम यह होता है कि हीरू बेचारी गणेश की नानी को डायन मानकर उसकी हत्या कर देता है।

भारतीय ग्रामीण समाज में जिस तरह से एक-दूसरे के साथ रिश्तों की वजहें रही हैं, उसी तरह से ग्रामीण पुरुषों और स्त्रियों के बीच यौन संबंध बनने की अनेक वजहें रही हैं। रेणु ने अपने उपन्यास 'मैला आंचल' के एक केन्द्रीय पात्र के रूप में चित्रित मेरीगंज गांव में व्याप्त अनैतिक यौन संबंधों की वजह से बीमार ग्राम समाज पर व्यंग्य किया है। साथ ही मेरीगंज में फैली आर्थिक विषमताओं को भी उजागर किया है। इस उपन्यास में एक स्त्री पात्र फुलिया है। उसका गांव के ही खलासी जी से अनैतिक संबंध है। यह सब जानते हुए भी फुलिया के गरीब मां-बाप खामोश रहते हैं। मेरीगंज के ही सहदेव मिसिर भी अपने अनैतिक आचरण की सिद्धि के लिए तंत्रिमा टोली की लड़कियों के साथ रात बिताते हैं। गांव के मठ की कोठारिन लछमी पर एक नहीं तीन-तीन महंत अपनी महंती का अधिकार जमाते हैं। तहसीलदार की बेटी देर रात तक डॉ. प्रशान्त के घर बैठी रहती है। वह कुंवारी मां भी बन जाती है। उपन्यास 'मैला आंचल' में चित्रित मेरीगंज गांव में निम्न श्रेणी के लोगों के साथ छुआछूत दूसरी ओर उनकी बहू-बेटियों के साथ छिपे रूप से व्यभिचार! यह सब एक तरह से मेरीगंज गांव में आम बात हो चुकी है। इतना ही नहीं, गांव की फुलिया एक तरफ तो खलासी जी के साथ चुमौना करती है, तो दूसरी ओर सहदेव मिसिर के बारे में भी सोचती है, लेकिन अन्त में 'टीसन मास्टर' बाबू पैटमान जी के साथ रहने लगती है। उल्लेखनीय है कि रेणु ने अपने उपन्यास 'मैला आंचल' में स्त्री-पुरुष के बीच जिन अन्तरंग संबंधों का चित्रण किया है, ऐसी घटनाएं आज हमें अक्सर देखने-सुनने को प्रायः मिलती रहती है।

भारतीय ग्रामीण समाज में एक समय तक साधु-संतों और महंतों को काफी हद तक आदर व सम्मान प्राप्त था। इतना ही नहीं, ग्रामीण जनता उन्हें अपने पथ-प्रदर्शक के रूप में देखते थे, यही वजह रही है कि गांव की पंचायतों में भी उनका दखल बना रहता था। लेकिन समय के साथ इन्हीं साधु-संतों और महंतों ने धर्म और देवी-देवताओं के नाम पर ग्रामीण जनता को ठगना शुरू

कर दिया। उनके इन पाखण्डों की शिकार सबसे ज्यादा ग्रामीण युवतियां और स्त्रियां ही हुईं। इससे ग्रामीण लोगों की नजरों में उनकी छवि एक ठग और व्यभिचारी के रूप में बनती चली गई। रेणु ने अपने उपन्यास 'मैला आंचल' में ग्रामीण समाज में ढोंगी साधु-संतों और महंथों के कुकर्मों की पोल खोली है। एक बानगी देखिए- मेरीगंज गांव में सर्वप्रथम महंथ सेवादास अपनी सत्ता का उपयोग कर लक्ष्मी को जबरन अपनी दासी बनाता है। दूसरी बार लहरसिंह दास और तीसरी बार रामदास कोशिश करते हैं और लक्ष्मी से अपनी शारीरिक भूख मिटाना चाहते हैं, परन्तु गांव के जागरुक नौजवानों द्वारा मार कर भगा दिए जाते हैं।

बहरहाल, भारतीय ग्रामीण समाज की अपनी एक खास संस्कृति रही है। वहां के रीति-रिवाज और परम्पराएं अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। एक बात और, सामान्यतः भारतीय ग्राम समाज की सस्कृंति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र से मिलती-जुलती हैं, लेकिन जहां तक आंचलिक संस्कृति और रीति-रिवाज की बात है, तो वे एक क्षेत्र विशेष की पहचान को दर्शाती हैं। रेणु ने अपने इस उपन्यास में बिहार प्रांत के पूर्णिया जिले की एक खास भाषा-बोली के जरिए वहां की संस्कृति और रीति-रिवाज को व्यक्त किया है। इतना ही नहीं, उन्होंने 'मैला आंचल' में मेरीगंज गांव की पंचायत के कार्यों, शादी-विवाह, श्राद्ध-भोज, धान-रोपन जैसे अवसरों का जीवंत चित्र खींचा है। यानी गांव की पंचायत में किस तरह से फैसला होता है, किन-किन समस्याओं का फैसला पंचायत करती है और किनका नहीं। उपन्यास में चित्रित स्थलों और गांव वालों के मुठभेड़ के बाद का प्रसंग देखिए- उपन्यास का एक पात्र कालीचरन बैठते हुए कहता है, ''देखिए दरोगा साहब यदि आपस की पंचायत से सारी बात का फैसला हो जाए तो हम लोगों को पागल कुत्ते ने नहीं काटा है जो-- "आपस की पंचायत से? यह खूनी केस है---? दरोगा साहब का पानभरा मुँह एकदम गोल हो जाता है।''[6]

भारतीय ग्रामीण समाज की अपनी एक खास संस्कृति रही है। वहां के रीति-रिवाज और परम्पराएं अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। एक बात और, सामान्यतः भारतीय ग्राम समाज की सस्कृंति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र से मिलती-जुलती है, लेकिन जहां तक आंचलिक संस्कृति और रीति-रिवाज की बात है, तो वे एक क्षेत्र विशेष की पहचान को दर्शाती हैं। रेणु ने अपने इस उपन्यास में बिहार प्रांत के पूर्णिया जिले की एक खास भाषा-बोली के जरिए वहां की संस्कृति और रीति-रिवाज को व्यक्त किया है। इतना ही नहीं, उन्होंने 'मैला आंचल' में मेरीगंज गांव की पंचायत के कार्यों, शादी-विवाह, श्राद्ध-भोज, धन-रोपन जैसे अवसरों का जीवंत चित्र खींचा है।

ग्रामीण लोगों के लिए शादी-विवाह, पर्व-त्योहार और श्राद्ध-भोज आदि के अवसरों का एक विशेष महत्त्व होता है। इन अवसरों पर गांव के लोग अपनी आर्थिक स्थिति से बढ़कर रुपया खर्च करते हैं। और गांव का जो परिवार इन उक्त अवसरों पर सबसे ज्यादा धन खर्च करता है, वह गांव वालों की नजर में गांव का सबसे बड़ा (सम्पन्न) व्यक्ति माना जाता है। रेणु ने उपन्यास 'मैला आंचल' में ग्रामीण समाज के अनेक रीति-रिवाजों और ग्रामीण मानसिकता का यथार्थ चित्रण किया है। द्रष्टव्य है- ''किसने आज तक इतना बड़ा भोज किया। तहसीलदार ने अपने बाप के श्राद्ध में जाति-बिरादरी वालों को भात और गैर जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया था।''[7]

भारतीय ग्रामीण समाज में रचे-बसे लोकगीत ग्राम समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराओं की जीवंत तस्वीर पेश करते हैं। उन लोकगीतों से जहां एक ओर ग्रामीण संस्कृति की झलक मिलती है, वहीं दूसरी ओर ग्राम समाज की आर्थिक-सामाजिक स्थितियों का भी पता चलता है। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण समाज में प्रचलित इन लोकगीतों का रचयिता कोई एक व्यक्ति न होकर पूरा लोक समाज होता है। एक बात और, ये लोकगीत कोई एकांत में बैठकर नहीं रचे गए, बल्कि ग्रामीणों द्वारा अपना काम करते हुए रचे गए हैं। उपन्यास 'मैला आंचल' में रेणु ने गांव की उन स्त्रियों का भी चित्रण किया है, जो खेतों में काम करती हैं और उसी दौरान तुक पर तुक मिलाकर गीत भी गाती जाती हैं। लेकिन यही लोकगीत शहरी लोगों के लिए एक उत्सुकता का कारण बने रहते हैं। एक प्रसंग द्रष्टव्य है- 'आप भी डॉक्टर बाबू क्या पूछते हैं', तहसीलदार साहब हंसते हैं। इनकी रचना के लिए भी कोई तुलसीदास और बाल्मिकी की जरूरत है? खेतों में काम करते हुए तुक पर तुक मिलाकर गढ़ लेता है---बिछावन पर लेटकर डॉक्टर सोचता है- कोमल गीतों की पंक्तियाँ! अपभ्रंश शब्द भी कितने मधुर लगते हैं!---पिया भइले डुमरी के फूल रे पियवा भइले---।'

उपन्यास 'मैला आंचल' में चित्रित गांव (मेरीगंज) के लोगों की दयनीय आर्थिक स्थिति की भी रेणु ने यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत की है। वे मेरीगंज गांव की आर्थिक हालत का चित्रण करते हुए दर्शाते हैं कि यहां पूंजीपतियों का वर्चस्व है। जबकि गांव के किसान व मजदूरों की हालत काफी खराब है। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर सेठों और साहूकारों के वर्चस्व का चित्रण प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' में किया गया है। इतना ही नहीं, प्रेमचन्द के 'गोदान' और रेणु के 'मैला आंचल' में चित्रित किसानों और मजदूरों की स्थिति में कोई अन्तर नहीं है। रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' का यह अंश देखिए- ''अनाज के ऊँचे दर से गांव के तीन

ही व्यक्तियों ने फायदा उठाया है-तहसीलदार साहब ने, सिंघ जी ने और खेलावन सिंह यादव ने। छोटे-छोटे किसानों की जमीनें कौड़ी के मोल बिक रही हैं। मजदूरों को सवा रूपए रोज मजदूरी मिलती है, लेकिन एक आदमी का पेट नहीं भरता। कपड़े के बिना सारे गांव के लोग अर्धनग्न हैं। मर्दों ने पैंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आंगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेट कर काम चला लेती हैं, बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते हैं।''[8] देश की आजादी के समय भारतीय गांवों में आर्थिक असमानता बड़े पैमाने पर व्याप्त थी। गांवों में व्याप्त इसी आर्थिक असमानता का चित्रण रेणु ने अपने उपन्यास 'मैला आंचल' में किया है। रेणु ने 'मैला आंचल' में जिस अंचल का वर्णन किया है, उसमें गांव के अधिकांश लोग गरीब हैं। पूंजीपति वर्ग भी कम ही है। तहसीलदार जी की बेटी अच्छे सुगंधित साबुन का प्रयोग करती है। उसी गांव की एक अन्य स्त्री लक्ष्मी के पास भी पैसा है, इससे वह भी साबुन का प्रयोग करती है। इनके अलावा गांव का और कोई व्यक्ति साबुन या फिर सुगंधित साबुन का प्रयोग करने की हैसियत नहीं रखता है। एक बात और, उस गांव में तहसीलदार साहब के अलावा कोई भी चाय का सेवन नहीं करता है। वे बढ़िया चाय की पत्ती का उपयोग करते हैं। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि पूरे अचंल या फिर गांव में केवल दो-चार व्यक्ति ही हैं, जो रोजमर्रा की चीजों के उपयोग की स्थिति में हैं। एक तरह से ग्रामीण समाज में आर्थिक असमानता भी चरम सीमा को पार कर चुकी है।

गौरतलब है कि भारतीय ग्रामीण समाज में जिस तरह से आर्थिक असमानता एक समस्या रही है, उसी तरह से अशिक्षा और जातिगत भेद-भाव भी बड़ी समस्याएं रही हैं। ग्राम समाज की इन समस्याओं को रेणु ने अपने उपन्यास 'मैला आंचल' में चित्रित किया है। मेरीगंज गांव में कुछ ही लोग शिक्षित हैं। यहां शिक्षा से ज्यादा जातीय और सामुदायिक भावनाओं को महत्त्व दिया जाता है। जातीय भावनाओं के वर्चस्व की वजह से गांव में एक-दूसरे के प्रति समरसता लगभग खत्म हो चुकी है। यहां के लोग किसी त्यौहार या आयोजन के अवसर पर एक साथ एक भोजन करना तो दूर एक पंगत में बैठना भी पसंद नहीं करते। गांव में जातिगत वर्चस्व के चलते लोगों के बीच मन-मुटाव और आपसी झगड़े होते रहते हैं। मेरीगंज गांव अनेक जातियों और उपजातियों में बंटा हुआ है। उदाहरण के लिए- इस गांव के क्षत्रियों के भी अनेक वर्ग हैं। यथा-भूमफोड़ क्षत्री, तंत्रिमाटोली क्षत्री, यदुवंशी क्षत्रीटोली आदि। गांव में एक विशेष जाति के लोग अपनी उपजातियों के साथ एक साथ मिलकर भले ही न रहें, परन्तु यदि कोई गैर-जाति वाला उस जाति के किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार का आघात पहुंचाता है, तो उस पूरी जाति के लोग एक होकर गैर-जाति वाले का सामना मिलकर करते हैं। उपन्यास 'मैला आंचल' से एक प्रसंग देखिए- बालदेव जो कि अहिंसावादी समाज सुधारक है, उसे हरगौनी डाँटता-पीटता है और कहता है 'ग्वाल होकर लीडरी---?' और जब यह बात गुअरटोली को पता चलती है तब वे हरगौनी को मारने के लिए आते हैं और गांव में जातिगत संघर्ष शुरू हो जाता है।

भारतीय समाज में सामान्यतः व्यक्तियों की पहचान सबसे पहले उसकी जाति से होती है, किसी गांव या प्रांत से नहीं होती है। यह हमारे समाज की सबसे बड़ी विडम्बना है, जो अभी तक बनी हुई है और जिसे हम अभी तक झेल रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण हमारे समाज में अशिक्षा का अभाव और जातिगत भावनाओं का वर्चस्व! उपन्यास 'मैला आंचल' का प्रमुख पात्र डॉ. प्रशान्त जब मेरीगंज में आता है, उसके प्रांत या घर के विषय में बाद में पूछा जाता है या फिर उसके विषय में अनेक तरह की अफवाहें उड़ायी जाती हैं, पर सबसे पहले उसका नाम पूछने के बाद उसकी जाति ही पूछी जाती है। गांवों में अशिक्षा का अभाव है। गांव के लोगों को देश-दुनिया से कोई सरोकार नहीं। उन्हें तो बस जिन्दा रहना है। उपन्यास 'मैला आंचल' में चित्रित इस प्रसंग को देखिए-पूर्णिया में जब अंग्रेजी राज के खिलाफ गांव के लोग नारा लगाते हैं, तो कालीचरन उन्हें समझाता है कि सबसे पहले कालीचरन नारा लगाएगा-इनकिलाब। तब तुम लोग कहना-नास हो। कालीचरन जैसे ही बोलता है-इनकिलाब! गांव की अनपढ़ जनता जोर से चिल्लाती है-नास हो। दूसरी ओर पूर्णिया के संदर्भ में कालीचरन से यह सवाल पूछा जाता है कि यह समुदाय अंधभक्त तो नहीं, तो वह कहता है कि अंधभक्त तो सेवादास था सो मर गया। ऐसा नहीं है कि भारतीय ग्राम समाज की समस्त जनता अशिक्षित ही रही है। गांव के जो शिक्षित और समझदार रहे हैं, वे अंधविश्वासों पर यकीन नहीं करते थे, लेकिन वास्तविकता यह है कि ग्रामीण समाज की अधिकांश जनता अशिक्षित ही रही है। उपन्यास 'मैला आंचल' की स्त्री पात्र कमला पढ़ी-लिखी और समझदार लड़की है। अतः वह जादू-टोने और डायन जैसी बातों पर विश्वास नहीं करती। जबकि गांव की अन्य लड़कियां अशिक्षित होने की वजह से अनैतिक कार्य करती हैं, और एक-दूसरे से बातचीत के दौरान गंदी गालियों एवं शब्दों का प्रयोग करती हैं।

ग्रामीण समाज अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों और मान्यताओं से ग्रस्त रहा है। ये सब 'मैला आंचल' उपन्यास के कथानक, घटनाओं और पात्रों के जरिए स्पष्टता के साथ उभर कर आया है। मेरीगंज गांव के पूरब में एक धार है। इस गांव के लोग जिसे कमला नदी कहते हैं। गांव के लोगों में इस कमला नदी के संदर्भ में यह मान्यता है कि यहीं प्रहलाद को बचाने के लिए लहरसिंह बाबा (नरसिंह) ने अवतार लिया था। और मेरीगंज में जो कालीस्थान है, वहां कर्ण की पूजा करते थे। भारतीय ग्रामीण समाज में आर्थिक और सामाजिक

दृष्टि से पशुओं का एक विशेष महत्त्व रहा है। ग्रामीण जनता पशुओं के जरिए अपनी जीविका चलाती है। ग्रामीण लोगों में एक ऐसी सोच रही है कि जिसके पास जितने अधिक पशु हैं, वो उतना ही ज्यादा सम्पन्न और अमीर है। वैसे तो गांव के लोगों के लिए वो सभी पशु जो उनके जीवन में उपयोगी हों, महत्त्व रखते हैं, लेकिन गाय ग्रामीण जनता के लिए एक विशिष्ट स्थान रखती है। एक ग्रामीण गाय के लिए अपना सबकुछ दाँव पर लगा सकता है। इसका यथार्थ चित्रण प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'गोदान' (1936) में किया है। रेणु ने भी अपने 'मैला आंचल' में गाय के महत्त्व का वर्णन किया है। रेसमलाल कोयरी के इकलौते बेटे को हैजा की बीमारी से जब डॉक्टर प्रशान्त ने बचा लिया और ठीक हो गया, तो रेसम कोयरी डॉक्टर साहब को अपनी खुशी से एक गाय उपहार स्वरूप देता है।

रेणु ने अपने उपन्यास 'मैला आंचल' में जहां ग्रामीण समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और रूढ़ियों को अभिव्यक्त किया है, वहीं उनके अवसरवादी चरित्र को भी उजागर किया है। फिर चाहे वह तहसीलदार साहब का नेतागिरी करना हो या फिर चुन्नी गोंसाई का सोशलिस्ट पार्टी से जुड़ने का प्रसंग हो। उपन्यास का एक प्रसंग देखिए-बालदेव जब जेल से छूटकर अपनी मौसी के यहाँ आता है तो गांव वाले उसे गलत समझते हैं परन्तु जैसे ही साहब उसकी प्रसंशा करता है तो सब बालदेव की सराहना करने लगते हैं। खेलावन सिंह यादव बालदेव को अपने यहाँ रहने के लिए आग्रह करता है और उसकी पत्नी बालदेव की मौसी को अपने घर की मौसी बनाती है। दूसरी ओर लक्ष्मी से रिश्ता बनाने पर ग्रामीण जनता सेवादास से प्रणाम-बंदगी तक छोड़ देती है, लेकिन जैसे ही भंडारे की घोषणा होती है, जनमत बदल जाता है और लोग कहते हैं जैसा भी हो आखिर साधु है! यथा- ''पूड़ी-जिलेबी और दही-चीनी के भंडारे की घोषणा के बाद जनमत बदल रहा है।---कैसा भी हो, आखिर साधु है।''[9] यह एक वास्तविकता है कि पैंसठ-सड़सठ वर्ष पूर्व ग्रामीण समाज राजनीतिक चेतना की दृष्टि से काफी पिछड़ा हुआ था और कमोबेश यही आज भी है। रेणु ने अपने समय की राजनीति और राजनीतिक घटनाओं और ग्रामीण समाज पर पड़ रहे प्रभावों को करीब से देखा था। इसी से वे अपने उपन्यास 'मैला आंचल' में गांवों में होने वाली राजनीतिक हलचलों को यथार्थ ढंग से वर्णित कर सके। देश की आजादी के करीब साल-दो साल पूर्व से ही देश की राजनीतिक पार्टियां यहां की जनता के विकास और उसके शोषण को खत्म करने के नारे लगा रही थीं। लेकिन दूसरी ओर राजनीति से जुड़ रहे लोगों की मंशा स्पष्टता के साथ दिखाई दे रही थी। यानी तत्कालीन देश में जो लोग राजनीति से जुड़ रहे थे, वे किसी देश भक्ति या समाज सेवा की भावना से नहीं, बल्कि अपने स्वार्थों की वजह से जुड़ रहे थे। दूसरी राजनीतिक पार्टियों से जुड़ रहे लोगों का व्यक्तिगत चरित्र भी कोई साफ-पाक नहीं था। लेकिन तत्कालीन सभी पार्टियों में ऐसे लोग धड़ल्ले से शामिल हो रहे थे।

बहरहाल, भारत की अधिकांश जनता आज भी गांवों में रहती है। देश को आजादी मिलने के दौरान ग्रामीण जनता का जो आन्दोलन था, उसकी गूंज गांवों में सुनाई पड़ रही थी। देश के पिछड़े ग्रामीण अंचलों में भी आजादी का स्वर सुनाई दे रहा था। और लोगों में यह उम्मीद थी कि अब उनके सारे कष्ट दूर हो जाएंगे। उस समय स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान लोगों में जो सामाजिक और राजनीतिक चेतना जगी थी, वह ग्राम समाज में प्रचलित लोकगीतों में सुनाई देने लगा था। रेणु ने अपने उपन्यास में ग्रामीण अंचलों की इन आकांक्षाओं को भी संवेदनशीलता के साथ व्यक्त किया है। ''मैला आंचल' उपन्यास में देश की राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं के समानान्तर आंचलिक और राष्ट्रीय समस्याओं को उठाया गया है। इसी के साथ आंचलिक लोकगीतों, लोककथाओं, लोक जीवन और लोक संस्कृति को संवेदनापूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया है। 'मैला आंचल' उपन्यास की रचना का आधार है- 'भारत माता' जो गांव में निवास करती हैं, उसका मैला आंचल धूल से भरा हुआ श्यामल है जो खेतों में फैला हुआ है। रेणु ने मैला आंचल में ग्रामीण समाज के लगभग हर पहलू का चित्रण बहुत ही बारीकी से किया है। संक्षेप में, रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' में फूल भी, शूल भी है, धूल भी, गुलाब भी, कीचड़ भी, चंदन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी है...।"[10] यानी रेणु के इस उपन्यास में ग्राम जीवन की अच्छाइयां और बुराइयां सब कुछ यथार्थ ढंग से एक साथ उभर आया है।

कमरा नं. 21, साबरमती हॉस्टल,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

सन्दर्भ

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, पृ--247
2. फणीश्वरनाथ 'रेणु', मैला आंचल, राजकमल प्रकाशन, पृ--5 (भूमिका से)
3. वही, पृ--7
4. वही,
5. वही, पृ--9
6. वही, पृ--194
7. वही, पृ--26
8. वही, पृ--117
9. वही, पृ--26
10. वही, पृ--5 (भूमिका से)

शोध लेख

एस. आर. हरनोट की कहानियों में व्यक्त श्रमिक-स्त्री-जीवन

◆ चैताली सिन्हा

"तुम मुझे अपने तीखे और विकृत झूठों के साथ
इतिहास में शामिल कर सकते हो
अपनी चाल से मुझे गंदगी में धकेल सकते हो
लेकिन फिर भी मैं
धूल की तरह उड़ती आऊँगी।"

(माया एंजेलो, अनु. विपिन चौधरी)

एस. आर. हरनोट किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उनका लेखन ही उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय है। शिमला की पिछड़ी पंचायत व गाँव चनावग में 22 जनवरी, 1955 को जन्में हरनोट जी ने पर्वतीय जीवन की सुंदरता और जटिलताओं को जिस सूक्ष्मता से उकेरा है वह स्वानुभव से ही संभव है। किसी संचार माध्यम से प्राप्त की गई जानकारियों से नहीं।

एस.आर. हरनोट की कहानियों में निहित स्त्री जीवन और उनका सामाजिक सरोकार यह सोचने पर विवश करता है कि आज भी स्त्रियों का जीवन सहज और सरल नहीं है। आज भी स्त्री दोयम दर्जे का जीवन जीती हैं। शायद इसीलिए स्त्री को 'दुनिया का पहला दास' कहा गया है।

पर्वतीय सौंदर्य के विपरीत स्त्री-जीवन के खुरदरे यथार्थ को चित्रित करना एस.आर. हरनोट के कथा शिल्प की विशेषता है। इस घातक सौन्दर्य के भीतर घुसकर सामाजिक-यथार्थ को पकड़ लाने का साहस करते हैं हरनोट। यह एक जमीन से जुड़े हुए रचनाकार ही कर सकते हैं, जिन्होंने पर्वतीय अंचल में नजर आने वाली खूबसूरती से परे उसके भीतर की जटिलताओं और अभावों को उजागर किया है। अब तक हमारे जहन में जिन पर्वतीय अंचल का सौन्दर्य विराजमान था, उन सारे प्रतिमानों को एक-एक करके ध्वस्त करती हैं ये कहानियाँ, ऐसी कहानियाँ जो पहाड़ों के सौन्दर्य को चीरते हुए उसके भीतर प्रवेश करके वहां की दुर्गम एवं अभावग्रस्त जीवन-शैली को उकेरने का प्रयास हैं। इतना ही नहीं हरनोट की प्रायः प्रत्येक कहानी में पर्यावरण की चिंता के साथ-साथ स्त्री-जीवन की पीड़ा भी दृष्टिगत होती है। जहाँ वे बताते हैं कि किस प्रकार यहाँ की सीधी-सादी दिखने वाली जीवन-शैली के भीतर एक तनाव है। दरअसल यह तनाव उनकी स्त्री-केंद्रित कहानियों में निहित वह तनाव है जो पितृसत्ता के विरुद्ध है। कथा की वस्तु और उसकी अंतर्वस्तु दोनों ही कहानियों की पृष्ठभूमि को मजबूत बनाती हैं और पठनीय भी। वैसे तो हरनोट जी के प्रत्येक कहानी- संग्रह की अपनी एक अलग विशिष्टता है परन्तु यहाँ विशेष बल उन कहानियों पर दिया जाएगा जिनमें 'स्त्री-जीवन' एवं 'श्रमिक-स्त्री-जीवन' पर बात की गई हो। कहानी संकलन 'मिट्टी के लोग', 'दारोश तथा अन्य कहानियां', 'जीनकाठी तथा अन्य कहानियां' एवं 'लिटन ब्लॉक गिर रहा है' इत्यादि के अंतर्गत कई कहानियाँ शामिल हैं। इन कहानियों में विषयों की वैविध्यता है। इन कहानियों में एक ऐसे समुदाय या वर्ग का चित्रण है जिन्हें उनकी जड़ों से बेदखल कर देने की साजिश निरंतर चली आ रही है। उनकी समस्याओं के प्रति रचनाकार की छटपटाहट, विवशता एवं चिंता को हम इन कहानियों में देख सकते हैं। उदाहरणार्थ : "गरीबी में आटा उस समय गीला हो गया जब उस सड़क के काम पर भी कई किस्म की मशीनें पहुँच गईं। धीरे-धीरे मजदूरों के लिए मशीने चुनौती बनकर खड़ी हो गईं, जो काम बीस-तीस मजदूर करते थे, उन्हें अब लंबी-लंबी गर्दनों वाली मशीनें करने लगी थीं।"[1]

इसी से मिलती-जुलती उनकी अगली कहानी है जो मिटते अस्तित्वबोध की कहानी है, नदी का गायब होना अर्थात् हमारी जड़ों से हमारी चीजों को उखाड़ फेंकना है। नदी का गायब होना कोई जादुई शब्द लगता है परंतु लेखक ने इस शीर्षक के माध्यम से एक बहुत बड़ी समस्या को हमारे सामने रखा है, नदी का गायब होना कोई आकस्मिक घटना नहीं है बल्कि यह एक सुनियोजित योजना है जिसे धीरे-धीरे अंजाम तक पहुँचाया गया था। लेखक इसी योजना को समझाने का प्रयास करते दीखते हैं।

पहाड़ी जीवन के चितेरे हरनोट ने अपनी कहानियों में पहाड़ी जीवन का अभाव, उसमें व्याप्त समस्याएं पाठक वर्ग के सामने बहुत ही बेबाकी से रखने का प्रयास किया है जो आज और अधिक चिंता का विषय बनी हुई है। संसाधनों का अभाव, विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल आदि की कमी आस-पास बड़े अस्पतालों का अभाव पर्वतीय अंचल के लोगों के लिए कई बार जानलेवा भी सिद्ध होता है। पहाड़ों के दुर्गम मार्ग गाँव के लोगों के लिए मौत

के कारण बन जाते हैं, खासकर तब, जब किसी गर्भवती स्त्री को शहर के किसी अस्पताल में ले जाना हो। इसका उदाहरण हम उनकी मार्मिक कहानी 'चीखें' में देख सकते हैं। इस कहानी में न केवल पहाड़ी जीवन की समस्याओं पर फोकस है बल्कि पूरी की पूरी कहानी स्त्री-अस्मिता से जुड़ी हुई है, एक ऐसी कहानी जिसमें ग्रामीण परिवेश से लेकर शहरी परिवेश का संवेदनहीन चरित्र पेश किया है लेखक ने। एक स्त्री जो अपनी प्रसव-पीड़ा से कराह रही हो ऐसे में ससुराल और पति को इस बात की फिक्र ज्यादा है कि यह बेटा जनेगी या फिर से बेटी को ही जन्म देगी! "माघीराम बेटा होने के लिए भगवान् और देवताओं को की गई मन्नतों की याद दिला रहा था। रामो की चीखें जितनी तेज निकलतीं वह उतना ही देवताओं को याद दिलाता।" हमें इस स्थिति को समझने की जरूरत है। "ज्यों-ज्यों समाज का विकास होता गया, पुरुष में सत्ता का लोभ बढ़ता गया। वह अपनी संतान का स्वामित्व और संतान के माध्यम से अपनी परंपरा का नैरन्तर्य चाहने लगा। स्त्री में प्रजनन की क्षमता होते हुए भी पुरुष उसका स्वामी था, जैसे वह जमीन का स्वामी था, स्त्री की नियति थी पुरुष की अधीनता। प्रकृति की भांति पुरुष ने भी उसका शोषण किया, पुरुष के हाथ प्रार्थना में देवी के सामने झुके, लेकिन उस देवी का निर्माता वह स्वयं था।"[3]

इन सबके बावजूद भी 'चीखें' कहानी में रामो जिस प्रकार पितृसत्तात्मक समाज से होड़ लेती है, उनका प्रतिरोध करती है, यह आज के भूमण्डलीकरण के दौर में आधुनिक समय के जागरूक महिला सशक्तीकरण का उदाहरण है, यही कारण है कि कहानी के अंत में जब रामो को बेटी पैदा होती है तो वह फुले नहीं समाती। लेकिन पुरुष वर्चस्ववादी समाज में जहाँ लड़की को अभिशाप माना जाता रहा है, उसे कोख में आते ही उसका गला घोंट दिया जाता है, लिंग की जांच कराई जाती है, वहां स्त्री-अस्मिता की बात करना बेमानी-सा लगता है। हम जानते हैं कि किसी स्त्री के गर्भ से पुत्र या पुत्री का जन्म होना पुरुष के गुणसूत्रों (Y FACTOR) पर निर्भर करता है न कि स्त्री के ऊपर निर्भर करता है। परंतु हमारे समाज की दकियानूसी सोच इसके लिए सदैव ही स्त्री को जिम्मेदार ठहराता आया है, परिणामतः स्त्री आज भी प्रताड़ित होने को विवश है। पितृसत्तात्मक समाज का उदय होना ही स्त्री जीवन के लिए कष्टदायी साबित होना रहा है, एंगेल्स ने कहा भी है कि "मातृसत्ता से पितृसत्तात्मक समाज का अवतरण वास्तव में स्त्री जाति की सबसे बड़ी ऐतिहासिक हार थी।"[4]

उपर्युक्त कथन को और सपष्ट करते हुए प्रसिद्ध नारीवादी कार्यकर्ता कमला भसीन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'नारीवाद क्या है?' में पितृसत्ता क्या है और किसे कहते हैं, पर विस्तृत चर्चा की है। उदाहरणार्थ : सिल्विया वैल्वी नामक नारीवादी विद्वान का यह कथन देख सकते हैं - "यह सामाजिक ढांचों और रिवाजों की एक व्यवस्था है जिसके अंतर्गत पुरुष स्त्रियों पर अपना प्रभुत्व जमाते हैं, उसका दमन और शोषण करते हैं।"[5]

इस शोषण और दमन का प्रमाण हमें आंकड़ों में भी दर्ज मिलता है जिनमें लिंगानुपात से लेकर स्त्रियों की शिक्षा के प्रतिशत का आंकड़ा, प्रतिवर्ष स्त्रियों की मृत्यु और संपत्ति पर उनके अधिकार इत्यादि विषय शामिल किये गये हैं।

"सन 1901 में प्रति 1000 पुरुषों के पीछे 972 स्त्रियाँ थीं और सन 1991 तक इनका अनुपात घटकर प्रति 1000 पुरुषों के मुकाबले 927 रह गया। इसका एक अन्य उदाहरण यह भी है कि भारत में स्त्रियों की जैविकीय (BIOLOGICAL) श्रेष्ठता के बावजूद उनकी मृत्यु दर अधिक है। हर छठी बालिका शिशु की मौत लैंगिक भेदभाव व उपेक्षा के चलते होती है। इसके अतिरिक्त स्त्रियाँ न सिर्फ अधिक काम, कुपोषण अर्थात् स्वास्थ्य सुरक्षा, बार-बार गर्भधारण का शिकार होती हैं, बल्कि दहेज को लेकर उत्पीड़न, पति के हाथों पिटाई और बालिका शिशु हत्या (INFANTICIDE), जैसी व्यवस्थित हिंसा का भी शिकार होती हैं।" शायद इसीलिए "जॉन स्टुअर्ट मिल और स्टेंडाल ने माना है कि किसी क्षेत्र में स्त्री को कभी कोई सुविधा मिली ही नहीं।" राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार सन 2011 तक स्त्रियों को रोजगार के इतने अवसर मिले हैं जितने पहले कभी नहीं मिले। लेकिन "आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण रिपोर्ट (2017-2018) के मुताबिक, देश में आजादी के सात दशकों के बाद पहली बार नौकरियों में शहरी स्त्रियों की भागीदारी अधिक हो गई है। शहरों में कुल 52.1 प्रतिशत स्त्रियाँ और 45.7 प्रतिशत पुरुष कामकाजी हैं। परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियाँ नौकरियों में अभी भी पुरुषों से पीछे हैं। हालांकि पिछले छह वर्षों में उनकी भागीदारी दोगुनी हुई है और यह 5.5 प्रतिशत से बढ़कर 10.5 प्रतिशत तक पहुंच गई है।" "शहरी कामकाजी स्त्रियों में से 52.1 प्रतिशत नौकरी-पेशा, 34.7 प्रतिशत स्वरोजगार तथा 13.1 प्रतिशत अस्थायी श्रमिक हैं।"[9]

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक बहुत अच्छी बात कही थी कि 'आप किसी राष्ट्र में महिलाओं की स्थिति देखकर उस राष्ट्र के हालात बता सकते हैं।" सच है। इस कथन के पीछे उनका मंतव्य यही था कि किसी भी राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में स्त्रियों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। इसे हमारे सड़े हुए समाज की त्रासदी कहा जाए या उनका दुःख ! जहाँ एक तरफ तो स्त्री को देवी की संज्ञा दी जाती है, तो दूसरी तरफ रण्डी की गाली से नवाजा जाता है ! ये जो समाज का दोहरा चरित्र है, क्या इसका मूल्यांकन नहीं होना चाहिए? क्या इतना ही काफी नहीं कि स्त्री को केवल स्त्री होने के नाते ही सम्मान मिले ! स्त्रियों के प्रति बढ़ते अपराध समाज में स्त्रियों की हीन दशा को दर्शाता है। "वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, देश में महिला साक्षरता दर मात्र 64.46 फीसदी है, जबकि पुरुष साक्षरता दर 82.14

फीसदी है। उल्लेखनीय है कि भारत में स्त्रियों की साक्षरता दर विश्व के औसत 79.7 प्रतिशत से काफी कम है।" देश में अनुमानतः 24 करोड़ 50 लाख स्त्रियाँ निरक्षर हैं। वर्तमान में भारत में स्त्री साक्षरता दर 65 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त भारत में स्त्री-स्वास्थ्य की स्थिति चिंताजनक है, यहाँ लगभग 50 प्रतिशत विवाहित स्त्रियों में रक्त की कमी है, भारत में 14.5 प्रतिशत माताओं की मृत्यु का कारण असुरक्षित गर्भपात है, जबकि स्त्री-स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए गर्भपात को वैधानिक करार दिया गया है। "हालांकि गर्भपात औरतों के अधिकारों के सबसे विवादास्पद मुद्दों में से एक बना रहा है। भारत में गर्भ के चिकित्सकीय अंत अधिनियम (MEDICAL TERMINATION OF PREGNANCY), 1972, द्वारा गर्भपात कानूनी घोषित किया गया था, परंतु आज भी अधिकांश औरतों को सुरक्षित गर्भपात सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं।"[11] हाँ ये अवश्य कह सकते हैं कि आज हालात थोड़े सुधरे हैं। जैसे कि "2016 में प्रसव के समय माँ की मृत्यु के आंकड़ों में प्रायः 12 हजार की कमी आई है और ऐसी स्थिति में मातृ मृत्यु दर का कुल आंकड़ा पहली बार घटकर 32 हजार पर आ गया है।[12] स्त्री-संघर्ष पर आधारित कहानी 'चीखें' में कहीं-न-कहीं उपर्युक्त सभी स्थितियां दृष्टिगत होती हैं, परंतु जहाँ तक श्रमिक-स्त्री का जीवन है वह श्रम विकास सूचकांक में दर्ज नहीं हो पाता, अरविन्द जैन 'मर्दों के लिए घर आशियाना और औरत के लिए जेलखाना है।' शीर्षक लेख ('स्त्रीकाल', 16 जून 2014) में लिखते हैं, "अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (संयुक्त राष्ट्र) की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की 98 प्रतिशत पूंजी पर पुरुषों का कब्जा है, पुरुषों के बराबर आर्थिक और राजनीतिक सत्ता पाने में औरतों को अभी भी हजार वर्ष लगेंगे।" कटु सत्य है जिसे स्वीकार करने में गले में एक धसक सी लगती है, जबकि सच तो यह है कि यदि घरेलू कामकाजी स्त्रियाँ काम करना बंद कर दें तो भारत की अर्थव्यवस्था चौपट हो जाएंगी, इसका उदाहरण हमें इस कहानी में भी दिखाई देती है, जहाँ लेखक स्त्री-श्रम पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं - "उसकी घरवाली रामो खूब सुरमी थी, वह घर का सारा काम संभालतीं उसके पास एक बैल जोड़ी, तीन गायें और सात-आठ भेड़-बकरियां थीं, जिन्हें उसने खूब पाला था।" भूमंडलीकरण और उदारीकरण की नीतियों से वह परिचित नहीं है। मृणाल पाण्डे के अनुसार - वर्ष 1993 का बजट महिला कामगारों के जीवन से सीधे जुड़े क्षेत्रों को जिस दृष्टि से देखता है। वह वस्तुतः भारत की महिला आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा है, और वह है कृषि क्षेत्र की महिलाएं। वह लिखती हैं - "आयातित कृषि तथा खाद्य प्रसंस्करण सामग्री पर आयात शुल्क में भारी छूट। यानी धान की रोपाई को भी मशीनें आ रही हैं। हाथ से होने वाली रोपाई की अपेक्षा इस तरह लगाया धान ज्यादा सस्ता होगा। पर बेदखल हुई धान रोपनेवाली वे औरतें कहाँ जायेंगी, यह शायद वित्त मंत्रालय का सिरदर्द नहीं।" उसके किए हुए श्रम को 'अनुत्पादक श्रम' माना जाता है जबकि सर्वेक्षण में घरेलू कामों से सकल राष्ट्रीय आय और बचत में इजाफा होती है इनकी प्रतिभागिता से। जाहिर है जिस कामगार स्त्री को लेखिका हमारे समक्ष प्रस्तुत कर रही हैं वह रामो से इतर नहीं हो सकती। वह भी रामो या अमरो जैसी ही कोई श्रमिक-स्त्री होगी। अमरो एक ऐसी श्रमिक-स्त्री है जो हथकरघा के कार्यों में कुशल है। हथकरघा उद्योग में जिस बड़े पैमाने पर कामगार स्त्री-श्रमिकों की छंटाई हुई है उस पर भी मृणाल पाण्डे ने प्रकाश डाला है कि किस तरह - "पावरलूम लगने से हथकरघा बुनकरों में भी महिलाएँ बेदखल हुई हैं। मुंबई तथा बंगलौर की झोंपड़पट्टियों में रहनेवाली लाखों औरतें जिस तरह बहुराष्ट्रीय कंपनियों के टूथपेस्ट, क्रीम, टेलकॉम पाउडर जैसे उत्पादों को डिब्बाबंद करने के काम में जुटी हुई हैं, शायद वैसी ही कुछ नियति उन औरतों की भी होगी जो छोटी स्वदेशी फैक्ट्रियों की तालाबंदी या छंटनी की शिकार होंगी।" साफ तौर पर देखा जाए तो हाड़तोड़ परिश्रम का पारिश्रमिक शून्य के बराबर है। स्त्री-श्रमिकों की इस स्थिति पर काम करने की जरूरत है। स्त्री-श्रम से संबंधित दूसरी कहानी है 'मिट्टी के लोग' जिसमें अमरो के माध्यम से स्त्री-श्रम एवं हथकरघा शैली पर विशेष बल दिया गया है। साथ ही स्त्री को शिक्षा से वंचित रखने की दलीलें भीं इसके अतिरिक्त लेखक ने अपनी इस कहानी में स्त्री-श्रम के महत्त्व को भी बताने की चेष्टा की है - "गजब की कला है अमरो के हाथ में। पत्तों से बनी बहुत सी कलाकृतियाँ तहसील तक के स्कूलों और दफ्तरों की दीवारों में लगी है से जो चीज बनाती है, लगता है किसी मशीन से बनी होगी।"[16] लेकिन यह महज एक भुलावे की प्रशंसा है। वास्तविक छवि सदैव ओझल है, एक षड्यंत्र के तहत। इस षड्यंत्र को प्रभा खेतान ने उजागर करते हुए लिखा है कि "विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार 1965 से 1990 के बीच पूर्वी एशिया की आर्थिक विकास दर उच्च कोटि की रही। एशिया के 23 देशों में, अन्य सभी देशों की तुलना में ज्यादा प्रगति हुई। जिसका प्रमुख कारण बाजार-व्यवस्था को बताया गया। लेकिन इस रिपोर्ट में ऐसा बहुत कुछ है जिस पर खामोशी बरती गई। क्योंकि इन देशों की सफलता की कीमत चुकाई वहाँ की गरीब स्त्रियों ने।[17] इस कहानी का दूसरा पक्ष देखा जाए तो इस कहानी में भी स्त्री-शोषण को केन्द्रित किया गया है, जहाँ एक ही परिवार में माँ और बेटी दोनों का शोषण साथ-साथ एक ही खानदान के लोगों द्वारा किया जाता है। गरीब तथा दलित स्त्री का शोषण समाज के धनाढ्य वर्गों द्वारा किया जाता है। परन्तु दलित स्त्री या कहें जिसके पास खोने के लिए कुछ नहीं होता उन्हें किसी से डर नहीं लगता। न घर में और न ही बाहर, वह निडर हो जाती है। सीमोन द बउआर ने पुस्तक 'स्त्री के पास खोने के लिए कुछ नहीं' में इसी बात का सुझाव दिया है कि "औरत की मुक्ति के लिए हमें

आज और अभी संघर्ष करना चाहिए, इससे पहले कि समाजवाद का हमारा स्वप्न पूरा हो। इसके साथ ही मुझे यह भी लगता है कि समाजवादी देशों में भी स्त्रियों और पुरुषों के बीच वास्तविक बराबरी हासिल नहीं की जा सकी है। इसलिए अब यह बहुत जरूरी हो गया है कि स्त्रियाँ अपना भविष्य स्वयं अपने हाथों में लें।"[18] उक्त कथन को सार्थक करती है रामेशरी की यह गर्जना - "चौधरी ! अपने इस हरामी को बाहर कर। देखती हूँ इसकी माँ ने कितणा दूध पलाया है इस लफंगे को। अमरो ने तो इसके दो दांत ही तोड़े हैं, मैंने इसकी गर्दन न काट दी तो रामेशरी न बोलियो।"[19] हरनोट जी के यहाँ प्रायः स्त्री का मुखर रूप ही लक्षित होता है, जहाँ स्त्री अपना प्रतिरोध दर्ज कराती हुई दिखाई देती हैं। अपनी अस्मिता को बचाने की जद्दोजहद करती रामेशरी और बेटी अमरो पहले अपने घर में और फिर समाज, दोनों से लोहा लेती है। घर में रामेशरी का पति है जो दोनों की ही अस्मिता पर चोट करता है, जब वह कहता है कि- "रांड, महाराणी बन के बैठी रहती है। न खुद कुछ करती है, न अपनी इस लाडली को कमाणे देती से गाँव में जमींदारों का इतणा काम पड़ा है उसको करते अब तुम्हारे को शर्म आने लगी है। मेरे से नी होता अब कुछ कि तुम्हारे को बैठ के खिलाया करूँ। रण्डी निकल जा यहाँ से और इन अपणे जायों को भी साथ ले जा...।"[20]

स्त्रियों को गाली देने की यह जो परंपरा हमारे समाज ने विकसित की है वह परंपरा भी उसी पुरुष प्रधान सोच की परंपरा पर आधारित है। जहाँ स्त्री को 'रण्डी' कहकर पुरुष समाज अपनी कुंठा का विरेचन करते हैं। गाली देते समय जिस रस का वह पान करते हैं वह पुरुष की अतृप्त कामेच्छा को दर्शाता है। मर्दवादी भाषा का विकास भी इसी सोच से फली-फूली होगी इसमें कोई संदेह नहीं। इस गाली की परंपरा को हम यूँ भी समझ सकते हैं, "स्त्री के स्वभाव को दोहरी प्रकृति वाला माना जाता है से वह देवी और वेश्या दोनों है। उसे नियंत्रित तथा वश में रखने के लिए किसी पुरुष का होना अनिवार्य है। सिर्फ पुरुष ही स्त्री स्वभाव के सकारात्मक पहलुओं को विकसित कर सकता है तथा नकारात्मक पक्षों का दमन कर सकता है। इसलिए स्त्रियों की पूजा भी की जाती है और उनका तिरस्कार भी।"[21] शायद इसीलिए जर्मेन ग्रीयर ने अपनी पुस्तक 'बधिया स्त्री' में कहा है कि- "हमारा समाज सिर्फ उन्हीं संबंधों को मान्यता देता है और पूरी सुविधाओं के साथ प्रतिष्ठित करता है जो बाँधनेवाली, सहजीवी और आर्थिक रूप से निर्धारित हैं।"[22]

पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के मानवाधिकार के संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि स्त्रियों के अधिकार मानवाधिकार हैं और स्त्रियाँ केवल लैंगिक भेदभाव के कारण अन्याय का शिकार बनती हैं। इसी कहानी में हम देखते हैं कि यह न केवल स्त्री समस्या पर बात करती दिखाई देती हैं अपितु स्त्री अस्मिता की लड़ाई को भी पुरजोर तरीके से पेश करते हैं। हम कह सकते हैं कि स्त्री- अस्मिता की लड़ाई की शुरुआत भी इसी संघर्ष और असमानता की लड़ाई के कारण हुई होगी। समान काम के लिए समान वेतन की मांग और स्त्री पारिश्रमिकों की गिनती न होने के एवज में ये आंदोलन उग्र हुए। आगे चलकर इस मुद्दे पर कई महत्वपूर्ण आंदोलन हुए जिसे हम राधा कुमार की पुस्तक 'स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800-1990)' में देख सकते हैं।

स्त्री-जीवन से जुड़ी लेखक की अगली कहानी है, 'लाल होता दरख्त'। इस कहानी में हमें लोक-परंपरा और बाल-विवाह दोनों दिखाई देते हैं। इसे सामाजिक कुरीति कहें या अंधविश्वास या हमारी सड़ी-गली कुप्रथाएं। आज भी अपनी झूठी शान और दिखावे के लिए छोटी-छोटी बालिकाओं का विवाह करा दिया जाता है। सिर्फ यह सोचकर कि बड़ी होकर कहीं ये खानदान का नाक न कटा दे। वैसे भी बेटियां पराया धन होती हैं तो उसे पराये घर तो जाना ही है, "बेटी पराए घर का धन है, उसे घर का सारा काम आना चाहिए, इसलिए इस छोटी-सी उम्र में मुन्नी हर काम में आगे है।"[23] छोटी उम्र में बालिकाओं का विवाह करा देना न सिर्फ उसके स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करना है बल्कि किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए खतरा भी है। बाल-विवाह से राष्ट्र और समाज दोनों को हानि होती है। इस पर 'द जेसोर इंडियन एसोसिएशन' (विशेष रूप से बरहम मालाबारी के नेतृत्व में) ने टिप्पणी करते हुए लिखा, "छोटी उम्र में विवाह होने से राष्ट्र की भौतिक शक्ति का ह्रास होता है। इसके कारण राष्ट्र की प्रगति एवं विकास तो अवरुद्ध होता ही है, बाल-विवाह लोगों के साहस एवं ऊर्जा को भी प्रभावित करता है। कम उम्र में हुआ विवाह समूची पीढ़ी को निर्बल एवं रुग्ण बना देता है।"[24]

यह तो हुआ इसका सामाजिक कारण परंतु इसके वैज्ञानिक कारणों पर ध्यान दें तो देखेंगे कि बाल-विवाह से सिर्फ और सिर्फ स्त्री शरीर की हानि होती है पुरुष शरीर की नहीं। सर्जन मेजर डी. एन.पारिख,(चीफ फिजीशियन, गोकुलदास तेजपाल हॉस्पिटल बॉम्बे) के मतानुसार, "कच्ची उम्र में विवाह होने के कारण स्त्रियों के प्रजननांगों का ठीक प्रकार से विकास न हो पाने तथा हड्डियों के जोड़ सुदृढ़ न होने के कारण स्त्रियों को बड़े पैमाने पर शिशु जन्म के समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कई बार तो स्त्रियों की मृत्यु तक हो जाती है।"[25] कई बार ऐसे बच्चे विकलांग भी पैदा होते हैं।

दूसरी ओर इस कहानी में जिस लोक-परंपरा के माध्यम से पेड़-पौधों के साथ छोटी लड़कियों के विवाह करा देने की प्रथा दिखाने की लेखक ने चेष्टा की है वह प्रथा आज भी मौजूद है। हरनोट जी लिखते हैं , "आँगन की तुलसी का विवाह विधिपूर्वक बेटी के विवाह जैसा होता है।...इसे बड़ा धर्म माना जाता है।"[26] लेखक के अनुसार पहाड़ी अंचलों में आज भी प्राचीन परंपरानुसार

पीपल का विवाह बेटे की तरह होता है। जैसे मुन्नी का हो गया था विवाह पीपल के पेड़ से ! बहुत ही गंभीर और मार्मिक कहानी है यह जिसमें स्त्री संवेदना की चरम व्यथा देखी जा सकती है। लड़कियों को बोझ समझने और पराए घर भेजने की जद्दोजहद में उसका सारा बचपन, सारा यौवन, सारी इच्छाएं कब तिरोहित कर दी जाती है पता ही नहीं चलता। उसकी अधूरी शिक्षा जिसे वह कभी पूरा नहीं कर पाई समाज की बलि चढ़ गई। बेटी को शिक्षित करने की चिंता से ज्यादा उसे ब्याह देने की चिंता महत्वपूर्ण हो जाती है हमारे समाज के लिए। जो धन उसकी शिक्षा में खर्च करने के लिए सोचना चाहिए वह दहेज इकट्ठा करने के लिए सोचने में लगा देते हैं माता-पिता। समाज की इस कुरीति से स्त्री का कभी भला नहीं हो सकता यदि किसी घर में एक स्त्री शिक्षित होती है तो उससे दो परिवार (अपना और पति का) शिक्षित होता है। पूरा समाज शिक्षित होता है। परंतु आज भी स्त्रियों को किताबी ज्ञान कम और रसोई का ज्ञान अधिक दिया जाता है। पढ़-लिखकर क्या करेगी, खाना ही तो बनाएगी ! कितना हास्यास्पद है यह, स्त्री की यही नियति बना दी गई है।

निष्कर्षतः हरनोट जी की प्रायः प्रत्येक कहानी पहाड़, वन, पशु एवं पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करने की हिमायती हैं। प्रत्येक कहानी में दलितों की समस्या, स्त्री समस्या, जल, जंगल, जमीन की समस्या पर चिंता व्यक्त करते नजर आते हैं। उभयलिंगी अर्थात् किन्नर समुदाय की वास्तविकता पर गहन अध्ययन का परिचय देते हुए किन्नर एवं हिजड़ा जैसे प्रचलित शब्दों का स्पष्ट भेद भी करते दिखाई देते हैं। ब्राह्मण एवं दलित समुदायों के बीच का टकराव अमूमन हर कहानी में बयां हुआ है। इनके साक्ष्य हैं संग्रह की समस्त कहानियाँ जिनके नाम हैं, 'सड़ान', 'चीखें', मिट्टी के लोग', बेजुबान दोस्त', 'दीवारें', 'किन्नर', 'नदी गायब है', 'अ-मानव' एवं 'नंदी मेनिया'। ये कहानियाँ छोटी मुँह बड़ी बात कहती हैं और पाठक वर्ग को सोचने-विचारने के लिए विवश करती हैं।

एक दूरदर्शी रचनाकार का महत्त्व इसी बात में है कि वे भविष्य को भांप लेते हैं। आनेवाला समय कैसा रूप ले सकता है इस बात का उन्हें आभास हो जाता है। जैसे कवियों के लिए यह उक्ति है कि 'जहाँ पहुंचे कवि वहां न पहुंचे रवि' ठीक यही उक्ति लेखक के लिए भी उपयुक्त है। एस. आर. हरनोट की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने छोटी-से-छोटी चीजों को भी अपनी कहानी का विषय बनाया है। इसे उनकी कलात्मकता ही कहा जाएगा। कहानी के कथानक (प्लॉट) का ताना-बाना वे ऐसे क्षेत्रों से चुनते हैं जो पाठक वर्ग को क्षण भर के लिए आश्चर्य में डाल देता है।

हरनोट जी ने अपनी कहानियों में स्त्री श्रम को कहीं भी नजरंदाज नहीं किया है। प्रायः हर कहानी में उन्होंने स्त्री कामगारों की बात अवश्य की है। इससे उनके स्त्रीवादी दृष्टिकोण का पता चलता है जो कहीं-न-कहीं स्त्री-पुरुष समानता को दर्शाता है। ये कहानियाँ अपने साथ कई विषयों को आपस में समेटे हुए हैं।

हरनोट जी की कहानियों को पढ़ते हुए जो बात मन में खटकती है वह है कहानी का बड़ा कलेवर। कहीं-कहीं ऐसा लगता है कि कहानी में अनायास ही विस्तार दे दिया गया है। कई घटना-प्रसंगों को पढ़ते हुए ऐसा महसूस होने लगता है कि कुछ चीजों को नहीं भी जोड़ते तो कहानी में तब भी उतना ही प्रभाव पड़ना था जितना कि उन्हें जोड़ने से पड़ रहा है। कहानी की विशेषता उसके छोटे कलेवर में ही है। लम्बी कहानियां, कहानी को अक्सर बोझिल और नीरस बना देती हैं। भाषा सरल-सहज रूप में है जो समझने के लिए उपयुक्त है परंतु कहीं-कहीं बेमेल शब्दों का प्रयोग खटकने लगती है। जैसे कई स्थानों पर एक शब्द पढ़ने को मिलता है, 'जैसे-कैसे'। यहाँ जो सटीक शब्द होना चाहिए वह 'जैसे-तैसे' होनी चाहिए।

अंततः उपर्युक्त जिन कहानियों पर यहाँ चर्चा की गई है वह कुछ गंभीर विषयों को छू रही थीं, जिनपर और गहन अध्ययन संभव है। पहाड़ों की सुंदरता, पर्यावरण की शुद्धता और पर्वतीय इलाकों में बसते जीवन, उनके भीतर मौजूद स्त्री-संघर्ष आदि इन सभी का समावेश हमें हरनोट जी की कहानियों में ही मिलता है यह कहना अनुचित नहीं होगा। एक सजग रचनाकार होने का परिचय वे अपनी कहानियों के माध्यम से देते हुए दिखाई पड़ते हैं।

शोधार्थी जे.एन. यू. द्वारा धर्मपाल, कमरा सं. 401/1 सीडी, मुनिरका बुद्ध विहार, जेएनयू के निकट, दिल्ली-110067

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची

1) एस. आर. हरनोट, 'मिट्टी के लोग', आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, एस.सी.एफ. 267, सेक्टर-16, पंचकूला- 134113 (हरियाणा), प्रथम संस्करण : 2010, पृष्ठ. 29
2) वही, पृष्ठ. 108
3) प्रभा खेतान, 'स्त्री : उपेक्षिता ', हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण : 1998, पृष्ठ 53
4) प्रभा खेतान, 'स्त्री : उपेक्षिता ', हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण : 1998, पृष्ठ 52
5) कमला भसीन, 'नारीवाद क्या है?', ग्रामोन्नति संस्थान, नरसिंह कुटी के पास, गांधीनगर, महोबा-210427, पृ. 4
6) साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता (संपा.), 'नारीवादी राजनीति : संघर्ष एवं मुद्दे', हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, बैरक नं.2 एवं 4, केवेलरी लाइन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली -110007, प्रथम संस्करण : 2001, पृष्ठ. 219, 300
7) प्रभा खेतान, 'स्त्री : उपेक्षिता', हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण : 1998, , पृष्ठ 67

नई कलम/कविता

बचपन की मेरी सुंदर दुनिया

इक बार फिर बनना चाहूं मैं मुनिया
रूठूं मैं तो खूब मनाते
हठ पर मेरे सब इतराते

ढेर खिलौने बाजे गाजे
जगह-जगह पर वो साजे
अम्मा की डांट, पिता का प्यार
बस इक घर सब संसार।

कागज की कश्ती
पानी में मस्ती
चवन्नी की वो मीठी गोली
खूब मनाते थे, रंगों की होली।

पीपल का पेड़
तुलसी का पौधा
मिल कर रहता था, इक दूजा
दिन प्रति होती थी, घर में पूजा।

दिन जन्म का जब आता
मन सबका फूला न समाता
लड्डू बंटते, दावत होती
उपहारों की मंडी, खूब थी सजती।

'मैं रोती, दुनिया हंसती
चुल-बुल, नट-खट थी मेरी हस्ती
गुड्डे की गुड़िया बनकर
नखरे 'उसको' खूब दिखाती
बचपन की मेरी सुंदर दुनिया।

कुलदीप कुमार 'अबोध'
गांव बड़ाहीं, डाकघर कोट, तहसील बल्द्वाड़ा,
जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश, मो. 0 94186 92247

8) https://www.drishtiias.com.hindi
9) वही/ 10) वही
11) साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता (संपा), 'नारीवादी राजनीति : संघर्ष एवं मुद्दे', हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली -110007, प्रथम संस्करण : 2001, पृष्ठ 295-296
12) https://www.drishtiias.com.hindi
13) एस.आर. हरनोट, 'मिट्टी के लोग', आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, एस.सी.एफ.267, सेक्टर-16, पंचकूला-134113 (हरियाणा), प्रथम संस्करण : 2010 य पृष्ठ.103
14) मृणाल पाण्डे, 'परिधि पर स्त्री', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण : 2017, पृष्ठ. 53-54
15) मृणाल पाण्डे, 'परिधि पर स्त्री', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण : 2017, पृष्ठ. 55
16) एस.आर. हरनोट, 'मिट्टी के लोग', आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, एस.सी.एफ. 267, सेक्टर-16, पंचकुला- 134113 (हरियाणा), प्रथम संस्करण : 2010, पृष्ठ. 27
17) प्रभा खेतान, 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ', वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002, संस्करण : 2004, पृष्ठ 89
18) मनीषा पांडेय (अनु.) 'स्त्री के पास खोने के लिए कुछ नहीं है', संवाद प्रकाशन, आई-499, शास्त्रीनगर, मेरठ- 250004 (उ. प्र.), पहला संस्करण : फरवरी, 2004 : पृष्ठ 39, (मुंबई : मेरठ)
19) एस. आर. हरनोट, 'मिट्टी के लोग', आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, एस.सी.एफ. 267, सेक्टर-16, पंचकूला- 134113 (हरियाणा), प्रथम संस्करण : 2010 : पृष्ठ. 37
20) वही, पृष्ठ. 39
21) प्रभा खेतान, 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ', वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002, संस्करण : 2004, पृष्ठ. 125
22) जर्मेन ग्रीयर, 'बधिया स्त्री', (अनु.) मधु बी.जोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पहला संस्करण : 2001, पृष्ठ 20
23) एस.आर. हरनोट, 'दारोश तथा अन्य कहानियां', आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, एस.सी.एफ. 267, सेक्टर- 16, पंचकूला-134113 (हरियाणा), प्रथम संस्करण : 2001, पृष्ठ 70
24) राधा कुमार, 'स्त्री संघर्ष का इतिहास : 1800, 1990', वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002, संस्करण : 2002, आवृत्ति : 2014, पृष्ठ. 61
25) वही, पृष्ठ. 61
26) एस. आर. हरनोट, 'दारोश तथा अन्य कहानियां', आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, एस.सी.एफ. 267, सेक्टर-16, पंचकूला-134113 (हरियाणा), प्रथम संस्करण : 2001, पृष्ठ. 81

आलेख

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि

◆ डॉ. कौशल्या देवी

भारतीय जनमानस को सहस्रो वर्षों से प्रभावित करती आ रही है 'रामकथा' को सर्वप्रथम काव्यरूप में निबद्ध करने वाले महर्षि वाल्मीकि है। संस्कृत वाङ्मय में रामायण को 'आदिकाव्य' कहा जाता है इसलिए इनको 'आदिकवि' कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड में इस रामायण को 'ऋषिप्रोक्त' कहा गया है। जो धर्म, यश तथा आयु को बढ़ाने वाला एवं विजय दिलाने वाला काव्य है। जो व्यक्ति क्रोध को जीतकर इसे सुनता है वह बड़े-बड़े संकटों से मुक्त हो जाता है। इसको सुनने से एक परदेसी अपने बन्धु-बान्धवो से मिलकर आनन्दित होकर मनचाहा फल प्राप्त करता है।

वाल्मीकि रामायणानुसार वाल्मीकि भृगुवंशीय है जिन्होंने चौबीस हजार श्लोकों और एक सौ उपाख्यान की वाल्मीकि रामायण लिखी। इसमें तो इन्हें भगवान वाल्मीकि कहा गया है। जिन्होंने मन, वाणी तथा कर्म से कभी भी पाप नहीं किया है। एक अन्य प्रसंगानुसार उन्हें 'प्राचेतस' कहा गया है जो सीता की शुद्धता का प्रमाण देते हुए राम से कहते हैं कि मैं प्रचेता का दसवां पुत्र सत्य कहता है कि लव और कुश आपके पुत्र हैं। मैंने आज तक कभी झूठ नहीं बोला। वह दयावान और करुणा हृदय व्यक्ति है जो तमसा नदी पर स्नान करते वक्त मधुर बोली बोलते हुए विचरण करने वाले क्रौंच नामक जोड़े में से मादा क्रौंची की करूणाजनक चित्कार सुनकर दुःखी हो जाते हैं और उनके मुख से अकस्मात ही पक्षी को मारने वाले निषाद के लिए श्राप निकल जाता है -

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

इसके पश्चात् ब्रह्माजी इसी छन्दोमयी वाणी में वाल्मीकि जी को रामायण लिखने को कहते है। उनके अनुसार महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखी गई रामायण कथा का प्रसार इस संसार में तब तक रहेगा जब तक पर्वतों और नदियों की सत्ता विराजमान रहेगी और रामकथा के प्रचार तक महर्षि वाल्मीकि स्वर्ग, धरती और ब्रह्मलोक में इच्छानुसार निवास कर सकते हैं।

महर्षि वाल्मीकि राजा दशरथ के सखा थे क्योंकि जब श्रीराम सीता माता का त्याग कर वन में छोड़ते हैं तो सीता को छोड़ने गए लक्ष्मण कहते हैं कि आप यहां सुख पूर्वक रहो क्योंकि मेरे पिता के घनिष्ट मित्र महायशस्वी वाल्मीकि मुनि का आश्रम यहीं पर है। उन्हें सीता पुत्र लव-कुश का गुरु माना जाता है। यह बात श्रीराम के अश्वमेघ यज्ञ के समय सिद्ध होती हैं जब वाल्मीकि लव-कुश को शिष्य कहकर रामकथा का गायन करने को कहते हैं।

वाल्मीकि सीता की शुद्धता का प्रमाण देते हुए कहते हैं कि सीता उत्तम व्रत का पालन करने वाली धर्म परायणा स्त्री है। जिसे आपने लोकापवाद के भय से मेरे आश्रम के नजदीक छोड़ा था और मैंने पाँचो इन्द्रियों तथा मन बुद्धि के द्वारा इसकी शुद्धता का निश्चय करके इसे संरक्षण दिया था। इससे महर्षि वाल्मीकि पूर्णतया जितेन्द्रिय प्रतीत होते हैं। परन्तु प्रारम्भिक काल में वह एक चोर थे। अध्यात्म रामायण के अनुसार पूर्व समय में वह किरातों के साथ रहते थे। वह जन्म से ब्राह्मण होते हुए भी आचरण से शूद्र थे। उस समय उन उस अजितेन्द्रिय ब्राह्मण ने शूद्रा से विवाह करके अनेक पुत्र उत्पन्न किए थे। उस समय वह कुसंगति में पड़कर चोर बन गए। वह प्रतिदिन धनुष-बाण लेकर यमराज के समान भयानक रूप धारण कर घूमा करते थे। एक दिन उन्होंने वहां से गुजर रहे सप्तर्षियों को लूटना चाहा। जब उन्होंने महर्षि वाल्मीकि से लूट-पाट का कारण पूछा तो वह इसे परिवार का भरण-पोषण कहते हैं। यह सुनकर ऋषियों ने उनसे पुनः पूछा कि वे लोग (परिवार वाले) इस पाप के भागी बनेंगे या नहीं। यह सुनकर वह घर जाकर सबसे पूछता है परन्तु सब कहते हैं कि समस्त पाप के भागी तुम स्वयं होंगे। इसके बाद वैराग्य प्राप्त कर वह करुणा हृदय मुनिश्वर के पास जाकर कल्याण का मार्ग पूछने लगा और एकाग्रचित्त होकर मरा-मरा का जाप करने लगा। इसके बाद उसके ऊपर वल्मीक का ढेर बन गया। हजारों युग बीतने के बाद मुनि दोबारा वहां से गुजरे थे तो तभी वल्मीक के अन्दर से उसे बाहर निकलने को कहा। तब वाल्मीकि कुहरे के भीतर से सूर्य के समान बाहर निकले। यह देखकर मुनियों (सप्तर्षियों) ने कहा वल्मीक से तुम्हारा दूसरा जन्म हुआ है इसलिए अब तुम 'वाल्मीकि' नाम से जाने जाओगे। श्रीराम के दर्शनार्थ हेतु मुनियों की अगवानी करने पर उन्हें भार्गव च्यवन ऋषि कहा गया है परन्तु आनन्द रामायण के अनुसार इन्हें व्याध कहा गया है। कहा जाता है कि गुरु से सिद्धि प्राप्त महायशस्वी शंख नामक ब्राह्मण पम्पा सरोवर के पास गोदावरी नदी पारकर निर्जन वन में गया जहां पानी

वाल्मीकि रामायणानुसार वाल्मीकि भृगुवंशीय है जिन्होंने चौबीस हजार श्लोकों और एक सौ उपाख्यान की वाल्मीकि रामायण लिखी। इसमें तो इन्हें भगवान वाल्मीकि कहा गया है। जिन्होंने मन, वाणी तथा कर्म से कभी भी पाप नहीं किया है। एक अन्य प्रसंगानुसार उन्हें 'प्राचेतस' कहा गया है जो सीता की शुद्धता का प्रमाण देते हुए राम से कहते हैं कि मैं प्रचेता का दसवां पुत्र सत्य कहता हूं कि लव और कुश आपके पुत्र हैं। मैंने आज तक कभी झूठ नहीं बोला।

मिलना मुश्किल था। वैशाख महीने की गर्मी में वह थककर विश्राम करने बैठा ही था कि तभी यमराज के समान भयंकर दुष्ट व्याध धनुष-बाण लिए आया और उसके जूते, छतरी, वस्त्राभूषण तथा कुण्डलादि चुरा कर ले गया। इसके बाद वह ब्राह्मण जलती धूप में हाहाकार करता हुआ आगे बढ़ रहा था तभी उसकी दयनीय अवस्था देखकर व्याध ने उसे जूते वापिस दे दिए। यह देख ब्राह्मण बोला तुमने ऐसा कार्य पूर्वजन्म के पुण्य से किया है क्योंकि तुम पूर्वजन्म में शाकल नगरी के वेदपारगामी स्तंभ नामक ब्राह्मण थे। श्रीवत्सगोत्स में तुम्हारा जन्म हुआ था परन्तु तुम बड़े पापी थे। बुरी संगति के कारण तुम वैश्या पर मुग्ध हो गए थे परन्तु घर में रूपवती, गुणवती भार्या तुम्हारे चरण धोकर तुम्हारी सेवा करती रहती थी। कुछ समय पश्चात् तुम बहुत बीमार हो गए। तुम्हारी भार्या ने तुम्हारी देखभाल करने के साथ अनेक प्रकार की मनौतियाँ मांगी। घर पर आए देवल ऋषि का पूजा सत्कार कर चरण धोए और उस जल को तुम्हें दवा के रूप में पिलाया जिससे तुमने वैशाख महीने में जूतों का दान किया और कुछ जल तुम्हारे माथे पर चढ़ाया जिससे तुम्हारा मिलन मुझसे (शंख नामक ब्राह्मण) हुआ है। वही जूते दान करने के पुण्य से अब तुम्हारी भेंट सप्तर्षियों से होगी जिसके पश्चात् तुम 'वाल्मीकि' नाम से प्रसिद्ध होकर रामकथा लिखोगे।

तत्पश्चात् व्याध पन्नगी की योनि में ऋणु पुत्र होकर जन्मा। जो जन्म से ब्राह्मण तथा आचरण से शूद्र था परन्तु सप्तर्षियों से मिलकर वाल्मीकि हुआ।

महाभारत के आरण्यक पर्व में वाल्मीकि को भृगु पुत्र च्यवन कहा गया है जो तपस्या में लीन रहता था। जिन्हें राजपुत्री सुकन्या में वल्मीक से ढके होने पर अनजाने में अन्धा बना दिया था और उन्हें बाद में उन्हीं से विवाह करना पड़ा था।

स्कन्द पुराण के अनुसार वाल्मीकि का नाम अग्निशर्मा था जो सुमति और कौशिकी का पुत्र था। जिन्होंने दस्युओं की संगति में तीर्थयात्रा पर जा रहे सुव्रत सप्तर्षियों को लूटना चाहा था। जिन्होंने इसे एक पाप कहा था और शरणागत होने पर अग्निशर्मा को राम-राम जपने को कहा और तेरह साल बाद वहां से गुजरते वक्त उसकी आवाज सुनकर वल्मीक से बाहर निकलकर 'वाल्मीकि' नाम दिया। इसके बाद वाल्मीकि ने कुश स्थली पर ध यानस्थ होकर महेश्वर की समाराधना की जिससे उन्होंने कवित्व प्राप्त कर रामायण की रचना की। कृतिवासिय रामायणानुसार वाल्मीकि का नाम 'रत्नाकर' था जो आरम्भ में एक निर्दयी डाकू था परन्तु प्रज्ञाचक्षु महर्षियों से साक्षात्कार होने पर उसकी जीवनध ारा पलट गई और वह डाकू से ऋषि बन गया। जिससे अब मानवता के द्रोह के बदले मानव हित की चिन्ता उसका व्यवसाय बन गया था। यदि वह रामचरित न लिखते तो दुनिया वालों के सामने कैसे आते? परन्तु चाहे कुछ भी हो वह आज संस्कृति एवं धर्म के रक्षक के रूप में प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व की प्रतिमा बनकर हमारे सामने प्रस्तुत है। इनकी छन्दोबद्ध रचना से नए काव्य और इतिहास की रचना हुई है जो पहले नहीं थी। इसलिए इनको 'आदिकवि' कहा जाता है।

धर्मपत्नी श्री राजेश कुमार, हि. प्र. विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला-171005, मो. 0 94181 87652

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) वाल्मीकि रामायण
2) अध्यात्म रामायण
3) आनन्द रामायण
4) महाभारत
5) स्कन्द पुराण
6) कृतिवासिय रामायण
7) मानसपीयूष बालकाण्ड खण्ड-1

माह के कवि

अमरजीत कौंके की कविताएँ

आधुनिक तकनीक

सुनते थे
कि लोग चेहरे पर
मुखौटा चढ़ा लेते थे
बहुत पुरानी बात है
फिर एक मुखौटे के नीचे
दूसरा
फिर तीसरा
अनगिनत मुखौटे

यह बात भी पुरानी हो गई

समय बदलने के साथ
परिवर्तन आया
अब लोग मुखौटे नहीं पहनते
अब उन्होंने क्षणों में
चेहरे तबदील करने की
आधुनिक तकनीक सीख ली है

अभी तुम्हारे सामने
कबूतर बैठा था
अभी दहाड़ता शेर बन गया
अभी वह चालाक लोमड़ी में
परिवर्तित हुआ
और अभी तीतर-बटेर बन गया
अभी वो पालतू कुत्ता था
तुम्हारे पैर चाटता
अभी उड़न-साँप बन कर
तुम्हें काटता
इतना जहरीला
कि आदमी
पानी भी न मांगता

लोग
मुखौटे पहनते थे
यह युगों पुरानी बात है
अब लोगों ने
चेहरे तबदील करने की
आधुनिक तकनीक सीख ली है।

पहचान

दाखिले के बाद
क्लास में पहले दिन
अध्यापक ने कहा
अकेले-अकेले बच्चे को
अपनी पहचान देने के लिए

खड़े हुये बच्चे
अकेले-अकेले बताने लगे
मेरा पिता डाक्टर है
मेरा क्लर्क
मेरा दुकानदार
मेरा मास्टर

सारी क्लास में
दो बच्चे अपने पिता का
पेशा बताते हुए हिचकिचाए

उन में से
एक का पिता मोची था
दूसरे का चपरासी
और अगले दिन
दोनों बच्चे
स्कूल में नहीं आये।

इतिहास

इतिहास सदा
ताकतवर हाथ लिखते
इसीलिये इतिहास में
कमजोर सदा
पृष्ठभूमि में चले जाते

गुनाहगार
बड़े परोपकारी बन कर उभरते
मैदान छोड़ कर भागने वाले
बड़े योद्धाओं में तबदील होते
जो वास्तव में इतिहास का सृजन करते
वे काल कोठरियों में जलील होते

इतिहास बनाने वालों के तो
हाथ काट दिये जाते
उनकी अँतड़ियां
उनकी पीठ से जा लगतीं
उनको इतिहास में नायक से
खलनायक बना दिया जाता
इसी तरह संपूर्ण
इतिहास बदला दिया जाता

जो वास्तव में इतिहास बनाते
उनका इतिहास में
कहीं नामोनिशान भी नहीं होता।

पंजाबी से हिंदी अनुवाद :
स्वयं कवि

कविता का पहला शब्द

मैं ईंटें पकाते
मजदूरों के पास गया
मैं गया सड़कों पर
तारकोल बिछाते
लोगों के पास

खेतों में फसलें बोते
किसानों से मिला मैं
दूर नहर किनारे
पशु चराते चरवाहों के पास बैठा
सुनता रहा गीत उनके

गाँवों को जाने वाली बसों में बैठा मैं
साधारण लोगों के पास
चौपाल में देर तक बैठा
सुनता रहा अंगारों की तरह दहकती
उनकी बातें

मैं गया आम लोगों के बीच
सीधे सादे अनपढ़ लोगों के बीच
उनकी बातें सुन कर
मजाक सुन कर उनके
सुनकर उनकी नोक झोंक
और जिंदगी के बारे
उनका फलसफा सुनकर
हैरान रह गया मैं
और मेरा यह विश्वास
हुआ और भी दृढ़
कि किसी भी कविता का पहला शब्द
साधारण लोग लिखते हैं
और कोई भी कविता
सब से पहले
आम आदमी के मन की
पृथ्वी से फूटती है...।

परिचय

डॉ. अमरजीत कौंके

जन्म : 1964, लुधियाना
शिक्षा : एम. ए. (पंजाबी), पीएच. डी
निर्वाण दी तलाश 'च, द्वंद कथा, यकीन, शब्द रहणगे कोल, स्मृतियां दी लालटेन, प्यास, काव्य संग्रह पंजाबी में प्रकाशित, मुट्ठी भर रौशनी, अँधेरे में आवाज, अंतहीन दौड़, बन रही है नई दुनिया, काव्य संग्रह हिंदी में प्रकाशित।
हिंदी के दिग्गज लेखकों डॉ. केदार नाथ सिंह, श्री नरेश मेहता, कुंवर नारायण, राजेश जोशी, अरुण कमल, बिपन चंद्रा, उषा यादव, हिमांशु जोशी, मिथिलेश्वेर, पवन करण, मणि मोहन, आत्मा रंजन की पुस्तकों सहित 40 पुस्तकों का हिंदी से पंजाबी और पंजाबी से हिंदी में अनुवाद प्रकाशित।
पंजाबी में 2003 से 'प्रतिमान' नाम की पंजाबी पत्रिका का निरंतर संपादन
साहित्य अकादेमी, दिल्ली से साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार,
प्यास तथा मुट्ठी भर रौशनी पुस्तकों के लिए भाषा विभाग पंजाब से सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार,
गुरु नानक यूनिवसर्सिटी अमृतसर से साहित्य पुरस्कार सहित अनेक संस्थानों द्वारा सम्मानित.
पता - 718, रणजीत नगर-ऐ, भादसों रोड, पटिआला - 147001 (पंजाब)
मोबाइल : 0 98142 31698

अमीर कालोनियों में

अमीर कालोनियों में
बच्चे सड़कों पर
गेंद बल्ला नहीं खेलते
औरतें घरों की छतों पर
कपड़े नहीं सुखातीं
नहीं खरीदतीं रेहड़ी वाले से सब्जी
करती नहीं चीजों के मोल भाव

अमीर कालोनियों में
दीवारों से
शोर बाहर नहीं आता
कहीं कोई हँसी
न रोने की आवाज सुनती है
किसी के लड़ने, झगड़ने का
पता नहीं चलता कुछ भी
कंकरीट की दीवारें
सब कुछ अपने भीतर
जज्ब कर लेती हैं

अमीर कालोनियों में लोग
सीले ठंडे कमरों में
रहने के आदी होते हैं
वह टूटते हैं
पहले दुनिया से
फिर परिवार से
फिर बच्चों से
और आखिर अपने आप से भी
टूट जाते हैं लोग

टूट जाते हैं
और खुद को
दीवारों के भीतर
कैद कर लेते हैं

अमीर कालोनियाँ
धीरे धीरे
पथराटों में
परिवर्तित हो रही हैं......।

ख्वाहिश

ऐसे रखो तुम मुझे पास अपने
जैसे तुम्हारी देह पर बस्तर
तुम्हारे माथे की बिंदी जैसे
जैसे तुम्हारे हाथों के कंगन
तुम्हारे गले की गानी जैसे
तुम्हारे पाँवों की पायल
जैसे तुम्हारे कुर्ते के बटन
मुझे यूँ रखो तुम पास अपने

मुझे यूँ रखो तुम पास अपने
तुम्हारे होंठों पर मुस्कान जैसे
तुम्हारी कजलाई आँखों में जैसे
जगमगाते हैं सपने
अपने हृदय में जैसे तुम
सहेज कर रखती हो अहसास

यूँ रखो तुम मुझे पास अपने
वृक्ष जैसे संभाल कर रखते
घोंसलों को
पानी को बाँहों में भर के रखते
जैसे किनारे
गोरे हाथ छिपा के रखते जैसे मेहँदी का रंग
आकाश संभाल के रखता जैसे चाँद तारे
तुम यूँ रखो मुझे पास अपने
समुद्र संभाल कर रखता जैसे
मछलियों को
आकाश जैसे पक्षियों को
फूल सँभालते जैसे तितलियों को
रोशनी संभाल कर रखती जैसी
परछाइयां
सुहागनें जैसे मांग में सिंदूर संभालती
बच्चों को पल भर के लिए दूर
जैसे जाने नहीं देती मांएं

तुम यूँ संभाल कर रखो मुझे अपने पास
कि तुम्हारे होंठों पर नृत्य करते हैं
गीत जैसे
तुम मुझे गीत बना कर
अपने होंठों पर रख लो
मैं तुम्हारे होंठों पर
मचलता रहना चाहता हूँ....।

पनाह

पृथ्वी उठाती नहीं जब बोझ मेरा
हवाओं से लुप्त होने लगती जब
मेरे हिस्से की आक्सीजन
शहर के लोग तबदील होते
खूंखार जानवरों में
स्मृतियों का पंजा
मेरी गर्दन पर जब
अपना कसाव बढ़ाता है

मन के इर्द गिर्द
फैलता है जब उदासी का सैलाब
देह की सारी कोशिकाएँ
होने लगती हैं मुर्दा
सूरज डूबने लगता है
जब मेरी आंखों में

घर बाहर
कहीं भी चैन नहीं आता
मेरी रगो में दौड़ने लगते
जब रेतीले चक्रवात
दिन जब
किसी वहशी कसाई की तरह
मुझे धीरे धीरे हलाल करता है
और मेरे मन में तड़पता परिंदा
अनहोनी मौत मरता है
और मरने लगा
दर्द से भरी कोई चीख मारता

खुदकुशी के ख्याल
जब मन की दीवारों से
बारिश के पानी की तरह
टकराते हैं

तभी
ठीक तभी
मैं तुम्हारे जिस्म में
पनाह ढूँढता हूँ......।

वही पल

जिंदगी की खचाखच में से
वही पल सार्थक निकले
जो तुमने मेरे लिए निकाले
जो मैंने तुम्हारे लिए बचाए

वही शब्द निकले सार्थक
उदास क्षणों में
जो तुमने मेरे लिए सोचे
जो लिखे मैंने तुम्हारे लिए

वही नाम निकले सार्थक
मुहब्बत के पलों में
जो तुमने मुझको दिए
जो कहता रहा मैं तुझसे
वही स्वप्न निकले सार्थक
जो तुमने मेरे लिए देखे
जो मैंने आँखों में संजोये
तुम्हारे लिए

जिंदगी की खचाखच में से
वही कविताएं निकली सार्थक
जो मैंने तुम्हारे लिए लिखी
जो रची मैंने तुम्हारे लिए।

रोशनी की तलाश में

आगे सघन जंगल है
अँधेरा है
डरावनी आवाजों का शोर है
काली हवाओं की सायं सायं है
वृक्षों पर नाग फुँकारते
पाँवों में टूटी दीवारों की
किरचें चुभती हैं

आग बरसाती
लाल सुर्ख आंखें चारों तरफ
रोशनी का लेकिन
दूर तक नामो निशान नहीं

जगह जगह हमारे पांवों में
आवाजें उलझती
बच्चों के बिलखने की आवाज
किसी के सिसकने की आवाज
कभी आवाजें आती
पुरखों की
वापिस बुलाती

हम आवाजों के इन बीहड़ों में भटकते
क्षण भर के लिए रुकते
संभलते, फिर चलते
एक दूसरे का हाथ पकड़े
अदृश्य रोशनी की तलाश में....।

तुम मेरे पास रहना

हजारों आएंगी आँधियाँ
लाखों आएंगे तूफान
लेकिन तुम मेरे पास रहना

अनेक बार मैं होऊंगा
उदासी की खूबसूरत लड़की का हाथ पकड़े,
खुदकुशी की राह पर चलता
इस विष कन्या के होंठों को
चूमने की कोशिश करता
मेरे भीतर सुलगती होगी मौत
तुम मुझे
जिंदगी के बारे में बताना

बहुत बार मैं होऊंगा
परिस्थितियों के चक्रव्यूह में घिरा
मेरा अर्जुन पिता लड़ रहा होगा दूर
शकुनि की चालों में उलझा
मेरे इर्द गिर्द होगी
साजिशी तीरों की बरसात
उस वक्त तुम मेरे हाथ में
रथ का टूटा पहिया बन जाना

बहुत बार मैं होऊंगा
तीरों की सेज पर लेटा
देख रहा होऊंगा
अपने ही हिस्सों को
अपने पर बाण चलाते
तब तुम मेरे माथे पर
अपना नर्म हाथ रखना

कितनी बार मैं होऊंगा
बेगानगी की बारिश में भीगता
अपनी अग्नि में सुलगता
भीगी हुई किसी रात को
सीली पवन अपने बदन पे लपेटे
अकेला भटक रहा होऊंगा
तुम मेरा हाथ पकड़ कर
मुझे मेरे घर का रास्ता दिखाना

कितनी बार मैं होऊंगा
टिकी रात को
अतीत के दरवाजे पर दस्तक देता
दूर रह गए घर को याद करता
दीवारों के मिटते रंग देखता
अपने सिर अनगिनत इल्जाम लिए
सिसक रहा होऊंगा
तब तुम मेरी
भीगी आँखों के लिए कंधा बन जाना

हजारों आएंगी आँधियाँ
लाखों आएंगे तूफान
लेकिन तुम मेरे पास रहना.....।

लड़की

बचपन से यौवन का
पुल पार करती
कैसे
गौरैया की तरह
चहकती है लड़की
घर में दबे पाँव चलती
भूख से बेखबर
स्कूल में बच्चों के
नाम कुनाम रखती
गौरैया की तरह लगती है लड़की
अभी उड़ने के लिए
पर तौलती

और दो चार वर्षों में
लाल चुनरी में लिपटी
सखियों के झुंड में घिरी
ससुराल जाएगी लड़की
क्या कायम रह पाएगी उसकी
यह तितलियों सी शोखी
और यह गुलाबी सी मुस्कान

गृहस्थ की तमाम
कठिनाइयों के बीच
बचा के रख पाएगी क्या
वह अपनी सारी मासूमियत ?

कैसे बेखबर आने वाले वर्षों से
गौरैया की तरह
चहकती है लड़की...।

0 0 0

कहानी

पांच साल बड़ी पत्नी

◆ ब्रह्म दत्त शर्मा

लंच-ब्रेक होते ही बैंक का जंगले वाला गेट बंद कर दिया जाता था। पुरुष और महिला बैंककर्मी अलग-अलग ग्रुप में बैठकर बड़े इत्मीनान से खाना खाते। ऑफिस-टाइम में ग्राहकों की भीड़ और अन्य व्यस्तताओं में उलझे वे ढंग से एक-दूसरे का हाल-चाल भी नहीं पूछ पाते, किन्तु अब ब्रेक में उन्हें खूब फुर्सत होती थी। खाते-खाते वे घर-परिवार के किस्से लेकर बैठ जाते। साथ-साथ बैंक कर्मियों की समस्याएँ, राजनीति, शेयर बाजार, सिनेमा, खेल आदि विषयों पर भी चर्चा होती। ज्यादातर पढ़े-लिखे, मध्यवर्गीय लोगों की भाँति देश-प्रदेश की राजनीति पर बतियाना उनका प्रिय शगल था। न्यूज चैनल और अखबार की अधकचरी जानकारी के आधार पर वे खुद को विशेषज्ञ समझते थे। अलग-अलग राजनैतिक पार्टियों में आस्था होने की वजह से अक्सर किसी न किसी मुद्दे को लेकर वे आपस में ही भिड़ पड़ते। कभी-कभी बहस काफी बढ़ जाती और वे ऊँचा बोलने लगते, परन्तु उन्हीं में से कोई बीच में पड़कर इन 'विशेषज्ञों' को शाँत करवा देता। फिर वे राजनीति छोड़ आपस में हँसी-मजाक करते हुए एक-दूसरे की टांग-खिंचाई करने लगते। कुल मिलाकर एक घंटे का समय बड़े मजे से बीतता था।

हर रोज की भाँति आज भी चर्चा छिड़ी थी, किंतु विषय निजी और थोड़ा अलग हटकर था- 'किसकी पत्नी कितने साल छोटी है?' शुरुआत मिश्रा जी ने की थी, जो चार साल बाद रिटायर होने वाले थे। उनकी पत्नी भी बैंक में ही थी और उनसे दो साल छोटी थी। अपने बारे में बताते-बताते वे दूसरों से पूछने लगे- 'भट्टी साहब, आपकी बीवी आपसे कितनी छोटी है?'

राजमा-चावल खाते हुए भट्टी साहब बोले- 'भाई, मेरी बीवी तो हाउसवाइफ है। उनकी कोई रिटायरमेंट नहीं होनी है। वैसे मुझसे चार साल छोटी है।'

'अरे, आपकी तो हमारे वाली से भी छोटी है।' मिश्रा जी ने प्रसन्नता जाहिर की। अब वे अगले साथी से मुखातिब थे- 'भारद्वाज जी, आपका मॉडल कौन-सा है? मेरा मतलब भाभी जी आपसे कितनी छोटी हैं?'

भारद्वाज जी सलाद का टुकड़ा मुँह में डालकर मुस्कुराए - 'मेरे वाली तो मुझसे सात साल छोटी है।'

सभी उन्हें आश्चर्य-मिश्रित प्रशंसा और ईर्ष्या से देखने लगे। मिश्रा जी प्रसन्न होकर बोले- 'अरे वाह! तभी तो भाभी जी इतनी जवान और खूबसूरत है। इसका राज तो हमें आज ही पता चल रहा है। तुम्हारे तो बड़े मजे हैं।''

भट्टी साहब हँसते हुए बोले- 'मिश्रा जी, लोग यूँ ही थोड़ी कहते हैं, बीवी और मोबाइल जितना लेटेस्ट लो उतना ही फायदा है।'

सभी जोर से हँस पड़े सिवाय अरविंद के। वह सिर्फ दिखावे के लिए ही मुस्कराया था। वास्तव में तो इस मुद्दे पर चर्चा छिड़ते ही वह चिंतित और परेशान हो गया था। मिश्रा जी के स्वभाव से भली-भाँति परिचित था, जब तक एक-एक से नहीं पूछ लेंगे उन्हें चैन नहीं आएगा। उन्हें दूसरों की जिंदगियों में ताक-झाँक करने की एक बुरी आदत थी। उसे मिश्रा जी से चिढ़-सी होने लगी, परंतु उससे पहले गुप्ता जी की बारी आ गई। उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के कहा - 'मेरी बीवी तो मुझसे बड़ी है।'

'बड़ी? ....कितनी बड़ी?' भारद्वाज जी ने हैरानी जताते हुए पूछा।

'चार साल।' गुप्ता जी सहज थे।

'चार साल!' सभी ने उन्हें आश्चर्य और हेय दृष्टि से घूरा मानों उन्होंने कोई बैंक घोटाला कर दिया हो।

मिश्रा जी ने मजाक किया- 'फिर तो भाभी जी के सामने आप बच्चे हैं!'

बेचारे गुप्ता जी का मुँह उतर गया। वे बहुत साधारण थे। उन्हें कोई बात छुपानी या घुमा-फिराकर बतानी नहीं आती थी।

भारद्वाज जी बोले- 'भाभी जी तो आप को गोद में लेकर खेलाती होंगी।'

सभी हँस पड़े।

भट्टी साहब सबसे ज्यादा मुँहफट थे- 'अरे, वे तो इन्हें दूध वाली बोतल थमा देती होंगी और गुप्ता जी मजे से पीते हुए सोते रहते होंगे।'

यह सुनते ही एक जोर का ठहाका गूँजा। अरविंद को भी

हँसना पड़ा था। हँसते-हँसते उसे खाँसी उठ गई थी। पिछले कई दिनों से वह लगातार खाँसी से परेशान था। कोई भी दवाई जैसे असर ही नहीं कर रही थी, परन्तु इस समय खाँसी से कहीं ज्यादा चिंता दूसरी थी। पत्नी उससे पाँच साल बड़ी थी। जब चार साल के लिए ही वे इतना मजाक उड़ा रहे हैं, फिर उसकी तो जाने कैसी फजीहत कहेंगे! वह व्याकुल, क्षुब्ध और बेचैन हो रहा था। आज तक तो उसने इस राज को छुपाकर रखा था। चाहता तो आज भी साल दो साल छोटी बताकर आराम से बच सकता था। उन्होंने बीवी का बर्थ सर्टिफिकेट थोड़ी देखना था, परंतु परेशानी तो कोई और ही थी। चार महीने बाद पत्नी की रिटायरमेंट होते ही सबको पता चल जाएगा। तब बड़ी होने के साथ-साथ झूठ बोलने के लिए और भी ज्यादा सुनाया जाएगा। इस रहस्य को छुपाए रखने की खातिर उसे बहुत से प्रयास करने पड़े थे, परंतु आज तो जैसे सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। ऊपर से ये लोग इतने मुँहफट हैं कि न जाने क्या कह बैठें! इनका काम तो बस हँसना, मजाक उड़ाना और मजे लेना है। किसी के दिल पर क्या गुजरेगी, इन्हें जरा-सी भी परवाह नहीं। दुविधा, घबराहट और तनाव में उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था।

अगली बारी अरविंद की ही थी, परंतु तभी डिब्बा उठाए सुषमा जी उनकी तरफ चली आई और खुशी-खुशी बोली- 'आज पूनम मैडम की शादी की सालगिरह है! लो मिठाई खाओ!' सभी ने कलाकंद का एक-एक पीस उठा लिया। खाते-खाते मिश्रा जी उठ खड़े हुए और कैशियर पूनम के कैबिन की तरफ बढ़ चले, जहाँ तीनों महिलाएँ साथ बैठकर लंच करती थीं। औरतों से बातें करने का मिश्रा जी को वैसे भी बहुत चाव था। ऐसा मौका भला वे कहाँ छोड़ सकते थे। उनके पीछे-पीछे बाकी भी बधाई देने जा पहुँचे। बीवियों की उम्र की बात अब आई-गई हो गयी थी। सुषमा जी ने किसी देवदूत की भाँति आकर अरविंद को बचा लिया था। बाल- बाल बचने पर उन्होंने राहत की साँस ली।

पत्नी की उम्र को लेकर अरविंद शुरू से ही हीनता ग्रन्थि का शिकार था। शादी के तीन दिन बाद बीवी की उम्र पता चलते ही अरविंद पर जैसे वज्रपात हुआ था। वह चौबीस साल का था और पत्नी उनत्तीस की। दूर-दूर भी अंदेशा न था कि उससे इतना बड़ा धोखा हो सकता है। वह बैंक में नया-नया क्लर्क लगा था और किसी जॉब वाली लड़की से ही शादी करने की इच्छा रखता था। तभी उसके एक रिश्तेदार ने उसके लिए एक जे.बी.टी. टीचर ढूँढ दी थी। लड़की काफी सुंदर थी और उन्हें देखते ही पसंद आ गई। बिचौलिये ने उम्र का कोई जिक्र ही नहीं किया और न ही घरवालों ने पूछा। वह देखने में भी बड़ी नहीं लगती थी, इसलिए सबने उसे हमउम्र ही समझा। उन दिनों रिश्ता तय करते वक्त ज्यादा छानबीन न करके सबकुछ बिचौलिए पर छोड़ दिया जाता था। शादी से पहले लड़का-लड़की के बीच कोई बातचीत भी नहीं होती थी।

शादी के बाद जब अचानक यह राज खुला तो अरविन्द गहरे सदमे में था। वह बेहद परेशान और खिन्न रहने लगा। उसके सभी दोस्तों की पत्नियाँ उनसे उम्र में कई-कई साल छोटी थीं और वे बड़े उत्साह से किसी उपलब्धि की भाँति इसका बखान करते थे। वह उन्हें क्या बताए? उसकी तो बड़ी थी और वह भी पूरे पाँच साल! वह खीझ, हताशा और क्रोध से भर जाता। उसने कई दिनों तक पत्नी से बात ही नहीं की। जब-तब घर वालों से लड़ने लगता- 'तुमने बुढ़िया को मेरे पल्ले बाँध दिया है।' वह इतना दुखी और हताश था कि पत्नी से तलाक लेने की सोचने लगा था, परंतु यह बेहद मुश्किल था। परिवार, समाज और कानून के हजारों झंझट थे, इसलिए चाहकर भी सिर्फ मन मसोसकर रह गया। वह घरवालों, ससुराल, बिचौलिए और खुद अपने आप से बेहद खफा था। तनाव और अवसाद से घिरा रहने लगा था। वह पत्नी को सहज स्वीकार ही नहीं कर पा रहा था और पाँच साल का यह अंतर उनके बीच एक दीवार बनकर खड़ा हो गया था।

दूसरी तरफ पत्नी मीनाक्षी को भी कम आश्चर्य नहीं हुआ था। उसे भी उम्मीद नहीं थी कि पति उससे इतने छोटे होंगे। घरवालों ने सोच-समझकर ही रिश्ता तय किया होगा। वे तीन बहिनें और एक छोटा भाई था। पिताजी किसी प्राइवेट कम्पनी में क्लर्क थे और उनकी कमाई बहुत सीमित थी। लड़कियों को पढ़ाने-लिखाने और शादी लायक पैसे जुटाने में देर हो जाना स्वाभाविक था। मीनाक्षी बहिनों में सबसे छोटी थी, इसलिए उसकी शादी और भी लेट हो गई थी।

धीरे-धीरे वक्त गुजरने लगा। मीनाक्षी ने अपनी समझदारी, सुंदरता, कर्मठता और अच्छे स्वभाव से पति और परिवार का मन मोह लिया। अरविंद को भी समझ आने लगा कि पत्नी से नाहक ही परेशान और नाराज हो रहा था। उस बेचारी का इसमें कोई कसूर ही नहीं था। उसे तो स्वयं उसकी भाँति शादी के बाद ही पता चला था।

अरविन्द ने तो जैसे-तैसे स्वीकार कर लिया था, परंतु दूसरों का क्या करें? अगर उन्हें मालूम पड़ गया तो कहेंगे कि नौकरी और दहेज के लालच में इतनी बड़ी उम्र की लड़की से शादी कर ली। और भी तरह-तरह की बातें बनाएंगे। दोनों पति-पत्नी की नौकरी से आस-पड़ोस पहले ही जला-भुना बैठा था। यह राज हाथ लगते ही वे पूरे कस्बे और रिश्तेदारों में उन्हें बदनाम कर देंगे। क्या किया जाए? ..... अंततः बहुत सोच-विचार के बाद तय हुआ कि वे किसी के सामने अपनी सही उम्र जाहिर ही नहीं करेंगे, जब तक कि इसे किसी सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज करना अनिवार्य न हो।

इस तरह तीस साल गुजर गये। पत्नी अब हाई स्कूल की हेडमिस्ट्रेस थी और वह भी डिप्टी मैनेजर के पद पर जा पहुँचा था। पत्नी किसी के सामने अपनी उम्र का जिक्र ही नहीं करती थी,

पति की उम्र के साथ तो बिलकुल भी नहीं। ऐसी चर्चा छिड़ने पर वह विषय बदल देती, अपनी उम्र कम करके बता देती या फिर चुपचाप वहाँ से खिसक लेती। पति के लिए भी यह इतना आसान नहीं था। इस राज को छुपाए रखने की खातिर उसे भी बहुत-से पापड़ बेलने पड़े थे। कई बार ऐसे मौके भी आए जब लगा कि उसका भेद अब खुल ही जाएगा, परंतु तब भी उसने किसी न किसी तरह से संभाल लिया था। शादी के बाद जब पत्नी का ट्रांसफर अपने शहर में हुआ तो उसी के बैंक में सैलरी अकाउंट खुलवाया जाना था। अकाउंट खोलने वाला क्लर्क दूसरा था। फॉर्म में जन्मतिथि पढ़ते ही वह जान जाएगा और तुरंत पूरे स्टाफ में ढिंढोरा पीट देगा, इसलिए अरविंद ने दूसरी ब्रांच में उसका खाता खुलवाया। पत्नी को भी इस हद तक गंभीर होना अजीब लगा, परंतु उसने एक न सुनी। ऐसे ही एक बार वह अपने पड़ोसी एजेंट से बीमा पॉलिसी खरीदने लगा था। जब उसने पति-पत्नी की उम्र लिखने की बात कही तो अरविन्द सकपका गया और उसे फिलहाल पैसे न होने का बहाना बनाकर टाल दिया। फिर किसी दूसरे एजेंट से पॉलिसी खरीदी थी। पिछले तीस वर्षों में उसने न जाने कैसी-कैसी कोशिशों और उपायों से इस राज को राज रखा था, परंतु अब रिटायरमेंट होते ही यह भेद खुल जाएगा और वर्षों की मेहनत व्यर्थ चली जाएगी।

अरविंद शाम को घर पहुँचा तो मीनाक्षी डायरी में कुछ लिखती दिखाई दी। उसकी छुट्टी जल्दी हो जाती थी। पति को घर आया देखकर उसने डायरी बंद की और रसोई से पानी का गिलास लेकर आई। पीते-पीते अरविन्द को खाँसी होने लगी। पत्नी नाराज होकर बोली- 'कितने दिनों से खाँस रहे हो। कितनी बार कह चुकी हूँ किसी अच्छे डॉक्टर को दिखा लो, लेकिन नहीं ...बस उसी झक्की के पीछे ही पड़े रहोगे!'

अरविंद मुस्कुराया- 'आते ही हेडमास्टरी शुरू!'

वह सहज होकर बोली - 'ज्यादा लंबी खाँसी अच्छी नहीं होती। आप इसका टैस्ट वगैरह भी करवाओ।'

'मालूम है, कल किसी और को दिखा आऊंगा।' फिर अचानक विषय बदलते हुए कहा- 'डायरी में क्या लिखा जा रहा है?'

मीनाक्षी प्रसन्न होकर बतलाने लगी- 'पार्टी में आने वाले मेहमानों की लिस्ट बना रही हूँ।'

अरविंद सुनते ही परेशान हो उठा। जिसे लेकर दिन-भर मूड खराब रहा था, आते ही उसी से फिर पाला पड़ रहा था।

मीनाक्षी ने पूछा- 'आप के लगभग कितने दोस्त हो जाएंगे?'

अरविंद ने उस तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया। वह अपनी ही चिंता में डूब गया। फिर अचानक कहा- 'रिटायरमेंट पार्टी जरूरी है क्या?'

मीनाक्षी को हैरानी हुई- 'आप कैसी बात कर रहे हैं! सभी करते हैं, फिर मुझे जरूरी क्यों नहीं?'

वह फिर से चुप था। आखिर पत्नी को कैसे समझाए? बैठे-बैठे उसे अचानक कुछ याद आया- 'लेकिन तुम्हारी सहेली मनीषा ने तो नहीं की थी!'

'अरे, आपको मालूम तो है उसके देवर की हफ्ता पहले ही डेथ हो गई थी। ऐसे में पार्टी की बात सोची भी नहीं जा सकती थी।''

'परन्तु बाद में भी तो की जा सकती थी!' वह अपने ऊलजलूल तर्कों से रिटायरमेंट पार्टी को जैसे फिजूल साबित करने पर तुला था।

'ऐसी पार्टियाँ बाद में करने का कोई तुक ही नहीं होता।' मीनाक्षी को पति की बातें अजीब और बेतुकी लगने लगी थीं - 'अरे, आज अचानक आपको क्या हो गया है? हम पहले ही पार्टी का निर्णय कर चुके हैं।'

'मैं तो यूँ ही सोच रहा था कि किसलिए पैसा बर्बाद करना? बेकार की ही तो फिजूलखर्ची है।' उसने एक अलग तर्क देकर असली वजह छुपाई।

मीनाक्षी को उसकी बातों पर अब और भी ज्यादा हैरानी हुई। हल्की-सी नाराजगी भी दर्शाई- 'अरे, सारी जिंदगी इंसान फिर किसलिए कमाता है? भगवान का शुक्र है कि ठीक-ठाक नौकरी पूरी हो रही है, इससे ज्यादा और क्या चाहिए। हर कोई खुशी-खुशी प्रोग्राम करता ही है, हम नहीं करेंगे तो लोग क्या कहेंगे?'

'हम करेंगे तो भी लोग क्या कहेंगे!' कहना न चाहते हुए भी अनायास ही अरविन्द के मुँह से निकल गया। बाद में अफसोस भी हुआ, परंतु तीर कमान से निकल चुका था।

पत्नी को ताज्जुब हुआ। थोड़ी देर उन्हें घूरती रही। उनके हाव-भाव से कुछ-कुछ वजह समझ आने लगी थी। उसे जैसे ध ाक्का लगा था- 'जो कहना चाहते हो साफ-साफ कहो। बात को

इधर- उधर मत घुमाओ।'

अरविंद कुछ नहीं बोला, क्योंकि असली वजह बतलाए जाने पर बहस होना लाजिमी था।

अंततः मीनाक्षी ही चिढ़कर बोली- 'अगर आप नहीं करना चाहते तो खुलकर कह दो। मैं स्टाफ को मना कर दूँगी। शुरू में ही स्पष्ट कह देना उचित रहता है, क्योंकि वे तो रोज ही मेरी रिटायरमेंट पार्टी का जिक्र छेड़कर बैठ जाते हैं।'

अरविंद के पास सच कहने के अलावा अब दूसरा कोई चारा ही बाकी नहीं था- 'वास्तव में मुझे तुम्हारी रिटायरमेंट पार्टी से दिक्कत नहीं है, परंतु ...' अरविन्द को खाँसी फिर परेशान करने लगी थी। देर तक खाँसता रहा और अंततः बोला- 'तुम नहीं समझोगी!'

'मैं खूब समझती हूँ। आपको खुद से पहले मेरा रिटायरमेंट होना परेशान कर रहा है। मुझे बेहद आश्चर्य और दुख है कि इतने सालों बाद भी आपके दिमाग से मेरी उम्र वाली बात नहीं निकली!' जिस बात को कहने से अरविन्द इतनी देर से झिझक और डर रहा था, पत्नी ने बड़ी सहजता से कह दी थी।

मीनाक्षी की हिम्मत देखकर उसे भी जैसे जोश आ गया- '.....और तुमने निकाल दी?'

'बिलकुल! ....आप निकालें या न निकालें, आपकी मर्जी!' मीनाक्षी ने उसी अंदाज में जवाब दिया - 'शुरू-शुरू में आपकी बातें सुन-सुनकर मैं भी जैसे एक अपराध-बोध से घिर गई थी। मेरा बड़ा होना जैसे आपके साथ कोई ज्यादती लगा था, परंतु इतने वर्षों में समझ भी बढ़ती गई। धीरे-धीरे लगने लगा कि इसमें तो कुछ भी गलत नहीं है। बहुत से लोगों की पत्नियाँ उनसे बड़ी हैं, लेकिन वे आपकी तरह न छुपाते हैं और न ही किसी हीन भावना का शिकार हैं। मजे से जिन्दगी काट रहे हैं। ...... फिर जब पुरुष अपने से कम उम्र की स्त्रियों से शादी कर सकते हैं, तो स्त्रियाँ क्यों नहीं? बताओ किस कानून में लिखा है कि पुरुष को ही बड़ा होना चाहिए।'

पत्नी के तर्कों पर उसे हैरानी हुई, परंतु वह हार मानने को तैयार नहीं था- 'कानून में ही लिखा है!'

'कौन से कानून में?' मीनाक्षी ने जानना चाहा।

'शादी के लिए लड़की की उम्र अठारह और लड़के की इक्कीस रखी गयी है। बराबर क्यों नहीं की गई?'

सुनकर मीनाक्षी भी सोच में पड़ गई । इस तरफ तो उसने कभी ध्यान ही नहीं दिया था, परंतु अभी भी वह अपनी बात पर दृढ़ थी- 'मेरी नजर में यह कानून भी गलत है! एक तरफ तो हम लड़के-लड़कियों की बराबरी का ढोल पीटते नहीं थकते और दूसरी तरफ दोनों में गैर-बराबरी वाले नियमों को अभी भी बरकरार रखे हुए हैं। यह दोहरे मापदंड नहीं चल सकते। कोई भी नियम जो स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव करता है, समाप्त होना ही चाहिए।'

'तुम्हारे कहने से क्या होता है? इन बातों को दुनिया थोड़ी मानती है। वे तो ...'

पति को मीनाक्षी ने बीच में ही टोका- 'आप लोगों की बातें छोड़ो और अपनी बताओ! ..... मेरे बड़ी होने से आपको क्या नुकसान हो गया? बड़ी होने का मैंने कौन-सा रौब झाड़ा है? आपकी इज्जत नहीं की है? या पत्नी धर्म नहीं निभाया है? बताइए आप?'

'नहीं, ऐसा तो खैर कभी भी नहीं हुआ।' अरविंद को मानना पड़ा।

पति-पत्नी के बीच बहस लम्बी होती जा रही थी। अंततः मीनाक्षी ने ही इसे समेटने का प्रयास किया- ''ठीक है मैं आज आपकी बात मानकर पार्टी कैंसिल कर देती हूँ, लेकिन क्या तब लोगों को पता नहीं चलेगा कि मैं रिटायर हो चुकी हूँ।'

वह थोड़ी देर शाँत बैठा रहा और फिर धीरे से बोला- 'अगर कोशिश की जाए तो शायद पता न भी चले।'

'कैसे?' उसे हैरानी हुई।

'तुम किसी प्राइवेट स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दो। सब समझेंगे कि अभी वहीं जा रही है।' मन ही मन सोचे गए विचार को उसने प्रकट किया। वह हैरान थी- 'आप भी हद करते हैं। किसी को पता न चल जाए सिर्फ इसलिए ही मैं और कई साल प्राइवेट स्कूलों में धक्के खाती रहूँ। ......ऐसी बातें छुपाए नहीं छुपतीं। मैं बीस किलोमीटर दूर नौकरी करने जाती हूँ, कहीं विदेश में नहीं। आखिर हम कब तक छुपाते रहेंगे?''

मीनाक्षी की बातें सही थीं, लेकिन अरविन्द इन्हें नहीं मान सकता था। पत्नी सिर्फ घर और स्कूल तक ही सीमित थी। बाहरी दुनिया और खासतौर पर पुरुषों के मजाक और कमीनेपन के बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं था। वर्षों की छुपाई गई बात को यूँ अचानक प्रकट कर देने से सब गुड़-गोबर हो जाएगा। आज तक तो किसी एक को भी जानकारी नहीं थी और कल रिटायरमेंट पार्टी देकर वे खुद ही पूरी दुनिया में ढिंढोरा पीट देंगे। वह ख्वामखाह अपने आस-पड़ोस, रिश्तेदारों और मित्रों की नजरों में हँसी का पात्र बन जाएगा। ऑफिस में तो खाने के दौरान रोज यही मुद्दा छिड़ा रहेगा। मिश्रा और भट्टी चटखारे ले-लेकर खूब गंदे मजाक करेंगे। इतना ही नहीं वे दोनों तो इतने मुँहफट हैं कि पता नहीं पार्टी में ही मेहमानों के सामने क्या कह बैठें? स्साले खाएँगे भी और बेइज्जती भी करके जाएँगे!

अरविन्द देर तक इस समस्या पर विचार करते हुए हल तलाशने में जुटा रहा। इस बीच पत्नी रसोई से चाय बनाकर ले आई थी। चाय पीने के घंटे भर बाद उसने हिचकिचाते हुए पत्नी से कहा- 'तुम कम से कम इतना तो कह देना कि मैंने घुटनों की तकलीफ की वजह से वी. आर. एस. ले ली है..... या फिर सर्टिफिकेट में मेरी डेट ऑफ बर्थ गलत लिखी हुई थी।'

पत्नी को हैरत हुई कि वह अभी भी उसी में ही उलझा था, जबकि वह इस तरफ से कबका ध्यान हटा चुकी थी। नाराज होकर बोली- 'अरे, दुनिया इतनी भी बेवकूफ नहीं है। कहीं न कहीं से पता चल ही जाता है। आप बेकार में ऐसी बातें सोच-सोचकर अपना दिमाग खराब कर रहे हैं और साथ में मेरा भी करना चाहते हैं। इस एक सच को छुपाने के लिए हमें आखिर और कितने झूठ बोलने पड़ेंगे?.........आप हिम्मत करके इसे स्वीकार क्यों नहीं कर लेते!'

अरविन्द ने कोई जवाब नहीं दिया। बातचीत स्वतः ही बंद हो गई।

अगले हफ्ते अरविंद सुस्त कदमों से घर के अंदर दाखिल हुआ। चेहरे पर थकान, परेशानी और उदासी की लकीरें खिंची थीं। वह अन्यमनस्क-सा चुपचाप आकर सोफे पर बैठ गया। मीनाक्षी एक कोने में कपड़े प्रेस कर रही थी। पति आते ही हमेशा कुछ न कुछ बातचीत जरूर करता था, परन्तु आज उसे यूँ खामोश बैठे देखकर आश्चर्य हुआ। प्रेस का बटन बंद करके वह रसोई से पानी लेकर आई। अपने ही खयालों में गुमसुम अरविंद ने पत्नी और पानी की तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया। हाव-भाव से वह किसी बड़ी परेशानी में घिरा दिखाई देता था। चिंतित होकर पूछा- 'क्या बात आज आप बड़े चुप-चुप हो? तबीयत तो ठीक है?'

अरविंद ने कोई जवाब नहीं दिया और वह वैसे ही धीर-गंभीर बैठा रहा। आज तक तो ऐसा कभी नहीं हुआ था। बड़ी से बड़ी परेशानी में भी वह हिम्मत नहीं हारता था। मीनाक्षी और भी चिंतित हो उठी। सोफे पर पति के नजदीक बैठते हुए पूछा- 'बैंक में कुछ हुआ है क्या? काफी परेशान लग रहे हो?'

पत्नी की गंभीरता देख अरविंद जैसे खुद से बाहर आया- 'नहीं, बैंक में तो कुछ नहीं......कोई और ही समस्या है! तुम्हें नहीं बता सकता।' मीनाक्षी सुनकर घबरा उठी और बोली- 'मुझे क्यों नहीं बता सकते? मेरे और आपके बीच कैसा पर्दा?'

अरविंद थोड़ा सामान्य हुआ- 'कैसे कहूँ, बात ही कुछ ऐसी है!......'' इतना कहकर चुप हो गया, जैसे बताने या न बताने की दुविधा में घिरा हो। मीनाक्षी डरी-सहमी बेसब्री से बतलाए जाने की प्रतीक्षा करती रही। उसे देर तक दुविधा में घिरे देखकर बोली- 'देखो, पहेलियाँ-सी मत बुझाओ। प्लीज जल्दी बोलो! मुझे बहुत टेंशन हो रही है।'

अंततः सोच-विचार करके जैसे बतलाने को राजी हो गया। सबसे पहले उसने पत्नी को आगाह किया- ''तुम इस बारे में किसी से कुछ भी नहीं कहोगी। बच्चों से भी नहीं!' फिर एक दृढ़ निश्चय-सा करके असली मुद्दे पर आया - 'तुम्हें तो मालूम ही है कि काफी दिनों से मुझे खाँसी की शिकायत थी। दूसरे डॉक्टर के पास गया तो उसने ब्लड टैस्ट के लिए बोला था।'

'हाँ, मेरे बार-बार कहने के बावजूद भी आपने नहीं करवाया था।'

अरविन्द ने जैसे सुना ही नहीं। वह पत्नी की ओर देखे बिना बोले जा रहा था-' पिछले हफ्ते बैंक में खाँसी करते हुए मेरे मुँह से खून निकला था। स्टाफ ने मुझे ब्लड टैस्ट करवाने की सलाह दी। आदत के मुताबिक मैंने ध्यान ही नहीं दिया। अगले दिन फिर से वही हुआ तो मुझे चिंता हुई। तुम्हें न बतलाकर मैंने ब्लड टैस्ट करवाया था। लैब वालों को कुछ आशंका हुई। उन्होंने फिर से सैंपल लेकर दिल्ली लैब में भेजा। दो दिन बाद कल रिपोर्ट आई. ...' वह फिर से चुप हो गया, जैसे आगे बतलाने से बचना चाहता हो। घबराहट में पत्नी का चेहरा सफेद पड़ गया। किसी अनिष्ट की आशंका से डरी हुई पति के चेहरे पर नजरें गड़ाए हुए थी। अरविन्द ने बैग से रिपोर्ट निकालकर उसके सामने रखते हुए धीमी आवाज में कहा -'मुझे लंग कैंसर है!'

मीनाक्षी की आँखों के आगे जैसे अन्धेरा छा गया। पाँव के नीचे से जमीन खिसक गई। यह अप्रत्याशित खबर एक ऐसी सुनामी थी, जिसने एक पल में ही उसका सब कुछ तहस-नहस कर दिया था। लगा अकस्मात कोई आंधी उड़ाकर उसे अपने साथ लिए जा रही हो। इसे सुनने से पहले वह मर क्यों नहीं गई। आँखों से आँसू छलक आए। आहिस्ता-आहिस्ता सुबकने लगी थी। कुछ देर बाद सहसा कुछ याद आया हो- 'आपने रिपोर्ट डॉक्टर को नहीं दिखाई?''

'अभी वहीं से तो आ रहा हूँ। वे कहते हैं इस बारे में कोई बड़े अस्पताल का डॉक्टर ही कुछ बता सकता है। वैसे लंग कैंसर सबसे खतरनाक होता है। सबसे ज्यादा लोग इसी से....' उसके होंठ कांपने लगे। रुआंसा होकर आगे कुछ भी नहीं कह पाया।

मीनाक्षी को अपनी बदकिस्मती पर जैसे अब कोई शक-शुबह बाकी नहीं रह गया था। जीवन की तमाम खुशियों को ग्रहण लग चुका था। दुनिया के दुःख उसकी झोली में आ गिरे थे। पति की अभी उम्र ही क्या थी! उनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। आने वाले कष्टों और मुसीबतों को याद करके वह फिर से बुक्का फाड़कर रोने लगी थी।

अरविन्द परेशान हो उठा। उसे सहज करने की कोशिश करते हुए बोला- 'अरे, तुम इतनी कमजोर क्यों पड़ रही हो? मुझे इतनी जल्दी कुछ भी नहीं होने वाला। धूमधाम से तुम्हारी रिटायरमेंट पार्टी करेंगे।'

मीनाक्षी दुःख के सागर में डूबी थी। वह कुछ भी सुनना नहीं चाहती थी- 'अरे, भाड़ में जाए रिटायरमेंट पार्टी! मुझे सिर्फ आप ठीक-ठाक चाहिएँ।'

अरविंद दूसरी तरफ मुँह फेरकर मुस्कुराया। आखिर उसने उपाय ढूंढ ही लिया था।

मकान नं. 82, सेक्टर 18, हुड्डा जगाधरी (यमुनानगर),
हरियाणा-135003, मो. 0 82954 00476

कहानी

जादुई जंत्र

◆ लेख राज चौहान

दोपहर के एक बजने जा रहे थे। दिलो-दिमाग में बसी एक नई राह पर चलने का वक्त आन पड़ा था। यही कारण रहा होगा कदमों को आगे सरकाने का। ज्येष्ठ माह की चिल-चिलाती वो तपती धूप और गॉव के वो टेढ़े-मेढ़े रास्ते, कभी उतराई तो कभी सीधी खड़ी चढ़ाई, ऊपर से खुदा की बख्शी यह मूई बड़ी उम्र का इनाम परन्तु ये सारी विपरीत परिस्थितियाँ भी उसके लड़खड़ाते कदमों को आगे बढ़ने से रोक नहीं पाई थीं। पसीने से बूढ़ा जिस्म तर-बतर हुआ पड़ा था। बार-बार माथे से टपकती पसीने की बूंदे, कभी उन धंसी आँखों के अंदर, तो कभी पहने हुए चश्में पर बार-बार लुढ़कती जा रही थी जो आगे बढ़ते लड़खड़ाते कदमों के लिए लगातार बाधा बनती जा रही थी।

साँसें आखिर बूढ़ी काया को कुछ दूरी तक हाँकती और फिर किसी पेड़ की छाया तले उन थके हारे कदमों को तनिक आराम फरमातीं। अविलम्ब आँखों से चश्में को उतारवा कर, ऊपर पड़ी पसीने की बूंदों को दुपट्टे से अच्छी तरह साफ करवाती फिर क्षणिक विश्राम के बाद, कदमों को आगे बढ़ने के लिए मजबूर करवाती। शायद अब मंजिल और कदमों के बीच की दूरी लगभग चार-पांच किलोमीटर ही रही होगी ऐसा मन में चल रहा था। अब आगे बढ़ना तो मजबूरी थी क्योंकि जब तक साँसें चल रही थी तब तक बूढ़े बदन को सम्भालना भी तो प्रभु का ही आदेश था।

इस संसार में शायद कोई किसी का नहीं सिवाय प्रभु के। सब वक्त का हेर-फेर है। आज जो अपने लगने लगे हैं वे कल पराये हो जाते हैं। घर-परिवार के नाम पर तीन बेटे और दो बेटियाँ थीं। शादी-ब्याह करवाने से तो अब उसे निजात मिल चुकी थी। पति का साया उठ जाने के बाद, दो बेटियों की शादी बड़ी गुरबत में की थी। सेवा पानी के नाम पर अब वह तीन बहुओं की सासु माँ थी परन्तु शायद साथ किसी एक का भी ठीक से नजर नहीं आता दिखाई दे रहा था तो फिर गिले-शिकवे करती भी किससे। सोचने की बात यह भी थी, सास के पेट से बहुओं ने तो जन्म नहीं लिया था तो फिर शायद बहू और बेटी में कुछ तो फर्क रहेगा। फिर ऐसे में सासु माँ भी बुरा क्यों माने? ऐसी दिलासा मन को अकसर दी जाती लेकिन भाग्य का खेल देखो। किसी को सासु माँ में अपनी माँ मिल जाया करती है तो किसी को बहू में बेटी, पर शायद आज के इस युग में गिनती कुछ कम होती नजर आ रही है। यह समय किसी को दोष देने का तो था नहीं। अब धूप भी तो ढलती शाम की थी। आशा-निराशा यही तो जीवन चक्र है। वे लोग किस्मत के धनी हैं जिनके बहू-बेटे धर्म-कर्म निभाते हैं। शायद ऐसे आदर्शों की गिनती आज घटती सी नजर आ रही है। ऐसे अनेकों विचार राह पर चलते-चलते यकायक मन में उमड़ उठे थे और हाँ, एक सच यह भी था, वह था जब तक इस संसार में है तब तक जीना तो पड़ेगा। इस मुई जान को तो कुछ ना कुछ चिमड़ा ही रहता है। कभी माशा तो कभी तोला या यूँ कहें कभी खुशी तो कभी गम। अब भले ही वह फिर बीमारी हो या फिर स्वस्थ जीवन। मन की व्यथा कुछ यूँ ही आगे सरकती जा रही थी।

अंग्रेजी डॉक्टरों ने तो सूईंयाँ चुभा-चुभा कर इस बूढ़े बदन को छलनी सा कर दिया था। कभी छोटा अस्पताल तो कभी बड़ा अस्पताल। इलाज करवाते-करवाते अब साँसे भी दिन-प्रतिदिन कुछ ज्यादा ही फूलती जा रही थीं। शायद कई किलो के हिसाब से तो दवाइयाँ खाई होगी, पीने की दवाई पी होगी, पर किस्मत देखो तनिक भी आराम नहीं मिला था और ऊपर वाले को तो देखो अभी अपने पास बुलाने में भी कंजूसी कर रहे थे। दूसरी तरफ परिवार वाले या रिश्तेदार अकसर कहते, “अम्मा को तो दवाइयों के सिवाये और कुछ नजर ही नहीं आता । जब देखो तब दवाई की ही रट्ट लगाए रखती है।”

अब अम्मा भी क्या करे, जिस तन लागे वही तो जाने पीड़ा क्या होती है। वैसे दवाई खाने का कोई शौक तो था नहीं परन्तु जब सारी-सारी रात नींद न आये, जिस्म करवटें बदलते रहे, कराहते रहे, पल भर भी नींद न आए, गन्दे-गन्दे सपनों में घिरे, कभी पहाड़ों पर उड़ना तो कभी माँस मदिरा खाने-पीने लग जाना जो कभी जीवन में चखा नहीं था तो फिर सपनों में भी ये सब क्यों मंजूर होता। कभी-कभी कौवों की सवारी करना तो कभी हवा में तैरना। अभी पिछली रात की तो बात है। कौवे ने आसमान से गिरा दिया था। फिर क्या था अपने आप को पड़ोसियों के सेफ्टी टैंक में लथपथ पाया था। बदन गले तक डूब चुका था फिर तुरन्त दम घुटने लगा था और देखते-ही-देखते अगले ही पल चारपाई पर उलटी लटकी हुई पाई गई थी। अकसर कुछ समझ नहीं आता। बदन में दर्दें, जकड़न, भूख न लगना जीने की जैसे तमन्ना ही खत्म हो गई हो और उन डरावने भयावह सपनों ने तो जीना हराम कर दिया था। ऊपर से रिश्तेदारों, घरवालों की उलटी सीधी बातें सुनने को मिलती जो अकसर बूढ़ी साँसों को कंपकंपा देती थीं। प्रायः

सुनने को मिलता ..... "अम्मा तो सठिया गई है, समझ कुछ आता नहीं, सब ठीक तो है पर मानती है नहीं।"

ऐसी दुःख की घड़ी में एक सांसें ही तो थीं उसकी अपनी जो बरसों से साथ दे रही थीं और उसे आगे बढ़ाती रही। इस बूढ़े शरीर को अब भी बराबर सहारा देती रहतीं।

परिवार की उलटी-सीधी बातें अकसर दिलों-दिमाग को झिंझोड़ कर रख दिया करती। उसे ऐसा लगता जैसे मानों बुढ़ापा क्या आया अब जैसे उसे जीने का अधिकार ही नहीं रहा हो और उससे हँसने-बोलने का भी अब जैसे हक ही छिन गया हो । उसके भी कोई शौक होंगे, पर उन्हें अब पूरे करने की इजाजत नहीं रही हो।

सबके मुँह से बस एक ही इस मुई उम्र की रट्ट सुनने को मिलती। बहुएं तो बहुएं अब बेटों के मुँह पर भी ताले जड़ दिए गए थे। जब कभी भी बहुएं कोई उच्ची-नीची बात जुबां पर लाती, बेटों को तो मानों जैसे साँप सूँघ जाता था वे शायद यह भी भूल गये थे कि अम्मा के पेट से जन्म बेटों ने लिया था न की बहुओं ने। खैर समय तो सबका आयेगा, जब वे भी बूढ़े होंगे। सब समझ आ जायेगा। शायद जवानी के जोश में या यूं कहे सीधे- सीधे सब अपने स्वार्थ में तल्लीन जो हो चुके थे।

इधर अब ले-दे कर साँसों ने भी डॉक्टरी इलाज को साफ मना कर दिया था। गाँव की एक सहेली ने नया रास्ता जो सुझा दिया था। वह था एक तान्त्रिक से इलाज करवाना। पता चला था, वह तान्त्रिक जो नौ कोस आगे गाँव 'जागर' में 'चन्दू' के घर ठहरा हुआ था। वह किसी भी तरह की शारीरिक पीड़ा, भूत-प्रेत, कुछ भी उलटा-सीधा, किये-कराये का इलाज करने में माहिर था।

बस यह शुभ खबर कान में पड़ने की देर थी कि साँसों ने भी रुख तान्त्रिक की तरफ कर दिया था। जान किसको प्यारी नहीं। दुनिया भले उम्र की रट्ट लगा रखती हो, पर इसकी परवाह किसको, जान तो सबको प्यारी होती है परन्तु इस ढलती धूप में सबकी सोच तो धूप छुप जाने तक ही टिकी थी। अब ऐसी सोच होती भी क्यों न। बूढ़ा बदन कुछ काम-काज का तो रहा नहीं, तो फिर इससे मोह-माया भी क्यों रखते ?

शायद आज जमाना प्रैक्टिकल ज्यादा और प्यार-भावनाओं से दूर बहुत दूर होता नजर आने लगा है। खैर उम्र बड़ी हो या छोटी संसार से विदाई कोई चाहता नहीं परन्तु कड़वा सत्य यही है कि एक दिन जाना सबको है लेकिन जब तक जान है तब तक शरीर को तो जैसे-तैसे चलाना ही होगा। इसलिए साँसों ने जो कहा था उसे अब गाँठ में पक्का बाँध लिया था और वह था एक ही आदेश "बस ठीक होना है।" जब आशा की किरण सामने थी तो फिर कदम आगे बढ़ने भी लाजमी थे। अब चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विपरीत क्यों न हों अब जब इरादा पक्का था तो फिर कठिनाई कैसी ?

तपती धूप इतनी तेज थी कि बढ़ते समय के साथ-साथ कदमों की रफ्तार भी धीमी पड़ती नजर आ रही थी, पर साँसे थीं कि कदमों को आगे बढ़ने से रोक नहीं पा रही थी। थोड़ी ही देर में घास वाली पहाड़ी से नीचे उतरना शुरू कर दिया था और खेतों के बीचों-बीच रास्ता तय करना अभी बाकी था। आगे बढ़ते कदम जैसे ही खेतों वाले रास्ते पर धरे, यकायक उखड़ती साँसों ने जबरन उसे यादों के कटघड़े में खड़ा कर दिया था। अब क्या था, बीते लम्हें चल-चित्र की भाँति आँखों के सामने एक-एक करके उभरने शुरू हो चुके थे और दूसरी तरफ मानों थोड़ी देर के लिए वक्त भी ठहर सा गया था। उन भूली-बिसरी यादों ने अब उसे जबरन खेत के एक छोर पर शायद थोड़ी देर के लिए बड़े इत्मीनान से बिठा दिया था।

वो भी क्या दिन थे और आज देखो क्या से क्या हो गया था। गाँव के ये खेत, खेत नहीं हमारी जीवन रेखा हुआ करती थी। कभी ये खेत हरी-भरी फसलों से लहलहाया करते थे। मक्की, धान, गेहूं, दालें और सब्जियां। क्या-क्या नहीं होता था, सब कुछ तो पैदा होता था। कभी-कभी तो बासमती की फसल भी पैदा कर ली जाया करती थी लेकिन हाँ धान की किस्म में हमारे गांव में, नैर-नट चावल, लाल चावल की खेती ज्यादा मशहूर हुआ करती थी। जब तक रगों में जोश था अनाज, दालें, दूध-घी, दही और सब्जियाँ कुछ भी तो बाजार से नहीं खरीदा जाता था सिवाय एक नमक के। सब कुछ इन खेतों में ही तो पैदा हुआ करता था वह भी शुद्ध। बिना किसी रासायनिक खाद कैमीकल्ज के।

गरीबी थी, पर इतनी भी नहीं कि खाने को कुछ नहीं होता। हाँ गरीबी तो थी शायद वह थी ऐशोआराम या यूँ कहें आज के जमाने की चौंचली बातों की या यूँ कहें जरुरत से ज्यादा साजों सामान की या फिर आराम वाली वस्तुओं को इकट्ठा करने की। वह जमाना तो शायद आधारभूत जरुरतों तक ही विश्वास रखने में खुश था और रही बात रिश्तों की, तो सही मायने में उस जमाने में रिश्तेदारी हुआ करती थी। मित्रता थी, ढेर सारा प्यार, एक दूसरे

के घर में जाना, मिलना-बैठना, रातों-रात गप्पें हाँकना, मौज मस्ती मारना, मेले-त्योहार सब कुछ तो मिलजुल कर ही मनाते थे। परन्तु आज का इन्सान कितना बदल चुका है, दिलों में दरार दूसरी तरफ इन विरान पड़े खेतों की जिन्दगी देख कर मन के आँसू झर-झर बह उठे थे। पल भर के लिए, ऐसा लगा जैसे मानों इन खेतों का आज की पीढ़ी को श्राप-सा लग गया हो तभी तो शायद कोई भी मालिक आज मानों काम करने के काबिल न रहा हो और मजबूर हुआ हो मिलावटी अनाज दूध-दही, दालें खाने के लिए और वह भाईचारा, वह न जाने अब कहाँ लुप्त होकर रह गया था। आज आँखों को क्या-क्या देखना पड़ रहा था। आज तो इन्सान, इन्सान का ही गला काट रहा है। शायद इसका कारण आधुनिकता की तरफ एक अन्धी लम्बी दौड़ या फिर अपने-पराये का खेल और रही बात प्रतिस्पर्धा की, वह भी जरुरत से ज्यादा। शायद इस अन्धी दौड़ के कारण ही मन की शाँति आज कहीं खो कर रह गई है।

आज पैसा है धन-दौलत है पर शायद वो शुद्धता नहीं। वो असली खूशबू वाले धान-चावल वो दूध, दही, घी, सब कुछ लुप्त-सा हो कर रह गया है। आज पैसा है, पर शायद नींद कहीं खोकर रह गई है। अब गाँव, गाँव नहीं रहे शायद साहिब बन गये हैं और ये खेत जिन्होंने छोटे से लेकर बड़ी-बड़ी हस्तियों को पैदा किया था, जीवन दिया था आज वहीं खेत सूने पड़े थे। शायद आज कोई सच्ची मेहनत करना नहीं चाहता। बस रातों रात अमीर बनना चाहता है। चाहे भले ही खाने के नाम पर, न मिठा खा सकते हो, न दूध, न दही, न तो ठीक से दो वक्त की रोटी। आखिर एक दिन सब कुछ तो छूट जाता है। बस बैंकों में या फिर अलमीरा में रह जाते हैं नोट, दौलत और ये बड़े-बड़े आलीशान भवन। आज सब कुछ लिफाफे में आने लगा है और फिर आज के बच्चे, वे भी तो शायद लिफाफे से नजर आने लगे हैं। कहाँ है आज के बच्चों में वो जान। ढीली पैन्टे खड़े बाल। क्या से क्या हो गया है हाल।

आगे बढ़ते कदम बीते लम्हों में कुछ यूँ उलझ पड़े थे कि मन आज उदास हुआ पड़ा था। कौन-कौन से खेत, सहेलियों, रिश्तेदारों के साथ मिलकर रूपाई गई वो धान की ऊपरी की गवाही दे रहे थे और फिर जब दिमाग पर कुछ और जोर डाला तो वो भूली-बिसरी यादें आज आंखों के सामने वर्षों बाद झिलमिला उठी। पहले-पहल सांसों ने कुछ यूँ उकेरा था, काले घने रेशमी बाल जो अकसर मेरे पैरों की ऐड़ी को छूना नहीं भूलते थे। इनकी लटक-झटक, अकसर जवान दिलों में आग लगा दिया करती थी। रोम-रोम से फूटती जवानी, वह जोश, गांव में किसी की भी नजर क्षण भर के लिए उसे देखे बिना नहीं रह पाती थी। वो मदमस्त आरजू भरी नजरें कहीं सीधी तो कहीं तिरछी, कई बार तो धान की उरी में लिपटी गिली मिट्टी से चेहरे को पोतना उसकी मजबूरी हो जाया करती थी और मुआ वह शिबू हमेशा ताक में रहता परन्तु उसकी मजबूत बाजुओं की ताकत देखकर गाँव का कोई भी लड़का उसकी तरफ ताँक-झाँक की कोशिश नहीं कर पाता था। फिर भी तिरछी निगाहों से या फिर छुप-छुप कर कभी कभार देखने से बाज नहीं आते थे। धान की ऊरी (धान के पौधे) रोपते वक्त बार-बार लटों को सम्भालना उसके लिए और भी आफत हुआ करती थी। अकसर बाल ऊरी रोपते वक्त मिट्टी सने पानी में डूब जाया करते थे और फिर बालों का मिट्टी से लथपथ हाथों से जूड़ा बनाना उसके लिए और भी मुश्किल हो जाया करता था। वह सनकी शिबू हाथ में आया मौका कभी जाने न देता। वह तुरन्त हल छोड़कर चुम्बक की माफिक मौका पाते उसके आस-पास मंडराने लग जाया करता। कई बार तो उसने मुए शिबू की मुंडी ऊरी रोपते खेत में डुबोई भी थी जब तक मिट्टी सने पानी में गुड़गुड़ नहीं लग जाया करती तब तक उसे वह छोड़ने का नाम नहीं लेती थी। तब बेचारे शिबू की हालात बहुत पतली हो जाया करती थी लेकिन वह शरारतों से फिर भी बाज नहीं आता था। आज वह शिबू भी नहीं रहा। दिल मायूस हो उठा था शायद शिबू की याद, उसकी शरारतें सता रही थी। दूसरे ही पल यकायक फिर सोच आई इस संसार से अब जाना तो सबको है, पर क्या करें जब तक विदाई होती नहीं तब तक जीने के लिए हाथ-पांव तो मारने ही होगें। कुछ इस तरह सोचते-विचारते अब यादों ने आगे बढ़ते कदमों को 'जरली नाले' तक पहुँचा दिया था।

यकायक सामने 'रामकी' बहन को देखकर चाल सुस्ता सी गई। कदम तुरन्त झर-झर बहते पानी के साथ जमी दोस्ती की मिसाल रही उस बड़ी चट्टान पर जा रुके थे। शायद चट्टान पर पड़ी लहलहाते पेड़ों की छाया ने भी इस तपती धूप में पल भर के लिए विश्राम करने का सुझाव जो दे डाला था और सुझाव फिर काबिले तारीफ भी तो था।

चिलचिलाती तपती धूप में, ठण्डी-ठण्डी हवाएं और चट्टान के साथ कल-कल का शोर करता झर-झर बहता ठण्डा-ठण्डा पानी। सबने कुल मिलाकर मानों कोई मधुर सा राग छेड़ रखा था। इस मधुरता के राग में आज बचपन जवान हुआ पड़ा था। बाल्यावस्था से युवावस्था तक दोनों यहाँ अकसर छाया में घण्टों बैठकर आराम फरमातीं और यह चट्टान छोटी-बड़ी उन सब शरारतों की गवाह बनती थी। आज वर्षों बाद एक बार फिर साथ बैठ कर गप्पें मारने का मौका दोनों सहेलियों को मिला था। समय की चिन्ता छोड़ अब वार्तालाप कुछ यूँ आगे बढ़ा था,

"आओ बहन बैठो। भगवान ने कई सालों बाद फिर एक साथ बठने का मौका दे दिया है। देखो इस चट्टान पर पड़े निशान आज भी हमारी दोस्ती की गवाही दे रहे हैं।"

"हाँ बहन। यहाँ बैठ कर न जाने हमने कितनी बार कैसी-कैसी शरारतें की थी। घण्टों गप्पें मारते थे। आज वो बातें वो अच्छी-बुरी शरारतें अब यादें बनकर रह गई है।" रामकी "ठीक कहा बहन । बस अब यादें ही तो रह गई हैं, परन्तु तू सुना कहाँ

जा रही हो?"

"मैं..मैं..... मैं तो घराट तक आई थी। कुछ दाने लाए थे पिसाने के लिए। अब ले दे के पूरे इलाके में एक ही तो घराट बचा है इस जरली नाले में। दिलू घराटी तो अब रहा नहीं उसका बेटा है जिसने इस पुरानी निशानी को बचाए रखा है। तू तो जानती है घराट का पिसा हुआ आटा बड़ा स्वादिष्ट होता है और सेहत के लिए अच्छा भी।" रामकी

"ठीक कहा बहन। पर अब दाने होते ही कहाँ इस गांव में खेत तो खाली पड़े हैं, जवान कोई काम करना नहीं चाहते। हाँ अब तो मशीन का पीसा हुआ आटा ही चलता है।"

भूली बिसरी बातों में वक्त जैसे थम सा गया था। एक घण्टा कब बीता, पता भी न चला था। फिर कदम अगले पड़ाव की तरफ बढ़ चले थे। कुछ यूँ कहते हुए,

"तू अपनी सुना इस भरी धूप में कहां जा रही हो ?" रामकी

"क्या सुनाऊं बहन, मेरी कोई दो वर्षों से तबीयत ठीक नहीं रह रही। शरीर में दर्दें, रात को नींद न आना और कहीं गलती से नींद आ भी गई तो बुरे-बुरे डरावने सपने मुझे सोने नहीं देते। जब से तेरे जीजा जी नहीं रहे तब से तो मेरी हालत और भी पतली हो चुकी है। भूख बिलकुल नहीं लगती। कुछ भी खाने-पीने को मन नहीं करता। इस मुए बदन में अब जैसे जान ही न रही हो। क्या करुं बहन बहुत बुरी हालत है। अब तो दिन काटने मुश्किल हो गए हैं।...

"...त ....त.....तो फिर डाक्टरों को दिखा लेती और वो तेरा छोटा बेटा सुना वह तो तेरा बहुत ख्याल रखता था।" रामकी

"बेटे नत्थू की बात कर रही हो क्या ह....ह....हाँ वही तो मेरा प्यारा बेटा है, पर वह भी घर में नहीं है। शहर में नौकरी कर रहा है । वैसे मेरे बड़े बेटे ने भी मुझे बड़े अस्पताल में चौक करवाया था लेकिन आराम नहीं मिला। डाक्टर लोग बोलते हैं सब ठीक है बस बुढ़ापा है। अब तू ही बता बुढ़ापा है तो क्या हुआ। अभी हमारी बड़ी ऊम्र थोड़ी हुई। तुझे पता है, वो सोझे गांव की दयाल महंत की पत्नी अब पिछले सप्ताह की तो बात है। वह नहीं रही। पता है उसकी उम्र एक सौ एक वर्ष की थी तो इस हिसाब से हमारी उम्र तो अभी कुछ भी नहीं हुई और अगर उम्र हुई भी हो तो क्या हुआ, इस शरीर को चलाने वाली शक्ति जिसे शायद ये बड़े पढ़े-लिखे महात्मा लोग 'आत्मा' कहते हैं इसकी तो कोई उम्र है नहीं, कोई शक्ल नहीं कोई आकार नहीं, वह शायद कभी बूढ़ी नहीं होती। हमेशा जवान ही रहती है तो फिर यदि हमारा शरीर ठीक स्वस्थ रहे तो ऐसी हालत में हम बूढ़े कैसे हो सकते हैं। ऐसा मुझे लगता है। हाँ इसमें शर्त बस इतनी-सी है कि बस ये मुआ शरीर टाँटी-टौर (स्वस्थ) रहना चाहिए तो फिर बुढ़ापा कैसा, कुछ सोच में डूबी, सहमी एक बार फिर समा बन्धा, "लेकिन बहन ऐसा है नहीं, इस शरीर को कुछ न कुछ तो लगा रहता है। अब मेरे को देखो, मेरी दर्दों ने मुझे तंग कर दिया है। उलटे सीधे सपने, नींद न आना ये सब मुझे बहुत परेशान करते रहते हैं।"

"बहन यदि डॉक्टरों से फर्क नहीं पड़ा तो फिर 'देव पाराशर' या फिर माता बुढ़ी भैरवा, बगलामुखी वो वाखली वाली माता, वहाँ इलाज करवा लेती।" रामकी

"बहन कई बार गई। शैरो धागे भी लिए थे। (देवी के पुजारी द्वारा सरसों के दाने व डोरी देना) । कई बार चावल के दाने दिखाये परन्तु आराम फिर भी नहीं हुआ। अब ये देवी-देवते बोलते तो कुछ नहीं बस बोलने वाले तो गुर (देवी-देवते का पुजारी) होते हैं। ये शैरो-चावल के दाने देते रहते हैं कभी-कभी घर पर फेंकने को तो कभी-कभी खाने को और कभी हाथ में तो कभी गले में डोरी टाँग देते हैं और बार-बार पेशी डालते रहते हैं। कभी कुछ चढ़ावा देना तो कभी कुछ खिलाना। साल भर से तो मैं बहन इसी तन्त्र में फंसी हुई थी लेकिन आराम फिर भी नहीं हुआ अब तो मैं तंग आ गई हूँ ।"

"अ....अच्छा तो अब क्या सोचा है ?" रामकी

"एक नया रास्ता।"

"नया रास्ता मतलब ....।" रामकी

"बहन जागर ग्राम में एक तांत्रिक (चेला) आया है। 'चन्दू' वह जो लकड़ी का बहुत अच्छा काम करता है उनके घर में ठहरा हुआ है। सुना है वह सही इलाज करता है। शरीर की दर्द, भूत-प्रेत, किया-कराया, बुरी आत्मा की छाया, कोई भी रवोट ..... ऐसी कोई भी बात हो, सुना है सबका इलाज कर देता है।"

"च.......च........चेला ! क्या नाम है उनका ?" रामकी

"सुना है नजरूल रामनाथ नाम है उनका।"

"ये क्या नाम हुआ। मुसलमान भी, हिन्दू भी तब तो शायद दुनिया की भीड़ उसके पास खूब जमा होती होगी।" रामकी

"तू नाम की बात छोड़। हमें तो आराम से मतलब है। कम से कम इलाज करने वाला आदमी तो है। शेरो-धागे के चक्कर से तो मैं तंग आ गई हूं। अबकी बार इलाज करने वाला आदमी तो मिला है, मतलब चेला (तान्त्रिक)। वह कुछ न कुछ तो बोलेगा। पता चल जाएगा ! यदि किस्मत में ठीक होना लिखा होगा तो आराम मिल जाएगा, नहीं तो गाड़ी जैसी चली है वैसे ही चलती रहेगी।"

"ठीक कहा बहन। सुन तो मैं भी चलती हूँ। मेरी भी तबीयत कुछ ठीक नहीं रहती।" रामकी देखते-ही-देखते अब कदम मंजिल की तरफ गप-शप मारते, कभी लड़खड़ाते तो कभी रफ्तार में आगे सरकते चले जा रहे थे। अगले ही कुछ घण्टों में तान्त्रिक के पास कदमों ने भी आहट दे डाली थी। लोगों का हजूम देखकर मन कुछ निराश-सा हुआ था। कुछ लोग पंक्तियों में खड़े थे तो कुछ बैठे हुए थे। यह सब देखकर मन ने भी फटाक से फैसला कर डाला था, "कम से कम तीन-चार घण्टे लगने लाजमी थे।" अब ज्यादा कुछ

न सोचते हुए दोनों लम्बी लगी पंक्ति में जुड़ चुकी थी। अब धीरे-धीरे पंक्ति भी कीड़े की माफिक आगे रेंगने लगी। और .... जब तांत्रिक के स्वर कुछ यूँ कान में पड़े तो पता चला समय काफी आगे निकल चुका था,

"हाँ माई ! बोलो क्या बात है ?"

प्रश्न कानों में गूँजने की देर थी कि सारी की सारी समस्याएँ एक-एक करके अम्मा ने सुनानी शुरू कर दी थीं। दूसरी तरफ तांत्रिक ने भी साथ-साथ पासे फेंकने (इलाज की प्रक्रिया) शुरू कर दी थी। इलाज में गिनती कुछ यूँ होने लगी थी .... एक-दो। पासा दोबारा फेंका - चार-छः आठ, सात इत्यादि यह प्रक्रिया बार-बार दोहराई जा रही थी। उस इन्सानी हड्डी के चौरस सफेद टुकड़े जिसमें काले-काले बिन्दु गढ़े हुए दिखाई दे रहे थे को हाथ में बार-बार मसलने के बाद फिर उसे फूंक मार-मार कर जमी पर पटकने का सिलसिला जारी हो चुका था। पासों के फेर में, यकायक देखते-ही-देखते तांत्रिक के स्वर कुछ इस तरह हवा में विलीन हुए थे,

"देखो माई मामला कुछ गम्भीर लगता है। कुछ किए-कराये की मार है। आपके पड़ोस में एक विधवा औरत है, है कि नहीं ?" तान्त्रिक

"ह........... ह ...... हाँ-हाँ है।" अम्मा

"उससे तुम्हारे घर की खुशी देखी नहीं जाती और हाँ एक देवते की छाया भी नजर आ रही है। शायद आपके घर के पास दक्षिण की तरफ एक पीपल का पेड़ भी है। है कि नहीं ?" तान्त्रिक

अब क्या था तिलमिलाती साँसों ने तान्त्रिक के प्रश्नों पर अब आगे जैसे मानों ताला-सा जड़ दिया था।

"ह........... हा ...... हाँ- हाँ ठीक कहा महाराज! पीपल का पेड़ है और वो चुड़ेल औरत भी।" अम्मा

"तो बस हो गया फिर इलाज । घबराने की कोई बात नहीं। देखो मैं एक विशेष "ऑल इन वन 'जादुई जन्त्र' बना रहा हूँ।"

यकायक बीच में टोकते अम्मा के स्वर फिर तिलमिलाये थे,

"उ..... उ ...... अ ऑल इन वन। मैं समझी नहीं महाराज।"

"देखो समझने की जरूरत नहीं और बीच में मत बोलो पासे उलट-पलट जाते हैं। माई जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो! सब ठीक हो जायेगा। ये जो जन्त्र मै दे रहा हूँ ये सब बीमारियों का इलाज है, पर इसे कोई छुए न जब तक तुम इसे धारण न कर लो और हाँ इसे खोलना मत ! ये लो 'जन्त्र' अब इसे पुराने बाजार पंडोह के पास 'धर्मपाल' सुनार के पास ले जाओ और चाँदी के जन्त्र में मढ़वाकर इसमें काला धागा डालकर अमावस्या की रात को ठीक बारह बजे इसे धारण कर लेना बस फिर अल्लाह की कृपा से सब ठीक हो जाएगा।"

एक लम्बे अर्से के बाद शायद अब मन को कुछ तस्सली मिली थी। तान्त्रिक के मुँह से सच सुनने को जो मिला था। दिलो-दिमाग आज शान्त हुआ पड़ा था। लगा अब सब ठीक हो जाएगा। यकायक आँखों में एक अजीब सी खुशी की लहर छा चुकी थी। ऐसा लगा जैसे आधी बीमारी तो जन्त्र को हाथ में लेते ही खत्म हो चुकी थी। अब बिना किसी विलम्ब के तान्त्रिक के आदेशानुसार कार्यवाही को अन्जाम दे डाला था लेकिन अभी जन्त्र धारण करने के लिए अमावस्या की रात का इन्तजार करना बाकी था। अमावस्या की रात को अभी दो दिन शेष जो थे। तब तक साँसों ने भी इन्तजार करने की हामी भर डाली थी। इलाज तसल्ली बख्श हुआ ऐसी भविष्यवाणी शायद अब अन्तर आत्मा ने भी कर डाली थी। रकम कोई माइने नहीं रखती थी। एक हजार रुपये ही तो दिये थे। वह भी तान्त्रिक के हाथ पर नहीं बल्कि एक चट्टाई के नीचे रखने पड़े थे। अब तान्त्रिक पैसे हाथ में तो ले नहीं रहे थे और फिर सभी बीमार लोग पैसे ऐसे ही रख रहे थे तो अम्मा ने भी पैसे ऐसे ही रख दिये थे।

बस अब गले और जन्त्र के बीच के फासले की घड़ी को दूर करने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार होने लगा था। आखिर वह रात भी आई और जन्त्र ठीक समय पर धारण कर दिया गया था। फिर एक के बाद एक रातें बीतती चली गईं और बीमारी शायद ऐसे खत्म हुई थी जैसे मानों गधे के सिर से सींग। चमत्कार हुआ पड़ा था। बूढ़ा जिस्म भी अब दौड़ने-फिरने लग चुका था। नींद भी जी भर के आने लगी थी और वो डरावने सपने सब खत्म ! बीमारी खत्म ! होती भी क्यों न, शायद कुछ फर्क तो तान्त्रिक के मुँह से सच्चाई सुन कर ही पड़ चुका था। सोच-विचार करती साँसे भी तो उस वक्त तपाक कुछ यूँ बड़बड़ाई थीं,

"कोई बाहर का आदमी कैसे बता गया हमारे घर के पास पीपल का पेड़ है और फिर वह औरत जिस पर मुझे पहले की शक था।"

दिन-महीने साल यूँ ही गुजरते चले गए और दिल की धड़कने

जो साँसों की रहनुमाई में चली रहती थीं फिर एक बार आगे सरकीं। अचानक एक दिन जब जन्त्र का एक तरफ का टाँका टूटा हुआ पाया। यह सब देखकर जैसे अम्मा का तो दिल बैठ-सा गया था। सारे बदन में मानों पानी-सा पड़ गया था। चिन्ता की लकीरें चेहरे पर साफ उभरने लगी थीं। उदासी में डूबी साँसों ने भी अब तुरन्त आदेश दे डाला था और अनुपालना में, अम्मा भी फौरी 'जन्त्र' ठीक करवाने सुनार के पास चल पड़ी थी। हाँफते- हाँफते शाम के कोई पाँच बजे कदमों ने सुनार की दुकान पर आराम फरमाया था। "

"बे... बेटा ये लो मेरा जन्त्र। इसका एक तरफ का टाँका छूट गया है।"

"अम्मा देर कर दी अब तो मैं दुकान बन्द कर रहा हूँ।" सुनार

"…. नहीं, नहीं बेटा, मेरा ये काम कर दो, नहीं तो रात को मैं सो नहीं पाऊँगी।"

"अम्मा पड़ोस में मेरा एक मित्र चल बसा है अब मुझे वहाँ तुरन्त पहुँचना है। अम्मा कल आना। सुबह बना कर रख दूँगा और हाँ आप चिन्ता मत करो अब आप ठीक हैं एक रात की तो बात है।"

दुकान बन्द करते हुए सुनार के स्वर गूँजे थे। अब सुनार ने 'जन्त्र' अपने पास दुकान में रख दिया था और थोड़ी ही देर में अम्मा की आँखों से ओझल हो चुका था।

फिर एक सुबह आई। अब सुनार भी अपनी दुकान पर पहुँच चुका था। सबसे पहले 'जन्त्र' को टांका लगाना उचित समझा परन्तु इस काम के लिए सबसे पहले 'जन्त्र' के अन्दर रखे फोल्ड किए हुए कागज (जन्त्र) को सुरक्षित बाहर निकालना सुनार के लिए जरूरी था। बस अब अन्जाम देने के लिए कार्य शुरू हो चुका था। पहला वार तेजधार औजार से और फिर बदलते रहे छोटे-बड़े औजार परन्तु कागज के बनाये हुए जन्त्र को बाहर निकालने की कवायत में सुनार को सफलता नहीं मिल पा रही थी। बार-बार कोशिश करने के बावजूद जन्त्र (कागज का टुकड़ा) बाहर नहीं निकल पा रहा था। दूसरी तरफ कागज मतलब जन्त्र के फटने का भय, मन ही मन सुनार को लगातार सता रहा था। शायद इस लिए दिमाग में आई एक और योजना पर सुनार ने काम करना तुरन्त शुरू कर दिया था। सुनार ने गोलाकार में बने चांदी के जन्त्र को अब दोनों तरफ से खोल दिया था और फिर तुरन्त एक तरफ से फूँक मार कर जन्त्र को बाहर निकालना उचित तरकीब समझी थी। सुनार की यह तरकीब स्टीक भी बैठी परन्तु देखते ही देखते सारी मेहनत पर पानी फिर चुका था। ये क्या ! हुआ यूँ सुनार ने गहने बनाने के लिए सामने आग के अँगारे भड़काए हुये थे जैसे ही आँच धीमी होने लगती, सुनार पास रखे पंखे से बार-बार हवा देता, उधर अँगारे लाल हो उठते और साथ में सुनार जन्त्र बनाने में जुट जाता।

देखते-ही-देखते ग्रहों ने अपनी चाल चल दी थी। जैसे ही सुनार ने फूँक मारी जन्त्र दूसरी तरफ से निकल कर सीधा जलते-जलते आग के लाल-लाल अँगारों पर जा गिरा था और क्षण भर में सुनार की आँखों के सामने ही आग में भस्म हो चुका था। अब क्या करे ? सुनार के माथे पर पसीना टप-टप बहने लगा। साँसें भी जैसे ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई थीं। जन्त्र में टाँका तो लगा दिया गया था परन्तु तान्त्रिक का बनाया हुआ कागज का जन्त्र अब धुआँ हो चुका था ! अब करे भी तो क्या? दूसरी तरफ अम्मा के आने का वक्त भी तो हो चला था। आनन-फानन में सुनार ने भी एक बार फिर दिमाग को काम पर लगा दिया था। परिणाम में शायद फिर एक नई तरकीब ने जन्म लिया था। सुनार ने बिना विलम्ब के अपनी कॉपी का एक पेज फाड़ा, उसमें उलटी-सीधी लाइनें दे मारी और कागज के टुकड़े को फोल्ड करके चाँदी के जन्त्र के अन्दर अच्छी तरह बन्द करके बाहर से टाँका लगा दिया था और फिर निश्चिंत होकर जन्त्र दराज में रखने ही लगा था कि उतने में जन्त्र की मालकिन भी आ धमकी थी।

"हाँ बेटा हुआ मेरा जन्त्र तैयार। ?"

"…. ह…. हाँ- हाँ अम्मा जन्त्र तैयार है।"

"य ….. ये लो।"

हाथ में जन्त्र लेते ही अम्मा के कलेजे में मानों ठण्डक पड़ चुकी थी और साँसों ने भी तुरन्त उकेरा था,

"भला करे बेटा तेरा। रात को नींद नहीं आई थी। चेले ने ठीक जन्त्र बनाया था। "अच्छा तू बता कितने पैसे दूँ ?"

"…. नहीं-नहीं अम्मा पैसे रहने दो।" "सुनार"

… नहीं-नहीं बेटा ! कुछ तो रखना पड़ेगा। देखो इसी जन्त्र से तो मैं ठीक हुई हूँ, बेटा किसी की मेहनत का पैसा कभी नहीं रखना चाहिए। कहीं न कहीं तो हिसाब होगा। इसलिए बेटा मेरी मानों ये लो कुछ पैसे रख लो, आगे और कुछ नहीं बोलना।"

पैसे हाथ में थमाते ही, जन्त्र को लेकर अब अम्मा सुनार की आँखों से ओझल हो चुकी थी, लेकिन दूसरी तरफ सुनार मानसिक पीड़ा से ग्रस्त हो चुका था। जिसका मुख्य कारण रहा असली जन्त्र का आग में भस्म हो जाना। तरह-तरह के विचार मन-मस्तिष्क में उमड़ पड़े थे। अम्मा को अगर दोबारा कुछ हुआ जैसे नींद नहीं आई या फिर कुछ बीमारी खड़ी हो गई तो वह तान्त्रिक के पास जरुर जाएगी और वह सच जान जाएगा। फिर अम्मा सुनार का क्या करती, ऊपर से तान्त्रिक का डर अलग। बदन कुछ सिहर सा गया था। यह सब सोच-सोचकर मन-बुद्धि पागल सी हो उठी थी। दिलो-दिमाग में उमड़ती सोच ने बेचारे सुनार को झिंझोड़ कर रख दिया था। अब सुनार अकसर बीमार रहने लगा। दुकान भी सप्ताह में तीन-चार बार ही खुलने लगी थी। आग में भस्म हुए जन्त्र की बार-बार याद सताने लगी थी। एक तो अम्मा से लगाव

ऊपर से गलती कर बैठा था और अब करता भी क्या ! सच्च बोल नहीं सकता था और जो कुछ हुआ भी था वह भी तो अचानक ही हुआ था। आहत बहुत था घटित घटना भूल भी तो नहीं पा रहा था। अम्मा की चिंता उसे अकसर सताती रहती। सच बताने की सोच उसे अन्दर ही अन्दर डराने लगती परन्तु अम्मा के कुशल-मंगल की अन्दर ही अन्दर में अकसर भगवान से प्रार्थना करना न भूलता। परिणाम कुछ यूँ निकला, बीमारी की हालत में सुनार अकसर अस्पताल के चक्कर पर चक्कर काटता रहता। टेस्ट पर टेस्ट, ढेर सारी दवाइयाँ खानी शुरू कर दी थीं। लेकिन सेहत में सुधार कुछ नजर नहीं आ रहा था। बार-बार अम्मा का थका-माँदा चेहरा उसके सामने नजर आ जाया करता था और फिर डूब जाता कहीं किसी गहरी अनसुलझी चिन्ता में।

दूसरी तरफ समय का पहिया भी धीरे-धीरे घुमता चले गया। अब तो साल होने को आई थी। अम्मा की याद बार-बार सताती। सुनार प्रायः अपने को कोसता, अपनी गलती के लिए। अकसर सोचता, नया जन्त्र भी तो बनाया जा सकता था तान्त्रिक से। सच्च बता देता परन्तु पता नहीं उस वक्त दिमाग को क्या सूझा ! सब उलट-पुलट कर बैठा था परन्तु अब थक हार कर सुनार ने मन में एक बात जरूर ठान ली थी, चाहे कुछ भी हो वह अम्मा को अब सच्च बता देगा ताकि इस तनाव से वह हमेशा-हमेशा के लिए आजाद हो सके परन्तु एक सोच अन्दर ही अन्दर उसे झिंझोड़ रही थी। अम्मा अब किस हाल में होगी ? ठीक भी है या नहीं, साल बीत चुका था। अब क्या कहेगी? अगर हालत ठीक न हुई तो शायद मुझे श्राप न दे दे। सच्ची आत्मा का श्राप। अब क्या होगा ? सुनार गहरी सोच में पड़ चुका था।

कशमकश में पड़े सुनार ने आखिर इस चक्रव्यूह को भेदना ही उचित समझा था। अब चाहे कुछ भी हो, वह अब सच्चाई बतायेगा। अपनी की गई गलती को सुधारेगा। बस यही सोचकर आज सुनार ने अम्मा के घर जाने का मन बना लिया था। घर दूर था, पैदल रास्ता तय करना था। मन ही मन सोच रहा था। अगर अम्मा ठीक न हुई तो वह फिर स्वयं अम्मा को तान्त्रिक के पास ले जायेगा। इस उधेड़-बुन में सुनार ने अपनी दुकान का शटर बन्द कर डाला था। एक लम्बे अर्से से चल रहे तनाव को आज शायद किनारा मिलने वाला था। बस अब कदम भी खुद-व-खुद अम्मा के घर की तरफ बढ़ चले थे। थोड़ी ही देर में ठण्डी-ठण्डी हवाओं ने भी शायद सुनार को गाँव की दस्तक दे दी थी। शहर छोड़े अब लगभग दो घण्टे बीत चुके थे। गाँव के उच्चे-नीचे रास्तों पर चलना अभी शुरू ही हुआ था कि सामने से एक तीखी आवाज कानों में गूँज उठी थी,

"बेटा कहाँ जा रहे हो ? आज दुकान नहीं खोलनी क्या ?"

" ह.... ह ..... हाँ-हाँ अम्मा।"

"ल .. ले... लेकिन आप ?" सुनार

"म्म ....मैं तो बेटा तेरे पास ही आ रही थी।"

"म् .... मेरे पास और अम्मा मैं तो आपके पास आ रहा था।"

सुनार अन्दर ही अन्दर कुछ घबरा-सा गया था। सोचा कहीं अम्मा को पता तो नहीं चल गया होगा कुछ और आगे सोचता इससे पहले ही अम्मा के स्वर फिर एक बार कान में जा टकराये :- "म् .... मेरे पास। क्या काम है कोई ?" अम्मा ....

"न......न....नहीं- नहीं अम्मा काम तो कुछ नहीं। बस यूँ ही, आपके कुशल-मंगल जानने के लिए आ रहा था। बस मन मिलने को किया, सो बस चल पड़ा था और फिर अम्मा जन्त्र में टांका लगाने के बाद कभी मिलना भी तो नहीं हुआ था।" सुनार।

"हाँ बेटा जरुरत ही नहीं पड़ी। वैसे भी मेरा शहर आना हुआ ही नहीं और जन्त्र को टाँका तो तुमने बहुत अच्छा लगाया था। आज भी एक दम ठीक है।"

"प् ......प...पर अम्मा तबीयत तो अब ठीक है न ?" सुनार

"ह... हाँ-हाँ बेटा अब मै बिलकुल ठीक हूँ। यह बस इस 'जादुई जन्त्र' का ही तो कमाल है। देख इसे मै हमेशा गले डाल रखती हूँ। इसने तो मेरी सारी समस्याएं, मेरी सारी बीमारी, दर्द, वो डरावने सपने, सच में सब खत्म कर दिये। भला करे उस चेले का। अब मैं बिलकुल ठीक हूँ। तन्दुरुस्त हूँ। बेटा आज अगर मैं ठीक हूँ तो सिर्फ इस चमत्कारी जन्त्र की वजह से ।" गले में पड़े जन्त्र को पकड़ते अम्मा के शब्द कुछ यूँ कानों में पड़े थे।

यह सब सुनते ही अब सुनार की जान में भी जान आ चुकी थी। आँखों में एक अजीब सी चमक छा चुकी थी। वर्ष भर का वह तनाव, अब पल भर में हवा हो चुका था। मन हल्का हुआ पड़ा था परन्तु दूसरी तरफ हैरानगी भी बहुत हुई थी कि क्या उसके द्वारा एक कागज का फाड़ा हुआ टुकड़ा इतना बड़ा चमत्कार कर गया। शायद विश्वास होना ही बीमारी का सबसे बड़ा इलाज उभर कर सामने आया था। लेकिन इस कड़वी सच्चाई ने तान्त्रिक को आज पूरी तरह से नंगा कर डाला था। चाहे कुछ भी हुआ था परन्तु अब हाँ सुनार की खुशी का कोई ठिकाना न रहा था। देखते ही देखते अब पल भर में सुनार की बीमारी भी छू मन्तर हो चुकी थी। अब मारे खुशी के सुनार के शब्द हवा में कुछ यूं विलीन हुए थे,

"उ....अ.....अम्मा बहुत अच्छा लगा यह जानकर कि अब आप बिलकुल तन्दुरुस्त हैं स्वस्थ हैं। अब तो मेरा भी मन करता है, मैं भी एक ऐसा ही जादुई जन्त्र धारण कर लूँ।"

"ह.......... हाँ- हाँ क्यों नहीं बेटा। पर तू पहले वापिस दुकान पर चल। मेरी कान की बाली बना दे, इसमें भी टाँका लगाना है। मैंने अपने पोते की शादी में नाच-नाच कर धूम जो मचानी है।"

एच.पी.एस.ए.एस., वित्तीय सलाहकार
राज्य सतर्कता, 8219784721, 9418071740

कहानी

दरार

◆ डॉ. अरविंद ठाकुर

थर...थर...पानी खिड़की से कमरे के अंदर गिरता जा रहा है जैसे मानो कोई बरसाती नाला इस ओर मोड़ दिया गया हो। गली, सड़कें, खेत-खलिहान हर ओर पानी सिर्फ पानी...बरसात के मौसम का यह भयावह दृश्य जो मैदानी क्षेत्र के इस गांव को लगभग हर वर्ष झेलना पड़ता है। हर बार घर की नींव को हिलाकर जाता है और हर बार घर ढहने से बच जाता है। रामलाल के मस्तिष्क में कुछ ऐसी ही हलचल है। कमरों से जो कुछ उठाया जा सकता था उठा लिया गया और आसमान से बहते प्रलय के ठीक नीचे छत पर तीन बच्चों व पत्नी के साथ असहाय भाव में तिरपाल ओढ़े बैठा है, रात अभी काफी बाकी है।

"बाबा हमारा घर पानी में क्यों डूब गया" छः-सात वर्ष के बच्चे के मुंह से तपाक से निकला...वह बड़ी देर से समझने के प्रयत्न में असफल हो चुका था।

"बेटा पास के बांध में दरार आ गई है तो पानी हमारे गांव में घुस गया है"

"लोग बांध क्यों बनाते हैं"

"इससे हमें बिजली मिलती है"

"लेकिन हमारे गांव में तो बिजली है ही नहीं"

"वह शहर के लिए जाती है"

"तो क्या बिजली शहर के लिए और पानी हमारे लिए... ऐसा क्यों..!"

रामलाल निरुत्तर था क्या कहता कि प्रगति की मार किसी को तो झेलनी ही है। लस...लस...आसमान चमक रहा है... रोशनी जब आसपास गिरती सब कुछ जलमग्न झील सा नजारा दिखता. ..रामलाल अपने खेतों को क्षण भर की रोशनी में देख रहा है... पहचानना कठिन है कि कौन उसका है...और कौन अब्दुल का।

पानी इसी गति से बढ़ता रहा तो डेढ़-दो दिनों में छत पार कर जाएगा। रामलाल की अगली योजना छत से सटे पेड़ पर शरण लेने की है.. जिसे वह पिछली सर्दियों में पत्नी के आग्रह पर काट ना पाया था... आज उसे वह पेड़ जीवनदाता सा नजर आ रहा है... इस समंदर की अकेली नाव। सुबह रेडियो में सुना है जिला मुख्यालय में आज नेताओं और अफसरों की उच्च स्तरीय बैठक होनी है। बाढ़ का जायजा लिया जाएगा... और केंद्र से मिली राहत राशि को बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में बांटने की योजना बनाई जाएगी। रामलाल अपने गाव रामनगर का नाम बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में सुनकर हंस पड़ा..."शुक्र है दो सौ के मरने के बाद तो उन्होंने इसे बाढ़ समझा उच्च स्तरीय बैठक...हं।"

दोपहर जिला मुख्यालय में बड़े मन्त्री के साथ छुट-भइये नेता इकट्ठे हो रहे हैं। सफेद गाड़ियों में से, सफेदपोश, भारी-भरकम काय वाले...कुछ एक अपने कानों से फोन चिपकाए भीड़ को चीरते हुए, आस पास के लोगों को नजर अंदाज कर सीधा मीटिंग रूम में घुसे जा रहे हैं। पत्रकार अपनी कॉपी कलम लिए और टीवी रिपोर्टर माइक लिए गाड़ी के दरवाजे के खुलने से लेकर उनके पीछे पीछे लग जाते जब तक वह दूसरे दरवाजे अंदर ना चले जाएं। एक बहुत बड़ा टेबल जिसके एक सिरे पर बड़े मंत्री और दाएं बाएं बाकी बैठे हैं। प्रत्येक के मुंह के सामने मिनरल वाटर की एक महंगी बोतल सुसज्जित है.. कीटाणु रहित... शुद्ध पहाड़ों का पानी, विशेष बैठकों के लिए मंगवाया जाता है। बैठक पूरे एक घंटों चली ...जब बड़े मंत्री बाहर आए तो पत्रकार और रिपोर्टरों ने उन्हें घेर लिया।

"केंद्र ने हमारे साथ पक्षपात किया है ...सिर्फ पांच सौ करोड़ राहत राशि इससे क्या होगा। हमारी पार्टी केंद्र में विपक्ष में है इसलिए उन्होंने हमें इतना कम बजट दिया, लेकिन हम चुप नहीं बैठेंगे ...और राशि की डिमांड करेंगे।"

"राहत कार्य के लिए क्या रणनीति बनाई गई"- प्रश्नों की बौछार में से एक प्रश्न मंत्री तक पहुंचा

"सभी बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों को जल्द ही राशि मुहैया करा दी गई है, रामनगर के जिस बांध में दरार आई है केंद्र से अपील की गई है कि उसकी मरम्मत के लिए और धन दे ...और बाकी स्थिति नियंत्रण में है।" माइकों को हटाते हुए मंत्री जी गाड़ी की ओर बढ़े और अदृश्य हो गए।

कुछ देर बाद सफेद गाड़ी में वही मंत्री फोन पर चहक रहे हैं।

"मिश्रा जी वह जमीन का प्रोजेक्ट फाइनल कर दो।"

"लेकिन सर वह पार्टी पूरा पैसा कैश मांगती है - फोन के दूसरी ओर से आवाज आई।

"हां पैसों का प्रबंध हो गया समझो... पूरे साठ लाख उन्हें कैश मिल जाएंगे... कितने दिनों से इस शॉपिंग मॉल का प्रोजेक्ट अड़ा हुआ है ...अब रुकने की कोई आवश्यकता नहीं... मेरा सपना है कि शहर में एक ही छत के नीचे सारी सुविधाएं उपलब्ध हों ...सिनेमा- हॉल, रेस्टोरेंट, शॉप्स माल...हर प्रकार की दुकान. ..पांच पार्टियों ने तो अपनी साइड के लिए एडवांस में बुकिंग करवा ली है, अब जितना शीघ्र हो उतना अच्छा...और हां बांध की दरार के लिए शायद केंद्र से और राशि आ जाए... फिर तो भगवान ने चाहा तो एक और ऐसा शॉपिंग मॉल... मिश्रा जी आप घबराइएगा

नहीं... आप का चार परसेंट मैं नहीं भूलूंगा...।" और दोनों तरफ के ठहाकों से सफेद कार गूंज उठी।

बांध की दरार का निरीक्षण बड़े इंजीनियर साहब कर चुके हैं, उनका मानना है कि शीघ्र ही कुछ नहीं किया गया तो ... जलस्तर और बढ़ेगा। लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाना ही हल है। ऊपर से निर्देश आया है कि बांध का चौथा फाटक भी खोल दिया जाए वरना बांध की दरार पूरे बांध को ढहा देगी। पानी खिड़की को पार कर चुका है। रामलाल सदमे में है उसने अभी-अभी जगतू का फूला हुआ शरीर घर के सामने से बहते हुए देखा... कितना मजाकिया था जगतू ... हर बात पर जोर जोर से हंसता था, चौपाल के मनोरंजन का केंद्र था वह...रामलाल चाह कर भी उसकी लाश को रोक ना पाया ...उसे कुछ सूझ नहीं रहा था कभी गली से बहते नाले की ओर देखता तो कभी अपने बच्चों और पत्नी की ओर... पानी दहा-अग्नि सा प्रतीत होता है ना जाने कब घर की नींव हिल जाए और वह बच्चे, पत्नी...जगतू की तरह फूल जाए। सोच सोचकर वह सिहर उड़ता... बांध की दरार उसके सामने थी वह उसमें से बहते पानी को अपनी ओर उफनते देख रहा था...

"दरार ने ना जाने कितनों को निगल लिया होगा, फिर उसकी बारी... बच्चे,पत्नी नहीं... नहीं ऐसा नहीं हो सकता "- रामलाल माथे से पानी की बूंदों को हटाते हुए स्थिति को नकारने का प्रयत्न करता है।

जिला मुख्यालय में अफसरों की एक बैठक तय हुई, जिले के डीएम व अन्य प्रशासनिक अधिकारी एकत्रित हुए। केंद्र से मंत्री बाढ़ क्षेत्र का हवाई मुआयना करेंगे... हेलीकॉप्टर की आरामदायक सीट पर बैठकर एक छोटी सी गोल खिड़की से झांक कर... वह बांध की बड़ी दरार को ऊपर से ही देख लेंगे... लोग घरों की छतों पर रेंगते हुए कीड़ों की तरह दिखेंगे... जो अनायास ही हेलीकॉप्टर की कान फाड़ू ध्वनि को सुनकर आकाश की ओर, एक आस से देखेंगे कि शायद वहां से खाने का पैकेट गिरे और उनकी सिकुड़ी हुई आंतों को फिर खुलने का मौका मिले। मंत्री जी अपने लाव-लश्कर के साथ शाम को पधार रहे हैं सभी अधिकारियों को अपना अपना काम मिल गया है। कुछ उनके ठहरने का प्रबंध करेंगे तो कुछ भोजन का ...और हां मंत्री जी के लिए मिनरल वाटर का विशेष प्रबंध किया गया है। पिछली बार उन्हें पेट की शिकायत हो गई थी अधिकारियों को क्या-क्या नहीं सुनना पड़ा। अब दसवीं फेल को कोई क्या समझाए कि अगर हद से ज्यादा चिकन ठूसेंगे तो बदहजमी तो होगी ही। अधिकारी और डीएम सभी सतर्क थे कि कहीं कोई चूक ना हो जाए एक अधिकारी की ड्यूटी मंत्री को बाढ़ की ताजा रिपोर्ट बताने की भी लगाई गई है। बैठक खत्म हुई अफसर अपनी अपनी गाड़ियों में बैठने लगे तभी किसी एक अफसर की गाड़ी में से...

"क्या हुआ श्रीवास्तव जी"

"शर्मा जी ड्राइवर कहता है कि गाड़ी के कार्बोरेटर में कचरा आ गया है स्टार्ट नहीं हो पा रही है"

"आइए मेरे साथ इसी गाड़ी में चलते हैं" दोनों शर्मा जी की लग्जरी गाड़ी में बैठ गए।

"श्रीवास्तव जी सन सत्तासी की सरकारी एंबेस्डर को छोड़िए और कोई हमारी तरह चकाचक गाड़ी की डिमांड दे दीजिए जी।"

"हां इस बार लगता है गाड़ी आ ही जाएगी, मैंने तो दो टूक उच्च अधिकारियों को कह दिया है कि नई एसी गाडी दीजिये तो ही बाढ़ क्षेत्र का टूअर करूंगा... नहीं तो मेडिकल दे कर घर से एक कदम भी बाहर नहीं रखूंगा।"

"शर्मा जी...। आपका इस बार का क्या प्लान है।"

"अजी... प्लान क्या...दो सालों से छोटे बेटे को बोर्डिंग में डालने की सोच रहा था इस बार कसौली के बोर्डिंग स्कूल में उसका दाखिला करवा दूंगा और ऑस्ट्रेलिया में मेरा साला रहता है कई बार बोल चुका है सोचता हूं बरसात के बाद वहां सपरिवार जा आऊं।"

"आप तो ऑस्ट्रेलिया क्या... विश्व भ्रमण भी कर सकते हैं आखिर आपके क्षेत्र के बांध में दरार आई है और सुना है बजट भी भारी भरकम मिलेगा। और यहां हमारे क्षेत्र के बांध तो चार-चार हैं लेकिन साली दरार एक में भी नहीं आती ।"श्रीवास्तव जी बड़े अंतरंग होकर शर्मा जी से अनुभव बांट रहे थे दोनों एक ही बाढ़ की नाव पर सवार हैं एक दूसरे को काफी करीब से जानते हैं फिर लग्जरी गाड़ी उनके ठहाकों से गूंज उठी।

बांध की दरार से पानी निरंतर रिसता जा रहा है... छत अब जलमग्न होने को है। रामलाल सपरिवार पेड़ पर जा चढ़ा है। बर्तन और बाकी सामान को छत पर छोड़ दिया गया है। वह पेड़ की शाख पर से बर्तनों को तैरता और आटे की थैली को धंसता देख रहा है। दो दिनों से किसी के मुंह एक निवाला भी नहीं गया, जहां जान पर बात टिकी हो वहां पेट कभी आगे नहीं आता। गांव का हर एक घर एक टापू में बदल गया है कभी-कभी चीखने चिल्लाने की आवाज आती है कलेजा मुंह तक आ जाता है। रामलाल आसमान की ओर देखता है उसे आसमान में भी एक दरार सी दिखती है.. वह सोचता है अगर बांध की दरार ने तटों का साथ छोड़ दिया तो वह आसमानी दरार उसे, उसके परिवार को निगल लेगी। चारों ओर अंधेरा है... पानी ही पानी... रामलाल पेड़ पर लटके प्रार्थना करता है कि कम से कम इन टहनियों पर कोई दरार ना आए।

दन्त चिकित्सक, सिविल अस्पताल
पालमपुर, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
सम्पर्क 0 94180 41423

अनूदित इतालवी कहानी

एक उचक्के का रोमांच

◆ मूल कथा : इतैलो कैल्विनो अनुवाद : सुशांत सुप्रिय

महत्त्वपूर्ण बात तत्काल गिरफ्तार न होना थी। जिम एक दरवाजे की ओट में छिप गया और उसका पीछा करने वाले पुलिसवाले लगभग उससे आगे निकल गए। लेकिन फिर अचानक उसने गली में उनके कदमों के लौटने की आवाज सुनी। वह तेजी से कूदता हुआ भागा।

"रुको, वर्ना हम तुम्हें गोली मार देंगे, जिम !" हाँ, हाँ, मारो गोली ! उसने सोचा और तब तक वह उनकी प्रहार सीमा से दूर जा चुका था। उसके कदम उसे पुराने शहर की ढलान वाली गलियों के बीच से तेजी से भगाए लिए जा रहे थे। फव्वारे के ऊपर वह सीढ़ियों की रेलिंग पर से कूदा। फिर वह मेहराब के नीचे था जहाँ उसके कदमों की आवाज गूँजने लगी।

उसे जहन में जिन सभी लोगों के नाम याद आए उनके यहाँ इस समय जाना ठीक नहीं था। लोला, नहीं। निल्दे, नहीं। रेन, नहीं। ये पुलिसवाले उसे ढूँढ़ते हुए जल्दी ही इन सब लोगों के घरों के दरवाजे खटखटाने पहुँच जाएँगे। यह एक मृदुल-सी रात थी और आकाश में ऐसे फीके-से बादल थे जैसे दिन में नहीं दिखते थे। बादल, जो गली के ऊपर स्थित मेहराब के भी बहुत ऊपर थे।

नए शहर की चौड़ी सड़कों के पास पहुँचने पर मारियो अल्बानेसी उर्फ जिम बोलेरो ने अपनी चाल थोड़ी धीमी की और अपने माथे पर गिर आई बालों की लटों को अपने कानों के पीछे किया। कहीं किसी के कदमों की कोई आवाज नहीं आ रही थी। दृढ़ता और सावधानी से उसने सड़क पार की और आर्मांडा के मकान के दरवाजे पर दस्तक दी। रात के इस पहर वह आम तौर पर अकेली होती थी। इस समय तो वह सो रही होगी। इस बार उसने जोर से दरवाजा खटखटाया।

"कौन है ? "एक पल के बाद झल्लाए हुए एक पुरुष स्वर ने पूछा। "इस समय रात को सब सोना चाहते हैं ...।" वह लिलिन था।

"एक मिनट दरवाजा खोलना, आर्मांडा। मैं हूँ, जिम", उसने कहा।

आर्मांडा ने बिस्तर पर करवट बदली।" अरे, लड़के। एक मिनट। मैं दरवाजा खोलती हूँ ... ओह, तो तुम हो, जिम।" उसने बिस्तर के पास बँधी रस्सी को पकड़ कर खींचा। आज्ञा का पालन करते हुए बाहरी दरवाजा खुल गया। अपने दोनों हाथ जेबों में रखे हुए जिम गलियारे में से चलता हुआ शयन-कक्ष में आ गया। चादरों के बीच आर्मांडा अपने बड़े बिस्तर पर अपनी विशाल काया को फैलाए लेटी थी। बिना बनाव-शृंगार के तकिए पर पड़ा उसका चेहरा ढीला और झुर्रियों से भरा हुआ था। बिस्तर के दूसरे कोने में उसका पति लिलिन लेटा हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे वह अपना छोटा-सा नीला चेहरा तकिए में घुसा लेना चाहता था ताकि वह अपनी बाधित नींद को पूरा कर सके।

लिलिन को तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है जब तक अंतिम ग्राहक निपट नहीं जाता। फिर वह बिस्तर पर लेट कर अपने आलस-भरे दिन में एकत्र हो गई थकान को दूर करने के लिए निद्रा की आगोश में जा सकता है। क्या करना है और कैसे करना है, इसके बारे में लिलिन कुछ नहीं जानता है। यदि उसके पास पर्याप्त संख्या में सिगरेट हो, तो वह संतुष्ट रहता है। आर्मांडा को लिलिन पर ज्यादा रकम खर्च नहीं करनी पड़ती। लिलिन दिन भर में जितनी सिगरेट पीता है, बस उतने का ही खर्च आर्मांडा वहन करती है। रोज सुबह वह अपना सिगरेट का पैकेट ले कर बाहर निकल जाता है। वह थोड़ी देर के लिए कभी मोची के पास बैठता है, कभी कबाड़ीवाले के पास तो कभी नलसाज के पास। उन सभी दुकानों के स्टूल पर बैठकर वह एक-के-बाद-एक सिगरेट पीता रहता है। उसके हाथ उसके घुटनों पर होते हैं, उसका चेहरा पीला होता है और उसकी दृष्टि तन्द्रालु होती है। वह किसी जासूस की तरह सबकी बातें सुनता है पर खुद कभी-कभार ही कोई संक्षिप्त टिप्पणी करता है या अप्रत्याशित कुटिल मुस्कान देता है।

शाम के समय जब अंतिम दुकान भी बंद हो जाती है, वह शराब के ठेके पर जाता है और लगभग एक लीटर दारू से अपना गला तर करता है। फिर वह वहीं बैठ कर तब तक अपनी बाकी बची सारी सिगरेटों को फूँकता है जब तक कि दारू के ठेके के बंद हो जाने का समय भी नहीं हो जाता। जब वह वहाँ से बाहर आता है, तब भी उसकी बीवी कोर्सो के इलाके में अपने छोटे परिधान, सूजे हुए पैरों और तंग जूतों में अपने नियमित गश्त पर होती है। लिलिन गली के एक कोने के पास प्रकट होता है, एक धीमी सीटी बजाता है और अपनी पत्नी को यह बताने के लिए कुछ शब्द

बुदबुदाता है कि अब देर हो गई है और घर का बिस्तर उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। लेकिन वह अपने पति की ओर नहीं देखती। वह फुटपाथ पर ऐसे खड़ी है जैसे वह किसी मंच पर खड़ी हो। उसके उरोज तार वाली लचीली अंगिया में दबे हुए हैं। ऐसा लगता है जैसे उसकी अधेड़ देह किसी छोटी उम्र की लड़की के कपड़ों में घुसी हुई है। वह अपने पर्स को अपने हाथों में अधीरता से झटक रही है। वह अपनी सैंडल की एड़ी से फुटपाथ पर दायरे बना रही है। अचानक वह गुनगुनाने लगती है। ऐसी अवस्था में वह अपने पति को मना करते हुए कहती है कि अभी भी वहाँ काफी चहल-पहल है। इसलिए उसे घर जा कर आर्मांडा के आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हर रात वे दोनों इसी तरह एक-दूसरे से प्रेम जताते हैं।

"तो कैसे आना हुआ, जिम ?" आर्मांडा की आँखों में हैरानी का भाव है। जिम को पहले ही छोटी मेज पर पड़ा सिगरेट-पैकेट दिख गया है और उसने उसमें से एक सिगरेट ले कर जला ली है।

"मुझे आज की रात यहाँ बितानी है।"

"ठीक है, जिम। बिस्तर पर आ जाओ। लिलिन प्यारे, तुम सोफे पर चले जाओ। उठो, जिम को बिस्तर पर आने दो।"

लिलिन पत्थर की तरह वहीं पड़ा रहता है। फिर शिकायत भरी आवाज में अस्पष्ट-सा कुछ बुदबुदाते हुए वह किसी तरह उठता है, बिस्तर से उतरता है, अपना तकिया, कम्बल और मेज पर रखा सिगरेट पैकेट उठाता है।

"बढ़िया, लिलिन प्यारे, चलो, शाबाश !"

वह झुका हुआ है और बहुत छोटा लग रहा है। इन सभी चीजों के भार तले दबा हुआ वह गलियारे में रखे सोफे की ओर चला जाता है।

अपने कपड़े उतारते हुए जिम सिगरेट के कश लेता रहता है। वह अपनी पतलून को ध्यान से मोड़ कर हैंगर पर टाँग देता है। फिर वह अपनी जैकेट को भी बिस्तर के सिरहाने के पास रखी हुई कुर्सी पर व्यवस्थित रूप से रख देता है। इसके बाद वह एक और सिगरेट पैकेट, माचिस और ऐश-ट्रे दूसरी जगह से उठा कर अपनी पास वाली छोटी मेज पर ले आता है और खुद बिस्तर पर लेट जाता है। आर्मांडा कमरे की बत्ती बुझाकर एक ठंडी साँस लेती है। लिलिन गलियारे में पड़े सोफे पर सो गया है। आर्मांडा करवट बदलती है। जिम अपनी सिगरेट बुझा देता है। तभी दरवाजे पर दस्तक होती है।

जिम का हाथ जैकेट की जेब में रखी रिवाल्वर पर चला जाता है। अपने दूसरे हाथ से उसने आर्मांडा की कोहनी पकड़ी हुई है।वह फुसफुसा कर आर्मांडा से सावधान रहने के लिए कहता है। आर्मांडा की बाँह मोटी और कोमल है और कुछ पल वे दोनों उसी अवस्था में रहते हैं।

"कौन है , पूछो लिलिन," आर्मांडा धीमी आवाज में कहती है।

गलियारे में सोफे पर लेटा लिलिन व्यग्र हो कर झुँझलाता है और अशिष्टता से पूछता है" कौन है, बे? "

"अरे , अर्मांडा ! मैं हूँ , एंजेलो। "

"एंजेलो कौन ?"

"पुलिस का सार्जेंट , एंजेलो। मैं इधर से गुजर रहा था तो सोचा, तुमसे मिलता चलूँ। क्या तुम एक मिनट के लिए दरवाजा खोलोगी?"

जिम बिस्तर से नीचे उतर आता है और आर्मांडा से चुप रहने का इशारा करता है। वह गुसलखाने का दरवाजा खोल कर अंदर झाँकता है और फिर जिस कुर्सी पर उसके कपड़े पड़े हैं , वह कुर्सी ले कर वह गुसलखाने में चला जाता है।

"मुझे किसी ने यहाँ आते हुए नहीं देखा है। जल्दी से उसे यहाँ से भगाओ। " जिम मृदु आवाज में कहता है और गुसलखाने में जाकर दरवाजा भीतर से बंद कर लेता है।

"प्यारे लिलिन, बिस्तर पर आ जाओ। चलो, लिलिन।" बिस्तर पर लेटे-लेटे आर्मांडा दोबारा कमरे की व्यवस्था सुनिश्चित करने लगती है।

"आर्मांडा, तुम मुझे बाहर ही प्रतीक्षा करवा रही हो, " दरवाजे के बाहर खड़ा पुलिस सार्जेंट बोलता है।

लिलिन शांत भाव से सोफे पर से उठता है, अपना तकिया, कम्बल, सिगरेट-पैकेट , माचिस और ऐश-ट्रे उठा कर बिस्तर पर आ जाता है। बिस्तर पर लेट कर वह ओढ़ने वाली चादर से अपनी आँखें ढँक लेता है। आर्मांडा रस्सी पकड़ कर खींचती है और बाहर का दरवाजा खुल जाता है।

सार्जेंट सोड्डू भीतर आता है। वह पुलिस की वर्दी में नहीं है और उसके बूढ़े चेहरे पर अस्त-व्यस्तता का भाव है। उसका चेहरा मोटा है और मूँछें सफेद हैं।

"सार्जेंट , आप देर रात तक काम पर हैं ," आर्मांडा कहती

है।

"अरे, मैं तो टहलने निकला था, " सोड्डू कहता है, "और मैंने सोचा कि तुमसे मिलता चलूँ।"

"आप क्या चाहते हैं ?"

सोड्डू बिस्तर के सिरहाने के पास रुमाल से अपने माथे का पसीना पोंछ रहा था।

"कुछ नहीं, बस तुमसे मिलने चला आया। और नया क्या चल रहा है ?"

"नया कैसा?"

"संयोग से कहीं तुमने अल्बानेसी को देखा है क्या?"

"जिम ? अब उसने क्या किया है?"

"कुछ नहीं। बच्चों वाली हरकतें ... हम उससे कुछ पूछताछ करना चाहते थे। क्या तुमने उसे देखा है ?"

"तीन दिन पहले।"

"मेरा मतलब आज और अभी से है। "

"मैं तो पिछले दो घंटे से सो रही थी , सार्जेंट। आप मुझसे यह सब क्यों पूछ रहे हैं ? उसकी प्रेमिकाओं रोजी, निल्दे, लोला वगैरह के पास जाइए और उनसे पूछिए ...।"

"कोई फायदा नहीं। जब वह कुछ गड़बड़ करता है और मुसीबत में होता है तब उन सबसे दूर रहता है।"

"वह यहाँ नहीं आया है। शायद अगली बार, सार्जेंट।"

"खैर, आर्मांडा। मैं तो वैसे ही पूछ रहा था। जो भी हो , तुम से मिल कर अच्छा लगा। "

"शुभ रात्रि , सार्जेंट। "

"शुभ रात्रि। "

सोड्डू मुड़ा लेकिन दरवाजे की ओर नहीं गया।

"मैं सोच रहा था ... अब तो लगभग सुबह होने वाली है, और मुझे अब गश्त भी नहीं लगानी। मैं अपने कमरे के बिस्तर पर वापस नहीं लौटना चाहता। अब जब मैं यहाँ आ ही गया हूँ तो क्यों न आज यहीं रुक जाऊँ। तुम क्या कहती हो , आर्मांडा। अब मेरे लिए थोड़ी जगह बनाओ। "

"ठीक है। लिलिन सोफे पर चला जाएगा। लिलिन प्यारे, उठो, सोफे पर जाओ।"

लिलिन अपने लम्बे हाथों से चीजें टटोलने लगा। उसने मेज पर से सिगरेट का पैकेट लिया और भुनभुनाता हुआ किसी तरह उठा। बिस्तर से नीचे उतर कर उसने लगभग बिना अपनी आँखें खोले अपना तकिया, कम्बल, माचिस उठाया। "चलो, प्यारे लिलिन। "वह हॉल में अपने पीछे कंबल घसीटता हुआ गलियारे में रखे सोफे की ओर चला गया। सोड्डू बिस्तर पर चादरों के भीतर घुस गया।

उधर गुसलखाने में छिपा हुआ जिम गुसलखाने की खिड़की से आकाश को गहरे हरे रंग में बदलते हुए देख रहा था। मुश्किल यह थी कि वह अपना सिगरेट-पैकेट शयन-कक्ष की मेज पर ही छोड़ आया था। और अब वह पुलिस सार्जेंट उसी कमरे के बिस्तर पर जा लेटा था। इसके कारण जिम को सुबह होने तक बिना सिगरेट के वहीं छिपे रहना पड़ सकता था कमोड वाले उस छोटे-से गुसलखाने में जहाँ टैल्कम पाउडर के बहुत सारे डिब्बे पड़े थे। उसने चुपचाप दोबारा अपने कपड़े पहन लिए थे, कंघी से अपने बाल सँवारे और वाश-बेसिन के आईने में अपने हुलिये पर निगाह डाली थी। वहाँ ताक पर इत्र और आँखों की दवाई की शीशियों के साथ कई अन्य दवाइयाँ और कीटनाशक मौजूद थे। खिड़की से आती रोशनी में उसने कई शीशियों पर लिखे दवाइयों के नाम पढ़े, एक शीशी में से कुछ दवाइयाँ चुरा कर जेब में रख लीं और गुसलखाने में चारों ओर देखना जारी रखा। वहाँ ढूँढ़ने के लिए ज्यादा कुछ नहीं था। कुछ कपड़े टब में पड़े थे, कुछ खूँटी पर लटके हुए थे। उसने वाश- बेसिन के नल की जाँच की आवाज के साथ पानी बाहर आया। यदि सोड्डू ने सुन लिया तो? भाड़ में जाएँ सोड्डू और जेल का भय।

जिम ऊब महसूस कर रहा था। उसने कुछ इत्र अपने जैकेट पर छिड़का और बालों में ब्रिलियंटाइन लगाया। सच यह था कि यदि वे उसे आज गिरफ्तार नहीं कर पाए तो कल कर लेंगे। लेकिन वे उसे रंगे हाथों नहीं पकड़ पाए थे। इसलिए यदि सब ठीक रहा तो अंत में वे उसे छोड़ देंगे। उस 'आरामदेह कमरे' में बिना सिगरेट के अगले दो-तीन घंटे बिताना तो यातनादायक था। घबराने की क्या बात है उसने सोचा। जाहिर है, बिना किसी सबूत के उन्हें उसे जल्दी ही छोड़ देना पड़ेगा। उसने गुसलखाने में मौजूद एक अलमारी खोली। अलमारी खुलते समय पल्लों के चरमराने की आवाज आई। भाड़ में जाए अलमारी और सब कुछ। अलमारी में आर्मांडा के कपड़े लटके हुए थे। जिम ने अपना रिवाल्वर निकाल कर आर्मांडा के एक चमड़े के जैकेट की जेब में डाल दिया। मैं बाद में वापस आ कर अपना रिवाल्वर ले जाऊँगा, उसने सोचा। वैसे भी आर्मांडा को अगली सर्दियों तक इस जैकेट की जरूरत नहीं पड़ेगी। उसने जब जैकेट की जेब से अपने हाथ बाहर निकाले तो पाया कि उसके हाथ में नैप्थलीन की गोलियों का सफेद रंग लग गया था। बढ़िया है, वह हँसा। अब उसकी रिवाल्वर को कीड़े नहीं खा पाएँगे। उसने अपने हाथ दोबारा धोए लेकिन आर्मांडा का गंदा तौलिया उसे उबकाई दिला रहा था। इसलिए उसने अपने गीले हाथ अलमारी में टँगे एक वस्त्र से पोंछ लिए।

बिस्तर पर लेटे हुए सोड्डू ने गुसलखाने से आती आवाजें सुनी थीं। उसने आर्मांडा पर अपना एक हाथ रखते हुए पूछा, "वहाँ अंदर कौन है?"

आर्मांडा उसकी ओर मुड़ी और अपनी नरम बाँह उसके गले के गिर्द डालती हुई बोली, "कोई नहीं ... वहाँ कौन हो सकता है ...?"

सोड्डू खुद को आर्मांडा की पकड़ से छुड़ाना नहीं चाहता था लेकिन उसे गुसलखाने में किसी के चलने-फिरने की आवाजें दोबारा सुनाई दीं। उसने फिर पूछा, “वहाँ क्या हो रहा है ? कौन है वहाँ?”

जिम गुसलखाने का दरवाजा खोलकर शयन-कक्ष में आ गया। “चलो सार्जेंट, बेवकूफों जैसा व्यवहार मत करो। मुझे गिरफ्तार कर लो।”

सोड्डू ने अपना एक हाथ कुर्सी पर रखे जैकेट की जेब में डाल कर रिवाल्वर पकड़ लिया। लेकिन उसने खुद को आर्मांडा के आलिंगन से नहीं छुड़ाया।

“कौन हो तुम ?”

“जिम बोलेरो।”

“खबरदार ! अपने दोनों हाथ ऊपर करो।”

“मेरे पास हथियार नहीं है, सार्जेंट। मूर्खता मत करो। मैं खुद को कानून के हवाले कर रहा हूँ।”

अब वह बिस्तर के सिरहाने के पास खड़ा था। उसका जैकेट उसके कंधों पर पड़ा था और उसके दोनों हाथ आधे उठे हुए थे।

“अरे, जिम ! यह क्या !” आर्मांडा ने कहा।

“मैं कुछ दिनों के बाद तुमसे मिलने आऊँगा, आर्मांडा।” जिम ने कहा।

सोड्डू कुछ बुदबुदाता हुआ बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया। उसने फटाफट अपनी पतलून पहनी।

“क्या वाहियात नौकरी है ... कभी पल भर का भी चैन नहीं है ...।”

जिम ने मेज पर से एक सिगरेट उठा कर जला ली और सिगरेट-पैकेट को अपनी जैकेट की जेब में डाल लिया।

“मुझे भी एक सिगरेट दो, जिम, ” आर्मांडा बोली। यह कहते हुए वह अपने ढीले उरोज उठाए हुए जिम की ओर झुकी।

जिम ने आर्मांडा के होंठों के बीच एक सिगरेट फँसाई और जला दी। फिर उसने जैकेट पहनने में सोड्डू की मदद करते हुए कहा ,” अब चलते हैं , सार्जेंट।”

“फिर कभी , आर्मांडा ,” सोड्डू बोला।

“फिर मिलते हैं , एंजेलो ,” उसने कहा।

“फिर मिलें , आर्मांडा ?” सोड्डू ने दोबारा कहा।

“विदा, जिम।”

वे दोनों बाहर की ओर चले गए। गलियारे में लिलिन टूटे हुए सोफे के किनारे पर लटका हुआ सो रहा था। वह हिला तक नहीं। अपने बड़े बिस्तर पर बैठी आर्मांडा सिगरेट पी रही थी। उसने कमरे की बत्ती बुझा दी क्योंकि अब बाहर से एक धूसर रोशनी पहले से ही कमरे में आ रही थी।

“लिलिन, ” उसने पुकारा। “चलो , लिलिन। वापस बिस्तर पर आ जाओ। चलो , लिलिन प्यारे।”

लिलिन पहले से ही अपना तकिया, ऐश-ट्रे वगैरह उठा रहा था। (1949)

A-5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड,
इंदिरापुरम् , गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश -201014
मो : 85120 70086

नवीन हलदूणवी के नवगीत

अनुभव का ये गणित किताबी

अनुभव का ये गणित किताबी,
थाम कलम की सुंदर चाबी।

दुनिया जय - जय कार करेगी,
गीत सुनाए सतलुज - राबी।

जीवन कुसुम खिलेगा फिर से,
विकसित सपने ओंठ गुलाबी।

अपनेपन को भूल न जाना,
पकड़ न लेना चाल शराबी।

दीन - धर्म की बातें करना,
होगा फिर से ठाठ नबावी।

बिगुल 'नवीन' बजाना फिर से,
भारत के हित तुरत जबावी।

असर न मुझ पर कोई होता

जैसा हूं वैसा ही दिखना,
जान रहा हूं कैसे लिखना?

सच का साथ दिया है जबसे,
भूल गया है चूं चूं चिखना।

मुझ से कहती संजू भाभी,
कलम न जाने जग में बिकना।

पकड़ बड़ी मजबूत हुई है,
सीख लिया है जबसे टिकना।

मिल कर हमको लूट रहे हैं,
जान गये हैं लीडर मिकना।

असर न मुझ पर कोई होता,
खूब 'नवीन' घड़ा है चिकना।

काव्य-कुंज, जसूर, जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश-176201, मो. 0 82194 84701

डॉ. घमंडी लाल अग्रवाल की ग़ज़लें

पिता

सुमन, सुगंध, पराग पिता
प्यार, प्रीति, अनुराग पिता

मां है जिसके दम से मां
मां का बने सुहाग पिता

संरक्षण दे, सुविधा दे
करता भागमभाग पिता

बच्चों की खातिर जग में
जलता हुआ चिराग पिता

रंगों का मेला जीवन
मस्ती वाला फाग पिता

रहे समर्पण से नाता
उर में रखता त्याग पिता

जिसमें बंद उमंगें हैं
ऐसा एक विभाग पिता

बाद जगाता बच्चों को
पहले जाता जाग पिता

छेड़ों तो उजियारा दे
कोई दीपक - राग पिता

मीठे - मीठे सपनों का
लाए ढूंढ सुराग पिता

अपनेपन से धो लेता
अपने मन के दाग पिता

संबंधों की पोथी में
जमा, गुणा, है भाग पिता

मां

शीतल, मंद हवा है मां
करुणा, स्नेह, दया है मां

सुन बच्चा दौड़ा आए
मीठी एक सदा है मां

पीड़ा पीकर मुस्काती
रखती नयी कला है मां

आशीषों का अमृत दे
सुख का बनी पता है मां

कभी दिखे है देवी-सी
लगती कभी सखा है मां

'वाह-वाह' की ध्वनि निकले
सुनिए ज़रा क़ता है मां

मनभावन रंगों वाला
सचमुच हुई सफ़ा है मां

घावों से छुटकारा दे
एक अचूक दवा है मां

दीन धनी बन जाता पा
ऐसा ही गहना है मां

चोरी कर ले उर सबके
बांकी बड़ी अदा है मां

इस बेदर्द ज़माने में
हम तो कहें वफ़ा है मां

785/8, अशोक विहार, गुरुग्राम, हरियाणा-122 006, मो. 0 92104 56666

कविता

अंकुर

जय नारायण कश्यप

अंकुर तो निकाल, धीरज तो धर,
कोमलांगों को, अस्थि सा कर,
दधीचि हो, वज्र सा संवर,
इंद्र धरेंगे कर आगे कर
है कौन सा प्रस्तर जो टूटेगा न,
है कौन पहाड़ जो फूटेगा न?
फिर बाधायें ही तेरी होंगी ढाल,
प्रस्तर रोकेगा, कुल्हाड़ी की चाल,
और प्रस्तर ही संजोयेगा वर्षाजल,
जड़ में बहेगा करता कलकल,
हैरत से तकेगी पूरवा कल,
बिगाड़ूंगी क्या आंधी बन कर,
जिनके इरादे, पक्के होंगे,
निहारेंगे अपलक, 'जय' हक्के बक्के होंगे।

मकान नं. 120, रौड़ा सैक्टर-2, बिलासपुर,
जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश-174 001,
मो. 0 78760 78790

डॉ. आर. वासुदेव प्रशांत की कविताएं

जंगल उदास है

इस साल बहुत कम वक्त के लिए
आई है कोयल
जबकि पहले उसके अतिमधुर स्वर में
गूंजता रहता था बहुत देर तक
यह सारे-का-सारा जंगल
और बेताब रहते थे।
उसके इंतज़ार में हमेशा
जंगल के पशु-पक्षी और जीव-जंतु सब
पर इतनी कम अवधि के लिए
इस बार उसका आना
जंगल को उसकी वर्षा के रस में
सराबोर न कर सका
सोचने लगे सब कि
कोयल भी शायद डर गई है
हम सब की ही तरह
करोना के डर से
और इसीलिए लौट गई है वह
जल्दी ही अपने घर
दरअसल जान गई है कोयल कि
जंगल के हुजूम से दूर रहने में ही
उसका भला है
सोचता रहता हूं -
कितनी समझदार है यह कोयल
जो जानती है बखूबी कि
किसी भी हुजूम से दूरी ही
उपाय है एकमात्र करोना से बचाव का
पर जंगल तो कोयल के होने के बिना
बहुत उदास है।

मांग-पात्र के लिए वह

हर रोज़ सुबह सात के करीब
नियम से बंधा हुआ-सा
निकलता है वह मेरे घर के सामने से
हाथ में अपना मांग-पात्र लिए
जो कि एक गिलास पीतल का
बीच-बीच में मुड़ा-तुड़ा
और प्रतीक उसकी जर्जर देह का
वेशभूषा में पहने रहता है वह
वही फटी-पुरानी पैंट
बरसों से एक-सी
और अगनित पैबंद लगी
और दूसरे हाथ में लिए बैंत की छड़ी
जो दे रही मानो सहारा उसके बुढ़ापे को
चाल उसकी होती है थकी-थकी
ढो रही जो जैसे-तैसे
उसकी बुढ़ाती देह को
मांग-पात्र में डाले रखता है वह हमेशा
दो-चार चमकते सिक्के मैटल के
जिन्हें करता है वह बखूबी इस्तेमाल
अपनी मांग-यात्रा के समय
हर घर के आगे
ज़ोर-ज़ोर से छिणकाता जाता है वह
अपना टूटा-फूटा मांग-पात्र
जिसमें डाल देती है कोई-कोई
गृहस्वामिनी
एक सिक्का/बड़े बेमन से शायद
इस तरह चलता रहता है
यह क्रम उसका दिनभर
और हो जाती है उसे कुछ कमाई
ज़िन्दगी की गुज़र-बसर के लिए
लोग भी अब हो चुके हैं आदी
उसकी रोज़-रोज़ की इस आदत के
और अक्सर आक्रोश में
फुसफुसाते हैं आपस में -
दस-बारह कनाल ज़मीन थी कभी इसके
पास
जिसका मूल्य होगा आज के रेट से
कम-से-कम छः-सात करोड़
पर वह ज़मीन तो अब उसकी नहीं है
वह तो बन चुकी है कानूनी जायदाद
उसके भाई-भतीजों की
जिसे शायद कभी अति भावुकता में
कर दिया था उसने उनके नाम
सोच कर यही कि कभी तो
होंगे वे ही उसके हकदार
जो अब नहीं पूछते बिलकुल भी
उसका हाल-चाल
बस इस तरह होकर बेघर
भटकता रहता है वह
बिना थके-हारे
सुबह से शाम तक दिनभर
दो वक्त की रूखी-सूखी रोटी की खातिर
और सोचता रहता है हर पल -
लिखा है शायद यही मेरी किस्मत में
जिसे अब हर हालत में स्वीकारना ही
होगा
पर लोग तो अब कहते हैं यही कि
वह तो एक सिरफिरा है
और आदतन भिखारी।

जवाहर नगर, धर्मशाला, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-176 213, मो. 0 94599 87125

डॉ. अनीता शर्मा की कविताएं

मजदूर की अभिलाषा

पला, बढ़ा-पढ़ा मैं
तो मची होड़ / अब चलो शहर की ओर
क्या देगा यह गाँव
जब होगा न कोई काम
पेट काट मां-बाप पढ़ायें
तो मिलना चाहिए
उन्हें भी कुछ आराम।
आया शहर, पराया शहर
न रात, न दिन
बस मेहनत, मेहनत।
कोई न अपना/ पैसा ही सपना
प्यार दिया, तो प्यार समेटा
गाली दी तो गाली खा ली
पेट काट कर, भटक भटक कर
पैसे चार कमाए पर भरा न पेट।
एक वक्त, अब ये भी आया
शहर हुआ न अपना
गठ्ठर बांधे, खड़ा दौराहे
टूटा मेरा सपना / पैसे जोड़े, कहाँ गये
बस घर भेजे या खर्च किये।
अब खाली खाली आँखों से
वो अपना गाँव ही याद आया
वो पेड़ अपने वो खेत अपने
वो ठंडा ठंडा नीर
मेहनतकर जो काम करूं
तो हरूं मैं, सबकी पीर
मैं किसान हूँ, मैं श्रमिक हूँ
मैं चालक, मैं कारीगर
मेहनत, लगन से जो भी सीखूं
बन जाऊँ मैं बाजीगर
वर्षों मैंने शहर निखारे
शहरों को पुररौनक करके
गठ्ठर में सब हुनर समेटेअब
मैं चला गाँव की ओर
हार न मानूं, डटा रहूँगा, आगे बढूँगा
उसी हुनर से गाँव निखारूं
फिर बैठा घंटों मैं निहारूं
पावंजलें न, शीश कटें न
विकसित शहर सा बन जाए
अब यह गाँव मेरा।
तकनीकी को विकसित करके
शिक्षा और प्रगति की राह पर
चले यह गाँव मेरा
अब यही है मेरी आशा
हरेक हाथ को मिले काम
बस यही मेरी अभिलाषा,

कौन हो तुम

कौन हो तुम / जो इशारों, संकेतों में
समझा जाते हो सब / उदास जब होती हूँ
धैर्य बंधा जाते हो तब
दुर्घटनाओ के वक्त / सब के सामने से
चुपचाप बचा ले जाते हो कब
कौन हो तुम?
मुझ अनाड़ी को/ मान दिलाते हो
जीवन जीने का रास्ता/ दिखलाते हो
सम्भाला है सारा बोझ
सभी का / मैं भी सहारा बन सकूं
किसी का / यही तो मुझसे चाहते हो तुम
मनोबल लगे जब टूटने
तो मनोबल बढ़ाते हो तुम
उदास निराश जब होऊं
तो मुस्कुराना सिखाकर
आशावादी बना जाते हो तुम
कौन हो तुम?/ मेरी आत्मा हो
या सबल परमात्मा हो
मुझ दुर्बल कमजोर को/ सबल बना कर
हर पल जीना सिखाते हो तुम

जिला भाषा अधिकारी (से. नि.), मकान नम्बर 78 रौडा सेक्टर नं. दो बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश- 174001, मो. 0 78075 36520

कविता

जिंदगी का किताब होना

स्वाति शर्मा

पीढ़ियों के साथ जुल्म
हर बार यह किया गया
कहना किसी ने चाहा
कहने नहीं दिया गया

किताब की हर बात को
किताब में रखा गया
क्यों किसी ने जिंदगी को
किताब न होने दिया

वह आज मुझसे कह रहे हैं
क्यों झूठ कहती हो हर दफा
पर मामला तो यह था कि
यह झूठ ज्यादा देर तक
झूठ भी तो नहीं लगा

खुद के कहे उस झूठ पर
उस रोज मुझको शक हुआ
जिस रोज मुझको किसी ने
सत्य की मूरत कहा

कुछ बोलकर इतिहास में
हर कोई पागल कहा गया
सत्य और झूठ तो किसी
रोज फिर छाना गया

कहकर यह जहर पीना
आखिर क्यों तुम्हें मंजूर है
खामोश रह अमृत पियो
मृत्यु अभी भी दूर है

श्रापित इस घड़ी सत्य को
इस तरह से किया गया
असत्य को ही अमरता का
वर है समर्पित किया गया।

गांव व डाकघर खनयोल बगड़ा करसोग, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश-175 011

अनन्त आलोक की ग़ज़लें

- एक -

बाल रंगा कर आ जायेंगे,
पार्लर जा कर आ जायेंगे।

खास जगह पर शादी है जी,
शगुन चढ़ा कर आ जायेंगे।

छुट्टी-छाट्टी तो क्या लेनी,
रात को खा कर आ जायेंगे

पान सुपारी साथ में रखना,
और लगा कर आ जायेंगे।

पूछेगा जो कोई सारे,
राज बता कर आ जायेंगे।

कुछ नम्बर भी लेंगे- देंगे,
और पटा कर आ जायेंगे।

डांस करेंगे सेल्फी लेंगे,
हाथ दबाकर आ जायेंगे।

- दो -

आओ भी अब तो कुछ खास किया जाए,
इक दूजे पर कुछ विश्वास किया जाए।

अँधेरे की छाती पर कुछ दीप जलाओ,
मन मंदिर में फिर उज्जास किया जाए।

सब के सर पर चढ़ बैठी हैं खुदगर्जी,
इस को फिर से अपना दास किया जाए।

भूख लगी है तो रोटी खा पानी पी,
क्यों भाई के खूं को प्यास किया जाए।

कर्फ्यू में भूखों को भोजन दे घर से,
पूजा और अजां अरदास किया जाए।

- तीन -

कब से हूँ मुंतजर नहीं आती,
आजकल तू इधर नहीं आती।

मैं तो उलझा हूँ नेट पर तू क्यों,
कहाँ मसरूफ घर नहीं आती।

मत किया कर तू इतना मेकप यार,
तेरी सूरत नजर नहीं आती।

सब के सब बेवफा हैं अब तो ये,
नींद भी रात भर नहीं आती।

नेट पर घूम ली है दुनिया बस,
पाँव में ही डगर नहीं आती।

- चार -

तुम कहते हो क्या मिलता है,
वो कहते हैं स्वा मिलता।

जब कविता के साथ मैं बैठूं,
एक नया वादा मिलता है।

जब जब सूरज सर पर होता,
एड़ी से साया मिलता है।

हम तुम ऐसे मिल जाएँ ज्यों,
सागर से दरिया मिलता है।

तुम धरती से मिलना जैसे,
मंजे का पाया मिलता है।

आज भी ग्वाले बाँट के खाते ,
बेशक तिल आधा मिलता है।

मिलना विदाई पर मुझ से ज्यों,
बेटी से बाबा मिलता है।

साहित्यालोक बायरी, डाकघर व तहसील
ददाहू जिला सिरमौर
हिमाचल प्रदेश-173 022
मो. 0 94187 40772

कविता

द्रौपदी

संतोष गर्ग

पाँच पतियों के होने पर भी,
भरी सभा में घसीटी जाती है।
दुर्भावना से पीड़ित दुर्योधन,
करता है अभद्र शब्दों के वज्रप्रहार।
भेदते हैं उसके मृदुल मन को,
किसी यशस्वी के तीक्ष्ण व्यंग्य बाण।
भीख माँगती है वह सिंहासनधारी से,
फिर पुकारती है भीष्म धनुर्धारी को।
प्रश्न करती है वह धर्मात्मा विदुर से,
निरुत्तर उनकी वाणी, ग्रीवा झुक जाती है।
गूंजती है चींखे एक असहाय, अबला की,
राजसभा एक अधर्मसभा बन जाती है।
दुशासन चीर हरण से
भरी सभा में मलिन हो जाती है।
यज्ञासेनी स्मरण करती गोविंद का,
उनके सहारे अपनी लाज बचाती है।
अपनी अस्मिता की डोर पकड़ कर,
शब्दों के प्रहार से,
पांडवों का स्वाभिमान जगाती है।
फिर भी हिम्मत हारती नहीं वह ,
बारह वर्षों का वनवास काटती है।
जयद्रथ करता है अपहरण का दुस्साहस,
कीचक करता है दुर्व्यवहार।
हस्तिनपुर की पुत्रवधू ,
खाण्डवप्रस्थ की महारानी
जो प्रतीक थी वैभव की,
अज्ञातवास में सैरन्ध्री बन जाती है।
संघर्षों की तपती रेत पर चलती रही,
लड़खड़ाए कदम, फिर भी संभलती रही ।
कितने पड़ावों से गुजर,
विषाद मन में लिए, संताप सहे।
टूटी कितनी बार,
बिखरी कभी नहीं।
सत्य की राह ठुकरायी नहीं,
आपदाओं से घबरायी नहीं।
द्रौपदी प्रतीक संघर्ष का, रूप शक्ति का
स्वरूप है समर्पण का, भाव है भक्ति का।

द्वारा डॉ. सुनील शर्मा,
मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय,
हमीरपुर, जिला हमीरपुर,
हिमाचल प्रदेश-177 001

कविता

सूर्यास्त

अंकुश शर्मा

चल रहा महाभारत का रण,
समरांगण में कौन्तेय कर्ण,
शर से शर जब भी टकराते,
डर से सब के मन घबराते!

बिखरे पड़े हैं धड़ हीन मुंड,
नभ में छाए गिद्धों के झुंड,
जो भी जीवित बच जाएँगे,
वे कालजयी कहलाएंगे!

रघुपति जैसा पावन पुनीत,
उनसा सुशील उनसा विनीत,
कौरव दल का वह महारथी,
महिमावली जिसकी 'रश्मिरथी'

इस ओर एकाकी कर्ण लड़े,
सामने पार्थ संग कृष्ण खड़े,
पहिया भूमि ने निगल लिया,
राधेय को इसने विकल किया!

गुरुविद्या भी संग छोड़ चली,
रवि सुत से नाता तोड़ चली,
वह दानवीर अभिशप्त रहा,
श्रापों से नित संतप्त रहा!

था विरथ कवच कुंडल विहीन,
रथ चक्र बाहर करने में लीन,
अर्जुन से तब माधव बोले,
"क्यों चिंतित है मेरे भोले?

तू रथी सारथी मैं तेरा,
तेरे भीतर है बल मेरा,
कर्ता भी मैं कारक मैं हूँ,
मरता भी मैं मारक मैं हूँ!

संहार यहाँ जो मचा हुआ,
मेरी माया से रचा हुआ,
हैं सब माटी के शेर यहाँ,
पल में होंगे सब ढेर यहाँ!

केवल मुझ पर विश्वास तू रख,
ना और कोई भी आस तू रख,
मत कर चिंता कि धर्म क्या है,
बस सोच कि तेरा कर्म क्या है!

जब तेरे सुत को मारा था,
क्या इसने धर्म विचारा था?
वध कर इसका संकोच ना कर,
तू सही गलत की सोच ना कर!

जो यह अवसर ठुकराएगा,
तो जीवन भर पछताएगा,
वसुषेण यदि बच जाएगा,
तो अंत तेरा बन जाएगा!

कर सज्ज उसे सारंग उठा,
तू पाप पुण्य का भेद फुटा,
बस विजयश्री का ध्यान तू धर,
विष युक्त बाण संधान तू कर!"

इतना सुन अर्जुन जाग गया,
मन का सारा भ्रम भाग गया,
तरकश से बाण निकाल लिया,
भौंहों को कुछ विकराल किया!

अर्जुन का तीखा तीर चला,
राधेय की गर्दन चीर चला,
सिर कटा धरा पर आन गिरा,
दुर्योधन का अभिमान गिरा!

कुरु सेना में मातम छाया,
घनघोर घनेरा तम छाया,
पाण्डव पाँचो मुस्काते थे,
जय पर सारे इठलाते थे!

माधव के लोचन भर आए,
यह देख के अर्जुन अकुलाए,
पूछा "केशव क्या बात हुई?
नैनों से क्यों बरसात हुई?

क्या सूत प्रिय मैं प्रिय नहीं?
कुल से तो वह क्षत्रिय नहीं,
इस सूत मरण का गम कैसा?
हृदय में छाया तम कैसा?

योद्धा कई रण में ह्रास हुए,
तुम किंचित भी ना त्रस हुए,
मन हुआ कभी भी खिन्न नहीं,
यह कर्ण वीर कोई भिन्न नहीं!

जब भी मैं बाण चलाता था,
रथ दस पग पीछे जाता था,
मेरा उसका कोई मेल नहीं,
यह रण सूतों का खेल नहीं!

"तब से थे मौन खड़े मोहन,
विस्मित हो बोल पड़े मोहन"
सूरज-चंदा का मेल कहाँ,
है तुम दोनों का मेल कहाँ?

निष्कलंक धनुर्धर किर्तिवान,
मुखड़ा मयंक सम दीप्तिमान,
वह वचनबद्ध वह शौर्यवान,
मनुजों का वह भूषण महान!

सोना जब तक ना तपता है,
कुंदन का रूप ना धरता है,
हारक तप कर राधेय हुआ,
देना ही जिसका ध्येय हुआ!

दानी कई जग में बसते हैं,
जो लोभ मान का रखते हैं,
जल दान जो सरिता करती है,
उपकार वो किस पर करती है?

हो धन्य, धन्य तुम धन्य कर्ण,
अगणित गौधन अतुलित स्वर्ण,
निश्छल मन से कर दान गए,
निर्लोभ हो तुम सब मान गए!

दलितों-पिछड़ों का जननायक,
बदलाव गीत का वह गायक,
परिवर्तन की जलती मशाल,
वंचित वर्गों की लोह ढाल!

है धर्म कर्ण से इतर कहाँ?
है कर्ण सरीखा मित्र कहाँ?
मेरे स्वरूप को जानता था,
वह कालगति पहचानता था!

फिर भी ना उसने प्रण तोड़ा,
दुर्योधन से नही मुख मोड़ा,
वह धर्म मित्रता पाल गया,
हे पार्थ तुम्हारा काल गया!

है कैसा कोप गिरा जग पर,
शंभू का क्रोध गिरा जग पर,
धरती के जन सब त्रस्त हुए,
दिनमान आज दो अस्त हुए!

वसुषेण मृत्यु की ओट गया,
दीपक ज्योति कर लौट गया,
सम धर्मराज उसको मानो,
अपना अग्रज उसको जानो!

वह अमर विभा जाती नभ में,
ज्यों प्रिया समाती वल्लभ में,
कुत्सित विचारों का दमन करो!
तुम हाथ जोड़ उसे नमन करो!"

गाँव व डाकघर संघनई तहसील - घनारी
जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश
मोबाईल नम्बर : 7018734168,
8350901240

संगीता की क्षणिकाएं

वक्त के चूल्हे में

बाकी रह गए वो दिन
जो अकथनीय थे किसी जमाने के,
केवल जहन में बसते हैं,
सांसों में खिलते हैं,
यादों में चलते हैं,
वक्त के चूल्हे में जलकर
फिर भी ख़तम नहीं होते....
ऐसे से वो दिन।
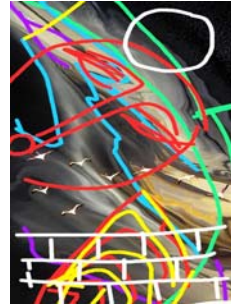
मुकाबला

आज फिर वो बिजली देर रात तक बुझी नहीं थी,
लगता है कोई शिकार गया होगा
शेर के मुंह में खुद चलकर हमेशा की तरह,
लेकिन इस बार शिकार शायद कुछ मुकाबले का हो,
हो सकता है शेर हार कर गिर पड़े।

उसकी पीठ पर

हां! तुम फिर एक मोहरा चाहते हो उसके जैसा ताकि उसकी पीठ पर बजते नगाड़े की धुन पर नाच सकें।

ढोल पीटने वाले को कोई ना पूछे और नाचने वाले वाहवाही लूटे।

अस्तित्व

अस्तित्व का होना है दिख जाना, जो होते हुए भी ना दिखे समझ लीजिए वह है ही नहीं...

स्वाभाविकता

भीतर छिपी हर एक चीज सहज, स्वाभाविक, सुंदर स्वच्छ एवं सत्य होती है, लेकिन बाहरी कलुषता कभी कभी उसी चीज को असहज, अस्वाभाविक, अस्वच्छ एवं असत्य के गहरे गर्त में धकेल देती है।

नज़र

नज़रअंदाजगी पर भी नज़र रखते हो,
तुम बड़े दूर की खबर रखते हो।
प्रेमी तो हो नहीं,
पत्रकार भी नहीं हो,
फिर भी खुदा कसम!
हुनर ये कमाल का रखते हो।।

क्या समझूं

चुपके से ताकने का मतलब क्या समझूं,
सरेआम की इस लड़ाई को बेबात क्या समझूं।
साजिश है मेरे ख़िलाफ कुछ यारों संग तुम्हारी या कि।
नजरें ही ख़राब हैं हमारी...
क्या समझूं??

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, हि. प्र. विश्वविद्यालय, समरहिल,
शिमला- 171005

कविता

फूल और रूपसियां

डॉ. प्रत्यूष गुलेरी

फूल हों या रूपसियां
उन्हें क्या पता
अपने अद्भुत सौंदर्य का
सौंदर्य का भास
केवल होता है
उन्हें, जिन्हें प्रभु ने
बख्शी होती हैं आंखें
आंकने को दुनिया
खुद की आंखों में
सौंदर्य नहीं उगता-उतरता
यह उगता-उतरता है
दूसरों की आंखों में
क्या पता कब से?
कई आंखों वाले भी
सावन के अंधों सदृश होते हैं
जिन्हें केवल
हरा ही हरा
नजर आता है
हर मौसम में
मौसम के बदलते तेवरों में भी
हे प्रभु! आंखें बख्शो
जो अच्छा-बुरा
सब पहचानें
सबको अपना मानें।

सरस्वती नगर, पोस्ट दाड़ी, धर्मशाला,
जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-176057

अभिमन्यु राणा की कविताएं

दिखा हरा जैसा

पहली बरसात की महक सी
थी वो मुलाकात
करीब आया एक अज्ञात
बहुत करीब
उसकी सांसों की ध्वनि कानों में जो गई
मैं मृगतृष्णा में खो गई
उसकी बाहों में आत्मसमर्पण कर दिया
ऐसे
बीज धरती में करता है जैसे
फिर खिल उठने की चाह में
पर बेपरवाह वो रेत
बह निकली जलङ्कवाह में
कहीं और
किसी और बीज की उम्मीद जगाने
फिर वही किस्सा दोहराने
सावन के मौसम में ना जाने
क्या है ऐसा
उन आंखों का भूरा रंग
दिखा हरा जैसा ।।।।

आज पेड़ मायूस है

आज पेड़ मायूस है
कुर्बां हुआ
बाड़ बन बेटियों की हिफाजत करने को
कटघरा बन बचा रहा गुनहगार वो
कुर्बां हुआ
लाठी बन सहारा देने को
अपनों पर बरस खून बहा रहा वो
कुर्बां हुआ
शहीद का ताबूत बनने को
बन गया हुक्मरानों की कुर्सी वो
कुर्बां हुआ
ठिठुरते को ठंड से बचाने को
कैम्पफायर में गरम कर रहा मफलर शॉल
वो
आज पेड़ मायूस है
वजह??
एक सवाल
जो जहन में कर रहा बवाल
है लाचार, मौकापरस्त या डरपोक
वो????

मकान नं. 1, ब्लॉक 1, सी.पी.डब्ल्यू. डी.,
टाइप-3 क्वार्टर्ज, प्रोस्पेक्ट्स हिल, कामना देवी, बालूगंज,
शिमला-171 005, मो. 70189 35490

व्यंग्य

हम लड़की वाले हैं

◆ गिरीश पंकज

आधुनिकता की कूकुर-खुजली से ग्रस्त एक परिवार से उस दिन टकरा गया। वह अपनी भयंकर मॉड कन्या के लिए सु-वर यानी अच्छे वर की तलाश में था लेकिन उनको मनपसंद वर मिल नहीं रहा था। मैंने सोचा, कुछ मदद कर दूं। पूछा, 'कैसा लड़का चाहिए आपको?' लड़की के डैड बोले, 'हम लड़की वाले जरूर हैं, लेकिन किसी भी लड़के से हमारी बेटी उन्नीस नहीं पड़ने वाली। बीस या कहें कि इक्कीस ही पड़ेगी। बस, इसी चक्कर में लड़की की उम्र निकली जा रही है। हम लड़की वाले हैं। हमारी भी अपनी ठसक है लड़के वालों की तरह। हम टेंशन फ्री हैं। आज नही तो कल योग्य वर मिल ही जाएगा। हाँ, एक बात है। हम भारत की प्राचीन परंपरा स्वयंवर-प्रथा के पक्षधर हैं। लड़की अपनी मर्जी से वर का चयन करे।'

मैंने पूछा, 'बाई द वे, आपको कैसा वर चाहिए, तो डैडजी बोले, 'देखिए, लड़का हमारी लड़की के मुकाबले कमजोर न पड़े। आजकल कुछ लड़के माँ-बहिन की गालियाँ देते हैं। तो मैं बता दूँ कि इस मामले में हमारी लड़की भी किसी लड़के से कम नहीं है। बिंदास होकर गालियां उच्चरित करती है। कहो तो सुनवा दूँ। अभी। इसी वक्त? बेटू, प्लीज कम हीयर!!'

मैं चकरा गया हाथ जोड़ते हुए कहा, 'रहने दें। सड़कों से गुजरते हुए आए दिन गालियां ही सुनता रहता हूँ। घर के भीतर भी सुनूँगा, तो गजब ही हो जाएगा। वैसे आप ये क्या बक रहे हैं? लड़कियाँ और गाली? वे तो कोमल हृदय वाली होती हैं। अकसर संस्कारित। सभ्य घरों की लड़कियां गालियां नहीं दे सकतीं।'

डैड जी जिंदादिल टाइप के जीव थे। चहकते हुए बोले, 'आप किस जमाने में रह रहे हैं, मिस्टर? किस संस्कार और सभ्यता की बात कर रहे हैं? लड़के लड़कियाँ अब सब बराबर हैं। जो काम लड़के कर सकते है, वो सब लड़कियां भी कर सकती हैं। बशर्ते वे मॉडर्न हों। आजकल मॉडर्न होना पहली शर्त है। सभ्य होना जरूरी नहीं। मैंने अपनी लड़कियों को भयंकर मॉडर्न बना दिया है। वे लड़कों से मुकाबला कर लेती हैं। गालियाँ देने में नम्बर वन हैं। केवल लड़के ही दारू नहीं पी सकते। लड़कियां भी पी सकती हैं। सिगरेट फूंक कर कलेजा खाक करने का अधिकार केवल लड़कों का नहीं है। लड़कियां भी धुआँ-धुआँ जिंदगी कर सकती हैं। हम लड़की वाले हैं। किसी से कम नहीं रहना चाहते। हमारी बिटिया के लिए उसकी प्रतिभा के अनुरूप लड़का देख रहे हैं। लेकिन हमारा बैडलक खराब है कि कोई 'योग्य' वर मिल ही नही रहा। पिछले दिनों एक लड़का मिला था लेकिन नालायक। वह मां-बहिन की गालियाँ ही नहीं दे सकता था। बताइए, क्या जमाना आ गया है। लगता है, अब सचमुच लड़के पिछड़ रहे हैं। हमने तो अपना माथा ही ठोंक लिया, जब पता चला कि लड़का न तो दारू पिता है और न सिगरेट। फटी जीन्स भी नहीं पहनता पट्ठा। पता नहीं किस जमाने में रह रहा है, इडियट कहीं का। हम मॉडर्न युग के लड़की वाले हैं। हमने उस अयोग्य लड़के का इंटरव्यू लिया और उसे फौरन रिजेक्ट कर दिया। हमारी लड़की तो लड़के को ठोक बजाकर देखेगी इसीलिए कुछ समय लिव इन रिलेशनशिप मैं रहने के बाद ही बताएगी कि वह उसके लायक है अथवा नहीं। हां, एचआईवी का सर्टिफिकेट भी पहले चाहिए। आखिर हम लड़की वाले हैं। अरे, वह जमाना गया, जब लड़की वाले सीधे-सादे होते थे। लड़कियां भी गऊ किसम की होती थीं। मगर अब हम मॉडर्न हैं। क्या हैं, मॉडर्न। हमारी लड़कियां किसी भी लड़के से कम नहीं हो सकती। उनको हमने सांड बना दिया है। लड़के आगे से फटी हुई जीन्स पहन कर इतराते हैं। हमारी लड़कियों की जीन्स तो दोनों तरफ से फटी होती है। हमारी दो लड़कियां हैं। उनको हमने लड़कों के गुण सिखा कर बड़ा किया है। चूल्हे चौके से दूर रखा। दोनों लड़कों के कान काटती हैं। क्या काटती है? कान। समझे श्रीमान!'

मैंने पूछा, 'आप अपनी लड़कियों के गुण बता रहे हैं या अवगुण?'

वह मुस्करा कर बोले, 'जिसे आप अवगुण समझ रहे हैं, वह आजकल का गुण है। समय के साथ चलना हमारा धर्म है। हम नये जमाने के लड़की वाले हैं। लड़के वालों से पीछे नहीं रह सकते। देख रहे हैं, कोई योग्य लड़का मिल जाए, तो लड़की के हाथ पीले करें। हाँ, एक मामले में हम एक पुरानी प्रथा के पक्षधर हैं। पहले अपने देश में स्वयंवर होता था। हम इस प्रथा के पक्षधर हैं। हमारी

लड़की अपनी मर्जी से वर का चयन करेगी। आखिर हम लड़की वाले हैं। हम किसी से कम नहीं। कोई हमारे मुकाबले में आए, ऐसा किसी में दम नहीं।'

मैंने डरते-डरते कहा, 'समय तो बदल रहा है। पर अभी इतना भी नहीं बदला कि कोई लड़का गालियां देने और पीने-खाने वाली लड़की से शादी कर लेगा। हाँ, किसी बेचारे ने पिछले जन्म में कोई पाप- शाप किया हो, तो उसकी बात अलग है। खोजते रहिए, आप होंगे कामयाब एक दिन। कहते हैं कि खोजने से तो भगवान भी मिल जाते हैं, तो आपकी लड़की के लायक 'सु' यानी अच्छा 'वर' तो मिल ही सकता है।'

मेरी बात सुनकर डैड जी बोले, 'थैंक्यू..थैंक्यू। आपने हमें निराशा से उबार लिया। वरना तो जिसे देखिए, वो हमें डिप्रेस ही करता है कि आपकी बिगड़ैल लड़कियों के लिए लड़के मिलना दुर्लभ है।'

बातचीत चल ही रही थी कि शादी के योग्य मगर प्रौढ़ता की ओर बढ़ती उनकी बड़ी कन्या सामने आयी और बोली, 'डैड, आपने कुछ देर पहले मुझे आवाज दी थी। बट, वो क्या है कि मेकप कर रही थी। मैं अपने बॉय फ्रेंड के साथ नाइट क्लब जा रही हूं। आने में कुछ देर हो सकती है। आप हमेशा की तरह टेंशन फ्री रहना।'

डैड ने चहकते हुए पूछा, 'कौन ब्वाय फ्रेंड? ..वही सुरेश?'

लड़की बोली, 'नहीं डैड, आज तो महेश है। आप तो जानते ही हैं कि मैं एक ही फ्रेंड के साथ कुछ घण्टे से जूयादा टाइम अफोर्ड नहीं रह सकती। रात गई, ब्वॉयफ्रेंड गया। अच्छा डैड, चलती हूँ।'

'जाओ डार्लिंग, एन्जॉय योर सेल्फ!' इतना बोल कर मॉडर्न डैड ने मेरी तरफ वीरोचित भाव से देखा और कहा, 'मैं आजाद ख्याल का बन्दा हूँ। बच्ची को नैतिकता के पिजरे में कैद नहीं कर सकता। वह एक ही खूंटे से बंधी नहीं रह सकती। अभी तो इसके खेलने-खाने के दिन है। शादी के बाद घर के चक्कर में पड़ेगी तो दिक्कत हो जाएगी, इसलिए अभी वह फुल मस्ती कर ले।'

मैंने महानता के शिखर पर विराजित डैड जी को शुभकामनाएं दीं, 'आप की बिटिया को उसके अनुकूल लड़का मिल कर रहेगा। इस वीर प्रसूता धरती ने अच्छे लोगों के साथ-साथ एक-से-एक लम्पट लोगों को भी तो जन्म दिया है। नर हो न निराश करो मन को। आप तो लगे रहें। अपनी खोज जारी रखें। वैसे आपकी बिटिया समझदार है। कोई- न-कोई अनुकूल लड़का तो खोज ही लेगी। टेंशन बिलकुल नहीं लेने का। उसने कहा भी तो है।'

डैड जी बोले, 'एकदम। हम नये जमाने के लड़की वाले हैं। तनाव रहित। तनाव तो लड़के वाले पालते हैं, आजकल।'

इतना बोल कर वह जोर से हँसे। हमको भी हँसी आ गयी। हम बोले, 'ठीक कह रहे हैं आप। अब समय बदल रहा है। आजकल लड़के वाले ही तनाव में रहते हैं कि कहीं बिंदास लड़कों जैसी मॉडर्न चरित्र वाली लड़की पल्ले पड़ गयी तो अल्ला जाने क्या होगा आगे।'

'बिलकुल सही फरमाया।' डैड जी बोले, 'किस्मत अपनी-अपनी।' फिर मुझसे पूछा, 'कुछ शौक फरमाते हैं क्या, पीने पाने का? कहें तो बोतल खोलूँ? बुलाऊँ दूसरी बेटी को? वह दो पैग बना देगी।'

मैंने मुस्कराते हुए कहा, 'नहीं नहीं, उसे कष्ट न दें। मोबाइल में लगी होगी। नाराज हो जाएगी। आप तो पानी पिला दें, बस।'

वह बोले, 'पानी तो हमारी बेटियां पिलाती हैं, अच्छे-अच्छों को। उफ, आप पीते-पाते नहीं। मतलब आप बहुत ही पिछड़े किस्म के जीव हैं। आपका कुछ नहीं हो सकता। छी।'

उनकी बात सुनकर मैं हीनभवना से ग्रस्त हो कर चुपचाप लौट आया। काश, हम भी इनके जैसे मॉडर्न हो पाते। खैर, अगले जन्म में देखेंगे। हम होंगे कामयाब, अगले जन्म में।

सेक्टर -3, एचआईजी - 2, घर नंबर- 2,
दीनदयाल उपाध्याय नगर, रायपुर-492010
मो : 0 94252 12720

दो काव्य संग्रहों, एक कवि मनीषी का, दूसरा कवयित्री विदुषी की
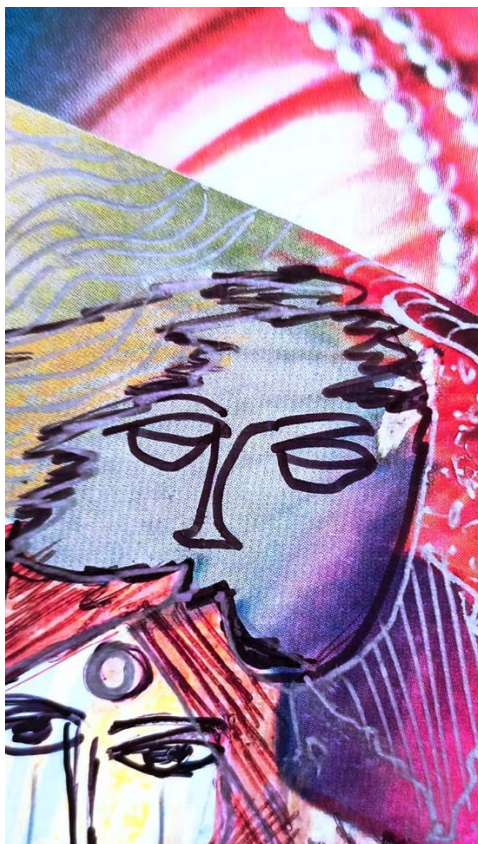
समालोचना, समीक्षा और इनमें प्रेरणात्मक साकार दृष्टिकोण

◆ रमेश चंद्र शर्मा

कभी मैंने कहीं पढ़ा था-कि दृश्य काव्य का आनन्द ब्रह्मानन्द से भी बढ़कर है। मार्च 2020 से लेकर मार्च 2021 तक करोना काल का कष्ट सहने वाला मुझ जैसा 92 साल का बूढ़ा भूल चुका था आनन्द, हालांकि मनुष्य ही के हृदय में बसा है। मैं इन्हीं दिनों मौन शैया पर लेटा-लेटा ऊंघ रहा था कि प्रो. आर. डी. शर्मा जी का फोन आया। वही सदा सदा का राम सलाम, मौसम के हाल के बजाए करोना काल की बातें। याद आया उनकी पुस्तक मेरे तकिए के नीचे अन्य दो किताबों के साथ पड़ी है। पढ़नी थी- मन नहीं बना था। उठा, बैठा, सोचा, कम से कम उनकी और अंजली दीवान दोनों प्रोफेसरों की पुस्तकों को पढ़ूं और मन बहलाऊं। पढ़ने लगा अच्छी लगी। इस कारण इच्छा हुई कि अन्य पाठकों को भी इनके मूर्त, आकार, प्रेरणा देने वाले विचारों से अवगत कराऊं।

1. **बर्फ की सौंदर्य मुखी : कवि प्रो. आर.डी. शर्मा**

पुस्तक की बाहर की जिल्द पर पहाड़ी सुन्दरियों की रंगीन तस्वीरें उनमें कलात्मक, पहाड़ी कला कृतियां, जेवर, पिछली तरफ सुन्दरी के चेहरे पर इतना बड़ा आभूषण कि मुंह पर मास्क ही लगता है। पुस्तक खोली एक झनकार सी गूंजी हवा में पृष्ठ सामने था ''मुझे भी दे दो न/अपने हुस्न से लबरेज/इश्क का एक टुकड़ा'' फिर क्या था। पृष्ठ खुलते गए। मैं पढ़ता गया कोई जो भी कविता आई सामने'' भरोसा रख, वह स्त्री-मित्र पुरस्कृत तुम्हें सुलाएगी रात भर नग्मा-ए-इश्क की सुनहरी तरन्नुम सुनाएगी रातभर। परन्तु इस करोना महामारी के दिनों में मुझे अमृता प्रीतम की निम्न पंक्तियां याद आ गईं :

गलियों टुटे गीत फिर हर गले से गीत टूट गया तकलियों टुटी तन्द (अर्थात् हर चरखे का धागा टूट गया)

त्रिजणों टूटियां सहेलियां

चराबड़े छूकर बन्द

''सोशल डिस्टेंसिंग-दो गज की दूरी। किन्तु कवि की उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ते हुए यह हालात भूल गया था। मुझे निरोधक सूई-इंजैक्शन लगा है। दर्द ने याद दिलाया काल क्या है। ''हम तो मजबूर थे सहराओं में अक्सर'' (पृ0 29)। कवि जी आगे लिखते हैं जरूरी नहीं मिलन ही इन्तहा हो इश्क होने की'' (पृ0 30) ''आवाज में जादू है/आंखों में बहशीपन/चाल में मादकता/ चेहरे पर बालपन में किस स्वर्ण परी के सामने खड़ा हूं मैं। (पृ0 39) मैंने कहीं और पढ़ा था- मादकता जीवन को पीकर, मृत्यु मधुर हो जाएगी। जो कहा गया वह सराहनीय है। ''चुप-चुप ही रहेंगे, तो महफूज मुहब्बत होगी'' पृ0 53 ''हमने मुहब्बत की, सबने की, क्या गलत है। यह इश्क में आजमाए नुस्खे, समझ नहीं आते। (पृ0 68) ''इकरार करुंगा मैं तुम्हारी हां का इन्तजार करुंगा'' (पृ0 75) ''न डर कुछ कर प्यार कर' सबसे बड़ा कर्म है। (पृ0 86) प्यार अच्छा है, पर रुस्वाई बुरी है। वे जानते हैं यह 50 कविताएं प्यार के दर्द की दवा लगती है पुस्तक- ''बर्फ की सौंदर्यमुखी का स्वागत है। इस पुस्तक से पहले, मैंने इनकी किताब ''बर्फ का ज्वालामुखी, की समालोचना गिरिराज 15-07-2015 में की थी। प्रो. शर्मा परिवर्तन (रजिस्टर्ड- हिमाचल लेखक एवं कलाकार संघ) शिमला के संस्थापक भी है। हालांकि लोक प्रशासन, राजनीति शास्त्र के व्याख्याता रहे हैं फिर भी साहित्य प्रेम, कवि गोष्ठियां हकीकत है। यह इनका मिशन है। शिमला शहर बसने से पूर्व में किसी मिशनरी के अवतार हैं शर्मा जी। शिमला अंग्रेजों ने बसाया, मिशनरियों ने इसे प्रवचनों से सभ्य बनाया।

2. मंजिलें और भी हैं (कविता संग्रह) कवयित्री डॉ0 अंजली दीवान भूतपूर्व एसोसियेट प्रोफेसर सेंट बीडज कॉलेज शिमला : कई सम्मान प्राप्त यह कवयित्री कवि गोष्ठियों में मेरे सम्पर्क में आई थी। मैंने इनके काव्य संग्रह 'लम्हा-लम्हा'की समालोचना सन् 2015 में की थी। जो छपी थी। इन्हें महादेवी वर्मा की कविताओं के नक्शे कदम पर लिखने वाली कवयित्री माना था। किन्तु इनके नए संग्रह को पढ़ने के बाद कह सकता हूं वह विदुषी अपने ही किस्म की है। अलग भी हैं परिपक्वता पूर्ण हैं। शायद जो कुछ इन्होंने अपना काव्य अपने लिए रचा, रचकर दिल हल्का किया। उसे पढ़ने के बाद उसे छपने योग्य समझा और प्रकाशित करवाया। यह सही कदम था पाठकों को जिनमें मैं भी शामिल हूं पढ़ने को अच्छी कविताएं मिली। इनकी मंजिलें और भी हैं। और भी लिखना है। 'कीप इट अप'। इनकी कल्पना शक्ति में प्रेरणात्मक गुण है। 123 कविताएं हैं। जो अधिकतर आत्मकथा

कविता

ठौर-ठिकाना

गोपाल शर्मा

ठौर-ठिकाना है अनजाना,
राह कोई भी मत बतलाना।
भूल-भूलैया अच्छी लगती,
जब मौसम हो मस्त सुहाना।।।

दिन मिनटों में बीते जाते,
मिल जाए जब मीत पुराना।
सुर और लय को कौन पूछता,
दिल गाता है जब कोई गाना।।

सुख और दुख का माप नहीं है,
धन-दौलत का आना-जाना।
बिना बिछौने के आ जाती,
नींद न ढूंढे कोई बहाना।।

उड़ान हौसले से होती है,
पंखों से केवल उड़ पाना।
शिखर तेरे कदमों में होगा,
जब तूने दिल में है ठाना।।

दिल से दूर नहीं होते हैं,
जिनको दिल ने अपना माना।
दूर भले ले जाए उनको,
उनका अपना पानी-दाना।।

मन का मोर तो तब ही नाचे,
हो जाये जब कोई दीवाना।
बच्चों की किलकारी गूंजे,
या चिड़िया का चहचहाना।।

ठौर-ठिकाना है अनजाना,
राह कोई भी मत बतलाना।

जय मार्किट, कांगड़ा,
जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

लगती हैं। जो भोगा सो लिखा। यदि पद्य नहीं तो अतुकान्त छन्द हैं। भाव मृदुल हैं, भावुकतामय हैं, सहृदय भी हैं। इनकी पुस्तक 15 सैं.मी. बाई 15 सै.मी. है। कल्पना शक्ति युक्त, मूर्त साकार हैं कविताएं इनकी स्वाभाविक हैं। इनकी कविताओं में प्रेम, प्रेमी से बड़ा नहीं है। काफी कुछ रोमांटिक हैं, निर्बल प्यार हादसा या ''ईवैन्ट'' हो सकता है। इनका अनुभव प्रबल लगता है। समय बदला है। इनको नए समय से कुछ लेना देना नहीं है। आपका मेरा क्या रिश्ता है। है भी या नहीं। पर जैसा भी है जो भी है। हमें खुशी और दर्द देता है। (पृ. 25) ''बिखरे अस्तित्व के टुकड़े लिए हाथ में खड़ी हूं। (पृ. 17) मैं और मेरी तनहाई दोनों इन्तजार करते हैं।'' (पृ. 45) आज जब हवा पास से गुजरी तो बहुत दिन बाद उसके स्पर्श को किया महसूस।'' यदि मैं कहूं- ''हम जिसे मिलकर चले थे पृथक राहों पर अकेले जग हुआ मेरा तुम्हारा। अपने जीने का सहारा प्यार पाकर भी न पाया। सब्र है संसार सारा (ई.पू.) इन्हीं विदुषी की यादें (पृ. 91) में लिखा है...आप सबका शुक्रिया पर कि आपने एक बार फिर से मुझे मुझ से मिला दिया। ''मैं कदम बढ़ाती हुई उस राह पर, जिसकी कोई मंजिल नहीं। (पृ. 32) इस पंक्ति के बाद में कवयित्री जी का नाम हस्ताक्षर स्वरूप लिखा है। तो असम्भव लगेगा-अतिशयोक्ति होगी। इनकी किताब का नाम है- मंजिलें और भी। इन्होंने जीवन के कम से कम 60 वर्ष सुख दुःख जीवन की हकीकत, इसकी रीत तथा पाकर खोई, खोकर पाई प्रति देखी है। इसलिए राहें है तो मंजिलें हैं। यह स्वयं ही कह चुकी है- ''यूं नहीं मिलती किसी को मंजिल, दिल में एक जुनून होना जरूरी है। (पृ. 73) मैं इन्हें अपनी अपनाई हुई किसी कविता की पंक्तियों से एक प्रश्न करता हूं जिसके उत्तर की मुझे जरूरत नहीं- ''जीवन में ऐसे भी मुकाम आए हैं कदम मंजिल ने चूमे हैं। बहारों से सलाम आए हैं।

अंजली जी को उनकी इस पुस्तक के लिए मेरा धन्यवाद। बहुत-बहुत शुभकामनाएं। सैंट बीडज कॉलेज छोड़ गई है। सेवा निवृत्त होकर हरियाणा जा चुकी हैं। कई-कई बार सम्मानित हुई हैं। चाहूंगा कि खुश रहें, आशावादी रहें। इन्हीं ने अपनी अंतिम कविता में लिखा है।

''जब दो दिल मिलते हैं, तो पनपता है प्यार।
जिसकी होती नहीं कोई भी सीमा। (पृष्ठ 134)

रिटायर्ड आई.ए.एस., टकसाल हाऊस, छोटा शिमला,
शिमला-171 002, दूरभाष : 0177 2621 199

समीक्षा

सामाजिक सरोकारों से ओतप्रोत कहानियां

◆ हंसराज भारती

साहित्य की विधाओं में कहानी आज भी केंद्रीय विधा के रूप में स्थापित है। यद्यपि इस विषय में कई बार साहित्यिक क्षेत्रों में वाद विवाद, लंबे विमर्शों, तर्कों का आदान प्रदान भी हुआ है। फिर भी यह तो तय है कि कहानी आज भी साहित्य की लोकप्रिय विधा है। थोड़ में बहुत कुछ कह जाना इस विधा की विलक्षणता रही है। यह सच है कि कहानीकारों ने अपने-अपने ढंग से कहानी को परिभाषित किया है। कहानी की जो भी परिभाषा रही हो, मूलतः कहानी सामाजिक परिवेश का सांगोपांग चित्रण होती है जो पात्रों के आंतरिक क्रियाकलापों के माध्यम से समाज और जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं को उद्‌घाटित करती है। कहानी कहने-लिखने की कला इसे रोचक और आकर्षक बनाती है।

साधुराम दर्शक की सम्मानप्राप्त कहानियां तथा अन्य विवेच्य पुस्तक का शीर्षक है जिसका संपादन प्रदेश के ख्यातिप्राप्त समीक्षक डॉ. हेमराज कौशिक ने किया है। साधुराम दर्शक मूलतः हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के निवासी हैं और अरसे से दिल्ली में निवासरत हैं। हिमाचल अकादमी से पुरस्कृत साधुराम के अब तक एक दर्जन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं और नब्बे वर्ष की आयु के करीब होने पर भी लेखन में बराबर सक्रिय हैं। इस संग्रह में साधु राम की वो कहानियां जो पिछले पचास वर्षों में उन्होंने लिखी हैं और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, संस्थाओं द्वारा समय-समय पर पुरस्कृत हुई हैं या उन कहानियों पर लेखक को सम्मानित किया गया है। इस संग्रह में कुल तेईस पूर्व प्रकाशित कहानियां संग्रहीत हैं। इनकी कहानियों का फलक विस्तृत है और लेखक का जीवनानुभव व जीवन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता स्पष्ट लक्षित होती है। साधुराम की कहानियों का मुख्य स्वर आदर्शोन्मुखी मानवतावाद है। परंतु इस आदर्श के मार्ग पर चलते हुए जीवन के यथार्थ से विमुख नहीं होते। समाज की विसंगतियों, असमानताओं, वैमनस्य जटिलताओं मानव चरित्र के पक्ष और विपक्ष को बड़ी कुशलता और सहजता से उकेरने वाले कथा शिल्पी हैं। इनकी अब तक की कथा यात्रा का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि इनकी कहानियों में निम्न मध्यवर्ग, हाशिए का समाज और मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं और अंतर्विरोधों के साथ उपस्थित है। कथाकार ने मानव जीवन की भयावह विद्रूपताओं से उत्पन्न पीड़ा को जीवंतता से मूर्तिमान किया है। मानवीय संबंधों में आ रहा बेगानापन विस्संगता पुरुष वर्चस्ववादी समाज में नारी की निरीह स्थिति, वृद्धजनों की उपेक्षा, संवेदना शून्यता, सांप्रदायिकता की विभीषिका, उससे उत्पन्न भीषण स्थितियां, दफ्तरों की कार्य प्रणाली, कर्मचारियों का काइयांपन, रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं और समसामयिक ज्वंलत प्रश्नों से ये कहानियां टकराती हैं और समाज के यथार्थ को सामने लाती हैं। संग्रह की कहानियां अपने कथ्य में सरल, स्पष्ट और संक्षिप्त हैं। कहीं पर भी व्यर्थ की लफ्फाज़ी, ऊहापोह और अनावश्यक विस्तार नहीं है। लेखक गहरे सामाजिक सरोकारों वे बावस्ता है। लगभग प्रत्येक कहानी में व्यक्ति और समाज के रिश्तों, उनमें व्याप्त आंतरिक संघर्ष, मनःस्थिति, मूल्यों के टकराव व विखंडन, पीढ़ियों के अंतराल, नए सामाजिक, आर्थिक बदलाव के चलते जीवन में आए परिवर्तन और विरोधाभासों को बड़े ही सरल और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करते हैं। लेखक की शैलीगत सरलता कथानकगत सहजता, विविधता पाठक को अंत तक पहुंचाने में सफल रहती है। संग्रह की कहानियां तीन भागों में विभक्त हैं। पहले भाग में सम्मान प्राप्त कहानियां हैं। दूसरे में ताजा लिखी व तीसरे भाग में मेरी पसंदीदा कहानियां हैं। संग्रह की पहली कहानी है 'मनहूस'। कथा नायक के जीवन में ऐसी घटनाएं घटती हैं कि वह स्वयं को ही इन घटनाओं का जिम्मेवार समझता है। पहले मां की मृत्यु फिर पत्नी और बच्चे की मौत। लोग

उसे मनहूस समझते हैं धीरे- धीरे मनहूस उसका नाम ही पड़ जाता है और उसके जानने वाले उसे इस नाम से जानते हैं वह स्वयं को समाज से अलग-थलग सा कर लेता है। एक अपराध बोध के साथ जीवन यापन करता है तभी गांव में भयंकर बाढ़ आती है। कुछ लोग उस बाढ़ में घिर जाते हैं जिनके जिंदा बचने की उम्मीद न के बराबर है। तभी वही मनहूस नाव लेकर वहां पहुंचता है और सबको बचा लेता है और स्वयं मर जाता है। अंत में वह हीरो बनकर यह सिद्ध करता है कि जिन स्थितियों पर व्यक्ति का वश नहीं, उसके लिए उसे जिम्मेवार मानना समाज की गलत सोच को
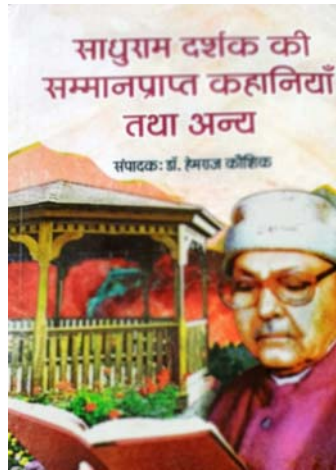
दर्शाता है। बड़ी रोचकता के साथ लेखक वर्णन करता है।

इसी भाग में एक और कहानी है नन्हा गुलाब; बूढ़ाखार हृदयस्पर्शी कहानी है। इनसान के इनसान होने की कहानी। जात-मजहब के अपने आधार हो सकते हैं पर मूल रूप में मानवीय संवेदनाएं ही वो आधार हैं जो सभी मनुष्यों में एक सी होती हैं। मानवीय प्रेम ऐसी ही सार्वभौम संवेदना है। नन्हा गुलाब एक छोटा बच्चा है। जो हिंदू धर्म से है और बूढ़ा खार एक वृद्ध मुसलमान है जिसका पूरा परिवार 1947 के दंगों की भेंट चढ़ चुका है। गुलाब उसके पड़ोसी पंडित गोपालदास का पुत्र है। गुलाब और बूढ़े खार में बड़ी गहरी सांझ है, निरपेक्ष भाव। जो गोपालदास को फूटी आंख नहीं सुहाती। एक दिन गुलाब गंभीर रूप से बीमार पड़ जाता है। दवा-दारू का कोई प्रबंध गांव में नहीं है ऊपर से भारी बरसात। बूढ़ा खार अनिष्ट की शंका से व्याकुल हो उठता है और पैदल ही शहर से दवाई लेने निकल जाता है। गुलाब पर आंच नहीं आनी चाहिए। दवाई लाकर गुलाब तो बच जाता है पर मीलों लंबा सफर तय करके लौटा बूढ़ा शरीर जिंदगी की जंग हार जाता है।

इसी प्रकार 'जिंदा-मुर्दा', 'पंछी बाबा' जैसी बेहतरीन कहानियां सांप्रदायिकता के जघन्य रूप और अमानवीयता को अनावृत करती हुई सांप्रदायिक सौहार्द को प्रतिपादित करती हैं।

'महक' और 'जिंदगी से पहले मौत नहीं' जैसी कहानियां नारी उत्पीड़न और यौन शोषण को उद्घाटित करती हुई नारी की जिजीविषा और दृढ़ संकल्प शक्ति को रूपायित करती हैं।

साधुराम दर्शक के नारी पात्र सामान्य से दिखने वाले पर जीवन शक्ति और ऊर्जा से भरपूर होती हैं। परिस्थितियों से दो-दो हाथ करने को तत्पर पर अपने संस्कारों, सीमाओं के अतिक्रमण के मूल्य पर नहीं। 'नीलकंठ' कहानी में एक साहित्यकार को अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग करती हैं। 'चंद्रकिरण' कहानी में भी 'चंद्र' का चरित्र नारी समाज को दृढ़ता से परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए जीवन जीने की प्रेरणा देता है। 'मोहिनी' कहानी एक दलित लड़की की कहानी है। मोहिनी एक दृढ़ संकल्प शक्ति वाली युवती है जो आसानी से परिस्थितियों के आगे हथियार नहीं डालती 'धारा बहती रही' कहानी में जीवन के नैराश्य से निकलकर जीवन की मूल्यवत्ता को महत्त्व प्रदान कर जीवन जीने की प्रेरणा दी है। भाग दो में ताजा लिखी पांच कहानियां हैं जो समसामयिक घटनाओं से प्रभावित लगती हैं। कहानी 'वसुधैव कुटुंबक' वर्ष 2004 में आई सुनामी की घटना से संबंधित है। एक युवा दंपति सुनामी के कारण अपने बच्चों से बिछुड़ जाते हैं। लाख कोशिश करने पर भी उनके बच्चे जीवित या मृत किसी भी रूप में नहीं मिलते। बच्चों को ढूंढने के क्रम में उस दंपति को सोलह ऐसे बच्चे मिलते हैं जिनके मां-बाप सुनामी की भेंट चढ़ चुके थे। वह दंपति उन बेसहारा बच्चों को अपनाकर उनका पालन पोषण करते हैं। इस कहानी में भी साधुराम का मानवतावाद फिर एक नए स्वरूप के साथ सामने आता है। बच्चों का कुल धर्म, जात बस बच्चा होना ही होता है। मानवीय संवेदना का प्रतिरूप कहानी के पात्रों में दृष्टिगोचर होता है। 'प्रदूषण' कहानी में सरकारी दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, काइयांपन, अंधेरगर्दी की ओर संकेत किया गया है कि कैसे एक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी कर्मचारी एक टुच्चे अधिकारी की अन्यायपूर्ण, पूर्वाग्रहग्रसित मानसिकता का शिकार होता है। कार्यालयों में वातावरण प्रदूषित है। 'गऊदान' कहानी के माध्यम से धार्मिक कुरीतियों और उनके नाम पर आम आदमी के साथ होने वाले शोषण, धार्मिक भावनाओं के दोहन का पर्दाफाश किया गया है। लेखक समाज के दोहरेपन पर चोट करता है। तीसरे भाग में लेखक की पसंदीदा आठ कहानियां हैं। 'आखिरी सांस तक' में बिहारी लाल के चरित्र के माध्यम से ईमानदार, मेहनती कर्मचारी की कठिनाइयों और विपत्तियों को उभारा है। यह चरित्र आखिरी सांस तक भ्रष्टाचार और रिश्वत से लोहा लेता है। 'जिंदगी से पहले मौत नहीं' समाज में नारी की व्यथा को उद्घाटित करती है। पुरुष प्रधान समाज नारी अपने बनाए नियमों, कानूनों में बंधा ही देखना चाहता है पर कहानी की नायिका दृढ़ संकल्प शक्ति से ओतप्रोत हार स्वीकार नहीं करती। 'मेरी आत्मा मर नहीं गई' में सांप्रदायिकता के वीभत्स चेहरे को उघाड़ा गया है। जब उन्मादियों से अपने पड़ोसी परिवार को बचाने में असफल रहने पर कहानी का नायक आत्महत्या कर लेता है। 'धर्मपाल की दो इच्छाएं' में कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार और संतान की उत्तरदायित्वहीनता और दिग्भ्रमित अवस्था से धर्मपाल जैसे चरित्रों की नियति को रेखांकित किया गया है।

कथाकार दर्शक की सभी कहानियां उद्देश्यपरक, पात्र, घटनाएं और स्थितियां परिवेश से संबंध रखती हैं। कहानियों के प्रसंग और चरित्र स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं और पाठक की अनुभूतियों का अंग बनकर रस विभोर करती हैं। इनकी कहानियां सामाजिक विकृतियों पर सीधे प्रहार करती हैं। ये कहानियां हमारे समाज के विभिन्न दुखते पक्षों पर केंद्रित होकर लोकमानस की संवेदनाओं को जागृत करती हैं। ये कहानियां वर्तमान समाज से जुड़कर समकालीन बोध को व्यंजित करती हैं। पठनीयता से ओतप्रोत ये कहानियां अपने सामाजिक सरोकारों और समाज के विडंबनापूर्ण चित्रों के माध्यम से पाठक की संवेदना को गहरे तक प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं।

पो. बसंतपुर, तहसील सरकाघाट, जिला मंडी,
हिमाचल प्रदेश-175 042, मो. 0 98163 17554

पुस्तक : साधुराम दर्शक की सम्मानप्राप्त कहानियां तथा अन्य, संपादक : डॉ. हेमराज कौशिक, प्रथम संस्करण : जुलाई 2020,
प्रकाशक : पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, मूल्य : 225 एवं 300 रुपये, पृ. 184

समीक्षा

अंतिम राय का सच : कहानियों से ज्यादा सच्चाई

◆ डॉ. राहुल मिश्र

'अंतिम राय का सच', अपने इस नाम से ही बरबस अपनी ओर खींच लेने वाली कहानियों की नई प्रकाशित पुस्तक त्रिलोक मेहरा की सृजनधर्मी लेखनी की उपज है। यह सन् 2019 में दिल्ली के नमन प्रकाशन केंद्र से प्रकाशित हुई है। त्रिलोक मेहरा का नाम हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ कथाकारों में आता है। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जनपद के बीजापुर गाँव में सन् 1951 में जन्मे त्रिलोक मेहरा की पारिवारिक पृष्ठभूमि मध्यमवर्गीय रही है। स्वाभाविक रूप से उन्होंने मध्यमवर्गीय परिवारों के संघर्षों और चुनौतियों को उस समय से देखा और भोगा है, जो देश की आजादी के बाद समग्र राष्ट्रीय चरित्र बने रहे हैं। त्रिलोक मेहरा के दो अन्य कहानी-संग्रह- 'कटे-फटे लोग' और 'मम्मी को छुट्टी है' प्रकाशित हो चुके हैं। इसके साथ ही उनका एक उपन्यास- 'बिखरते इंद्रधनुष' भी सन् 2009 में प्रकाशित हो चुका है। कथा-साहित्य के अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश की लोकसंस्कृति, लोकजीवन और हिमाचली जन- जीवन के संघर्षों पर आधारित अनेक शोधपरक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। मेहरा जी की कई रेडियो वार्ताएँ और कहानियाँ आकाशवाणी और दूरदर्शन से प्रसारित हो चुकी हैं। उनकी निरंतर सक्रियता और साहित्यिक संलग्नता को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है।

त्रिलोक मेहरा जी के साहित्यिक अवदान का परिचय यहाँ पर देना इसलिए आवश्यक लगा, क्योंकि एक रचनाकार का भोगा हुआ यथार्थ, उसका देखा हुआ यथार्थ उसकी रचनाओं की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को स्वतः सिद्ध करता है। साहित्य के साथ ही सामाजिक जीवन में निरंतर संलग्न और सक्रिय रहने के कारण मेहरा जी की यह कृति अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है। इसकी बानगी हमें संग्रह के शीर्षक से ही मिल जाती है। किसी भी कृति का शीर्षक अपना पहला प्रभाव डालता है। अमूमन पुस्तक को खरीदते समय उसका शीर्षक देखकर एक छवि कृति के संबंध में, कृति में संग्रहीत सामग्री के संदर्भ में बनती है। यह पहली दृष्टि अपना विशेष महत्त्व भी रखती है, और प्रभाव भी उत्पन्न करती है। कृति के शीर्षक के आकर्षण का यह पक्ष 'अंतिम राय का सच' में निखरकर आता है। कृति अपनी ओर आकृष्ट करती है- यह ऐसी कौन-सी अंतिम राय है, जिसका सच व्यापक समाज के साथ जुड़ता है, यह प्रश्न एकदम मन में कौंध उठता है।

कहानी-संग्रह का नाम जहाँ अपनी ओर खींचता है, वहीं दूसरी ओर संग्रह की प्रतिनिधि और शीर्षक-कहानी भी कम प्रभावी नहीं है। 'अंतिम राय का सच' कहानी उस अंतिम राय की बात करती है, जिसके बाद सलाह-मशविरों के लिए जगह बचती नहीं है, और केवल निर्णय लेना ही शेष रह जाता है। यही निर्णय कहानी के पात्र रमेश वर्मा और उसके साथियों की गरजती बंदूकों में दिखता है। यह अंतिम राय कैसी है, उसकी बानगी तो कहानी के प्रारंभ में ही मिल जाती है- "वहाँ अपने-अपने सुझावी भाषणों की तश्तरियाँ सभी आगे सरका कर खिसक गए थे, पर काम करने के लिए कोई आगे नहीं आया था, और अगर आया था, तो वह था- रमेश वर्मा।" (पृ. 86) पहाड़ी जीवन में, जंगलों के बीच ग्रामीण इलाके के किसान दयनीय जीवन जी रहे हैं। वे सभी जीवधारियों पर आस्था रखते हैं, सभी जीवों के जीवन का सम्मान करते हैं, लेकिन स्थितियाँ ऐसी जटिल हो चुकी हैं, कि किसानों का अपना जीवन ही संकट में फँसकर रह गया है। उनके अस्तित्व पर ही संकट मँडराने लगा है। ऐसी दशा में उनके लिए सलाह कितनी कारगर है, यह देखने का प्रयास कहानी करती है। नेताओं के पास सलाह के अलावा कुछ भी नहीं है। संसद अपनी अंतिम राय देकर यह मान लेती है, कि उसकी जिम्मेदारियाँ पूरी हो चुकी हैं, लेकिन इस अंतिम राय का सच किसी के हित में नजर नहीं आता है।

संग्रह की शीर्षक-कहानी हिमाचल प्रदेश के सुदूरवर्ती गाँवों की उस जटिल समस्या की ओर संकेत करती है, जिससे निबटने के लिए ग्रामीण समाज अपनी पुरातन परंपरागत जीवन-शैली के विपरीत जाने को विवश होता है। हिमाचल प्रदेश के गाँवों में बंदरों के आतंक से किसानों का जीवन दूभर हो गया है। उनके खेत, उनकी फसलें इतनी बुरी तरह से तबाह हो रही हैं, कि उन्हें बंदूक उठाने को विवश होना पड़ रहा है। पर्यावरण प्रेमियों से लगा कर धर्मभीरुओं तक सबकी अपनी दृष्टि है, लेकिन यह कहानी इन सबसे अलग हटकर किसानों के नजरिये से देखती है। यही इस कहानी की विशिष्टता है।

समीक्ष्य कृति में बारह कहानियाँ संकलित हैं। कृति की शीर्षक कहानी के साथ ही अन्य कहानियाँ भी अलग-अलग तरीके से जीवन को देखती हैं, मन के भावों को पकड़ती हैं। संग्रह की पहली कहानी है- 'घर-बेघर'। यह कहानी मोह में बँधे एक ऐसे पिता की विवशताओं को व्यक्त करती है, जिसका पुत्रमोह पिता के साथ ही कई जिंदगियाँ बरबाद करता है। सुंदर, सुशील और कामकाजी जाह्नवी का विवाह मानव से हुआ है। मानव शारीरिक

रूप से विकलांग है, क्योंकि उसके एक ही किडनी है। मानव के पिता इस सच्चाई को इसलिए छिपा लेते हैं, ताकि उनके बेटे का विवाह हो सके। जाह्नवी इस सच्चाई को जान जाती है, और अपने भविष्य को देखते हुए नौकरी नहीं छोड़ना चाहती। यही जिद जाह्नवी के चरित्र पर उंगली उठाने का कारण बनती है। मानव जाह्नवी का भावनात्मक भयदोहन करता है। जाह्नवी इस दबाव में नहीं आती, और अपनी दृढ़ता का परिचय देते हुए अपने निर्णय पर अडिग रहती है। वह मानव को अपनी किडनी नहीं देती। अंततः मानव की माँ उसे अपनी किड़नी देती है। जाह्नवी अपना फर्ज निभाते हुए ससुराल आती है, लेकिन उसके प्रति परिवार के लोगों की मानसिकता बदलती नहीं है।

'समय के साथ' कहानी जातिवादी बंधनों में जकड़े समाज की पड़ताल करती है, साथ ही समाज के दोहरे चरित्र को परत-दर-परत उघाड़ती है। कहानी की नायिका हरप्रीत खुले विचारों वाली युवती है। हरप्रीत के पिता भी खुले विचारों वाले हैं, लेकिन केवल अपने लिए...। अपनी बेटी के लिए वे दूसरे मानक गढ़ते हैं, निभाते हैं। हरप्रीत के साथ हरदेव के संबंध को वे पचा नहीं पाते हैं। भुजंगा सिंह ने इसी कारण अनेक वर्जनाएँ गढ़ रखी हैं। वे समाज में तिरस्कृत और अपमानित नहीं होना चाहते। उन्हें इसकी चिंता रहती है। इस कारण वे हरप्रीत पर अपनी गढ़ी हुई वर्जनाओं को लादते हैं। वे हरदेव को अपमानित करने का कोई मौका भी नहीं छोड़ते। कहानी दो पीढ़ियों के वैचारिक टकराव को इतनी सहजता और साफगोई के साथ व्यक्त करती है, कि समाज का कटु यथार्थ खुलकर सामने आ जाता है। कहानी में भुजंगा सिंह की पत्नी सुरिंदर कौर का चरित्र दो पाटों के बीच पिसता हुआ दिखता है।

'गोल्डी के लिए केवल' कहानी अपनी पूर्ववर्ती कहानी से आगे की कथा कहती दिखाई पड़ती है। समाज में एक ओर जातिवाद की गहरी खाइयाँ हैं, जिन्हें पाटने का प्रयास करता युगल 'समय के साथ' कहानी में है। दूसरी तरफ 'गोल्डी के लिए केवल' कहानी में आधुनिकता और उच्छृंखलता का दर्शन होता है। 'लिव-इन-रिलेशनशिप' जैसी आयातित मानसिकता के कारण गोल्डी इस संसार में आता है। हरिओम और रचना के उच्छृंखल संबंध समाज में स्वीकार्य नहीं हैं, फिर भी आधुनिकता के फेर में वे उस स्थिति में पहुँच जाते हैं, जिसका सबसे पहला असर नवजात गोल्डी पर पड़ता है। इसके बाद रचना इस दंश को भोगती है। हरिओम के परिवार से उसे कोई सहारा नहीं मिलता। रचना के लिए समाज के ताने-उलाहने तो हैं ही, साथ ही गोल्डी को पालने की चुनौती भी है। यही चुनौती उसे इतना शातिर बना देती है, कि वह अपनी सीमाएँ लाँघकर ओमप्रकाश के परिवार को बर्बाद करने में पीछे नहीं हटती। अपने लिए एक सहारा खोजती महिला दूसरी महिला के सहारे को किस तरह छीन लेती है, उस स्थिति को यह कहानी बड़ी शिद्दत के साथ प्रकट करती है। ओमप्रकाश को उसकी पत्नी सविता से दूर करना रचना का एकमात्र लक्ष्य बन जाता है।

उच्छृंखल यौन-संबंधों पर केंद्रित 'एफ.आई.आर.' कहानी की नायिका एक बालिका है। वह कम उम्र की है, और 'गोल्डी के लिए केवल' की पात्र रचना जैसी शातिर नहीं है। इसी कारण वह भावनाओं में बह जाती है, और भानु के छलावे में फँस जाती है। उसका मन एक ओर अपने बूढ़े दादा से धोखेबाजी करते हुए भयभीत होता है, लेकिन दूसरी तरफ उस पर भानु के छलावे का फंदा इतना मजबूत होता है, कि उसके लिए निकल पाना आसान नहीं रह जाता। कहानी कमउम्र बालिका की मनःस्थिति को बखूबी व्यक्त करती है। अंत में उसके द्वारा सारी सच्चाई को ईमानदारी के साथ अपने बूढ़े दादा से बताया जाना आश्वस्त करता है, कि जीवन के संघर्षों से हार मानने के स्थान पर चुनौतियों का डटकर सामना करना अच्छा विकल्प है। जहाँ एक ओर इस कहानी में पारिवारिक संबंधों की सुदृढ़ता है, वहीं दूसरी ओर समीक्ष्य कृति की अन्य कहानी- 'अखाड़ा' में संबंधों के बीच पसरी चालबाजियों की बिसातें हैं। कहानी स्वार्थ में पड़कर आपसी रक्त-संबंधों और पारिवारिक मर्यादाओं को नष्ट कर देने वाली मानसिकता को प्रकट करती है। 'अखाड़ा' में गाँव के फौजी का दामाद भी फौजी है और उसने अपनी ससुराल में सास-ससुर की जमीन में कब्जा कर रखा है। घर से बेटा और बहू बेदखल हो चुके हैं। बेटे और बहू को अपने दिवंगत पिता के लिए सहानुभूति है, किंतु बड़डेला, यानि फौजी का दामाद उन्हें दूर ही रखना चाहता है। जब वह कहता है, कि- "हम लाशों से खेलते आए हैं। क्या हुआ, यह अपने घर की लाश है।" तब परिवार और आपसी संबंधों की मर्यादाओं का बिखराव, उनकी टूटन पाठक के अंतस् में उतरकर जम जाती है। समीक्ष्य कृति में 'नखरो नखरा करेगी' कहानी एकदम अलग तरीके से समाज का चित्रण करती है। इसमें महिलाएँ हैं, जो बिशनी के नेतृत्व में संगठित हो रही हैं। उनके संगठित होने का कारण समाज में महिला सशक्तिकरण नहीं, बल्कि स्वयं को साक्षर और समर्थ बनाना है। कहानी किसी भी तरह से उस महिला- सशक्तिकरण का परचम नहीं उठाती, जिसके नाम पर बड़े-बड़े आंदोलन चलाए जाते हैं। यहाँ गाँव की महिलाएँ स्वतः प्रेरित हैं, और उन्हें केवल मार्गदर्शन मिल रहा है, वह भी अपने बीच की ही बिशनी के
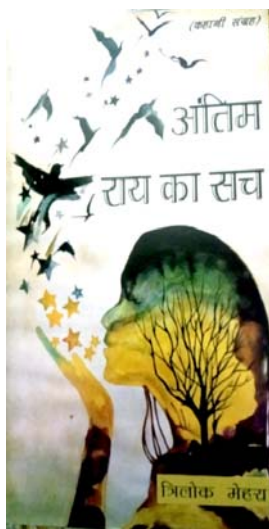
माध्यम से...। समीक्ष्य कृति में 'हाय कूहल' और 'टिटिहरियाँ' एकदम अलग तासीर की कहानियाँ हैं। इन कहानियों में हिमाचल प्रदेश का लोकजीवन ही नहीं झलकता, वरन् हिमाचल प्रदेश में आती बदलाव की बयार के बीच बिखरते प्रतीकों की असह्य-दुःखद पीड़ा भी झलकती है। कूहल और घराट की थमती आवाज के पीछे आधुनिक संसाधनों का पैर पसारना है। दीनानाथ कोहली, जिनका उपनाम 'कूहल' से बना है, आज केवल यही एक पहचान शेष रह गई है, क्योंकि कूहल तो कब के शांत हो गए। घराट भी नहीं बचे। पहाड़ में गरजते बुलडोजर की आवाज लोगों के मन में संदेह पैदा करती है। जिनके घर में पीहण रखा है, वे जरा निश्चिंत दिखते हैं। जिन लोगों के पीहण नहीं पिसे हैं, वे कूहल के लिए चिंतित होते हैं। 'टिटिहरियाँ' विकास की अंधी दौड़ की सच्चाई को खोलती है। बाँध का निर्माण विकास के प्रतिमान भले ही गढ़े, लेकिन इसके कारण किसानों को अपनी जमीनों से वंचित होना पड़ रहा है। वन काटे जा रहे हैं। प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो रहा है। मंगतराम, जगतराम और विश्नो ताई आदि ग्रामीणों ने विकास की जिस कीमत को चुकाया है, उसका पूरा आकलन यह कहानी करती है। किसानों को मुआवजे की रकम के लिए सरकारी दफ्तरों का चक्कर लगाना पड़ रहा है। सरकारी कर्मचारियों और ठेकेदारों का गठजोड़ किसानों के मुआवजे को भी हड़प जाना चाहता है। बच्चों को सरकारी नौकरी जैसे वायदे तो दूर की कौड़ी बन गए हैं। किसानों और बाँध बनने के कारण विस्थापित होने वाले लोगों के विरोध को दबाने के लिए ठेकेदारों के गुर्गों के साथ खाकी वर्दी भी मिल गई है। पूरे परिवेश में विस्थापित जन-समुदाय की निराशा का अंधकार घना होता जा रहा है- 'हम दुत्कारे हुए जीव थे। आज तक रोते रहे हैं। अब यह लोहदूत हमें पाटने आ गया है। पचास साल कम नहीं होते। काम करने की पूरी जिंदगी होती है। यहाँ बसाने की कतरने अभी भी हमारे पास हैं, इस जगह सो सँवारा है, सजाया है। कहाँ जाएँ अब?' यह प्रश्नचिन्ह उन तमाम विस्थापितों के जीवन के सामने लगा हुआ है, जिन्हें अनियंत्रित विकास ने अपनी जड़ों से उखाड़ दिया है।

समीक्ष्य कृति में 'भ्यागड़ा' और 'कब्र से बोलूँगा', ऐसी कहानियाँ हैं, जो आतंकवाद के दो अलग-अलग चेहरों को सामने लाती हैं। 'भ्यागड़ा' ऐसे गीत को कहते हैं, जो सुबह के समय गाया जाता है। यह शीर्षक कई अर्थों में कहानी के कथ्य को सामने लाता है। धर्मांधता की काली और अँधेरी रात के बीत जाने के बाद जो सुबह आएगी, उसे भ्यागड़ा के सुर से सजाया जाएगा। यह कहानी एक आशा का संचार करती है, जो आतंक का शमन कर सकेगी। कहानी का पात्र याकूब मागरे भले ही भटकाव में आकर आतंक के साथ हो लिया हो, लेकिन आतंक के कारण उसके जीवन पर कसता शिकंजा उसे सोचने को विवश कर देता है, और फिर वह अपने पुराने जीवन की ओर लौट चलता है। उसकी बाँसुरी फिर से भ्यागड़ा की धुन गुनगुनाने लगती है। धार्मिक कट्टरता के नाम पर गीत-संगीत, वेश-परिवेश पर लगाए जाने वाले बंधनों को, बंदिशों को याकूब नकार देता है। 'कब्र से बोलूँगा' का याकूब मोहम्मद भी धर्मांधता और आतंकवाद के चंगुल में फँसता है। पहाड़ों में जीवन सरल नहीं होता। वहाँ मजदूरी करने वाले लोगों पर पुलिस भी शक करती है, और छिपे हुए आतंकी भी। इन जटिल स्थितियों के बीच आतंकवाद और आतंकियों से दूर रहने के स्थान पर उनके साथ हो जाने की स्थिति को गाँववाले देखते हैं। सड़क-निर्माण में मजदूरी करने वाला याकूब मोहम्मद आतंकियों की गिरफ्त में इस तरह आता है, कि उसके सोचने-समझने की शक्ति ही समाप्त हो जाती है। रामलीला में सुग्रीव की भूमिका निभाते हुए वह सच में बालि का वध करने को उद्यत हो जाता है। कहानी आतंकवाद की उस मनःस्थिति को परखने की कोशिश करती है, जिसके कारण समाज में मिल-जुलकर रहने वाला सामान्य-सा व्यक्ति भी आतंकी बन जाता है। संग्रह में संकलित सभी कहानियाँ एक बड़े फलक पर अलग-अलग चित्रों को समेटती हैं। हिमाचल के लोकजीवन को समेटने के साथ ही मन-मानसिकता में आते बदलावों को कहानियों में देखा जा सकता है। कहानीकार त्रिलोक जी ने हिमाचल के लोकजीवन से जुड़े अनेक शब्दों का प्रयोग करके संग्रह को विशिष्ट बनाया है। कूहट, घराट, पीहण, टल्ली, कुकड़ी, टब्बर, छकराट, खिंद और भ्यागड़ा जैसे शब्द हिमाचल की अपनी बोली-बानी के साथ पाठक को जोड़ते हैं। सरल-सहज और प्रवाहपूर्ण भाषा के साथ ही रोचक शैली के साथ हर एक कहानी अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है। 'भ्यागड़ा' और 'कब्र से बोलूँगा' कहानियाँ अपना विशिष्ट महत्त्व रखती हैं, क्योंकि ये कहानियाँ अनागत के भाव को व्यक्त करने वाली हैं। कल के सुख की कामना वह विशिष्ट भाव है, जो साहित्य को दिशा-निर्देशक बनाता है। आतंकवाद की विभीषिका के बीच जो सुखद भविष्य दिख रहा है, वह इन कहानियों में महत्त्वपूर्ण है। साहित्य की समकालीन चिंतनधाराओं, प्रवृत्तियों और विमर्शों का अत्यंत सहज रूप इन कहानियों में दिखता है। कथ्य की विशिष्टता और सामयिक यथार्थ से निकटता समग्र कहानी-संग्रह की निजी विशेषता है। इसी कारण समीक्ष्य कृति पठनीय भी है और संग्रहणीय भी है।

प्राध्यापक, लहदी
केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (मानद विश्वविद्यालय)
लेह, लदाख केंद्रशासित प्रांत-194101, संपर्क- 9419 973 362

समीक्ष्य कृति- अंतिम राय का सच / त्रिलोक मेहरा / नमन प्रकाशन, नई दिल्ली / प्रथम संस्करण 2019 / मूल्य 250 रुपये / पृष्ठ-134

पुस्तक समीक्षा

छोटी कहानियों का बड़ा संसार

◆ राजेंद्र राजन

'यह आम रास्ता नहीं है' कमलेश भारतीय का ताजा कहानी संग्रह है जिसमें कुल 16 छोटी-बड़ी कहानियां हैं। अक्सर पाठक कमलेश भारतीय को लघु कथाओं के लेखक से जोड़कर देखने के आदी हो चुके हैं। वे कई दशकों तक लघु कथा की विधा में कुछ शीर्ष लेखकों में शुमार किए जाते रहे हैं। आलोच्य संग्रह में छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से एक बड़े संसार के बन्द किवाड़ों को खोलने का प्रयास करते हैं। मीडिया में सक्रिय रहते हुए कमलेश रोजमर्रा की जिन्दगी में अनेक किस्से, कहानियों, घटनाओं से रू-ब-रू हुए और उन्हीं में से उन्हें अपनी रचनाओं की जमीन मिली। ऐसे उनके पात्रों की व्यथा-कथा की रचनात्मक विधा में ढालकर लेखक ने उन्हें जीवन्त बना दिया है। पहली कहानी अर्जी में नायिका भरपाईं सता के शीर्ष पर बैठे मुख्यमंत्री के सिपहसलार 'लोहे की दीवाय' की तरह बाधा बनकर भरपाई को अपनी कथा-व्यथा कहने से रोकते हैं। सत्ता की संवेदनहीनता की यह इन्तहा है। 'तीन दृश्य : एक चेहरा में फर्जी लाइसेंस बनवाने के कांड में शामिल लोगों की कहानी है। कहानी पात्रों के प्रति कोई संवेदना नहीं जगाती। लेखक को सभी अपराधियों के चेहरे एक दूसरे में गड्ड-मड्ड होते प्रतीत होते हैं। अपराधी भले ही कसूरवार न रहा हो और परिस्थितियों या भ्रष्टाचार की दलदल में जकड़ गया हो, लोगों में उसके प्रति बुरे आदमी की छवि बरकार रहती है। 'जादूगरनी' में जौड़ा और स्वर्णी की कहानी है। बेमेल विवाह। स्वर्णी कपड़ों की तरह पुरुषों को बदलती जाती है। लेकिन इसका उसे जरा सा भी मलाल नहीं है। हर बार नये ठौर की तलाश उसके जीवन में बिखराव पैदा करती है। सम्बन्धों में टूटन, अस्थिरता उसके जीवन की नरक बना देती है। स्वर्णी पुरुषों को तोते जैसा पालतू बनाकर पिंजरे में बन्द कर लेती है। सतायी हुई औरत दुधारी तलवार पर चलने के लिये बाध्य होती है। बेल की तरह मजबूत तने की तलाश में मृगतृष्णा की तरह ताउम्र भटकती रहती है। यही इस कहानी का मर्म है। 'अमृता' नायिका उसके पति, दोस्त व बच्ची के संबन्धों में विसंगतियां तो अवश्य हैं लेकिन पाठक यह समझ नहीं पाता कि लेखक आखिर कहना क्या चाहता है? इस कहानी अमृता का संघर्ष उभर नहीं पाता। अहम और स्वाभिमान के टकराव के कारण रिश्ते तार-तार हो रहे हैं। यही परिवारों के टूटने के कारण हैं।

'देश दर्शन' संग्रह की एक अच्छी कहानी है जो पर्यटन स्थलों में गाइड की जिजीविषा के साथ जुड़ी हुई है। किलों, स्मारकों यहां तक कि ताजमहल के इतिहास में किस्से, कहानियों का बखान सच है या झूठ, सैलानी यह समझ नहीं पाता। वो तो गाइड की चतुराई, बांध लेने की कला और वाकपटुता से विस्मित होता रहता है। बादशाह जहांगीर और बेगम नूरजहां के दरम्यान कबूतरों के उड़ जाने की तकरार दिलचस्प है। रतन गाइड कहता है, 'अपने पास तो संदेश के कबूतर हैं', 'उड़ा देते हैं जो भी
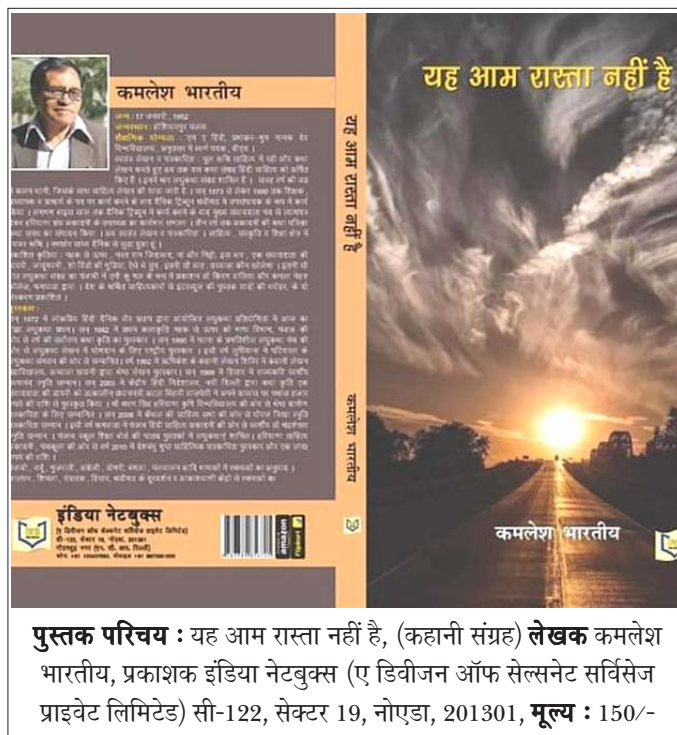
पुस्तक परिचय : यह आम रास्ता नहीं है, (कहानी संग्रह) **लेखक** कमलेश भारतीय, प्रकाशक इंडिया नेटबुक्स (ए डिवीजन ऑफ सेल्सनेट सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड) सी-122, सेक्टर 19, नोएडा, 201301, **मूल्य :** 150/-

चिंतन/नई कलम

कशमकश

◆ राजेंद्रा कुमारी

कभी-कभी जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं जब मनुष्य सही और गलत का निर्णय लेने करने में असमर्थ हो जाता है। ऐसे समय में हम यह समझने में असमर्थ हो जाते हैं कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए?

ऐसे क्षणों के आने पर मनुष्य चिंतित हो उठता है। मनुष्य का मन बार-बार उसी बात के बारे में सोचता है। उसके हृदय में एक युद्ध छिड़ जाता है। मनुष्य की सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है। ऐसे अवसर पर मनुष्य को क्या करना चाहिए? यह एक गंभीर समस्या है।

जब मनुष्य किसी बात पर सही या गलत का निर्णय करने में सक्षम न हो तो उसे सब कुछ उस परमपिता परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए, क्योंकि वह ईश्वर तो सब कुछ जानता है वह जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है। उसकी मर्जी के बिना तो संसार का पत्ता भी नहीं हिल सकता। वह बात जिसके बारे में हम सही निर्णय लेने में असमर्थ हैं, उस बात को प्रभु के हाथों में छोड़ देना ही लाभकारी है। उस बात के बारे में सोच कर अपनी चिंता बढ़ाना कहां तक उचित है?

मनुष्य का कार्य तो कर्म करना है। अच्छे कर्मों का फल सदैव अच्छा ही होता है और गलत कामों का परिणाम सदैव बुरा होता है, फिर सही गलत के निर्णय को ईश्वर पर छोड़ देना ही उचित है क्योंकि वह तो सर्वज्ञ है।

गांव डूंग डाकघर गुम्मा
तहसील व जिला शिमला हिमाचल प्रदेश

आता है, उसकी तरफ। रतन गाइड की बातचीत सुनकर लगता है मानों वह गाइड न होकर कोई दार्शनिक हो या बुद्धिजीवी। वह कहता है, 'किसलिए हैं ये किले? बादशाहों की शानो - ओ- शौकत बताने के लिये .... या लोगों की मूर्खता का डंका बजाने के लिये?

'मां और मिट्टी' कहानी न होकर लेखक का निजी अनुभव प्रतीत होता है जो कथानक में ढलकर संस्मरण के रूप में सामने आता है। अतीत की पीड़ा इसमें मुखर हुई है। 'दादी मां की बूढ़ी भाभी जर्जर हवेली में ऐतिहासिक दस्तावेज की तरह मौजूद है और मुझे पहचानने की कोशिश कर रही है ...... भाभी घौंसले में अकेली है .... तिनका-तिनका बिखरा हुआ .... हवेली खंडहर बन गयी . ... मैं भी खेत का टुकड़ा होती तो कब का बेचकर खा गये होते मुझे।'

संग्रह की एक अन्य महत्वपूर्ण कहानी है 'अपडेट'। यह हरियाणा में मिर्चपुर दलित कांड से प्रेरित है। दंगे गर दलितों के घरों को उजाड़ देते हैं तो सरकार के पुनर्वास पैकेज कई लोगों की जिन्दगियां भी संवार जाते हैं। मर जाने के बाद या हत्या के उपरान्त सगे भी अपनों को भूल जाते हैं और उनकी स्मृतियों को ताउम्र सीने से लगाए रखने के लिये छद्म भावनाओं में बहते नहीं। मनुष्य दुःख की कोख से निकले सुख को झपट लेने के लिये आतुर रहता है। भले ही वह दंगों की दरिन्दगी में शिकार अपनों को खो देने के बाद किसी भी रूप में सामने आए। सम्बन्धों में संवेदनहीनता की पराकाष्ठा अपडेट में यत्र-तत्र सर्वत्र मौजूद है। शेष कहानियां खासकर 'भुगतान, कठपुतली, हिस्सेदार, अगला शिकार, अंधेरी सुरंग भी पाठक का ध्यान खीचती हैं। कमलेश भारतीय की खूबी यह है कि वह छोटे-छोटे बिम्बों, चुटीली भाषा व कम शब्दों में कथानक को बुनते चले जाते हैं। पाठक को इन कहानियों में कभी-कभार स्वयं का ही किरदार नमूदार होता प्रतीत होता है। लेखक पर मीडिया का प्रभाव इस कदर हावी रहा है कि इसने उनके अनुभव संसार को ही सीमित सा कर दिया है। अनुभूति से अभिव्यक्ति की यात्रा में वे अपनी कहानियों के पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से बचते रहे हैं। कहानी यथार्थ और कल्पनाशीलता के मिश्रण से कृति को प्राप्त होती है। लेकिन यहां कल्पना का प्रयोग आंशिक रूप में ही सामने आता है। गल्प को गढ़ना जरूरी होता है।

कमलेश मानते हैं कि 1990 में पूर्ण रूप से पत्रकारिता में आने के बाद वक्त खलनायक हो गया और लम्बी कहानियां लिखने का समय नहीं रहा। पत्रकारिता के दायित्वपूणज़् पदों में दखल रखते हुए भी वे लघु कथाएं या कहानियां लिखने का वक्त निकाल पाये हैं यह कहानी जैसी सृजनात्मक विघा में लेखक के अनन्य लगाव का सूचक है। लघु कथा और लम्बी कहानियों के मध्य उन्होंने छोटी कहानियों की रचना कर सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी निष्ठा को ही अभिव्यक्त किया है।

संपादक इरावती, गांव बल्ह, डाकघर मौहीं, तहसील व जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश-177 030

आखिरी पन्ना

स्मृतियों में

जिंदगी की रिले रेस का अंतिम पड़ाव

◆ अश्वनी कुमार

कभी सोचा न था इकतीस बरसों की आत्मीयता भरा दोस्ताना एक झटके में टूट जाएगा। वो सबका शुभचिंतक यारों का यार हमसे यूं सदा के लिए जुदा हो जाएगा। हमेशा उनके साथ रहने वाले, मेरे जैसे अनेक उनके चाहने वाले अंतिम दर्शनों से भी वंचित रह जाएंगे। आज के आधुनिक तकनीकी युग में दिल्ली हमारी पहुंच से दूर हो जाएगी, यह भी किसने सोचा था!? सभी आवागमन के रास्तों में कमबख्त कोरोना दैत्य बनकर खड़ा है। आदमी कहीं आने-जाने से डर रहा है और वह अदृश्य रहकर अपने हाथ-पैर फैला अपना कद बढ़ाए जा रहा है। पूरी दुनिया को अपने शिकंजे में कसता जा रहा है। फिजाएं जहरीली होती जा रही हैं। इनसान का दम घुटता जा रहा है। आखिर कहां जा के सांस ली जाए!

बद्री सिंह भाटिया एक व्यक्तित्व नहीं, वरन एक संस्था थे जिनमें विशिष्ट जीवनानुभव, जीवन-दर्शन था जिसको सबमें बांटते फिरते। एक गुरु की तरह समझाते। कमियों को सुधारते रहते। हमेशा एक मित्रता का भाव उनके चेहरे से झलकता रहता। उनके सान्निध्य में ही साहित्य से परिचय हुआ। लेखकों, कवियों से मिलना-जुलना हुआ। जान-पहचान बढ़ी।

उनसे मिलने पर मॉल के कई चक्कर लग जाते। मोबाइल पर लंबी चर्चाओं का सिलसिला चलता रहता। विचारों का आदान-प्रदान होता। कहानियों और उपन्यासों के प्रारूप पढ़ने को मिलते। उनपर मुझ जैसी नाचीज़ से भी राय-मशविरा करते। सुख-दुःख में भी बराबर भागीदार बनकर वो उनसे उभरने की सलाह देते। वे उम्र और व्यक्तित्व में भी बड़े थे, लेकिन मुझसे सदैव मित्रवत व्यवहार दिखाया। उनका साहित्यिक दायरा काफी बड़ा था फिर भी गुमान उनको छू तक नहीं पाया था। साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। कहानियों, उपन्यासों और कविताओं की लगभग अठारह किताबें लिख देना कम नहीं होता। उनका पहला ही उपन्यास 'पड़ाव' हि. प्र. कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी से पुरस्कृत है। उसके बाद भी अनेकानेक पुरस्कार और सम्मान उनके लेखन की श्रेष्ठता को सिद्ध करते रहे जिनमें हिमोत्कर्ष साहित्य, संस्कृति एवं जन कल्याण परिषद्, ऊना का 'हिमाचलश्री साहित्य' पुरस्कार भी शामिल है।

हां, हंसते-मुस्कुराते बातों-ही-बातों में यह ठिठोली अवश्य करते, "सुन गल, वक्त की सान पर कभी मेरा लिखा चढ़ाया जाएगा, तो मुझे याद करोगे लेकिन यह तब होगा, जब मैं नहीं हूंगा।" यह कोई अतिशयोक्ति या गर्वोक्ति नहीं थी बल्कि एक लेखक का सहज-सरल-स्वाभाविक साहित्यिक स्वाभिमान था। सही भी है उनके रचना कर्म में गांव-देहात, खेत-खलिहान, पहाड-मैदान नदी-नाले, अमीर-गरीब, पगडंडियां-सड़कें, बावड़ियां, खोखले होते पहाड़ों का दर्द, पेड़- पौधे, पर्यावरण से छेड़छाड़, बनते-बिगड़ते-बदलते रिश्तों की खटास-मिठास और कशमकश, जज्बातों की तकरार, मान-मर्यादा के खयाल के साथ-साथ आम और खास आदमी की जिंदगी से जुड़ा हर पहलू मौजूद है। फिर किसी दिन कह उठते, "मेरे लेखन में सब कुछ आ गया मगर प्यार-मुहब्बत वाली वो बातें कभी न आ पाईं।"

उन्होंने शिमला के मिडल बाजार स्थित एक टी स्टाल का नामकरण फटाफट टी स्टाल कर दिया था जहां अकसर भीड़भाड़ रहती है और चाय पीकर जल्दी-से-जल्दी दुकान से बाहर आना पड़ता है। क्योंकि दुकान के बाहर चाय पीने वाले अपनी बारी का इंतजार कर रहे होते हैं। शाम की चाय के लिए इस मित्र मंडली में बद्री सिंह भाटिया, एस आर हरनोट, सुदर्शन वशिष्ठ, डॉ. कुल राजीव पंत, आत्मा रंजन, नेम चन्द अजनबी, विनोद भारद्वाज के अलावा संजय शर्मा, मदन शर्मा, वेद प्रकाश, सतपाल, सुरजीत कुमार और योग राज शर्मा के साथ-साथ अन्य मित्र और जान-पहचान वाले भी शामिल होते रहते। इस अनौपचारिक सजी महफिल में खूब ठहाके लगते। आस पास के लोकबाग अचरज भरी निगाहों से देखते। कई बार गप्पों, ठहाकों के बीच दुकान से उठने का मन नहीं करता था। तब, इससे पहले कि दुकानदार का इशारा पाकर नौकर सामने आकर उठने को कहे, फिर से चाय लाने का अप्रत्याशित ऑर्डर उछाल दिया जाता। कई बार उस दुकान में जगह न मिल पाती, तो किसी रेस्तरां में घंटों बतियाने का क्रम चलता। ये जिंदगी के वो खूबसूरत लम्हे रहे हैं जिनको इन सबने अपनी-अपनी दिनचर्या की व्यस्तताओं से सिर्फ और सिर्फ शाम की बैठक के लिए बचा कर रखा होता था। मगर कोरोना संकट से उपजी स्थितियों और परिस्थितियों के मद्देनजर इस तरह उठने-बैठने, गप्प-गोष्ठियों

और अन्य गतिविधियों में पिछले एक साल से विराम लग गया था। बावजूद इसके भाटिया जी अपनी मिलनसारी के चलते मिलने कार्यालय पहुंच जाते। नए स्टॉफ से मिलते हुए मजाकिया लहज़े में 'इस कार्यालय का भूत हूं। कभी भी आ-जा सकता हूं' (यानी इसी कार्यालय से सेवानिवृत्त हुआ हूं) कहकर अपना परिचय देते और सबसे मिल कर वापिस गांव लौट जाते। अन्यत्र साहित्यिक गोष्ठियों में भी बेबाकी से टिप्पणी या अपने विचार खुले मन से रखते थे।

हमने साहित्यानुरागी रमेश चंद्र शर्मा को सूट पहने पीठ पर छोटा सा पिट्ठू बांधे मॉल पर अकसर घूमते हुए देखा है। आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, हंसमुख व मृदुभाषी शर्मा जी जीवन के नब्बे से अधिक वसंत देख चुके हैं। उनकी अब तक लगभग पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिस कारण साहित्य जगत में उनकी विशिष्ट पहचान है। जब भी वे किसी शाम मॉल घूमने आए होते, उनकी नज़रें अपने साहित्यिक मित्रें को ढूंढती रहतीं। कभी-कभी वे मॉल के दूसरे छोर से भाटिया जी के साथ आते-बतियाते दिख जाते। दोनों के चलते-रुकते कदमों, रुकते-चलते कदमों से ऐसा मालूम होता दो साहित्यकारों के बीच किसी खास विषय पर गंभीर वार्तालाप चल रहा है। समझने में देर नहीं लगती कि यह मंत्रणा आज मॉल के कई चक्कर लगाने के उपरांत भी समाप्त होने वाली नहीं। फिर भी शिष्टाचारवश दुआ-सलाम और खैरियत जानने और थोड़ा-बहुत हंसी-मजाक होने के बाद विपरीत दिशा में आगे बढ़ जाते। अगर इनके साथ साहित्यकार प्रो. आर. डी. शर्मा और ओमप्रकाश शर्मा भी होते, तो उस दिन की हमारी चाय वाली महफिल भाटिया जी के बिना ही चलती।

दूसरे दिन शाम को जब वे मिलते तो एक बड़ी पायदारी की बात कहते, "इन बुजुर्गों का ध्यान और खयाल रखना एक साहित्यकार के नाते ही नहीं, बल्कि उनसे उम्र में छोटा होने के कारण भी मेरा धर्म है। हम तो रोज मिल लेते हैं लेकिन आर. सी. शर्मा जी कहां रोज मिल पाते हैं। कभी-कभार ही मिलना-जुलना हो पाता है। उनके पास कहने को बहुत है। अनुभवों का खजाना है। उनके अनुभव से गुजरना अच्छा लगता है। क्या पता किसी कहानी का 'प्लॉट' ही मिल जाए। ज्यादा-से-ज्यादा उनके अनुभवों को समेट लेना चाहता हूं।" उनकी यही बड़ी खासियत रही कि वे सबसे कुछ-न-कुछ ग्रहण करने या सीख लेने का जज्बा जीवनभर पाले रहे।

19 अप्रैल, 2021 की सुबह उनका व्हाट्सऐप मैसेज था, "मित्रो, बीमार हो गया हूँ। सूखी खांसी, बुखार का प्रकोप पूरे परिवार पर है। ठीक होने तक गुड मौरनिंग स्थगित।" और यही मैसेज उनका आखिरी मैसेज बनकर रह गया। मैंने भी लिखा था कि अपना खयाल रखना। परन्तु वे संदेश पढ़ नहीं पाए। उस दिन के उनके शुभचिंतकों के ऐसे कई संदेश उनसे बिना पढ़े रह गए होंगे। "मैं यूं नहीं जाने वाला। पूरे सौ बरस जीऊंगा।" बहुत बार ये शब्द उनसे सुनने को मिलते। उनका जुझारूपन और जिजीविषा देख कर यह सच भी लगता था। आदमी विधाता की सोच से या तो आगे निकल जाता है या पीछे रह जाता है। लेकिन उसकी मर्जी से अनभिज्ञ रहता है। उसने उनके लिए 73 साल 9 महीने 20 दिन तक की वैलिडिटी निर्धारित कर रखी थी। अपनी अस्वस्थता बारे उन्होंने नेम चन्द अजनबी द्वारा कुशलक्षेम पूछे जाने पर मोबाईल पर हुई बातचीत में बहुत ही मार्मिक बात कही थी। जैसा उन्होंने बताया भाटिया जी के शब्दों में, ''मैंने जिंदगी में कितनी ही अपनी लिखी और अन्य लेखकों की किताबों के चैप्टर पढ़कर क्लोज किए हैं। लेकिन अब लगता है अपनी जिंदगी का चैप्टर भी क्लोज होने जा रहा है। मालूम नहीं और कितने दिनों का ग्रेस पीरियड शेष रह गया है।" इस बीच डॉ. तुलसी रमण भी बताते हैं कि भाटिया जी से बात हुई और वे ठीक नहीं लग रहे। हालत कुछ सीरियस लगती है। डॉ. कुल राजीव पंत और एस.आर. हरनोट तो उनसे मोबाईल पर संपर्क साधे ही रहे। उनकी सेहत बारे अच्छा समाचार नहीं आ रहा था।

इस दौरान आर. सी. शर्मा भी दूरभाष से गहरी संवेदना में डूबे हुए संपर्क साधते हैं, "भाटिया का जाना दुखी कर गया। कहने को शब्द नहीं हैं। अभी दामाद के जाने के दुःख से उभर नहीं पाया था कि अब भाटिया का जाना मुझे गहरे तक डूबो गया। बाहर आने में समय लगेगा। शायद आ भी न पाऊं। मुझमें अब वो ताकत बची भी नहीं है। सच यही है कि दामाद के जाने के बाद से अब तक थोड़ा-बहुत लेखन कार्य करता रहता हूं। लेकिन कविता लिखने को कलम नहीं उठा पा रहा हूं। ये दोनों अकसर दिमाग में विचरण करने लगते हैं। बहुत कुछ लिखते-लिखते रह जाता है।" पिछले कुछ दिनों में भाटिया जी का स्वास्थ्य रुग्णता की कंटीली तारों के घेरे में आकर डेंजर जोन में चला गया था जिससे जिंदगी की रिले रेस जीवन के अंतिम पड़ाव के पार चली गई। उन्होंने बताया भी नहीं कि यह दौड़ वे जीत गए हैं। जीत की खुशी में उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तक नहीं। बेशक, वो हमारी आवाज न सुनें लेकिन यादों में सदैव रहेंगे। भाटिया जी, आपको अलविदा भी नहीं कह सकते। क्योंकि आप कहते रहे हैं, "कल भेंट होती है या गांव या दिल्ली से फलां तारीख को लौटने पर मुलाकात होगी।" मालूम है अब आप लौट कर नहीं आएंगे। फिर भी कभी न खत्म होने वाला इंतजार रहेगा ही। दिमाग सोच नहीं पा रहा और दिल मान भी नहीं रहा है कि इस बार आप सदा-सदा के लिए दुनिया को अलविदा कहकर कभी न लौट आने के लिए रुखसत हो गए हैं। बद्री सिंह भाटिया साहित्यिक जगत में अपनी लिखी कहानियों, उपन्यासों और कविताओं, संस्मरणों के माध्यम से शब्दों के डीएनए में मौजूद हैं। उनके जरिए शोधार्थी, पाठक वर्ग उनको खोजते फिरेंगे। उनमें व्यक्त अभिव्यक्तियों से परिचित होते रहेंगे। स्मृतियों के पटल पर जब-जब नज़र जाएगी, ऐसे बहुत से संस्मरणों के गवाक्ष खुलते रहेंगे। पाजे के फूल आपकी मुस्कान की याद दिलाएंगे। सादर नमन।

द्वारा भारद्वाज भवन, रामनगर,
शिमला-171 004, मो. 94180 85095

नोट : यहां उल्लेखित डेंजर जोन, रिले रेस, पड़ाव बद्री सिंह भाटिया के उपन्यास, कंटीली तारों का घेरा कविता संग्रह एवं आवाज, डीएनए, पाजे के फूल उनके कहानी संग्रह हैं।